

और दाँत के मध्य दो योजनों का अन्तर रहा । वह मुख क्या था मकरालय (-सा) था । ११४२

ईण्डिय	पुलवरो	डवुण	रिन्दुवंत्
तीण्डिय	नैडुवरैत्	तैय्व	मत्तिनैप्
पूण्डुयर्	वडमिरु	पुडैयिन्	वाङ्गलिन्
नीण्डत्त	किडन्दन	निमिरन्द	कैयिनान् 1143

ईण्डिय पुलवर् ओट्टु-एकत्रित देवों के साथ; अवुणर्-असुर; इन्दुवं-चन्द्र को; तीण्डिय-स्थिर-स्तम्भ बनाकर; नैडु वरै-बड़े (मेरु) पर्वत को; तैय्व मत्तिनै-दिव्य मथानी को; पूण्डु-रखकर; उयर् वटम्-वासुकी की रस्सी से; इर पुटैयिन् वाङ्गलिन्-दोनों पाश्वों में बारी-बारी से खींचने से; नीण्डु अँत-लम्बा बना पड़ा रहा जैसे; निमिरन्त कैयितान्-ऊपर उठे हाथों वाला । ११४३

देवों और असुरों ने एकत्रित होकर चन्द्र को स्थिर-स्तम्भ के रूप में गाड़ा । बड़े मन्दर को दिव्य मथानी बनाया । बड़े वासुकी नामक सर्प को उस पर लपेटकर दोनों ओर खड़े होकर बारी-बारी से खींचा । उस दिन लम्बा बनकर वासुकी जैसा दिखता था, वैसा ही कबन्ध के हाथ लम्बे और मोटे बन पड़े थे । ११४३

तौहैक्कत्तर्	करुमहन्	तुरुत्ति	तूम्वैत्तप्
पुहैक्कोडिक्	कनलौडु	पौडिक्कु	मूक्किन्नान्
पहैत्तहै	नैडुङ्गडल्	परुहुम्	पावहन्
शिहैक्कोळुन्	वैन्वैदिर्	तिरुहुम्	नावित्तान् 1144

करुमहन्-लुहार की; तौहैक्कत्तर्-अधिक आग की भाथी में; तुरुत्ति तूमपु अँत-लगी रहनेवाली धौकनी की नाक (नली) के समान; कत्तल् ओट्टु कौटि पुक्कै-आग के साथ लताओं के आकार में फैलनेवाला धूम; पौडिक्कुम्-निकालनेवाली; मूक्किन्नान्-नाक का; पक्कै तक्कै-शत्रुता के साथ; नैट्टुम् कटल् परुक्कुम्-विशाल सागर को पी लेनेवाली; पावहन्-बड़वाग्नि की; चिक्कै कौळुन्तु अँत-ज्वालाशिखा के समान; तिरुक्कुम्-धूमती रहनेवाली; नावित्तान्-जीभ वाला । ११४४

उसकी नाक से लुहार की अधिक अग्निसहित भाथी से लगी हुई धौकनी की नाक के समान आग और लता के आकार में धुआँ निकल रहा था । (सागर का) शत्रु बनकर विशाल सागर को जो बड़वाग्नि पी (सोख) रही थी, उस बड़वाग्नि की ज्वालाशिखा के समान धूमती रहती हुई जीभ वाला था वह कबन्ध । ११४४

पुरण्डर	विडैवर	वैरुविप्	पुक्कुडै
अरण्डनै	नाडियो	ररुवि	माल्वरै

मुरण्डहु	मुल्लैनुल्लै	मुल्लुवैण्	डिङ्गल्लै
इरण्डुकू	डिट्टेन्न	विलङ्गे	यिड्डित्तान् 1145

अरवु पुरण्डु इट्टै वर—(राहु) सर्प को लोटते हुए अपने पास आते देखकर; वैरवि—भय खाकर; पुक्कु उरै—घुसकर वास करने योग्य; अरण् तत्तै नाटि—सुरक्षित स्थान ढूँढ़कर; ओर् अरवि माल् वरै—सरिताओं—सहित एक पर्वत पर; मुरण् तकु—प्रबल; मुल्लै नुल्लै—गुफा में प्रविष्ट; मुल्लु वैण् तिङ्कल्लै—पूर्ण-श्वेत चन्द्र को; इरण्डु कूळ इट्टु अँत—दो अंशों में काट लिया गया हो, ऐसा; इलङ्कु—दृश्यमान; अयिड्डित्तान्—वक्रदाँतों का । ११४५

उसके वक्रदाँत उस पूर्णचन्द्र के दो टुकड़ों के समान थे, जो राहु-केतु के सर्पों को पास आते देखकर डर से भाग गया, और सरिताओं—सहित बड़े एक पर्वत की शक्तियुत गुफा में घुसा हो और वहाँ जिसके दो टुकड़े हो गये हों । ११४५

ओदनीर्	मण्णिवै	मुदल	वोदिय
पूदमो	रैन्दित्तिर्	पौरुन्दिर्	उत्तुरिये
वेदनूल्	वरत्तुमुर्	विदिक्कु	मैम्बेरु
पादहन्	दिरण्डुयिर्	पडैत्त	पण्बिन्नान् 1146

ओतम् नीर्—शीतल जल; मण्—पृथ्वी; इवै मुतल—इनको आदि में रखकर; ओतिय—गणित; पूतम् ओर् ऐन्तित्तिल्—पाँच एक भूतों का; पौरुन्दिर् उत्तुरिये—न बनकर; वेत नूल्—वेद-शास्त्रों में; वरत्तु मुर्—यथाक्रम; विदिक्कुम्—विहित; ऐम् पेरुम् पातकम्—पाँच महापातक; तिरण्डु उयिर् पडैत्त—मिलकर प्राणवन्त हो गये; पण्पित्तान्—ऐसे प्रकार वाला । ११४६

उसका शरीर शीतल जल, पृथ्वी आदि कथित पाँचों भूतों का बना नहीं लगता था । पर वेदों और शास्त्रों में वर्जित पाँचों महापातकों (हत्या, चोरी, असत्यवाचन, सुरापान, गुरुनिन्दा या परस्त्री-प्रेम, जुआ, सुरापान, असत्यवाचन, दान देते समय रोकना —ये पंच महापातक माने जाते हैं ।) का मिलकर बना और प्राणवन्त हुआ—सा था । ११४६

वैय्यवैड्	गदिर्हल्लै	विळुङ्गुम्	वैव्वरा
शैय्तीळि	लिलतुयिल्	शैवियिन्	डौळ्ळैयान्
पौय्हिळर्	वन्मैयिर्	पुरियुम्	पुन्मैयोर्
वैहुरु	नरहैयुम्	नहुम्ब	यिड्डित्तान् 1147

वैय्य वैम् कतिर्कल्लै—गरम और प्रिय (शीतल) किरणों वाले सूर्य और चन्द्र के; विळुङ्गुम्—खादक; वैम् अरा—भयंकर (राहु-केतु) सर्प; वैय् तीळिल् इल—निष्क्रिय होकर; तुयिल्—आकर जहाँ सोते हैं; शैवियिन् तौळ्ळैयान्—कर्ण-विवर वाला; किल्लर् वन्मैयिन्—बढ़ती कठोरता से; पौय् पुरियुम्—असत्य-वादन (आदि दुष्कर्म) करनेवाले;

पुनर्मैयोर्-नीच लोग; वैकुण्ठम्-जहाँ वास करते हैं; नरकैयुम्-उस नरक का भी;
नकुम्-परिहास करनेवाले; वयिर्ज्ञितान्-पेट का । ११४७

सूर्य गरम किरणों के हैं और चन्द्र प्रिय शीतल किरणों के । इन दोनों को राहु और केतु नाम के सर्प पकड़कर निगल लेते हैं । ये दोनों अपना काम छोड़कर कबन्ध के कर्ण-विवरों में जाकर सोते रहते हों, ऐसे कानों वाला था वह । असत्य-कथन आदि नीच काम करनेवालों को जहाँ जाकर रहना पड़ता है, उस नरक को भी लजानेवाला था, उसका पेट । ११४७

मुर्झिय	वुयिरैला	मुखङ्ग	वारित्तात्
पर्झिय	करत्तिनत्	पणैत्त	पण्णैयिल्
तुर्झिय	पुहुतरु	तोर्झत्	तानमत्
कौर्झवाय्	तर्चैयल्	कुर्झित्त	वायिनात् 1148

मुर्झिय-जिनको घेर लिया; उयिर् अलाम्-उन सभी प्राणियों को; मुखङ्क-मिटानेवाला; तान् वारि पर्झिय-जिनसे पकड़ता है; करत्तिनत्-ऐसे हाथों का; पणैत्त पण्णैयिल्-मोटे झुण्डों में; तुर्झिय-ठूँसे हुए (प्राणी); पुकु तरुम्-घुसते हैं; तोर्झत्ताल्-उस दृश्य से; नमत् कौर्झ वाय् तन्-यम के राजद्वार का; चैयल्-कार्य; कुर्झित्त-जिसकी ओर संकेत करता है (समान); वायितान्-ऐसा मुख वाला । ११४८

उसके हाथ अपने क्रोड के घेरे में आये हुए सभी प्राणियों को मिटाने के काम में लीन थे । बड़े-बड़े झुण्डों में अनेक प्राणी उसके मुख में ठूँसे जा रहे थे । उस दृश्य को देखकर यम का सुरक्षित राजद्वार स्मरण आता था । ११४८

ओलमार्	कडलैत्त	मुळङ्गु	मोदैयान्
आलमे	यैतविरुण्	अळन्नु	वाक्कैयान्
नीलमाल्	नेमियिर्	इलैयै	नीक्किय
कालन्ने	मियैपपौरुङ्	गवन्दक्	काट्चियात् 1149

ओलम् आर्-गर्जनशील; कडल् अँत-सागर-सम; मुळङ्कुम् ओतैयान्-कोलाहलमय शब्द वाला; आलमे अँन-हलाहल के ही समान; इरुण्डु-काले; अळन्नु-उष्ण; आक्कैयान्-शरीर का; नील माल् नेमियिल्-नील श्रीविष्णु के चक्रायुध से; तलैयै नीक्किय-सिर-कटे; काल नेमियिल्-कालनेमि के समान; पैरुम् कवन्त-बड़े कबन्ध के; काट्चियात्-दृश्य वाला । ११४९

उसका बोल गर्जनशील सागर के शोर के समान था । उसका शरीर हलाहल के समान काला और गरम था । नीले वर्ण के श्रीविष्णु के चक्रायुध के द्वारा सिर-कटे कालनेमि नामक राक्षस के कबन्ध के समान

उसका आकार दिखता था । (कालनेमि के सौ सिरों और हाथों को श्रीविष्णु ने अपने चक्रायुध चलाकर काटा था । वही कालनेमि पीछे कंस बना था । यह पुराणांतर में कहा गया है । इसका उल्लेख अयोध्याकाण्ड में भी आया है ।) । ११४९

ताक्किय	तणप्पिल्का	लैरियत्	तन्नुडै
मेक्कुयर्	कौडुमुडि	यिळुन्द	मेरुनेर्
आक्कैयि	तिरुन्दवन्	उन्तै	यव्वळि
नोक्किन	रिरुवरु	नुणङ्गु	केळ्वियार् 1150

तणप्पु इल काल्-अप्रतिहत पवन के; ताक्किय अरिय-वेग से वहकर झटका देने से; तन् उटै-अपने; मेक्कु उयर्-ऊपर उठे हुए; कौटु मुटि-उन्नत शृंगों को; इळुन्त-जिसने खोया है; मेरु नेर्-ऐसे मेरु के समान; इरुन्तवन्-जो रहा; तन्तै-उस कबन्ध को; नुणङ्कु केळ्वियार्-सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान के; इरुवरुम्-(श्रीराम और लक्ष्मण) दोनों ने; अ वळि-वहाँ; नोक्किन्-देखा । ११५०

उसका शरीर उस मेरु के समान था, जिसके उन्नत शृंग दुर्धर्ष वेग से वहनेवाले पवन के झटके से टूटकर गिरे हों । सूक्ष्म श्रवणज्ञान के स्वामी दोनों, श्रीराम और लक्ष्मण ने वहाँ ऐसे कबन्ध को देखा । ११५०

नोर्पुहु	नैडुङ्गड	लडङ्गु	नेमिशूळ
पार्पुहु	नैडुम्बहु	वायैप्	पार्त्तत्तर्
शूरपुहु	वरियदो	ररक्कर्	तौन्मदिल्
ऊर्पुहु	वायिलो	विडुवैन्	रुन्तितार् 1151

नोर् पुकु-जल जिसमें प्रवेश करता है; नैडुम् कटल् अटङ्कु-वे विशाल समुद्र जिसमें समाविष्ट हैं; नेमि चूळ्-और (जो) चक्रवालगिरि से घिरी हुई है; पार् पुकु-वह भूमि जिसमें प्रविष्ट हो सकती है; नैडुम् पकु वायै-उस बड़े और खुले मुख को; पार्त्तत्तर्-(उन्होंने) देखा; चूर् पुकल् अरियतु-सूर्य जिसमें प्रवेश नहीं कर सकता, ऐसा; ओर्-एक; अरक्कर्-राक्षसों का; तौल् मतिल् ऊर्-प्राचीन प्राचीरों से आवृत नगर में; पुकु-प्रवेश करानेवाला; वायिलो इतु-द्वार क्या यह; अैत्तु-ऐसा; रुन्तितार्-सोचा । ११५१

श्रीराम और लक्ष्मण ने देखा कि उसके मुख के अन्दर सारी नदियों के जल को समा लेनेवाले सारे सागरों को अपने अन्दर लिये हुए चक्रवालगिरि से आवृत पृथ्वी जा सकती है ! उन्होंने सन्देह किया कि क्या यह सूर्य के लिए भी अगम प्राचीन प्राचीरों से आवृत लंका नगर का द्वार है ? । ११५१

अव्वळि	यिळैयव	नमैन्दु	नोक्किये
वैव्विय	वीरुपैरुम्	बूदम्	विल्वलाय्

वव्विय तन्गेयिन् वळैत्तु वाय्पेयुम्
शैयवदै तिवर्णनच् चैम्मल् शैप्पुवान् 1152

अ वळि-तव; इळैयवन्-कनिष्ठ भ्राता (के); अमेन्नु नोक्किये-खूब देखकर; विल् वलाय्-धनुर्विद्याविदग्ध; वैव्वियतु और पैरुम् पूतम्-भयंकर एक भूत; वव्विय-अपने द्वारा पकड़े गये प्राणियों को; तन् कैयिल् वळैत्तु-अपने हाथों से समेट लेकर; वाय् पेयुम्-अपने मुख में डालनेवाला है; इवण् चैयवतु अन्-यहाँ करना क्या; अन्-कहने पर; चैम्मल्-प्रभु श्रीराम; चैप्पुवान्-बोले । ११५२

तब लक्ष्मण ने कवन्ध को खूब ध्यान से देखा । फिर श्रीराम से कहा कि धनुर्विद्या-निपुण ! यह भयंकर भूत है, जो अपने क्रोध में आने वाले सभी प्राणियों को हाथ से लेकर अपने मुख में डाल लेता है ! अब हम क्या करें ? —लक्ष्मण ने यह प्रश्न किया । ११५२

तोहैयुम् विरिन्दत्तु लैन्दै तुञ्जित्तान्
वेहवैम् वळिशुमन् दुळल वेण्डिलेन्
आहलिन् यानिति यिदनुक् कामिडम्
एहुदि यीण्डुनिन् रिळव लाण्डेन्शान् 1153

इळवल्-छोटे भैया; तोहैयुम् विरिन्दत्तु-मयूराभा (जानकी) विछुड़ गयी; अन्तै तुञ्जित्तान्-मेरे पिता (जटायु) चिरनिद्रा में लग गये; वेह वैम् पळि-अकस्मात् आया यह कठोर अपयश; चुमन्तु-ढोता हुआ; उळल वेण्टलेत्त-संकट में फिरना नहीं चाहता; आहलिन्-इसलिए; यान्-मैं; इति इतनुक्कु-अब इसका; आमिडम्-(आमिश =) खाद्य मांस (या मेरा स्थान); ईण्डु निन्नु-यहाँ से; एकुति-चलो; अन्शान्-कहा । ११५३

तब श्रीराम ने नैराश्य से यों कहा— छोटे भैया ! मयूर की-सी छटा वाली सीता विछुड़ गयी । मेरे पिता (-सम) जटायु चिर निद्रा में लीन हो गये; अकस्मात् आयी यह निंदा ढोता फिरना मैं नहीं चाहता । इसलिए अब मेरा स्थान उसका भोजन बनना है । (आमिडम्— आमिश का भी तमिळ रूप है; आम् इटम्— करके बननेवाला स्थान अर्थ भी किया जा सकता है ।) तुम मुझे छोड़कर यहाँ से चले जाओ । ११५३

ईन्डव रिडर्प्पड वैम्बि तुन्पुउच्
चान्डवर् तुयर्उउ पळिक्कुच् चान्डमाय्त्
तोन्डलि नैन्नुयिर् तुन्न्द पोदलाल्
ऊन्डिय पैरुम्बडर् तुडैक्क वीण्णुमो 1154

ईन्डवर्-मेरे जनक-जननी; इटर् पट-कष्ट भोगते हैं; अम्पि-मेरा कनिष्ठ भरत; तुन्पुउ-डुःखी है; चान्डवर् तुयर् उउ-उत्तम (वसिष्ठ आदि) लोग संकट में पड़े हैं; पळिक्कु-अपयश के लिए; चान्डम् आय्-एक दृष्टान्त बना; तोन्डलिन्-पेदा हुआ हूँ, इसलिए; अन् उयिर् तुन्नुत्त पोतु अलाल्-विना प्राण त्यागे; ऊन्डिय-

स्थिर रूप से हुए; पैरु पटर्-इन बड़े दुःखों को; तुटैक्क ओण्णुमो-मिट सकेंगे क्या । ११५४

मेरे कारण मेरे माँ-बाप दुःखी हुए । मेरा कनिष्ठ भरत संकट में है । बड़े और आदरणीय वसिष्ठ आदि दुःख में हैं । और भी मैं अपकीर्ति का दृष्टान्त बना पैदा हुआ हूँ ! इसलिए मरे बिना इस बड़े और गहरे दुःख का मिटना सम्भव है क्या ? । ११५४

इल्लियल्	बुडैयनी	रळित्त	विन्शीलाळ्
वल्लिवल्	लरक्कर्दम्	मनैयु	ळाळैनच्
चौल्लिनन्	मलैयत्तच्	चुमन्द्	तूणियन्
विल्लित्तन्	शैल्वत्तो	मिदिलै	वेन्दन्बाल् 1155

इल् इयल्पु उटैय नीर्-गृहस्थ धर्म का; अळित्त-पालनकारिणी; इन् चौलाळ्-मधुरभाषिणी; वल्लि-लता (-समाना); अरक्कर् तम् मतै उळाळ्-राक्षसों के घर में है; अत्त-ऐसा; मिदिलै वेन्तत् पाल्-मिथिलापति के पास; चौल्लि-कहता हुआ; नल् मलै-श्रेष्ठ पर्वत; अत्त चुमन्त-के समान ढोये जानेवाले; तूणियन् विल्लित्तन्-तूणीरों व धनु के साथ; शैल्वत्तो-जाऊंगा क्या । ११५५

गृहस्थ धर्म की अच्छी पालिका, मधुरभाषिणी और लता-समाना सीता राक्षसों के घर में है ! श्रेष्ठ पर्वत के समान यह तूणीर और धनु ढोते हुए मैं क्या मिथिलेश के पास यह समाचार देने जाऊँ ? । ११५५

तळैयविळ्	कोदैयैत्	ताङ्ग	लाङ्गलन्
इळैपुरन्	दळित्तन्मे	लिवर्न्द्	कादलन्
उळत्तैन्	वुरैत्तलि	नुम्ब	रार्त्तन्
विळैदन्न्	रादलिन	विळिद	नन्ऱैन्ऱान् 1156

तळै अविळ् कोदैयै-प्रकुल पुष्पों की मालाधारिणी सीता को; ताङ्क्ल् आङ्गलन्-संरक्षित करने की शक्ति से हीन; इळै पुरन्तु अळित्तल् मेल्-(पर) (इला) भूमि के पालन-शासन पर; इवर्न्त कातलन्-उमंगते प्रेम का; उळन्-है; अत्त-ऐसा; उरैत्तलित्-कहे जाने से; उम्परात् अत्त विळैतल्-स्वर्गवासी कहे जाने का यह कार्य; नन्ऱ आतलित्-अच्छा है, इसलिए; विळितल्-मरना; नन्ऱ अन्ऱान्-अच्छा होगा, कहा । ११५६

लोग यों कहकर मेरी निंदा करेंगे कि श्रीराम में विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीता का पालन करने की शक्ति नहीं रही । पर भूमि का पालन और शासन करने की इच्छा तो खूब रही ! इस अपवाद से 'वह स्वर्गवासी हो गया' यह कहा जाना अच्छा है । इसलिए मेरा मर जाना ही श्रेयस्कर है ! श्रीराम ने अपार खेद के साथ अपनी भर्त्सना के ये वचन कहे । ११५६

आण्डा	तिन्त	पत्तिड	वैयड्	किळवीरन्
ईण्डा	युत्तिवित्	नेयित्	शैयदे	यिडर्वन्तु
मूण्डान्	मुत्ते	यारुयि	रोडु	मुडियादे
मीण्डे	पोदड्	कामेति	नन्तुन्	विनेयैन्तान् 1157

आण्डान्-जगद्रक्षक; इतत्-इस भाँति; पत्तिट-बोले, तब; ऐयड्कु-प्रभु से; इळ वीरन्-छोटे वीर; उन् पिन्-आपके पीछे; ईण्डु आय्-यहाँ आकर; एयित चैयते-आज्ञा-पालन करके; इटर् वन्तु मूण्डाल्-आफ्त आ गयी तो; मुत्ते-आपके पहले ही; मुडियाते-विना मरे ही; आर् उयिर् ओटु-प्रिय प्राणों के साथ; मीण्डे पोतड्कु आम्-लौट जाने ही योग्य रहा; ऐतिल्-तो; नन्तु ऐन् वितै-बड़ी अच्छी होगी न मेरी सेवा; ऐन्तान्-कहा । ११५७

जगन्नायक ने यह सब गहरे शोक के साथ कहा । तब छोटे वीर लक्ष्मण ने अपने ज्येष्ठ भ्राता से कहा कि भाई ! यह भी खूब रहा । आपके साथ वन में आया आपकी आज्ञाओं का पालन करने का, आप पर संकट आया तो आपके पहले अपनी जान दे देने का संकल्प करके । अब प्रिय प्राण लेकर लौट जाने के ही लिए योग्य समझा जाऊँ, तो मेरी सेवा बड़ी श्लाघनीय होगी न ? ११५७

ऐन्तडा	नन्तान्	पित्तु	मिशैप्पा	निडर्वन्तै
वैन्तडा	रन्तुओ	वीररह्	ळार्व	मेलाय
तन्तुय्	तन्वे	तम्मु	नैन्तुन्दन्	मैयर्मुत्ते
पौन्तडा	निन्तडा	नीङ्गुव	दन्तुओ	पुहळम्मा 1158

ऐन्तान् अन्तान्-ऐसा कहकर लक्ष्मण; पित्तुम् इचैप्पान्-और भी बोले; इटर् तन्तै-दुःख को; वैन्तार् अन्तुओ-जीतनेवाले ही तो; वीररकळ आवार्-वीर होते हैं; तन् ताय्-अपनी माता; तन्तै-पिता; तन् मुत्-अपना अग्रज; ऐन्तुम् तन्मैयर्-ऐसे पद में रहनेवालों को; मुत्ते पौन्तडा-अपने पहले मरने देते हुए; निन्तडाल्-कोई जीवित रहा तो; पुकळ् नीड्कुवतन्तुओ-उसकी कीर्ति चली नहीं जायगी क्या; अम्मा-माँ । ११५८

लक्ष्मण ने और भी कहा । संकट आए तो उस पर विजय पानेवाले ही वीर कहे जायँगे न ? अपनी माँ, अपने पिता और अग्रज आदि बड़ों को मरने देकर कोई जीवित रहेगा तो क्या उसकी कीर्ति मिट नहीं जायगी ? । ११५८

माने	यन्ता	डन्तीडु	तम्मुन्	वरैयारुम्
काने	वैहक्	कण्डुयिल्	कौळ्ळान्	उत्तिहात्तड्
कान्ता	नैन्तै	यैन्तुवर्	मुत्ते	यवरन्तित्
ताने	वन्दा	नैन्तुपिन्	वैरोर्	तवरुण्डो 1159

माने अन्ताळ्-हरिणी ही सम; तन् ओटु-सीताजी के साथ; तम् मुन्-अपने

बड़े भाई के; वरै आरुम्-वाँसों से पूर्ण; कात्ते वैक-जंगल में ही रहते समय; कण्
तुयिल् कौळ्ळान्-अनिद्र रहा; तत्ति कात्तत्तुक्कु आत्तान्-अनुपम रक्षक रहा; अँन्ते-
क्या ही (खूब); अँन्नुवर-जिन्होंने ऐसा कहा, वे; अवरे इन्नुडि-उनके बिना ही;
मुन्ते-उनके पहले ही; तात्ते वन्तान्-खुद आ गया; अँन्नु पिन्-कहेंगे, फिर; वेड्ड
ओर् तवड्ड-उससे बढ़कर कोई और दोष; उण्टो-हो सकता है क्या । ११५६

लोगों ने यह देखकर आश्चर्य के साथ मेरी सराहना की कि हरिणी-
सी सीताजी के साथ जो गये, उन अपने ज्येष्ठ भ्राता के साथ लक्ष्मण
जंगल गया और रक्षणकर्ता बना । अब उनको ही यह कहने का मौका
मिल जाय कि लक्ष्मण उनको छोड़कर उनके आने से पहले ही लौट आ
गया तो (कितना बड़ा दोष हो जायगा ?) इससे बढ़कर कोई दोष हो
सकता है ? । ११५९

अँन्ना	युन्मुन्	नेयित्त	यावुम्	मिशैयित्तल्
पिन्ना	दैय्दिप्	पेरिशै	याळ्ड्	कळिवुण्डेल्
पौन्ना	मुन्तम्	बौन्नुदि	यँत्ता	ळुरैपीय्या
निन्ना	लन्डो	निन्नुडु	वाय्मै	निलैयम्मा 1160

अँन् ताय्-मेरी माता ने; उन् मुन्-तुम्हारा ज्येष्ठ भाई; एयित यावुम्-जो
आज्ञाएँ देगा, वह सब; इचै-पूरा करो; इन्तल्-विपदाएँ आयें तो; पिन्नातु-
पीछे मत रहो और; अँय्ति-आगे जाकर अपने ऊपर धारण कर लो; पेर इचै
आळ्ड्कु-प्रकीर्तित उनके; अळिवु उण्डेल्-मरने की नौबत आयगी तो; पौन्ना
मुन्तम्-उनके मरने के पहले; पौन्नुति-तुम मर जाओ; अँन्नाळ्-यह कहा है; उरै-
उनका वचन; पीय्या निन्नाल् अन्डो-असत्य नहीं होगा, तभी तो; वाय्मै निलै
निड्पतु-सत्य स्थिर होगा; अम्मा-माँ । ११६०

मेरी माता ने मुझे आदेश दिया था कि तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम
जो भी आज्ञाएँ देंगे, वे सब पूरा करो । विपदा आयेगी तो पीछे मत रहो,
पर आगे बढ़कर तुम उसे अपने ऊपर ले लो । शायद मरने की स्थिति
आने की सम्भावना देखते हो तो उनके मरने के पहले तुम मरण का वरण
कर लो । उस आदेश के अनुसार चलूँ तभी न मेरा सत्यव्रत स्थिर
होगा ? । ११६०

अँर्पैड्	डाळुम्	यान्तु	मँनैत्तोर्	वहैयालुम्
निर्पैड्	डाड्कु	निङ्कु	नितैप्पुम्	पिळैयामल्
नर्पौड्	डोळाय्	नल्लवर्	पेण	नत्तिनिङ्कुम्
शौर्पैड्	डात्तम्	डाह्यिर्	पेणित्	तुडवेमाल् 1161

नल् पौन् तौळाय्-श्रेष्ठ और सुन्दर कन्धों वाले; अँन् पँड्डाळुम् यात्तम्-मेरी जननी
और मैं; निन् पँड्डाड्कुम्-आपकी जननी और; निङ्कुम्-आपके प्रति; अँनैत्तु
ओर् वकैयालुम्-किसी भी तरह से; नितैप्पुम् पिळैयामल्-बिना मन बदले; नल्लवर्

पेण-श्रेष्ठ लोगों द्वारा श्लाघ्य रीति से; नति निङ्कुम्-अच्छी तरह अचल रहनेवाली; चौल् पैङ्गल्- (साधु-) वचन प्राप्त करेंगे तो; मरुङ्-उसको छोड़कर; आर् उयिर् पेणि-अपने प्राणों के पालन में; तुङ्गोम्-आपका कर्कश्य नहीं छोड़ेंगे । ११६१

उत्तम और मनोरम स्वर्ण-सम कन्धों वाले ! मेरी जननी को और मुझे यह ख्याति मिल जाय कि हम आपकी जननी और आपके प्रति उत्तम मनुष्यों से श्लाघ्य होकर स्थिरमन रहे । जब इसकी सम्भावना है, तब उसके विपरीत अपने प्राणों के लोभ से अपने कर्तव्य छोड़ देंगे क्या ? । ११६१

ओदुङ्	गालप्	पल्पोरुण्	मुङ्गुङ्	ओरुवाद
वेदङ्	जौल्लुन्	देवरुम्	वीयुङ्	गड्डीयाय्
मादङ्	गन्दिन्	ऊय्न्दिव	तत्तिन्	उल्लेवाळुम्
पूदङ्	गौल्लप्	पोन्नुदि	येन्तिन्	पोरुण्डो 1162

ओतुम् काल्-सच कहा जाय; पल् पोरुळ्-जग के सारे पदार्थ; मुङ्गु उङ्गु-जब मिट जायेंगे; ओरुवात-अमर; अ वेतम् चौल्लुम्-उन वेदों में कथित; तेवरुम्-देव भी; वीयुम् कटै-मिट जायेंगे, उस युगान्त में; वीयाय्-अमर रहनेवाले आप; मातङ्कम् तिन्नुङ्-गजों को खाकर; उय्नुतु-जीवित; इ वत्तत्तिन् तलं-इस कानन में; वाळुम्-रहनेवाले; पूतम् कौल्ल-भूत के द्वारा मारे जाकर; पोन्नुदि ऐन्तिल्-मर जायेंगे तो; पोरुळ् उण्डो-उसका कोई अर्थ रहता है क्या । ११६२

सच कहा जाय, हे प्रभु ! आप कौन हैं ? जब प्रपंच की सारी सृष्टि मिट जायगी और अमर वेदों से प्रशंसित देवता लोग भी नहीं रह जायेंगे, उस युगान्तकाल में भी आप अमर रहनेवाले हैं । ऐसे आप, हाथी खाते हुए जीवित रहनेवाले इस काननवासी भूत के मारते मर जायेंगे ? इस कथन का कोई अर्थ हो सकता है क्या ? । ११६२

केट्टार्	कौळ्ळार्	कण्डवर्	पेणार्	किळरपोरिल्
तोट्टार्	कोवेच्	चोर्कुळ्	उन्नेन्	तुवळामल्
मीट्टा	नेन्नुम्	बेरिश	कौळ्ळान्	शेरुवैल्ल
माट्टान्	माण्डा	नेन्नुलिन्	मेलुम्	वशयुण्डो 1163

केट्टार् कौळ्ळार्-सुननेवाले नहीं मानेंगे; कण्डवर् पेणार्-देखनेवाले नहीं चाहेंगे; तोट्टु आर् कोतै-विकसित बलों के पुष्पों की मालाधारिणी; चोर् कुळल् तन्ने-बिखरे केश की सीतादेवी को; तुवळामल्-दुःख में न छोड़कर; मीट्टान् ऐन्नुम्-मुक्त कर लाया, यह; पेर् इच्-कौळ्ळान्-बड़ा यश प्राप्त नहीं करके; चेरु वैल्ल माट्टान्-युद्ध में जीत न पा सका; माण्डान्-मर गया; ऐन्नु पित्त-यह कथन होने के बाद; मेलुम्-उससे बढ़कर; वच् उण्डो-निंदा होगी क्या । ११६३

जो कोई सुनेगा वही नहीं मानेगा । जो कोई देखेगा वही नहीं चाहेगा । लोग यह कहें कि विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीतादेवी

को दुःख से निवृत्त कर लौटा नहीं लाया, न किसी युद्ध में विजय पायी;
पर श्रीराम मर गया — इससे बढ़कर क्या निंदा होगी ? । ११६३

तणिक्कुन्	दन्मैत्	तन्त्रैनि	लन्त्रित्	तहैवाळाल्
कणिक्कुन्	दन्मैत्	तन्त्रु	विडत्तित्	कन्तल्वूदम्
पिणिक्कुड्	गैयुम्	बैयपिल	वायुम्	पिळ्ळैयामल्
तुणिक्कुम्	वण्णड्	गाणुदि	तुन्बन्	दुर्बेन्त्रान् 1164

विटत्तित्-विष के समान; कन्तल् पूतम्-जलता यह भूत; कणिक्कुम् तन्मैत्तु
अन्त्रु-कुछ गण्य नहीं है; इ तर्क वाळाल्-(हमारी) इन उत्तम तलवारों द्वारा;
तणिक्कुम् तन्मैत्तु अन्त्रु-नहीं काटा जा सकता है; अन्तिल् अन्त्रु-ऐसा भी नहीं है;
पिणिक्कुम् कैयुम्-जकड़नेवाले इन हाथों को; पैय पिल वायुम्-गुफा के समान मुख को,
जिसमें वह सारे जीवों को समेटकर डाल लेता है; पिळ्ळैयामल्-अचूक रीति से;
तुणिक्कुम् वण्णम्-काट लेता है, वह रीति; काणुति-देखिए; तुन्पम् तुर्-शोक
छोड़ दीजिए; अन्त्रान्-कहा । ११६४

यह विष-समान जलनेवाला भूत कुछ गण्य नहीं है ! इन उत्तम
तलवारों से न मारा जा सकेगा — ऐसा भी नहीं । अब देख लीजिए ।
मैं कैसे सभी जीवों को जकड़ लेनेवाले इसके हाथों को और गुफा के समान
मुख को छिन्न-भिन्न कर देता हूँ । आप दुःख करना छोड़ दें । —लक्ष्मण
ने ऐसा कहा । ११६४

अन्त्रा	मुन्ने	शौल्लु	मिळङ्गो	विर्त्रैयोर्कु
मुन्ने	शौल्ल	मुन्तव	नन्ता	तिन्मुन्तत्
तन्ने	रिल्लात्	तम्बि	तडुप्पात्	पिर्त्रिल्लै
अन्त्रो	कण्ड	वुम्बरुम्	वैय्दुर्	इळुदाराल् 1165

अन्त्रा-ऐसा; मुन्ने चौल्लुम्-(करने के) पूर्व ही वादा करके; इळम् को-
लघुराज; विर्त्रैयोर्कु-भगवान (श्रीराम) के; मुन्ने चैल्ल-आगे गये; मुन्तवन्-
ज्येष्ठ श्रीराम; अन्त्रात्तिन्मु-उनके भी; मुन्त-आगे गये; तन् नेर् इल्ला-अप्रमेय;
तम्बि-छोटे भाई; तडुप्पात्-रोकने लगे; पिर्त्र इल्लै-(उनको रोकने) कोई दूसरे
नहीं थे; कण्ट उम्परुम्-इसको देख देव भी; वैय्दुर्-शोकाकुल होकर; अळुतार्-
रोये; अन्त्रो-हाथ । ११६५

लक्ष्मण ने कार्य के पहले ही वादा कर दिया । लघुराज यह कहकर
(उसको चरितार्थ करने के विचार से) श्रीराम के आगे कबन्ध के मुख की
तरफ जाने लगे । श्रीराम भी उनको पीछे करके आगे जाने लगे ।
तब अनुपमेय छोटे भाई ने अपने बड़े भाई को रोका । इस तरह दोनों ने
आपस में एक दूसरे को रोका । देवों ने यह देखा और यह भी देखा कि
उन दोनों को रोकनेवाला कोई अन्य नहीं है । तब वे शोक से रोने
लगे । ११६५

इत्तैय	राहिय	विस्वरु	मुहत्तिरु	कण्बोल्
कन्नैयुम्	वार्हळल्	वीरर्शन्	रणुहलुङ्	गवन्दन्
वित्तैयि	नैय्दिय	वीरर्नीर्	यावर्	कौलैन्
निन्नैयु	नैज्जिन	रिमैत्तिल	रुत्तन्	निन्नार् 1166

इत्तैयर् आकिय-ऐसे; कन्नैयुम् वार् कळल्-क्वणनशील बड़ी पायलधारी; वीरर् इस्वरुम्-दोनों वीर; मुक्त्तु इरु कण् पोल्-मुख की दोनों आँखों के समान; चैन्ऱु अणुकलुम्-ज्योंही जाकर नियराये, त्योंही; कवन्तन्-कवन्ध के भी; वित्तैयिन् अय्यित्तिय-कर्म-प्रेरित हो आये; वीरर् नीर्-वीर तुम; यावर् कौल्-कौन हो; अत्त-पूछने पर; निन्नैयुम् नैज्चित्तर्-सोचने हुए मन के साथ; उरुत्तन्-क्रुद्ध बनकर; इमैत्तिलर्-अपलक; निन्नार्-(तरेरते) खड़े रहे । ११६६

क्वणनशील पायलधारी दोनों वीर एक ही मुख की दोनों आँखों के समान जाकर कवन्ध के पास पहुँचे । कवन्ध ने उनसे पूछा कि कर्म-परिपाक से इधर आगत तुम दोनों वीर कौन हो ? यह सुनकर दोनों वीर क्रुद्ध हुए और कुछ सोचते हुए उस ही तरेरने लगे । उस स्थिति में वे खड़े रहे । ११६६

अळिन्दु	ळारल	रिहळन्दन्	रैन्तैयैन्	रळन्नार्
पौळिन्द	कोपत्तन्	पौरिक्कनल्	विळित्तैरुम्	वौडिप्प
विळ्ळुगु	वैन्त	वोङ्गलुम्	विण्णुर्	वीरर्
अळुन्द	तोळ्हळै	वाळ्हळा	लरिन्दन्	रिट्टार् 1167

अळिन्दुळळार् अलर्-(मुझे देखकर भी) ये भय से निस्पंद नहीं हुए; अत्तै इक्कळुत्तन्-मेरा अपमान करते हैं; अत्तै रळन्नार्-यह सोचकर खोल उठा; तन् कोप पौरिक्कनल्-अपनी अंगार के साथ कोपाग्नि; विळित्तैरुम्-दोनों आँखों द्वारा; पौडिप्प-प्रकट करते हुए; विळ्ळुगुवान् अत्त-निगल लूंगा, इस विचार से; वोङ्गलुम्-शरीर को फुलाने पर; वीरर्-दोनों वीरों ने; विण् उरु अळुन्त-आकाश से लगते हुए जो उठे, उन कन्धों को; वाळ्हळाल्-तलवारों से; अरिन्तन्-काटकर; रिट्टार्-गिराया । ११६७

कवन्ध सोचने लगा कि यह क्या नई बात है ? ये मुझे देखकर भयभीत होकर मूर्च्छित नहीं हो रहे ! मेरा अपमान करते हैं । उसकी कोपाग्नि अंगारों के साथ उसकी दोनों आँखों से प्रकट होने लगी । उसने उनकी निगलने के विचार से अपना शरीर फुलाया । तब दोनों वीरों ने आकाश तक उठे हुए उसके हाथों को अपनी तलवारों से काटकर गिरा दिया । ११६७

कैह	ळरुवैड्	गुरुदिया	रौळक्किय	कवन्दन्
मैय्यिन्	मेर्कोडु	किळक्कुरप्	पैरुन्दि	विरवुम्

शैय मान्डुन् दाळतडत् तन्निवरै तन्तो
डैय नीड्गिय पेरैळि लुवमैय नानान् 1168

कंकळ अङ्ग-कटे हाथों का होकर; वैम् कुशति आङ्ग-गरम रक्त की नदी;
ओळक्किय कवन्तन्-बहाता हुआ कबन्ध; मैय्यित्-अपने शरीर में; मेङ्कु ओट्टु
किळक्कु-पश्चिम से पूर्व तक; उङ्ग-जाती हुई; पेरु नति विरवुम्-बड़ी नदी (कावेरी)
से युक्त; चैय मा नैट्टु-सह्य नाम के लम्बे-चौड़े और; ताळ तट-विस्तृत तराइयों
के; तन्नि वरै तन्तोडु-श्रेष्ठ पर्वत के साथ; ऐयम् नीड्गिय-सन्वेह-रहित; पेरु
ओळिल्-अतीव सुन्दर; उवमैयन् आतान्-तुल्य बन गया। ११६८

कटे हाथों के साथ शरीर पर रक्त की नदी बहाते हुए जो रहा, उस
कबन्ध का शरीर सह्याद्रि से असंदिग्ध और सुन्दर रूप से तुल्य हो गया,
जिस पर कावेरी की लम्बी नदी पश्चिम से लेकर पूर्व के छोर को छूती
हुई बहती है। ११६८

आळु नायह नङ्गैयिर् शीण्डिय वदत्ताल्
मूळुञ् शाबत्तिन् मुन्दिय तीविन्नै मुडित्तान्
तोळुम् वाङ्गिय तोमुडै याक्कैयैत् तुडवा
नीळ नीड्गिय परवैयिन् विण्णुर् निमिर्न्दान् 1169

आळुम् नायकन्-लोकपालक जगन्नाथ प्रभु श्रीराम ने; अम् कैयिल्-अपने सुन्दर
हस्त से; तीण्डिय अतत्ताल्-स्पर्श किया, उससे; मूळुम् चापत्तिन्-प्रभावपूर्ण शाप
के कारण; मुन्तिय-आरब्ध; तीविन्नै-पाप को; मुडित्तान्-मिटकर; तोळुम्
वाङ्किय-कटी भुजाओं के साथ; तोम् उटै याक्कैयै-दोषयुक्त शरीर को; तुडवा-
छोड़कर; नीळम् नीड्गिय-नीड़ को त्यागकर आये; परवैयिन्-पक्षी के समान; विण्
उङ्ग निमिर्न्दान्-आकाश को स्पर्श करते हुए बढ़ा। ११६९

उसके शरीर पर भुवनगोप्ता जगन्नाथक श्रीराम के सुन्दर हाथ का
स्पर्श हो गया था। इसलिए सारे पाप कट गये, जो प्रबल शाप के कारण
उसे लगे थे और फल दे चुके थे। भुजाओं-रहित दोषसहित अपना शरीर
छोड़कर वह नीड़मुक्त पक्षी के समान आकाश में एक दिव्य रूप में खड़ा
हो गया। ११६९

विण्णि निन्ऱवन् विरिञ्जने मुदलिनर् यार्क्कुम्
कण्णि निन्ऱव निवर्त्तेनक् करुत्तुर् वृणर्न्दान्
अण्णि यन्ऱवन् गुणङ्गळै वाय्दिरन् दिशैत्तान्
पुण्णि यम्बयक् किन्ऱुळि यरियदैप् पौरुळे 1170

विण्णिन् निन्ऱवन्-आकाश में खड़ा होकर; विरिञ्चत्ते मुतलितर्-ब्रह्मादि;
यार्क्कुम्-सभी की; कण्णिन् निन्ऱवन्-दृष्टि के सामने स्थित; इवन् अँत-भगवान
ये हैं, यह; करुत्तु उङ्ग उणर्न्तान्-मन में स्थिर रूप से जान लिया; अन्तवन् कुणङ्गळै-
उनके कल्याणगुणों को; अण्णि-स्मरण कर; वाय् तिरन्तु-मुख खोलकर; इचैत्तान्-

गान किया; पुण्णियन्-पुण्य; पयक्किन्ऱुळि-जब फलीभूत होता है, तब; अँ पोरुळे अरियन्-कौन सी वस्तु दुर्लभ है । ११७०

आकाश में खड़ा होकर उसने अपने मन में यह स्थिर रूप से जान लिया कि ये ही वे परमदेव हैं, जो विरंचि आदि देवताओं की (ध्यान-) दृष्टि के लक्ष्य बने हैं। वह उनके कल्याणगुणों का स्मरण करके गान करने लगा। हाँ ! जब पुण्य फलीभूत होने लगता है, तब कौन सी वस्तु दुर्लभ होती है ? । ११७०

ईन्ऱवत्तो	वैप्पोरुळु	मैल्लैतीर्	नल्लऱत्तिन्
शान्ऱवत्तो	तेवर्	तवत्तिन्	ऱत्तिप्पयनो
मून्ऱु	कवडाय्	मुळैत्तैळुन्द	मूलमो
तोन्ऱि	यऱवित्तैयेन्	शावत्	तुयर्तुडैत्ताय् 1171

तोन्ऱि-मेरे सामने प्रकट होकर; अरु वित्तैयेन्-दुस्तर पापी (मेरे); चाप तुयर्-शाप का दुःख; तुडैत्ताय्-मिटानेवाले; अँ पोरुळुम् ईन्ऱवत्तो-सभी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता हैं क्या; अँल्लै तीर्-सीमाहीन; नल् अऱत्तिन्-श्रेष्ठ धर्म के; चान्ऱु अवत्तो-प्रमाण जो है, वे हैं क्या; तेवर् तवत्तिन्-देवों के तप के; तत्ति पयत्तो-श्रेष्ठ फलस्वरूप हैं क्या; मून्ऱु कवट्ट आय्-त्रिशाखा में; मुळैऱु अँळुन्त-प्रकट होनेवाले; मूलमो-उनके मूल हैं क्या । ११७१

मेरे सामने प्रकट होकर कठोर पापी मेरा शाप-दुःख दूर करनेवाले हे प्रभु ! क्या आप ही चराचर के जनक हैं ? अनन्त धर्मपथ के पथिकों के लिए प्रमाणस्वरूप आप ही हैं क्या ? आप देवों के कठिन तप के फलस्वरूप अवतरित परमपुरुष हैं ? या ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूपी त्रिशाखाओं के मूल परब्रह्म हैं ? । ११७१

मूलमे	यिल्ला	मुदल्वत्ते	नीमुयलुम्
कोलमो	यार्क्कुन्	दैरिवरिय	कोळ्ऱैयवाल्
आलमो	वालि	तडैयो	वडैक्किडन्द
वालन्तो	वैलैप्	परप्पो	पहराये 1172

मूलमे इल्ला-अनादि; मुदल्वत्ते-मूलपुरुष; नी मुयलुम्-आप जो लेते हैं; कोलमो-वे रूप; यार्क्कुम् तैरिवु अरिय-सबके लिए अज्ञ; कोळ्ऱैय-तथ्यों के आधार पर हैं; आल्-इसलिए; आलमो-(प्रलय के बाद उत्पन्न) वह वृक्ष हैं क्या; आलिन् अटैयो-उस वट का पत्र है क्या; अटै किटन्त पालत्तो-पत्र पर पड़े रहे शिशु हैं क्या; वैलै परप्पो-(वह वट-वृक्ष जिसमें है) वह सागर-विस्तार है क्या; पकराय्-समझाइए । ११७२

अनादि आदिपुरुष ! आप स्वेच्छा से जो रूप लेते हैं, उनके तथ्य किसी के ज्ञानगम्य नहीं होते। आपका मूल रूप क्या है ? प्रलय के जलविस्तार के मध्य प्रकट होनेवाला वट-वृक्ष है ? या उसका पत्र ?

या उस पत्र के शायी शिशु ? या वही जल-विस्तार ? समझाइए कौन सा है ? । ११७२

निन्शैयहै	कण्डु	नितैन्दत्तवो	नीण्मरैहळ
उत्तशैयहै	यत्तवैताञ्	जौत्तन	वौळुक्कित्तवो
अत्तशैयदैन्	मुत्तन	मिच्चैयहै	यैयदिताय्
पित्तशैयव	दिल्लाप्	पैरुज्जैल्व	नीपैर्राय् 1173

पित्त चैयवतु इल्ला-और भी जोड़ा जाय ऐसा जो नहीं; पैरुम् चैल्वम्-ऐसे बड़े (मोक्ष) धन के; पैर्राय् नी-स्वामी हैं आप; नीण् मरैहळ-अनन्त वेदों ने; निन् चैयकै कण्डु-आपके कार्य देखकर; नितैन्दत्तवो-स्मरण करके कहे; अत्तवै ताम्-(या) वे; उत्त चैयकै-आपके कृत्यों को; चौत्तन औळुक्कित्तवो-निर्धारित कर कहनेवाले हैं; इ चैयकै अयत्तिताय्-यह (मुझे तारने का) काम करने की कृपा की; मुत्तम् अत्त चैयतेत्त-(इनके योग्य) पहले मैंने क्या पुण्य किया था । ११७३

आप मोक्षनिधि के स्वामी हैं । वह निधि ऐसी है, जिसमें और जोड़ने की आवश्यकता नहीं रहती, न जोड़ना ही सम्भव है । वेदों ने आपके कार्य देखकर वर्णन किये हैं या उनके कहे अनुसार आप कार्य करते हैं ? आपने मेरे प्रति यह जो हित-कार्य किया है, उसके योग्य मैंने क्या पुण्य किया था ? । ११७३

काण्बार्क्कुड्	गाणप्	पडुम्बोर्कुड्	गण्णाहिप्
पूण्बाय्पो	निर्ऱियाल्	यादौत्तुम्	पूणादे
माण्बा	लुलहै	वयिर्ऱौळित्तु	वाङ्गुदियाल्
आण्बालो	पैण्बालो	वप्पालो	वैप्पालो 1174

काण्बार्क्कुड्-दर्शकों और; काणप्पटम् पौर्कुड्-दृश्य पदार्थों की; कण्णाकि-दृष्टि वनकर; यातु औत्तुम् पूणाते-विना किसी का धारण किये ही; पूण्पाय् पोल्-धारक के समान; निर्ऱि-स्थित हैं; उलकै-सर्वलोकों को; माण्पाल्-दिव्यशक्ति से; वयिर्ऱौळित्तु-उदर में छिपाये रखकर; वाङ्गुक्ति आल्-(कल्पावस्थ में) फिर से बाहर लाते हैं; आण् पालो-आप पुरुष जाति हैं; पैण्पालो-स्त्री; अप्पालो-दोनों के परे हैं; औ पालो-कौन जाति है । ११७४

आप दर्शकों और दृश्यों की आँखें है ! आप सचमुच किसी का धारण नहीं करते पर देखने में धारण करते से स्थित हैं ! [यह गीता के (९-५) श्लोक का भाव है । श्लोक यह है— “न च मत्स्यानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् । भूतभृन्न भूतस्यो ममात्मा भूतभावनः ॥” इसको ऐसे ही मनन करके समझना है ।] अपनी (शक्ति) महिमा से प्रपंच को अपने उदर में छिपा लेते हैं और वाद प्रकट करते हैं ! क्या आप पुरुष जाति के हैं या स्त्री जाति के ? या दोनों नहीं है ? या दोनों के परे कोई (नपुंसक) जाति है ? कौन सा लिंग है आपका ? । ११७४

आदिप्	पिरमनुनी	यादिप्	परमनुनी
आदियेनुम्	वोरुळुक्	कप्पालुण्	डायिनुनी
शोदिनी	शोदिच्	चुडर्प्पिळम्बुम्	नीयेन्ऱु
वेदमुरं	शैय्दाल्	वैळ्हारो	वैरुळ्ळार् 1175

आति पिरमनुम् नी-सृष्टिमूल ब्रह्मा भी आप है; आति परमनुम् नी-उनके भी आदि परब्रह्म भी आप है; आति अँनुम् पोरुळुक्कु-आदि कहलानेवाले तत्त्व के भी; अप्पाल् उण्टु आयिनुम्-परे कुछ हो तो; नी-वह भी आप हैं; चोति नी-ज्योतिस्वरूप हैं आप; चोति चुडर् पिळम्पुम्-ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी; नी अँन्ऱु-आप ही है, यह; वेतम् उरं चैय्ताल-वेद कहते हैं तो; वैरु उळ्ळार्-वेदवाह्य सम्प्रदायों के देव; वैळ्कारो-नहीं शरमायेंगे क्या । ११७५

सृष्टि के मूल ब्रह्मा आप ही है । उनके भी आदि आप ही है । अगर आदि के आदि कुछ हैं तो वह भी आप ही है । आप ज्योतिस्वरूप सब है । ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी आप ही हैं । यह वेदों का निष्कर्ष है । यह सुनकर अन्य सम्प्रदाय जिनको आदिदेव कहते हैं, वे देव कहाने पर नहीं शरमायेंगे क्या ? । ११७५

अँण्डिशैयुन्	दिण्शुवरा	येळेळ्	निलैयेडुत्त
अण्डप्	पेरुङ्गोयिर्	कैल्ला	मळ्हाय
मण्डलङ्गळ्	मून्ऱिन्	मेत्तिन्ऱु	मलराद
पुण्डरिह	मौट्टिन्	पौहुट्टो	पुरैयम्मा 1176

अँण् तिचैयुम्-आठों दिगन्त; तिण् चुवराय्-सबल भित्तियां बने हैं; एळ् एळ् निलै अँटुत्त-ऐसे चौदह तल्लों में बने; अण्ट पेरुम् कोयिर्कु अँल्लाम्-अण्डों के बने सम्पूर्ण मन्दिर से; अळ्कु आय-अधिक सुन्दर; मण्डलङ्कळ् मून्ऱिन् मेल् नित्तुड- (सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र-) त्रिमण्डलों के ऊपर स्थित होकर; मलरात-अविकसित; पुण्डरिक्कम् मौट्टिन्-कमलकली का; पौहुट्टो-कर्णिका (परमपद); पुरै-आपका वासस्थान है क्या; अम्मा-री मैया । ११७६

चौदह लोकों का एक अण्ड है । उनमें हर एक दिगन्त की भित्तियों से आवृत है । वह अण्ड मन्दिर के समान है । उस सुन्दर मन्दिर के ऊपर सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र —तीन मण्डल हैं । उनके ऊपर अविकसित कमल की कली है । उसकी कर्णिका जो है (परमपद) क्या वही आपका वासस्थान है ? । ११७६

मण्बा	लमरर्	वरम्बारुड्	गाणाद
अँण्बा	लुयर्न्व	वैरियोङ्गु	नल्वेळ्वि
उण्वाय्नी	यूट्टुवाय्	नीयिरण्डु	मौक्किन्ऱु
पण्बा	ररिवार्	पहर्वाय्	परमेट्टि 1177

परमेष्टि-परमेष्ठी; मण् पाल् अमरर्-भूसुर; आरुम्-कोई भी; वरम्पु
काणात-जिसका ठिकाना नहीं देख पाते; अण्पाल् उयरन्त-संख्या में बढ़े; अरि
ओङ्कु-जिनमें अग्नि पाली जाती है, उन; नल् वेळ्वि-श्रेष्ठ यज्ञों में; उण्पाय् नी-
(हवि-) भोक्ता भी आप हैं; ऊदुवाय् नी-अन्य देवों को भोग करानेवाले भी (या हवि
देनेवाले भी) आप ही हैं; इरण्टुम् ओक्किन्ऱ- (भोजनदाता, भोजनकर्ता) दोनों के
साथ रहने का; पण्पु-प्रकार; अरिवार् यार्-जाननेवाले कौन हैं । ११७७

परमेष्ठी ! भूसुर असंख्य यज्ञ करते हैं । उनमें अग्निदेव का
आवाहन होता है और उनके पास हवि अर्पित की जाती है । उस हवि
के भोक्ता भी आप हैं और उसका उच्छिष्ट देवताओं को आहार करानेवाले
भी आप ही हैं । (हवि के देनेवाले भी आप हैं ।) भोक्ता तथा
भोजनदाता दोनों आप ही एक साथ रहते हैं । यह महिमा जान सकनेवाले
कौन हैं ? । ११७७

निर्कु	नैडुनीत्त	नीरिन्	मुळैत्तैळुन्द
मौक्कुळे	पोल	मुहुळित्त	वण्डङ्गळ्
ओक्कवुयर्न्	दुन्नुळे	तोन्ऱि	यौळिक्किन्ऱ
पक्क	मरिदर्	कौळिदो	परम्बरत्ते 1178

परम्परत्ते-परात्पर; निर्कुम् नैडुम् नीत्तम्-विपुल महाप्रलय के; नीरिन्-
जल में; मुहुळित्त-कली के समान उठे; अण्डङ्कळ्-अण्डगोल; ओक्क उयरन्तु-
एक साथ ऊपर आकर; उन् उळे तोन्ऱि-आपके अन्दर से प्रकट होकर; ओळिक्किन्ऱ-
फिर कल्पान्त के प्रलय में छिप जाते हैं; पक्कम्-वह पक्ष; अरितर्कु अळितो-जानने
के लिए सुलभ है क्या । ११७८

परात्पर ब्रह्म ! महाप्रलय के जलविस्तार में से कली के समान अण्ड
निकलकर ऊपर आते हैं । वे आप ही के अन्दर से बाहर प्रकट होते हैं,
फिर यथासमय कल्पान्त के प्रलय में आप ही में समा जाते हैं ! यह
आपका अतिशय पक्ष यथार्थ रूप में समझ लेना सुलभ है क्या ? । ११७८

मायप्	पिरवि	मयनीक्कि	माशिल्लाक्
कायत्तै	नल्हित्	तुयरिन्	करैयेर्ऱिप्
पेयौत्तेन्	बेदैप्	पिणक्कळुत्त	वैम्बेरुमान्
नायौत्ते	नैन्त	नलनिळैत्ते	नार्त्तेन्ऱान् 1179

माय पिरवि-वंचकमय (राक्षस-)जन्म-सुलभ; मयल् नीक्कि-मोह हटाकर;
माचु इल्ला-निर्दोष; कायत्तै नल्कि-शरीर को देकर; तुयरिन् करै एर्ऱि-दुःख
(सागर) के तीर पर चढ़ाकर; पेय् ओत्तेन्-भूत के समान; पेत्तै पिणक्कु-अज्ञता
से गृहीत पातकमय जीवन; अळुत्त-काटनेवाले; वैम्बेरुमान्-मेरे प्रभु; नाय्
ओत्तेन् नान्-श्वान-सम मैंने; अन्त नलन् इळैत्तेन्-क्या ही सुकर्म किया था । ११७९

मेरा वंचक राक्षस-जन्म था, उससे अत्यन्त मोह में फँसा हुआ था ।

आपने उस मोह का जाल काट दिया । फिर यह निर्दोष दिव्य शरीर प्रदान किया । दुःख-सागर के तीर पर चढ़ा दिया । भूत के समान मेरे कुजीवन का बन्धन काटकर मुझे उबारनेवाले हे प्रभु ! मैं कुत्ते का जीवन बिता रहा था । मैंने क्या ही सुकार्य किया था ? आपकी निर्हेतुक कृपा भी कितनी बड़ी है ! । ११७९

अँन्त्राङ्कु	गिनिदियम्वि	यिन्त्ररियक्	कूरुवैन्नेल्
ओन्त्राडु	तेव	रुद्रिक्	कैन्नुन्नात्
तन्त्रायैक्	कण्णुर्	कन्त्रनैय	तन्मैयनाय्
निन्त्रानैक्	कण्डा	नैन्निन्त्रार्	नेर्निन्त्रान् 1180

अँन्त्राङ्कु-ऐसा; इत्तिनु इयम्पि-सन्तोषक रीति से स्तुति करके; इन्ड्र-अब; अरिय कूरुवैन्नेल्-प्रकट कहूँ तो; तेवर् उरुतिकु-देवों के हित में; ओन्त्रातु-उचित नहीं रहेगा; अँन्त्र उन्ना-यह सोचकर; तन् तायै कण् उर्-अपनी माँ को जिसने देखा हो, उस; तन्मैयनाय्-(बछड़े की-सी) स्थिति में आकर; निन्त्रानै-जो खड़ा रहा, उस कबन्ध को; नैन्निन्त्रार्-धर्मपथिकों को; नेर् निन्त्रान्-सामने आकर दर्शन देनेवाले (श्रीराम) ने; कण्डात्-देखा । ११८०

स्तुति में इतना कहा कबन्ध ने । वह और भी कहना चाहता था । लेकिन, 'और भी कहूँ तो अवतार-रहस्य खुल जायगा । वह देवों के हित में अच्छा नहीं रहेगा ।' यह सोचकर वह बिछुड़ी माता गाय से पुनः प्राप्त बछड़े की-सी हालत में अत्यन्त आनन्द के साथ चुप खड़ा रह गया । ज्ञानमार्गियों को उनके ध्यान में दर्शन देनेवाले श्रीराम ने उसको उस स्थिति में देखा । ११८०

पारा	यिळैयवन्ने	पट्टविवन्	वेरैयोर्
पेराळन्	राना	योळियोङ्गु	पैर्रियन्नाय्
नेराहा	यत्तिन्	निर्किन्त्रा	नीयिवनै
आरा	यैन्नुवन्नुम्	यार्हौलो	नीयैन्त्रान् 1181

इळैयवन्ने-अनुज; पाराय्-देखो; पट्ट इवन्-(हमारे हाथों) मरा यह; वेरै ओर्-अन्य एक; पेर् आळन् ताताय्-सम्मान्य (व्यक्ति) बनकर; ओळि ओङ्कु-तेज में उन्नति; पैर्रियन् आय्-प्राप्त करके; नेर् निर्किन्त्रान्-हमारे सामने खड़ा है; नी इवन् आराय्-तुम इसको परख लो; अँन्-(श्रीराम के) कहने पर; अवन्नुम्-उन्होंने भी; नी यार् कौलो-तुम कौन हो तो; अँन्त्रान्-पूछा । ११८१

तब श्रीराम ने लक्ष्मण को सुझाया कि छोटे भैया ! देखो । जिसको हमने मारा था, वह बहुत सम्मान के योग्य और तेजोमय रूप में खड़ा है । पता लगा लो कि वह सचमुच कौन है ? तब लक्ष्मण ने उससे पूछा कि तुम कौन हो तो ? । ११८१

शन्दप्पू णलङ्गल् वीरन् दनुवंनु नामत् तेनोर्
 कन्दर्पपन् शाबत् तालिक् कडैप्पडु पिरवि कण्डेन्
 वन्दुर्रीर् मलर्क्कै तीण्ड मुन्नुडे वडिवु पेर्रेन्
 अन्दैक्कु मैन्दै नीर्या तिशैप्पडु केण्मि नैन्ऱान् 1182

चन्तम् पूण्-सुन्दर आभरण; अलङ्कल् वीरन्-और मालाधारी वीर; तनु
 अन्तम् नामत्तेन्-तनु का नामधारी हैं; ओर् कन्तर्पपन्-एक गन्धर्व हैं; चापत्ताल्-
 शाप के कारण; इ कटै पटु पिरवि-यह नीच जन्म; कण्डेन्-प्राप्त कर चुका था;
 वन्दु उर्रीर्-आप पधारे; मलर् कै तीण्ड-(आपके) कमल-सम हाथों के स्पर्श से;
 मुन् उटै वडिवम्-मूल रूप; पेर्रेन्-प्राप्त किया; अन्तैक्कुम् अन्तै नीर्-मेरे पिता
 के पिता आप; इचैप्पतु-मेरा विनय-कथन; केण्मिन्-सुनिए; नैन्ऱान्-कहा । ११८२

तव उसने उत्तर दिया । वह सुन्दर आभरणों से और हारों से भूषित
 था । उसने कहा कि मैं तनु नामधारी गन्धर्व हूँ । किसी शापवश इस
 नीच जन्म को प्राप्त हुआ था । आप कृपा करके आये और आपके
 कमल-हस्तों के स्पर्श से मुझे अपना पूर्वरूप प्राप्त हो गया । मेरे पिता
 के पिता ! मैं कुछ मुनाता हूँ । आप सुनिए । ११८२

कणैयुलाळ् जिलैयि नीरेक् काक्कुन्न रिल्लै येनुम्
 इणैयिला डन्नै नाडर् केयित्त शैव्दर् केर्कुम्
 पुणैयिला दवरक्कु वेलै पोक्करि दन्न देपोल्
 तुणैयिला दवरक्कु मिन्ऱाड् पहैप्पुलत् दौलैत्तु नौक्कल् 1183

कणै उलाम् चिलैयिनीरै-शरासन-हस्त आपकी; काक्कुन्नर् इल्लै-रक्षित
 करने में समर्थ कोई नहीं है; एनुम्-तो भी; इणै इलाळ् तन्नै-अप्रमेय (सीताजी
 को); नाडर्कु-खोजने के हेतु; एयित्त-आवश्यक; चैय्तर्कु-(काम) करने को;
 एर्कुम्-(सहायता प्राप्त करवा) उचित होगा; पुणै इलातवर्कु-नाव जिनके पास
 नहीं है, उन्हें; वेलै पोक्कु-समुद्र-तरण; अरितु-कठिन है; अन्तते पोल्-उसी तरह;
 पक्कै पुलम् तौलैत्तु-शत्रु का समर में संहार करके; नौक्कल्-डूर करना; तुणै
 इलातवर्कुम्-सहायक-हीनों के लिए; इन्ऱ- (सम्भव) नहीं है । ११८३

यह सर्वविदित है कि शरासनधारी आपकी सहायता करने का
 सामर्थ्यशाली कहीं नहीं है । तो भी अनुपम देवी सीता को खोजने हेतु
 आवश्यक और योग्य कार्य करने के लिए कुछ लोगों को सहायक बना लेना
 ही उचित होगा । जिसके पास नाव नहीं, उसे समुद्र पार करना कठिन
 है ! वैसे ही समरांगण में शत्रुओं का नाश करना ही तो निस्सहायों के लिए
 साध्य नहीं है । ११८३

पळिप्परु निलैमै याण्मै पहरवदेन् पडुम् पोडत्
 तुळिप्पेरुन् दहैमै शान्ऱ वन्दण नुयिरत्त वल्लाम्

अळिप्पदर् कीरुव नान वण्णलु मरिदि रन्ऱे
 ओळिप्परुन् दिरल बूद गणत्तोडु मुरैयु मुण्मै 1184

पळिप्पु अरु-अनिद्य; निलैम् आण्मै-आपके स्थान और पौरुष का; पकरवतु
 अँन्-क्या कहना; पनुम पोडत्तु उळि-पद्मपीठ पर (के); पेरुम् तर्कमै चान्ऱु-
 उत्कृष्ट और शानदार; अन्तणन् उयिरत्त-ब्रह्मा द्वारा सृष्ट; अँल्लाम्-सारे (लोकों
 व जीवों) को; अळिप्पतर्कु-संहार करनेवाले; ओरुवन् आत अण्णलुम्-एक
 बने ईश्वर भी; ओळिप्पु अरुम्-अलग न होनेवाले; तिरल अ-बलशाली; पूत
 कणत्तोडुम्-भूतगणों के साथ; उरैयुम् उण्मै-रहते है, सो तथ्य; अरितिर अन्ऱे-
 आप जानते हैं न। ११८४

आपके अनिद्य गौरव और पौरुष (वीरता) का कहना क्या ?
 पद्मपीठासीन ब्रह्मा से सृष्ट सारे लोकों के संहारक हैं शिवजी। वे भी
 अपने बलशाली भूतगणों को सदा साथ रखते हैं। यह तथ्य आप जानते
 ही हैं न ?। ११८४

आयदु शैयहै यैन्व दरत्तुऱै नैरियि तैण्णित्तु
 तीयवर्च् चेरुहि लाडु शैव्वियोर्च् चेरुम् शैयहै
 तायिनु मुयिर्क्कु नल्हुञ्ज जवरियैत् तलैप्पट्टु टन्नाळ्
 एयदोर् नैरियै यैय्दि यिरलैयड् गुन्ऱ मेरि 1185

अरु तुरै नैरियित्तु अँण्णि-धर्म-मार्ग का विचार करके; तीयवर् चेरुक्किलातु-बुरों
 से नहीं मिलकर; चैव्वियोर् चेरुम् चैय्कै-अच्छों के साथ मिलने का काम; चैय्कै
 अँन्पतु आयतु-कर्तव्य-कर्म है; उयिर्क्कु-जीवों को; तायितुम्-माता से बढ़कर;
 नल्कुम्-सहायक; जवरियै-शबरी को; तलैप्पट्टु-मिलकर; एयतु-उनसे निदिष्ट;
 नैरियै अँय्ति-मार्ग पर जाकर; इरलै अम् कुन्ऱम् एरि-ऋष्यमूक पर्वत पर
 चढ़कर। ११८५

धर्म-मार्गों का अवलम्बन करके, विना बुरों की संगति किये अच्छों के
 साथ मिलना अब कर्तव्य कर्म है। आप शबरी के पास जाकर उनसे
 मिलिए। वे माता से भी अधिक हित करेंगी। वे मार्ग बतायेंगी।
 आप उनके बताये मार्ग को पकड़कर जाइए और ऋष्यमूक (ऋष्य— एक
 तरह का हरिण है, उसके नाम से भूषित) पर्वत पर चढ़कर—। ११८५

कदिरवन् शिऱुव नान कनहवा णिरत्ति तानै
 अँदिरैर्दिर् तळुवि नट्पि निनिदमर्न् दवत्ति नोण्ड
 वैदिर्पोरु तोळि तालै नाडुदल् विळुमि दैन्ऱान्
 अदिर्कळल् वीरर् तामु मन्ऱन्दे यमैव दानार् 1186

कदिरवन् शिऱुवन् आत-सूर्य का पुत्र; कनक वाळ् निरत्तितात्तै-उज्ज्वल कनक-
 वर्ण (सुग्रीव) को; अँतिर् अँतिर् तळुवि-आमने-सामने मिलकर; नट्पि इत्ति
 अमर्न्तु-मित्रता में सुख से रहकर; अवत्तिन्-उसकी सहायता के साथ; ईण्ड-शीघ्र;

वैतिर पौर-बांस के समान; तोळिताळ-कंधों की (सीता) को; नादुतल्-खोजना; विळुमि तु अंतुशान्-श्रेयस्कर होगा, कहा; अतिर कळल् वीरर् तामुम्-क्वणनशील पायलधारी वीर भी; अन्तते-वही; अमैवतु आतार्-करने में लगे । ११८६

वहाँ सुग्रीव से मिलिए । वह कनकवर्ण वानरनायक सूर्य का पुत्र है । उसके साथ मित्रता कर लीजिए । उसकी सहायता लेकर बांस के समान कन्धों वाली सीतादेवी को खोजिए । वही श्रेष्ठ होगा । कबन्ध की यह सलाह गानकर क्वणनशील पायलधारी वीर श्रीराम और लक्ष्मण चलने लगे । ११८६

आनपित्	रौळुदु	वाळत्ति	यन्दरत्	तवनुम्	बोनात्
मानवक्	कुमरर्	तामु	मत्तिशं	वळिक्कोण्	डेहि
कान्तमु	मलैयु	नोङ्गिक्	कङ्गुल्वन्	दिरुक्कुङ्	गाले
आनैयि	निरुक्कै	यैन्तु	मदङ्गन्	दडुक्कल्	शैर्न्दार् 1187

आनपित्-उसके बाद; अवतुम्-वह (कबन्ध) भी; तौळुतु वाळत्ति-विनय और स्तुति करके; अन्तरत्तु पोतान्-आकाश में गया; मानव कुमरर् तामुम्-मानव-कुमार भी; अ तिचै वळि कौण्डु एकि-उस दिशा में राह बनाकर गये; कान्तमुम् मलैयुम् नोङ्कि-कानन और पर्वत पार करके; कङ्कुल् वन्तु-रात आकर; इङ्कुम् काले-जब जम गयी, तब; आनैयि इरुक्कै अंतुम्-गज का स्थान कहलानेवाले; मत्तङ्कन् अतु-मातंग ऋषि के; अटुक्कल्-पर्वत पर; चैर्न्दार्-पहुँचे । ११८७

उसके बाद कबन्ध भी उनकी विनय के साथ स्तुति करके स्वर्ग चला गया । मानव (मनुकुल-जात) वीर भी कबन्ध की निर्दिष्ट (दक्षिण) दिशा में गये । अनेक कानन और पर्वत पार करके वे जाते रहे । खूब रात हो गयी, तब वे मातंग ऋषि के पर्वत पर आये । वहाँ मातंग (हाथी) रहते थे । ११८७

12. शवरि पिउप्पु नोङ्गु पडलम् (शबरी जन्म-विमोचन पटल)

कण्णिय	तरुदर्	कौत्त	कर्पहत्	तरुवु	मैन्त
उण्णिय	नल्हुम्	जैल्व	मुरुनरुम्	जोलैच्	चालै
अण्णिय	विन्व	मन्त्रित्	तुन्बङ्ग	ळिल्लै	यान्
बुण्णियम्	पुरिन्दोर्	वैहुन्	दुरक्कमे	पोलु	मन्त्रे 1188

कण्णिय-इच्छित; तरुत्तु औत्त-(पदार्थ) देने में समर्थ; कर्पक तरुवुम् अंतु-कल्पतरु के समान; उण्णिय-खाद्य (फलादि को); नल्कु-द देनेवाले; चैल्वम् उडुम्-समृद्ध; चोलै-उपवनों से पूर्ण; चालै-(मातंग का) आश्रम; अण्णिय इन्पम् अन्त्रि-सबसे गण्य सुख के सिवा; तुन्पङ्कळ् इल्लै आत-दुःख जहाँ नहीं है; पुण्णियम् पुरिन्तोर् वैकुम्-पुण्यपुरुष जहाँ रहते हैं; दुरक्कमे पोलुम्-स्वर्ग के समान था । ११८८

शबरी का आश्रम इच्छित सभी मनोकामनाओं को पूरा करनेवाले

कल्पतरु कहा जा सकता था । खाद्य फल आदि यथेष्ट दे सके, उतने समृद्ध उपवन उसके चारों ओर थे । उसी आश्रम में मातंग मुनि रहते थे । वह पुण्यकृतों का प्राप्ति-स्थान साक्षात् स्वर्ग ही था, जहाँ चाहे हुए सभी सुख ही सुख मिलते हैं । कोई दुःख नहीं होता । ११८८

अन्तदा मिरुक्कै नण्णि याण्डुनिन् इळविल् कालम्
तन्नैये निनैन्दु नोर्कुञ्ज शवरियैत् तलैप्पट् टन्नाट्
किन्नुरै यरुळित् तीदिन् इरुन्दनै पोळु मेत्रात्
मुत्तवर् किदुर्वैन् रैण्ण लावदोर् मूल मिल्लान् 1189

अवर्कु मुत्त-उनके पूर्व; इतु-ये; अँत्तु अँण्णल् आवतु-ऐसा मानने योग्य; ओर्-कोई; मूलम् इल्लात्-(जिनका) मूल नहीं है; अन्ततु आम्-(वे श्रीराम) ऐसे; इरुक्कै नण्णि-स्थान में पहुँचकर; आण्डु निन्नु-वहाँ रहकर; अळवु इल् कालम्-अगणित काल तक; तन्नैये-अपना (श्रीराम का) निन्नतु-ध्यान करके; नोर्कुम्-जो तपस्या करती रहीं; चवरियै तलैप्पट्टु-उन शबरी से मिलकर; अन्ताट्टु-उनको; इत् उरै अरुळि-मधुर उपदेश देकर; तीतु इन्नु-विना कष्ट के; इरुन्ततै पोळुम्-रहीं, शायद; अँत्रात्-कहा । ११८९

श्रीराम आदिदेव थे । उनके पूर्व कोई नहीं रहे । वे सृष्टि के मूल थे । वे उस प्रख्यात मातंगाश्रम पर आये । वहाँ शबरी श्रीराम का ही ध्यान करते हुए अकूत काल से तपस्या कर रही थीं । श्रीराम उनसे मिले और उनका कुशल-क्षेम सम्बन्धी प्रश्न किया । आप विना किसी कष्ट के सुखी तो रहती हैं न ? ११८९

आण्डव लन्बि नेत्ति यळुदिळि यरुविल् कण्णळ्
माण्डवैन् मायप् पाशम् वन्ददु वरम्बिल् कालम्
पूण्डमा दवत्तिन् शैल्वम् बोयदु पिरवि यँत्राळ्
वेण्डिय कौणर्न्दु नल्हि विरुन्दुशैय् दिरुन्द वेलै 1190

आण्डु-तब; अवळ्-शबरी; अरुवि कण्णळ्-सरिता के समान आँसू की धारा वाली आँखों के साथ; अत्तिन् एत्ति-भक्ति के साथ स्तुति करके; अँत्तु माय पाशम्-मेरी माया का पाश; माण्डतु-मिट गया (आपके दर्शन से); वरम्पु इल् कालम्-असीम काल से; पूण्ड-मैंने जो धारण कर लिया था, उस; तवत्तिन् शैल्वम्-उस तप का भाग्य; वन्ततु-आ मिला; पिरवि पोयतु-जन्म कट गया; अँन्ता-कहकर; वेण्डिय-निवेदनाहँ; कौणर्न्दु-(फल आदि) लाकर; नल्कि-देकर; विरुन्तु चैय्तु-आतिथ्य करके; इरुन्त वेलै-जब रहे, तब । ११९०

तब शबरी की आँखों से भक्ति के कारण आँसू की धारा सरिता के समान बहने लगी । उन्होंने श्रीराम की स्तुति की । कहा कि स्वामी ! आपके दर्शन से मेरा मायापाश कट गया । निस्सीम काल से मैं तपस्या कर रही हूँ । उसका सुफल आज मुझे मिल गया । मेरा जन्म-मोचन हो

गया है। फिर उन्होंने उनके भोजन के योग्य फल आदि लाकर अतिथि-सत्कार किया। जब श्रीराम और लक्ष्मण विश्रांत रहे, तब— । ११९०

ईशनुङ्	गमलत्	तोनु	मिमैयवर्	यारु	मैन्दै
वाशवन्	रानु	मीण्डु	वन्दनर्	महिळ्नुदु	नोक्कि
आशरु	तवत्तुक्	कैल्लै	यणुहिय	दिरामर्	काय
पूजतै	विरुम्बि	यैम्बार्	पोदुदि	यैन्नरु	पोतार् 1191

अँनूतै—मेरे पिता; ईचनुम्—शिवजी और; कमलतूतोतुम्—कमलासन; इमैयवर् यारुम्—सुर सब; वाचवन् तानुम्—वासव भी; ईण्डु—यहाँ; वन्ततर्—आये; मकिळ्नुतु नोक्कि—सन्तोष के साथ मुझे देखकर; आचु अरु—निर्दोष; तवत्तिरुक्कु अँल्लै—तप का अन्त, सिद्धि का काल; अणुकियतु—निकट आ गया; इरामर्कु आय—श्रीराम की; पूजतै विरुम्पि—पूजा प्यार के साथ करके; अँम् पाल् पोतुति—हमारे पास पहुँच जाओ; अँन्नरु पोतार्—कहके गये । ११६१

शबरी बोलीं। मेरे तात ! कमलासन, सभी देव और वासव यहाँ आये थे। उन्होंने मुझे सन्तोष के साथ देखकर कहा कि तुम्हारे निर्दोष तप का सिद्धिकाल आ गया। तुम श्रीराम की पूजा करना चाहती हो। वह पूरा करके हमारे पास आ जाओ। ११९१

इरुन्दनै	नैन्दै	नीयीण्	डैय्दुदि	यैन्नन्	दन्मै
पौरुन्दिड	विन्नरु	तानैन्	पुण्णियम्	वूत्त	दैन्नरु
अरुन्दवत्	तरशि	तन्नै	यन्बुर	नोक्कि	यैङ्गळ्
वरुन्दुरु	तुयरन्	दीर्त्ता	यम्मनै	वाळि	यैन्नरान् 1192

अँनूतै—नाथ; नी ईण्डु अँयुत्ति—आप इधर पधारेंगे; अँनूनुम् तन्मै—यह हालत; पौरुन्दिड—जब हुई; इरुन्दनै—(प्रतीक्षा में) रही; इन्नरु तान्—आज ही; अँन् पुण्णियम्—मेरा पुण्य; पूत्ततु—फूला (फलीभूत हुआ); अँन्नरु—ऐसा जिन्होंने कहा; अरुम् तवत्तु अरचि तन्नै—कठिन तपस्या की, उन रानी को; अन्नपु उरु—कृपा के साथ; नोक्कि—देखकर; अम्मनै—माताजी; अँङ्कळ् वरुन्दुरु—हमें कष्ट देनेवाले; तुयरम्—श्रम-दुःख को; तीर्त्ताय्—दूर किया; वाळि—जिओ; अँन्नरान्—कहा । ११६२

मेरे नाथ ! आप यहाँ पधारेंगे—जब इसका भान लगा तभी से मैं आपकी प्रतीक्षा में रह रही हूँ। आज ही मेरा पुण्य सफलीभूत हुआ। जब शबरी ने राम से यह आदरवचन कहा, तब श्रीराम ने उन तपस्विनियों में रानी से कहा कि माता ! आपने हमारा श्रम और श्रमजनित दुःख दूर किया। आप चिरजीव रहें। ११९२

अन्नहनु	मिळैय	कोवु	मन्नरव	णुन्नैन्द	पिन्नै
विन्नैयुरु	नोन्नवि	ताळु	मैय्मैयि	नोक्कि	वैय्य

तुनैपरित् तेरोन् मैन्द निरुन्दवत् तुळक्किल् कुन्ऱम्
निनैवरि दायर् कौत्त नैरियेला नित्तैन्दु शीन्नाळ् 1193

अतकत्तुम्-अनघ के; इळैय कोवुम्-और लघुराज के; अन्ऱ-उस विन;
अवण्-वहाँ; उरैन्त पिन्ऱै-ठहरने के बाद; वित्तै अङ्ग-कर्ममुक्त; नोन्ऱपित्ताळुम्-
तपस्विनी ने भी; मैय्मैयिन् नोक्कि-यथार्थ रूप से देखकर; वैय्य-गरम; तुत्तै
परि-शीघ्रगामी अश्वों के; तेरोन्-रथ पर जानेवाले (सूर्य) का; मैन्तन्-पुत्र,
सुग्रीव; इरुन्त-जहाँ रहा; अ तुळक्कु इल्-उस अचल; कुन्ऱम्-पर्वत के; नित्तै
अरितु आयर्कु-मन से जानने में कठिन; औत्त-जो रहा; नैरि अेलाम्-मार्ग सभी;
नित्तैन्तु चोन्नाळ्-स्मरण करके बताया । ११९३

अनघ श्रीराम और उनके छोटे भाई लक्ष्मण उस दिन वही ठहरे ।
बाद कर्मभंजक तपस्विनी ने सच्चे भाव से श्रीराम और लक्ष्मण से
शीघ्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार दीप्तियुत सूर्य के पुत्र, सुग्रीव के
वासस्थान के पर्वत के मार्ग बताया । वे इतने जटिल थे कि मन में धारण
करना भी कठिन था । पर उन्होंने अपनी स्मृति से उस अचल ऋष्यमूक
पर्वत को जाने के सारे मार्ग ठीक-ठीक बता दिये । ११९३

वीट्टिनुक् कमैव दान- मैय्न्नेरि वैळियिर् इाहक्
काट्टुर् मरिज् रैन्न वन्तवळ् कळरिर् ईल्लाम्
केट्टन नैन्व मनो केळ्वियार् चैविहण् मुर्ऱम्
तोट्टव रुणर्वि नुण्णु ममिळ्दत्तिन् शुवैयाय् नित्ऱान् 1194

केळ्वियाल्-उपदेश-श्रवण द्वारा; चैविकळ्-कर्ण (जिनके); मुर्ऱम्-पूर्ण रूप
से; तोट्टवर्-विद्ध हुए (भरे हुए) हैं; उणर्विन्-(वे जानी) अपनी अनुभूति द्वारा;
उण्णुम्-(जिसको) भोगते हैं; अमुत्तत्तिन्-उस अमृत (रूपी) ज्ञान की; शुवैयाय्
नित्ऱान्-जो रुचि के रूप में स्थित हैं, उन (श्रीराम ने); वीट्टिनुक्कु अमैवतु आत-
मोक्ष के; मैय् नैरि वैळि-सच्चे मार्ग को; इर्ऱ आक्-यही है, ऐसा; काट्टुम्-
वरसानेवाले; अरिजर् अैन्त-ज्ञानियों (गुरुओं) के समान; अन्तवळ्-उन्होंने;
कळरिर् ईल्लाम्-जो कहा, वह सब; केट्टत्तन्-ध्यान देकर सुना; अैन्प-ऐसा बड़े
लोग कहते हैं । ११९४

श्रीराम कौन थे और उन्होंने किस विधि शवरी का मार्ग-दर्शन
सुना ? श्रेष्ठ उपदेशों से जिनके कर्ण भर गये थे, उनकी अनुभूति के लक्ष्य
हैं वे । व उन ज्ञानियों से भुगते हुए ज्ञान रूपी अमृत के स्वाद थे । वे
विनय के साथ ऐसे सुनते रहे, मानो शवरी कोई जानी गुरु हों, जो मोक्ष का
मार्ग साफ़-साफ़ बता रहे हों । कवि कहते हैं कि ऐसा बड़े लोगों का कहना
है ! । ११९४

पित्तव लुळुन्दु पेरु योहत्तिन् पेरुडियाले
तन्नुड इरुन्दु तानत् तन्मैयिन् वीडु शार्न्दाळ्

अन्नदु कण्ड वीर रदिशय मळविन् रैयदिप्
 पौन्नडिक् कळल्ह ळार्पप् पुहन्डमा नैरियिर् पोतार् 1195

पिन्-उसके बाद; अवळ्-शवरी; उळन्तु पेंड-परिश्रम से प्राप्त; योक्तुत्तिन् पेंड्रियाले-योग के फलस्वरूप; तन् उटल्-अपना शरीर; तुडन्तु-त्यागकर; अ तन्तिमैयिन्-उस अद्वितीय; वीटु-मुक्तिपद को; चार्नुताळ्-गयीं; अन्नतु कण्ड-उसको देखकर; वीरर्-(श्रीराम और लक्ष्मण) वीरों ने; अळवु इन्ड-अपार; अतिचयम् अयति-विस्मय पाकर; पौन् अटि-सुन्दर चरणों की; कळल्कळ् आर्प्प-पायलों को बजने देते हुए; पुकन्ड-शवरी-कथित; मा नैरियिल्-बड़े मार्ग पर; पोतार्-गये । ११६५

यह कहने के बाद शवरी ने कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त योगशक्ति के बल से अपना शरीर छोड़ दिया । वे मोक्षपद को प्राप्त हो गयीं । श्रीराम और लक्ष्मण को यह देखकर अपार विस्मय हुआ । फिर वे अपने सुन्दर चरणों की पायलों को बजने देते हुए उस दुर्लभ और विकट मार्ग पर जाने लगे, जिसका सम्यक् वर्णन शवरी ने किया था । ११९५

तण्णैनुड् गातुड् गुन्ड नदिहळुन् दविरप् पोतार्
 मण्णिडै वैह रोडुम् वरम्बिला दाडु माक्कळ्
 कण्णिय वित्तैह ळैन्नुड् गट्टळल् कळिद लाले
 पुण्णिय मुहविर् इन्न पम्बैयाम् पौय्है पुक्कार् 1196

तण् अन्तुम्-शीतल; कातुम् कुन्डुम्-वनों और पर्वतों को और; नत्तिकळुम्-नदियों को; तविर-पार करते हुए; पोतार्-जो गये; मण् इटै-(वे) भूमि पर; वरम्पु इलातु-अपार वनकर; वैकल् तोडुम्-दिने-दिने; आटुम् माक्कळ्-स्नान करनेवाले लोगों ने; कण्णिय-जान-बूझकर जो किये; वित्तैकळ् अन्तुम्-वे कर्म रूपी; कट्टळल्-अग्निपुंज; कळितलाले-दूर हो जाते हैं, इसलिए; पुण्णियम् उहविर् अन्न-पुण्यस्वरूप आया जैसे; पम्पै आम्-पंपा नाम के; पौय्कै-सर पर; पुक्कार्-पहुँचे । ११६६

वे अनेक शीतल वनों, पर्वतों और नदियों को पार कर जाते रहे और पंपासर के तीर पर आ गये । उस पंपासर में दिने-दिने असंख्य लोग आकर स्नान करते और अपने पापों को निवार देते थे । उनके पापों का अग्निपुंज वहाँ मिट जाता था । इसलिए वह सर मूर्तपुण्य के समान लगा । ११९६

विज्ञप्ति

विश्व-वाङ्मय से निम्नित अगणित भाषाई-धारा ।

पहन नागरी-पट सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा ॥

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थः—

- १ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद,
नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६४ मूल्य ६०.००
- २ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एल्लुत्तच्छन् कृत १५वीं शती) हिन्दी
अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ० सं० ७५२ मू० ४०.००
- ३ „ —महाभारत-अल्लुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू० ६०.००
- ४ बँगला— कृत्तिवास रामायण (आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या
और सुन्दर)—१५वीं शती । हिन्दी पद्यानुवाद सहित
नागरी लिप्यन्तरण पृ० ६२४ मू० २५.००
- ५ „ कृत्तिवास लंकाकाण्ड— „ गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० १५.००
- ६ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ० ४८९ मू० २०.००
- ७ „ लल्दयद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ० १२० „ १०.००
- ८ राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल-पद्म भगत कृत । पृ० ३०० मू० १५.००
- ९ तमिळु— तिरुक्कुडळ-तिरुवल्लुवर कृत । २००० वर्ष से अधिक प्राचीन;
नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ० ३५२ मू० २०.००
- १० „ कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ० ६५२ मूल्य ४०.००
- ११ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराण-अभिनव पम्प विरचित जैन-सम्प्रदाय
रामचरित (११वीं शती) पृ० ६९० मू० ४०.००
- १२ तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ४०० मू० २०.००
- १३ „ रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) अनु. पृ. १३३५ मू० ६०.००
- १४ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू० ६०.००
- १५ अरबी— जादे सफ़र (रियाजुस्सालिहीन) प्रामाणिक हदीस
प्र० खण्ड पृ० ३३६ मू० १२.००
- १६ फ़ारसी—सिरे अकबर (दाराशिकोह कृत उपनिषदों की व्याख्या)
हिन्दी में पृ० २८० मू० २०.००
- १७ उर्दू— शरीफ़जादः (मिर्जा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मू० ८.००
- १८ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सैंची पृ० ९६८ मू० ४०.००
- १९ „ „ „ दूसरी सैंची पृ० ९९२ मूल्य ५०.००
- २० „ श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाजः दिलमुहम्मद
कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ० १६४ मू० ८.००
- २१ „ सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि । मूल्य ४.००
- २२ सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० २०.००

- २३ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०.००
 २४ असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ „ ६०.००
 २५ ओड़िआ—बैदेहीश-बिळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ० १००० „ ६०.००
 २६ „ तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िआ लिपि में मूलपाठ तथा
 ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद । पृ० सं० १४६४ मू० ६०.००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

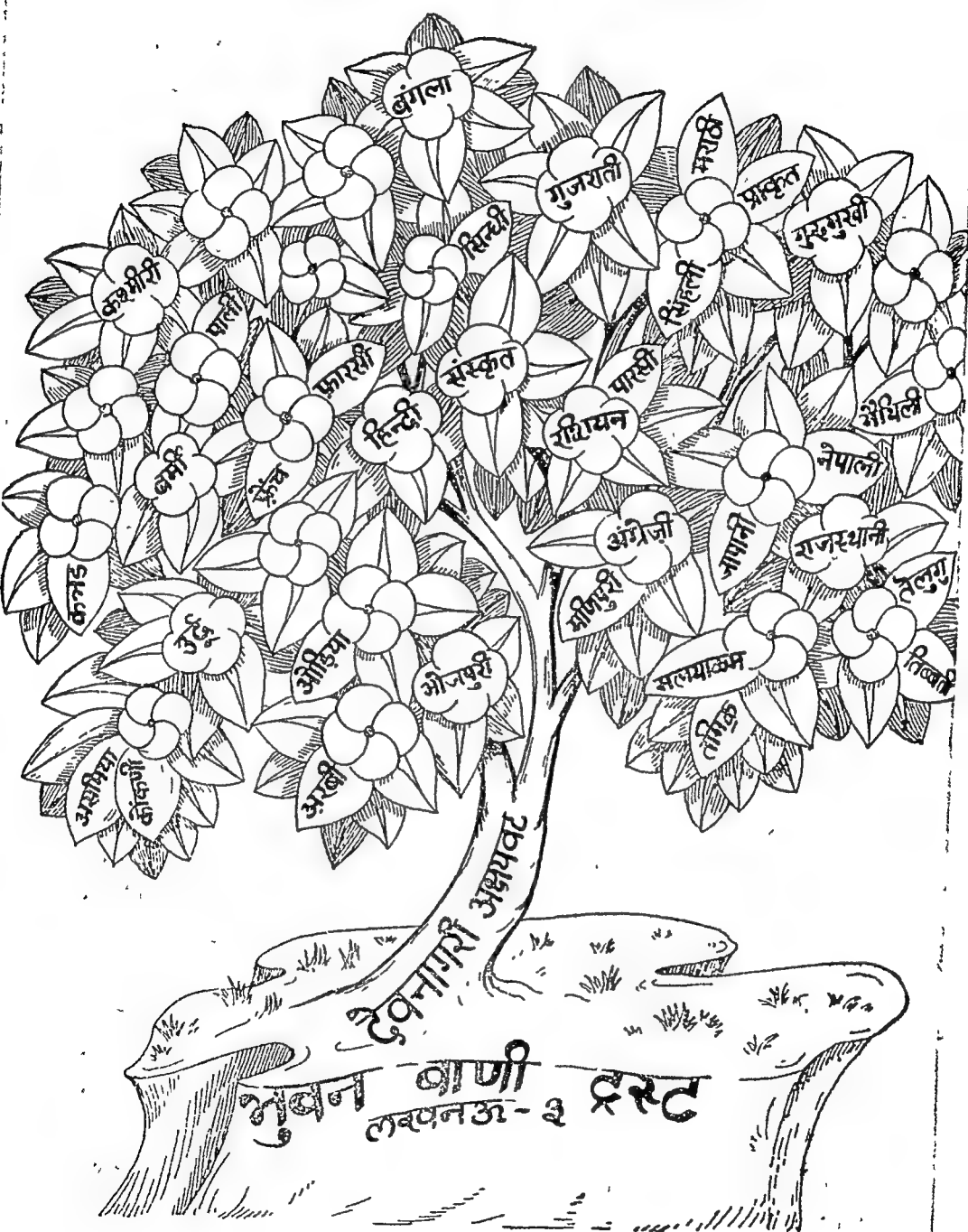
- २७ कुर्आन शरीफ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में पृ० ५२० मू० २०.००
 २८ „ „ तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ४०.००
 २९ „ केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मू० २०.००
 ३० „ कौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मू० १०.००
 ३१ बहुभाषाई—‘वाणी सरोवर’ त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १०.००

यन्त्रस्थ तथा कार्याधीन चल रहे अन्य ग्रन्थ :— अनुमानित पृष्ठ

- १ तमिळु—कम्बरामायण अयोध्या से लंकाकाण्ड ४०००
 २ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब ३,४ सैंची २०००
 ३ गुजराती—प्रेमानन्द रसामृत ६००
 ४ उर्दू—गुज्जश्तः लखनऊ (शरर) ३५०
 ५ तेलुगु—पोतन्नकृत भागवतमु (१३वीं शती) २०००
 ६ ओड़िआ—जगमोहन रामायण बलरामदास कृत १०००
 ७ फ़ारसी—सिर्रे अकबर खण्ड २-३ ६००
 ८ „ मुल्ला मसीही रामायण (जहाँगीर काल) ५००
 ९ अरबी—बुखारी शरीफ (ल.कि.घ.) ३०००
 १० „ कौरानिक कोश वर्णानुक्रम (ल.कि.घ.) ३००
 ११ „ कुर्आन शरीफ तफ़सीर माजिदी (ल०कि०घ०) ६०००
 १२ मराठी—श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत) १२००
 १३ „ श्री संत एकनाथ भावार्थ रामायण ३०००
 १४ कोकणी—ख्रीस्त पुराण ५००
 १५ कन्नड—तौरवै रामायण (१६वीं शती) ९००
 १६ बँगला—कृत्तिवास रामायण उत्तरकाण्ड ५००
 १७ हिब्रू—बाइबिल ओल्ड टेस्टामेण्ट २०००
 १८ ग्रीक— „ निउ टेस्टामेण्ट १०००
 १९ बाइबिल-सार (सालोमन के नीति-वचन) १००
 २० संस्कृत—(तुलसी) रामचरितमानस का मूलपाठ सहित
 संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद १०००
 २१ परिवर्द्धित नागरी उर्दू-हिन्दी कोश १२००

प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी ।

सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥ '



प्रतिष्ठाता— पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी

वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हजार रुपया दान-स्वरूप अर्पण किया है। एक्सप्रेस परिवार की तमिळनाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'राम-राज्यम्' आदि ने बड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मंदिर' के स्वरूप की चर्चा की है। ग्रन्थ में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

अनुवादक की अवतरणिका

आचार्य ति० शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले सभी (लगभग पाँच) खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है। अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिळभाषा और तमिळकाव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिळ-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी।

महर्षि कम्बर्

ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर ग्रन्थकार का नाम मैंने 'महर्षि कम्बर्' दिया है। कई शुभचिन्तकों को कम्बर् के लिए 'महर्षि' शब्द उपयुक्त नहीं प्रतीत हुआ। "कम्बर् विवाहित गृहस्थ था, कम्बर् के वंश-परिवार पर विपरीत किम्बदन्तियाँ भी हैं, आदि-आदि।" मेरा नम्र निवेदन है कि ऋषि-महर्षि प्रायः सब पुत्र-कलत्र वाले हुए हैं। महर्षि होने के लिए अविवाहित होगा, ऐसा कोई विधान नहीं है। रहा लोक-आक्षेप, तो उस त्रास से गोस्वामी तुलसीदास, सन्त एकनाथ, सन्त ज्ञानेश्वर जैसे भी नहीं बच पाये। देवभाषा संस्कृत के अतिरिक्त, एक देशज भाषा 'तमिळ' में रामचरित की रचना ! यही क्या कम अपराध था कम्बर् का। शुद्धाशुद्ध का तथ्य तो अतीत के अन्तराल में है। हमारे सामने तो प्रेरणा-स्रोत की महत्ता प्रधान है। नागरी लिपि की सार्वभौमिकता का उद्घोष करनेवाले जस्टिस शारदाचरण मिश्र मंत्र-द्रष्टा ऋषि हैं। 'वंदेमातरम्' मंत्र के मूलस्रोत वंकिम ऋषि कहे जाते हैं। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का शंखनाद करनेवाले तिलक 'भगवान्' पदवी से प्रख्यात हुए।

कम्बर्-काव्य को, विद्वान् १२०० वर्ष पूर्व तक ले जाते हैं। तब से तमिळ का यह जीवन्त अद्भुत महाकाव्य, जनता और विद्वानों, सभी में शीर्षस्थ सम्मान-प्राप्त है। और आज १२०० वर्षों के बाद, वह नागरीलिपि का नव-कलेवर धारण कर, न केवल अखिल राष्ट्र, वरन् विश्व में भारतीय वाङ्मय की छटा बिखेरने जा रहा है। हम गौरवान्वित हैं,

आत्मविभोर हैं, उस युगपुरुष के लिए नत-मस्तक हैं। कम्ब को 'महर्षि' सम्बोधित करने के लिए और चाहिए क्या ?

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का १०२४ पृष्ठों का द्वितीय खण्ड प्रस्तुत है। शेष तीन खण्ड लगभग, ४००० पृष्ठों में, शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान्, और शासन — सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत 'सानुवाद लिप्यन्तरण' के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष उनसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के पदचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ रूपी शिला पर शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरीलिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का प्रस्थापन, और राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। यही है हमारा आभार-प्रदर्शन।

विश्ववाङ्मय से निहित अगणित भाषाई धारों।

पहन नागरी - पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा ॥

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-२

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त (तमिळ) वर्णमाला का देवनागरी रूपान्तर

तमिळ के विशिष्ट
व्यञ्जन 'ळ' के स्थान
पर, केन्द्रीय हिन्दी
निदेशालय ने, २३-६-६६

में प्रकाशित अपने
'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक
में, 'व्र' रूप निर्धारित
किया था। मैंने उस
पर आपत्ति करके 'ळ'
का सुझाव दिया था।

तब से संभवतः और भी
आपत्तियाँ 'निदेशालय'
अवश्य पहुँची होंगी।

विदित हो कि
५-६ फ़रवरी, १९८० की
निदेशालय की बैठक में,
जिसमें मैं भी सम्मिलित
था, यह निर्णय लिया
गया कि अब 'व्र' के
स्थान पर 'ळ' ही प्रयुक्त
किया जाय। आशा है
लिप्यन्तरणकार भविष्य
में इसका ध्यान रखेंगे।

तमिळ - देवनागरी वर्णमाला

अ अ क	आ आ का	इ इ कि	ई ई की
उ उ कु	ऊ ऊ कू	ओ ओ कै	ए ए कै
ऐ ऐ कै	ओ ओ कौ	ओ ओ कौ	आ ओ कौ

ॐ अक्

क क	ख ख	च च	ज ज
ट ट	ण ण	त त	न न
प प	म म	य य	र र
ल ल	व व	ळ ळ	श श
ॠ ॠ	ॡ ॡ	ष ष	स स
ह ह	ज ज	झ झ	क्ष क्ष

तमिळ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प — ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं।

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

अयोध्या काण्डम्

ईश्वर वन्दना

❀ वानित् रिळिन्दु वरम्बिहन्द माबू दत्तित् वैप्पेङ्गुम्
ऊनु मुयिरु मुणर्वुम्बो लुळुम् बुउत्तु मुळन्नेब
कूनुज् जिशिय कोत्तायुङ् गौडुमै यिल्लैप्पक् कोरुउन्दु
कानुङ् कडलुम् कडन्दिमैयो रिडुक्कण् डीरुत्त कळल्वेन्दै 1

कूनुम्-कुब्जा मन्थरा और; चिशिय को तायुम्-छोटी रानी और माता कैकेयी के; कोटुमै इल्लैप्प-अनिष्ट करने से; कोल्-राज-दण्ड (शासन के अधिकार) को; तुउन्नु-छोड़कर; कानुम्-जंगल और; कटलुम्-समुद्र को; कटन्नु-पार करके; इमैयोर्-देवों का; इडुक्कण्-संकट; तीरुत्त-(जिन्होंने) दूर किया (उन); कळल् वेन्ते-पायलधारी राजा (श्रीराम) को; वान् नित्तु इळिन्दु-आकाश से उतरकर; वरम्पु इकन्त-सीमा पार; मा पूतत्तित्-पंच महाभूतों के बने; वैप्पु अङ्कुम्-प्रपंच भर में; ऊनुम् उयिरुम् उणर्वुम् पोल्-शरीर, प्राण और आत्मा के समान; उळुम् पुउत्तुम्-अन्दर और बाहर; उळन्-रहनेवाले; अन्प-कहते हैं। १

कुब्जा मन्थरा और श्रीराम की छोटी माँ, रानी कैकेयी दोनों ने निष्ठुरता के साथ अहित किया और उससे श्रीराम को राज्य त्यागकर जंगल, समुद्र आदि पार कर जाना पड़ा। इस प्रकार उन्होंने देवताओं का संकट दूर किया। ऐसे, पायलधारी राजा राम को (जानी लोग) पंचभूतों से बने इस पंच भर में, शरीर, आत्मा और अहंकार के समान अन्दर और बाहर रहनेवाले (तत्त्व) कहते हैं। (शरीर, आत्मा और अहंकार के जैसे का अर्थ करना कुछ कठिन है। एक अर्थ है— शरीर और अहंकार के समान भगवान क्रमशः सृष्टि के बाहर भी हैं और अन्दर भी, और आत्मा के समान एक साथ बाहर और अन्दर भी)। १

1. मन्दिरपडलम् (मन्त्रणा पटल)

ॐ मण्णुरु मुरशिन मळैयि नारप्पुडप्, पण्णुरु पडर्शिनप् परम् यान्नयान्
कण्णुरु कवरियिन् कर्इरै शुरुड, अण्णुरु शूळ्चचियि निरुक्कै यैय्दिनान् 2

पण् उरु-अलंकृत; पडर् चितम्-वर्धनशील कोप; परम्-और होवे वाले;
यान्नयान्-गर्जों के स्वामी (दशरथ); मण् उरु-मिट्टी का लेप-लगे; मुरचु इतम्-
भेरियों की राशि के; मळैयिन्-मेघों के समान; नारप्पु उरु-नर्दन करते; कण्
उरु-दर्शनीय; कवरियिन् कर्इरै-सुरागाय की पंछ के बने चामरों के; शुरुड उरु-
पार्श्व में डुलते; अण् उरु-मन्त्रणा के लिए बने; शूळ्चचियिन् इरुक्कै-मन्त्रणागृह
में; यैय्दिनान्-पहुँचे । २

[किसी-किसी संस्करण में दो अतिरिक्त पद पाये जाते हैं । उनका
सार यह है— राजा के कर्णमूल में एक वाल श्वेत बन गया मानो उसने
राजा को समझाया कि राजा ! राज्य को पुत्र को सौपकर बन में जाकर
आपका तपस्या करने का समय आ गया । रावण के पाप ही वहाँ एक
पके केज के रूप में आये हों, ऐसा वह वाल पका था । उसको राजा ने
मुकुट में देखा ।]

चक्रवर्ती मन्त्रणा-गृह में आ पहुँचे । वे अलंकृत, क्रोधशील और
हौदेदार गज के स्वामी थे । जब वे आये तब वे ढोल मेघों के समान बज
उठे जिनके चमड़े पर मिट्टी का बना लेप लीपा गया था । दर्शनीय चामर
भी डुलवाये गये । वे कुछ मन्त्रणा करने आये । २

ॐ पुक्कपिन्	निरुवरुम्	पौरुविल्	शुर्इमुम्
पक्कमुम्	पैयर्हैतप्	परिवि	नीक्किनान्
औक्कनिन्	इलहळित्	तियोगि	नैय्दिय
शक्करत्	तवर्त्तत्	तमिय	नायितान् 3

पुक्क पिन्-प्रवेश के बाद; निरुवरुम्-नृप; पौरु इल्-श्रेष्ठ; शुर्इमुम्-
बन्धु; पक्कमुम्-और प्रिय मित्र; पैयर्क-यहाँ से हट जायें; अत-कहकर;
परिविन्-स्नेह के साथ; नीक्किनान्-अलग किया; औक्क निन्ड-समरस और
तटस्थ रहकर; उलकु अळित्तु-लोक-पालन करके; योकिन् अय्तिय-योग-निद्रा
में लीन रहनेवाले; चक्करत्तवन् अन्न-चक्रधारी श्रीविष्णु के समान; तमियन्
आयितान्-एकाकी हुए । ३

वहाँ आने के बाद उन्होंने बहुत मीठे ढंग से आज्ञा दी कि राजा लोग,
श्रेष्ठ बन्धु-बान्धव सब वहाँ से हट जायें । फिर वह उन चक्रधारी भगवान
विष्णु के समान एकाकी हुए जो समरसता के साथ लोकों का पालन करते
हुए योगनिद्रा में लीन हैं । (आज्ञाचक्र चलाने, लोकपालन करने और
अकेले रहने के धर्मों के कारण चक्रवर्ती विष्णु तुल्य बताये गये हैं ।) । ३

❖ शन्दिरऽ कुवमैशैय् तरळ वैण्गुडै, अन्दरत् तळवुनिन् उळिक्कु माणैयान्
इन्दिरऽ किमैयवर् गुरुवै येयन्ददन्, मन्दिरक् किळवरै वरुहैन् इवित्तान् 4

चन्तिरऽकु उवमै चैय्-चन्द्र से उपमित करने योग्य; तरळम्-मुक्ताओं का; वैण् कुटै-श्वेत छत्र; अन्तरत्तु अळवु निन्ऱु-आकाश तक उन्नत रहकर; अळिक्कुम्-पालन करनेवाले; आणैयान्-आज्ञापक; इन्तिरऽकु-देवराज के; इमैयवर् कुरुवै एयन्त-देवगुरु बृहस्पति के समान; मन्तिरम् किळवरै-मन्त्रीमण्डल को; वरुक अँन्ऱु-आये, ऐसी; एवित्तान्-आज्ञा की। ४

राजा का चंद्र-सम मुक्तामंडित श्वेत छत्र आकाश तक व्याप्त था। यानी उनका पालन का काम स्वर्ग में भी व्याप्त था। जैसे देवेन्द्र के बृहस्पति थे वैसे इनके भी गुरु अमात्यादि मंत्रीगण थे। चक्रवर्ती ने उनको आने की आज्ञा दिलायी। ४

❖ पूवर पौलङ्गळऽ पौरुविन् मन्तवन्, कावलि न्नाणैशैय् कडवु ठामैन्तत्
तेवर मुत्तिवर मुणरुन् देवर्हळ, मूवरि नाल्वना मुत्तिवन् दैय्दितान् 5

पू वरु-शोभायुक्त; पौलम् कळल्-स्वर्णपायलधारी; पौरु इल् मन्तन्-उपमाहीन चक्रवर्ती के; कावलित्-शासन कार्य में; आणै चैय्-आज्ञा देनेवाले; कडवुळ् आम् अँन्-ईश्वर हैं ऐसा; तेवरम् मुत्तिवरम् उणरुम्-देव और मुनि जिनके सम्बन्ध में अनुभव करते हैं उन; तेवर्कळ् मूवरिन्-(अज, हरि, हर) तीन की श्रेणी में; नाल्वन् आम्-चौथे के रूप में माननीय; मुत्ति-महर्षि (वसिष्ठ); अँय्तिन्नान्-पधारे। ५

पहले वसिष्ठजी पधारे। उज्ज्वल पायलधारी और अप्रमेय चक्रवर्ती दशरथ के शासन में उनका नियंता का (ईश्वर का-सा) विशिष्ट स्थान था। वे देवताओं के और मुनियों के ज्ञात त्रिदेव—अज, हरि और हर—के साथ चौथे ईश्वर के रूप में सम्मानित थे। ५

❖ कुलमुदऽ ङीन्मयुड् गलैयिन् कुप्पयुम्, पलमुदऽ केळ्वियुम् पयन्तु मैय्दितार्
नलमुद नलियिन् नडुवु नोक्कुवार्, शलमुद लरुत्तरुन् दरुमन् दाङ्गितार् 6

कुलम् मुतल् तौन्मैयुम्-कुल के क्रम में प्राचीनता; कलैयिन् कुप्पैयुम्-शास्त्रों की ज्ञानराशि; पल मुतल् केळ्वियुम्-अनेक श्रेष्ठ श्रौतज्ञान; पयन्तुम्-उनका लाभ; अँय्तिन्नार्-जो पा चुके थे (वे मन्त्रीगण); नलम् मुतल् नलियिन्तुम्-अपना हित आमूल नष्ट हो जाय तो भी; नडुवु नोक्कुवार्-तटस्थता बरतनेवाले; चलम् मुतल् अरुत्तु-क्रोधादि काटकर; अरु तरुमम् ताङ्कितार्-उत्तम धर्मावलम्बी। ६

वाद अमात्य आये। उनके पास कुल की प्राचीनता थी; शास्त्रों की ज्ञानराशि थी। अनेक विषयों पर प्रथम श्रेणी का श्रुत-ज्ञान था। वही नहीं; इन सबका प्रभाव भी उन पर खूब पड़ा था। चाहे उनका हित विलकुल नष्ट हो जाय तो भी वे तटस्थता से हटनेवाले नहीं थे। क्रोध आदि को उन्होंने दूर किया था और उत्तम धर्मावलम्बी थे। ६

उरुतु	कौण्डु	मेल्वन्	दुरुपौरु	ळुणरुड्	गोळार्
मरुदु	विन्नैयिन्	वन्द	दायिनु	माड्ड	लाड्डुम्
पैर्रियर्	पिडप्पिन्	मेन्मैप्	पैरियव	ररिय	नूलुम्
कड्डवर्	मान	नोक्किड्	कवरिमा	वन्नैय	नीरार् 7

उरुतु कौण्डु-जो हो गया उसको शोधकर; मेल् वन्तु उरु पौरुड्-आगे जो होगी उस बात को; उणरुम्-बुद्धि द्वारा समझनेवाले; कोळार्-चातुर्य रखनेवाले; अतु-वह बात; विन्नैयिन् वन्तु आयिनुम्-प्रारब्ध कर्म से हो गई तो भी; माड्डल् आड्डुम्-बदल सकने की; पैर्रियर्-शक्ति रखनेवाले; पिडप्पिन् मेन्मै पैरियवर्-कुल-जन्म के अनुरूप गौरवशाली; अरिय नूलुम् कड्डवर्-सूक्ष्म ग्रन्थों के अध्येता; मानम् नोक्किन्-अपने मान के विचार में; कवरि मा अन्नैय नीरार्-चामर हिरन के-से स्वभाव वाले । ७

वे संभूत काम देखकर भविष्य को समझने का चातुर्य रखनेवाले और प्रारब्ध-कर्म के कारण कुछ हो भी जाय तो उसका परिहार जाननेवाले, अपने कुल की मर्यादा और गौरव उनमें यथेष्ट था । साथ-साथ सूक्ष्म ग्रन्थों का अध्ययन कर चुके थे । जहाँ तक गौरव का सम्बन्ध था वे चामर-मृग (सुरा गाय ?) के स्वभाव के थे, जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि एक वाल भी खोना पड़ा तो वह अपनी जान दे देगा । (यानी अपमान हो जाने के पहले अपना प्राण दे देनेवाले थे ।) । ७

कालमु	मिडनु	मेरु	करवियुन्	दैरियक्	कड्ड
नूलुड्	नोक्कित्	तैयव	नुत्तित्तरुड्	गुडित्त	मेलोर्
शीलमुम्	पुहळ्क्कु	वेण्डुज्	जैय्युन्	दैरिन्दु	कौण्डु
पाल्वरु	मुखि	यावुन्	तलैवड्क्कुप्	पयक्कु	नीरार् 8

एरुड् कालमुम् इटुत्तुम् करवियुम्-उचित काल, स्थान और साधन को; कड्ड नूलु उड्ड-अपने पठित ग्रन्थों के अनुकूल; तैरिय नोक्कि-खूब समझकर; तैयवम् नुत्तित्तु-ईश्वर का ध्यान करके; अरुम् कुडित्त मेलोर्-धर्म में आचरण वाले श्रेष्ठों के बताये; चीलमुम्-शील और; पुहळ्क्कु वेण्डुम् जैय्युम्-यश देनेवाले कार्यों को; तैरिन्दु कौण्डु-जानकर; पाल्वरु उरुत्ति यावुम्-इनके हक में आनेवाले सारे शुभ फलों को; तलैवड्डु-अपने स्वामी, राजा को; पयक्कुम्-प्राप्त करानेवाले; नीरार्-स्वभाव वाले । ८

वे उचित काल, स्थान और साधनों का विचार कर, शास्त्र के प्रमाणों को भी लेकर, धर्म के आचार्यों के भी शील और प्रशंसा योग्य सम्बन्धी उपदेशों का लाभ उठाते हुए ऐसे काम करते जिससे सुफल अपने नायक को मिल जायँ । ८

तम्मुयिर्क्	कुरुदि	यैण्णार्	तलैमहन्	वैहुण्ड	पोडुम्
वैम्मयैत्	ताड्गि	नीदि	विडाडुनिन्	रुरैक्कुम्	वीरर्

शैम्भयिर् रिश्म्वल् शैल्लात् तेइत्तार् तैरियुङ् गालम्
मुम्भयु मुणर वल्लो रौरुमे मीळियुम् नीरार् 9

तलै मकन्-राजा के; वैकुण्ठ पोतुम्-कुपित होने पर भी; तम् उयिर्कु-
अपने प्राणों का; उरुति अण्णार्-हित नहीं सोचते; वैम्भैयै ताङ्कि-(कोप की)
गमी को सहकर; विटातु निन्हु-कर्तव्य न छोड़ते हुए अचल रहकर; नीति उरैकुम्-
नीति समझानेवाले; वीरर्-वीर हैं; चैम्भैयिल्-नेकनीयती से; तिश्म्वल् चैल्ला-
हटकर न जानेवाले; तोइत्तार्-समझदार है; तैरियुम्-शास्त्रज्ञान से ज्ञातव्य;
कालम् मुम्भैयुम्-भूत, वर्तमान और भविष्य (के व्यापारों) को; उणरवल्लोर्-समझ
सकनेवाले; औरुमे मीळियुम्-स्थिर रूप से एक ही बात कहने का; नीरार्-
स्वभाव वाले । ६

जब राजा या नायक कोप करते तब ये अपने प्राणों की परवाह नहीं
करते । पर कोप की आँच (उग्रता का) सहन करके, अपने अभिप्राय में
अचल रहकर नीति बताने से पीछे न हटनेवाले वीर थे । उनकी बुद्धि
इतनी सुलझी हुई थी कि नेक रास्ते से वे कभी नहीं हटते । ग्रंथों, अनुमान
आदि से ज्ञातव्य भूत, वर्तमान और भविष्य के कार्यों को समझने की
शक्ति के साथ वे स्थिर रूप से असंदिग्ध एक ही बात कहने का स्वभाव
भी रखते थे । ९

ॐ नल्लवुन् दीयवु नाडि नायहर्, कल्लैयिन् मरुत्तुव रियल्वि तैण्णुवार्
ओल्लैवन् दुरुवत्त वुइर् पेरुडियिन्, तौल्लैनल् वित्तैयैत्त वुदवुज् जूळ्चचियार् 10

नायकइकु-अपने नायक का; नल्लवुम् तीयवुम् नाडि-हित, अहित सोचकर;
ओल्लैयिल्-अन्त में; मरुत्तुवर् इयल्विन्-वैद्यों के-से गुण के साथ; तैण्णुवार्-
(नायक का हित ही) सोचते; ओल्लै वन्तु उरुवत्त-अकस्मात् आनेवाली हानियाँ;
उइर् पेरुडियिन्-जब आ जाती हैं; तौल्लै नल् वित्तै अन्त-पूर्वकृत पुण्य के समान;
उतवुम् जूळ्चचियार्-सहायक उपाय बतानेवाले । १०

नायक के लिए क्या हित है क्या अहित है —यह खूब सोचकर अच्छे
वैद्य के समान जो रोगी के हित की दवा देते हैं, उनका हित ही करनेवाले
थे । अकस्मात् आई हुई हानि के सम्बन्ध में भी वे पूर्वकृत पुण्य के
समान आकर कोई न कोई उपाय करके उसको दूर करने का सामर्थ्य रखते
थे । १०

ॐ अरुपदि	नायिर	रैत्तिनु	माण्डहैक्
कुइदियि	तौन्डिवर्क्	कुणर्वैत्त	रुन्नलाम्
पेरुलरुज्	जूळ्चचियर्	तिरुविन्	पेट्पितर्
मरिदिरैक्	कडलैन्	वन्डु	शुइत्तार् 11

तिरुविन् पेट्पितर्-श्री समन्वित हैं; अरुपतिनायिरर् रैत्तिनुम्-(संख्या में) साठ
हजार थे तो भी; आण् तकैक्कु-पुरुष श्रेष्ठ (दशरथजी) को; उरुतियिन्-भला

पहुँचाने में; इवर्क्कु उणर्वु ओन्ऱु-इनका चित्त एक है; अँन्ऱु-यह; उन्नत्तन्
आम्-मान सकते हैं ऐसा; पॅरल् अरुम्-(पाने में) दुर्लभ; चूळ्चचियर्-मतिमान हैं;
मरि तिरै कटल् अँत-मुड़ आनेवाली लहरों वाले सागर के समान; वन्तु चुर्रितर्-(वे)
आकर घेरे रहे । ११

वे साठ हजार थे । तो भी अपने नायक के हितचिंतन में मानो
वे सब मिलकर एक ही मन रखते थे, ऐसे सलाहकारिता में अपूर्व दक्षता
दिखाते थे । वे मुड़-मुड़कर लहरानेवाली तरंगों से युक्त समुद्र के समान
आकर उनको घेर गये । ११

❖ मुरैमयि नैय्दिनर् मुन्दि यन्दमिल्, अरिवत्तै वणङ्गित्तम् मरशैक् कैदौळु
दिरैयिडै वरत्तुमुरै येरि येरुशौल्, तुरैययि पेरुमया नरुळुज् जूडितार् 12

मुरैमैयिल्-यथाक्रम; अँय्तिनर्-आकर; अन्नत्तम् इल् अरिवत्तै-अनन्त बुद्धिमान
वसिष्ठ को; मुन्ति वणङ्कि-प्रथमतः नमस्कार करके; तम् अरचै कै तौळु-अपने
राजा को अंजलि समर्पित करके; इरै इटै-आसनों पर; वरल् मुरै-अपने पदों के
अनुसार; एरि-(चढ़कर) आसीन होकर; एरु चौल् तुरै-उचित शिष्ट वचन की
रीतियों के; अरि पेरुमैयान्-ज्ञाता, गौरवान्वित दशरथ की; अरुळुम्-कृपादृष्टि भी;
जूडितार्-(उन्होंने) प्राप्त की । १२

वे यथाक्रम आये । पास आकर उन्होंने अथाह बुद्धिमान वसिष्ठजी
को नमस्कार किया और फिर राजा को अंजलि समर्पित की । बाद में वे
अपने-अपने उचित आसन पर आसीन हुये । राजा ने, जो योग्य शिष्टाचार
के वचन कहने में समर्थ थे उचित रूप से स्वागत किया । उन्हें राजा की
कृपादृष्टि मिल गई । १२

❖ अन्नव नरुळमैन् दिरुन्द वाण्डयिल्, मत्तनु मवरमुह मरवि नोक्किन्नार्
उन्निय दरुम्बैरु लुरुदि यौन्ऱुळ, दैन्नुणर् वतैयनी रिरिन्दु केट्कैन्ता 13

अन्नवर्-(जब) वे; अरुळ् अमैन्तु-कृपाप्राप्त हो; इरुन्त आण्टैयिन्-आसीन
रहे तब; मत्तनुम्-चक्रवर्ती भी; अवर मुक्कम्-उनके मुखों को; मरपिन्-क्रम से;
नोक्किन्नान्-देखकर; उन्नियतु-मेरा सोचा; पॅरल् अरुम्-दुर्लभ; उरुति ओन्ऱु-
हितकार्य एक; उळु-है; अँ उणर्वु अतैय नोर्-मेरी ही प्रज्ञा रहनेवाले आप
लोग; इन्ति केट्क-सन्तोष से सुनिये; अँता-कहकर आगे । १३

जब वे राजा की कृपादृष्टि प्राप्त करके अपने-अपने आसन पर बैठे
थे तब राजा ने उन सबके मुखों को उचित क्रम से देखा । “मैंने एक
पुरुषार्थ का काम सोचा है । आप मेरी ही मतिवत है । आप संतोष
के साथ सुनिये ।” —यह कहकर आगे बोले । १३

❖ वैय्यवन् कुलमुदल् वेन्दर् मेलवर्, शैय्हयि नौरुमुरै तिरुम्ब लिन्निये
वैयमैन् पुयत्तिडै नुङ्गण् मादचियाल्, ऐयिरण् डायिरत् तारु ताङ्गिन्नेन् 14

नुङ्कळ् माट्चियाल्-आप लोगों (की सलाह) की महिमा से; वैय्यवन् कुलम्-सूर्यकुल के; मुतल् वेन्तर्-अग्रगण्य राजा; मेलवर्-मेरे पूर्वजों के; चैय्कैयिन्-कार्यों (की पद्धति) से; और मुर्-किसी विधि; तिरम्पल् इन्निरि-हटे बिना; वैयम्-भूमि का; ऐ इरण्डु आयिरत्तु आरु-($५ \times २ \times १००० \times ६$) साठ सहस्र वर्ष; अन् पुयत्तिटै-अपनी भुजाओं पर; ताङ्किन्नेन्-धारण किया । १४

आपकी संगति के महत्व के कारण मैंने साठ सहस्र वर्ष इस भूमि को अपनी भुजाओं में धारण किया । उसमें सूर्यकुल के मेरे पूर्वजों ने जो नीति-रीति अपनायी थी उससे थोड़ा भी विचलित न हुआ । १४

❖ कन्तियर्क् कम्बैरुङ् गड्पिन् मानिलम्, तन्नयित् तकैयदात् तरुमङ् गैदर
मन्नुयिर्क् कुरुवदे शैय्तु वैहिन्नेन्, अन्नुयिर्क् कुरुवदुम् जैय्य वैण्णिन्नेन् 15

कन्तियर्क्कु-कन्याओं के लिए; अम्बैरुम्-उचित; कड्पिन्-चरित्र के समान; मानिलम् तन्नै-इस विशाल भूमि को; इ तकैयता-यह स्थिति देते हुए; तरुमम् के तर-धर्म ने भी हाथ बँटाया, इसलिए; मन् उयिर्क्कु-स्थायी जीवों को; उरुवतु-हितकारी काम; चैय्तु वैकिन्नेन्-करता रहा; अन् उयिर्क्कु-अपनी आत्मा के लिए; उरुवतुम्-हितकारी काम; चैय्य अण्णिन्नेन्-करना चाहा । १५

इस भूमि को इस रीति से पाला कि यह भूमि कन्योचित पातिव्रत्य व्रतशीला-सी रही । यानी उसके दो स्वामी नहीं रहे । धर्म ने भी साथ दिया और अब तक मैं प्रजाजन का हित करता रहा । अब मैं अपनी आत्मा का हितकारी कार्य करना चाहता हूँ । १५

❖ विरुम्बिय	मूप्पैनुम्	वीडु	कण्डयान्
इरुम्बिय	लन्नन्दन्	मित्तत्त	यानैयुम्
पैरुम्बैयर्क्	किरिहळुम्	पैयरत्	ताङ्गिय
अरुम्बोर्	यित्तिच्चिरि	दाड्ड	वाड्डलेन् 16

विरुम्पिय-(मैंने जो) चाहा; मूप्पु अन्नुम्-वह वार्द्धक्य रूपी; वीडु-स्वतन्त्रता; कण्ड यान्-देखकर मैं; इरु पियल् अत्तन्तनुम्-विशाल गर्दन वाला अनन्तनाग; इत्तत्त यानैयुम्-एक ही जाती के (दिग्-) गज; पैरु पैयर् किरिकळुम्-बड़े ही प्रसिद्ध (अष्ट) कुलशैल; पैयर-इनको छुट्टी देकर; ताङ्किय अरुपौर्-जो मैंने धारण किया उस भार को; इत्ति चिरित्तु-अब ज़रा भी; आड्ड-भरण करने में; आड्डलेन्-समर्थ नहीं हूँ । १६

मैं इस वार्द्धक्य की प्रतीक्षा में था ताकि मुझे स्वतंत्रता मिले । वह अब आ गया । इसलिए विशाल गर्दन वाला अनन्त नाग, अष्ट दिग्गज, सप्तकुल शैल —इनको अपने काम से छुट्टी देकर मैं भू-भार वहन करता रहा । अब सोचता हूँ कि आगे किंचित भी वह भार सह नहीं सकूंगा । १६

❖ नङ्गुलक्	कुरवर्ह	णवैयि	नीङ्गितार्
तङ्गुलप्	पुदल्वरे	तरणि	ताङ्गप्पोय्
वैङ्गुलप्	पुलन्कैड	वीडु	नण्णितार्
अङ्गुलप्	पुरुवरन्	ईण्णि	नोक्कुहेन् 17

नम् कुलम् कुरवर्कळ-मेरे कुल के पूर्वज; नवैयिन् नीङ्गितार्-(जो) दुर्गुण-
त्यागी (थे); तरणि-भूमि को; तम् कुलम् पुतल्वरे-अपने श्रेष्ठ पुत्रों के; ताङ्क-
पालन करने (देकर); पोय्-जाकर; वैम् कुलम् पुलन् कैट-अत्याचारी इन्द्रियों के
कुल को दमन करके; वीडु नण्णितार्-मोक्ष को प्राप्त हुए; अङ्कु उलप्पु उरुवर्-
कहाँ जा के (संख्या में) अन्त होंगे; अन्नु-यह सोचकर; नोक्कुहेन्-(मैं भी वह
पुरुषार्थ) खोजता हूँ । १७

मेरे कुल के पूर्वजों ने काम, क्रोध और मोह के दोषों से निवृत्त होकर
अपने-अपने पुत्रों के पास राज्य-भार सौंपकर वनवास किया और इन्द्रियों
का दमन करके तपस्या की। फिर वे मुक्ति को प्राप्त हुए। ऐसे
राजाओं की गणना का अंत कहाँ? असंख्यक उनका अनुकरण करके मैं
भी मुक्ति के पुरुषार्थ-साधन में लग जाना चाहता हूँ । १७

❖ वैळ्ळनी	रुलहिनिल्	विण्णि	ताहरिल्
तळ्ळरुम्	वहैयैलान्	दविरत्तु	निन्ऱयान्
कळ्वरिर्	करन्नुर्	काम	मादियाम्
उळ्ळुरु	पहैवरुक्	कौडुङ्गि	वाळ्वैन्नी 18

वैळ्ळम् नीर् उलकिनिल्-अपार (सागर) जल से घिरी हुई भूमि में; विण्णिल्-
आकाश में; नाकर् इल्-नागलोक में; तळ्ळ अरुम् पक्कै अल्लाम्-दूर (जिनको)
करना कठिन है उन शत्रुओं को; तविरत्तु निन्ऱ-हराकर (जो) रहा; यान्-
(वह) मैं; कळ्वरिल्-चोरों के समान; करन्नु उर्-छिपकर रहनेवाले; कामम्
आति आम्-काम आदि; उळ् उरु पक्कैवरुक्कु-अन्तःशत्रुओं से; औत्तुङ्कि वाळ्वैन्नी-
(हार मानकर) दूर रहूँगा क्या । १८

इस भूलोक में, जिसे विपुल जलराशि, सागर घेरे रहता है, आकाश
के सुरलोक में और नाग-(पाताल-)लोक में जितने भी शत्रु थे उन सब
पर मैंने विजय पा ली है। ऐसा मैं क्या उन कामादि अंतःशत्रुओं से
हार मानकर बैठा रहूँगा जो चोरों के समान मेरे ही अंदर छिपे रहते
हैं । १८

❖ पञ्जिर्मेन्	उळिरडिप्	पावै	कोल्हौळ
वैञ्जिन्त	तवुणर्देर्	पत्तुम्	वैन्ऱुळेर्
कैञ्जलिल्	मनर्मेन्नु	मिळुदै	येरिय
अञ्जुतेर्	वैल्लुमी	दरुमै	यावदो 19

पञ्चि-महावर लगे; मैत् तळिर् अटि-पल्लव-मृदु-चरण; पाँव-प्रतिमा-सी
कैकेयी के; कोल् कोळ- (सारथी का) वेत्त हाथ में लेते (सारथ्य में); वैम् चित्ततु-
भयंकर क्रोधी; अबुणर् तेर् पत्तुम्-असुरों के दशों रथों को; वैल्लुळ्कु-जिसने
हराया उस मुझे; अञ्चल् इल् मतम् अंतुम्-अथक मनरूपी; इळुत्तै एरिय-भूत जिन
पर चढ़ा है उन; अञ्चु तेर्-(इन्द्रिय रूपी) पाँच रथों को; वैल्लुम् ईतु-जीतने का
यह काम; अरुम् आवतो-कठिन हो जायगा । १६

(शम्बरासुर दस रूप लेकर दस रथों पर सवार हो आया ।) उसके
साथ मैंने लड़ाई की । मेरी पत्नी लाक्षारसरजित, पल्लव समान मृदु चरण
वाली कैकेयी ने हाथ से चाबुक लेकर सारथ्य किया । मैंने दसों रथों पर
विजय पायी और दानवों का नाश किया । उधर तो दस रथ थे, इधर
इन्द्रियरूप में पाँच ही रथ हैं जिन पर मन भूत के समान सवार है । क्या
दस के विजयी के लिए पाँच पर विजय पाना कठिन है ? । १९

ॐ ओट्टिय	पहैजर्वन्	दुरुत्त	पोरिडैप्
पट्टव	रल्लरेर्	परम	आत्तम्बोयत्
तट्टव	रल्लरेर्	चैल्व	मीण्डेन्
विट्टव	रल्लरेल्	यावर्	वीडुळार् 20

वनतु ओट्टिय-आकर टकरानेवाले; पकैजर्-शत्रु; उरुत्तपोर् इट्ट-(जो)
करते हैं; उस लड़ाई में; पट्टवर्-मर चुके; अल्लरेल्-नहीं तो; परम आत्तम्-
परम-ज्ञान के; पोय्-अधिक होने पर; तट्टवर्-समझदार हुए हैं; अल्लरेल्-नहीं
तो; चैल्वम् ईण्टु अंत-अर्थ आदि यहीं तक, यह जानकर; विट्टवर्-छोड़ चुके
हैं; अल्लरेल्-वे नहीं तो; वीडु उळार् यावर्-मुक्ति के अधिकारी कौन है । २०

मुक्ति के अधिकारी तीन तरह के लोग ही होते हैं । शत्रुओं के
साथ युद्ध में मरनेवाले; या परम ज्ञान प्राप्त करके आत्म-अन्तात्म-विवेक
जो पा चुके वे; ये दोनों नहीं हों तो “यहाँ का धन आदि इसी भूमि में
रहते समय तक हमारा साथ दे सकता है” यह जानकर जो मोह छोड़
चुके हैं वे — ये तीनों ही वे अधिकारी हैं । इन तीनों में नहीं है तो कौन
मुक्ति पाने के योग्य हो सकता है ? । २०

इरप्पेन्नु	मैय्ममयै	यिम्मै	यावर्क्कुम्
मरप्पेन्नु	मदनिन्मेर्	केडु	मरुण्डो
तुरप्पेन्नु	वैपपमे	तुणैशैय्	याविडिन्
पिरप्पेन्नु	वैरुङ्गडल्	पिळैक्क	लावदो 21

यावर्क्कुम्-सब किसी के लिए; इरप्पु अंतुम् मैय्ममैयै-मृत्यु है इस तथ्य को;
इम्मे-इस जन्म में; मरप्पु अंतुम्-भूल जाने का; अततिन् मेल्-जो है उससे बढ़कर;
मरु-अन्य; केडु उण्टो-हानि है क्या; तुरप्पु अंतुम् वैपपमे-संन्यास नाम की डोगी
हो; तुणै-चैय्या विटिन्-सहायता न करे तो; पिरप्पु अंतुम् पैरु कटल्-जन्म नामक
बड़ा सागर; पिळैक्कल् आवतो-बचाना हो सकता है क्या । २१

किसी के लिए इस बात को भूल जाने से कि मरण ध्रुव है, अधिक हानिकारक कोई चीज़ नहीं है। वैराग्य की डोंगी का सहारा न लिया जाय तो जन्म नामक विपुल सागर का तरण संभव है क्या ? । २१

अरुञ्जिउप्	पमैवरुन्	दुऱवु	मव्वळित्
तैरिञ्जुऱ	वैनमिहुन्	दैळिवु	माय्वरुम्
पैरुञ्जिऱै	युळवैनिऱ्	पिऱवि	यैन्नुमिव्
विरुञ्जिऱै	कडत्तलि	निनिय	दियावदो 22

अरुम् चिऱपु-श्रेष्ठ (मोक्ष का) गौरव; अमैवरुम् तुऱवुम्-विलानेवाला वैराग्य; अ वळि तैरिञ्चु-वह मार्ग जानकर; उऱवु अँत-उसका सहायक रहनेवाला; तैळिवुम्-तत्त्वज्ञान-विवेक; आय् वरुम्-ऐसे रहनेवाले; पैरु चिऱै उळ अँतिल्-बड़े पक्ष हैं तो; पिऱवि अँत्तुम्-जन्म नाम के; इ इरु चिऱै-इस बड़ी कारा को; कडत्तलिन् इतियतु-पार करके जाने से सुखद; यावतो-कौन सी वस्तु है । २२

मानव जीवन की गरिमा मुक्ति पाना है। उसका हेतु वैराग्य है। उसका सहायक है आत्म-अनात्म-विवेक। वैराग्य और विवेक दो पंख हैं। अगर ये दोनों पंख हों तो जन्म नाम की कारा से छूटना आसान हो जायगा। इस कारा से छूटने से बढ़कर सुखद क्या हो सकता है ? । २२

इतियतु पोलुमिव् वरशै यैण्णुमो, तुनिवरु पुलनैन्तु तौडर्न्दु तोऱ्कला ननिवरु पैरुम्बहै नवैयि नौङ्गिय, तनियर शादचियिऱ् उळ्ळ मुळ्ळमे 23

तुनिवरु-दुखदायक; पुलन् अँत-इन्द्रियों के रूप में; तौडर्न्दु-जीवन में अनुवर्ती बनकर; तोऱ्कला-कभी न हारकर; नतिवरु-अधिक आनेवाली; पैरुम् पक्ष-बड़ी शत्रुता से उत्पन्न; नवैयिन् नौङ्किय-दोषों से दूर; तति अरचादचियिऱ्-विशिष्ट (मोक्ष-)साम्राज्य में; उळ्ळम्-मन; मुळ्ळम्-मेरा मन; इतियतु पोलुम्-सुखद दिखनेवाले; इव्वरचै-इस राज्य को; यैण्णुमो-(कोई वस्तु) मानेगा क्या । २३

मेरा मन अब मोक्ष-साम्राज्य में लग गया है। वह दुखदायी इंद्रियों रूपी अक्षय और अजेय रूप से सतानेवाले बड़े शत्रुओं के कारण हो जानेवाले दोषों से छूटने पर प्राप्त होती है। उसमें लगा मेरा मन अब क्या दिखावे के सुख वाले इस राज्य को कोई (मूल्यवान) पदार्थ मानेगा ? नहीं । २३

ॐ उम्मैया नुडैमयि तुलहम् यावैयुम्, चैम्मैयि तौम्बिनल् लऱमुज् जैय्दत्तैन् इम्मैयि नुदवियैन् निशैन् डायनीर्, अम्मैयु मुदवुड् कम्मैय वैण्डुमाल् 24

यान्-मैं; उम्मे उडैमैयिन्-आप लोगों को (मन्त्रियों के रूप में) प्राप्त किए रहने के कारण; उलकम् यावैयुम्-सारे लोकों को; चैम्मैयिन्-ठीक तरह से; ओम्पि-रक्षित करके; नल् अऱमुम् चैय्दत्तैन्-अच्छे धर्म-कार्य भी कर चुका; इम्मैयिन् उतवि-इह जीवन में मेरी सहायता करके; अँन् इचै नटाय-मेरी कीर्ति को फैलानेवाले;

नीर्-आप लोग; अमृतैयुम् उतवुतःकु-परलोक जीवन में भी सहायता देने को; अमैव वेष्टुम्-सम्मान हों । २४

आपको मैंने अपने मंत्रियों के रूप में पाया । इसीलिए मैं भूमि का ठीक तरह से पालन करके अच्छे धार्मिक कार्य पूरा कर सका । इह-जीवन में सहायक रहकर मेरी कीर्ति को बढ़ाने के आप ही हेतु रहे । ऐसे आप मेरे पारलौकिक जीवन में भी भला दिलाने में सहायक बनने की इच्छा करें । २४

इल्लैततौल्	वित्तैययुड्	गडक्क	वैण्णुदल्
तल्लैततपे	ररुळुडैत्	तवत्ति	त्ताहुमेल्
कुल्लैततदो	रमुदिनैक्	कोड	नीङ्गिवे
इल्लैततती	विडत्तित्तै	यरुन्द	लाहुमो 25

इल्लैत- (पूर्व-) कृत; तौल् वित्तैययुम्-प्राचीन कर्मों के फल को; कटक्क-साधने के लिए; वैण्णुतल्-विचार करना; तल्लैत-अधिक; अरुळु उटै तवत्तिन्-भूत-दया पर आधारित तपस्या से; आकुमेल्-सफल हो सकता है तो; कुल्लैततु ओर् अमुत्तिन्नै-औषधि डालकर, मथकर निकाले गये अमृत को; कोटल् नीक्कि-लेना छोड़कर; वेळु अल्लैत-दूसरी रीति से प्राप्त; ती विडत्तित्तै-भयंकर विष को; अरुन्तळ् आकुमो-खाना ठीक हो सकता है क्या । २५

प्रारब्ध (संचित) कर्म भी भूत-दया से प्रभावित तपस्या के फलस्वरूप काट लिया जा सकता है । तब औषधि-सहित सागर-मथन से प्राप्त अमृत को छोड़कर विष पीने को उद्यत होना कहाँ तक उचित है? (तपस्या अमरता देगी । जीवन भोग कर्म को बढ़ायेगा, अतः वह विषतुल्य है ।) । २५

कच्चयड्	गडहरिक्	कळुत्तिन्	कण्णुरप्
पिच्चमुड्	गविहयुम्	वैय्यु	मिन्तिळल्
निच्चय	मन्ऱैत्ति	नैडिदु	नाळुण्ड
अच्चिलै	नुहरुव	दिन्ब	माहुमो 26

कच्चै-रस्सी बंधे; अम् कटम् करि-सुन्दर मत्तगज के; कळुत्तिन् कण् उर-गर्बल पर बैठे; पिच्चमुम्-मोरछल; कविकैयुम्-श्वेतछत्र; पय्युम्-जो देते हैं उस; इन् निळल्-सुख छाया में रहनेवाला जीवन; निच्चयम् अन्ऱु अन्निन्-शाश्वत नहीं है तो; नैडिदु नाळु उण्ट अच्चिलै-दीर्घकाल से खाये हुए जूठन को; नुकरुवतु-भोगता रहना; इन्पम् आकुमो-सुख हो सकता है क्या । २६

गले में बँधी रस्सी के साथ रहनेवाले मत्त गज पर सवारी और मोरछल, श्वेतछत्र आदि की छाया, अर्थात् राजा का जीवन शाश्वत नहीं है । यह जानकर भी जूठन के भोग में लगा रहना आनन्ददायक हो सकता है क्या ? यह भोग भी काफ़ी दिनों तक भोगा जा चुका है ! । २६

मैन्दरै	यिन्मयिन्	वरम्बिल्	कालमुम्
नौन्दनै	निरामनैन्	नोवै	नीक्कुवान्
वन्दन	नवनिनि	वरुन्द	यान्पिळैत्
तुयन्दनैन्	पोवदो	रुदि	यैण्णिनेन् 27

मैन्दरै इन्मैयिन्-सन्तान के न होने से; वरम्पु इल् कालमुम्-असीम काल तक; नौन्दनै-दुखी रहा; अन् नोयै नीक्कुवान्-मेरा (दुख-) रोग दूर करने; इरामन् वन्दन-श्रीराम आया है; इति-अब; अवन् वरुन्द-वह कण्ठ उठावे; यान्-मैं; पिळैत्तु उयन्दनैन् पोवदु-वचकर तर जाने का; ओर् उरुति-एक हित; यैण्णिनेन्-सोचा । २७

मै सन्तान के न होने से कितने ही वर्षों से (असीम काल तक) दुखी रहा । मेरे दुख-रोग को दूर करने के लिए राम आकर पैदा हो गया । अब वह भार अपने ऊपर ले लेगा और मैं इससे मुक्त हो जाऊँ —यह हित-साधन करने की बात मैंने सोची है । २७

इरन्दिलन्	शैरुक्कळत्	तिरामन्	रादैदान्
अरन्दलै	निरम्बमूप्	पडैन्द	पिन्नरुम्
तुइन्दिल	नैन्वदोर्	शौल्लुण्	डान्पिन्
पिइन्दिल	नैन्वदिर्	पिडिडुण्	डाहुमो 28

इरामन् तातै-राम का पिता; शैरुक्कळत्तु-इरन्तिलन्-समरभूमि में न मरा; तान् मूप्पु अटैन्त पिन्नरुम्-वार्द्धक्य प्राप्त करने के बाद भी; अरम् तलै निरम्प-धर्म के पूर्ण-साधन में; तुइन्तिलन्-विरक्त नहीं हुआ; अन्पु ओर् चोल्-ऐसी एक (निन्दा की) बात; उण्टान पिन्-हो जाने के बाद; पिइन्तिलन् अन्पितिन्-जन्म नहीं लिया, इस (अपयश) के सिवा; पिडितु उण्टाकुमो-और कुछ हो सकता है क्या । २८

अब भी मैं वानप्रस्थ न बनूँ तो अपयश हो जायगा । लोग कहने लगेंगे कि बूढ़ा दशरथ न किसी समर में मरा; न वार्द्धक्य प्राप्त करने के बाद पूर्ण धर्म साधनार्थ उसने संन्यास लिया । ऐसी अपकीर्ति हो गई तो मानव-जन्म व्यर्थ गया । इसके अतिरिक्त क्या मिल सकता है ? । २८

✽ पेरुमह	नैन्वयिर्	पिइक्कच्	चोदयाम्
तिरुमहण्	मणविनै	तैरियक्	कण्ड
अरुमह	निरैकुणत्	तवन्ति	मादैन्नुम्
औरुमहण्	मणमुडुण्	डुवप्प	वैण्णिनेन् 29

पेरुमकन्-पुरुषोत्तम (राम); अन् वयिन् पिइक्क-मेरा पुत्र पैदा हुआ और; चोतै आम् तिरुमकळ-सीता नाम की लक्ष्मीदेवी के साथ (उसका); मणविनै-विवाह हुआ, उसको; तैरिय कण्ड यान्-प्रत्यक्ष देखा मैंने; ऐसा मैं; अरु मकन्-श्रेष्ठ पुत्र का; निरै कुणत्तु-पूर्ण-गुण वाली; अवन्ति मातु अन्नुम्-भूमि देवी रूपी; और

मकळ मणमुम्—एक देवी के साथ विवाह भी; कण्टु उवप्प—देखकर आनन्दित होने की बात; अण्णिन्नेन्—सोची । २६

राम पुरुषोत्तम है । वह मेरा पुत्र पैदा हुआ । उसका श्रीलक्ष्मी देवी और भूदेवी दोनों के साथ परिणय हो, यही उचित है । सीता के साथ उसका विवाह कराकर मैंने अपनी आँखों से लक्ष्मी का विवाह देख लिया । अब सर्वगुणसम्पन्न भूदेवी से भी उसका विवाह देखकर आनन्द पाना चाहता हूँ । (श्रीविष्णु के दो देवियाँ मानी जाती हैं— श्रीदेवी और भूदेवी । श्रीराम विष्णु के अवतार थे । इसलिए भूदेवी से उनके व्याह की बात उचित है । अलावा साहित्य में राजा को भूमि का पति मानना प्रचलित है ।) । २९

निवप्पुरु	निलत्तैनु	निरम्बु	नङ्गयुम्
शिवप्पुरु	मलर्मिशैच्	चिउन्त	शैल्वियुम्
उवप्पुरु	कणवत्तै	युधिरि	नैय्दिय
तवप्पयन्	राळप्पटु	दरुम्	मन्ऱो 30

निवप्पु उरु—उत्कृष्ट; निलन् अत्तुम्—भूमि रूपी; निरम्बु नङ्गैयुम्—सर्वगुणपूर्णा देवी भी; चिवप्पु उरु मलर् मिच्चै—ललाई लिए रहनेवाले (कमल) फूल पर; चिउन्त—शोभने वाली; शैल्वियुम्—श्रीदेवी; उवप्पु उरु—मन भानेवाले; कणवत्तै—नायक को; उधिरिन्—अपने प्राणों के समान; अय्त्तिय तवम् पयन्—प्राप्त करानेवाले तप के फल की प्राप्ति को; राळप्पटु—स्थगित कराना; तरुम् अत्तु—धर्म नहीं होगा । ३०

अब दोनों देवियाँ— उत्कृष्ट भूमि की देवी और लाल-कमल-निवासिनी श्रीदेवी अपनी इच्छा-योग्य पति को, जो उनके प्राणों के समान उन्हें प्यारा है, अपनी तपस्या के फल के आधार पर पानेवाली हैं । उसमें देरी कराना धर्म नहीं होगा । ३०

ॐ आदला	लिरामत्तुकु	करशै	नल्हियप्
पेदमैत्तु	ताय्वरुम्	बिउप्पै	नीक्कुवान्
मादवन्	दौडङ्गिय	वत्तत्तै	नण्णुवेन्
यादुत्तुङ्	गरुत्तैन्	चित्तैय	कूडित्तान् 31

आतलाल्—इसलिए; अरच्चै—राज को; इरामत्तुकु नल्कि—राम को देकर; पेत्तैमैत्तु आय् वरुम्—अविद्या से प्राप्य; पिउप्पै—जन्म को; नीक्कुवान्—रोकने के लिए; मा तवम् तौडङ्गिय—बड़ी तपस्या करने के हेतु; वत्तत्तै नण्णुवेन्—वन में जाऊंगा; तुम् करुत्तु यातु—आपकी राय क्या है; अत्तु—ऐसा; इत्तैय कूडित्तान्—ये बातें कहीं, (दशरथ ने) । ३१

इसलिए राज्य को राम के पास सौंपकर, अविद्याजन्य जन्म को रोकने

के हेतु बड़ी तपस्या करने की इच्छा से मैं वन में जाना चाहता हूँ । इसमें आपकी राय क्या है ? दशरथ ने सारी बातें कहकर यह प्रश्न किया । ३१

तिरण्ड	तोळित्त	त्तिप्पडिच्	चैप्पवुव्	जिन्ब
पुरण्डु	मीदिडप्	पौङ्गिय	वुवहय	राङ्गे
वैरुण्डु	मन्तवन्	पिरिवैनुम्	विम्भुळु	निलैयाल्
इरण्डु	कन्ऱित्तुक्	किरङ्गुमो	रावैन्	विरुन्दार् 32

तिरण्ड तोळित्तन्-पुण्ड कंधों वाले (दशरथ) के; इप्पडि चैप्पवुव्-ऐसा कहने पर; चिन्तै-मन में; पुण्डु मीतु इट-उठकर ऊपर; पौङ्गिय-उमड़ते हुए; उवकैयर-आनन्द से प्रेरित हो; आङ्के-तभी; मन्तवन् पिरिवैनुम्-राजा का बिछोह स्वी; विम्भुळु निलैयाल्-दुखदायक स्थिति से; वैरुण्डु-घबड़ाकर; इरण्डु कन्ऱित्तुक्कु-दो बछड़ों के बीच; इरङ्कुम् ओर् आ अन्त-स्नेहाद्रं गाय के समान; इरुन्दार्-रह गये । ३२

पुण्ड कंधों वाले दशरथ के यों कहने पर मन्त्री लोगों के मन में अपार हर्ष उमड़ आया । लेकिन तभी राजा का बिछोह भी उन्हें खलने लगा । तब वे उस गाय की-सी दशा में पड़ गये जो दो बछड़ों से स्नेह करके असमंजस में पड़ जाती हो । वे भ्रमित रह गये । ३२

अन्त	रायिनु	मरशनुक्	कदुवल्ल	बुरुदि
पिन्त	रिल्लन्तक्	करुदियुम्	वैरुनिल	वरैप्पिन्
मन्नु	मन्नुयिर्क्	किरामतिन्	मन्तव	रिल्लै
अन्त	वुन्तियुम्	विदियदु	वलिथिनु	मियेन्दार् 33

अन्तर् आयित्तुम्-बैती दशा में रहने पर भी; अरचत्तुक्कु-राजा का; पिन्तर् उरुति-पर-जीवन-हित; अतु अल्लतु इल्-वह (तपस्या) छोड़ दूसरा नहीं; अन्त करुदियुम्-यह सोचकर, और; वैरु निल वरैप्पिल्-विशाल भूतल में; मन्तुव्-रहनेवाले; मन्नु उयिर्क्कु-अक्षय जीवों के लिए; इरामतिन्-श्रीराम के समान; मन्तवर्-राजा; इल्लै-नहीं मिलेंगे; अन्त वुन्तियुम्-यह भी सोचकर; वित्तियु वलित्तियुम्-और विधि के प्रभाव से; इयैन्दार्-सहमत हुए । ३३

दशरथ-वियोग को दुख मानते हुए भी उन्होंने उनके सुझाव को सहमति दी क्योंकि दशरथ का हित तपस्या को छोड़ और किसी में नहीं था । विशाल भूमि पर रहनेवाले सभी अक्षय जीवों के लिए श्रीराम के समान कोई भला राजा नहीं मिल सकता था । उन्होंने यह सोचा और प्रबल विधि का भी विधान वही था । ३३

❖ इरुन्द	मन्दिरक्	किळवर्द	मैण्णमु	महन्पाल
परिन्द	शिनदयम्	मन्तवन्	करुदिय	पयनुम्

पौरुन्दु मन्तुयिर्क् कुरुदियुम् पौदुवुः नोक्कित्
 तैरिन्द नान्मरैत् तिश्मुहन् इरुमहन् चैप्पुम् 34

तैरिन्द नान् मरै-पठित चारों वेदों का ज्ञान रखनेवाले; तिश्मुकन् तिर मकन्-
 चतुर्मुख के पुत्र; इरुन्त-(सभा में) रहनेवाले; मन्तिरम् किल्लवर् तम् अँगणमुम्-
 (मन्त्रणा देनेवाले) मन्त्रियों का विचार और; मकन् पाल्-अपने पुत्र पर; पौरिन्त-
 वात्सल्य रखनेवाले; चिन्तै-मन के; अ मन्तवन्-उन राजा (दशरथ) के; कुरुदिय-
 सोचे हुए; पयत्तुम्-सुफलवायी कार्य को; मन् उयिर्क्कु-(और उससे) स्थायी
 प्रजाजनों को; पौरुन्तुम् उरुदियुम्-प्राप्य भले को; पौतु उर नोक्कि-तटस्थता से
 देखकर; चैप्पुम्-बोले । ३४

तब वसिष्ठजी बोले । वेदज्ञ और ब्रह्मा के पुत्र उन्होंने सभी
 सलाहकार मन्त्रियों का विचार, अपने पुत्र पर अगाध वात्सल्य रखनेवाले
 दशरथ का सोचा हुआ शुभकार्य, और अक्षय प्रजाजनों का हित —इन सब
 पर तटस्थता से विचार किया । उन्होंने यों कहा । ३४

[तमिल में “मन् उयिर” कहने की परिपाटी है । जीवात्मा भी
 परमात्मा के समान शाश्वत है, यह हिन्दू धर्म में जाना जाता है । दूसरा
 जब तक लोक है तब तक जीव रहेंगे ही] ।

✽ निरुब निन्कुल मन्तवर् नेमिपण् डुरुट्टिप्
 पैरुमै यैय्दिनर् यावरे यिरामत्तैप् पेंडुऱ्
 करुम मुम्मिदु कर्ङ्गणर्न् दोरुहट्टुक् कडव
 वरुम मुम्मिदु तक्कदे नितैन्दतै तहवोय् 35

तहवोय्-महिमावान्; निरुप-नृप; पण्डु-पहले; नेमि उरुट्टि-(आज्ञा-)
 चक्र चलाकर; पैरुमै अयित्तोर्-कीर्ति प्राप्त; निन् कुलम् मन्तवर्-आपके कुल के
 राजाओं में; यावर् इरामत्तै पेंडुऱ्-किसने राम को (पुत्र के रूप में) पाया;
 करुमुम् इतु-कर्म यही है; कर्ङ्गणर्न्तोर्कट्टु-धर्मशास्त्र का अध्ययन कर जिन्होंने
 ज्ञान प्राप्त किया है उन्हें; कडव-कर्तव्य; तहममुम् इतु-धर्म भी यही है; तक्कतै
 नितैन्दतै-उचित ही (आपने) सोचा है । ३५

हे महिमावान् ! आपका भाग्य अभूतपूर्व है । आपके पहले जितने
 भी राजा आज्ञाचक्र चलाकर गौरवान्वित हुए उनमें किसका भाग्य था
 कि श्रीराम उसके पुत्र पैदा होते ? अब यही यानी तप करना आपका श्रेष्ठ
 कर्म भी है; और शास्त्रज्ञों का कर्तव्य धर्म भी है । आपने बहुत ही उचित
 बात सोची है ! । ३५

पुण्णि यम्बुरि वेळ्विहळ् यावयुम् बुरिन्द
 अण्ण लेयिति यरुन्दव मियडुवु मडुक्कुम्
 वण्ण मेहलं निलमहण् मडुऱ्त्तैप् पिरिन्दु
 कण्णि ल्ळन्विल लैत्तच्चैयु नौतन्द कळ्ळसोत् 36

पुण्णियम् पुरि-पुण्यकारी; वेळ्विकळ् यावयुम्-(कर्तव्य) सभी यज्ञ; पुरिन्त-
(जो) कर चुके; अण्णले-हे महिमावान; इन्नि-आगे; अरु तवम्-उपादेय तप;
इयड्डुम् अट्टुक्कुम्-करना भी उचित ही होगा; वण्णम् मेकलै-सुन्दर मेखलाधारिणी
(समुद्र-मेखला); निलम् मकळ्-पृथ्वी देवी; उन्नै पिरिन्तु-आपको छोड़कर; कण्
इळन्तिलळ्-आँखों से हीन नहीं हुई; अन्न-ऐसा; नी तन्त कळलोन्-आपके (पुत्र)
पायलधारी श्रीराम; चैयुम्-(कार्य) करेंगे । ३६

पुण्यप्रद सभी यज्ञों के याजी ! अब तपस्या करना भी उपयुक्त ही
है । सुन्दर (समुद्र-)मेखला पृथ्वी आपसे विछुड़ने से आँखों से हीन नहीं
हो जाय यह व्यवस्था आपके पुत्र वीर पायलधारी श्रीराम कर देंगे । ३६

पुडत्तु	नामौर	पौरुळिन्निप्	पुहल्हिन्ड	दैंवन्तो
अडत्तिन्	मूरत्तिवन्	दवदरित्	तानैन्व	दल्लाल्
पिडत्ति	यावयुड्	गात्तवै	पिन्निन्ड	तुडैक्कुम्
तिडत्तिन्	सूवरुन्	दिरुत्तिन्	तिरुत्तुमत्	तिडलोन् 37

अडत्तिन् मूरत्ति-धर्मस्वरूप परात्पर; वन्तु-(स्वेच्छा-से) आकर; अवतरित्तान्
अन्नपु अल्लाल्-अवतरित हुए हैं, इसके सिवा; पुडत्तु-और; नाम-हम; और
पौरुळ्-कोई बात; पुक्कळ्किन्डु अवन्-कहें क्या; यावयुम् पिडत्तु-सबको उत्पन्न
करके; पिन् निन्ड कात्तु-बाद उन सब की रक्षा कर; अव तूटैक्कुम्-उन सब को
मिटाने का; तिडत्तिन् सूवरुम्-सामर्थ्य रखनेवाले तीनों के; तिरुत्तिन्-कृत्यों को;
अ तिडलोन्-वह सर्वशक्तिमान; तिरुत्तुम्-स्वयं अकेले पूरा करेंगे । ३७

स्वयं परात्पर भगवान, धर्ममूर्ति अपनी इच्छा से अवतरित हुए हैं
इसके अलावा हम और क्या कह सकेंगे ? सृष्टि, स्थिति और संहार के तीनों
के कर्ता ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र तीनों जो करने का सामर्थ्य रखते हैं उन
तीनों के कार्य को ये अकेले ही कर चुकेगे । ३७

पौन्नु	यिरुत्तप्	मडन्दयुम्	वुवियैन्नु	दिरुवुम्
इन्नु	यिरुत्तुणै	यिवन्नै	निनैक्किन्ड	विरामन्
तन्नु	यिरुक्कैन्गै	पुल्लिडु	तडपयन्	दंडुत्त
उन्नु	यिरुक्कैन्	नल्लन्मन्	नुयिरुक्कैला	मुरवोय 38

उरवोय-शक्तिमन्त; पौन् उयिरुत्त-सुन्दरता की जननी; पू मडन्तैयुम्-
कमला श्रीदेवी; पुवि अन्नम् तिरुवुम्-और भूदेवी; इवन् इन् उयिरुत्तुणै-ये हमारे
प्यारे प्राणाधार हैं; अन्न निनैक्किन्ड-ऐसा (जिनको) मानती हैं; इरामन्-वे श्रीराम;
तन् उयिरुक्कु-मेरे प्राणों का; (नल्लन्-हितकारी); अन्कै पुल्लितु-कहना छोटी
बात है; (अवन्) तन् पयन्तु अट्टुत्त-उनको जिन्होंने जन्म दिया; उन् उयिरुक्कु
अन्न-उन आपके प्राणों के लिए, जैसे; मन् उयिरुक्कु अत्तालाम्-अक्षय सभी जीवों के
लिए; नल्लन्-हित हैं । ३८

शक्तिमान ! शोभाशालिनी श्रीदेवी और भूदेवी दोनों इनको अपने-
अपने प्राण-प्यारे नाथ समझती हैं । ऐसे श्रीराम को आप अपने प्राणों का

हितकारी समझते हैं, यह छोटा विचार है। उनके जन्मदाता आपके लिए जैसे वे हितरक्षक हैं उतने ही सभी जीवों के धाता हैं। ३८

वार	मैन्निनिप्	पहरवदु	वैहलु	मत्तैयान्
पेरि	नाल्वरु	मिडरैलाम्	वैयर्हिन्ऱ	पयत्ताल्
वीर	निन्कुल	मैन्दनै	वेदियर्	मुदलोर्
यारुन्	दाज्जैय्द	नल्लऱप्	पयन्नै	विरुप्पार् 39

वीर-प्रतापी; वैकुलम्-रोज; अत्तैयान्-उनके; पेरिनाल्-नामस्मरण से; वरुम् इटर् अलाम्-आनेवाले संकट सब; पयर्किन्ऱ पयत्ताल्-हट जाते हैं, इस फल से; निन्कुलम् मैन्दनै-आपके उत्तम पुत्र को; वेदियर् मुतलोर् यारुम्-वेदज्ञ ब्राह्मण आदि सब; ताम् चैय्त् नल् अरुम् पयन् अत्त-हमारे किये श्रेष्ठ धर्मों का फल समझते; इरुप्पार्-रहते हैं; वारम्-प्रजाजनों का; अन् इति पक्कवु-आगे क्या कहा जाय। ३९

हे वीर ! आनेवाले सभी संकट श्रीराम के दैनिक नामस्मरण से दूर हो जाते हैं। इस कारण वेदज्ञ विप्र सब श्रीराम को अपने सुकृतों का सुफल जानकर उनसे भक्ति करते रहेंगे। तो मामूली प्रजाजनों की बात कहने की आवश्यकता है क्या ? वे भी उन पर अगाध भक्ति रखेंगे। ३९

मण्णि	नुन्नल्लण्	मलरुमहळ्	कलैमहळ्	कलैयूर्
पैण्णि	नुन्नल्लळ्	पैरुम्बुहळ्च्	चत्तहियो	नल्लळ्
कण्णि	नुन्नल्लन्	कऱ्ऱवर्	कऱ्ऱिला	दवरुम्
उण्णु	नीरिन्नु	मुयिरिन्नु	मवन्नैये	युहप्पार् 40

मण्णिलुम् नल्लळ्-(क्षमा में) पृथ्वी से अधिक भली; मलर् मकळ्-कमला; कलैमकळ्-सरस्वती; कलै ऊर पैण्णितुम्-हरिणवाहना (सती) देवी से; नल्लळ्-(क्रमशः सौंदर्य, बुद्धिशक्ति और चारित्र्य में) अधिक श्रेष्ठ; चत्तकियाम् नल्लळ्-जानकी जो उत्तम है, उनकी; कण्णितुम् नल्लन्-आँखें भी श्रेष्ठ हैं; कऱ्ऱवर् कऱ्ऱिलातवरुम्-शिक्षित और अशिक्षित; उण्णुम नीरिन्नुम्-पेय जल से भी; उयिरिन्नुम्-अपनी जान से भी; अवन्नैये उक्कप्पर्-उनको चाहते हैं। ४०

सीताजी क्षमा में पृथ्वी से, सौन्दर्य में कमला से, बुद्धि-शक्ति में सरस्वती से और सतीत्व में स्वयं सतीदेवी से बढ़कर भली हैं। उनकी भी आँखों में श्रीराम श्रेष्ठ हैं। शिक्षित और अशिक्षित सभी लोग उन्हें अपने पेय जल से भी अधिक, अपने प्राणों से भी अधिक मानकर आनन्द अनुभव करेंगे। ४०

मत्तिदरु	वात्तवर्	मऱ्ऱुळो	रऱ्ऱुङ्गात्	तळिप्पार्
इत्तिय	मत्तुयिर्क्	किरामत्तिऱ्	चिऱन्ऱव	रिल्लै
अन्नैय	तादलि	नरशनिऱ्	कुरुप्पौरु	ळऱियिन्
पुत्तिद	मादव	मल्लदौन्	ऱिल्लैन्ऱप्	पुहन्ऱान् 41

अरच-राजन; मत्तिर्-मनुष्य; वातवर्-देव; मरु उळ्ळोर-अन्य सबों के; इनिय मन् उयिर्कु-प्रिय और शाश्वत जीव (आत्मा) को; अरुम् कातु हानियों से बचाकर; अळिप्पार्-सुरक्षित करनेवाले; इरामत्तिन्-श्रीराम से बढ़कर; चिन्तवर् इल्लै-श्रेष्ठ (कोई) नहीं है; अत्तैयन् आतलिन्-वैसे हैं, इसलिये; निरु उरु पोरुळ् अयिन्-आपका हित सोचें तो; पुत्तिम् मातवम् अल्लु-पवित्र तप का आचरण छोड़कर; ओन्ऱु इल् अत्तै-दूसरा कोई नहीं है, यह; पुक्न्ऱान्-कहा। ४१

राजन् ! मानव हों, सुर हों या अन्य; सभी प्राणियों को हानि से बचाकर अपनी कृपा का पात्र बनाकर पालन करनेवाले, श्रीराम से बढ़कर कोई नहीं मिल सकते। चूँकि वे ऐसे हैं, आपको अपने हित में पवित्र तपस्या करने जाने के अतिरिक्त कोई दूसरा कर्तव्य नहीं है। —महर्षि वसिष्ठजी ने यों कहा। ४१

❀ मरु	वत्तौत्तन्	वाशहड्	गेट्टलु	महत्तैप्
पैरु	वत्तिन्नुम्	विज्जहन्	पिटित्तवप्	पैरुविल्
इरु	वत्तिन्नु	मैत्तिमळु	वाळव	तिळुक्कम्
उरु	वत्तिन्नुम्	पैरियदो	रुवहैय	नात्तान् 42

अवन् चोत्तन् वाचकम् केट्टलुम्-उनके वचन सुनते ही; मकर्त्तै पैरु अत्तिन्नुम्-उनके जन्म के दिन से; पिज्जकन् पिटित्त-शिवगृहीत; अ पैरु विल्-उस बड़े चाप के; इरु अत्तिन्नुम्-भंजन के दिन से; मैत्ति-फेंके जानेवाले; मळु वाळवन्-परशुशस्त्रधारी परशुराम; इळुक्कम् उरु अत्तिन्नुम्-(जब) परास्त हुए उस दिन से भी; पैरियतु ओर्-अधिक बढ़ा; उवकैयन् आत्तान्-आनन्दित हुए। ४२

दशरथ ने उनके कथन सुने तो उन्हें अपार हर्ष हुआ। पुत्र-जन्म के दिन, शिवचाप-भंजन के दिन, और परशुरामगर्व-भंग के दिन, जो आनन्द उन्हें हुआ था उससे कई गुना अधिक आनन्द अव हुआ। ४२

अत्तैय	दाहिय	वुवहयन्	कण्गणी	ररुम्ब
मुनिवन्	मामलर्प्	पादङ्गण्	मुत्तैयि	निर्ऱजि
इनिय	शौल्लिनै	यैम्बैरु	मात्तरुळ्	वळियिन्
तनिय	नात्तिलन्	दाङ्गिय	दवर्कुडु	तहादो 43

अत्तैयतु आकिय-उस प्रकार के; उवकैयन्-आनन्दयुक्त दशरथ; कण्कळ् नीर् अरुम्प-आँखों में (अश्रु-) जल के ढलकते; मुत्तिवन्-मुनिवर के; मा-उत्तम; मलर् पातङ्कळ्-कमल चरणों की; मुत्तैयिन् इर्ऱजि-उचित रीति से वन्दना करके; अम् पैरुमान्-मेरे नाथ; इनिय चोत्तित्तै-हितवचन कहे; वळियिन्-(आप से निर्दिष्ट) मार्ग पर; तनियन्-(चलकर) आँकन मैने; नात्तिलम् ताङ्कियतु-भूमि का भरण किया; अरुळ् वळियिन्-आपके कृपा से निर्दिष्ट मार्ग से ही; अतु-वह (मार्गदर्शन की कृपा); अवर्कु-श्रीराम को भी; तकातो-प्राप्य नहीं होगा क्या। ४३

ऐसे आनन्द से भरकर राजा ने अश्रुमय आँखों के साथ-साथ मुनिवर के कमल-चरणों की यथाविधि वन्दना की। “मेरे नाथ ! आपने बहुत ही हित-वचन कहे। आपके निर्दिष्ट मार्ग पर चलकर ही, अकिंचन मैंने भू-भार वहन किया। अब वही आपकी मार्गदर्शन की कृपा श्रीराम को भी प्राप्य नहीं होगी क्या ? अवश्य होगी। वह भी उसके योग्य रहेगा। ४३

अँन्दै	नीयुवन्	दिदज्जौल	वँङ्गुलत्	तरशर्
अन्द	मिल्लदोर्	पैरुम्बुह	लवत्तियि	निरुत्ति
मुन्दु	वेळ्वियु	मुडित्तुत्तम्	मिरुवित्तै	मुडित्तार्
वन्द	दव्वरु	ळैलक्कुम्मेन्	रुरैशैय्दु	महिळ्न्दात् 44

अँन्तै-पितृतुल्य; अँम् कुलत्तु अरचर्-मेरे कुल के राजाओं ने; नी उवन्तु इतम् चोल-आपके सन्तुष्ट होकर हितोपदेश करते; अवत्तियिल्-अवनि में; अन्तम् इल्लत्तु-सीमाहीन; ओर् पैरु पुक्कळ् निरुत्ति-एक बड़ा यश स्थापित करके; मुन्दु वेळ्वियुम् मुडित्तु-पहली श्रेणी के अनेक यज्ञ पूरा करके; तम् इरु वित्तै मुडित्तार्-अपने दोनों कर्म-(वासना-)क्षय कर लिया; अ अरुळ्-वह कृपा; अँनक्कुम् वन्तु-मुझे भी मिली; अँन्नु उरै चैय्त्तु-ऐसा कथन करके; मकिळ्न्तात्-आनन्दमग्न हुआ। ४४

मेरे पितृतुल्य ! मेरे पूर्वजों ने आपके तत्व-हितोपदेश के कारण भूमि पर बड़ा यश अर्जित कर स्थायी बनाया; अनेक श्रेष्ठ यज्ञ सम्पन्न किये और अपने पाप-पुण्य दोनों कर्मों का क्षय करा लिया (मुक्ति के योग्य बने)। वह कृपा मुझे भी प्राप्त हुई।” —यह दशरथ ने सानन्द कहा। ४४

ॐ पळुदिन्	मादवन्	पिन्नीन्ऱुम्	पणित्तिल	निरुन्दात्
मुळुदु	मैण्णुरु	मन्दिरक्	किळ्वर्तम्	मुहत्ताल्
अँळुदि	नीट्टिय	विङ्गिद	मिरैमहर्	केरुत्
तौळुद	कैयिनन्	सुमन्दिरन्	मुन्निन्ऱु	शौल्लुम् 45

पळुत्तु इल्ल मादवन्-निर्मल और महान तपस्वी; पिन् ओन्ऱुम् पणित्तिलन्-फिर कुछ नहीं बोले; इरुन्तात्-चुप रह गये; मुळुत्तुम् मैण्णुरु-सभी ओर से (वात का) विचार करनेवाले; मन्तिरम् किळ्वर्-परामर्शदाता मन्त्रियों के; तम् मुक्त्ताल् अँळुत्ति नीट्टिय-अपने-अपने मुखों (भावप्रदर्शन) से लिखकर बढ़ाये हुए (प्रकट किये गये); इङ्कितम्-इंगित को; इरै मक्कु-राजा को; एर-समझाते हुए; सुमन्तिरन्-सुमन्त्र; मुन् निन्ऱु-सामने खड़े होकर; तौळुत्तु कैयिनन्-हाथ जोड़कर; शौल्लुम्-कहने लगे। ४५

पवित्र और महान तपस्वी वसिष्ठजी ने आगे कुछ नहीं कहा। वे मौन रह गये। तब मन्त्रिमण्डल के सभी सदस्यों की सम्मिलित राय को,

उनके मुखों पर अंकित भावों के प्रतिफलन से समझकर सुमंत नाम के मन्त्री हाथ जोड़कर खड़े हो गये और दशरथ के सामने निम्नलिखित वचन कहने लगे । ४५

✽ उरत्त	हुमर	शिरामर्कन्	रुवक्किन्	मनत्तै
तुत्त	नीयैनु	जौरुचुडु	मुत्तुगुल	तौल्लोर्
मत्तल	शैयहलात्	तरुमत्तै	मत्तुपुटुम्	वळक्कन्
उत्त	नूङ्गित्तिक्	कौडिदै	लावदौन्	रियादे 46

अरचु इरामर्कु उर तकुम्—राज्य श्रीराम का होना उपयुक्त है; अन्नु—ऐसा; उवक्किन् मनत्तै—मोद करनेवाले मन को; नी तुत्त—आप वैराग्य ले रहे हैं; अन्नु चोल—यह कथन; चुटुम्—जलाता है (क्लेश देता है); उन् कुलम् तौल्लोर्—आपके कुल के पूर्वजों ने; मत्तल चैयकला—(जिसको) नहीं भुलाया; तरुमत्तै—उस धर्म को; मत्तुपुटुम्—(आपका) भूल (छोड़) जाना भी; वळक्कु अन्नु—योग्य नहीं है; इति—अब; अत्तुत्तु ऊङ्कु—धर्म से बढ़कर; कौडितु अन्नु आवतु—कूर (बुझ देनेवाला) कहलाने योग्य; अन्नु यातु—एक क्या है । ४६

श्रीराम को राज मिलेगा और वे उसके परम योग्य है —इस विचार से हलसित-मन आप संन्यास ले लेंगे —यह बात सुनकर मन विदग्ध हो जाता है । आपके पूर्वजों ने ज्येष्ठ पुत्र को राज देकर स्वयं तपस्या करने की परिपाटी चलाई है और वह अचूक चलती है । उसको भुलाना भी सही नहीं होगा । धर्म भी कितना निष्ठुर है ! उससे बढ़कर निर्मम कौन सी वस्तु है ? । ४६

पुरैशै	माल्करि	निरुवरुम्	वुरत्तु	वोरुम्
उरैशै	मन्दिरक्	किळवरु	मुत्तिवरु	मुवप्प
मुरैश	मारप्पनिन्	मुदन्मणिप्	पुदल्वनै	मुट्टैयाल्
अरैश	नाक्किय	पिन्नुनक्	कडुत्तदु	पुरिवाय् 47

पुरैचै माल् करि—रस्सी सहित बड़े गजों के; निरुवरुम्—स्वामी राजा लोग और; पुरत्तु उरैवोरुम्—नगरवासी; उरै चैय् मन्तिरम् किळवरुम्—परामर्श देनेवाले मन्त्रीगण; मुनिवळुम्—मुनि; उवप्प—इनको आनन्द देते हुए; मुरैचम् आरप्प—भेरियों के नर्दन के साथ; निन्—आपके; मुत्तल मणि पुत्तल्वनै—ज्येष्ठ नीलीमणि-सम पुत्र को; मुट्टैयाल्—वेदोक्त रीति से; अरचन् आक्किय पिन्नु—राजा बनाने के बाद; अदुत्ततु—अपना उपयुक्त (तप का) कार्य; पुरिवाय्—कोजिए । ४७

आप कृपया एक काम कीजिये । पहले आप वेदोक्त रीति से अपने ज्येष्ठ पुत्र, नीलमणिवर्ण श्रीराम को राजा बना दीजिए ताकि गजपति राजा लोग, नगरवासी, मन्त्रीगण, मुनि, सबको सन्तोष हो जाय । फिर आप तपस्या करने जाइये । ४७

ॐ अन्तर वाशहज जुमन्दिर त्रियम्बलु मित्रैवन्
 नन्तु शौल्लिनै नम्बियै नळिमुडि शूटटि
 निन्तु निन्तुदु शैय्वदु विरैविनि तीये
 शैन्तु कौण्डणै तिरुमहळ् कौळुनतै अन्तरान् 48

अन्तर वाचकम्-ऐसे वाक्य; जुमन्तिरन् इयम्पलुम्-सुमन्त्र के कहने पर;
 इरैवन्-राजा ने; नन्तु शौल्लिनै-भला कहा; नम्पियै-नायक को; नळि मुडि
 शूटटि निन्तु-गौरवपूर्ण मुकुट पहना चुकर; निन्तुदु चैय्वतु-वचा रहा काम करना;
 तीये-आप ही; विरैविनि चैन्तु-सत्वर जाकर; तिरुमहळ् कौळुनतै-श्रीपति को;
 कौण्डु अणै-ले आइये; अन्तरान्-कहा । ४८

सुमन्त्र के ये वचन सुनकर राजा ने उनसे कहा कि आपने ठीक कहा ।
 श्रीराम को श्रेष्ठ गौरव बढ़ानेवाले मुकुट पहनाने के बाद ही दूसरा कार्य
 करूंगा । आप ही सत्वर जाकर श्रीपति को ले आयें । ४८

ॐ अलङ्गन् मन्तनै यडितौळु दवन्मन् मनैयान्
 विलङ्गन् माळिहै वीदियिन् विरैवौडु शैन्तरान्
 तलङ्गळ् यावयुम् पेरुनन् शान्तन् तळिर्प्पान्
 पौलङ्गी डेरौडु मिराहवन् तिरुमतै पुक्कान् 49

अवन् मतम् अनैयान्-उनके ही मन के समान मन वाले; अलङ्कल् मन्तनै-
 मालाभूषित-राजा के; अटि तौळु-चरणों पर प्रणाम करके; तलङ्कळ् यावयुम्-
 भूतल सब; तान् पेरुनन् अन्त-खुद प्राप्त कर लिया जैसे; तळिर्प्पान्-हुलसकर;
 पौलम् कौळु तेरौडु-स्वर्णनिर्मित रथ के साथ; विलङ्कल् माळिकै-पर्वत-सम सौधों
 वाले; वीदियिन्-मार्गों में; विरैवौडु-सत्वर; चैन्तरान्-गये; इराकवन् तिरुमतै-
 श्रीराघव के महल में; पुक्कान्-प्रविष्ट हुए । ४९

राजा के मन के अनुकूल ही सुमन्त्र का मन भी सोचने का आदी था ।
 उन्होंने मालाधारी राजा दशरथ के चरणों पर प्रणमन करके श्रीराम के
 महल की ओर प्रस्थान किया । उनके मन में ऐसा आनन्द उमड़ा मानो
 उन्हीं को सारी भूमि पर अधिकार मिल गया हो । वे रथ पर गये और
 रथ उस राजमार्ग पर गया जिसके दोनों किनारों पर पर्वत के समान उन्नत
 प्रासाद बने थे । स्वर्णमय रथ श्रीराम के महल को पहुँचा और सुमन्त्र
 श्रीराम के महल के अन्दर प्रविष्ट हुए । ४९

ॐ पण्णि निन्तनु दन्तव उन्तौडुम् विरिया
 वण्ण वज्जिलैक् कुरिशिलु मरुङ्गिनि दिरुप्प
 अण्ण लाण्डिरुन् दान्तळ् हरुन्त वन्तत्तन्
 कण्ण मुळ्ळमुम् वण्डैतक् कळिप्पुक्क कण्डान् 50

अण्णल्-पुरुष श्रेष्ठ; विरिया-अपने से कभी अलग न होनेवाले; वण्णम् वम्
 चिलै कुरिचिलुम्-सुन्दर और भयंकर धनुष के लघराज (लक्ष्मण) के; मरुङ्कु इतिवृत्त

इरुप्प-पार्श्व में सुख से रहते; पेंणुनिन्-स्त्रियों में; इन् अमुतु अन्नवळ् तन्तोडुम्-प्रिय सुधासम देवी (जानकी) के साथ; आण्डु-वर्हा; इरुन्तान्-विराजे रहे; अळकु-उनके सौंदर्य को; अरु नरुवु अन्न-अपूर्व शहद के समान; वण्डु अन्न-भ्रमर जैसे; तन् कण्णुम् उळ्ळमुम्-आँखें और मन; कळिप्पु उर-आनन्द से पूर्ण हो जायें, ऐसा; कण्डान्-दर्शन किया । ५०

वहाँ श्रीराम अपनी पत्नी सीताजी के साथ, जो स्त्रियों में अमृत के समान श्रेष्ठ थी, विराजमान थे । उनके पास लघुराज लक्ष्मण भी, जो उनसे कभी अलग नहीं जाते थे, विराजमान थे । श्रीराम का सौन्दर्य सुमंत्र के नेत्रों और मन के लिए श्रेष्ठ शहद के समान सावित हुआ । सुमंत्र ने मन में उल्लास के साथ उनको देखा । ५०

❖ कण्डु	कैतोळु	दैयविक्	कडलिडैक्	किळवोन्
उण्डोर्	कारियम्	वरुहैन्	वुरैत्तन्	नैत्तलुम्
पुण्ड	रीकक्कट्	पुरवलन्	पोरुक्कैन्	वैळुन्दोर्
कोण्डल्	पोर्चेन्ऱु	कोडिर्नेडुन्	देर्मिशक्	कोण्डान् 51

कण्ड-देखकर; कै तोळु-हाथ जोड़कर; ऐय-मेरे नाय; इ कटल् इट्टे-इस समुद्र-मध्य; किळवोन्-(भूमि के) पति ने; ओर् कारियम् उण्डु-एक कार्य है; वरुक्क अन्न-आओ, यह; उरैत्तत्तन्-कहा; अत्तलुम्-कहते ही; पुण्डरीकम् कण् पुरवलन्-पुण्डरीकाक्ष प्रभु; पोरुक्कैन्-झट; अळुन्तु-उठकर; ओर् कोण्डल् पोल् चैन्ऱु-एक मेघ समान चलकर; कोटि नैडु तेर् मिचै-ध्वजायुक्त व उन्नत रथ पर; कोण्डान्-सवार हुए । ५१

सुमंत्र ने श्रीराम के दर्शन करके हाथ जोड़कर नमस्कार किया । बाद सन्देश सुनाया कि समुद्रमध्यस्थ पृथ्वी के पति, आपके पिता ने यह कहला भेजा है कि कोई काम है, आओ । यह कहते ही, पुण्डरीकाक्ष, प्रभु श्रीराम तुरत उठे । मेघ जैसे चलकर ध्वजायुक्त ऊँचे रथ पर आरोहण किया । ५१

❖ मुर्दैयिन्	मोय्मुमुहि	लैन्मुर	शार्त्तिड	मडवार्
इरैह	ळन्ऱुशड्	गार्त्तिड	विमैयव	रैङ्गळ्
कुर्दैमु	डिन्देन्	शार्त्तिडक्	कुञ्जियैच्	चूळत्त
नरैय	लङ्गलवण्	डार्त्तिडत्	तेर्मिशै	नडन्दान् 52

मुर्दैयिन्-क्रमेण; मोय् मुकिल् अन्न-लसे मेघों के समान; मुरचु-ढोल; आर्त्तिट-वज्र उठे, तब; मडवार्-स्त्रियों के; इरै कळन्ऱु-हाथों से खिसके; चङ्कु-कंकण; आर्त्तिट-शब्द कर उठे; इमैयवर्-देवता लोग; अङ्कळ् कुर्दै-हमारा संकट; मुट्टिन्तु अन्न-मिट्टा, यह कहकर; आर्त्तिट-हल्ला मचा उठे; कुञ्जियै चूळन्त-केश को आवृत्त करनेवाली; नरै अलङ्कल्-शहद ढलकनेवाली रथ पर गये । ५२

जब वे वीथी पर चलने लगे तब मर्यादा के अनुसार क्रम से ढोल वज उठे। स्त्रियों के हाथों से खिसककर गिरनेवाले कंकण स्वर कर उठे। देवता लोग, हमारा संकट मिट गया, यह कहते हुए शोर मचाने लगे। श्रीराम के केश पर माला का वलय था; उससे शहद झरता था। उस पर मँडरानेवाले भ्रमरों ने गुंजार किया। इस रीति से श्रीराम रथ पर बढ़ते गये। ५२

पणैनि	रन्दत्त	पाट्टौलि	निरन्दत्त	वत्तङ्गन्
कणैनि	रन्दत्त	नाणौलि	कडङ्गिन्	निट्टैप्पेर्
अणैनि	रन्दत्त	वट्टिव्वेनुम्	पेरुपुत्त	लत्तैयार्
पिणैनि	रन्दत्तप्	परन्दत्तर्	नाणमुम्	बिरिन्दार् 53

पणै-ढोल (-नाद); निरन्दत्त-(फैल) भर गये; पाट्टु औलि-संगीत-नाद; निरन्दत्त-फैल गया; अत्तङ्कन् कणै-अनंग-शर; निरन्दत्त-व्याप गये; नाण औलि-(अनंगचाप की) प्रत्यंचा का नाद; कडङ्कित-सुनाई दिया; अट्टिव्वेनुम्-बोध रूपी; पेरु पुत्त-विपुल जलराशि; निट्टै-संयम रूपी; पेर अणै-बड़े बाँध को; निरन्दत्त-लाँघकर बह गई; लत्तैयार्-वे; नाणमुम् पिरिन्दार्-लाज खोकर; पिणै निरन्दत्त अत्त-हरिणियाँ जमा हुई, जैसे; परन्दत्तर्-आ जमा हुई। ५३

श्रीराम के चलते समय राजमार्ग पर ढोल-नाद फैला; संगीत का नाद फैला; अनंग शर (अंगनाओं के मनो में) भरे; अनंग के चाप की प्रत्यंचा (भ्रमरों) का टंकार (गुंजार) भरा। स्त्रियों को श्रीराम का बोध रहा और तदुत्पन्न प्रेमाधिक्य की जलराशि संयम रूपी बाँध को लाँघकर वहने लग गई। स्त्रियों का संयम छूट गया और उनकी लाज भी तिरोहित हो गई। वे धैर्य और लाज खोकर भाग आई और वीथी में हरिणियों के समान जुट गई। ५३

❀ नौळ	ळुत्तौडर्	वायिनुड्	गुळैयौडु	नैहिळ्न्द
आळ	हत्तिन्नो	डरमियत्	तलत्तिनु	मलरन्द
वाळ	रत्तवेल्	वण्डौडु	कण्डैहण्	मयङ्गच्
चाळ	रत्तिनुम्	बूत्तन्न	तामरै	मलरहळ् 54

नौळ अँळु तौटर् वायिनुम्-दीर्घ स्तम्भों वाले (प्रासादों के) द्वारों पर; अरमियम् तलत्तिनुम्-चन्द्रशालाओं पर; गुळैयौडुम्-कर्णकुण्डलों के साथ, और; नैकिळ्न्त-खिले; अळकत्तिन्नोडुम्-केश के साथ; तामरै मलरकळ्-(मुख-) कमल; अलरन्त-खिले; चाळरत्तिनुम्-गवाक्षों में भी; वाळ् अरत्तम्वेल्-तलवारों और रक्तरंजित भालों और; वण्डौडु कण्टैकळ्-भ्रमरों के साथ कण्टै नाम के मीन; मयङ्क-मिश्रित; पूत्तन्न-खिले। ५४

उन प्रासादों के द्वारों पर, जिनके खंभे अत्युन्नत थे, और उन प्रासादों की चन्द्रशालाओं में कमल विकसित दिखे। वे कमल कुण्डलों और बिखरे

केश के साथ खिले थे। वैसे ही गवाक्षों में भी कमल खिले थे और वे तलवारों, रक्तरंजित भालों, भ्रमरों और कँण्टै नाम की मछलियों से युक्त रहे। वे विचित्र कमल स्त्रियों के मुख थे। तलवारें, भाले, भ्रमर और मीन उनके नेत्र थे। ५४

मण्ड	लन्दर	मदिहँळ	मळमुहि	लनेय
अण्डर्	नायहत्	वरैपुरै	यहलतु	ळलङ्गल्
तौण्ड	वाय्चचियर्	निरैयौडु	नाणौडुन्	दौडर्न्द
कँण्डै	युम्मुळ	किळपयिल्	वण्टौडु	किडन्द् 55

मण्तलम् तरु-भूतलदत्त; मति कँळ-चन्द्रयुक्त; मळमुकिल् अन्त्य-काले मेघ के समान; अण्डर् नायकन्-देवों के नायक, श्रीराम के; वरै पुरै अकलततुळ्-पर्वत-सम वक्ष पर शोभित; अलङ्कल्-मालाएँ; तौण्ड वाय्चचियर्-विब(-फल) संदूश अधरों वाली प्रमदाओं के; निरैयौडुम्-संयम और; नाणौडुम्-लाज के साथ; तौडर्न्द-अनुगमन करते हुए; कँण्टैयुम् उळ-कँण्टै नाम के मीन भी हैं; किळ पयिल् वण्टौडु-‘कैकिळै’ नाम की तान अलापनेवाले भ्रमरों के साथ; किडन्त-पड़ी रहीं। ५५

श्रीरामचन्द्र के वक्ष पर माला शोभित थी। उस पर स्त्रियों की आँखें लगी हुई थी। कवि का वर्णन देखिये। भूतल पर अपूर्व रीति से उत्पन्न, चन्द्र सहित मेघ के समान थे श्रीराम। उनका श्रीवक्ष पर्वत के समान था। उनके वक्ष की माला पर स्त्रियों के संयम और लाज का पीछा करते आनेवाली कँण्टै नाम की मछलियाँ भी पाई जाती थीं और ‘कैकिळै’ नाम का राग अलापनेवाले भ्रमर भी थे। (भ्रमरों को अभिधा अर्थ में भ्रमर भी ले सकते हैं या लक्षणा द्वारा प्राप्त आँख के अर्थ में भी ले सकते हैं।)। ५५

शरिन्द	पूवुळ	मळैयौडु	कलैयुडत्	ताळप्
परिन्द	पूवुळ	पनिक्कडे	मुत्तिनम्	वडैप्प
अरिन्द	पूवुळ	विळपुलै	यिळैयिडै	नुळैय
विरिन्द	पूवुळ	वन्दर	वानिन्ऱु	वीळ 56

मळैयौडु-मेघों (रूपी केशों) और; कलै-पूर्णचन्द्र (मुखों) के; उड ताळ- (लाज से) खूब झुकने से; चरिन्त पू-(केशों से) छूटकर गिरे पुष्प; उळ-रहते हैं; पनि-शीतल; कटै-(स्त्रियों के) अपांगों के; मुत्तु इत्तम्-मोती (अश्रु) समूह को; पडैप्प-सृजित करते हुए; परिन्त-उनसे त्यक्त; पू उळ-पुष्प भी है; इळ मुलै-युवतियों के स्तनों के; इळै इटै नुळैय-आभरणों के मध्य घुस जाने से; अरिन्त-(स्तनों के ताप से) जलकर गिरे हुए; पू उळ-पुष्प है; अन्तरम् वान् निन्ऱु-आकाश मध्य से; वीळ-गिरने पर; विरिन्त पू-विकसित पुष्प; उळ-रहते हैं (वीथी पर ये सब बिछे रहते हैं)। ५६

उस मार्ग पर फूल बिछ गये। वे कैसे फूल थे और कहाँ से आ गिरे? प्रासादों के ऊपर स्थित स्त्रियों ने लाज से अपने मुख झुकाये। तब उनके मेघसम केश और चन्द्रसम मुख नीचे झुके। उस समय केशों की मालाओं से पुष्प छूटकर गिर गये। उन्होंने अपने अपांगों से मोतीसम अश्रुकण बरसाते हुए (प्रेमाधिक्य के कारण) स्वयं फूलों को उतार फेंका। वे फूल भी बिछे रहे। उनके युवास्तन तप्त रहे और जब वे मालाओं के मध्य प्रविष्ट हुए तब स्तनताप से माला के फूल झुलस कर गिर गये। देवलोक के, जो आकाश-मध्य है, देवता लोगों ने फूल बरसाये। वे मार्ग पर गिरकर खूब खिले हुए थे। इन सब तरह के फूल वहाँ पड़े रहे। (यह अशुभशकुन है।) । ५६

बळ्ळ	रैहळित्	तौळिर्वत्त	वाण्मिळिर्	मदियम्
तळ्ळ	रुच्चुमन्	दौळुतर	तमन्तियक्	कौम्बिर्
पुळ्ळि	नुण्पत्ति	पौडिप्पत्त	पौत्तित्तिर्	पौदिन्द
अळ्ळ	डप्पौरि	विरवित्त	बुळ्ळिशिल	विळनीर् 57

बळ उरु कळित्तु—(पलके रूपी) मोटी म्याने निकालकर; औळिर्वत्त बाळ-चमकती (आँख रूपी) तलवारों के साथ; मिळिर् मतियम्—प्रकाश देनेवाले चाँद को; तळ्ळरु चुमन्तु—लड़खड़ाते हुए ढोकर; अळुतर तमन्तियम् कौम्पिल्—उठनेवाली (प्रेमदाएँ रूपी) स्वर्णलताओं पर; चिल इळनीर्—कुछ (जोड़ों के) डामों पर; नुण्पत्ति—हल्के और शीतल; पुळ्ळि पौटिप्पत्त—(पसीने के) कण बिन्दियों के समान लगते हैं; पौत्तित्तिल् पौत्तिन्त—स्वर्ण (पीले) रंग की चित्तियों से भरे हैं; अळ् पौरि विरवित्त उळ—तिल भी बीच-बीच में दिखाई देते हैं। ५७

श्रीराम को देखकर जो स्त्रियाँ लड़खड़ाती हुई आईं उनके चन्द्रमुख पर म्यान-विमुक्त तलवारें (आँखें) चमक रही थीं। वे स्वर्ण-लताओं के समान थीं जिन पर दो-दो कच्चे नारिकेल पाये जाते थे। उन स्तनों पर ओसकण के समान स्वेदकण झलक आये थे और पीले रंग के धब्बे काले रंग के तिलों के साथ उनकी शोभा बढ़ा रहे थे। (पीला रंग या स्वर्ण-वर्ण चमड़े पर जो धब्बों के रूप में पाया जाता है वह जवानी की शोभा समझा जाता है। वह कभी विरह से भी उत्पन्न होता है जो पीले से अधिक सफेद रहता है। तिल भी सुन्दरता के चिह्न माने जाते हैं।) । ५७

ॐ आय	दव्वळि	निहळ्ळदर	वाडव	रैल्लाम्
तायै	मुन्तिय	कन्ऱैत्त	निन्ऱुयिर्	तळिर्प्पत्त
तूय	तम्बियुन्	दानुमच्च	चुमन्दिरन्	रैरमेल्
पौय	हड्गुळिर्	पुरवल	तिरुन्दुळिप्	पुक्कान् 58

आयतु—(जो उन नारियों पर) बीता; अव्वळि—ऐसा; निकळ्तर—होता रहा, तब; आटवर् अल्लाम्—पुरुष सब; तायै मुन्तिय कन्ऱु अत्त—माता गाय का

स्मरण करनेवाले वछड़ों के समान; निन्नू उयिर् तळिर्प्प-खड़े रहकर प्राण-पुलकित होते हैं, ऐसी रीति से; तूय तम्पियुम् तानुम्-पवित्र भाई और स्वयं; अ चुमन्तिरन् तेर् मेल् पोय्-उस सुमन्त्र के रथ पर जाकर; अकम् कुळिर्-(शीतल-) प्रकुल्लमन; पुरवलन्-धाता (दशरथ); इरुन्त उळि-(जहाँ) रहे (उस) स्थान में; पुक्कान्-प्रविष्ट हुए । ५८

स्त्रियों की हालत यह रही । उधर पुरुष लोग भी माता गाय को देखकर हुलसित होनेवाले वछड़ों के समान लहलहाये खड़े रहे । तब श्रीराम अपने लघुभाई, पवित्रमन लक्ष्मण के साथ सुमन्त्र के रथ पर जाकर उस मण्डप में पहुँचे जहाँ दशरथ रहे । दशरथ का मन बहुत स्नेहार्द्र था । ५८

❖ माद	वन्नुत्तै	वरन्मुर्	वणङ्गिवा	ळुळवन्
पाद	पङ्गयम्	पणिन्दनन्	पणिदलु	मनैयान्
कादल्	पौङ्गिडक्	कण्वनि	युहुत्तिडक्	कनिवाय्च्
चीदै	कौण्गनैत्	तिरुवुर्	मार्वहन्	जेर्त्तान् 59

वरल् मुर्-परम्परागत रीति से; मातवन् तनै वणङ्कि-महान तपस्वी को नमस्कार करके; वाळ् उळवन्-तलवार 'जोता'; पातपङ्कयम्-पादपङ्कजों पर; पणिन्तनन्-विनत हुए; पणितलुम्-नमस्कार करने पर; अनैयान्-उन्होंने; कातल् पौङ्किट-वात्सल्य के उमड़ते; कण् पति उकुत्तिड-आँखों से अश्रु बहाते हुए; कनिवाय् चीदै-(विब-) फलाधरा सीता के; कौण्कनै-पति (श्रीराम) को; तिरु उर् मार्वु अकम्-श्रीमन्त अपने वक्ष से; जेर्त्तान्-लगा लिया । ५९

वहाँ पहुँचकर श्रीराम ने परंपरागत क्रम के अनुसार महान तपस्वी वसिष्ठजी को नमस्कार किया । फिर वे तलवार 'जोता' (तलवार के धनी) दशरथ के चरण-कमलों पर विनत हुए । तब दशरथ ने उमड़ते वात्सल्य के साथ, आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुए विवफलाधरा श्री सीताजी के भर्ता श्रीराम को अपने श्रीविलसित वक्ष से लगा लिया । ५९

❖ नलङ्गोण्	मैन्दनैत्	तळुवित्	नैन्वदैन्	तळिनीर्
निलङ्ग	डाङ्गु	निलैयित्तै	निलैयिड	नित्तैन्दान्
विलङ्ग	लन्ततिण्	डोळैयु	मैय्तिरु	विरुक्कुम्
अलङ्गन्	मार्वयुन्	दन्तुतोण्	मार्वुकोण्	उळन्दान् 60

नलम् कौळ् मैन्दनै-सभी अच्छाइयों से पूर्ण अपने पुत्र को; तळुवित् अन्पतु-आलिगन किया कहना; नैन्-क्या (मतलब) रखता है; तळि नीर् निलङ्कळ-विशाल जलाशय, सागर से वलपित भूमि को; ताङ्कु उरु-भरण करने की; निलैयित्तै-स्थिति को; निलै इट-परखने का; नित्तैन्तान्-संकल्प करके; विलङ्कल् अन्त-पर्वतसदृश; तिण् तोळैयुम्-बलवान कर्धों; मैय्तिरु इरुक्कुम्-सच्ची विजयश्री का निलय; अलङ्कल् मार्वयुम्-मालाभूषित वक्ष को; तन्तु-अपने; तोळ मार्वु कौण्डु-मुजाओं और वक्ष से; अळन्तान्-नापकर देखा । ६०

सारी अच्छाइयाँ जिनके पास थीं उन श्रीराम का दशरथ ने आलिंगन कर लिया — यह कहना कोई अर्थ नहीं रखता । असल में दशरथ ने उनकी लोक-भरण शक्ति की परीक्षा ली । विशाल सागर-मेखला, भूमि को पालने की शक्ति श्रीराम की भुजाओं और वक्ष में है क्या ? इसको आजमाने के लिए दशरथ ने अपनी भुजाओं और वक्ष से श्रीराम के पर्वततुल्य कंधों और सच्ची श्री का वासस्थान— उनके श्रीवक्ष को नापकर देखा । ६०

❖ आण्डु	तन्मरुड्	गिरीड्युवन्	दन्बुड	नोक्किप्
पूण्ड	पोरुमळु	वुडैयव	नेडुम्बुहळ	कुरुह
नीण्ड	तोळिनाय्	निर्पयन्	देडुत्तया	निन्तै
वेण्डि	यैय्दिड	विळैवदीन्	रुळ्देन्	विळम्बुम् 61

आण्डु—तब; उवन्तु—(बहुत) मुदित होकर; तन् मरुड्कु इरीड—अपने पास बिठाकर; अन्पु उड नोक्कि—प्रेम के साथ देखकर; पोर् पूण्ड—युद्ध सन्नद्ध; मळु उटैयवन्—परशुधर की; नेडु पुकळ् कुरुह—दीर्घ कीर्ति को कम करके; नीण्ड तोळिनाय्—उठे हुए कंधों वाले; निन् पयन्तु अटुत्त यान्—तुमको जन्म देनेवाले मैं; निन्तै वेण्डि—तुमसे माँगकर; अय्तिट विळैवतु—प्राप्त करने की इच्छा करूँ; औन्ड उळुतु—ऐसी एक बात है; अत—कहकर; विळम्पुम्—(आगे) बोले । ६१

फिर, उन्होंने श्रीराम को, बहुत आनन्द के साथ अपने पास बिठा लिया । वात्सल्यपूर्ण आँखों से उनको देखा । युद्धसन्नद्ध, परशुधर की कीर्ति को मिटानेवाले वीरबाहु ! तुम्हारे जनक, पिता —मेरी तुमसे एक प्रार्थना है । ६१

ऐय	शालवु	मलशित्तै	सरुम्बेरु	मूपु
मैय्य	दायडु	पियलिडम्	बैरुम्बरम्	विशित्त
तौय्यन्	मानिलच्	चुमैयुरुज्	जिरैतुडन्	दिनियान्
उय्य	लावदोर्	नेरिपुह	वुदविड	वेण्डुम् 62

ऐय—तात; अरु पैरु मूपु मैय्यतु आयतु—कष्टकर और आदर योग्य बुढ़ापा शरीर को मिल गया; शालवुम् अलचित्तैन्—बहुत जर्जर हो गया; पियल् इटम्—गर्दन पर; पैरुम् परम्—बड़ा भार; विचित्त—जो बँधा हुआ है; तौय्यल्—दुखदायी; मा निलम् चुमै उरुम्—विशाल भूमि रूपी उस भार से युक्त; चिरै—वद्ध जीवन से; यान् इति तुडन्तु—मैं अब विमुक्त होकर; उय्यल् आवतु—उज्जीवन के; और नेरि पुक—एक (तप के) मार्ग में प्रवेश करूँ, इसमें; उतविट वेण्डुम्—तुमको मेरी सहायता करनी चाहिए । ६२

हे तात ! दुर्बल पर आदरणीय वार्द्धक्य मेरे शरीर को ग्रस गया है । मैं बहुत जर्जर हो गया हूँ । गर्दन पर बड़ा भू-भार बँधा हुआ है । यह कारा है जिस स्थिति से छूटकर मैं वैकुण्ठप्राप्ति के उज्जीवन का मार्ग अपनाना चाहता हूँ । उसमें तुम्हें मेरी सहायता करनी चाहिए । ६२

उरिमै	मैन्दरैप्	पैरुहिन्ऱु	दुरुतुयर्	नीङ्गि
इरुमै	युम्बैऱु	कैन्बदु	पैरियव	रियर्कै
दरुम	मन्निन्ऱु	उन्दयान्	रळर्बदु	तहवो
करुम	मैन्वयिर्	चैय्यिन्नैन्	कट्टुरै	कोडि 63

उरिमै मैन्तरै पैरुकिन्ऱुतु-स्वकीय पुत्रों को प्राप्त करना; उरु तुयर् नीङ्कि-
दुख-निवारण पाकर; इरुमैयुम् पैरुक्कु-इह-पर (सुख) लाभार्थ है; ऐन्पतु-यह;
पैरियवर् इयर्कै-बड़ों का सिद्धान्त है; तरुमम् अन्त निन्-धर्म देवता सदृश तुम्हें;
तन्त यान्-(जन्म) दिया (जिसने वह) मैं; तळर्बदु तहवो-(वंचित रहकर) बनेश
उठाना उचित है क्या; ऐन् वयिन् करुमम्-मेरे प्रति कर्तव्य; चैय्यिन्-तुम करना
चाहो तो; ऐन् कट्टुरै कोटि-मेरा हित-वचन मान लो । ६३

बड़ों के बताये सिद्धांत के अनुसार स्वकीय पुत्रों का प्राप्त करना
कठोर दुखों से निवृत्त होकर इह-पर दोनों सुखों का लाभ करने के लिए
ही है । धर्मदेवता सदृश तुम्हें पुत्र के रूप में प्राप्त करने के बाद मेरा
संकट में रहना उचित है क्या ? मेरे प्रति तुम अपना कर्तव्य करना चाहो
तो मेरा हितवचन मान लो । ६३

ॐ मैन्द	नङ्गुल	मरवितिल्	वन्दरळ्	वेन्दर्
तन्द	मक्कळे	कडैमुऱै	नैडुनिलन्	दाङ्ग
ऐन्दो	डाहिय	मुप्पहै	मरुङ्गर	वहर्ऱि
उय्न्दु	पोयित्ता	रळिनिन्	ऐण्णिनु	मुलवार् 64

मैन्त-पुत्र; नम् कुलम् मरपितिल्-हमारे कुल की परम्परा में; वन्दरळ्
वेन्तर-क्रमागत राजा लोग; कटै मुऱै-अपने अन्तिम काल में; नैडु निलम्-विशाल
भू (भरण के) भार को; तम् तम् मक्कळे ताङ्क-अपने पुत्रों को ही वहन करने
देकर; ऐन्तोडु आकिय-पांच (इन्द्रियों) से सम्बन्धित; मुप्पकै-(काम, क्रोध,
लोभ) तीन शत्रुओं को; मरुङ्कु अर-पूर्णरूप से काटते हुए; अकऱ्ऱि-हटाकर;
उय्न्तु पोयित्तार्-(जो) तर गये; उळि निन्ऱु ऐण्णितुम्-कल्पकाल तक रहकर गिने
तो भी, (वे); उलवार्-गिने नहीं जा सकते । ६४

हे मेरे पुत्र ! हमारे कुल में पैदा होकर जो राजा अपने अन्तिम
समय में विशाल भूमि के शासन का भार अपने पुत्रों को उठाने देकर,
इन्द्रिय-सम्बद्ध काम, क्रोध और मोह रूपी तीनों शत्रुओं को मिटाते
हुए तर गये उनकी संख्या, युग भर रहकर गिने तो भी पूरी नहीं हो
सकती । ६४

मुत्तै	यूळ्वितैप्	पयत्तिनु	मुऱ्ऱिय	वेळ्विप्
पिन्ऱै	यैय्दिय	नलत्तिनु	मरिविनिऱु	पैऱ्ऱैन्
इन्तम्	यानिन्द	वरशिय	लिडुम्बव	नैन्ऱाल
निन्ऱै	यीन्ऱुळ	पयत्तिनि	निरम्बुव	दियादो 65

मुनूतै-पूर्व के; ऊळ्वितै पयत्तितुम्-कर्मों के फल से; पितूतै-बाद के (इस जीवन में); मुर्रिय-पूरा किये हुए; वेळ्वि-यज्ञों से; अय्यतिथ नलत्तितुम्-प्राप्त सुफल से; अरितिनिल् पेरुत्ते-दुर्लभ तुमको (मैंने पुत्र के रूप में) पाया है; यान्-मैं; इन्नत्तम्-आगे भी; इन्त अरच्चियल् इटुम्पैयन्-इस राज्य की झंझट का भागी रहूँ; अन्नूशल्-तो; निन्नूतै-तुमको; ईन्ऱु उळ पयत्तितितुन्-जन्म देने के फलस्वरूप; निरम्पुवतु यातो-दूर हुई कमी कौन सी । ६५

मेरे प्राचीन कर्म प्रबल थे । इस जन्म में भी मैंने कठिन यज्ञादि किये । उसी का शुभफल था कि मैंने तुम्हें पुत्र पाया । अब भी शासन के झंझट से मुक्त न हुआ तो तुम्हारे पैदा होने से क्या लाभ हुआ ? कौन सी कमी पूरी हुई ? । ६५

औरुत्त	लैपपरत्त	तौरुत्तलैप	पड्गुवि	नूरदि
अरुत्ति	तीङ्गुनिन्	रियल्वरक्	कुळैन्दिड	रुळक्कुम्
वरुत्त	नीङ्गियव्	वरम्बरु	तिरुविनै	मरुवुम्
अरुत्ति	युण्डैन्क्	कैयवी	दरुळिड	वेण्डुम् 66

औरु तलै-एक ओर; परत्तु-भार; औरु तलै-दूसरी ओर; पड्कुविन्-पंगु रहनेवाले; अरुत्ति अरुत्तिन्-सवारी के बैल के समान; ईङ्कु निन्ऱु-यहाँ से; इयल् वर कुळैन्नु-अवश्यम्भावी कष्ट उठाकर; चुमन्नु-भार ढोते हुए; इटर् उळक्कुम्-बलेश सहने के समान; वरुत्तम्-(राज्य-भार की) झंझट से; नीङ्कि-मुक्त होकर; अ वरम्पु अरु तिरुवितै-उस निस्सीम (मोक्ष-) साम्राज्य-श्री को; मरुवुम् अरुत्ति-पाने की प्रबल इच्छा; अन्नक्कु उण्डु-मुझे है; ऐय-तात; ईतु-यह माँग; अरुळिट वेण्डुन्-तुमको पूरी करने की कृपा करनी चाहिए । ६६

मैं उस लँगड़े बैल के समान हूँ जो एक ओर पंगुता और दूसरी ओर बोझ का भार वहन करते हुए बड़ा संकट उठा रहा है । उस दुखदायक स्थिति से छूटकर निस्सीम मोक्ष-साम्राज्य को प्राप्त करने की मेरी बलवती इच्छा हो गयी है । तात ! यह माँग पूरी करो । ६६

आळु	नन्नैरिक्	कमैवरु	ममैदियिन्	ऱाह
ताळु	नङ्गुल	नायंह	नरैविरि	कमलत्
ताळि	नल्हिय	गङ्गयैत्	तन्नुतन्	दयरै
मीळ्वि	लावुल	हेर्रिन्ना	नीरुमहन्	मेत्ताळ 67

मेल् नाळ-पहले एक दिन; औरु मकन्-उत्तम एक पुत्र (भगीरथ); आळुम् नल् नैरिक्कु-भोग्यमान (मुक्ति के) श्रेष्ठ मार्ग के लिए; अमैवरुम्-आवश्यक; अमैति-योग्यता; इन्ऱु आक-नहीं हो जाने से; नाळुम्-सदा; नम् कुलम् नायकन्-हमारे कुलदेवता श्रीरंगनाथ के; नरै विरि कमलम् ताळिन्-शहद वहानेवाले कमल के समान चरणों से; नल्किय-(उनके द्वारा) दी गई; कङ्कयै-(आकाश-) गंगा को; तन्नु-(इस भूमि में) लाकर; तन्नैयरै-अपने पितरों को; मीट्पु इला उलकु-(जहाँ से) पुनः आना नहीं है उस (मोक्ष) लोक को; एर्रिन्ना-पहुँचा दिया । ६७

तुम्हें मालूम है। सगर-पुत्रों को मोक्षप्राप्ति की योग्यता का अभाव हो गया था। तब हमारे कुल के एक श्रेष्ठ पुत्र (भगीरथ) कड़ी तपस्या करके हमारे कुलदेवता श्रीरंगनाथ के चरणों से निःसृत गंगाजी को भूमि पर लाये। जिससे सगर-पुत्र तरे और श्रीवैकुण्ठ गये जहाँ मे पुनरावृत्ति नहीं होती (फिर से जन्म लेना नहीं होता)। ६७

मन्त्र	रात्रव	रत्नलम्बे	वानवर्क	करगाम्
पौनर्त्तिन्	वारहळर्	पुरन्दरन्	पोलिय	रत्नलर्
पिन्नु	मादवन्	दौडङ्गितोन्	पिळित्तव	रत्नलर्
शौन्म	रामहप्	पैरुव	रेतुयर्	तुडन्दार् 68

तुयर् तुडन्दार्—दुख-मुक्त; मन्त्रर् आतवर् अत्तलर्—राजा जो बने हैं, वे नहीं है; मेल्—ऊपर (परलोक में); वातवर्ककु अरचु आम्—देवों का राजा; पौनर्त्तिन् वार् कळल्—स्वर्णरचित और लम्बी पायल के (धारक); पुरन्दरन् पोलियर् अत्तलर्—पुरन्दर सद्गुरु लोग भी नहीं; पिन्नुम्—और; मातवम् तौटङ्कि—महान तपस्या आरम्भ करके; नौन्नु इळित्तवर् अत्तलर्—अनेक व्रतों का पालन (जिन्होंने) किया, वे भी नहीं; चोल् मडा—आज्ञा का उल्लंघन न करनेवाले; मकवु पैरुवरे—पुत्र प्राप्त ही हैं। ६८

सचमुच (जन्म-मरण के) संकट से मुक्त होनेवाले नरपति नहीं हैं; स्वर्ण-पायलधारी देवेन्द्र-सम लोग भी नहीं हैं। महान तपस्वी और अटलव्रती भी नहीं हैं। पर वे ही पिता दुख-मुक्त होते हैं जिनके आज्ञाकारी (पिता की आज्ञा का उल्लंघन न करनेवाले) पुत्र पैदा हुए हैं। ६८

ॐ अन्नैय	दादलि	नरुन्दुयर्प्	पैरुम्बर	मरशन्
वित्तैयि	नैन्वयिन्	वैत्तन	नैन्कक्कोळल्	वेण्डा
पुत्तैयु	मामुडि	पुनैन्दिन्द	नल्लुम्	वुरक्क
नित्तैयल्	वेण्डुम्या	नित्तवयिर्	पैरुवदी	दैन्डान् 69

अन्नैयतु आतलिन्—(धर्म की रीति) ऐसी है, इसलिए; अरु तुयर् पैरु परम्—अतिशय दुखदायी इस बड़े भार को; वित्तैयिन्—(कपट) नीति से; अरचन्—राजा ने; अन्नै वयिन्—मेरे ऊपर; वैत्तन—लाद दिया; अन्नै—ऐसा; कौळल् वेण्डा—मत लेना चाहिए; पुत्तैयुम् मा मुटि—धार्य श्रेष्ठ किरोट को; पुत्तैयु—धारण करके; इन्त नल् अम्—इस श्रेष्ठ (पिता के प्रति) धर्म का; वुरक्क नित्तैयल् वेण्डुम्—पालन करने की सोचना चाहिए; नित्तै वयिन्—तुम्हारे पास; यान् पैरुवतु—मेरी याचना; ईतु—यही; अन्नैडान्—कहा। ६९

श्रीराम ! धर्म की यही रीति है। इसलिए तुम पीछे यह मत कहो कि शासन का भार मेरे ऊपर कपटनीति से लाद दिया गया। धार्य-मुकुट का धारण यही धर्मनिर्वाहार्थ है। यह सोचना चाहिए। यही मेरी तुमसे याचना है। —दशरथ ने इतना कहा। ६९

❖ ताद	यप्परि	शुरैशैयत्	तामरैक्	कण्णन्
काद	लुङ्गिल	निहळ्न्दिलन्	कडनिदेन्	रुणरन्दुम्
यादु	कौङ्गव	नेविय	ददुशैय	लन्डो
नीदि	यैङ्कन	निनैन्दुमप्	पणितलै	निन्डान् 70

तातै-पिता (के); अ परिचु उरै चैय-ऐसा कहने पर; तामरै-कण्णन्-पुण्डरीकाक्ष ने; कातल् उङ्गिलन्-स्पृहा न की; इकळ्न्दिलन्-न उपेक्षा की; कटन् इतु-कर्तव्य यह; अँङ्ग उणरन्दुम्-ऐसा सोचकर और; कौङ्गवन् एवियतु-राजा द्वारा आज्ञापित; अंतु चैयल् अन्डो-वह करणीय है न; अँङ्कु नीति-मेरा धर्म; अँत निनैन्दुम्-ऐसा समझकर; अ पणि तलै निन्डान्-उस सेवा को शिरोधार्य किया । ७०

पिता के इतना कहने पर पुंडरीकाक्ष श्रीराम सहमत हुए; इसलिए नहीं कि उनमें राज्य की स्पृहा थी । न ही उन्होंने उसकी उपेक्षा की । “यह हमारा कर्तव्य है” —उनमें यह भाव था । साथ-साथ “चक्रवर्ती की आज्ञा का पालन करना ही मेरा धर्म है” —यह भी विचार था । अतः उन्होंने उस सेवा को शिरोधार्य मान लिया । ७०

❖ कुरुशिल्	शिनदयै	मनक्कौण्ड	कौङ्गवैण्	गुडैयान्
तरुदि	यिव्वर	मैन्चौल्लि	युयिरुत्	तळुविच्
चुरुदि	यन्तदन्	मन्दिरच्	चुङ्गमुज्	जुङ्गप्
पौरुविन्	मेरुवुम्	पौरुवरुड्	गोयिल्पोय्प्	पुक्कान् 71

कुरुचिल् चिन्तैयै-श्रीराम के मन को; मनम् कौण्ड-जो जान गये वे; कौङ्गवैण् गुडैयान्-विजयी (श्वेत-) छत्रधारी; इ वरम् तरुति-यह वर दो; अँत चौल्लि-यह कहकर; उयिर् उड तळुवि-प्राणों से प्राण मिलाते हुए आलिंगन करके; चुरुदि अन्त-वेद-सम; तन् मन्तिरम् चुङ्गमुम्-अपने मन्त्रीमण्डल के; चुङ्ग-घेरे आते; पोय्-जाकर; पौरु इल् मेरुवुम्-उपमाहीन मेरु भी; पौरुवु अरु-जिसकी उपमा नहीं बन सकता (उस) अपूर्व; कोयिल्-पुक्कान्-महल में पहुँचे । ७१

विजयी छत्रधारी दशरथ ने श्रीराम का मन जान लिया । इसलिए उन्होंने फिर से कहा कि ‘यह वर दो मुझे’ । उनको मानो अपने प्राणों से उनके प्राण मिला रहे हों, ऐसा आलिंगन किया । फिर वे अपने महल की ओर जाने लगे । वेदसम उनके मंत्रियों का मंडल भी उनके साथ गया । वे अनुपम मेरु से भी अनुपमेय अपने महल में पहुँचे । ७१

❖ निवन्द	वन्दणर्	नैडुन्दहै	मन्तवर्	नहरत्
तुवन्द	मैन्दरहण्	मडन्दय	रुळैपुळै	तौडरच्
चुमन्दि	रन्डडन्	देर्मिशैच्	चुन्दरत्	तिरडोळ्
अमैन्द	मैन्दनुन्	दत्तैडुड्	गोयिल्शैन्	रुडैन्दान् 72

चुन्तरम्-सुन्दर (और); तिरळ तोळ अमैन्त-पुष्ट कन्धों से युक्त; मैन्तनुम्-राजकुमार (श्रीराम) भी; निवन्त अन्तणर्-उत्कृष्ट ब्राह्मण; नैटु तर्कै मन्तवर्-श्रेष्ठतायुक्त राजा लोग; नकरत्तु-नगर के; उवन्त मैन्तरुक्क-प्रसन्नता से पूरित तरुण लोग; मटन्तैयर्-ऐसी ही स्त्रियाँ; उळै उळै तौटर-पास-पास आते; चुमन्तिरन्-सुमन्त्र (चालित); तट तेर् मिच्चै-विशाल रथ पर; चैन्ड-जाकर; तन् नैटु कोयिल् अटैन्तान्-अपने बड़े भवन में पहुँचे । ७२

वाद श्रीराम भी उठकर सुमन्त्र-चालित उन्नत रथ पर सवार हुए । रथ जाने लगा । उनके साथ उत्कृष्ट ब्राह्मण लोग, श्रेष्ठ राजा लोग, प्रसन्न तरुण लोग और स्नेहार्द्र रमणियाँ भीड़ लगाकर चली । वे अपने श्रेष्ठ महल में पहुँचे । ७२

ॐ वेन्ऱि	वेन्दरै	वरुहैत	वुवणम्वीड्	ऱिरुन्द
पौन्ऱि	णिन्दतोड्	टरुम्बैर	लिलच्चिन्नै	पोक्कि
नन्ऱु	शित्तिर	नळिमुडि	कवित्तड्कु	नल्लोर्
शैन्ऱु	वेण्डुव	वरत्तुमुडै	यमैक्कैन्च्	चैप्प 73

वेन्ऱि वेन्तरै-विजयशील राजाओं को; वरुक अँत-आइए, कहकर; उवणम् वीड्ऱिरुन्त-गरुडांकित; पौन् तिणिन्त तोडु-स्वर्णमय पत्र पर; अरु पेरुल्-(दूसरों के लिए) अप्राप्य; इलच्चिन्नै पोक्कि-लाँछन लगाकर, भिजवाकर; नल्लोर्-साधुश्रेष्ठ; चैन्ड-जाकर; चित्तिरम् नळि मुडि-चित्र और बहुमूल्य किरीट को; नन्ऱु-भली रीति से; कवित्तड्कु-(श्रीराम के सिर पर) धराने के लिए; वेण्डुव-जो आवश्यक है; वरत्तु मुडै-परम्परा के अनुसार; अमैक्क-वह प्रबन्ध कीजिए; अँत चैप्प-यह कहने पर । ७३

चक्रवर्ती ने गरुडांकित स्वर्णमय पत्र पर राजा के स्वत्व का लाँछन लगाकर निमंत्रण लिखा कि-सब पधारें । फिर वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि साधु महात्मा ! आप जाकर अलंकारयुक्त श्रेष्ठ किरीट को श्रीराम के सिर पर लगाने के लिए (मुकुट धारण के उत्सव के लिए) आवश्यक प्रबन्ध यथाक्रम करने की कृपा कीजिए । तब; । ७३

ॐ उरिय	सादव	नौळिदैन	रुवन्दनन्	विरैन्दोर्
पौरुवि	ऐरुमिशै	यन्दणर्	कुळात्तौडुम्	बोह
निरुवर्	केण्मिन्ग	ळिरामड्कु	नैऱिमुडै	यदत्ताल्
तिरुवुम्	वूमियुज्	जिन्दयिड्	चिऱुन्दन्	वैन्ऱान् 74

उरिय-(मुकुट लगाने के) अधिकारी; मातवन्-महान तपस्वी; औळितु-सही है; अन्ऱु-कहकर; उवन्तनन्-मुदित हुए; विरैन्तु-सत्वर; अन्तणर् कुळात्तौडुम्-विप्रसमूह के साथ; पौरु इल्-उपमारहित; ओर् तेर् मिच्चै-एक रथ पर; पोक्-गये, तब; निरुवर्-राजे; केळ्मिन्कळ-सुनें; तिरुवुम्-(राज्य) श्री और; वूमियुम्-राज्य; इरामड्कु-श्रीराम के; नैऱि मुडै-(कुल गत) परम्परा के अनुसार; चिन्तैयिल्-मेरे मन में; चिऱुन्दन-श्रेष्ठ हैं; वैन्ऱान्-कहा । ७४

वसिष्ठजी ही मुकुट धराने का अधिकार रखते थे । वे महान तपस्वी राजा से, 'बहुत अच्छा' कहकर बहुत ही आनन्द के साथ अनुपम एक रथ पर आरुढ़ होकर श्रीराम के पास जाने लगे । तब विप्रों का समूह भी उनके साथ गया । चक्रवर्ती ने राजाओं से कहा कि राजा लोग ! सुनिये । श्रीराम राज्य की संपत्ति और शासन की भूमि दोनों का अधिकारी है । इसलिए मेरे मन में वे ही विशेष रूप से चिन्त्य रहती हैं । ७४

✽ इरैवन्	शौल्लैन्तु	मिन्तु	वरुन्दित्	यारुम्
मुरैयि	निन्त्रिलर्	मुन्दुरु	कळियिडै	मूळ्हि
निरैयु	नैञ्जिडै	युवहैपोय्	मयिर्वळि	निमिर
उरैयुम्	विण्णह	मुडलौडु	मय्दिन्	रौत्तार् 75

इरैवन् शौल् अंतुम्-दशरथ के वचन रूपी; इन् नरु-मधुर मधु को; अरुन्तित् यारुम्-(जिन्होंने) भोगा वे सब; मुन्तु उरु कळि इटै-अतिशय आनन्द रूपी प्रवाह में; मूळ्हि-डूबकर; नैञ्चु इटै-मन में; निरैयुम् उवकै-भरा वह आनन्द; पोय्-(पार) जाकर; मयिर् वळि निमिर-रोमकूपों में प्रकट हुआ तो; उरैयुम् विण् अकम्-(पीछे जाकर जहाँ) रहेंगे उस स्वर्गलोक को; उडलौडुम् अय्त्तित्-सशरीर पहुँच गये; औत्तार्-ऐसे होकर; मुरैयिन् निन्त्रिलर्-अपने-अपने मर्यादित स्थान में नहीं रह पाये । ७५

राजा का वचन मधुर मधु-सम था । राजा लोगों ने मानो उसको पीकर अपार आनन्द पाया । वह आनन्द मानो उनके हृदय से छलककर रोमकूपों में भर गया, ऐसा उनके रोम पुलकित हो गये । सशरीर तभी स्वर्ग पहुँच गये हों, ऐसा वे आनन्द भरे हो गए । इस मोद-मोह के कारण वे अपनी व्यवस्था और मर्यादा भी भूलकर, ठीक स्थान में खड़े नहीं रह पाये । ७५

औत्त	शिन्दय	रुवहयि	तौरुवरि	तौरुवर
तत्त	मक्कुर्	वरशैन्त	तळैक्किन्	मन्तत्तार्
मुत्त	वैण्गुडै	मन्तनै	मुरैमुरै	तौळुदार्
अत्त	नन्ऱैन्	वन्बिनो	डरिविप्प	दात्तार् 76

उवकैयिन्-आनन्द के कारण; औरुवरिन् औरुवर-परस्पर; औत्त चिन्तैयर्-समचित्त होकर; तम् तमक्कु-अपने, अपने को; अरुचु उर्ऱ अँत-राज्य मिल गया हो, ऐसा; तळैक्किन् मन्तत्तार्-लहलहानेवाले मन के हुए; मुत्तम् वैण् कुटै मन्तनै-मोतियों से अलंकृत श्वेतछत्र वाले चक्रवर्ती को; मुरै मुरै-बारी-बारी से; तौळुदार्-नमस्कार करके; अत्त-पितृतुल्य; नन्ऱु अँत-आपका अभिप्राय सही है, यह; अन्पितोडु-प्रेम के साथ; अरिविप्पन् आत्तार्-(अपने-अपने विचार) प्रकट करने लगे । ७६

श्रीराम के राज्याभिषेक के सम्बन्ध में उनका एकसंग विचार था। खुद उन्हें राज्य मिल गया हो, ऐसे वे संतोष से भर गये। उनके मन लहलहा उठे। वे वारी-वारी से, मोतियों से सज्जित श्वेत छत्रधारी दशरथ को नमस्कार कर उनको पितृतुल्य—ऐसा सम्बोधित करके प्यार के साथ यों बोले। ७६

मूर्वेळ्ळु मुर्म्मय्येङ्गु गुलङ्गण् मुर्म्मुरूप्, पूर्वेल्लु मळुविन्नार् पौरुदु पोक्किय शेवहन् शेवहन् जेहुत्त शेवहर्, कावदिव् वुलहमी दडनेन् डाररो 77

मू अँळु मुर्म्मै—तीन के सात (इक्कीस) पीढियाँ; अँम् कुलङ्कळ्—हमारे कुल; मुर्म्म उर्—नाश करके; पू अँळु मळुविनाल्—तीक्ष्ण परशु से; पौरुदु—युद्ध करके; पोक्किय—(जिन्होंने) निर्मूल किया; चेवकन् चेवकम्—उन वीर की वीरता को; जेकुत्त—परास्त करनेवाले; चेवफर्कु—वीर राघव की; इ उलकम् आवतु—यह भूमि हो; ईतु—यह; अर्न्—धर्मसम्मत हो; अँन्डार्—कहा। ७७

आपने श्रीराम को राजा बनाने का विचार किया है। श्रीराम ने उन परशुराम की वीरता को परास्त किया जिन्होंने हम क्षत्रियकुल के राजाओं की इक्कीस पीढियों से परशु लेकर युद्ध करके उनको मारा था। यह अवश्यमेव धर्म-सम्मत कार्य है। ७७

वेडिला मन्नरुम् विरुम्बि यिन्नदु, कूडिना रदुमनङ्गु गौण्ड कौड्रवन् ऊडिय वुवहयै यौळिक्कुञ्ज जिन्दयान्, मारुमो रळवैशाल् वाय्मे कूडिनान् 78

वेडु इला मन्नरुम्—असमान विचार न रखनेवाले वे राजा भी; विरुम्बि—चाहकर; इत्ततु कूडिनार्—ऐसा बोले; अतु मन्म कौण्ट कौड्रवन्—उसको मन में धरकर चक्रवर्ती; ऊडिय उवकयै—उमड़ते आनन्द को; यौळिक्कुञ्ज चिन्तयान्—छिपाने का विचार करके; मारुम्—फिर भी; ओर् अळवै चाल् वाय्मे—थाह लेने की एक वार्ता; कूडिनान्—कही। ७८

आपस में विचारवैषम्य न रखनेवाले राजाओं ने यह बात सच्चे प्यार के मन से कही। चक्रवर्ती ने यह जान भी लिया। तो भी दशरथ ने उमड़ते आनन्द को छिपाने का संकल्प करके उसे प्रकट नहीं होने दिया। उनके मन की और थाह लेने के विचार से एक वार्ता कही। ७८

महन्वयि नन्विनान् मयङ्गि यान्तिदु, पुहलनीर् पुहन्डविप् पौम्मल् वाशहम् उहवयिन् मौळिन्ददो वुळ्ळ नोक्कियो, तह्वेन् निनैन्ददो तन्मै यादेन्डान् 79

मकन् वयिन् अन्पिनाल्—(अपने) पुत्र के प्रति प्रेम के कारण; मयङ्कि—मोहित होकर; यान् इतु पुकल—मेरे इस प्रकार कहने से; नीर् पुकन्ड—आपके (उत्तर में) कहे हुए; इ पौम्मल् वाचकम्—ये प्रकाशमय (मोदपूर्ण) वचन; उक्वैयिन् मौळिन्ततो—

सन्तोष से कहे हुए; उल्लम् नोक्कियो—(या) मेरा रख देखकर; तकवु अत्त नित्तन्ततो—उचित ही समझने के कारण; तन्मै यातु—प्रकार क्या है; अत्तान्—पूछा । ७६

चक्रवर्ती ने राजाओं से कहा । कहीं ऐसा तो नहीं है कि मेरे अपने पुत्र के प्रेम के मोह में यह कहने पर आपने यह उत्साहवर्धक उत्तर यों ही अपने मौज में कहा है ? या मेरा मन रखने के लिए ? या आपने सचमुच इसको उचित समझा है ? कैसा है ? —यह बता दें । ७९

इव्वहै युरैशैय विरुन्द वेन्दरुहळ्, शैव्वियोय् नित्तिरु महइकुत्तेयत्तोर्
अव्ववर्क् कव्ववर्क् कमैन्द वारुम्, अँव्वमि लन्बिनै यित्तिडु केळ्त्ता 80

इ वक् उरैचैय—ऐसा कहने पर; इरुन्त वेन्तरुक्ळ्—(वहाँ जो) रहे (वे) राजा लोग; शैव्वियोय्—नेक चक्रवर्ती; नित्तिरु मक्कु—आपके श्रीमान पुत्र के प्रति; तेयत्तोर्—देशवासियों में; अव्ववर्क्कु अव्ववर्क्कु—उन-उन के; अमैन्तवारु—योग्य रीति से; उरुम्—होनेवाले; अँव्वम् इल् अन्पित्तै—निर्दोष प्रेम को; इत्तिडु केळ्—प्रसन्नता से सुनिए; अँता—कहकर । ८०

दशरथ के ये वचन सुनकर राजाओं ने उत्तर में कहा कि नेक चक्रवर्ती ! इस देश के वासी आपके पुत्र श्रीराम पर अपनी-अपनी मर्यादा और स्थिति के अनुसार कैसा प्रेम रखते हैं ? उस निर्मल प्रेम की बात कहते हैं, सुनिये । ८०

दानमुन् दरुममुन् दहवुन् दन्मशेर, जातमु नल्लवर्प् पेणु नन्मयुम्
मात्तमु मैयित्त्त महइकु वैहुमाल्, ईत्तमिल् शैल्वम्वन् दियैव दैन्तवे 81

ऐय—प्रभु; नित्तिरु मक्कु—आपके पुत्र के प्रति; ईन्म् इल् शैल्वम्—अनिन्द्य (राज्य) श्री; वन्तु इयैवतु अत्तन्—आ मिल जाय, इस योग्य; तात्तमुम्—दान; तरुममुम्—धर्मपरायणता; तकवुम्—शील; तन्मै चेर् जातमुम्—श्रेष्ठ तत्त्व-ज्ञान; नल्लवर् पेणुम् नन्मैयुम्—साधुओं का त्राण करने का अच्छा स्वभाव; मात्तमुम्—और मान; वैकुम्—(उन्हें) प्राप्त हैं । ८१

प्रभु ! आपके पुत्र में अक्षय राज्यश्री की प्राप्ति के लिए आवश्यक और अनुकूल सारे गुण हैं । दानशीलता, धर्मपरायणता, शील, श्रेष्ठ तत्त्वज्ञान, साधुत्राण का स्वभाव, मान —ये सब उनमें हैं । ८१

ऊरुणि निरैयवु मुदवु माडुयर्, पारुनुहर् पयन्मरम् पळुत्त दाहवुम्
कारमळै पौळियवुड् गळ्त्ति पाय् नदि, वारुपुत्तल् पेरुहवु मरुक्किन् डारुहळ् यार् 82

ऊरुणि निरैयवुम्—(बस्ती के) तालाब के भरने पर; उतवुम् माडु—सब के लिए सहायक (सुगम) स्थान में; उयर्—खूब बढ़े हुए; पार् नुक् पयन् मरम्—लोक-खाद्य फलों वाले वृक्ष; पळुत्ततु आकवुम्—फलदार होने पर; कार् मळै पौळियवुम्—मेघ वर्षा करने पर; गळ्त्ति पाय् नत्ति—खेतों की सींचनेवाली नदी में; वार् पुत्तल् पेरुक्कुम्—अधिक जल के बहने पर; मरुक्किन् डारुक्ळ—इनकार करनेवाले; यार्—कोन । ८२

वस्ती में सर्वभोग्य तालाव में जल भर जाय, आम स्थल में रहने-
वाले फलवृक्ष फलें, वर्षाकालीन मेघ वरसैं, खेती को सींचनेवाली नदी
में धार बढ़ जाय तो इनका सभी स्वागत करेंगे। कौन होगा जो इनसे
अतृप्त होगा ? । ८२

पत्तैयवा नैडुङ्गरप् परुम यानयाय्, नितैयवान् दहैयनाय् निमिर्न्द मन्नुयिर्क्
कैतैयवा इन्विन निराम नोण्डवड्, कनैयवा इन्विन ववैयु मेन्नुत्तर् 83

पत्तै अवाम् नैट्टु करम्-ताड़ के पेड़ के समान लम्बी सूँड़ और; परुमम्-होवे से
युक्त; यानैयाय्-राजगज वाले; इरामन्-श्रीराम; नितै अवाम् तर्कयन् आय्-
आपके समान योग्यता वाले होकर; निमिर्न्द-संसार में भरे; मन्नु उयिर्क्कु-
अक्षय जीवों पर; नैतैय आड्ड अन्पिनन्-जिस प्रकार का प्रेम रखते हैं; अतैय आड्ड-
उसी प्रकार के; अवैयुम्-वे भी; अवड्डु-उन पर; ईण्डु अन्पित-खूब प्रेम
करनेवाले हैं; मेन्नुत्तर्-कहा । ८३

उस गजराज के स्वामी जिसकी सूँड़ लंबे ताल-वृक्ष के समान है
और जो हौदे से सजा है, आपके पुत्र आपके ही समान योग्यता और
श्रेष्ठता रखते हैं। वे लोकों के अक्षय जीवों पर जितना स्नेह रखते हैं
उतने ही वे जीव भी इनसे खूब प्रेम करते हैं । ८३

मौळिन्ददु	केट्टलु	मौयत्तु	नैञ्जितैप्
पौळिन्दपे	रुवहयन्	पौङ्गु	कादलन्
कळिन्ददोर्	तुयिरितन्	कळिक्कुञ्	जिन्दयन्
वळिन्दकण्	णौरितन्	मन्तन्	कूळवान् 84

मौळिन्तु केट्टलुम्-(राजाओं का) कथन सुनने पर; मन्तन्-चक्रवर्ती;
नैञ्चितै मौयत्तु-मन में भरकर; पौळिन्त-छलकनेवाले; पेर् उवर्कयन्-बड़े आनन्द
से युक्त होकर; पौङ्गु कातलन्-उमड़ते प्रेम वाले बनकर; कळिन्तु ओर् तुयिरितन्-
(जो) छूट गया (उस) दुख वाले होकर; कळिक्कुम् चिन्तैयन्-उमड़नेवाले चित्त के;
वळिन्त कण् नीरितन्-बहनेवाले अश्रु की आँखों के बनकर; कूळवान्-घोलने लगे । ८४

राजाओं ने जब यह कहा तब दशरथ के मन में इतना आनन्द उमड़
आया कि वह उसमें नहीं समा सका। वात्सल्य बढ़ा। उनकी चिंता
दूर हुई। प्रसन्नमन हुए। उनकी आँखों से आनन्द के आँसू ढलक
आये। वे बोले । ८४

शैम्मयिर्	इरुमत्तिर्	चैयलिर्	रीङ्गिन्वाल्
वैम्मयि	नीळुक्कत्तिन्	मेन्मै	मेविनीर्
अैम्मह	नैन्वर्देन्	नैरिपि	नीङ्गिवन्
तुम्महन्	कैयडै	नोक्कु	मीङ्गैन्डान् 85

चैम्यैयिल्-पक्षपात रहित रहने में; तरुमत्तिल्-और धर्मपालन में; चैयलिल्-अच्छे कार्यों में; तीङ्किन् पाल् वैम्यैयिन्-अन्याय के प्रति क्रोध में; ओळुक्कत्तिन्-श्रेष्ठ आचरण में; मेन्मै मेवितीर्-उन्नत हुए लोगों; इवन्-यह श्रीराम; ईङ्कु-आगे; अम् मकन् अन्पतु-मेरा पुत्र है, यह कहना; अन्-क्या (अर्थ रखता है); नैरिपिन्-क्रम से; नुम् मकन्-आपका पुत्र है; कैयटै-आपका धरोहर है; ईङ्कु नोक्कुम्-उसी दृष्टि से देखिए; अन्नान्-कहा । ८५

(उन्होंने राजाओं से कहा—) निष्पक्षता में, धर्मपालन में, अच्छे कामों में, अन्याय के प्रति क्रोध की गर्मी दिखाने में, और आचरण में बढ़े हुए राजाओ ! आगे श्रीराम को मैं अपना ही पुत्र मानूँ इसका कोई अर्थ नहीं रहेगा । वह आपका ही पुत्र है । उसे आपका धरोहर मानता हूँ । आप भी उसी दृष्टि से उसको देखिये । —दशरथ ने यह कहा । ८५

अरचरै विटुत्तवि नाणै मन्तवन्, पुरैतबु नाळीडुम् बौळुडु नोक्कुवान्
उरैतैरि कणिदरै यौरुङ्गु कौण्डोरु, वरैपौरु मण्डब मरुङ्गु पोयितान् 86

अरचरै विटुत्तपिन्-राजाओं को बिदा देने के बाद; आणै मन्तवन्-आज्ञापक चक्रवर्ती; पुरै तपु-निर्दोष; नाळीडु-नक्षत्र के साथ; पौळुतु-मुहूर्त को; नोक्कुवान्-शोधने के लिए; उरै तैरि-शास्त्रज्ञ; कणितरै-ज्योतिषियों को; ओरुङ्कु कौण्डु-साथ लेकर; वरै पौरु-पर्वततुल्य; ओरु मण्डपम् मरुङ्कु-एक मण्डप में; पोयितान्-पहुँचे । ८६

आज्ञापक चक्रवर्ती ने उनको बिदा दिया । फिर वे निर्दोष नक्षत्र और मुहूर्त शोध लेने के विचार से, ज्योतिषियों को साथ लेकर एक पर्वततुल्य बड़े भवन में गये । ८६

ॐ आण्ड वन्तिलै याह वरिन्दवर्, पूण्ड कादलर् पूट्टविळ् कौङ्गयर्
नौण्ड कून्दलर् नौळ्हलै ताङ्गलर्, ईण्ड वोडित रिट्टिडै यिर्ज़िलर् 87

आण्डु-वहाँ; अवन् निलै आक-उनकी यह स्थिति रही तब; अरिन्तवर्-समाचार को जानकर (कुछ स्त्रियों); पूण्ड कातलर्-प्रेम-मरी; पूट्टु अविळ् कौङ्कैयर्-(जिनका) अँगिया खुल गया, ऐसे स्तनों वाली; नौण्ड कून्तलर्-मुक्तकेश; नौळ् कलै ताङ्कलर्-ढीले पड़े वस्त्र को न सँभालनेवाली; ईण्ड-सत्वर; ओटितर्-(कौसिल्या के पास) भागी; इट्टु-भाग्य की बात थी; इटै इर्ज़िलर्-भग्नकमर नहीं हुई । ८७

राजा का समाचार यह रहा । तब कुछ चार स्त्रियों ने यह समाचार पाया तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा । आनन्दातिरेक में उन्होंने अपने स्तनों का अँगिया के खुलने से बाहर प्रकट होना नहीं जाना, केश खुल गया उसकी परवाह नहीं की, वस्त्र ढीले होने लगे उनको नहीं सँभाला, वे बहुत तेजी से भागीं । भाग्य था कि उनकी कमरें नहीं टूटीं । ८७

❖ आडु हिन्रुनर् पण्णडै विन्ऱिये, पाडु हिन्रुनर् पार्त्तवर्क् केकरम्
शूडु हिन्रुनर् शौल्लुव दोरहिलार्, माडु शैन्नर मङ्गयर् नाल्वरे 88

मङ्कैयर् नाल्वर्-वे स्त्रियाँ चार थीं, वे; आटुकिन्नर-नाचतीं; पण् अटव
इन्ऱिये-राग शुद्धि के बिना ही; पाटुकिन्नर-गातीं; पार्त्त वर्क्कु-सामने
जिनको देखती है, उन सबको; करम् चूटुकिन्नर-हाथ जोड़तीं; चौल्वतु
ओर्किलार्-क्या कहना, नहीं जानतीं; माडु चैन्नर-पास गईं । ८८

वे नाचतीं, बिना राग की दुरुस्ती के ही गातीं । जो भी सामने
आते उनके आगे हाथ जोड़तीं । उनसे क्या बात करती हैं —यह भी नहीं
जानती । इस स्थिति में वे कौसल्यादेवी के पास पहुँचीं । ८८

❖ कण्ड मादरैक् कादलि नोक्किनाळ्, कौण्डल् वण्णत्तै नल्हिय कोशलै
उण्डु पेरुव हैप्पोरु लन्नदु, तौण्डै वायिनिर् शौल्लुमि नीण्डैन्ऱाळ् 89

कौण्डल् वण्णत्तै-मेघवर्ण (श्रीराम को); नल्किय-देनेवाली; कोचलै-
कौसल्यादेवी (ने); कण्ड मातरै-अपने सामने दृष्ट उन स्त्रियों को; कातलिन
नोक्किनाळ्-स्नेह से देखकर; तौण्डै वायित्तीर्-(विव-) फल-सम अधर वालियों;
पेरु उवकै पोरुळ् उण्डु-(इस) बड़े आनन्द का अर्थ होगा; अन्नतु-उसको; ईण्डु
कूळमिन्-यहाँ बताओ; अन्ऱाळ्-कहा । ८९

कौसल्या ने अपने सामने आई उन सबको स्नेह से देखा । मेघ वर्ण
श्रीराम की माता ने उनसे पूछा । तुम्हारे आनन्दप्रदर्शन का कोई
महत्वपूर्ण अर्थ अवश्य होगा । वह क्या है —बताओ । ८९

❖ मन्ने डुङ्गळल् वन्दु वण्डुगिडप्, पन्ने डुम्बहल् पारळिप् पायैन्
निन्ने डुम्बुदल् वन्नै नेमियान्, तौन्ने डुम्मुडि शूट्टुहिन्ऱात्तैन्ऱार् 90

नेमियान्-आज्ञाचक्र चलानेवाले (चक्रवर्ती) ने; मन् वन्दु-राजाओं के आकर;
नैट्टु कळल् वण्डुकिट-सम्मान्य पायलधारी पैरों पर नमस्कार करते; पल नैट्टु पकल्-
अति दीर्घकाल तक; पार् अळिप्पाय्-भूमि का पालन करो; अन्न-ऐसा; निन् नैट्टु
पुतल्वन् तनै-आपके श्रेष्ठ पुत्र को; तौल् नैट्टु मुटि-प्राचीन और उत्कृष्ट किरीट;
चूट्टुकिन्नर-पहनायेंगे; अन्ऱार्-कहा । ९०

उन्होंने उत्तर दिया । आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती आपके
पुत्र के सिर पर प्राचीन और गौरवान्वित किरीट पहनायेंगे । श्रीराम
राजा राम बनेंगे । सभी राजा लोग उनके सम्मान्य पायलधारी चरणों
पर अपने शीश नवावेंगे । “चिरकाल तक इस रीति से शासन करो”
—यह चक्रवर्ती ने श्रीराम से कहा है । ९०

❖ शिउक्कुञ् जैल्व महर्कैन्च् चिन्दयिल्, पिउक्कुम् पेरुव हैक्कडल् पेट्टप्
वउक्कु मावड वैक्कन लानदाल्, तुउक्कु मन्नव नैन्नुन् दुणुक्कमे 91

मकरकु-पुत्र को; चैल्वम् चिरक्कुम् अंत-राज्यश्री पाने का गौरव मिलेगा, यह सोच; विन्तैयिल् पिरक्कुम्-मन में उत्पन्न; पेर् उवर् कटल्-बड़े प्रेम के सागर को; पेट्पु अर-अनचाहे रूप से; वरक्कुम्-सुखानेवाली; मा वटवै कतल्-बड़ी बड़वाग्नि सी; मन्तवन् तुरक्कुम्-राजा वानप्रस्थ होंगे; अन्तुम्-इससे; तुण्णक्कुम्-(मिलनेवाला) भय; आतनु-हुआ । ६१

कौसल्या के मन में यह सुनकर बड़ा आनन्द हुआ कि मेरे पुत्र को राज्य मिलेगा और वह सम्मानित बनेगा । वह बड़ा सागर-सा उमड़ा तो भी उसको अनचाहे रूप से सुखानेवाली बड़वाग्नि बना, यह डर कि राजा वानप्रस्थ होंगे और विरक्त बनेंगे । ९१

ॐ अन्न ल्यायु मरुम्बैर लारमुम्, नन्नि दिक्कुवै युम्बल नल्हित्तु, तुन्नु कादरु चुमित्तिरै योडुम्बोय्, मिन्नु नेमियन् मेविड मेविनाळ् 92

अन्नळ आयुम्-वैसी होने पर भी; आरमुम्-हार; नल् निति कुवैयुम्-धनराशि को; पल नल्कि-बहुत देकर; तन् तुन्नु कातल्-अपने अधिक प्यार का पात्र; चुमित्तिरैयोडुम्-सुमित्रा के साथ; पोय्-जाकर; मिन्नु नेमियन् मेवु इटम्-दीप्तिमान चक्रधारी (श्रीरंग जी) के श्रेष्ठ मन्दिर में; मेविनाळ्-पहुँची । ६२

मन की यह (मिश्रित) स्थिति होने पर भी कौसल्यादेवी ने उन्हें अनेक हार और धनराशि इनाम में दी । उन्हें विदा देकर वे अपनी प्यारी सौत सुमित्रा के पास आई । उनको भी साथ लेकर वे दीप्तिमान चक्रधारी श्री रंगजी के मंदिर में पहुँची । ९२

ॐ मेवि मैन्मल राणिल मादैन्नुम्, तेवि मारौडुन् देवर्हळ् यावर्क्कुम् आवि युम्मरि वुम्मुद लायवन्, वावि मामलर् पादम् वणङ्गिनाळ् 93

मेवि-पहुँचकर; मैल् मलराळ्-कोमल कमला श्री देवी; निल मातु-भूदेवी; अंतुम्-इति; तेवि मारौडुम्-दो पत्नियों के साथ; तेवर्हळ्-देवों के और; यावर्क्कुम्-सभी के; आवियुम्-प्राण; अरिवुम्-प्रज्ञा; मुतल्-और आदि; लायवन्-जो बने है; वावि मा मलर् पातम्-(उनके) तालाब में अभी खिले कमल के समान चरणों की; वणङ्किनाळ्-पूजा की (कौसल्या ने) । ६३

वहाँ पहुँचकर उन श्रीमन्नारायण के तालाब में विकसित कमलों के समान चरणों की पूजा की जो कोमल कमलजा श्रीदेवी और भूदेवी, दोनों पत्नियों के साथ शोभायमान थे और जो देवों और अन्य सभी जीवों के प्राण और प्रज्ञा थे और आदि कारण थे । ९३

ॐ अन्व यिर्इरु मैन्दर् कित्तियरुळ्, उन्व यत्तदैन् राळुल हियावयुम् मन्व यिर्इरि लडक्किय मायनैत्, तन्व यिर्इरि लडक्कुन् दवत्तिनाळ् 94

उलकु यावैयुम्-सभी लोकों को; मन् वयिर्इरिन् अटक्किय-वन्द्य अपने उदर में (जिन्होंने) रख लिया है; मायनै-उन मायावी श्रीमन्नारायण को; तन् वयिर्इरिल्-

अपने गर्भ में; अटक्कुम्-रखने का; तवत्तिन्नाळ्-जिन्होंने तप (भाग्य) किया था, उन कौसल्या ने; अँन् वयिन् तरुम् मैन्तर्कु-आपकी कृपा से मेरे द्वारा उत्पन्न पुत्र (श्रीराम) को; इनि अरुळ्-अब सौभाग्य देना; उन् वयत्ततु-आपका ही काम है; अँन्नाळ्-विनय की । ६४

फिर उन्होंने जिनका भाग्य इतना था कि सारी सृष्टि को उदर में समाये रखनेवाले श्रीमन्नारायण को अपने गर्भ में धारण किया था, उनसे प्रार्थना की कि आपने श्रीराम को मेरे पेट से जन्म दिलाने की कृपा की थी । अब उन्हें सारे सौभाग्यों को दिलाने की कृपा करना भी आपके ही वश का है । ९४

अँन्ऱि इँञ्जियव् विन्दिर् केळ्वनुक्, कौन्ऱु नात्तुमँ योदिय पूशत्तै
नन्ऱि छैत्तव णल्ल तवरक्कैलाम्, कन्ऱु डैप्पशु विन्कड तल्हिनाळ् 95

अवळ्-उन्होंने; अँन्ऱु-ऐसा; इँञ्जि-प्रार्थना करके; अ इन्तिर् केळ्वनुक्कु-उन इन्दिरापति की; ओन्ऱु-युक्त; नाल् मँ ओतिय-चतुर्वेदविहित; पूशत्तै नन्ऱु इळैत्तु-पूजा खूब करके; नल्ल तवरक्कु अँलाम्-अच्छे सभी तपस्वियों को; कन्ऱु उटै(य) पच्चुविन् कटन्-बछड़ों सहित गोदान; नल्किताळ्-किया । ६५

यह प्रार्थना करके देवी कौसल्या ने उन इन्दिरापति की युक्त चारों वेदों में कथित रीति से पूजा संपन्न करके, सभी तपस्वियों को बछड़ों के साथ गायों का दान किया । ९५

पौन्नु मामणि युम्बुनै शान्दमुम्, कन्ति मारीडु काशिनि योड्टमुम्
इन्न यावयु मीन्दत लन्दणर्क्, कन्न मुन्दळि राडयु नल्हिनाळ् 96

अन्तणर्क्कु-विप्रों को; पौन्नुम्-स्वर्ण; मा मणियुम्-बहुमूल्य रत्न; पुनै चन्ततमुम्-चर्चायोग्य चन्दन; कन्ति मारीडु-कन्याओं के साथ; काचित्ति ईड्टमुम्-भूमि की राशि; इन्न यावैयुम्-ऐसी (दान की) वस्तुएँ; इन्ततळ्-दीं; अन्तमुम्-भोजन और; तळिर् आटैयुम्-कदलीपल्लव मृदुल वस्त्र भी; नल्किताळ्-दिये । ६६

वाद ब्राह्मणों को स्वर्ण, रत्न, चन्दन, कन्यायें और भूमि के खण्ड तथा अन्य वस्तुओं का दान किया । भोजन और कदलीपत्र के समान शोभित वस्त्र भी दिया । ९६

नल्हि	नायह	नाण्मलर्प्	पादत्तैप्
पुल्लिप्	पोर्ऱि	वणङ्गिप्	पुरैयिलाळ्
मल्लन्	मामणिक्	कोयिल्	वलङ्गोळात्
तौल्लै	नोन्बुहळ्	यावुन्	दौडङ्गिनाळ् 97

पुरै इलाळ्-अनिन्द्य; नल्कि-दान करके; नायकन्-भगवान के; नाळ् मलर् पातत्तै-नवविकसित कमल चरण; पुल्लि-पकड़कर; पोर्ऱि वणङ्कि-स्तुति और नमस्कार करके; मल्लल्-समृद्ध; मा मणि-श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत; कोयिल्-

मन्दिर की; बलम् कौळा-परिक्रमा करके; तील्लै-प्राचीन; तोनपुकळ् यावुम्-सभी व्रत; तीटङ्किताळ्-रखना आरम्भ किया । ६७

निर्मल स्वभाव वाली कौसल्या ने यह सब दान करके भगवान के नवविकसित कमल-सम चरण पकड़कर स्तुति और दण्डवत् की । फिर खूब श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत उस बड़े मन्दिर की परिक्रमा की । बाद वे प्राचीन अनेक व्रतों का पालन करने लगीं । ९७

2. मन्दरै शूळ्चिप् पडलम् (मन्थरा षडयन्त्र पटल)

कडिहमळ्	तारिनान्	कणित	माक्कळ्
मुडिवुड्	नोक्कियोर्	मुहमन्	कूडिप्पित्
वडिमळ्	वाळवड्	कडन्द्	मैन्दङ्कु
मुडिपुनै	कडिहैनाण्	मौळिमि	नैन्डतन् 98

कटि कमळ् तारिनान्-सुगन्धि छिटकती माला के धारी ने; कणित माक्कळ्-ज्योतिषी लोगों को; मुडिवु उड् नोक्कि-पूर्णरूप से देखकर; ओर् मुहमन् कूडि-युक्त शिष्ट वचन कहकर; पित्-पश्चात्; वडि मळ्वाळन्-तीक्ष्ण परशु के रखनेवाले (परशुराम) के; कडन्त-विजयी; मैन्तङ्कु-वीर राघव को; मुडि पुनै-किरीट पहनाने योग्य; कटिके नाळ्-मुहूर्त के दिन को; मौळिमिन्-कहिये; अन्डतन्-कहा । ६८

सुवासित पुष्पों की माला से अलंकृत चक्रवर्ती ने अपने सामने रहे सभी ज्योतिषियों पर खूब दृष्टि डाली । अवसरानुकूल शिष्ट वचन कहे । फिर उनसे कहा कि तीक्ष्ण परशु के धारण करनेवाले परशुराम के जयी श्रीराम को किरीट पहनाने के लिए योग्य मुहूर्त और दिन शोध करके बताइये । ९८

पौरुन्दुना	णाळैयुन्	पुदल्वड्	कैन्डलुम्
तिरुन्दिना	रिनियशौड्	केट्ट	शैय्हळ्
पौरुन्दिण्मा	लियानैयान्	पिळैप्पिल्	शैय्दव
मरुन्दिनान्	वरुहैन	वशिट्ट	नैय्दिनान् 99

उन् पुतल्वङ्कु-आपके पुत्र के लिए; पौरुन्तु नाळ्-अच्छे मेल का दिन; नाळै-कल ही; अन्डलुम्-कहते ही; तिरुन्तितार्-(ज्योतिष शास्त्र में) कुशलता प्राप्त उनके; इत्तिय चोल् केट्ट-मधुर (सुखद) वचन सुना (जिन्होंने) उन; चैय् कळल्-भूपक पायलधारी; पौरु तिण् माल् यानैयान्-बड़े, बलिष्ठ और मत्तगजों के स्वामी, (दशरथ) के; पिळैप्पु इल्-दोषहीन; चैय्त्वम्-कृततप; मरुन्तु अन्तान्-अमृत सम (वसिष्ठजी); वरुक अन्त-आजाय, कहने पर; वचिट्टन्-वसिष्ठ; अय्तिनान्-पधारे । ६९

ज्योतिषियों ने खूब परीक्षा करके बताया कि आपके पुत्र के मुकुट-धारण के लिए योग्य दिन कल ही है। ज्योतिषशास्त्र में निपुण उनके सुखद वचन सुनकर भूषक पायलधारी गजपति दशरथ ने इच्छा प्रकट की कि निर्दोष तपस्वी श्री वसिष्ठजी इधर आ जायँ। वसिष्ठ भी पधारे। ९९

नल्लियन्	मङ्गल	नाळु	नाळयव्
विल्लिय	ओळवर्	किन्ऱु	वेण्डुव
ओल्लयि	नियर्ऱिनल्	लुऱुदि	वाय्मयुम्
शौल्लुदि	पैरिदैत्तल्	तौळुदु	शौल्लित्तान् 100

नल् इयल्-भलाइयों से युक्त; मङ्कल नाळुम्-शुभ दिन भी; नाळै-कल ही है; अ-उस; विल् इयल् तोळवर्कु-धनु से अभ्यस्त भुजा वाले; इन्ऱु-आज ही; वेण्डुव-आवश्यक कार्य; ओल्लैयिन् इयर्ऱि-सत्वर सम्पन्न करके; उऱुति नल् वाय्मयुम्-हितोपदेश भी; पैरितु चौल्लुति-विशद रूप से करें; अँत्त-ऐसा; तौळुतु चौत्तान्-नमस्कार करके कहा। १००

चक्रवर्ती ने वसिष्ठजी से कहा—सभी प्रकार से मंगलमय दिन कल ही है। इसलिए उस कोदण्डपाणी द्वारा जो भी वैदिक कर्म कराना है शीघ्र कराइये और आवश्यक हितोपदेश विस्तार से कीजिए। १००

मुत्तिवन्	मुवहैयुन्	दानु	मुन्ऱुवान्
मनुकुल	नायकन्	वायिन्	मुन्ऱित्तान्
अत्तैयवन्	वरवुकण्	डलङ्गन्	मार्वत्तुम्
इतिदैदिर्	कौण्डुदन्	निरुक्कै	यैय्दिनान् 101

मुत्तिवत्तुम्-मुनिवर भी; उवकैयुम् तातुम् मुन्ऱुवान्-आनन्द के साथ शीघ्र जाकर; मनुकुलम् नायकन्-मनुकुलनायक के; वायिल्-(महल के) द्वार पर; मुन्ऱित्तान्-पहुँचे; अत्तैयवन् वरवु कण्डु-उनका आगमन देखकर; अलङ्कल् मार्वत्तुम्-माला से अलंकृत श्रीवक्षवाले श्रीराम भी; इत्तितु अँतिर् कौण्डु-आदर के साथ अगवानी करके; तन् इरुक्कै अय्तिनान्-(उनके साथ) अपने स्थान गये। १०१

मुनिवर भी बहुत आनन्द के साथ शीघ्र गमन कर मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम के महल के द्वार पर पधारे। श्रीराम ने उनका आगमन देखा तो वे स्वयं अगवानी के लिए आये और उनको लेकर अन्दर अपने स्थान पर गये। १०१

ओल्हि लात्तवत् तुत्तम नोडुनल्, मल्हु केळ्वियव् वळ्ळलै नोक्किये
पुल्हु कादर् पुरवल् पोरवलाय्, नल्हु नान्ऱिल नाळै नितक्कैन्ऱान् 102

ओल्कु इला-अचंचल; तवत्तु उत्तमन्-तपस्या के उत्तम मुनि; ओतुम् नल्-अध्ययन योग्य शास्त्रों का ज्ञान; मल्कु केळ्वि-व भरपूर श्रौतज्ञान रखनेवाले;

अ वळ्ळलै नोक्कि-उन प्रभु (श्रीराम) को देखकर; पोर् वलाय्-युद्धचतुर; पुलकु कातल्-(आप पर) रखे प्रेम के; पुरवलन्-चक्रवर्ती; नाळै-कल; नितक्कु-आपको; नाल् निलम् नत्कुम्-चतुर्विध भूमि दिला दंगे; अँत्तान्-बोले । १०२

वसिष्ठजी अचंचल तपोधन थे । श्रीराम अध्ययन और श्रवण के भरपूर ज्ञान के ज्ञानी थे । वसिष्ठ ने उनसे कहा कि हे युद्धनिपुण श्रीराम ! आप पर गंभीर स्नेह रखनेवाले चक्रवर्ती कल आपके पास राज्य का अधिकार सौंपेंगे । १०२

अँत्तु पित्तु मिरामत्तै नोक्किनान्, ओँत्तु कूखव दुण्डुळ् दिप्पौरुळ्
नन्तु केट्टुक् कडैप्पिडि नन्गँत्तात्, तुन्तु तारवर् चील्लुदन् मेयित्तान् 103

अँत्तु-यह कहकर; पित्तुम् इरामत्तै नोक्कि-और श्रीराम को देखकर; नान् कूखवु-मेरा कहा जानेवाला; उरुतिप्पौरुळ् ओँत्तु उण्टु-हित उपदेश एक है; नन्तु केट्टु-उसको ध्यान से सुनकर; नन्तु कडैप्पिडि-भलीभाँति (उसका) अनुसरण करो; अँत्ता-ऐसा; तुन्तु तार् अवन्-घनी पुष्पमालाधारी श्रीराम से; चील्लुतल् मेयित्तान्-कहने लगे । १०३

और भी आगे कहा । मुझे आपसे एक हितकारिणी बात कहनी है । आप उसे ध्यान से सुनिये और उस पर खूब अमल कीजिए । घनी मालाधारी श्रीराम से यह कहकर वे आगे बोले । १०३

करिय मालित्तुङ् गण्णुद लानिन्तुम्, उरिय तामरै मेलुर् वैवित्तुम्
विरियुम् ब्रदमी रैन्दित्तु मेय्यित्तुम्, पेरिय रन्दणर् पेणुदि युळ्ळत्ताल् 104

करिय मालित्तुम्-श्यामलवर्ण तिरुमाल (श्रीनारायण) से भी; कण् नुतलान्तिन्तुम्-भालनेत्र (शिवजी) से भी; उरिय-स्वत्व के; तामरै मेल्-कमल पर; उरैवित्तुम्-रहनेवाले (ब्रह्मा) से भी; विरियुम् पूतम् ओर् ऐन्दित्तुम्-विस्तारशील पाँचों भूतों से; मेय्यित्तुम्-सत्य से भी; अन्तणर् पेरियर्-ब्राह्मण लोग श्रेष्ठ हैं; उळ्ळत्ताल् पेणुति-(उनका) मन से आदर कीजिये । १०४

श्यामल श्रीविष्णु, भालनेत्र श्रीशिव, कमलासन ब्रह्माजी, विस्तृत पाँच भूत, सत्य —इन सबसे ब्राह्मण लोग श्रेष्ठ हैं । उनका मन से आदर कीजिए । १०४

अन्द णाळर् मुत्तियवु माङ्गवर्, शिन्दै यालरुळ् शैय्यवुन् देवरुळ्
नीन्दु ळारयु नीय्दुयर्न् दारयुम्, मैन्द वैण्ण वरम्बुमुण् डाङ्गौलो 105

मैन्त-पुत्र; अन्तणाळर् मुत्तियवुम्-ब्राह्मणों के कोप करने पर; आङ्कु-उसी प्रकार; अवर्-उनके; चिन्तैयाल् अरुळ् चैय्यवुम्-मन से अनुग्रह करने पर; तैवरुळ्-देवों में भी (सही); नीन्तु उळारैयुम्-(क्रम से) दुखी हुआ को; नीय्त्तु उयर्न्तारैयुम्-शीघ्र उन्नति प्राप्त लोगों को; वैण्ण-गिनने को; वरम्बुम् उण्टो-सीमा है क्या । १०५

पुत्र ! ब्राह्मणों के कोप का पात्र बनकर देवों में भी कितने अवनति को और दुख को प्राप्त हो गये ! उनकी कृपा का पात्र बनकर कितने ही उन्नत और सुखी हो गये ! उनकी संख्या का अंत भी है क्या ? नहीं ! उनकी संख्या अनंत है । (इस पद में यथाक्रम अलंकार है ।) । १०५

अनैय रादलि नैयव्व वैयाती, विनैयि नीङ्गिय मेलवर् ताळिणै
पुत्तैयुम् जैन्तियै यायप्पुहळन् देत्तुदि, इनिय कूडिन्नि रेयिन शैय्दियाल् 106

ऐय-तात; अनैयर् आतलिन्-वे ऐसे हैं, इसलिए; वैया-कूर; ती वित्तैयिन् नीङ्किय-पापों से मुक्त; अ मेलवर्-उन उत्तम लोगों के; ताळ् इणै-चरणद्वय को; पुत्तैयुम् जैन्तियै आय-धारण करनेवाले सिर के होकर; पुहळन्तु एत्तुति-गुणवर्णन और स्तुति कीजिये; इतिय कूडि-मधुर भाषण करके; निन्कु-उनके बताये मार्ग में स्थित होकर; एयिन् चैय्ति-उनकी आज्ञा का पालन कीजिये । १०६

तात ! ब्राह्मण लोग ऐसे महिमावान हैं । इसलिए आप निष्पाप उन महानों के चरणद्वय को अपने सिर पर धारण कीजिए । सदा उनका गुणगान कीजिए और स्तुति कीजिए । उनसे मधुर भाषण कीजिए और उनके बताये मार्ग पर रहकर उनकी आज्ञा का अनुसरण कीजिये । १०६

आव दङ्कु मळिवदङ् कुम्भवर्, एव निङ्कुम् विदियुमेन् शालिन्ति
आव देप्पोरु ठिम्मयु मम्मयुम्, देव रैप्पर वुन्दहै शीर्त्तदे 107

वित्तियुम्-(अकादय) विधि भी; आवत्तङ्कुम्-वनाने और; अळिवत्तङ्कुम्-बिगाड़ने की; अवर् एव-उनकी आज्ञा पर; निङ्कुम् अत्ताल्-(अधीन) रहेगी तो; इत्ति-अव; आवतु अँ पोळ्-(सहायक) रहेगी कौन सी वस्तु; इम्मैयुम्-ऐहिक जीवन के लिए हो; अम्मैयुम्-परलोक के लिए हो; तेवर् परवुम् तक्-भूसुरों का आदर करने की प्रवृत्ति; शीर्त्तते-श्रेष्ठ है । १०७

दुर्द्धर्ष विधि भी उनकी आज्ञा पाकर बनाती है या बिगाड़ती है । फिर उनकी आज्ञा से बढ़कर हितैषिणी वस्तु क्या है ? ऐहिक जीवन के लिए हो चाहे पारलौकिक जीवन के लिए, भूसुरों का आदर करना श्रेष्ठ है । १०७

उरुळु नेमियु मौण्गव रैः कमुम्, मरुळिल् वाणियुम् वल्लवर् सूवर्क्कुम्
तेरुळु नल्लड मुम्मनच् चैम्मयुम्, अरुळु नीत्तपि नावडुण्डाहुमो 108

उरुळुम् नेमियुम्-सर्वत्र चलनेवाला चक्रायुध; औण-उज्ज्वल; कवर्-(तीन) काँटोंवाले; अँः कमुम्-शूल और; मरुळ् इल्-असंदिग्ध; वाणियुम्-वाणी में; वल्लवर्-समर्थ; सूवर्क्कुम्-त्रिदेवों का भी; तेरुळुम् नल् अरमुम्-शुद्ध सद्धर्म; मनम् चैम्मैयुम्-मन की नेकी; अरुळुम्-कृपा; नीत्तपिन्-छोड़ देने के बाद; आवतु-(उनसे) होनेवाला; उण्टु आकुमो-कुछ हो सकता है क्या । १०८

चक्रायुध (विष्णु देव) त्रिशूलभूत (शिवजी) पवित्र वाणी को अस्त्र के रूप में प्रयोग करनेवाले (वाणीपति) ब्रह्मा —ये भी शुद्ध धर्म, मन का आर्जव और दया को छोड़ देंगे तो उनसे किसी का कोई हित नहीं हो सकता । (ऐसी स्थिति में राजा के लिए ये गुण परमावश्यक हैं ।) । १०८

शूद्र मुन्दुश्च चोल्लिय मातुयर्, नीदि मैन्द नितक्किलै यायितुम्
एद मैन्बत्त यावयु मैय्दुदर, कोदु मूल मवैयत्त वोर्दिये 109

नीति मैन्त-नीतिमान सुत; चतु मुन्तु उर-कपट आदि; चोल्लिय-कथित; मा तुयर्-बड़े दुखदाई दुष्कर्म; नितक्कु इलै-आपके पास नहीं है; आयितुम्-तो भी; एतम् अन्तपत्त यावैयुम्-अपराध कहे जानेवाले सभी को; अयुत्तुत्तु-प्राप्त करने के लिए; ओतुम्-(नीतिशास्त्रों में) कथित; मूलम् अवै अत्त-हेतु वे ही हैं, यह; ओर्ति-जान लीजिये । १०९

नीतिमान कुमार ! कामादि बड़े दुखदायी गुण और कर्म आपके पास नहीं है । तो भी यह स्मरण रखें कि वे ही सभी अपराधों के मूल हैं । यह शास्त्रों का कथन है । १०९

यारो डुम्बहै कौळल तैन्ऱपिन्, पोरो डुङ्गुम् पुहळोडु गादुत्तन्
तारो डुङ्गल्शैय् याददु तन्दपिन्, वेरो डुङ्गोड वेण्डलुण्ड डाहुमो 110

यारोटुम् पकै कौळलन्-किसी से शत्रुता नहीं रखता; अन्ऱ पिन्-ऐसी स्थिति होने के बाद; पोर् ओटुङ्कुम्-युद्ध नहीं रह जायगा; तन् तार्-उसकी सेना; ओटुङ्कल् चैय्यातु-कम नहीं होगी; पुक्ळ ओटुङ्कातु-यश कम नहीं होगा; अतु तन्त पिन्-(ऐसी) वह स्थिति बना लेने के बाद; वेरोटुम् कट वेण्डळ्-जड़ के साथ नाश होने की स्थिति; उण्टाकुमो-होगी क्या । ११०

कोई राजा किसी का शत्रुत्व नहीं मोल लेता और उसके कोई शत्रु न रहे —ऐसी स्थिति हो जायगी तो उससे बड़े लाभ होते हैं । युद्ध नहीं होता और सेना नहीं घटती । यश भी कम नहीं होता । उस स्थिति में जड़ से नष्ट होने की दशा उत्पन्न होगी क्या ? नहीं होगी । ११०

कोळु मैम्बोर्त्ति युङ्गुर् यप्पीरुळ्, नाळुङ् गण्डु नडुवुरु नोन्मयिन्
आळु मव्वर शैयर शन्नदु, वाळिन् मैल्वरु मादव मैन्दने 111

मैन्तने-वीर कुमार; ऐन्तु पोरियुम्-पाँच इन्द्रिय; कोळुम्-और उनके ग्राह्य (विषय); कुडैय-कम हो तो; पोरुळ् नाळुम् कण्ठु-अर्थ (धार्मिक रीति से) रोज अर्जन करके; नटु उरु नोन्मैयिन्-निष्पक्ष मनोभाव के साथ; आळुम्-शासन करने का; अ अरचे-वह राज्य ही; अरचु-सही शासन है; अन्तुत्तु-वह शासन; वाळिन् मैल् वरुम्-तलवार की धार पर किया जानेवाला; मातवम्-महान तप है । १११

वीर सुत ! इन्द्रियों और विषय-भोग की आसक्ति को दमन किया गया तो अर्थार्जन खूब होगा । दिनोदिन सम्पत्ति बढ़ेगी । निष्पक्ष

मनोभाव के साथ शासन होगा। ऐसा शासन ही सच्चा शासन है। वह शासन तलवार की धार पर किया जानेवाला तप है। (वह उतना कठिन भी है।) १११

उमैक्कु नादक्कु मोङ्गुपुळ्ळुळ्ळुर्दिक्कुम्, इमैप्पि नाट्टमो रैट्टुडै यान्कुक्कुम्
शमैत्त तोळ्वलि ताङ्गिन रायिनुम्, अमैच्चर् शौलवळि याङ्गुद लाङ्गले 112

उमैक्कु नादक्कुम्-उमापति का; ओङ्कु पुळ्ळु ऊर्तिक्कुम्-श्रेष्ठ पक्षी (गरुड़) पर आरुडु (विष्णु) का; इमैप्पु इल् नाट्टम्-पलक न मारनेवाली आँखें; ओर् अट्टु उट्टेयान्कुक्कुम्-एक आठ रखनेवाले ब्रह्माजी का; चमैत्त-मिला हुआ; तोळ्वलि-भुजबल; ताङ्गित्तर् आयिनुम्-रखनेवाले भी हों; अमैच्चर् चोल् वळि-मन्त्रियों की बात पर; आङ्गुले-कर्म करना ही; आङ्गुल्-बल है। ११२

समझिए कि कोई राजा उमापति शिवजी, ऊँचा उड़नेवाले गरुड़ पर आरुडु विष्णु और आठ अप्रमत्त दृष्टि वाले ब्रह्मा—इनका-सा भुजबल रखता है। तो भी मन्त्रियों की सलाह पर चलना ही सच्चा बल होगा। ११२

अँत्तु तोलुडै यार्क्कुमैल् लार्क्कुन्दम्, वन्व हैप्पुल माशर मायप्पदन्
मुत्तु पिन्विन्नि मून्नुल हत्तिनुम्, अन्वि तल्लदो राक्कुमुण् डाहुमो 113

अँत्तु तोल् उट्टेयार्क्कुम्-अस्थि-चर्ममय (मुनि) के लिए भी; अँल्लार्क्कुम्-(क्यों) सभी के लिए; तम्-उनके; वन् पक्क पुलम्-प्रबल शत्रु, इन्द्रियों को; आचु अर-अशेष; मायप्पतु-दमन करना; अँन्-किस काम का; मुत्तु पिन्नु इन्नि-पहले, बाद का, यह भेद छोड़ (सर्वदा); मून्नु उलकत्तित्तुम्-तीनों लोकों में; अन्पिन् अल्लतु-(पवित्र) प्रेम के सिवा; ओर् आक्कुम्-एक उन्नति का हेतु; उण्टाकुमो-हो सकता है क्या। ११३

केवल अस्थिपंजर-से दिखनेवाले मुनियों के लिए क्या, सभी लोगों के लिए पाँचों इन्द्रियों का संपूर्णतः दमन करने से भी क्या मिलनेवाला है? पीछे या बाद की बात नहीं—सदा और सर्वत्र, तीनों लोकों में, पवित्र प्रेम को छोड़कर कोई हितकारी वस्तु हो सकती है क्या? नहीं हो सकती। ११३

वैय मन्नुयि राहवम् मन्नुयिर्, उय्यत् ताङ्गु मुडलन्त मन्नुक्
कैय मिन्नि यङ्गड वादळ्ळु, मैय्यि निन्निपिन् वेळ्वियुम् वेण्डुमो 114

वैयम्-प्रजाजन; मन् उयिराक्-अक्षय जीव है, मानकर; अ मन् उयिर् उय्य-उन अक्षय जीवों के भले के लिए; ताङ्कुम्-उनको धारण करनेवाला; उटल् अन्त-शरीर-सम; मन्नुक्कु-राजा के लिए; अरम् कटवातु-धर्म का उल्लंघन न करके; अरळ्-दया; मैय्यिन्-और सत्य के मार्ग में; ऐयम् इन्नि निन्नि पिन्-असंदिग्ध रूप से रहकर व्यवहार करेगा तो; वेळ्वियुम् वेण्डुमो-यज्ञ भी चाहिए क्या। ११४

प्रजाजन अक्षय जीव या प्राण हैं। उन जीवों का भर्त्ता शरीर-सम राजा है। अगर वह धर्म का उल्लंघन नहीं करके करुणा और सत्य के मार्ग पर, संशयहीन प्रकार से स्थिर रहेगा तो कोई यज्ञ भी करना चाहिए क्या ? (नहीं)। ११४

इत्थि चोल्लित् नोह्य नैण्णित्तन्, विनयन् रूयन् विळ्ळुमियन् वेंत्त्रियन्,
निनयु नोदि नैरिहड वान्नेत्तिन्, अत्तय मन्त्तन् कळिवुमुण् डाहुमो 115

इत्थि चोल्लित्तन्-मधुर भाषी; ईकैयन्-दानी; ऐण्णित्तन्-विवेकी; विनैयन्-और कार्यकुशल; तूयन्-पवित्र; विळ्ळुमियन्-उत्कृष्ट विचार वाला; वेंत्त्रियन्-और विजयी; निनैयुम्-सबसे प्रशंसित; नीति नैरि कटवान्-नीति मार्ग न छोड़नेवाला हो; नैत्तिन्-तो; अत्तय मन्त्तन्कु-ऐसे राजा का; अळिवुम् उण्टाकुमो-नाश (पतन) भी होगा क्या। ११५

कोई राजा मधुरभाषी, दानी, विवेकशील, कर्मण्य, विजयशील, प्रकीर्तित और नीतिमार्ग न त्यागनेवाला हो तो उसकी कोई हानि हो सकती है क्या ? ११५

शील मल्लन् नोक्किच्चैम् बौरुलैत्, ताल मन्त्त तत्तिनिलै ताङ्गिय
आल मन्त्तन्कु नल्लवर् नोक्किय, काल मल्लदु कण्णुमुण् डाहुमो 116

शीलम् अल्लन् नोक्कि-सदाचार जो नहीं है, उनको हटाकर; चैम् पौन् तुलै-उत्तम स्वर्ण-तुला के; तालम् अन्त्त-(जीम) काँटे के समान; तत्ति निलै ताङ्गिय-श्रेष्ठ निष्पक्ष स्थिति को अपनाकर रहनेवाले; आलम् मन्त्तन्कु-देश-शासक राजा के; नल्लवर् नोक्किय-अच्छे मन्त्रियों द्वारा निर्दिष्ट; कालम् अल्लतु-काल के सिवा; कण्णुम् उण्टाकुमो-आँखें हो सकती हैं क्या। ११६

जो राजा कुचाल को हटाकर बहुमूल्य स्वर्ण-तुला के काँटे के समान उत्तम निष्पक्षता का आलंबन करके राज करेगा उसे अच्छे अमात्य जो काल बतावेंगे उसके सिवा उसके कोई आँख है क्या ? (इस पद्य में आँख का विचित्र प्रयोग हुआ है। राजा के शासन-कार्य में काल का बड़ा महत्व है। अमात्य लोग जब काल-निर्धारण करेंगे तब अच्छा राजा उसका ध्यान रखेगा। वह अपने तर्क या विवेक की आँख का भरोसा नहीं करेगा। इस अर्थ में यहाँ आँख विवेक या तर्क की शक्ति का संकेत करती है।) ११६

ओर्वि नल्विन्नै यूरुत्ति नारुरै, पेर्वि रौल्विदि पेरुळ्ळ दन्त्तरो
तीर्वि लन्बु शैलुत्तलिर् चैव्वियोर्, आर्व मन्त्तवर् कायुदमावदे 117

ओर्विन्-तर्कबुद्धि के साथ; नल्विन्नै ऊरुत्तिनारु-सत्कर्मों में स्थिर रहनेवालों के; उरै-वचन की शक्ति; पेर्वु इल्-अचल; तौल् विति-प्राचीन विधि ने भी; पेरुळ्ळतु अन्नु-नहीं पाई है; तीर्वु इल् अन्पु चैलुत्तलिन्-निरन्तर प्रेम करने से;

चैव्वियोर् आरवम्-उन उत्तम लोगों की सदिच्छा; मन्तवर्कु-राजा के लिए; आयुतम् आवतु-(शत्रुसंहारक) अस्त्र बनेगी (अरो) । ११७

तर्क और विवेक के साथ जो सोच-समझकर काम करते हैं उनकी वाणी में जो शक्ति है वह अकाट्य प्राचीन विधि में भी नहीं है। अडिग प्रेम रखने के कारण उन कर्मठ अमात्यों का सौजन्य राजा की, अस्त्र के समान शत्रु-हनन में सहायता करेगा । ११७

तूम केटु पुविक्कैत्तत् तोन्ऱिय, वाम मेकलै मङ्गय राल्वरुम्
काम मिल्लै येन्ऱिक्कडुडु गेडैनुम्, नाम मिल्लै नरहमु मिल्लये 118

पुविक्कु तूमकेतु अँत-पृथ्वी के लिए धूमकेतु (नाशक ग्रह) के समान; तोन्ऱिय-जो पैदा हुई है उन; वामम् मेकलै-सुन्दर मेखलाधारिणी; मङ्कयराल्-स्त्रियों के कारण; वरुम्-उत्पन्न; कामम् इल्लै अँतिल्-काम नहीं रहा तो; कटुम् केटु अँत्तुम् नामम्-कठोर आफत का नाम भी; इल्लै-नही रहेगा; नरकमुम् इल्लै-नरक भी नहीं है । ११८

मनोरम मेखलाधारिणी स्त्रियों के प्रति जो कामातुरता पैदा होकर बढ़ती है वह पृथ्वी को संकट देनेवाला धूमकेतु है। अगर वह नहीं होगी तो कष्ट का नाम तक नहीं रहेगा। नरकवास का मौका भी नहीं आयेगा । ११८

एनै नीदि यित्तैन वय्यहप्, पोन् हर्कु विळम्बिप् पुलङ्गौळीई
आन् वन्ऱौडु मायिर मौलियान्, तान नण्णिन्नन् उत्तुव नण्णिन्नान् 119

तत्तुवम् नण्णिन्नान्-तत्त्वदर्शी वसिष्ठ; वय्यक्कम् पोन्कड्कु-विश्वगर्भ श्रीराम को; इत्तैन-ऐसी; एनै नीत्ति-अन्य नीतियाँ; विळम्बि-वताकर; पुलम् कौळीड-ज्ञान उद्बुद्ध करके; आन्वन्ऱौडुम्-उनके साथ; मायिर मौलियान् तात्तम्-सहस्रशीर्ष श्रीरंगनाथ के मन्दिर को; नण्णिन्नान्-पधारे । ११९

तत्त्वदर्शी ने भूगर्भ श्रीराम को ऐसे और अन्य उपदेश दिये। श्रीराम को ज्ञान दिया। फिर वे श्रीराम को साथ लेकर सहस्रशीर्ष भगवान श्रीरंगनाथ के मन्दिर में गये । ११९

नण्णि ताहणै वळ्ळलै नान्मडैप्, पुण्णि यप्पुन लाट्टिप् पुलमयोर्
अण्णु नल्विनै मुर्ऱुवित् तेर्ऱिन्नान्, वेण्णि उत्त तरुप्पै विरित्तरो 120

नण्णि-पहुँचकर; नाक्कम् अणै वळ्ळलै-शेषशायी भगवान को; नाल् मडै-चतुर्वेदमन्त्रों से; पुण्णियम् पुनल् आट्टि-पवित्रीकृत जल से अभिषिक्त करके; पुलमयोर् अण्णुम्-विद्वानों से आवश्यक माने जानेवाले; नल् विनै-वैदिक कर्मों को; मुर्ऱुवित्तु-सम्पूर्ण कराकर; वेण्णि निऱुत्त-ज्वेतवर्ण; तरुप्पै विरित्तु-कुश डसाकर; एर्ऱिन्नान्-उस पर आसीन कराया । १२०

वहाँ उन्होंने चतुर्वेद के मन्त्रों से पवित्रीकृत पुण्यजल से श्रीराम

का मज्जन कराया । विद्वानों द्वारा अनुशासित सभी वैदिक कर्मों का श्रीराम से अनुष्ठान करवाया । फिर श्वेतवर्ण कुश बिछाकर उन पर उन्हें आसीन कराया । १२०

❖ एरिड वाण्डहै यिनिदि रुन्दपिन्, नूइड मारबनु नौय्दि नैय्दपोय्
आइरुल्शाल् मन्तवर् कडिवित् तानवन्, शाइरुह नहरणि शमैक्क वेत्तुत्तन् 121

एरिड-आसीन कराने पर; आण् तकै-पुरुषश्रेष्ठ; इतितु इरुन्त पिन्-सुख से (ध्यान मग्न) रहने के बाद; नूल्-यज्ञोपवीतधारी; तटमारपतुम्-विशाल वक्ष वाले वसिष्ठजी; नौय्तिन्-शीघ्र; अय्त् पोय्-जा पहुँचे और; आइरुल् चाल्-प्रतापी; मन्तवर्कु-चक्रवर्ती के पास; अडिवित्तान्-समाचार दिया; अवन्-राजा ने; नकर् अणि चमैक्क-नगर का अलंकार करने का; चाइरुक् अत्तुत्तन्-ढिढोरा पिटवाओ, यह आज्ञा दी । १२१

श्रीराम दभसिन पर बैठकर ध्यान करने लगे । तब यज्ञोपवीतधारी विशाल श्रीवक्ष के ऋषि वसिष्ठ शीघ्र शक्तिमान प्रतापी चक्रवर्ती के पास पधारे और सभी बातें सुनायी । तब राजा ने आज्ञा दी कि नगर सजाने की आज्ञा की मुनादी हो जाय । १२१

❖ एविय वळ्ळुव रिराम नाळये, पूमहळ् कौळुनत्ताय् पुनैयु मोलियिक्
कोनह रणिहैत्तक् कौट्टुम् बेरिहै, तेवरुड् गळिहौळत् तिरिन्दु शाइरिनार् 122

एविय वळ्ळुव-आज्ञापित "वळ्ळुव" लोगों ने; इरामत्-श्रीराम; नाळये-कल ही; पू मकळ् कौळुनत् आय्-भूमिपति होकर; मोलि पुनैयुम्-मुकुट धरेंगे; इ को नकर्-इस राजधानी नगर को; तेवरुम् कळि कौळ-देवों को भी आनन्द देते हुए; अणिक-सजाओ; अत्त-ऐसा; तिरिन्दु-घूम-घूमकर; कौट्टुम् पेरिकै-ढोल पीटकर; चाइरिनार्-घोषणा की । १२२

राजाज्ञा पाकर वळ्ळुव (ढिढोरा पीटनेवाले, विशिष्ट जाति के) लोगों ने सब जगह घूमकर ढिढोरा पिटवाया कि श्रीराम कल ही भूपति होंगे और किरीटधारण करेंगे । लोग इस राजधानी नगर को ऐसा सजायें कि देव लोग भी विस्मित हो जायें । १२२

❖ कवियमै कीर्त्तियक् काळै नाळये, पुवियमै मणिमुडि पुनैयु मँत्तुशौर्
चैवियमै नुहर्च्चिय दैन्तिनुन् देवर्त्तम्, अवियमु दान्दन् नहरुळार्क्कैलाम् 123

कवि अमै कीर्त्ति-काव्य-योग्य यशस्वी; अ काळै-वे (पुरुष-) ऋषभ; नाळये-कल ही; पुवि अमै-भूमि को अपने शासनाधीन करने के निशान रूपी; मणि मुडि पुनैयुम्-रत्नकिरीट पहनेंगे; अत्तु चोल्-यह समाचार; चैवि अमै नुकर्च्चियतु-श्रुति द्वारा ग्रहण करने योग्य बात ही थी; अत्तिनुम्-तो भी; अ नकर् उळ्ळार्क्कु अल्लाम्-उस नगर के सभी वासियों के लिए; तेवर् तम् अवि-देवों का खाद्य; अमुतु आत्तु-अमृत-सा (भोग्य) बन गया । १२३

जिन पर काव्य की रचना हो सकती है ऐसे यशस्वी नरपुंगव श्रीराम कल ही भूमि के शासन के अधिकार को अपनाने का निशानरूपी मुकुट धारण करेंगे—यह घोषणा कानों में पड़नेवाली बोली मात्र है। पर अयोध्यानगर-वासियों के लिए यह केवल समाचार सुनना नहीं था। किन्तु देवों का भोग्य अमृत ही हो गया। वे बहुत आनन्दित हो गये। १२३

❖ आर्त्ततन्	कळित्तन	राडिप्	पाडित्
वेर्त्ततन्	तडित्तन्	शिलिर्त्तु	मैय्मयिर्
पोर्त्ततन्	मन्तन्	पुहळ्न्नु	वाळ्त्तित्
तूर्त्तन	रिरुनिदि	शौलि	नार्क्कलाम् 124

आर्त्ततन् कळित्तन-हल्ला मचाया, मोद दिखाया; आदि पाडित्-गाये, नाचे; वेर्त्ततन्-पसीना हुए; तडित्तन्-मोटे हुए; मैय् मयिर् चिलिर्त्तु-बाल पुलकित हुए; पोर्त्ततन्-शरीर पुलक भरे हो गये; मन्तन्-चक्रवर्ती को; पुहळ्न्नु-तारीफ करके; वाळ्त्तित्-स्तुति की; शौलितार्क्कु अल्लाम्-समाचार देनेवाले सभी को; इरु निति तूर्त्ततन्-बड़ा धन दिया। १२४

नगरवासियों ने आनन्दारव किया। सब तरह से मोद प्रदर्शित किया। कुछ गाये, कुछ नाचे। कइयों के शरीर स्वेद से भर गये। लोगों के शरीर फूल गये। उनके शरीर के बाल पुलकित हो गये और सारे शरीर पुलक से भर गये। वे राजा की प्रशंसा करने लगे। उनकी सस्तुति की। जो भी आकर समाचार कहता (यद्यपि पहले ही उन्हें मालूम था तो भी) उसे अपार धन भेंट करते। १२४

❖ तिणिशुड	रिरिवियैत्	तिरुत्तु	मारुनर्
पणियिडैप्	पळ्ळियान्	परन्द्	मार्विडै
मणियिनै	वेहडम्	वहुक्कु	मारुम्बोल्
अणिनह	रणिन्दन	ररुत्ति	माक्कळे 125

अरुत्ति माक्कळ्-उत्साहपूर्ण उन लोगों ने; तिणि चुटर्-घनी किरणों वाले; इरिवियै-सूर्य को; तिरुत्तुम् आडम्-माँज लिया, ऐसा और; नल् पणि इट्टै-श्रेष्ठ शेषनाग पर; पळ्ळियान्-शयन करनेवाले (परमपुरुष) के; परन्त मार्विट्टै-विशाल वक्षस्थल में रहनेवाले; मणियिनै-कौस्तुभमणि को; वेकटम् चकुक्कुम् आडम् पोल्-सान पर तराशकर और चमकदार बना रहे हों, इस प्रकार; अणि नकर्-सुन्दर नगर को; अणिन्तन्-सजाने लगे। १२५

वे नगर को अलंकृत करने लगे। उनका प्रयास ऐसा रहा मानो अंशुमाली को नयी रौनक दी जा रही हो; या श्रेष्ठ शेषनाग-शायी श्रीविष्णु भगवान के विशाल वक्ष को भूषित करनेवाली कौस्तुभ मणि सान पर धरकर तराशी जा रही हो! अयोध्या नित्यसुन्दर नगर है। उसे और भी सुन्दर बनाया गया। १२५

❖ वैळ्ळिय	करियत्त	शैय्य	वेरुळ
कौळ्ळवान्	कौडिनहरक्	कुळाङ्गोण्	डाडुव
कळ्ळविल्	कोदयान्	शैल्वड्	गाणिय
पुळ्ळैलान्	तिरुनहर	पुहुन्द	पोन्ऱवे 126

वैळ्ळिय-श्वेत रंग की; करियत्त-काले रंग की; शैय्य-लाल; वेरु उळ-अन्य विविध रंगों की; नकर्-नगर भर में; कौळ्ळ कौण्टु-बहुत बड़ी राशि में; आटुव-हिलनेवाली; वान् कौटि-श्रेष्ठ पताकाएँ; कळ् अविळ् कोतयान्-शहद के साथ खिले पुष्पों की माला के धारी श्रीराम का; शैल्वम् काणिय-श्रीयुक्त होना देखने के लिए; पुळ्ळ अलाम्-पक्षीगण सब; तिरुनकर्-श्रीसम्पन्न नगर में; पुकुन्त पोन्ऱ-आ जुटे हों, ऐसा लगीं । १२६

कई पताकाएँ फहरायी गई । वे सफ़ेद, काली, लाल और अनेक रंगों की थीं । उनको देखकर ऐसा लगा मानो सारे खगगण शहद के साथ खिले पुष्पों की माला से शोभायमान श्रीराम का श्रीयुक्त होने का वैभव देखने आ पहुँचे हों । १२६

मङ्गयर् कुडङ्गेत्त वहुत्त वाळ्ळहळ्, अङ्गवर् कळुत्तैत्तक् कमुह मारुन्दत्त तङ्गौळि मुळवलिर् राम नान्ऱत्त, कौङ्गयि तिरैत्तत्त कत्तह कुम्बमे 127

अङ्कु-वहाँ; मङ्कयर् कुडङ्कु अँत्त-रमणियों के ऊँठों के समान; वाळ्ळहळ्-कदलीवृक्ष; वकुत्त-यत्तत्त लगाये गये; अवर कळुत्तु अँत्त-उनके कण्ठों के समान; कमुकम्-पूग के वृक्ष; आरुन्तत्त-(गाड़कर) भर गये; औळि तङ्कु-प्रकाशमान; मुळवलिन्-(उनके) दाँतों के समान; तामम् नान्ऱत्त-भोतियों की मालाएँ लटकाई गई; कौङ्कयिन्-उनके स्तनों के समान; कत्तक् कुम्पम्-स्वर्णकलश; तिरैत्तत्त-पंक्ति में रखे गये । १२७

उस नगर में कदली वृक्ष और पूग वृक्ष यत्तत्त गाड़े गये । मुक्ता-मालाएँ लटकायी गई । पूर्णकलश पंक्तियों में रखे गये । वे क्रमशः रमणियों की जाँघों, कंठों, दाँतावलियों और स्तनों के समान थे । १२७

मुदिरोळि युयिर्त्तत्त मुडुहिल् कालयिर्, कदिरवन् वेरौर कविन्कोण् डान्नेत्त मदितौड निवन्ऱुयर् महर तोरणम्, पुदियन् वलरुन्दत्त पुदव राशिये 128

पुतियन्-नवीन; मति तौट-चन्द्रमण्डल को छूते हुए; निवन्ऱु उयर्-उन्नत बड़े ऊँचे; मकर तोरणम्-मकर तोरण; अलरुन्तत्त-जिन पर वने; पुतवम् राशि-वे नगरद्वार; कालैयिल् कतिरवन्-उदय सूर्य ने; मुडुकि-सत्वर आकर; वेरु और कविन् कोण्डान्-दूसरा एक सुन्दर रूप धर लिया; अँत्त-ऐसा; मुतिर् औळि उयिर्त्तत्त-अतिशय प्रकाश देने लगे । १२८

नगर द्वारों में नये मकर-तोरण बनाये गये । वे चंद्रमण्डल को छूते-से उन्नत बनाये गये । वे ऐसे प्रकाश देने लगे मानो उदय सूर्य ने शीघ्र आकर अभूतपूर्व सुन्दर रूप धर लिया हो । १२८

तुनियरु शैम्मणित् तूण नीरुतोय्, वनिदयोर् कूडितन् वडिवु काट्टित्त
पुनैतुहि लुरैतोरुम् बीलिनदु तोन्रिन, पनिपौदि कदिरैन्प् पवळत् तूण्गळे 129

पुनै तुकिल् उरै तौरुम्—अलंकृत वस्त्र की बनी खोलों के; तुत्ति अरु—निर्मल;
शैम्मणि तूणम्—माणिकमय खम्भों ने; नीरु तोय्—भभूतधारी; वनित्त ओर कूडितन्—
और अर्धनारीश्वर के; वडिवु—रूप को; काट्टित्त—दिखाया; पवळम् तूण्गळ्—
मंगे के खम्भे; पत्ति पौत्ति कतिर् अन्न—हिमाच्छादित सूर्य के समान; बीलिनदु
तोन्नरित्त—सुन्दर दिखे । १२६

खंभों के ऊपर नवीन (श्वेत) वस्त्र की खोलें चढ़ायी गई । कुछ
खंभे माणिक्य-सज्जित थे । वे भभूतधारी अर्धनारीश्वर श्री शिवजी के
समान लगे । कुछ लाल प्रवाल के खंभे थे । वे उस सूर्य के समान सुन्दर
थे जिसको हिम ढँक रहा था । [वस्त्र की खोल भभूत (भस्म) और हिम
से उपमित है और खंभे शिवजी और अंशुमाली से उपमित हैं ।] । १२९

मुत्तिनान्	मुळुनिला	वैरिप्प	मौयम्मणिप्
पत्तियि	निळवैयिल्	परप्प	नीलत्तिन्
तौत्तिन	मिरुळ्वरत्	तूण्डच्	चोदिड
वित्तहर्	विरित्तना	ळौत्त	वीदिये 130

वोत्ति—वोथियाँ; मौयमणि पत्तियिन्—पास-पास रखी गई लाल मणियों की
पंक्तियों के कारण; इळ वैयिल् परप्प—बाल धूप छिटकाती है; तौत्तु नीलत्तिन्
इतम्—झुरमुटों में रहे नीले रत्न; इरुळ्वर तूण्ड—अंधकार को उकसाते हैं;
मुत्तिनान्—मोतियों से; मुळुनिला वैरिप्प—पूर्णचाँदनी फैलती है; चोदिटम् वित्तहर्—
ज्योतिष शास्त्र विद्वानों के; विरित्त—वर्णित; नाळ् औत्त—दिन के समान थीं । १३०

वोथियाँ रत्न, नीली मणियाँ, मोती आदि से भरी थीं । रत्नों
से मंद धूप-सा प्रकाश, नीली मणियों से अंधकार-सा और मोतियों से
चंद्रिका का प्रकाश छूटता था । इसलिए वे वोथियाँ ज्योतिष-शास्त्रियों
से वर्णित दिन के समान थीं । एक ही दिन में सूर्य की धूप, अंधकार
और चाँदनी तीनों पायी जाती है । वैसे ही वोथियों में तीनों पाये जाते
थे । तिथि, नक्षत्र, योग आदि की गणना ज्योतिषी करते हैं । १३०

ॐ आडन्मान्	उरैक्कुळा	मवनि	काणिय
वीडैन्नु	मुलहिन्वीळ्	विमानम्	वोन्ऱन
ओडैवैड्	गडहूळि	रुदय	माल्वरै
तेडरुड्	गदिरोडुन्	दिरिव	पोन्ऱवे 131

आडन्मान्—नर्तनशील अश्वों के; तेर् कुळाम्—(जुते) रथों का समूह; अवत्ति
काणिय—इस अवनी को देखने के लिए; वीटु अन्नुम् उलकिल्—मुक्ति के स्वर्ग के लोक
से; वीळ्—उतरकर आये हुए; विमानम् पोन्ऱन—देवयानों के समान थे; ओटै—
मुखपट्ट पहने हुए; वैम् कटम् कळिरु—भयंकर मदमत्त गज; उतयम् माल् वरै—गुरु

उदयपर्वत अनेक; तेह अरु कतिरीदुम्-अलभ्य सूर्यो के साथ; तिरिव पोन्न-धूमते जैसे थे । १३१

नाचते-से सुन्दर चाल के साथ दौड़नेवाले अश्वों से जुते रथ पृथ्वी के दर्शनार्थ आगत देवयानों के समान लगे जो पापपुण्य-मुक्त स्वर्गलोक से चाव के साथ उतर आये थे । उज्ज्वल मुखपट्टों के साथ जो भयंकर मदमत्त गज धूमते थे वे अनेक उदयगिरियों के समान लगे जो अलभ्य अंशुमालियों के साथ आ रहे हों । १३१

वळङ्गळ	तिरुनहर	वैहुम्	वैहलुम्
पळिङ्गुडै	नैडुज्जुव	रडुत्त	पत्तियिल्
किळरुन्दळ	शुडर्मणि	यिरुळैक्	कीडलाल
वळरुन्दिल	विरिन्दिल	शैक्कर्	वात्तमे 132

वळम् कळ्ळु तिरुनकर्-सर्वसमृद्ध श्रीमन्त नगर में; वैकुम् वैकुलुम्-वास के हर दिन; पळिङ्कु उटै(य)-स्फटिक की; नैडु चुवर्-ऊँची दीवारों पर; पत्तियिल् अटुत्त-श्रेणियों में जड़ित; किळरुन्तु अळ्ळु चुटर्-छिटक उठनेवाली किरणों के; मणि-रत्न; इरुळै कीडलाल्-अँधेरे को चीर देते हैं, इसलिए; वळरुन्दिल-नहीं बढ़ता; शैक्कर् वात्तम्-लाल गगन; विरिन्दिल-नहीं फैलता । १३२

सर्वसमृद्ध उस नगर की स्फटिकमय दीवारों पर अनेक रत्न जड़ित थे । उनसे लगातार विपुल किरणराशि छूट रही थी । उसने अँधेरे को मिटाया । इसलिए किसी भी दिन न अन्धकार रहा, न (सांध्य-) गगन की लालिमा विस्तृत हुई । (न अँधेरा हुआ न संध्या आई) । दिन और रात एक समान थे । १३२

ॐ पूमळै	पुत्तन्मळै	पुडुमैन्	शुण्णत्तिन्
तूमळै	तरळत्तिन्	रोमिल	वैण्मळै
तामिळै	नैरिदलिर्	उहरन्द	पौन्मळै
मामळै	निहर्त्तत्त	माड	वीदिये 133

माटम् वीति-प्रासादों से भरी वीथियों में; पू मळै-पुष्पों की वर्षा; पुत्तल् मळै-(धूल यमाने के लिए सिंचित) सुवासित जल की वर्षा; तूम-छिड़के हुए; पुतु मैन् चण्णत्तिन् मळै-नवीन सुगन्ध-चूर्ण की वर्षा; तोम् इल-निर्मल; वैण् तरळत्तिन् मळै-श्वेतमुक्ता के चूर्ण की वारिश; इळै ताम् नैरितलित्-आभरणों के, भीड़ के कारण, आपस में टकराने से; तकरुन्त पौन् मळै-टूटकर गिरे स्वर्ण की वर्षा; मा मळै निकर्त्तत्त-(सब मिलकर) विपुल वर्षा-सी बन गई । १३३

प्रासादों से भरी अयोध्या की वीथियों में पुष्पों की वर्षा, सुवासित जल की वर्षा, नवीन सुगन्ध-चूर्ण की वर्षा, निर्मल मोतियों की वर्षा, भीड़ के कारण आपस में टकराकर आभरणों ने जो स्वर्णकण गिराये उनकी वर्षा—सब मिल गई और बड़ी भारी वर्षा-सी हो गई । १३३

कारौडु तौडरुमदक् कळिरु शैन्ऱुन, वारौडु तौडरुहळन् मैन्द रामैन्तु
तारौडु नडन्दत्त पिडिह डाळ्ऱहलैत्, तेरौडु नडक्कुमत् तैरिव मारिने 134

कारौडु तौडरु-मेघों से तुलनेवाले; मतम् कळिरु-मतगज; वारौडु तौडरु-
तस्मे से बँधी; कळल्-पायलधारी; मैन्तर् आम् अँत-पट्टों के समान; शैन्ऱुन-
चले; पिडिकळ-हथिनियाँ; ताळ् कलै-लटकते वस्त्रों से आवृत; तेरौडु नडक्कुम्-
रथों (नितम्बों) के साथ चलनेवाली; अ तैरिव मारिन्-उन स्त्रियों के समान;
तारौडु नडन्दत्त-कण्ठहार के साथ चलें। १३४

वहाँ हाथी और हथिनियाँ घूम रही थीं। मेघसम वे हाथी तस्मों
पर बँधी घुँघुर्ओं की बनी पायल के धारी पट्टों के समान घूमे।
हथिनियाँ अपने गले के हारों के साथ उन स्त्रियों के समान घूमी जो
ढीले वस्त्रों से आवृत नितम्बों के साथ घूम रही थीं। १३४

ॐ एय्न्देळु शैल्वमु मळहु मिन्वमुम्, तेय्न्दिल वनेयडु तैरिहि लामयाल्
आय्न्दत्तर् पेरुहवु ममर रिम्वरिड्, पोन्दवर् पोन्दिल मैन्नुम् युन्दियाल् 135

एय्न्तु अँळु चैल्वमुम्-लगी रहकर बढ़नेवाली सम्पत्ति; अळकुम्-और सौंदर्य;
इन्पमुम्-आनन्द; तेय्न्तिल-घटे नहीं; अतैयतु-उसको; तैरिफिलामेयाल्-न जानने
से; इम्परिल् पोन्तवर्-इस लोक में आगत; अमरर्-सुर लोग; पोन्तिलम्
अँन्तुम् पुन्तियाल्-अभी नहीं पहुँचे, इस बोध से; पेरुक्कुम् आय्न्दत्तर्-बहुत सोच-
विचार करते लगे। १३५

उस नगर में संपत्ति, सौन्दर्य और आनन्द हमेशा लगे रहे; कभी
कम नहीं हुए। यह तथ्य सुर लोग नहीं जानते थे। इसलिए वे, जो
अभिषेक के दर्शनार्थ आये थे, अयोध्या में पहुँचकर भी यह समझे कि हम
अभी नहीं पहुँचे हैं—अपने देवलोक में ही हैं। इसलिए वे सोच-विचार
में पड़ गये। १३५

ॐ अन्नह रणिवुरु ममलै वात्तवर्, पोन्नह रिदुवैन्प् पौलियु मेल्वयिल्
इन्नल्शै यिरावण निळैत्त तीमैपोल्, तुन्नरुड् गौडुमनक् कूत्ति तोन्ऱिनाळ् 136

अ नकर्-वह नगर; अणिवु उरुम् अमलै-जो सजाया जा रहा था, उस शोर-गुल
में; वात्तवर् पोन् नकर् इतु अँत-देवों की स्वर्णपुरी यह है, ऐसा; पौलियुम् एल्वयिल्-
जब शोभित रहा, तब; इन्नल् चैय् इरावणन्-(लोक-) हानिकारक रावण के;
इळैत्त तीमै पोल्-किये दुष्कर्मों के रूप के समान; तुन्न अरु-अचिन्त्य; कौटु मतम्-
क्रूर मन की; कूत्ति-कुब्जा (मंथरा); तोन्ऱिनाळ्-प्रकट हुई। १३६

अयोध्या में अलंकार के कार्यों के कारण बड़ा शोरगुल मचा हुआ
था। वह देवों की स्वर्णनगरी के ही समान शोभापूर्ण था। उस समय
कुब्जा मंथरा प्रकट हुई। वह साक्षात् उस आततायी रावण के सभी
दुष्कर्मों के मूर्तरूप के समान थी। उसका मन अत्यंत और अचिन्त्य रीति
से क्रूर था। १३६

✽ तोन्त्रिय	कूनियुन्	दुडिक्कु	नैञ्जिन्नाळ्
ऊन्त्रिय	वैहुळिया	ळुळैक्कु	मुळ्ळत्ताळ्
कान्त्रेरि	नयत्तत्ताळ्	कलिक्कुम्	जौल्लिन्नाळ्
मून्ऱुल	हिन्ऱुक्कुमो	रिडुक्कण्	मूट्टुवाळ् 137

तोन्त्रिय कूनियुम्-प्रकट जो हुई वह कुब्जा; मून्ऱु उलकितुक्कुम्-तीनों लोकों को; ओर् इटुक्कण् मूट्टुवाळ्-एक आफत मचानेवाली; तुटिक्कुम् नैञ्जिन्नाळ्-उद्विग्न मन वाली; ऊन्त्रिय वैकुळियाळ्-गम्भीर क्रोध वाली; उळैक्कुम् उळ्ळत्ताळ्-(क्रोध से) आक्रान्त मन वाली; कान्ऱु अरि नयत्तत्ताळ्-क्रोध से जलती-सी आँख वाली; कलिक्कुम् जौल्लिन्नाळ्-उच्च स्वर वाली । १३७

जो सामने प्रकट होकर आई वह मंथरा तीनों लोकों पर सितम ढानेवाली थी । उसका मन उद्विग्न था; गंभीर क्रोध घर किये था । उसका चित्त क्रोधाक्रान्त था । उसकी आँखें जलती आग के समान थीं और वाणी उग्र थी । १३७

✽ तौण्डवाय्क्	केहयन्	रोहै	कोयिन्मेल्
मण्डिन्नाळ्	वैहुळियिन्	मडित्त	वायिन्नाळ्
पण्ड(य)ना	ळिराहवन्	पाणि	विल्लुमिळ्
उण्डयुण्	उदत्तैत्तन्	तुळ्ळत्	तुळ्ळुवाळ् 138

पण्डै नाळ्-पूर्व समय में; इराकवन् पाणि-श्रीराम के हाथ के; विल् उमिळ् उण्डै-चाप से निकले गुलेले (मिट्टी की गोलियाँ); उण्डत्तै-खाने (मारे जाने) को; तन् उळ्ळत्तु उळ्ळुवाळ्-अपने मन में स्मरण करती; वैकुळियिन्-उस कोप से; मडित्त वायिन्नाळ्-(अधर मोड़े) होंठ चबाती हुई; तौण्डै वाय्-बिबाधरा; केकयन् तौकै-केकय की मयूराभा पुत्री, कैकेयी के; कोयिल् मेल्-महल पर; मण्डित्ताळ्-प्रचण्डवेग से आई । १३८

पहले कभी श्रीराम उस पर गुलेले (चाप से मिट्टी की गोलियाँ) मारते थे । उसे वह याद करती थी । उससे क्रोधोन्मत्त हुई । वह होंठ चबाते हुए केकयराजतनया, मयूराभा कैकेयी के महल पर प्रचंड गति से गई । (यह गुलेला मारने की बात वाल्मीकि ने नहीं कही है । लेकिन तमिळ् के वैष्णव संतों की कृतियों में इसका उल्लेख है ।) । १३८

✽ नाक्कड्	पडुमणि	नळितम्	बूत्तदोर्
पाक्कड्	पडुदिरैप्	पवळ	वल्लिये
पोक्कडैक्	कण्णरुळ्	पौळियप्	पौङ्गणै
मेक्किडन्	दाडनै	विरैवि	तैय्दित्ताळ् 139

नाल् कटल् पटु मणि-चारों ओर के समुद्र से प्राप्त रत्नों के साथ; नळितम् पूत्ततु-कमल खिला हो जैसे; ओर् पाल् कटल् पटु तिरै-अनुपम क्षीरसागर की तरंगों के बीच रहनेवाली; पवळ वल्लिये पोल्-प्रवाललता के समान; पौङ्कु अणै मेल्-

उन्नत एक शय्या पर; कटै कण् अळ्ळ पोळिय-अपांगों से कृपा प्रकट करते हुए;
किटन्ताळ् तत्तै-लेटी हुई कैकेई को; विरैविन् अय्यतिनाळ्-शीघ्र नियरार्ई । १३६

कैकेयी शय्या पर शयन करती सो रही थीं । वह रत्नाकरों से प्राप्य रत्नों के साथ खिले कमल के समान लगीं । और उस प्रवाल-वल्लरी के समान भी लगीं जो क्षीरसागर की तरंगों के मध्य फैली हो । कुब्जा उनके पास अति वेग से गई । १३९

ॐ अय्यदियक्	केहयन्	मडन्द	येडविळ्
नौय्दलर्	तामरं	नोड्ड	नोन्विताड्
शैय्दपे	रुवमैशाल्	शैम्बोड्	चोड्डि
कैहळिड्	डोण्डित्तळ्	कालक्	कोळनाळ् 140

कालम् कोळ् अन्नाळ्-बुरा काल उत्पन्न करनेवाले बुरे ग्रह के समान वह;
अय्यति-पास पहुँचकर; अ केकयन् मडन्तै-उन केकयपुत्री के; एडु अविळ्-खुली
पंखुड़ियों के साथ; नौय्तु अलर्-मृदु-विकसित; तामरं-कमलपुष्प; नोड्ड
नोन्पिताल्-अपनी की हुई तपस्या से; चैय्त-प्राप्त; पेर् उवमै चाल्-श्रेष्ठ उपमा
के योग्य (जिससे) बना; चैम्पोन् चिळ् अटि-उत्तम स्वर्णसूषण जोनित तणु चरण
को; कैहळिन् तीण्डित्तळ्-हाथों से स्पर्श किया । १४०

बुरे काल के बुरे ग्रह के समान उस मंथरा ने उनके पास पहुँचकर
कैकेयी के उस मृदु चरण का स्पर्श किया जिसकी उपमा पाने के लिए
कमल ने तपस्या की थी । वह चरण पुष्ट पंखुड़ियों के व विकासशील
कमल के पुष्प के समान था । १४०

ॐ तीण्डलु	मुणर्न्दत्	तैय्वक्	कड्पिनाळ्
नीण्डकण्	णतन्दलु	नोड्डु	हिड्डिलळ्
मूण्डळ्	पैरुम्बळि	मुडिक्कुम्	वल्विर्नै
तूण्डिडक्	कट्टुरै	शौल्लन्	मेयिनाळ् 141

तीण्डलुम्-स्पर्श करते ही; उणर्न्त-निद्रामुक्त; अ-वे; तैय्व कड्पिताळ्-
दैवी पतिव्रत्यवती; नीण्ड कण्-लम्बी आँखों में; अतन्तलुम् नोड्डु-कुकिर्लिलळ्-
तन्द्रा छुड़ा नहीं पाई; मूण्डु अळ्ळ-उठकर फैलनेवाले; पैरु पळि-बड़े निन्द्य काम
को; मुडिक्कुम्-करा चुकनेवाली; वल् विनै तूण्डिट्टि-वलवान विधि की प्रेरणा से;
कट्टुरै-अपनी वार्ता को; शौल्लल् मेयिनाळ्-(मंथरा) कहने लगी । १४१

स्पर्श होते ही उन दैवी पतिव्रता ने निद्रा त्यागी । पर अभी उनकी
आँखों से तन्द्रा न छुटी थी । पीछे बड़ा अपयश लानेवाला कार्य होने
को था । उसकी विधि की प्रबल प्रेरणा थी । इसलिए कुब्जा अपने मन
की सोची बात यों कहने लगी । १४१

❖ अणङ्गुवाळ्	विडवरा	वणुहु	मैल्लयुम्
गुणङ्गोडा	दौळिविरि	कुळिर्वेण्	डिङ्गळ्पोल्
पिणङ्गुवान्	पेरिडर्	पिणिक्क	नण्णवुम्
उणङ्गुवा	यल्ल(य्)नी	युरङ्गु	वार्येन्नाळ् 142

अणङ्कु-पीडक; वाळ् विटम्-भयंकर विषेला; अरा-राहु सर्प; अणुकुम्
 अल्लैयुम्-अपने पास आते तक; कुणम् केटातु-(शीतलता का) स्वभाव न खोकर;
 औळि विरि-प्रकाश देनेवाले; कुळिर् वेण् तिङ्कळ् पोल्-शीतल श्वेत चन्द्र के समान;
 पिणङ्कु-विपरीत; वान् पेर् इटर्-बहुत बड़ा दुख; पिणिक्क नण्णवुम्-आपको
 ग्रसने आ रहा है, तो भी; उणङ्कुवाय् अल्लै-दुख नहीं समझती; नी उरङ्कुवाय्-
 तुम सोओगी; अन्नाळ्-पूछा । १४२

पीड़ा देनेवाले विष से युक्त राहु-सर्प जब आपको ग्रसने आता है
 तब भी चन्द्र अज रहकर अपना स्वभाव न छोड़कर प्रकाश देता रहता
 है । उस शीतल श्वेत राकापति के समान आप भी इस बात को नहीं
 समझती कि बड़ी विपदा आपको ग्रसने आ रही है । आप दुख का
 अनुभव नहीं करती । आप सोती रहती है । १४२

❖ वैव्विड	मत्तयवळ्	विळम्ब	वेङ्कणाळ्
तैव्वडु	शिलैक्कयैन्	शिरुवर्	शैव्वियर्
अव्ववर्	तुरैतीरु	मरन्दि	रम्बलर्
अव्विड	रैत्तक्कुवन्	दडुप्प	दीङ्गेना 143

वैम् विटम् अत्तैयवळ्-भयंकर विषतुल्य उसके; विळम्ब-कहने पर; वेल्
 कणाळ्-शक्ति-सम नेत्र वाली; तैव्व अटु-शत्रुसंहारक; शिलै कै-धनुर्हस्त; अन्
 चिरुवर्-मेरे पुत्र (चारों); शैव्वियर्-बलवान हैं; अव्व अव्वर् तुरै तीरुम्-उनके
 अपने-अपने क्षेत्रों में; अरम् तिरुम्पलर्-धर्मविमुख न होनेवाले; ईङ्कु-तब यहाँ;
 अव्व इटर्-कौन सी विपदा; अत्तक्कु वन्तु अटुप्पतु-मेरे पास आ लगेगी; अत्ता-यह
 कहकर । १४३

भयंकर विष-सी मंथरा ने जब यह बात कही तो शक्ति (बर्छी-) सी
 आँख वाली कैकेयी ने पूछा कि क्या बात कहती हो ? मेरे चार पुत्र हैं
 जो शत्रुसंहारक धनुर्धर हैं । वे प्रतापी हैं और अपने-अपने मार्ग के धर्म
 से हटनेवाले नहीं हैं । उनके रहते मुझ पर क्या विपदा आयेगी ? । १४३

❖ परावरुम्	पुदल्वरैप्	पयक्क	यावरुम्
उरावरुन्	दुयर(य्)विट्	दुरुदि	काण्वराल्
विरावरुम्	बुविक्कैलाम्	वेद	मेयन्
इरामनैप्	पयन्दवैर्	किडरुण्	डोवैन्नाळ् 144

यावरुम्-सभी कोई; परावु-जिनकी प्रशंसा करते हैं; अरु पुतल्वरै पयक्क-
 श्रेष्ठ पुत्र को पाने पर; उरावु-कठोर; अरु दुयरै विट्टु-और कठिन दुखों से छूटकर;

उरुति काण्पर्-श्रेष्ठ भलाई पायेंगे; विरावु-विविध जीवों से मिश्रित; अरु पुविकुक्कु अल्लाम्-उत्तम सभी लोकों के लिए; वेतमे अन्त-वेदों के ही समान; इरामन्ते पयन्त अङ्कु-श्रीराम को पुत्र रूप में जिसने पाया है, उस मुझे; इटर् उण्टो-आफत होगी क्या; अन्नाळ्-कहा । १४४

संसार में कोई भी हों, उसके यशस्वी पुत्र पैदा हो जायें तो वे प्रबल दुखों से निवृत्त हो जाते हैं और उनका परम सौभाग्य हो जाता है । मेरे तो श्रीराम पुत्र है जो विविध जीवों से भरे सभी लोकों के लिए वेद समान है । फिर मुझे भी कोई विपदा होगी क्या ? (वेद धर्मशास्त्र के मूल हैं जो विधि-निषेधों द्वारा मनुष्य को मार्ग बताते हैं । श्रीराम भी धर्मानुयायी ही नहीं धर्मप्रवर्तक भी हैं । वे “विग्रहवान धर्म” भी कहे जाते हैं ।) । १४४

❖ आळ्न्दपे	रन्विना	ळनैय	कूडलुम्
शूळ्न्दती	विनैनिहर्	कूनि	शौल्लुवाळ्
वीळ्न्ददु	निन्नलन्	दिरुवुम्	वीन्ददु
वाळ्न्दनळ्	कोसलै	मदियि	नालैन्नाळ् 145

आळ्न्त पेर् अन्पिनाळ्-गम्भीर तथा अतिशय वात्सल्यशीला के; अनैय कूडलुम्-ऐसा कहते ही; चूळ्न्त-आवृत्त; ती वितै निकर्-बुरे कर्म के समान; कूनि-कुब्जा; शौल्लुवाळ्-फिर से कहनेवाली बनकर; निन् नलम् वीळ्न्ततु-आपका भाग्य मिट गया; तिरुवुम् वीन्ततु-वैभव भी मिट गया; कोचलै-कौसल्या; मतिथिताल् वाळ्न्तत्तळ्-बुद्धिचातुर्य से खुशहाल हो गई; अन्नाळ्-कहा । १४५

श्रीराम पर गंभीर और अतिशय प्रेम रखनेवाली कैंकेयी ने यह बात कहीं तो मंथरा चुप नहीं रही । वह तो बुरे कर्म के समान उन्हें घेर आई थी । उसने कहा—आपका सौभाग्य मिट गया । आपका विभव मिट गया । कौसल्या अपनी बुद्धि-चातुर्य से उत्कर्ष पा गई । १४५

❖ अन्तशौ	लनैयव	ळुरैप्प	वायिळ्
मन्तवर्	मन्तनेर्	कणवन्	मैन्दनेर्
पन्तरुम्	बैरुम्बुहळ्प्	परदन्	पार्दत्तिल्
अन्तिदन्	मेलवट्	कय्दुम्	वाळ्वैन्नाळ् 146

अनैयवळ्-उस (मंथरा) के; अन्त चोल् उरैप्प-वे शब्द कहने पर; आय् इळै-चुने हुए श्रेष्ठ आभरणभूषित कैंकेयी; कणवन्-(कौसल्या के) पति; मन्तवर् मन्तत्तैल्-राजाओं के राजा हैं; पन्त अरु-अवर्ण्य; बैरु पुकळ्-बड़े यशस्वी; परतन्-भरत; मैन्तत्तैल्-पुत्र है; पार् तत्तिल्-(तब) इस पृथ्वी पर; इतन् मेल्-इससे बढ़कर; अवट्कु अय्तुम् वाळ्वु-उनको मिलनेवाला सौभाग्य; अन्-क्या है; अन्नाळ्-पूछा । १४६

श्रेष्ठ आभरणधारिणी कैंकेयी ने इसके उत्तर में पूछा—कौसल्या के

पति राजाधिराज दशरथ हैं। अवर्ण्य यश के भागी भरत उनका पुत्र है। क्या यह कम है ? इससे बढ़कर कौन सा उत्कर्ष उन्हें मिलनेवाला है ? (कौसल्या भरत पर और कैकेयी राम पर समान प्रेम रखती थीं।) । १४६

❖ आडवर् नहैयुर् वाण्मै माशुर्त्, ताडहै यँनुम्बैयर्त् तैय लाळ्पडक्
कोडिय वरिशिलै यिरामन् कोमुडि, शूडुव नाळैवाळ् विदेत्तच् चौल्लिनाळ् 147

आडवर् नहैयुर्-पुरुष लोग परिहास करे; आण्मै माचू उर्-पुंसत्व कलंकित हो जाय, ऐसा; ताडकै अँनुम् पँयर्-ताड़का नाम की; तैयलाळ् पट-स्त्री को मारने के लिए; कोडिय-झुकाये गये; वरि चिलै-बन्धनयुक्त धनु के; इरामन्-(धारण करनेवाले) श्रीराम; नाळै-कल; को मुडि चूटुवन्-राजमुकुट धारण करेगा; बाळ्वु इतु-(कौसल्या का) जीवनोत्कर्ष यही; अँत-ऐसा; चौल्लिनाळ्-कहा (मंथरा ने) । १४७

मंथरा ने कहा—पूछती है ? उनका पुत्र जो सब तरह से अयोग्य है कल राजमुकुट पहनेगा। ताड़का नाम की एक स्त्री पर उसने अपना धनुष झुकाकर बाण फेंका और उसे मारा। पुरुष लोग उसकी निन्दा करते हैं। पुंसत्व ही उसके इस काम से कलंकित हो गया। वह राम राजा बनेगा ! यही कौसल्या का उत्कर्ष है ! । १४७

❖ माइरुमह(क्) (त्)तुरैशैय मङ्गै युळ्ळमुम्
आइरुल्शाल् कोशलै यरिवु मीत्तवाल्
वेरुम्मै युइरिलळ् वीरन् रादैपुक्
केइरुव लिदयत्ति तिरुक्क वेकौलाम् 148

माइरुम् अ. तु-उत्तर में वह; उरै चैय-कहने पर; मङ्गै उळ्ळमुम्-देवी (कैकेयी) का मन; आइरुल् चाल् कोचलै अरिवुम्-और सुदृढ़ कौसल्या की बुद्धि; अत्त-एक सम थी; वेरुम्मै उइरिलळ्-भेद नहीं मानती थीं; वीरन् तातै-वीरराघव के पिता; अवळ् इतयत्तिन् पुक्कु-उसके हृदय में प्रवेश कर; एरु-वासस्थान मानकर; इरुक्कवे कौल् आम्-वास करते थे, शायद उससे । १४८

यह सुनकर कैकेयी के मन में कोई वैषम्य उदित नहीं हुआ। उनके हृदय में दशरथजी वास करते थे। शायद उस कारण से उनका मन और कौसल्या की दृढ़ बुद्धि दोनों श्रीराम पर समान प्रेम रखते थे। इस पद में एक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक बात कही गयी है। कैकेयी का राम पर प्रेम मन का और कौसल्या का भरत पर प्रेम बुद्धि पूर्वक था। इसका भेद हम पीछे देखते हैं। कैकेयी का राम-प्रेम चलित हो गया और कौसल्या का भरत-प्रेम अडिग रहा । १४८

❖ आयपे रन्बैनु मळ्क्क रार्त्तैळत्
तेय्विला मुहमदि विळङ्गित् तेशुर्त्

तूयव	ळुवहैणोय्	मिहच्चु	डर्क्कैलाम्
नायह	मनैयदोर्	मालै	नल्हिनाळ् 149

तूयवळ्-पवित्र मन वाली; आय-अपने मन में रहे; पेर् अनुप्पु अँनुम् अळक्कर-वड़े प्रेमसागर के; आर्त्तु अँळ-गर्जन कर उठते; मुक्कम्-मुख रूपी; तेयवु इला मति-अक्षय चन्द्र के; विळङ्कि तोन्ऱ-अधिक शोभायमान होते; तेचु उऱ-तेज से भर जाते; उवकै पोय् मिक्-उल्लास के बढ़ते; चुटर्क्कु अँल्लाम्-सभी ज्योतियों के; नायक्कम् अनैयतु-नायक जैसा (श्रेष्ठ); ओर् मालै-एक स्वर्णहार को; नल्किनाळ्-उपहार में दिया । १४६

पवित्र मन वाली कैंकैयी के मन में जो प्रेम उठा वह समुद्र-सम कोलाहल के साथ उमड़ने लगा । उनका मुख अक्षय चन्द्र के समान अधिक शोभा । उसमें एक नया तेज स्फुरित हुआ । आनन्द का ठिकाना नहीं रहा । तब उन्होंने ग्रह और नक्षत्र आदि ज्योतियों से भी बढ़कर तेजोमय एक स्वर्णहार उठाकर मंथरा को उपहार में दिया । १४९

ॐ तँळित्तन्न	ळुरप्पिनळ्	शिरुक्कण्	डीयुह
विळित्तन्नळ्	वेंदनळ्	वैय्दु	यिर्त्तन्नळ्
अळित्तन्न	ळळुदन	ळम्बोन्	मालयाल्
कुळित्तन्न	णिलत्तैयक्	कौडिय	कूत्तिये 150

अ कौडिय कूत्ति-वह क्रूर कुब्जा; तँळित्तन्नळ्-चिल्लाई; उरप्पित्तळ्-डाँटा; चिरुक्कण् तो उक्-छोटी आँखों से आग उगलती हुई; विळित्तन्नळ्-तरेरा; वेंतन्नळ्-गाली दी; वैय्दु उयिर्त्तन्नळ्-गरम साँस छोड़ी; अळित्तन्नळ्-अपना अलंकार बिगाड़ लिया; अळुत्तन्नळ्-रोयी; अम् पोन् मालैयाल्-उस स्वर्णहार से; निलत्तन्नळ्-पटककर) भूमि पर गड़्ढा बना दिया । १५०

अब मंथरा का क्रोध सीमा पार हो गया । वह क्रूर कुब्जा यह देखकर चिल्ला उठी । उसने डाँटा, अपनी छोटी आँखों से अंगारे भरकर तरेरा, गाली दी, अपने अलंकार को बिगाड़ लिया । वह खुलकर रोई । उसने उस हार को ऐसा जोर से पटका कि भूमि पर छोटा गड़्ढा ही बन गया । १५०

ॐ वेदनैक्	कूत्तिपिन्	वैहुण्डु	नोक्किये
पेद(य्)नी	पित्तिनिर्	पिऱन्द	शैयोडु
मादुयर्प्	पडुहना	नैडिदुन्	माऱ्ऱवळ्
तादियर्क्	काट्चैयत्	तरिक्कि	लेन्नैऱाळ् 151

वेदनै कूत्ति-वेदनाविद्ध कुब्जा ने; पिन्-और; वैकुण्डु नोक्कि-क्रोध के साथ देखकर; नी पेत्तै-आप अन्न है; पित्ति-पागल हैं; निन् पिऱन्त चैयोडु-अपने जनाये पुत्र के साथ; नैडितु-दीर्घकाल तक; मा तुयर् पटुक्-विपुल दुख उठाइए; नान्-मैं; उन् माऱ्ऱवळ्-आप की सौत के; तातियर्क्कु आळ् चैय-दासियों की दासता करना; तरिक्किलेन्-सह नहीं सकूंगी; अँन्ऱाळ्-कहा । १५१

वेदनाविद्ध कुब्जा ने कैकेयी को क्रोध की दृष्टि से देखा। फिर कहा—आप मूर्ख हैं। आप पागल हैं। अपने पुत्र के साथ दीर्घकाल तक अत्यधिक संकट उठाइये। मैं आपकी सौत की दासियों की दासी बनकर जीना सह न सकूंगी। १५१

शिवन्दवाय्	चीदयुङ्	गरिय	शैम्मलुम्
निवन्दवा	शततृति	दिरूप	निन्महन्
अवन्दत्ताय्	वैरुनिलत्	तिरुक्क	लात्तपो
दुवन्दवा	ईन्निदरु	कुरुदि	यादेन्ऱाळ् 152

चिवन्त वाय् चीतैयुम्—लाल मुख वाली सीता और; करिय शैम्मलुम्—काला प्रभु; निवन्त आचत्तुत्तु—उन्नत सिंहासन पर; इत्तितु इरूप—मुख से रहेंगे, तब; निन् मकन्—आपका पुत्र; अवन्तन् आय्—अवन्द बनकर; वैरुम् निलत्तु इरुक्कल्—कोरी भूमि पर (खड़ा) रहेगा, यह स्थिति; आत्तपोत्तु—हो गई, तब; इत्तुक्कु—इस पर; उवन्त आरु—आनन्दित होने का हेतु; अन्—क्या; उरुत्ति यात्तु—लाभ क्या है; अन्ऱाळ्—पूछा। १५२

और भी पूछा—लाल मुख वाली सीता और काला रंग वाला राम दोनों ऊँचे सिंहासन पर बैठेंगे। तब आपका लाडला भरत अवन्द होकर कोरी ज़मीन पर खड़ा रहेगा। स्थिति ऐसी हो गई है। तो भी आप आनन्द भरी है, सो कैसा? इसमें आप क्या लाभ देखती है?। १५२

✽ मरुन्दिलळ्	कोशलै	युरुदि	मैन्दनुम्
शिरुन्दत्तन्	रिरुवित्तिरु	रिरुवि	नीङ्गिनात्तु
इरुन्दिल	तिरुन्दत्त	नैन्शैय्	दाऱुवान्
पिरुन्दिलन्	वरदत्ती	पैरु	दालेन्ऱाळ् 153

कोचलै—कौसल्या; उरुत्ति मरुन्दिलळ्—अपना हितसाधन नहीं भूलों; मैन्दनुम्—उनका पुत्र भी; तिरुवित्तिन् चिरुन्दत्तन्—विशेष श्रीमान हो गया; परत्तन्—भरत; नी पैरुत्ताल्—आपका पुत्र होने से; तिरुविन् नीङ्कितात्तु—निर्धन हो गया; इरुन्दिलन् इरुन्दत्तन्—मरा नहीं, इतना ही, मृतक समान रह गया; अन् चैय्त्तु—क्या उपाय करके; आऱुवान्—धैर्य धरेगा; पिरुन्दिलन्—पैदा नहीं हुआ; अन्ऱाळ्—कहा। १५३

कौसल्या हमेशा सतर्क रहीं और अपना हितसाधन कभी नहीं भूलों। अब उनका पुत्र राजा बनता है और श्रीमान होता है। इसके विपरीत असावधान आपका पुत्र निर्धन हो गया। मरा नहीं पर मृतक से कोई भेद नहीं रखता। अब क्या उपाय करके वह धैर्य धारण करेगा? वह जन्मा ही नहीं। ऐसा ही मानना चाहिए। उसका जन्म निरर्थक है क्योंकि वह आपका पुत्र जन्मा है। १५३

शरदमिप्	पुवियैलान्	दम्बि	योडुमव्
वरदत्ते	काक्कुमेल्	वरम्बिल्	कालमुम्
वरदन्तु	मिळवलुम्	वदियि	नीङ्गिप्पोय्
विरदमा	दवज्जय	विडुद	तन्ऱैन्ऱाळ् 154

वरदत्ते-वरद श्रीराम ही; तम्पियोटुम्-अपने लघु भाई के साथ; इ पुवि
 अँलाम्-यह भूमि सब की; वरम्पु इल् कालमुम्-असीम काल तक; काक्कुमेल्-
 रक्षा करेगा तो; चरतम्-सचमुच; परतनुम् इळवलुम्-भरत और उसका छोटा भाई;
 पतियिन्तु नीङ्कि-नगर से निकलकर; पोय्-(वन) जाकर; विरतम् मातवम् चैय
 विटुतल्-व्रतसहित बड़ी तपस्या करने देना; तन्ऱु अँन्ऱाळ्-भला है, कहा । १५४

आगे वरद राम अपने लघुभ्राता लक्ष्मण के साथ असीम काल सारी
 भूमि का शासन करता रहेगा । सच कहती हूँ, उस स्थिति में भरत को
 अपने भ्राता शत्रुघ्न के साथ नगर छोड़कर जंगल में जाकर लंवी तपस्या
 करने के लिए भेजना ही श्रेयस्कर है ! —मंथरा ने कहा । १५४

पण्णुऱु	कडहरिप्	परदन्	पारम्हळ्
कण्णुऱुऱु	गविनरा	यिन्निद्रु	कात्तवम्
मण्णुऱु	मुरशुडै	मन्तर्	मालयिल्
अँण्णुऱुप्	पिऱुन्दिल	निऱुत्त	तन्ऱैन्ऱाळ् 155

पण् उऱु-अलंकृत; कटम् करि-मत्तगज का पति; परतन्-भरत; पार
 मकळ् कण् उऱुम्-भूमि देवी की आँखों में खुभनेवाले; कवितर् आय्-सौंदर्यवान
 बनकर; इन्तिनु कात्त-जो पालन करते थे; अ-उन; मण् उऱु मुरचु उटै(य)-
 मृगुलेप लगे ढोल वाले; मन्तर्-राजाओं की; मालयिल् अँण् उऱु-श्रेणी में गिने जाने
 के लिए; पिऱुन्तिलन्-पैदा नहीं हुआ; इऱुत्तल् तन्ऱु-मरना ही श्रेष्ठ है; अँन्ऱाळ्-
 कहा । १५५

भरत इक्ष्वाकुकुल में पैदा तो हुआ पर अलंकृत मत्त गजपति हमारा
 भरत उन राजाओं की श्रेणी में, जो भूमि देवी की आँखों में खुभकर
 उसका भरण करते थे, गिने जाने को पैदा नहीं हुआ ! इसलिए उसका
 मर जाना ही अच्छा है । १५५

❀ पाक्कियम्	बुरिन्दिलाप्	परदन्	उन्ऱैप्पण्
डाक्किय	पौलङ्गळ्	लरश	ताणयाल्
तेक्कुयर्	कल्लदर्	कडिद्रु	शेणिडैप्
पोक्किय	पौऱुळैन्क	किन्ऱु	पोन्ददाल् 156

पाक्कियम् पुरिन्तु इला-जिसने पुण्य नहीं किया है; परतन् तन्ऱै-उस भरत
 को; पौलम् आक्किय कळल् अरचन्-स्वर्णपायलधारी राजा; पण्द्रु-पहले ही;
 तेक्कु उयर् कल् अतर्-सागौन के तरुओं से पूर्ण और पथरीले मार्ग के; चेण् इटै-दूर के
 (केकय) देश की; आणैयाल्-आज्ञा द्वारा; कटितु पोक्किय पौऱुळ्-शीघ्र जो भेजा,
 उसका अर्थ; अँत्तक्कु-मुझे; इन्ऱु पोन्तु-आज विदित हुआ । १५६

अब एक बात सूझती है । स्वर्णपायलधारी राजा ने आज्ञा देकर इस अभागे भरत को सुदूर उस केकय देश में भेजा जिसका लंबा मार्ग सागौन के तरुओं से पूर्ण और कंकड़ीला है । उसके पीछे जो रहस्यमय आशय था वह अभी मुझे मालूम हो रहा है ! । १५६

❀ मन्तरै	पितृन्तरम्	वहैन्दु	कूडवाळ्
अन्दरन्	दीर्न्दुल	हळिकु	नीरिनाल्
तन्दयुङ्	गौडियन्	शायुन्	दीयळाल्
अँन्दये	वरदने	यैन्शैय्	वायैन्शाल् 157

मन्तरै-मंथरा; पितृन्तरम्-आगे भी; वहैन्दु-गढ़कर; कूडवाळ-बोली; अन्तरम् तोरन्तु-निष्पक्षता छोड़कर; उलकु-राज्य को; अळिकुम् नीरिनाल्- (श्रीराम के पास) देने की रीति से; तन्तैयुम्-पिता भी; कौडियन्-निष्ठुर बने; तन्तैयुम्-जननी भी; तीयळ्-क्रूरी बनीं; अँतैये-मेरे तात; परतने-भरत; अँन् चैय्वाय्-क्या करोगे; अँन्शाल्-कहा । १५७

मंथरा आगे भी बात गढ़कर बोली— निष्पक्षता छोड़कर राजा ने राज्य को श्रीराम के पास दिया और यह साबित कर दिया कि वह, हे भरत ! तुम्हारे प्रति क्रूर है । तुम्हारी माता भी क्रूर है ! तो मेरे तात ! तुम क्या करोगे ? —उसने ऐसा नाटकीय ढंग से प्रलाप किया । १५७

❀ अरशरिर्	पिड्नुदुपिन्	तरश	रिल्वळर्न्
दरशरिर्	पुहुन्दुपे	ररशि	यात्तनी
करय्शैय्	करुन्दुयर्क्	कडलिल्	वीळ्किन्शाय्
उरय्शैय्क्	केट्किलै	युणर्दि	योवैन्शाल् 158

अरचर् इल् पिड्नुतु-राजघराने में जन्म लेकर; पिन् अरचर् इल् वळर्न्तु- फिर राजा के घर में पलकर; अरचर् इल् पुकुन्तु-राजा के घर में (व्याही हो) प्रवेश करके; पेर् अरचि आन नी-महिषी जो बनीं वह आप; करै चैय्कु अरु-तीर (जिसका) देखना दुस्तर है, ऐसे; तुयर् कटलिल्-दुखसागर में; वीळ्किन्शाय्- गिरने को है; उणर्तियो-समझती हैं क्या; उरै चैय्-मैं समझाती हूँ तो भी; केट्किलै- सुनती नहीं है; अँन्शाल्-कहा । १५८

आप राजघराने में पैदा हुईं; फिर राजा के घर में ही पलीं । राजा के घर में वहाँ बनकर आई और महिषी भी बन गई । फिर अब अनंत दुखसागर में गिरने को है । यह बात आप समझतीं क्या ? मैं समझाती हूँ तब भी बात नहीं समझतीं । मंथरा ने ऐसा कहा । १५८

कल्वियु	मिळ्मैयुङ्	गणक्कि	लाड्ऱुलुम्
विल्विनै	युरिमयु	मळ्हुम्	वीरमुम्
अँल्लियिल्	गुणङ्गळुम्	वरदङ्	कैय्दिय
पुल्लिडै	युहुत्तनल्	लमुदम्	बोलुमाल् 159

कलवियुम्-शिक्षा; इल्लमैयुम्-और यौवन; कणक्किल् आरुलुम्-असीम शौर्य; विल् विनै उरिमैयुम्-धनु के प्रयोग में निपुणता; अळकुम्-सौंदर्य और; वीरमुम्-वीरता; अल्लै इल् कुण्डकळुम्-अपार अच्छे गुण; परतर्कु अय्यतिय-सभी भरत को प्राप्त; पुल इट्टे उकुत्त-तृण भरे गन्दे स्थान पर डाले गये; नल् अमुतम् पोलुम्-उत्तम अमृत के समान हो गये । १५६

भरत के पास विद्या है, यौवन है, निस्सीम शौर्य (या कौशल) है, धनु चलाने की कुशलता है, सौंदर्य, वीरता और अनंत अच्छे गुण प्राप्त है । पर ये सब अव तृणयुक्त गन्दे स्थान पर डाला हुआ श्रेष्ठ अमृत-सम हो गये । १५९

❖ वाय्क	यप्पुउ	मन्दरै	वळङ्गिय	वैज्जोल्ल
काय्ह	नरुलै	नैय्शौरिन्	दैन्ककदङ्	गन्नुङ्क
केह	यर्क्किरै	तिरुमहळ	किळरिळ	वरिहळ
तोय्ह	यङ्कण्गळ	शिवप्पुउ	नोक्किन्तळ	शौल्लुम् 160

मन्तरै-मंथरा; वाय् कयप्पु उर-मुख भी कड़आ हो, ऐसा; वळङ्किय-एक दम लगातार कहे हुए; वैम् चोल्-निष्ठुर वचन; काय् कतल् तलै-जलती आग में; नैय् चौरिन्ततु अँत-घी डाला गया, जैसे; कतम् कन्नु-क्रोधाग्नि को उभाड़ते; केकयर्क्कु इरै-केकयराजा की; तिरुमहळ-श्रीतनया; किळर् इळ वरिहळ तोय्-सुन्दर हल्की लकीरों से युक्त; कयन् कण्कळ-मछली-सी आँखों को; चिवप्पु उर- (क्रोध से) लाल करते हुए; नोक्किनाळ-देखती हुई; चोल्लुम्-वोलीं । १६०

मंथरा की ये बातें स्वयं उसके मुख को भी कड़आ बनानेवाली थीं; उसने यह सब धड़ाधड़ कह दिये । उन सब वचनों ने जलती आग में पड़े घी के समान कैकेयी के क्रोध को उभाड़ दिया । केकयराजकुमारी की शोभायमान हल्के डोरों से युक्त मछली-सी आँखें लाल हो गई । मंथरा पर कुपित दृष्टि डालती हुई वह बोलीं । १६०

वैयिन्मु	रैक्कुलत्	तिरुयवन्	मुदलिय	मेलोर्
उयिर्मु	दरुपौर	डिउम्बिन्	मुरैतिउम्	वादोर्
मयिन्मु	रैक्कुलत्	तुरिमयेय्	मनुमुदन्	मरवैच्
चैयिरु	रप्पुलैच्	चिन्दया	लन्शौनाय्	तोयोय् 161

तोयोय्-क्रूरी; वैयिल् मुरै कुलत्तु-सूर्यवंश में उत्पन्न; इरैयवन् मुतलिय मेलोर्-हमारे राजा आदि श्रेष्ठ; उयिर् मुतल् पौरुळ्-प्राण आदि सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ; तिरुम्पित्तुम्-नष्ट हो जायँ तो भी; उरै तिरुम्पातोर्-वचन तोड़नेवाले नहीं हैं; मयिल् मुरै कुलत्तु-मोर के जैसे (स्वभाव वाले) कुल की; उरिमै एय्-रीति से युक्त; मनु मुतल् मरपै-मनु से आनेवाले इस कुल को; चैयिर् उर-कलंक लगाते हुए; पुल चिन्तयाल्-निकृष्ट बुद्धि के कारण; अन् चोनाय्-क्या ही कह गई हो । १६१

री क्रूरी ! सूर्यवंश के मेरे पति आदि सभी राजा, प्राण भी या अन्य ऐसी बहुमूल्य वस्तुएँ चली जायँ तो भी वचन छोड़नेवाले नहीं है । मोर

के कुल का-सा सम्प्रदाय है मनुकुल का सम्प्रदाय । इस पर कलंक लगाते हुए तुमने अपनी नीच बुद्धि के कारण क्या-क्या बातें कह डालीं ? १६१

[इसमें मयूरकुल की बात कही गई है । इस पर सालों से चर्चा है । कहा जाता है कि मोर के कुटुंब में अनेक अंडों से एक साथ शावक उत्पन्न होने पर भी सबसे ज्येष्ठ मोर के ही सबके पहले पंख लगते हैं । यह एक टीका है । यह भी कहा जाता है कि जब एक ही माता से उत्पन्न अनेक मोर एक जगह पर रहते हैं तब सबसे बड़ा मोर ही पहले अपने पंख खोलता है, बाद ही अन्य । इनसे अलग एक टीका भी है । कैकेयी के कुल में भी यही रिवाज था कि ज्येष्ठ पुत्र ही राजा बनता है । इसके आधार पर उस पंक्ति का ऐसा अर्थ किया जाता है कि केकय, यह शब्द 'केकी' से बना है, कुल की जैसी रीति मनुकुल की भी है । उस कुल पर कलंक लानेवाली ऐसी बात क्यों करती हो ?]

ॐ अंतककु	नल्लयु	मल्लैनी	यन्महन्	बरदन्
ततककु	नल्लयु	मल्लैयत्	तरुममे	नोककिन्
उतककु	नल्लयु	मल्लैवन्	दूळ्वितै	तूण्ड
मतककु	नल्लत्त	शौल्लितै	मदियिला	मतत्तोय 162

नी-तुम; अंतककु-नल्लैयुम् अल्लै-मेरी हितकारिणी नहीं हो; अन् मकन्-मेरे पुत्र; परतन् ततककु-भरत की भी; नल्लैयुम् अल्लै-हित नहीं हो; अ तरुममे नोककिन्-उस राजधर्म को देखें तो; उतककु नल्लैयुम् अल्लै-अपने लिए भी हित करनेवाली नहीं हो; मति इला मतत्तोय-बुद्धिहीन चित्त वाली; ऊळ्वितै तूण्ड-पूर्व कर्म की प्रेरणा से; वन्तु-इधर आकर; मतककु नल्लत्त-अपने मन में जो भला लगा; शौल्लितै-वह बोलीं । १६२

कैकेयी ने और भी कहा— तुम मेरा हित नहीं करती; न मेरे पुत्र भरत की । राजधर्म की दृष्टि में तुम अपना भी हित नहीं करती । बुद्धि से वियुक्त चित्त वाली ! विधि की प्रेरणा से जो भी तुम अपने मन में सोचती हो उसे अच्छा समझकर बक रही हो । १६२

पिउन्दि	इन्नुपोय्प	पैरुवदु	मिळप्पदुम्	बुहळे
निउन्दि	इम्बिनु	नियायमे	तिउम्बिनु	नैरियिन्
तिउन्दि	इम्बिनुज्	जैय्दवन्	दिउम्बिनुज्	जैयिर्दीर्
मउन्दि	इम्बिनुम्	वरन्मुर्	तिरम्बुदल्	वळक्को 163

पिउन्तु-पैदा होकर; इउन्तु पोय्-मर जाकर; पैरुवतुम्-पाना; इळप्पतुम्-या खोना; पुक्कळे-कीर्ति ही है; निउम् तिउम्पितुम्-स्वभाव बदल जाय; नियायमे तिउम्पितुम्-(अन्य) न्याय भी टल जाय; नैरियिन् तिउम् तिउम्पितुम्-मार्ग की दिशा भी बदल जाय; जैय् तवम् तिउम्पितुम्-पूर्वकृत तपस्या का फल चाहे न मिले; जैयिर् तीर्-निर्दोष; मउम् तिउम्पितुम्-वीरता भी निष्फल हो जाय; वरन् मुर्-परम्परागत धर्म को; तिउम्पुतल्-छोड़ना; वळक्को-उचित है क्या । १६३

आखिर जन्म और मरण का मूल्य कीर्ति पाने या खोने पर ही आँका जाता है। चाहे स्वभाव छोड़ना पड़े, चाहे कोई न्याय-मार्ग की दिशा बदलनी पड़े, चाहे तपस्या का फल त्यागना पड़े; चाहे निर्दोष वीरता भी निरर्थक हो जाय, कुल के परंपरागत सम्प्रदाय को छोड़ना उचित है क्या ? । १६३

❖ पोदि	यैन्नेदिर्	निन्ऱुनिन्	पुन्ऱोऱि	नावेच्
चेदि	यादिदु	पौऱुत्तन्नेन्	पुऱुञ्जिल	रऱियिन्
नीदि	यल्लवु	नेऱिमुऱै	यल्लवु	निनैन्दाय्
आदि	यादलि	नऱिविलि	यडङ्गुदि	यैन्ऱाळ् 164

अऱिवु इलि-बुद्धिहीन; अँन् अँतिर् निन्ऱुम् पोति-मेरे सामने से चली जा; निन् पुन् पौऱि नावे-तुम्हारी नीच इन्द्रिय जीभ को; चेतियातु-काटे बिना; इतु पौऱुत्तन्नेन्-इसको सह लिया; पुऱुम् चिलर् अऱियिन्-बाहर के कुछ लोग जान जायें तो; नीति अल्लवुम्-जो नैतिक नहीं; नेऱि मुऱै अल्लवुम्-उचित धर्मसम्मत नहीं; नितैन्ताय् आति-वह करने की अपराधिनी मानी जाओगी; आतलिन्-इसलिए; अटङ्कुति-बस करो; अँन्ऱाळ्-कहा । १६४

बुद्धिहीन ! चलो, हटो मेरे सामने से। तुम्हारी नीच वागिन्द्रिय काटनी थी, पर मैं वह किये बिना सब्र कर चुकी हूँ। बाहर वाले किसी के कानों में बात पड़े गई तो तुम अनैतिक और अधार्मिक बुरा काम सोचने का अपराध करनेवाली बन जाओगी। इसलिए बस करो। —यह कहा । १६४

❖ अञ्जि	मन्ऱदै	यहन्ऱिल	ळम्मोळि	केट्टुम्
नञ्जु	तीर्क्किन्नु	दीर्हिला	वदुनलिन्	दैन्ऱत्
तञ्ज	मेयुनक्	कुरुपौरु	ळुणऱुत्तुहै	तविरेन्
वञ्जि	पोलियेन्	ऱडिमिशै	वोळ्ऱुदुरै	वळङ्गुम् 165

नञ्चु-विष; तीर्क्कितुम्-(जादू की क्रिया आदि से) निवारण करने का प्रयास करने पर भी; तीर्क्किलातु-प्रभावहीन न होकर; अतु-वह; नलिन्ऱुत्तु अँन्त-पीड़ा देता रहा हो, ऐसा; मन्ऱदै-मंथरा; अ मोंळि केट्टुम्-वह (डाँट) वचन सुनकर भी; अञ्चि अकन्ऱिलळ्-डरकर नहीं हटी; वञ्चि पोलि-है लता-समाना; तञ्चमे-मेरी शरण्या; उनक्कु उऱु पौरुळ्-आपके हित की बात; उणऱुत्तुक् तविरेन्-समझाना नहीं छोड़गी; अँन्ऱु-कहकर; अटि मिच्चे विळुन्ऱु-पैरों पर गिरकर; उरै वळङ्कुम्-अपनी (हाँक चलाने लगी) बात कहने लगी । १६५

मंथरा इससे न डरी, न हटी। वह उस विष के समान थी जो जादूक्रिया आदि चिकित्सा करने पर भी अपना प्रभाव नहीं छोड़ता और कष्ट देता रहता है। वह कहने लगी—लतासमाना ! मेरी शरण्या ! मैं कैसे हटूंगी ? आपका जो हित है वह समझाने से मैं नहीं

रुकींगी । वह उनके पैरों पर गिरकर नमस्कार कर उठी और बोली । १६५

मूत	वड्कुरित्	तरशन्तु	मुड्मैयि	तुलहम्
कात्त	मन्तति	निळैयत्तन्	डोकडल्	वण्णन्
एत्तु	नीण्मुडि	पुनैवदड्	किशैन्दन्	नैन्डाल्
मीत्तरुम्	जैल्वम्	बरदत्तै	विलक्कुमा	ईवन्तो 166

मूतवड्कु उरित्तु अरचु—सबसे बड़े के अधिकार का है राज; अन्तु मुड्मैयिन्—इस रीति से; उलकम् कात्त मन्ततिन्—भूपालक हमारे राजा से; कटल् वण्णन् इळैयन् अन्डो—समुद्रवर्ण श्रीराम छोटा है नहीं; एत्तुम् नीळ् मुटि—प्रथित दीर्घ किरीट; पुनैवदड्कु—धारण करने को; इचैन्तत्तन्—सहमत हुए; अन्डाल्—तो; मीतरुम् जैल्वम्—गौरवपूर्ण राज्यश्री को प्राप्त करने से; परतत्तै विलक्कुम्—भरत को रोकने का; आडु अँवन्तो—प्रकार (या धर्म) क्या है । १६६

आप कहती हैं कि आपके कुल में उन्न में सबसे बड़े का ही राज्य पर अधिकार होगा । उस रीति से देखा जाय तो अब राज्य का शासन जो कर रहे हैं उन दशरथ से समुद्रवर्ण श्रीराम छोटे हैं न ? उनको यह गौरवपूर्ण मुकुट पहनाने को ये राजा सहमत हो गये हैं । फिर भरत कैसे वर्ज्य हुआ ? उसको इस वैभवयुक्त राज्यश्री को प्राप्त करने से रोकनेवाली कैसी रीति है ? । १६६

अडिनि	रम्बिय	वरुळुडे	यरुन्दवर्क्	केनुम्
पैडल	रुन्दिरुप्	पैडपिन्	शिन्दत्तै	पिडिदाम्
मडिनि	नैन्दुमै	वलिल्हिल	रायिन्	मन्तत्ताल्
इडलु	रुम्बडि	यियड्कुव	रिडैयडा	विन्तल् 167

अडम् निरम्पिय—संन्यास धर्म में बड़े हुए; अरुळु उटै—कृपायुक्त; अरु तवर्क्केतुम्—उत्तम तपस्वियों का भी; पैडल् अरु—दुष्प्राप्य; तिरु पैड् पिन्—बड़े धन को प्राप्त करने पर; चिन्तत्तै पिडितु आम्—मन विकृत हो जायगा; मडम् नितैन्तु—आपकी हानी सोचकर; उमै वलिल्हिल—आपको नहीं सताया; आयितुम्—तो भी; मन्तत्ताल् इडल् उरुम्पटि—मन मारकर मर जाय, ऐसा; इटै अडा इन्तल् इयड्कुवर्—निरन्तर (आपको और भरत को, कौसल्या और राम) दुख देगे । १६७

देखिए ! संन्यास धर्म अपनाकर उसमें उन्नति जो कर चुके उन कृपालू तपस्वियों का मन भी दुष्प्राप्य बड़े धन को पाकर बिगड़ जायगा । कौसल्या और राम आपका अहित सोचते तो हैं पर अब तक आपकी कोई हानि नहीं की है । पर आगे वे आपको ऐसे दिक् करेंगे कि आपको मन मारकर प्राण छोड़ने के सिवा दूसरा चारा नहीं रहेगा । १६७

पुरियुन्	दन्मह	तरशैनिड्	पूदल	मैल्लाम्
अरियुन्	जिन्दनैक्	कोशलैक्	कुडैमैया	मैन्डाल्

परियु नित्तकुलप् पुदल्वड्कु नित्तक्कुमिप् पारमैल्
उरिय दैन्तव लुदविय वौरुपौर लल्लाल् 168

अरियुम् चिन्तनै कोचलैक्कु-जलनेवाले मन की कौसल्या का; तत् मकन् अरञ्चु
पुरियुम् अन्नन्-उनका पुत्र राज करेगा तो; पूतलम् अल्लनाम् उट्टेम् आम्-भूतल सब
पर आधिपत्य हो जायगा; अन्नल-तो; इ पार् मैल्-इस भूमि पर; परियुम्
नित्तकुलम् पुतल्वड्कुम्-दयनीय, आपके अच्छे पुत्र को; नित्तक्कुम्-और आपकी;
अवळ उत्तविय और पौरुळ् अल्लाल्-उनके, सहायता में दिये गये पदार्थ के सिवा;
उरियतु अन्न-अपना क्या होगा । १६८

कौसल्या का मन पहले से ही जलता रहता है । उनका पुत्र राजा
बनेगा तो भूतल सब उनके अधिकार में आ जायगा । फिर आपकी और
भरत की स्थिति दयनीय हो जायगी । दया करके जो भी वे देंगी उसको
छोड़कर किस वस्तु पर आपका हक रहेगा ? । १६८

तूण्डु मिन्नलुम् वरुमैयुन् दौडरुदरत् तुयराल्
ईण्डु वन्दुनै यिरन्दवरक् किरुनिदि यवळै
वेण्डि योदियो वैळ्हुदि योविम्म नोयाल्
माण्डु पोदियो मरुत्तियो वैड्डत्तम् वाळ्दि 169

तूण्डुम् इन्नलुम्-(मांगने के लिए) प्रेरित करनेवाली (भूख की) पीड़ा और;
वरुमैयुम्-अभाव; दौडरु तर-अपना पीछा करते; तुयराल्-वेदना के साथ; ईण्डु
वन्दु-यहाँ आकर; उन्नै इरन्तवरक्कु-आपसे याचना करनेवालों को; इरु निति-
बड़े धन को; अवळ वेण्डि ईतियो-उनसे माँग लाकर दिलायेंगी; वैळ्कुतियो-
शरमायेंगी; मरुत्तियो-या इनकार करेंगी; विम्मल् नोयाल्-अपमान के दुख के
रोग से; माण्डु पोतियो-मर जायेंगी; वैड्डत्तम् वाळ्ति-किस तरह जीवित
रहेंगी । १६९

और भी सोचिये । आपके पास याचक भूख और अभाव के कारण
कुछ माँगने आयेंगे । आप उनको अधिक धन देना चाहेंगी । तब आप
क्या कौसल्या से माँग लाकर इन्हें देंगी ? या अपनी स्थिति पर शर्म
खाकर चुप रह जायेंगी ? या साफ़ इनकार कर सकेंगी ? या अपमान
के दुख से प्राणत्याग कर लेंगी ? कहिए आप किस प्रकार जीवित
रहेंगी ? । १६९

शिन्दै यैन्शैयत् तिहैत्तनै यिनिच्चिल नाळिल्
तन्द मिन्मयु मैळिमयु निरुक्कोण्डु तविरक्क
उन्दै यन्तैयुन् किळैअरम् इन्गुलत् तुळ्ळोर्
वन्दु काण्वदुन् माड्डवळ् शैल्वसो मदियाय् 170

अन्न चैय-क्या करने; चिन्तै तिकैत्तनै-चित्तभ्रमित हे; इति-चिल नाळिल्-
आगे कुछ दिनों में; उन्नै-आपके पिता; अन्नै-माता; उन्न किळैअर-आपके

बन्धुबान्धव; मरु उन् कुलतु उल्लोर्-अन्य आपके कुल के लोग; तम् तम् इन्मैयुम्-अपना-अपना अभाव; अल्लिमैयुम्-दीनता को; निन् कौण्टु-आपके द्वारा; तविरक्क-दूर करने के विचार से; वन्तु-इधर आने पर; काण्पतु-जो देखेंगे वह; उन् मारुवळ् चैत्वमो-आपकी सौत का वैभव क्या; मतियाय्-सोचिए । १७०

क्या करने के विचार से आप भ्रमित खड़ी रहती हैं ? आगे कुछ ही दिनों में आपके पिता, आपकी माता, आपके बन्धु-वान्धव और आपके कुल के अन्य लोग अपने अभाव और अपनी दीनता को आपकी सहायता से दूर करने के विचार से आपको देखने आयेंगे । तब वे आपकी सौत का वैभव देखें—क्या यही स्थिति हो ? । १७०

काद	लुन्बेरुड्	गणवत्तै	यज्जियक्	कतिवाय्च्
चीदै	तन्दयुन्	डादयैत्	तैरुहिल	निरामन्
मादु	लन्तव	नुन्दयक्कु	वाळ्वित्ति	युण्डो
पेदै	युन्रुणै	यारुळर्	पळिबडप्	पिरन्दार् 171

अ कतिवाय् चीतै तन्तै-उस (विम्ब-)फल-सम मुख (होंठ) वाली सीता के पिता; उन् पैरुम् कातल् कणवत्तै अज्जि-आपके बहुत प्यारे पति से डरकर; उन् तातैयै तैरु किलन्-आपके पिता को मिटा नहीं पाये; अवन् इरामन् मातुलन्-वे श्रीराम के मातुल (ससुर) हैं; उन्तैक्कु-आपके पिता को; इति वाळ्वु उण्डो-आगे जीवन (सकुशल) रहेगा क्या; पेदै-नादान; पळि पट-निंदा सह लेने के लिए; पिरन्तार्-उत्पन्न; उन् तुणै यार् उळर्-आपके समान कौन हैं । १७१

विम्बफल-सी होंठ वाली उस सीता के पिता जनक ने आपके प्रिय पति से डरकर आपके पिता को नहीं मारा है । वे श्रीराम के ससुर हैं । (तमिळ् में मामा कहते हैं ससुर को भी ।) इस स्थिति में आपके पिता का (सुखमय) जीवन कहाँ ? अबोध ! आपके समान ऐसा कौन इस संसार में जन्मा है जिससे उसका और उसके अपनों का निन्दनीय जीवन हो गया ? । १७१

मरु	नुन्दैक्कु	वान्बहै	पैरिडुळ	मारुडार्
शैरु	पोदिवर्	शैन्नुद	वारैन्निर्	चैरुविर्
कौरु	मैन्बदौन्	रैव्वळि	युण्डदु	कूराय्
शुरु	मुडुण्डक्	कडुन्दुयर्क्	कडल्वीळत्त	तुणिन्दाय् 172

नुन्तैक्कु-आपके पिता को; मरुम् वान् पकै पैरितु-और भी बड़े शत्रु; उळ-हैं; मारुडार्-वे शत्रु; चैरुपोतु-जब लड़ने आएँगे तब; चैरुविल्-उस युद्ध में; इवर् चैन्नु उतवार् अत्तिल्-ये जाकर सहायता नहीं करेंगे तो; कौरुम् अत्तपतु औन्नु-विजय नामक कोई चीज; अव्वळि उण्डु-किस प्रकार मिलेगी; अतु कूराय्-वह कहिए; चुरमुम् कट-अपने परिवार को नाश होने देते हुए; कटु तुयर् कटल्-भयकर दुखसागर में; विळ तुणिन्ताय्-गिरने का निश्चय कर चुकी हैं । १७२

आपके पिता के, पहले ही से अनेक प्रबल शत्रु हैं। समझिए, कि वे शत्रु उन पर युद्ध करने आते हैं। उस युद्ध में ये (श्रीराम) जाकर आपके पिता की सहायता नहीं करेंगे तो उन्हें विजय का गौरव मिलेगा कैसा ? आप ही कहिए। अपने वन्धुजनों को मटियामेट करते हुए आपने दुःसागर में डूबने का निश्चय कर लिया न ! । १७२

कँडुत्तौ	ळिन्दत्तै	युत्तक्करुम्	वुदल्वत्तैक्	किळर्नीर्
उडुत्त	पारह	मुडैयव	त्तोरुमहर्	कैन्वे
कौडुत्त	पेरर	शवन्गुलक्	कोमयन्दर्	तमक्कुम्
अडुत्त	तम्बिक्कु	माम्पिडर्क्	काहुमो	वैन्डाळ् 173

उत्तक्कु अरु पुतल्वत्तै—अपने प्यारे पुत्र को; कँडुत्तौळिन्दत्तै—आपने बिल्कुल मिटा दिया है; किळर् नीर् उडुत्त—विपुल जल (सागर-)वसना; पारक्कु उडैयवन्—भूमि के पति (हमारे राजा); और मक्कु अँतवे कौडुत्त—एक पुत्र को जो देते हैं; पेर अरच्चु—वह बड़ा राज्य; अवन् कुलम् को मैन्तर् तमक्कुम्—उसके वंश के राजकुमारों का; अडुत्त तम्पिक्कुम्—और उसके साथ के भाई का; आम्—होगा; पिडर्क्कु आकुमो—दूसरों का होगा क्या; वैन्डाळ्—कहा । १७३

आपने अपने पुत्र की स्थिति विंगाड़ दी। समुद्रवसना भूमि को उसके राजा, हमारे दशरथजी ने अपने ज्येष्ठ और श्रेष्ठ पुत्र को दिया तो वह विशाल राज्य उसका होगा, उसके कुल में उत्पन्न राजकुमारों का होगा और उसके साथी छोटे भाई का होगा। दूसरे का होगा क्या ? —यह पूछा । १७३

ॐ तीय	मन्दरै	यिव्वुरै	शैप्पलुन्	देवि
तूय	शिन्दयुन्	दिरिन्ददु	शूळ्चचियि	निमैयोर्
मायै	युम्भवर्	पैर्इन्ल	वरमुण्मै	यालुम्
आय	वन्दण	रियर्इयि	वरुन्दवत्	तालुम् 174

तीय मन्तरै—क्रूर मंथरा के; इ उरै शैप्पलुम्—यह वचन कहने पर; इमैयोर् मायैयुम्—देवों की माया से (और); अवर् पैर्इन्—उनके (श्रीविष्णु से) प्राप्त; नल् वरम् उण्मैयालुम्—श्रेष्ठ वर भी था, इसलिए; आय—विश्वासी (आस्तिक); अन्तणर् इयर्इयि—ब्राह्मणों का किया हुआ; अरु तवत्तालुम्—कठिन तप, उससे; तेवि तूय चिन्तैयुम्—देवी कैकेयी का पवित्र मन; शूळ्चचियिन्—(मंथरा के) षडयन्त्र के वचन से; तिरिन्ततु—विकृत हुआ । १७४

दुर्गुण क्रूरी मंथरा ने इतना कहा तो देवी कैकेयी का पवित्र मन विकृत हो गया। देवों की माया, उनका श्रीविष्णु से प्राप्त वर, तपस्वी ब्राह्मणों का तप और मन्थरा का षडयन्त्रभरा वाद —इन सबके कारण वे पलटा खा गई । १७४

अरक्कर्	पावमु	मल्लव	रियर्रिय	वरमुम्
तुरक्क	नल्लरु	डुरन्दन	डूमोळि	मडमान्
इरक्क	मिन्मयन्	डोविन्डिव्	वुलहङ्ग	ळिरामन्
परक्कुन्	दौल्पुह	ळमुदितैप्	परुहनिन्	रुदुवे 175

अरक्कर् पावमुम्-राक्षसों का पाप और; अल्लवर-अन्यों का; इयर्रिय-किया; अरमुम्-धर्म-फल; तुरक्क-(दोनों की) प्रेरणा से; तू मोळि-पवित्र वाणी; मडम् मान्-बाल मृगी (सी कैकेयी); नल् अरुळ् तुडुन्तनळ्-अपनी कृपा से बिछुड़ गई; इरक्कम् इन्मै अन्डो-उनकी करुणाहीनता से तो; इ उलकड्कळ्-ये सब लोक; इमामन्-श्रीराम की; परक्कुम्-सर्वव्यापी; तौल् पुक्कळ् अमुतितै-प्राचीन कीर्ति रूपी अमृत को; इन्डु परुक्क निन्डु-आज पान करते हुए स्थित है। १७५

राक्षसों का पाप, अन्यों का धर्म-प्रभाव इन दोनों की प्रेरणा भी थी कि पवित्रवाणी वालमृगी-सी कैकेयी ने अपनी कृपा को त्याग दिया। लेकिन, जो आज सारे लोक श्रीराम के विशाल और प्राचीन यश के अमृत को भोग रहे हैं तो वह क्या उनकी करुणाहीनता के ही कारण नहीं?। १७५

अतैय	तन्मय	ळाहिय	केहय	नन्म
विनैति	रम्बिय	कूनियै	विरुम्बित	णोक्कि
अतैयु	वन्दनै	यिनिययैन्	महनुक्कु	मनैयान्
पुनैयु	नीण्मुडि	पैरुम्बडि	पुहलुदि	यैन्डाळ् 176

अतैय तन्मैयळ् आकिय-ऐसी (विकृतमन और करुणात्यक्त) जो बन गई उन; केकयन् अन्तम्-केकयराज की हंसिनी-सी पुत्री ने; विनै निरम्पिय-कृत-कृत्य हुई; कूनियै-कुब्जा को; विरुम्पितळ् नोक्कि-स्नेह के साथ देखकर; अतै उवन्ततै-मुझे चाहती हो; अन् मकनुक्कुम् इतियै-मेरे पुत्र की भी हितैषिणी हो; अतैयान्-वह (भरत); पुनैयुम् नीळ् मुटि-धार्य श्रेष्ठ मुकुट को; पैरुम् पटि-प्राप्त करने का उपाय; पुक्कुति-कहो; अन्डाळ्-पूछा। १७६

ऐसी, मन-बदली कैकेयी ने अब मन्थरा को बहुत स्नेहार्द्र दृष्टि से देखा। मन्थरा सफल-मनोरथ हो गई। केकयराज की पुत्री हंसिनी के समान दृश्यमान कैकेयी ने मन्थरा से कहा कि मन्थरा तुम कितनी अच्छी हो! मेरी हितैषिणी और मेरे पुत्र का हित चाहनेवाली हो! अब बताओ कि किस उपाय से मेरा पुत्र भरत, उसको जो मिलना चाहिए वह श्रेष्ठ राजमुकुट पा सकता है?। १७६

माळै	यौण्गणि	युरैशैयक्	केट्टमन्	दरैयैन्
तोळि	वल्लळैन्	रुणैवल्ल	ळैन्डि	तौळुदाळ्
ताळु	मैन्तिनि	यैन्तुरै	तलैनिड्पि	तुलहम्
एळु	मेळुमु	तीरुमहर्	काक्कुवै	तैन्डाळ् 177

माळें औण कण्णि-टिकोरे की फाँक के समान आँखों वाली ने; उरें चेंय-यह वचन कहा, उसकी; केट्ट-जिसने सुना वह; मन्तरें-उस मंथरा ने; अँन् तोळि वल्लळ्-मेरी (प्यारी) सखी समर्थ है; अँन् तुण वल्लळ्-मेरी संगिनी समर्थ है; अँन्हु- (प्रशंसा) कहकर; अटि तोळुताळ्-चरणों पर प्रणमन किया; अँन् उरें तलें निड्पिन्-मेरे कहे अनुसार करेंगी तो; इत्ति अँन् ताळुम्-अब क्या देरी होगी; उलकम् एळुम् एळुम्-लोक सात और सात (चौदहों); उन् और मकड्डु-आपके श्रेष्ठ पुत्र के; आक्कुवेन्- (अधोन) बना लूंगी; अँन्नाळ्-कहा । १७७

(आम के) टिकोरे की फाँक-सम आँख वाली कैकेयी ने यह कहा तो मन्थरा का मन कृतार्थता की दृष्टि से भर गया । उसने वात्सल्य के साथ कैकेयी की, "मेरी सखी है न, बड़ी चतुर है !, मेरी साथिन है न, बड़ी समर्थ है", यह कहकर प्रशंसा की । फिर उसने उनके चरणों पर गिरकर नमस्कार करके कहा कि आप मेरे कहे अनुसार निश्चित रूप से चलेंगी तो अब देरी क्या ? ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों भुवन अब आपके अपने एकाकी पुत्र भरत के हो जायेंगे । १७७

ॐ नाडि	यौन्नुनन्	गुरंशैय्वे	नळिर्मणि	नहैयाय्
तोडि	वर्न्दतार्च्	चम्वरन्	रौलैवुड्ड	वेलै
आडल्	वैन्डिया	नरळिय	वरमवै	यिरण्डुम्
कोडि	यैन्डत	ळुळ्ळमुड्	गोडिय	कौडियाळ् 178

उळ्ळमुम् कोटिय-मन भी (जिसका) कुटिल (था) उस; कौटियाळ्-क्रूर मंथरा ने; नळिर् मणि नकैयाय्-शीतल (मनोरम) मोती समान दांत वाली; नन्कु नाटि-खूब सोचकर; औन्हु उरें चेंयवैन्-एक बात कहूंगी; तोट्ट इवर्न्दत तार्-पुष्पलसी मालाधारी; चम्परन्-शम्बरासुर; तौलैवुड्ड वेलै-जब मिटा तब; आटल् वैन्डियान्-युद्धविजयी आपके पति के; अरळिय-दत्त; वरम् अवै इरण्डुम्-वर है दो, उनको; कोटि (अब) माँग लो; अँन्रतळ्-कहा । १७८

मन्थरा का शरीर कुटिल था, उसका मन भी कुटिल था । उस क्रूर स्वभाव वाली ने आगे कहा—शीतल मुक्ता-सम दांत वाली ! मैं खूब सोच-विचारकर एक बात कहूंगी । आप सुन लीजिए । जब घने पुष्पों की मालाधारी शंबरासुर का वध हुआ तब उस युद्ध में विजयप्राप्त आपके नायक ने आपको दो वर दिये थे । उन दोनों वरों को आज माँग लीजिए । १७८

ॐ इरुव	रत्तिनु	ळौन्डित्ता	लरशुकोण्	डिरामन्
पैरुव	तत्तिडै	यैळिरु	परुवड्गळ्	पैयर्न्दु
तिरिदरच्	चेंय्व	दौन्डित्ताड्	चैळुनिल	मैल्लाम्
औरुव	ळिप्पडु	मुन्महड्	कुवाय	मीदैन्नाळ् 179

इरु वरत्तिनुळ्-दो वरों में; औन्डित्ताल्-एक से; अरवु कौण्डु-भरत के लिए राज्य लेकर; औन्डित्ताल्-दूसरे (एक) से; इरामन्-श्रीराम को; पैयर्न्दु-

(राज्य से) निकलकर; एल्ल इरु परुवड्कळ-सात के दो (चौदह) साल; पेरुवत्तुत्तिट्ट-विशाल वन में; तिरि तर चैय्वतु-भटकने देना; चैल्लु तिलम् अल्लाम्-समृद्ध देश सब; उन् मकड्कु-आपके पुत्र का; और वल्लि पट्टम्-एक साथ मिले, इसका; उपायम् ईतु-उपाय यही; अन्नाळ-कहा । १७६

दो वरों में एक के द्वारा भरत को राज्य माँग लीजिए । दूसरे वर से श्रीराम को राज्य छोड़कर घने वन में भटकने के लिए भिजवा देने की व्यवस्था कर लीजिए । यह सारी समृद्ध भूमि आपके पुत्र की सम्पत्ति हो, उसका यही उपाय है । —मन्थरा ने कहा । १७९

ॐ उरैत्त	कूत्तियै	युवन्दन	ळुयिरुत्त	तळुवि
निरैत्त	सामणि	यारमु	निदियमु	नीट्टि
इरैत्त	वेलय्शू	ळुलहर्मेन्	नीरुमहर्	कीन्दाय्
तरैक्कु	नायहन्	रायिन्ति	नीयैत्त	तणिया 180

उरैत्त कूत्तियै-(उपाय जिसने) बताया उस कुब्जा को; उवन्तत्तळ-प्रसन्न होकर; उयिर् उर तळुवि-प्राणों से मिलाकर गले लगाती हुई; मा मणि निरैत्त-बहुमूल्य रत्नजडित; आरमुम्-हार; नितियमुम्-और धन; नीट्टि-उपहार में देकर; इरैत्त वेल चूळ उलकम्-गर्जनशील समुद्रवलित भूमि को; अन् और मकड्कु ईन्ताय्-मेरे एकाकी पुत्र को दिया; इत्ति-आगे; नी-तुम; तरैक्कु नायकन् ताय्-भूपाल की माता; अन्-कहकर; तणिया-सन्तुष्ट हुई । १८०

मन्थरा ने यह उपाय बताया तो कैकेयी बहुत मुदित हो गई । उन्होंने मन्थरा को खूब कसकर हृदय से (मानो प्राणों से) लगा लिया । फिर उसे रत्नहार, धन आदि उपहार दिये । फिर उससे कहा कि गर्जनशील समुद्र से घिरी हुई इस भूमि को तुम्हीं ने मेरे भरत को दिया । इसलिए तुम्ही राजमाता हो । वह अत्यन्त तृप्त हुई । १८०

ॐ नन्ऱु	शौल्लित्तै	नम्बियै	नळिमुडि	शूट्टल्
तुन्ऱु	कानहत्	तिरामन्तै	तुरत्तलिव्	विरण्डुम्
अन्ऱु	दामेन्ति	लरशन्मु	नारुयिर्	तुरन्ऱु
पोन्ऱि	नीङ्गुदल्	पुरिवैन्ऱ्यान्	पोदिनी	यैन्ऱाळ 181

नन्ऱु शौल्लित्तै-अच्छा कहा; नम्पियै-कुमार भरत का; नळि मुडि शूट्टल्-श्रेष्ठ मुकुट पहनाना; इरामन्तै-राम को; तुन्ऱु कान्तकत्तु-घने वन में; तुरत्तल-भिजवा देना; इ इरण्डुम्-ये दोनों कार्य; अन्ऱु आम् अत्तिल्-नहीं होंगे तो; यान्-मैं; अरवन् मुन्-राजा के सामने ही; आर् उयिर् तुरन्ऱु-अपने मूल्यवान प्राण त्यागकर; पोन्ऱि नीङ्गुदल्-मर जाने का काम; पुरिवैन्-कर लूंगी; नी पोत्ति-तुम जाओ; अन्नाळ-कहा । १८१

उन्होंने आगे यह भी कहा । तुमने बड़ा अच्छा उपाय बताया । भरत का मुकुटधारण, राम का वनगमन —ये दोनों हो नहीं सकेगे तो मैं राजा के सामने ही अपना प्राणत्याग कर लूंगी । तुम जाओ । १८१

❖ कृत्ति	पोत्तपिन्	कुलमलर्क्	कुप्पय्निन्	रिळिन्दाळ्
शोत्तै	वारुहळर्	कड्डयिर्	चोर्हिय	मालै
वात्त	मामळै	नुळैदरु	मदिपिदिर्प्	पाळ्पोल्
तेन्	वावुरुम्	वण्डिन्	मलमरच्	चिदैत्ताळ् 182

कृत्ति पोत्त पिन्—कुब्जा के जाने के बाद; कुलम् मलर् कुप्पै निन्नु—श्रेष्ठ पुष्पों से सज्जित पलंग पर से; इळिन्ताळ्—उतरकर; चोर्त—काले मेघ के समान; वार् कुळल् कड्डयिल्—लम्बी केशराशि में खोंसे हुए; मालै—हार को; वात्तम्—आकाश में; मा मळै नुळै तरु—बड़े मेघ-मध्य प्रविष्ट; मति—चाँद को; पित्तिर्प्पाळ् पोल्—छीनकर पटकती-सी; तेन् अवा उडुम्—शहद चाहनेवाले; वण्डु इत्तम्—भ्रमरकुल; अलमर—घबड़ा जायें ऐसा; चिदैत्ताळ्—छिन्न-भिन्न कर दिया । १८२

(मन्थरा निश्चिन्त होकर चली गई ।) उसके जाने के बाद कैंकैयी पुष्पसज्जित पलंग से उतरी । अपने लम्बे केश में खोंसी हुई पुष्पमाला को मानो आकाश के मेघमध्य से चन्द्र को छीन लेती हो ऐसा झट से छीना तो उस पर शहद की इच्छा से बैठे हुए भ्रमर घबड़ाकर उड़ने लगे । उन्होंने उस माला को छिन्न-भिन्न कर दिया । १८२

❖ विळैयुन्	दन्बुहळ्	वल्लियै	वेरुत्तु	तैन्तक्
किळय्हाँण्	मेहलै	शिन्दितळ्	किण्किणि	योडुम्
वळैडु	उन्दत्तण्	मदियिन्निन्	मडुत्तुडैप्	पाळ्पोल्
अळह	वाणुद	लरुम्बैर्	रिलहमु	मळित्ताळ् 183

विळैयुम्—वर्धनशील; तन् पुक्कळ् वल्लियै—अपनी कीर्ति-लता को; वेर् अडुत्तु अँनून—जड़ से काट देती-सी; किळै कौळ्—लड़ियाँ रूपी शाखाओं से युक्त; मेकलै—मेखला को; चिन्तिन्ताळ्—तोड़कर फेंक दिया; किण्किणि योडुम्—पेजिनियों के साथ; वळै—हाथ के कंकणों को भी; तुडुन्तनळ्—हटा दिया; मत्तिथितिल् मडु—चन्द्रमध्य कलंक को; तुटैप्पाळ् पोल्—पोंछती-सी; अळकम्—सामने के बाल (अलक) जिस पर पड़े रहते हैं, उस; वाळ् नुतल्—उज्ज्वल ललाट पर के; पैरल् अरुम्—दुष्प्राप्य (मंगल-चिह्न); तिलकमुम्—तिलक भी; अळित्ताळ्—मिट्टा दिया । १८३

उन्होंने लड़ियों सहित अपनी मेखला को भी तोड़ दिया मानो अपनी ही बढ़ती कीर्तिलता को जड़ से काट रही हो ! फिर पैर के नूपुर, हाथ के कंकण —उनको भी उतार फेंका । फिर अलकमण्डित भाल पर से मंगल-सूचक चिह्न को इस प्रकार पोंछा मानो चन्द्र से उसका कलंक हटा रही हो ! वह तिलक भी कितना मूल्यवान था ! उसको पोंछ दिया । १८३

❖ ताविन्	मामणिक्	कलन्मडुन्	दन्तितनि	शिदरि
नावि	योदियै	नानिलन्	दैवरप्	परप्पिक्
कावि	युण्डकण्	णञ्जनड्	गान्द्रिडक्	कलुळाप्
पूवु	दिर्त्तदोर्	कौम्बैन्	पुविमिशैप्	पुरण्डाळ् 184

ता इत्-निर्दोष; मा मणि कलन्कळ्-श्रेष्ठ रत्नाभरणों को; मर्द्दम्-और अन्य अलंकारों को; तत्ति तत्ति चित्ति-अलग-अलग फेंककर; नावि ओत्तिथे-कस्तूरी-लगे केश को; नात् निलम् तैवर परप्पि-भूमि पर लगाते बिछाकर; कावि उण्ट कण्-नीले पुष्प के समान आँखों के; अञ्चत्तम् कान्तिरिट-अंजन को गलकर रसने देते हुए; कलुळा-आँसू बहाते हुए; पू उत्तिर्त्ततु और् कौम्पु-पुष्पत्यक्त एक लता; अत्त-के समान; पुवि मिच्चै पुरण्ठाळ्-भू पर लोटीं । १८४

अनेक निर्दोष रत्नाभरणों और अन्य अलंकारों को उन्होंने उठाकर अलग-अलग फेंक दिया । नीचे लेट गई और कस्तूरी लगे अपने केशजाल को खोलकर भूमि पर फैला दिया । आँखों से अंजन को अश्रु से गलाकर बहाते हुए वे एक पुष्पों से विमुक्त हुई लता के समान भूमि पर लोटीं । १८४

नव्वि	वीळ्न्तैत्त	नाडह	मयिरुयिन्	रैन्तक्
कव्वै	कूर्तरच्	चत्तहियाड्	गडिहमळ्	कमलत्
तव्वै	नीङ्गुमेन्	इयोत्तिवन्	दडैन्दवम्	मडन्दै
तव्वै	यामैत्तक्	किडन्दतळ्	केहयन्	इत्तयै 185

केकयन् ततयै-केकयतनया; नव्वि वीळ्न्ततु अत्त-मृगी गिर गई, जैसे; नाटकम् मयिल्-नाचनेवाला मोर; तुयिन्त्तु अत्त-सो गया-हो जैसे; कव्वै कूर्तर-दुख के तेज बनते; चत्तकि आम्-जानकी रूपी; कटि कमळ् कमलत्तु-सुवासित कमल की; अव्वै-देवी (श्री); नीङ्कुम् अत्त-छोड़ जाएगी, यह जानकर; अयोत्ति वन्त्तु अटैन्त-अयोध्या में जो आ पहुँची; अ मटन्तै तव्वै आम्-उन देवी की ज्येष्ठा है; अत्त-ऐसा; किटन्ततळ्-पड़ी रहीं । १८५

उनको देखने पर ऐसा लगा मानो हरिण चौकड़ी भरना छोड़कर म्लान पड़ा हो; या नाचनेवाला मयूर थक कर सो रहा हो । वे ज्येष्ठा (लक्ष्मी की बड़ी बहन जो दरिद्रता, अभाव और संकट की देवी मानी जाती हैं) के समान लगीं जो यह जानकर उधर आई हों कि सुवास-पूर्ण कमलपुष्प पर रहनेवाली जानकी नाम की देवी कमला, बढ़ते दुख के साथ, अयोध्या छोड़ जायेगी और हमारा अब यहाँ स्थान हो गया है । वे निश्चेष्ट पड़ी रहीं । १८५

3. कैकेयी शूळ् वित्तैप् पडलम् (कैकेयी दुष्कर्म पटल)

ॐ नाळिहै	कड्गुलि	नळ्ळ	डैन्द	वेलै
याळिशै	यञ्जिय	वञ्जौ	लेळै	कोयिल्
वाळिय	वैन्डयन्	मन्न्	तुन्त	वन्दान्
आळि	नैडुङ्गै	मडङ्ग	लाळि	यन्तान् 186

आळि नैटुकै-आज्ञा का चक्र धारण करनेवाले तम्बे हाथ का; आळि मटङ्गल् अन्तान्-पुरुष केसरी सव्दश दशरथ; कड्कुलिन् नाळिकै-रात का समय; नळ् अटैन्त

वेलै-जब मध्य में आया तब; वाळिय अँन्-जयजीव, ऐसा विरुद कहते हुए; मन्तर् अयल् तुन्त-राजा लोगों के पार्श्व में आते; याळ् इच्चै-वीणा का संगीत; अञ्चिय अम् चोल्-जिससे डरता है, उस मधुर वचन की; एळै कोयिल्-स्वामिनी देवी के महल में; वन्तान्-आये । १८६

रात अपनी मध्यवेला पर आ गई । तब आज्ञाचक्रधर, दीर्घबाहु दशरथ कैकेयी के महल की तरफ चले आये । उनके साथ राजा लोग 'जयजीव' का विरुद कहते आये । कैकेयी मधुरभाषिणी थीं और उनकी वाणी की मधुरता के सामने वीणा का स्वर भी डरता था । तो भी वे अबोध थीं । (उनकी मधुर बोली का याद दिलाना इसलिए कि अब उनकी वाणी कठोर रहनेवाली है और अबोध इसलिए कि वह अपनी बुद्धि से कार्य करनेवाली नहीं थीं ।) । १८६

ॐ वायिलिन्	मन्तर्	वणङ्गि	निर्प्	वन्दाङ्
गेयिन	शैय्यु	मणङ्गितर्	शूळ	वेहिप्
पाय	रुन्न्द	पडैत्त	डङ्गण्	मैन्डोळ्
आयिल्	तन्तै	यडैन्दन	ताळि	मन्तन् 187

आळि मन्तन्-चक्रवर्ती; मन्तर्-राजाओं को; वणङ्कि-हाथ जोड़कर; वायिलिन् निर्प्-द्वार पर खड़े होने देकर; आङ्कु-वहाँ; एयित चैय्युम्-आज्ञाएँ बजा लानेवाली; अणङ्कितर्-दासियाँ; वन्तु चूळ-जब आकर घर गई, तब; एकि-जाकर; पायल् तुन्त-शय्या त्यागकर; पटै तट कण्-अस्त्र-सम विशाल आँखें और; मैन् तोळ्-कोमल कंधे वाली; आय् इळै तन्तै-चुने हुए (श्रेष्ठ) आभरणधारिणी के पास; अटैन्ततन्-पहुँचे । १८७

राजा लोग कैकेयी के महल के द्वार पर ही हाथ जोड़े रुक गये । चक्रवर्ती आगे जाने लगे तो वहाँ आज्ञाकारिणी दासियाँ साथ लग गई । वे उन कोमलांगी बछीं-सम नेत्र वाली कैकेयी के पास पहुँचे जो पलंग त्यागकर नीचे भूमि पर लेटी थीं । १८७

ॐ अडैन्दन	नोक्कि	यरन्दै	यैन्कोल्	वन्दु
तोडैन्दन	दैन्ततुयर्	कोण्डु	शोरु	नैज्जन्
मडन्दयै	मानै	यैडुक्कु	मानै	येपोल्
तडङ्गैहळ्	कोण्डु	तळोडि	यैडुक्क	लुड्डान् 188

अटैन्ततन्-पास जाकर; नोक्कि-उनकी स्थिति देखकर; वन्तु तोडैन्ततु-इसे आ लगा; अरन्तै अँन् कोल्-दुख क्या है; अँन्-सोचकर; तुयर् कोण्डु-व्याकुल होकर; चोरुम् नैज्जन्-खिन्नमन हो; मडन्तैयै-रमणी को; मानै अँटुक्कुम्-आतँये पोल्-हरिण को उठानेवाले गज के समान; तट कैकळ् कोण्डु तळोडि-विशाल, लम्बे हाथों से बाँधकर; अँटुक्कल् उड्डान्-उठाने लगे । १८८

चक्रवर्ती ने उनकी हालत देखी तो वे बड़े व्याकुल हुए और सोचने लगे

कि इन्हें क्या हो गया है ? खिन्नमन होकर उन्होंने उन्हें अपने दोनों पुत्र हाथों से बांधकर ऐसा उठाने का प्रयास किया जैसे एक हाथी एक हत्थिनी को उठा रहा हो । १८८

ॐ निन्ऱु	तौडरन्द्	नैडुङ्ग	तम्मे	नीक्कि
मिन्ऱुवळ्	हिन्ऱुदु	पोल्	मण्णिल्	वीळ्न्दाळ्
औन्ऱु	मियम्बल	णीडु	यिर्क्क	उड्ऱाळ्
मन्ऱु	लरुन्दीडै	मन्ऱु	त्तावि	यन्ऱाळ् 189

मन्ऱुल् अरु तौटै मन्ऱुन्-सुगन्धयुक्त अतिसुन्दर मालाधारी राजा की; आयि अन्ऱाळ्-प्राणसमाना; निन्ऱु-स्थिर रहकर; तौडरन्त-(दशरथ के) बड़े हुए; नैटु क तम्मे-दीर्घ भुजाओं को; नीक्कि-हटाकर; मिन्ऱु तुवळ्किन्ऱुन्ऱु पोल्-मानो विजली लचकती हो ऐसा; मण्णिल् वीळ्न्ऱाळ्-भूमि पर गिरी; औन्ऱुम् इयम्बल-कुछ नहीं बोलीं; नौटु उयिर्क्कल् उड्ऱाळ्-लम्बी साँसें छोड़ने लगीं । १८९

सुवासपूर्ण मालाधारी चक्रवर्ती की वे प्राण-राम प्यारी थीं । वे अब अपनी स्थिति में अटल रहीं । उन्होंने दशरथ के बड़े हुए हाथों को निवारित किया और तड़पती विजली के समान भूमि पर लचकती हुई गिरी । वे कुछ नहीं बोलीं; पर लम्बी-लम्बी साँसें छोड़ने लगीं । १८९.

ॐ अन्ऱुदु	कण्ड	वलङ्गन्	मन्ऱु	नञ्जि
अन्ऱु	निहळ्न्ददिव्	वेळु	जालम्	वाळ्वार्
उन्ऱु	यिहळ्न्दवर्	माळ्व	रुड्ऱ	वैल्लाम्
शौन्ऱुवि	नैन्ऱुयल्	काण्डि	शौल्ऱि	वैन्ऱान् 190

अन्ऱुतु कण्ड-उस (कार्य) को देखकर; अलङ्कल् मन्ऱुन्-मालाशोभित राजा; अञ्जि-टकर; निहळ्न्तु अन्ऱु-घटित हुआ गया; इ एळु जालम्-इन साँसों को; वाळ्वार्-रहनेवालों में; उन्ऱु इहळ्न्तवर्-तुम्हारी निन्दा करनेवाले; माळ्व-मर जायेंगे; रुड्ऱु वैल्लाम्-जो भी हुआ वह सब; शौन्ऱु मिन्ऱु-तुम बहो, उमरो बाव; अन्ऱु चैयल् काण्डि-मेरा कृत्य देखो; शौल्ऱि-वही जल्दी; वैन्ऱान्-बहा । १९०

यह देखकर चक्रवर्ती दशरथ डर गये । माला से शोभित राजा ने उनसे पूछा कि हुआ क्या ? तुम्हारी निन्दा करनेवाले इन साँसों को लोगों के कानियों में कोई भी हों, वे मेरे हाथों मारे जायेंगे । घटित सब जाने बलाओ पहले; पीछे मेरा कृत्य देखो । कहो जल्दी । १९०

ॐ वण्डुळ्	तारवन्	वाय्मे	कैट्ट	मन्ऱु
कोण्ड	नैडुङ्गणि	नालि	कोङ्ग	कोप्प
वण्डुहो	लामरु	वैन्ग	पुण्मे	नादित्
पण्डय	विन्ऱु	परिन्द	चित्ति	वैन्ऱाळ् 191

वण्टु उळर् तारवन्-भ्रमरनुची मालाधारी राजा के; वाय्मे-वचनों को;
केट्ट मडक्-जिन्होंने सुना वे देवी; नैटुम् कण्-दीर्घ आँखों रूपी; कौण्टलिन् आलि-
मेघों के जल (अश्रु) कण; कौडक् कोप्प-स्तनों पर गिराते हुए; अन् कण्-मुझ पर;
अरळ् उण्टु आम कौल्-दया भी है क्या; उण्मे नाट्टिन्-उसका रहना स्थापित
करना चाहते हों तो; पण्टेय-पहले के (वादों को); इन्ऱ-आज ही; परिन्तु
अळित्ति-प्रेम के साथ दे दीजिए; अन्ऱाळ्-कहा । १६१

भ्रमर जिनको तोच रहे थे उन पुष्पों की माला से अलंकृत राजा के
निश्चयपूर्ण वचन सुनकर कैकेयी ने अपने नेत्र रूपी मेघ से आँसू के जल
कणों को अपने स्तनों पर बरसाते हुए कहा कि क्या मुझ पर आपकी दया
भी है ? अगर सचमुच है तो उन दो वरों को, जिनका वादा आपने पहले
किया था, अभी दीजिए और स्नेह के साथ दीजिए । १९१

❖ कळ्विळ्	कोदै	करुत्तुण	राद	मन्तन्
वैळ्ळ	नैडुञ्जुडर्	मिन्निन्	मिन्न	नक्कान्
उळ्ळ	मुवन्ददु	शैय्वै	नीन्ऱु	लोवेन्
वळ्ळ	लिरामनुन्	मैन्द	ताणै	यैन्ऱान् 192

कळ् अविळ् कोतै-शहद बरसानेवाले (पुष्पों से अलंकृत) केश वाली के; करुत्तु
उण्ऱात-मन से अनभिज्ञ; मन्तन्-राजा; वैळ्ळम् नैटु चुटर्-अतिशय प्रकाश वाली;
मिन्निन्-विजली के समान; मिन्न-प्रकाशमय रीति से; नक्कान्-हँसकर;
उळ्ळम् उवन्तु चैय्वैन्-तुम्हारे मन की चाह पूरा करूँगा; औन्ऱम् उलोवेन्-कुछ
भी लोप नहीं करूँगा; उन् मैन्तन्-तुम्हारे पुत्र; वळ्ळल्-वदान्य; इरामन् आणै-
राम की कसम; अन्ऱान्-बोला । १६२

राजा ने कैकेयी का, जिसके केश पर शहद रस रहा था, आन्तरिक
अभिप्राय नहीं जाना । यह सुनकर वे हँस उठे और उनके दाँतों ने अतिशय
प्रकाश वाली विजली से भी अधिक चमक दिखाई । उन्होंने वादा किया
कि तुम जो चाहोगी वह अवश्य करूँगा । कुछ भी लोप नहीं करूँगा ।
हाँ, राम की सौगन्ध ! । १९२

❖ आन्ऱव	तव्वुरै	कूऱ	वैय	मिल्लाळ्
तोन्ऱिय	पेरव	लन्ऱु	डैत्त	लुण्डेल्
शान्ऱिमै	योऱकुल	माह	मन्त	मुन्नी
एन्ऱ	वरङ्ग	ळिरण्डु	मोदि	यैन्ऱाळ् 193

आन्ऱवन्-गुणश्रेष्ठ के; अ उरै कूऱ-वह वचन कहने पर; ऐयम् इल्लाळ्-
संशय-छूटी; मन्त-राजन; तोन्ऱिय-उत्पन्न; पेर अवलम्-मेरा बड़ा दुख;
तुदैत्तल् उण्डेल्-दूर करना हो; मुन्-पहले; इमैयोर् कुलम् चान्ऱु आक-देवगणों
की साक्षी बनाकर; नी एन्ऱ वरङ्कळ् इरण्डम्-आपने जो वादे किये वे दो वर;
ईति-अब दीजिए; अन्ऱाळ्-कहा । १६३

जब राजा ने राम की सौगन्ध खाई तो कैकेयी को विश्वास हो गया कि अब मनोरथ पूरा हुआ। संशय सब जाता रहा। तब उन्होंने कहा— हे राजन् ! अगर आप मेरा कठोर दुख दूर करना चाहेंगे तो आपने पहले किसी दिन, देवता लोगों को साक्षी बनाकर दो वर देने का जो वादा किया था, उन दोनों वरों को अभी दीजिए। १९३

❖ वरङ्गौळ	वित्तुणै	मम्म	रल्ल	लैय्दि
इरङ्गिड	वेण्डुव	दिल्लै	यीव	नैन्बाल्
परङ्गौड	विप्पीळु	देव	हरन्दि	डैन्डान्
उरङ्गौण्	मत्तत्तवळ्	वञ्ज	मोर्हि	लादान् 194

उरम् कौळ् मत्तत्तवळ्—कठोरता से भरे मन की; वञ्चम्—वंचना का; ओर्किलातान्—जो अनुमान नहीं कर सके, उन दशरथ ने; वरम् कौळ्—वर लेने के लिए; इत्तुणै मम्मर् अल्लल् अय्यति—इतनी घबड़ाहट और इतना संकट पाकर; इरङ्किट वेण्डुवतिल्लै—दुखी होने की आवश्यकता नहीं थी; अन् पाल् परम् कौट्—मेरा भार दूर हो जाय ऐसा; इ पीळुते ईवैन्—अभी दे दूंगा; पकर्न्तिटु—बताओ; अन्डान्—कहा। १९४

राजा ने अब भी कठोरता से भरे कैकेयी का सच्चा मनोभाव नहीं जाना। उन्होंने कहा कि मुझसे वर लेने के लिए इतनी घबड़ाहट, इतना संकट क्यों ? इतना दुखी होने की आवश्यकता नहीं थी। अभी कहो। अपना भार हल्का करते हुए तुम्हें अभी दे दूंगा। १९४

❖ एय	वरङ्ग	ळिरण्डि	नौन्त्रि	तारैन्
शैयुल	हाळ्वडु	शीदै	केळ्व	नौन्डाल्
पौयवत्त	माळ्व	दैत्तप्पु	हन्नु	निन्डाल्
तौयवै	यावयि	नुञ्जि	इन्द	तीयाळ् 195

तौयवै यावैयित्तुम्—सभी क्रूर बातों से; चिरुन्त तीयाळ्—बढ़कर अधिक क्रूरता वाली; एय वरङ्कळ् इरण्टिन्—सहमत दो वरों में; औन्डिताल्—एक से; अन् चैय्—मेरा पुत्र; उलकु आळ्वतु—लोकशासन करे; औन्डाल्—(दूसरे) एक से; चीतै केळ्वन्—सीता का पति; पौय्—(राज्य छोड़) जाकर; वत्तम् आळ्वतु—वन का पालन करे; अन् पुक्कन्—यह कहकर; निन्डाल्—अचल रही। १९५

दुनिया में जो भी निष्ठुर और निर्मम चीजें हैं उन सबसे क्रूर निकलीं कैकेयी। उन्होंने कहा कि आपने दो वर देने की सम्मति दी है। उनमें एक से मेरा पुत्र भरत राज्य का शासन करे; दूसरे से सीता का पति राज्य छोड़कर जाए और जंगल का शासन करे। यह कहते हुए वे काँपों नहीं। अचल और अकम्पित रहीं। १९५

❖ नाह	मैनुङ्गौडि	याड	ताविन्	वन्द
शोह	विडन्दीड	रत्तु	णुकक	मैय्दि

आह	मडङ्गलुम्	वैन्द	ळिन्द	राविन्
वेह	मडङ्गिय	वैळ	मैन्त्र	वोळ्न्दान् 196

नाकम् अँतुम्—सर्प-सम; कौटियाळ् तन्-निष्ठुर कँकेयी की; नाविन् वन्त-जीभ से निकले; चोक विटम् तौटर-शोकोत्पादक विप के लगने से; तुण्क्कम् अँय्ति-दहलकर; आकम् अटङ्कलुम्-शरीर भर में; वैन्तु-जलकर; अळिन्तु-निर्वल होकर; अराविन्-विपले सर्प के (उसने के) कारण; वेकम् अटङ्किय-शक्ति खाये हुए; वैळम् अँन्त-हाथी के समान; वोळ्न्तान्-(भूमि पर) गिरे । १९६

कँकेयी सर्प वन गई और उनकी जीभ से शब्द नहीं निकले, पर विष ही निकला । शोकोत्पादक उस विप के लगने से दशरथ दहल उठे । सारा शरीर तप्त हो गया और वे निर्वल हो गये । सर्प-दंशन से शक्ति के क्षीण होने से जैसे हाथी गिर जाता है वैसे राजा भी भूमि पर गिर पड़े । १९६

ॐ पूदल	मुर्ऱुद	तिर्ऱु	रण्ड	मत्तन्
मादुय	रत्तिनै	यावर्	शौल्ल	वल्तार्
वेदनै	मुर्ऱुहम्	वैन्दु	वैन्दु	कौल्लन्
ऊदुलै	यिर्ऱुक्त	लैन्	वैय्दु	यिर्त्तान् 197

पूतलम् उर्ऱु-भूमि पर गिरकर; अतन्निल् पुरण्ट-उस पर लोटनेवाले; मत्तन्-राजा के; मा तुयर्त्तिनै-महान दुख को; शौल्ल वल्तार् यावर्-बता सकनेवाले कौन हैं; वेतनै मुर्ऱु अकम्-वेदना भरे मन के; वैन्तु वैन्तु-बहुत तप्त होकर; कौल्लन् ऊतु उलैयिल्-लुहार की भाथी के द्वारा हवा पाकर जलनेवाली भट्ठी की आग के समान; वैय्दु यिर्त्तान्-गरम श्वास छोड़े । १९७

चक्रवर्ती भूमि पर गिरकर लोटने लगे । उनके महान दुख का वर्णन कर सकनेवाला कौन है ? मन असीम वेदना से भर गया । अत्यन्त दुख-तप्त हो गया । इसलिए उन्होंने जो साँसें छोड़ीं वे लुहार की उस भट्ठी की आग के समान गरम थी जिसे भाथी द्वारा लुहार हवा देकर जलाता रहता है । १९७

उलर्न्ददु	नावुयि	रोड	लुर्ऱु	डुळ्ळम्
पुलर्न्ददु	कण्गळ्	पौडित्त	पौङ्गु	शोरि
शलन्दलै	मिक्कदु	तक्क	दैन्गौ	लैन्ऱैन्
इलन्दलै	युर्ऱु	वरुम्बु	लनग	ळैन्दुम् 198

तक्कतु अँन् कौल् अँन्ऱु अँन्ऱु-(अव) उचित क्या है, यह सोच-सोचकर; ना उलर्न्ततु-जीभ (मुख) सूख गई; यिर् ओटल् उर्ऱुतु-प्राण निकलने को हुए; उळ्ळम् पुलर्न्ततु-मन मुरझा गया; कण्कळ्-आँखों ने; पौङ्कु चोरि पौटित्त-अधिक रक्त बहाया; चलम् तलै मिक्कतु-कोप सिर पर चढ़ा; अरु पुलन्कळ् एन्तुम्-श्रेष्ठ पाँचों इंद्रिय; अलन्तलै उर्ऱु-अस्तव्यस्त हुई । १९८

‘अब क्या करना उचित होगा ?’ यह सोचते-सोचते चक्रवर्ती की जिह्वा सूख गई। प्राण निकलने को हो गये। मन मुरझा गया। आँखों से मानो रक्त के कण बरसने लगे। गुस्सा सिर पर चढ़ आया। श्रेष्ठ पाँचों इन्द्रियाँ अस्तव्यस्त हो गई। १९८

❀ मेवि	निळत्ति	लिक्कु	निक्कुम्	वीळुम्
ओविय	मौप्प	वयिर्प्प	डङ्गि	योयुम्
पावियै	युर्इदिर्	पर्इ	यैर्इ	वैण्णुम्
आवि	पदैप्प	वलक्क	णैय्दि	निन्ऱान् 199

आवि पतैप्प-प्राण छटपटाते; अलक्कण् अयति निन्ऱान्-कठोर दुख से पीड़ित जो रहे वे; निळत्तिल् मेवि इक्कुम्-(कुछ देर) भूमि पर बैठे रहते; निक्कुम्-(बाद) खड़े हो जाते; वीळुम्-(फिर) गिरते; ओवियम् औप्प-चित्र की तरह; उयिर्प्पु अटङ्कि-साँस रोककर; ओयुम्-शिथिल रहते; पावियै-पापिन को; अतिर् उर्इ-सामने जाकर; पर्इ-पकड़कर; यैर्इ अण्णुम्-पटकना चाहते। १९९

वे ऐसे दुखी हुए कि प्राण छटपटाने लगे। वे कुछ देर भूमि पर बैठे रहते, फिर उठकर खड़े होते। फिर भूमि पर गिर जाते। चित्र के समान साँस रोके निस्पन्द खड़े रहते। पापिनी कैंकेयी को सामने जाकर पकड़कर एक दम पटकने का विचार करते। १९९

पैण्णै	वुट्कुम्	पैरुम्ब	ळिक्कु	नाणुम्
उण्णिर्	वैप्पी	डुयिर्त्तु	यिर्त्तु	लावुम्
कण्णिल	तौप्प	वयर्क्कुम्	वन्गै	वैल्वैम्
पुण्णुळै	हिर्क	वुळैक्कु	मानै	पोल्वान् 200

वन् कं वैल्-वलिष्ठ हाथ से प्रेषित बछी के; वैम् पुण् नुळैकिर्क-पीडक व्रण में घुसने से; उळैक्कुम्-लटनेवाले; आनै पोल्वान्-हाथी समान राजा; पैण् अन्न-स्त्री समझकर; उट्कुम्-संकोच करते; पैरुम् पळिक्कु-(स्त्री-हत्या से होनेवाली) बड़ी निन्दा से; नाणुम्-शरम खाते; उळ् निदै वैप्पोटु-आन्तरिक सन्ताप से; उयिर्त्तु उयिर्त्तु-निश्वास छोड़ते, छोड़ते; उलावुम्-(इधर से उधर और उधर से इधर) चलते; कण्णिलन् औप्प-आँखों से होन के समान; अयर्क्कुम्-निस्पन्द खड़े रहते। २००

फिर सोचते कि वह स्त्री है। उन्हें उतनी पीड़ा हुई जितनी बलवान हाथ से प्रेषित भाले के पके व्रण में घुसने से हाथी को होती है। तो भी वे सोचते हैं कि वह स्त्री है। इसलिए उन्हें मारने से डरते; स्त्रीहत्या का बड़ा दोष और उसकी बड़ी निन्दा होगी, इस बात से शरमाते। दुखतप्त मन के साथ वे बेचैन होकर इधर से उधर और उधर से इधर चलते थे। कुछ देर अन्धे के समान थके खड़े रहते। २००

कम्ब	नडुङ्गलि	यानै	यन्त्र	मन्त्रन्
वैम्बि	विळुन्दयर्	विम्मल्	कण्डु	वैयडुर्
रुम्बर्	नडुङ्गिन्	रुळि	पेर्व	दौत्त
दम्बन	कण्णव	ळुळ	मन्त्र	देयाल् 201

कम्पम्-खूँटे से बँधे; नैटु कळि यानै अन्त-अत्यन्त मदमत्त गज के समान; मन्त्रन्-राजा; वैम्पि-दुखतप्त होकर; विळुन्तु अयर् विम्मल्-गिरकर शिथिल होते हैं, यह दशा; उम्पर् कण्डु-देवता लोग देखकर; वैयटुर्-दुखी होकर; नडुङ्किन्-काँप उठे; ऊळि पेर्वतु औत्ततु-युगान्त हो गया, ऐसा लगा; अम्पु अन्त कण्णवळ् उळ्ळम्-(तब भी) शरसम आँख वाली का हृदय; अन्तते-वैसा ही (रहा) । २०१

आलान के साथ बँधे हुए अति मदमत्त हाथी की-सी स्थिति में पड़कर राजा मन मारकर लड़खड़ाते हैं, शिथिल पड़ जाते हैं —यह स्थिति देखकर देवों को दुख और डर हो गया । उन्हें लगा कि प्रलय का समय आ गया है । इतना होने पर भी शर-सम निर्मम आँखों वाली कैकेयी का मन टस से मस नहीं हुआ । वैसे ही निर्मम बना रहा । २०१

अञ्जल	ळैयन्	दल्लल्	कण्डु	मुळ्ळम्
नञ्जिल	णाणिल	ळैन्	नाण	मामाल्
वञ्जनै	पण्डु	मडन्दै	वेड	मन्त्रो
तञ्जन	मादरै	युळ्ळ	लार्ह	डक्कोर् 202

ऐयन्तु अल्लल् कण्डुम्-नायक का दुख देखकर भी; अञ्चलळ्-न डरी; उळ्ळम् नञ्चिलळ्-आर्द्रमना नहीं हुई; नाणिलळ्-न शरसाई; अँन्त-(उनकी यह स्थिति) कहते; नाणम् आम्-हमें लज्जा होती है; पण्डु-पहले से ही; वञ्चनै-वंचकता; मडन्तै वेटम् अन्त्रो-स्त्रीरूप ही रही है न; तक्कोर्-योग्य बड़े लोग; मादरै-स्त्रियों को; तञ्चु अँन्त-सहायक; उळ्ळलार्कळ्-नहीं मानते । २०२

अपने ही पति की वेदना देखकर भी कैकेयी नहीं डरी; न उनका मन ही नरम हुआ । वे नहीं लजाईं । उनकी यह स्थिति कहते हुए हमें लज्जा होती है ! हाँ, पहले से ही वंचना स्त्रीरूपधारिणी ही रहती आई है । योग्य और विद्वान बड़े लोग स्त्री को कभी विश्वसनीय सहायक नहीं मानते । २०२

ॐ इन्निलै	निन्ऱव	उन्नै	यैय्द	नोक्कि
नैय्न्निलै	वेलव	नोदि	शैत्त	तुण्टो
पौय्न्निलै	योर्हळ्	पुणर्त्त		वञ्जमुण्डो
उन्निलै	शौल्लेन्	दाणै	युण्मै	यैन्ऱान् 203

नैय्न्निलै वेलवन्-घृत-लगा भालाधारी; इ निलै निन्ऱवळ् तन्नै-इस स्थिति में रहें उनको; अँय्त नोक्कि-खूब देखकर; नी तिचैत्ततु उण्टो-तुम भ्रम में पड़

गई हो; पौय निलैयोर्कळ-मिथ्याचारी; पुणरुत्त-कल्पित; वञ्चम् उण्डो-
वंचना है; अंतु आणे-मेरी शपथ; उन् निलै उण्मै चौन्-अपनी इस स्थिति की
सच्चाई कहो; अंतरान्-कहा । २०३

घी-लगे भाले के दशरथ ने इस स्थिति में खड़ी रही कैकेयी को घूर
कर देखा । फिर प्रश्न किया कि क्या तुम्हारा मन भ्रमित हो गया ? या
मिथ्यावादी किन्हींने आकर तुम्हें गढ़कर वंचना बताई है ? मेरी सौगन्ध !
तुम अपनी इस स्थिति का असली कारण सच-सच बताओ । —दशरथ ने
कहा । २०३

✽ तिशैतुतदु	मिल्लै	यैन्कु	वन्दु	तीयोर्
इशैतुतदु	मिल्लैमु	तीन्द	वरङ्ग	ळैन्बाल
कुशैप्परि	योय्तरि	तिन्नु	कौळ्वै	नन्नेल्
वशैत्तिर	तिन्वयि	निर्क	माळ्व	नैन्नाळ् 204

कुचै परियोय्-रासदार अश्वों के स्वामी; तिचैतुतुम् इल्लै-भ्रमित होने की
बात नहीं; तीयोर्-बुरे लोगों ने; अंतकु वन्दु इचैतुतुम् इल्लै-मेरे पास आकर
गढ़न्त नहीं कहा है; मुन् अन् पाल ईन्त वरङ्कळ-पहले मुझे दिये गये वर; इन्नु
तरिन्-आज दोगे तो; कौळ्वैन्-लूंगी; अन्नेल्-नहीं तो; वचै तिरुम् निन् वयिन्
निर्क-अपयश का हेतु आपके पास छोड़कर; माळ्वैन्-मर जाऊंगी; अन्नाळ्-
कहा । २०४

कैकेयी ने अप्रमत्त रूप से उत्तर दिया । भ्रमित होने की कोई बात
नहीं है ! न किन्हीं बुरों ने आकर गढ़कर बातें बताई हैं । रासदार अश्वों
के स्वामी ! आपने पहले जो दो वर देने का वादा किया था, उन दोनों
वरों को आज दोगे, तो लूंगी । नहीं तो आपको अपयश उठाने देते हुए
प्राण त्याग दूंगी । २०४

✽ इन्द	नैडुज्जौलव्	वेळै	कूड	मुन्ने
वैन्द	कौडुम्बुणिल्	वेनु	ळैन्द	दौप्पच्
चिन्दै	तिरिन्दु	तिहैत	यरन्दु	वीळ्न्दान्
मैन्द	नलादुयिर्	वेरि	लाद	मन्तन् 205

इन्त नैडुम् चौल्-यह बड़ी बात; अ एळै कूड-(उन) अबोध नारी के कहने
पर; मैन्तन् अलातु-पुत्र के सिवा; उयिर् वेरु इल्लात मन्तन्-प्राण जो अलग नहीं
रखते थे, वे राजा; मुन्ने वैन्त कौटुम् पुण्णिल्-पहले ही अग्नि के लगने से बने व्रण
में; वेल् नुळैन्तु औप्प-भाला घुस गया, ऐसा; चिन्तै तिरिन्दु-मन अस्त-व्यस्त
होकर; तिकैत्तु-भ्रमित होकर; अयरन्तु-निर्वल होकर; वीळ्न्तान्-भूमि पर
गिरे । २०५

यह बड़ा निष्ठुर वचन था । कैकेयी ने यह कह दिया तो राजा का
मन टूट गया । उनके तो श्रीराम ही प्राण थे । श्रीराम से अलग उनके प्राण

रह ही नहीं सकते थे । उन्हें ऐसा लगा मानो अग्नि के लगने से उत्पन्न व्रण में भाला घुसेड़ दिया गया हो । वे भ्रमित हो गये और थककर भूमि पर गिर गये । २०५

❀ आकौडि	यार्यैनु	मावि	कालु	मन्दो
ओकौडि	देयड	मैन्नु	मुण्मै	यौन्नूम्
शाहवै	नावैळु	मैय्त	ळाडि	वीळुम्
माहमु	नाहमु	मण्णुम्	वैन्ड	वाळान् 206

माकमुम्-आकाशलोक को; नाकमुम्-और पाताललोक को; मण्णुम्-भूलोक को; वैन्ड वाळान्-जीतनेवाली तलवारधारी; आ कौटियाय् अँनुम्-हाय क्रूर (नारी) कहते; आवि कालुम्-प्राणाकुलित हो जाते; अन्तो-हाय; अडम् ओ कौटिते-धर्म अत्यन्त निर्मम है; अँनुम्-कहते; उण्मै औन्नूम्-सत्य नाम का वह; चाक अँता-मर जाय, कहकर; अँळुम्-उठते; मैय् तळ्ळाटि-शरीर के लड़खड़ाने से; वीळुम्-गिर जाते । २०६

चक्रवर्ती विख्यात वीर थे । उनकी तलवार को आकाश, भूलोक और पाताललोक तीनों को जीतने का गौरव प्राप्त था । वे प्रलाप कर उठे—हाय क्रूर नारी ! उनके प्राण सूख-से गये । “हाय ! धर्म भी अत्यन्त निर्मम है ! सत्य नामक तथ्य का नाश हो !” —यह कहते हुए वे उठे । लड़खड़ाकर गिर गये । २०६

❀ नारिय	रिल्लयिञ्	जाल	मैङ्गु	मैन्तक्
कूरिय	वाळ्कौडु	कौन्नू	नीक्कि	यानुम्
पूरिय	रैण्णिडै	वीळ्वै	नैन्नू	पौङ्गुम्
वीरियर्	वीरम्	विळुङ्गि	निन्ड	वेलान् 207

वीरियर् वीरम्-श्रेष्ठ वीरों की वीरता; विळुङ्कि-कवलित करके; निन्ड-रहनेवाला; वेलान्-भालाभूत; इ जालम् अँङ्कुम्-इस भूतल भर में; नारियर् इल्लै अँन्त-स्त्रियाँ नहीं हैं; कूरिय वाळ् कौडु-तीक्ष्ण तलवार से; कौन्नू नीक्कि-(इस तरह) मारकर हटाकर; यानुम्-मैं भी; पूरियर् अँण्णिडै-नीच लोगों की गिनती में; वीळ्वै अँन्नू-पतित हो जाऊँगा, कहकर; पौङ्कुम्-बिफर उठते । २०७

उनका भाला बड़े-बड़े सभी वीरों की वीरता को कवलीकृत कर रहनेवाला था । उनका क्रोध भड़क उठा । “संसार भर में नारियाँ ही न हों, ऐसी स्थिति पैदा करते हुए अपनी तलवार से सभी नारियों को मारकर मिटा दूँगा । नीच लोगों की श्रेणी में गिना जाऊँगा तो कोई बात नहीं है ।” । २०७

❀ कैयौडु	कैयैप्	पुडैक्कुम्	वाय्क	डिक्कुम्
मैय्युरै	कुड्ड	मैन्पु	ळुङ्गि	विम्मुम्

नैयैरि गुरुर्र नैज छिन्दु शोरुम्
वैयह मुर्रु नडन्द वाय्मै मन्तन् 208

वैयकम् मुर्रुम्-पृथ्वी भर में; नटन्त-व्याप्त; वाय्मै मन्तन्-सत्यव्रती के यश वाले; (चिन्तताल्-क्रोध से;) कैयै-हाथ से हाथ; पुटेक्कुम्-जोर से बजाते; वाय् कटिक्कुम्-होंठ चवाते; मैय् उरै कुर्रम्-सत्य-कथन अपराध है; अँन-यह सोचकर; पुळुङ्कि-मनतप्त होकर; विम्मुम्-सिसकते; अँरि नैय् उर्रुत्तु अँत-आग में घी पड़ गया जैसे; नैज्चु अळिन्तु-मन पिघलाकर; चोरुम्-लट जाते। २०८

दशरथ की सत्यवादिता का यश संसार भर में व्याप्त था। उन्होंने क्रोध से एक हाथ से दूसरे हाथ को जोर से मारा। होंठ चबाये। 'सत्य बोलना भी अपराध हो गया!' यह देखकर उनका मन संतप्त हुआ। सिसकियाँ भरने लगे। आग में लगे घी के समान उनका मन क्षीण हो गया। वे थक गये। २०८

औरूपिन्तु मन्दर मुण्मै यौन्ऱु मोवा
मरूपिन्तु मन्दर मैन्ऱु वाय्मै मन्तन्
पौरूपिन्तु मन्निळै पोहि लाळै यावि
इरूपिन्तु माव दिरप्प दैन्ऱु लुन्दात् 209

औरूपिन्तुम्-इसे दण्डित करूँ तो भी; अन्तरम्-बुरा है; उण्मै औन्ऱुम् ओवा-सत्य से हटकर; मरूपिन्तुम्-वर देने से इनकार कर दूँ तो भी; अन्तरम्-बुरा ही; मैन्ऱु-ऐसा सोचकर; वाय्मै मन्तन्-सत्यव्रती चक्रवर्ती; पौरूपिन्तुम्-कितना भी सब्र करने पर भी; अ निळै पोकिलाळै-उस स्थिति से न हटनेवाली उनको; यावि इरूपिन्तुम्-मारने से; इरप्पतु-याचना करना; आवतु-(लाभदायक) हो सकता है; औन्ऱु-सोचकर; अँळुन्तान्-उठे। २०९

राजा सोचने लगे। 'इसे दण्ड दूँ तो भी बुरा है। सत्य से हटकर वर देने से इनकार कर दूँ तो भी बुरा है।' सत्यसंध राजा ने यह निर्णय किया कि कितना भी सब्र के साथ इससे तर्क करूँ तो भी वह अपनी स्थिति को बदलनेवाली नहीं है। इसलिए उसको मारने से उससे प्रार्थना करना अच्छा है। यह सोचकर वे उठे। २०९

ॐ कोन्मेर् कौण्डुङ् गुर्र महर्ऱक् कुडिकौण्डार्
पौन्मे लुर्ऱ दुण्डेनि नन्ऱाम् पौरैयैन्नाक्
कान्मेल् वीळ्न्दात् कन्दुहौल् यानैक् कळत्तुमन्तर्
मेन्मेल् वन्ऱु मुन्दि वणङ्ग मिडैताळ्त् 210

कन्तु कौल् यात्तै-आलानभञ्जक हाथी वाले; कळल्-पायलधारी; मन्तर्-राजा लोग; मेल् मेल् मुन्ति वन्तु-उत्तरोत्तर बढ़ते हुए आकर; वणङ्क मिटै-नमस्कार करने के लिए जिनके पास जुटते हैं; ताळ्त्-उन चरणों वाले; कौल् मेल्

कोंण्डुम्-राजदण्ड रखते हुए भी; कुड्डुम् अकड्डु-दोष से बचने का; कुडि कौण्डार्
पोल्-लक्ष्य रखनेवाले के समान; मेल् उड्डु उण्डु अँतिन्-आगे भला होगा तो;
पौरे नन्डु आम्-क्षमाशीलता अच्छी है; अँन्ता-सोचकर; काल् मेल् वीळ्न्तान्-
कैकेयी के चरणों पर गिरे । २१०

राजा बड़े प्रतापी थे । वे खूँटे तोड़ सकनेवाले गजों के स्वामी थे ।
उनके चरण ऐसे थे कि राजा लोग “मैं, मैं पहले,” यह कहते हुए एक से
पहले एक आकर उन पर नमस्कार करते थे । उनके हाथ में राजदण्ड, आज्ञा
देने का अधिकार था । तो भी उन्होंने शायद सोचा कि हमारा व्यवहार
दोष रहित होना चाहिए । ‘आगे भला होगा तो क्षमा माँगना श्रेयस्कर
है’, यह विचार कर राजा कैकेयी के चरणों पर गिरे । २१०

ॐ कौळ्ळा	निन्शे	यिव्वर	शन्नान्	कोंण्डालुम्
नळ्ळा	दिन्द	नानिल	जालन्	दन्तिर्लेन्डुम्
उळ्ळा	रैल्ला	मोद	वुवक्कुम्	पुहळ्हीळ्ळा
दैळ्ळा	निड्कुम्	वन्वळि	कोंण्डेन्	पयर्त्तन्डान् 211

निन् चैय्-तुम्हारा पुत्र; इव्व अरचु कौळ्ळान्-यह राज नहीं लेगा; अन्नान्
कोंण्डालुम्-वह ले भी तो; इन्त नाल् निलम्-यह चतुर्विधा भूमि; नळ्ळालु-
सम्मत नहीं होगी; जालम् तनिल् उळ्ळार् अँल्लाम्-संसार के सभी वासी; अँन्डुम्
ओत-सदा कहते हैं उससे; उवक्कुम्-चाहनीय बने; पुक्ळ् कौळ्ळालु-यश को न
लेकर; अँळ्ळा निड्कुम्-सब (जिसको) निकृष्ट मानेंगे उस; वन् पळि कौण्डु-
प्रबल अपयश प्राप्त कर; अँन् पयन्-बया लाभ होगा; अँन्डान्-कहा । २११

उन्होंने कैकेयी को समझाया कि देखो, तुम्हारा पुत्र भरत राज्य नहीं
लेगा । अगर वह ले भी तो यह भूमि सम्मत नहीं होगी यानी प्रजा उसे
राजा नहीं मानेगी । यश इसलिए चाहनीय है कि दुनिया के सारे लोग
उसका बखान करेंगे । वह यश न अर्जन कर तुम सर्वनिन्द्य प्रबल अपयश
लेने का प्रयास क्यों करती हो ? । २११

वानोर्	कौळ्ळार्	मण्णव	रुय्या	रित्तिमड्डेन्
एनोर्	शैय् है	यारौडु	नीयिव्	वरशाळ्वाय्
याने	शौल्लक्	कौळ्ळ	विशैन्दान्	मुडैयाले
ताने	नल्हु	मुन्मह	नुक्कुत्	तरैय्न्डान् 212

वानोर् कौळ्ळार्-देवता उसको नहीं मानेंगे; मण्णवर् उय्यार्-पार्थिव लोग
(श्रीराम को छोड़कर) प्राणधारण नहीं करेंगे; एनोर् चैय्कै-इनसे परे (जो पाताल-
लोकवासी हैं), उनका काम; इत्ति मड्डु अँन्-अब दूसरा क्या होगा; यारौडु नी इ
अरचु आळ्वाय्-किनके साथ रहकर तुम यह राज्य करोगी; याने चौल्ल-मेरे ही
कहने पर; मुडैयाले-उचित क्रम था इसलिए; कौळ्ळ इचैन्तान्-(राम) लेने को

सहमत हुआ; उन् मकनुकु-तुम्हारे पुत्र को; ताने तरै नलकुम्-(तुम्हारी इच्छा मालूम होगी तो) खुद भूमि को दे देगा; अँन्रान्-कहा । २१२

तुम्हारी बात देवता नहीं मानेंगे । इस पृथ्वी के लोग श्रीराम से बिछुड़कर जीवित नहीं रहेंगे । अन्य जो पातालवासी हैं, उनका क्या कहा जाय ? वे भी सहमत नहीं होंगे । फिर किनको साथ रखकर शासन करोगी ? राम ने मेरे कहने से और यही उचित समझकर अपनी सम्मति दी । अब उसे मालूम हो जाय कि तुम्हारी इच्छा यही है तो वह स्वयं राज्य को भरत के पास सौंप देगा । दशरथ ने यह कहा । २१२

कण्णे	वेण्डु	मँन्तिनु	मीयक्	कडवेन्तु
उण्णे	रावि	वेण्डिनु	मिन्त्रे	युनदन्त्रो
पेण्णे	वण्मैक्	केहयन्	माने	पँरुवायेल्
मण्णे	कौण्णी	मर्इय	दौन्नुम्	मर्वेन्त्रान् 213

पेण्णे-रमणी; वण्मै केकयन् माने-उदार केकयराज की मृगी-सी तनया; कण्णे वेण्डुम् अँन्तिनुम्-आँखों को ही चाहोगी तो; ईय कडवेन्-देने का मेरा कर्तव्य है; अँन् उळ् नेर् आवि वेण्डिनुम्-मेरे अन्दर के रहनेवाले प्राणों को चाहो तो भी; इन्त्रे उतु अन्त्रो-वे आज ही तुम्हारे हैं न; नी पँरुवायेल्-तुम लेना ही चाहो; मण्णे कौळ्-भूमि को लो; मर्इयतु औन्नुम्-दूसरा जो एक है; मर्-उसे भूल जाओ; अँन्त्रान्-कहा । २१३

दशरथ ने आगे कहा कि रमणी ! उदार केकयराजतनया ! मृगी-सी सुन्दरी ! मेरी आँखें ही चाहो तो दे दूँगा, यह मेरा कर्तव्य है । मेरे प्राण भी माँगो तो अभी वे तुम्हारे हो जायँगे । इसलिए तुम मुझसे वर लेना चाहो तो दया करो राज्य को लो, दूसरे एक वर को भूल जाओ । २१३

वाय्तन्	देन्तु	इनिन्ति	यात्तो	बडुमाइरेन्
नोय्दन्	देन्तु	नोवन	शैय्दु	नुवलादे
ताय्दन्	देन्तु	तन्तु	यिरन्दाइ	इळल्वेङ्गद्
पेय्दन्	दीयु	नीयिदु	तन्दाइ	पिळ्ळैयामो 214

यात्तो वाय् तन्तेन् अँन्त्रेन्-मैंने तो वचन दे दिया कि वर दे दिये; इनि अतु माइरेन्-अब उससे नही मुकलूँगा; नोय् तन्तु-बड़ा रोग (सम दुख) देकर; अँन्तु नोवन चैयु-मुझे वेदना देनेवाला काम करके; नुवलाते-ऐसी बातें मत कहो; तळल् वेम् कण् पेय्-आग-सी आँखों वाले भूत; तन्तु इरन्ताल्-आपसे याचना करने पर; ताय् तन्तु अँन्तु-माता ने दिया जैसे; तन्तु ईयुम्-(माँगी चीज) दे देगा; इतु तन्ताल्-यह (मेरी अर्थना) दोगी तो; पिळ्ळै आमो-अपराध होगा क्या । २१४

देखो । मैंने वचन दे दिया कि वर तुम्हें दे दिये । अब उससे नहीं मुकलूँगा । तुम मुझे दुख का रोग दिया, फिर मुझे वेदना देने का काम भी किया; तिस पर पीड़क बातें भी मत कहो । आग-सी आँखों वाला भूत

भी याचक के सामने माता-सा नरमदिल बन जाता है और माँगी चीज प्यार के साथ दे देता है। तो तुम यह छोटा-सा वर दे दो तो वह क्या तुम्हारे लिए अपराध हो जायगा ? । २१४

❀ इन्ने	यिन्त	पन्नि	यिरन्दा	तिहल्वेन्दन्
तन्ने	रिल्लात्	तीयव	ळुळन्	दडुमाडाळ्
मुन्ने	तन्दा	यिव्वर	नल्हाय्	मुन्निवायेल्
अन्ने	मन्ना	यारुळर्	वाय्मैक्	किन्नियेन्डाळ् 215

इकल् वेन्तन्-शक्तिमान चक्रवर्ती ने; इन्ने-ऐसी; इन्त-और इसी तरह की बातें; पन्नि-वार-वार कहकर; इरन्तान्-प्रार्थना की; तन् ने इल्ला-अपनी सानी न रखनेवाली; तीयवळ्-अत्याचारिणी; उळ्ळम् तडुमाडाळ्-कम्पितमन नहीं हुई; मन्ना-राजा; इ वरम् मुन्ने-ये वर पहले ही; तन्ताय्-दे दिये; नल्काय्-अब न देकर; मुनिवायेल्-कोप करेंगे तो; अन्ने-यह क्या है; वाय्मैक्कु-सत्यपालन के लिए; इन्नि-अब; यार् उळर्-कीन हैं; अन्डाळ्-कहा । २१५

शक्तिमान राजा ने ये बातें कही; ऐसी ही बहुत सी बातें कहकर मिन्नत की। पर कैकेयी तो क्रूरता में अपनी सानी रखनेवाली नहीं थीं। उस अत्याचारिणी ने निर्ममता से बात काटकर कहा कि देखिए राजा ! देने का वादा कर चुके हैं। अब बिना वर दिये कोप दिखाएँगे तो क्या होगा ? फिर सत्यपालन के लिए दुनिया में रहेगा कौन ? । २१५

अच्चौड्	केळा	वावि	पुळुङ्गा	वयर्हिन्त्रान्
पौयच्चौड्	पेणा	वाय्मोळि	मन्तन्	पौडैकूर
नच्चुत्	तीये	पेण्णुरु	वन्डो	वैन्ननाणा
मुच्चर्	डार्पोड्	पिन्नु	मिरन्दे	मोळिहिन्त्रान् 216

पौय् चौल् पेणा-असत्य वचन कभी न कहनेवाले; वाय् मोळि मन्तन्-सत्य ही बोलनेवाले राजा; अ चौल् केळा-(कैकेयी का) वह कथन सुनकर; आवि पुळुङ्का-प्राण संतप्त होकर; अयर्किन्त्रान्-बलांत हो जाते; पौडै कूर-सहनशील बनकर; नच्चु तीये-विष और अनल; पेण् उर अन्डो-स्त्री रूप में आये; अन्त-यह सोचकर; नाणा-शरम का अनुभव करते हुए; मुच्चु अडार् पोल्-(योगी) बेहोशों के समान; पिन्नुम्-(कुछ देर) रहने के बाद; इरन्ते मोळिकिन्त्रान्-प्रार्थना करते ही बोले । २१६

राजा असत्यवाचन को कभी स्थान देनेवाले नहीं थे। सदा सत्यवादी थे। उन्हें कैकेयी के वचन सुनकर अपार दुख हुआ। प्राण सूखने-से लगे। थक गये। तो भी सहनशीलता को अपनाकर वे कुछ देर चुप रहे मानो वे बेहोश या साँस रोके पड़े हों। उन्हें इस बात से शरम होती थी कि विष और आग दोनों मिलकर (इस) स्त्री के रूप में आये हैं। फिर वे बोलने लगे; तब भी प्रार्थना के स्वर में ही बोले । २१६

✽ नित्मह	ताळ्वा	नीयिनि	दाळ्वाय्	निलमेल्लाम्
उन्वय	मामे	याळुदि	तन्दे	नुरैहुत्तरेन्
अँन्मह	नैन्ग	णैन्नुयि	रैल्ला	वुयिर्हटकुम्
नत्मह	निन्द	नाडिउ	वामै	नयवैन्तान् 217

निलम् अँल्लाम् तन्तेन्-भूमि सब मैंने दिला दी; उरै कुन्तरेन्-वचन नहीं टालूंगा; उन् वयमे आम्-(राज्य) तुम्हारे वश में हो जायगा; नित् मकन् आळ्वान्-तुम्हारा पुत्र शासन करे; नी इतिनु आळ्वाय्-या तुम ही सुख से पालन करो; आळुति-आज्ञा चलाओ; अँन् मकन्-मेरा पुत्र; अँन् कण्-मेरा नेत्र; अँन् उयिर्-मेरा प्राण (राम); अँल्ला उयिर्कटकुम्-सभी जीवों के लिए; नल् मकन्-अच्छा पुत्र; इन्त नाटु इरवामै-इस देश से बाहर न जाए; नय-यह वर दो; अँन्तान्-कहा । २१७

उन्होंने याचना की— मैंने अपना सारा राज्य दे दिया । अब वचन नहीं टालूंगा । राज्य तुम्हारा हो जायगा । तुम्हारा पुत्र भरत शासन करे; चाहे तुम ही सुख से शासन करो । मेरा पुत्र, मेरी आँख का तारा, मेरी जान, सभी जीवों के लिए अच्छा पुत्र (सम मित्र) इस देश को छोड़कर न जाए —यह वर दे दो । २१७

मैय्ये	यैन्तन्	वेरउ	नूरुम्	विनैनोक्कि
नैया	निन्तरे	नावु	मुलर्न्दे	नळितम्बोड्
कैया	निन्तरेन्	कण्णैदिर्	निन्तुरुड्	गळिवानेल्
उय्ये	नङ्गा	युन्नव	यम्मैन्	नुयिरेन्तान् 218

नङ्काय्-(देवी) नायिका; मैय्ये-सत्यपालन ही; अँन्तन् वेर् अड-मेरा मूल काटकर; नूरुम्-नाश करता है; विनै नोक्कि-ऐसा कर्म देखकर; नैया निन्तरेन्-दुखी हूँ; नावुम् उलर्न्तेन्-मेरी जीभ भी सूख गई; नळितम् पोल् कैयान्-कमल-सम हाथ वाला राम; इन्तुरु-अब; अँन् कण् अँतिर् निन्तुरुम्-मेरी आँख के सामने से; कळि वानेल्-अलग हो जायगा तो; उय्येन्-जीवित नहीं रहूँगा; अँन् उयिर् उन् अपयम्-मेरी जान तुम्हारे अधीन है; अँन्तान्-कहा । २१८

देवी ! मेरा कर्म-भाग्य ऐसा हो गया कि मेरा सत्य ही मुझे निर्मूल करके नाश कर रहा है । यह देखकर मैं वेदना-विद्ध हो रहा हूँ । तुमसे याचना करते-करते मेरी जीभ सूख गई है ! कमल-हस्त श्रीराम अब मेरे सामने से दूर हो जायगा तो मेरे प्राण नहीं रहेंगे । अब मेरे प्राण तुम्हारे अधीन, धरोहर, है । —दशरथ ने यह कहा । २१८

✽ इरन्दान्	शौल्लु	मिन्नुरै	कौळ्ळाण्	मुनिवज्जाल्
मरन्दा	नैन्नु	नैज्जिन	णाणाळ्	वशैपाराळ्
शरन्दाळ्	विल्लाय्	तन्द	वरत्तैत्	तविरहैन्डल्
उरन्दा	तल्ला	नल्लउ	मामो	वुरैयैन्डाल् 219

मरम् तान्-काठ ही; अन्नन् नञ्चित्-कहलाने योग्य (कठोर) चित्त वाली; इरन्तान् चोल्लुम्-प्रार्थना करनेवाले के कहे; इन् उरै-मधुर वचन; कौळ्ळाळ्-मन में नहीं लेतीं; मुत्तिव अञ्चाळ्-उनके कोप से नहीं डरतीं; नाणाळ्-अपनी करनी पर नहीं शरमातीं; वच्चै पाराळ्-(आनेवाला) अपयश नहीं देखतीं; चरम् ताळ् विल्लाय्-शरनिलय चाप वाले; तन्त वरत्तै-दिये गये वरों को; तविरक्क अन्नल्-छोड़ दो कहना; उरम अल्लाल्-साहस होगा, नहीं तो; नल् अरम् आमो-सद्धर्म होगा क्या; उरै-आप ही कहिए; अन्न्राळ्-कहा । २१६

कैकेयी का हृदय तो, काठ का है, ऐसा कहाने योग्य हो गया था । उन्होंने प्रार्थना करनेवाले दशरथ की स्निग्ध बात पर ध्यान नहीं दिया । न वह उनके सम्भवनीय कोप से डरी । न ही वह अपनी करनी पर शरमाई । उन्होंने राजा से कहा कि हे शरनिलय धनुर्धर ! पहले वचनदत्त वरों को छोड़ दो कहना साहस का काम हो सकता है । पर वह धार्मिक हो सकता है क्या ? आप ही बतायें ! २१९

❖ कौडिया	ळिन्न	कूरिन्ळ	कूडक्	कुलवेन्दात्
मुडिश्	डामल्	वैम्बरन्	मौय्हा	निडैमैय्ये
नैडियो	नीङ्गु	नीङ्गुम्	नावि	यिनियेन्ता
इडिये	रुण्ड	माल्वरै	पोन्मण्	णिडैवीळ्न्दात् 220

कौटियाळ्-निर्मम कैकेयी ने; इन्न कूरित्-ऐसा कहा; कूड्-कहने पर; कुलम् वेन्तत्-उत्तम राजा; नैडियोन्-त्रिविक्रम श्रीराम; मुटि चूटामल्-मुकुट पहने विन्ता; मैय्ये-सचमुच; वैम् परल्-भयंकर कंकड़ों से; मौय्-भरे; कान् इटै-जंगल में; नीङ्कुम्-चला जायगा; इत्ति-आगे; अन् आवि नीङ्कुम्-मेरे प्राण चले जायेंगे; अन्ता-यह समझकर; इटि एरु उण्ट-अशनीप्रहत; माल् वरै पोल्-बड़े पर्वत के समान; मण् इटै वीळ्न्तान्-भूमि पर गिरे । २२०

निर्मम कैकेयी ने ऐसा कह दिया । चक्रवर्ती को विश्वास हो गया कि अब त्रिविक्रम (विष्णु का) अवतार राम मुकुट-धारण न करके घने कंकड़ों से भरे जंगल में चला जायगा । मेरे प्राण भी चले जाएंगे । यह सोचकर राजा अशनि से आहत बड़े पर्वत के समान नीचे गिरे । २२०

❖ वीळ्न्दात्	वीळा	वैन्दुय	रत्तिन्	कडल्वैळ्ळत्
ताळ्न्दा	नाळा	वक्कड	लुक्कोर्	करैकाणान्
शूळ्न्दा	डुन्ब	मक्कोडि	याळ्शौर्	कौडुशित्तम्
पौळ्न्दा	ळुळ्ळप्	पुन्मयै	नोक्किप्	पुरळ्हिन्शान् 221

वीळ्न्तान्-जो गिरे वे; वीळा वैम् तुयर्त्तिन्-अनभ्यस्त भयंकर दुख के; कटल् वैळ्ळत्तु-सागर के प्रवाह में; आळ्न्तान्-मग्न हो गये; आळा-मग्न होकर; अ कटलुक्कु-उस सागर का; ओर् करै काणान्-एक तीर (अन्त) नहीं देखते; पुन्पम् चूळ्न्ताळ्-अपने को दुख देनेवाली; चोल् कौटु-वचन (अस्त्र) से; चित्तम्

पोल्लन्ताळ्-अपने मन को चीरनेवाली; अ कौटियाळ्-उन निर्मम कैकेयी के; उळ्ळम् पुन्मैयै-मन की नीचता को; नोक्कि-देखकर; पुरळ्किन्नान्-लोटने लगे । २२१

राजा नीचे क्या गिरे, अब तक अननुभूत दुख के सागर में गिर गये । उसमें मग्न उन्हें न ओर दिखाई दिया, न छोर ! वे उन कैकेयी के मन की नीचता पर, जिन्होंने उन्हें अत्यन्त दुख देने का संकल्प करके वचन रूपी तलवार से उनके हृदय को विदीर्ण कर दिया, अफ़सोस करते हुए लोटने लगे । २२१

✽ औन्ना	निन्ऱ	आरुयि	रोडु	मुयर्हेळ्वर्
पौन्ऱा	मुन्ऱम्	पौन्ऱिन	रैन्नुम्	पुहळल्लाल्
इन्ऱोर्	कारु	मैल्वळै	यार्दम्	मिरैयोरैक्
कौन्ऱा	रिल्लैक्	कौल्लुदि	योनी	कौडियोळे 222

अल् वळैयार्-प्रकाशमान चूड़ाधारिणी स्त्रियाँ; औन्ना निन्ऱ-अपने बने रहनेवाले; आर् उयिरौडुम् उयर्-मूल्यवान प्राणों के समान श्रेष्ठ; केळ्वर्-पतियों के; पौन्ऱा मुन्ऱम्-मरने के पहले; पौन्ऱिनर्-मर गई; रैन्नुम्-यह; पुकळ् अल्लाल्-यश छोड़कर; इन्ऱु कारुम्-आज तक; तम् इरैयोरै कौन्ऱार्-अपने पतियों को मारनेवालीयाँ; इल्लै-नहीं (पाई जातीं); कौटियाळे-क्रूर नारी; नी कौल्लुतियो-तुम मार दोगी क्या । २२२

उन्होंने कैकेयी से कहा । उज्ज्वल कंकणधारिणी स्त्रियाँ अपने प्राणप्यारे पतियों के मरने से पहले मरकर यश प्राप्त करती हैं । इसके अलावा हमने कहीं सुना नहीं है कि अपने भर्त्ताओं को मारनेवाली स्त्रियाँ भी इस लोक-में हैं । पर तुम हो ऐसी ! मुझे मारकर ही छोड़ोगी क्या ? २२२

एवम्	बारा	यिन्मुऱै	नोक्का	यऱ्मैण्णाय्
आर्वन्	बायो	वल्लै	मन्ऱता	लरुळ्हीन्ऱाय्
नावम्	बालैन्	नारुयि	रुण्डा	यिनिजालम्
पावम्	बारा	दिन्नुयिर्	हौळ्ळप्	पडुहिन्ऱाय् 223

एवम् पाराय्-मेरा दुख नहीं देखतीं; इल् मुऱै नोक्काय्-इस कुल का गौरव नहीं देखतीं; अरम् अण्णाय्-धर्म नहीं सोचतीं; आ अन्पायो अल्लै-हाय कहकर सहानुभूति नहीं दिखातीं; मन्ऱताल् अरुळ् कौन्ऱाय्-अपने मन में दया का हनन कर दिया; ना अम्पाल्-जीम के शर से; अन् अरु उयिर् उण्डाय्-मेरा प्यारा प्राण (चूस) हर लिये; इत्ति-अब; जालम्-इस लोक के वासियों द्वारा; पावम् पारातु-पाप का विचार त्यागकर; इन् उयिर् कौळ्ळ पडुकिन्ऱाय्-प्यारे प्राणों को हरने से मारी जानेवाली हो । २२३

तुम मेरी वेदना नहीं देखतीं । इस कुल की गौरव परम्परा का विचार नहीं करतीं । धर्म भी नहीं सोचतीं । “हाय !” करके दुख या सहानुभूति

भी प्रदर्शित नहीं करतीं। अपने मन में दया का नाम ही मिटा चुकी हो। अपनी जीभ रूपी शर से मेरे प्राणों को हर चुकी हो। इनका फल क्या होगा, जानती हो? लोकवासी स्त्रीहत्या के पाप की परवाह न करके तुमको मार देगे और तुम अपने प्यारे प्राणों को छोड़ दोगी! । २२३

एण्वा	लोवा	नाण्मड	मच्च	मिवयेतम्
पूण्वा	लाहक्	काण्ववर्	नल्लार्	पुहळ्पेणि
नाण्वा	लोरार्	नङ्गयर्	तम्वा	नणुहारे
आण्वा	लारे	पेण्वा	लारो	डडवम्मा 224

एण्पाल् ओवा-स्त्रियोचित विशिष्टता से अवियुक्त; नाण् मटम् अच्चम् इवये-लाज, संकोच, डर ये ही; तन् पूण् पाल् आक-अपने अलंकार का अंश; काण्पवर्-समझनेवालीयाँ; नल्लार्-श्रेष्ठ स्त्रियाँ हैं; पुहळ् पेणि-अपने यश का संरक्षण करके; नाण् पाल् ओरार्-लाज का अंश न माननेवाली; नङ्कयर् तम् पाल् नणुकार्-स्त्रियों की श्रेणी में नहीं जायेगी; आण् पालारे-पुरुष श्रेणी में भी गण्य हैं; पेण् पालारोट्ट अट्टवु-स्त्रियों की श्रेणी में केवल रूप के कारण कोष्ठवद्ध की जाती हैं। २२४

स्त्रियों के विशेष गुण है, लाज, संकोच और भय, जो उन्हें शक्ति और गौरव देते हैं। श्रेष्ठ स्त्रियाँ वे गुण रखनेवाली है। अपना यश चाहकर जो लाज को त्याग देती हैं वे स्त्रियों की श्रेणी में गिनी नहीं जायेंगी चाहे वे रूप के कारण स्त्रियों से कोष्ठवद्ध कर दी जाती है! । २२४

❖ मण्णाळ्	हिन्ऱा	रादि	वलत्तान्	मदियाल्वत्
तेण्णा	निन्ऱा	रियारयु	मैल्ला	विहलालुम्
विण्णोर्	कारुम्	वैन्ऱ	वैत्तक्कैन्	मत्तैवाळुम्
पेण्णाल्	वन्द	तन्दर	मैन्तप्	पैरुवैनो 225

मण् आळ्किन्ऱार् आति-भूमि के शासको से लेकर; विण्णोर् कारुम्-देवलोक-वासियों तक; वलत्ताल्-बल में; मदियाल्-और बुद्धिचातुर्य में; वैत्तु अण्णा निन्ऱार्-श्रेष्ठ माने जानेवालों पर; मैल्ला इकलालुम्-सभी तरह की शक्ति से; वैन्ऱ अन्नक्कु-विजय पाये हुए मुझे; अन् मत्तै वाळुम्-मेरे घर में रहनेवाली; पेण्णाल्-स्त्री द्वारा; अन्तरम् वन्तु-अन्त आ गया; अन्त पैरुवैनो-ऐसा कहा जाऊंगा क्या। २२५

हाय! भूमि के राजाओं से लेकर सुरलोकवासियों तक शारीरिक या बौद्धिक बल में बड़े समझे जानेवाले सभी को सभी रीतियों से मैंने हराया है। वैसे मेरा, मेरे ही घर की स्त्री से अन्त हो गया—इस लोकनिन्दा का भोगी हो जाऊंगा क्या? । २२५

❖ अन्ऱैन्	इन्नुम्	वन्ति	यिरङ्गु	मिडर्	तोयुम्
अन्ऱैन्	इव्वा	विन्	लुळक्कु	मुयिरुण्डो	

इन्त्रिन् रैन्नुम् वण्ण मयङ्गु मिडैयुम्बोन्
कुन्त्रोन् रौन्त्रो डौन्त्रिय देन्तक् कुवितोळान् 226

पौन् कुन्त्रु औन्त्रु-स्वर्णपर्वत एक; औन्त्रोडु-दूसरे से; औन्त्रियतु अँन्-जुड़ गया जैसे; कुवि तोळान्-पुष्ट कन्धों वाले; अँन्त्रु अँन्त्रु उन्नुम्-ऐसा-ऐसा सोचते हैं; पन्ति-कहकर; इरङ्कुम्-व्याकुल होते; इटर् तोयुम्-पीड़ामग्न हो जाते; औन्त्रु औन्त्रु औव्वा-परस्पर भिन्न; इन्नल्-शोक के विचारों से; उळक्कुम्-विक्षुब्ध होते; उयिर् उण्टो-प्राण हैं क्या; इन्त्रु इन्त्रु-नहीं, नहीं; अँन्नुम् वण्णम्-ऐसा कहने योग्य प्रकार से; मयङ्कुम्-बेसुध हो जाते; इटैयुम्-क्लांत हो जाते। २२६

दशरथजी के कन्धे ऐसे पुष्ट और शोभायमान थे जैसे दो स्वर्णपर्वत एक स्थान पर आकर मिले हों। वे ऐसी-ऐसी बातें सोचते और कहते हुए दुखी हो रहे। व्याकुलता के सागर में डूबे; अनेक तरह के शोकों से उद्विग्न हुए। ऐसे थक कर बेहोश हो गये कि प्राण हैं या नहीं यह संशय होने लगा। २२६

ॐ आळिप् पौन्त्रेर् मन्तव त्तिव्वा इयर्वैय्दिप्
पूळिप् पौन्त्रोण् मुन्त्रु मडङ्गप् पुरळ्पोदिल्
अळिर् पेंद्रा येन्त्रुरै यन्त्रे लुयिर्माय्वैन्
पाळिप् पौन्त्रार् मन्तव वैन्त्राळ् पशैय्द्राळ् 227

आळि पौन्त्रेर्-चक्रों से युक्त स्वर्णरथ के स्वामी; मन्तवन्-चक्रवर्ती; इव्वाळ-इस प्रकार; अयर्वु अँय्ति-भ्रांत होकर; पौन् तोळ् मुन्त्रुम्-स्वर्णमय कंधों पर; पूळि अटङ्क-धूलि को लगाने देकर; पुरळ् पोळ्तिल्-जब लोटे तब; पचै अर्द्राळ्-स्निग्धतामुक्त कँकैयी; पाळि-गरिमामय; पौन् तार्-स्वर्णहारधारी; मन्तव-राजा; अळिल् पेंद्राय्-(वर को) उचित रीति से प्राप्त किया; अँन्त्रु उरै-ऐसा कहिए; अन्त्रेल्-नहीं तो; उयिर् माय्वैन्-प्राणहीना हो जाऊँगी; अँन्त्राळ्-कहा। २२७

पहियों वाले स्वर्णमय रथ के स्वामी दशरथ क्लान्त होकर भूमि पर लोटे जिससे उनके स्वर्णमय कन्धों पर धूलि लग गई। तब स्नेहहीना कँकैयी ने ये वचन कहे—मूल्यवान् स्वर्णहारधारी राज्यपति! आप अपने मुख से साफ़ कहिए कि 'तुमने उचित क्रम से ही वर पाये हैं।' नहीं तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी। २२७

अरिन्दान् मुन्तोर् मन्तव नन्त्रे यरुमेन्ति
वरिन्दार् विल्लाय् वाय्मै वळर्प्पान् वरनल्हिप्
परिन्दा लैन्त्रा मँन्त्रत्तळ् पायुङ् गन्तलेपोल्
अँरिन्दा रादै यिन्नुयि रुण्णु मँरियन्त्राळ् 228

पायुम् कत्तल् पोल्-फैलती आग के समान; अँरिन्नु आराते-जलकर ठण्डा पड़े वगैर; इन् उयिर् उण्णुम्-प्यारी जान को खानेवाली; अँरि अन्त्राळ्-आग के समान

कैकेयी; वरिन्तु आर् विल्लाय्-वन्धन से युक्त धनुर्धर; मुन् ओर् मन्तवन्-
(आपके कुल में) पहले एक राजा ने; वाय्मै वळर्प्पात्-सत्यपालन के हेतु; अरु
मेत्ति-अपने मूल्यवान शरीर को; अरिन्तान् अन्ने-काटकर दिया न; वरम् नल्कि-
वर देकर; परिन्ताल्-अब पछताइये तो; अन् आम्-क्या होगा; अन्ऱत्तल्-
कहा । २२८

कैकेयी एक विचित्र आग बनी थी जो नही फैलती और जलाकर
शान्त होती पर केवल जला सकती थी ! उन्होंने राजा को याद दिलाया
कि वन्धनयुक्त धनुर्धर ! क्या आपके कुल में पहले एक राजा (शिवि) नही
हुए थे जिन्होंने वचन पालन के लिए अपने ही शरीर को काटकर दिया
था ? ऐसे वंश में उत्पन्न आप पहले वर दें और अब पछताने लगे —यह
क्या ? । २२८

ॐ वीन्दा	ळैयिव्	वैय्यव	ळैन्ता	मिडल्वेन्दन्
इन्दे	नीन्दे	निव्वर	मैन्शेय्	वनमाळ
माय्न्दे	नान्पोय्	वान्तर	शाळ्वैन्	वशवैळम्
नीन्दाय्	नीन्दाय्	निन्मह	नोडु	नैडिदैन्ऱान् 229

मिडल् वेन्तन्-शक्तिमान राजा; वैय्यवळ्-यह निर्मम स्त्री; वीन्ताळे-
(वर न दूँ तो) मर जायगी; अन्ता-यह समझकर; इ वरम्-इस वर को; ईन्तेन्-
दिया; अन् चैय् वत्तम् आळ-मेरा पुत्र जंगल का पालन करे; नान् माय्न्तु पोय्-
मैं मरकर, जाकर; वान् अरच्चु आळ्वैन्-स्वर्ग का राज करूँगा; निन् मक्तोडुम्-
अपने पुत्र के साथ; वचै वैळळम्-निन्दा की धार में; नैटितु-दीर्घ काल तक; नीन्ताय्
नीन्ताय्-तैरती रहो, तैरती रहो; अन्ऱान्-कहा । २२९

यह सब सुनकर राजा ने विश्वास कर लिया कि ये वर नही दूँ तो
अपने प्राण छोड़ देंगी । इसलिए उन्होंने दुख के साथ कह दिया कि अच्छा
मैंने वर दे दिये । मेरा पुत्र वन में जाकर उसका परिपालन करे । मैं
भी स्वर्ग जाकर उसका शासन करूँगा (वहाँ का सुख भोगूँगा ।) तुम अपने
पुत्र को साथ लेकर लोकनिन्दा के प्रवाह में तैरती रहो—बहुत काल
तक ! । २२९

ॐ कूऱा	मुन्नुम्	कूऱ	पडुक्कुड्	गौलैवाळिन्
एऱा	मैन्नुम्	वन्ऱय	राहत्	तिडैम्ळहत्
तेऱा	नाहिच्	चैय्है	मऱन्दान्	शैयन्मुऱ्ऱि
ऊऱा	निन्ऱ	शिन्दयि	नाळुन्	डुयिल्वुऱ्ऱाळ् 230

कूऱा मुन्तम्-(दशरथ के) कहने के साथ-साथ; कूऱ पडुक्कुम्-खण्ड-खण्ड
करनेवाली; कौलै वाळिन् एऱु आम्-घातक तलवारों के राजा से काटे गये; अन्तुम्-
जैसे; वन् तुयर्-प्रचण्ड पीड़ा के; आकत्तु इटै मूळक-हृदयमध्य पेंठे; तेऱान्
आकि-बेसुध होकर; चैय्कै मऱन्तान्-निष्क्रिय हो गये; चैयल् मुऱ्ऱि-अपना मनोरथ

पूर्ण होने से; ऊरा निन्नू चिन्तैयिनाळुम्—(संतोष) उमड़ता मन वाली भी; तुयिल्वु उर्राळ्—नींद में मग्न हो गई । २३०

दशरथ यह 'वर दिया' कहने के पूर्व ही (कहने के साथ-साथ) बेसुध हो गये क्योंकि उनके हृदय में ऐसा आघात लगा मानो काटकर खण्ड-खण्ड बनानेवाली अति तीक्ष्ण तलवार उनके हृदय को चीर गई हो ! वे एक दम निस्पन्द पड़े रह गये । उधर कैकेयी के मन में पूर्ण-मनोरथ होने के कारण आनन्द उमड़ आया । निश्चिन्त होकर वे सो गई । २३०

❖ शेणु लाविय नाळै लामुयि रौन्नु पोल्वत्त शैय्दुपिन्
एणु लाविय तोळि तान्निड रैय्द वौन्नु मिरङ्गिला
वाणि लान्नेहै माद राळ्शैयल् कण्डु मैन्दरमु तिङ्कवुम्
नाणि तान्नेहै वेहि तान्निळिर् कङ्गु लाहिय नङ्गये 231

चेण् उलाविय—लम्बे अरसे के; नाळ् अलाम्—सभी दिन; उयिर् औन्नु पोल्वत्त—एक ही प्राण सम; चैय्तु—व्यवहार करते रहकर; पिन्—फिर; एण् उलाविय तोळिनान्—सबल कंधों वाले पति को; इटर् अय्त—बहुत बड़ा दुख देते हुए; औन्नु इरङ्कला—कुछ भी दया न करनेवाली; वाळ् निला नकै मातराळ्—उज्ज्वल दाँतों वाली स्त्री (कैकेयी) का; चैयल् कण्डु—काम देखकर; नळिर् कङ्कुल् आकिय नङ्कै—शीतल रात्रि रूपी स्त्री; मैन्तर् मुन् निङ्कवुम् नाणिताळ्—पुरुषों के सामने खड़ा रहने से लजाती; अत्त—जैसे; एकित्ताळ्—हट गई । २३१

विवाह से लेकर इतने लम्बे काल तक कैकेयी और दशरथ एकप्राण रहे और वैसे ही व्यवहार करते रहे । अब सबल भुजाओं वाले दशरथ दुखी हैं, पर चन्द्रकला सदृश दाँत वाली कैकेयी कुछ भी नहीं पछतातीं । उनका यह काम देखकर शीतल रात्रि रूपी रमणी मानो लज्जित होकर, पुरुषों के सामने रहना नहीं चाहा हो, ऐसा हट गई । २३१

अण्ड रुङ्गडै शैन्नु याम मियम्बु हिन्नत्त वेळ्याल्
वण्डु तङ्गिय तौङ्गन् मार्वन् मयङ्गि विम्मिय वार्लाम्
कण्डु नैञ्जुक लङ्गि यञ्जिरै यान्त कामरुदु णैक्करम्
कौण्डु तम्बयि रैर्रि यैर्रि विळिप्प पोन्नत्त कोळिये 232

अण् तरुम्—गिना जानेवाला; कटै चैन्नु यामम्—दिन का आखिरी पहर; इयम्पुकिन्नत्त—बतानेवाले; कोळि—कुक्कुट; एळ्याल्—अबला द्वारा; वण्डु तङ्किय तौङ्कल् मार्वन्—भ्रमरावृत मालाधारी वक्ष वाले; मयङ्कि—भ्रमित हो; विम्मिय आळ् अलाम् कण्डु—सिसकने का प्रकार सब देखकर; नैञ्चु कलङ्कि—चित्ताकुल होकर; अम् चिरै आन्त—सुन्दर पंख रूपी; कामर् तुणै करम् कौण्डु—मनोरम हस्तद्वय से; तम् वयिर् अर्रि अर्रि—अपना पेट पीट-पीटकर; विळिप्प पोन्नत्त—मानो रोते थे । २३२

दिन के गिने हुए आठ यामों के अन्तिम याम को अपनी बाँग द्वारा

लोगों पर प्रकट करनेवाले मुर्गे अपने पंखों को जोर से मारने लगे । उसे देखकर ऐसा लगा कि नारी, कैकेयी, के कारण भ्रमरावृत मालाधारी वक्ष वाले दशरथ व्यथितमन होकर जो सिसक रहे थे उसको देखकर ये कुक्कुट दुखी होकर अपने सुन्दर पंख रूपी हाथों से छाती पीटते हुए रदन कर रहे हों । २३२

तोय्ह यत्तु मरत्तु मैन्शिरे तुळ्ळि मीदेळ् पुळ्ळैलाम्
तेय्ह(य) यौत्त मरुङ्गुन् मादर् शिलम्बि निन्ऱु शिलम्बुव
केह यत्तर शन्ब यन्द विडत्तै यिन्नदोर् केडुशूळ्
माह यत्तियै युट्को दित्तु मनत्तु वैन पोन्ऱवे 233

तोय कयत्तुम्—(पक्षी जहाँ) ठहरते है, उन तालावों में; मरत्तुम्—तरुओं पर; मैन् चिरे तुळ्ळि—कोमल पंखों को पटकते हुए; मीतु अँळु—ऊपर उठनेवाले; पुळ् अँलाम्—सभी पक्षी; तेय्कै औत्त मरुङ्कुल्—दिने-दिने क्षीण होती-सी लगनेवाली कमरों की; मातर्—स्त्रियों के; चिलम्पिन्—नूपुरों के समान; निन्ऱु चिलम्पुव—जो बोलते है; केकयत्तु अरचन् पयन्त—केकयराज जनित; विटत्तै—विष-सी; इन्नन्तु ओर् केटु चूळ्—ऐसे एक क्रूर काम करनेवाली; मा कयत्तियै—बहुत नीच गुण वाली कैकेयी पर; मत्तत्तुळ्—मन में; कौत्तित्तु—क्रोध से जलकर; वैन पोन्ऱ—गाली देते-से लगे । २३३

जलाशयों में और तरुओं पर खगगण बोलने लगे । वे अपने कोमल पंख फड़काते हुए क्षीणकटि नारियों के नूपुरों की-सी ध्वनि में बोले । उनकी वह बोली ऐसी लगती थीं मानो वे दशरथ को इतना बड़ा दुख देनेवाली, विषसमाना केकयराजतनया नीच कैकेयी को कुढ़कर गालियाँ दे रहे हों । २३३

शेम मैन्बन प्पुडि यन्बु तिरुन्द विन्ऱुयिल् शैय्दपिन्
वाम मेहलै मङ्गै योडु वन्तत्तुळ् यारुम् इक्कला
नाम नम्बि नडक्कु मैन्ऱु नडुङ्गु हित्ऱु मनत्तवाय्
यामु मिम्म णिऱत्तु मैन्बन पोर्ळु न्दन्त यात्तये 234

यानै—गज; चैयम् अँन्पत्त—सुरक्षित मान्य शालाओ में; अन्पु प्पुडि—चाह के साथ; तिरुन्त इन् तुयिल् चैयत् पिन्—खूब, सुखमय नीद सोने के बाद; यारुम् मरुक्क अल्ला—किसी के लिए भी अविस्मरणीय; नामम् नम्पि—नामी नायक; वामम् मेकलै मङ्कैयोडु—सुन्दर मेखलाधारिणी वाला (सीता) के साथ; वन्तत्तुळ् नडक्कुम् अँन्ऱु—जंगल में चले जायँगे, यह जानकर; नडुङ्कुकिन्ऱु—काँपते; मत्तत्त आय्—मन वाले हो; यामुम् इ मण् इऱत्तुम्—हम भी इस स्थल से चले जायँ; अँन्पत्त पोल्—कहते जैसे; अँळुन्तत्त—उठ खड़े रहे । २३४

हाथी अपनी गजशालाओ से रात भर सुख से सोने के बाद ऐसे उठे मानो वे 'सबसे अविस्मरणीय नामधारी श्रीराम सुन्दर मेखलाधारिणी

सीताजी के साथ जंगल चले जायँगे' —इस विचार से दहलते मन के साथ, 'हम भी इस स्थल को छोड़ जायँगे' —यह संकल्प करके उठे हों । २३४

✽ शिरित्त पङ्गय मौत्त शैङ्गणि राम नैत्तिरु मालयक्
करिक्क रम्बोरु कैत्त लत्तुयर् काप्पु नाणणि दङ्कुमुन्
वरित्त तण्गदिर् मुत्त दाहियिम् मण्ण नैत्तु निळ्ळुमेल्
विरित्त पन्दर् पिरित्त दामेन्न मोती छित्तन्न वानमे 235

चिरित्त पङ्कयम् औत्त—हँसते से कमल-सम; चैम् कण्—लाल आँखों वाले; तिरुमालै—श्रीराम के; करि करम् पोरु—गज की सूँड़ के समान; अ कै तलत्तु—उस सुन्दर हाथ में; उयर् काप्पु नाण्—श्रेष्ठ रक्षाबन्धन; अणितङ्कु मुन्—पहनने के पूर्व; इ मण् अतैत्तुम् निळ्ळु—इस भूतल भर में छाया करने के लिए; मेल् वानम्—ऊपर आकाश में; वरित्त—बनाया गया; तण् कतिर् मुत्ततु आकि—शीतल मुक्ताओं से निर्मित; विरित्त—विस्तृत; पन्तर्—पण्डाल को; पिरित्ततु आम् अन्न—खोलकर हटा दिया गया हो, जैसे; मोन् ओळित्तन्न—नक्षत्र छिप गये । २३५

आकाश के नक्षत्र ओझल हो गये । नक्षत्रशून्य आकाश को देखकर यह भास होता था कि विकसितपुण्डरीक-सम आँखों वाले श्रीराम के करिशुण्ड-से हाथ में मंगलसूचक रक्षाबन्धन के पहले इस भूतल भर में छाया देने के लिए जो शीतल प्रकाशमय मोती का पण्डाल लगाया गया था वह विस्तृत पण्डाल अब उठा दिया गया हो । २३५

नाम विरुक्कै यिराम नैत्तीळु नाळ डैन्द दुमक्कैलाम्
काम विरुकुडै कङ्गुन् मालै कळिन्द दैत्तवदु कर्पियात्
तामी लित्तन्न पेिरि यव्वील तारै मारि तळङ्गलाल्
माम यिरुकुल मैत्त वुळ्ळ मलर्न्दे लुन्दन्न् मादरे 236

उमक्कु अलाम्—तुम सभी को; कामन् विरुकु उटै—काम-धनुष से पीड़ित करनेवाली; कङ्कुल मालै कळिन्तु—रात की बेला बीत गई; नामम् विल् कं—(शत्रु-) भयंकर धनुर्हस्त; इरामनै तीळुम् नाळ्—श्रीराम को नमस्कार करने का दिन; अटैन्तु—आ गया; अन्नपतु—यह समाचार; कर्पिया—देते हुए; पेिरि ओलित्तन्न—भेरियाँ बज उठीं; अ ओलि—वह ध्वनि; तारै मारि तळङ्कलाल्—जलमेघ के शोर के समान रही, इसलिए; मा मयिल् कुलम् अन्न—श्रेष्ठ मयूर-समूह सम; मातर्—स्त्रियों का; उळ्ळम् मलर्न्तु—चित्त फूलकर; अळ्ळुन्तन्न्—उठी । २३६

भेरियाँ नर्दन कर उठीं । वे मानो स्त्रियों को यह बता रही थीं कि रात, जिसमें तुम लोग मन्मथ के धनु के सामने हार मानकर संकट उठाती रही, अब दूर हो गई और शत्रुपीडक धनुर्धर श्रीराम के दर्शन करने का दिन उदय हो गया । वह ध्वनि मेघध्वनि के समान रही और स्त्रियाँ मोरों के समान प्रसन्नमन होकर उठ गई । २३६

इत्तम् लक्कुलम् वाय्वि रित्तिळ वाश मारुदम् वीशमुन्
 पुत्तैलु हिर्कलै शोर नैञ्जु पुळुङ्गि तार्शिल पूर्वमार
 मन्तव तुक्कम् विडत्त तित्तति वळ्ळ लैप्पुणर् कळ्ळविन्
 कन्नवि तुक्किडै यूर डुक्क मयङ्गि तार्शिल कन्तिमार 237

इत्तम्-विविध; मलर् कुलम्-पुष्प-समूह को; वाय् विरित्तु-मुख खोलते हुए; वाचम् इळम् मारुतम् वीच-सुवासित मन्द पवन के वहने से; चिल पूर्वमार-कुछ रमणियों; मुन् पुत्तै-पहले वेष्टित; तुक्क्ल कलै चोर-वस्त्र और मेखला के खिसकते; नैञ्जु पुळुङ्गितार्-मन में (कामज्वर के कारण) तप्त हुई; चिल कन्तिमार-कुछ कन्याएँ; मन्तम् अतुक्कम् विट-मन का रंज दूर करके; तत्ति तत्ति-अलग-अलग; वळ्ळलै पुणर्-(श्रीराम) प्रभु को मिलकर सुख उठाने का; कळ्ळम् इन् कन्तुक्कु-झूठे और मधुर जो था, उस स्वप्न में; इटैयूड अटुकक-वाधा पड़ने से; मयङ्गितार्-व्याकुल हुई । २३७

सवेरे की सुगन्धित मन्द हवा कलियों को खिलाती हुई वहने लगी तो विवाहित स्त्रियों में कुछ लोगों को उससे वेदना हुई । उनके वस्त्र और मेखला ढीली हो गई थी । उनको खेद इसलिए हुआ कि जल्दी दिन हो गया और उनकी प्रणयेच्छा पूर्ण नहीं हुई थी । कुछ कन्याओं को इसलिए दुख हुआ कि वे श्रीराम के संग समय बिताने के स्वप्न में गगन हो रही थीं । उस मधुर और झूठे स्वप्न में वाधा पड़ गई । वे बहुत व्याकुल हुई । २३७

शाय डङ्ग नलङ्ग लन्दु तयङ्गु तन्कुल नन्मयुम्
 पोय डङ्ग नैडुङ्गी डुव्वळि कौण्ड रुम्बुहळ् शिन्दुमत्
 तीय डङ्गिय शिन्दै पाळ्शैयल् कण्डु शीरिय नङ्गैमार्
 वाय डङ्गित्त वैनन् वन्दु कुविन्द वण्कुनु दङ्गळे 238

चाय् अटङ्क-अपना गौरव खोते हुए; नलम् कलन्तु तयङ्कुम्-श्रेष्ठता के साथ रहनेवाले; तन् कुलम् नन्मैयुम्-अपने कुल का भी गौरव; पोय् अटङ्क-नष्ट हो जाय, ऐसा; नैडु कौण्ड पळि कौण्ड-दीर्घ और भयंकर अपयश लेकर; अरु पुक्क चिन्नुम्-श्रेष्ठ यश को दे देनेवाली; अ-उन; ती अटङ्किय चिन्तैयाळ्-अग्निगन्धित मन वाली कैकेयी का; चैयल् कण्डु-काम देखकर; चीरिय नङ्गैमार् वाय्-श्रेष्ठ स्त्रियों के मुख; अटङ्किन अन्न-वन्द हो गये, जैसे; वण् कुमुतङ्कळ्-प्रफुल्ल लाल कुमुद; वन्तु कुविन्तन-दलो को समेटकर वन्द हुए । २३८

दिन के आने से लाल कुमुद वन्द हुए । वे उन कुलीना स्त्रियों के मुखों के समान वन्द हुए जो, अपने और अपने कुल के गौरव का नाश करते हुए यश के बदले दीर्घ और कठोर अपयश मोल लेनेवाली, अग्निमय मन वाली कैकेयी का अनुचित कार्य देखकर लज्जा के कारण अपने मुख वन्द कर लेती हों । २३८

मौय्य राह निरम्ब वाशै मुरुङ्गु तीयिन् मुळङ्गमेल्
 वय राविय मारन् वाळियुम् वानि लानेडु वाडयुम्
 मैय्य राविड वावि शोर वेडुम्बु मादरुद मैन्शेविप्
 पैय रानुळै हित्तु पोन्नत्त पण्क तित्तेळ् पाडले 239

मौय्य अराकम् निरम्प-घना राग (काम) सरा, तो; आचै-वह इच्छा; मुरुङ्कु तीयिन्-अन्दर की आग के समान; मुळङ्क-बहुत जली, अतः; मेल्-ऊपर; वय अराविय मारन् वाळियुम्-तराशे गये और तीक्ष्ण सन्मथ-शर; वान् निला-श्वेत चाँदनी; नेडु वाटैयुम्-और लगातार बहनेवाली उदीची हवा (जाड़ा); मैय्य अराविट- (इनके) शरीरों को दुख देने से; आवि चोर-प्राण चलते से लगे; वेडुम्पुम्-तप्त; मातर् तम्-स्त्रियों के; मैन् चैवि-कोमल कानों में घुसनेवाले; पण कतिन्नु अळुम् पाटल्-रागयुक्त गाने; पै अरा-फन वाले सर्प; नुळैकिन्नु पोन्नत्त-घसते जैसे लगे । २३६

प्रातःकालीन गीत गाये जा रहे थे । वे गीत उन स्त्रियों के कर्ण-विवर में फणी सर्प के समान घुसे जिनके अन्दर काम आग के समान ज्वर दे रहा था और बाहर कामदेव के पैनाये गये शर, चाँदनी और निरन्तर बहनेवाली उदीची (ठंडी) हवा उन्हें तंग करके प्राणों को थका रही थी । २३९

आळि यान्मुडि शूडु नाळिडै यान् पावियि दोरिरा
 ऊळि यायित्त वारै तानुयर् पोदिन् मेलुडै पेदयुम्
 एळु लोहमु मैण्ड वञ्जैय्द कण्णु मैङ्गण् मनङ्गळुम्
 वाळु नाळि दैतावै लुन्दत्तर् मञ्जु तोय्बुय मैन्दरे 240

मञ्चु तोय्य पुयम्-सुन्दरता भरे कंधों के; मैन्तर्-पुरुष लोग; आळियात्-चक्रधारी; मुटि चूटुम् नाळ् इतु-मुकुट धारण करेगे, आज का दिन; पोतिन् मेलु उडै पैतैयुम्-कमल पर रहनेवाली देवी भी; अण् तवम् चैय्त-(आवश्यक) मान्य तपस्या करनेवाले; एळु लोकमुम्-सातों लोक; अङ्कळ् कण्णुम्-और हमारी आँखें; मतङ्कळुम्-मन भी; वाळुम् नाळ् अँता-जीवन (कृतकृत्य) पाने का दिन है; इटै आत्त पावि-आड़े आई पापिनी; इतु ओर् इरा-यह एक रात्रि; ऊळि आयिन् आङ्-युग समान लम्बी हो गई, किस प्रकार; अँन-कहते हुए; अँळुन्तत्तर्-उठे । २४०

मनोरम भुजा वाले पुरुष लोग यह कहते हुए उठे कि चक्रधारी विष्णु भगवान के अवतार, श्रीराम के मुकुट-धारण का दिन आज है; आज ही कमलनिवासिनी (राज्य) लक्ष्मी के लिए, उन सातों लोकों के लिए जिन्होंने श्रीराम को राजा के रूप में पाने का उद्देश्य लेकर तपस्या की थी, और इनके साथ हमारी आँखों और मनों के लिए सौभाग्य का दिन है; और बीच में पड़ी रात भी एक युग के समान कितनी लम्बी हो रही ! । २४०

ऐयु इञ्जुडर् मेति यान्नेळिल् काण् मूळु मवाविनाल्
 कौय्यु इङ्गुल माम लर्क्कुवै तित्तेळ् लुन्दत्तर् कूर्मैकूर्

नैय्यु रुज्जुडर् वेनै डुङ्गण् मुहिळ्त्तु नञ्जि नितैप्पोडुम्
पोय्यु उङ्गु मडन्दै मारुहळल् वण्डु वौम्मैन् विम्मवे 241

कूरुमै कूरु-अति तीक्ष्ण; नैय् उरुम्-और घी लगे; चुटर् वेल्-उज्ज्वल भाले-समान; नैटुकण्-आयत आँखों को; मुकिळ्त्तु-वन्द करके; नैञ्चिल् नितैप्पोडुम्-मन में (श्रीराम के) स्मरण के साथ; पोय् उरुङ्कु मटन्तैमार्-झूठी नौद सोनेवाली स्त्रियाँ; ऐ उरुम् चुटर् मेनियात्-विस्मयकारी कांतिवाले शरीर के श्रीराम को; अँळिल् काण-रूप-वैभव देखने के लिए; मूळुम् अवाविनाल्-उमड़नेवाले अनुराग के कारण; कौय् उरुम् कुलम् मा मलर् कुवै निन्ऱु-(ढेंपुनी तोड़कर) चुनकर लाये गये विविध फूलों की शय्या से; कुळल् वण्डु पौम् अँन विम्म-केश के भ्रमरों को गुंजार के साथ उठने देते हुए; अँळुन्तत्तर्-उठों । २४१

स्त्रियाँ जो तीक्ष्ण और घी-लगे भालों के समान तीक्ष्ण और आयत आँखों को वन्द किये मन में श्रीराम का ध्यान करते हुए झूठी निद्रा सो रही थीं, विस्मयविमूढ करनेवाली देह कान्तियुक्त श्रीराम के किरीट-धारण के वैभव को और उनकी सुन्दरता को देखने की प्रबल इच्छा से ढेंपुनी रहित पुष्पों की शय्या से उठी, तो उनके केशों पर लगे रहे भ्रमर भी 'भनभन' गुंजार कर उठे । २४१

आड हन्दर पूण लुन्दिड वञ्जि यञ्जि यनन्दराल्
एड हम्बौदि तार्पौ रुन्दिड याम पेरि यिशैत्तलाल्
शेड हम्बुनै कोदै मङ्गयर् शिन्दै यिर्चैरि तिण्मयाल्
ऊडल् कण्डवर् कूडल् कण्डिलर् नैयु मैन्दर्ह लुय्यवे 242

चेटु अकम् पुतै कोतै-मनोहारिणी रीति से गुंथी हुई मालाधारिणी; मडकैयर्-(पत्नी-) स्त्रियाँ; चिन्तैयिन् चैरि तिण्मयाल्-मन की दृढ़ता से; ऊडल् कण्डु-रूठती है, यह देखकर; नैयुम् मैन्तर्कळ्-संकटग्रस्त पुरुष लोग; आटकम् तरुम् पूण्-स्वर्णनिर्मित आभूषण; अळुन्तिट अञ्चि अञ्चि-(स्त्रियों के वक्ष में) दर्द करेंगे, इस डर से; अत्तन्तराल्-भ्रम के कारण; एटु अकम् पौति तार् पौरुन्तिट-पुष्पों की माला पहनते हैं, तब; यामम् पेरि इचैत्तलाल्-याम के वीतने का संकेत देनेवाली भेरी के बज उठने से; उय्य-(नैराश्य से) बच जाएँ, ऐसा; अवर्-वे; कूडल् कण्डिलर्-मिलन का आनन्द नहीं पा सके । २४२

रात को कितने ही दम्पतियों के यहाँ प्रणय-कलह हो गया था । मनोरम पुष्पमाला से अलंकृत स्त्रियाँ रूठ गईं । उनकी दृढ़ता देखकर पुरुष घबड़ा उठे और उनको मनाने के अनेक उपाय किये । उन्हें यह बात सूझी कि हमारे स्वर्णहार पत्तियों के वक्ष को दुख देंगे, इसलिए उन्हें उतारकर उन्होंने फूलों की माला पहन ली । तभी याम का संकेत देनेवाली भेरी बज गई । बेचारे अपनी पत्तियों से समागम कर नहीं पाये और उनकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई जिससे उनका दुख दूर नहीं हुआ । २४२

कळयी लित्तन वण्डी लित्तन कारी लित्तन बेरियाम्
 मुळवी लित्तन तेरी लित्तन मुत्ती लित्तन मल्हुपेर्
 इळयी लित्तन पुळळी लित्तन याली लित्तन वैङ्गणुम्
 मळयी लित्तन पोली लित्त मन्तत्तिन् मुन्दुरु वाशिye 243

अङ्कणुम्-सब जगह; कळै औलित्तन-बाँसुरियाँ बजीं; वण्टु औलित्तन-भ्रमर गुंजार कर उठे; कार् औलित्त अन्न-मेघ गरजे, जैसे; पेर् आम मुळवु औलित्तन-भेरियाँ रूपी बाजे बजे; तेर् औलित्तन-रथों की ध्वनि गूँज उठी; मुत्तु औलित्तन-मोती आपस में टकराकर ध्वनित हुए; मल्कु पेर् इळै-बहुतायत से पाये जानेवाले आभरणों ने; औलित्तन-नाद किया; पुळ् औलित्तन-पक्षीगण बोल उठे; याल् औलित्तन-वीणाएँ बजीं; मन्तत्तिन् मुन्तु उरु-मन से भी अधिक वेग के साथ जानेवाले; वाचि-अश्व; मळै औलित्तन पोल-मेघ गरजे जैसे; औलित्तन-हिनहिनाये । २४३

नगर में अनेक प्रकार के नाद हुए । विविध बाँसुरियाँ बजीं । भ्रमर गुंजार करते थे । मेघ समान भेरियाँ बजीं । रथों की घरघराहट उठी । मोती आपस में टकराकर ध्वनित हुए । बहुमूल्य आभरणों के आपस में टकराने से शब्द हुआ । पक्षीगण बोले । मनोवेग से अधिक तेज चलनेवाले अश्व मेघ-गर्जन के समान हिनहिनाये । २४३

वैय मेळुमी रेळु मारुयि रोडु कूड वळङ्गुमम्
 मैय्यन् वीरुळ् वीरन् मामहन् मेल्वि लैन्देळ कादलाल्
 नैय नैय नलम्बु लन्गळ विन्द डङ्ग नडुङ्गुवान्
 दैय्व मेत्ति पडैत्त शैयीळि पोन्म लुङ्गित दीबमे 244

वैयम्-भुवन; एळुम् ओर् एळुम्-चौदहों को; अरु उयिरोट्ट कूट-अपने मूल्यवान प्राणों के साथ; वळङ्कुम्-जिन्होंने दिया; अ मैय्यन्-वे सत्यसंध; वीरुळ् वीरन्-वीरों के वीर; मा मकन् मेल-अपने महान पुत्र पर; विळैन्तु अळु कातलाल्-उठकर बढ़ते प्रेम के कारण; नैय नैय-अधिक व्यथित होने से; पुलत्तकळ्-इन्द्रिय; नलम् अविन्तु-अपनी स्वस्थता खोकर; अटङ्क-निस्तेज हो गई; नडुङ्कुवान्-काँपनेवाले दशरथ के; तैय्वम् मेत्ति पडैत्त-दिव्य शरीर को उपलब्ध; चैय् ओळि पोल्-श्रेष्ठ दीप्ति (मन्द होती) जैसे; तीपम् मळङ्किन-दीप मन्द पड़ गये । २४४

चौदहों भुवनों को और अपने प्राणों को देनेवाले सत्यसंध और बड़े से बड़े वीर दशरथ अपने पुत्र पर अत्यधिक प्रेम रखते थे । इसलिए उनके वन में जाने की मजबूरी जो हो गई उसको लेकर वे बहुत दुखी हो गये । इसलिए उनकी इन्द्रियाँ निस्तेज हो गई । वे काँपते थे । उनके दिव्य शरीर की कान्ति जैसे मन्द हुई उसी तरह दीप भी मन्दप्रभ हो गये । २४४

वङ्गि यम्बल तेन्वि लम्बिन वाणि मुन्दिन् पाणियिन्
 पङ्गि यम्बर मङ्गुम् विम्मिन् पम्बै पम्बित पल्वहैप्

पौङ्गि यम्बल वुङ्ग इङ्गित नूवु रङ्गळपु लम्बवैण्
शङ्गि यम्बिन कौम्ब लम्बिन साम गीद निरन्दवे 245

वङ्कियम् पल-विविध वेणुवाद्य, अनेक से; तेन् विळम्पित्त-मधु (-सम) संगीत उठे; वाणि मुनित्त-उनसे पहले मौखिक जय-गीत आये; पाणियिन् पङ्कि-विविध तानों की राशियाँ; अम्परम अङ्कुम्-आकाश (भर) में सर्वत्र; विम्मित्त-भर गई; पम्पै पम्मित्त-"पम्पै" (नामक बाजा-दुंडुभी ?) नदित हुए; पल् चकै-अनेक प्रकार के; पौङ्कु इयम् पलवुम्-नाद देनेवाले बाजे, अनेक; कङ्ङुक्कित्त-बजाये गये; नूपुरङ्कळ पुलम्प-नूपुर ब्वणित्त हुए; वैण् चङ्कु इयम् पित्त-श्वेत शंख बजाये गये; कौम्पु अलम्पित्त-तुरहियाँ बजी; चाम कीतम् निरन्त-सामवेद के गीत गाये गये । २४५

फूँककर बजानेवाले अनेक वाद्यों का मधुर संगीत, मौखिक संगीत, बधार्ई के गीतों का संगीत सब सभी दिशाओं में भर गये । 'पम्पै' नाम का (दुंडुभी ?) बाजा बजाया गया । विविध उच्च स्वर के बाजे बजे । नूपुर और शंख की चूड़ियाँ खनखना उठी । शृंगियों का नाद उठा । सामवेद के गीत भी गाये गये । २४५

ॐ तूव मुर्इय कारि रुदपहै तुळळि योडिड वुळळळुम्
दीव मुर्ळु मौळित्त हन्ऱन शेय दारुधिर् तेयवैम्
बाव मुर्इय पेदै शैय्द पहेतुत्ति इत्तिनिल् वैय्यवन्
कोव मुर्इ मिहच्चि वन्दत्त तीत्त नन्गुण कुन्ऱित्तमेल् 246

चेयतु-अपने कुल के पुत्र दशरथ के; अरु उयिर् तेय-मूल्यवान प्राणों के क्षीण होने देते हुए; वैम् पापम्-कठोर पाप-कर्म; मुर्इय पेत्तै-पूर्ण जो कर चुकीं उन अवोध कैकेयी के; चैयत्त-किये हुए; पकै तिरुत्तिनिल्-शत्रुकृत्य से; कुण कुन्ऱित्त मेल्-उदयाचल पर; वैय्यवन्-किरणमाली; कोपम् मुर्इ-क्रोध में बढ़कर; मिक् चिवन्तत्तन्-अधिक लाल हो गये, ऐसा; औत्तत्तन्-लगे; तूपम् मुर्इय-धुएँ के समान सर्वत्र व्याप्त; कार् इरळ् पकै-काला अन्धकार-रात्रि; तुळळि ओटिट-लपककर भाग जाय; उळ् अळुम्-(घरों के) अन्दर जले (जो); तीपम् मुर्ळुम्-समी दीप; औळित्तु अकन्ऱत्त-गुल हो गये । २४६

उदयगिरि पर जो सूरज उग आया उसको देखकर ऐसा लगा मानो वह क्रोध से लाल हो गया हो । उसे कैकेयी के सूर्यवंशज दशरथ के प्रति शत्रु का-सा काम करने पर कोप हुआ था । उसके उदय होने पर धुएँ के समान जो अँधेरा सर्वत्र फैला था वह भाग गया ! घरों के अंदर जो दीप जलते थे वे भी बुझ गये । २४६

मूव राय्मुद लाहि मूलमु माहि जालमु माहुमत
तेव देवर् पिडित्त पोर्वि लौडित्त शेवहन् शेणिलम्
कावन् मामुडि शूड मारैळिल् काण लामैन्नु माशैक्
पावै मारुह मैन्न मुन्न मलन्द पङ्गय राशिये 247

मूवर् आय-तीन (त्रिदेव) वनकर; मुतलाकि-उनके आदि वनकर; मूलमुम् आकि-सबका आधार वनकर; जालमुम् आकुम्-प्रपंच भी जो वने रहते हैं; अ तेव तेवर्-और उन देवाधिदेव (शिवजी) का; पिटित्त-हस्तगृहीत; पोर् विल्-युद्धधनु को; ओटित्त-जिन्होंने तोड़ा वे; चेवकन्-बड़े वीर; चेण् निलम् कावल्-विस्तृत भूमि का पालन करने के लिए; मा मुटि चूटुम्-महत्वपूर्ण किरीट धारण के; अरु अळिल्-अपूर्व वैभव को; काणलाम् अंनुम्-देख सकेंगे, यह; आचै कूर्-आशायुक्त; पावैमार् मुकम् अंनुन-स्त्रियों के मुखों के समान; पङ्कयम् राचि-पंकज समूह; मुन्नत्तम् मलरन्त-पहले खिल गये । २४७

सूरज के उगने पर कमल के पुष्प स्त्रियों के मुखों के समान खिल गये । स्त्रियों के मुख क्यों खिले ? जो त्रिदेव, त्रिदेव के प्रधान, और त्रिदेव के आदि और प्रपंच के आधार देवाधिदेव और श्री शिवजी के युद्ध-धनुष को तोड़नेवाले श्रीराम के, विस्तृत भूमि के पालन के लिए किरीट-धारण करने की शोभा और वैभव को देखने की आशा से स्त्रियों के मुख खिले थे । २४७

इत्त वेलयि तेळु वेलयु मौत्त पोल विरैत्तैळुन्
दन्त मानहर् मैन्दत् सामुडि शूडुम् वैह लिदामैत्तात्
तुन्नु काद इरप्प वन्दवै शौल्ल लाम्बवै यैम्मत्तोर्क्
कुन्त लावन वल्ल वैन्निनु मुर्उ पेरुडि युणर्त्तुवाम् 248

इत्त वेलैयिन्-ऐसी वेला में; मैन्तन्-कुमार के; मा मुटि चूटुम् वंकल्-श्रेष्ठ मुकुटधारण करने का दिन; इतु आम् अंता-आज ही है, इसकी; तुन्नु कातल्-भरी उमंग के; तुरप्प-प्रेरित करने से; अन्त मा नकर्-उस बड़े नगर के सभी वासी; एळु वेलैयुम् औत्त पोल-सातों समुद्र मिल गये जैसे; इरैत्तु अंळुन्तु-आनन्दरव करते हुए उठकर; वन्तवै-जो आये उसका; शौल्लल् आम् वर्क- (विस्तार से) कहने का प्रकार; यैम्मत्तोर्क्कु-हम जैसों के लिए; उन्तल् आवत्त अल्ल-सोचने के लिए सुलभ नहीं है; अंन्तित्तुम्-तो भी; उर्उ पेरुडि-भरसक; उणर्त्तुवाम्-समझायेंगे । २४८

ऐसी स्थिति में उस महान नगर के वासी आकर भीड़ लगाने लगे । चक्रवर्ती के पुत्र श्रीराम मूल्यवान किरीट को आज ही धारण करेंगे —यह जानकर उस उत्सव को देखने की इच्छा से प्रेरित होकर, सातों समुद्रों के मिल आने के समान, शोरगुल के साथ उनका एकव होना, कवि कहते हैं, हमारे लिए वर्णनातीत है ! तो भी भरसक उसका वर्णन करेंगे । २४८

कुञ्जर मत्तैयार् शिन्दय्हाँ लिळैयार्, पञ्जिह् ळणिवार् पाल्वळै तैरिवार्
अञ्जन मैन्वा लम्बुह् लिडये, नञ्जिनै विडुवार् नाण्मलर् पुनैवार् 249

कुञ्चरम् अत्तैयार्-गज-सम (मत्त) पुरुषों के; चित्तुं कौळ्-मन हरनेवाली; लिळैयार्-तरण रमणियाँ; पञ्चिकळ् अणिवार्-लाक्षारस लगाती हैं; पाल् वळै तैरिवार्-दुग्ध-सम श्वेत चड़ियाँ चुनकर पहनती हैं; अञ्चतम् अंन-अंजन के नाम

से; वाळ् अम्पुकळ् इटै-तलवारों और वाणो (सी आँखों) में; नव्चित्तै इटुवार्-विष लगा लेती हैं; नाळ् मलर् पुनैवार्-उसी दिन खिले फूल पहनतीं । २४६

तरुणियो का व्यवहार देखिये । कुंजर-सम तरुणों के मन को हरने-वाली तरुणियों ने पैरों में महावर लगाया । शंख की बनी चूड़ियाँ चुनकर पहनी । अंजन कहकर विष को तलवारों और शरों के समान अपनी आँखों में लगा लिया । उसी दिन विकसित पुष्प पहन लिये । २४९

पौङ्गिय	वुवहै	वैळ्ळम्	पौळितरक्	कमलम्	पूतत्
शङ्गयिन्	मुहत्तार्	नम्वि	तम्विय	रन्नैय	रानार्
शङ्गय	नरव	मान्दिक्	कळिप्पन	शिवणुड्	गण्णार्
कुङ्गुमच्	चुवडु	नौङ्गाक्	कुववुत्तोद्	कुमर	रैल्लाम् 250

नरवम् मान्ति-मधु पीकर; कळिप्पन-मुदित; चैम् कयल् चिवणुम् कण्णार्-अच्छी ("कयल" को) मछली-सम मत्त आँखों वालियों का; कुङ्कुमम् चुवटु नौङ्का-कुंकुम का लगा चिह्न जिनसे धुला नहीं है; कुववु तोळ्-वे पुष्ट कंधों वाले; कुमरर् रैल्लाम्-तरुण पुरुष, सब; कमलम् पूतत्-कमल-सम प्रफुल्लित; चट्क् इल् मुक्त्तार्-कपट-रहित मुख वाले होकर; पौङ्किय-उमड़ा हुआ; उवक्कै वैळ्ळम्-आनन्द का प्रवाह; पौळि तर-अश्रु के रूप में बहाते हुए; नम्पि-नायक श्रीराम के; तम्पियर् अनैयर् आनार्-छोटे भाइयों के समान हो गये । २५०

तरुण लोग ऐसे थे जिनके कंधों से कुंकुम का चिह्न नहीं छूटा था । शहद पीकर मत्त रहनेवाली 'कयल' नामक मछलियों के समान जिनकी आँखें थीं उन तरुणियों के वक्ष पर लगा था वह कुंकुम ! वे पुष्ट कंधों वाले तरुण लोग निष्कपट मुख और आनन्दाश्रु बहानेवाली आँखों के साथ श्रीराम के छोटे भाइयों के समान बन गये (अत्यन्त आनन्दित हो गये ।) । २५०

❀ मादरहळ्	कड्पिन्	मिक्कार्	कोशलै	मन्नत्तै	यौत्तार्
वेदियर्	वशिट्ट	नौत्तार्	वेळ्ळ	माद	रैल्लाम्
शौदयै	यौत्ता	रन्ता	डिरुविनै	यौत्ता	ळव्वूर्च्
चादुहै	मान्द	रैल्लान्	दयरदन्	रन्नै	यौत्तार् 251

अ ऊर्-उस (अयोध्या) नगर में; कड्पिल् मिक्कार् मातरकळ्-विवाहिता बड़ी उम्र की स्त्रियाँ; कोचलै मन्नत्तै औत्तार्-कौसल्यादेवी के-से मन वाली हो रहीं; वेळ्ळ मातर रैल्लाम्-अन्य सभी (कन्या) स्त्रियाँ; चीतैयै औत्तार्-सीताजी के समान हो गई; अन्नाळ्-वे सीता; तिरुवित्तै औत्ताळ्-लक्ष्मीदेवी के समान हो गई; चातुक्कै मान्तर रैल्लाम्-साध (उम्र में बड़े) पुरुष सभी; तयरतन् तन्नै-दशरथ से; औत्तार्-तुल्य रहे; वेतियर् वचिट्टर् औत्तार्-वेदज्ञ विप्र वशिष्ठ से जुले । २५१

उमर में बड़ी सभी गृहिणियाँ (सधवाएँ) कौसल्यादेवी के समान

(मुदित) हुई। अन्य कन्याएँ सीता-सम हुईं। वे सीता भगवती श्रीलक्ष्मी के समान शोभीं। वयोवृद्ध साधू लोग दशरथ के समान रहे। और वेदपाठी सभी ब्राह्मण लोग वसिष्ठजी के समान हो रहे थे। २५१

❖ इमिळ्तिरैप् परवै जाल मँङ्गणुम् वरुमै कूर
उमिळ्वदौत् तुदवु काद लुन्दिड वन्द दन्त्रे
कुमिळ्मुलैच् चीदै कौण्गन् कोमुडि पुनैदल् काण्बान्
अमिळ्दुणक् कुळुमु हिन्ऱु वमररि नरश वैळ्ळम् 252

अरच वैळ्ळम्-राजाओं की बड़ी भीड़; कुमिळ् मुलै चीतै कौण्गन्-कलशस्तनी सीता के पति के; को मुडि पुनैतल् काण्बान्-राजमुकुट धारण करने को देखने के लिए; उमिळ्वदु औत्तु-बाहर प्रकट होते से; उतवु कातल्-उमड़ते प्रेम के; उन्तिट-प्रेरित करने से; इमिळ् तिरै परवै जालम् अँङ्कणुम्-ध्वनियुक्त लहरों वाले समुद्र से वलयित पृथ्वी के सभी स्थानों को; वरुमै कूर-रिक्त बनाकर; अमिळ्त्तु उण-अमृत अशन करने; कुळुमुकिन्ऱु अमररिन्-एकत्र होनेवाले देवों के समान; वन्तु-आने लगी। २५२

राजाओं की भीड़ अत्यधिक थी। उनके मन में मनोरम उरोज वाली सीताजी के पति, श्रीराम के मुकुटधारण के उत्सव को देखने की प्रवर्ण लालसा रही। उससे प्रेरित होकर वे आ गये। संसार के अन्य भाग सभी रिक्त हो गये। वे राजा लोग उन देवों के समान अयोध्या में आने लगे जो अमृत का अशन करने के लिए क्षीरसमुद्र पर गये थे। २५२

पाहियल् पवळच् चैव्वाय्प् पणैमुलैप् परवै यल्हुल्
तोहयर् कुळामु मैन्दर् शुम्मयुन् दुवन्ऱि यँङ्गुम्
एहुमि त्रेहु मैन्ऱैन् रिडैयिडै निन्ऱु लल्लाल्
पोहलर् मीळ्ह लिल्लार् पौन्ऱहर् वीदि यँल्लाम् 253

पौन् नकर्-लक्ष्मी के (वासस्थान, उस) नगर में; वीति यँल्लाम्-सभी सड़कों पर; पाकु इयल्-चाशनी का मधुर स्वभाव; पवळम् चैम् वाय्-और प्रवाल-सी लालिमा से युक्त मुख; पणै मुलै-पीन स्तन; परवै अलकुल्-विशाल नितम्ब; तोकैयर् कुळामुम्-कलापी-सी आभावाली स्त्रियों की भीड़ और; मैन्ऱै चूमैयुम्-पुरुषों की भीड़; अँङ्कुम् तुवन्ऱि-सर्वत्र भरकर; एकुमिन् एकुम्-चलिए, चलो; अन्ऱु अन्ऱु-कहते-कहते; इटै इटै निन्ऱल् अल्लाल्-यत्र-तत्र खड़ी ही रहती है, उसके सिवा; पोकलार्-आगे बढ़ नहीं पाते; मीळ्कल् इल्लार्-पीछे भी मुड़कर जा नहीं पाते। २५३

श्रीलक्ष्मी के वास के उस नगर की वीथियों में स्त्रियों और पुरुषों की बड़ी भारी भीड़ लग गई। स्त्रियाँ सुन्दर थीं। वे चाशनी-सम मधुर बोली वाली और प्रवाल-सम लाल अधर-होंठ वाली रमणियाँ थीं। उनके स्तन पीन थे और नितम्ब-प्रदेश विशाल। भीड़ के लोग कहते कि

“वढ़ो आगे, स्थान दो”; पर वे न आगे वढ़ पाते हैं, न पीछे मुड़ पाते हैं। उनको खड़ा रहना ही पड़ता है। इतनी भारी भीड़ थी। २५३

वेन्दरे	पैरिदेंन्	वारुम्	वीररे	पैरिदेंन्	वारुम्
मान्दरे	पैरिदेंन्	वारु	महळिरे	पैरिदेंन्	वारुम्
पोन्ददे	पैरिदेंन्	वारुम्	पुहुवदे	पैरिदेंन्	वारुम्
तेरन्ददे	तैरिव	दल्लाल्	यावरे	तैरिय	वल्लार् 254

वेन्दरे पैरितु अन्पारुम्-राजाओं की संख्या ही अधिक है, कहनेवाले; वीररे पैरितु अन्पारुम्-और वीरों की भीड़ ही बड़ी, कहनेवाले; मान्तरे पैरितु-पुरुषों की भीड़ बड़ी; अन्पारुम्-कहनेवाले; महळिरे पैरितु-स्त्रियों का समूह ही विशाल है; अन्पारुम्-कहनेवाले; पोन्तते पैरितु-आगत लोगों की संख्या बड़ी; अन्पोडुम्-कहनेवाले; पुकुवते पैरितु अन्पारुम्-आनेवाले लोग ही अधिक कहनेवाले; तेरन्दते तैरिवतु अल्लाल्-अपने देखे हुएों की ही जानते हैं, उसको छोड़; तैरियवल्लार् यावर्-संपूर्णता जाननेवाले कौन है। २५४

उस भीड़ को देखकर लोग कहते हैं कि राजाओं की भीड़ ही बड़ी है। सेना-वीरों की संख्या अधिक है; पुरुष लोगों की भीड़ बड़ी है; स्त्रियों का समूह ही विशाल है; जो आ चुके उनकी भीड़ भारी है; नहीं-नहीं जो आनेवाले हैं उनकी संख्या ही अधिक है। इस तरह लोग अपनी-अपनी जानकारी के आधार पर अनुमान लगा रहे थे। वहाँ कौन थे जो संपूर्ण भीड़ को देखकर बता सकें ?। २५४

कुवळयि	नैळिलुम्	वेलिन्	कौडुमयुड्	गुळैत्तुक्	कूट्टिट्
तिवळुमज्	जत्तमैन्	इय्न्द	नञ्जिनैन्	तैरियत्	तीट्टिट्
तवळवीण्	मदियिन्	वैत्त	तन्मशा	उडङ्ग	णल्लार्
तुवळुनुण्	णिडया	राडुन्	दोहयिन्	कुळात्तिड्	रौक्कार् 255

कुवळयिन् नैळिलुम्-नील कुवलय की छटा; वेलिन् कौडुमैयुम्-भाले की क्रूरता; गुळैत्तु कूट्टि-मिलाकर घोलकर; तिवळुम-बने रहे; अञ्चत्तम् अन्नु एय्न्त-‘अंजन’ नाम के साथ, रहनेवाले; नञ्चित्तै-विष को; तैरिय तीट्टि-दरसाते हुए लगाकर; तवळम् ओळ् मतियिन् वैत्त-श्वेत, उज्ज्वल चन्द्र पर जड़ित-सी; तन्मै चाल्-दृश्यवाली; तटम् कण्-विशाल आँखों की; नल्लार्-स्त्रियाँ; तुवळुम् नुण् इट्टैयार्-लचकाती पतली कमरवाल्याँ; आटुम् तोकैयिन् कुळात्तिन्-पंख फँलाकर नाचनेवाले मोरों के झुण्डों के समान; तौक्कार्-आ एकत्र हुई। २५५

पतली कमर वाली स्त्रियाँ नाचते मोरों के समान आ जुट गई। उनका शृंगार देखिये। नील कुवलय का रूप और भाले की क्रूरता से युक्त अंजन नामक विष को उन्होंने अपनी आँखों में लगा लिया है! उनको एक श्वेत, उज्ज्वल चन्द्र पर जड़ित कर लिया हो ऐसा उनका मुख है। उन आँखों की वे स्त्रियाँ अपनी कमर लचकाती आई है। २५५

नलङ्गिळर्	भूमि	यैन्तु	नङ्गयै	नरुन्तु	ळायिन्
अलङ्गलान्	पुणरुञ्ज	जैल्वङ्	गाणवन्	दडैन्दि	लादार्
इलङ्गयि	तिरुद	रेमर्	रीरैळु	पुवन्त	तुळ्ळ
विलङ्गलु	मरमु	मादि	वेरुळ	पौरुळ्ह	ळैल्लाम् 256

नलम् किळर्-अच्छाद्यों से युक्त; भूमि अँन्तुम् नङ्कैयै-भूमि रूपी देवी को; नरु तुळायिन् अलङ्कलान्-सुगन्धित तुलसी-मालाधारी; पुणरुम्-जो मिलते हैं उस; जैल्वम् काण-वैभव को देखने के लिए; वन्तु अटैन्तिलातार्-जो अभी तक नहीं आ पहुँचे; इलङ्कैयिल् निरुतरे-लंका के राक्षस ही; मरु-उनके अलावा; ईर् एळु पुवन्तु-दो के सात (चौदह) भुवनों के; उळ्ळ-रहनेवाले; विलङ्कलुम् मरमुम् आति-पर्वत, पादप आदि; वेरु उळ्ळ-(मानव देवादि से) भिन्न; पौरुळ्कळ् अँल्लाम्-निर्जोव पदार्थ सभी । २५६

इस बड़ी भीड़ में दुनिया के सभी थे । पर कौन नहीं थे ? सौभाग्य-दायिनी पृथ्वीदेवी को तुलसीमाला-धारी श्रीराम वरमाला पहनानेवाले हैं । उस उत्सव को देखने के लिए जो नहीं आये, वे लंका के राक्षस ही थे । उनके अलावा चौदहों भुवनों के पर्वत और वृक्ष नहीं आये क्योंकि वे स्थावर थे । २५६

चन्दिर्	कोडि	यैन्तु	तरळवैण्	कविहै	योङ्ग
अन्दिर्	तन्त	मैल्ला	मार्न्दैतक्	कवरि	तुन्त
इन्दिर्	कुवमै	शालु	मिरुनिलक्	किळव	रैल्लाम्
वन्दर्	मवुलि	शूट्टु	मण्डव	मरविर्	पुक्कार् 257

इन्तिर्कु उवमै चालुम्-इन्द्र से उपमेय; इरु निलम् किळवर् अँल्लाम्-बड़े पृथ्वी भागों के अधिपति लोग; चन्तिर् कोडि अँन्त-करोड़ों चन्द्र हों ऐसे; तरळम् वैण् कुटैकळ् ओङ्क-मोती के छत्रों के ऊपर रहते; अन्तम् अँल्लाम्-संसार के सभी हंस; अन्तरत्तु आर्न्त-आकाश में भर गये; अँन्त-ऐसा; कवरि तुन्त-चामरों के साथ; वन्तर्-आये; मवुलि चूट्टुम् मण्डपम्-मुकुट-धारण के मण्डप में; मरपिन् पुक्कार्-क्रम के अनुसार पहुँचे । २५७

सभी महीपति अभिषेक के मण्डप में आ पहुँचे । उनके आने का ठाठ कैसा था ? उनके करोड़ों छत्र, करोड़ों चंद्रों के समान थे । चामरों की संख्या इतनी थी और उनका डुलना ऐसा लगता था मानो संसार भर के हंस उधर आ गये हों । उन राजाओं से इन्द्र भी उपमित हो सकते थे ! वे सब अपनी-अपनी मर्यादा के क्रम के अनुसार आ पहुँचे । २५७

मुर्पयन्	दंडुत्त	कादर्	पुदल्वन्तै	मुरैयि	नोडुम्
इर्पयन्	शिरुप्पिप्	पारि	तीण्डिय	वुवहै	तूण्ड
अर्पुदन्	तिरुवैच्	चेरु	मरुमण्ड्	गाणप्	पुक्कार्
नर्पयन्	इवत्ति	नुय्क्कु	नान्मरैक्	किळव	रैल्लाम् 258

तवत्तिन्-तपोबल से; नल् पयन् उयक्कुम्-श्रेष्ठ उपकार (संसार को) करनेवाले; नाल मरै किल्लवर् अल्लाम्-चारों देवों के ज्ञाता सभी ब्राह्मण; मुन् पयन्तु अटुत्त-पहले जनाये; कातल् पुतलवत्तै-प्यारे पुत्र को; मुरैयिनोटुम्-विधिवत्; इल् पयन् चिऱप्पिप्पारिन्-गृहस्थ धर्म में (प्रवेश कराके) गौरव दिला रहे हों, जैसे; ईण्टिय उवकै तूण्ट-उमड़नेवाले प्रेम से प्रेरित होकर; अरुपुतन्-अद्भुत कुमार श्रीराम के; तिरुवै चेरुम्-(राज्य-) श्री के साथ मिलने के; अरु मणम्-श्रेष्ठ विवाह को; काण पुक्कार्-देखने के लिए (मण्डप में) पहुँचे। २५८

वेदपाठी ब्राह्मणों का आनन्द भी अधिक था। अपनी तपस्या के फल को लोक-हितार्थ समर्पण करनेवाले वे ऐसे आनन्दित हुए मानो वे अपने ज्येष्ठ पुत्र को वैवाहिक जीवन में प्रवेश करा रहे हों जिससे उसका और लोक का सौभाग्य बढ़े ! वे भी श्रीराम तथा भूमिदेवी का विवाह (राज्याभिषेक) देखने की इच्छा से प्रेरित होकर मण्डप में आ पहुँचे। २५८

विण्णवर्	विशुम्बु	तूरत्तार्	विरितिरै	युडुत्त	कोल
मण्णवर्	तिशैह	डूरत्तार्	मङ्गल	मिशैक्कुञ्	जङ्गम्
कण्णहन्	मुरशितोदै	कण्डवर्	शैविह	डूरत्त	
अण्णरुड्	गन्तह	मारि	यैळुतिरैक्	कडलुन्	दूरत्त 259

विण्णवर् विचुम्पु तूरत्तार्-देवों से आकाश भर गया; विरि तिरै उटुत्त-विस्तृत सागर वेष्टित; कोलम्-सुन्दर; मण्णवर्-पृथ्वी के लोगों ने; तिचैकळ तूरत्तार्-दिशाओं को भर दिया; मङ्गलम् इचैक्कुम्-मंगलस्वन; चङ्गम्-शंख; कण् अकल्-विशाल "आँख" के; मुरचिन् ओतै-ढोल का नाद; कण्टवर् चैविकळ तूरत्त- (इन्होंने) दर्शन करने के लिए आगतों के कान भर दिये; अण्ण अरु-अमाप; कन्नकम् मारि-कनक वर्षा; यैळुतिरै-उठनेवाली लहरों से पूर्ण; कडलुम् तूरत्त-समुद्र को भर गई। २५९

आकाश देवों से भर गया। सागरवसना भूमि के लोगों से दिशाएँ भर गई। मंगलमय शंखनाद और विशाल चमड़े के ढोलों के नाद से आगतों के कान भर गये। कनक-वर्षा जो लोगों के द्वारा की गई उससे लहरसंकुल (या सातो) सागर भर गये। २५९

विळक्कोळि	मरैत्तु	मन्नर्	मिन्नोंळि	महुड	कोडि
तुळक्कोळि	विशुम्बि	नूरुञ्	जुडरयु	मरैत्तुच्	चूळन्द
अळक्कर्	वैण्	मुत्त	मूरन्	मुखला	रणियिन्
वळैक्कला	मैन्ऱव्	वात्तोर्	कण्णयु	मरैत्त	वन्ऱे 260

मन्नर्-महीपतियों के; मिन् ओळि-विद्युत-सी छटा वाले; मकुटम् कोटि-करोड़ों फिरीटों के; तुळक्कु ओळि-हिलने से उत्पन्न प्रकाश; विळक्कु ओळि मरैत्तु-दीपों का प्रकाश मन्द करके; विचुम्पिन् ऊरुम्-आकाशचारी; चुट्टरैयुम् मरैत्तु-सूर्य को भी छिपाते हुए; चूळन्त-(सर्वत्र) फैल गया; अळक्कर्-समुद्र में उत्पन्न;

वैष्णु मुत्ततम् मूरल्-श्वेत मुक्ता-सम दातों और; मुख्वलार्-मन्दहास वाली स्त्रियों के; अणियिन् चोति-आभरणों की दीप्ति ने; वळैककलाम् अँनू-उनको भी घेर लेंगे, इस विचार के साथ; अ वान्तोर् कण्णैयुम्-उन देवों की आँखों को भी; मरैत्त-चौंध से भर दिया । २६०

आगत करोड़ों राजाओं के मुकुटों का हिलनेवाला प्रकाश दीपों को निस्तेज बनाते हुए, आकाशचारी सूर्य की प्रभा को भी छिपाते हुए सर्वत्र फैल गया । उन मुक्तादात वाली मन्दहासिनी स्त्रियों के आभरणों की उन्मुक्त आभा ने देवों को भी घेर लेती हुई उनकी आँखों को मीच दिया । २६०

ॐ आयदो	रमैदि	यिन्ग	णैयनै	महुडञ्	जूट्टर्
केयुमङ्	गलङ्ग	ळान्न	यावयु	मियैयक्	कौण्डु
तूयनान्	मरैहळ्	वेद	पारहर्	शौल्लत्	तौल्लै
वायिल्ह	णैरुक्क	नोङ्ग	मादवक्	किळवन्	वन्दान् 261

आयतु ओर् अमैतियिन् कण्-ऐसे समय में; मा तवम् किळवन्-महान तपोधन वसिष्ठ; ऐयनै-प्रभु श्रीराम को; मकुटम् चूट्टर्कु एयुम्-मुकुट धारण करने के लिए योग्य; मङ्कलङ्कळ् आन्न यावैयुम्-मंगल द्रव्य सब; इयैय कौण्डु-उचित प्रकार से लेकर; वेतम् पारकर्-वेदपारगों के; तूय नाल् मरैकळ् चौल्ल-पवित्र वेदों का पाठ करते; तौल्लै वायिल्कळ्-प्राचीन द्वारों में; नैरुक्कम् नोङ्क-भीड़ के स्थान देते; वन्तान्-आये । २६१

ऐसे समय में महान तपोधन वसिष्ठजी श्रीराम के मुकुटधारण के कार्य के लिए आवश्यक और योग्य मंगलपदार्थ लेते हुए मंडप में आये । उनके साथ वेदपारंगत ब्राह्मण आये । द्वारों में जो भीड़ थी उसने इनके लिए रास्ता छोड़ा । २६१

ॐ गङ्गये	मुदल	वाहक्	कन्त्तियो	राय	तीरुत्त
मङ्गलप्	पुनलु	नालु	वारियि	नीरुम्	वूरित्
तङ्गियिन्	वित्तैहट्	केरु	यावयु	ममैत्तु	वीरच्
चिङ्गवा	दनमुम्	वैत्तुच्	चैय्वन्न	पिरुवुञ्	जैय्दान् 262

कङ्कैयै मुतलवाक्-गंगा से लेकर; कन्त्ति ईरु आय-“(कुमारी) कन्या” नदी तक के; तीरुत्तम्-नदियों के; मङ्कलम् पुनलुम्-पुण्यसलिल को; नालु वारियिन् नीरुम्-चारों ओर के समुद्रजल को; पूरित्तु-घटों में भरकर; अङ्कियिन् वित्तैकट्कु- (अग्नि) होम-कार्य के लिए आवश्यक सब; अमैत्तु-सँभालकर; वीरम् चिङ्क आततम्-वीरसिंहासन भी; वैत्तु-लगाकर; चैय्वन्न पिरुवुम्-करणीय सब; चैय्तान्-किया (वसिष्ठजी ने) । २६२

वसिष्ठजी ने गंगा (यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी) और कुमरी (दक्षिण की नदी जो, कहते हैं, समुद्र के अन्दर समा

गई है) की नदियों के जल, और चारों दिशाओं के समुद्रों के जल को कलशों में भर रखा। होम-कार्य के लिए (अक्षत, दर्भ, समित, घी, कलछी आदि) उपकरण संभालकर रखा। फिर एक वीरोचित सिंहासन डलवाकर अन्य आवश्यक तैयारियाँ कीं। २६२

❖ कणिदन् लुणर्न्द मान्दर् कालम्बन् दडुत्त दैन्तप्
पिणियर् नोर्ऱु निन्ऱ पेरियवन् विरैवि नैय्दि
मणिमुडि वेन्दन् इन्नै वल्लयिर् कौणर्दि यैन्नप्
पणिदलै निन्ऱ कादर् चुमन्दिरन् परिविर् चैन्ऱान् 263

कणितम् नूल् उणर्न्त मान्त्-ज्योतिष-शास्त्री (लोगों के); कालम् बन्तु अटुत्तु-मुहूर्त आ गया; अैन्त-कहने पर; पिणि अर्-(भव-) रोग से मुक्ति पाने के लिए; नोर्ऱु निन्ऱ-तपस्या करके रहनेवाले; पेरियवन्-महात्मा के; विरैविन् अैय्ति-सत्वर जाकर; मणि मुडि वेन्तन् तन्नै-रत्नकिरीटधारी चक्रवर्ती को; वल्लैयिल् कौणर्ति-शीघ्र लिवा लाइए; अैन्त-कहने पर; पणि तलै निन्ऱ-आज्ञा शिरोधार्य करके; कातल् चुमन्तिरन्-सबके स्नेहपात्र सुमन्त्र; परिविन् चैन्ऱान्-श्रद्धा के साथ गये। २६३

ज्योतिष-शास्त्रियों ने सावधान किया कि मुहूर्त आ गया है। तब भव-रोग-मुक्ति के लिए जिन्होंने तपस्या की उन वसिष्ठजी ने सुमन्त्र से कहा कि जल्दी चलिए और रत्नकिरीटधारी चक्रवर्ती दशरथ को यहाँ लिवा लाइए। सबके स्नेह-पात्र सुमन्त्र भी उस शासन को शिरोधार्य करके बड़ी उमंग के साथ गये। २६३

❖ विण्डौड निवन्द कोयिल् वेन्दर्दम् वेन्दन् इन्नैक्
कण्डिलन् वित्तवक् केट्टान् कैयळ् कोयि नण्णिक्
तौण्डैवाय् मडन्दै मारिर् चौल्लमर् इवरुन् जौल्लप्
पैण्डिरिर् कूर्ऱ मन्नाळ् पिळ्ळैय् कौणर्ह वेन्ऱाळ् 264

विण् तौट निवन्त-आकाश को छूता उन्नत; कोयिल्-महल में; वेन्तर् तम् वेन्तन् तन्नै-राजाधिराज को; कण्डिलन्-न पाकर; वित्तव-पूछने पर; केट्टान्-(उनका उत्तर) सुनकर; कैयळ् कोयिल् नण्णि-कैकेयी के महल में जाकर; तौण्डैवाय् मडन्तै मारिल्-विम्बफलाधरा दासियों से; चौल्ल-(सूचना देने को) कहा, तब; अवरुम्-उन्होंने भी; चौल्ल-(कैकेयी के पास) कहा, तब; पैण्डिरिल् कूर्ऱम् अन्नाळ्-स्त्रियों में यमदेव-सी उन्होंने; पिळ्ळैयै कौणर्क-सुत को लाओ; अैन्ऱाळ्-कहा। २६४

सुमन्त्र पहले दशरथ के आकाशस्पर्शी महल में गये। वे वहाँ नहीं मिले। वहाँ रहनेवालों से पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया। उसको सुनकर वे कैकेयी के महल में गये। द्वार पर रुककर उन्होंने विम्बफलाधरा दासियों द्वारा अन्दर समाचार भेजा। स्त्रियों में यम के समान जो रहीं उन कैकेयी ने आज्ञा सुनाई कि सुत को यहाँ ले आइए। २६४

* अँन्रन ठँनक् केट्टा तँळुन्दपे रुवहै पौङ्गप्
 पौन्ऱिणि माड वीदि पौरुक्कैत नीड्गिप् पुक्कान्
 तन्ऱिरु वुळ्ळत् तुळ्ळे तन्तये निनैयु मऱ्ऱक्
 कुन्ऱिवर् तोळि नानैत् तौळुदुवाय् पुदैत्तुक् कूरुम् 265

अँन्रतळ्-कहा तो; अँन्रत केट्टान्-उतना सुनकर; अँळुन्त पेर् उवकै-
 उठा बड़ा आनन्द; पौङ्क-उमड़ आया, तव; पौन् तिणि माटम् वीति-स्वर्णनिमित्त
 सौधों से भरी वीथी में; पौरुक्कैत-झट से; नीड्कि-पार करके; पुक्कान्-
 (श्रीराम के महल में) प्रविष्ट हुए; तन् तिरु उळ्ळत्तु उळ्ळे-अपने मन में; तन्तये
 नित्तैयुम्-आत्मा का ध्यान लगाते हुए रहनेवाले (स्वात्मध्यान-मग्न); अ कुन्ऱु इवर्
 तोळित्ततै-गिरितुल्य कंधे वाले को; तौळुतु-नमस्कार करके; वाय् पुतैत्तु-मुख पर
 हाथ रखकर; कूरुम्-बोले । २६५

सुमन्त्र ने उतना सुना तो समझ लिया कि श्रीराम को मुकुटधारण के
 लिए ही बुलाया जा रहा है । उन्हें अपार आनन्द हुआ । वे बहुत शीघ्र
 स्वर्णमय सौधों से शोभित राजमार्ग पार करके श्रीराम के भवन में पहुँचे ।
 वहाँ श्रीराम आत्मध्यानमग्न थे । उन गिरितुल्य कंधों वाले श्रीराम को
 नमस्कार करके सुमन्त्र अपने मुख पर उँगलियाँ रखते हुए (मुख के सामने
 हाथ रखना विनय प्रदर्शन का शिष्टाचार है) बोले । २६५

* कौऱ्ऱवर् मुनिवर् मऱ्ऱुङ् गुवलयत् तुळ्ळा रुत्तैप्
 पँऱ्ऱवन् इन्नैप् पोलप् पँरुम्बरि वियर्ऱि निन्ऱार्
 शिर्ऱवै तानु माङ्गे कौणर्हैत्तच् चैप्पि ताळप्
 पौऱ्ऱड महुडज् जूडप् पोदुदि विरैवि तैन्ऱान् 266

कौऱ्ऱवर्-राजा लोग; मुनिवर्-मुनिगण; मऱ्ऱुम्-और; गुवलयत्तु उळ्ळार्-
 भूतलवासी; उन्नै पँऱ्ऱवन्नै पोल-आपके जनक पिता के समान; पँरु परिवु इयर्ऱि-
 बड़े प्रेम के साथ; निन्ऱार्-खड़े हैं; चिऱु अव्वैयुम्-छोटी माता भी; आङ्कु
 कौणर्क अँत-वहाँ लिवा लाने को; चैप्पिताळ्-कहा है; अ पौन् तट मकुटम् चूट-
 उस स्वर्ण के बड़े मुकुट को धारण करने के लिए; विरैविन् पोतुति-शीघ्र आइए;
 अँन्रान्-(सुमन्त्र ने) कहा । २६६

राजकुमार ! वहाँ राजा लोग, मुनिगण, और संसार के सभी लोग
 आपके ही पिता के समान आनन्दभरे होकर आपकी प्रतीक्षा में खड़े हैं ।
 आपकी छोटी (सौतेली) माता ने आपको लिवा लाने की आज्ञा दी है ।
 इसलिए उस बड़े स्वर्णमुकुट के धारण करने के हेतु आप पधारिए —यह
 सुमन्त्र ने विनय के साथ कहा । २६६

* ऐयनु मच्चौऱ् केळा वायिर मौलि यानैक्
 कैतौळु दरशर् वैळ्ळङ् गडलैन्त तौडर्न्दु शुऱ्ऱत्

तैय्वगी दङ्गळ् पाडत् तेवरु महिळ्नुदु वाळ्त्तत्
तैयला रिरैत्तु नोक्कत् तारणि तेरिर् पोत्तान् 267

ऐयत्तुम्-प्रभु (सुन्दर राज) श्रीराम भी; अ चोल् केळा-वह वचन सुनकर;
आयिरम् मौलियानै-सहस्रशीर्ष (श्रीरंगजी) का; कै तौळ्त्तु-हाथ जोड़कर नमस्कार
करके; अरचर् वैळ्ळम्-राजाओं की भीड़ के; कटल् अँत्त-सागर के समान;
तौटर्न्तु चुरुर-पीछे और पार्श्व में आते; तैयव कीतङ्कळ् पाट-ईश्वर-स्तुति के गीत
(गवैया के) गाते; तेवरुम्-(आकाशस्थित) देवों के; मकिळ्न्तु वाळ्त्त-आनन्द
के साथ वधाई कहते; तैयलार्-स्त्रियों के; इरैत्तु नोक्क-आनन्दनाद करते उनको
देखते; तार् अणि तेरिल्-मालाओ से अलंकृत रथ पर; पोत्तान्-गये । २६७

सुन्दरराज प्रभु श्रीराम ने वह सुनकर सहस्रशीर्ष श्रीरंगजी को
नमस्कार किया । फिर वे पुष्पमालाओं से अलंकृत रथ पर बैठकर जाने
लगे । तब सागर के समान राजसमूह उनके पीछे और पार्श्व में लगे गये ।
गवैया प्रार्थना और मंगलगीत गाते गये । देव आकाश में स्थित होकर
वधाई के वचन बोले । स्त्रियाँ आनन्दघोष करती हुई उनको देख रही
थी । २६७

तिरुमणि महुडज् जूडच् चेवहन् शौल्हिन् शानैन्
ओरुवरि तौरवर् मुन्दिक् कादलो डुवहै युन्द
इरुहयु मिरैत्तु मौय्त्ता रिन्नुयिर् यार्क्कु मौन्नाय्प्
पौरुवरु तेरिर् चैल्ल् पुत्तुत्तिडैक् कण्डार् पोल्वार् 268

चेवकन्-प्रतापी वीर; तिरु मणि मकुटम् चूट-उत्तम मणिमुकुट धारण करने;
चैल्किन्नान् अँन्ऱ-जाते हैं, यह जानकर; कातलोडु उवकै उन्त-भक्ति के साथ
आनन्द के प्रेरित करते; ओरुवरिन् ओरुवर् मुन्ति-एक के पहले एक बढ़कर; इरु
कैयुम् इरैत्तु मौय्त्तार्-दोनों किनारों पर कोलाहल के साथ जो एकत्र हुए वे सब;
यार्क्कुम् इन् उयिर्-सभी की प्यारी जानें; ओन्ऱ आय्-एक (श्रीरामरूप) होकर;
पौरु अरु तेरिल्-अनुपम रथ पर; पुत्तु इटै-बाहर (बोधी में); चैल् कण्डार्
पोल्वार्-जाती है, यह देखते से अनुभव करने लगे । २६८

श्रीवीरराघव मंगलमय मणिमुकुट धारण करने जा रहे हैं । यह
जानने पर लोगों के मन में अपार हर्ष और प्रेम उत्पन्न हुए । उनकी
प्रेरणा से वे-एक से पहले एक आकर मार्ग के दोनों ओर एकत्र हो गये ।
उनको ऐसा लगा कि हम सबकी जानें मिलकर एक रूप लेकर जा रही हैं ।
वे ऐसा उनको देख रहे थे । २६८

तुण्णैनुम् जौल्लाळ् शौल्लच् चुडर्मुडि तुरुन्दु तूय
मण्णैनुन् दिरुवै नीड्गि वळिक्कीळा मुन्तम् वळ्ळल्
पण्णैनुम् जौल्लि नार्तन् दोळैनुम् पणैत्त चेयुम्
कण्णैनुड् गाल वैलु मिडैन्डुड् गानम् बुक्कान् 269

तुण् अंतुम् चौल्लाळ्-भय-चकित करनेवाले वचन की; चौल्ल-(कैकेयी के) कहने से; वळळल्-उदार प्रभु; चुटर् मुटि तुरन्तु-दीप्त मुकुट त्यागकर; तूय मण् अंतुम् तिरुवै-पवित्र भूश्री से; नीङ्कि-बिछुड़कर; वळि कीळा मुन्तम्-(वन का) मार्ग अपनाने से पहले; पण् अंतुम् चौल्लितार् तम्-संगीत-सम बोली वाली स्त्रियों के; तोळ् अंतुम् पणैत वेयुम्-पुष्ट कंधों रूपी बाँसों; कण् अंतुम्-आँखे रूपी; कालन् वेलुम्-यम से भालों के; मिट्टै-भरे; नैटु कात्तम् पुक्कान्-विस्तृत वन में घुसे। २६६

श्रीराम-दिल दहलानेवाली बात कहने को जो प्रस्तुत थीं उनके कहने से शोभायमान मुकुट और राज्यश्री को छोड़कर वन में जाने से पहले ही एक विचित्र वन में घुस गये। इस विशाल वन में संगीतसम मधुरभाषिणी स्त्रियों के कंधे रूपी बाँस और उनकी आँखें रूपी घातक भाले भरे थे। २६९

चुण्णमु	मलरुञ्	जान्दुङ्	गनहमुन्	दूव	वन्दु
वण्णमे	हलैयु	नाणुम्	वळैहळुञ्	जिन्दु	वारुम्
पुण्णुऱ	वन्डङ्गन्	वाळि	पुळैत्तदम्	बुणर्मेन्	कौङ्गै
कण्णुऱप्	पौळिन्द	काम	वैम्बुनल्	कळुवु	वारुम् 270

चुण्णमुम्-गन्धचूर्ण; मलरुम्-और पुष्प; चान्तुम्-और चन्दन; कनकमुम्-स्वर्ण (के सिक्के); तूव वन्तु-बरसाने के लिए आकर; वण्णम् मेकलैयुम्-सुन्दर मेखलाएँ; नाणुम्-और लाज; वळैकळुम्-करकंकणों को; चिन्तुवारुम्-गिरानेवालियाँ; अनङ्कन् वाळि-मन्मथशर; पुण् उऱ-व्रण बनाते हुए; पुळैत्त-जिन पर चुभ गये; तम् पुणर् मेन् कौङ्कै-उन अपने सटे हुए स्तनद्वय को; कण् उऱपौळिन्त-आँखों से खूब बहनेवाले; काम वैम् पुत्तल्-कामोत्तेजित गरम आँसुओं से; कळुवुवारुम्-धुलानेवालियाँ वन के। २७०

स्त्रियाँ रास्ते में सुगन्धचूर्ण, पुष्प, चन्दन और कनककण बरसाने आईं। पर वह भूल गई। उसके बदले उन्होंने अपनी मेखलाएँ, लाज और हाथ के कंकण गिरा दिये। मन्मथ ने अपने शरों से जिन स्तनों को विद्ध कर दिया उनको वे अपनी आँखों से बहनेवाली कामतप्त अश्रुधारा से धुलाने लग गई। ऐसी—। २७०

अङ्गण	नवन्ति	कात्तऱ्	कामिव	नैन्त	लामो
नङ्गणन्	बिलन्तेन्	रुळ्ळन्	दळ्ळुऱ	नडुङ्गि	नैवार्
शङ्गणुङ्	गरिय	कोल	मेनियुन्	देरु	माहि
अङ्गणुन्	दोन्ऱु	हिन्ऱा	नैनैवरो	विराम	रैन्वार् 271

अम् कण्णन्-सुन्दराक्ष; नम् कण् अन्पु इलन्-हमारे प्रति प्रेम नहीं रखते; इवन् अवनि कात्तऱकु आम्-यह भूमि का पालन करने योग्य है; अँन्तल् लामो-कह सकते हैं क्या; अँन्ऱु-ऐसा सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुऱ-मन के अस्तव्यस्त होते; नटङ्कि-काँपकर; नैवार्-मुरझातीं; चैम् कण्णुम्-लाल आँखें; करिय कोलम् मेनियुम्-नीला सुन्दर शरीर; तेरुम् आकि-और रथ बनकर; अँङ्कणुम् तोन्ऱु

किन्शान्-सर्वत्र दिखाई देते हैं; इरामर्-श्रीराम; अन्नैवरो-कितने ही हैं; अन्नपार्-कहतीं । २७१

वे स्त्रियाँ कहती—सुन्दराक्ष ये राम हम पर किंचित भी स्नेह नहीं दिखाते । ऐसे ये अवनि की रक्षा कर सकेंगे—यह विश्वास करना उचित होगा क्या ? देखिये—ललाई लिये ललचानेवाली आँखें और नीले और रूपवान शरीर और रथ बनकर सर्वत्र वे ही दिख रहे हैं ! श्रीराम भी कितने हैं ? अनेक हैं क्या ? । २७१

इनैयरा महळि रैल्ला मिरैत्तत्तर् निरैत्तु मौय्त्तार्
मुनैवरु नहर मूदूर् मुदियर् मिळैअर् तामुम्
अनैयवन् मेनि कण्डा रन्बिनुक् कल्लै काणार्
निन्नैविनर् मत्तत्ताल् वाया निहळ्न्तदु निहळ्त्त लुङ्गाम् 272

इनैयर् आम् मकळिर् अल्लाम्—ऐसी सभी स्त्रियाँ; इरैत्तत्तर्—शोर मचाते हुए; निरैत्तु मौय्त्तार्—दल के दल पिल पड़ीं; मुनैवरुम्—मुनिगण भी; नकरम् मुतु ऊर्—प्राचीन बड़े नगर के; मुतियर्—वृद्ध लोग; इळैअर् तामुम्—युवा भी; अनैयवन् मेनि कण्डार्—उनका रूप-सौंदर्य देखकर; अन्नपित्तुक्कु—अनुराग की; अल्लै काणार्—सीमा नहीं देखते; मत्तत्ताल् निन्नैविनर्—अपने मन में अनेक तरह की भावनाएँ करने लगे; वायाल् निकळ्न्तदु—मुख खोलकर जो उन्होंने कहा; निकळ्त्तल् लुङ्गाम्—हम कहने लगे । २७२

इस रीति से स्त्रियाँ आनन्द का शोर मचाती हुई दल के दल पिल पड़ी । इनकी बात छोड़िये । निर्लिप्त मुनिगण, प्राचीन उस अयोध्या नगर के सावू, वृद्ध लोग और स्वयं युवक भी उनका दिव्य रूप-लावण्य देखकर असीम भक्ति से भर गये । तब उनके मन में अनेक भाव उठे । हम उनको नहीं जान सकते । पर मुख खोलकर जिन भावों को उन्होंने शब्दों द्वारा प्रकट किया उनको हम कहने की कोशिश करेंगे । २७२

ॐ उय्न्ददिव् वुलह मैनवा रुळिहाण् गिर्पा यन्नवार्
मैन्दनी कोडि यैङ्गळ् वाळ्क्क(य)नाळ् यावु मैनवार्
ऐन्दवित् तरिदिर् चैय्द तवमुत्तक् काह वैनवार्
पैन्दुळाय्त् तैरिय लाय्क्के नल्विन्नै पयक्क वैनवार् 273

इ उलक्क उय्न्तदु अन्नपार्—यह लोक तर गया, कहते; ऊळि काण्किर्पाय्—युगांत देखेंगे (आप) कहते; मैन्त—प्रभु; अङ्गळ् वाळ्क्क नाळ् यावुम्—हमारी आयु के दिन सभी; नी कोटि—आप लीजिए; अन्नपार्—कहते; ऐन्नु अविन्नै—पाँच (इन्द्रियों का) दमन करके; अरितिन् चैय्त् तवम्—कष्ट के साथ किया तप (फल); उत्तक्कु आक्—आपको मिले; अन्नपार्—कहते; पच्चु तुळाय् तैरियलार्क्के—हरी तुलसीमाला पहननेवाले आपको; नल् विन्नै पयक्क—मेरे सब सुकृतों का फल मिले; अन्नपार्—कहते । २७३

लोग नानाविध बातें कहते थे । “यह संसार दुखविमुक्त हो तर गया; वीर ! आप युगांत देखें । तात ! हमारे आयु के पूरे दिन आप ले लीजिए ।” ये उनमें कुछ विचार थे । कुछ लोगों ने कहा— पाँचों इन्द्रियों का दमन करके जो हमने तप किये हैं, उनका सारा फल आपको मिल जाय । कुछ लोगों ने कहा कि तुलसीमाला-धारी ! हमारे सभी सुकृतों का पुण्य आपका हो जाय । २७३

❖ उयररु ङौण्ग णौक्कुन् दामरै निरुत्तै यौक्कुम्
पुयल्पोळि मेह मैन्त पुण्णियन् जैय्द वैन्वार
शैयलरुन् दवङ्गळ् शैय्दिच् चैम्मलैत् तन्द शैल्वत्
तयरदरु कैन्त कैम्मा रुडयम्यान् दक्क दैन्वार 274

उयर् अरुळ्—उच्च करुणामयी; औण् कण् औक्कुम् तामरै—उज्ज्वल आँखों से तुल्य कमल; निरुत्तै औक्कुम्—रंग से तुल्य; पुयल् पोळि मेकम्—जल बरसाते मेघ; अन्त पुण्णियम् चैय्त—क्या ही पुण्य कर गये हैं; अन्पार्—कहते; चैयल् अरु तवङ्कळ् चैय्तु—करने में कठिन तपस्याएँ करके; इ चैम्मलै तन्त—इन महानुभाव को (राजा के रूप में) जिन्होंने दिया; चैल्वम् तयरतर्कु—उन धनी दशरथ का; तक्कतु—योग्य; अन्त कैम्मा—कौन सा प्रत्युपकार; याम् उटैयम्—हमारे पास हैं; अन्पार्—कहते । २७४

कुछ लोग कहते कि कमल और काले जलवर्षी मेघ ने क्या ही पुण्य किया है कि कमल उनकी श्रेष्ठ, करुणामयी तेजपूर्ण आँखों की और मेघ उनके वर्ण की उपमा पा सके ! कुछ लोग कहते कि दशरथ ने कितना दुस्तर तप करके इन नायक को हमारे राजा के रूप में हमें दिया है । उनका प्रत्युपकार करने के लिए हमारे पास क्या है ? । २७४

❖ वारण मळैक्क वन्दु महरङ्गोळ् विडुत्त नेमि
नारण नौक्कु मिन्द नम्बितन् करुणै यैन्वार
आरण मरिद रेर्डा वैयनै यणुहि नोक्किक्
कारण मिन्दि येयुड् गण्गणीर् कलुळ निऽपार् 275

इन्त नम्पि तन् करुणै—इन नायक की करुणा; वारणम् अळैक्क—गजराज के पुकारने पर; वन्दु—तुरत पधारकर; मकरम् कोळ् विडुत्त—मकरग्राह से बचानेवाले; नेमि नारणन् औक्कुम्—चक्रधारी भगवान नारायण (की करुणा) के समान है; अन्पार्—कहते; आरणम् अरितल् तेर्डा—वेदों से भी अज्ञात; ऐयनै—प्रभु को; अणुकि नोक्कि—खूब तृप्ति भर देखकर; कारणम् इन्नियेयुम्—निर्हेतुक रूप से भी; कण्कळ् नोर् कलुळ—आँखों को आँसू बहाने देते हुए; निऽपार्—अवश खड़े रहते । २७५

इनकी करुणा उन भगवान नारायण की करुणा (सम) ही है जिन्होंने गजराज के पुकारने पर सत्वर आकर उसे ग्राह से छुड़ाया था । कुछ लोग वेदों को भी अज्ञात उनके अति समीप आकर देखते और निर्हेतुक रीति से गद्गद् होकर आँसू बहाते । २७५

नीलमा मुहिलन् नान्त्र निरैविनो डरिवु निर्क्क
 शीलमार्क् कुण्डु कैंट्टेन् रेवरि नडङ्गु वान्तो
 कालमाक् कणिक्कु नुण्मैक् कणक्कयुड् गडन्टु निन्त्र
 मूलमाय् मुडिवि लाद मूर्त्तियिम् मुन्व नैन्वार् 276

नीलम् मा मुकिल् अनूनान् तन्-नीले वड़े मेघसम इनकी; निरैविनोटु-गम्भीरता के साथ; अरिवुम्-बुद्धि; निर्क्क-एक ओर रहे; चीलम् आर्क्कु उण्टु-इनका-सा शील (सदाचार) किसके पास है; इ मुन्पन-ये मुखिया; तेवरिन् अटङ्कुवानो-देवों के अन्दर आयेंगे; कालम् आक् कणिक्कुम्-काल के माप की; नुण्मै कणक्कयुम्-सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणना को भी; कटन्तु निन्त्र-पार कर रहनेवाले; मूलम् आय्-मूलवस्तु होकर; मुटिवु इल्लात मूर्त्तिये-अनन्त मूर्ति ही; कैंट्टेन्-(अब तक बिना जाने) नष्ट हो गया; अँन्पार-कहते । २७६

वड़े, नीले मेघ के समान रंग वाले इनकी गम्भीरता और मेघा की बात छोड़ दीजिए । इनका-सा शील, सदाचार किसके पास है ! क्या ये अग्रणी देवों की श्रेणी के अन्दर गिने जा सकते हैं ? नहीं । काल के सूक्ष्मातिसूक्ष्म माप से भी परे रहनेवाले (कालातीत) मूलतत्त्व है ! अनंत परब्रह्म है । इतने दिन तक मैंने यह नहीं जाना । जन्म व्यर्थ कर दिया —ऐसा कुछ लोग कहते । २७६

ॐ आर्हलि यहळ्न्दोर् गङ्गै यवनिधिर् इन्दोर् मुन्दैप्
 पोर्हैळु देवर्क् काहि यशुरैप् पोरु वेंत्रोर्
 पेर्हैळु शिरप्पिन् वन्द पेरुम्बुहळ् निरप् दैयन्
 तार्हैळु तिरडो डन्द पुहळिनैत् तळुवि यैन्वार् 277

मुन्तै-पहले; आर् कलि अकळ्न्तोर्-सागर जिन्होंने खना वे सगरपुत्र; कङ्कै अवनियिल् तन्तोर्-गंगा जो भूमि पर लाये वे (भगीरथ); पोर् कैंळु तेवर्क्कु आक्-युद्ध-रत देवों के सहायक बनकर; पोरु-घोर समर करके; अचुरै वेंत्रोर्-असुरों पर जिन्होंने विजय पाई, वे ककुत्स्थ मुचुकुद आदि; पेर् कैंळु चिरप्पिन् वन्त-इनकी गौरवपूर्ण श्रेष्ठता के कारण मिली; पेरु पुकळ्-बड़ी कीर्ति; निरपु-स्थिर रहेगी; ऐयन्-प्रभु श्रीराम के; तार् कैंळु-मालाशोभित; तिरळ् तोळ्-पुष्ट कंधों द्वारा; तन्त-अर्जित; पुकळ्त्तै तळुवि-कीर्ति के साथ मिलकर ही; अँन्पार-कहते । २७७

पहले इनके कुल में पैदा होकर सगरपुत्रों ने सागर निर्मित करके, भगीरथ ने गंगाजी को अवनि में ला करके, राजा ककुत्स्थ, मुचुकुन्द जैसों ने युद्धग्रस्त देवों की सहायता के लिए जाकर असुरों पर विजय पा करके कीर्ति अर्जित की थी । वह सारी कीर्ति खड़ी रहेगी इनके माला से शोभित पुष्ट कंधों द्वारा अर्जित कीर्ति पर ही ! वीरों के वंश में वीर पैदा हो तभी कुल की वीरता की कीर्ति टिक सकेगी । २७७

शन्दमिवै	ताविन्मणि	यारमिवै	यावुम्
शिन्दुरमु	हङ्गिळर्	तैरिन्दमद	वेळम्
पन्दिहळ्	वयप्परि	पशुम्बौतणि	यावुम्
मैन्दवरि	योर्हौळ	वळङ्गैत	निरैप्पार् 278

मैन्त-वीर कुमार; इवै चन्तम्-ये चन्दन के लेप; ता इल् मणि आरम्-निर्मल रत्नहार; इवै यावुम्-ये सब; चिन्तुरम् मुकम् किळर्-सिन्दूर के तिलकों के साथ शोभायमान रहनेवाले; तैरिन्त-चुने हुए; मतम् वेळम् पन्तिकळ्-मत्तगज-पंक्तियाँ; वयम् परि-विजयशील अश्व; पचुमै पौन् अणि-शुद्ध स्वर्ण के आभरण; यावुम्-इन सबको; वरियोर् कौळ-अभावग्रस्त लोग ले ले उनको; वळङ्कु-देने की कृपा कीजिए; अँत-यह कहकर; निरैप्पार्-कतार में ला रख देते । २७८

कुछ लोग कहते कि वीर कुमार! देखिए— ये चन्दन और सुगन्ध-पदार्थों के लेप हैं; ये निर्दोष रत्नहार हैं; ये चुने हुए मत्त हाथी हैं जिनके भाल पर सिन्दूर के तिलक लगाये गये हैं। ये विजयी अश्व है। ये स्वर्णभरण है। इन सबको आप लीजिये और अपने हाथों से अभावग्रस्त याचकों को दे दीजिये। ऐसा कहते हुए उनको लाकर सामने पंक्तियों में छोड़ देते । २७८

* मिन्बौरुवु	तेरिन्मिशै	वीरन्वरु	पौळ्दिल्
तन्बौरुविल्	कन्नुतन्ति	ताविवरल्	कण्डाड्
गन्बुरुहु	शिन्दयोडु	मावुरुहु	मापोल्
अँन्बुरुह	नैन्जुरुह	यारुरुह	हिल्लार् 279

वीरन्-वीर; मिन् पौरुवु तेरिन् मिचै-विजली-सम रथ पर; वरु पोळ्दितिल्-जब आ रहे थे, तब; तन् पौरुविल् कन्नु-अपना अनुपम बछड़ा; तन्ति तावि वरल् कण्ड आड्कु-अकेला चौकड़ी भरता आता (है, उसे) देख; आ-गाय; अन्पु उरुक्कु चिन्तैयोडुम्-प्रेमार्द्र मन के साथ; उरुक्कु आरु पोल्-द्रवीभूत होती जैसे; नैन्चु उरुक्-मन के पिघलते; अँन्पु उरुक्-हड्डी के गलते; उरुक्किल्लार्-न पिघलनेवाले; यार्-कौन । २७९

श्रीराम जब बिजली के समान चमकते हुए रथ पर आ रहे थे तब उनको देखकर दर्शकों की स्थिति उस गाय की-सी हो गयी जो अपने बछड़े को चौकड़ी भरते आते हुए देखती हो। उनका मन प्रेमार्द्र हो गया। हड्डी भी पिघल गयी। तब जो न पिघले वे कौन या कहाँ रहे? कोई वहाँ नहीं रहा जो पूर्णरूप से द्रवीभूत न हो गया! । २७९

शत्तिर	निळ्ळुन्निमिर्	तानयोडु	नाना
अत्तिर	निळ्ळुन्निवरु	ळोडवन्ति	याळ्वार्
पुत्तिर	रिन्निप्पेरुदल्	पुल्लिदैन्	नल्लोर्
शित्तिर	मैन्तुतन्ति	तिहैत्तुरुहि	निप्पार् 280

नल्लोर्-सज्जन; चत्तिरम् निळुड्ड-छत्रों की छाया देते; निमिर् तातयोडु-बड़ी सेना के साथ; नात्ता अत्तिरम् निळुड्ड-विविध अस्त्रों के कांति बिखेरते; अरुळोट्टु-कृपा के साथ; अवन्ति आळ्वार्-भूमि का पालन करनेवाले; इनि-श्रीराम के वाद; पुत्तिरर् पेरुत्तल्-पुत्र पैदा करना; पुल्लितु अँन-लघुता है (व्यर्थ है); अँन-यह कहते हुए; तत्ति-अलग-अलग; तिकैत्तु-चकित; उरुकि-पिघलकर; चित्तिरम् अँन-चित्र के समान; निड्पार्-निष्क्रिय खड़े रहे । २८०

कई सज्जन कहते कि श्वेत छत्र और बड़ी सेना रखनेवाले उन राजा लोगों का, जो विविध अस्त्र चमकाते हुए कृपा के साथ भूमि का पालन करते हैं, अब पुत्र पैदा करना निरर्थक है (क्योंकि कोई भी पुत्र श्रीराम के समान गौरव बढ़ानेवाला नहीं होगा) । वे लोग अलग-अलग, श्रीराम के अतिशय सौन्दर्य से चकित, मुग्ध और द्रवणशील होकर चित्रसम खड़े रहते । २८०

❀ कार्मिनीडु	लायदैन	नूल्कन्नलु	मार्वन्
तेर्मिशैनम्	वायिल्कडि	देहुदल्शैय्	यामल्
नेर्मितिमिर्	कोडिमणि	यालुनिदि	यालुम्
तूर्मित्तैडु	वोदियितै	यैन्नूशौरि	वारुम् 281

कार् मिन्तीडु उलायतु अँन-मेघ बिजली-सह सँर करता हो जैसे; नूल् कन्नलुम् मार्पन्-यज्ञोपवीत-शोभित वक्ष वाले श्रीराम; तेर्मिचै-रथ पर; नम् वायिल् कटितु एकुत्तल् चैय्यामल्-हमारे द्वार को जल्दी पार कर न जाएँ, इस तरह; नेर्मिन्-रथ के सामने रहिए (रोकिये); निमिर् कोटि मणियालुम्-बहुत अधिक रत्नों से; नितियालुम्-स्वर्ण से; नैटुवीतियितै तूर्मिन्-लम्बी बीथी को पाट दीजिये; अँनूड्ड-ऐसा कहते हुए; चौरिवारुम्-उड़ेलते हैं । २८१

जैसे मेघ बिजली के साथ संचार करता हो उस तरह उपवीतधारी वक्ष वाले श्रीराम अपने रथ पर बैठकर हमारे द्वार के सामने से आगे जाने न पावें ! रथ के सामने जाकर खड़े हो जाइए । और अधिक संख्या में रत्न और स्वर्ण डालकर रास्ता दुर्गम बना दीजिये । ऐसा कहते हुए लोग वे वस्तुएँ लाकर मार्ग पर डाल रहे थे । ऐसे लोग कुछ थे । २८१

ताय्हयिल्	वळरुन्दिलन्	वळरुत्तटु	तवत्ताल्
केहयन्	मडन्दैकिळर्	जालमिव	ताळ
ईहयि	लुवन्दत्त	ळियर्कयिडु	वैन्नाल्
तोहयवळ्	पेरुवहै	शौल्लवरि	दैत्तवार् 282

ताय् कैयिल् वळरुन्तिलन्-अपनी माता के पास पले नहीं; वळरुत्तटु-पालने-वाली; तवत्ताल्-पूर्वकृत तपस्या के फल से; केकयन् मटन्तै-केकयराज-तनया; किळर् जालम्-विश्वपूर्ण इस भूमि को; इवन् आळ ईकैयिल्-इनके पास शासन करने के लिए देते समय; उवन्तत्तटु-हर्षित हुई; इयर्क इतु अँन्नाल्-उनकी प्रकृति यह

है तो; तोकै अवळ्—मोर-सी छटा वाली उनका; पेर् उवकै—बड़ा आनन्द; चौल्ल अरितु—वर्णनातीत है; अँत्पार्—कहते । २८२

कुछ लोग कहते हैं कि ये श्रीराम माता कौसल्या के हाथ नहीं पले थे । कैकेयी ने उस भाग्य के लिए तपस्या की थी । उन्हीने इनको पाला था । इसलिए चक्रवर्ती श्रीराम को राज्य पालन के लिए दे देंगे—यह सुनकर उन्हें हर्ष हुआ । यही उनकी प्रकृति सच्ची है तो मयूरछटा उनके मन का बड़ा आनन्द वर्णन करना कठिन है । २८२

ॐ पावमु	मरुन्दुयरुम्	वेर्परियु	मँत्तुबार्
पूवलय	मिन्नुमुद	लन्नुपौदु	वँत्तुबार्
तेवर्पहै	युळ्ळवुमिव्	वळ्ळरैरु	मँत्तुबार्
एवल्लैयु	मन्तुनर्तवम्	यावदुहौ	लँत्तुबार् 283

पावमुम्—(इनके दर्शन से) पाप; अरु तुयरुम्—और कठिन क्लेश; वेर् परियुम्—निर्मूल हो जायेंगे; अँत्पार्—कहते; पू वलयम्—भूमण्डल; इन्नु मुतल्—आज से; पौतु अन्नु—आम सम्पत्ति नहीं होगी; अँत्पार्—कहते; इ वळ्ळल्—ये प्रभु; तेवर्पकै उळ्ळवुम् तैरुम्—देवों के शत्रु जो है, उनका नाश करेंगे; अँत्पार्—कहते; एवल्लैयुम् मन्तुनर्—इनके आज्ञाकारी राजाओं का; तवम्—सुकृत (पुण्य); यावतु कौल्—कैसा (बड़ा) है; अँत्पार्—कहते । २८३

कुछ लोग कहते हैं कि इनके दर्शन से पाप और कठोर दुख निर्मूल हो जायेंगे । अब भूमि इन्हीं की होकर रहेगी, कोई दूसरा उस पर अधिकार नहीं जता सकेगा । ये प्रभु देवों के सारे शत्रुओं का नाश कर देंगे । और कुछ लोग कहते कि इनके मातहत रहनेवाले राजाओं ने कैसी ही उत्कृष्ट तपस्या की है कि उन्हें इनके आज्ञाकारी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ! । २८३

ॐ आण्डित्तय	रायित्तय	कूरवडल्	वीरन्
तूण्डुपुर	विप्पौरुविल्	शुन्दर	मणित्तेर्
माण्ड	कौडि	माडनैडु	यप्पोयप्
पूण्डपुहळ्	मन्तुननुडै	कोयिलवै	पुक्कान् 284

आण्डु—वहाँ; इन्नैयर् आय्—ऐसी स्थिति वाले बनकर; इत्तैय कूर—यह कहते थे, तव; अटल् वीरन्—विजयी वीर; तूण्डु पुरवि—त्वरितगामी अश्वों के; पौरु इल्—उपमारहित; चुन्तुनर्—सुन्दर; मणि तेर्—घण्टियाँ—बैँधे रथ पर; माण्ड कौडि माटम्—सम्मान के प्रदर्शक, पताकाओं से युक्त सौधों वाले; नैडु वीति—राजमार्ग; मरैय—आँखों से ओझल होने देते हुए; पोय्—जाकर; पूण्ड पुक्कळ्—(आभरण के समान) पहनी हुई कीर्ति वाले; मन्तुनन् उरै—चक्रवर्ती के रहने के; कोयिल्—मन्दिर के; अवै पुक्कान्—सभा-मण्डप में पहुँचे । २८४

मार्ग में लोग ऐसी स्थिति में पड़कर ऐसी बातें कर रहे थे ।

विजयी वीर श्रीराम त्वरगामी अश्वों के जुते और घन्टियों से युक्त उन्नत रथ पर सम्मान-प्रदर्शक पताकाओं वाले बड़े सौधों के मार्ग शीघ्र तय करते हुए आगे निकल गये। राजमार्ग पीछे ओझल हो गया। वे यशोभूषित चक्रवर्ती दशरथ के महल के अन्दर सभामंडप में पहुँचे। २८४

आङ्गुवन्	दडैन्द	वण्ण	लाशयिन्	कवरि	वीशप्
पूङ्गुळन्	महळि	राडुम्	पुदुक्कळि	याट्ट	नोक्कि
वीङ्गिरुड्	गादल्	काट्टि	विरियरि	चुमन्द	पीडत्
तोङ्गिय	वुवहै	योडु	मरशन्वीड्	रिरुप्पक्	काणान् 285

आङ्गु वन्तु अटैन्त अण्णल्—वहाँ जो आ पहुँचे उन प्रभु ने; आचै इन् कवरि वीच—स्वर्ण-डण्ड के चामर डुले; पू कुळल् मकळिर् आटुम्—पुष्पसज्जित कुंतल की नर्तकियाँ जो नाचती हैं उस; पुतु कळि आट्टम् नोक्कि—नवीन उल्लासदायी नाच देखते हुए; वीङ्किर कातल् काट्टि—(श्रीराम के आगमन पर) बड़ा प्रेम दिखाकर; ओङ्किय उवकै योटुम्—बढ़ते हुए हर्ष के साथ; अरचत्—राजा को; विरि अरि चुमन्त पीडत्तु—विशाल सिंह (धृत) आसन पर; वीड् रिरुप्प—विराजमान; काणान्—नहीं देखा। २८५

वहाँ पहुँचकर उन्होंने दशरथजी को नहीं देखा। वे होते तो स्वर्ण-डण्ड के चँवर डुलते होते। पुष्पालंकृत केश वाली नर्तकियों का नवीन और चित्ताकर्षक नाच होता रहता। वे श्रीराम के आगमन पर बड़े प्रेम और आनन्द का प्रदर्शन करते। वे नहीं थे और सिंहासन रिक्त था। श्रीराम ने सिंहासन पर राजा को विराजमान नहीं देखा। २८५

वैत्तवै	मुत्तिव	रोडुम्	विरुप्पुडक्	कळिक्कु	मैय्मै
एत्तवै	यिशैक्कुञ्	जैम्वीन्	मण्डवत्	तिनिदि	नैय्दान्
ओत्तवै	युलहत्	तैङ्गु	मुळ्ळवै	युणर्न्दा	रुळ्ळम्
पूत्तवै	वडिवै	योप्पान्	शिड्डवै	कोयिल्	पुक्कान् 286

ओत्तु अवै—वेदसमूहों को; उलकत्तु अङ्कुम्—संसार भर में; उळ्ळवै—प्राप्त रहनेवाले; उणर्न्तार्—जाननेवालों के; उळ्ळम् पूत्तवै—मन में भावित; वटिवै—रूपों को; ओप्पान्—धरनेवाले वे; वेन्तु अवै—राजमण्डली; मुत्तिवरोटुम्—मुनियों के साथ; विरुप्पु उड्—इच्छा के साथ; कळिक्कुम्—(जहाँ) हुलसेंगे; मैय्मै एत्तु—सच्ची कीर्ति के; अवै इचैक्कुम्—गान गाये जायेंगे; जैम् पोन् मण्टपत्तु—उस चोखे स्वर्ण से निर्मित मण्डप में; अय्तान्—न घुसकर; चिड्डवै कोयिल् पुक्कान्—छोटी माता के महल में गये। २८६

श्रीराम वेदसमूहों और संसार भर में प्रचार में रहनेवाले अन्य सभी शास्त्रों के ज्ञाता लोगों को, “जिन्ह की रही भावना जैसी”, वैसे रूप में दर्शन देनेवाले थे। वे उस श्रेष्ठ स्वर्णमंडप में नहीं प्रविष्ट हुए, जहाँ उनके जाने पर यह आशा की जा सकती थी कि वहाँ एकत्रित राजदल मुनिवृंदों के साथ (मुकुट धारणोत्सव देखकर) प्रत्याशित आनंद का अनुभव करते

और स्वयं श्रीराम की यथार्थ महिमा गायी जाती । पर वे अपनी छोटी (सौतेली) माता कैकेयी के महल में प्रविष्ट हुए । २८६

पुक्कवन्	रत्नै	नोक्किप्	पुरवलर्	मुनिव	रैल्लाम्
तक्कदे	निनैन्दात्	डादै	तामरैच्	चरणम्	जुडित्
तिक्किनै	निमिरुत्त	कोलच्	चैल्वने	शैम्बोर्	चोदि
मिक्कुयर्	महुडम्	जूट्टच्	चूडदल्	विळुमि	दैन्ऱार् 287

पुक्कवन् तन्तै नोक्कि—(वहाँ) प्रविष्ट उनको देखकर; पुरवलर्—(मण्डप में रहे) राजा लोग; मुनिवर्—मुनिगण; रैल्लाम्—और अन्य सभी; तक्कते निनैन्तान्—उचित ही सोचा; तातै तामरै चरणम् चूटि—पिता के कमल-चरण (सिर पर) धारण करके; तिक्किनै निमिरुत्त कोल्—दिशाओं को सीधा करनेवाले (राज) दण्डधर; अ चैल्वने—उन चक्रवर्ती के; चैम् पोन्—अच्छे स्वर्ण के; चोति मिक्कु—अधिक कांतिमय; उयर् मुकुटम्—उन्नत किरीट को; चूट्ट—पहनाने पर; चूटुतल्—पहन लेना; विळुमि—श्रेयस्कर है; दैन्ऱार्—यह बोले । २८७

कैकेयी के महल में प्रवेश करनेवाले उनको देखकर सभामंडप में जो रहे उन राजाओं, मुनियों और अन्य लोगों ने यों सोचा । ठीक है । वे उचित कार्य ही कर रहे हैं । वे पहले पिता के चरण-कमलों पर नमस्कार करना चाहते हैं । बाद ही दशरथ द्वारा, जिनका राजदण्ड सभी दिशाओं में सीधापन (न्याय) स्थापित कर चुका है, अच्छे स्वर्ण के कांतिबहुल उन्नत किरीट का धारण किया जाना ही उचित और श्रेयस्कर है । २८७

आयत्त	निहळुम्	वेलै	यण्णलु	मयर्न्दु	तेडात्
तूयव	निरुन्द	शूळल्	तुरुविनन्	वरुद	नोक्कि
नायह	नुरैयान्	वायाल्	नानिडु	पहर्वे	नैन्नात्
तायैत	निनैवान्	मुन्ने	कूऱ्ऱैन्त	तमियळ्	वन्दाळ् 288

आयत्त निहळुम् वेलै—(वहाँ मण्डप में) ऐसा होता रहा, तव; अण्णलुम्—पुरुष-श्रेष्ठ; अयर्न्तु तेडा—बेहोशी से जो सँभले नहीं थे; तूयवन्—उन पवित्र दशरथ के; इरुन्त चूळल्—रहने के स्थान को; तुरुविनन् वरुतल् नोक्कि—ढूँढ़ते हुए आते हैं, यह देखकर; नायकन् वायाल् इतु उरैयान्—नायक अपने मुँह से यह नहीं कहेंगे; नान् पक्कवेन्—मैं कहूँगी; दैन्ऱा—यह विचार करके; ताय् अन्न निनैवान् मुन्ने—माता समझनेवाले (श्रीराम) के सामने; कूऱ्ऱु अन्न—मृत्यु के समान; तमियळ् वन्ताळ्—एकाकिनी आई । २८८

वहाँ लोग ये बातें कर रहे थे । प्रभु राम को कैकेयी ने देख लिया और जान लिया कि वे दशरथ को, जो अभी होश में नहीं आये थे, ढूँढ़ते हुए आ रहे हैं । वे सोचने लगीं— राजा अपने मुख से यह बात नहीं कहेंगे । उन्होंने निश्चय किया कि मैं स्वयं श्रीराम से बात कह दूँगी । यह संकल्प लेकर वे, उन राम के सामने जो इनको अपनी माता ही समझ रहे हैं, यम के समान एकाकिनी बनकर आई । २८८

❖ वन्दव डन्नैच् चैन्नि मण्णुऱ वण्डुगि वाशच्
 चिन्दुरप् पवळच् चैव्वाय् शैङ्गयिऱ पुदैत्तु मऱ्ऱैच्
 चुन्दरत् तडक्कै तानै मडक्कुऱत् तुवण्डु निन्ऱान्
 अन्दिवन् दडैन्द तायैक् कण्डवान् कन्ऱि तन्नान् 289

अन्ति वन्तु अटैन्त-सायंकाल आकर प्राप्त हुई; तायै कण्ट-माता को देखकर;
 आन् कन्ऱु अन्नान्-गाय के वछड़े-से वे; वन्तवळ् तन्नै-आगत कैकेयी को; चैन्नि
 मण् उऱ-सिर भूमि पर लगाये; वण्डुकि-नमस्कार करके; वाचम्-सुवासपूर्ण;
 चिन्दुरम् पवळम्-सिन्दूर के समान; चैव्वाय्-लाल मुंह को; चै कैयिन् पुतैत्तु-
 ललाई लिए (ललाम) हाथ से ढँककर; मऱ्ऱै चुन्दरम् तट कै-अन्य सुन्दर विशाल
 हाथ से; तानै मडक्कुऱ-वस्त्र को मोड़ लेकर; तुवण्डु निन्ऱान्-विनयशील मुद्रा
 में खड़े हुए । २८६

जब कैकेयी सामने आई तब श्रीराम ने भूमि पर सिर लगाकर
 दण्डवत की। शाम के समय माता गाय को देखकर वछड़े की जैसी
 स्थिति होती है वैसे मातृप्रेम से वे भर गये। उन्होंने विनयसूचक
 शिष्टाचार की मुद्राये धारण की—अपने एक ललाई लिये ललाम हाथ को
 अपने मुख के सामने रखा। दूसरे हाथ से वस्त्र को मोड़कर पकड़ा।
 फिर वे झुके हुए खड़े रहे । २८९

❖ निन्ऱवन् इन्नै नोक्कि यिरुम्विना लियन्ऱ नैज्जिऱ
 कौन्ऱुळ् कूऱ्ऱ मैन्नुम् वैयर्निऱिक् कौडुमै पूण्डाळ्
 इन्ऱैन्क् कुणर्त्त लाव देयदे यैन्नि ताहुम्
 औन्ऱुन्क् कुन्दै मैन्द वुरैत्तदो रुरैयुण् डैन्ऱाळ् 290

इरुम्पित्ताल् इयन्ऱ नैज्जिन्-लौहनिर्मित मन के साथ; कौन्ऱु उळल्-जीवों को
 मारते फिरनेवाली; कूऱ्ऱम् अनुम् पयर् इन्ऱि-मृत्यु का नाम धरे विना ही; कौडुमै
 पूण्डाळ्-(उसकी) क्रूरता रखनेवाली; निन्ऱवन् तन्नै नोक्कि-स्थित उनको देखकर;
 मैन्त-पुत्र; औन्ऱु उनक्कु-योग्य तुम्हें; उन्तै उरैत्ततु-तुम्हारे बाप का कहा
 हुआ; ओर् उरै-एक कथन; उण्डु-है; इन्ऱु-अब; उनक्कु उणर्त्तत् आवतु-
 तुमसे वह बताने का काम; एयते अँन्निन्-(मेरे) योग्य (समझते) हो तो; आकुम्-
 (बताने का काम) मुझसे होगा; अँन्ऱाळ्-बोलीं । २९०

ऐसी विनयमुद्रा में स्थित उनको कैकेयी ने देखा। कैकेयी में यम
 की-सी, जो लौहदिल के साथ जीवों को मारकर फिर रहा है, क्रूरता थी।
 हाँ, यम का नाम धारण किये विना ही उन्होंने यम की क्रूरता अपना ली
 थी। उन्होंने कहा—वत्स ! आज्ञाकारी योग्य तुम्हें जो तुम्हारे पिता
 बताना चाहते थे वह एक बात है। अगर तुम मेरा कहना उचित मानो
 तो मुझसे उसका कथन हो सकता है। (मैं कहूँगी) । २९०

ॐ अन्दये येव नीरे युरैशैय वियैन्द दुण्डेल्
 उय्न्दर्न नडिये नैन्निर् पिउन्दव रुळरो वाळि
 वन्दर्न इवत्ति ताय वरुपयन् मरुत्तैन् रुण्डो
 तन्दयुन् दायु नीरे तलैन्निरेन् पणिमि नैन्नान् 291

अन्तैये एव—मेरे पितृदेव की आज्ञा; नीरे उरै चैय—आप ही सुनाये; इयैन्ततु उण्डेल्—इसका संयोग हुआ तो; अट्टियेन् उय्न्तनैन्—मैं तर गया; पिउन्तवर्—सफलजन्मा; अैन्निन् उळरो—मेरे समान कोई होंगे (नहीं); अैन् तवत्तिन् आय पयन् वन्ततु—मेरे तप का फल अब मिलने को हुआ है; वरुपयन् मरुत्तैन् उण्डो—इससे बढ़कर मिलनेवाला (उत्कृष्ट) फल हो सकता है क्या; तन्तैयुम् तायुम् नीरे—पिता और माता आप ही हैं; तलै निन्नेन्—शिरोधार्य करूँगा; पणिमिन्—आज्ञा कीजिए; नैन्नान्—कहा । २६१

श्रीराम ने उत्तर में बड़ी विनय के साथ कहा कि मेरे पितृदेव आज्ञा दें और वह आज्ञा आप मुझे सुनावें—ऐसा एक संयोग हो गया तो मैं तर गया । मुझसे बढ़कर सफलजन्मा कौन हो सकता है ? मेरे पूर्वकृत तपों का यह बहुत ही शुभ फल अब मिल गया । इससे बढ़कर कौन सा सुफल मिलनेवाला है ? अब आप ही पिता हैं, माता भी । आपकी आज्ञा को शिरोधार्य मानकर उसके अनुसार चलूँगा । अब आप आज्ञा सुनाइये । २९१

ॐ आळिशू लुलह मेल्लाम् बरदत्ते याळ नीपोय्त्
 ताळिरुम् जडैह डाङ्गित् ताङ्गरुन् दवमेर् कौण्डु
 पूळिवैड् गान्न नण्णिप् पुण्णियत् तुरैह लाडि
 एळिरण् डाण्डिन् वावैन् इयिम्बिन्न त्रश नैन्नाळ् 292

आळि चूळ् उलकम् अेल्लाम्—समुद्रवलयित भूमि सब; परतने आळ—भरत के ही राज करते; नी पोय्—तुम जाकर; ताळ् इरु चटैकळ् ताङ्कि—लम्बी, बड़ी जटाएँ धारण करके; ताङ्क अरु—दुर्वह; तवम्—तपस्या; मेर् कौण्डु—व्रत लेकर; पूळि वैम् कान्तम् नण्णि—धूलि-भरा, तप्त जंगल जाकर; पुण्णियम् तुरैकळ् अटि—पुण्य-सलिलों में स्नान करके; एळ् इरण्डु आण्डिन् वा—दो के सात (चौदह) सालों में आ जाओ; अैन्—ऐसा; अरचन् इयम्पित्तन्—राजा ने कहा; नैन्नाळ्—कहा । २६२

कैकेयी ने कहा— सागर की घिरी इस सारी वसुन्धरा पर भरत का ही अधिकार होगा । तुम लम्बी, बड़ी जटा बना लो, दुर्वह तप का व्रत लो, धूलि भरे जंगल जाओ, पुण्यसलिलों में स्नान किया करो, और चौदह साल में लौट आओ । यही राजा ने कहा है । २९२

ॐ इप्पोळु दैम् तौरा लियम्बुव दैळिदो यांरुम्
 शैप्परुड् गुणत्ति रामन् तिरुमुहच् चैव्वि नोक्किन्

ऑप्पदे मुन्नु पिन्बव् वाशह् मुणरक् केट्ट
अप्पोळु दलर्न्द शैन्दा मरैयिन्नै वैन्ऱु दम्मा 293

यारुम्-कोई भी (भाषा पर अधिकार रखनेवाले); चैप्प अरुम्-वर्णन न कर सके; कुणत्तु इरामन्-ऐसे गुण वाले श्रीराम के; तिरु मुक्क चैव्वि नोक्किन्-श्रीमुख की शोभा देखने पर; मुन्नु- (कैकेयी-कथन से) पूर्व; पिन्पुम्-वाद भी; ऑप्पदे-समान था (कमल); अ वाचकम्-वह वचन; उणर-समझते हुए; केट्ट अप्पोळु-जब सुना तब; अलर्न्द चैन्तामरैयिन्नै-विकसित लाल कमल को; वैन्ऱु-जीत गया (शोभा में बढ़ गया) । २९३

श्रीराम पर इसका प्रभाव कैसे पड़ा ? यह सुनकर श्रीराम का मुखमंडल चमक उठा । श्रीराम किसी से भी अवर्णनीय श्रेष्ठ गुण वाले थे । उनके मुख की दिव्य शोभा देखिए । कैकेयी के वचन को सुनने के पहले और सुनकर जब जाने लगे उसके बाद भी उनके मुख की लाल कमल समता कर सकता था । पर जब उन्होंने कैकेयी का वचन खूब ध्यान देकर सुना और समझा तब उनका मुख सद्यविकसित कमल पर जीत पा गया । वह आज्ञा सुनकर श्रीराम अत्यन्त आनन्दपूरित हो गये । २९३

तैरुळुडे मनत्तु मन्न नेवलिर् तिरुम्ब वञ्जि
इरुळुडे युलहन् दाङ्गु मिन्नलुक् किशैन्दु निन्ऱान्
उरुळुडैच् चहडम् बूट्टि युडयव नुय्यत्त कारे
इरुळुडे यौरव नोक्क वप्पिणि यविळ्न्द दौत्तान् 294

तैरुळु उटै(य) मनत्तु-संशय-विमुक्त (विशुद्ध) मन वाले; मन्नन् एवलिन्-चक्रवर्ती की आज्ञा को; तिरुम्ब अञ्चि-उल्लंघन करने से डरकर; इरुळु उटैय-अज्ञानांधकार युक्त; उलकम् ताङ्कुम् इन्नलुक्कु-लोकभरण के संकट सहने के लिए; इचैन्नु निन्ऱान्-सम्मत रहे; उरुळु उटैय-पहियेदार; चकटम् पूट्टि-छकड़े से जोतकर; उटैयवन् उय्यत्त-स्वामी का चलाया गया; कार् एरु-काला बैल; अरुळु उटै(य) औरवन्-करुणामय किसी के द्वारा; अ पिणि नोक्क-वह बन्धन खोल देने पर; अविळ्न्तु औत्तान्-जो मुक्त हो गया उस बैल के समान हो गये । २९४

वे कितने उल्लसित हुए ? पहले वे स्वच्छ मन वाले चक्रवर्ती की आज्ञा का उल्लंघन करने से डरे । इसीलिए वे अज्ञानांधकार-मग्न भूमि का भार वहन करने का दुख उठाने के लिए सम्मत हो गये थे । अब वे उस काले बैल के समान अनुभव करने लगे जिसको उसके स्वामी ने एक बड़े छकड़े में जोतकर उस छकड़े पर बड़ा भार लाद दिया था और जिसको किसी दयावान मनुष्य ने बंधन काटकर छकड़े से मुक्त कर दिया । २९४

मन्नवन् पणियन् राहि नुम्बणि मरुप्प नोवैन्
पिन्नवन् पेरु शैल्व मडियनेन् पेरु दन्ऱो

अँन्निदि नुरुदि यप्पा लिप्पणि तलैमेर् कौण्डेन्
मिन्तौळिर् कान् मिन्त्रे पोहिन्त्रेन् विडैयुड् गौण्डेन् 295

मन्त्रवन् पणि अन्त्रु आकिल्-राजा का काम (हुक्म) नहीं हो तो (भी); नुम् पणि-आपकी आज्ञा; मरुप्पनो-मैं इनकार करूँगा क्या; अँन् पिन्त्रवन् पेरुर् चैल्वम्-मेरे बाद के आये (कनिष्ठ) का प्राप्त विभव; अटियनेन् पेरुत्तन्त्रो-मुझे दास का प्राप्त नहीं है क्या; अँन् इति उरुति अप्पाल-कौन सा पुरुषार्थ है, इससे बढ़कर; इ पणि तलै मेल् कौण्डेन्-यह आज्ञा सिर पर धर ली; मिन् ओळिर् कानम्-विजली के समान जहाँ धूप रहेगी, उस जंगल को; इन्त्रे पोकिन्त्रेन्-आज ही जा रहा हूँ; विटैयुम् कौण्डेन्-अब आपसे अनुमति लेता हूँ (अनुमति दीजिए) । २६५

(श्रीराम ने कहा ।) चक्रवर्ती की आज्ञा नहीं हो, और यह आपकी ही आज्ञा हो तो मैं क्या उससे इनकार करूँगा ? मेरे छोटे भाई का प्राप्त विभव क्या मेरा नहीं है ? इस सौभाग्य से बढ़कर कौन सा पुरुषार्थ मुझे मिलेगा ? अभी यह आज्ञा मैंने सिर पर धारण कर ली ! उस जंगल में जाने को अभी निकला जिसमें विजली के समान धूप पड़ती रहती है । आपसे विदा लेता हूँ । २९५ .

4. नहर् नीडुगु पडलम् (नगर-निष्क्रमण पटल)

* अँन्नुकौण्डि डित्तैय कूरि यडितौळु विरैञ्जि मीट्टुम्
तन्नुणैत् तादै पाद मत्तिशै नोक्कित् ताळ्न्नु
पौन्निणि पोदि नाळुम् भूमियुम् पुलम्बि नैयक्
कुन्निन्नु मुयर्न्द तोळान् कोशलै कोयिल् पुक्कान् 296

अँन्नु कौण्डु इतैय कूरि-यह और ऐसा कहकर; मीट्टुम्-फिर; अटि तौळु-चरणों पर पड़कर; इरैञ्चि-वन्दना करके; तन् तुणै तादै पातम्-स्वोपम पिता के चरणों को; अ तिचै नोक्कि ताळ्न्नु-उस दिशा की ओर झुककर; कुन्निन्नु उयर्न्द तोळान्-पर्वत से भी अधिक उन्नत कंधे वाले; पौन् तिणि पोत्तिताळुम्-स्वर्णकमलवासिनी (श्रीलक्ष्मीदेवी) को; भूमियुम्-व भूदेवी को; पुलम्बि नैय-प्रलाप करते हुए दुखी रहने देकर; कोशलै कोयिल्-कौसल्या के मन्दिर (महल) में; पुक्कान्-पहुँचे । २६६

पर्वत से भी अधिक उन्नत कंधों वाले श्रीराम ने यह इस रीति से कहकर कौंकेयी के चरण फिर एक बार छुए । पिता को नमस्कार उस दिशा में मुख करके सिर झुकाकर मानसिक रूप से किया । फिर वे कौसल्यादेवी के महल में आये । इनका कार्यक्रम देखकर स्वयं स्वर्णकमल-वासिनी लक्ष्मीदेवी और भूमिदेवी भी दुखी होकर प्रलाप करने लगीं । २९६

* कुळैककिन्त्र कवरि यिन्त्रिक् कौरुवण् कुडयु मिन्त्रि
इळैककिन्त्र विदिमुन् शैल्लत् तरुम्बिन् तिरडुगि येह

मल्लैक्कुन्ऱु मत्तैयान् मौलि कवित्तनन् वरुमेन् ईन्ऱु
तल्लैक्किन्ऱु दुळ्ळत् तन्नाण् मुन्ऱोऱु तमियन् शैन्ऱान् 297

मल्लै कुन्ऱम् अनैयान्-मेघाच्छन्न पर्वत-सम (श्रीराम); मौलि कवित्तनन्-मुकुट पहनकर; वरुम्-आयेगे; ईन्ऱु ईन्ऱु-ऐसा सोच-सोचकर; तल्लैक्किन्ऱु उळ्ळत्तु-लहलहानेवाले चित्त की; अन्नाळ् मुन्-उनके सामने; कुळैक्किन्ऱु कविरि इन्ऱि-डुलनेवाले चामर के बिना; कौन्ऱम् वैण् कुट्टैयुम् इन्ऱि-विजयी श्वेतछत्र के बिना; इळैक्किन्ऱु विति-क्रियाशील विधि के; मुन् चैल्ल- (उनके) आगे जाते; तरुमम् इरङ्कि-धर्म के दुख के साथ; पिन् एक-उनका पीछा करते; ओऱु तमियन् चैन्ऱान्-एकाकी गये । २६७

उधर कौसल्यादेवी इनकी प्रतीक्षा में थीं । पर वे यह सोचते हुए आनन्दानुभव कर रही थी कि मेघाच्छादित पर्वत-सम श्रीराम किरीटधारी होकर राजा के ठाट के साथ आयेंगे । पर ये तो गये, अकेले; चामर नहीं डुल रहे थे; विजयी छत्र भी नहीं था । साथ कौन थे ? क्रियाशील विधि आगे जा रही थी और धर्म रोते हुए पीछे आ रहा था ! । २९७

ॐ पुनैन्दिलन् मौलि कुञ्जि मञ्जन्ऱप् पुत्तिद नीराल्
ननैन्दिल नैन्गो लैन्नु मैयत्ता नल्लिन पादम्
वनैन्दपोऱ् कळ्ळकाल् वीरन् वणङ्गलुङ् गुळैन्नु वाळ्त्तति
निनैन्दवेन् तिडैयू रुण्डो नैडुमिडि पुनैदऱ् कैन्ऱाळ् 298

मौलि पुनैन्तिलन्-मुकुट पहना नहीं है; मञ्चनम् पुनितम् नीराल्-अभिषेक-योग्य पवित्र जल से; कुञ्चि ननैन्तिलन्-केश भीगा नहीं है; ईन्ऱु कौल्-क्या कारण है; ईन्ऱुम् ऐयत्ताळ्-यह संशयवाली; नल्लिनम् पातम्-कमलचरणों में; वनैन्त पोन् कळ्ळ काल् वीरन्-पहनी हुई पायल वाले चरणों के वीर राघव के; वणङ्गलुम्-नमस्कार करते ही; गुळैन्नु वाळ्त्तति-गद्गद होकर उसे आशीर्वाद देकर; निनैन्तु ईन्ऱु-सोचा क्या; नैटु मुटि पुनैत्ऱु-उन्नत किरीट पहनने में; इटैयू उण्डो-कोई बाधा है; ईन्ऱाळ्-यह प्रश्न किया । २६८

कौसल्या के मन में सन्देह उत्पन्न हुआ । सिर पर किरीट नहीं था । और उनका केश अभिषेकजल से भीगा भी नहीं था । क्या कारण होगा ? तब उनके कमलचरणों पर स्वर्ण-पायलधारी श्रीराम ने झुककर नमस्कार किया । वात्सल्य से गद्गद होकर कौसल्या ने पूछा कि अब तुमने इधर आने को सोचा क्यों है ? दीर्घ काल से रहता आनेवाला (या उन्नत) राजकिरीट पहनने में कोई बाधा उपस्थित हो गई क्या ? । २९८

ॐ मङ्गै यम्मोळि कूऱुलु मानवन्, शैङ्गै कूप्पिनिन् कादऱ् रिऱुमहन्
बङ्ग मिल्गुणत् तैम्बि बरदने, तुङ्ग सामुडि शूडुहिन् उन्नैन्ऱान् 299

मङ्कै-देवी के; अ मोंळि कूऱुलुम्-वह वचन कहते ही; मानवन्-मनुकुल के, श्रेष्ठ श्रीराम; चैम्कै कूप्पि-लाल हाथ जोड़कर; निन् कातल् तिरुमकन्-आपका

प्यारा पुत्र; पङ्कम् इल् कुणत्तु-कमीहीन गुणों वाले; अम्पि-मेरा छोटा भाई; परतते-भरत ही; तुङ्कम् मा मुटि चूटकिन्नान्-पवित्र, बड़े किरीट को धारण करेगा; अन्नान्-कहा । २६६

जब देवी ने यह बात कही तब मानव श्रीराम ने अपने सुन्दर हाथ जोड़कर उत्तर दिया कि आपका प्यारा पुत्र, अभंगी गुण वाला मेरा छोटा भाई भरत पवित्र श्रेष्ठ और बड़े किरीट को धारण करनेवाला है । (मानव—मान्य या मनुकुलोत्पन्न) । २९९

❖ मुर्म्मै	यन्त्रन्व	दौन्नण्डु	मुम्मयिन्
निर्म्मै	णत्तव	तिन्निन्नु	नल्लनोर्
कुर्म्मै	लन्त्रैन्क्	कून्नि	णाल्वर्क्कुम्
मरुवि	लन्त्रिनिन्	वैर्म्मै	माइन्निन् 300

नाल्वर्क्कुम् मरु इल् अन्पिन्निन्-चारों पुत्रों पर के निष्कलंक प्रेम में; वेर्म्मै माइन्निन्-भेद-विचार जिन्होंने बदल दिया था, उन कौसल्या ने; मुर्म्मै अन्त्र-यह क्रमोचित नहीं; अन्पु ओन्त्र-ऐसी एक बात (दोष); उण्डु-इसमें है; निन्निन्नु-तुमसे अधिक; मुम्मैयिन् निर्म्मै कुणत्तवन्-तिगुना श्रेष्ठ गुण वाला है (भरत); नल्लन्-सब लोगों से अच्छा माना जाता है; ओर् कुर्म्मै इलन्-कोई कमी नहीं, उसमें; अन्-ऐसा; कून्निन्-कहा । ३००

यह सुनकर कौसल्या उद्विग्न नहीं हुई । चारों पुत्रों के प्रति होने वाले उनके प्रेम में जो स्वभावतया भेद हो सकता था उसको उन्होंने अपने विवेक से दूर कर दिया था और वे चारों पर समान प्रेम रखती थीं । उन्होंने शान्ति के साथ कहा कि इसमें एक ही दोष है । यह कुल का क्रम नहीं है कि ज्येष्ठ के रहते कनिष्ठ को राजा बनाया जाय । नहीं तो भरत तुमसे गुण में तिगुना श्रेष्ठ है ! उसमें कोई कमी नहीं है । वह मुकुट के योग्य ही है । ३००

❖ अन्त्र पिन्त्रन् मन्त्रव नेविय, दन्त्रै तामै महन्ने युनक्कडन्
नन्त्र नुम्बिक्कु नानिल नीकौडुन्, तौन्त्रि वाळुदि यूळि पलवैन्नाळ् 301

अन्त्र-यह कहकर; पिन्त्रन्-और भी; मन्त्रे-पुत्र; मन्त्रवन् एवियतु-राजा का आज्ञापित; अन्त्र अनामै-“नहीं-नहीं” कहना; उनक्कु अन्-तुम्हारा धर्म है; नुम्बिक्कु-तुम्हारे अनुज को; नाल् निलम्-इस भूमि को; नी नन्त्र कौडुत्तु-तुम प्रेम के साथ देकर; तौन्त्रि-उसके साथ मेल करके; ऊळि पल वाळुति-अनेक युग जिओ; अन्नाळ्-कहा । ३०१

कौसल्यादेवी ने यह कहकर आगे कहा कि वत्स ! राजा की आज्ञा से इनकार नहीं करना ही तुम्हारा धर्म है । इसलिए तुम यह भूमि अपने भाई भरत को उत्साह के साथ दे दो और उसके साथ मेल से अनेक युग जिओ । ३०१

❖ तायु रैत्तशोर् केट्टुत् तळैक्किन्ऱ, तूय शिन्दयत् तोमिल् कुणत्तिनान्
नाय हन्नै नन्नैरि युयप्पदऱ्, केय द्रुण्डोर् पणियेन् इयम्बिन्नान् 302

ताय् उरैत्त चोल् केट्टु-माता का कहा वचन सुनकर; तळैक्किन्ऱ-आनन्द-
वर्धित; तूय चिन्तै-पवित्र मन और; अ तोम् इल् कुणत्तिनान्-निष्कलंक गुण वाले
श्रीराम; अन्नै नल् नैरि उयप्पतऱ्कु-मुझे सद्गति में पहुँचाने के निमित्त; नायकन्
एयतु-राजा का आज्ञापित; ओर् पणि उण्डु-एक काम है; अन्ऱ इयम्पितान्-ऐसा
कहा । ३०२

माता का यह कथन सुनकर श्रीराम का मन उल्लास से भर गया।
पवित्रमन और निर्दोषगुण श्रीराम ने माता को दूसरी बात सुनाई।
माताजी ! मुझे श्रेष्ठ गति में पहुँचाने के विचार से हमारे नायक ने मुझे
एक आज्ञा दी है । ३०२

❖ ईण्डु रैत्त पणियेन्नै येन्ऱवट्, काण्डो रेळिनी डेळहन् कानिडै
माण्ड मादवत् तोरुडन् वैहिप्पित्, मीण्डु नीवर वेण्डुमेन्ऱान् 303

ईण्डु उरैत्त पणि अन्नै-(राजा का) यहाँ पर आज्ञापित कार्य दिया है; अन्ऱ
वट्कु-यह पूछनेवाली (माता) से; ओर् एळिनेट्टु एळु आण्डु-एक सात के साथ सात
(चौदह) साल; अकन् कान् इटै-विस्तृत जंगल में; माण्ड-महान; मातवत्तोरेट्टन्-
बड़े तपस्वियों के साथ; नी वैक्कि-तुम रहो और; पित् मीण्डु वर वेण्डुम्-फिर
लौट आना चाहिए; अन्ऱान्-(राजा ने) कहा; अन्ऱान्-कहा । ३०३

कौसल्या ने अशंकमन से पूछा कि यहाँ उन्होंने तुम्हें क्या कार्य सौंपा
है ? श्रीराम ने उन्हें उत्तर दिया कि सात और सात साल (चौदह वर्ष)
वन में जाकर महिमायुक्त उत्तम तपस्वियों के साथ समय बिताऊँ और वाद
लौट आऊँ —यह पिताजी की आज्ञा है । ३०३

❖ आङ्गव्	वाशह	मेन्नु	मतल्कुळै
तूङ्गु	तन्शैवि	यिऱ्ऱोड	रामुनम्
एङ्गि	ताळिळैत्	ताडिहैत्	ताण्मनम्
वोङ्गि	ताळ् विम्मि	नाळ्विळुन्	दाळरो 304

आङ्कु-तब; अ वाचकम् अन्नम् अनल्-उस वचन रूपी आग के; कुळै तूङ्कु-
कुण्डल-शोभित; तन् चैवियिल् तोट्टरा मुन्नम्-अपने कानों में पड़ने के पूर्व ही;
एङ्किताळ्-दुखी हुई; इळैत्ताळ्-कृश हुई; मनम् तिकैत्ताळ्-भ्रम-चित्त हुई;
विम्मिनाळ्-सिसकने लगीं; वोङ्किताळ्-(रोने से) सूजा मुख वाली हो गई;
विळुन्ताळ्-नीचे गिर गई । ३०४

वह कथन आग के समान कौसल्याजी के कुंडलशोभित कान में घुसा
तो उनको अपार दुख हुआ। उनका मन भ्रमित हो गया। उनका
शरीर कृश हो गया। सिसकने लगीं। रोते-रोते मुख सूज गया। वे
अचेत होकर गिर पड़ी । ३०४

❖ वज्रं मोमहं नेयुनै मानिलम्, तज्ज माहनी ताङ्गेन्र वाशहम्
नज्ज मोविन्ति नानुयिर् वाळ्वेन्तो, अज्जु मज्जुमेन् तारुयि रज्जुमाल् 305

मकते-सुत; उत्तै-तुमसे; मा निलम्-इस बड़ी भूमि को; तज्जम् आक-
शरण्य (रक्षक) रहकर; नी ताङ्कु-तुम भरण करो; अँन्र वाचकम्-यह (राजा
का) वचन; वज्रचमो-वंचना है; नज्जचमो-(या मुझे मारने आया) विष है; इति
नान् उयिर् वाळ्वेन्तो-अब मैं क्या जिऊंगी; अँन् अरु उयिर्-मेरे दुर्लभ प्राण; अज्जुम्
अज्जुम्-डरते हैं, डरते । ३०५

(सम्हलकर कौसल्या ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी !) वत्स ! इस
विशाल भूमि का रक्षक रहकर उसका भरण करो —यह जो राजा का
कहना था वह क्या वंचना थी ? या मुझे मारने के लिए आया विष था ?
अब मैं जी सकूंगी क्या ? मेरे प्राण काँपते हैं, हाँ काँपते हैं । ३०५

❖ कैयैक् कैयि नैरिक्कुन्दन् कादलन्, वैहु मालिलै यन्न वयिर्इत्तैप्
पैय्व लैत्तळि राइपिशै युम्बुहै, वैय्दु यिर्क्कुम् विळुन्नु पुळुङ्गुमाल् 306

कैयै कैयिन् नैरिक्कुम्-एक हाथ को दूसरे हाथ से मसलतीं; तन् कातलग् वैकुम्-
अपना प्यारा पुत्र जिसमें रहा उस; आल् इलै अन्त-वटपत्र-सम; वयिर्इत्तै-पेट
को; वैय्यै तळिराल्-वलयधारी पल्लव (-मृदुल कर) से; पिचैयुम्-दवातीं; पुक्कै
वैयु उयिर्क्कुम्-अग्नि-धूम के समान गरम साँस छोड़तीं; विळुन्नु-नीचे गिरकर;
पुळुङ्कुम्-पीड़ा का अनुभव करतीं । ३०६

देवी एक हाथ से दूसरा हाथ पकड़कर मसलतीं । कभी अपने
वटपत्र-सम पेट को, जिसमें उनका प्यारा पुत्र वास करता था, वलयधारी
पल्लवमृदुल हाथ से मसलतीं । कभी आग से निकलनेवाले धुएँ के समान
गरम साँस निकालतीं । कभी नीचे गिरकर मन मसोसतीं । ३०६

❖ नन्न मन्नन् करुणै यँनानहुम्, निन्न मैन्दतै नोक्कि नैडुञ्जुरत्
तैन्न पोव दैन्तवैळ् मिन्नुयिर्, पौन्नरुम् पोदुन्न दुर्त्तळ् पोलुमे 307

मन्नन् करुणै नन्न-राजा की दया भी भली है; अँता नकुम्-कहकर हँसतीं;
निन्न मैन्दतै नोक्कि-खड़े रहे तनय को देखकर; नैडु चुरत्तु-विस्तृत जंगल में;
अँन्न पोवतु-कब जाना है; अँता अँळुम्-कहती हुई उठतीं; इन् उयिर् पौन्नरुम्
पोतु-जब प्यारे प्राण चलने को होते हैं तब; उर्त्तु-जो पीड़ा होगी; उर्त्तळ्
पोलुम्-उसको प्राप्त कर चुकी-सी बन गई । ३०७

कहती— राजा की कृपा भी भली रही ! कहकर हँसतीं ! अपने
सामने स्थित श्रीराम से पूछती कि विस्तृत जंगल में कब जाना है ? कहती
हुई उठतीं । उनकी मरणवेला की-सी अवस्था हो गई । ३०७

❖ अन्वि लैत्त मन्नत्तर शङ्कुनी, अँन्वि लैत्तनै यँन्ननिन् रेङ्गुमाल्
मुन्वि लैत्त वरुमयिन् मुर्त्तिनोर्, पौन्वि लैक्कप् पीदिन्दनर् पोलवे 308

अन्नु इळैत्त मन्तत्तु—(तुम्हारे प्रति) प्रेम रखनेवाले मन के; अरचड्कु—राजा को; नी अन् पिळैत्तनै—तुमने क्या अपराध किया; अँन्ऱु—कहकर; निन्ऱु—(ठिठकी) खड़ी रहकर; मुन् पिळैत्त वऱ्ऱुमैयिल्—पूर्व पाप प्राप्त दरिद्रता में; मुऱ्ऱित्तोर्—वढ़े हुआं ने; पौन्—प्राप्त स्वर्ण को; पिळैक्क—हाथ से जाने देते हुए; पौत्तिन्तत्तर् पोल—गाँठ में बाँध रखा जैसे; एड्कुम्—तरसती; (आल्, ए) । ३०८

कभी पूछतीं— राजा तुम पर गहरा प्रेम रखते थे । ऐसे उनका तुमने क्या अपराध किया ? पूछती हुई चकित खड़ी रहतीं । वह पूर्वकृत पापों के कारण दरिद्रता में वढ़े हुए उन लोगों के समान मन मसोसने लगीं जिन्होंने कुछ स्वर्ण पाकर गाँठ में असावधानी से बाँध रखी हो कि वह स्वर्ण खो गया हो । ३०८

❖ अरम् नक्किलै योवैन्नु माविनैन्, दिऱव डुत्तदैन् रेय्वदड् गाळैन्नुम्
पिऱवु रैप्पदैन् कन्ऱु पिरिन्दुळिक्, कऱवै यौप्पक् करैन्दु कलङ्गिताळ् 309

अरम् अँनक्कु इलैयो—धर्म देवता मेरी सहायता करनेवाले नहीं हैं क्या; अँन्नुम्—कहती; तैय्वतड्काळ्—देवताओ; आवि नैन्नु इऱ—प्राण क्षीण होकर मिट जायें, इसका; अँदुत्तु अँन्—हेतु क्या है; अँन्नुम्—कहतीं; कन्ऱु पिरिन्तु उळि—बछड़ा जब बिछड़ गया तब; कऱवै औप्प—जैसे गाय, वैसे; करैन्नु—पिघलकर; कलङ्किताळ्—व्याकुल हुई; पिऱ उरैप्पतु अँन्—फिर कहना क्या । ३०९

वे प्रलाप करती— क्या मेरा धर्म (सहायक) नहीं है ! देवताओ ! मेरे प्राणों को क्षीण करते हुए जो यह दुख सता रहा है उसका हेतु क्या है ? बछड़ा खोकर दुधार गाय जैसे छटपटाती है वैसे ही कौसल्याजी पिघलकर व्याकुल हुई । किं वहुना ? अपार दुखी हो रहीं । ३०९

❖ इत्ति इत्ति त्रिडरु वाडनैक्, कैत्त लत्ति नैडुत्तरुड् गर्पितोय्
पौय्त्ति इत्तिन्न नाक्कुदि योपुहल्, मैय्त्ति इत्तुनम् वेन्दनै नीयैन्ना 310

इ तिरुत्तिन्—इस प्रकार; इटर् उरुवाळ् तन्नै—दुखनेवाली उनको; कै तलत्तिन् अँदुत्तु—करतल से उठाकर; अरु कर्पिनोय्—महार्घ पातिव्रत्य शीला; मैय् तिरुत्तु नम् वेन्तनै—सत्यनिष्ठ हमारे राजा को; नी—आप; पौय् तिरुत्तिन्न—असत्यवादी; आक्कुतियो—बना लेगी क्या; पुक्ल्—कहिये; अँन्ना—ऐसा कहकर । ३१०

श्रीराम ने इस तरह दुख करनेवाली अपनी माता को अपने करतल से उठाया । आश्वस्त करते हुए कहा— महार्घ पातिव्रत्य वाली ! हमारे राजा सत्यनिष्ठ है । क्या आप उन्हें असत्यवादी बना लेगी ? कहिये । ३१०

पौऱ्पु इत्तन्न मैय्म्मै पौदिन्दन, शौऱ्पु इत्तर् कुरियन्न शौल्लितान्
कऱ्पु इत्तिय कऱ्पुडै याडनै, वऱ्पु इत्ति मन्डङ्गोळत् तेऱुवान् 311

कऱ्पु उरुत्तिय—(बड़ों से) सिखाया गया; कऱ्पु उडैयाळ् तन्नै—पातिव्रत्यशीला को; वऱ्पु इत्ति—दृढचित्त बनाकर; तेऱुवान्—स्वस्थ बनाने के हेतु; पौऱ्पु

उरुत्त-सुन्दरता भरे; मैयूमै पौतिन्त-सत्यगर्भित; चौड़पु उरुत्तइकु उरियत्त-
वात समझाने के लिए आवश्यक; मतम् कौळ-(तर्क) मन में लगे ऐसे; चौल्लिन्नान्-
(श्रीराम ने) वचन कहे । ३११

श्रीराम ने धारणा कर ली कि उत्तम गुरुओं से शिक्षित पातिव्रत्य
रखनेवाली इनको धीरज बंधाना चाहिए । इसलिए उन्होंने ऐसे शब्दों में
उन्हें समझाया जो तर्कयुक्त थे, सत्यगर्भित थे और उनके मन को व्यक्त
करने की क्षमता रखते थे । ३११

❖ शिरन्द तम्बि तिरुवुड वेंन्दयै, मरुन्दुम् पौय्यिल त्ताक्कि वत्तत्तिडै
उरैन्दु पेरु मुरुदिपैर् रेतिदिर्, पिउन्दि यान्पैरुम् बेरैन्ब दियावदो 312

चिरन्त तम्पि-श्रृंखला अनुज के; तिरु उर-राज्यश्री प्राप्त करते; अन्तैयै-
मेरे पिता को; मरुन्दुम् पौय्यिलन् आक्कि-अप्रमत्त सत्यसंध बनाकर; यान् वत्तत्तु
इटै उरैन्दु-मैंने, वतवास करके; पेरुम् उरुति पैरैन्-लौट आने को तय किया है;
पिउन्तु-(इस कुल में) जन्म लेकर; पैरुम् पेरु अन्पतु-पाने का सौभाग्य; इतिन्
यावतु-इससे बढ़कर क्या होगा । ३१२

उन्होंने कहा— माताजी मैं जंगल हो आने का निश्चय कर चुका
हूँ ताकि मेरा प्यारा भाई राज्य पा जाय और मेरे पिताजी भूलकर भी
असत्य न बोलनेवाले अप्रमत्त सत्यवादी रह जायँ । इस वंश में जन्म
लेकर, इससे बड़ा लाभ कौन सा होगा जो मुझे प्राप्य होगा ? ३१२

❖ विण्णुम् मण्णुमिव् वेलयु मरुम्बे, रैण्णुम् बूद मैलामळिन् देहितुम्
अण्णु लेवन् मरुक्क वडियनेर्, कौण्णु मोविदर कुळळळि येल्नेन्नान् 313

विण्णुम्-आकाश; मण्णुम्-और यह पृथ्वी; इ वेलैयुम्-और यह सागर;
मरुम्-और; वेरु अण्णुम्-अलग-अलग गिने जानेवाले; पूतम् अल्लाम्-भूत सब;
अळिन्तु एकितुम्-नाश हो जायँ तो भी; अडियनेर्कु-मुझ दास को; अण्णल् एवल-
चक्रवर्ती की आज्ञा; मरुक्क अण्णुमो-टाली जा सकती है क्या; इतर्कु उळ्
अळियेल-इसके लिए मन छोटा मत कीजिए; अन्नान्-ऐसा कहा । ३१३

आकाश, पृथ्वी, समुद्र यानी जल और (दो अनल और अनिल)
अन्य भूत—अलग-अलग गिने जानेवाले ये सब— मिट जायँ (यानी प्रलय ही
क्यों न हो जाय) मुझ दास से स्वामी राजा की आज्ञा टाली जा सकती है
क्या ? फिर आप क्यों अपने मन मारें ? दुखी मत होइए । (तमिळ में
'मैं' की जगह पर अडियेन्, जिसका अर्थ 'दास मैं' है, प्रयोग करने की प्रथा
है । यह वैष्णव लोगों में अब भी प्रचलित है ।) । ३१३

❖ आहि लैय वरवान्ना त्ताणयाल्, एह लैन्ब दियान्तु मुरैक्किलेन्
शाह लावयिर् ताङ्गवल् लेत्तयुम्, पोहि लुन्नीडुर् गौण्डनै पोहैन्नाळ् 314

आकिल्-ऐसा है तो; ऐय-तात; अरचन् तन् आणैयाल्-राजा की आज्ञा से;

एकल् अन्नपतु-(वन) मत जाओ, कहना; यातुम् उरंक्किलेन्-मैं भी नहीं कहती; पोकिल्-तुम जाओ तो; चाक अल्ला उयिर्-न मर जानेवाली इस जान को; ताङ्क वल्लेन्नैयुम्-न रख सकनेवाली मुझे भी; उन्नूर्तोट्टुम् कौण्टतै पोक-अपने साथ लेते जाओ । ३१४

यह सुनकर कौसल्या ने उत्तर में वेदना देनेवाली बात कही । हे आर्य ! हे राम ! अगर यही तुम्हारा निर्णय है तो मैं भी नहीं कहूँगी कि तुम राजा की आज्ञा के कारण वन मत जाओ । पर इतना कहूँगी कि तुम्हारे वनगमन के निश्चय की बात सुनकर तत्काल मेरे प्राण नहीं छूटे, तो भी तुम्हारे जाने के बाद ध्रुव है कि मैं अपने प्राण धारण नहीं कर सकूँगी । इसलिए तुम मुझे भी साथ लेते चलो । ३१४

❖ अन्नै नीड्गि यिडर्क्कडल् वैहुरुम्, मन्नर् मन्नन्नै वरुप्पुत्तात्ताडुडन्
तुन्नु कात्तन् दौडरत् तुणिवदे, अन्नै नीड्गि वार्क्किलै यामेन्नान् 315

अन्नै-माताजी; अन्नै नीड्गि-मुझसे विछुड़कर; इटर् कटल् वैकु उरुम्-दुख-सागर में डूबनेवाले; मन्नर् मन्नन्नै-राजाधिराज को; वरुप्पुत्तात्ता-धीरज बँधाये बिना; तुन्नु कात्तम्-घने जंगल में; उटन्-मेरे साथ; नीड्गि तुणिवदे-आप आने का साहस करें; अरुम् पार्क्किलै आम्-धर्म नहीं देखा, यही बात है; अन्नान्-कहा । ३१५

श्रीराम ने कहा— माताजी ! मेरे पिता मुझसे विछुड़कर दुखसागर में मग्न हो जायँगे । उनको पास रहकर धीरज बँधाये बिना कैसे आप मेरे साथ जंगल आने का निश्चय करती हैं ? वैसा भी करेगी ? तब इसका अर्थ यही होगा कि आपने धर्म पर ध्यान नहीं दिया है । ३१५

❖ वरिवि लैम्बियिम् मण्णर शायवर्, कुरिमै मानिल मुर्ऱपिन् कौर्ऱवन्
तिरुवि नीड्गित् तवर्जैयु नाळुडन्, अरुमै नोन्नुह ळार्ऱुदि यामन्ऱे 316

वरि विल् अम्पि-वन्धनयुक्त धनुर्धर मेरा अनुज; इ मण् अरचु आय्-इस पृथ्वी का राजा बनकर; अवर्कु मा निलम् उरिमै उर्ऱ पिन्-उसका, यह बड़ा राज्य अपना हो जाने के बाद; कौर्ऱवन्-चक्रवर्ती; तिरुविन् नीड्गि-सम्पत्ति छोड़कर; तवम् चैयमुम् नाळ्-तपस्या जब करेंगे तब; उटन्-उनके साथ; अरुमै नोन्नुह-महार्घ व्रत; आर्ऱुति-पालन कीजिए; आम् अन्ऱे-यह उचित है न । ३१६

वन्धनयुक्त धनुर्धर मेरा भाई राजा बनेगा । सारा राज्य उसके अधिकार में आ जायगा । फिर राजा सांसारिक सुख-वैभव से छूटकर तपस्या करने वन में जायँगे । तब आप भी उनके साथ रहकर व्रतपालन कीजिए । यही न श्रेष्ठ होगा ! । ३१६

❖ शित्त नोतिहैक् किन्ऱदन् तेवरुम्, औत्त मादवर् शैय्दुयर्न् दारन्ऱे
अत्त नैक्कुळ वाण्डुह ळीण्डवै, पत्तु नालुम् पहलल वोवैन्नान् 317

नी चित्तुतम् तिकैक्किन्ऱु अन्-आप चित्ताकुल क्यों होती हैं; तेवरुम्-देवता लोग भी; अत्त मातवम् चैयु-उचित बड़ा तप करके; उयर्न्तार् अन्ऱे-न बढ़े; ईण्डु-यहाँ; आण्डुकळ् अत्तनैक्कु उळ-वर्ष कितने है; अव पत्तुम् नालुम्-वे दस और चार; पकल् अलवो-केवल (उतने ही) दिन हैं न; अन्ऱान्-कहा । ३१७

आपका मन क्यों चकित हो ? देवता भी उचित तपस्या करके न ऊँचे बढ़े ? यहाँ मेरे वनवास के वर्ष भी कितने हैं ? चौदह ही वर्ष हैं और वे उतने दिनों के समान बीत जायँगे । ३१७

मुन्ऱर्क् कोशिह तैन्नु मुत्तिवरन्, तन् रुट्टलै ताङ्गिय विञ्जयुम्
पिन्ऱ रैय्दिय पेरुम् पिळ्ळैत्तवो, इन् नन्ऱवर्क् केयिन शैय्दले 318

मुन्ऱर्-पहले; कोचिकन् अन्ऱुम् मुत्तिवरन् तन्-कौशिक नाम के मुनिवर की; अरु तलै-दया से; ताङ्किय विञ्जैयुम्-प्राप्त मेरी विद्याएँ; पिन्ऱर्-वाद को; अय्यिय पेरुम्-(उनकी कृपा से) प्राप्त सौभाग्य भी; पिळ्ळैत्तनवो-क्या दोषपूर्ण हैं; इन्ऱम्-और भी; अवर्क्कु एयिन चैयत्-उन (जैसे ऋषियों) की उचित सेवा करना; नन्ऱे-लाभदायक ही होगा । ३१८

देखिये । पहले कौशिक महर्षि की कृपा से मुझे विद्याएँ मिली और कितनी ही! अन्य (यश, विवाह) उपलब्धियाँ हुई! क्या वे कुछ कमी रखती हैं! और भी ऐसे महर्षियों की संगति और सेवा लाभदायक ही होगी । ३१८

माद वरक्कु वळिपा डिळ्ळैत्तरुम्, बोद मुर्ऱिप् पौरुवरु विञ्जहळ्
एद मर्ऱन ताङ्गि यिमैयवर्, कादल् पेरुर्ऱिन् नहर्वरक् काण्डियाल् 319

मातवर्क्कु-महान तपस्वियों की; वळि पाटु इळ्ळैत्तु-पूजा-सेवा करके; अरु पोतम् मुर्ऱि-मूल्यवान ज्ञान से पूर्ण होकर; एतम् अर्ऱन्-निर्दोष; पौरुव अरु-और अनुपम; विञ्चैकळ् ताङ्कि-मन्त्रविद्या प्राप्त करके; इमैयवर कातल् पेरु-देवों की कृपा का पात्र बनकर; इ नकर् वर काण्टि-इस नगर को लौट (आऊँगा) आना देखेंगी । ३१९

आप ही देखेंगी । महान तपस्वियों की चरणसेवा करके उनकी संगति और उनके उपदेशों से ज्ञान में पूर्ण होकर निर्दोष और अनुपम विद्याएँ अर्जित करके, और देवताओं का प्रेमपात्र बनकर इस नगर को लौट आऊँगा । ३१९

महर वेलैमण् डोट्टवण् डाडुतार्च्, चहरर् तादै पणितलै निन्ऱुतम्
पुहरिल् याक्कयि निन्ऱुयिर् पोक्किय, निहरिन् माप्पुहळ् निन्ऱुदन् रोवैन्ना 320

मकरम् वेलै-मकरालय सागर से वलयित; मण् तौट्ट-भूमि को जिन्होंने खोदा वे; वण्डु आटु तार् चकरर्-भ्रमरावृत-मालाधारी सगरपुत्रों का; तातै पणि तलै निन्ऱु-पिता की आज्ञा शिरोधार्य करके; तम्-अपने; पुकर् इल् याक्कैयिन्-निर्दोष

शरीरों से; इन् उयिर् पोक्किय-अपने प्राणों को त्यागने का; निकर् इल् मा पुक्क-
अप्रमेय महान यश; निन्ऱु अन्ऱो-आज भी अचल है न; अँना-ऐसा कहकर। ३२०

मकरालय-वलयित भूमि को भ्रमरावृत्तमाला-धारी सगरसूनुओं ने
खोदा था। उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन करके ही अपने
शरीरों से प्राण अलग करा लिये। उनका यश आज भी अचल है न ?
—यह कहकर आगे बोले। ३२०

मान्म इक्करत् तान्मळ् वेन्दुवान्, तान्म इत्तिलन् रादैशोर् रायये
ऊन इक्कुऱैत् तानुर वोनरुळ्, यान्म रूपर्देन् ऐण्णुव दोवैन्ऱान् 321

मान् मरि करत्तान् मळ्—मृगशावक-हस्त (शिवजी) का परशु; तान् एन्नुवान्—
उसको अपने हाथ में रखनेवाले परशुराम ने; तातै चोल् मरुत्तिलन्—पिता की आज्ञा
मानने से इनकार नहीं किया; रायये-और माता को भी; ऊन् अर्-शरीर के छुड़
करते हुए; कुऱैत्तान्—उनका सिर काटा; उरवोन् अरुळ् मरुप्पत्तु—मेरे बुद्धि-शक्ति
में श्रेष्ठ पिता के कृपा-वचन (आज्ञा) का अनादर करना; अँन्ऱु यान् ऐण्णुवतो-ऐसा
मैं सोचूँ क्या; अँन्ऱान्—कहा। ३२१

एक हाथ में मृगशावक धारण करनेवाले शिवजी का हथियार परशु
जो है उसको अपना हथियार बनाकर रखनेवाले परशुराम ने क्या किया ?
अपने पिता की आज्ञा से (जो अपनी पत्नी के चरित्र पर संदेह हो जाने से
क्रुद्ध हुए थे) अपनी माता का सिर काट लिया। इन उदाहरणों के सामने,
मैं, अपने बुद्धिमान पिता की कृपापूर्ण आज्ञा मानने से इनकार करना
सोचूँ ?। ३२१

ॐ इत्ति उत्त वैनैप्पल वाशहम्, उय्त्तु रैत्त महत्तुरै युट्कोळा
अँत्ति उत्तु मिऱक्कुमिन् नाडैना, मँय्त्ति उत्तु विळङ्गिल्लै युत्तुवाळ् 322

इ तिऱत्त-इस प्रकार के; अँतै पल वाचकम्-और अन्य वचन; उय्त्तु उरैत्त-
समझाकर जिन्होंने कहे उन; मकन् उरै-पुत्र की वात; उळ् कोळ्ळा-मन में धरकर;
अँ तिऱत्तुम्—किसी भी विध; इ नादु इऱक्कुम् अँना-यह राज्य छोड़ देगा, यह
सोचकर; मँय् तिऱत्तु-सत्यपक्ष (या सत्यरूपी); विळङ्कु इळै-शोभायुक्त
आभरण वाली; उन्नुवाळ्—(उपाय) सोचने लगी। ३२२

कौसल्या ने इस प्रकार कहते हुए राम की बातें सुनीं। निश्चय
जान लिया कि यह किसी विंध्य राज्य छोड़ ही देगा। सत्यवादी और (या
सत्य का ही) श्रेष्ठ आभरणधारिणी कौसल्या (उन्हें रोकने का) उपाय
सोचने लगीं। ३२२

ॐ अवन्ति कावल् बरदन दाहुह, इवन्ति जाल मिऱन्दिऱुद् गान्तिडैत्
तवनि लावहै काप्पेन् उहविनाल्, पुवनि नादऱ् रौळुदैन्ऱु पोयिनाळ् 323

अवन्ति कावल्-राज्यरक्षण; परतत्तु आकुक्-भरत का हो; इवन्-यह;

इ जालम् इडन्तु-यह देश छोड़कर; इरु कान् इटै-बड़े वन में जाकर; तवन् निला वकै-तपोरत न हो, इस प्रकार; तकविनाल्-उचित क्रम से; पुवनि नातन् तौळुतु-भुवनपति से विनय करके; काप्पेन्-रोकूंगी; अँन्ऱु-सोचकर; पोयित्ताळ्-गई। ३२३

उन्होंने सोचा कि भू-पालन भरत का हो, पर यह देश छोड़कर विशाल वन में जाकर तपस्या करता न रह जाय। मैं भुवनपति चक्रवर्ती से योग्य रीति से प्रार्थना करके इसको रुकवाऊँगी। यह मन में सोचकर वे निकलकर चलीं। ३२३

❖ पोहिन् डाळैत् तौळुतु पुरवलन्, आह मड्रिव डन्नयु माड्रियिच्
चोहन् दीर्प्पवळैन्ऱु सुमित्तिरै, मेहन् दोय्मणिक् कोयिलै मेयिनान् 324

पोकिन्ऱाळै-जानेवाली का; तौळुतु-नमस्कार करके; पुरवलन्-राजा के साथ; इवळ् तन्नैयुस्-इनको भी; आकम् आड्रि-मन दृढ़ करके; इ चोक् तौर्प्पवळ्-शोकमुक्त करनेवाली; अँन्ऱु-समझकर; चुमित्तिरै-सुमित्रा के; मेकम् तोय्-मेघ-स्पर्शी; मणि कोयिलै-सुन्दर महल में; मेयित्तान्-जा पहुँचे। ३२४

गमनशील उनको श्रीराम ने नमस्कार किया। उन्होंने सोचा कि सुमित्रादेवी ही इनको और राजा को धीरज देकर उनके दुःख को दूर कर सकती है। इसलिए वे सुमित्रा के मेघस्पर्शी सुन्दर महल की ओर गये। ३२४

❖ नडन्द कोशलै केहय नाट्टिरै, मडन्दै कोयिलै यैय्दित्तण् मन्तवन्
किडन्द पारमिशै वीळ्न्दनळ् कैट्टुयिर्, उडैन्द पोळ्ळि नुडल्विळ्ळुन् दैन्तवे 325

नडन्त कोचलै-जो चलीं वे कौसल्या; केकय नाट्टु इरै मडन्तै-केकय देश के राजा की पुत्री के; कोयिलै अँय्तिनळ्-महल में पहुँचीं; मन्तवन् किडन्त पारमिचै-राजा जहाँ गिरे थे, उस स्थल पर; उयिर् उडैन्त पोतिन्-प्राणवियोग के अवसर पर; उडल् कैट्टु विळ्ळुन्तु-शरीर अस्थिर होकर गिरा जैसे; वीळ्न्तत्तळ्-गिर पड़ीं। ३२५

कौसल्यादेवी चलकर केकयराज-तनया के महल में पहुँची। (देखा कि राजा भूमि पर बेहोश पड़े हैं।) वे भी उसी स्थान पर, जहाँ राजा गिरे पड़े थे, धड़ाम से गिरी जैसे प्राण छूटने पर निर्जीव शरीर गिर जाता है। ३२५

पिडियार्	पिरिवे	दैन्नुम्	पैरियोय्	तहवो	वैन्नुम्
नैरियो	वडियो	निलैनी	निनैयाय्	निनैवे	दैन्नुम्
वरियोर्	दनमे	यैन्नुन्	दमियेन्	वलिये	यैन्नुम्
अडिवो	विनैयो	वैन्नु	मरशे	यरशे	यैन्नुम् 326

पिडियार्-अब तक जो कभी विलग नहीं हुए हैं उनमें; पिरिवु एतु-अब विछुड़न का कारण क्या; अँन्नुम्-कहतीं; पैरियोय्-सर्वोत्तम; तकवो-क्या यह उचित है; नैरियो-नीतिसम्मत है; अँन्नुम्-कहतीं; अटियोम् निलै-आपकी दासियाँ हमारी

स्थिति; नी नितैयाय-आपने नहीं सोची; निनैव् एतु-आपका अभिप्राय भी क्या है; अँत्तुम्-कहतीं; वरियोर् तनमे अँत्तुम्-निर्धनों के धन कहतीं; तमियेन् वल्लिए-मेरे, निर्बल के बल; अँत्तुम्-कहतीं; अरिवो-इसका ज्ञान आपको है क्या; विनैयो- (दूसरे का) दुष्कर्म है; अँत्तुम्-कहतीं; अरचे अरचे-राजा, राजा; अँत्तुम्- यह पुकारतीं । ३२६

फिर वे विलाप करने लगीं । हम अब तक एक-दूसरे से अलग नहीं हुए थे । अब विलगाने का हेतु क्या है ? सर्वोत्तम ! क्या यह उचित है ? नीतिसम्मत है ? कभी कहतीं— हम चरणदासियों की स्थिति पर आपने विचार नहीं किया । आपका अभिप्राय क्या है ? निर्धन के धन ! मुझ निर्बल के बल ! कभी पूछती कि यह जो हुआ वह आप के जानते हुआ या किसी का षडयन्त्र है ? वे राजा, राजा कहकर प्रलाप करती । ३२६

इरळ्ळु	रिडवुर्	रौळिरु	मिरविक्	कैदिरुन्	दिहिरि
उरळत्	तनियुय्त्	तौरुको	नडैयिर्	कडैहा	णुलहम्
पौरुळ्	रिडमुर्	रुरुम्	पहलिर्	पुहुदुर्	कैन्ऱो
अरळिर्	कट्टुर्	उडुनी	यरशर्क्	करशे	यँत्तुम् 327

अरचर्क्कु अरचे-राजाधिराज; नी-आप; अरळिन् करु उरुत्तु-कृपा करके (श्रीराम वनगमन) जो सोचा वह; इरळ् अरुटि-अन्धकार दूर करते हुए; उरु- ओळिरुम्-अधिक दीप्त; इरविकु अँतिरुम्-सूर्य के समान; तिकिरि-अपने आज्ञाचक्र को; तनि उरळ उय्यत्तु-अनुपम रूप से चलाकर; ओरु कोल् नडैयिल्-राजदण्ड प्रयोग में; कटै काण्-उच्चता देखनेवाला; उलकम्-यह लोक; पौरुळ् अरुटि- सभी वस्तुओं के नाश के साथ; मुडु उरुम्-पूर्ण नष्ट जिसमें हो जायगा; अ पकलिल्- उस समय में; पुकुतर्कु अँन्ऱो-प्रवेश करने के लिए क्या; अँत्तुम्-कहतीं । ३२७

राजन् ! आपने जो कृपापूर्ण आज्ञा सुनाई है उसका फल क्या होगा, सोचा है ? अन्धकार हटाते हुए दीप्त रहनेवाले सूर्य के समान आपका आज्ञाचक्र है । उस आज्ञाचक्र को चलाते हुए आप राजदण्ड धर रहे हैं । उस शासन में यह भूमि अत्युन्नत स्थिति पर है ! अब आपकी आज्ञा उस भूमि पर प्रलय ला देगी ! इसी हेतु आपकी आज्ञा निकली है क्या ? । ३२७

तिरैयार्	कडलू	ळुलहिन्	उवमे	तिरुविन्	रिरुवे
निरैयार्	कलैयिन्	कडले	नैरियार्	मरैयिन्	निलैये
करैया	वयर्वे	नैन्नी	करुणा	लयने	यँन्ऱैन्
इरैया	यिदुदा	नळहो	वुलहे	ळुडैया	यँत्तुम् 328

तिरै आर्-लहरोंवाले; कडलू चूळ-सागर से घिरी; उलकिन् तवमे-पृथ्वी के तपोरूपी; तिरुविन् तिरुवे-धनों में धन; निरै और कलैयिन्-श्रेणीबद्ध विद्याओं के; कडले-सागर; नैरि आर् मरैयिन्-अच्छे नीतिवचनों से पूर्ण वेदों के; निलैये-निलय; करुणा आलयन्ते-करुणा के आलय; उलकु एळ्ळु उटैयाय्-सातों लोकों के स्वामी;

करैया अयर्वेत् अतै-पिघलकर श्रान्त होनेवाली मुझे; नी-आप; अँत् अँत् उरैयाय्-
क्यों नहीं पूछते; इतु अळकु तानो-यह आपके लिए शोभा है क्या । ३२८

लहरोंवाले समुद्र से वलयित इस भूमि के तपोरूप ! धनों में श्रेष्ठ
धन ! अनेक विद्याओं और शास्त्रों के सागर (आगार) ! श्रेष्ठ नीतिबोधक
वेदों के निलय ! करुणा के आलय ! सातों लोकों के मालिक ! मैं पिघल
कर श्रान्त हो रही हूँ । 'क्यों रो रही हो' —यह एक बात नहीं पूछते !
यह मौन आपको शोभा देता है क्या ? । ३२८

मिन्निन्	इतैय	मेनि	वँरिदा	यळहर्	इळिय
उत्तुन्	दहमैक्	कडैया	वुरुनो	युरुहिन्	रुणरान्
अँत्तैन्	रुरैया	तैन्ते	यिदुदा	तेदेन्	इरियेन्
मन्तन्	इन्मै	काण	वाराय्	महने	यैन्नुम् 329

मिन् निन् अतैय मेनि-स्थिर विद्युत-सम इनकी देह; वँरितु आय्-प्रभाहीन
होकर; अळकइरु अळिय-सौंदर्यविहीन होकर नष्ट होता है; उत्तुन् तकैमैक्कु
अटैया-अचिन्त्य रूप से; उरुनोय् उरुकिन्नु उणरान्-अत्यधिक वेदना भी नहीं समझते;
अँत् अँत् उरैयाय्-क्या हुआ यह भी नहीं कहते; अँत्ते-यह क्या है; इतु तान् एतु
अँत् अरियेन्-यह क्यों यह मैं नहीं जानती; मकत्ते-हे वत्स; मन्तन् तन्मै काण
वाराय्-राजा की स्थिति देखने के लिए तुरत आओ; अँत्तुम्-कहतीं । ३२९

वे राजा की निपट सुधि-हीन स्थिति से घबड़ा उठीं । स्थिर विद्युत
समान कान्ति वाले इनकी देह निष्प्रभ हो गई है । सौन्दर्य चला गया है ।
अचिन्त्य पीड़ा की भी सुध नहीं करते । मुख खोलकर, क्या बात है —यह
भी नहीं कहते । यह कैसी स्थिति है जान नहीं पातीं । वे उच्च स्वर में
चिल्लाने लगीं— हे पुत्र ! आओ । चक्रवर्ती की दशा देखो । ३२९

इव्वा	इळुवा	ळिरियर्	कुरल्शैन्	रिशैया	मुत्तन्म्
ओव्वा	दौव्वा	दैन्ता	वौळिर्वा	णिरुब्	मुनिवर्
अव्वा	इरिवा	यैन्त	वन्तान्	मुत्तिमन्	तवन्तुम्
वैव्वा	ळरशन्	निलैहण्	डैन्तो	विळैवैन्	रुन्ना 330

इव्वाइ अळुवाळ्-इस प्रकार विलापती कौसल्या के; इरियल् कुरल्-रौने का
स्वर; चैन्नु इचैया मुत्तन्-जाकर लगने से पहले; ओळिर् वाळ् निरुप्-कांतियुक्त
तलवार वाले राजा लोग; मुत्तिवर्-मुनि; ओव्वातु ओव्वातु-यह वेमेल है, अवद्ध;
अँत्ता-कहते हुए; अ आरु अरिवाय् अँत्त-उसका हेतु जानिये, कहने पर; वन्तान्
मुत्ति मन्तवन्तुम्-आये मुनिराज वसिष्ठ; वैम् वाळ् अरचन् निलै-भयंकर तलवार वाले
राजा की स्थिति; कण्टु-देखकर; विळैवु अँत्तो-हुआ क्या; अँत् उन्ता-यह
सोचकर । ३३०

इस प्रकार विलापनेवाली देवी का रुदन-स्वर मण्डप में सुनाई दिया ।
उनके कान में पड़ते ही चमकती तलवार-धारी नरपति लोग और

मुनिगण सोचने लगे कि यह क्या बेमेल स्वर है ! विलकुल प्रसंगविरोधी और अवद्ध ! उन्होंने वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि आप जाकर इसका पता लगा लें । मुनिराज वसिष्ठ भी वहाँ आये । उन्होंने भयंकर तलवार-धारी प्रतापी राजा की बेहोशी देखी तो उन्हें कुछ नहीं सूझा । यह क्या और क्यों हुआ ? इस पर विचार करके— । ३३०

इरन्दा	नल्ल	नरश	निरवा	दौळिवा	नल्लन्
मरन्दा	नुणर्वन्	रुन्नाळ्	वण्के	हयर्कोन्	मड्गै
तुरन्दा	डुयरन्	दन्नेत्	तुरवा	डुयरहो	शलैयिर्
पिरन्दार्	पैयरन्	दन्मै	पिररा	लरिदर्	कौळिदो 331

अरचन् इरन्तान् अल्लन्-राजा मरे नहीं है; इरवातु ओळिवान् अल्लन्-विना मरे नहीं रहेंगे भी; वण् केकयर् कोन् मड्कै-समृद्ध केकय देश के राजा की पुत्री; उणर्वु मरन्तान्-सुध खो गये; अन्नु उन्नाळ्-यह नहीं सोचतीं; तुयरम् तन्नै तुरन्ताळ्-दुख करना ही छोड़ दिया; कोचलै तुयर् तुरवाळ्-कौसल्या दुख नहीं छोड़ेंगी; इल् पिरन्तार्-अच्छी कुलोद्भवाएँ; पैयरम् तन्मै-परस्पर मित्र है, इस स्वभाव को; पिरराल्-दूसरों को; अरितर्कु ओळितो-जानना सुलभ है क्या । ३३१

(वसिष्ठ ने यों सोचा ।) राजा मरे नहीं; पर विना मरे रहनेवाले भी नहीं लगते ! राजा सुध खोये पड़े है, केकयराजकुमारी इसकी सुध नहीं लेतीं; दुख नहीं करती । पर कौसल्या है जो दुख नहीं छोड़ती । ये दोनों उच्च कुल की ही पुत्रियाँ हैं । पर इनमे इतना वैषम्य कैसे आया ? यह विचित्रता दूसरों के लिए जानने को सुलभ नहीं लगती । ३३१

अन्ना	वुन्ना	मुनिव	निडरा	लळिवा	डुयरम्
शौन्ना	ळाहा	ळैन्मुन्	रौळुके	हयर्कोन्	महळै
अन्ना	युरैया	यरश	नयर्वा	तिलैये	दैनन्त्
तन्ना	निहळन्द	वैल्लान्	दाने	तैरियच्	चौन्नाळ् 332

अन्ना उन्ना-यह सोचकर; मुनिवन्-मुनि (वसिष्ठजी); इटराल् अळिवाळ्-दुख-पीड़ित; तुयरम् चौन्नाळ् आकाळ्-(कौसल्या) दुख (का कारण) बता सकनेवाली नहीं होंगी; अन्न-यह सोचकर; मुन् तौळु-सामने आकर नमस्कार करनेवाली; केकयर् कोन् मकळै-केकयराज-तनया से; अन्नाय्-माँ; अरचन् अयर्वान्-राजा मूर्छित है; तिलै एनु-यह स्थिति क्यों कर; उरैयाय् अन्न-कहिए, कहने पर; तन्नाल् निकळन्त अल्लाम्-अपने से जो हुआ वह सब; ताने तैरिय चौन्नाळ्-स्वयं समझाती हुई बोली । ३३२

यह सोचनेवाले वसिष्ठजी ने आगे सोचा कि दुख-पीड़ित कौसल्या दुख का कारण बताने की स्थिति में नहीं है । तब तक कैकेयी ने सामने आकर महर्षि को नमस्कार किया । उनसे महर्षि ने पूछा कि माँ ! राजा मूर्छित क्यों है ? उनकी इस स्थिति का कारण क्या है; बताइए । तब कैकेयी ने अपने कारण जो भी हुआ वह सारा वृत्तान्त कह सुनाया । ३३२

शीर्शाळ्	शीर्शा	मुत्तञ्ज	जुडर्वा	ळरशर्क्	करशैप्
पीर्शा	मरैपोर्	कैयार्	पीडिशूळ्	पडिनिन्	ईळुविक्
कर्शा	ययरे	लवळे	तरुनिन्	कादर्	करशै
अर्शे	शैयलिन्	रीळिनी	येन्ईन्	डिरवा	निन्डान् 333

चीर्शाळ् चीर्शामुत्तञ्ज-जो कहने लगीं उनके कहने ही के पूर्व; चुटर् वाळ्-चमकती तलवार वाले; अरचर्क्कु अरचै-राजाधिराज को; पोन् तामरै पोल-सुन्दर कमल-सम; कैयाल्-हाथों से; पीडि चूळ् पटि निन्ड-मैली भूमि से; अळुवि-पकड़ उठाकर; कर्शाय्-शिक्षा प्राप्त; अयरेल्-दुखी मत होइए; अवळे-खुद वे ही; निन् कातर्क्कु अरचै तरु-आपके प्यारे को राज दे देंगी; चैयल् अर्शु-यह आपका करना क्या है; इन्डु ओळि नी-अभी (दुख करना) छोड़ दीजिए; अन्डु अन्डु-कई बार यह कहकर; इरवा निन्डान्-याचना की । ३३३

उनके पूरा कह चुकने के पहले ही मुनिवर ने अपने श्रेष्ठ कमल-सम हाथों से राजा को पकड़कर मैली भूमि से उठाया । “विद्वान राजा ! आप क्लान्त न हों । वे कैकेयी स्वयं आपके प्रिय पुत्र को राज्य दे देंगी । यह आपका दुख करना कैसा ? अभी उसे दूर कर दीजिए ।” ऐसा कई बार कहकर उन्होंने याचना की । ३३३

शीदप्	पनिनी	रळवित्	तिण्गा	लुक्क	मैन्काड्
पोदत्	तळवे	तवळ्वित्	तिन्शीड्	पुहला	निन्डान्
ओदक्	कडत्तञ्ज	जत्तैया	ळुरैनञ्ज	जीरुवा	उवियक्
कादर्	पुदल्वन्	पैयरे	पुहलवा	नुयिरुड्	गण्डान् 334

चीतम् पनि नीर् अळवि-शीतल हिमजल छिड़काकर; तिण् काल्-दूढ़ (दस्ता) डण्ड वाले; उक्कम् मैन् काल्-पंखे की मृदु हवा; पोतत्तु अळवु-सुध लौटते तक; तवळ्वित्तु-चलाकर; इन् चील् पुकला निन्डान्-मधुर वचन जो कह रहे थे उन्होंने; ओतम् कटल्-शीतल (क्षीर-) सागर के; नञ्चु अत्तैयाळ्-विषतुल्य कैकेयी का; उरै नञ्चु-वचनविष; औरु वारु अविय-कुछ हृद तक मन्द पड़ा, तब; कातल् पुतलवन् पैयरे पुकल्वान्-अपने प्यारे पुत्र का नाम ही कहते रहनेवाले राजा की; उयिरुम् कण्डान्-चेतना देखी । ३३४

उन्होंने राजा पर शीतल हिमजल छिड़का । पंखे से राजा के सचेत होते तक हवा की । उनसे, तब तक, बातें भी करते जाते थे । तब उनको पता लगा कि शीतल क्षीरसागर से निकले विष के समान कैकेयी के वचनविष का प्रभाव कुछ कम हो गया और राम का नाम बराबर लेने वाले दशरथ की सुध लौट आई है । मुनि ने देखा कि राजा श्रीराम का नाम लेते हुए सचेत हो रहे हैं । ३३४

काणा	वैया	वित्तिनी	यीळिवाय्	कळिपे	रवलम्
आणा	यहने	यिनिना	डाळ्वा	निडैय्	रुळदो

मुनिगण सोचने लगे कि यह क्या वेमेल स्वर है ! विलकुल प्रसंगविरोधी और अवद्ध ! उन्होंने वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि आप जाकर इसका पता लगा लें । मुनिराज वसिष्ठ भी वहाँ आये । उन्होंने भयंकर तलवार-धारी प्रतापी राजा की बेहोशी देखी तो उन्हें कुछ नहीं सूझा । यह क्या और क्यों हुआ ? इस पर विचार करके— । ३३०

इइन्दा	नल्ल	नरश	निइवा	दौळिवा	नल्लन्
मइन्दा	नुणर्वेत्	रुत्तनाळ्	वण्के	हयर्कोन्	मड्गं
तुइन्दा	डुयरन्	दन्नेत्	तुइवा	डुयर्हो	शलैयिर्
पिइन्दार्	पैयरन्	दन्मै	पिइरा	लडिदर्	कौळिदो

331

अरचन् इइन्तान् अल्लन्-राजा मरे नहीं हैं; इइवातु ओळिवान् अल्लन्-विना मरे नहीं रहेंगे भी; वण् केकयर् कोन् मड्कं-समृद्ध केकय देश के राजा की पुत्री; उणर्वु मइन्तान्-सुध खो गये; अन्नु उन्नाळ्-यह नहीं सोचती; तुयरम् तन्ने तुइन्ताळ्-दुख करना ही छोड़ दिया; कौचलं तुयर् तुइवाळ्-कौसल्या दुख नहीं छोड़ेंगी; इल् पिइन्तार्-अच्छी कुलोद्भवएँ; पैयरम् तन्मै-परस्पर भिन्न हैं, इस स्वभाव को; पिइराल्-दूसरों को; अडित्तु कु अळितो-जानना मुलभ है क्या । ३३१

(वसिष्ठ ने यों सोचा ।) राजा मरे नहीं; पर विना मरे रहनेवाले भी नहीं लगते ! राजा सुध खोये पड़े हैं, केकयराजकुमारी इसकी सुध नहीं लेती; दुख नहीं करती । पर कौसल्या है जो दुख नहीं छोड़ती । ये दोनों उच्च कुल की ही पुत्रियाँ हैं । पर इनमें इतना वैपश्य कैसे आया ? यह विचित्रता दूसरों के लिए जानने को सुलभ नहीं लगती । ३३१

अँन्ना	वुत्तना	मुनिव	तिडरा	लळिवा	डुयरम्
शौन्ना	ळाहा	ळैन्मुन्	रौळुके	हयर्कोन्	महळ
अन्ना	युरैया	यरश	नयर्वा	निलैये	दँन्तत्
तन्ना	निहळ्न्द	वैल्लान्	दाने	तैरियच्	चौन्नाळ्

332

अँन्ना उन्ना-यह सोचकर; मुनिवन्-मुनि (वसिष्ठजी); इटराल् अळिवाळ्-दुख-पीड़ित; तुयरम् चौन्नाळ् आकाळ्-(कौसल्या) दुख (का कारण) बता सकनेवाली नहीं होंगी; अँन-यह सोचकर; मुन् तौळु-सामने आकर नमस्कार करनेवाली; केकयर् कोन् मकळै-केकयराज-तनया से; अन्नाय्-माँ; अरचन् अयर्वान्-राजा मूर्छित है; निलै एतु-यह स्थिति क्यों कर; उरैयाय् अँन्त-कहिए, कहने पर; तन्नाल् निकळ्न्त अँल्लाम्-अपने से जो हुआ वह सब; तात्तै तैरिय चौन्ताळ्-स्वयं समझाती हुई बोली । ३३२

यह सोचनेवाले वसिष्ठजी ने आगे सोचा कि दुख-पीड़ित कौसल्या दुख का कारण बताने की स्थिति में नहीं है । तब तक कैकेयी ने सामने आकर महर्षि को नमस्कार किया । उनसे महर्षि ने पूछा कि माँ ! राजा मूर्छित क्यों है ? उनकी इस स्थिति का कारण क्या है; बताइए । तब कैकेयी ने अपने कारण जो भी हुआ वह सारा वृत्तान्त कह सुनाया । ३३२

शौर्डाळ् शौर्डा मुन्नञ् जुडर्वा ळरशर्क् करशैप्
 पौर्डा मरैपोर् कैयाड् पौडिशूळ् पडिनिन् ईळुविक्
 कर्डा ययरे लवळे तरुनिन् कादड् करशै
 अर्डरे शैयलिन् रौळिनी येन्डैन् डिरवा निन्डान् 333

चौर्डाळ् चौर्डामुन्नञ्-जो कहने लगीं उनके कहने ही के पूर्व; चुटर् वाळ्-चमकती तलवार वाले; अरचर्क्कु अरचै-राजाधिराज को; पोन् तामरै पोल-सुन्दर कमल-सम; कैयाल्-हाथों से; पौडि चूळ् पटि निन्ड-मैली भूमि से; अँळुवि-पकड़ उठाकर; कर्डाय्-शिक्षा प्राप्त; अयरेल्-दुखी मत होइए; अवळे-खुद वे ही; निन् कातर्कु अरचै तरुम्-आपके प्यारे को राज दे देगी; चैयल् अँड-यह आपका करना क्या है; इन्ड अँळि नी-अभी (दुख करना) छोड़ दीजिए; अँन्ड अँन्ड-कई बार यह कहकर; डिरवा निन्डान्-याचना की । ३३३

उनके पूरा कह चुकने के पहले ही मुनिवर ने अपने श्रेष्ठ कमल-सम हाथों से राजा को पकड़कर मैली भूमि से उठाया । “विद्वान राजा ! आप क्लान्त न हों । वे कैकेयी स्वयं आपके प्रिय पुत्र को राज्य दे देंगी । यह आपका दुख करना कैसा ? अभी उसे दूर कर दीजिए ।” ऐसा कई बार कहकर उन्होंने याचना की । ३३३

शीदप् पत्तिनी रळवित् तिण्गा लुक्क मैन्काड्
 पोदत् तळवे तवळ्वित् तिन्शौर् पुहला निन्डान्
 ओदक् कडतञ् जत्तैया ळुरैन्ञ् जौरवा रवियक्
 कादड् पुदल्वन् पयरे पुहल्वा नुयिरुड् गण्डान् 334

चीतम् पत्ति नीर् अळवि-शीतल हिमजल छिड़काकर; तिण् काल्-दूढ़ (दस्ता) डण्ड वाले; उक्कन् मैन् काल्-पंखे की मृदु हवा; पोत्तु अळवु-सुध लौटते तक; तवळ्वित्तु-चलाकर; इन् चोल् पुकला निन्डान्-मधुर वचन जो कह रहे थे उन्होंने; ओतम् कटल्-शीतल (क्षीर-) सागर के; नञ्चु अतैयाळ्-विषतुल्य कैकेयी का; उरै नञ्चु-वचनविष; और वाड् अविय-कुछ हृद तक मन्द पड़ा, तब; कातल् पुतलवन् पयरे पुकल्वान्-अपने प्यारे पुत्र का नाम ही कहते रहनेवाले राजा की; उयिरुम् कण्डान्-चेतना देखी । ३३४

उन्होंने राजा पर शीतल हिमजल छिड़का । पंखे से राजा के सचेत होते तक हवा की । उनसे, तब तक, बातें भी करते जाते थे । तब उनको पता लगा कि शीतल क्षीरसागर से निकले विष के समान कैकेयी के वचनविष का प्रभाव कुछ कम हो गया और राम का नाम बराबर लेने वाले दशरथ की सुध लौट आई है । मुनि ने देखा कि राजा श्रीराम का नाम लेते हुए सचेत हो रहे हैं । ३३४

काणा वैया विन्निनी यौळिवाय् कळिपे रवलम्
 आणा यहने यिन्निना डाळ्वा निडैयू शळदो

माणा वुरैया डरुमा मळैये यनैयान् महुडम्
पूणा दौळिवा नैनिन्या मुळमो पौन्ऱे लैन्ऱान् 335

काणा—(सचेत हुए) देखकर; ऐया—आर्य; इनि नी कळि पेर् अवलम्—आप यह बहुत बड़ा दुख; ओळिवाय्—छोड़ दीजिए; आण् नायकत्ते—पुरुषोत्तम ही; इति नाटु आळ्वान्—अब राज करेंगे; इट्टैयू उळतो—और कोई बाधा है; माणा उरैयाळ्—अनादरयोग्य वचन जो बोलीं; तरुम्—वे स्वयं दे देंगे; मा मळैये अतैयान्—काला मेघ—सम राम; मकुटम् पूणानु ओळिवान् अँतिन्—मुकुट धारण किये बिना जायेंगे तो; याम् उळमो—हम (यहाँ) रहेंगे क्या; पौन्ऱेल्—मन मत मारिए; अँन्ऱान्—कहा । ३३५

राजा को सचेत देखकर मुनिवर ने कहा कि आर्य ! अब आप यह अत्यधिक दुख छोड़ दीजिए । पुरुषोत्तम ही राज्य करेंगे । कोई संकट नहीं रहेगा ।, रानी, जिन्होंने अनादर योग्य वचन कहा था स्वयं राज्य को श्रीराम के पास सौंप देंगी । मेघश्याम श्रीराम बिना मुकुट पहने, राजा बने वगैर जंगल चले जायेंगे तो क्या आप समझते हैं कि हम सब यहाँ रहेंगे ? आप मन छोटा न करें । (आर्य शब्द का जो अर्थ है वही तमिळ 'ऐय' शब्द का भी है ।) । ३३५

अँन्ऱम् मुनिवन् रुन्नै निनैया विनैये तिनियान्
पौन्ऱम् मुन्नम् मवनेप् पुत्तैमा महुडम् पुत्तैवित्
तौन्ऱम् वनमेत् रुन्ना वण्णञ् जैय्देत् तुरैयुम्
कुन्ऱम् पळिप्प णामर् कावाय् कोवे यँन्ऱान् 336

अँन्ऱ मुत्तित्वत् तन्नै—यह जिन्होंने कहा उन मुनि से; निनैया—जिसकी सुध नहीं थी; वित्तैयेन्—ऐसे पाप का भागी हो गया; इति नान् पौन्ऱम् मुन्नम्—अब मेरे मरने से पहले; अवतै—उनको; पुत्तै मा मकुटम्—धार्य श्रेष्ठ मुकुट को; पुत्तैवित्तु—धारण कराकर; वनम् अँन्ऱ ओन्ऱम्—वनगमन की कोई बात; उन्ना वण्णम्—न सोचे, वह उपाय; जैय्तु—करके; अँन् उरै कुन्ऱम् पळियुम्—मुझ पर वचन—भंग की निन्दा; पूणामल्—न लगवाकर; कावाय्—बचाइए; कोवे—महाराज; अँन्ऱान्—कहा । ३३६

राजा ने ऐसा ढाढस देनेवाले मुनिवर्य से कहा—महाराज ! मुझे इसका भान ही नहीं रहा ! मैं ऐसा पापी हूँ ! मेरे मर जाने से पहले आप एक सहायता करें । श्रीराम को मुकुट-धारण करके राजा बना लीजिए । वह वनगमन की बात सोचे ही नहीं उसका उपाय कीजिए और मुझे भी 'वचन तोड़नेवाला'—इस निन्दा से बचाइए । ३३६

मुनियुम् मुनियुञ् जैय्दैक् कौडियाण् मुहमे मुन्नि
इनियुन् पुदल्वर् करशुम् मेत्तै योरुक् कुयिरुम्
मनुविन् वळिनिन् कणवर् कुयिरुम् मुदवि वशैतीर्
पुनिदम् मरुवुम् पुहळे पुत्तैयाय् पौन्ने यँन्ऱान् 337

मुनियुम्-मुनि ने भी; मुनियुम् चैय्कै-कोपजनक काम की; कौटियाळ्-निर्मम (कैकेयी) का; मुकम् मुन्ति-मुख देखकर; पौन्ते-स्वर्ण; इति-अब; उन् पुतल्वड्कु-आपके पुत्र श्रीराम को; मनुविन् वळि अरचुम्-मनुकुल-परम्परागत राज को; नित् कणवड्कु उयिरुम्-अपने पति को जीवन; एतै योरुक्कु उयिरुम्-अन्यों को भी उनके प्राण; उतवि-दान करके; वचै तीर्-निन्दारहित; पुत्तिन् मरुवुम्-पवित्रता-मिलित; पुक्ळे-कीर्ति को; पुतैयाय्-धारण कीजिए; अन्नात्-बोले । ३३७

मुनिवर तब कोपजनक वचन वाली कैकेयी को देखकर बोले । हे स्वर्णसमान मूल्य वाली ! अब आप स्वयं आपके पुत्र राम को मनुकुल के परम्परागत राज्य को सौंपकर अपने पति को प्राणदान और अन्य प्रजाजनों को जीवनदान कीजिए और आप भी अनिष्ट पवित्र यश धारण कीजिए । ३३७

मौय्म्माण्	विनैवे	रउर्वैन्	रुयर्वान्	मौळिया	मुत्तम्
विम्मा	वळुवा	ळरशन्	मैय्यिड्	रिरिवा	नैन्तिन्
इम्मा	वुलहत्	तुयिरो	डित्तिवाळ्	वुहवे	नैन्शील्
पौय्म्मा	णामड्	किन्ऱे	पौन्ऱा	दौळिये	नैन्ऱाळ् 338

मौय् माण् वितै-सशक्त दोनों (पाप, पुण्य) कर्मों को; वेर् अड् वैन्ऱु-जड़ तक नाश करके उन पर विजय पाकर; उयर्वान्-उत्कृष्ट जो हुए थे उनके; मौळिया मुत्तम्-बात पूरा करने के पूर्व ही; विम्मा अळुवाळ्-सिसकते हुए रोनेवाली; अरचन् मैय्यिल् तिरिवान् अन्तिन्-राजा सत्यपालन से मुकर जायेंगे तो; इति इ मा उलकत्तु-अब इस विशाल पृथ्वी पर; उयिरोटु-प्राण लेकर; वाळ्वु-जीना; उकवेन्-नहीं चाहूँगी; अन् चोल्-मेरा वचन; पौय् माणामड्कु-झूठा न बन जाए, इसके लिए; इन्ऱे पौन्ऱातु औळियेन्-आज ही मरे बिना नहीं रहूँगी; अन्ऱाळ्-कहा । ३३८

वसिष्ठजी बलवान कर्मबन्धन को पूर्णरूप से काट चुके महात्मा थे । उनकी बातें पूरी होते तक भी कैकेयी ने सब नहीं किया । उसके पूर्व ही वे बोलीं । सिसक-सिसककर रोते हुए उन्होंने कहा कि अगर राजा अपने सत्यपालन से मुकर जाएँगे तो इस विशाल पृथ्वी पर प्राणों के साथ जीना नहीं चाहूँगी । मेरी बात झुठलायी न जाय इसके लिए मैं मरे बिना नहीं रहूँगी । उन्होंने अपना दृढ़ निश्चय सुना दिया । ३३८

कौळुनन्	रुज्जुम्	मैतवुड्	गौळ्ळा-	दुलहम्	मैतवुम्
पळिनिन्	रुयुरुम्	मैतवुम्	पावम्	मुळदा	मैतवुम्
औळिहिन्	रिलैयन्	रियुमौन्	रुणर्हिन्	रिलैया	तिनिमैल्
मौळिहिन्	उतर्वैन्	नैन्ऱा	मुनियुम्	मुऱैयन्	रैन्वान् 339

मुनियुम्-(वसिष्ठ) मुनि भी; कौळुनन् तुज्जुम् अतवुम्-पति मर जाएँगे यह बात और; उलकम् कौळ्ळातु-संसार सहन नहीं करेगा यह भी; पळि निन्ऱु उयिरुम् अतवुम्-अपमान अचल होगा और बढ़ेगा यह भी; पावम् उळुतु आम्-पाप होगा;

अन्नवुम्-यह भी सोचकर; ओळिकिन्नरिलै-हठ नहीं छोड़तीं; अन्नरियुम्-इसके अनावा; ओन्न उणर्किन्नरिलै-(दूसरों की) एक भी नहीं मानतीं; यान् इतिमेल्-मेरे, आगे; मोंळिकिन्नरन्-कथनीय; अन्न-क्या है; अन्ना-कहकर; मुअे अन्न-यह ठीक नहीं है; अन्नपान्-आगे भी बोले । ३३६

मुनिवर ने यह सुना तो उन्हें रंज हुआ । वे जरा डाँटते हुए बोले—आप यह नहीं देखती कि पति मर जायँगे, संसार सहन नहीं करेगा, अपयश बढ़ेगा और आप पर पाप लगेगा । यह समझकर आप अपना हठ नहीं छोड़ती । फिर दूसरों की भी एक नहीं सुनतीं । आगे मेरे पास कहने को क्या है ? यह न्यायसम्मत नहीं । फिर वे आगे भी कहने लगे । ३३९

कण्णो	डादे	कणव	नुयिरो	डिडर्का	णादे
पुण्ण	डोडुडु	गनलो	विडमो	वैन्नप्	पुहल्वाय्
पेण्णा	हुदियो	मायप्	पेयो	कौडियाय्	नीयिम्
मण्णो	डुन्नो	डैन्ना	मनमे	वल्लिदे	यैन्नान् 340

कौडियाय्-निष्ठुर; कण्णोटाले-दाक्षिण्यरहित; कणवन् उयिर् ओट्टु इटर्-पतियों के प्राण निकलते-से है, उससे होनेवाला दुख भी; काणाते-नहीं देखतीं; पुण् ऊट्टु ओट्टुम् कत्तलो-व्रण में घुसनेवाली आग क्या; विडमो-विप; अन्न-ऐसा समझी जाईए ऐसा; पुकल्वाय्-बात करती हैं; नी पेण् आकुतियो-आप भी स्त्री हैं क्या; मायम् पेयो-मायावी पिशाच; इ मण्णोटु-इस मट्टी से; उन्नोटु-आपका; अन्न आम्-क्या (लाभ) होगा; मनम् वल्लिदे-आपका मन कठोर है; अन्नान्-बोले । ३४०

हे निष्ठुर ! दया-दाक्षिण्य नहीं दिखाती । पति के प्राण-त्याग के दुख को भी नहीं देखती । क्या आप व्रण में घुसनेवाली आग है ? विप है ? —ऐसा पूछने योग्य रीति से बात करती हैं । आप स्त्री हैं, या माया-पिशाचिनी है ? इस मट्टी को लेकर आपका क्या लाभ होगा ? क्या आपका मन इतना कठोर है ? (आश्चर्य है !) । ३४०

वायान्	मन्नन्	महनै	वनमे	हैन्ना	मुन्नन्
नीये	शौन्ना	यवनो	निमिर्हा	निडैवन्	नैरियिड्
पोयो	पुहलो	तविरान्	पुहलो	डुयिरैच्	चुडुवैन्
दीयोय्	निन्नोड्	रीयो	रुळरो	शैयलैन्	तैन्नान् 341

मन्नवन्-राजा (के); वायान्-अपने मुख से; मकनै-अपने पुत्र को; वत्तम् एकु-वन जाओ; अन्ना मुन्नम्-कहने के पहले; नीये चौन्नाय्-आप ही ने कह दिया; अवनो-वे तो; निमिर् कान् इटै-विस्तृत वन में; वल् नैरियिल्-कठोर मार्ग में; पोय् पुकल्-जा पहुँचना; तविरान्-नहीं छोड़ेंगे; पुकळोटु-यश के साथ; उयिरै चुटु-प्राणों का भी नाश करनेवाली; वैम् तीयोय्-भयंकरअग्नि-समाना; निन् पोल् तीयोर्-आपके समान क्रूर; उळरो-होगे क्या; चैयल् अन्न-करनी भी कैसी; अन्नान्-कहा । ३४१

मुनिवर आगे बोले । चक्रवर्ती के अपने मुख से, 'वन जाओ' कहने से पहले ही आपने उनसे (राजा की आज्ञा के रूप में) कह दिया । श्रीराम भी विस्तृत जंगल में कठोर मार्ग तय करते हुए जा पहुँचने से नहीं रुकेंगे । आप भी कितनी क्रूर है कि आपने यश और चक्रवर्ती के प्राण दोनों को जला दिया है ? आपके समान निर्मम स्त्री इस संसार में और कोई होगी क्या ? नहीं मिलेंगी । आपका भी कैसा काम है ? । ३४१

ताविन्	मुनिवन्	पुहलत्	तळरा	निन्ऱ	मन्ऱन्
नाविन्	नञ्ज	मुडैय	नङ्गै	तन्ऱै	नोक्किप्
पावि	नीये	वैङ्गान्	पडर्वा	यैन्ऱैन्	नुयिरै
एवि	तायो	ववन्तु	मेहितानो	वैन्ऱान्	342

ताविन् मुनिवन्-निर्दोष मुनिवर के; पुहल-कहने पर; तळरा निन्ऱ मन्ऱन्-शिथिल (हुए) राजा; नाविन् नञ्चम् उडैय-विष-जिह्वा; नङ्गै तन्ऱै-स्त्री को; नोक्कि-देखकर; पावि-पापिनी; नीये-तुम स्वयं ही; अन्ऱ उयिरै-मेरे प्राण (सम पुत्र) को; वैम् कान् पडर्वाय् अन्-भयंकर वन में जाओ, यह; एवित्तयो-आज्ञा दिला चुकीं; अवन्तुम्-वह भी; एकित्तानो-चला गया क्या; वैन्ऱान्-पूछा । ३४२

अनिद्य मुनि ने यह बात कही तो चक्रवर्ती को सच्ची स्थिति मालूम हो गई । उन्होंने, बहुत पीड़ा का अनुभव करते हुए विकल होकर, विषजिह्वा कैकेयी से पूछा—क्या तुमने अपनी ओर से मेरे प्राणप्यारे पुत्र को जंगल जाने की आज्ञा दिला दी ? वह भी चला गया क्या ? । ३४२

कण्डे	नैञ्जड्	गळियाऱ्	कनिवाय्	विडना	नैडुनाळ्
उण्डे	नदत्ता	नीयैन्	नुयिरै	मुदलो	डुण्डाय्
पण्डे	यैरिमुन्	नुन्नैप्	पावी	देवि	याहक्
कौण्डे	नल्लेन्	वेरोर	कूऱ्ऱन्	देडिक्	कौण्डेन् 343

पावी-पापिनी; नैञ्चम् कण्टेन्-तुम्हारा मन जाना; कळियाल्-(काम, मोह) मस्ती के साथ; नान्-मैंने; कनिवाय् विटम्-(विब-) फल-सम मुख (अधर) का विष; नैडु नाळ् उण्टेन्-बहुत काल तक पिया; अत्तान्-उससे (उसके बदले); नी भुतलोडु-तुमने मूल के साथ; अन्ऱ उयिरै उण्डाय्-मेरे प्राण पी लिये; पण्डे-पहले ही; अरि मुन्-अग्नि को साक्षी बनाकर; उन्नै तेवि आक कौण्टेन् अल्लेन्-तुम्हें सहिष्णी नहीं बनाया; वेऱ ओर् कूऱ्ऱम्-विलक्षण एक यम को; तेडि कौण्टेन्-ढूँढ़ लिया । ३४३

चक्रवर्ती ने और भी कहा—पापिनी ! तुम्हारा मन समझ लिया । बहुत दिन तक मैंने तुम्हारा विवाधर-निसृत 'विष' पिया था । अब उसके बदले तुम मेरे प्राणों को मूल सहित पी चुकी हो । पहले अग्नि को साक्षी बनाकर तुमसे विवाह करके मैंने रानी को नहीं वरा था; परन्तु एक

विलक्षण यम को ढूँढ़ लिया । (तुमको रानी समझा पर तुम यम निकली ।) । ३४३

विळिक्कुड्	गण्वे	इल्ला	वैङ्गा	नैन्कान्	मुळैयैच्
चूळिक्कुम्	विनैया	लेहच्	चूळ्वा	यैन्नैप्	पोळ्वाय्
पळिक्कु	नाणाय्	माणाय्	पावि	यिनियैन्	पलवुन्
कळुत्ति	नाणुन्	महर्कुक्	काप्पु	नाणा	मैन्डान् 344

माण पावि-अनादरयोग्य पापिनी; विळिक्कुम् कण्-देखनेवाली आँखें; तन्नैयन्नि वेरु इल्ला-उसको छोड़कर मेरी कोई और नहीं ऐसे; अैन् काल् मुळैयै-मेरे वंश के किसलय को; वैम् कान् एक-भयंकर कानन में भेजने का; चूळिक्कुम् वित्तैयाल्-गोलमाल के काम द्वारा; चूळ्वाय्-पड्यन्त्र रचती हो; अैन्तै पोळ्वाय्-मुझे काट रही हो; पळिक्कुम् नाणाय्-कलंक से नहीं डरती; इति पल अैन्-अब अनेक बातों से क्या; उन् कळुत्तिल् नाण्-तुम्हारे गले का मंगलसूत्र ही; उन् मकड्कु-तुम्हारे पुत्र का; काप्पु नाण् आम्-रक्षाबन्धन का सूत्र बन जायगा; अैन्डान्-कहा । ३४४

आदर के लिए अयोग्य पापिनी ! श्रीराम मेरे वंश का वृक्ष का 'किसलय' है । मेरी आँखें ही है । तुम उसको भयंकर वन में भेजने का, अपने वंचक काम द्वारा पड्यन्त्र रच चुकी हो ! उससे तुम मेरे प्राणों को चीर रही हो । तुम कलंक से नहीं डरतीं । हाँ, अब कितना भी कहूँ क्या लाभ है ? पर यह समझ लो कि तुम्हारे गले का मंगल-सूत्र (विवाह के समय में पति द्वारा पत्नी के गले में पहनाया जाता है । यह एक ही बहुमुख्य अहिवात का सूचक है और मंगलकारी वस्तु है) तोड़ लेकर अपने पुत्र के अभिषेक के अवसर पर जो रक्षा-बन्धन किया जायगा उसके काम में लाया जानेवाला है (तुम विधवा बन जाओगी) । ३४४

इन्ने	पलवुम्	पहर्वा	निरङ्गा	दाळै	नोक्किच्
चौन्ने	निन्ने	यिवळैन्	डार	मल्ल	डुर्न्देन्
मन्ने	यावान्	वरुम्प्	परदन्	उत्तैयुम्	महर्नेन्
रुन्नेन्	मुनिवा	ववनु	माहा	नुरिमैक्	कैन्डान् 345

इन्ने-इस प्रकार; पलवुम् पकर्वान्-विविध बातें कहकर; इरङ्काताळै-निर्दय को; नोक्कि-देखकर; मुनिवा-महर्षे; इन्ने चौन्नेन्-अभी कहता हूँ; इवळ् अैन् तारम् अल्लळ्-यह मेरी पत्नी नहीं है; तुर्न्देन्-त्याग दिया; मन् आवान् वरुम्-राजा बनकर आनेवाले; अ परतन् तन्तैयुम्-उन भरत को भी; मकन् अैन्ड उन्नेन्-पुत्र नहीं मानूँगा; अवन् उरिमैक्कुम् आकान्-वह मेरे पितृकृत्य करने का अधिकारी नहीं होगा; अैन्डान्-कहा । ३४५

दशरथ ने कितनी ही ऐसी बातें कही । पर कैकेयी कुछ भी नहीं पसीजी । तब राजा ने वसिष्ठजी से कैकेयी के सम्बन्ध में अपना फैसला

सुनाया । महर्षे ! अभी कहे देता हूँ । यह मेरी धर्मपत्नी नहीं है । उसको मैं त्याग चुका । उसके पुत्र भरत को भी, जो राजा बनेगा, अपना पुत्र नहीं मानता । उसे दाहक्रिया आदि पितृकर्म करने का अधिकार नहीं होगा । ३४५

अन्तैक्	कण्डु	मेहा	वण्ण	मिडैयू	रुडैयान्
उन्तैक्	कण्डु	मिलनो	वैन्ता	वुयर्को	शलैयैप्
पित्तैक्	कण्डा	तनैयान्	पिरियक्	कण्ड	तुयरम्
तन्तैक्	कण्डे	तविर्वा	डळर्वा	णिलैयिर्	डळर्वान् 346

उयर् कोचलैयै-उत्कृष्ट (गुण वाली) कौसल्यादेवी से; अन्तै कण्डुम् एका वण्णम्-मुझसे मिलने के बाद जाने से रोकनेवाली; इटैयू उटैयान्-बाधा जिसको हुई थी वह; उन्तैयुम् कण्डिलनो-तुमसे भी नहीं मिला क्या; अन्ता-कहकर; पित्तनै-बाद; कण् अनयान् पिरिय-आँख-सम प्यारा छोड़ जाने से; कण्ड तुयरम्-उत्पन्न दुख; तन्तै कण्डु तविर्वा-अपने को (दशरथ को) देखकर दूर करने के विचार से आकर; तळर्वा-श्रांत होनेवाली उनकी; निलैयिन्-स्थिति से; तळर्वान्- (प्रभावित हो) श्रांत पड़ गये । ३४६

फिर दशरथ ने गुणोन्नत कौसल्या से पूछा कि देवी ! मुझसे मिलकर जाने में उसे बाधा हो गई थी । क्या वह तुमसे भी नहीं मिला ? कौसल्या अपनी आँख के समान पुत्र के वियोग से दुखी होकर उस दुख को राजा की संगति में भूलने के विचार से आई थी । यह राजा ने जाना और उनकी स्थिति को देखकर विचलित हो गई । कौसल्या की स्थिति देखकर राजा भी व्याकुल हो गये । ३४६

भाड्डाळ्	शैयला	मैन्ड्ड	गणवन्	वरमीन्	डुळळम्
आड्डा	दयरन्दा	नैन्ड्ड	मडिन्दा	ळवळुम्	मवनैत्
तेड्डा	निन्डाण्	महनैत्	तिरिवा	नैन्डा	ळरशन्
तोड्डान्	मैय्यैन्	रुलहन्	जौल्लुम्	बळिक्कुञ्	जोर्वाळ् 347

भाड्डाळ् चैयल् आम् अन्ड्डम्-सौत का काम है, यह और; कणवन् वरम् ईन्तु-पति ने वर देकर; उळळम् आड्डातु-चित्तक्षमता खोकर; अयर्न्तान्-(संकटग्रस्त हो) बेहोश हुए, यह भी; अडिन्ताळ् अवळम्-जिन्होंने जाना वे भी; अवतै तेड्डा निन्डाळ्-उन्हें ढाढस देते हुए; मकनै-श्रीराम (को); तिरिवान्-लौट आयगा; अन्डाळ्-बोली; अरचन् मय् तोड्डान् अन्ड्ड-राजा सत्य-पराजित हो गये, इस; उलकम् चौल्लुम् पळिक्कुम्-लोक-निन्दा से भी; चोर्वाळ्-मन में मुरझाई । ३४७

कौसल्या ने जब यह जाना कि यह सब सपत्नी का काम है और राजा वर देकर संकट में पड़े बेहोश हो गये थे । यह जानकर उन्होंने राजा को धीरज बँधाते हुए कहा कि श्रीराम, हमारा पुत्र लौट आयगा । पर उससे राजा की सत्यवादिता की हानि हो जायगी । राजा की सत्य के क्षेत्र में

पराजय हो जायगी। लोकनिन्दा होगी। राजा के सत्यपालन की अभिलाषा रखनेवाली कौसल्या इस विचार से बहुत खिन्नमन हो गई। ३४७

तळ्ळा	निलैशान्	मैय्मै	तळुवा	वहैता	नैय्दिन्
अळ्ळा	निलैहूर्	पैरुमैक्	किल्लिवा	मैतला	लुरवोय्
विळ्ळा	निलैशे	रत्नवान्	महनमेन्	मैलियिन्	नुलहम्
कौळ्ळा	दन्ऱो	वैन्ऱाळ्	कणवन्	कुरैयक्	कुरैवाळ् 348

कणवन् कुरैय-पति के कृश होने से; कुरैवाळ्-खुद क्षीण होनेवाली; उरवोय्-बुद्धिवली; तळ्ळा निलै चाल् मैय्मै-जिसका अनिवार्य रूप से पालन करने में ही गौरव है, उस सत्य को; तळुवा वकै अय्तिन्-न पालने की स्थिति को प्राप्त होंगे तो (छोड़ देंगे तो); अळ्ळा निलै कूर् पैरुमैक्कु-अनिन्द्य आदर का स्थान प्राप्त आपके गौरव की; इळिवु आम् अँतलाल्-हानि होगी, इसलिए; मकन् मेल्-पुत्र पर; विळ्ळा निलै चेर् अत्पाल्-अभिन्न स्थिति के प्रेम के कारण; मैलियिन्-अव ढिलाई होगी तो; उलकम् कौळ्ळातु अन्ऱो-संसार (के श्रेष्ठों का समुदाय) नहीं मानेगा न; अँन्ऱाळ्-कहा। ३४८

राजा कृश हुए —यह देखकर कौसल्यादेवी भी निर्वल हुई। तो भी उन्होंने दशरथ को समझाया कि बुद्धिवली! अनिवार्य पालन से ही सत्य यशदायी बनता है। अगर आप उसके पालन को छोड़ देंगे तो अनिन्द्य आपके यश की हानि हो जायगी। इसलिए अकाट्य पुत्र-प्रेम के वश में पड़कर सत्यपालन में ढिलाई दिखायेंगे तो संसार का श्रेष्ठ समाज उसको उचित नहीं मानेगा न!। ३४८

पोवा	दौळिया	नैन्ऱाळ्	पुदल्वन्	इत्तैक्	कणवन्
शावा	दौळिया	नैन्ऱैन्	रुळ्ळन्	दळ्ळुर्	इयर्वाळ्
कावा	यैन्ताण्	महनैक्	कणवन्	पुहळुक्	कळिवाळ्
आवा	वुयर्को	शलैया	मन्त	मैन्नुर्	इत्तळे 349

उयर् कोचलै आम् अन्तम्-गुणोन्नत कौसल्या हंसिनी (सौ देवी); पुतल्वन् तन्नै-अपने पुत्र को; पोवातु औळियान्-विना गये नहीं रहेगा; अँन्ऱाळ्-समझकर; कणवन् चावातु औळियान्-पति मरे विना नहीं रहेगे; अँन्ऱु अँन्ऱु-ऐसा सोच-सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुर्-चित्ताकुल हो; अयर्वाळ्-लटतीं; कणवन् पुकळुक्कु अळिवाळ्-पति के यश के लिए मरतीं (उसको उत्कट इच्छा करतीं); मकनै कावाय् अँन्ताळ्-पुत्र को बचाओ (रोको) नहीं कहतीं; आ, आ-हाय, हाय; अँन् उँन्ऱन्-कैसी हो (दुखी) हो गई। ३४९

गुणोन्नत हंसिनी-समान कौसल्या ने समझ लिया कि श्रीराम विना वन गए नहीं रहेगा। “पति भी विना मरे जीवित नहीं रहेंगे” यह बार-बार सोचकर वे विकलमन हुई और शिथिल हुई। पति के यश को प्राण-सम चाहनेवाली वे राजा से यह कह नहीं सकी कि पुत्र को वन जाने से

बचाइए (रोकिए) । हाय ! उनकी स्थिति भी कैसी दयनीय हो गई ? । ३४९

उणर्वा	तनैया	छुरैयालु	यर्नुदा	नुरैशाल्	कुमरन्
पुणरा	तिलमे	वत्तमे	पोवा	नेया	मन्ता
इणरार्	तरुदा	ररश	तिडरा	लयर्वान्	विनैयेन्
तुणैवा	तुणैवा	वैन्त्रान्	रोन्त्रा	रोन्त्रा	यैन्त्रान् 350

इणर् आर् तरु तार्—(फूलों के) गुच्छों से पूर्ण मालाधारी; अरचन्—राजा; अनैयाळ् उरैयाल्—उनके कथन से; उयर्नुतान्—गुणोत्कृष्ट (और); उरै चाल्—प्रकीर्तित; कुमरन्—कुँअर श्रीराम; निलम् पुणरान्—भूमि से विवाह नहीं करेगा; वत्तम् पोवाने आम्—वन जाएगा ही; अन्ता उणर्वान्—ऐसा सोचकर; इटराल् अयर्वान्—दुखी हो विकल होकर; विनैयेन् तुणैवा—पापी, मेरे सहायक; तुणै वा—सहायता के लिए आओ; अन्त्रान्—कहा; तोन्त्राल्—उत्तम कुमार; तोन्त्राय्—सामने आ जाओ; अन्त्रान्—कहा । ३५०

पुष्प के गुच्छों से मिली मालाधारी दशरथ ने कौसल्या के वचन से जान लिया कि गुणोत्कृष्ट और प्रकीर्तित श्रीराम भूपति नहीं बनेंगे और वन जाएँगे ही । यह जानकर दुख से लट गये और विलाप करने लगे कि हे राम ! इस पापी के सहायक ! आओ सहारा दो । उत्तम पुत्र ! सामने आओ । ३५०

कण्णु	नीरा	युयिर्	मौळुहक्	कळिया	निन्त्रेन्
अण्णु	नीरान्	मरैयो	रैरिमुन्	तिन्त्रेन्	चौरिय
मण्णु	नीराय्	वन्द	पुनलै	महन्त्रे	विनैयेन्
उण्णु	नीरा	युदवि	युयर्का	तडैवा	यैन्त्रान् 351

मक्ते—हे पुत्र; कण्णुम् नीर् आय् औळुक—आँखों के (अश्रु) जल होकर बहते; उयिर्म् कळिया—प्राणों के भी निकलते; निन्त्रेन्—(ऐसी स्थिति में) रहता हूँ; अण्णुम् नीराल्—मान्य प्रकार से; मरैयोर्—वेदज्ञ; अरि मुन्—अग्नि के सामने; निन्त्रे मेल् चौरिय—तुम्हारे ऊपर (अभिष्क) जल डालें; मण्णुम् नीर् आय् वन्त्रे—मज्जनजल जो आया है; पुनलै—उस सलिल को; विनैयेन्—मुझ पापी को; उण्णुम् नीर् आय्—(मृत्यु के बाद) तर्पण का जल; उत्तवि—देकर; उयर् कान् अटैवाय्—उच्चवृक्ष-जंगल में जाओ; अन्त्रान्—कहा । ३५१

दशरथजी ने राम को सम्बोधित करते हुए विलाप किया । हे राम ! हे पुत्र ! मेरी आँखें स्वयं द्रवीभूत हो बह रही हैं । प्राण भी जाने को छटपटा रहे हैं, सबकी प्रशंसा और वाहवाही के साथ, अग्नि के सामने वेदज्ञों द्वारा तुम्हारा अभिषेक करने के लिए मंगलमज्जन जल जो आया है उसको लेकर पापी, मेरा तर्पण करो; तब ऊँचे पेड़ों के वन में जाओ । ३५१

पडैमा	णरशैप्	पलहान्	मळूवा	ळदत्ता	लैरिवान्
मिडैमा	वल्लिदा	ननैयान्	विल्ला	लडुमा	वल्लाय्
उडैमा	महुडम्	वुनैयैन्	रुरैया	वुडने	कौडियेन्
शडैमा	महुडम्	पुनैयत्	तन्दे	नन्दो	वैन्डान् 352

पटै माण् अरचै-सेनाविशिष्ट राजाओं को; पल काल्-अनेक वार; मळु वाळ् अतत्ताल्-परशु के अस्त्र से; लैरिवान्-चलाकर (जिन्होंने) परास्त किया उनका; मिटै मा वलि-सुदृढ़ और बड़े बल को; ननैयान् विल्लाल्-उन्हीं के धनुष से; अट्टम् आरु वल्लाय्-मिटानेवाले समर्थ; कौडियेत्-क्रूर मने; उटै मा मकुटम्-(तुम्हारे ही) स्वत्व का उन्नत किरीट; पुनै अन्नु उरैया-पहनो कहकर; उटन्ते-तुरन्त; चटै मा मकुटम्-जटा का बड़ा किरीट; पुनैय तन्तेन्-पहनने को दिया; अन्तो-हाय; अन्डान्-कहा । ३५२

सेना सहित राजाओं को अनेक वार जिन्होंने अपना परशु फेंककर परास्त किया था उन परशुराम के कठिन बल को उन्हीं के धनु से नष्ट करनेवाले, हे राम ! मैं बड़ा क्रूर हूँ । पहले मैंने कहा कि यह उत्तम और उन्नत किरीट तुम्हारा है; धारण कर लो । पर तुरन्त आज्ञा दे दी कि जटा रूपी मुकुट धारण कर लो । ३५२

कळुत्ता	युरुवम्	मनमुड्	गण्णुड्	गैयुज्	जैय्याय्
पौळुत्ताय्	पौरैये	यिरैवन्	पुरमून्	रैरित्त	पोर्विल्
इळुत्ताय्	तमिये	नैन्ना	दैन्तै	यिम्मूप्	पिडैये
वैळुत्ता	यिनिनान्	वाणाळ्	वेण्डेन्	वेण्डे	नैन्डान् 353

उरुवम् कळुत्ताय्-श्यामरूप; मनमुम् कण्णुम् कैयुम् जैय्याय्-लाल मन, आँखों और हाथों वाले; पौरैये पौळुत्ताय्-क्षमाशील; पुरम् मून्नु रैरित्त इरैवन्-त्रिपुरदाही परमेश्वर का; पोर् विल्-युद्धधनु; इळुत्ताय्-तोड़नेवाले; इ मूप्पिटै-इस वाद्धक्य में; तमियेन् अन्तु-निस्सहाय (हूँ इसका भी) विचार न करके; अन्तै वैळुत्ताय्-मुखसे घृणा करते हो; इत्ति-अब; नान्-मैं; वाळुनाळ् वेण्डेन्-जीवन के दिन नहीं चाहता; वेण्डेन्-नहीं चाहता; अन्डान्-कहा । ३५३

दशरथ ने आगे कहा— श्याम रूप ! मन के श्रेष्ठ ! लाल (सुन्दर) आँखों और हाथों वाले; हे क्षमाशील ! त्रिपुरान्तकधनु-भञ्जक ! मेरे इस वाद्धक्य में मेरी निस्सहायता का भी विचार न करके मुझे घृणा करके (त्याग कर) जाते हो अब और दिन जीना नहीं चाहता, नहीं चाहता । ३५३

पौन्निन्	मुन्न	मौळिरुम्	वौन्ने	पुहळिन्	पुहळे
मिन्निन्	मिन्नुम्	वरिविड्	कुमरा	मैय्यिन्	मैय्ये
अन्निन्	मुन्नम्	वननी	यडैड्	कैळिये	नल्लेन्
उन्निन्	मुन्नम्	बुहुवे	नयर्वा	नहम्या	नैन्डान् 354

पौनित्न् मुत्तम्-स्वर्ण से बढ़कर; ओल्लिम्-चमकनेवाले; पौन्ते-स्वर्ण; पुकलित् पुकळे-यश से अधिक यशस्वी; मिन्निन् मिन्नुम्-बिजली से भी अधिक दमक वाले; वरिविल् कुमरा-बन्धनयुक्त धनुर्धर; मैय्यिन् मैय्ये-सत्य के विग्रह; अँत्तिन् मुन्नम्-मुझसे पहले; नी वतम् अटैत्तु-तुम वन चले जाओ, इतना; अँळियेत् अल्लेत्-(मैं) क्षुद्र नहीं हूँ; उन्तिन् मुन्नम्-तुमसे पहले; यान् उयर् वान् अकम्-मैं उच्च आकाशलोक (स्वर्ग) में; पुकुवेत्-पहुँचूँगा; अँत्तान्-कहा । ३५४

स्वर्ण से अधिक मूल्यवान् स्वर्ण ! यश से अधिक यशस्वी ! बिजली से अधिक चमकनेवाले धनु के धारक ! सत्यमूर्ति ! तुमको मुझसे पहले, मुझे जीता छोड़कर, वन जाने दूँ मैं इतना क्षुद्र या मन का दुर्बल नहीं हूँ । तुम निकलो, इसके पहले ही मैं ऊपर स्वर्ग पहुँच जाऊँगा । ३५४

नहुदर्	कौत्त	नञ्जु	नेयत्	ताले	यावि
उहुदर्	कौत्त	वुडलु	मुडैये	नुन्बो	लल्लेन्
तहुदर्	कौत्त	शन्नहत्	तैयल्	कैयैप्	पड्रिप्
पुहुदक्	कण्ड	कण्णार्	पोहक्	काणे	नैन्त्रान् 355

नैकुत्तु ओत्त नैञ्चुम्-द्रवणशय्य मन; नेयत्ताले-स्नेह से; आवि उकुत्तु ओत्त उटलुम्-जीवन छोड़ सकनेवाला शरीर; उटैयेन्-मेरे पास है; उन् पोल् अल्लेत्-तुम्हारे समान नहीं हूँ; तकुत्तु ओत्त-योग्यता रखनेवाली; चत्तक् तैयल्-जनक की पुत्री का; कैयै पड्रि-पाणीग्रहण करके; पुकुत्त कण्ट कण्णाल्-(नगर-) प्रवेश करते देखा (जिन्होंने) उन आँखों से; पोक् काणेन्-नगर छोड़ जाना न देख सकूँगा; अँत्तान्-कहा । ३५५

मेरे पास द्रवणशील मन है । शरीर इतना दुर्बल हो गया कि प्राण छोड़ देने में कोई कष्ट नहीं होगा । तुम्हारे समान मेरे पास कठोरता नहीं है । मैंने तुमको अपने योग्य, जनकपुत्री के साथ हाथ में हाथ डाले नगर में प्रवेश करते देखा था । क्या उन्हीं आँखों से मैं तुम्हारा नगर-निर्गम देख सकूँगा ? नहीं—कहा । ३५५

अँर्त्ते	पहर्वे	तित्तिया	नैन्ते	युन्तिर्	पिरिय
वर्त्ते	युलहम्	मैत्तिनुम्	वान्ते	वरुन्दा	दैनितुम्
पौर्त्ते	ररशे	तमियेन्	पुहळे	युयिरे	युन्तैप्
पैर्त्ते	तरुमै	यड्रिवेन्	पिळैयेन्	पिळैये	नैन्त्रान् 356

पौन् तेर् अरचे-स्वर्णरथ राजा; तमियेन् पुकळे-मेरे यश के हेतुभूत; उयिरे-मेरे प्राण (सम); अँन्ते-(यह) क्या (हो गया); इनि-अब; यान् अँर्त्तु पक्वैन्-मैं कैसे बताऊँ; उलक्-सारा संसार; उन्तिल् पिरिय वर्त्ते अँत्तिनुम्-तुमसे बिछुड़ा रह सकता है, तो भी; वान् वरुन्तातु-स्वर्ग नहीं पछतायेगा; अँत्तिनुम्-तो भी; अरुमै-तुम्हारा मूल्य; पैर्त्तेन् अड्रिवेन्-जनक के नाते मैं जानता हूँ; पिळैयेन्-जीता नहीं रहूँगा; पिळैयेन्-नहीं जिऊँगा; अँत्तान्-कहा । ३५६

दशरथजी आगे विलापते हुए कहते हैं— स्वर्णरथी ! मेरे यश के कारणभूत ! मेरे प्राण ! यह क्या हो गया ? मैं अपनी दशा कैसे कहूँ ? यह सारा संसार तुमसे विलग रह सके तो भी, आकाशलोक भी तुम्हारा वियोग सह सके तो भी मैं तुम्हारा जनक हूँ, मैं तुम्हारा मूल्य जानता हूँ; मैं नहीं बचूंगा, न बचूंगा । ३५६

अळळ्	पळळप्	पुनल्लू	ळहन्मा	निलमु	मरचुम्
कौळळक्	कुडैया	निदियिन्	कुवैयु	मुदला	मैवैयुम्
कळळक्	कैहे	शिक्के	युदविप्	पुहळ्ळैक्	कौण्ड
वळळ्	इनमैन्	नुयिरै	माय्क्कु	माय्क्कु	मैन्डात् 357

अळळल्-पंकिल; पळळम्-गहरा; पुनल् चूळ्-सागर-वलयित; अक्ल् मा निलमुम्-विस्तृत श्रेष्ठ राज्य; अरचुम्-उस पर शासन का अधिकार; कौळळ कुडैया-लेने से कम न होनेवाली; निदियिन् कुवैयुम्-निधि की राशियाँ; मुदल आम्-आदि; मैवैयुम्-सबको; कळळम् कैकेचिक्के-बंचक कैकेयी को ही; उतवि-दान करके; पुक्ळ् कै कौण्ड-यश ग्रहण का; वळळल् ततम्-दातापन; अैन् उयिरै माय्क्कुम्-मेरे प्राणों को हर लेगा; माय्क्कुम्-हर ही लेगा; अैन्डात्-कहा । ३५७

मैंने पंकिल और गहरे सागर से घिरी हुई विस्तृत भूमि, उस पर शासन का अधिकार, अक्षय निधि की राशियाँ आदि बंचक कैकेयी को दिया और उससे अपार यश अर्जित किया भी, सही । पर यह दातापन मेरे प्राण हर लेनेवाला है; हाँ हर अवश्य लेगा । ३५७

औलियार्	कडल्लू	ळुलहत्	तुयर्वा	त्तिडैना	हरिन्तुम्
पौलिया	निन्डा	रुन्नैप्	पोल्वा	रळरो	पौन्ने
वलिया	रुडैया	रैन्डात्	मळुवा	ळुडैयात्	वरवुम्
चलिया	निलैया	यैन्डात्	उविर्वा	रळरो	वैन्डात् 358

औलि आर्-शब्द-समन्वित; कटल् चूळ् उलकत्तु-समुद्रवलयित इस पृथ्वी पर; उयर् वात् इटै-ऊँचे आकाशलोक में; नाकरिन्तुम्-पाताल में; पौलिया निन्डार्-विद्यमान लोगों में; उन्नै पौल्वार्-तुम्हारे समान रहनेवाले; उळरो-रहते हैं क्या; पौन्ने-स्वर्ण-सम (श्रेष्ठ); मळुवाळ् उडैयात्-परशुधर; वलि यार् उडैयार्-बली कौन है; अैन्डात् वरवुम्-कहते हुए आने पर; चलिया निलैयाय्-अचल खड़े रहे; अैन्डाल्-तो; तविर्वार् उळरो-ऐसे तुमको जाने देनेवाले कोई होंगे क्या; अैन्डात्-कहा । ३५८

हे स्वर्णसम श्रेष्ठ ! शब्दायमान समुद्रवलयित इस भूलोक में, उन्नत सुरलोक में और पाताल में तुम्हारे समान सर्वश्रेष्ठ कोई है क्या ? परशुधर ललकारते हुए आये कि यहाँ कौन बलशाली है ? तब तुमने बिना चलित हुए उनका सामना किया । ऐसे तुमको वन जाने देनेवाला कोई होगा क्या ? । ३५८

केट्टे	यिरुन्दे	नैत्तिनुड्	गिळर्वा	निन्ऱे	यडैय
माट्टे	ताहि	लन्ऱो	वन्ग	णैन्कण्	मैन्दा
काट्टे	युरैवाय्	नीयिक्	कैहे	शियैयुड्	गण्डिन्
नाट्टे	युरैवे	नैन्ऱा	तन्ऱैन्	उन्मै	यैन्ऱान् 359

केट्टे-सुनकर भी; इरुन्तेन् अँत्तिनुम्-जीवित रहा, तो भी; इन्ऱे-अभी; किळर्वा-तुम्हारे माट्टेन् आकिल् अन्ऱो-प्रकाशमान आकाश नहीं जानेवाला रहा, तभी तो; अँन् कण् वन् कण्-मेरी आँखें निष्ठुर आँखें होंगी; मैन्ता-मेरे सुत; नी काट्टे उरैवाय्-तुम जंगल में रहोगे; इ कैकेयैयुम् कण्डु-इस कैकेयी को देखते हुए; इ नाट्टे-इस राज्य में; उरैवेन् अँन्ऱाल्-रहूँगा तो; अँन् तन्मै नन्ऱ-मेरा स्वभाव भी अच्छा है; यैन्ऱान्-कहा । ३५६

दशरथ ने आगे भी कहा— तुम्हारे वनगमन की बात सुनकर भी मैं जीवित रहता हूँ । यह कठोर मन का द्योतक है । पर अभी स्वर्ग न पहुँच सकूँगा तभी तो मेरी आँखें कठोर कही जायँगी ! हे प्यारे पुत्र ! तुम जाकर जंगल में रहो और मैं इस क्रूर कैकेयी को अपनी आँखों से देखते हुए इस राज्य में मजे से रहूँ तो मेरा स्वभाव भी बड़ा अच्छा माना जायगा न ! । ३५९

मैय्यार्	तवमे	शैय्दुन्	वियन्मार्	बरिदिर्	पैर्ऱ
शैय्या	ळैन्नुम्	बौन्नु	निलमा	दैन्नुन्	दिरुवुम्
उय्या	रुय्या	विनैये	नुन्तैप्	पिरिन्दु	मिरुन्दाल्
ऐया	कैहे	शियैने	राहे	नोना	नैन्ऱान् 360

ऐया-तात; मैय् आर् तवम् चैय्तु-सत्यसंयुक्त तपस्या करके; उन् वियल् मार्पु-तुम्हारा विशाल वक्षस्थल; अरितिन् पैर्ऱ-अपूर्व रूप से जिन्होंने पाया है; चैय्याळ् अँन्नुम् पौन्नुम्-वे, लक्ष्मी नाम की श्रीदेवी और; निलम् मातु अँन्नुम् तिरुवुम्-भूदेवी की श्री; उय्यार्-(तुम्हारे बिछुड़ने पर), जीवित नहीं रहेंगी (श्रीहीन हो जायगा यह राज्य); उय्या विनैयेन्-जिससे वचन नहीं पाता ऐसे कर्म का मैं; उन्तै पिरिन्नुम्-तुमसे वियुक्त होने पर भी; इरुन्ताल-जीवित रहूँ तो; नान् कैकेयियै नेर् आकेतो-कैकेयी-सदृश न हो जाऊँगा क्या; यैन्ऱान्-कहा । ३६०

तात ! भूदेवी तथा श्रीदेवी दोनों ने बड़ी तपस्या करके तुम्हारा वक्षस्थल (भर्त्तापिन) पाया है । वे तुमको छोड़कर वची नहीं रहेंगी । अगर पापी मैं, इस स्थिति से वचने का मार्ग ही न हो ऐसा काम जो कर चुका वह, मैं तुमसे वियुक्त होकर भी जीवित रह जाऊँ तो मैं भी कैकेयी के समान नहीं हो जाऊँगा क्या ? मैं उतना निर्मम नहीं हूँ । ३६०

पूणा	रणियुम्	मुडियुम्	पौन्ता	शतमुड्	गुडैयुम्
शेणार्	मारबुन्	दिरुवुन्	दैरियक्	काणक्	कडवैन्

माणा मरवर् कलैयु मानिन् रोलुम् वन्नैदल्
काणा दौळिवे नैन्ऱा नन्ऱायत् तन्ऱो करुमम् 361

पूण आर् अणियुम्-पहननेयोग्य आभरण; मुटियुम्-किरीट; पोन् आचनमुम्-स्वर्ण (सिंह-) आसन; कुट्टियुम्-श्वेत छत्र; चेण् आर् मारुपुम्-विशाल वक्षस्थल; तिरुवुम्-विजयश्री; तैरिय काण कटवेन्-आँख भर देखने का अधिकार रखनेवाला मैं; माणा मरम् वरकलैयुम्-क्षुद्र पेड़ की छाल का वस्त्र; मानिन् तोलुम्-और मृगचर्म; वन्नैतल्-पहनना; काणातु ओळिवेन् अँन्ऱाल्-बिना देखे (संसार से) चला जाऊँ तो; करुमम्-वही कार्य; नन्ऱ आयत्तु अन्ऱो-अच्छा होगा न। ३६१

पहनने योग्य आभूषण, किरीट, स्वर्ण-सिंहासन, श्वेत छत्र, विशाल वक्ष, उसमें शोभित विजयश्री आदि के साथ तुम्हें देखने का मैं अधिकारी हूँ। पर क्षुद्र बल्कल और मृगचर्म पहने हुए तुमको देखना पड़ जाय तो उसको बिना देखे संसार छोड़ चला जाऊँ —वही काम श्रेष्ठ होगा न ?। ३६१

अँन्ऱा वौन्ऱौत्त रौव्वा विशदन् दरशन् नुयिरुम्
शौन्ऱा निन्ऱो डैन्नुन् दन्मै यैय्दित् तेय्न्दात्
मैन्ऱोन् मार्विन् मुनिवन् वेन्दे ययरे लवन्नै
इन्ऱे येहा वण्णन् दहैवै नुलहो डैन्ऱान् 362

अँन्ऱा-ऐसा; ओँन्ऱ ओँन्ऱ ओँव्वा-एक दूसरे से न मिलनेवाली बातें; इच्चै तन्नु-कहते हुए; अरचन् इन्ऱोडु उयिर् चैन्ऱान्-राजा आज मर जायेंगे; अँन्नुम् तन्मै अय्यत्ति-यह कहने योग्य दशा में आकर; तेय्न्तान्-घुले; मैन् तोल् मार्विन् मुनिवन्-मृदु (मृग-) चर्म वाले वक्ष के मुनिवर (वसिष्ठ); वेन्ते-राजा; अयरेल्-दुखी मत होइए; इन्ऱे-अभी; उलकोट्टु-श्रेष्ठ लोगों के साथ; अवन्नै-(जाकर) उनको; एका वण्णम् तकवैन्-न जाएँ ऐसा रोकूँगा; अँन्ऱान्-कहा। ३६२

इस तरह के परस्पर असंबद्ध प्रलाप करते हुए राजा इतने श्रान्त हो गये कि यह सन्देह होने लगा कि राजा प्राणहीन हो गये हैं क्या ? उनको देखकर मृगचर्म-धारी वक्ष वाले वसिष्ठ ने कहा कि राजा ! दुखी मत होइए। अभी अन्य बड़े लोगों को साथ लेकर श्रीराम के पास जाऊँगा और उनको जाने से रोक लूँगा और राज्य-युक्त कर लूँगा। ३६२

मुनिवन् शौल्लु मळविन् मुडियुड् गौल्लैन् ररशन्
तत्तिनिन् शळ्ळन् नुयिरैच् चिरिदे तहैवा तिन्दप्
पुत्तिदन् बोना लिवनार् पोहा दौळिवा नैन्ना
मत्तिदन् वडिवड् गौण्ड मनुवुन् दन्नै मरुन्दात् 363

मुनिवन् चौल्लुम् अळविल्-मुनि के कहते समय; मुटियुम् कौल्-मर जायेंगे क्या; अँन्ऱ अरचन्-ऐसी स्थिति में जो रहे वे राजा; मत्तिन् वटिवम् कौण्ट मनुवुम्-मनुष्य रूप में मनु (सम रहनेवाले); इन्त पुत्तिन् पोत्ताल्-यह पवित्रपुरुष जाएँगे तो; इवनाल्-इनके प्रयास से; पोकातु ओळिवान्-बिना गये रह जायगा; अँन्ता-समझकर;

तन्ति निन्तु उल्लल-एकाकी रहकर कुढ़नेवाले; तन् उयिरै-अपने प्राण को; चिरिते तर्कवान्-कुछ देर स्थिर करके; तन्तै मरन्तान्-अपनी सुध खोकर मूर्छित हुए । ३६३

यह सुनकर राजा को थोड़ा विश्वास हुआ । 'मर ही गये' ऐसी स्थिति में-जो रहे वे, मनु के समान राजा यह सोचकर कि पवित्र मुनि जायँगे तो शायद श्रीराम वन जाना छोड़ देगा कुछ देर अपने छटपटानेवाले प्राणों को स्थिर करके बेहोश हो गये । ३६३

मरन्दा	तुणर्वु	मुयिरुम्	मन्त	नैन्त	मरुहा
इरन्दान्	कौल्लो	वरिये	नैन्ता	विडरुड्	उल्लिवाळ्
तुइरन्दान्	महन्मुन्	नैन्तैयुन्	दुइरन्दाय्	नीयुन्	दुणैवा
अरन्दा	तिदुवो	वैया	वरशरक्	करशे	यैन्डाळ् 364

मन्तन् उणर्वुम् उयिरुम् मरन्तान्-राजा की सुध और बुध लुप्त हो गई; अन्त यह सोचकर; मरुका-व्याकुल होकर; इरन्तान् कौल्लो-मर गये क्या; अरियेन्-नहीं जानती; अन्ता-कहते हुए; इटर् उरुड्-दुखी होकर; अल्लिवाळ्-बलांत होनेवाली (कौसल्या); ऐया-आर्य; अरचरक्कु अरचे-राजाधिराज; मकन्-पुत्र ने; मुन्-पहले; नैन्तैयुम् तुइरन्तान्-मुझे भी (आपके साथ) त्याग दिया; तुणैवा-जीवनसंगी; नीयुम् तुइरन्ताय्-आपने भी त्याग दिया; इतु अरम् तानो-क्या यह धर्म है; अन्डाळ्-(ऐसा विलाप-वचन) कहा । ३६४

कौसल्या यह देखकर रोने लगीं । "राजा ने सुध-बुध खो ली; क्या वह मर गये ? नहीं मालूम कर पाती !" ऐसा सोचकर वे घबड़ा उठीं । वे विलाप करने लगीं । आर्य ! राजाधिराज ! पहले मेरे पुत्र ने (आपके साथ) मुझे (भी) छोड़ दिया । अब आप भी मुझे छोड़ जाएँगे क्या ? जीवनसंगी आप छोड़ जाएँ —क्या यह धर्म है ? । ३६४

मैय्यिन्	मैय्ये	युलहिन्	वेन्दर्क्	कैल्लाम्	वेन्दे
उय्युम्	वहैनिन्	तुयिरै	योम्बा	दिड्डन्	इम्बिन्
वैय	मुळुदुन्	दुयरान्	मरुहुम्	मुनिवन्	तुडन्तम्
ऐयन्	वरिन्तुम्	वरुमा	लयरे	लरशे	यैन्डाळ् 365

मैय्यिन् मैय्ये-सत्यविग्रह; उलकिन् वेन्दर्क्कु अल्लाम्-लोक के राजाओं के; वेन्ते-राजा; उय्युम् वकै-(हमको) तारने के हेतु; निन्तु उयिरै ओम्पातु-अपने प्राणों की रक्षा न करके; इड्डन्-इस प्रकार; तेम्पिन्-दुख करेंगे तो; वैयम् मुळुतुम्-भूलोक सारा; तुयरान् मरुकुम्-दुख से विकल होगा; मुनिवन्तु-मुनि के साथ; नम् ऐयन्-हमारा पुत्र; वरिन्तुम् वरुम्-आ भी सकता है; अयरेल्-शिथिल मत होइए; अरचे-राजा; अन्डाळ्-कहा । ३६५

वे और भी दुख करते हुए बोलीं— हे सत्यरूप ! सारे लोक के राजाओं के राजा ! हम सब जीवित और अच्छी स्थिति में रहें; इस हेतु आपको अपने प्राणों की रक्षा करनी चाहिए । बिना अपने प्राणों की

रक्षा किये अगर आप इस तरह मुरझा जाएँगे तो सारा लोक दुख से विकल हो जाएगा । हो सकता है कि हमारा लड़का मुनिवर के साथ आ जाय । इसलिए आप शिथिल न हों । ३६५

अँन्रुन्	उरशन्	मँय्यु	मिरुदा	ळिणैयुम्	मुहनुम्
तन्नुन्	शैय्य	कैयाऽ	रैवन्	दिडुको	सलैयै
ओन्नून्	दैरिया	मम्म	रुळ्ळत्	तरशन्	मँळ्ळ
वन्न्रिण्	शिलैनड्	गुरिशिल्	वरुमे	वरुमे	यँन्रान् 366

अँन्रु अँन्रु-ऐसा, ऐसा कहते हुए; अरचन् मँय्युम्-राजा का शरीर; इर ताळ् इणैयुम्-दोनों चरणों; मुकनुम्-और मुख को; तन् चैय्य कैयाऽ-अपने लाल (सुन्दर) हाथों से; तैवन्तिडु-सहलाती हुई; कोचलैयै-कौसल्या को; ओन्नूम् तैरिया-कुछ भी न जाननेवाले; मम्मर् उळ्ळत्तु-अचेतमन; अरचन्-दशरथ ने; मँळ्ळ-धीमे स्वर में; वल् तिण् चिल्लै-सबल और गफ़ धनु के; नम् कुरुचिल्-हमारा राजा; वरुमे, वरुमे-आयगा क्या, आयगा क्या; अँन्रान्-कहा । ३६६

कौसल्यादेवी ऐसी-ऐसी बातें कहते हुए राजा के शरीर को, उनके दोनों पैरों को और मुख को (गरमी देते हुए) सहला रही थी । तब राजा वेसुध थे और उनका मन धूमिल पड़ गया था । तब वह कौसल्या से पूछने लगे कि क्या सुदृढ़ और सबल धनु का धारक हमारा राजा (पुत्र) आयगा ? आयगा क्या ? । ३६६

वन्मा	यक्कै	हेशि	वरत्ता	लैन्नु	नुयिरै
मुन्माय्	विप्पत्	तुणिन्दा	ळैन्नुड्	गूनि	मौळियाल्
तन्मा	महनुन्	दानुन्	दरणि	पैरुमा	उन्न्रि
अँन्मा	महन्नैक्	कान्ने	हैन्ना	ळन्नो	यँन्रान् 367

वल् मायम् कैकेचि-प्रबल मायाविनी कैकेयी ने; कूनि मौळियाल्-कुब्जा के कहने से; वरत्ताल्-वर द्वारा; तन् मा मकनुम् तानुम्-अपना बड़ा पुत्र और आप; अँन्रुम् तरणि पैरुम् आऽ अन्न्रि-सदा के लिए राज्य पाने के अलावा; अँन् मा मकन्नै-मेरे बड़े पुत्र को; कान् एकु-जंगल जाओ; अँन्राल् अन्न्रो-कहा न; अँन् तन् उयिरै-मेरे प्राणों को; मुन् माय् विप्प तुणिन्ताळ्-पहले मारने का निश्चय कर लिया; अँन्रान्-कहा । ३६७

धीरे-धीरे उनका मन अधिक सुलझा । तब उन्होंने कहा कि बड़ी मायाविनी कैकेयी ने कुब्जा मथरा का मार्गदर्शन पाकर अपने और अपने पुत्र का शासक का स्थान सदा के लिए निश्चित कर लिया । साथ-साथ उसने मेरे पुत्र से 'वन जाओ' कहा न ? उसके द्वारा उसने क्या कर लिया, मालूम है ? पहले मेरे प्राणों का अन्त कर लिया । ३६७

पोन्नार्	वलयत्	तोळान्	कानो	पुहुद	उविरान्
अँन्ना	रुयिरो	वहला	दौळिया	दिडुको	शलैकैळ्

मुत्तना ठौरमा मुनिवन् मौलिन्द शाब मुळदेन्
इन्ना छुइइ देल्ला मवळुक् करश नरैवान् 368

पौन् आर् वलयम्-स्वर्णनिर्मित (बाहु-) वलय; तोळान्-धारी; कान् पुकुतल् तविरान्-जंगल जाना नहीं छोड़ेगा; अँन् आर् उयिरो-मुझसे लगे प्राण तो; अकलातु ओळियातु-अलग हुए बिना नहीं रहेंगे; कोचलै-कौसल्या; इतु केळ्-यह सुनो; मुन् नाळ्-पहले किसी दिन; ओरु मा मुनिवन्-एक बड़े मुनि का; मौलिन्द चापम्-दिया गया शाप; उळतु-हैं; अँन्-कहकर; अन्नाळ् उइइतु अँलाम्-उस दिन जो हुआ वह सब; अरचन्-राजा; अवळुक्कु-उनको; अरैवान्-सुनाने लगे। ३६८

स्वर्ण के बाहुवलय-धारी श्रीराम जंगल जाने से नहीं रुकेगा। मेरे प्राण भी चले बिना टिकनेवाले नहीं हैं। कौसल्या! एक बात सुनो। पहले कभी मुझे एक महामुनि का दिया शाप मिला था। —यह कहकर राजा वह सारा वृत्तान्त सुनाने लगे। ३६८

वैय्य कान्तु तिडैये वेट्टै वेटकै मिहवे
ऐय शँत्रे करियो डरिह डुरुवित् तिरिवेन्
कैयिड् चिलैयुड् गणैयुड् गौडुहार् मिरुहम् वरुमोर्
शैय्य नदियिन् करैवाय् चैन्त्रे मरैय नित्त्रेन् 369

वेट्टै वेटकै मिक-आखेट की इच्छा के बढ़ने से; वैय्य कानत्तिटै-भयंकर कानन में; चैन्त्रे-जाकर; ऐय करियोडु-विस्मयकारी गजों के साथ; अरिक्कळ्-सिंहों को भी; तुरुवि तिरिवेन्-ढूँढ़ता फिरा; कैयिल् चिलैयुम् कणैयुम्-हाथ में धनुष और बाण; काँटु-लेकर; कार् मिरुहम् वरुम्-करि जहाँ आ सकते हैं; ओर् चैय्य नदियिन् करै वाय्-एक अच्छी नदी के किनारे पर; चैन्त्रे-जाकर; मरैय नित्त्रेन्-छिपा खड़ा रहा। ३६९

एक बार आखेट की मेरी इच्छा प्रबल हुई। मैं बड़े-बड़े विस्मयकारी आकार वाले गजों और सिंहों को ढूँढ़ता फिरा। उस सिलसिले में मैं, धनु और शर के साथ एक नदी के किनारे पर गया। वह नदी अच्छी नदी थी और हाथी आदि जल पीने के लिए उधर ही आएँ —इसकी संभावना थी। मैं वहाँ छिपा खड़ा रहा। ३६९

औरुमा मुनिवन् मन्त्रैयो डौळियौन् शिलवा नयनम्
तरुमा महन्ने तुणैयाय् तवमे पुरिपोळ् दिनिन्वाय्
अरुमा महन्ने पुनल्कोण् उणैवान् वरुमा इरियेन्
पौरुमा कणैविट् टिडलुम् बुविमी दलरिप् पुरळ 370

औरु मा मुनिवन्-एक महामुनि; मन्त्रैयोडु-अपनी पत्नी के साथ; औळि औन्निल आम्-तेजहीन (अन्धी); नयनम् तरु-आँखों के स्थान में आँख का काम देनेवाले; मा मक्कन्ने-श्रेष्ठ पुत्र को ही; तुणै आय्-सहायक बनाकर; तवम् पुरि पोळ्तिन् वाय्-तपस्या करते रहे, तब; अरु मा मक्कन्ने-वह उत्तम पुत्र ही; पुनल्

कोण्टु अणैवान्-जल ले आने के लिए; वरुम् आरु-आया, यह बात; अरियेन्-न जानता; पोरु मा कणै-घातक बड़ा अस्त्र (शब्दवेधी वाण); विट्टिटलुम्-छोड़ने पर; अलरि-चीखते हुए; पुवि भीतु पुरळ-भूमि पर (वह) लोटा तब । ३७०

तब वहाँ एक मुनि-वालक आया । एक महामुनि अपनी पत्नी के साथ पास में रहते तपस्या करते रहे । वे दोनों अन्धे थे । यही वालक उन दोनों अन्धों की आँख के समान उनकी सब विधि से सहायता करता था । वह उत्तम चरित्र वाला पुत्र जल ले जाने के लिए वहाँ आया । यह मैं नहीं जानता था । मैंने एक घातक वाण छोड़ा जो वालक पर लगा । लगते ही वह चीखते हुए गिर पड़ा और भूमि पर लोटने लगा । ३७०

पुक्कुप्	पेरुनीर्	नुहरुम्	वोरुपो	तहमैन्	श्रीलिमेर्
कैक्कट्	कणैशैन्	इदलार्	कण्णिर्	इरियक्	काणेन्
अक्कैक्	करियिन्	कुरले	यन्ऱी	दैन्	वैरुवा
मक्कट्	कुरलैन्	इयर्वेन्	मननौन्	दवणवन्	दनेनाल् 371

पुक्कु-वहाँ आकर; पेरु नीर्-नुकरुम्-अधिक जल पीनेवाला; पोरु पोतकम्-झगड़ालू हाथी; अन्ऱु-समझकर; ओलि मैल्-शब्द (की दिशा) में; कै कण् कणै-मेरे हाथ का अस्त्र; चैन्ऱु अल्लाल्-गया, उसे छोड़कर; कण्णिल्-अपनी आँखों से; तैरिय काणेन्-देख न पाया; ईतु-यह स्वर; अ कैकरियिन् कुरले-उस हाथी का ही स्वर है; अन्ऱु अन्त-नहीं, यह; मक्कळ् कुरल्-और मानवी स्वर है; अन्ऱु-ऐसा जानकर; वैरुवा-डरकर; मत्तम् नौन्तु-खिन्नमन होकर; अयर्वेन्-श्लथ हुआ; अवण् वन्तनैन्-वहाँ आया । ३७१

मैंने यह सोचकर कि कोई बड़ा झगड़ालू हाथी आकर जोर से पानी पी रहा है उस दिशा में शर छोड़ा जहाँ से वह ध्वनि आ रही थी । अपनी आँखों से तो मैंने कुछ नहीं देखा था । जब यह ध्वनि आई तो लगा कि वह हाथी की नहीं थी और मानवी स्वर है । इसलिए भय-चकित और दुखी होकर मैं वहाँ गया । ३७१

कैयुड्	गुडमुन्	नैहिल्क्	कणैयो	डुरुळ्वोर्	काणा
वैय्य	तनुवु	मननुम्	वैरिदे	किडवे	वीळा
ऐय	नीतान्	याव	नन्दो	वरुळ्हेन्	इयरप्
पौय्यौन्	इरिया	मैन्दन्	केणी	यैन्नप्	पुहल्वान् 372

कैयुम् कुटमुम् नैकिळ-हाथ से घट गिराकर; कणैयोर्-(शरीर पर) लगे शर के साथ; उरुळ्वोन् काणा-लोटनेवाले को देखकर; वैय्य तनुवुम्-भयंकर धनु; मत्तनुम्-और मेरा मन; वैरिदे एकिट-निर्बल हो गये, तब; वीळा-(उसके पास) गिरकर; ऐय-आर्य; नी यावन्-तुम कौन हो; अन्तो-हाथ; अरुळ्क-कहने की

कृपा करो; अँनू-पूछकर; अयर-दुखी हुआ तो; पौय् औन्नु अरिया मैन्तन्-
असत्य कुछ न जाननेवाले ऋषि-कुमार ने; केळ् नी-मुनिए आप; अँन्त-कहकर;
पुकल्वान्-कहने लगा । ३७२

वहाँ मुनिपुत्र अपने हाथ से जलघट गिराकर शरीर पर लगे शर-सह
लोट रहा था । उसे देखकर मेरा धनु हाथ से छूटा और मन मेरे वश से ।
मैंने भी उसके पास तपाक से बैठकर पूछा कि आर्य ! तुम कौन हो ?
हाय ! कृपा करके बताओ । मेरा दुख देखकर असत्य से अभिज्ञ वह
बोला कि सुनिए । ३७२

अन्नान्	मलरोन्	वळिया	लरुळ्का	शिवनन्	मैन्दन्
मिन्तार्	पुरिनून्	मार्बन्	विरुत्ते	शनन्मैय्प्	पुदल्वन्
नन्नान्	मरैन्	रैरियु	नावान्	शलबो	शनैतच्
चौन्नान्	मुनिवन्	पुदल्वन्	शुरोश	ननिया	तैन्शान् 373

अ नाळ्-उन दिनों; मलरोन्-ब्रह्मा के; वळियाल् अरुळ्-क्रमवार सृष्टि;
काचिपन् नल् मैन्तन्-काश्यप के श्रेष्ठ पुत्र; मिन् आर् पुरि नूल् मार्पन्-उज्ज्वल
त्रिसूत्री उपवीत से शोभित वक्ष वाले; विरुत्तेचत्तन्-व्रतेश के; मय्पुतल्वन्-सत्पुत्र;
नल् नाल्मरै-श्रेष्ठ चतुर्वेद; नूल्-और शास्त्र; तैरियुम्-जाननेवाले; नावान्-
वाग्मी; चलपोचन् अँन-जलभोज (?); चौन्नान् मुनिवन्-ऐसे कहलानेवाले
मुनि का; पुतल्वन्-पुत्र; चुरोचत्त यान्-सुरोचन मैं हूँ; अँन्शान्-कहा । ३७३

उन प्राचीन दिनों में ब्रह्माजी की क्रमवार सृष्टि में काश्यप पहले
आये । उनके पुत्र यज्ञोपवीतालंकृत वक्ष वाले व्रतेश (?) थे । उनके पुत्र
वेदों और शास्त्रों के विद्वान जलभोज (?) थे । उनका पुत्र मैं हूँ और
मेरा नाम सुरोचन (?) है । ३७३

[इसके बाद एक पद किसी-किसी संस्करण में पाया जाता है जिसका
सार यह है—वेदरक्षण के लिए मत्स्यावतार लेनेवाले विष्णु के नाभीकमल
से उत्पन्न ब्रह्मा ने वेदोक्त प्रकार से विविध जीवों की सृष्टि की । उन्होंने
मनुष्य के चार वर्ण बनाये । उनमें प्रथम वर्ण का हूँ मैं ।]

इरुकण्	कळुमिन्	रियिदाय्	तन्दैक्	कुम्मिड्	गवरहळ्
परुहुम्	पुतल्ल्हाण्	डहल्वान्	पडर्न्देन्	पळुदा	यिनदाल्
इरुहुन्	रुनैय	पुयत्ता	यिबर्मेन्	रुणरा	दैय्दाय्
उरुहुन्	दुयरन्	दविरुनी	यळिन्	शैयली	दैन्तवे 374

इरु कण्कळुम् इन्नरिय-दोनों आँखों से हीन; ताय् तन्तैक्कुम्-माता और पिता
को; अवरकळ् परकुम् पुनल्-उनका पेय जल; कौण्टु अकल्वान्-ले जाने के लिए;
इड्कु पटर्न्देन्-यहाँ आया; पळुतु आयिनतु-निरर्थक हो गया; इरु कुन्नु अनैय
पुयत्ताय्-दो पर्वतों के समान कंधों वाले; उणरातु-बिना जाने; इपम् अँनू-हाथी
समझकर; अँय्ताय्-(शर) चलाया; ईतु ऊळिन् चैयन्-यह विधि का काम है;

अँन-लेकर; नी उरुकुम् तुयरम्-आप विगलित करनेवाला दुख; तविर्-छोड़ दीजिए । ३७४

मेरे माता-पिता दोनों अन्धे हैं । उनके पीने के लिए जल ले जाने के लिए मैं इधर आया था । पर काम विगड़ गया । पर्वतसम कन्धे वाले ! आपने भी अज्ञान में हाथी समझकर शर प्रेषित किया । यह विधि का काम समझिए और दुख से विकल मत होइए । ३७४

उण्णीर्	वेट्कै	मिहवे	युयङ्गु	मैन्दैक्	कौरुनी
तण्णीर्	कौडुपो	यळित्तैत्तु	शवु	मुरैत्तुप्	पुदल्वन्
विण्मी	दडैवान्	रौळुदा	नैन्वुम्	मवर्पाल्	विळम्बैन्
रैण्णीर्	मैयिनान्	विण्णो	रैदिर्हौण्	डिडवे	हिननाल् 375

उण् नीर् वेट्कै-प्यास; मिक्-बढ़ी, तो; युयङ्कुम् अँन्तैक्कु-दुखी रहते मेरे पिता को; ओरु नी-अप्रमेय आप; तण् नीर्-शीतल जल; कौटु पोय्-ले जाकर; अळित्तु-देकर; अँन् चावुम् उरैत्तु-मेरा मरण बतलाकर; उम् पुतल्वन्-आपका पुत्र; विण् मीतु अटैवान्-स्वर्ग जानेवाला; तौळुतान्-(उसने) नमस्कार कहा; अँन्वुम्-यह भी; अवर् पाल् विळम्बु-उनके पास कहिए; अँन्ऱु-ऐसा; अँण् नीर्मैयिनान्-सबसे स्मरणीय स्वभाव वाला; विण्णोर् अँतिर् कौण्टिटि-देवों के स्वागत करते; एकिनन्-चला गया । ३७५

वहाँ मेरे पिताजी बढ़ती प्यास से दुखी हो रहे हैं । अप्रमेय आप उनको पीने के लिए जल ले जाइए । उनसे मेरे मरण की बात कहिए, और कहिए कि आपके पुत्र ने, जो स्वर्ग जा रहा था, आपको अपना नमस्कार कहा है । अवश्य वह कुमार श्रेष्ठमान्य स्वभाव वाला था । देवों ने आकर उसका स्वागत किया और वह स्वर्ग सिधार गया । ३७५

मैन्दन्	वरवे	नोक्कुम्	वळर्मा	दवर्पान्	महनो
डन्दण्	पुनल्कौण्	डणुह	वैया	विडुपो	दळवाय्
वन्दिड्	गणुहा	यैन्नो	वन्द	दैन्ऱे	नौन्दैम्
शन्दड्	गमळुन्	दोळाय्	तळुविक्	कौळवा	वैत्तवे 376

मैन्तन् वरवे नोक्कुम्-पुत्र के आने की ही प्रतीक्षा करनेवाले; वळर् मातवर् पाल्-वृद्ध महातपस्वियों के पास; मकनोटु-(उनके) पुत्र (के शरीर) के साथ; अम् तण् पुनल् कौण्टु-स्वच्छ शीतल लेकर; अणुक्-जाने पर; ऐया-तात; इतु पोतु अळवाय्-इतनी देर; इड्कु वन्तु अणुकाय्-यहाँ आकर नहीं पहुँचे; वन्तु अँन्तो-(बाधा) आई क्या; अँन्ऱु नौन्तेम्-समझकर हम बहुत कुढ़ते रहे; चन्तम् कमळुम् तोळाय्-चन्दन-वासित भुजा वाले; तळुवि कौळ वा-गले लगाने आओ; अँत्त-कहने पर । ३७६

वे वृद्ध तपस्वी अपने पुत्र की ही प्रतीक्षा में बैठे थे । मैं उस मुनि-पुत्र का शरीर और स्वच्छ, शीतल जल लेकर वहाँ पहुँचा । मेरी आहट

पाकर वे अपना पुत्र समझकर कहने लगे— वत्स ! इतनी देर कर दी तो हमें डर हो गया कि कुछ विपदा हो गई है । वह क्या होगी —यह विचार करते हुए हम बहुत घबड़ाये रहे । चन्दनवासित भुजा वाले ! आओ । हृदय से लग जाओ । ३७६

ऐया	यानो	ररश	नयोतूति	नहरत्	तुळ्ळन्
मैयार्	कळबन्	दुरुवि	मरैन्दे	वदिन्दे	निरुळ्वाय्
पौय्या	वायुमैप्	पुदल्वन्	पुनन्मौण्	डिडुमो	दयिन्मेर्
कैयार्	कणैशैन्	इदलार्	कण्णिर्	रैरियक्	काणेन् 377

ऐया—आर्य; यान् ओर् अरचन्—मैं एक राजा हूँ; अयोतूति नकरत्तु उळ्ळन्—अयोध्या नगर में रहता हूँ; मै आर् कळपम् तुरुवि—काले रंग के गजों की खोज में; इरुळ् वाय्—अंधेरे स्थान में; मरैन्तु वतिन्तेन्—छिपा रहा; पौय्या वायुमै पुतल्वन्—आपका अप्रमत्त सत्यसंध पुत्र; पुनल् मौण्टिटुम्—जल भरने की; ओतैयिन् मेल्—ध्वनि पर; कै आर् कणै चैन्तु—मेरे हाथ का बाण गया; अल्लाल्—उसके सिवा; कण्णिल् तैरिय काणेन्—आँखों से न देख पाया । ३७७

तव मैं बोला— आर्य ! मैं एक राजा हूँ— अयोध्यावासी । काले रंग के हाथियों की खोज में जाकर मैं एक अंधेरे स्थान में छिपा खड़ा रहा । तब अप्रमत्त सत्यवादी आपका पुत्र अपने घट में जल भरने लगा । उस शब्द की ओर मेरा अस्त्र गया । मैंने तो उसको अपनी आँखों से नहीं देखा । ३७७

वीट्टुण्	डलरुड्	गुरलाल्	वेळक्	कुरलन्	ईनवे
ओट्टन्	दैदिरा	नीया	रैन्वुर्	इदला	मुरैया
वाट्टन्	दरुनैम्	जिनत्ताय्	निन्नान्	वणङ्गि	वानोर्
ईट्ट	मैदिर्वन्	दिडवे	यिन्न्दे	हिनन्विण्	णिडैये 378

वीट्टुण्डु—गिराया जाकर; अलरुम् कुरलाल्—(उसके) विलापनेवाले स्वर से; वेळम् कुरल् अन्नु—हाथी की ध्वनि नहीं; ऐन—जानकर; ओट्टन्तु—दौड़ जाकर; ऐतिरा—उससे मिलकर; नी यार् ऐन—तुम कौन हो, यह पूछने पर; उरुत्तु अल्लाम् उरैया—हुआ सब कहकर; वाट्टम् तरु नैम्चिन्तु आय्—दुखितमन होकर; वणङ्कि—आपको नमस्कार करके; निन्नान्—निस्पंद रहा; इरुन्तु—मरकर; वानोर् ईट्टम् ऐतिर् वन्तिट—देवगण के स्वागत के लिए आते; विण् इटै एकिनन्—स्वर्ग में चला गया । ३७८

उस अस्त्र से विद्ध होकर वह गिर गया । उसके रुदनस्वर से मैंने समझ लिया कि यह हाथी की ध्वनि नहीं है । इसलिए मैं सवेग दौड़ा । आपके पुत्र से मिलकर मैंने उससे पूछा कि तुम कौन हो ? उसने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया । दुखपूरित मन के साथ उसने आपको नमस्कार कहा । फिर वह संज्ञाहीन होकर मर गया । देवगण आकर उसको ले गये और वह स्वर्ग सिधार गया । ३७८

अरुत्ताय्	कणैया	लैनवे	यडियेन्	उन्नै	यैया
करुत्ते	यरुळा	यानो	कण्णिङ्	कण्डे	नल्लेन्
मरुत्ता	निल्लान्	वनमोण्	डिडुमो	दयिनेय्	दनेत्ताल्
पोरुत्ते	यरुळ्वा	यैन्ना	विरुताळ्	शैन्नि	पुनैन्देन् 379

ऐया-महात्मा; कणैयाल् अरुत्ताय्-शर से मार दिया; अँत-सोचकर; अटियेन् तन्नै-मुझ दास पर; करुत्ते अरुळाय्-कोप मत कीजिए; यानो कण्णिन् कण्टेन् अल्लेन्-मैंने तो अपनी आँखों के सामने नहीं देखा था; मरु तान् इल्लान्-निरपराध उसके; वनम् मोण्डिट्टुम् ओतैयिन्-जल भरने की ध्वनि से; अँयतन्नै-शर चलाया; पोरुत्ते अरुळ्वाय्-क्षमा कीजिए; अँन्ना-विनय करके; इरु ताळ्-उनके दोनो पैर; चैन्नि पुनैन्देन्-सिर पर धारण कर लिए । ३७६

हे महात्मा ! 'तुमने मेरे पुत्र को शर से मारा' —यह कहकर दास पर न कोप करें । कृपा कीजिए । मैंने प्रत्यक्ष देखा नहीं था । निरपराध आपके पुत्र के जल भरने का नाद सुना और (शब्दवेधी) वाण चला दिया । आप क्षमा कीजिए । यह विनय करके मैंने उनके दोनो चरणों पर अपना सिर रखकर दण्डवत की । ३७९

वीळ्न्दा	रयर्न्दार्	पुरण्डार्	विळिपो	यिर्ऱिन्	अँन्ऱार्
आळ्न्दार्	तुन्बक्	कडलु	ळैया	वैया	वैन्ऱार्
पोळ्न्दाय्	नैञ्जै	यैन्ऱार्	पोन्ना	डदत्तिर्	पोय्नी
वाळ्न्दे	यिरुप्पत्	तरियेम्	वन्देम्	वन्दे	मिनिये 380

वीळ्न्तार्-वे भूमि पर गिरे; अयर्न्तार्-शिथिल हुए; पुरण्डार्-लोटे; इन्ऱु विळि पोयिर्ऱु अँन्ऱार्-अब आँखें चली गईं, कहा; तुन्पम् कडलुळ् आळ्न्तार्-दुखसागर में मग्न हुए; ऐया, ऐया अँन्ऱार्-तात, तात पुकारा; नैञ्चै पोळ्न्ताय्-गला चीर दिया; अँन्ऱार्-आर्त्तनाद किया; नो-तुम; पोन् नाटु अतनिल्-स्वर्ग में; पोय् वाळ्न्तु इरुप्प-जाकर रहो, यह; तरियेम्-सहेंगे नहीं; इत्तिये-अभी; वन्तेम् वन्तेम्-आये, आये । ३८०

माता-पिता दोनो यह सुनकर नीचे गिर गये । लोटने लगे । 'हाय हमारी आँखें ही चली गयीं' —यह आर्तवचन कहा । दुख-सागर में मग्न हो गये । हाय वत्स वत्स —की पुकार मचायी । "तुमने हमारा गला चीर दिया । तुम जाकर स्वर्ग में रहो —यह हम सह नहीं सकते; इधर रह नहीं सकते । अभी हम भी आ गये, आ गये अभी ।" । ३८०

अँन्ऱैन्	इयर्न्	दवरै	यिरुताळ्	वणङ्गि	याने
इन्ऱुम्	पुदल्वन्	निनिनी	रेवुम्	पणिशैय्	दिडुवेन्
अँन्ऱुन्	दळरे	लैया	वौळिमिन्	रुयरेन्	रिडलुम्
वन्ऱिण्	शिलैयाय्	केण्मो	वैन्ना	वौरुशौल्	वहुत्तान् 381

अँन्ऱु अँन्ऱु-ऐसा, ऐसा; अयर्न्-दुखनेवाले; तवरै-(वृद्ध) तपस्वियों को;

इह ताळ् वणङ्कि-दोनो चरणों पर नमस्कृत करके; इन्नु-आज से; यात्ते उम् पुतल्वन्-मैं ही आपका पुत्र बनूँगा; इत्ति नीर् एवुम् पणि-अब से आपसे आज्ञापित सेवाएँ; चैयत्तिटुवेन्-कर दूँगा; ऐया-उत्तम मुनि; ओन्नुम् तळरेल्-धीरज कुछ मत छोड़िए; तुयर् ओळिमिन्-दुख छोड़ दीजिए; अन्निटुलुम्-कहते ही; वल् तिण् चिलैयाय्-बलवान और कठोर धनुर्धर; केण्मो अन्ता-मुनि कहकर; ओह चोल्-एक बात; वकुत्तान्-बताई । ३८१

ऐसा-ऐसा विलाप करते हुए वे विगलित हो रहे थे । उनके पैर पड़कर मैंने विनय सुनाई—आज से मैं आपका पुत्र रहूँगा । आपकी आज्ञाएँ मानूँगा । आपकी सेवा करूँगा । महात्मा, आप धीरज न खोइए; यह दुख त्यागिए । मेरे यह कहने पर तपस्वी ने कहा कि बलवान और कठोर धनुर्धर ! यह सुनिए । यह कहकर उन्होंने आगे एक बात कही । ३८१

कण्णुण्	मणिबोन्	महवै	यिळुन्दु	मुयिर्हा	दलिया
उण्ण	वैण्णि	यिरुन्दा	लुलहो	रैन्नैन्	रुरैयार्
विण्णिन्	उलैशे	रुदुम्या	मैम्बोल्	विडलै	पिरियप्
पण्णुम्	वरिमा	वुडैया	यडैवाय्	पडर्वा	नैन्ना 382

कण्णुळ् मणि पोल्-आँखों के तारे के समान; मकवै इळुनुम्-पुत्र को खोकर भी; उयिर् कातलिया-जीवन चाहकर; उण्ण अण्णि-पेट भरने की इच्छा करते हुए; इरुन्ताल्-(जीवित) रहेंगे तो; उलकोर् अन् अन्नु उरैयार्-लोकवासी क्या (निन्दा) नहीं कहेंगे; याम् विण्णिन् तलै चेरुतुम्-हम स्वर्ग चले जाएँगे; पण्णुम् परि मा-अलंकृत अश्वों के; उटैयाय्-पति; अम् पोल्-हमारी ही भाँति; विटलै पिरिय-लड़का खोकर; पटर् वान् अटैवाय्-विशाल स्वर्गलोक पहुँचेंगे; अन्ता-ऐसा । ३८२

हम आँख का तारासम पुत्र को खोकर, इस लोक में पेट भरने के लिए जीवित रह जायँ तो दुनियावाले क्या कहेंगे ? निन्दा में क्या-क्या नहीं कहेंगे ? हम अभी स्वर्ग चले जायँगे । कोतल घोड़ों वाले राजा । आप भी हमारे जैसे, प्रिय पुत्र को गँवाकर स्वर्ग सिधारे । उन लोगों ने कहा । फिर वे आगे बोले । ३८२

तावा	वैळिरुड्	गुडैयाय्	तवरिड्	गिदुनिन्	शरणम्
कावा	यैन्ना	यदन्ता	कडिय	शाबड्	गरुदेम्
एवा	महवैप्	पिरिन्दिन्	रैम्बो	लिडरुड्	उत्तैनी
पोवा	यहल्वा	नैन्नाप्	पौन्नाट्	टिडैपो	यिनराल् 383

तावातु ओळिरुम् कुटैयाय्-मन्द हुए बिना उज्ज्वल रहनेवाले श्वेतछत्रधारी; इङ्कु इतु तवरु-यहाँ यह अपराध है; निन् चरणम्-आपकी शरण में आया; कावाय्-रक्षा करे; अन्नाय्-यह कहा; अतताल्-उससे; कडिय चापम करतेम्-कठोर शाप (देने) का विचार नहीं करते; इन्नु अम् पोल्-आज जैसे हम; नी-आप भी;

एवा-विना आज्ञा की प्रतीक्षा किये, इंगित जानकर सेवा करनेवाले; मकवं-पुत्र से; पिरिन्तु-अलग होकर; इटर् उरुत्तै-दुखी बन; अकल् वान् पोवाप्-विस्तृत स्वर्ग में जायेंगे; अन्ता-कहकर; पौन् नाट्ट इटै-स्वर्गलोक में; पोयितर्-चले । ३८३

सदा उज्ज्वल रहनेवाला छत्र-पति ! “यह मेरा अपराध हो गया । आपकी शरण में आया हूँ” —ऐसा सत्य कहकर आपने विनय की । इसलिए हम कठिन शाप देना नहीं चाहते । आज जैसे हम, आप भी अपने आज्ञा के पहले ही इंगित जानकर सेवा-तत्पर रहनेवाले अपने पुत्र से विलग होकर दुख का अनुभव करके स्वर्ग सिधारेंगे । यह शाप देकर वे स्वर्ग सिधारे । ३८३

शिनदै	तळवुर्	उयर्दल्	शिउडु	मिलना	यिन्शील्
मैन्द	नुळनैन्	उदनान्	महिळ्त्रो	डिवण्वन्	दनेनाल्
अन्द	मुनिशीर्	उदुवु	मण्णल्	वनमे	हुदलुम्
अन्ऱ	नुयिर्वी	हुदलु	मिरैयुन्	दवरा	वैन्ऱान् 384

इन् चोल् मैन्तन्-मधुरभाषी वत्स; उळन् अन्ऱतताल्-होगा, इस कथन से; चिन्तै तळवुर्-क्षुब्धमन होकर; अयर्तल् चिरितुम् इलताय्-आयास कुछ भी न करके; मकिळ्वोटु-हर्ष के साथ; इवण् वन्तत्तैन्-यहाँ आया; अन्त मुत्ति-उन मुनि ने; चोऱुत्तुवुम्-जो कहा वह शापवचन और; अण्णल् वत्तम् एकुतलुम्-प्रभु का वन जाना; अन् उयिर् वीकुतलुम्-मेरे प्राणों का छूटना; इरैयुम् तवरा-कुछ भी न टलेंगे; वैन्ऱान्-कहा । ३८४

दशरथजी ने कौसल्या से कहना जारी किया । इस शाप से यह ध्वनित होता था कि हमारे मधुर-तुतली बोली बोलनेवाला वत्स पैदा होगा । यह सोचकर मैं, जिसे शाप के कारण दुखी हो जाना था, दुखदग्ध नहीं हुआ । मेरा मन शोक से उद्विग्न नहीं हुआ । मैं आनन्द के साथ लौटकर महल में आ गया । अब देखो—मुनि का शाप, श्रीराम का वनगमन और मेरा मरण तीनों जरा भी नहीं टलेंगे । ३८४

उरैशैय्	पैरुमै	युयर्दवत्तो	रोङ्गल्
पुरैशै	मदहळिऱान्	पौऱ्कोयिन्	मुन्नर्
मुरश	मुळङ्ग	मुडिशूट	मोयत्ताण्
डरश	रिनिदिरुन्द	नल्लवैयि	नायिनान् 385

उरै चैय् पैरुमै-(सबसे) प्रशंसित यशस्वी; उयर् तवत्तु-उत्कृष्ट तपोमार्ग में; ओर् ओङ्कल्-एक पर्वत-समान (रहे) वसिष्ठजी; पुरैचै मत्तम् कळिऱान्-गले की रस्सी के साथ मत्त रहनेवाले गजों की सेना के स्वामी के; पौन् कोयिल् मुन्नर्-स्वर्ण-महल के सामने; मुरचम् मुळङ्क-ढोलों के बजते; मुटि चूट-मुकुटधारण कराने के हेतु; अरचर् मोयत्तु-राजा एकत्र होकर; इत्तिटु इरुन्तै-जहाँ उत्साह से रहे; आण्डु-वहाँ; नल् अवैयिन्-उस सुन्दर मण्डप-प्रविष्ट; आयितान्-बने । ३८५

उधर प्रकीर्तित (और पर्वतसम उन्नत महान तपस्या के कर्ता) महान तपस्वी वसिष्ठ सभामण्डप में गये जहाँ राजा लोग इस विचार से एकत्र हुए थे कि गजपति दशरथ के स्वर्णमहल के द्वार पर ढोल बजेंगे और श्रीराम का मुकुटधारण सम्पन्न होगा । ३८५

❀ वन्द	मुनियै	मुहनोक्कि	वाळ्वेन्दर्
अन्दै	पुहुदर	किडैयूरुण	डायदो
अन्दमिल्	शोहत्	तळुदहुर	डान्न्कोल्
शिन्दै	तैळिन्दोय्	तैळिवियैमक्	कैन्नुरैत्तार् 386

वन्द मुनियै—आगत मुनि को; मुक्कम् नोक्कि—मुख पर देखकर; वाळ्वेन्दर्—तलवारधारी राजा लोगों ने; चिन्तै तैळिन्दोय्—स्वच्छ मन वाले; अन्तै पुकतर्कु—हमारे पितृतुल्य दशरथ के आने में; इटैयूरु उण्टायतो—कोई बाधा हो गई क्या; अन्तम् इल् चोक्तु—अपार शोक के साथ; अळुत कुरल् तान् अन् कोल्—जो रोने का स्वर आया वह क्या था; अमक्कु तैळिवि—हमें साफ़ बताइए; अन्नुरैत्तार्—ऐसा पूछा । ३८६

तलवारधारी नृपों ने आगत वसिष्ठजी के मुख को निहारकर प्रश्न किया कि निश्चल स्वच्छ चित्त वाले ! हमारे पितृतुल्य राजा के इधर आने में कोई बाधा उपस्थित हो गई क्या ? अपार शोक प्रदर्शित करते हुए कोई क्रन्दन-स्वर जो सुनाई दिया वह क्या है । हमें साफ़-साफ़ बताने की कृपा कीजिए । ३८६

❀ वेन्दन्	पणियिनाड्	कैहेशि	मैय्पुदल्वन्
पान्दण्	मिशैक्किडन्द	पार्काप्पा	तायिन्नान्
एन्दु	तडन्दो	ळिरामन्	तिरुमडन्दै
कान्द	नीरुमुडैपोय्क्	काडुरैवा	तायिन्नान् 387

वेन्दन् पणियिनाल्—राजा की आज्ञा से; कैकेचि मैय् पुतलवन्—कैकेयी के सत्यनिष्ठ पुत्र; पान्तळ मिच्चै किटन्त—शेषनाग पर धृत; पार् काप्पान् आयिन्नान्—भूमि के पति हो गये; तिरु मटन्तै कान्तन्—श्रीलक्ष्मी-पति; एन्तु तट तोळ् इरामन्—उन्नत व विशाल भुजा वाले श्रीराम; नीरु मुडै—एक रीति से; काडु पोय् उडैवान्—वनवासी; आयिन्नान्—हो गये । ३८७

वसिष्ठ ने उत्तर दिया— राजा की जो आज्ञा हुई है उसके अनुसार कैकेयी का सत्यवादी (या असली) पुत्र शेषशीर्षस्थ इस भूमि के नायक बनेंगे । श्रीलक्ष्मी-कान्त, विशाल और उन्नत भुजा वाले श्रीराम एक क्रम से वनवासी हो जाएंगे । ३८७

❀ कौण्डाळ	वरमिरण्डुड्	गेहयर्कोन्	कौम्बवट्कुत्
तण्डाद	कादड्	उयरदन्नुन्	दात्तळित्तान्

ऑण्डार् मुहिलैवनम् बोहैन् ईरुप्पडुत्ताळ्
ऑण्डानुम् वेरिल्लै ईदडुत्त वार्त्तुन्नान् 388

केकयर् कोन् कौम्पु-केकयराज की पुत्री ने; इरण्डुम् वरम् कौण्डाळ्-दोनों वर मांग लिये; तण्डात कातल् तयरत्तनुम्-अविच्छिन्न प्रेम रखनेवाले दशरथ ने भी; अबट्कु अळित्तान्-उन्हें दे दिये; ऑळ् तार् मुकिलै-उज्ज्वल मालाधारी मेघ (सम श्रीराम) को; वत्तम् पोक-वन जाओ; अन्नू-कहकर; ऑरुप् पटुत्ताळ्-सम्मत कराया; ईतु अटुत्त आरु-यही वृत्तान्त है; अण् वेरु इल्लै-सोचने-समझने के लिए और कुछ नहीं है; अत्तुन्नान्-कहा । ३८८

उन्होंने आगे विवरण दिया । केकयराज-तनया ने राजा से दो वर मांगे । उन पर अगाध और अविच्छिन्न प्रेम रखनेवाले राजा ने भी उन्हें दो वर दे दिये । उनमें ही एक से कैकेयी ने उज्ज्वलमाला-धारी मेघसम श्रीराम को, 'वन जाओ' कहकर जाने को भी सम्मत करा लिया । इसमें आगे सोचने के लिए या इसके सम्बन्ध में और किसी प्रकार का अनुमान करने के लिए कुछ नहीं है । यही हुआ । —वसिष्ठ ने कहा । ३८८

✽ वारार् मुलैयारु मरुळ्ळु मान्दरहळुम्
आराद काद लरशरहळु मन्दणरुम्
पेराद वाय्मैप् पेरियो नुरैशिवियुळ्
शाराद मुन्नन् दयरदनैप् पोल्वीळ्न्तार् 389

वार् आर् मुलैयारुम्-अँगिया-बद्ध स्तन वालियाँ (स्त्रियाँ); मरुळ्ळु-और अन्य; मान्दरहळुम्-पुरुष भी; आरात कातल् अरचरहळुम्-अघट प्रेम रखनेवाले राजा; अन्तणरुम्-ब्राह्मण लोग; पेरात वाय्मै-अचल सत्यवादी; पेरियोन्-महात्मा का; उरै-कथन; चैवियुळ् चारात मुत्तम्-कान में पड़ने से पूर्व; तयरत्तन् पोल् वीळ्न्तार्-दशरथ के समान नीचे गिरे । ३८९

स्त्रियाँ, जिनके स्तन अँगिया-बद्ध थे, पुरुष, श्रीराम के अत्यंत प्रेमी राजा लोग, और ब्राह्मण लोग, सभी; ज्योंही अचल सत्यवादी महात्मा वसिष्ठजी के कथन उनके कानों में लगे त्योंही दशरथ के समान भूमि पर गिर पड़े । ३८९

✽ पुण्णुर् उ तीयिर् पुहैयुर् रुयिर्पदैप्प
मण्णुर् अयर्न्दु मरुहिर् रुडम्बैल्लाम्
कण्णुर् वारि कडलुर् दन्निलैये
विण्णुर् दैम्मरुङ्गुम् विट्टळुद पेरोशै 390

उटम्पु अल्लाम्-शरीर सब; पुण् उर् तीयिन्-व्रण में आग लगी, जैसे; पुकैयुर्-झुलसकर; उयिर् पतैप्प-प्राणों के छटपटाते; अयर्न्दु-थककर; मण् उर्-भूमि पर पड़कर; मरुकिर्-लोटे; अ निलैये-उस दशा में; कण् उर् वारि-आँखों से निकला (अश्रु-) जल; कटल् उर्न्दु-वहकर समुद्र में गया; अै मरुङ्कुम्-

सब ओर; विट्ठु अलूत-खुलकर जो रोये; पेर् ओचै-वह जोर का स्वर; विण् उड्डतु-आकाश तक पहुँचा । ३६०

उनके शरीर व्रण में आग लगी जैसे झुलस गये, प्राण छटपटाने लगे । वे थकित होकर भूमि पर लोटने लगे । उस दशा में उनकी आँखों से जो आँसू का प्रवाह निकला वह समुद्र में जा मिला । सब ओर जो वे मुख खोलकर रोये उसका जोर का नाद आकाश से जा मिला । ३९०

❀ माद	ररुङ्गलमु	मङ्गलमुम्	शिनदित्तड्
गोदै	पुडैपैयरक्	कूड्डनैय	कण्शिवप्पप्
पाद	मलर्पदैपत्	ताम्बदैत्तुप्	पार्शैर्न्दार्
ऊदै	यैरिय	वौशिपूड्	गौडिपोल्वार् 391

मातर्-स्त्रियाँ; अरु कलमुम्-बहुमूल्य आभरणों को; मङ्कलमुम्-अहिवात-सूचक आभरणों को भी; चिन्ति-गिराकर; तम् कोतै पुटै प्यैर-केश को बिखरने देते हुए; कूड्ड अन्नैय-यम-सम; कण् चिवप्प-आँखों को लाल करते हुए; पातम् मलर् पतैप्प-चरणकमलों के गड़बड़ाने से; ताम् पतैत्तु-खुद छटपटाकर; ऊतै-यैरिय-उदीची (ठण्डी) हवा के बहने से; औच्चि-मुरझाकर गिरनेवाली; पू कौटि पोल्वार्-पुष्पलताये जैसे; पार् चैर्न्तार्-भूमि पर गिर पड़ीं । ३६१

स्त्रियाँ इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने अपने सारे आभरण, अहिवात-सूचक आभरण तक —उतार फेंक दिया । उनके केश खुलकर बिखर गये । पुरुषों के हृदय-भेदक (यम-सी) आँखें रोने से लाल हो गई । चरण-कमल लड़खड़ाने लगे । वे खुद कंपित होकर उदीची हवा से मुरझायी हुई पुष्पलताएँ जैसे टूटकर भूमि पर गिर पड़ीं । ३९१

❀ आवा	वरश	नरुळिलने	यार्मेन्बार्
कावा	दडत्तैयिनिक्	कैविडुवोम्	यार्मेन्बार्
तावाद	मन्नर्	तलैत्तलैवीळ्न्	देङ्गिनार्
मावादञ्	जायत्त	मरामरमे	पोल्हिन्डार् 392

तावात मन्नर्-(श्रीराम के प्रति) अबाध (प्रेम वाले) राजा; आ, आ-हाय, हाय; अरचन्-चक्रवर्ती; अरुळ् इलत्तै आम्-दयाहीन हैं; अँत्पार्-कहते; याम्-हम भी; इल्लि-अब; अडत्तै कावातु-धर्म को बिना पाले; कै विडुवोम्-छोड़ देंगे; अँत्पार्-कहते; मा वातम् चायत्त-प्रबलप्रभञ्जन-निहत; मरा मरम् पोल् किन्डार्-सालवृक्ष के समान; तलै तलै वीळ्न्तु-यत्र-तत्र गिरकर; एङ्कितार्-डुखी हुए । ३६२

श्रीराम पर जो राजा अचल प्रेम रखते थे वे भी, यह कहते हुए कि हाय, हाय ! चक्रवर्ती भी निर्दय हैं । हम भी धर्म क्यों पालें ? छोड़ देंगे, प्रचंड-प्रभञ्जन-प्रतिहत साल वृक्षों के समान यत्र-तत्र गिरकर रोये । ३९२

किळ्ळ्योडु	पूर्व	यळुद	किळर्माडत्
तुळ्ळुंयुम्	वृश	यळुद	वृणर्वडियाप्
पिळ्ळ	यळुद	पेरियोर	यैन्गोल्ल
वळ्ळल्	वनम्बुहुवा	नेन्ऱुर्त्त	माड्ऱुत्ताल् 393

वळ्ळल्-प्रभु श्रीराम; वनम् पुकुवान्-वन जाएगे; ऐन्ऱु उरैत्त माड्ऱुत्ताल्-ऐसा कहे हुए वचन से; किळर्-शोभायमान; माटत्तु उळ् उरैयुम्-महत के अन्दर रहनेवाले; किळ्ळ्योडु-शुकों के साथ; पूर्व-सारिकाएँ भी; अळुत-रोड़े; पूर्व अळुत-मार्जार रोये; उणर्वु अडिया-अवोध; पिळ्ळ अळुत-जिगु रोये; पेरियोर ऐन् चोन्नल-वड़ों का क्या कहूँ । ३९३

श्रीराम वन जाएगे —यह सुनकर सुन्दर सीधों के अंदर रहनेवाले तोते रोये; सारिकाएँ भी रोयीं । विल्लियाँ रोयीं । अवोध जिगु रोये । फिर वड़ों की हालत का कहना क्या है ? । ३९३

चेदाम्वर्	पोदनैय	शेङ्गनिवाय्	वैण्डळवप्
पोदाम्वर्	रोन्ऱप्	पुणर्मुलैमेर्	पूण्डरळ
मादाम्वर्	ऐन्ऱ	मळक्कण्णी	रालियुह
नादाम्वर्	रामळलै	नङ्गमा	रेङ्गिनार् 394

ना पड्ऱात मळलै-जीभ पर अपरिपक्व तोतली बोली वाली; नङ्कमा-स्त्रियाँ; चैम्मे आमपल्-लाल कुमुद का; पोतु-फूल; चैम् कत्ति-लाल विवफल; अन्ऱय वाय्-जैसे मुखों में; वैळ् तळवम् पोतु आम्-श्वेत कुन्दकली से; पल् तोन्ऱ-दांत प्रकट करते हुए; पुणर् मुलै मेल्-संश्लिष्ट स्तनद्वय पर; पूण्-पहनी हुई; मा तरळम् ताम्पु-श्रेष्ठ मुक्तामाला; अड्ऱु ऐन्ऱ-टूटी हो जैसे; मळ् कण् नीर् आलि उक-शीतल आँखों से आँसू की बूँदें गिराते हुए; एङ्किनार्-रोई । ३९४

अपरिपक्व जीभ से अस्पष्ट मधुर तोतली बोली निकालनेवाली (उच्चकुल की) स्त्रियाँ भी लाल कुमुद और विवफल-सम अपने मुख में कुन्दकली-सी दांतावली प्रकट करते हुए, और आभरण-मंडित श्लिष्ट स्तनद्वय पर मुक्तामाला से छूटकर मोती के दाने गिरते हैं जैसे, जलभरी आँखों से आँसू के कण गिराते हुए रो रही थी । ३९४

आवु	मळुदवदन्	कन्ऱुळुद	वन्ऱुलर्न्द
पूर्वु	मळुदपुनर्	पुळ्ळुद	कळ्ळोळुहुम्
कावु	मळुद	कळिऱुळुद	काल्वयप्पोर्
मावु	मळुदनवम्	मन्ऱवन्	मानवे 395

अ मन्ऱवन् मानवे-उन चक्रवर्ती के समान; आवुम् अळुत-गायें रोई; अत्तु कन्ऱु अळुत-उनके बछड़े रोये; अन्ऱु अलर्न्द-उसी दिन विकसित; पूर्वम् अळुत-फूल रोये; पुत्तल् पुळ् अळुत-जल-पक्षी रोये; कळ् ओळुकुम् कावुम्-शहद चूनेवाले उद्यान रोये; कळिऱु अळुत-गज रोये; काल् वय पोर् मावुम् अळुतन-ताकतवर पैरों वाले युद्ध-अश्व भी रोये । ३९५

गायें भी उन्हीं चक्रवर्ती के समान रोयी । उनके बछड़े रोये । सद्यविकसित फूल रोये । जल-पक्षी रोये । मधुस्रावी वृक्षों वाले उद्यान रोये । गज रोये और सशक्त पैरों वाले युद्ध-अश्व भी रोये । (रोये-मुरझाये, दुखी हुए ।) । ३९५

नानीयु	मुय्हला	मैन्त्रैण्णि	नायहत्तैक्
कानीयु	मैन्त्रैत्त	कैहेशि	युङ्गोडिय
कूनीयु	मल्लाड्	कौडियार्	पिडरुळरो
मेनीयु	मिन्त्रु	वैरुनीरे	यायित्तार् 396

नान्-मैं; नीयुम्-तुम भी; उय्कल आम्-उन्नत होंगे; अँन्त्रु अँण्णि-यह सोचकर; नायकनै-(श्रीराम) नायक को; कान् ईयुम्-वनवास दिला दीजिए; अँन्त्रु उरैत्त-ऐसा जिन्होंने कहा उन; कैकेयियुम्-कैकेयी और; कौडिय कूतियुम् अल्लाल-कूर कुब्जा के सिवा; कौडियार् पिडर् उळरो-निर्मम कोई होंगे; मेतियुम् इन्त्रि-विदेह होकर; वैरुम् नीरे आयित्तार्-केवल जलप्राय हो गये । ३९६

“मैं और तुम दोनो फूलें और फलें” —इस विचार से कैकेयी और कुब्जा दोनो ने षडयंत्र रचकर श्रीराम को वनवास दिलाया । उन दोनो निर्मम स्त्रियों के सिवा वहाँ निर्मम कौन थे ? इसलिए अन्य सभी लोग विदेह बनकर जलप्राय हो गये ! (वे शोक से एक दम दुखविगलित हो गये ।) । ३९६

तेरा	दरिवळिन्दा	रैङ्गुलप्पार्	तेरोड
नीराहिच्	चुण्ण	निरैन्द	तैरुवल्लाम्
आराहि	योडित्त	कण्णी	ररुनैञ्जम्
कूराहि	योडाद	वित्ततनैये	कुर्रुम्मे 397

तेरातु-फिर सचेत न हुए, ऐसे; अरिवु अळिन्तार्-जो अचेत हुए; अँङ्कु उलप्पार्-कहाँ गिनती में आएँगे; तेर् ओट-रथ के दौड़ने से; नीरु आकि-धूलि उठी; चुण्णम् निरैन्त-उससे धूलि-भरी; तैरु अल्लाम्-सभी वीथियों में; कण् नीर्-अश्रुजल; आरु आकि ओटित्त-नदी बनकर वहाँ; अरु नैञ्जम्-उनके प्यारे हृदय; कूरु आकि ओटात-खण्ड-खण्ड होकर नहीं भागे; इत्ततनैये-इतनी ही; कुर्रुम्-कसर थी । ३९७

जो इस तरह अचेत हो गये कि फिर सचेत होते नहीं दिखते उनकी गिनती कहाँ है ? (वे अनगिनत हैं ।) रथों के चलने से जो वीथियाँ धूलि-भरी हो गई थीं उन पर लोगों के अश्रुजल की बनी नदियाँ बह रही थीं । उनके प्यारे हृदय के टुकड़े नहीं बने और भागे, इतनी ही कसर थी । ३९७

❀ मण्शैय्द	पाव	मुळदैन्वार्	मामलरुम्मे
पेण्शैय्द	पाव	मदनिर्	पैरिदैन्वार्

पुण्शैय्द	नञ्जै	विदियेन्वार्	पूदलत्तोर्
कण्शैय्द	पावड्	गडलिङ्	पैरिदैन्वार् 398

मण् चैय्त-पृथ्वी का कृत; पावम् उल्लु-कोई पाप है; अन्पार्-कहते; मा मलर् मेल् पेंण्-उत्कृष्ट कमल पर स्थित देवी का; चैय्त पावम्-किया हुआ पाप; अतत्तिल् पैरितु-उससे बड़ा है; अन्पार्-कहते; विति-विधि ने; नैञ्चै पुण् चैय्ततु-सभी के हृदयो पर घाव किया है; अन्पार्-कहते; पूतलत्तोर्-भूलोकवासियो की; कण् चैय्त पावम्-आँखों का किया हुआ पाप; कटलिन् पैरितु-सागर से भी विपुल है; अन्पार्-कहते (कुछ लोग) । ३६८

लोग विविध विचार प्रकट करते थे । कुछ लोग कहते कि पृथ्वी-देवी ने कोई पाप किया है; और कुछ कहते कि श्रेष्ठ कमल-निवासिनी श्रीदेवी ने उससे बड़ा पाप किया है । विधि ने सबके हृदयों को वेध दिया है —यह कुछ लोग कहते । भूतल के लोगों की आँखों का पाप, जिसकी वजह से उन्हें श्रीराम को जटावलकल-धारी देखना पड़ा, सागर से भी बड़ा हो गया है । ३९८

ॐ आळान्	वरद	नरशैन्वार्	रैयनिन्ति
मीळा	नहरक्कु	विदिकोडिदे	कार्णैन्वार्
कोळाहि	वन्दवा	कोरुमुडि	तानैन्वार्
माळाद	नम्मिन्	मनम्बलिया	रारैन्वार् 399

परतन् अरचु आळान् अन्पार्-भरत राज नहीं करेगा, कहते; ऐयन्-आर्य; इति नकर्क्कु मीळान्-अब नगर लौट नहीं आएँगे, कहते; विति कोटिते-विधि क्रूर है; अन्पार्-कहते; कोरुम् मुडि तान्-विजयीमुकुट-धारण की बात ही; कोळ् आकि वन्त आळ-बुरा यह-फल वनके आया, किस प्रकार; अन्पार्-कहते; माळात नम्मिन्-यह सुनकर भी जो नहीं मरे हमसे; मनम् बलियार्-कठोरमन; आर् अन्पार्-कौन है, कहते । ३६९

‘भरत राज्य नहीं करेगे’; ‘आर्य श्रीराम अब नगर नहीं लौटेंगे’; ‘विधि बड़ी क्रूर है’; मुकुटधारण की बात ही इस प्रकार का बुरा फल देनेवाला दुर्ग्रह बन गया; ‘यह समाचार सुनकर भी जो नहीं मरे, हमसे बढ़कर पत्थरमन कौन हो सकता है?’ —ऐसे अनेक विचार उनसे व्यक्त किये गये । ३९९

ॐ आदि	यरश	नरुङ्गे	हयन्महण्मेड्
कादन्	मुदिरक्	करुत्तळिन्दा	तार्मैन्वार्
शोदै	मणवाळन्	इन्नोडुन्	दीक्कानम्
पोडु	मदुवन्ऱेड्	पुहुडु	मैरियैन्वार् 400

आति अरचन्-हमारे नायक चक्रवर्ती; अरुम् केकयन् मकळ् मेल्-अपनी प्यारी केकयपुत्री पर; कातल् मुतिर-प्रेम की बढ़ती से; करुत्तु अळिन्तान्-विवेकशून्य हो

गये; अँत्पार्-कहते; चीतं मणवाळन् तन्तोडुम्-सीता के पति के साथ; ती कातम् पोतुम्-हम भी तापक वन में जायँगे; अतु अन्तेल्-वह न हुआ तो; अँरि पुकुतुम्-अग्निप्रवेश करेंगे; अँत्पार्-कहते । ४००

और भी कुछ लोग कहते कि हमारे प्रमुख नायक कैकेयी पर के प्रेमाधिक्य के कारण विवेकहीन मन वाले हो गये । हम श्रीसीतापति के साथ संतापी वन में चले जायँगे । अगर वह संभव नहीं होगा तो आग में गिरकर जल जायँगे । ४००

ॐ कैया	निलन्दडविक्	कण्णीर्	मँळुहुवार्
उय्याळ्पौर्	कोशलैयैन्	शोवादु	वैय्दुधिरप्पार्
ऐया	विळङ्गोवे	यार्ऋदियो	नीयैन्बार्
नैय्या	रळलुर्ऋ	दुर्ऋरन्	नीणहरार् 401

कैयाल् निलम् तटवि-हाथों से धरती को मलकर; कण् नीर् मँळुकुवार्-आँसुओं से लीपते; पौत कोचलै उय्याळ्-स्वर्णसम कौसल्या जीवित नहीं रहेंगी; अँत्ऋ-कहते हुए; ओवादु वैय्दुधिरप्पार्-निरन्तर गरम उच्छवास छोड़ते; इळम् कोवे-लघुराज; ऐया-तात; नी आर्ऋतियो-आप सह सकते हैं क्या; अँत्पार्-कहते; अ नीळ् नकरार्-उस बड़े नगर के वासी; नैय् आर्-घी-लगी; अळल् उर्ऋतु-आग लगी जैसे; उर्ऋर्-(बहुत दुख की) स्थिति में पहुँचे । ४०१

कुछ लोग आँसू बहाकर भूमि को अपने हाथों से लीपते । (यह दुख के वर्णन की एक रीति है, जो तमिळ का विशेष मसल है ।) कुछ लोग, 'स्वर्ण-सम श्रेष्ठ कौसल्या पुत्र से विलग होकर जी नहीं सकेंगी' —यह कहते हुए गरम निश्वास छोड़ते थे । कुछ लोग लक्ष्मण को पुकारकर कहते कि लघुराज ! हमारे प्रभु ! आप यह दुख सह सकेंगे क्या ? इस तरह उस बड़े नगर के सभी लोग जैसे घी-लगी आग उन पर लगी हो वैसा दुखी हुए । ४०१

तळळू	वेरिल्लै	तन्महर्कुप्	पार्कौळ्वान्
अँळळू	तीक्करुम	नेर्न्दा	ळिवळैन्नाक्
कळळू	शैव्वाय्क्	कणिह्यरुङ्	गँहेशि
उळळू	काद	लिलळ्पोलैन्	रुळळिन्दार् 402

कळ ऊर्-मधुसूत्री; चैम्मै वाय्-लाल अधरों वाली; कणिकैय्यरुम्-वेश्याएँ भी; तन् मकर्कु-अपने पुत्र के लिए; पार् कौळ्वान्-भूमि दिलवा लेने के विचार से; कैकेचि-कैकेयी ने; अँळ ऊर्-गह्य; ती करुमम्-बुरा काम; नेर्न्ताळ्-किया; तळळू वेरु इल्लै-निवारण कुछ नहीं है; अँन्ता-कहकर; इवळ् उळ ऊर् कातल्-ये अन्तस्थ सच्चा प्रेम वाली; इलळ् पोल्-नहीं हैं तो; अँन्ता-कहकर; उळ् अळिन्तार्-चित्ताकुलित हुई । ४०२

(मन न देकर) अधर-सुरा देनेवाली वेश्याएँ भी दुखी हुई । वे कहतीं

पुण्शैय्द	नञ्जै	विदियेन्वार्	पूदलत्तोर
कण्शैय्द	पावड्	गडलिङ्	पेरिदेन्वार् 398

मण् चैय्त-पृथ्वी का कृत; पावम् उळतु-कोई पाप है; अँत्पार्-कहते; मा मलर् मेल् पेंण-उत्कृष्ट कमल पर स्थित देवी का; चैय्त पावम्-किया हुआ पाप; अतत्तिल् पेरितु-उससे बड़ा है; अँत्पार्-कहते; विति-विधि ने; नैञ्चै पुण् चैय्ततु-सभी के हृदयों पर घाव किया है; अँत्पार्-कहते; पूतलत्तोर-भूलोकवासियों की; कण् चैय्त पावम्-आँखों का किया हुआ पाप; कटलिन् पेरितु-सागर से भी विपुल है; अँत्पार्-कहते (कुछ लोग) । ३६८

लोग विविध विचार प्रकट करते थे । कुछ लोग कहते कि पृथ्वी-देवी ने कोई पाप किया है; और कुछ कहते कि श्रेष्ठ कमल-निवासिनी श्रीदेवी ने उससे बड़ा पाप किया है । विधि ने सबके हृदयों को वेध दिया है —यह कुछ लोग कहते । भूतल के लोगों की आँखों का पाप, जिसकी वजह से उन्हें श्रीराम को जटावलकल-धारी देखना पड़ा, सागर से भी बड़ा हो गया है । ३९८

❖ आळान्	वरद	नरशैन्वा	रैयनिति
मीळा	नहर्क्कु	विदिकोडिदे	कार्णैन्वार्
कोळाहि	वन्दवा	कौर्ऱुमुडि	तानैन्वार्
माळाद	नम्मिन्	मनम्वलिया	रारैन्वार् 399

परतन् अरचु आळान् अँत्पार्-भरत राज नहीं करेगा, कहते; ऐयन्-आर्य; इति नर्क्कु मीळान्-अब नगर लौट नहीं आएँगे, कहते; विति कौडिते-विधि क्रूर है; अँत्पार्-कहते; कौर्ऱुम् मुडि तान्-विजयीमुकुट-धारण की बात ही; कोळ् आकि वन्त आऱु-बुरा ग्रह-फल वनके आया, किस प्रकार; अँत्पार्-कहते; माळात नम्मिन्-यह सुनकर भी जो नहीं मरे हमसे; मनम् वलियार्-कठोरमन; आर् अँत्पार्-कौन हैं, कहते । ३६९

‘भरत राज्य नहीं करेगे’; ‘आर्य श्रीराम अब नगर नहीं लौटेंगे’; ‘विधि बड़ी क्रूर है’; मुकुटधारण की बात ही इस प्रकार का बुरा फल देनेवाला दुर्ग्रह बन गया; ‘यह समाचार सुनकर भी जो नहीं मरे, हमसे बढ़कर पत्थरमन कौन हो सकता है?’ —ऐसे अनेक विचार उनसे व्यक्त किये गये । ३९९

❖ आदि	यरश	त्तरुङ्गे	हयन्महण्मेऱ्
कादन्	मुदिरक्	करुत्तळिन्द	नामैन्वार्
शोदै	मणवाळन्	उन्ऱोडुन्	दीक्कान्तम्
पोडु	मदुवन्ऱेऱ्	पुहुडु	मैरियेन्वार् 400

आति अरचन्-हमारे नायक चक्रवर्ती; अरुम् केकयन् मकळ् मेल्-अपनी प्यारी केकयपुत्री पर; कातल् मुत्तिर-प्रेम की बढ़ती से; करुत्तु अळिन्तान्-विवेकशून्य हो

गये; अँत्पार्-कहते; चीतं मणवाळत् तन्नोदुम्-सीता के पति के साथ; ती कातम् पोतुम्-हम भी तापक वन में जायेंगे; अतु अन्नेल्-वह न हुआ तो; अँरि पुकुतुम्-अग्निप्रवेश करेंगे; अँत्पार्-कहते । ४००

और भी कुछ लोग कहते कि हमारे प्रमुख नायक कैकेयी पर के प्रेमाधिक्य के कारण विवेकहीन मन वाले हो गये । हम श्रीसीतापति के साथ संतापी वन में चले जायेंगे । अगर वह संभव नहीं होगा तो आग में गिरकर जल जायेंगे । ४००

ॐ कैया	निलन्दडविक्	कण्णीर्	मँळुहुवार्
उय्याळ्पीर्	कोशलैयैन्	रोवाडु	वैय्दुयिर्प्पार्
ऐया	विळङ्गोवे	यार्ऋदियो	नीयैन्बार्
नैय्या	रळलुर्ऋ	दुर्ऋरन्	नीणहरार् 401

कैयाल् निलम् तटवि-हाथों से धरती को मलकर; कण् नीर् मँळुकुवार्-आँसुओं से लीपते; पीत कोचलै उय्याळ्-स्वर्णसम कौसल्या जीवित नहीं रहेंगी; अँन्ऋ-कहते हुए; ओवातु वैय्दुयिर्प्पार्-निरन्तर गरम उच्छवास छोड़ते; इळम् कोवे-लघुराज; ऐया-तात; नी आर्ऋतियो-आप सह सकते हैं क्या; अँत्पार्-कहते; अ नीळ् नकरार्-उस बड़े नगर के वासी; नैय् आर्-घी-लगी; अळल् उर्ऋतु-आग लगी जैसे; उर्ऋर्-(बहुत दुख की) स्थिति में पहुँचे । ४०१

कुछ लोग आँसू बहाकर भूमि को अपने हाथों से लीपते । (यह दुख के वर्णन की एक रीति है, जो तमिळ का विशेष मसल है ।) कुछ लोग, 'स्वर्ण-सम श्रेष्ठ कौसल्या पुत्र से विलग होकर जी नहीं सकेंगी' —यह कहते हुए गरम निश्वास छोड़ते थे । कुछ लोग लक्ष्मण को पुकारकर कहते कि लघुराज ! हमारे प्रभु ! आप यह दुख सह सकेंगे क्या ? इस तरह उस बड़े नगर के सभी लोग जैसे घी-लगी आग उन पर लगी हो वैसा दुखी हुए । ४०१

तळळू	वैरिल्लै	तन्महर्कुप्	पार्कीळ्वान्
अँळळू	तीक्करुम	नेर्न्दा	ळिवळैन्नाक्
कळळू	शैव्वाय्क्	कणिहयर्ऋ	गैहेशि
उळळू	काद	लिलळ्पोलैन्	रळळ्ळिन्दार् 402

कळ् ऊर्ऋ-मधुस्रावी; चैम्मै वाय्-ताल अधरों वाली; कणिकैयर्ऋ-वेश्याएँ भी; तन् मकर्ऋ-अपने पुत्र के लिए; पार् कौळ्वान्-भूमि दिलवा लेने के विचार से; कैकेचि-कैकेयी ने; अँळ् ऊर्ऋ-गहर्त्य; ती करुमम्-बुरा काम; नेर्न्ताळ्-किया; तळळू वेळ् इल्लै-निवारण कुछ नहीं है; अँन्ता-कहकर; इवळ् उळ् ऊर्ऋ कातल्-ये अन्तस्थ सच्चा प्रेम वाली; इलळ् पोल्-नहीं है तो; अँन्ता-कहकर; उळ् अळ्ळिन्दार्-चित्ताकुलित हुई । ४०२

(मन न देकर) अधर-सुरा देनेवाली वेश्याएँ भी दुखी हुई । वे कहतीं

कि अपने पुत्र के लिए राज्य पाने की इच्छा से इन कैकेयी ने भी कितना निन्दित और नीच और बुरा काम किया है ? इसका कोई निवारण नहीं है । तब वे असल में उनसे मन से प्रेम नहीं करती थीं —यही लगता है । ४०२

❖ नित्ऱु	तवमियर्ऱित्	तान्ऱीर	नेर्न्तदो
अन्ऱि	युलहतु	ळारियराय्	वाळ्वारैक्
कौन्ऱु	कळैयक्	कुर्ऱित्त	पौरुळुदुवो
नन्ऱु	वरङ्गौडुत्त	नायहन्रऱ	तैण्णमैन्वार् 403

वरम् कौटुत्त-वर देनेवाले; नायकन् तन् अण्णम्-नायक का मतलब; तान् नित्ऱु-आप जाकर; तवम् इयर्ऱि-तपस्या करके; तीर-प्राण छोड़ने का; नेर्न्ततो-सोचकर क्या; अन्ऱि-वह नहीं तो; उलकत्तुळ्-संसार में; आर् उयिराय्-प्यारे प्राण-सम; वाळ्वारै-जीनेवाले प्रजाजनों को; कौन्ऱु-मारकर; कळैय-दूर करने; कुर्ऱित्त पौरुळ् अतुवो-किया गया संकल्प है; नन्ऱु-बहुत अच्छा रहा; अण्णार्-कहते । ४०३

कुछ लोग कुछ निष्ठुर वचन कहते— राजा ने जो वर दिया उसके पीछे उनका विचार क्या है ? वे क्या तपस्या करने जाकर अपने प्राणों को छोड़ना चाहते हैं या अपने प्राणप्यारे प्रजाजनों को मरवाने का उनका विचार है ? । ४०३

❖ पेरुडैय	मण्णवळुक्	कीन्दु	पिन्नुदुलहम्
मुर्ऱुडैय	कोवैप्	पिरियादु	मौय्त्तीण्डि
उर्ऱुडैदुम्	यारु	मुर्ऱेयवे	शिन्नाळिल्
पुर्ऱुडैय	काडैल्ला	नाडाहिप्	पोमैन्वार् 404

पेरुडैय मण्- (वर द्वारा) प्राप्त भूमि को; अवळुक्कु ईन्तु-उन्हें देकर; यारुम्-हम सभी कोई; पिन्नु-जन्म (-सिद्ध अधिकार) से; उलकम् मुर्ऱुडैय-सभी भूवनों के; उदैय कोवै-स्वामी राजा (राम) को; पिरियातु-अलग न छोड़कर; मौय्त्तु ईण्टि-उनसे लगे एकत्र होकर; उर्ऱु उर्ऱुतुम्-मिले रहेंगे; उर्ऱेयवे-वैसे रहने से; चिल नाळिल्-कुछ दिनों में; पुर्ऱु उदैय काटु अल्लाम्-वाँवियों से पूर्ण जंगल सब; नाटु आकि पोम्-पुर बन जायगा; अण्णार्-कहते । ४०४

और कुछ लोग कहते कि ठीक ! कैकेयी को वर द्वारा यह भूमि मिली है । लेने दो । पर हम जन्मसिद्ध अधिकार वाले राजा राम से अलग न होकर उनसे लगे रहकर वन में चले जायेंगे । वहाँ जाकर रहेंगे तो कुछ ही दिनों में वह वन पुर बन जायगा । वाँवियाँ महलों में परिवर्तित हो जाएंगी । ४०४

❖ अन्ऱे	निरुब	नियर्ऱै	यिरुन्दवा
तन्ने	रिलाद	तलैमहर्ऱुकुत्	तारणिये

मुन्ते कौडुत्तु मुरैतिरुम्बत् तम्बिक्कुप्
पिन्ते कौडुत्ताऱ् पिळैयादो मैय्येन्बार् 405

तारणियै-धरणी को; मुन्ते-पहले; तन् नेर् इलात-जिनका सादृश्य अन्यत्र नहीं, उन; तलै मकड्कु-नायक और ज्येष्ठ पुत्र को, देकर; पिन्ते-बाद; मुरै तिरुम्प-क्रम तोड़कर; तम्पिक्कु कौडुत्ताल्-उनके छोटे भाई को दे दे तो; मैय् पिळैयातो-सत्य भ्रष्ट नहीं होगा क्या; निरुपन् इयर्कै-राजा का स्वभाव भी; इरुन्त आरु अन्ने-रहता किस प्रकार का है; अन्पार्-कहते । ४०५

कुछ लोगों ने बहुत पते का प्रश्न पूछा । नरपति तो पहले धरणी को अप्रमेय नायक अपने श्रेष्ठ पुत्र श्रीराम को दिया । फिर मुकरकर अब उनके छोटे भाई को देते हैं । तो क्या यह सत्य से भ्रष्ट होना नहीं है ? चक्रवर्ती की प्रकृति भी कैसी विचित्र है ? । ४०५

कोदै वरिविऱ् कुमरऱ् कौडुत्तनिल, मादै महन्पुणर वेंणणिये वञ्जित्त
पेदै शिरुवन्नेप् पिन्पार्त्तु निऱ्कुमे, शोदै पिरियिनुन्दान् तीराऱ् डिऱ्वेन्बार् 406

कोतै-विजयमाला से अलंकृत; वरि विल्-बन्धनयुक्त धनु के; कुमरन् कौडुत्त-कुमार को दी गई; निलम् मातै-भूमिदेवी का; सकन् पुणर अण्णि-मेरा पुत्र पति हो, यह सोचकर; वञ्चित्त-(जिन्होंने अपने पति को) धोखा दिया उन; पेदै चिरुवन्ने-जड़मति (कैकेयी के) पुत्र को; तिरु-श्रीदेवी; पिन् पार्त्तु निऱ्कुमे-मुड़कर देखेगी और स्थिर रहेगी क्या; चीतै पिरियिनुम्-सीता विलग हो (रह) जाएंगी तो भी; तान् तीराळ्-वह नहीं बिछुड़ेंगी; अन्पार्-कहते । ४०६

कुछ लोग विस्मय करते कि क्या राज्यश्री, जो विजयीमाला से अलंकृत बन्धनयुक्त धनुर्धर श्रीराम की वाग्दत्ता हो गई थीं, और जिसका अपने पुत्र भरत को बनाना चाहकर अपने पति को जड़मति, कैकेयी ने ठग दिया, अब भरत पर मुड़कर भी दृष्टिपात करेंगी और उनके अधीन रहेंगी ? सीता भी चाहें तो राम से अलग रह जायें पर राज्यलक्ष्मी उनको नहीं छोड़ेंगी । (भरत राज्य पर शासन नहीं कर सकेगा —यह संकेत है ।) । ४०६

ॐ उन्दाडु नैय्वार्त् तुदवाडु कालैरिय
नन्दा विळक्कि तडुङ्गुहिन्ऱ् नङ्गेमार्
शैन्दा मरैत्तडङ्गट् चैव्वि यरुणोक्कम्
अन्दो पिरिटुमो वाविदिये योवैन्बार् 407

उन्तातु-बिना उकसाये; नैय् वार्त्तु उतवातु-धी डालकर सहायता किये बिना; काल अरिय-वात के बहने से; तडुङ्कुकिन्ऱ्-काँपनेवाले; नन्ता विळक्किन्-अविरत जलते दीप के समान; नङ्गै मार्-उच्चकुल की स्त्रियाँ; अन्तो-हन्त; चैम् तामरै तट कण्-लालकमल से विशाल नेत्रों की; चैव्वि-सुन्दर; अरुळ् नोक्कम्-कृपादृष्टि से; पिरितुमो-वंचित हो जायेंगे क्या; आ-हाय; वित्तियेयो-हमारा दुर्भाग्य है क्या; अन्पार्-कहतीं । ४०७

कुछ उच्च कुल की स्त्रियाँ उन अविरत जलनेवाले दीपों के समान थीं जिसकी वाती उकसायी नहीं गई हो और जिसमें घी (तेल) नहीं डाला गया हो, और जो प्रबल वेग से बहनेवाली हवा के सामने काँपते हैं। वे वैसे काँपने लगीं। वे इस बात का दुख करने लगीं कि अब वे श्रीराम के कमलसम आँखों की कृपापूर्ण सुन्दर दृष्टि से वंचित हो जायँगी। वे पछताने लगीं कि हन्त ! अब उनकी कृपादृष्टि के वगैर जी सकेंगी क्या ? हाय ! यह क्या हमारा दुर्भाग्य हुआ ? । ४०७

ॐ केट्टा	निळैयोन्	किळर्बालम्	वरत्ति	नाले
मीट्टा	ळळित्ताळ्	वनन्दम्मुनिन्	वैम्मै	मुर्त्ति
तीट्टाद	वेर्क्कट्	चिरुदायैन्	याव	रालुम्
मूट्टाद	कालक्	कडैत्तीयैन्	मूण्डे	ळुन्दान् 408

तीट्टात वेल् कण्-बिना पँनाये (ही तीक्ष्ण रहनेवाले) भाले-सी आँखों की; चिड् ताय्-छोटी माता ने; तम् मुनिन्-मेरे भाई के प्रति; वैम्मै मुर्त्ति-द्वेष बढ़ाकर; किळर् बालम्-उनकी अपनी रहनेवाली भूमि को; वरत्तिनाले-घर के व्याज से; मीट्टाळ्-उनसे छीन लेकर; वतम् अळित्ताळ्-वनवास दे दिया; अँत-यह बात; केट्टान् इळैयोन्-अनुज (लक्ष्मण) ने सुना; यावरालुम्-किसी से; मूट्टात-न प्रज्वलित; कालम् कटै ती अँत-युगान्त की अग्नि के समान; मूण्ड् अँळुन्दान्-क्रोधोन्मत्त हो उठे । ४०८

लक्ष्मण के कानों में यह समाचार पड़ा। 'सौतेली माता ने जिनकी आँखें स्वाभाविक रूप से भाले के समान तीक्ष्ण हैं, मेरे बड़े भाई से बढ़ते द्वेष के कारण उनके अधिकार के इस राज्य को छीनकर उनको वनवास दिया'—यह सुनकर वे स्वयं, बिना किसी के द्वारा प्रज्वलित हो, उठनेवाले प्रलयांत अनल के समान क्रोधोन्मत्त हो उठे । ४०८

कण्णिर्	कडैत्तीयुह	नैर्त्तियिर्	कडै	नार
विण्णिर्	चुडरु	जुडर्नाणमैय्	नोर्त्ति	रिप्प
उण्णिर्	कुमुयिर्प्	पैन्नुमदै	पिर्क्क	निन्ऱ
अण्णर्	पैरियोन्	इनदादियिन्	मूर्त्ति	यीत्तान् 409

कण्णिल् कटै ती उक्-आँखों से युगान्त की (सी) अग्नि प्रकट होती थी; नैर्त्तियिल् कडै-भाल पर भी हैं; नार-चढ़ गई; मैय्-शरीर; नोर्-स्वेदजल; विरिप्प-अधिक परिमाण में निकालने लगा तब; उळ् निर्कुम्-भीतरी; उयिर्प्पु अँनुम्-श्वास का; अँतै पिर्क्क-प्रबल पवन प्रकट हुआ, तब; विण्णिल् चुट्टुम्-आकाश में दीप्त; चुटर् नाण-सूर्य भी लजा जाए, ऐसा; निन्ऱ-(उग्र रूप में) खड़े जो रहे; अण्णल् पैरियोन्-बड़े महिमावान (लक्ष्मण); तत्तु आतियिल् मूर्त्ति औत्तान्-अपने आदि (अनन्तनाग के) रूप में जैसे लगे । ४०९

आँखों से प्रलयकाल की-सी आग निकलने लगी। भी हैं भाल पर

चढ़ गई। शरीर स्वेद से भीग गया। भीतर से साँसें आँधी के समान आने लगीं। उनको देखकर आकाशचारी तेजोमय सूर्य भी मानो लज्जा से ठिठक गया। इस उग्ररूप में स्थित लक्ष्मण, उनके, असली आदि रूप अनंतनाग के समान लगे। ४०९

शिङ्गक	कुरुलैक	किडुतीञ्जुवै	यूतै	नायिन्
वैङ्गट	चिरुकुट	टनुक्कूट	विरुम्बि	नाळे
नङ्गैक	करिविन्	रिरनन्निडु	नन्नि	दैन्नाक्
कङ्गैक	किरैवन्	कडहक्कै	पुडैत्तु	नक्कान् 410

कङ्कैकुकु-गंगा के देश के; इरैवन्-पति (लक्ष्मण); चिङ्कम् कुरुलैकुकु-सिंहशावक को; इटु-देने योग्य; तीम् चुवै ऊनै-मधुर स्वाद के मांस को; वैम् कण्-भयंकर आँख वाले; नायिन् चिरु कुट्टनुक्कुकु-कुत्ते के छोटे पिल्ले को; ऊट्ट-खिलाने को; विरुम्पिताळे-चाहती हैं; नङ्कैकुकु-इस स्त्री को; अरिविन् तिरुम्-बुद्धि का कौशल; नन्नि इतु-अच्छा है; नन्नि इतु-अच्छा है; दैन्ना-कहकर; कटकम् क पुडैत्तु-कंकणधारी हाथों को पीटते हुए; नक्कान्-ठठाकर हँसे। ४१०

गंगा के देश के पति वे, 'सिंहशावक के योग्य स्वादिष्ट मांस को लेकर क्रूराक्ष कुत्ते के पिल्ले को देना चाहती हैं वे देवी! उनकी बुद्धिमानी भी बड़ी अच्छी रही, अच्छी रही', यह कहते हुए तालियाँ पीटकर हँस उठे। ४१०

शुड्डार्न्त	कच्चिर्	चुरिहैपुडै	तोन्ऱ	वार्त्तु
विड्डाङ्गि	वाळिप्	पैरुम्बुटिल्	पुडत्तु	वीक्किप्
पड्डार्न्त	शैम्बोर्	कवशम्बन्ति	मेरु	वाङ्गोर्
पुड्डा	मत्तवोड्	गियतोळोडु	मारु	पोरुक्क 411

चुड्ड आर्न्त कच्चिल्-वलियत कर बंधे कमरबन्द में; चुरिकै-करवाल को; पुडै तोन्ऱ आर्त्तु-पार्श्व में प्रकट बाँधकर; विल् ताङ्कि-(बायें हाथ में) धनु लेते हुए; पैरु वाळि पुट्टिल्-बड़ा तूणीर; पुडत्तु वीक्कि-पीठ पर कस कर; पड्ड आर्न्त-चुस्त; शैम् पोन् कवचम्-चोखे स्वर्ण का कवच; पत्ति मेरु ओर पुड्ड आम्-(इसके सामने) हिमालय एक बाँबी है; अन्त ओङ्किय-ऐसा कहने योग्य रीति से उन्नत; तोळोडु-कंधों के साथ; मारु-वक्ष को भी; पोरुक्क-ओढ़ते हुए (पहनकर)। ४११

वे युद्ध के लिए लस थे। कमरबन्द में बाँधकर तलवार लटक रही थी। बायें हाथ में धनुष, पीठ पर बड़ा तूणीर, और हिमालय को भी अपने सामने बाँबीसम दिखनेवाला बना दें ऐसे उन्नत कंधों और वक्ष को ढँकने वाला चोखे स्वर्ण का कवच—इनके साथ—। ४११

अडियिर्	चुडर्पोर्	कळलार्हलि	नाण	वार्प्पप्
पिडियिर्	उडवुञ्	जिलैनाण्पैरुम्	पूश	लोश

इडियिर् रीडरक् कडलेळु मडुत्तु जाल
मुडिविर् कुमुखम् मळैमुम्मयिन् मेन्मु लङ्ग 412

अडियिल् चुटर्-पैरों में चमकनेवाली; पौन् कळल्-स्वर्ण-पायल; आर् कलि नाण-सागर-घोष को लज्जित करते हुए; आरप्प-शब्द करे; पिडियिल् तटवुम्- (उँगलियों से) पकड़कर डोरी खींचने से; चिलै नाण्-धनु की प्रत्यंचा का; पैरु पूचल् ओचै-बहुत बड़ी ध्वनि (जो उठी); इडियिन् तौटर-वज्रघोष के समान लगातार उठे; जालम् मुडिविल्-भुवनों के नाश के कल्पान्त में; कटल् एळुम् मडुत्तु-समुद्र, सातों को पीकर; कुमुखम्-गरजनेवाले; मळैयिन् मेल्-मेघों से बढ़कर; मुम्मे मुळङ्क-तिगुना शोर मचावे, ऐसा । ४१२

उनके पैरों में स्वर्ण-पायल बँधी थी जिसकी ध्वनि समुद्रगर्जन को भी हरा रही थी । धनुष की टंकार, जो उन्होंने अपनी उँगलियों से डोरी पकड़कर खींचने से उठी, वज्रगर्जन के समान ध्वनित हो रही थी । दोनों ध्वनियाँ मिलकर युगांतकाल के, जब सारे लोक मिट जाते हैं, सातों समुद्रों का जल पीकर गरजनेवाले मेघों के गर्जनध्वनि से तिगुनी जोर की थी । ४१२

वानुन् निलनुम् मुदलीरिल् वरम्बिल् पूदम्
मेनिन्ऱु कीळ्हारुम् विरिन्दत्त वीळ्व पोल्
तानुन् दनदम् मुनुमल्लुदु मुम्मे जालत्
तुनु मुयिरु मुड्यार्ह लुळैन्दो दुङ्ग 413

वानुम् निलनुम्-आकाश और धरती; मुत्तल् ईरिल्-आदि और अन्तिम; मेल् निन्ऱु कीळ् कारुम्-ऊपर से नीचे तक; विरिन्दत्त-व्याप्त; वरम्पु इल् पूतम्-अनन्त भूत; वीळ्व पोल्-मानो मिट रहे हैं, ऐसा हो गये; मुम्मे जालत्तु-(उसे देख) तीनों लोकों में; तानुम् तन तम्मुनुम् अल्लुत्तु-आप (लक्ष्मण) और अपने ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम के सिवा; ऊनुम् उयिरुम् उट्यार्कळ्-शरीर और प्राणों वाले जीव; लुळैन्दु-डरकर; ओत्तुङ्क-(छिपने को) हटकर भाग जाँ, ऐसा । ४१३

ऊपर आकाश से नीचे भूमि तक व्याप्त पाँचों भूतों का नाश होने वाला है ऐसा समझकर त्रिभुवनवासी जीवधारी सब, श्रीराम और लक्ष्मण को छोड़, डरकर छिपने का स्थान ढूँढ़कर भागने लगें, ऐसा— (लक्ष्मण का भयंकर रूप था) । ४१३

❀ पुविप्पावै परङ्गोडप् पोरिल्वन् दोरै यैल्लाम्
अविप्पानु मवित्तव राक्कयै यण्ड मुरुरक्
कुविप्पानु मिन्ऱैन् कुणक्कोविन्नैक् कोरुम्मोर्लि
कविप्पानु निन्ऱे निडुकाक्कुनर् कामि नैन्ऱान् 414

इन्ऱु-आज; पोरिल् वन्तोरै अल्लाम्-युद्ध में आनेवाले सभी को; पुवि पावै परम् कँट-भूमिदेवी का भार हट करते हुए; अविप्पानुम्-मार मिटाने के हेतु और;

अवित्तवर् आक्कैयै-ऐसा मारे गये लोगों के शरीरों के; अण्टम् मुद्द कुविप्पानुम्-आकाश को छूते हुए ढेर लगाने के लिए; अण् कुणम् कोवितै-(वाद) मेरे गुणपूर्ण राजा (राम) को; कौडम् मौलि कविप्पानुम्-विजयी किरोट पहनाने के निमित्त; निन्नेन्-सन्नद्ध खड़ा हूँ; इतु काक्कुनर्-इसको रोक सकनेवाले; कामिन्-आकर रोको; अन्नान्-ललकारा । ४१४

उन्होंने ललकारा । अब मैं, युद्ध करने आनेवालों को, भूभार-निवारण करते हुए मारने, और उनकी लाशों के आकाशस्पर्शी ढेर लगाने और उसके बाद मेरे गुणोन्नत श्रीराजाराम को विजयमुकुट पहनाने के लिए सन्नद्ध खड़ा हूँ । जो रोकना चाहें वे आवें । ४१४

विण्णाट्टवर्	मण्णवर्	विज्जयर्	नाहर्	मड्डम्
अण्णाट्टवर्	यावरु	निक्कवोर्	सूव	राहि
मण्णाट्टुनर्	काक्कुनर्	नीक्कुनर्	वन्द्	पोदुम्
पेण्णाट्ट	मौट्टे	तिन्निपेरुल	हत्तु	ळिन्ना 415

विण् नाट्टवर्-स्वर्गवासी; मण्णवर्-भूलोकवासी; विज्जयर्-विद्याधर; नाकर्-नाग लोग (पातालवासी); मड्डम् अण् नाट्टवर् यावरुम्-और भी दूसरे (लोक) समझे जानेवाले लोकों के सभी वासी; निक्क-एक ओर रहें; ओर् सूवर् आकि-परमश्रेष्ठ त्रिमूर्ति बने; मण् नाट्टुनर्, काक्कुनर् नीक्कुनर्-भुवन की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं; वन्द् पोदुम्-वे आएँ तो भी; इ पेर् उलकत्तुळ्-इस विशाल संसार में; इत्ति-अब; पेण् नाट्टम् औट्टेन्-एक नारी का मनचीता होने नहीं दूंगा; अन्ना-कहते हुए । ४१५

स्वर्गवासी, भूलोकवासी, विद्याधर, पातालवासी और अन्य लोक-संज्ञित सभी लोकों के सभी वासियों को छोड़ो एक ओर; स्वयं सृष्टि, स्थिति और संहार का काम करनेवाले परमश्रेष्ठ त्रिदेव भी क्यों न आएँ, मैं कदापि एक नारी के संकल्प को चरितार्थ होने नहीं दूंगा । ४१५

ॐ कालैक्	कदिरो	नडुवुड्डोर्	वैम्मै	काट्टि
जालत्	तवर्को	महन्नह	रत्तु	नाप्पण्
मालैच्	चिहरत्	तनिमन्दर	मेरु	मुन्दै
वेलैत्	तिरिहिन्	उडुपोड्डिरि	हिन्ड	वेलै 416

कालै कतिरोन्-प्रातःकालीन सूर्य; नडु उड्डु-आकाश-मध्य आया; ओर् वैम्मै काट्टि-तब का एक ताप प्रकट करते हुए; जालत्तवर् को मकन्-लोकों के चक्रवर्ती के पुत्र; अ नकरत्तु नाप्पण्-उस नगर के मध्य; मालै चिहरम्-श्रेणीबद्ध शिखरों के साथ; तन्नि मन्तरम्-अनुपम मन्दर; मेरु-मेरुपर्वत का अंश; मुन्तै-पहले; वेलै तिरिकिन्डु पोल्-(क्षीर-) सागर में जैसा घूमता था; तिरिकिन्डु वेलै-वैसा घूमते जब रहे, तब । ४१६

प्रातःकालीन सूर्य के समान रहे लक्ष्मण अब आकाशमध्य के सूर्य के

समान हो गये। उनमें उतना क्रोधताप पैदा हो गया। भुवनपति चक्रवर्ती दशरथ के उस नगर के मध्य वे उस शिखरवहुल मेरु के (अंश-भूत) मंदरपर्वत के समान घूम रहे थे जो पहले क्षीरसागर मथते हुए घूमा था। ४१६

ॐ वेङ्क	कौडियाळ	विळैवित्त	विनक्कु	विम्मि
तेङ्ग	तैळिया	दयर्शिङ्ग	पालि	रुन्दान्
आङ्ग	रुणत्तम्बि	तन्विङ्गुय	लण्ड	कोळम्
कोङ्ग	रुडयप्	पडुनाणुरु	मेरु	केळा 417

वेरु कौडियाळ-रुख बदलकर जो अब निर्मम बन गई हैं, उनके; विळैवित्त-कृत; विनक्कु-उत्पात से; विम्मि-सिसकती हुई; तेङ्ग तैळियातु-धीरज बंधाने पर भी धीरज न धरकर; अयर्-लटनेवाली; चिङ्ग पाल्-छोटी माता (सुमित्रादेवी) के पास; इरुन्तान्-जो रहे (वे श्रीराम); आङ्ग-वलवान; तुण् तम्बि तन्-साथी, छोटे भाई का; विल् पुयल्-धनु रूपी मेघ से; अण्ड कोळम् कोङ्ग उङ्ग उटैय-अण्डगोल चिरकर टुकड़े-टुकड़े हो जाय ऐसा; पट्ट-उत्पन्न; नाण् उरुम् ऐरु-टंकार रूपी (मेघ-) गर्जन; केळा-सुनकर। ४१७

तब श्रीराम अपनी छोटी विमाता सुमित्रा के पास उनको धीरज बंधाते हुए रहते थे। निर्मम बनी कैकेयी के दुष्कृत्य से सिसकनेवाली वे धैर्य का अवलंबन नहीं कर पा रही थी। उस स्थिति में श्रीराम ने सुना कि उनके सहचर भाई के धनु रूपी मेघ से ऐसी टंकार रूपी गर्जन निकल रहा है जिससे अंडगोल ही फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। ४१७

ॐ वोडाक्	कियपोंङ्	कलन्विल्लिङ	वार	मिन्त
माडात्	तनिच्चोंङ्	रुळिमारि	वळङ्गि	वन्दान्
काडाक्क	निमिर्नुडु	पुहैनुडु	कनन्ऱु	पोंङ्गुम्
आडाक्	कन्तलाङ्	रुमौरञ्जन्त	मेह	सेन्त 418

वोडा आक्किय-विशिष्ट रूप से निर्मित; पोंन् कलन्-स्वर्णभिरण; विल् इट-इन्द्रधनुष की-सी आभा छिटक रहे थे; आरम् मिन्त-भोतियों के हार चमके; काल् ताक्क-हवा के आघात से; निमिर्नुतु पुक्कैनुतु-प्रज्वलित होकर धुएँ के साथ; कनन्ऱु पोंङ्गुम्-ज्वाला के साथ उठनेवाली; आडात कन्तल्-न बुझनेवाली आग को; आङ्गुम्-शान्त करने में समर्थ; ओर् अञ्चत्तम् मेकम् अँन्त-एक काले मेघ के समान; माडात-जिनको सुनकर लोग विपरीत नहीं जा सकते ऐसे; तन्नि चोल्-श्रेष्ठ वचन रूपी; तुळि मारि-बूंदों की वर्षा; वळङ्क-करने; वन्तान्-पधारे। ४१८

वे वहाँ चले। उनके विशेष रूप से निर्मित आभरण इन्द्रधनुष-सम विविध रंग के प्रकाश बिखेर रहे थे। मुक्तामालाएँ चमक रही थीं। वे ऐसे काले मेघ के समान आये जो हवा की सहायता पाकर भभक उठकर धुएँ के साथ अदम्य रीति से जलनेवाली अग्नि को शांत करने में समर्थ हो और जो अवार्य श्रेष्ठ वचन रूपी बूंदों की वर्षा करने आता हो। ४१८

❖ मिन्त्रीत्त	शीर्ऱ्क	कत्तल्विट्टु	विळङ्ग	निन्ऱ
पौन्त्रीत्त	मेनिप्	पुयलीत्त	तडक्कै	यान्नै
अन्नत्त	न्नैन्नी	यिरैयेनु	मुनिन्दि	लादाय्
सन्नत्त	नाहित्	तन्नुवेन्दुदर्	केदु	वैन्ऱान् 419

मिन् औत्त-बिजली के समान; चीरऱ्म् कत्तल विट्टु-कोपाग्नि निकालते हुए; विळङ्क निन्ऱ-सबको वह स्थिति कराते हुए खड़े (जो) रहे उनको; पौन् औत्त मेनि-और स्वर्णवर्ण-शरीरी; पुयन् औत्त तड कैयान्नै-मेघ-सम विशाल हाथों वाले उनको; अन्न अत्तन्-मेरे तात; इरैयेनुम् मुनिन्नु इलाताय्-किंचित भी कोप न करनेवाले; नौ-तुम; चन्नत्तत्त आकि-युद्धसन्नद्ध होकर; तन्नु एन्नुतऱ्कु-धनु उठा लेने का; एन्नु अन्न-हेतु क्या है; वैन्ऱान्-पूछा । ४१६

आते ही उन्होंने बिजली के समान क्रोधाग्नि प्रकट करते हुए कुपित रहनेवाले, स्वर्णसम शरीर और मेघसम हाथों वाले लक्ष्मण से प्रश्न किया कि मेरे तात ! तुमने कभी ऐसा कोप नहीं किया था । अब युद्धसन्नद्ध ही हो गये हो और तुमने हाथ में धनु भी उठा लिया है । इसका हेतु क्या है ? । ४१९

❖ मैय्यैच्	चिदैवित्तु	निन्मेन्मुऱै	नीत्त	नैञ्जम्
मैयिर्	करिया	ळैदिर्निन्नैयम्	मौलि	चूट्टल्
शैय्यक्	करदित्	तडैशैय्हुनर्	देव	रेनुम्
तुय्यैच्	चुडुवैड्	गत्तलिर्चुडु	वान्ऱु	णिन्दैन् 420

मैय्यै चिदैवित्तु-सत्य की हत्या करके; निन् मेल् मुऱै नीत्त-आपका परम्परागत स्वत्व का क्रम तुड़ानेवाले; नैञ्चम् मैयिन् करियाळ्-चित्त (जिसका) अंजन से काला है उसके; अतिर्-सामने ही; निन्ने-आपका; अ मौलि चूट्टल् चैय्य-वह मुकुट धारण कराना; करदि-सोचकर; तडै चैय्कुत्तर्-बाधा देनेवाले; तेवरेत्तुम्-देव भी हों; तुय्यै चुडु-रई को जलानेवाली; वैम् कत्तलिन्-भयंकर आग के समान; चुडुवान् तुणिन्नेन्-उनको जलाने का निश्चय किया है । ४२०

लक्ष्मण ने उत्तर दिया— जिस कैकेयी ने सत्य का गला घोट दिया, और आपका परंपरागत स्वत्वक्रम छीन लिया उस अंजनसम काले मन वाली कैकेयी के देखते, उसके सामने ही मैंने आपको मुकुट पहनाने का संकल्प कर लिया है । उसको रोकनेवाले चाहे देवता ही क्यों न हों उनको रई को जलानेवाली आग के समान जलाकर राख बनाने को ठान लिया है । ४२०

वलक्कारमुह	मैन्कैय	दाहव्व	वानु	ळोरुम्
विलक्कारवर्	वन्दु	विलक्किन्नु	मैन्कै	वाळिक्
किलक्कावैरि	वित्तुल	हेळिनो	डेल्लु	मन्तर्
कुलक्कावलु	मिन्ऱुक्	कियान्ऱर्क	कोडि	यैन्ऱान् 421

वलम् कार्मुकम्-वलवान कार्मुक; अँन् कंयतु आफ-मेरे हाथ में रहता है, तब;
अ वान् उळोरुम्-वे स्वर्गवासी देवता भी; विल्क्कार्-मुझे नहीं रोकेंगे; अघर् वन्तु
विल्क्कितुम्-वे आकर रोकें तो भी; अँन् के वाळिक्कु-मेरे हाथ के अग्र का;
इलक्कु आ(क)-लक्ष्य बनकर; अँरिवित्तु-मिटाने; उलकु एळितोट्टु एळम्-लोक
सात और सात, चौदहों को; मन्तर् कुलम् कावतुम्-उनके राजाओं का अधिकार भी;
इन्ऱ उतक्कु यान् तर-मैं आज आपको दूंगा और; कोटि-ले लीजिए; अँन्ऱान्-
कहा। ४२१

लक्ष्मण ने आगे कहा— जब तक सबल कार्मुक मेरे हाथ में है तब
तक वे स्वर्गलोक-वासी देवगण भी मुझे रोकने नहीं आयेंगे। आयेंगे तो
भी उनको अपने वाणों का निशान बनाकर जला दूंगा और उनको राख
बना दूंगा। मैं चौदहों लोकों को और उनमें रहनेवाले राजाओं के
अधिकार को आपका बना दूंगा। आप ग्रहण कर लीजिए। ४२१

❖ इळैयानिदु	कूऱ	विराम	नियन्द्	नीदि
वळैयावरु	नन्नेरि	निन्ऱि	वाहु	मन्ऱे
उळैयावडम्	वऱ्ऱिड	वळ्वळु	वुऱ्ऱ	शीऱ्ऱम्
विळैयाद	निलत्तुनक्	कँडन्	विळैन्द	वैन्ऱान् 422

इळैयान्-अनुज के; इतु कूऱ-यह कहने पर; इरामन्-श्रीराम; इयैन्त नीति-
सर्वसम्मत नीति; वळैयातु वरुम्-जिसमें टल नहीं जाती; नन् नेरि-उस मार्ग में;
निन् अरिवु आकुम् अन्ऱे-तुम्हारी बुद्धि चलनेवाली है न; उळैया अऱम्-अचल धर्म
को; वऱ्ऱिड-मिटाने हुए; उळ्वळु वुऱ्ऱ चीऱ्ऱम्-क्रम का व्यतिक्रम करनेवाला
क्रोध; विळैयात निलम्-न होनेवाले स्थान; उतक्कु-तुममें; अँडन् विळैन्तु-
क्योंकर हुआ; अँन्ऱान्-पूछा। ४२२

जब अनुज ने यह कहा तब श्रीराम ने पूछा कि भाई! तुम्हारी मति
उसी अच्छे मार्ग में चलनेवाली है न जो सर्वसम्मत-नीति से युक्त और बिना
वक्र हुए चलता आता है? फिर अब यह धर्मनाशक और क्रमभञ्जक क्रोध,
अपने लिए अनुचित प्रदेश, तुममें उत्पन्न कैसे हुआ? (तमिळ का जो
'इळैयान्' शब्द इस पद्य में प्रयुक्त है उसका 'छोटा' अर्थ भी है; अदम्य,
अथक आदि अर्थ भी।)। ४२२

❖ नीण्डा	नदुकूऱु	नित्तिलन्	दोन्ऱ	नक्कुच्
चेण्डान्	शौडर्मानिल	निऱ्कैन्त	तादै	शौप्पप्
पूण्डाय्	पहैयालिळन्	देवनम्	वोदि	यैन्ऱाल्
याण्डो	वडियेऱ्कित्च	चीऱ्ऱ	मडुप्प	वैन्ना 423

नीण्डान्-सर्वश्रेष्ठ श्रीराम के; अतु कूऱुम्-वह कहने पर; नित्तिलम् तोन्ऱ-
मोती (सम दांत) प्रकट करते हुए; नक्कु-हँसकर; चेण् तोटर् मा निलम्-(दूर से)
बहुत काल से रहता आनेवाला विशाल राज्य; निऱ्कु अँन्-आपका, यह; तादै चैप्प-

पिता के कहने पर; पूण्डांय-मान लिया (आपने); पकैयाल् इल्लन्तु-(किसी के) द्वेष से खोकर; वत्तम् पोति अन्नूराल्-वन जाओ कहा गया तो; अटियेङ्कु चीरुम् अटुप्पत्तु-मुझ दास का क्रोध करना; इति याण्टो-इसके सिवा कहाँ; अन्नूता-कहकर । ४२३

सर्वोत्तम श्रीराम के यह कहने पर लक्ष्मण ने अपने मोतीसम दाँतों को प्रकट करते हुए हँसकर कहा कि आप भी खूब बोले ! परंपरा के क्रम से ज्येष्ठ पुत्र का होता हुआ आनेवाला यह विशाल राज्य पिताजी के कहने पर आपका हुआ । फिर किसी की शल्लुता के कारण आपको उसको खोना पड़ा और आप जंगल जा रहे हैं । तब क्रोध नहीं आएगा तो फिर कब मुझे कोप होगा ? । ४२३

❁ निन्कट्परि	विल्लवर्	नीळवत्तत्	तुन्नै	नीक्कप्
पुत्तकट्पोरि	याक्कै	पोरुत्तुयिर्	पोरु	हेनो
अन्नकट्पुल	मुत्तुत्तक्	कीन्दुवैत्	तिल्लै	यैन्ऱे
वत्तकट्पुलन्	दाङ्गिय	मत्तवत्त	पोल	वैन्ऱान् 424

अन्न कण् पुलम् मुत्त-मेरी आँख के सामने; उत्तक्कु ईन्तु वैत्तु-आपको देकर; इल्लै अन्नू-फिर 'नाहि' करके; वत्त कण् पुलम् ताङ्किय-कठोर हृदय बने हुए; मत्तवत्त पोल-चक्रवर्ती के समान; निन् कण् परिवु इल्लवर्-आप पर स्नेह न रहनेवालों के; तुन्नै-आपको; नीळ वत्तत्तु नीक्क-विशाल वन में भेजते; पुत्त कण्पोरि-नीच इन्द्रियों वाला; याक्कै पोरुत्तु-शरीर धारण करके; उयिर् पोरुकेतो-प्राण रखूंगा क्या; अन्नू-कहा । ४२४

लक्ष्मण ने आगे कहा कि मेरे ही समक्ष राजा ने आपको राज्य दिया; फिर नहीं कह दिया । इतने कठोरहृदय उन राजा के समान क्या मैं भी यह देखते हुए कि आपसे प्रेम न रखनेवाले आपको वन भेज रहे हैं, अपना इन्द्रियागर् यह शरीर ढोता हुआ जीवन रखूंगा ? । ४२४

पिन्कुर्ऱु	मन्नुम्	वयक्कुम्भर	शैन्ऱल्	पेणैन्
मुत्तकौर्ऱु	मन्तन्	मुडिकौळ्हेनक्	कौळ्ळ	मूण्ड
दैन्कुर्ऱु	मन्ऱि	यिहन्मन्तवत्त	कुर्ऱुम्	यादो
मिन्कुर्ऱु	रौळिर्म्	वैयिरीक्कौ	डमैन्द	वेलोय् 425

मिन् कुर्ऱु-बिजली (की चमक) मिटाकर (मन्द कर); रौळिर्म् वैयिल्-गरम धूप; ती कौट्टु अमैन्त-और अग्नि-सह निर्मित; वेलोय्-भाला वाले; अरबु-राज; पिन् मन्तुम् कुर्ऱुम्-फिर भी अधिक दोष; पयक्कुम्-दिलाएगा; अन्नपत्तु पेणैन्-इसकी परवाह न करके; कौर्ऱुम् मन्तन्-विजयशील चक्रवर्ती के; मुत्त-पहले; मुटि कौळ्ळ अन्न-किरीट धारण कर लो कहने पर; कौळ्ळ-मैंने मान लिया; मूण्डतु-ऐसा फल हुआ; अन्न कुर्ऱुम् अन्ऱि-मेरे अपराध के सिवा; इक्ल् मन्तवत्त कुर्ऱुम्-वीर राजा का कसूर; यातो-कौन सा है । ४२५

श्रीराम ने समाधान देते हुए कहा कि बिजली की कान्ति को मिटाने वाली कांति और उज्ज्वल घूप और गरम आग की-सी तापक शक्ति से युक्त भाला वाले ! मुझे यह सोचना चाहिए था कि राज्य कितने ही दोष पैदा करेगा । मैंने उसका विचार किये बिना ही, जब राजा ने कहा कि 'राज्य लो', तो मान लिया । उसी का यह फल है ! तब अपराध मेरा है । शक्तिमान राजा का इसमें अपराध क्या है ? । ४२५

❖ नदियिन्पिळै	यन्ऱु	नरुम्पुत्त	लिनमै	यर्ऱे
पदियिन्पिळै	यन्ऱु	पयन्दु	नमैप्पु	रन्दाळ्
मदियिन्पिळै	यन्ऱु	महन्पिळै	यन्ऱु	मैन्द
विदियिन्	पिळैनी	यिदर्कैन्नै	वैहुण्ड	दैन्ऱान् 426

मैन्त-कुमार; नरु पुत्तल् इन्मै-अच्छा जल न रहे तो; नतियिन् पिळै-नदी का दोष; अन्ऱु-नहीं है; अर्ऱे-उसी तरह; पतियिन् पिळै अन्ऱु-राजा का दोष नहीं है; पयन्तु नममै पुरन्ताळ्-(हमको पुत्र रूप में) प्राप्त कर पालनेवाली (कैकेयी) की; मतियिन् पिळै अन्ऱु-मति का दोष भी नहीं है; मकन् पिळै अन्ऱु-उनके पुत्र का भी दोष नहीं है; वितियिन् पिळै-विधि का दोष है; इतर्कु-इसमें; नी वैकुण्ठु-तुम क्रोधित हुए; अँन्नै-क्यों; अँन्ऱान्-कहा । ४२६

श्रीराम ने आगे बहस की । नदी में जल सूख गया तो नदी का क्या दोष ? उसी तरह यह राजा का अपराध नहीं है; न उन कैकेयी माता की बुद्धि की भूल है जिन्होंने हमें पुत्र के रूप में प्राप्तकर (पुत्र मानकर) प्रेम से पाला था । भरत का भी कोई अपराध नहीं है । यह केवल विधि का दोष है । इसमें तुम क्रोध क्यों करते हो ? । ४२६ -

❖ उदिक्कुम्	मुलैयुळ्	ळुदीयैन्	वूदै	पौङ्गक्
कौदिक्कुम्	मनमैड्	इन्मार्ऱुमिक्	कोळि	ळैत्ताळ्
मदिक्कुम्	मदियाय्	मुदल्वान्तवर्क्	कुम्ब	लोइदाम्
विदिक्कुम्	विदियाहु	मैन्विर्ऱौळिल्	काण्डि	यैन्ऱान् 427

ऊँत पौङ्गक-(भाथी की) हवा के अधिक होने से; उलै उळ् उतिक्कुम्-भट्ठी के अन्दर प्रज्वलित; उळ् ती अँन्-विपुल अग्नि के समान; कौतिक्कुम् सत्तम्-तपनेवाला मेरा मन; अँड्ऱत्तम् आरुम्-कैसे शान्त होगा; इ कोळ् इळैत्ताळ्-यह उत्पात मचानेवाली की; मतिक्कुम् मति आय्-बुद्धि की बुद्धि बनकर; मुत्तल् वात्तवर्क्कुम्-आदि त्रिदेव के लिए भी; वलितु आम्-प्रबल रहनेवाली; वितिक्कुम् विति आकुम्-विधि की विधि बननेवाले; अँन् विल् तौळिल्-मेरे धनु का कार्य; काण्टि-देखिए; अँन्ऱान्-कहा । ४२७

इसके उत्तर मे लक्ष्मण ने कहा— भाथी की हवा के अधिक लगने से उत्तेजित भट्ठी की अग्नि के समान मेरा मन तप्त है । वह शांत कैसे होगा ? आप कैकेयी की बुद्धि, विधि आदि की बात क्या करते हैं । मेरा

धनु उनकी मति को बुद्धि दिलायेगा और त्रिदेवों से भी अकाट्य विधि की भी विधि बनेगा । देखिए उसका कार्य । ४२७

ॐ आयत्तन्दव	तव्वुरै	कूड्लु	मैय	निन्ऱुन्
वाय्त्तन्दन्न	कूरुदि	योमरै	तन्द	नावाल्
नीतन्ददन्	रोनरि	योह	णिलाद	दीन्ऱु
ताय्दन्दयैन्	रालवर्	मेरुवलिक्	किन्ऱु	देन्ऱो 428

आय् तन्तवन्-शास्त्रानुशीलन-कर्ता के; अ उरै कूड्लुम्-वह वचन कहने पर; ऐयन्-आर्य बोले; मरै तन्त नावाल्-वेदाभ्यस्त जित्वा से; निन्ऱुन् वाय् तन्त-जो भी मुख में आए; कूरुतियो-कहोगे; नी तन्ततु-अब जो तुमने (करने को) कहा; नेरियोर् कण् निलाततु अन्ऱो-सन्मार्गियों में पाया जायगा न; ईन्ऱु ताय् तन्त अन्ऱाल्-जनक माँ-बाप हैं तब; अवर् मेल्-उनसे; चलिक्किन्ऱु-क्रोध करना; अन्ऱो-क्या ठीक है । ४२८

लक्ष्मण स्वयं शास्त्रज्ञ तथा शास्त्रानुशीलन-कर्ता थे । श्रीराम ने उसका स्मरण दिलाते हुए कहा— वेदों से अभ्यस्त अपनी जीभ से तुम यह कैसे शब्द निकाल रहे हो ? अब जो करने की बात कह रहे हो क्या वह सन्मार्ग-गामियों के पास उचित रहेगा ? जब सम्बद्ध लोग हमारे माता-पिता हैं तब उन पर क्रोध करना कैसी बात है ? । ४२८

ॐ नऱऱा	दयुनी	तन्निनायह	नीव	यिऱ्ऱिऱ्
पैऱ्ऱायु	नीये	पिऱ्ऱिल्	पिऱ्ऱक्कु	नल्हक्
कऱ्ऱा	यिदुहा	णुदिनीयैत्तक्	कैम्म	ऱित्तान्
मुऱ्ऱा	मदियम्	मिलैन्दान्मुत्तिन्	दात्तै	यन्ऱान् 429

मुत्तिन्ऱान्-क्रोधशील; मुऱ्ऱा मतियम् मिलैन्ऱान्-बालचन्द्रधर शिव के; अन्ऱान्-सदृश रहनेवाले ने; पिऱ्ऱक्कु नल् कऱ्ऱाय्-दूसरों को (सब) दान कर देना आपने सीखा है; नल् तात्तैयुम् नी-मेरे लिए आप ही अच्छे पिता हैं; तन्नि नायकन् नी-अद्वितीय नायक आप है; यिऱ्ऱिल् पैऱ्ऱ आयुम् नीये-गर्भ में से जन्म देनेवाले भी आप ही; पिऱ्ऱ इल्लै-और कोई नहीं; इतु नी काणुत्ति-यह आप ध्यान से देखिए; अत्त-यह कहकर; कै मऱित्तान्-हाथ हिलाया । ४२९

तब क्रोधशील, चंद्रशेखररुद्र-सम लक्ष्मण ने कहा— आपने सब कुछ दूसरों को देना सीख लिया है । (या सबको दान करने की शिक्षाप्राप्त हो उदार !) मेरे आप ही पिता है; जननी माता भी अद्वितीय नायक आप ही । और कोई नहीं हैं । अब मेरी करनी देखिए । यह कहकर लक्ष्मण ने अपना हाथ नकारात्मक उत्तर में हिला दिया । ४२९

वरदन्	पहर्वात्	वरम्बैऱुव	डात्तिव्	वैयम्
शरदम्	मुडैया	ळवळैन्ऱित्ति	तादं	शैप्पप्

परदन् पेरुवा निनियान्पडैक् किन्ऱु शैल्वम्
विरदम् मिदिनल् लदुवेरिनि याव दैन्ऱान् 430

वरतन् पकर्वान्-वरद प्रभु ने कहा; इ वैयम्-इस राज्य की; वरम् पेरुवळ् तान्-जिन्होंने वर द्वारा प्राप्त किया है वे ही; चरतम् उटैयाळ्-सच्ची स्वामिनी हैं; अवळ्-वे; अन् तनि तातै-मेरे अनुपम पिता; चैप्प-कहते हैं; परतन् पेरुवान्-भरत (राज्य की) प्राप्त करेगा; इत्ति-आगे; यान् पटैक्किन्ऱु-जो मैं प्राप्त करूँगा वह; चैल्वम्-धन; विरतम्-तपस्या है; इतिन् नल्लतु-इससे अधिक अच्छा; इत्ति वेरु यावतु-अब क्या है; अन्ऱान्-कहा । ४३०

वरदप्रभु श्रीराम ने वहस जारी की । सच पूछा जाय तो इस भूमि की स्वामिनी कैकेयी ही है जिन्हें यह वर के रूप में प्राप्त हो गई । वे और मेरे श्रेष्ठ पिताजी इसको भरत को देते हैं तो वह भरत की हो गई । अब मेरा प्राप्य धन तप का धन है । अब इससे बढ़कर श्रेयस्कर वस्तु क्या है ? । ४३०

ॐ आन्ऱान् पहर्वान् पिनुमैयविव् वैय मैयल्
तोन्ऱा नैरिवाळ् तुणैत्तम्बियैप् पोर्त्ता लैत्तो
शान्ऱोर् पुहळुन् दत्तित्तादैयै वाहै कौण्डो
ईन्ऱाळै वैन्ऱो विनियिक्कदन् दीर्व दैन्ऱान् 431

आन्ऱान्-सर्वश्रेष्ठ श्रीराम; पिन्ऱुम्-फिर भी; पकर्वान्-कहा; ऐय-आर्य; इति-अब; इ वैयम् मैयल्-इस संसार-मोह से; तोन्ऱात नैरि वाळ्-रहित मार्ग में रहनेवाले; तुणै तम्बियै-सहचर अनुज (भरत) को; पोर् ताँलैत्तो-युद्ध में मारकर; चान्ऱोर् पुक्कळुम्-सभी बड़े लोगों से प्रशंसित; तत्ति तातैयै-अनुपम पिता पर; वाकै कौण्डो-विजय पाकर; ईन्ऱाळै वैन्ऱो-या जननी को हराकर; इ कतम् तीर्वतु-यह कोप दूर होगा क्या; अन्ऱान्-बोले । ४३१

पुरुषोत्तम ने आगे पूछा— उत्तम गुणों के आर्य ! क्या तुम्हारा कोप, सांसारिक मायाजाल से विमुक्त, अच्छे मार्ग में जानेवाले अपने साथी भ्राता भरत को युद्ध में मारकर, साधुओं से प्रशंसित हमारे पिता को हराकर, या जननी कैकेयी को हराकर ही शांत होगा ? । ४३१

ॐ शैल्लुज्जौल् वल्ला नैदिरत्तम्बियुन् दैव्वर् शौल्लुम्
शौल्लुम् जुमन्दे निरुतोळैन्ऱच् चोम्बि योङ्गुम्
कल्लुज् जुमन्देन् कणैप्पुट्टिलुङ् गट्ट मैन्द
विल्लुज् जुमक्कप् पिऱन्देन्वैहुण् डैन्नै यैन्ऱान् 432

शैल्लुम् चौल् वल्लान्-अमोघ भाषणकुशल के; अँतिर्-सामने; तम्पियुम्-अनुज लक्ष्मण ने भी; तैव्वर् चौल्लुम् चौल्लुम् चुमन्तेन्-शत्रुओं की निंदा के वचन सह रहा हूँ; इरु तोळ् अँत-दो कंधे के नाम पर; चोम्पि आङ्कुम्-व्यर्थ बढ़े हुए; कल्लुम् चुमन्तेन्-पत्थर ढोता हूँ; कणै पुट्टिलुम्-शरों की थैली भी; कट्टु अमैन्त

विलुप्त-बन्धन से युक्त धनु भी; चुमक कर पिङ्गते-ढोने के लिए पैदा हुआ; वैकुण्ठ अँत-मुझ पर गुस्सा करके क्या (लाभ) है; अँत-कहा । ४३२

यह सुनकर अनुज लक्ष्मण अपनी निंदा करते हुए बोले— मैं अपने शत्रुओं की निंदा का वचन सहते हुए दो कन्धे के नाम पर व्यर्थ बढ़े हुए पत्थर, शरों की थैली और बंधनयुक्त धनुष ढोनेवाला हो गया । फिर आप मुझ पर कोप करके क्या करेंगे ! । ४३२

नन्शीर्	कडन्दाण्	डैतनाळुम्	वळर्त्त	तादे
तन्शीर्	कडन्देर्	करशाळ्वदु	तक्क	दन्शाल्
अँन्शीर्	कडन्दा	लुत्तक्कियाडुळ	दूर्	मँन्शान्
तँन्शीर्	कडन्दान्	वडशीर्कलैक्	कैल्ल	तेरन्दान् 433

तँन् चोल् कटन्तान्-दक्षिणी भाषा (तमिळ्) के पारंगत; वट चोल् कलैक्कु-उत्तरी (संस्कृत) भाषा के वेदशास्त्रों के; अँल्लै तेरन्तान्-पूर्ण ज्ञानी; नन् चोर्कळ् तन्तु-श्रेष्ठ वचन (विद्याएँ) सिखाकर; अँतै आण्डु-मुझे पालकर; नाळुम् वळर्त्त-जिन्होंने पोषा; तातै तन् चोल् कटन्तु-उन पिता का वाक्य टालकर; अरचु आळ्वतु-राज करना; तक्कतु अन्-उचित नहीं है; अँन् चोल् कटन्तान्-मेरा वचन न मानोगे; उनक्कु यातु उळुतु ऊर्-तुम्हारा क्या बल होगा; अँन्शान्-बोले । ४३३

तमिळ् और संस्कृत के पारंगत श्रीराम ने कहा कि 'मुझे अच्छी विद्याएँ सिखाकर जिन्होंने पालन-पोषण किया उन पिताजी के वाक्य का उल्लंघन करके राज्य करना मैं उचित नहीं समझता । तुम भी मेरी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारा बल क्या रह जायगा ? सोचो !' श्रीराम ने यह कह अपनी बात समाप्त की । ४३३

शीर्	दुर्	तैर्दिर्निर्	तैर्निर्	शंप्पुम्
मार्	दुर्	मरैनान्गै	वाङ्गल्	शैल्ला
नार्	डिर्	लयित्तम्विद	ताणै	याले
एर्	दौडङ्गाक्	कडलिर्	वैय्दि	निन्शान् 434

नम्पितन्-नायक के; मरै नान्कु अँत-चतुर्वेद-सम; वाङ्गल् चैल्ला-अकाट्य; आणैयाल्-आज्ञा से; चोर्म् तुन्तान्-कोप छोड़कर; अँतिर् निन्-समक्ष खड़े होकर; तैर्निन् चैपुम्-सोचकर कहे हुए; मार्म्-वचन; तुन्तान्-छोड़ दिये; नाल्, तैळ् तिरै-चार, स्वच्छ लहरों वाले; वैलैयिन्-तीरों को; एर्म् तोटङ्का-पार कर जाना, जो नहीं करते; कडलिन्-उन समुद्रों के समान; तणिवु अँय्ति-कोप थाम कर; निन्शान्-खड़े रहे । ४३४

नायक श्रीराम के वचन प्रभुसंहिता कहे जानेवाले चतुर्वेद के शासनों के समान अकाट्य थे । इसलिए लघुराज लक्ष्मण ने अपना क्रोध त्याग दिया । अपने ज्येष्ठ भ्राता के समक्ष खड़े होकर तर्क करना भी छोड़

दिया । वे तीर न पार करनेवाले, पारावार के समान कोप थामकर खड़े रहे । ४३४

अन्तान्तरै	यैयन्नु	मादियो	डन्द	मैन्नुम्
तन्तालु	मळप्परुन्	दानुन्दन्	पाह	निन्ऱ
पौन्मानुरि	यानुन्	दळीइयैतप्	पुल्लिप्	पित्तनैच्
चौन्माण्बुडै	यन्नै	शुमित्तिरै	कोयिल्	पुक्कान् 435

ऐयन्नुम्-आर्ष भी; आतियौट्टु अन्तम्-आदि और अन्त; मैन्नुम्-कभी भी; तन्तालुम् अळप्पु अरुम्-स्वयं अपने लिए भी अगम; तानुम्-आप; तन् पाकम् निन्ऱ-अपने ही भाग के रूप में विद्यमान; पौन्मान् उरियानुम्-स्वर्णमृगचर्मधारी; तळीइयतु अँन-आलिंगन कर रहे हों, जैसे; अन्तान् तत्तै पुल्लि-उन (लक्ष्मण) को गले लगाकर; पित्तनै-बाद; चौल् माण्पु उटैय-भाषण-गरिमा वाली; अन्नै-माता; शुमित्तिरै कोयिल् पुक्कान्-सुमित्रा के मन्दिर में जा पहुँचे । ४३५

श्रीराम ने लक्ष्मण का कसकर आलिंगन कर लिया । वे अपने लिए भी अगम श्रीविष्णु थे । लक्ष्मण उन स्वर्णमृगांबर-धारी शिवजी के समान थे, जो विष्णु के ही अर्द्धांग (समझे जाते) हैं । वह आलिंगन शिव-विष्णु का आलिंगन-सा था । फिर वे दोनों भाषण की गरिमा वाली सुमित्राजी के महल में जा पहुँचे । (दक्षिण में शंकर-नारायण की मिली हुई मूर्तियाँ और उनके मन्दिर भी हैं) । ४३५

कण्डाण्	महनुम्	महनुन्दन्	कण्गळ्	पोल्वार्
तण्डा	वत्तञ्जैल्	वदङ्केशमैन्	दार्ह	डम्मैप्
पुण्डाङ्गु	नैञ्जत्	तित्तायप्	पुरण्डाळ्	पडिमेल्
उण्डाय	तुन्बक्	कडङ्कैल्लै	युणर्न्दि	लादाळ् 436

तन् कण्गळ् पोल्वार्-अपने दोनों आँखों के समान रहनेवाले; मकतुम् मकतुम्-अपना पुत्र और दूसरा पुत्र; तण्डा वत्तम् चैल्वत्तङ्के-दण्डकारण्य जाने के ही लिए; चमैन्तार्कळ् तम्मै-उद्यत उनको; कण्डाळ्-देखकर; उण्डाय तुत्तप्पम् कटङ्कु-जो हुआ उस दुख के सागर की; अन्नै उणर्न्तिलाताळ्-सीमा न जाननेवाली; पुण् ताङ्कुम् नैञ्जत्तित्ताळ् आय्-व्रणयुक्त मन वाली होकर; पडि मेल् पुरण्डाळ्-भूमि पर लोटने लगी । ४३६

सुमित्रादेवी ने अपनी दोनों आँखों के समान अपने दोनों पुत्रों को दण्डकवन जाने के लिए उद्यत हो आते हुए देखा । तब उनको जो दुख हुआ वे उसका अन्त नहीं पा सकीं । उनका हृदय व्रणयुक्त हो गया । वे दुख के अतिरेक से भूमि पर गिरी और लोटने लगी । ४३६

शोर्वाळै	योडित्	तौळुदेन्दिनन्	रुत्त	मैन्नुम्
ईर्वाळै	वाङ्गि	मत्तन्देर्ऱुदर्	केर्ऱ	शैय्वान्

पोर्वा ळरशर्क् किउँपीयूतन नाक्क हिल्लेन्
कार्वा नैडुङ्गा निरंकण्डिवण् मीळ्वे नैन्ऱान् 437

चोर्वाळे-शिथिल पड़नेवाली उनको; ओटि तौळुतु-दौड़कर नमस्कार करके; एन्तित्तन्-(हाथ में) उठाया; तुत्तपम् अँन्तुम्-दुख रूपी; ईर् वाळे-चीरनेवाली कटार को; वाङ्कि-दूर कर; मत्तम् तेरुत्तर्कु एरु-मन को धीरज देने योग्य; चैय्वान्-(उपाय) करने के लिए; पोर्वाळ् अरचर्क्कु इरै-युद्ध में प्रयुक्त तलवारों के राजाओं के राजा मेरे पिता को; पीयूतन्नन्-असत्यवक्ता; आक्ककिल्लेन्-बना नहीं सकूंगा; कार् वान् नैटु कान्-काले मेघों से भरे विशाल वन को; इरै कण्टु-जरा देखकर; इवण् मीळ्वेन्-यहाँ लौट आऊँगा; अँन्ऱान्-कहा । ४३७

श्रीराम शिथिल होनेवाली माता के पास दौड़े आये । उन्होंने माता को नमस्कार करके उन्हें अपने हाथों में पकड़कर उठाया । सुमित्रा के मन को जो दुख तलवार के समान काट रहा था उसे हटाने का उपाय करने के विचार से श्रीराम ने उनसे कहा कि माताजी ! तलवार-धारी राजाओं के राजा, अपने पिता को मैं असत्यभाषी बनाना नहीं चाहता । वह मुझे असह्य होगा । इसलिए वन में, जहाँ काले मेघ मँड़राते रहते हैं, जाऊँगा; उसको जरा देखूँगा और यहाँ लौट आऊँगा । ४३७

कान्पुक् किडित्तुङ् गडल्पुक्किडि नुङ्ग लिप्पेर्
वान्पुक् किडिन् मँनक्कन्नवै माण योत्ति
यान्पुक्क दौक्कु मँनैयार्नलि हिर्कु मीट्टार्
ऊन्पुक् कुयिर्पुक् कुणर्पुक्कुलै यर्क वँन्ऱान् 438

कान् पुक्किटित्तुम्-वन-गमन करूँ; कटल् पुक्किटित्तुम्-समुद्र-प्रवेश करूँ; कलि पेर् वान् पुक्किटित्तुम्-शब्दाधार बड़े आकाश में पहुँच जाऊँ; अँतक्कु-मेरे लिए; अन्तवै-वे सब; माण् अयोत्ति-महिमायुक्त अयोध्या में; यान् पुक्कुत्तु ओक्कुम्-मेरे जाने के समान ही होंगे; अँतै नलिकिर्कुम्-मुझे दुख देने की; ईट्टार्-शक्ति रखनेवाले; यार्-कौन है; ऊन् पुक्कु-शरीर के अन्दर प्रवेश करने; उयिर् पुक्कु-प्राणों के अन्दर प्रवेश करने; उणर् पुक्कु-आत्मा के अन्दर प्रवेश करने (दुख को) देकर; उलैयर्क-वेदना का अनुभव मत कीजिए; अँन्ऱान्-कहा । ४३८

माताजी मेरे लिए जंगल जाना क्या ? समुद्र में प्रवेश, शब्दागार आकाश में गमन, सब अयोध्यावास के समान ही होंगे । कहीं भी मेरा अहित कर सकनेवाला कौन होगा ? इसलिए आप दुख को अपने शरीर, प्राण और आत्मा तक को पीड़ा पहुँचाने मत दीजिए । आप चिन्ताग्रस्त न हों । —श्रीराम ने आश्वासन दिया । ४३८

तायार् इहिला डनैयार्इहिन् डार्ह डम्बाल्
तोयार्इ हिन्ऱा रँनच्चिन्दयि तित्तु तेरु
नोयार्इ हिन्ऱा वुयिर्पोल नुडङ्गि डैयार्
मायाप् पळिया डरवर्कलै येन्दि वन्दार् 439

आइक्किलाळ् ताय् तन्नै-(दुख-) सहन न कर सकनेवाली (वि-) माता को; आइक्किन्शरकळ्-धीरज बंधानेवाले; तम् पाल्-उन (भाइयों) के पास; ती आइक्किन्शर अंत-आग बुझानेवाले, जैसे; चिन्तैयिन् निन्ऱु तेइ-चिन्ता (दुख) से मुक्त कराने के लिए धीरज बंधाने पर भी; नोय्-पीड़ा-रोग से; आइक्किला-मुक्त हो धैर्य-धारण न कर सकनेवाली की; उयिर् पोल-जान के समान; नुटङ्कु-लचकनेवाली; इट्टेयार्-कमरों की (दासियाँ); मायात पळियाळ्-अमरअपयश-पात्र; तर-(श्रीराम के पास) देने के लिए, दिये गये; वरुक्लै-वल्कल को; एन्ति वन्तार्-ले आई। ४३६

अधीर माता सुमित्राजी की दुखाग्नि को श्रीराम और लक्ष्मण शान्त करने का प्रयास करने लगे। पर उनकी जान उस दुखरोग से मुक्त न हो सकी और क्षीण होती गई। तब उनकी ही जान के समान कृशकटि वाली दासियाँ, अमिट कलंकिनी कैकेयी द्वारा दिये हुए वल्कल लिये हुए आई। ४३९

कार् वान्	मीप् पान्	इत्तैक्काण्डौरुम्	काण्डौरुम्	पोय्
नीरा	युहक्कण्	णिनुर्नैज्ज	ळिहिन्ऱु	नीरार्
पेरा	विडरुप्पट्	टयलारु	पीळै	कण्डुम्
तीरा	मन्तता	डरवन्दन	शीर	मैन्शार् 440

कार् वान् मीप् पान् तन्नै-काले मेघ-सम (श्रीराम) को; काण् तौरुम् काण् तौरुम्-ज्यों-ज्यों देखतीं त्यों-त्यों; कण्णिनुम् नीर् आय् उक्-आँखों से आँसू बहाते हुए; नैज्ज पोय् अळिक्किन्ऱु नीरार्-मन अति व्याकुल होकर; पेरात इट्ट पट्टु-अदम्य दुख के वश में होकर; अयलार् उ-अन्यों की सही हुई; पीळै कण्डुम्-पीड़ा देखकर भी; तीरात मन्तता तर-(अपने संकल्प से) न हटनेवाले मन की (कैकेयी) के देने से; वन्तन चीरम्-आये हैं, ये चीर; अन्शार्-कहा। ४४०

वे भी काले मेघ के समान रहनेवाले श्रीराम को देखकर दुख से भर गई। ज्यों-ज्यों वे उन पर दृष्टि डालती त्यों-त्यों उनकी आँखों से आँसू बहने लगते। कम न होनेवाले दुख से पीड़ित उन्होंने कहा कि दूसरों का दुख करना देखकर भी जिसका मन अपने बुरे और कठोर संकल्प से नहीं हटता ऐसी कैकेयी ने ये चीर दिये हैं। उनकी आजानुसार हम इन्हें इधर लाई। ४४०

वाणित्	तिलनन्	नहैयार्हळै	वळ्ळ	इविम्
याणर्त्	तिरुना	डिळप्पित्तव	रीन्द	वैल्लाम्
पूणप्	पिउन्दानु	निन्ऱान्तु	पोर्वि	लोडुम्
काणप्	पिउन्देनु	निन्ऱेन्नवै	काट्टु	मैन्शार् 441

वळ्ळल् तम्पि-प्रभु के भाई (या उदारमन लघुभ्राता); वाळ् नित्तिलम्-उज्ज्वल मोती-सम; नल् नकैयार्कळै-अच्छे दाँत वालियों की (देखकर); याणर् तिरुनाट्टु-आमदनीवाले विभवशील राज्य से; डिळप्पित्तवर्-जिन्होंने (श्रीराम को) वंचित कराया; ईन्त अल्लाम्-वे जो भी देते हैं; पूण पिउन्तानुम्-उन्हें स्वीकार

करने के लिए जो पैदा हुए हैं, वे; निन्त्रात्-इधर विद्यमान हैं; पोर् विल्लोटुम्-युद्धधनु के साथ; अतु काण पिन्नेत्तुम्-उसको देखते चुप रहने के लिए जो जन्मा हैं, वह मैं भी; निन्नेत्-इधर खड़ा रहता हूँ; अवै काट्टुम्-उनको दिखाओ; अन्त्रात्-कहा । ४४१

प्रभु के छोटे भाई लक्ष्मण ने सुन्दर मुक्तातुल्य दाँत वाली उनसे कहा— अच्छी आमदनी वाले विभवशील राज्य से जिन्होंने मेरे भाई को वचित किया वे जो भी (भला-बुरा) भेजती हैं उनको अंगीकार करने के लिए मेरे भाई श्रीराम, मानो इसी के लिए पैदा हुए हों, ऐसे तैयार खड़े हैं । इधर मैं भी खड़ा हूँ, अपना धनुष व्यर्थ ढोते हुए उसको देखने के लिए मानो मैंने जन्म लिया हो । दिखाओ तो, सही उन चीरों को । ४४१

अन्त्रा	नवर्तन्	दत्तवादर्त्	तोडु	मेन्दि
इन्त्रा	विडर्तीर्न्	दुडनेर्हेन्	वैम्बि	राट्टि
शौन्त्रा	लडुवे	तुणैयामेन्त्	तूय	नङ्गै
पौन्त्रा	रडिमेर्	पणिन्दानव	ळुम्पु	हल्वाळ् 442

अन्त्रात्-वे; अवर्त्तन्-उनसे दिये हुए; आतरत्तोडुम् एन्ति-आदर के साथ ग्रहण करके; अम् पिनाट्टि-मेरी मातादेवी; इन्त्रा इटर् तीर्न्तु-इस कठोर दुख से छूटकर; उटन् एकु-साथ चलो; अन्त्रा चौन्त्रात्-यह कहेंगी तो; अतुवे तुणै आम्-वही मेरा सहायक होगा; अन्त्रा-कहकर; तूय नङ्कै-पवित्रमना देवी के; पौन्त्रा अर् अटि मेल्-सुन्दरता-युक्त चरणों पर; पणिन्त्रात्-नमस्कार किया; अवळुम् पुकल्वाळ्-वे भी बोलीं । ४४२

लक्ष्मण ने उनसे दिये गये चीरों को आदर के साथ स्वीकार किया । फिर अपनी माता से बोले । माताजी ! आप दुख छोड़कर यह कहेंगी कि 'तुम भी श्रीराम के साथ जाओ', तो वह मेरे लिए बड़ा उपकार होगा । यह कहकर उन्होंने अपनी माता के सुन्दर चरणों पर अपना मस्तक रखा । माता ने भी (यों) कहा । ४४२

आहाद	दन्त्रा	लुनक्कव्वन्	मिव्व	योत्ति
माहाद	लिराम	तम्मन्त्रवन्	वैय	मीन्दुम्
पोहावुयिर्त्	तायर्न्	पूङ्गुळ्	चीदै	येन्त्रे
एहायिनि	यिव्वयि	निर्त्तुलु	मेद	मेन्त्राळ् 443

उनक्कु-तुम्हारे लिए; अ वन्त्रम्-वह वन; इ अयोत्ति-यह अयोध्या है; आकाततु अन्त्र-अयोग्य स्थान नहीं है; मा कातल् इसमन्-तुम्हारे प्रति अधिक प्रेम रखनेवाला श्रीराम; नम् मन्त्रवन्-हमारे पिता; वैयम् ईन्तुम्-राज्य दूसरों को देने के बाद भी; उयिर् पोकात-जो प्राण विमुक्त नहीं है; तायर्-वे माताएँ (कौसल्या और मैं); नम् पू कुळल् चीत्ते-हमारी पुष्पालंकृत केश वाली सीता; अन्त्र-यह मानकर; एकाय्-तुम चलो; इत्ति-अब; इ वयिन्-इस स्थान पर; निर्त्तुलुम्-खड़ा रहना भी; एतम्-अपराध है; अन्त्राळ्-कहा । ४४३

बेटे ! जाओ । उस वन को अयोध्या मानकर जाओ । वह ठीक स्थान नहीं है —ऐसा समझकर मत जाओ । तुम्हारे ऊपर अपार प्रेम रखने वाले इन श्रीराम को अपने राजा-पिता मान लो । श्रीराम को राज्यहीन देखने पर भी उसकी माताएँ हम जीवित हैं । तुम पुष्पालंकृत केश वाली सीता को अपनी माता मान लो । जाओ । आगे यहाँ खड़ा रहना भी अपराध होगा । सुमित्रा ने इतना कहा । ४४३

पिन्नुम्	पहरवाण्	महनेयिवन्	पिन्शं	इम्बि
अंत्तुम्	पडियन्	इडियारिन्	मेवल्	शैय्दि
मन्नुन्	नहर्क्के	यिवन्	वन्दिडिन्	वाव
मुत्तम्	मुडियेन्	उत्तळ्पात्तुमुलै	शोर	निन्ऱाळ् 444

मुलै पाल् चोर-स्तनों से दूध के स्रवते; निन्ऱाळ्-जो रहीं वे; पिन्नुम्-और भी; पक्क्वाळ्-बोलीं; मक्कत्ते-पुत्र; इवन् पिन् चैल्-इसके पीछे जाओ; तम्पि अंत्तुम् पटि अन्ऱु-(छोटे) भ्राता के रूप में नहीं; अडियारिन्-दास से भी बढ़कर; एवल् चैय्ति-सेवा करो; मन्नुम् नक्क्कु-स्थायी इस नगर को; इवन् वन्दिडिन्-यह आएगा तो; वा-तुम भी आओ; अतु अन्ऱेल्-वह नहीं हो तो; मुत्तम् मुटि-उसके पहले तुम काम आ जाओ; अन्ऱत्तळ्-कहा । ४४४

वात्सल्य के कारण अपने स्तनों से दूध को वहने देते हुए वे चिन्ताहृत सुमित्रा और भी बोलीं— वत्स ! इसके पीछे जाओ । पर उसके भाई के नाते नहीं । उसके दास की तरह जाओ और उसकी आज्ञाओं का पालन करो । इस स्थायी नगर को वह लौट के आयेगा तो तुम भी आओ । नहीं तो तुम पहले ही उनके काम आ जाओ । ४४४

इरुवरुन्	दौळुदत्त	रिरण्डु	कन्ऱौरीइ
वैरुवरु	मावैन्तत्	तायुम्	विम्मिनाळ्
पौरुवरुड्	गुमररुम्	पोयि	नारुपुऱम्
तिरुवरैत्	तुहिलौरीइच्	चीरै	शात्तिये 445

इरुवरुम्-दोनों ने; दौळुदत्तन्-प्रणमन किया; तायुम्-माता भी; इरण्डु कन्ऱु औरीइ-दो बछड़ों से छूटकर; वैरुवरुम् आ अंत्त-दुख उठानेवाली गाय के समान; विम्मिनाळ्-रोई; पौरु अरु कुमररुम्-अप्रमेय वे कुमार भी; तिरु अरै-अपनी शोभायुक्त कमर से; तुकिल् औरीइ-वस्त्र उतारकर; चीरै चात्ति-वत्कल पहनकर; पुऱम् पोयिनार्-बाहर चले गये । ४४५

इसके बाद दोनों भाइयों ने उनको नमस्कार किया । वे भी अपने दोनों बछड़ों को एक साथ खोकर दुख करनेवाली गौ के समान रोई । अप्रतिम कुमारों ने अपनी शोभायमान कमर से वस्त्र उतारकर चीर पहन लिये । फिर वे बाहर चले गये । ४४५

❖ तान्बुनै	शीरैयैत्	तम्बि	शात्तिडत्
तेन्बुनै	तैरियलान्	शैयहै	नोक्किन्नान्
वान्बुनै	यिशैयिनाय्	मरुक्कि	लादुनी
यान्बुह	रहैयदो	रुरुदि	केळैना 446

तान् पुनै चीरैयै-जैसे स्वयं आपने वल्कल पहना वैसे ही; तम्पि चात्तिड-अपने छोटे भाई को भी पहनते (देख); तेन् पुनै तैरियलान्-शहद से युक्त मालाधारी राम ने; चैय्क नोक्किन्नान्-उनका वह काम देखकर; वान् पुनै इचैयिताय्-आकाश तक व्याप्त यशस्वी; यान् पुकल्-मेरी अब कथनीय; तर्कैयतु ओर् उरुति-उचित एक हितवचन; नी मरुक्किलानु-तुम बिना असहमत हुए; केळ-सुनो; अना-कहकर । ४४६-

जब श्रीराम ने देखा कि वे जैसे वल्कल चीर पहन रहे हैं वैसे ही लक्ष्मण भी पहन रहे हैं, तो शहदभरी पुष्पमाला-धारी उन्होंने उनसे कहा—आकाश तक व्याप्त यश वाले, लक्ष्मण ! मेरा कहना सुनो । मैं बहुत ही उचित एक हितवचन कह रहा हूँ । मान जाओ । ४४६

❖ अन्नय	रत्तैवरु	माळि	वेन्दनुम्
मुन्नय	रल्लर्वन्	दुयरिन्	मूळ्हिनार्
अन्नयुम्	बिरिन्दन	रिडरु	रावहै
उन्न(य)नी	यैन्वोरुट्	दुदवु	वार्यैन्नान् 447

अन्नैयर् अतैवरुम्-माताएँ सभी; आळि वेन्तनुम्-और चक्रवर्ती; मुन्नैयर् अल्लर्-पहले की-सी स्थिति में नहीं; वैम् तुयरिल्-कठोर दुख में; मूळ्हिनार्-डूबे हुए हैं; अन्नैयुम् पिरिन्दन-मुझसे भी बिछड़े हुए है; इटर् उरा वकै-वे संकट न पाएँ, इसलिए; अन्न पोरुट्-मेरे लिए; उन्नै नी उतवुवाय्-तुम अपने को समर्पित करके सहायता करो; अन्नान्-कहा । ४४७

वह क्या है —उसे भगवान ने व्यक्त कहा । हमारी माताएँ और पिता, चक्रवर्ती पहले की-सी स्थिति में नहीं हैं । वे अब बहुत दुख-पीड़ित हैं । तिस पर मैं ही छोड़कर जानेवाला हूँ और मेरा वियोग उन्हें और भी दुख देगा । तुम इनको दुखी होने से बचाने के लिए यहीं रह जाओ और अपने को उनके सहायक रूप में उनको समर्पित कर लो । ४४७

❖ आण्डहै	यम्मोळि	यरुळ	वन्वनुम्
तूण्डहु	तिरळ्पुयन्	दुळङ्गत्	तुण्णैना
मीण्डदो	रुयिरिडै	विम्म	विम्मुवान्
ईण्डुत्तक्	कडियत्तेन्	पिळैत्त	दियादेना 448

आण् तके-पुरुषश्रेष्ठ के; अ मीळि अरुळ-वह वचन कहने की कृपा करने पर; अन्नपत्तुम्-उनसे अचल प्रेम करनेवाले लक्ष्मण; तूण् तकु-स्तम्भ-सम; तिरळ् पुयम्

तुलङ्क-कंधों को हिलाते; तुण अँना-एक दम ठिठककर; मीण्टु ओर् उयिर्-चलते-चलते वची जान; इटं विम्भ-फिर चलनेवाली बनी हो, जैसे; विम्भुवान्-सिसककर; अटियनेत्-दास मुझसे; ईण्टु-अव; उनक्कु पिळ्ळैतु यातु-आपके प्रति हुआ अपराध क्या है; अँता-कहकर । ४४८

जब पुरुषोत्तम ने यह वाक्य कहा तो उन पर अपार प्रेम रखनेवाले लक्ष्मण रोने लग गये । उनकी सिसकियों से उनके स्तम्भसम कंधे भी हिलने लगे । चलती-चलती जो वची थी वह उनकी जान फिर चली जायगी ऐसी स्थिति का अनुभव करते हुए उन्होंने रोते-रोते अपने भाई से पूछा कि प्रभु ! दास द्वारा अव क्या अपराध हो गया है ? । ४४८

नीरुळ वैनिनुळ मीनु नीलमुम्, पारुळ वैनिनुळ यावुम् पार्ष्पुडित्
नारुळ तनुवुळाय् नानुज् जीदयुम्, आरुळ रैनिनुळ मरुळु वार्येना 449

नीर् उळ अँतिन्-(जलाशय में) जल रहा तो; मीनुम् नीलमुम् उळ-मछलियाँ और नीलोत्पल आदि पुष्प होंगे; पार् उळ अँतिन्-भूमि रही तभी तो; यावुम् उळ-सभी वस्तुएँ हैं; पार्ष्पु उडित्-सोचकर देखिए तो; नार् उळ-दोरे सहित; तनु उळाय्-धनु वाले; नानुम् चीतैयुम्-मैं और सीताजी; आर् उळर् अँतिन्-कौन रहेंगे तो; उळम्-जीवित रहेंगे; अरुळुवाय्-श्रीवचन कहो; अँता-कहकर । ४४९

आप ही सोचकर देखिए । जल रहा तो जलाशयों में मछलियाँ रह सकती हैं, नीलोत्पल आदि फूल भी पनप सकते हैं । मालाधारी धनुर्धर ! भूमि रही तो सब वस्तुएँ रह सकती हैं । आप आधार नहीं रहेंगे तो मैं और सीता, किसके रहते, रह सकेंगे ? आप ही कहने की कृपा करें । यह कहकर उन्होंने आगे भी कहा । ४४९

❀ पैन्दोडि	यौरुत्तिशौड्	कौण्डु	पारुमहळ्
नैन्दुयिर्	नडुङ्गवु	नडत्ति	कार्तैता
उय्न्दन	निरुन्दन	नुण्मै	कावलन्
मैन्दनैन्	रितैयशौल्	वळङ्गि	नार्येना 450

पार् मकळ्-भूमिदेवी; उयिर् नैन्तु-प्राणों के क्षीण होते; नडुङ्कवुम्-कांप रही हैं, इस रीति से; पच्चु तौटि-सुन्दर कंकणधारिणी; यौरुत्ति-एक स्त्री का; चौल् कौण्डु-वाक्य मानकर; कात् नटत्ति-जंगल जाओ; अँता-कहकर; उय्न्तत्तु इरुन्तत्तु-जीवित रहे; उण्मै कावलत्-सत्यपालक राजा; मैन्तत्-उनका पुत्र; अँतु-हूँ, इसलिये; इतैय चौल् वळङ्किताय्-ऐसा वाक्य कहा, शायद; अँता-कहकर । ४५०

राजा ने कंकणधारिणी एक नारी का वचन मानकर आपसे कह दिया कि जंगल जाओ । उससे भूमिदेवी भी प्राण क्षीण कर काँप रही हैं । इतना होने पर भी वे जीवित रहते हैं । उनका पुत्र मैं हूँ — इसीलिए आपने ऐसा वाक्य कहा — शायद ! । ४५०

❖ मारित्ति यैत्तैनी वनङ्गौळ् वार्येन, एरिन वैहुळियै यादु मुर्झरा
दारित्तै तविरहेन वैय वारणैयिन्, कूरिन सौळियिनुङ् गौडिय दामैत्त्रान् 451

मारु इति अँत्तनै—इसके अलावा कहना क्या है; ऐय-आर्य; नी वतम् कौळ्वाय्—आप वन जाएँगे; अँत्त—यह जानकर; एरिन वैकुळियै—जो चढ़ा, उस क्रोध की; यातुम् मुर्झ उरातु—(अपने विचारों के अनुसार) कुछ न करके; मारित्तै तविरक्क—शान्त होकर छोड़ दो; अँत्त—ऐसा; वारणैयिन् कूरिय—आज्ञा का वचन जो आपने कहा, उससे बढ़कर; कौडियतु आम्—कठोर है यह; अँत्त्रान्—कहा । ४५१

“आर्य ! इसके उत्तर में मैं क्या कहूँ ? जब मुझे, यह जानने पर कि आप वन जाएँगे, क्रोध हुआ और वह बढ़ने लगा; तब आपने मेरे सब इरादे व्यर्थ करते हुए आज्ञा दी कि यह क्रोध थामो और विलकुल छोड़ दो । उस आज्ञा से भी यह कथन अत्यधिक निर्मम है ।” लक्ष्मण ने दुख के साथ ऐसा कहा । ४५१

❖ शैय्दुडैच्	चैलवमो	डियादुन्	दीरुन्दैमैक्
कैदुडैत्	तेहवुड्	गडवै	योवैया
नैय्दुडैत्	तडैयलार्	नेय	मादरुहण्
मैदुडैत्	तुरैपुहुम्	मरुङ्गौळ्	वेलिनाय् 452

ऐया-आर्य; नैय् तुडैत्तु—घी मलकर; अडैयलार्—शत्रुओं की; नेयम् मादरु—प्यारी पत्नियों का; कण् मै तुडैत्तु—आँखों का अंजन पोंछकर; उरै पुकुम्—कोश में आनेवाले; मरुम् कौळ्—सशक्त; वेलित्ताय्—माला वाले; चैय् तु उडैय्—सुकृत से प्राप्त; चैल्वमोटु—राज्यविभव के साथ; यातुम्—और सभी सुख-भोगों की; तीरुन्तु—त्यागकर; अँमैयुम् कै तुडैत्तु—हमसे भी हाथ धोकर; एक कटवैयो—जा पायेंगे क्या; (अँत्त्रान्—कहा) । ४५२

“प्रभु ! घी-मला, और शत्रुओं की पत्नियों की आँखों से काजल पँछवाकर (उनकी पत्नियों को विधवा बनाते हुए शत्रुओं का संहार करके) कोश में आए हुए सशक्त भाले वाले ! आपने अपने सुकृत से प्राप्त राज्य छोड़ा; और अन्य सभी सुख-भोग छोड़े । इसके साथ क्या आप हमसे भी हाथ धोकर चले जायेंगे ? यह उचित है ?” लक्ष्मण ने अपनी बात इस आर्तवचन के साथ समाप्त की । ४५२

❖ उरैत्तवि	तिरामनौन्	रुरैक्क	नेरुन्दिलन्
वरैत्तडन्	दोळित्तान्	वदन्	नोक्किन्नान्
विरैत्तडन्	दामरैक्	कण्णिन्	मिक्कनीर्
निरैत्तिडै	यिडैविल्	नैडिदु	निर्क्किन्त्रान् 453

उरैत्त पित्—यह कहने के बाद; इरामन्—श्रीराम; औत्तुम् उरैक्क नेरुन्दिलन्—कुछ भी कह नहीं सके; वरै तट तोळित्तान्—पर्वत-सम विशाल भुजा वाले (लक्ष्मण)

का; वतनम्-वदन को; नोक्किनात्-देखते हुए; विरै-सुवासित; तट तामरै-वड़े कमल के समान; कण्णित्-आँखों से; मिक्क नीर्-बहुत निकला अश्रुजल; निरैन्त-लगातार; इट्टे इट्टे विळ्ळ-भूमि पर गिराते हुए; नैटितु निर्क्किन्नात्-बहुत देर खड़े रहे । ४५३

लक्ष्मण के ऐसे कथन के बाद श्रीराम क्या कह सकते थे ? कुछ कह नहीं पाये । पर्वतसम विशाल कंधे वाले अपने भाई के मुख को एकटक निहारते हुए खड़े ही रह गये और उनकी मुग्धयुक्त कमल के समान विशाल आँखों से आँसू टप-टप भूमि पर गिरने लगे । ४५३

✽ अव्वयि	नरशवै	यहन्ऱु	नैञ्जहत्
तैव्वमि	लिरुन्दव	मुनिव	नैय्दिनात्
शैव्विय	कुमररुञ्	जैन्ति	ताळ्ळन्तनर्
कव्वयिन्	पैरुङ्गडल्	मुनियुड्	गाल्वैत्तान् 454

अ वयिन्-उस समय; नैञ्चु अकत्तु-मन में; अव्वम् इल्-दुख का अनुभव न करनेवाले (निलिप्त); इरु तव मुनिवन्-महान तपस्वी मुनि वसिष्ठ; अरच्चु अव्व अकन्ऱु-राजसभामण्डप से निकलकर; अय्त्तिनात्-वहाँ आये; चैव्विय कुमररुम्-श्रेष्ठ कुमार; जैन्ति ताळ्ळन्तनर्-नतमस्तक हुए; मुनियुम्-मुनिवर ने भी; कव्वयिन्-दुख के; पैरु कटल्-बड़े सागर में; काल् वैत्तान्-पैर रखे । ४५४

तब दुख-सुख-निलिप्त मुनि वसिष्ठजी सभामण्डप से निकलकर वहाँ आ गये । महान तपस्वी उनके चरणों पर दोनों कुमारों ने अपने मस्तक नवाये । मुनि के मन में, इनको देखकर, दुख घर करने लगा । मुनिवर ने दुख-सागर में पैर रखा । ४५४

✽ अन्नवर्	मुहत्तिनो	डहत्तै	नोक्किनात्
पौन्नरैर्च्	चीरयिन्	पौलिवु	नोक्किनात्
अैन्निन्ति	युणर्त्तुव	दैडुत्त	तुन्वत्ताल्
तन्नयु	मुणर्न्दिल	नुणरुन्	दन्मयान् 455

उणरुम् तन्नैयान्-(किसी भी विषय का) सत्व जाननेवाले स्वभाव के; अत्तवर् मुक्कत्तितोडु-उनके मुखभाव के साथ; अकत्तै-मन के भाव को भी; नोक्किनात्-देख, समझ गये; पौत् अरै-सुन्दर कमर पर; चीरैयिन् पौलिवुम्-वल्कलचीर की शोभा; नोक्किनात्-देखी; अैडुत्त तुन्पत्ताल्-उठी वेदना से; तन्नैयुम् उणर्न्तिलन्-अपना वश (अपनी सुध को) खो दिया; इत्तियुम् अैन् उणर्त्तुवतु-और क्या समझाया जाय । ४५५

तत्त्वदर्शी महर्षि वसिष्ठजी ने उनका मुख देखा, उनका मन जाना और कमर पर वल्कल की शोभा देखी । समझ गये कि क्या होनेवाला है । श्रीराम और लक्ष्मण दोनों वन जाने के लिए उद्यत हो गये । यह जानकर

मुनि के मन में अपार दुख उभर आया और वे अपनी सुध भूल गये । अब क्या बताया-समझाया जाय ? । ४५५

❀ वाळ्वित्तै	नुदलिय	मङ्ग	लत्तुनाट्
टाळ्वित्तै	यदुवरच्	चीरै	शात्तिनान्
शूळ्वित्तै	नान्मुहत्	तौरुवन्	शूळ्वित्तै
ऊळ्वित्तै	यौरुवरा	लौळ्विक्कड्	पालदो 456

वाळ्वित्तै नुदलिय-सुखमय जीवन के लिए जो बताया गया; मङ्गलम् नाळ्व-उस शुभ दिन में; ताळ्व वित्तै अतु वर-दुर्भाग्य के आने से; चीरै चार्त्तितान्-वल्कल पहन लिया; शूळ्व वित्तै-विधिविधायक; नाल् मुक्तुत्तु तौरुवन्-चतुर्मुख ब्रह्मा के; शूळ्वित्तै-उपाय का निर्णय करने पर भी; ऊळ्वित्तै-प्रारब्ध कर्म; तौरुवरा-किसी से भी; लौळ्विक्कल् पालतो-निवारणीय है क्या । ४५६

वसिष्ठजी मन में सोचने लगे । यह क्या दुर्भाग्य और विडम्बना है ? मंगलकार्य के लिए शुभ दिन शोधा गया था । उसी दिन यह दुर्भाग्य हुआ और श्रीराम को वल्कल पहनना पड़ गया । चतुर्मुख ब्रह्माजी भी स्वयं कोई कार्य निर्णय क्यों न करें, जब विधि प्रबल है तो किसी से भी वह टाली न जा सकेगी । ४५६

वैव्वित्तै	यवडर	विळ्ळिन्द	दैयुमन्
रिव्वित्तै	यिवन्वयि	तैय्दड्	पाड्ळुमन्
रैव्वित्तै	निहळ्ळुन्ददो	वेव	रैण्णमो
शैव्विदि	तौरुमुडै	तैरियुम्	विन्तैन्ता 457

इ वित्तै-यह कृत्य; वैम् वित्तैयवळ्-बुरे कार्य करनेवाली के; तर-कराने से; विळ्ळिन्तुम् अन्ड-फलीभूत हुआ भी नहीं; इवन् वयिन्-इन (पुण्य-मूर्ति) का; अयत्तल् पाड्ळुम् अन्ड-होने योग्य भी नहीं है; अँ वित्तै निकळ्ळुन्ततो-(इसका हेतु) कौन सा दुष्कर्म हुआ है; एवर् अँण्णमो-किसका पडयन्त्र है; पित्त-वाद; औरु मुरै-एक तरह से; चैव्वित्तित् तैरियुम्-साफ विदित होगा; अँता-यह सोचकर । ४५७

अब श्रीराम वल्कल पहनकर जो वन में जा रहे हैं, यह विधान क्रूर-कर्मिणी कैकेयी के कार्य का फल नहीं है ! ये पुण्यमूर्ति हैं और वे ऐसे कष्ट के लिए अर्ह नहीं हैं । फिर यह किस कर्म का फल है ? इसका हेतु क्या हुआ है ? किसकी करनी का यह फल है ? यह सब, पीछे समय पड़ने पर साफ-साफ प्रकट हो जायगा । ऐसा सोचते हुए— । ४५७

❀ विड्डुडन्	दामरैच्	चैड्गै	वीरत्तै
उड्डुडन्	दैयनी	यौरुवि	योड्गिय
कड्डुडन्	गाणुदि	यैन्निड्	कण्णहन्
मड्डुडन्	दानयान्	वाळ्विहि	लान्तेन्तान् 458

विल्-धनुर्धर; तट तामरै-विशाल कमल-सम; चैम् कै-लाल हस्त वाले; वीरतै उरु अटैन्नु-वीर के बहुत पास जाकर; ऐय-आर्य; नी औरवि-आप (इस राज्य को) छोड़कर; ओड्किय कल्-उन्नत चट्टानों के; तटम् काणुति अँन्नित्-जंगल जायेंगे तो; कण् अकल्-विस्तृत; मल् तट तातैयान्-मल्लों की बड़ी सेना के स्वामी (हमारे राजा); वाळ्किलान्-जीवित नहीं रहेंगे; अँन्नान्-कहा । ४५८

वे धनुर्धर विशाल कमलहस्त श्रीराम के पास आये । 'आर्य ! आप यह राज्य छोड़कर ऊँचे पर्वतों वाले वन में चले जायेंगे तो मल्लयुद्ध-कुशल वीरों की बड़ी सेना के स्वामी आपके पिता जीवित नहीं रहेंगे ।' —वसिष्ठ ने श्रीराम से कहा । ४५८

ॐ अन्नवन्	पणितलै	येन्दि	याड्डुदल्
अँन्नदु	कडनव	निडरै	नीक्कुदल्
निन्नदु	कडनिदु	नैरियु	मैन्ऱनन्
पन्नहप्	पायलुद्	पळ्ळि	नीड्गिन्नान् 459

पन्नकम् पायलुळ्-पन्नग-शय्या पर से; पळ्ळि नीड्किन्नान्-शयन त्यागकर आये हुए; अन्नवन् पणि-(श्रीराम ने) उनकी आज्ञा; तलै एन्ति-सिर पर धारण करके; आड्डुतल्-अदा करना; अँन्ननु कटन्-मेरा कर्तव्य है; अवन् इट्रै नीक्कुतल्-उनका दुख दूर करना; निन्ननु कटन्-आपका कर्तव्य है; नैरियुम् इतु-क्रम भी यही है; अँन्नतन्-कहा । ४५९

क्षीरसागर की पन्नगशय्या में योगनिद्रा त्यागकर जो अयोध्या में आकर श्रीराम बने थे, उन्होंने वसिष्ठजी से कहा कि मुने ! राजा की आज्ञा शिरोधार्य कर उसका पालन करना मेरा कर्तव्य-धर्म है । उनका दुख दूर करना आपका धर्म है । यही तो उचित क्रम है । ४५९

वैव्वरम्	बयिल्शुरम्	विरवैन्	शानलन्
तैव्वरम्	वनैयशीर्	रीट्टि	ताडनक्
कव्वरम्	बौरुदवे	लरश	नाय्हिला
दिव्वरन्	दरुवैन्	रेन्ऱ	दुण्डेन्नान् 460

तैव्वर् अम्पु अनैय-शत्रुओं के सायक के समान; चैल् तीट्टिताळ् तत्तक्कु- (वर के रूप में) वाक्य जिन्होंने कहा, उनको; अरम् पौस्त-रेती से रगड़े हुए; वेल्- (तीक्ष्ण) भाले वाले; अ अरचन्-उन राजा का; आय्किलानु-बिना सोचे; इ वरम् तरुवैन्-यह वर दूंगा; अँन्ऱु-ऐसा; एन्ऱु उण्डु-सम्मत होना अवश्य हुआ है; वैम् अरम् पयिल्-भयंकर रेतियों के समान रहनेवाले कंकड़ जहाँ भरे रहते हैं; चुरम् विरवु-जंगल जाओ; अँन्नान् अल्लन्-यह नहीं कहा; अँन्नान्-कहा । ४६०

वसिष्ठजी को दशरथजी को दिये गये वचन का निर्वाह करना था । इसलिए उन्होंने कहा कि दशरथ ने, जिनका भाला रेती द्वारा तीक्ष्ण बना हुआ है कैंकेयी से, जिन्होंने शत्रु के शर के समान वर के रूप में वचन कहा

था कहा अवश्य था कि वर दूंगा। पर उन्होंने यह नहीं कहा था कि आप पैर में चुभनेवाले, रेती के समान कंकड़ों से भरे जंगल में जाइए। ४६०

✽ एन्ऱन्	नैन्दयिक्	वरङ्ग	ळेविन्ताळ्
ईन्ऱवळ्	यानदु	शैन्ति	येन्दिनेन्
शान्ऱन्	निन्ऱनी	तडुत्ति	योव्न्ऱन्
तोन्ऱिय	नल्लऱ	निरुत्तत्	तोन्ऱिन्तान् 461

तोन्ऱिय नल् अरम्-प्रकटित सद्धर्म के; निरुत्त तोन्ऱिन्तान्-उत्थानार्थ जो अवतरित हुए थे, उन्होंने; अँन्तै इ वरङ्कळ् एन्ऱन्तन्-मेरे पिता ये दोनो वर देने को सम्मत हुए; ईन्ऱवळ् एविन्ताळ्-जननी माता ने आज्ञा की; यान् अतु चैन्ति एन्तिनेन्-मैंने सिर पर धारण की; चान्ऱु अँन्-साक्षीभूत; निन्ऱ नी-विद्यमान आप; तडुत्तियो-रोकेंगे क्या; अँन्ऱान्-कहा। ४६१

सनातन धर्म के उत्थान के लिए अवतरित हुए श्रीराम ने इसके उत्तर में कहा कि मेरे पिताजी ने वर दिये। मेरी जननी माता ने मुझे वन जाने की आज्ञा की। मैंने उसको शिरोधार्य कर लिया। साक्षी रूप में विद्यमान आप बीच में पड़कर मुझे रोकेंगे क्या ?। ४६१

✽ अँन्ऱपिन्	मुनिवन्तीन्	ऱियम्ब	नेर्न्दिलन्
निन्ऱन्	नैडुङ्गणीर्	निलत्तु	नीर्त्तुहक्
कुन्ऱन्	तोळवन्	ऱौळ्दु	कौर्ऱवन्
पौन्ऱिणि	नैडुमदिल्	वायिल्	पोयिनान् 462

अँन्ऱ पिन्-यह कहने के बाद; मुनिवन्-महर्षि; औन्ऱु इयम्प नेर्न्तिलन्-कुछ कह नहीं पाये; नैडु कण् नीर्-अधिक अशु; नीर्त्तु निलत्तु उक-धारा के रूप में भूमि पर गिरा; निन्ऱन्तन्-(गिराते हुए) खड़े रहे; कुन्ऱ अन्त तोळ् अवन्-पर्वत-सम कन्धे वाले श्रीराम; तौळ्दु-नमस्कार करके; कौर्ऱम्-विजयशील; वल्-मजबूत; पौन् तिणि-स्वर्णखचित; नैडु मतिल्-लम्बे प्राचीर के; वायिल्-द्वार से होकर; पोयितान्-जाने लगे। ४६२

श्रीरामजी के ऐसा कहने के बाद वसिष्ठजी क्या कहते ? उनके पास कहने को कुछ नहीं था। इसलिए आँखों से आँसू की धारा बहाते हुए, जो भूमि पर गिर रही थी; स्तम्भित-से खड़े रह गये। तब पर्वतोन्नत कन्धे वाले श्रीराम उनको नमस्कार करके, विजयी, सुदृढ़ और स्वर्णखचित प्राचीर के द्वार से होकर जाने लगे। ४६२

शुर्ऱिय	शीरयन्	ऱौडरुन्	दम्बियन्
मुर्ऱिय	वुवहयन्	मुळरिप्	पोदिनुम्
कुर्ऱमिन्	मुहत्तिनन्	कौळ्है	कण्डवर्
उर्ऱदै	यौरुवहै	युणर्त्तु	वामरो 463

चुरुरिय चीरैयत्-लपेटा हुआ बल्कल वाले; तौटरुम् तम्पियत्-पीछे लगे भाई सह; मुर्ुरिय उवकैयत्-पूर्ण-आनन्दित; मुळरि पोत्तिनुम्-नीरज पुष्प से अधिक (सुन्दर); कुरुरम् इल्-निर्मल; मुक्कत्तित्तत्-मुख वाले; कौळक्क- (उनका) मनोभाव; कण्टवर्-जिन्होंने जाना, वे; उर्ुरतै-जिस स्थिति को पहुँच गये; और वक्क- (उसको) एक प्रकार से; उणर्त्तुवाम्-बताएंगे । ४६३

श्रीराम की कमर में बल्कल वेष्टित था । भाई लक्ष्मण उनके पीछे जा रहे थे । वे आनन्दपूर्ण थे । उनका मुख कंजपुष्प से बढ़कर सुन्दर था । उनका मुखभाव निर्मल था । ऐसे श्रीराम के मनोभाव को समझ कर लोगों की जो दशा हुई उसका वर्णन अब करेंगे । ४६३

ॐ अन्दण ररुन्दव रवन्ति कावलर्, नन्दलि नहरुळोर् नाट्टु ळोर्हडम्
शिन्दयैत् पुह्लवदु तेव रुळ्ळमुम्, वैन्दत्तर् मेल्वरु मुरुदि वेण्डलर् 464

तेवरुम्-देवता भी; मेल् वरुम् उरुति-आगामी हित; वेण्डलर्-नहीं चाहते हुए; उळ्ळम् वैन्तत्तर्-चिन्ताकुलित हुए; अन्तणर्-ब्राह्मण; अरु तवर्-उत्तम तपस्वी; अवनि कावलर्-अवनिपति; नन्तल् इल् नकर् उळोर्-अक्षय नगरवासी; नाट्टु उळोर्कळ् तम्-और कोसलदेश-वासी, इन सबके; चिन्तै-मन की स्थिति; अँत् पुक्कल्वतु-क्या कही जाय । ४६४

स्वयं देवता भी अपने भावी का हित भूलते हुए दुख से झूलसे । ब्राह्मण, मुनि, राजा और अक्षय उस नगर के वासी और कोसल देश के सारे प्रजाजन —सबके मन की स्थिति का क्या कहा जाय ? । ४६४

ऐयनैक्	काण्डलु	मणङ्ग	नारैलाम्
मौय्यिळन्	वळिर्हळान्	मुळरि	मेल्विळुम्
मैयलित्	मदुहरड्	गडियु	माईनक्
कंहळित्	मदर्नैडुड्	गण्णि	तैर्त्तिनार् 465

अणङ्कु अन्तार् अँल्लाम्-देवियों के समान रहनेवाली सब स्त्रियों ने; ऐयनै काण्डलुम्-आर्य को देखते ही; मुळरि मेल् विळुम्-कमलपुष्प पर मँड़रानेवाले; मैयल् मतुकरम्-मधुमत्त मधुकरों को; मौय् इळ तळिर्कळाल्-घने मृदु पल्लवों से; कटियुम् आरु अँत-मार भगाते हों, जैसे; कँकळित्-अपने हाथों से; मत्तर् नैट्टु कण्णिन्-मत्त आयत आँखों पर; अँर्त्तिनार्-पीट लिए । ४६५

सुरस्त्री-सदृश नगर की स्त्रियों ने श्रीराम को इस वेष में देखते ही अपने हाथों से अपनी मत्त और लबी आँखों को पीट लिया, मानो वे अपने मुखकमलों से मत्त मधुकरों को मृदुल पल्लवों से मारकर भगा रही हों । ४६५

तम्मुयु	मुणर्न्दिलर्	तणप्पि	लन्बिनाल्
अम्मयि	निरुवित्तै	यहर्इ	वोवन्डैल्

विम्भिय	पेरुयिर्	मीण्डिला	मैहील्
शैम्मरन्	डादयिर्	चिलवर्	मुन्दितार् 466

चिलवर्-कुछ लोग; तणप्पु इल् अन्निपिनाल्-अभंग प्रेम के कारण; तम्मैयुम् उणरन्तिलर्-अपनी सुध खोकर; चैम्मल् तन् तन्तेयिन्-प्रभु के पिता दशरथ के भी; मुन्तितार्-पहले (स्वर्ग) गये; अम्मैयिन्-परवर्ती; इरु विन्नै अकड्डवो-दोनों (पाप-पुण्य-)कर्म निवारणार्थ; अन्नेल्-नहीं तो; विम्भिय पेर् उयिर्-बाहर निकले प्राण; मीण्डु इलामै कौल्-लौट नहीं आये, इसलिए क्या । ४६६

कुछ लोग श्रीराम के प्रति अभंगप्रेम के कारण सुध-बुध खो गये और दशरथ के पहले ही स्वर्गवासी हो गये । उनका ऐसा प्राणत्याग कर्मबन्धन काटने के लिए था ? या उनके प्राण जो अकस्मात् हुए दुख के कारण बाहर निकले लौट नहीं आये ? यानी वे जान-बूझकर मरे या अवश ही मर गये ? मालूम नहीं । ४६६

विळुन्दत्तर्	शिलर्शिलर्	विम्भि	विम्भिमेल्
अळुन्दन्	शिलर्मुहत्	तिळिह	णोरिडै
अळुन्दितर्	शिलर्पदैत्	तळह	वल्लियिन्
कौळुन्दन	लुड्डैन्	तुयर्ड	गूरुहिनडार् 467

चिलर् विळुन्तत्तर्-कुछ लोग गिरे; चिलर्-कुछ लोग; विम्भि विम्भि-सिसक-सिसक कर; मेल् अळुन्तत्तर्-दुख के साथ उठे; चिलर्-(अन्य) कुछ; मुक्कत्तु इळि-मुख से निकलनेवाले; कण् नोर् इटै अळुन्तितर्-अश्रुजल में डूब गये; चिलर्-कुछ; पत्तेत्तु-तड़पकर; अळकम् वल्लियिल्-केश-लता पर; कौळुन्तु अत्तल् उड्डाल् अत्त-अग्नि की ज्वाला लग गई, जैसे; तुयर्म् कूरुकिन्डार्-दुख से भर जाते । ४६७

कुछ लोग रोते हुए गिरे; कुछ लोग सिसकते हुए उठे; कुछ लोग अपनी आँखों से बही अश्रुधारा में डूब गये । कुछ लोग ऐसे तड़प उठे मानो उनकी केश-लता पर आग लग गई हो; अपार दुख से उद्विग्न हुए । ४६७

करुम्बन्	मौळियवर्	कण्व	त्तिकिलर्
वरम्बरु	तुयरिनान्	मयड्गि	येकौलाम्
इरुम्बन्	मन्तत्तव	रैन्त	निन्डत्तर्
पेरुम्बोरु	ळिळन्दवर्	पौलुम्	बैड्डियार् 468

करुम्पु अन्त मौळियवर्-ईक्षु (-रस) समान भाषण वाली कुछ स्त्रियाँ; पेरु पौरुळ्-बड़ा धन; इळुन्तवर् पौलुम्-खो चुकी हों, जैसे; बैड्डियार्-ऐसी अवस्था में पड़कर; कण् पत्तिकिलर्-आँखों से आँसू न निकालतीं; इरुम्पु अन्त-लोहे के समान; मन्तत्तवर् अन्त-मन वाली हों, ऐसा; निन्डत्तर्-अकम्पित खड़ी रहीं; वरम्पु अरु-निस्सीम; तुयरिनाल्-दुख से; मयड्किये कौल् आम्-चकित हो गई, इसलिए ही । ४६८

इक्षुरसमधुर बोली वाली कुछ स्त्रियाँ ऐसे निस्तब्ध खड़ी हो गईं मानो उनका सारा धन खो गया हो। उनकी आँखों से अश्रु नहीं निकला। देखनेवाले को यही लगता कि उनका दिल लोहे का बना है। वे इसलिए ऐसे खड़ी रहीं कि श्रीराम पर अपार प्रेम के कारण वे संज्ञाशून्य हो गईं। ४६८

नक्कन वुटलुयिर् निलैयि तिन्रिल, इक्कण मिक्कण मेन्तुन् दन्मय
पुक्कन पुत्तन पुण्णिर् कण्मलर्, उक्कत नोर्वउन् दुदिर वारिये 469

उटल् नैक्कत—(कुछ लोगो के) शरीर ढीले हो गये; उयिर् निलैयिल् तिन्रिल—प्राण स्थिर न रहे; इ कणम्—इसी क्षण; इ कणम्—इसी क्षण (चले जायेंगे); मेन्तुन् तन्मैय—ऐसी स्थिति वाले; पुत्तन पुक्कन—बाहर निकले और भीतर आये; कण् मलर्—नेत्रपुष्पों ने; नोर् वउन्तु—जल सूखकर; पुण्णिन्—व्रणों के समान; उतिरम् वारि—रक्तधारा; उक्कत—बहाई। ४६९

कुछ लोगों के शरीर ढीले हो गये। उनके प्राण डगमगाने लगे। प्राण अभी निकले, इसी क्षण निकले—ऐसी स्थिति उनकी हो गई। असल में जान बाहर जाती फिर भीतर प्रवेश करती—ऐसी लगी। आँखों में जल नहीं रहा; वे शुष्क हो गईं। वे व्रण के समान रक्त की धारा बहाने लगीं। ४६९

इरुक्कैयिर्	करिनिह	रेण्णि	उन्दवर्
पैरुहैयिर्	पैयर्त्तनर्	तलैयैप्	पेणलर्
औरुक्कैयिर्	कौण्डन	रुट्टु	हिन्ऱनर्
चुरिहैयिर्	कण्मलर्	चून्ऱ	नीक्किनार् 470

इरु कैंयिन् करि निकर्—दो सूँड़ों वाले हाथी के समान; ऐण् इउन्तवर्—असंख्यक; तलैयै पेणलर्—अपने सिर की परवाह न करके; पैरु कैंयिन् पैयर्त्तनर्—अपने बड़े हाथ से घुमाकर, नोचकर; औरु कैंयिल् कौण्डनर्—एक हाथ में लिये; उरुट्टुकिन्ऱनर्—(गेंद की तरह) लुढ़काते; कण् मलर्—आँख-फूलों को; चुरिकैंयिन्—कटार से; चून्ऱ—निकालकर; नीक्किनर्—फेंक देते। ४७०

अनेक वीर थे जो दो सूँड़ों वाले हाथी के समान थे और जिन्होंने अपने सिर का भला ही नहीं सोचा पर अपने ही हाथ से उसे घुमाकर तोड़ लिया। वे उसे अपने एक हाथ में लेकर, गेंद के समान उससे खेलने लगे। ऐसे वीर भी थे जिन्होंने अपनी कटार से अपनी कमल-सी आँखें नोचकर निकाल ली। ४७०

शिन्दिन	वणिमणि	शिदरि	वीळ्न्दन
पैन्दुणर्	मालयिर्	परिन्द	मेहलै

नन्दिनर्	नहैयोळि	विळक्क	नङ्गैमार्
सुन्दर	वदनमु	मदिक्कुत्	तोड्डवे 471

नङ्कैमार्-स्त्रियों के; अणि चिन्तित-आभरण छितरे; मणि चित्ति वीळ्न्त-रत्न गिरकर बिखरे; पच्चु तुणर् मालैयिन्-ताजे गुच्छों की माला के समान; मेकलै परिन्त-मेखलाएँ टूटीं; नकै ओळि विळक्कम्-मुस्कुराहट की आभा से; नन्तिनर्-हीन हुई; चुन्तर वतनमुम्-उनके सुन्दर आनन भी; मतिकु तोड्डत्त-चन्द्र के सामने हार गये । ४७१

स्त्रियों के आभरण बिखर गये । उनके रत्न बिखर गये । ताजे फूल के गुच्छों की माला के समान मेखलाएँ टूटकर अलग हो गई । उनके मुख से मन्दहास की शोभा दूर हो गई । उनके सुन्दर वदन अब चन्द्र के सामने हार गये । ४७१

❖ अरुपदि	नायिर	ररशन्	रेवियर्
मरुवरु	कड्पित्तर्	मळैक्कण्	णीरिनर्
गिरुवनैत्	तौडर्न्दनर्	तिड्न्द	वायित्तर्
अँडिदिरैक्	कडलैन्	विरड्गि	येड्गित्तार् 472

मरु अरु कड्पित्तर्-निष्कलंक पातिव्रत्य वाली; अरचन् तेवियर्-चक्रवर्ती की पत्नियाँ; अरुपतितायिरर्-साठ हजार स्त्रियाँ; मळैक्कण् नीरित्तर्-वर्षा के समान आँख के आँसू वालियाँ; तिड्न्द वायित्तर्-खुले मुख वालियाँ; चिरुवनै तौडर्न्दनर्-पुत्र (श्रीराम) के पीछे जाती हुई; अँडि तिरै कटल-तरंग फँकनेवाले समुद्र; अँन्-के समान; इरड्कि-उच्च स्वर में रोते हुए; एड्किनार्-व्याकुल हुई । ४७२

चक्रवर्ती की साठ हजार निष्कलंक पतिव्रता पत्नियाँ श्रीराम के पीछे मुख खोलकर रोते हुए, आँखों से अश्रु वरसाते हुए और लहरों से भरे समुद्र के समान उच्च दुख-रव निकालते हुए जाने लगी । ४७२

❖ कन्तिनन्	मयिल्हळुड्	गुयिड्क	णङ्गळुम्
अन्तमुञ्	जिरैयिळन्	दवनि	शेरन्दन
अँन्तवीळन्	दुळन्त्त	रिराम	नल्लदु
मन्नुयिर्प्	पुदलवरै	मड्कुम्	वैड्डिलार् 473

इरामन् अल्लतु-श्रीराम के सिवा; मड्कुम् मन् उयिर् पुतल्वरै-और अन्य प्राण-सम पुत्र; वैड्डिलार्-जिनके नहीं हुए थे, वे; कन्ति नल् मयिल्हळुम्-श्रेष्ठ बालमयूर और; कुयिल् कण्डक्ळुम्-कोकिल-समूह और; अन्तमुम्-और हंस; चिरै इळन्तु-पंख खोकर; अवनि चेर्न्तन् अँन्-भूमि पर गिरे, जैसे; वीळ्न्तु-गिरकर; उळ्न्त्तर्-रोई । ४७३

उनके अपने कोई पुत्र नहीं हुए थे । इसलिए वे श्रीराम पर प्राण-सम प्यार करती थी । वे अब मोर, कोकिल और हंस पक्षहीन होकर भूमि पर गिरे जैसे नीचे गिरकर छटपटाने लगी । (देवियों की देह की

कान्ति मोर की-सी थी; स्वर कोयल का-सा और चाल हंस की-सी थी ।) । ४७३

किळैयिनु	नरम्बिनु	निरम्बुडु	गेळत्त
अळविइन्	डुयिर्प्पुविट्	टरङ्गुन्	दन्मयाल्
तौळैपडु	कुळलिनो	डियाळ्क्कुन्	दोङ्गुन्
इळैयव	रमुदिनु	मिनिय	शौङ्कळे 474

इळैयवर्-कम उम्र वाली उनकी; अमुतितुम् इतिय चौङ्कळ्-अमृत से अधिक मधुर शब्द; किळैयिनुम्-वाँसुरी-नाद से; नरम्पिनुम्-वीणा के स्वर से; निरम्पुम् केळत्त-बढ़कर मधुर (पहले) रहे; अळवु इङ्गुन्-अपार; डुयिर्प्पु विट्टु-निश्वास छोड़ते हुए; अरङ्गुम् तन्मैयाल्-विलाप करने से; तौळै पट्टु कुळलितोडु-रंघ्रसहित बाँसुरी के स्वर के सामने और; याळ्क्कुम्-वीणा के सामने; तोङ्गुन्-हार गये । ४७४

कम उमर वाली उनका स्वर अमृत से भी बढ़कर मीठा था । वह पहले बाँसुरी और वीणा के स्वर से भी अधिक श्रुतिमधुर और मनोरम होता था । पर अब, अत्यधिक निश्वास छोड़ते हुए रोती-विलापती रही । इसलिए उनका स्वर अब बाँसुरी और वीणा के स्वर के सामने हार गया । ४७४

✽ पुहलिडङ्	गौडुवनम्	बोलु	मैन्ऱुतम्
महन्वयि	निरङ्गु	महळिर्	वाय्ऱहळल्
अहन्मदि	नैडुमनै	यरत्त	वाम्बल्हळ्
पहलिडै	मलर्न्ददोर्	पळत्तम्	बोन्ऱवे 475

पुकल् इटम्-वास का स्थान; कौटु वत्तम् पोलुम्-भयंकर वन ही है क्या; अँन्ऱु-कहते हुए; तम् मकत्तु वयितु-अपने पुत्र के प्रति; इरङ्कु उरुम्-शोक करनेवाली; मकळिर् वाय्कळाल्-स्त्रियों के मुखों के दृश्य से; अकल् मतिल्-विशाल प्राचीरों के; नैटु मन्-बड़े सौध; अरत्तम् आम्पलकळ्-लाल कुमुद; पकल् इट्टे मलर्न्ततु-दिन में खिले हों (जिसमें), ऐसे; ओर् पळत्तम् पोन्ऱु-एक खेत के समान रहे । ४७५

वे अपने मुख खोलकर रो रही थी । 'क्या तुम्हारा वास-योग्य स्थान भयंकर वन ही है ?' —यह पूछती हुई वे विलाप रही थी । तब उनके खुले लाल मुखों के कारण वे सब सौध, जिनके चारों ओर चौड़े प्राचीर थे ऐसे खेत के समान लगे जिसमें रक्तकुमुद दिन में ही खिले हों । ४७५

तिडरुडैक्	कुङ्गुमच्	चेरुञ्	जान्दमुम्
इडैयिडै	वण्डलिट्	टार	मीर्त्तन

मिडैमुलैक्
कडलिडैप्

कुवडौरीइ
परन्दहट्

मेहलैत्
कलुलि

तडम्
याउरो 476

कण कलुलि आरु-अश्रुजल की नदियाँ; मिडै मुलै कुवटु औरीइ-संश्लिष्ट स्तनों के शिखरों से छूटकर; तिटर् उटैय-उन पर टीले के समान लिप्त; कुङ्कुमम् चेरुम्-कुङ्कुम का लेप; चान्तुम्-चन्दन; इटै इटै वण्टल् इट्टु-बीच-बीच में तलौछ छोड़ते हुए; आरम् ईरुत्तत्त-मोती के हारों को बहाते हुए; मेकलै तटम्-मेखला-वलयित विशाल; कटल इटै-(कटि) समुद्र में; परन्त-प्रवेश कर फैलीं । ४७६

उनकी आँखों से जो अश्रुनदियाँ निकली वे संश्लिष्ट स्तनों के शिखरों से होकर नीचे बह चली । उन पर से कुङ्कुम और चन्दन का लेप गलाकर बहा ले चलीं । इधर-उधर उसको तलौछ के रूप में छोड़ती हुई आगे बढ़ी । मोती की मालाओं को बहा ले जाकर वे मेखला-वलयित कटितट रूपी विशाल सागर में प्रविष्ट होकर फैल गईं । ४७६

तण्डलैक् कोशलत् तलैवन् मादरैक्, कण्डन तिरवियुड् गमल वाण्मुहम्
विण्डलत् तुरैयुनल् वेन्दर् कायित्तुम्, उण्डिड रुड्पो दैन्नु रादन 477

तण्डलै-उद्यानों से घिरे; कोचलम् तलैवन् मातरै-कोसल देश के राजा की पत्नियों के; कमलम् वाळ् मुकम्-कमल-सम उज्ज्वल मुख; इरवियुम् कण्टत्तन्-रवि ने (आज ही) देखे; विण् तलत्तु उरैयुम्-आकाश के वासी; नल् वेन्तर्कु आयित्तुम्-श्रेष्ठ देवेन्द्र के लिए भी; इटर् उण्टु-दुर्भाग्य होगा; उड् पोतु-जब होता है; उरातन अँन्-न आनेवाले (अपमान) क्या हैं । ४७७

उपवनों से भरे कोसल देश के अधिपति दशरथ की उन पत्नियों के मुख सूर्य ने उस दिन देख लिए । (इसके पहले सूर्य ने भी उनको नहीं देखा था ।) उनकी ऐसी संकट की दशा हो गई ! हाँ देवेन्द्र के भी दिन फिरते हैं और दुर्भाग्य का दौर हो जाता है । कौन सी दुर्गतियाँ हैं, जो तब उन्हें प्राप्त नहीं होतीं ? । ४७७

तायरुड् गिलैअरुज् जार्न्दु लारहळुम्, शैयरु मणियरुज् शिरुन्द मादरुम्
कारैरि युड्त्त रनैय कव्वयर, वायिलु मुन्त्रिलु मरैय मौयत्तनर् 478

तायरुम्-माताएँ (साठ सहल); गिलैअरुम्-अन्य रिश्तेदार; जार्न्दु उळ्ळारुक्ळुम्-उनके परिवार; चैयरुम् अणियरुम्-दूर की और निकट की; चिरुन्त मातरुम्-श्रेष्ठ स्त्रियाँ; काय् अँरि-जलनेवाली आग में; उड्त्तर् अतैय-प्रविष्ट हुई, जैसे; कव्वैयर्-दुखिनी बनकर; वायिलुम् मुन्त्रिलुम् मरैय-द्वारों और आँगनों को ढँकते हुए; मौयत्तनर्-एकत्रित हुई । ४७८

वे साठ हजार माताएँ, उनकी रिश्तेदारिनें, उनके परिवार, और दूर और पास के रिश्ते की स्त्रियाँ जलती आग में प्रविष्ट-सी दुखी होकर सौधों के द्वारों और आँगनों में आ जुट गईं । ४७८

इरैत्तन	रिरैत्तैळुन्	देङ्गि	यैङ्गणुम्
तिरैप्पेरुड्	गडलैन्त	तौडैरुन्नु	पिन्शैल
उरैप्पदै	युणरुन्दिल	नौळिप्प	दोर्हिलन्
वरैप्पुयत्	तण्णुन्	मनैयै	नोक्किन्नान् 479

इरैत्तत्तर्-शोर मचाया; इरैत्तु अळुन्नु-शोर करते हुए उठकर; अङ्कणुम्-सब ओर; तिरै पेरु कटल् अन्न-लहरों-सहित बड़े सागर के समान; पिन् तौडैरुन्नु चैल-पीछे लगे चलीं; वरै पुयत्तु अण्णल्-पर्वत-सम भुजाओं के प्रभु; उरैप्पतै उणरुन्दिलन्-(क्या) कहना (यह) जान न पाये; नौळिप्पतु ओर्किलत्-उनको रोकने का उपाय न सूझा; तन् मनैयै नोक्किन्नान्-अपने महल की तरफ (देखा) गया । ४७६

वे सब दुख का उच्च रव करते हुए, सब ओर, गर्जनयुक्त सागर के समान श्रीराम के पीछे चली । पर्वतसम भुजा वाले श्रीराम उनसे क्या कहते ? उन्हें क्या कहना है ? —यह नहीं सूझा । वे उनको रोकने का उपाय भी न सोच सके । वे चुपचाप अपने महल की तरफ जाने लगे । ४७९

✽ नन्नैडु नळिमुडि शूड नन्मणिप्, पौन्नैडुन् देर्मिशैप् पवनि पोन्वन्
तुन्नैडुज् जीरैयैच् चुर्त्ति मोण्डुम्, पौन्नैडुन् देरुविडैप् पोद नोक्किन्नर् 480

नल् नैटु नळि मुटि-उत्तम, बड़े, सम्मानित किरीट को; चूट-धारण करने के लिए; नल् मणि-चुने हुए अच्छे रत्नों से सज्जित; पौन् नैटु तेर् मिच्चै-स्वर्णमय बड़े रथ पर; पवन्नि पोन्वन्-जो वीथी-यात्रा पर गये, वे; तुन् नैटु चीरैयै-सिये हुए बल्कल को; चुर्त्ति-वेष्टित करके; मोण्डुम्-लौटकर; अ पौन् नैटु तेरु-उस उज्ज्वल वीथी के; इटै पोतल्-मध्य जाते; नोक्किन्नर्-(सबने) देखा । ४८०

श्रीराम जिस वीथी से श्रेष्ठ सुन्दर और सम्मानित किरीट पहनने के लिए रत्नजटित स्वर्णमय रथ पर वीथी-यात्रा में गये थे उसी वीथी से, बल्कलधारी बनकर पैदल जा रहे थे । इसको सबने देखा । ४८०

✽ अञ्जन	मेन्निगिक्	वळहर्	कैय्दिय
वञ्जनै	कण्डपिन्	वहिरुन्नु	नोङ्गला
नैञ्जिनुम्	वलिदुयिर्	निनैप्प	दैन्शिल
नञ्जिनुम्	वलियनन्	नलमैन्	शार्शिलर् 481

अञ्चनम् मेन्नि-काजल-सम शरीर के; इ अळकड्कु अय्यितिय-इन सुन्दर पुरुषोत्तम को प्राप्त; वञ्चनै कण्ट पिन्-वंचना को देखने के बाद; वकिरुन्नु नोङ्क अल्ला-टूटा जो नहीं; नैञ्चितुम्-उस हृदय से अधिक; उयिर् वलितु-प्राण कठोर हैं; चिल निनैप्पतु अन्न-अन्य कुछ प्रकार से सोचा क्या जाय; नम् नलम्-हमारा भाग्य; नञ्चितुम् वलितु-विष से भी क्रूर है; अन्नशार्-कहा; चिलर्-कुछ लोगों ने । ४८१

अंजनवर्ण सुन्दर पुरुष श्रीराम पर किसीकी वंचना से इतना भारी संकट आया है। यह देखकर भी हमारा हृदय टुकड़े-टुकड़े नहीं हुआ। यह बड़ा कठोर है ! उससे भी निर्मम है हमारे प्राण। अन्य प्रकारों से क्यों सोचा जाय ? हमारा भाग्य ही विष से अधिक क्रूर निकला। —ऐसा कुछ लोगों ने कहा। ४८१

❖ मण्कोडु	वरुमैन	वल्लियि	रुन्ददियाम्
अण्कोडु	शुडर्वन्नत्	तेहल्	काणवो
पेण्कोडु	विनैशैय्प्	पेड्ड	नाट्टितिल्
कण्कोडु	पिडत्तलुड्	गडैयैन्	शार्शिलर् 482

मण् कोडु वरुम् अंत-पृथ्वी साथ लेकर (मुकुट धरकर) आएँगे, यह सोचकर; याम् वल्लि इरुन्तु-हम जो राह देखते रहे, वह; अण् कोडु-हमारा हृदय लेकर; चुटर् वत्तत्तु-जलते जंगल में; एकल् काणवो-जाना देखने के लिए है क्या; पेण्-एक स्त्री; कोट वितै चैय पेड्ड नाट्टितिल्-क्रूर काम करना जहाँ सम्भव हुआ, उस राज्य में; कण् कोडु पिडत्तलुम्-आँखों के साथ जन्म लेना भी; कटै-निकृष्टता है; अन्शार् चिलर्-कहा कुछ ने। ४८२

कुछ लोगों ने कहा— हम यह विश्वास करके उनकी राह देख रहे थे कि वे 'पृथ्वी के स्वामी बनकर आयेंगे' पर वे हमारा हृदय छीनकर गरम घूप के जंगल में जा रहे हैं। क्या यही देखने के लिए हम प्रतीक्षा में बैठे थे ? इस देश में, जहाँ एक स्त्री का अनुचित रूप से क्रूर कर्म करना संभव हो गया, दृष्टिशक्ति के साथ जन्म लेना ही पाप था। ४८२

❖ मुलुवदे	पिडन्दुल	हुडैय	मौय्म्पितोन्
उलुवशैर्	कानहत्	तुडैवैन्	यानैना
अलुवदे	यैलुदल्कण्	डिरुप्प	देयिरुन्
दलुवदे	यल्लहिदिव्	वन्वैन्	शार्शिलर् 483

पिडन्दु- (ज्येष्ठ पुत्र के रूप में) जन्म लेकर; उलकम् मुलुवते उडैय-सारे भुवन के स्वामी जो हुए; मौय्म्पितोन्-वे वीर; उलुवै चैर्-बाघों का वासस्थान; कानकत्तु तुडैवैन् यान्-जंगल में वास करूँगा; अंत-कहकर; अलुवते-निकलें, (यह उचित है) क्या; अलुतल् कण्डु-निकलना देखकर; इरुप्पते-चुप रह जायँ क्या; इरुन्तु अलुवते-रहकर रोएँगे क्या; इ अन्नु अल्लकितु-यह स्नेह भी भला है; अन्शार् चिलर्-कहा कुछ ने। ४८३

कुछ लोगों ने कहा कि श्रीराम ज्येष्ठ पुत्र पैदा हुए हैं। सारा भुवन उनका है। वे योग्य वीरता भी रखते हैं। इतना होने पर भी वे, 'बाघ जहाँ वास करते हैं उस वन में जाकर वास करूँगा' —यह कहते हुए जा रहे हैं। क्या यह उचित है ? उनको जाते हुए देखकर हम चुप रहें; निष्क्रिय रहकर रोएँ —यही हमारा उन पर स्नेह का निशान है ? हमारा स्नेह भी भला रहा ! । ४८३

वलङ्गडिन्	देळैशौर्	कौण्ड	मन्ननै
नलङ्गडिन्	दरङ्गड	नयत्ति	योर्वनाक्
कुलङ्गडिन्	दान्वलि	कौण्ड	कौण्डलै
निलङ्गडिन्	दाळौडु	निहरैन्	शार्शिलर् 484

चिलर्-कुछ लोग; वलम् कटिन्तु-अपना वल त्यागकर; एल्लै चौल् कौण्ड-एक स्त्री का वचन जिन्होंने माना; मन्ननै-उन राजा को; नलम् कटिन्तु-भलाई छोड़कर; अरम् कैट-धर्म बिगाड़ने की; तयत्तियो-सोची क्या; अना-ऐसा न पूछनेवाले; कुलम् कटिन्तानु-क्षत्रियकुल को हरानेवाले परशुराम का; वलि कौण्ड-वल परास्त करनेवाले; कौण्डलै-मेघश्याम को; निलम् कटिन्ताळौडु-भूमि (का अधिकार) छीननेवाली कैकेयी के; निकर्-समान मानो; अन्तार्-कहा । ४८४

राजा अपनी शक्ति भूलकर एक स्त्री के वचन को मान गये । उनसे इन श्रीराम को पूछना चाहिए था कि हित का त्याग कर धर्म का गला घोटने की बात आपने सोची है क्या ? पर क्षत्रियकुल-घाती परशुराम को परास्त करनेवाले मेघश्याम ने यह नहीं किया । उनमें और उनसे देश छीननेवाली कैकेयी में क्या भेद रहा ? दोनों समान समझिए । —यह कहा कुछ लोगों ने । ४८४

तिरुवरै	शुर्शिय	शीरै	याडैयन्
पौरुवरुन्	दुयिरिन्	शौडर्न्दु	पोहिन्तान्
इरुवरैप्	पयन्दव	ळौन्ड	कात्तुमुळै
औरुवनो	विवर्क्किव्वू	रुर्वेन्	शार्शिलर् 485

इरुवरै पयन्तवळ ईन्ड-दो पुत्रों की जननी के जन्मे; काल् मुळै-ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मण; तिरु अरै चुर्शिय-अपनी शोभायमान कमर में; चौरै आडैयन्-वल्कल पहने हुए; पौरुव अरुम्-उपमाहीन; दुयिरिन्-दुखी बनकर; तौडर्न्दु पोकिन्तान्-(श्रीराम के) पीछे लगे जाते हैं; इवर्कु-इन श्रीराम के; इ अर्-इस नगर में; उरुवु औरुवनो-रिश्तेदार एक ही है क्या; अन्तार् चिलर्-कहा कुछ लोगों ने । ४८५

कुछ लोगों ने कहा कि सुमित्रादेवी दो पुत्रों की जननी है । उनके ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मण ही वल्कल पहनकर, अत्यधिक दुख के साथ श्रीराम के साथ जा रहे हैं । इस विशाल नगर में श्रीराम के स्नेही केवल वे एक ही हैं ? । ४८५

मुळुक्कलिन्	वलियनम्	मूरि	नैञ्जिन्नै
मळुक्कळिर्	पिळत्तुमैन्	शौडु	वार्वळि
औळुक्किय	कण्णिनिर्	कलुळि	यूर्शिडै
इळुक्कलि	निळुक्किवीळ्न्	दिडरुड	शार्शिलर् 486

चिलर्-कुछ; मुळु कल्लिन् वलिय-बड़ी चट्टान से अधिक कठोर; नम् मूरि नैञ्जिन्नै-हमारे सख्त हृदय को; मळुक्कळिन्-कुल्हाड़ियों से; पिळत्तुम् अन्ड-फाड़

देंगे, यह कहकर; ओटुवार्-दौड़नेवालों ने; वल्लि-मार्ग में; ओल्लुक्किय-जो वरसाया; कण्णित्तिल् कलुल्लि ऊर्ऱु-वह आँखों का झरना; इटै इल्लुक्कलित्-बीच-बीच से फिसलाता था, इसलिए; इल्लुक्कि वील्लुन्तु-फिसलकर गिरे; इटर् उर्ऱार्-और संकटग्रस्त हुए । ४८६

कुछ लोग चट्टान से कठोर अपने हृदय को कुल्हाड़ी से फाड़ दें, इस विचार से दौड़ रहे थे । तब उनकी आँखों से अश्रुधारा जो बही उसके कारण मार्ग कीचड़ से भर गया । वे उससे फिसलकर गिर गये और तंग हो गये । ४८६

पौत्तण्णि	मणियणि	मैय्यिउ	पोक्किनर्
मिन्नेन	मीन्नेन	विलक्कि	मैय्विलैप्
पत्तिउत्	तुहिलिनैप्	परित्तु	नीक्किये
शित्तनुण्	डुहिलरैच्	चैट्टिक्किन्	डार्शिलर् 487

चिलर्-कुछ स्त्रियाँ; मिन् अँत-विजली के समान; मीन् अँत-आकाश (की मछलियों) के नक्षत्रों की तरह; मैय्यिल-अपने शरीरों पर के; पौत्त अणि-स्वर्णाभरणों और; मणि अणि-रत्नाभूषणों को; विलक्कि पोक्किन्-उतारकर दूर करके; मैय्विलै-अधिक दाम के; पल् निउ-रंग-बिरंगे; तुकिलित्तै-वस्त्रों को; परित्तु नीक्कि-निकाल दूर करके; चित्तनम् तुण् तुकिल्-फटे-पुराने सादे वस्त्र; अरै चैट्टिक्किन्डार्-कमर में पहन लेती है । ४८७

कुछ स्त्रियों ने अपने शरीर पर से विजली और नक्षत्रों के समान शोभनेवाले स्वर्ण तथा रत्नाभरणों को उतारकर फेंक दिया और महँगे और रंगीन वस्त्र हटाकर फटे-पुराने सादे कपड़े पहन लिये । ४८७

ॐ निरैमह	वुडैयवर्	नैरिर्श	लैम्बोडि
कुरैमहक्	कुरैयिनुड्	कौडुप्प	रामुयिर्
मुरैमहन्	वत्तम्बुह	मौळियैक्	काक्किन्ऱ
इरैमहन्	रिरुमन्	मिरुम्बैन्	डार्शिलर् 488

चिलर्-कुछ लोग; निरै मक उडैयवर्-बहुत पुत्र वाले हों (तो भी); नैरिर् चैल्-विषय पर चलनेवाली; ऐन्नु पौडि-पाँच इन्द्रियों में; कुरै मक-एक भी से हीन पुत्र के; कुरैयित्तुम्-मर जाने पर; उयिर् कौटुप्पर्-अपनी जान दे देंगे; आम्-यह लोकरीति है; मुरै मकन्-अधिकारी श्रेष्ठ पुत्र को; वत्तम् पुक्-जंगल जाने देकर; मौळियै काक्किन्ऱ-अपना वचन पालन करनेवाले; इरैमकन्-(हमारे) राजा का; तिरु मत्तम्-सुन्दर मन; इरुम्पु अँत्डार्-लोहा है, कहते । ४८८

कुछ लोगों ने दशरथ की यों आलोचना की । किसी के अनेक पुत्र भी हों और उनमें एक लूला या लँगड़ा, काना या अन्धा पुत्र भी मर जाय तो वह अपनी जान दे देगा । यही लोकरीति देखी जाती है । पर

दशरथ को देखिए— । अपने ज्येष्ठ और श्रेष्ठ पुत्र राम को वन भेजकर अपना वचन-पालन करते हैं ! अवश्य उनका मन लोहे का होगा । ४८८

वानमे यनैयदोर् करुणै माण्वलाल्, ऊनम्वे इलानुड नुलहम् यावैयुम्
कानमे पुहुर्मैनिर् कादन् मैन्दनुम्, तानुमे याळुङ्गी उरैयैन् शार्शिलर् 489

वानमे अनैयतु-मेघ के ही सम; ओर्-अप्रतिम; करुणै-करुणा; माण्व-
अन्य उत्तम गुण; अल्लाल्-इनके अलावा; वेरु ऊनम् इलानुटन्-जिनमें कोई कमी
नहीं है, उन श्रीराम के साथ; उलकम् यावैयुम्-सारा देश; कानमे पुकुम् अँनिल्-
वन में चला जायगा तो; कातल् मैन्तनुम् तानुमे-अपने प्यारे पुत्र भरत और आप
ही; तरै आळुम् कौल्-खाली भूमि का शासन करेंगे क्या । ४८९

कुछ स्त्रियाँ कहतीं कि समझो कि मेघश्याम, करुणानिधि, श्रेष्ठ गुणों
से पूर्ण और विल्कुल दृढिहीन श्रीराम के साथ सारे देश के लोग वन चले
जाते हैं तो क्या चक्रवर्ती अपने प्यारे पुत्र के साथ रहकर खाली भूमि का
शासन करते रहेंगे शायद ! । ४८९

वाङ्गिय	मरुङ्गुलै	वरुत्तुड्	गौङ्गयार्
पूङ्गौडि	यौडुङ्गुव	पोलौ	दुङ्गिनार्
एङ्गिय	कुरलित्	रिणैन्द	कान्तळिन्
ताङ्गिय	शौङ्गैदन्	दलैयिन्	मेलुळार् 490

वाङ्किय मरुङ्कुलै-धँसी हुई (पतली) कमर को; वरुत्तुम्-दुख देनेवाले;
कौङ्कैयार्-स्तनों को; एङ्किय कुरलित्-रो-रोकर क्षीण हुए स्वर वालियाँ;
इणैन्त कान्तळिन्-संश्लिष्ट 'कान्तळ्' पुष्पों के समान; तम् तलैयिन् मेलु ताङ्किय
चैम् कै-सिर पर जोड़े रखे गये लाल हाथों; उळ्ळार्-वालियाँ; पू कौटि ओतुङ्कुव
पोल्-पुष्पलताएँ चलतीं जैसे; ओतुङ्किन्नार्-चलीं । ४९०

कुछ स्त्रियाँ जिनके स्तन अन्दर धँसी हुई कमर को कण्ठ दे रहे थे,
रोते हुए अपने दोनों हाथों को, कान्तळ् पुष्पों के जोड़े के समान जोड़कर
सिर पर रखे, पुष्पलता के समान चल रही थी । ४९०

तलैक्कुवट्	टैयन्मदि	तवळु	माळिहै
निलैक्कुवट्	टिडैयिडै	निन्नर्	नङ्गैमार्
मुलैक्कुवट्	टिळिहणी	रालि	मौयत्तुह
मलैक्कुवट्	टयर्बुरु	मयिलिन्	माळ्हिनार् 491

तलै कुवटु अयल्-(जिनके) शीर्ष भागों के पास; मलि तवळुम्-चन्द्र रेगता है;
माळिकै-ऐसे सौधों के; कुवटु निलै-उच्च भागों पर; इटै इटै-बीच-बीच में;
निन्नर्-स्थित; नङ्कैमार्-रमणियों के; मुलै कुवटु इळि-स्तनशिखरों पर से बहने-
वाली; कण् नीर् आलि-आँसू की बूँदें; मौयत्तु उक-एकत्र होकर गिरीं; मलै
कुवटु अयर्बु उरुम्-पर्वत-शिखरों पर कुम्हलानेवाले; मयिलिन्-मोरों के समान;
माळ्किन्नार्-दुखतप्त हुई । ४९१

कुछ प्रासादों के ऊपरी भागों में, जिनके पास चन्द्र चल रहा था (याने चन्द्रस्पर्शी, ऊँचे प्रासादों पर) स्त्रियाँ खड़ी थीं। उनकी आँखों से अश्रुधाराएँ निकलीं, स्तनों के ऊपरी भाग पर से होती हुई नीचे बह रही थीं। वे स्त्रियाँ पर्वत-शिखरों पर कुम्हलाते हुए मोर जैसे दुखतप्त दिख रही थीं। ४९१

मञ्जैत	वहिर्पुहै	वळङ्गु	माळिहै
अञ्जलिल्	शाळरत्	तिरङ्गु	मिन्शौलार्
अञ्जनक्	कण्गणी	ररुवि	शोरदरप्
पञ्जरत्	तिरुन्दळुङ्	गिळियिर्	पन्निनार् 492

मञ्चु अँत-मेघों के समान; अकिल् पुकै वळङ्कुम्-अगर का धुआँ निकालनेवाले; माळिकै-प्रासादों की; अञ्चल् इल् चाळरत्तु-असंख्यक खिड़कियों के पास; इरङ्कुम्-दुख प्रकट करते हुए रहनेवाली; इन् चोल्लार्-मधुर-भाषिणियाँ; अञ्चन्म् कण्कळ्-अंजन-लगी आँखों से; नीर् अरुवि चोर् तर-सरिता-सम आँसू बहाते हुए; पञ्जरत्तु इरुन्तु अळुम्-पिंजरे में रहकर रोनेवाले; किळियिन्-शुकों के समान; पन्निनार्-कई बातें कहती हुई विलाप करती थीं। ४९२

उन प्रासादों के, जिनके अन्दर से अगर का धुआँ मेघ के समान निकल रहा था, झरोखों के पास स्त्रियाँ खड़ी होकर रो रही थी। वे मधुर-भाषिणी स्त्रियाँ, अपने काजल-लगे नेत्रों से आँसू-नदियाँ बहाते हुए पंजरस्थ शुकों के समान कई बातें कहकर विलाप रही थी। ४९२

नन्नेडुङ्	गण्गळि	नान्ऱ	नीर्त्तुळि
तन्नेडुन्	दारैह	डळत्तिन्	वीळ्दलाल्
अन्नेडुङ्	गुमरनुक्	कळुङ्गि	माडमुम्
पोन्नेडुङ्	गण्कुळित्	तळुव	पोन्ऱवे 493

नल् नैटु कण्कळित् नान्ऱ-(ऊपर रही स्त्रियों की) सुन्दर आयत आँखों से निकले हुए; नीर् तुळि तत्-अश्रुकणों की; नैटु तारैकळ्-मिली हुई धाराएँ; तळत्तिन् वीळ्दलाल्-ऊपर से नीचे गिरने से; माटमुम्-अटारी भी; अ नैटु कुमारनुक्कु अळुङ्कि-उन श्रेष्ठ कुमार से सहानुभूति करके; पोन् नैटु कण् कुळित्तु-सुन्दर आयत आँखों को घँसाकर; अळुव पोन्ऱ-रोते-से लगे। ४९३

प्रासादों की छतों पर खड़ी होकर स्त्रियाँ रो रही थी। उनकी आँखों से निकलनेवाले आँसू के कण धाराएँ बने और वे धाराएँ नीचे गिरने लगीं। तब ऐसा लगता था कि स्वयं प्रासाद भी उन श्रेष्ठ और बड़े चक्रवर्ती के कुमार श्रीराम से सहानुभूति करके आँखों में गड्ढे बनाते हुए रो रहे हों। ४९३

मक्कळै	मरुन्दनर्	मादर्	तायरेप्
पुक्किड	मुणर्न्दिलर्	पुदल्वर्	पूशलिद
टुक्कन	रुयङ्गिन	रुहिल्	चोर्न्दनर्
तुक्कनिन्	उरिविन्च	चूरे	याडवे 494

तुक्कम् नित्तु—दुख ने स्थिर होकर; अरिविन् चूरे आटवे—बुद्धि को लूट लिया, इसलिए; मातर्—स्त्रियों ने; मक्कळै मरुन्दनर्—अपने पुत्रों को भुला दिया; पुतल्वर्—पुत्रों ने; तायर् पुक्क इटम्—माताओं के गमनस्थान; उणर्न्दितलर्—न जाना; पूचल् इट्टु—रोते-चिल्लाते; उक्कनर्—आंसू बहाये; उयङ्किनर्—कुम्हलाये; उरुकि चोर्न्दनर्—विकल होकर थक गये । ४६४

दुख ने स्थायी रहकर लोगों की बुद्धि हर ली । इसलिए माताओं ने अपने पुत्रों को भुला दिया । वत्स भी अपनी माताओं के रहने के स्थान नहीं जान सके । सब रोते-चिल्लाते, आंसू बहाते-कुम्हलाते और विगलित होते थक जाते थे । ४९४

कामरङ् गतिन्देनक् कतिन्द मैन्मोळि, मामडन् देयरैला मरुहु शेर्दलाल्
तेमरु नरुङ्गुळ् इरुवि नोङ्गिय, तामरै योत्तन तवळ माडमे 495

कामरम् कतिन्तु अँत—‘श्रीकामर’ नामक राग अपनी उच्च गति पर हो, ऐसा; कतिन्त—मधुरतापूर्ण; मैल् मोळि—मृदु बोली वाली; मा मटन्तैयर् अँलाम्—श्रेष्ठ लक्ष्मी-सम-स्त्रियाँ, सभी; मरुहु चेर्तलाल्—मार्ग पर जुट गई, इसलिए; तवळम् माटम्—धवल प्रासाद; तेम् मरु—मधुरता भरा; नरु कुळल्—सुवासित केश वाली; तिरुविन् नोङ्किय—श्री-विहीन; तामरै योत्तन—कमल-तुल्य हो रहे । ४६५

सभी स्त्रियाँ, जिनकी वाणी ‘श्रीकामर’ के खूब अलापे स्वर के समान मीठी थी सड़कों पर आ गई । इसलिए स्त्रियों से विहीन धवल प्रासाद मधुर और सुवासित केश वाली श्री से परित्यक्त कमलों के समान शोभाहीन हो गये । ४९५

✽ मळैक्कुलम्	बुरैहुळल्	विरिन्दु	मण्णुर्क्
कुळैक्कुल	मुहत्तियर्	कुळाङ्गोण्	डेङ्गिनर्
इळैक्कुलम्	जिदरिड	वेवुण्	ओय्वुरुम्
उळैक्कुल	मुळैपत्त	वोत्तौर्	पालैलाम् 496

ओर् पाल् अँलाम्—एक ओर; कुळै—कुण्डलधारिणी; कुलम् मुक्कत्तियर्—उज्ज्वल मुख वाली स्त्रियाँ; कुळाम् कौण्टु—दलों में जुटकर; मळै कुलम् पुरै—मेघ-समूह के समान; कुळल्—केश को; विरिन्तु मण् उरु—खुलकर भूमि पर बिखरने देते हुए; इळै कुलम् चित्तिट—और आभरण-जाल को छितरने देते हुए; ए उण्टु ओय्वु उरुम्—शराहत हो गिरनेवाले; उळै कुलम्—हरिण-समूह; उळैपत्त ओत्तु—दुख करते जैसे; एङ्किनर्—दुखी हुई । ४६६

एक ओर देखिए । उस तरफ सभी स्थानों में कुण्डलधारिणी स्त्रियाँ

प्रभाहीन मुखों के साथ आ जुटी थीं। उनके मेघसम केश खुलकर नीचे भूमि पर बिखरे थे। उनके आभरण गिर गये थे। वे शराहत हरिण-समूह जैसे पीड़ा का अनुभव करती रही। ४९६

कौडियड्ड्	गितमनैक्	कुन्नुड्ड्	गोमुर
शिडियड्ड्	गिनमुळक्	किळ्न्द	पल्लियम्
बडियड्ड्	गलुनिमिर्	पशुङ्गण्	मारियाल्
पौडियड्ड्	गितमदिर्	पुउत्तु	वीदिये 497

मनै कुन्नुड्ड्-प्रासाद रूपी पर्वतों पर; कौटि अटङ्कित-पताकाएँ स्थिर रहीं; को मुरचु-राजकीय ढोल; इटि अटङ्कित-वज्रसम घोष से विहीन रहे; पल् इयम्-विविध वाद्य; मुळक्कु इळन्त-बजे नहीं; पटि अटङ्कलुम्-भूमि पर सब जगह; निमिर्-विपुल; पचु कण् मारियाल्-ताजे आँसुओं की वर्षा के कारण; मत्तिल् पुउत्तु वीति-प्राकार से लगी वीथियों में; पौटि अटङ्कित-धूलि थम गई। ४९७

पर्वतसम प्रासादों पर पताकाएँ नहीं फहरती थीं। राज-ढोल नहीं बज रहे थे। विविध वाद्य बजने से रह गये। भूमि भर में आँखों के आँसू की धारा बह रही थी अतः धूलि थम गई। (इसमें “अटङ्कित” शब्द विविध अर्थों में प्रयुक्त होकर बार-बार आया है।)। ४९७

ॐ अट्टिलु	मिळ्न्दन	पुहैय	हिड्पुहै
नैट्टिलु	मिळ्न्दन	निरैन्द	पाल्किळि
वट्टिलु	मिळ्न्दन	मरुङ्गु	कान्मणित्
तौट्टिलु	मिळ्न्दन्	महवुञ्ज	जोर्न्दवे 498

अट्टिलुम्-पाकशालाएँ भी; पुकै इळन्त-धुएँ से रिकत हो गई; नैट्टु इल्लुम्-ऊँचे प्रासाद भी; अकिल् पुकै इळन्त-अगरु के धुएँ खो गये; किळि वट्टिलुम्-शुकाशनपात्र भी; निरैन्त पाल इळन्त-दूध से पूर्ण रहने से रह गये; मरुङ्कु कान्-चारों ओर प्रकाश बिखरनेवाले; मणि तौट्टिलुम्-रत्नमय पालने भी; मकवु इळन्त-शिशु-रहित हो रहे; मकवुम् चोर्न्त-शिशु भी थके पड़े रहे। ४९८

पाकशालाओं में (पकाने का काम नहीं होता था, इसलिए) धुएँ का अभाव था। ऊँचे माढ़ों में अगरु का धुआँ नहीं पाया जाता था। शुकों को खिलाने के लिए उपयुक्त कटोरे दूध से खाली थे। रत्नमय पालनों में, जिनसे चारों ओर कान्ति छूटती थी, शिशु नहीं थे। शिशु जो नीचे पड़े थे, किसी के द्वारा उठाये न जाने से थके पड़े रहे। ४९८

औळितुउन्	दन्मुह	मुयिर्तु	रन्दैन्त
तुळितुउन्	दन्मुहिर्	रौहैयुन्	द्वयवाम्
तळितुउन्	दन्बलि	दान	यानैयुम्
कळितुउन्	दन्मलर्क्	कळ्ळुण्	वण्डिने 499

मुकम्-मुख; उयिर् तुरन्तल् अँत-प्राणविहीन हुए जैसे; ओळि तुरन्तन्-निष्प्रभ हुए; मुकिल् तौक्युम्-मेघ-समूह भी; तुळि तुरन्तन्-जलकण-रिक्त हो गये; तूय आम् तळि-पवित्र देवालय; पलि तुरन्तन्-पूजा खो गये; मलर्कळ् उण् वण्टिन्-पुष्प मे शहद पीनेवाले भ्रमरो के समान; तानम् यान्त्युम्-मत्तगज भी; कळि तुरन्तन्-मस्ती छोड़ गये । ४६६

लोगों के मुख कान्तिहीन हो रहे । मेघों के दल जल-कण से रिक्त रहे । पवित्र देवालयों में पूजा नहीं होती थी । फूलों पर मँड़राकर शहद पीनेवाले भ्रमरो के साथ मत्तगजों ने भी अपनी मस्तता खा दी । ४९९

निळल्पिरिन्	दन्तकुडै	नैडुङ्ग	णेळयर् -
कुळल्पिरिन्	दनमलर्	कुमरर्	ताळिण
कळल्पिरिन्	दन्तिनक्	कामन्	वाळियुम्
अळल्पिरिन्	दन्तुण	पिरिन्द	दन्त्रिले 500

कुडै निळल् पिरिन्तन्-छत्र-छाया नहीं दे रहे थे; नैटु कण्-लम्बी आँखों की; एळैयर् कुळल्-स्त्रियों का केश; मलर् पिरिन्तन्-पुष्पों से रिक्त हो गया; कुमरर् ताळ् इणै-वीर नौजवानों के चरणद्वय; कळल् पिरिन्तन्-पायलों से शून्य रहे; चिनम् कामन् वाळियुम्-क्रोधशील कामदेव के शरों से; अळन् पिरिन्तन्-ताप-शक्ति छूट गई; अन्त्रिल्-कौच; तुणै-अपने सहचर से; पिरिन्त-अलग हो गये । ५००

छत्रों ने छाया देना छोड़ दिया । (किसी ने छत्र का उपयोग नहीं किया ।) लम्बी आँखों वाली स्त्रियों के केश पुष्पों से विहीन रहे । नौजवानों ने पायल पहनना छोड़ दिया । मन्मथ के शरों ने अपनी तापन-शक्ति खो दी । कौच पथी भी अपने जोड़े से अलग हो गये । ५००

तारौलि नीत्तन् पुरवि तण्णुमे, वारौलि नीत्तन् मळैयित् विन्मुळुम्
तेरौलि नीत्तन् तैरुवुन् वैण्डिरै, नीरौलि नीत्तन् नीत्तम् बोलुमे 501

पुरवि-अश्वों ने; तार् ओलि नीत्तन्-प्राज्ञ की गुरियाओ की ध्वनि छोड़ दी; तण्णुमे-मृदंगों ने; वार् ओलि नीत्तन्-अपनी ऊँची ध्वनि छोड़ दी; मळैयित् विन्मुळुम्-मेघ-गर्जन से अधिक स्वर करनेवाले; तेर् ओलि-रथों की ध्वनि की; तैरुवुम् नीत्तन्-सड़कों ने छोड़ दिया; तैळ् तिरै-स्वच्छ तरंगों वाले; नीर् ओलि नीत्तन् नीत्तम् बोलुमे-जल से युक्त ध्वनिहीन नदियों के समान रही । ५०१

अश्वों को गले का हार नहीं पहनाया गया अतः उनसे गुरियों का क्वणन नहीं निकल रहा था । मृदंग नहीं बजाये गये, इसलिए वे ध्वनिहीन पड़े हुए थे । सड़कों पर रथ नहीं दौड़ते थे, इसलिए रथों की, मेघसम घरघराहट सुनाई नहीं देती थी और सड़कें भी कल-कल ध्वनि से रिक्त नदी के समान पड़ी रही । ५०१

❀ मुळवैळु	मौलियिल	मुडैयिन्	याळनरम्
वैळवैळु	मौलियिल	विमैप्पिल्	कण्णिनर्
विळवैळु	मौलियिल	वेरु	मौन्निल
अळवैळु	मौलियैळु	मरश	वीदिये 502

अरच वीति-राजमार्ग; मुडैयिन्-लगातार; मुळवु अँळुम् ओलि इल-ढोलों के नाद से खाली रहे; याळ नरम्पु अँळ-वीणा की तन्त्रियों को झटका देने से; अँळुम् ओलि-उठनेवाला नाद; इल-नहीं रहा; विमैप्पु इल् कण्णिनर्-पलकहीन देवों के; विळवु अँळुम् ओलि इल-उत्सवों के कारण उठनेवाला शोर नहीं रहा; वेरु औन्नम् इल-और कोई (मंगल) नाद नहीं उठा; अळ अँळुम्-रौने से उठनेवाला; ओलि अँळुम्-नाद उठा । ५०२

राजमार्गों पर ढोल नहीं बजते थे । कोई वीणा नहीं बजाता था इसलिए वीणा का तन्त्रीनाद सुनाई नहीं दिया । पलक न झपनेवाले देवताओं के पूजा आदि उत्सव नहीं मनाये गये, इसलिए कहीं कुछ कोलाहल सुनाई नहीं दिया । केवल रुदन-स्वर ही सुनाई देता था और अन्य कोई मंगलध्वनि सुनाई ही नहीं देती थी । ५०२

तैळळौलिच्	चिलम्बुहळ्	शिलम्पु	पौन्मनै
नळळौलित्	तिलनळिर्	कलैयु	मन्नवे
पुळळौलित्	तिलपुनल्	पौळिलु	मन्नवे
कळळौलित्	तिलमलर्	कळिऱु	मन्नवे 503

तैळ ओलि चिलम्पुकळ्-साफ़ स्वर वाले नूपुर; चिलम्पु-जहाँ स्वरित हो रहे थे; पौन् मनै-उन स्वर्णप्रासादों; नळ-के मध्य; ओलित्तिल-स्वरित नहीं हुए; नळिर् कलैयुम् अन्नवे-श्रेष्ठ मेखलाओं की बात वही; पुनल्-जलाशयों में; पुळ ओलित्तिल-पक्षी बोले नहीं; पौळिलुम्-उद्यानों की बात भी; अन्नवे-वैसी ही; मलर्-पुष्पों पर; कळ ओलित्तिल-भ्रमरों ने गुंजार नहीं किया; कळिऱुम् अन्नवे-गजों की बात वही (पुष्प की तरह ही) । ५०३

जिन प्रासादों में स्त्रियों के पैरों के नूपुरों की मनोरम साफ़ ध्वनि होती थी उनमें अब नूपुर मौन थे । मेखलाओं की भी वही स्थिति हो गई । जलाशय खगरव-हीन हो गये और उद्यानों की हालत भी वही हो गई । पुष्प, जैसे मत्तगज, मधुपों से खाली हो रहे । ५०३

शैय्म्मडन्	दनपुत्तल्	शिवन्द	वाय्च्चियर्
कैय्म्मडन्	दनपशुड्	गुळवि	कान्दैरि
नैय्म्मडन्	दननैरि	यडिअर्	यावरुम्
मय्म्मडन्	दनरौलि	मडन्द	वेदमे 504

चैय्-खेत; पुत्तल् मडन्तत्त-जल झूल गये; चिवन्त वाय्च्चियर् कै-अरुणाधरा

स्त्रियों के हाथ; पचु कुळवि मरुन्तत्त-शिशु भूल गये; कान्तु अरि-जलनेवाली ज्वालाएँ; नैय् मरुन्तत्त-घी भूल गई; नैरि अरिन्नर यावरुम्-सन्मार्ग-वेदज्ञ सभी; मेय् मरुन्तत्त-अपने शरीर भूल गये; वेतम् ओलि मरुन्त-वेदों ने स्वर भुला दिया । ५०४

खेत, काम करनेवालों के न होने के कारण सीचे नहीं गये थे अतः जल भूलकर सूखे पड़े थे । अरुणाधरा स्त्रियों के हाथों ने शिशुओं को भुला दिया । ज्वालाएँ घी भूल गई क्योंकि होम-कार्य नहीं हुआ । वेदज्ञ ब्राह्मण अपने शरीर को भी भुलाए रह गये । इसलिए वेदध्वनि कहीं नहीं सुनाई दी । (सब तरह के लोग निष्क्रिय थे अतः कहीं कुछ आवश्यक कामों की भी आहट नहीं मिलती थी ।) । ५०४

आडित्त रळुदन रमुद वेळिशै, पाडिन रळुदत्तर् परिन्द कोदैयर्
ऊडिन रळुदन रुयिरि नत्तुवरैक, कूडिन रळुदत्तर् कुळाङ्गु ल्ळाङ्गोडे 505

कुळाम् कुळाम् कौटु-दल के दल; आडित्तर् अळुतत्तर्-(स्त्रियाँ) जो नाच रही थीं, वे रोईं; अमुत्तम् एळ् इच्चै पाटित्तर्-मुधा-सम सप्तस्वर संगीत गानेवाली; अळुतत्तर्-रोईं; परिन्त कोतैयर्-त्यक्त-माला वालियाँ; ऊडित्तर् अळुतत्तर्-रूठी हुई स्त्रियाँ रोईं; उयिरित् अत्तपरै-प्राणसम प्रिय नाथों से; कूटित्तर्-जो मिली थीं, वे भी; अळुतत्तर्-रोईं । ५०५

नर्तकियाँ मिलकर रोईं । गानेवाली स्त्रियाँ गाना छोड़कर रोईं । पुष्पमाला निकाल फेंककर जो अपने पतियों से रूठी हुई थीं वे रोईं । जो पतियों से मिलन का आनन्द उठा रही थीं वे भी रोईं । ५०५

नीट्टिल	कळिरुक्कै	नीरित्	वाय्पुदल्
पूट्टिल	पुरविहळ्	पुळ्ळुम्	पार्प्पित्तुक्
कीट्टिल	विरैपुत्तिर्	रीन्ऱ	कन्ऱैयुम्
ऊट्टिल	करवैनैन्	दुरुहिच्	चोर्न्दवे 506

कळिरु-हाथियों ने; कै-सूँड़े; नीरित् नीट्टिल-पानी की तरफ नहीं बढ़ाई; पुरविकळ्-अश्वों ने; वाय्-अपने मुखों पर; पुत्तल् पूट्टुत्तल् इल-घास नहीं रखी; पुळ्ळुम्-पक्षियों ने; पार्प्पित्तुक्कु-अपने शावकों के लिए; इरै ईट्टिल-चारा नहीं ढूँढ़ा; करवै-गायों ने; ईन्ऱ-नये व्याये; पुत्तिरु कन्ऱैयुम्-छोटे बछड़ों को; ऊट्टु इल-दूध नहीं पिलाया; नैन्तु उरुकि-विगलित होकर; चोर्न्त-मुरझाये रहे । ५०६

गजों ने सूँड़ों को पानी की तरफ नहीं बढ़ाया । अश्वों ने अपने मुख में घास का घास नहीं लिया । पक्षी अपने शावकों के लिए चारा ढूँढ़ नहीं लाये । गायों ने अपने नये बछड़ों को भी दूध नहीं पिलाया । सब दुख से विगलित रहे । ५०६

मान्दर्द	मौयम्बित्तिन्	महळिर्	कौङ्गयाम्
एन्दिल्ल	नोर्हळुम्	वरुमै	यैय्दित्त
शान्दमम्	महिळ्न्नर्तम्	मुडियिर्	रैयलार्
कून्दलुम्	वरुमैय	मलरिन्	कूलमे 507

मान्दर्द तम् मौयम्पित्तिन्-पुरुषों की भुजाओं के समान; मकळिर्-स्त्रियों के; कौङ्गके आम्-स्तन रूपी; एन्तु इळनीर्कळुम्-उन्नत (कच्चे) नारियल; चान्तम् वरुमै अय्तिन्-चन्दन से रिकत रहे; अ मकिळ्त्तर् तम्-उन पुरुषों के; मुडियिल्-केशों के समान; तैयलार् कून्तलुम्-स्त्रियों के केश भी; मलरिन् कूलम् वरुमैय-पुष्पों के समूह से रिकत हो गये । ५०७

पुरुषों के कन्धे और स्त्रियों के नारियल के फलों जैसे स्तनों पर चन्दन नहीं लगा । दोनों के केश पुष्पों के अलंकार से शून्य पाये गये । ५०७

ओडै	नल्लणि	मुत्तिन्दन	वुयर्हळि	रुच्चि
शूडै	नल्लणि	मुत्तिन्दन	शुडर्मणिक्	कौडियिन्
आडै	नल्लणि	मुत्तिन्दन	वम्बोन्शै	यिञ्जि
पेडै	नल्लणि	मुत्तिन्दन	मैन्तडैप्	पुडवम् 508

उयर् कळिळ-उत्तम गजों ने; ओटै-मुखपट्टों के; नल् अणि-सुन्दर अलंकार से; मुत्तिन्तत्त-गुस्सा किया; उच्चि-(स्त्रियों के) केशों ने; चूटै नल् अणि मुत्तिन्तत्त-श्रेष्ठ शिरोभूषणों से घृणा की (पहना नहीं); अम् पौन् चैय् इञ्चि-उत्तम स्वर्णनिर्मित प्राचीरों ने; चुटर् मणि कौडियिन् आटै-कान्तियुत सुन्दर पताकाएँ रूपी; नल् अणि-श्रेष्ठ अलंकार को; मुत्तिन्तत्त-त्याग दिया था; मैल् नटै पुडवम्-मृदु-चाल कपोतों ने; पेडै नल् अणि मुत्तिन्तत्त-कपोतियों की श्रेष्ठ कमनीयता दुत्कार दी । ५०८

हाथियों ने मुखपट्ट आदि अलंकार दुत्कार दिये; स्त्रियों के सिर के केश ने शिरोभूषण पसन्द नहीं किये । प्राचीरों पर पताकाओं का अलंकार नहीं पाया गया । मृदु चाल वाले कपोतों ने अपनी कमनीय कपोतियों का संग छोड़ दिया । ५०८

ॐ तिक्कु	नोक्किय	तोविनैप्	पयत्तैन्	चिन्दै
नैक्कु	नोक्कुवोर्	नल्वित्तैप्	पयत्तैन्	नेर्वोर्
पक्क	नोक्कलैन्	परुवर	लिन्वमैन्	इरण्डुम्
ओक्क	नोक्किय	योहरु	मरुन्दुय	रुळ्न्दार् 509

तो वित्तै पयन्-बुरे कर्म का फल (दुख); तिक्कु नोक्किय-तुम्हारी दिशा की ओर आ रहा है; अत्त-ऐसा किसी के कहने पर; चिन्तै नैक्कु-मन को विगलित करके; नोक्कुवोर्-प्रतीक्षा करनेवाले; नल् वित्तै पयन् अत्त-सुकर्म का फल (सुख) आ रहा है, कहने पर; नेर्वोर् पक्कम्-स्वागत करनेवालों का स्वभाव; नोक्कल् अत्त-देखने से बचा; परुवरल् इत्तम् अत्त इरण्डुम्-दुख, सुख दोनों को; ओक्क

नोक्किय-समदृष्टि से देखनेवाले; योक्कम्-योगी भी; अरु तुयर् उल्लन्तार्-अत्यधिक दुख से पीड़ित हुए । ५०६

बुरे कर्मफल, दुख, का नाम सुनकर घबड़ानेवाले और अच्छे फल, सुख, का स्वागत करनेवाले मामूली लोगों की बात क्या कही जाय ? दुख और सुख को समदृष्टि से देखनेवाले योगीजन भी बहुत शोकाकुल हुए । ५०९

ओवि	नल्लुयि	रुयिर्प्पिनो	डुडल्पदत्	तुलैय
मेव्	तौल्लुठ	हंळिल्कड	विम्मनोय्	विम्मत्
तावि	लैम्बोर्	मङ्गुइत्	तयर्द	नैन्
आवि	नोक्किन्ऱ	दौत्तदव्	वयोत्तिमा	नहरम् 510

अ योत्ति मा नकरम्-वह अयोध्या नगर; ओव् इत् नल् उयिर्-न छूटनेवाले प्राणों के समान रहे जीव (प्रजाजन) सभी; उयिर्प्पिनोडु-निश्वास के साथ; उडल् पतैत्तु उलैय-शरीर के तड़पकर शिथिल होने से; मेव् तौल् अळकु-पहले के स्वाभाविक आकर्षण; अळिल्-और अलंकार के आकर्षण के; कट-विकृत हो जाने से; विम्मल् नोय् विम्म-दुख के रोग के बढ़ने से; ता इत् ऐन्तु पौर्-निर्वल हुई पाँचों इन्द्रियों के; मङ्गु उर-क्षुब्ध होने से; तयर्दन् अन्न-दशरथ के समान; आवि नोक्किन्ऱु अतैत्तु-प्राणों को छोड़ता-सा रहा । ५१०

उस अयोध्या नगर के सब जीव निश्वास छोड़ते हुए, स्वाभाविक सुन्दरता और अलंकार का आकर्षण —इनसे रिक्त होकर, कम्पायमान शरीरों के साथ दुखतप्त हुए और उनकी इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गईं । वह नगर उस अवस्था में विलकुल दशरथ के समान रहा । ५१०

ॐ उयङ्गि	यन्नह	रुलैवुऱ	वोरुङ्गुळैच्	चुऱुम्
मयङ्गि	येङ्गिन्नर्	वयित्तुवयित्	वरम्बिलर्	तौडर्
इयङ्गु	पल्लुयिर्क्	कोरुयि	रैन्निन्ऱ	विरामन्
तयङ्गु	पूण्मुलैच्	चानहि	यिरुन्दुळिच्	चारुन्दान् 511

अ नकर्-वह नगर; उयङ्कि उलैवु उर-दुखी होकर छटपटाता रहा, तब; उळै चुऱुम्-पास रहनेवाले सेवक; वयित् वयित्तु-इधर-उधर; वरम्पु इलर्-असंख्यक लोग; ओरुङ्कु-एक साथ; मयङ्कि एङ्किन्-भ्रान्त होकर रोते हुए; तौडर्-पीछा करते चले, तब; इयङ्कु पल् उयिर्क्कु-जीवन्त सभी विविध जीवों के; ओर् उयिर् अतै नित्ऱ-एक प्राण के समान (जो) रहे (ते); इरामन्-श्रीराम; तयङ्कु पूण् मुलै-शोभायमान आभरण-भूषित स्तनों वाली; चात्कि इरुन्त उळि-जानकी जहाँ रही, उस स्थान को; चारुन्दान्-पहुँचे । ५११

वह नगर ही दुखाक्रांत हो गया । असंख्यक नौकर लोग भी यत्र-तत्र मिलकर बुद्धि-भ्रमित होकर श्रीराम का पीछा करते जा रहे थे । तब सब जीवों के एकप्राण श्रीराम आभरणभूषित स्तनों वाली जानकी के (रहने के) स्थान को गये । ५११

ॐ अळुदु	तायरी	उन्दण	ररुन्दव	ररशर्
पुळुदि	याडिय	मैय्यिनर्	पुडैवन्दु	पौरुमप्
पळुदु	शीरैयि	नुडैयितन्	वरुम्बडि	पारा
अळुदु	पावयन्	नाण्मत्तत्	तुणुक्कमो	डैळुन्दाळ् 512

तायरीदु-माताओं के साथ; अन्तणर्-ब्राह्मण लोग; अरु तवर्-श्रेष्ठ तपस्वी लोग; अरचर्-राजा लोग; पुळुति आडिय मैय्यिनर्-धूल-धूसरित शरीर वाले; अळुतु पुटै वन्दु-रोते हुए पास आकर; पौरुम-सिसकते खड़े रहे, तब; पळुतु चौरैयिन् उटैयितन्-क्षुद्र बल्कल-वसन; वरुम्पडि पारा-आते है, देखकर; अळुतु पावै अन्ताळ्-चित्र-प्रतिमा-सी देवी; मत्तम् तुणुक्कमोदु-मन में भय के साथ; अळुन्ताळ्-उठ खड़ी हुई । ५१२

सीताजी ने देखा कि श्रीराम आ रहे हैं और उनके पीछे माताएँ, ब्राह्मण, मुनि, राजा आदि विविध प्रकार के लोग, धूल-धूसरित शरीरों के साथ पार्श्व में रोते हुए आ रहे हैं । स्वयं श्रीराम क्षुद्र बल्कल धारण किये हुए थे । यह देखकर चित्रप्रतिमा-सी जानकीजी ठिठककर खड़ी हो गई । ५१२

ॐ अळुन्द	नङ्कैयै	नामियर्	तळुविन	रेन्दिप्
पौळिन्द	वुण्णणीरप्	पुदुप्पुन	लाट्टितर्	पुलम्ब
अळिन्द	शिन्दय	ळन्नुमु	मिन्नदैन्	इरियाळ्
वळिन्द	नीर्नैडुङ्	गण्णिळ्ळ	वळ्ळलै	नोक्कि 513

अळुन्त नङ्कैयै-जो उठीं, उन देवी को; नामियर्-सासों ने; तळुवितर्-गले लगाते हुए; एन्ति-सम्हालकर; पौळिन्त-बहनेवाले; उण् कण नीर् पुतु पुतल्-काजल से युक्त आँखों के नये (अश्रु-) जल से; आट्टितर्-नहलाया; पुलम्प-और विलाप किया, तब; अन्नमुम्-हंसिनी (सीता) भी; इन्नतु अन्न अरियाळ्-क्या बात है, यह नहीं जानकर; अळिन्त चिन्तैयळ्-उद्विग्न-मन होकर; नीर् वळिन्त नैडु कण्णिनळ्-आँसू बहानेवाली आँखों को होकर; वळ्ळलै नोक्कि-प्रभु श्रीराम को देखकर । ५१३

वहाँ साँसे खड़ी थी । उन्होंने सीता को गले से लगा लिया । और अपनी आँखों से अश्रुजल बहाकर उन्हें नहला दिया । वे विलाप करने लगी । सीताजी को पता नहीं लग रहा था कि यह सब क्या अनर्थ है ? इसलिए क्षुब्धमना और अश्रु-भरी आँख वाली बनकर (जानकीजी ने) श्रीराम से— । ५१३

ॐ पौन्नै	युर्ऱ	पौलङ्गळ	लोय्पुहळ्
मन्नै	युर्ऱदुण्	डोमर्ऱिव्	वन्नयर्
अन्नै	युर्ऱ	दियम्बैन्	रिऱैजिनाळ्
मिन्नै	युर्ऱ	नडुक्कत्तु	मेनियाळ् 514

मिन्नै उरु-बिजली के समान; नटुकुत्तु मेत्तियाळ्-कांपनेवाली देह की बनकर; पोन्नै उरु पौलम् कळलोय्-स्वर्णरचित पायलधारी; इ वन्न तुयर् उरुत्तु अन्नै-यह बड़ा दुख क्यों कर हुआ; पकळ् मन्नै-प्रकीर्तित राजा पर; उरुत्तु उण्टो-कुछ बीता क्या; इयम्पु अन्नू-कहिए, कहकर; इरुञ्चिन्नाळ्-विनय की । ५१४

बिजली के समान कांपनेवाली श्री सीताजी ने (श्रीराम से) पूछा कि स्वर्णरचित पायलधारी वीर ! यह कठोर और बड़ा दुख काहे का और क्यों कर हुआ ? प्रथित यशस्वी महाराजा पर कुछ बीता है क्या ? कहिए—यह विनय की । ५१४

✽ पौरुवि	लैम्बि	पुविबुरप्	पात्तुहळ्
इरुव	राणैयु	मेन्दिनै	निन्नूपोय्क्
करुवि	मामळैक्	कड्कडङ्	गण्डु नान्
वरुवै	नीण्डु	वरुन्दलै	नीयैन्नान् 515

पौरुवु इल् अम्पि-अप्रतिम मेरा अनुज; पुवि पुरप्पात्-भूमि का पालन करेगा; नान् पुकळ् इरुवर्-मैंने यश के पात्र (माता-पिता) दोनों की; आणैयुम् एन्तिन्नै-आज्ञा मान ली; इन्नू पोय्-आज ही चलकर; करुवि मा मळै-समूहों में मेघ-संचारित; कल् कटम् कण्ट-पर्वतों वाले वन को देखकर; वरुवैन्-लौट आऊंगा; ईण्डु नी वरुन्तलै-यहाँ तुम दुख मत करो; अन्नून्-कहा । ५१५

श्रीराम ने उत्तर में कहा कि मेरा अनुपम भाई भरत राजा बनेगा और भूमि का पालन करेगा । मैंने यशोगान-योग्य अपने पिता और माता की आज्ञा मान ली है । उसके अनुसार मैं आज ही जाऊंगा और मेघ-मंडरित वन को देखकर लौट आऊंगा । तुम यहीं रहो और दुखी मत हो । ५१५

✽ नाय हन्वन्न नण्णलुर् इन्नैन्नूम्, मेय मण्णिळ्न् दानैन्नूम् विम्मलळ्
नीव रुन्दलै नीङ्गुवैन् यानैन्, तीय वैञ्जौल् शैविशुडत् तेम्बुवाळ् 516

नायकन् वत्तम् नण्णल् उरान्-हमारे पति जंगल जाने लगे; अन्नूम्-यह सोचकर; मेय मण् इळ्न्तान् अन्नूम्-स्वत्व की भूमि खोई, इसके लिए भी; विम्मलळ्-दुख-भरी नहीं हुई; यान् नीङ्गुवैन्-मैं जाऊंगा; नी वरुन्तलै-तुम दुख न करो; अन्नू-इस; तीय वैम् चोल्-कठोर तापक वचन के; चैवि चुट-कानों को जलाने से; तेम्बुवाळ्-रोने लगी । ५१६

सीताजी यह सुनकर रोने लगीं । उनको इस बात के दुख ने नहीं सताया कि उनके प्रिय पति जंगल जा रहे हैं । न यह बात उन्हें दुख दे रही थी कि उनके अधिकार की भूमि उन्हें नहीं मिली । पर 'मैं जा रहा हूँ । तुम दुख मत करो', यह निर्मम और तापक वचन उनके कानों को मानो जलाने लगा । वे अत्यन्त व्याकुल हुई । ५१६

✽ तुइन्दु	पोमैन्ऋ	शौइरशौइ	रेरूमो
उइन्द	पाइकडइ	चेक्कै	युडनौरीइ
अइन्दि	इम्बल्कण्	डैय	नयोत्तियिल्
पिइन्द	पिन्बुम्	पिरिविल	ळायिनाळ् 517

ऐयन्-मेरे प्रभु; अइम् तिरम्पल् कण्डु-(पृथ्वी पर) धर्म की ग्लानि देखकर; उइन्त पाल् कटल्-अपने वास के क्षीरसागर पर; उटन् चेक्कै औरीइ-साथ-साथ शयन त्यागकर; अयोत्तियिल् पिइन्त पिन्पुम्-अयोध्या में जन्म लेने के बाद भी; पिरिवु इलळ् आयिनाळ्-अलग न होकर साथ रहों, ऐसी; तुइन्तु पोम् अन्ऋ-तुमको छोड़कर जायेंगे, यह; चौर चौल्-कथन; तेरूमो-उचित मानती क्या । ५१७

भगवान् विष्णु धर्म की ग्लानि देखकर उसके संरक्षणार्थ, क्षीरसागर से, श्री लक्ष्मीदेवी के साथ का शयन छोड़कर अयोध्या में श्रीराम बनकर आये । उसके बाद भी श्रीलक्ष्मी उनसे विलग नहीं हुई थीं । वियोग न सह सकनेवाली ऐसी देवी श्रीराम के इस कथन को कैसे सत्य मान सकेंगी कि 'मैं तुमसे अलग जा रहा हूँ' ? । ५१७-

✽ अन्त तन्मैय ळैयनु मन्नुयुम्, शौन्त शैय्यत् तुणिन्दु तूयदे
अन्तै यैन्तै यिरुत्तियैन् शैयैन्ऋळ्, उन्त वुन्त वुयिरुमि ळानिन्ऋळ् 518

अन्त तन्मैयळ्-वैसी प्रकृति वाली ने; ऐयनुम् अन्तैयुम्-पिता और माता का; चौन्त-कहा; चैय्य तुणिन्तनु-करने को ठाना (आपने); तूयते-वह पवित्र (और श्लाघ्य) है; अन्तै अन्तै इरुत्ति-पर क्यों मुझे रहो; अन्ऋय-कहते हैं; अन्ऋळ्-पूछा; उन्त उन्त-(वियोग की बात) ज्यो-ज्यों सोचतीं; उयिर् उमिळा निन्ऋळ्-त्यों-त्यों प्राण निकालती-सी रहों । ५१८

वैसी श्री सीताजी ने प्रभु से कहा कि आपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का जो निश्चय किया है, वह अवश्यमेव पवित्र आचरण है । पर आप मुझे क्यों ठहर जाने को कह रहे हैं ? ज्यों-ज्यों वह उनकी बात पर सोचती त्यों-त्यों उनके प्राण निकलने-से लगते थे । ५१८

वल्ल रक्करिन् माल्वरै मेल्विळुन्, दल्ल रक्कि नुरुक्कळ्ऋ काट्टदरक्
कल्ल रक्कुड् गडुमय वल्लनिन्, शिल्ल रक्कुण्ड शैवडिप् पोदैन्ऋन् 519

निन्-तुम्हारे; चिल्-छोटे; अरक्कु उण्ट-महावर लगे; चै अटि पोतु-लाल चरण कमल; वल् अरक्करिन्-सबल राक्षसों का; माल् वरै मेल् विळुन्तु-बड़े पर्वतों पर पड़कर; अल्-रात को भी; अरक्किन् उरक्कु-लाख की तरह पिघलाने वाली; अळल्-गर्मी वाले; काटु अतर्-वन-मार्ग में; कल् अरक्कुम्-कंकड़ों का चुमना सहन करने योग्य; कटुवैय अल्ल-कठोर नहीं है; अन्ऋन्-कहा । ५१९

श्रीराम ने समझाया कि देखो । वन में बलवान राक्षस वास कर रहे हैं । हमेशा गर्मी लगी रहेगी । पर्वतों पर पड़कर पत्थर को लाख

की तरह पिघलानेवाली गर्मी होगी वह । ऐसे वन के मार्गों में चुभते हुए कंकड़ों पर चलने योग्य क्षमता तुम्हारे छोटे, लाक्षारस-लगे कोमल पैर नहीं रखते । ५१९

❖ परिवि हन्द मतत्तौडु प्पुडिला, दौरुवु हित्तुनै यूळि यरुक्कनुम्
अरियु मैन्वन याण्डय वीण्डुनिन्, पिरिवि नुग्जुडु मोप्पेरुडु काडैन्नाळ् 520

प्पुडु इलातु—(मुझ पर) प्रेमरहित; परिवु इकन्त-दयाहीन; मतत्तौटु—मन के साथ; औरुवुकिन्तुनै—मुझे त्यागते है; ऊळि अरुक्कनुम्—प्रलयकाल का सूर्य और; ऊळि अरियुम्—प्रलयार्थि; अन्पत-संज्ञित वे भी; याण्डय—कहाँ के; ईण्डु निन् पिरिविनुम्—इधर आपसे वियोग से अधिक; पेरु काटु—बड़ा वन; चुटुमो—मुझे जला सकेगा; अन्नाळ्—पूछा । ५२०

देवी ने उत्तर दिया— आप मुझ पर प्रेम नहीं रखते । दया भी नहीं करते । मुझे छोड़ जाना चाहते है । इसके सामने प्रलय-कालीन सूर्य और अग्नि भी गर्मी में कहाँ रहेंगे ? आप जिस वन की गर्मी का वयान कर रहे है वह विशाल वन आपके वियोग से अधिक जला (ताप दे) सकता है क्या ? । ५२०

❖ अण्ण लत्तनशौर् केट्टन नन्ऱियुम्, उण्णि वन्द करुत्तु मुणर्न्दनन्
कण्णि नीर्क्कडर् कैविड नेर्हिलन्, अण्णि निन्ऱन नैन्ऱैयर् पाऱ्ऱैना 521

अण्णल्—प्रभु श्रीराम ने; लत्तन चौल्—वह वचन; केट्टनन्—सुना; नन्ऱियुम्—अलावा; उळ् निवन्त—उनके मन में उभरा रहा; करुत्तुम् उणर्न्दनन्—इरादा भी पहचाना; कण्णिन् नीर् कटल्—अश्रु-सागर में; कै विट नेर्किलन्—हाथ छोड़ना नहीं चाहा; अन् चैयल् पाऱ्ऱु अन्ना—क्या करना चाहिए, यह; अण्णि निन्ऱत्तन्—सोचते खड़े रहे । ५२१

श्रीराम ने सीताजी का कथन सुना और उनका मन समझ लिया । वे उन्हें अश्रु-सागर में हाथ (साथ) छोड़कर जाना नहीं चाहते थे । अब क्या किया जा सकता है ? —इस पर सोचते रहे । ५२१

❖ अनैय वेलै यहमनै यैय्दिनळ्, पुनैयुम् जीरै तुणिन्दु पुनैन्दत्तळ्
निनैयुम् वळ्ळल्पिन् वन्दय निन्ऱनळ्, पनैयि नीळ्करम् प्पुडिय कैयिनाळ् 522

अनैय वेलै—उसी समय; अकम् मतै अयित्तळ्—अन्तःपुर गई; पुनैयुम् जीरै—पहनने योग्य वल्कल; तुणिन्दु पुनैन्दत्तळ्—निश्चय के साथ पहन लिया; निनैयुम् वळ्ळल् पिन् वन्तु—सोचते जो रहे, उनके पीछे आकर; पनैयिन् नीळ् करम्—तालवृक्ष से अधिक लम्बे हाथ को; प्पुडिय कैयिनाळ्—अपने हाथ से पकड़कर; अयल् निन्ऱत्तळ्—पार्श्व में खड़ी रहीं । ५२२

तब तब सीताजी अन्तःपुर में गई और दृढ़-चित्त हो पति के अनुकूल वल्कल पहने हुए आई और श्रीराम के पीछे पास खड़ी हुई । उन्होंने

श्रीराम का तालवृक्ष-सम लम्बा हाथ अपने हाथ से पकड़ लिया (जाने को तैयार) । ५२२

❧ एल्ले तन्शैयल् कण्डवर् यावरुम्, वीळु मण्णिडै वीळ्न्दनर् वीन्दिलर्
वाळु नाळुळ वन्तुर्बिन् माळ्वरो, ऊळि पेरिन् मुय्हुन रुय्वरे 523

एल्ले तन् चैयल्-देवी का यह कार्य; कण्डवर् यावरुम्-जिन्होंने देखा, वे सभी; वीळु मण् इट्टे वीळ्न्दनर्-मरकर गिरने योग्य धरती पर गिर पड़े; वीन्दिलर्-पर मरे नहीं; वाळुम् नाळु उळ-आयु शेष रही; अन्तु पित्तु-तो उसके बाद; माळ्वरो-मरेंगे क्या; ऊळि पेरिन्-युग बदल जाय तो भी; उय्कुतर्-जिनको जीना है; उय्वरे-जीते ही रहेंगे । ५२३

देवी का कृत्य देखकर स्त्री-पुरुष सभी दुखाभिभूत हो गये । वे मरे-से भूमि पर गिरे । पर मरे नहीं क्योंकि आयु शेष थी । युगांत भी हो जाय तो जिनकी आयु शेष है और जिनको जीना है वे जीवित ही रहेंगे । ५२३

❧ तायर् तव्वयर् तन्ऱुणैच् चेडियर्, आय मन्ऱनिय वन्ऱविन् रैन्ऱिवर्
तीयिन् मूळ्हिन रौत्तनर् शैङ्गणान्, तूय तैयलै नोक्कितन् शौल्लुवान् 524

तायर्-माताएँ (रिश्ते, सेवा या उम्र में मातागण्य स्त्रियाँ); तव्वयर्-बड़ी वहनें; तन् तुणै चेडियर्-साथिन चेरियाँ; आयम्-खेल की सखियाँ; मन्ऱनिय अन्ऱपितर्-गहरा प्रेम रखनेवाली अन्य; अन्तु इवर्-ये सब; तीयिल् मूळ्हिनर् औत्तनर्-आग में मग्न हो गई सी हो गई; चैम् कण्णान्-अरुणाक्ष; तूय तैयलै नोक्कितन्-पवित्र देवी को देखकर; शौल्लुवान्-बोले । ५२४

देवी की मातासम स्त्रियाँ, बड़ी वहनेंसम स्त्रियाँ, साथिन चेरियाँ, खेल की सखियाँ और अन्य प्रेम रखनेवाली स्त्रियाँ —सभी आग में कूदी जैसे संकटग्रस्त हो गई । अरुणाक्ष श्रीराम उज्ज्वल चरित्र वाली पवित्र देवी से बोले । ५२४

❧ मुल्लै युङ्गडन् मुत्तु मैदिरप्पित्तुम्, वैल्लुम् वैण्णहै यय्विळै वुन्नुवाय्
अल्लै पोद वमैन्दनै यादलित्, अल्लै तीरन्त विडर्दरु वार्यन्ऱान् 525

मुल्लैयुम्-चमेली; कटल् मुत्तुम्-समुद्र के श्रेष्ठ मोती; अतिरप्पित्तुम्-टकराएँगे तो भी; वैल्लुम्-उनको जीतनेवाले; वैळ् नकैयाय्-श्वेत दन्तवती; विळैवु उन्नुवाय् अल्लै-जो होगा वह सोचती नहीं; पोत अमैन्तनै आतलित्-जाने का निश्चय कर चुकी हो, इसलिए; अल्लै तीरन्त इटर् तरुवाय्-असीम संकट दिलाओगी; अन्ऱान्-कहा । ५२५

चमेली के फूल और समुद्रज मोती को भी हरानेवाले श्वेत दाँतों से शोभित प्रिये, सीता ! तुम अपने कार्य का नतीजा नहीं समझतीं । मेरे साथ आने का निश्चय कर लिया —इससे तुम मुझे अपार संकट दिलाओगी । ५२५

❖ कौंड्र वन्नदु कूडलुड् गोहिलम्, शौंड्र दन्न कुदलयळ् शीरुवाळ्
उड्डु निन्ऱ तुयरमि दीन्ऱुमे, अँड्डु इन्दपि निन्वड्गो लामेन्ऱाळ् 526

कौंड्रवन् अतु कूडलुम्-राजा राम के वह कहने पर; कोकिलम् चैऱ्डतु अन्न-कोकिल को जीतती-सी; कुतलैयळ्-मधुर तोतली बोली वाली; चीरुवाळ्-कुपित होकर; उड्डु निन्ऱ तुयरम्-आपको लगा रहा दुख; इतु अँन्ऱुमे-यही एक है; अँन् तुडन्त पिन्-मुझे त्यागने के बाद; इन्पम् आम् कौन्-सुख ही सुख होगा क्या; अँन्ऱाळ्-कहा । ५२६

विजयी राजा राम ने जब यह कहा तो कोकिलवयनी सीताजी क्रुद्ध होकर बोलीं कि ऐसी बात ! यही एक आपका संकट होगा क्या ? यानी आप मुझे त्याग देंगे तो आपको सुख ही सुख होगा ! यही है न ? । ५२६

❖ पिऱिदौर् माड्डम् बैरुन्दहै पेशलन्, मरुहि वीळ्न्दळ् मैन्दरु मादरुम्
शेरुविन् वीळ्न्द नैडुन्देरुच् चैन्ऱन्नन्, नैऱिपे डामे यरिदिति नीडुगुवान् 527

पैरुन्तकै-उदार श्रीराम; पिऱितु ओर् माड्डम्-उत्तर में कोई वाक्य; पेचलन्-नहीं बोले; मैन्तरुम् मातरुम्-पुरुष और स्त्रियाँ; मरुहि वीळ्न्तु-व्याकुल होकर भूमि पर गिरकर रोये, इसलिए; चैऱुविन् वीळ्न्त- (सिंचे) खेत के समान जो बन गया, उस; नैडु तैरु चैन्ऱन्नन्-उस लम्बे मार्ग में जाने लगे तो; नैऱि पेशामै-मार्ग न पाने से; अरितितिन् नीडुगुवान्-सायास तय करते हुए जाने लगे । ५२७

श्रीराम आगे उत्तर में कुछ कह नहीं सके । वे उनको साथ लेकर जाने लगे । पुरुष और स्त्री सब गिरकर रोने लगे । उनके अश्रु के कारण मार्ग सिंचित खेत के समान हो गया । अधिक भीड़ के कारण मार्ग रुक जाता था । श्रीराम सायास आगे बढ़ते चले । ५२७

❖ शीरै चुड्डित् तिरुमहळ् पिन्ऱैल, मूरि विऱ्कै यिळैयवन् मुन्ऱैलक्
कारै यौत्तवन् पोम्बडि कण्डवव्, वूरै युड्डु दुणर्त्तव् ओण्णुमो 528

तिरु मकळ्-भगवती; शीरै चुड्डित्-बल्कल पहने हुए; पिन् चैल-अनुगमन करती गई; मूरि विऱ्कै-बलवान धनुर्हस्त; इळैयवन्-अनुज लक्ष्मण; मुन् चैल-आगे गये; कारै यौत्तवन्-मेघश्याम; पोम् पटि-(उनके बीच) गये, वह प्रकार; कण्ट-जिसने देखा; अ ऊरै उड्डु-उस नगर का जो हुआ; उणर्त्तवम् ओण्णुमो-(वह दुख) वर्णित करना सम्भव है क्या । ५२८

बल्कल पहने हुए सीताजी श्रीराम के पीछे जा रही थी । हाथ में बलवान धनुष उठाए हुए लक्ष्मण उनके आगे जा रहे थे । बीच में श्रीराम के जाने का प्रकार देखकर वह नगर कैसे दुख में पड़ा, उसका वर्णन करना हमारे लिए सम्भव है क्या ? (नहीं ।) । ५२८

❖ आरुम् बिन्न रळुदव लित्तिलर्, शोरुज् जिन्दयर् यावरुज् जूळ्न्दनर्
वीरन् मुन्वन मेवुडुन् यामेन्नाप्, पोरीन् डौल्लौलि कैमिहप् पोयिन्ऱार् 529

पिन्नर्-उसके बाद; आरुम् अल्लुतु अवलित्तिलर्-रोते हुए दयनीय नहीं बने; चोरुम् चिन्नतैयर् यावरुम्-खिन्नमन सभी; चूळन्तत्तर्-एकत्र हुए; याम् वीरन् मुन्-हम, वीर के पहले ही; वतम् मेवुतुम्-वन जाँगे; अँना-कहते हुए; पोर् ओन्नू ओल् ओलि-युद्ध में उठता-सा जोर का शोर; कैमिक-अधिक मचाते हुए; पोयिनार्-गये । ५२६

इतना हो जाने के बाद लोग रोते-कलपते दयनीय बने रहने के लिए तैयार नहीं थे । इसलिए दुखाक्रान्त सभी एकत्र हुए; निर्णय किया कि हम श्री वीर राघव के जाने से पहले ही वन चले जायँगे । और युद्ध का-सा जोर का शोर करते हुए त्वरित गति से चल पड़े । ५२९

❖ तादै वाशल् कुरुहितन् शार्दलुम्, कोदै वेलवन् शायरैक् कुम्बिडा
आदि मन्त्रनै याड्रुमि नीरैन्नान्, माद रारुम् विळुन्नु मयङ्गिनार् 530

कोतै वेलवन्-माला से अलंकृत भालाधारी श्रीराम; तातै वाचल् कुरुकितन्-पिता के महल-के द्वार के निकट; चार्तलुम्-आने पर; तायरै कुम्पिटा-माताओं को नमस्कार करके; नीर्-आप; आति मन्त्रनै-प्रधान राजा को; आड्रुमिन्-धीरज बँधाइए; अँन्नान्-कहा; मातरारुम्-माताएँ भी; विळुन्नु मयङ्गिनार्-गिरकर सूँछित हुई । ५३०

श्रीराम जो माला से अलंकृत भालाधारी थे, चलते-चलते अपने पिता के महल के द्वार के निकट पहुँचे । तब उन्होंने अपनी माताओं को नमस्कार करके उनसे विनय की कि आप अपने पति चक्रवर्ती को सांत्वना दीजिए । यह सुनकर माताएँ बेहोश होकर गिर गई । ५३०

❖ वाळ्त्ति तारदम् महनै मरुहियै, एत्ति तारिळै योन्नै वळ्त्तित्तार्
कात्तु नल्लुमिन् रैयवदङ् गाळैन्नार्, नात्त लुम्ब वरङ्गि नडुङ्गुवार् 531

ना तल्लुम्प-जिह्वों पर घट्ठा पड़ जाय, ऐसा; अरङ्गि-प्रलाप करके; नडुङ्गुवार्-काँपनेवाली माताओं ने; तम् मकन्नै-अपने पुत्र को; वाळ्त्तित्तार्-आशीर्वाद दिया; मरुहियै एत्तित्तार्-वधू की प्रशंसा की; इळैयोन्नै-अनुज को; वळ्त्तित्तार्-साधुवाद दिया; तैयवतङ्काळ-देवताओं; कात्तु नल्लुमिन्-उनकी रक्षा करने की कृपा कीजिए; अँन्नार्-(यह प्रार्थना) कही । ५३१

वे फिर सँभली । “जीभों में घट्ठा पड़ जाए” —इतना विलाप करती हुई रोई । उन्होंने श्रीराम की प्रशंसा की; वधू सीता को आशीर्वाद दिया और लक्ष्मण को साधुवाद दिया । उन्होंने देवताओं से विनय की कि इन्हें आप रक्षा प्रदान करने की कृपा कीजिए । ५३१

❖ अन्न ताय ररिदिर् पिरिन्दपित्, मुन्नर् निन्नर् मुत्तिवन्नैक् कैदौळ्वात्
तन्न दारुयिर्त् तम्बियुन् दामरैप्, पौन्नुन् दानुमोर् तेर्मिशैप् पोयिनान् 532

अन्न तायर्-वैसी माताएँ; अरितिल् पिरिन्त पित्-बहुत कष्ट के साथ अलग

हुई, पश्चात्; मुन्नर् निन्नर्-अपने सामने स्थित; मुन्नवन्नै-महर्षि का; कै तौळा-हाथ-जोड़कर नमस्कार करके; तन्ननु अरु उयिर् तम्पियुम्-अपने प्यारे प्राणसम अनुज; तामरै पौन्नुम्-पंकजा देवी; तानुम्-और स्वयं; ओर् तेर् मिच्चै पोयित्तान्-एक रथ पर (सवार होकर) चले । ५३२

वे बहुत कष्ट के साथ श्रीराम से अलग हुई । तब श्रीराम अपने सामने स्थित वसिष्ठ महर्षि को नमस्कार करके अपने प्राणसम अनुज और पंकजा श्री लक्ष्मीदेवी के साथ सुमन्त्र से लाये गये एक रथ पर आरुढ़ होकर चल पड़े । ५३२

5. तैल माट्टु पडलम् (तैल निमज्जन पटल)

ॐ एविय कुरिशिल्पिन् याव रेहिलार्, माविय इन्नैयिन् मन्नै नीङ्गलात्
तेवियर् तविर्न्दनर् दैव् मानहर्, ओविय मौळिन्दन वुयिरि लामयाल् 533

मा इयल् तानैयिन्-बड़ी प्रकीर्तित सेना के स्वामी; मन्नै-चक्रवर्ती को; नीङ्क अल्लात्-जो छोड़ नहीं जा सकीं; तेवियर् तविर्न्दनर्-वे पत्नियाँ रह गईं; तैवम् मा नकर्-दिव्य विशाल नगर के; ओवियम्-चित्र; उयिर् इलामेयाल्-प्राणहीन रहने से; ओळिन्दन-अपवाद हुए; एविय कुरिचिल् पिन्-(वनगमन की) आज्ञा-प्राप्त श्रीराम के पीछे; एकिलार् यावर्-गये कौन नहीं । ५३३

पिता की आज्ञा से वन जानेवाले श्रीराम के साथ कौन-कौन गये ? बहुत यशप्राप्त सेना के स्वामी चक्रवर्ती को जो छोड़ नहीं जा सकती थीं वे उनकी रानियाँ नहीं गई । फिर उस दिव्य नगर के चित्र नहीं गये क्योंकि वे प्राणवन्त नहीं थे । इनको छोड़ कौन थे जो उनके पीछे नहीं गये ? । ५३३

कैहणीर् परन्नुका उडैरक् कण्णुहुम्, वैय्यनीर् वैळ्ळत्तु मैळ्ळच् चेऱलाल्
उय्यवे लुलहुमान् इन्न नीरुलाम्, दैवमी तौत्तदच् चैम्बोर् रेऱरो 534

अ चैम् पौन् तेर्-वह लाल स्वर्ण का रथ; कैकळ्-पार्श्वों में; नीर परन्नु-जल फैलकर; काल् तौटर-पहियों का पीछा करे, ऐसा; कण् उकुम्-आँखों से बहनेवाला; वैय्य नीर् वैळ्ळत्तु-गरम अश्रुप्रवाह में; मैळ्ळ चेऱलाल्-धीरे-धीरे गया, इसलिए; एळु उलकुम् औन्न आत् नीर्-सातों लोकों को अपने अन्दर समा लेनेवाले उस (युगान्त) जल-प्लावन में; उय्य-लोकोद्धरणार्थ; उलाम्-जो धूमता फिरता था; तैवम् मोन् औत्ततु-उस दिव्य मत्स्य के समान लगता था । ५३४

जब श्रीराम का उत्तमस्वर्ण-रचित रथ चला, तब लोग अधिक रोये । उनके अश्रुजल का विपुल विस्तार हो गया । उसके बीच रथ उस मत्स्य के समान (जो विष्णुदेव का अवतार था) धीरे-धीरे चल रहा था, जो सातों

लोकों को अपने अन्दर समा लेकर फैले हुए प्रलय-जल पर जीवों का उद्धार करते हुए संचार करता था । ५३४

❖ मीन्पुहल् पॅरवैयि लौडुङ्ग मेदियो, डान्पुहक् कदिरव नत्तम् बुक्कनन्
कान्पुहक् काण्गिले तैन्ऱु कल्लदर, तान्पुह मुडुहित तैन्नुन् दन्मयान् 535

कतिरवन्-सूर्य; कान् पुक् काण्किलेन्-(श्रीराम को) वन जाते न देख सकूंगा;
ऐन्ऱु-सोचकर; तान् कल् अतर् पुक्-खुद पर्वत-मार्ग में जाने के लिए; मुडुक्कितन्
ऐन्नुम् तन्मैयान्-त्वरित रहा जैसे; मीन् पुक्कल् पॅर-नक्षत्र प्रकट होने देते हुए;
वैयिल् औतुङ्क-धूप को छिपने देते हुए; मेतियोटु आन्-भैंसों के साथ गायों के;
पुक्-(चरागाह से लौटकर) नगर में प्रवेश करते; अत्तम् पुक्कनन्-अस्तगिरि पर
पहुँच गया । ५३५

सूर्य अस्ताचल पर जाकर छिप गया मानो श्रीराम का वन जाना
देख नहीं सकता हो और वह खुद पर्वतपूर्ण जंगल के रास्ते में जल्दी जाना
चाहता हो । तब आकाश में तारे उदित हुए । धूप छिप गई । भैंसों
और गायें चरागाहों से नगर के अन्दर आ गई । ५३५

पहुत्तवान् मदिहौडु पदुमत् तण्णले, वहुत्तवा णुदलियर् वदन् राशिबोल्
उहुत्तकण् णोरिन वौळियु नीड्किड, मुहिल्त्तळ् हिळ्न्दन् मुळरि योड्दमे 536

पकुत्त वान् मति कौटु-अर्धचन्द्र से; पदुमत्तु अण्णले-कमलासन ने, जो स्वयं;
वकुत्त-रचाया; वाळ् नुतलियर्-उज्ज्वल ललाट वालियों की; वतत्तम् राचि पोल्-
वदनराशियों के समान; मुळरि ईट्दम्-कमल ससूह; उकुत्त कण् नीरिन-अश्रु
वहाते हुए; औळियुम् नीड्किट-प्रभा-विहीन होकर; मुक्किळ्त्तु-बन्द होकर;
अळ्कु इळ्न्तन-आकर्षण खो गये । ५३६

कमल के पुष्प अयोध्या नगर की स्त्रियों के समान जिनके ललाटों
को ब्रह्माजी ने अर्द्धचन्द्र के आधार पर (या चन्द्र के खण्डों को लेकर)
वनाया था, आँसू (शहद) वहाते हुए निष्प्रभ होकर मुकुलित हो गये ।
("कण्णीर्" में श्लेष है । कण् नीर्-आँसू; कळ् नीर्-मधु का
जल ।) । ५३६

❖ अन्दियिन् वैयिलौळि यळिय वान्हम्, नन्दलिल् केहयन् पयन्द नङ्गैतन्
मन्दरै युरैयैनुड् गडुविन् मट्किय, शिन्दयि निरुण्डदु शैम्मै नीड्गिये 537

अन्तियिन् वैयिल् औळि-सायंकाल की धूप के; अळिय-छिप जाने से; वान्
अकम्-आकाश; मन्तर् उरै ऐनुम्-मन्थरा का वचन रूपी; कटुविन् मट्किय-विष
के कारण मन्द हुए; नन्तल् इल्-दोषहीन; केकयन् पयन्त नङ्कै-केकय की पुत्री;
तन् चिन्तैयिन्-के मन के समान; चैम्मै नीड्कि-(सिधाई) लाली से छूटकर;
इरुण्टु-अन्धकार से भर गया । ५३७

सन्ध्याकालीन धूप का प्रकाश भी चला गया । तब आकाश निर्दोष

केकयराज की पुत्री कैकेयी के मन के समान जो मंथरा के विपवाक्य से मैला होकर सिधाई छोड़कर कलुषित हो गया था, लालिमा छोड़कर अँधेरे से आवृत हो गया । (चैम्पै— लालिमा, सिधाई ।) । ५३७

परन्दुमी	नरुम्बिय	पशलै	वानहम्
अरन्दयिन्	मुनिवर	नरैन्द	शावत्ताल्
निरन्दर	मिमैप्पिला	नैडुङ्ग	णीण्डिय
पुरन्दर	नुरुवैन्प्	पौलिनद्	दैङ्गुमे 538

मोत् परन्तु अरुम्पिय—नक्षत्रों से व्याप्त; पचलै वान् अकम्—ताजे रंग के आकाश भर में; अरन्तै इत् मुनिवरन्—शोक-रहित मुनि (गौतम) के; अरैन्त चापत्ताल्—कहे (दिये) शाप से; निरन्तरम्—निरन्तर; इमैप्पु इला—अपलक; नैट्टु कण् ईट्टिय—लम्बी आँखों से भरे; पुरन्तरन् उरु अँत—पुरन्दर के शरीर के समान; पौलिनत्तु—दिखा । ५३८

आकाश में सब जगह नक्षत्र उदित हो गये । तब वह पुरन्दर के शरीर के समान दिखा जिस पर दुख से अप्रभावित मन वाले गौतम ऋषि के शाप के फलस्वरूप अपलक लम्बी आँखों से पूर्ण था । ५३८

✽ तिरुनहर्क्	कोशन्नै	यिरण्डु	शैन्डोर्
विरैशैरि	शोलैयै	विरैवि	नैय्दिनान्
इरदनिन्	इळिन्दुवि	निराम	तिन्नूणै
उरैशैरि	मुत्तिवरो	डुरैयुड्	गालये 539

इरामन्—श्रीराम; विरैविन्—जल्दी; तिरुनकर्क्कु—उस श्री-युक्त पुरी को; ओवत्तै इरण्डु चैन्डु—दो योजन दूर जाकर; विरै चैरि—(पुष्प के) सुवासपूर्ण; ओर् चोलैयै—एक उपवन में; अय्तिन्नान्—पहुँचे; पिन्—पश्चात्; इरतम् निन्डु—रथ से; इळिन्तु—उत्तरकर; इन् तुणै—सत्संगी बनकर; उरै चैरि—उपदेश के वचन कहनेवाले; मुनिवरोट्टु—मुनियों के साथ; उरैयुम् कालै—ठहरे, तब । ५३९

श्रीराम आगे बढ़ते चले । अयोध्या के श्री-नगर से दो योजन दूर जाकर एक पुष्प-भरे उपवन में पहुँचे । वहाँ रथ से उत्तरकर वहाँ के ऋषि-मुनियों के सत्संग में उनके उपदेश सुनते हुए ठहरे । तब— । ५३९

✽ वट्टमो	रोशन्नै	वळैविर्	राय्न्डु
अँटन्नै	यिडवुमो	रिडमि	लावहै
पुट्टहु	शोलैयिन्	पुत्तुत्तैच्	चूळन्नुताम्
विट्टिलैर्	कुरुशिलै	वेन्दर्	वेळ्ळोर् 540

वेन्तर्—राजा लोग; वेळ् उळोर् ताम्—अन्य लोग सभी; वट्टम्—चारो ओर; ओर् ओचत्तै वळैविर्डु आय्—एक योजन का विस्तार बनकर; नट्टु—बीच में; अँळ् तन्नै इट्टुम्—तिल रखने के लिए भी; ओर् इट्टम् इला वकै—स्थान न रहा, ऐसा;

पुळ तकु-खगों से पूर्ण; चोलैयिन् पुडतूतै चूळन्नु-उपवन के चारों ओर घेरकर;
कुरुचिलै विट्टिलर्-युवराज के पास से हटे नहीं । ५४०

राजा और अन्य लोग एक योजन के विस्तृत भू-भाग में ऐसे भर गये कि तिल रखने को भी स्थान नहीं रह गया । वे खगकुल-कलकल-कलित उस उपवन के चारों ओर घेरे रहे और श्रीराम से अलग नहीं हुए । ५४०

❖ कुयिन्नुत्त	कुलमणि	नदियिन्	कूलत्तिल्
पयिन्नुयर्	वालुहप्	परप्पिड्	पैम्बुलिल्
वयिन्नुळुम्	वैहिता	रौन्नुम्	वाय्मडुत्
तयिन्नुल्लर्	तुयिन्नुल्ल	रळुडु	माळ्ळिहिनार् 541

कुलम् मणि कुयिन्नु अन्त-श्रेष्ठ रत्नराशियाँ जड़ित हों, ऐसा; नतियिन् कूलत्तिल्-नदी के कूलों पर; पयिन्नु उयर् वालुकम् परप्पिल्-भरे, ऊँचे बालू के मैदानों पर; पच्चुमै पुल्लिल्-हरी घास पर; वयिन्नु तौळुम्-स्थान-स्थान पर; वैकितार्-रहकर; औन्नुम् वाय् मटुत्तु-कुछ भी मुख में रखकर; अयिन्नु इलर्-बिना खाये; तुयिन्नु इलर्-बिना सोये; अळुत्तु माळ्ळिहिनार्-रोये और व्यग्र हुए । ५४१

लोग (तमसा) नदी के कूलों पर, बालू के ऊँचे टीलों पर, हरी घास के मैदानों पर और स्थान-स्थान पर उन पर जड़ित श्रेष्ठ रत्नों की राशियों के समान ठहरे रहे । उन्होंने अपने मुख में (खाने के लिए) कुछ नहीं रखा—भूखे ही रहकर वे रोये और बिना सोये पड़े रहे । ५४१

❖ वाविविरि	तामरैयिन्	मामलरिन्	वाशक्
काविविरि	नाण्मलर्	मुहिळ्त्तनैय	कण्णार्
आविविरि	पानुरैयि	नाडैयणै	याह
नाविविरि	कूळैयिळ	नव्वियर्	तुयिन्नुर् 542

वावि विरि-वापियों में खिले हुए; तामरैयिन् मा मलरिन्-कमल के श्रेष्ठ पुष्पों में; वाचम् विरि-सुवास बिखेरनेवाले; कावि नाळ् मलर्-नील कुवलय के सद्य-विकसित फल; मुकिळ्त्त अनैय-खिले हों, जैसे; कण्णार्-ऐसी आँखों वाली; नावि विरि कूळै-कस्तूरी का वासयुक्त केश वाली; इळ नव्वियर्-बालमृगी-सी तरुणियाँ; आवि विरि-धुआँ-सह; पाल् नुरैयिन् आटे-दूध के फेन के समान (महीन) वस्त्रों को; अणै आक-बिछावन बनाकर; तुयिन्नुर्-सोई । ५४२

(बहुन देर के बाद किसी तरह उनको नींद आ गई । तब निद्रा-मग्न उनका वर्णन किया जाता है ।) वापियों पर खिले कमलों पर नील कुवलय खिले हों ऐसे लगनेवाले मुखों और आँखों वाली बालमृगी-सी स्त्रियाँ, जिनके केश से कस्तूरी की सुगन्धि छूट रही थी सुगन्धित धुएँ सहित दूध के फेन के समान वस्त्र को ही बिछावन बनाकर सो रहीं । ५४२

पेरुम्बहल्	वरुन्दिनर्	पिरड्गुमलै	तैङ्गिन्
कुरुम्बहल्	पौरुज्जैविल्	मड्गयर्	कुरड्गिल्
अरुम्बनैय	कौड्गययि	लम्बनैय	वुण्क्ण
करुम्बनैय	शौज्जौनविल्	कन्नियर्	तुयिन्ऱार् 543

अरुम्पु अनैय कौड्कै—(सेमर) कली के समान स्तन; अयिल् अम्पु अनैय—तीक्ष्ण वाण के समान; उण् कण्—काजल-लगी आँखों वाली; करुम्पु अनैय—इक्षु (-रस)-तुल्य; चैम् चोल् नविल्—मधुरभाषी; कन्नियर्—वालाएँ; पेरु पकल् वरुन्तितर्—लम्बे दिन के समय में श्रम उठाकर; पिरड्कुम् मुलै—जिनके उभरे स्तन; तैङ्किन् कुरुम्पैकळ् पौरुम्—नारियल के कच्चे फलों के समान थे; चैविल् मड्कैयर्—उन धाइयों के; कुरड्किल्—ऊरुओं पर; तुयिन्ऱार्—(सिर रखे) सोई । ५४३

सेमरकली के समान पयोधरों और तीक्ष्ण भाले के समान आँखों वाली, इक्षुरस-मधुरभाषिणी कन्याएँ दिन भर चलते आने से श्रान्त होकर नारियल के कच्चे फलों के समान कुच्चों वाली धाइयों के ऊरुओं पर सिर रखकर सोयी पड़ी थी । ५४३

पूवह	निरैन्दपुळि	नत्तिडर्ह	डोरुम्
मावहिरि	नुण्गणर्	मडप्पिडियिन्	वैहच्
चेवह	मणैन्दशिरु	हट्करिह	ळैन्नत्
तूवयि	लिरुन्दमड	मन्नर्ह	डुयिन्ऱार् 544

पू अकम् निरैन्नत्—फूलों से भरे; पुलित्तम् तिटरकळ् तोरुम्—नदियों के पुलितों के टीलो पर; मा वकिरिन् उण् कण्णर्—टिकोरे की फाँक के समान और काजल-लगी आँखों वाली स्त्रियाँ; मटम् पिडियिन् वेंक—छोटी हथिनियों के समान सोई; तू अयिल् इरुन्त—मांसयुक्त भाले लिये हुए; मडम् मन्तर्कळ्—वीर राजा लोग; चेवकम् अणैन्नत्—निद्रा-रत; चिरु कण् करिकळ् अन्नत्—छोटी आँखों वाले हाथियों के समान; तुयिन्ऱार्—सोये । ५४४

नदी के बीच पुलिन थे जिनमें विकसित पुष्प-सह तरु, लताएँ आदि थी । उन पर टिकोरे की फाँक-सी और काजल-लगी आँखों वाली स्त्रियाँ (राजकुल की स्त्रियाँ) छोटी हथिनियों के समान सो रही थीं । उनके पास मांसलिप्त भालों वाले वीर राजा लोग छोटी आँखों के गजों के समान सो रहे थे । ५४४

तहवुमिहु	तवमुमिवै	तळुववुयिर्	कौळुनर्
मुहमुमव	रळुनुहर्	हिलर्तुयिरिन्	मूळ्हि
अहवुमिळ	मयिल्हळुयि	रलशियत्त	वन्नैयार्
महवुमुलै	वरुडविल्	महळिर्ह	डुयिन्ऱार् 545

इळ मकळिर्कळ्—छोटी उम्र की स्त्रियाँ; तकवुम्—निष्पक्ष व्यवहार; मिक्कु

तवमुम्-और अधिक तपस्या; इव तल्लुव-इनसे युक्त; उयर्-श्रेष्ठ; कौलुनर् मुकमुम्-पतियों का मुख (उनकी कृपादृष्टि); अवर् अल्लुम्-उनकी कृपा (सहानुभूति); नुकर्किलर्-विना भोगे; तुयर्लि मूळकि-दुख में मग्न; मकवु मुलै वरुट-शिशु को स्तन सहलाने देते हुए; उयर् अलचियन्न-प्राण दुर्बल पड़े; अकवुम् इळ मयिल्कळ अत्तैयार्-नाचनेवाले छोटी उम्र के मयूरों के समान; तुयिन्ऱार्-थककर सो रहों। ५४५

कुछ (सन्तानवती) स्त्रियाँ अपने पतियों की, जो श्रेष्ठ रीति से तपस्या के समान अपना गार्हस्थ्य जीवन बिताते थे, सहानुभूतिपूर्ण कृपा-दृष्टि और उनके कृपा-वचन का सुख उठा न सकीं। वे इतनी व्याकुल थीं। उनके शिशु उनके स्तनों के चूचुकों को पकड़कर घुमा रहे थे। उसकी भी उनको सुध नहीं थी। नाचकर थके हुए मोरों के समान वे श्रांत पड़ी सो रही थीं। ५४५

माहमणि	वेदिहैयिन्	मादविशैय्	पन्दल्
केहय	नैडुङ्गुल	मैन्चचिलर्	किडन्ऱार्
पूहवन्न	मूडुपडु	हरप्पुळिन्न	मुन्ऱिल्
तोहैयिळ	वन्नन्निरै	यिङ्चिलर्	तुयिन्ऱार् 546

चिलर्-कुछ लोग; वेतिकैयिन्-चवूतरों पर; माकम् अणि-आकाश तक ऊँचे, बढ़ी हुई; मातवि चैय् पन्तल्-माधवी लता के वितान के नीचे; नैटु केकयम् कुलम् अन्न-विशाल मयूरों के समूह के समान; किटन्तार्-पड़े रहे; चिलर्-कुछ (स्त्रियाँ); पूकम् वनमूटु-पूगवन-मध्य; पटुक्क-जलाशयों के निकट; पुळिन्नम् मुन्ऱिल्-बालू के टीलों पर; तोकै इळ अन्नम् निरैयिल्-पंखों वाले बाल-हंसों की श्रेणियों के समान; तुयिन्ऱार्-सोती रहों। ५४६

वहाँ के उद्यानों में चवूतरे थे। उन पर माधवीलताओं के वितानों के नीचे कुछ स्त्रियाँ विशाल मयूरसमूहों के समान पड़ी रही। कुछ स्त्रियाँ पूगवन-मध्य जलाशयों के पास बालू के टीलों पर हंसों की पंक्ति के समान सो रही थीं। ५४६

❀ चम्बह	नरुम्पौळिल्ह	ळिङ्गरुण	वञ्जिक्
कौम्बळ	हौशिनन्दन	वैन्चचिलर्	कुळैन्ऱार्
वम्बळवु	कौङ्गयौडु	वालुह	वळाहत्
तम्बवळ	वल्लिह	ळैन्चचिल	रशैन्ऱार् 547

चिलर्-कुछ स्त्रियाँ; चम्पकम् नरु पौळिल्कळिल्-सुवासित चम्पकवनों में; तरुणम् वञ्चि कौम्पु-तरुण पुष्पलताएँ; अळकु औचिन्तन्-मनोरम रीति से लचकी गिरी हों, जैसे; कुळैन्तार्-मुरझाई पड़ी रहों; चिलर्-और कुछ; वम्पु अळवु कौङ्क यौटु-अंगियावद्ध स्तनों के साथ; बालुकम् वळाकत्तु-बालू के मैदानों पर; अम् पवळ वल्लिकळ अत्त-सुन्दर प्रवाल-लताओं के समान; अचैन्तार्-शिथिल पड़ी रहों। ५४७

कुछ चम्पकवनों में मुरझाई पड़ी सुन्दर पुष्पलताओं के समान क्लेश-तप्त पड़ी रहीं। कुछ अन्य स्त्रियाँ अँगिया-वद्ध स्तनों के साथ बालू के मैदानों पर, सुन्दर प्रवाल-लताओं के समान थकी हुई पड़ी रहीं। ५४७

कुङ्कुम	मलैक्कुळिर्	पनिक्कुळुमि	यैन्नत्
तुङ्गमुलै	यिर्रुह	ळुर्च्चिलर्	तुयिन्ऱार्
अङ्गयणै	यिर्पोलि	वळुङ्ग	मुहर्मेल्लाम्
पङ्गय	मुहिळ्त्तत्त	वैन्च्चिलर्	पडिन्दार् 548

चिलर्-कुछ स्त्रियाँ; कुङ्कुमम् मलै-कुङ्कुम-पर्वत पर; कुळिर् पनि-शीतल हिम; कुळुमि अन्न-जमा रहा, जैसे; तुङ्गम् मुलैयिल्-तुंग स्तनों पर; तुक्ळ उर-धूलि जमी रही; तुयिन्ऱार्-इस प्रकार सोई; चिलर्-अन्य कुछ; मुक्कम् अल्लाम्-मुखों के; मुक्किळ्त्तत्त पङ्कयम् अन्न-मुरझाकर बन्द हुए कमल-पुष्पों के समान; पोळिवु अळुङ्क-प्रभा के छूटते; अम् कै अणैयिन्-सुन्दर हाथों के तकियों पर; पडिन्तार्-(सिर रखकर) भूमि पर लेटी रहीं। ५४८

कुछ स्त्रियाँ अपने तुंग स्तनों को, कुङ्कुम-पर्वत पर हिम जमा हो जैसे धूल-धूसरित करती हुई सो रही थी। कुछ स्त्रियाँ बन्द कमलसम, प्रभाहीन मुखों के साथ अपने हाथों पर, तकिये के समान, सिर रखे सो रही थीं। ५४९

तौडुत्तकलि	डैच्चिलर्	तुवण्डनर्	तुयिन्ऱार्
अडुत्तवडे	यिर्चिल	रळिन्दन	रयर्न्दार्
उडुत्ततुहिल्	शुर्ऱौर	तलैच्चिल	रुर्ऱैन्दार्
पडुत्तकुळै	यिर्चिलर्हळ	कण्पडै	पयिन्ऱार् 549

चिलर्-कुछ (स्त्रियाँ); तौडुत्त कल् इटै-पास-पास लगे रहे पत्थरों पर; तुवण्डनर् तुयिन्ऱार्-मुरझाई पड़ी सोती रहीं; चिलर्-कुछ; अडुत्त अटैयिल्-नीचे बिखरे रहे पत्तों पर; अळिन्दनर् अयर्न्तार्-मन मारकर सो रही थीं; चिलर् उडुत्त तुक्कि चुर्रु-पहने हुए वस्त्र की लपेटों से; और तलै-एक सिरे पर (दामन पर); उरैन्तार्-सोई; चिलर्क्कळ्-कुछ लोग; पडुत्त कुळैयिल्-खुद पत्ते बिछाकर उन पर; कण् पडै पयिन्ऱार्-आँख का उन्मीलन किया। ५४९

कुछ पास-पास लगे पड़े रहे पत्थरों पर चूर होकर पड़ी रही। कुछ स्त्रियाँ नीचे बिखरे रहे पत्तों पर क्लांत हो लेटी रही। कुछ स्त्रियाँ अपनी कमर पर लपेटी हुई साड़ी के दामन को बिछाकर उस पर सिर रखे सो रही थी। कुछ स्त्रियों ने खुद पत्ते बिछाये और उन पर लेटकर अपने को भूल गई। ५४९

ॐ एनयर्	मिन्नण	मुउङ्गिन	रुउङ्गा
मानवत्त	मन्दिरिशु	मन्दिरनै	वावैन्

रुनमिल् मेनिहळ्व
परुङ्गुण दुण्डवुरै
मीरुङ्गुडैय केळैत
वुन्नाल् विळम्बुम् 550

एतैयरुम्-अन्य लोग भी; इन्तणम्-इस तरह; उरुङ्किनर्-सोये; उरुङ्का मातवत्तुम्-जो नहीं सोये, वे 'मानव' (मनुकुल-सम्भूत) श्रीराम; मन्तिरि चुमन्तिरत्तै-मन्त्री सुमन्त्र को; वा अन्ऱु-आइए कहकर; ऊतम् इल्-दोषहीन; पेरुम् कुणम्-श्रेष्ठ गुण; ओरुङ्कु उटैय-एक साथ रखनेवाले; उन्ताल्-आपसे; मेलु निकळ्वतु-आगे करने योग्य; उण्डु-काम है; अ उरै केळ-वह कथन सुनिए; अन्-कहकर; विळम्पुम्-कहने लगे । ५५०

अन्य लोग भी कही-कही किसी विध निद्रारत हो रहे । तब मनुकुल-श्रेष्ठ श्रीराम ने, जो सो नहीं रहे थे, मन्त्री सुमन्त्र को पास बुलाया और कहा कि निर्दोष और गुण-पूर्ण ! आपके द्वारा एक काम होना है । वह सुनिए । यह कहकर वे आगे बोले । ५५०

ॐ पूण्डपे रन्वि नारैप् पोक्कुव दरिदु पोक्का
दीण्डुनिन् रेहल् पौल्ला दैन्दैनी यिरद मिन्ने
तूण्डिनै मीळ्व दाक्किर् चुवट्टैयोर्न् दैन्नै यङ्गे
मीण्डन तैन्न मीळ्व रिदुनिन्नै वेण्डिर् रेन्नान् 551

पूण्ड पेर् अन्पित्तारै-मेरे ऊपर बड़ा प्रेम रखनेवाले इनको; पोक्कुवतु-अलग कर भेजना; अरितु-सुलभ नहीं है; पोक्कातु-उनको भिजवाये बिना; ईण्डु निन्ऱु-यहाँ से; एकल्-हमारा जाना; पौल्लातु-अन्याय होगा; अन्तै नी-पितृतुल्य आप; इरतम्-रथ को; इन्तै तूण्डित्तै-अभी चलाकर; मीळ्वतु आक्किल्-नगर को लौटा गया ऐसा करेगे; चुवट्टे ओर्न्तु-चिट्ठन देखकर; अन्तै अङ्के मीण्डत्तन् अन्त-मुझे वहाँ लौटा हुआ मानकर; मीळ्वर्-वे भी लौटेंगे; निन्तै वेण्डिर्-आपसे प्रार्थना है; इतु-यह; रेन्नान्-कहा । ५५१

मुझ पर अपार प्रेम रखनेवाले इनको वापस भेजना आसान नहीं लगता । उनको लौटा के भेजे बिना यहाँ से आगे जाना भी बुरा होगा । इसलिए मेरे पितृतुल्य आप हमारे रथ को लौटाकर नगर ले जाइए । लोग भी रथ-चिह्न देखकर मुझे अयोध्या लौटा हुआ मानकर अयोध्या चले जाएंगे । यही आपसे प्रार्थना है । (वाल्मीकि और तुलसी के अनुसार सुमन्त्र यहाँ से वापस नहीं भेजे जाते । गंगा नदी पहुँचने के बाद भेजे जाते हैं ।) । ५५१

चैव्विय कुरुशिल् कूडत् तेर्वाला तुणरत्तु वात्तव्
वैव्विय तायिर् उय विदियिन्निन् मेलन् पोलाम्
इव्वयि निन्नै नीक्कि यिन्नुयिर् नीत्ते नल्लेन्
अव्वयि ननैय काण्डर् कमैदला लळिय तैन्नान् 552

चैव्यिय कुरुचिल्-सुशील राजा राम के; क्रूर-यह कहने पर; तेर् वल्लान्-रथ-सारथ्य-चतुर; उणर्त्तुवान्-समझाते हुए; अळियन्-दयनीय मैं; इ वयिन् नित्तै नोक्कि-यहाँ, (इस तरह) आपको छोड़कर; इन् उयिर् नोत्तेन् अल्लेन्-प्यारे प्राणों को बिना छोड़े; अ वयिन्-वहाँ (नगर में); अत्तैय काण्डुक्कु-(वहाँ जो होंगे), उन दुख-दृश्यों को देखने के लिए; अमैतलाल्-(आपका कहना) मार्ग बनता है, इसलिए; अ चैव्यिय तायिन्-उन क्रूर माता से भी अधिक; तीय वित्तिथिनिन्-बुरी विधि से भी अधिक; मेलन् पोल् आम्-बड़ा हुआ क्रूर वनंगा ही; अन्नुरान्-कहा । ५५२

यह सुनकर रथसारथ्य-चतुर सुमंत्र एक दम विचलित हो गये । श्रीराम सुशील राजा थे । उनके कथन का खण्डन हो नहीं सकता । इसलिए सुमंत्र उनको समझाते हुए कहने लगे । मैं बड़ा दयनीय हूँ । आपको इधर छोड़कर बिना जीवन त्यागे, उधर आपके वियोग से जो अनर्थ होंगे —उनको देखने के लिए मैं जाऊँ, यही आपकी सलाह का अर्थ है ! तब मैं क्रूर कैकेयी से भी बढ़कर और निर्मम विधि से भी अधिक निष्ठुर हो गया ! । ५५२

❖ देवियु मिळवलुन् दौडरच् चैल्वनैप्, पूवियल् कान्नहम् पुहवुय्त् तेत्तैन्गो
कोवित्तै युडत्तुकोड् कुरुहि तेत्तैन्गो, यावदु कूरुहे तिरुम्बि नैम्बिनेन् 553

इरुम्पिन् नैम्बितेन्-लोहे का दिल वाला मैं; तेवियुम् इळवलुम् तौटर-देवी और अनुज के अनुसरण करते; चैल्वत्तै-श्रीमान (राघव) को; पू इयल्-पुष्प भरे; कातकम् पुक-कानन में प्रविष्ट; उय्त्तेन्-कराया; अत्तुको-कहाँ क्या; कोवित्तै-राजा को; उटन् कोटु कुक्किनेन्-साथ लेकर आया; अत्तुको-कहाँ; यावदु कूरुकेन्-क्या कहूँगा । ५५३

वहाँ जाकर मैं क्या कहूँगा ? कहीं कि लौहदिल वाला, मैंने देवी सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ श्रीराम को पुष्पतरपूर्ण जंगल में भेज दिया ? या यह (झूठ) कहीं कि राजा राम को साथ लाया हूँ ? उनसे क्या कहूँगा ? । ५५३

❖ तारुडै मलरिन् मुदुङ्गत तक्किला, वारुडै मुलैयौडु मडुहै मैन्दरैप्
पारिडैच् चैलुत्तिनेन् पळैय नण्बित्तेन्, तेरिडै वन्दनेन् रीदि लेत्तैन्गो 554

पळैय नण्पिनेन्-बहुत दिनों का स्नेही मैं; तार् उटै (य) मलरित्तुम्-समान रूप से फँसे हुए पुष्पों पर भी; औतुङ्क तक्कु इलात-चलने में असमर्थ; वार् उटै मुलैयौटु-अगियाबद्ध स्तनों वाली सीता के साथ; मत्तुक् मैन्तरै-बलिष्ठ नौजवानों को; पार् इटै चैलुत्तिनेन्-भूमि पर चलने देते हुए; तीतु इलेन्-बिना आँच के; तेरिटै वन्तत्तैन्-रथ पर सवार होकर आया; अत्तुको-कहाँ । ५५४

सुमंत्रजी आगे पूछते हैं कि क्या मैं उनसे यह कहूँ कि बहुत दिनों का

स्नेही मैं पुष्प पर भी न चल सकनेवाले मृदुल चरणों की और अँगिया-निविष्ट स्तनों वाली सीताजी के साथ वीर नौजवान श्रीराम और लक्ष्मण को पैदल चलने देकर, विना किसी आँच के रथ पर बैठकर सुखपूर्वक आ गया ? । ५५४

❖ वत्सुलक्	कन्मन	मदियिल्	वज्जनेत्
अँत्सुलप्	पुऱवुडैन्	दिरङ्गु	मन्तत्पाल्
उत्सुलक्	कुरियशौ	लुणर्त्तत्	चैल्हेनो
तँत्सुलक्	कोमहन्	रूदिऱ्	चैल्हेनो 555

वत्सुलम् कल-कठोर स्थानों के पत्थर के समान; मनम्-मन का; मति इल् सद्बुद्धि-हीन; वज्जनेत्-वंचक मैं; अँत्सु उलप्पु उऱ-शरीर शिथिल हो, ऐसे; उटैन्तु-विदीर्णमन होकर; इरङ्कुम्-दुखी रहनेवाले; मन्तत् पाल्-राजा के पास; उत्सुलक् उरिय-आपके, अपनी बुद्धि में सही मानकर; चैल्-वचनों को; उणर्त्त-कहने के लिए; चैल्कैतो-जाऊँ; तँत्सुलम् कोमकन्-दक्षिण दिशा के राजा (यम) के; तूतिन्-दूत के समान; चैल्कैतो-जाऊँ । ५५५

मैं वड़ा कठोर-दिल हूँ । कठोर स्थल के पत्थर से भी कठिन मेरा चित्त है । बुद्धि भी मेरी नीच है । वंचक हूँ ! आपके वियोग से शरीर को दुर्बल और मन को विदीर्ण होने देते हुए शोकसंतप्त रहनेवाले राजा के पास, आप जो अब अपनी सन्मति के अनुसार कह रहे हैं —उन बातों को कहने के लिए दक्षिण दिशा के देवता यम के दूत के समान जाऊँ मैं ? । ५५५

नाऱ्ऱिश् मान्दरु नहर माक्कळुम्, तेऱ्ऱिन् कौणर्वर्त्तु शिरुवन् रन्तर्येन्
ऱाऱ्ऱित वरशनै यैय वैय्यवैन्, कूऱ्ऱुऱुळ् शौल्लिनाऱ् कौलैशैय् वेत्तुगौलो 556

ऐय-प्रभु; नाल् तिचै मान्तरुम्-(आपके साथ) चारों दिशाओं के लोग (जो आये हैं); नकरम् माक्कळुम्-और नगर के लोग; अँत् चिरुवन् तन्तै-मेरे वत्स को; तेऱ्ऱिन् कौणर्वर्-समझा-बुझाकर लौटा लाएँगे; अँत्-समझकर; आऱ्ऱित अरचत्तै-धैर्य अवलम्बित कर रहनेवाले राजा को; वैय्य-तापक; अँत्-मेरे; कूऱ्ऱु उऱुळ्-यम के समान; शौल्लित्ताल्-वचनों से; कौलै चैय्वेनो-हत्या करनेवाला वनूँ । ५५६

हे प्रभु ! चक्रवर्ती यही सोचकर सान्त्वना पा रहे हैं और जीवन धारण कर रहे हैं कि चारों ओर से जो लोग आये थे, वे और अयोध्या नगर के वासी मिलकर मेरे वत्स श्रीराम को समझा-बुझाकर ले आएँगे । मैं जाऊँ और उनसे प्राण सुखानेवाले, यम-सम वचन से उनके प्राण निकाल दूँ ? । ५५६

❖ अङ्गिमेल्	वेळ्विशैय्	दरिदि	तीपैऱ्ऱु
शिङ्गवे	ऱहन्ऱुदैन्	रूणर्त्तत्	चैल्हेनो

अङ्गळको

महर्किति

यैन्निर्

केहयन्

नङ्गये

कडैमुर्

नल्लळ्

पोलुमाल् 557

अङ्गळ को मङ्कु-हमारे चक्रवर्ती के पास; नी अङ्कि मेल्-आप अग्नि पर; वेळ्वि चैय्तु-अनेक यज्ञ करके; अरितिन् पॅर्-अपूर्व रीति से आपने जिनको प्राप्त किया; चिङ्कम् एङ्-पुरुषसिंह; अकनुरतु अँनु-विछुड़ गये, यह; उणरत्तु चैल्कैतो-कहने के लिए जाऊँ; इनि-अब; कडै मुर्-आखिर; केकयन् नङ्कये-केकयपुत्री ही; अँन्तिन् नल्लळ् पोलुम्-मुझसे भली बनेगी शायद । ५५७

मैं अपने चक्रवर्ती के पास जाऊँ और यह कहूँ कि आपका पुत्र, जिसको आपने अग्नि पर अनेक यज्ञों के अंग-स्वरूप होम करके बहुत कष्ट के साथ प्राप्त किया है, वह पुरुष-सिंह आपको छोड़कर जंगल चला गया ? तब तो आखिर केकयतनया मुझसे भली बनी ! । ५५७

* मुडिवुर्

विन्नन

मौळिन्द

पिन्नरुम्

अडियुर्त्

तळुविन

नळुङ्गिप्

पैयरा

इडियुर्त्

तुवळुव

दैन्नु

मिन्नलन्

पडियुर्प्

पुरण्डनन्

पलवुम्

पन्निनान् 558

इन्तन मुटिवु उर्-ऐसा, पूर्ण रूप से; मौळिन्त पिन्नरुम्-अपना (विचार) कहने के बाद भी; अळुङ्कि-और बुढ़ी होकर; पै अरा-फन वाला सर्प; इटि उर्-वज्र के गिरने पर; तुवळुवतु अँनुम्-तड़पता हो, जैसी; इन्नलन्-वेदना के साथ; अटि उर् तळुवितन्-उनके चरणों को खूब पकड़कर; पटि उर्-भूमि पर; पुरण्डनन्-लोडते हुए; पलवुम् पन्नित्तान्-अनेक बातें कहीं । ५५८

सुमंत्र, जो कहना चाहते थे, वह सब कह चुके । फिर भी उनका दुख कम नहीं हुआ और वज्राहत सर्प जैसे तड़पता है वैसे दुखसंतप्त होकर वे श्रीराम के पैरों पर गिरे और उनको पकड़कर लोटे । और विविध बातें कहते हुए विलाप करने लगे । ५५८

* तडक्कया

लैडुत्तवर्

रळुविक्

कण्णिनीर्

तुडैत्तुवे

रिर्त्तिवैत्

तिनैय

शौल्लिनान्

अडक्कुमैम्

बौरियोडु

करणत्

तप्पुर्म्

कडक्कुम्वा

लुणर्विनुक्

कणुहुड्

गाट्चियान् 559

अडक्कुम्-दाँत; ऐन्तु पौरियोडु-पाँचो इन्द्रियों के साथ (इन्द्रिय-निग्रह करके); करणत्तु अ पुर्-अन्तःकरणों को पार कर, उस पार; कडक्कुम्-जो गया रहता है; वात् उणर्विनुक्कु-शुद्ध ज्ञान के लिए; अणुकुम्-पास आनेवाले; गाट्चियान्-रूप के (श्रीराम) ने; अवन्-उनको; तट कयाल् अँदुत्तु-विशाल हाथ से उठाकर; तळुवि-गले लगाकर; कण्णिन् नीर् तुडैत्तु-आँखों से आँसू पोंछकर; वेरु इरुत्ति वैत्तु-अलग ले जाकर, बिठाकर; इतैय शौल्लिनान्-ये बातें कहीं । ५५९

श्रीराम इन्द्रियनिग्रह के द्वारा सारे अन्तःकरणों के पार जाकर शुद्धज्ञान-प्राप्त तपस्वियों के ही ज्ञानगम्य भगवान हैं। उन्होंने सुमन्त्र को अपने विशाल हाथों से उठाया और गले से लगा लिया। उनकी आँखों से बहने-वाले आँसू को पोंछकर उनको अलग ले गये। फिर वे उनसे बोले। ५५९

❖ पिङ्गत्तलौन्	रुङ्गपिन्	पैरुव	यावैयुम्
तिङ्गत्तुळि	युणर्वदोर्	शैम्मै	युळ्ळत्ताय्
पुङ्गत्तुरु	पैरुम्बळि	पौदुविन्	रैय्दवुम्
अङ्गत्तिङ्	मङ्गत्तियो	ववल	मुण्डेन्ना 560

पिङ्गत्तल् औन्ङ्ग उङ्ग पिन्-जन्म लेने के बाद; पैरुव यावैयुम्-सहज-प्राप्य सभी (सुख-दुखों) को; तिङ्गत्तु उळ्ळि-खूब सोचकर; अङ्गितु ओर्-समझनेवाले; शैम्मै उळ्ळत्ताय्-निष्पक्ष विवेकी; पुङ्गत्तु उङ्ग-बाहर से आनेवाले; पैरु पळि-बड़े अपयश को; पौदु इन्ङ्ग-असाधारण रूप से; रैय्दवुम्-मैं प्राप्त करूँ, इस स्थिति में भी; अवलम् उण्डु अँता-दुख होगा, इस ख्याल से; अरम् तिङ्ग-धर्म का अंश; मङ्गत्तियो-भूल जायेंगे। ५६०

हे सुमन्त्रजी ! आप विवेकशील महात्मा ज्ञानी हैं। आप जानते हैं कि जन्म ले लेने के बाद जीव को सुख-दुख प्राप्त होंगे ही। उनके सम्बन्ध में बिना किसी चंचलता के, सोच-समझनेवाले विवेकी ! आप यह जानते हुए भी कि जंगल न जाऊँ तो मेरा असाधारण अपयश होगा, दुख से डरकर धर्म का प्रकार भूल जाएँगे ?। ५६०

❖ मुन्नुनिन्	रिशैनिरीइ	मुडिवु	मुर्ऱिय
पिन्नुनिन्	रुदियैप्	पयक्कुम्	पेरङ्गम्
इन्वम्बन्	दुरुम्मेनि	लियैव	दायिडैन्
तुन्वम्बन्	दुरुम्मेनिङ्	रुङ्क्कङ्	पालदो 561

मुन्नु निन्ङ्ग-(पुरुषार्थों में) पहला रहकर; इच्चै निरीइ-यश स्थापित करके; मुडिवु मुर्ऱिय पिन्नुम्-(जीवन का) अन्त होने के बाद भी; निन्ङ्ग-उसके साथ रहकर; उरुदियै पयक्कुम्-(जीव को) परलोक में भी हित करनेवाला; पेर अङ्गम्-सम्मान्य धर्म को; इन्वम् वन्नु उङ्गम् अँनिन्-सुख मिलेगा तो; तुङ्क्कङ् पालतो-त्याज्य हो जायगा क्या। ५६१

धर्म प्रथम पुरुषार्थ है। वह इह-जीवन में यश दिलाता है और साथ रहकर पर-जीवन में भी हित करता है। क्या वह श्रेष्ठ धर्म (त्यागने पर), सुख मिलने की सम्भावना हो तो त्याज्य हो जायगा ? (न वह दुख के कारण त्याज्य है, न सुख के कारण। वह हमेशा पालनाई है।)। ५६१

निरप्परुम्	वडैक्कल	निरत्ति	नैय्दवुम्
मरुप्पयन्	विळैक्कुरुम्	वन्मै	यन्तुरो
इरुप्पितुन्	दिरुवैला	मिळप्प	वैय्दिनुम्
तुरुप्पिल	ररुमैन्	शूर	रावदे 562

चूरर् आवतु-शूर वनते हैं; निरम् पेरु पटै-उज्ज्वल और सवल; कलम्-हथियार; निरत्तिन् अय्तवुम्-वक्ष पर लगें; मरुम् पयन्-और वीरता का पुरस्कार; विळैक्कुरुम्-(विजय) दिलानेवाले; वन्मै अन्नु-साहस के कारण नहीं; तिरु अल्लाम् इळप्प अय्तिनुम्-सारी सम्पत्ति खोनी पड़े, तो भी; इरुप्पितुम्-मृत्यु हो जाय, तो भी; अरुम् तुरुप्पु इलर्-धर्म न त्यागेंगे; अन्नले-इस यश के कारण ही । ५६२

आखिर शूर कौन होते हैं ? उज्ज्वल भाले आदि का वार अपने वक्ष पर झेलकर वीरता का पुरस्कार, जो विजय है उसको प्राप्त करना ही शूरता है ? नहीं । पर शूरता सारी सम्पत्ति खोने पर भी, मृत्यु को गले लगाने की नीबत आने पर भी धर्म न त्यागना ही है ! । ५६२

❖ कान्नुरुज्	जेरुलि	नरुमै	काण्डियाल्
वान्पिरुड्	गियपुहळ्	मन्तर्	तौल्हुलम्
यान्पिरुन्	दरुत्तिनिन्	रिळुक्किर्	रैन्नवो
ऊन्डिरुन्	दुयिर्गुडित्	तौळिरुम्	वेलिनाय् 563

ऊन् तिरुन्तु-(शत्रु का) शरीर चीरकर; उयिर् कुटित्तु-प्राण पी (हर) कर; ओळिरुम्-शोभनेवाले; वेलिनाय्-भाले वाले; कान्नु पुरम् चेरुलिन्-(मेरे) वन जाने में; अरुमै काण्डी-अधिक संकट का अनुमान करते हैं; वान् पिरुड्किय-आकाश में भी (व्याप्त) रहनेवाले; पुकळ् मन्तर्-यशस्वी राजाओं का; तौल् कुलम्-प्राचीन कुल; यान् पिरुन्तु-मेरे जन्म लेने से; अरुत्तिन् निन्नु-धर्म से; इळुक्किर्-डिग गया; अन्नवो-कहा जाय । ५६३

शत्रु-शरीर को चीरकर रक्त पीकर चमकनेवाले भाला के धारक ! आप मेरे वन जाने में दुख देखते हैं ! पर यह देखते नहीं कि स्वर्ग-व्यापी यशस्वी राजाओं का मेरा प्राचीन कुल मेरे जन्म से (अगर मैं वन नहीं जाऊँ तो, उस हालत में) धर्म-विमुख हो जाने के अपयश का भागी हो जायगा । क्या लोगो को ऐसा कहने दूँ कि मेरे जन्म से मेरा कुलगौरव नष्ट हो गया ? । ५६३

❖ विनैक्करु	मैय्मयिन्	वनत्तु	विट्टन्
मनक्करुम्	बुदल्वनै	यैन्तुन्	मन्तवन्
तन्क्करुन्	दवमदु	तलैक्कीण्	डेहले
अन्नक्करुन्	दवमिदु	किरड्ग	लैन्देनी 564

विनैक्कु अरु-पालन-दुस्तर; मैय्मैयिन्-सत्य-पालन के लिए; मनक्कु अरु

पुतल्वन्नै-मन (प्राण-)प्यारे पुत्र को; वत्तत्तु विट्त्तन्-वन में भेज दिया; अँत्तल्-यह कथन (इस कीर्ति के योग्य होना); मन्तवन् तनक्कु-राजा के लिए; अरु तवम्-बहुमूल्य तप है; अतु तलै कौण्डु-(उनको आज्ञा) वह शिरोधार्य करके; एकले-वन में जाना ही; अँत्तक्कु अरु तवम्-मेरी तपस्या है; अँत्तै नी-मेरे पितृतुल्य आप; इतर्कु-इसका; इरङ्कल्-दुख न कीजिएगा । ५६४

कष्टसाध्य सत्य पालन के निमित्त अपने मन के बहुत ही प्यारे पुत्र को (राजा ने) वन भेजा; यह लोग कहें —ऐसी स्थिति राजा के लिए तपस्या है । उनकी आज्ञा को सिर पर धारण करके वन में जाना मेरे लिए तपस्या है । पितृतुल्य आप इसका दुख मत कीजिए । ५६४

मुन्दित्तै मुनिवनैक् कुरुहि मुरुर्मेन्, वन्दनै मुदलिय माऱ्ऱु गूऱिप्पिन्
अँन्दयै यवनीडु मैय्दि यीण्डेन, शिन्दयै गुणर्त्तुदि यँन्ऱु शैप्पुवान् 565

मुन्तित्तै-आप शीघ्र जाकर; मुनिवनै कुरुहि-मुनि (वसिष्ठ) के पास जाकर; अँन् वन्तलै मुतलिय माऱ्ऱु मुरुर्म् कूऱि-मेरा नमस्कार आदि सभी वाते कहकर; पिन्-उसके बाद; अवत्तोडुम् अँन्तैयै अँय्ति-उनको साथ लेकर पिता के पास जाकर; ईण्डु अँत्त चिन्तैयै-यहाँ के मेरे विचारों को; उणर्त्तुति-समझाइए; अँन्ऱु-कहकर; शैप्पुवान्-आगे भी बोले । ५६५

आप जाइएगा । पहले वसिष्ठजी के पास जाकर, उनको मेरा नमस्कार आदि कहिए । बाद उनको साथ लेकर मेरे पिताजी के पास जाइए । उन्हें मेरे विचार समझाइए । —यह कहकर वे आगे भी बोले । ५६५

मुनिवनै	यँम्पियै	मुऱैयि	त्तिन्ऱुम्
पुनिदवे	दियर्क्कुमे	लुरैपुत्	तेळिर्क्कुम्
इन्नियन्	विळैत्तियैन्	ऱियम्बि	यँऱ्पिरि
तनिमयुन्	दीर्त्तियैन्	ऱुरैत्ति	तन्मयोय् 566

तन्मयोय्-श्रेष्ठ स्वभाव वाले; अँम्पियै-मेरे भाई (भरत) को; मुऱैयिल् तिन्ऱु-धार्मिक नीति पर रहकर; अरु पुत्तितम् वेतियर्क्कुम्-श्रेष्ठ, पवित्र वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों के प्रति; मेल् उऱै पुत्तेळिर्क्कुम्-आकाश में रहनेवाले देवताओं के प्रति; इत्तियन् इळैत्ति-मधुर व्यवहार करो; अँन्ऱु इयम्पि-ऐसा कहकर; अँन् पिरि-मुझसे विछुड़ने से उत्पन्न; तत्तिमैयुम् तीर्त्ति-एकाकीपन का दुख भी दूर कीजिए; अँन्ऱु-ऐसा; मुनिवनै उरैत्ति-मुनिवर से कहिए । ५६६

उत्तम प्रकृति वाले ! मुनिवर से कहें कि वे मेरे अनुज भरत को उपदेश दें ताकि वह उत्तम, बहुमूल्य वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों और स्वर्गवासी देवताओं के प्रति मधुर व्यवहार करे । मुनिवर भरत को जो मेरे विछुड़ने से एकाकीपन का क्लेश होगा उसको दूर करा दें । ५६६

वैव्यय	दन्त्याल्	विळ्न्द	दीण्टोर
कव्वयैन्	इरैयुन्दन्	करुत्ति	नोक्कलन्
अव्वरु	ळैन्वयिन्	वैत्त	वैन्शौनाल्
अव्वरु	ळव्वयि	नरुळु	हैन्शियान् 567

अन्त्याल्-माता कैकेयी द्वारा; ईण्टु-अव; वैव्ययतु और कव्व-भयानक एक दुख; विळ्न्दतु अन्त-पेदा हो गया, समझकर; तन् करुत्तिल्-अपने मन में; इरैयुम्-जरा भी; नोक्कलन्-न सोचकर; अन् चोल्ताल्-मेरे पास मे; अन् वयिन् वत्ततु-मेरे प्रति रयी गई; अ अरुळ-जंगी कृपा; अ अरुळ-यंगी स्नेह; अ वयिन् अरुळक-उनके प्रति भी कीजिएगा; अन्त्रि-(मुनिवर से) कहें। ५६७

महर्षि यह न सोचें कि मेरी स्नेहशील जननी कैकेयी द्वारा कोई क्रूर काम हो गया है। ऐसा विचार वे किंचित भी न करें। जितनी कृपा वे मुझ पर रखते हैं उतनी कृपा उन पर भी रखें। —यह मुनिवर से विनय कीजिए। ५६७

वेण्डिन्	निव्वर	मैन्नु	वैलवन्
ईण्डरु	ळैम्विपा	निरुवि	यैरुपिरि
वोण्डिय	तुयर्तविरन्	दिरुक्क	वैन्शौन्
आण्डहैक्	कुरैत्तव	नवल	माइरिप्पिन् 568

इ वरम् वेण्डिन्-यह वर मेने उनसे मांगा; अन्त-कहकर; वैलवन् ईण्ड अरुळ-श्रेष्ठ उनकी पूर्ण कृपा को; अम्पि पाल् निरुवि-मेरे अनुज पर रागकर; अन् पिरिवु इण्डिय-मेरे वियोग के कारण होनेवाले; तुयर् तविरन्तु-तुम्हें को भूलकर; इरुक्क-रहो; अन्त चोल्-यह बात; आण् तर्ककु उरैत्तु-पुरोधष्ठ (मेरे पिता) को कहकर; अवन् अवलम् माइरि-उनका दुःख कम करके; पिन्-वाद। ५६८

मुनिवर से यह मेरी प्रार्थना कहकर मेरे छोटे भाई भरत पर उनकी दया रखवा लीजिए। फिर मेरे पिता पुरुष-श्रेष्ठ चक्रवर्ती से मेरी विनय कहिए कि वे दुःख करना छोड़कर शान्त रहें। उनका दुःख भी मुनिवर शान्त करें और मेरा यह वचन कहकर आश्वासन दें कि। ५६८

ॐ एळिरण्	डाण्डुनीत्	तोण्ड	वन्दुनैत्
ताळ्हुवैन्	रिखुवि	तळर	लीण्डेन्
चूळिवैड्	गळिइरि	तनक्कुच्	चोर्विला
वाळिमा	दवन्शौलाल्	मन्नन्	दैरुट्टुवाय् 569

एळ् इरण्डु आण्डु-दो के सात (चौदह) साल; नीत्तु-विताकर; ईण्ड वन्तु-शीघ्र लौटकर; उन्तै तिरुवटि ताळ्हुवैन्-आपके चरणों पर विनत हो जाऊंगा; तळरल् ईण्ड अन्त-शोक मत कीजिए, ऐसा; चूळि वैम् कळिइ-मुण्पट्टु-पहने भयंकर गजों के; इरै तनक्कु-स्वामी को; चोर्वु इला मातवन् चोल्ताल्-अमोघ, महर्षि के वाक्यों द्वारा; मन्तम् दैरुट्टुवाय्-मन को निःशंक कर दीजिए। ५६९

“मैं (श्रीराम) चौदह वर्ष व्यतीत करके शीघ्र लौट आऊँगा और आपके चरणों पर विनत हो जाऊँगा, आप शोक मत कीजिए”। वसिष्ठजी मुखपट्टधारी भयंकर गजों के स्वामी राजा दशरथ को मेरी ओर से अपने मुख से कहकर उनके मन को दृढ़ व संशयहीन बना दें। ५६९

❀ मुरैमया	लैरपयन्	दडुत्त	मूर्वर्कुम्
कुरैविला	वैन्नेडु	वणक्कड्	गूरिप्पिन्
इरैमहन्	रुयर्दुडैत्	तिरुत्ति	माडैन्डान्
मरैहळै	मरैन्दुपोय्	वनत्तुळ्	वैहुवान् 570

मरैकळै मरैन्तु-वेदों से भी छिपकर (अज्ञात); पोय्-जाकर; वनत्तुळ् वैकुवान्-वन में रहनेवाले; अन् पयन्तु अँदुत्त मूर्वर्कुम्-मेरी तीनों जननियों को; अन्-मेरा; कुरैवु इल्ला-निर्मल; नैडु वणक्कम्-दीर्घ नमस्कार; मुरैमैयाल् कूरि-क्रम से कहकर; पिन्-आगे; इरै मकन् तुयर् तुटैत्तु-चक्रवर्ती के दुख को दूर करते हुए; माडु इरुत्ति-उनके पास रहिए; अँन्डान्-कहा। ५७०

श्रीराम ने, जो वेदों के लिए भी अज्ञात हैं, और अब वन में जाकर लोगों से छिपे हुए हैं, सुमन्त्र से कहा कि आप मेरी तीनों जननियों को क्रम से मेरा निर्मल, पवित्र और दीर्घ नमस्कार कहिए। बाद चक्रवर्ती का दुख दूर करते हुए उनके पास रहिए। ५७०

❀ आळ्विन्	याणयिर्	रिर्म्ब	लन्ऱैनात्
ताळ्मुदल्	वणङ्गियत्	तनित्तिण्	डैर्वलान्
अळ्वित्तै	वशत्तुयिर्	निलैर्यैन्	रुन्नुवान्
वाळ्वित्तै	नोक्कियै	वणङ्गि	नोक्किनान् 571

अ तत्ति तिण् तेर्-अनुपम पक्के रथ के उन; वल्लान्-समर्थ सारथी ने; आळ्वित्तै-किंकर का काम; आणैयिल् तिरुम्पल् अन्ऱु-आज्ञा का उल्लंघन करना नहीं है; अँन्ना-कहकर; ताळ् मुतल् वणङ्कि-श्रीराम की चरण-वन्दना करके; उयिर् निलै-जीव की स्थिति; अळ्वित्तै वचत्तु अँन्ऱु-कर्मवश है, यह; उन्नुवान्-सोचकर; वाळ्वित्तै नोक्कियै-(सुखी) जीवन-दायिनी (सीताजी) को; वणङ्कि-नमन कर के; नोक्किन्- (कुछ सुनने के विचार से) देखा। ५७१

अनुपम और सवल रथ को चलाने में समर्थ सुमन्त्र ने, कहा कि किंकर का धर्म स्वामी की आज्ञा टालना नहीं है। उन्होंने श्रीराम को नमस्कार किया। ‘आखिर कोई भी जीव अपने कर्म के वश में ही है’ यह तथ्य सोचकर वे एक तरह से परिस्थिति को मान गये। तब उन्होंने जीवों पर कृपादृष्टि रखनेवाली सीता की तरफ देखा, इस प्रतीक्षा में कि वे कुछ कहेंगी। ५७१

❖ अन्नवळ	कूखा	ळरशर्क्	कत्तयर्क्
कैन्नडै	वणक्कमुन्	नियम्बि	यानुडैप्
पौन्निरप्	पूवयुड्	गिळियुम्	वोर्ळुमिन्
अन्नमर्	रैङ्गयर्क्	कियम्बु	वाय्न्डाळ् 572

अन्नवळ कूखाळ्-वे बोली; अरचर्क्कु-चक्रवर्ती को; अत्तयर्क्कु-और सासों को; कैन्नडै वणक्कम्-मेरी विनय; मुन् इयम्पि-पहले सुनाकर; अङ्कैयर्क्कु-मेरी बहनो से; यान् उटैय-मेरी पालित; पौन् निरम्-सुन्दरवर्ण; पूवयुम्-सारिका को; गिळियुम्-शुक को; पोर्ळुमिन् अन्न-पालो-पोसो, ऐसा; इयम्पुवाय्-कहिए; अन्डाळ्-कहा । ५७२

देवी ने कहा कि चक्रवर्ती और मेरी सासों को मेरा विनीत नमस्कार कहिए । फिर मेरी बहनों से कहें कि वे मेरी पालित सारिका, शुक आदि सुन्दर पक्षियों को पालें-पोसैं । ५७२

❖ तेर्वला	तव्वुरै	केट्टुत्	तीङ्गुडिन्
यार्वला	रुयिरुत्तुप्	पैळिदन्	रैयैताप्
पोर्वलान्	इडुक्कवुम्	पौरुमि	विम्मितान्
शोर्विला	ळरिहिलात्	तुयर्क्कुच्	चोर्हिन्डान् 573

तेर्वलान्-रथसारथ्य-चतुर; अ उरै केट्टु-वह वचन सुनकर; चोर्वु इलाळ्-(वनगमन की बात से) न घबड़ानेवाली उनके; अरिक्किलात् तुयर्क्कु-अज्ञात कष्टों को सोचकर; चोर्किन्डान्-शोक करते हुए; तीङ्कु उडिन्-(विधिवशात्) हानि हो जाय तो; आर् वल्लार्-कौन रोक सकता है; उयिरु तुत्तुप्-मेरे लिए प्राण-त्याग भी; अळितु अन्डै-सुलभ नहीं; अँता-यह सोचकर; पोर्वलान् तदुक्कवुम्-युद्ध में निपुण वीर के रोकने पर भी; पौरुमि विम्मितान्-(जी) भरकर रोये । ५७३

उनका यह कथन सुनकर समर्थ सारथी सुमन्त्र के मन में ये भाव उठे । ये वनगमन की कोई चिन्ता नहीं करतीं । उनको मालूम नहीं है कि क्या-क्या कष्ट सम्भवनीय है ! इनकी कोई हानि हो गई तो कौन उनको बचा सकेगे ? मरना भी आसान नहीं लगता । यह सोचकर उन्हें अपार दुख हुआ । यद्यपि युद्धवीर श्रीराम ने सात्वना दी और उनको रोका तो भी वे अपने दुख को रोक नहीं सके और फूट-फूटकर रोये । ५७३

❖ आरिन् पोर्चिर्चि दवल मव्वळि, वेरिला वन्बिनान् विडैतन् दीहैना
एरुशे वह्ङ्गोळ् दिळैय मैन्दनैक्, कूख दियादैन विनैय कूखान् 574

वेरु इला अन्पितान्-अपरिवर्तनशील प्रेम रखनेवाले; अ वळि-तब; अवलम् चिरितु आरिन् पोल्-दुख थोड़ा कम हुआ जैसे; एरु चैवकन् तोळितु-वर्धनशील वीरता के श्रीराम के चरणों को नमस्कृत करके; विटै तन्तीक अँता-आज्ञा दीजिए, कहकर; दिळैय मैन्तनै-कनिष्ठ पुत्र को; कूखवु यातु अँन-कहना (आपका) क्या है, पूछने पर; इतैय कूखान्-ये बातें कहीं (उन्होंने) । ५७४

श्रीराम ने उनको धीरज बँधाया । तब उन पर अकम्पन प्रेम रखने वाले सुमंत्र थोड़ा धैर्यशील हुए । और श्रीराम से नमस्कार करके विदाली । फिर उन्होंने छोटे राजकुमार लक्ष्मण से पूछा कि आपका संदेश क्या है ? । ५७४

✽ उरैशैयदेङ्	गोमहर्	कुशदि	याक्किय
तरैशैरि	तिरुविनैत्	तविरत्तु	मर्त्तु
विरैशैरि	कुळलिमाट्	टळित्त	मैय्यनै
अरशत्तैन्	रित्तमौन्	उरैयर्	पालदो 575

अम् कोमकड्कु-मेरे राजकुँवर श्रीराम को; उरै चैय्तु-वचन देकर; उरुति आक्किय-उनकी बनाई हुई; तरै चैरि तिरुविनै-भूमि रूपी समृद्ध श्री को; तविरत्तु-उनको छोड़कर; मर्त्तु और-दूसरी एक; विरै चैरि कुळलि माट्टु-सुवासित केश वाली के पास; अळित्त-जिन्होंने दे दिया; उन; मैय्यनै-सत्यवादी को; इत्तम् अरचन् अन्तु-अब भी राजा मानकर; औन्तु अरैयल् पालतो-कहने योग्य समाचार भी होगा क्या । ५७५

लक्ष्मण ने निष्ठुरता से पूछा कि क्या उनको मैं अब भी राजा मानूँ, जो हमारे राजकुँवर को अपने ही मुख से राज्य और सम्पत्ति का स्वामी घोषित करने के बाद उनको एक सुवासित केश वाली स्त्री को देकर सत्य व्रती बने है; और कोई सन्देश दूँ ? वे इसके अर्ह है क्या ? । ५७५

✽ कानहम्	बर्त्तिन्	पुदल्वन्	कायुणप्
पोनहम्	बर्त्तुम्	पौरविल्	मन्तवर्
कून्हम्	बर्त्तिय	वुयिरौ	डिन्तम्बोय्
वानहम्	बर्त्तिला	वल्लिमै	कून्तान् 576

नल् पुतल्वन्-अच्छे कुँवर; कान् अकम् पर्त्ति-वन में रहते हुए; काय् उण्-(कन्द-मूल-) फल खाते रहें; पोन्कम् पर्त्तुम्-अच्छा भोजन भुगतनेवाले; अ पौरवु इल् मन्तवर्त्तु-उन अनुपम राजा से; ऊन् अकम् पर्त्तिय-मांसपिण्ड, शरीर से लगे रहनेवाले; उयिरौट्टु-प्राणों के साथ; इत्तम् पोय्-अब भी जाकर; वान् अकम् पर्त्तु इला-स्वर्ग में न पहुँच जाने का; वल्लिमै-कठोर स्वभाव; कून्-उनसे कहिए; अन्तान्-कहा । ५७६

पुत्र वन में वास करते हुए कन्द, मूल फलादि खाते हैं । तब पिता स्वयं महल में रहकर षडरस भोजन का मौज उठा रहे है ! राजा को प्राण उतने प्यारे है ! शरीर के साथ लगे रहे प्राणों को त्यागकर स्वर्ग जाने का उनके पास मनोबल नहीं है ! उस विषय को उन्हें समझाइए । ५७६

✽ मिन्नुडन्	पिन्नुदवाट्	परद	वेन्दर्क्कैन्
मन्नुडन्	पिन्नुदिलैन्	मण्गोण्	डाळ्हिन्

तन्नुडन्

अँन्नुडन्

पिडन्दिलेन्

पिडन्दयान्

इम्बि

वलिय

मुन्तलेन्

नेन्डियाल् 577

मिन्नुडन् पिडन्त वाळ्-चर्मक के साथ रहनेवाली तलवार के धारी; परतन् वेन्तड्कु-राजा भरत से; अँन् मन्-अपने राजा राम का; उडन् पिडन्तिलेन्-सहोदर मैं जन्मा नहीं; मण् कौण्टु-उनको धरती (राज्य) लेकर; आळ्किन्ड-शासन करने को रहनेवाले भरत का भी; तन् उडन् पिडन्तु इलेन्-सहोदर जन्मा नहीं हूँ; तम्पि मुन्तलेन्-(अपने छोटे) शत्रुघ्न को भी भाई नहीं मानता; अँन् उडन् पिडन्त यान्-अपने साथ स्वयं जन्मा (अकेला) मैं; वलियन्-बड़ा स्वस्थ हूँ; अँन्डि-कहिए; (अँन्डान्-कहा) । ५७७

चमकीले तलवार-धारी भरत को मेरा यह सन्देश दे दें । मैं न राजा राम का सहोदर पैदा हुआ हूँ (क्योंकि अपना भायपा मैं निर्वाह नहीं कर पाया); न भरत का मैं सहोदर जन्मा हूँ । शत्रुघ्न को भी मैं अपना भाई नहीं मानता । मैं अपने आप का अकेला सहोदर हूँ (यानी मैं एकाकी हो गया ।) और मैं स्वस्थ सबल हूँ ! । ५७७

✽ आरिय निळवलै नोक्कि यैयनी, शीरिय वल्लन शैप्प लैन्डपिन्
पारिडै वणङ्गिनन् परियु नैज्जित्तन्, तेरिडै वित्तहन् शेडल् मेयिनान् 578

आरियन्-आर्य श्रीराम ने; इळवलै नोक्कि-अपने अनुज को देखकर; ऐय-तात; नी चीरिय अल्लत्त-तुम अभद्र बातें; शैप्पल्-मत कहो; अँन्डपिन्-कहने के बाद; तेर् इटै वित्तकन्-सारथी सुमन्त्र; पार् इटै वणङ्कि-भूमि पर पड़कर दण्डवत करके; परियुम् नैज्चित्तन्-खिन्नमन हो; चेडल् मेयिनान्-जाने लगे । ५७८

तब आर्य श्रीराम ने अपने लघुभ्राता से कहा कि लक्ष्मण ! तुम अभद्रवचन मत बोलो । उसके बाद समर्थसारथी सुमन्त्र दण्डवत करके भारी मन के साथ निकलने को तैयार हो गये । ५७८

✽ कूट्टिनन् डेरप्पोडि कूट्टिक् कौण्मुडै, पूट्टित्तन् पुरवियप् पुरवि पोनेडि
काट्टित्तन् काट्टित्तन् कल्वि माट्चियाल्, ओट्टित्तन् तौरुवरु मुणर्वु उरामल् 579

तेर् पोडि कूट्टिनन्-रथ-यन्त्र तैयार किया; कूट्टि-करके; पुरवि-अश्व; कौळ् मुडै पूट्टित्तान्-(उनको) मनाकर रथ में जोता; अ पुरवि-उन अश्वों को; पोम् नेडि-गम्य मार्ग; काट्टित्तन्-बतलाया; काट्टि-मार्ग दिखाकर; तन् कल्वि माट्चियाल्-अपनी सारथ्य विद्या के विशेष ज्ञान से; ओरुवरुम् उणर्वु उरामल्-किसी के जाने-समझे बिना; ओट्टित्तन्-चलाया । ५७९

सुमन्त्र रथ के पास आये । उसका साज-बाज ठीक किया । फिर उसमें अश्वों को किसी तरह मनवाकर जोता । उन्होंने उनको उनके जाने का मार्ग दिखाया । अपनी सारथ्य-कुशलता से रथ को इस भाँति चलाया कि किसी को रथ के जाने का भान नहीं मिले । ५७९

ॐ तैयइत् कइपुनदत् इहवुन् दम्बियुम्, मैयरु करुणयु मुणरुवुम् वाय्मयुम्
शैय्यतन् विल्लुमे शेम माहक्कोण्, डैयनुम् वोयित्ता नल्लि नाप्पणे 580

ऐयनुम्-प्रभु भौ; तैयल् तन् कइपुम्-देवी का पातिव्रत्य; तम्पियुम्-अनुज;
तन् तकवुम्-अपना श्रेष्ठ आर्जव; मै अइ करुणैयुम्-निर्मल कृपा; उणरुवुम्-मेधा;
वाय्मैयुम्-और सत्य; तन् चैय्य विल्लुमे-और अपने उत्तम धनुष को; चेम्म् आक
कोण्डु-पाथेय (रक्षक) मानकर; अल्लिन् नाप्पण्-अर्धरात्रि में; पोयित्तान्-चलते
गये । ५८०

उनके जाने के बाद श्रीराम अर्धरात्रि के अन्धकार में वहाँ से रवाना
होकर वन की ओर पैदल जाने लगे । उनके साथ उनके सहायक और
संवल के रूप में सीताजी का पातिव्रत्य, श्रीराम के भाई, श्रीराम का
आर्जव, उनकी पवित्र करुणा, उनकी मेधा, सत्य, और उनके हाथ का श्रेष्ठ
धनुष —ये ही थे । ५८०

ॐ पौयवित्तैक् कुदवुम् वाळ्क्कै यरक्करैप् पौरुन्दि यन्तार्
शैयवित्तैक् कुदवु नट्पाऱ् चैल्ववर्त् तडुप्प दीक्कुम्
मैविळक् कियदे यन्त मयङ्गिरु डुरक्क वान्म
कैविळक् कैडुत्त दैन्न वुदित्तडु कडवुट् टिङ्गळ् 581

पौय वित्तैक्कु-वंचक कार्यों में; उतवुम् वाळ्क्कै-सहायक जीवन वितानेवाले;
अरक्करै पौरुन्ति-राक्षसों से मिलकर; अन्तार् चैयवित्तैक्कु-उनके दुष्कृत्यों में;
उतवुम् नट्पाल्-सहायता करानेवाली मित्रता के कारण; चैल्ववर् तटुप्पतु ओक्कुम्-
(उनको मारने) चलनेवाले को रोकता सा; विळक्कियतु मैये अन्त-निखरा अंजन ही
सम; मयङ्कु इरुळ्-भ्रामक अन्धकार; तुरक्क-दूर करने के लिए; वानम्-आकाश
ने; कै विळक्कु अँटुत्ततु-हाथ में दीपक लिया; अँत्त-ऐसा; कडवुट् तिङ्गळ्-
चन्द्र देव; उतित्ततु-उदित हुए । ५८१

तव चन्द्रदेव उदित हुए । वे देवलोक के दीप के समान लगे, जो
वंचक कर्म करनेवाले राक्षसों के दुष्कर्मों का सहायक होकर, उनके विरुद्ध
जानेवालों को रोकनेवाले काजलसम अन्धकार को दूर करने के लिए जलाया
गया था । ५८१

मरुमत्तुत् तन्तै यून्ऱु मरक्कोडुम् वावन् दीर्क्कुम्
उरुमौत्त शिलैयि तोरै यौरुप्पडुत् तुदवि नित्ऱ
करुमत्तिन् विळैवै यैण्णिक् कळप्पोडुड् गाण वन्द
तरुमत्तिन् वदन मैन्तप् पौलिन्दडु तन्निवैण् डिङ्गळ् 582

तन्तै मरुमत्तु ऊन्ऱुम्-(धर्म) अपने को मर्म पर आघात करनेवाले; मरम्
कोटु पावम्-विरुद्ध और क्रूर पाप को; तोरैक्कुम्-मिटानेवाले; उरुम् औत्त
चिल्लैयित्तारै-वज्रसम धनुर्धरों को; यौरुप्पटुत्तु-सम्मत कराकर; उतवि नित्ऱ-
अपनी सहायता जिसने की; करुमत्तिन् विळैवै अँण्णि-उस विधि का फल सोचकर;

कळिप्पोट्टुम्-हर्ष के साथ; काणवन्त-(श्रीराम, लक्ष्मण को) देखने आये हुए; त्रुमत्तिन् वतत्तम् अन्न-धर्म के मुख के समान; तत्ति वैण् तिङ्कळ्-अनुपम श्वेत चन्द्र; पौलिनत्तु-शोभित रहे । ५८२

और भी वे उस धर्मदेवता के मुख के समान गोभे, जो अपने मर्म पर प्रहार करनेवाले विरोधी क्रूर पाप के नाशक, वज्रसम धनुर्धर और अपने सहायक वीरों को वन जाने से सम्मत करानेवाले सुकृत की बात सोचकर हर्ष के साथ उन वीरों के दर्शनार्थ आया हो । ५८२

काम्बुयर्	कान्ज	जैल्लुड्	गरियवन्	वरुमै	नोक्कित्
तेम्बिन	कुविन्द	पोलुज्	जैङ्गळु	नीरुज्	जेरैप्
पाम्बिन	तलैय	वाहिप्	परिन्दन	कुविन्दु	शोर्न्द
आम्बलु	मैन्ऱ	पोदङ्	गम्बुय	मलर्ब	दुण्डो 583

काम्बु उयर्-(जिसमें) वांस ऊँचे उगे हुए थे; कानम् चैल्लुम्-उस वन में जानेवाले; गरियवन् वरुमै-काले (राम) की (दयनीय दशा) कंगाली; नोक्कि-देखकर; चैङ्कळु नीरुम्-लाल कुमुद-पुष्प भी; तेम्पित्त-दुखी हुए; कुविन्त पोलुम्-जैसे मुकुलित रहे; आम्बलुम्-कुवलय भी; चेरै पाम्पिन तलैय आक्कि-"चेरै" नामक (विपहीन) साँप के सिरों के समान संकुचित होकर; परिन्तत्त-(श्रीराम की) सहानुभूति में; चोर्न्त-झुके रहे; मैन्ऱ पोतु-तब तो; अङ्कु-वहाँ; अम्बुयम्-अम्बुजों का; अलर्बतु उण्डो-खिलना हो सकता है क्या । ५८३

जब श्रीराम उस वन में जा रहे थे, जिसमें वांस के वृक्ष बहुत ऊँचे उगे थे तब रात में खिलनेवाले कुमुद, कुवलय आदि पुष्प कुम्हलाकर मुकुलित थे । उनकी दयनीय दशा देखकर रक्तकुमुद शोक करते-से वन्द रहे । कुवलय भी चेरै नामक (विपहीन) साँप के सिर के समान पिचककर मानो उनसे सहानुभूति करके मुरझाये रहे । रात में खिलनेवाले पुष्पों की यह स्थिति रही तो अम्बुज कैसे मुख खोलेंगे ? । ५८३

अञ्जनक्	कुन्ऱ	मन्ऱ	वळहन्	मळहन्	रन्ऱै
अञ्जलिक्	पौन्बोर्त्	तन्ऱ	विळवलु	मिन्दु	वैत्तवान्
वैञ्जिलैप्	पुरुवत्	ताडन्	मैल्लडिक्	केर्प्	वैण्णूर्
पञ्जिडैप्	पडुत्ता	लैन्ऱ	वैण्णिलाप्	परप्पप्	पोत्तार् 584

इन्तु अन्नपान्-इन्दु नाम के उन (चन्द्र) ने; वैम् चिलै-कमनीय धनु-सम; पुरुवत्ताळ् तन्-भौंहें वाली सीताजी के; मैल् अटिक्कु एर्प्-मृदु चरणों के अनुकूल; वैळ् नूल् पञ्चु-श्वेत-सूत्र-जनक रुई को; इटै पडुत्ताल् अन्न-भूमि पर बिछाया हो, जैसे; वैळ्, निला परप्प-श्वेत चाँदनी फैलाई; अञ्जत्तम् कुन्ऱम् अन्न अळकत्तुम्-अंजनपर्वत-सम सुन्दरराज; अळकन् तन्ऱै अञ्जल् इल्-उन सुन्दर से किसी विध जो कम नहीं थे; पौन् पोर्त्त अन्न इळवन्नुम्-स्वर्णरंग के लघुराज; पोत्तार्-गये । ५८४

चन्द्रिका खूब फैली। वह ऐसी लगी, मानो इन्दु-संजित चन्द्र ने ही कमनीय धनुसम ललाट वाली सीता के मृदुचरण-पात के योग्य श्वेत-सूत्रजनक रुई फैला रखी हो। सीताजी के साथ काजलगिरि जैसे सुन्दर-मूर्ति श्रीराम और उनके उतने ही सुन्दर, पर स्वर्णवर्ण लक्ष्मण भी चलते गये। ५८४

शिरुहिडै	वरुन्दक्	कौङ्गै	येन्दिय	शंल्व	मैत्तुम्
शैरियिरुड्	गून्द	तङ्गै	शीरुडि	नीरुक्कोप्	पूळिन्
नरियत्त	तौडरन्तु	शैन्ऱु	नडन्दैन्नि	तवैयि	तौङ्गुम्
उरुवलि	यन्वि	नूङ्गोन्	रुण्डैन्	वुणर्व	दुण्डो 585

चिरुक् इटै वरुन्त-छोटी कमर डुखी हो, ऐसा; कौङ्कै एन्तिय-स्तन वहन करनेवाली; शैरि इरु कून्तल्-घने, काले केश वाली; चैल्वम् अँत्तुम् नड्कै-लक्ष्मीदेवी; नीर् कोप्पूळिन्-जल के बुदबुदों से भी अधिक; नरियत्त चिरु अटि-मृदुल छोटे चरण; तौडरन्तु चैन्ऱु-श्रीराम के साथ लगे हुए जाकर; नटन्तु अँत्तिन्-चले तो; तवैयिन् तौङ्कुम्-दोषहीन; अन्तिन् ऊङ्कु-प्रेम से बढ़कर; उरु वलि अँन्ऱु उण्डु-अधिक बलयुक्त कुछ है; अँत-ऐसा; उणर्वतु उण्डो-सोचा जाय, ऐसा कुछ है क्या। ५८५

सीताजी स्वयं लक्ष्मीदेवी थी। वे घने-धुँधराले केश वाली अपनी पतली कमर और उसको सतानेवाले पीन स्तनों का वहन करती हुई श्रीराम के साथ बिना किसी शिकायत के चलीं। उनके, जल के बुदबुदों से भी मृदु चरण इतनी दूर चल सके तो उसका कारण प्रेम ही है! प्रेम से भी बलवान या बलदायक कुछ और है —यह समझने के लिए कोई स्थान है क्या?। ५८५

परुदिवा	नवन्नुड्	गोळ्पाड्	परुवरै	पड्डा	मुन्तम्
तिरुविन्ना	यहनुन्	दैन्बाल्	योशनै	यिरण्डु	शैन्ऱान्
अरुविपाय्	कण्णुम्	बुण्णा	यळिहित्ऱ	मनमुन्	दानुम्
तुरिदमान्	इरिर्	पोनान्	शैय्ददु	शौल्	लुड्डाम् 586

परुति वातवन्-सूर्यदेव; कीळ् पाल्-पूर्व दिशा के; परुवरै-बड़े (उदय-) अचल को; पड्डा मुन्तम्-पहुँच जाएँ, इसके पहले; तिरुविन् नायकत्तुम्-श्रीलक्ष्मीपति; तैन् पाल्-दक्षिण दिशा में; इरण्डु योचनै चैन्ऱान्-दो योजन दूर चले; अरुवि पाय् कण्णुम्-धारा बहानेवाली आँखें; पुण्णाय्-व्रण बनकर; अळिक्किन्ऱ मत्तमुम्-मिटने वाला मन; तानुम्-और स्वयं; तुरितम् मान् तेरिल् पोत्तान्-(जो) त्वरितगति अश्वों के (जुते) रथ पर गये; चैय्त्तु-उन्होंने जो किया, वह; चौल् लुड्डाम्-कहेंगे। ५८६

सूर्यदेव के बड़े उदयाचल पर पहुँचने के पहले ही श्रीलक्ष्मी-पति दक्षिण की ओर दो योजन चले गये। धारा-बनी आँखें और व्रण-बना

हृदय और स्वयं वे —ऐसी स्थिति में और जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर गये उनका क्या हुआ —यह बतलाएँगे । ५८६

ॐ कडिहयो रिरण्डु मून्डिड् कडिमदि लयोत्ति कण्डान्
अडियिणै तौळुदा तादि मुत्तिवत्तै यवनु मुड्ड
पडियैलाड् गेट्टा नैन्जिड् परुवर लुळुन्दान् मुन्तम्
मुडिवैला मुणर्न्दा नन्दो मुडिन्दत्तन् मन्न नैन्डान् 587

कटिके ओर् इरण्डु मून्डिड्-छः घड़ी के अन्दर; कटि मतिल् अयोत्ति कण्डान्-सुरक्षित (या रक्षक) प्राचीरों वाली अयोध्या पहुँच गये; आति मुत्तिवत्तै-प्रधान मुनिवर के; इणै अटि तौळुतान्-चरणद्वय की वन्दना की; अवन्तुम्-उन्होंने भी; उड्डपटि अल्लाम्-घटित सब; केट्टान्-सुना; नैन्जिल् परुवरल् उळुन्दान्-मन में क्लेश पाया; मुटिवु अल्लाम्-भावी सब; मुन्तम् उणर्न्तान्-पहले ही मन में अनुमान करके; अन्तो-हाय; मन्तन् मुटिन्तत्तन्-राजा मर ही गये; अन्डान्-कहा । ५८७

वे (दो के तीन) छः (या दो और तीन, पाँच) घड़ियों में सुरक्षा के प्राचीर वाली अयोध्या में पहुँच गये । पहले उन्होंने प्रधान पुरुष, मुनिवर वसिष्ठ से भेंट की और उनको नमस्कार किया । वसिष्ठजी ने भी सारा वृत्तान्त सुना तो दुखसन्तप्त होकर भावी का अनुमान करके समझ लिया कि अब दशरथजी नहीं बचेगे । 'वे मर ही गये, समझ लो' । ५८७

ॐ निन्डुयर् पळियै यन्जि नेर्न्दिलन् इडुक्क वळ्ळल्
औन्डुना नुरैत्त नोक्कान् इरुमततुक् कुडि पारप्पान्
वैन्डव वळरो मेलै विदियित्तै यैन्ड विम्मिप्
पौन्डिणि मन्तन् कोयिल् शुमन्दिर नोडुम् वुक्कान् 588

वळ्ळल्-श्रीराम; तरुमततुक्कु उडुति पारप्पान्-धर्म धारणार्थ; निन्डु उयर् पळियै अन्जि-स्थिर होकर बड़ सकनेवाले अपयश से डरकर; तडुक्क-(मेरे) रोकने पर भी; नेर्न्दिलन्-(रुकने को) सहमत नहीं हुए; नान् उरैत्तल् औन्डुम् नोक्कान्-मेरा कहा कुछ नहीं माना; मेलै वित्तियित्तै-पूर्वकृत कर्मफल को; वैन्डव वळरो-जीतनेवाले हैं क्या; अैन्डु-सोचकर; विम्मि-दुख से भरकर; चुमन्तिरत्तोडुम्-सुमन्त्र के साथ; मन्तन्-चक्रवर्ती के; पौन्डिणि कोयिल्-स्वर्णयुक्त महल में; वुक्कान्-पहुँचे । ५८८

“मैने प्रभु श्रीराम से कितना कहा ! धर्म को सुस्थिति देनेवाले स्थायी रूप से वर्धित हो सकनेवाले अपयश से डरकर वे, मेरे रोकने पर भी रुकने को सहमत नहीं हुए । मेरा कहा एक न माना । हाँ—पूर्वकृत कर्म के फल को रोक सकनेवाला कौन है ?” —यह सोचकर वसिष्ठजी अपार दुख से भरकर, सुमन्त्र को साथ लिये हुए चक्रवर्ती के स्वर्णमय महल में पहुँचे । ५८८

❖ तेर्होण्ड वळळल् वन्दा नैन्नुदज् जिन्दै युन्द
 ऊर्होण्ड तिङ्गळ् लैनन मनन्तै युळैयर् शुर्गिक्
 कार्होण्ड मेन्ति यानैक् कण्डिलर् कण्णिल् वर्रा
 नीर्होण्ड नैडुन्देर्प् पाह निलैहण्डै निलैयिर् रीर्न्दार् 589

तेर् कौण्ड-रथ (का आना) लेकर; उळैयर्-मन्त्री लोग; वळळल् वन्तान्-प्रभु आ गये; अँन्नु-सोचकर; तम् चिनतै उन्त-अपने मन के प्रेरित करने से; तिङ्गळ् ऊर् कौण्डतु अँन्त-चन्द्र को परिवेष ने घेरा, जैसे; मनन्तै चुर्गि-राजा को घेरकर; कार् कौण्ड मेत्तियानै-श्यामशरीर (श्रीराम को); कण्डिलर्-न देखकर; कण्णिल्-आँखों में; वर्रा नीर् कौण्ड-न सूखनेवाले जल के साथ; नैडु तेर् पाकन् निलै कण्ड-बड़े रथ के सारथी की दशा देखकर; निलैयिल् तीर्न्तार्-(उत्साह की) स्थिति से बदल गये । ५८९

मन्त्री आदि राजा के निकटस्थ लोगों ने रथ को देखा तो अनुमान कर लिया कि प्रभु श्रीराम भी आये होंगे । इसलिए अपने मन के प्रेरित करने से वे दशरथजी के पास आये और चन्द्र को परिवेष जैसे उनको घेरकर खड़े हो गये । पर वहाँ श्यामशरीर श्रीराम नहीं रहे । उनके स्थान में वे बड़े रथ के सारथी सुमन्त्रजी को, जिनकी आँखों से अश्रु की अटूट धारा, जो सूखती नहीं थी, वह रही थी; देखकर उत्साह और हर्ष छोड़कर दुखी हो रहे । ५८९

❖ इरदम्बन् दुर्गु दैन्नाड् गियावरु मियम्ब लोडुम्
 वरदन्बन् दुर्गु नैन्त मनन्तु मयक्कन् दीर्न्दान्
 पुरैदबु कमल नाट्टम् वीरुक्कैन् विळित्तु नोक्कि
 विरदमा दवन्नैक् कण्डान् वीरन्बन् दन्तो वैन्नान् 590

इरतम् बन्तु उर्गु अँन्नु-रथ आ गया, यह; आङ्कु-वहाँ; यावरुम् इयम्पलोटुम्-सब के कहने पर; वरतन् बन्तु उर्गु-वरद-प्रभु पधारे; अँन्त-सोचकर; मनन्तुम्-राजा भी; मयक्कम् तीर्न्तान्-मूर्च्छा से छूटे; पुरै तपु-निर्मल; कमलम् नाट्टम्-कमल-जैसी आँखों को; वीरुक्कैन् विळित्तु-झट से खोलकर; नोक्कि-दृष्टि डालकर; विरतम् मातवन्नै कण्डान्-व्रती और महान तपस्वी को देखा; वीरन्-वीरराघव; वन्तननो अँन्नान्-आया क्या, पूछा । ५९०

वहाँ सबने कहा कि रथ आ गया । यह सुनकर 'वरदप्रभु श्रीराम आ गये' —इस विचार से चक्रवर्ती मूर्च्छा से जागे । अपने निर्मल कमल-सम आँखें खोलकर उन्होंने दृष्टि दौड़ाई । वहाँ महान तपोव्रती वसिष्ठजी ही उनकी दृष्टि में पड़े । राजा ने महर्षि से पूछा कि वीरराघव आ गया क्या ? । ५९०

इल्लयैन् रुक्कैक् लाउरा देङ्गिमा मुत्तिव निन्नान्
 वल्लवन् मुहमे नम्बि वन्दिल नैन्नु माउम्

शील्लु मरशन् शोऽन्दान् रुयरु मुनिव नानिव
वल्लल्हाण् गिल्ले नैन्ना वाङ्गुनिन् इहलप् पोन्नान् 591

इल्ले अँन्ऱु-नहीं, यह; उरैकल् आऽऱातु-कहने का साहस न होने के कारण;
मा मुनिवन्-उत्तम मुनिवर; एङ्कि निन्ऱान्-व्याकुल खड़े रहे; वल्लवन् मुकमे-
(दुख से अप्रभावित रहने में) समर्थ उनके मुख ने ही; नम्पि वन्तिलन्-नायक नहीं
आया; अँन्ऱ माऽऱम् चील्ललुम्-यह उत्तर (अपने भावों से) व्यक्त किया तो;
अरवन् चोर्न्तान्-राजा शिथिल हो गये; तुयर् उरु मुनिवन्-दुखार्त मुनि; नान्
इ अल्लल् काण्किल्लेन्-यह दुख देख नहीं सकूँगा; अँन्ता-कहकर; आङ्कु निन्ऱु-
वहाँ से; अकल पोन्ना-हट गये । ५६१

महामुनि "नहीं" कहने का साहस नहीं कर सके । दुख-सहन-समर्थ
होने पर भी उनका मुख ही बतला गया कि श्रीराम नहीं आये । राजा
फिर से मूर्च्छित हो गये । राजा की स्थिति देखकर मुनिवर का मन
अत्यधिक दुख से भर गया । यह संकट मैं देख नहीं सकूँगा —यह कहकर
वे वहाँ से हट गये । ५९१

ॐ नायहन् पिन्नु नऽऽरेप् पाहनै नोक्कि नम्बि
शेयनो वणिय तोर्वेन् रुरैत्तलुन् देव्व लानुम्
वेयुयर् कानिऱ् डानुन् दम्बियुम् मिदिलैप् पोन्नुम्
पोयिना नैन्ऱा नैन्ऱ पोळ्दत्ते आवि पोन्नान् 592

नायकन्-चक्रवर्ती के; पिन्नुम्-और; नल् तेर् पाकनै-श्रेष्ठ सारथी को;
नोक्कि-देखकर; नम्पि-नायक; शेयनो-दूर है; अणियतो-या पास है; अँन्ऱ-
ऐसा; उरैत्तलुम्-पूछने पर; तेर् वल्लानुम्-सारथ्यसमर्थ भी; तानुम् तम्पियुम्-
(वे) आप, छोटे भाई-और; मितिलै पोन्नुम्-मिथिला का स्वर्ण; वेयु उयर् कानिल्ल-
उन्नत वंश (बाँस) के वन में; पोयितान्-गये; अँन्ऱान्-बोले; अँन्ऱ पोळ्दत्ते-
वैसा कहते ही; आवि पोन्नान्-प्राणविमुक्त हो गये । ५६२

नायक दशरथ ने फिर होश में आकर चतुर सारथी सुमन्त्र से पूछा कि
श्रेष्ठ नायक श्रीराम दूर गये हैं (दूरस्थ है) या पास ही (निकटस्थ) है ?
सुमन्त्र ने उत्तर दिया कि श्रीराम उनके भाई लक्ष्मण और मिथिला की निधि
मैथिली तीनों ऊँचे बाँस के पेड़ों से भरे जंगल में चले गये । तभी राजा
के प्राणपखेरू उड़ गये । ५९२

इन्दिरन् मुदल्व रान कडवुळर् यारु मीण्डिच्
चन्दिर ननैय दाङ्गोर् मानत्तिऱ् उलैयिऱ् डाङ्गि
वन्दन् नैन्दै तन्दै यैत्तमन्ड् गळित्तु वाळ्त्ति
उन्दिया नुलहि नुम्बर् मीळ्हिला वुलहत तुयत्तार् 593

इन्दिरन् मुतल्वर् आत्त-इन्द्रादि; कडवुळर् यावरुम् ईण्टि-सभी देवता एकत्र
होकर; चन्दिरन् अनैयतु-चन्द्र के समान; ओर् मानत्तिल्-एक देवयान में (रख);

तलैयिल् ताङ्कि-अपने सिर पर वहन करके; अँनूतै तनूतै-हमारे पिता के पिता; वन्ततन् अँत-पधारे, यह कहते हुए; मत्तम् कळित्तु-हर्षितमन होकर; वाळूत्ति-संस्तुति करके; उन्तियान् उलकत्तु उम्पर्-नाभी से उत्पन्न ब्रह्मा के लोक के परे; मीळ्किला उलकत्तु-(जहाँ से) लौट आना नहीं होता, उस लोक में; उयूत्तत्तर्-पहुँचाया । ५६३

देवेन्द्र आदि सभी देवता एकत्र हो आये । चन्द्रसमान एक देवयान पर उनके शरीर को अपने सिर पर ढोकर रखा । “हमारे धाता के पिता आये” यह हर्ष-घोष करते हुए उनको ले जाकर ब्रह्मा के लोक को पार कर उस मोक्षलोक में पहुँचाया, जहाँ से पुनरावर्तन नहीं होता । ५९३

✽ उयिर्प्पिलन् रुडिप्पु मिल्ल तैन्नूरुणर्न् दुरुवन् दीण्डि
अयिर्त्तत्त णोक्कि मन्तर्न् कारुयि रिन्मै तेरि
मयिर्कुल मत्तैय नङ्गै कोशलै मरुहि वीळून्दाळ
वैयिर्चुडुडु गोडै तन्ति लैन्बिला वुयिरिन् देवाळ 594

कुलम् मयिल् अत्तैय-श्रेष्ठ मयूरतुल्य छटा वाली; नङ्गै कोचलै-देवी कौसल्या; अयिर्त्तत्तळ-सन्देह करती हुई; उरुवम् तीण्टि नोक्कि-शरीर स्पर्श करके देखकर; उयिर्प्पु इलन्-श्वासहीन है; तुटिप्पुम् इल्लन्-स्पन्दनहीन भी है; अँनू उणर्न्तु-यह पहचानकर; मन्तर्न्तु आर् उयिर् इन्मै-राजा की प्राणहीनता; तेरि-निश्चित रूप से जानकर; मरुकि-उद्विग्न होकर; वीळून्दाळ-गिरीं; वैयिल् चुडुम्-धूपतप्त; कोटै तन्तिल्-ग्रीष्म में; अँन्पु इला उयिरिन्-अस्थिहीन जीव (कीड़े) के समान; देवाळ-तड़पने लगीं । ५६४

श्रेष्ठ कुलीन, और मयूराभा कौसल्या ने सन्देह करके राजा का शरीर स्पर्श कर देखा । ‘श्वास नहीं छोड़ते; कोई स्पन्दन नहीं है; इसलिए मर ही गये हैं’, यह निश्चय जानकर शोकाकुल होकर भूमि पर गिर पड़ी । उनकी स्थिति उस अस्थिरहित कीड़े की-सी हो गई, जो ग्रीष्म की धूप में छटपटाता है । ५९४

इरुन्द वन्दणनो डैल्ला मीन्ऱवन् इन्तै यीत्तप्
पैरुन्दवज् जैय्द नङ्गै कणवनैप् पिरिन्डु दैय्व
मरुन्दिळन् दवरिन् विम्मि मणिपिरि यरविन् माळ्हि
अरुन्डुणै यिळुन्द वन्ऱिर् पडैयैत्त वरऱ्ऱ लुऱ्ऱाळ 595

इरुन्त अन्तणनोटु-(अपनी नाभि में) रहनेवाले ब्रह्मज्ञ (ब्रह्मा) के साथ; अँल्लाम्-सृष्टि सब; ईन्ऱवन् तन्तै-उत्पन्न करनेवाले (परब्रह्म) को; ईत्त-जन्म दिलाने योग्य; पैरु तवम् चैय्त्त-जिन्होंने बड़ी तपस्या की थी, वे; नङ्गै-देवी (कौसल्या); कणवनै पिरिन्तु-पति से अलग होकर; तैय्वम् मरुन्तु-देवी अमृत को; इळुन्तवरिन्-खोनेवाले के समान; विम्मि-दुख से भरकर; मणि पिरि अरविन्-रत्न खोकर विषधर जैसे; माळ्कि-कुम्हलाकर; अरु तुणै-प्यारा साथी;

कावाडु नीयौळियिर् पळिपेरिदो वन्नेर्
करुङ्गडलिर् कण्वळर्न्दोय् कैम्माऱु मुण्डो 101

तेवा-देव; करुम् कटलिल्-(आपके रंग के कारण) काले (वने) या विशाल क्षीरसागर में; कण्वळर्न्दोय्-निद्रा करनेवाले; मेवातवर् इल्लै-आपके शत्रु नहीं हैं; मेवित्तर्म् इल्लै-मित्र भी नहीं हैं; वैळिपोटु इरुळ् इल्लै-प्रकाश के साथ अन्धकार भी नहीं है; मेल् कीळुम् इल्लै-ऊपर, नीचे नहीं है; मूवामेयुम् इल्लै-उमर में कम होना भी नहीं; मूत्तमेयुम् इल्लै-बढ़ना भी नहीं; मुतल् इट्टे ओट्टु-आदि, मध्य के साथ; ईरु इल्लै-अवसान भी नहीं; मुन् ओट्टु पित् इल्लै-पूर्व और पश्चात नहीं है; निन् तोन्ऱु निलै-आपके स्वरूप के लक्षण; इव्वो-ये है क्या; अँन्ऱाल्-तो; नी चिलै एन्ति-आप धनुष लेकर; चेवटिकळ् नोव-लाल (मनोरम) पैरों को दुख देते हुए; वन्तु कावातु ओळियिल्-आकर रक्षा नहीं करेंगे तो; पळि पेरितो-बड़ा अपयश होगा क्या; अन्नेल्-या; कै माऱुम् उण्टो-प्रत्युपकार भी हो सकता है क्या । १०१

आप काल-देश-वस्तु-परिच्छेद रहित हैं । इसलिए आपके न शत्रु है, न मित्र है । देवाधिदेव ! क्षीरसागरशायी ! आपके लिए न प्रकाश है, न अँधेरा । ऊपर कुछ नहीं है, न आपके नीचे कुछ है (आप सर्वत्र व्याप्त हैं) । आपकी न जवानी होती है, न वार्द्धक्य होता है (आप कालातीत हैं) । आपका न आदि है, न मध्य, न अन्त । आपके पूर्व या बाद कुछ नहीं होता । आप सभी काल में वर्तमान हैं । आपके लक्षण ऐसे हैं न ? फिर क्या आश्चर्य है कि आप धनुष लेकर अपने श्रीचरणों को दुखाते हुए हमारे रक्षणार्थ इधर आये हैं । ऐसा रक्षण नहीं करेंगे तो आपका अपयश हो जायगा क्या ? या हम आपका कोई प्रत्युपकार करनेवाले हैं क्या ? । १०१

नाळि	नवैतो	रुलहर्मेला	माह
नळित्तत्तु	नीतन्द	नान्मुहत्तार्	तामे
ऊळि	पलपलवु	निन्ऱुळन्दा	लैन्ऱु
मुलवाप्	पैरुङ्गुणत्तै	मुत्तमने	मेनाळ्
ताळि	तरैयाहत्	तण्डयिर्	नीराहत्
तडवरैये	मत्ताहत्	तामरैक्कै	नोव
आळि	कडैन्दमुद	मैङ्गळुक्के	यीन्दा
यवुणर्हडा	मुत्तक्कडिमै	यल्लामै	युण्डो 102

नी-आपने; नळित्तत्तु तन्त-अपनी नाभी-कमल से जिनको सृष्ट किया; नान् मुक्त्तार् तामे-वे चतुर्मुख; नवै तीर् उलकम् अँलाम्-निर्दोष प्रपंच सब; नाळि आक-माप बनाकर; ऊळि पल पलवुम्-अनेक-अनेक युग; निन्ऱुळन्ताल-रहकर मापें तो भी; अँन्ऱुम् उलवा पैरुम् कुणत्तु-कभी पूरा न होनेवाले (अमाप) उत्तम गुणों के; अँम् उत्तमत्ते-हमारे पुरुषश्रेष्ठ; मेल् नाळ्-प्राचीनकाल में; तरै ताळि

आक-भूमि को मथनी (पात्र) बनाकर; नीर् तण् तयिर् आक-सागरजल को दही बनाकर; मत्तु तटवरैये आक-मथानी, बड़े मन्दरपर्वत को बनाकर; तामरै कै नोव-कमल-सम हाथों को दुखाते हुए; आळि कटैन्तु-समुद्र को मथकर; अमृतम्-अमृत को; अँङ्कळुक्के ईन्ताय्-हमें ही दे दिया; अबुणर्कळ् ताम्-दानव तो; उत्तक्कु अट्टिमे अल्लामै उण्टो-आपके दास नहीं हैं, ऐसा क्या । १०२

आपके, अपनी नाभि से सृजित चतुर्मुख ब्रह्मा स्वयं, निर्दोष लोकों को माप बनाकर अनेक युगों तक आपके गुणों का माप लगाने लगें, तो भी आपके गुणों का माप नहीं मिल सकता । ऐसे अमाप कल्याण-गुणपूर्ण ! पुरुषोत्तम ! प्राचीन काल में सारी पृथ्वी को मथनी बनाकर क्षीरसागरपय को दही बनाकर और मन्दर पर्वत को मथानी बनाकर अपने कमल-सम हाथों को दुखाते हुए मथन किया; पर सुधा निकला तो उसे हम देवों को दे दिया ! तब क्या दानव आपके दास नहीं हैं —यह बात है क्या ? । १०२

औन्नाहि	मूलत्	तुरुवम्	बलवाहि
युणर्वा	युधिराहिप्	पिडिदाहि	यूळि
शौन्ना	शरुङ्गालैत्	तन्निलैय	दाहित्
तीर्न्दुलहन्	दानाहिच्	चैव्वेता	निन्ऱ
नन्ऱान	जानत्	तत्तिक्कोळुन्दे	यैङ्ग
णवैदीर्क्कु	नायहन्ने	नल्वित्तैये	नोक्कि
निन्ऱारैक्	कात्ति	ययलारैक्	काय्दि
निलैयिल्लात्	तीवित्तैयु	नीतन्द	दन्ऱे 103

मूलत्तु औन्ना आकि-मूल में एक रहकर; उरुवम् पल आकि-अनेक रूप बनकर; उणर्वा आय्-ज्ञानगोचर बनकर; उयिर् आकि-प्राण बनकर; पिडित्तु आकि-इस तरह भिन्न-भिन्न होकर; ऊळि चैन्ना आचु उरुम् कालै-युगान्त में प्रपंच-नाश के समय; तन् निलैयतु आकि तीर्न्तु-अपनी पूर्व-स्थिति में आ (अपनी लीला) समाप्त करके; उलकम् तान् आकि-तब प्रपंच स्वयं आप होकर; चैव्वे निन्ऱ-शोभित रहनेवाले; नन्ऱाय जात तत्ति कौळुन्ते-श्रेष्ठ ज्ञान के पल्लव (सार) समान; अँङ्कळ् नवै तीर्क्कुम्-हमारे अपराधों को दूर करनेवाले; नायकन्ने-नाथ; नल् वित्तैये नोक्कि निन्ऱारै-अच्छे कर्म ही करते रहनेवाले साधुओं की; कात्ति-आप रक्षा करते हैं; अल्लारै-इतरों की; काय्ति-दण्ड देते हैं; निलै इल्ला तीवित्तैयुम्-अस्थायी बुरे कर्म भी; नी तन्तु अन्ऱे-आपके ही बने हुए हैं न । १०३

मूल में एक रहकर फिर अनेक रूप में बदले । भिन्न-भिन्न सृष्टि में ज्ञान से अनुभव में आनेवाले तत्व रहे । उसके प्राण रहे । इस तरह अनेक जीवों में बँटे से रहने के बाद युगांत में फिर आपने उन सबको अपने में समेट लिया । तब प्रपंच सब आप ही हो गया । उस स्थिति में शोभायमान जो रहते हैं, वे ज्ञानसार ! हमारे अपराधों को मिटानेवाले नायक ! अच्छे कर्म करनेवाले साधुओं को रक्षित और इतरों को दण्डित

करनेवाले हैं आप । पर क्या अस्थायी पाप भी आपके ही कारण स्थिति नहीं पाते ? । १०३

वल्लै	वरम्बिल्लाद	मायवित्तै	तन्नात्
मयङ्गितर्	हळोडे	मदिमयङ्गि	मेत्ताळ्
अल्लै	यिरैयवन्ती	यादियैत्तप्	पेदुर्
इलमरु	वेमुन्नै	यर्प्पयनुण्	डाह
अल्लै	वलयङ्गळ्	नुम्मुळैयैन्	इन्ना
अरियोत्तै	तीण्डि	यैळुव	रैन्निन्ऱु
तौल्लै	मुदन्मुत्तिवर्	शूळुर्ऱु	पोदै
तौहैन्निन्ऱु	वैयन्	डुडैत्तिलैयो	वैन्दाय् 104

अन्ताय्—हमारे पिता; वल्लै—वलवती; वरम्पु इल्लात—असीम; माय वित्तै तन्नात्—माया के कार्य से; मयङ्गितर्कळ् ओटु—भ्रमित रहे (देवों) के साथ; मति मयङ्कि—मोहमग्न होकर; मेल् नाळ्—प्राचीन समय में; इरैवन् नी अल्लै—आप आदि भगवान नहीं हैं; आति अत्त—आदिदेव हैं, ऐसा; पेटुर्ऱु—संशय में पड़कर; अलमरुवैम्—संकट में रहे हमारे; मुन्नै अर् पयन् उण्टाक—पूर्वकृत सुकर्म का फल सहायता करने आया; अन्नाळ्—उस दिन; अल्लै वलयङ्कळ्—सीमा पर स्थित सारे कुवलय; नुम् उळै अर्ऱु—आप ही पर स्थित हैं, ऐसा; अळुवर् अत्त निन्ऱु तौल्लैमुत्तल् मुत्तिवर्—“सप्तक” के रूप में प्रख्यात सप्तर्षियों ने; अरियोत्तै तीण्डि—अग्नि को स्पर्श करके; चूळ् उर्ऱु पोते—शपथ कही; तौकै निन्ऱु ऐयम्—तब घनीभूत रहा संशय; तुडैत्तिलैयो—आपने मिटाया नहीं क्या । १०४

धाता! पहले कुछ देवों ने बलवती और असीम माया के कार्य के वश में होकर आपके परत्व के सम्बन्ध में संशय किया । यह उनका भ्रम था । हम भी उनके साथ भ्रमित होकर आप परब्रह्म आदिदेव हैं, नहीं हैं, ऐसे संशय में पड़कर गड़बड़ा रहे थे । पर हमारा सुकृत था, जिसके फलस्वरूप (अत्ति, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगीरस आदि) सप्तर्षियों ने अग्नि में हाथ रखकर शपथ खायी कि सारे कुवलय आपके ही शरीर पर घृत है । तब परब्रह्म कौन है, इस पर उठा घनीभूत सन्देह मिट गया । आप ही न ऐसी व्यवस्था करके हमारा सन्देह मिटाया ! (वाल्मीकी में ये बातें पायी नहीं जातीं ।) । १०४

इत्तन्न	पलनिनैन्	दैत्तिन्न	तियम्बात्
तुत्तनुद	लिडैयुळ	दैत्तननि	तुणिवान्
तन्निहर्	मुनिवन्नै	तरविडे	यैन्नाप्
पौन्तीळिर्	नैडुमुडिप्	पुरन्दरन्	पोनान् 105

पौन् ओळिर् नैडु मुटि पुरन्तरन्—स्वर्ण की चमकदार दीर्घकिरीटी पुरन्दर ने; इत्तन्न पल—ऐसी अनेक बातें; नितैन्नु—सोचकर; इयम्पा एत्तितन्—और कहकर

स्तुति की; इटै तुत्तुतल् उळतु-बीच में होनेवाली एक घटना है; अँन-ऐसा; नत्ति तुणिवान्-खूब निश्चय करके; तन् निकर् मुत्तिवत्तै-स्वोपम महर्षि को; विटै तर-विदा दें; अँन्ता-कहकर (ले); पोतान्-सिधारे । १०५

स्वर्ण के कारण जाज्वल्यमान दीर्घ किरीटधारी पुरन्दर ने ऐसी बहुत सी बातों का स्मरण करके उनकी स्तुति की । उन्होंने सोच लिया कि बीच में घटनेवाली एक विशेष घटना है । इसलिए उन्होंने शरभंग मुनि को, जो अपनी उपमा स्वयं आप ही थे, नमस्कार करके विदा ली और वे वहाँ से चले गये । १०५

पोतव त्रहनिलै पुलमयि नुणर्वान्, वात्तवर् तलैवन्नै वरवैदिर् कौण्डान्
आत्तव नडितौळ वरुळ्वर मुत्तिवन्, तानुडै यिडवहै तळुवित्त नुळैवान् 106

पोतवन् अक निलै-वैसे निर्गत देवेन्द्र का मनोभाव; पुलमैयित्-अपनी ज्ञान-दृष्टि से; उणर्वान्-समझकर ऋषि ने; वात्तवर् तलैवन्नै-देवदेव श्रीराम को; वरवु अँतिर् कौण्डान्-अपने सामने आते पाया; आत्तवन्-(आगत) श्रीराम ने; अटि ताँळ-नमस्कार किया; मुत्तिवन् अरुळ् वर-मुनि ने कृपापूर्ण होकर; तळुवित्तन्-आलिंगन कर लिया; तानुडै इट वकै-अपने वासस्थान (कुटीर) को; नुळैवान्-प्रवेश करके । १०६

महर्षि ने, वहाँ से जो गये, उन पुरन्दर का मनोभाव अपनी ज्ञानदृष्टि से जान लिया । तब देवाधिदेव श्रीराम उनके सामने पधारे । उन्होंने आकर महर्षि के चरणों में नमन किया । महर्षि उन्हें गले लगाकर अपने आश्रम में लिवा ले जाने लगे । १०६

एळैयु मिळवलुम् वरुहैन विन्निदा, वाळिय ववरोडु वळ्ळु महिळा
ऊळियिन् मुदन्मुत्ति युडैयुळै यणुह, आळियि लरितुयि लवन्नै महिळ्वान् 107

वळ्ळुम्-श्रीराम ने; एळैयुम् इळवलुम् इतिता वरुह अँत-देवी और छोटे भाई सुख से आवें, कहा, तब; अवरोडु-उनके साथ; मकिळा-खुश होकर; ऊळियिन् मुत्तन् मुत्ति-युग के पूर्व से भी विद्यमान महर्षि के; उडैयुळै-कुटीर में; अणुक-श्रीराम आये तब; आळियिल् अरि तुयिल्-क्षीरसागर में योगनिद्रा में लीन रहनेवाले; अवन् अँत-परब्रह्मा, विष्णु भगवान है, समझकर; मकिळ्वान्-हर्षरत हुए । १०७

तब श्रीराम ने अपनी देवी सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मण को अपने साथ आने की आज्ञा दी । युगारम्भ के पहले से ही रहनेवाले मुनिवर उन सबको लेकर अपने कुटीर में आये । वे श्रीराम को क्षीरसागरशायी विष्णु भगवान जानकर अत्यन्त हर्षित हुए । १०७

अव्वयि	तळहन्नु	वैहित	नरिजन्
शैव्विय	वरिवुरै	शैविवयि	नुहरा
नव्वियिन्	विळियव	ळौडुननि	यिरुळैक्
कव्विय	निशियौरु	कडैयुरु	मळविल् 108

अ वयिन्-उस आश्रम में; अळकत्तुम्-सुन्दरराज; नव्वियिन् विळि अवळीट्टु-
मृगनयनी सीताजी के साथ; वैकित्तन्-ठहरे; अरिजन्-ज्ञानी ऋषि के; चैव्विय
अरिवु उरं-श्रेष्ठ उपदेशों को; चैवि वयिन् नुकरा-कानों से सुनकर; इरुळै नत्ति
कव्विय-अन्धकार-ग्रस्त; निचि-निशा; और कटै उरुम् अळविल्-अन्त होने की आई,
तब । १०८

आश्रम में सुन्दरराज श्रीराम, मृगनयना सीतादेवी के साथ ठहरे ।
(लक्ष्मण शायद कुटीर के बाहर ही रह गये थे ।) महान ज्ञानी शरभंग ने
अनेक श्रेष्ठ उपदेश दिये । उपदेशों को ध्यान से श्रीराम ने सुना । यों
रात बीती और अन्धकारग्रस्त रात एक तरह से अपने अन्तिम समय में आ
गयी । तब— । १०८

विलहिडु	निळलित्तन्	वैयिल्विरि	ययिल्वाळ
इलहिडु	शुडरव	निशैयन	तिशैदोय्
अलहिड	वरिदेनु	मविरहर	निरैयाल्
उलहिडु	निरैयिरु	ळुरैयिनै	युरिवान् 109

विलकिट्टु निळलित्तन्-फैलनेवाले प्रकाश के स्वामी; इलकिट्टु चुडरवन्-व्यक्त
गमों वाले; इचै अत्त-अपनी कीर्ति के समान; तिचै तोय्-चारों दिशाओं में व्याप्त;
अलकु इट अरित्तु अत्तुम्-अगणित; वैयिल् विरि-दीप्तियुत; अयिल् वाळ्-तीक्ष्ण
तलवार-सम; अविरु कर निरैयाल्-शोभायमान किरण-हस्तों से; उलकु इट्टु-संसार
पर आच्छादित; निरै इरुळ् उरैयिनै-घने अन्धकार रूपी चादर को; उरिवान्-उधेड़
लेने लगे । १०९

व्यापनेवाले प्रकाश के और जाज्वल्यमान तेज के स्वामी सूर्य ने
अपनी ही कीर्ति के समान चारों दिशाओं में व्याप्त तलवारे-सम धूप की
किरण-करों से भूमि पर आच्छादित अन्धकार रूपी चादर को उधेड़ दिया ।
(अन्धकार सूर्य-रश्मि के पड़ते ही हट गया ।) । १०९

आयिडै यरिजन् मवनेदि रळुवत्, तीयिडै नुळैवदोर् तैळिविनै युडैयान्
नीविडै तरुहैन निरुविन नैरियाल्, कार्येर वरन्मुडै कडिदिनि लिडुवान् 110

अ इटै-तब; अरिजन्-ज्ञानी; अवन् अत्तिर्-(श्रीराम) उनके सामने;
अळुवम् ती इटै-अधिक पुष्ट अग्नि में; नुळैवतु ओर् तैळिविनै उटैयान्-प्रवेश करने का
एक शुद्ध संकल्प लेकर; काय् अरि-जलनेवाली अग्नि को; नैरियाल्-यथाक्रम;
वरन्मुडै-शास्त्रोक्त प्रकाश से; कटितितिल् इडुवान्-जल्दी प्रज्वलित करके; नी विटै
तरुक्कै-आप आज्ञा दे, यह; निरुवित्तन्-माँग लिया । ११०

तब महान ज्ञानी शरभंग मुनि ने श्रीराम के सामने अधिक परिमाण
में अग्नि जलाकर उसमें प्रवेश करने का संकल्प लेकर उचित क्रम से,
शास्त्रोक्त प्रकार से सत्वर प्रज्वलित किया । फिर श्रीराम से विदा
माँगी । ११०

वरिशिलै युल्वन्तु मरैयुल वनैनी, पुरितौल्लि लैतैयदु पुहलुदि यैतलुम्
तिरुमह डलैवशैय् तिरुविनै युरयान्, अरिपुह निनैहुवै तरुळैत विरैवन् 111

वरिचिलै उल्वन्तुम्—वन्धनयुक्त धनुष चलाने—में दक्ष श्रीराम के; मरै उल्वनै—
वेदकृषक को; नी पुरि तौल्लिल् अँतै—आप करते है, वह कार्य क्या है; अतु पुकलुति—
वह वतलाइए; अँतलुम्—पूछने पर; तिरुमकळ् तलैव—श्रीलक्ष्मीपति; चैय् इरुवित्तै—
मेरे कृत दोनों कर्म; अरु—नष्ट हो जायें, इसलिए; यान् अरि पुक निनैकुवैन्—में
अग्निप्रवेश करना चाहता हूँ; अरुळ् अँत—आज्ञा देने की कृपा करें, प्रार्थना करने पर;
इरैवन्—भगवान् । १११

धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम ने वेदविद्याप्रवीण महर्षि से प्रश्न किया
कि यह आप क्या करने जा रहे हैं ? कृपया बताइए तो । तब शरभंग ने
कहा कि हे लक्ष्मीपति ! मैं अपने दोनों (पाप-पुण्य) कर्मों का नाश करने
के लिए अग्नि में प्रवेश करना चाहता हूँ । आप कृपया अनुमति प्रदान
करें । तब भगवान् ने— । १११

यान्वरु ममैदियि लिदुशैय लैवन्नो, मान्वरु तनियुरि मार्विनै यैतलुम्
मीन्वरु कौडियवन् विरुलडु मरुवोन्, ऊन्विडु मुवहैय नुरैन्ति पहर्वान् 112

मान् वरु—मृग के; तनि उरि मार्वित्तै—श्रेष्ठ चर्म से आच्छादित वक्ष वाले;
यान् वरुम् अमैतियिन्—मेरे आगमन के इस समय में; इतु चैयल् अँवन्—यह करना क्यों;
अँतलुम्—(श्रीराम के) यह पूछने पर; मीन् वरु कौडि अवन्—मकरध्वज (मन्मथ)
का; विरुल अट्टु—प्रताप नष्ट करनेवाले; मरुवोन्—महर्षि; ऊन् विटुम् उवकै यिन्—
शरीर-त्याग से उत्पन्न हर्ष के साथ; उरै—वचन; नति पकर्वान्—खूब बोले । ११२

मृगचर्मालंकृत वक्ष वाले ! यह अग्निप्रवेश का कार्य आप अब करना
चाहते हैं, जब मैं इधर आया हूँ ! यह क्यों ? —यह पूछा । तब
मकरध्वज मन्मथ के प्रताप-नाशक महर्षि, जो इस उल्लास में थे कि शरीर
छूटनेवाला है, बोले । ११२

आयिर युहमुळ तवमयर् हुवैन्त्यान्, नीयिवण् वरुहुदि यैनुत्तिलै युडैयेन्
पोयित्त दरुविनै पुहलुरु विदियान्, मेयित्तै यिनियौरु वित्तैयिलै विरलोय् 113

विरलोय्—विजयी वीर; - यान्—मैं; आयिरम् उकम् उळ—सहस्र युगपर्यन्त;
तवम् अयर्कुवैन्—तपस्या करता रहा हूँ; नी इवण् वरुकुति—आप इधर पधारेंगे;
अँतुम् निलै उटैयेन्—इस स्थिरता पर रहा; पुकल् उरु वित्तियान्—शास्त्र-विधि के
अनुसार; पोयित्तु अरु वित्तै—मिटे मेरे कठिन कर्म; मेयित्तै—आप भी पधारें; इति
और वित्तै इलै—अब कोई कर्म नहीं है । ११३

विजयी वीर ! सहस्र युग पर्यन्त मैंने तपस्या की साधना की है ।
आप इधर पधारेंगे, इस बात की दृढ़ प्रतीक्षा में रहा । शास्त्र-विधान के
अनुसार मेरे दोनों कर्म कट गये । तभी तो आप पधारें हैं । आगे मेरा
कर्तव्यकर्म कुछ नहीं है । ११३

इन्दिरन् नाळित दिरुदिहळ् पहर, वन्दत्तन् मरुवुदि मलरय नुलहम्
तन्दन नैतवदु शारलै नुरवोय्, अन्दमि लुयर्पद मडैदलै मुयल्वेन् 114

उरवोय्-बलवान्; इन्दिरन्-देवेन्द्र के; नाळिततु इरुतिकळ् पकर-मेरे जीवन का अन्त कहने के लिए; वन्दत्तन्-आये; मलर् अयन् उलकम्-कमलासन ने अपने लोक का वास; तन्दत्तन्-दिया; मरुवुति-आ जायें; अँन-कहने पर; अतु चारलै-वह नहीं चाहते हुए; अन्तम् इल् उयर पतम् अटैतलै-अक्षय परम (मोक्ष) पद प्राप्त करना; मुयल्वेत्त-साधूंगा । ११४

शक्तिमन्त ! अभी देवेन्द्र आये थे और मेरी आयु का अन्त जताकर उन्होंने कहा कि कमलोद्भव ने आपको अपने लोक में आमन्त्रित किया है । पधारिए । पर मैं वह लोक नहीं चाहता । पर अक्षर परमपद (मुक्ति-लोक) पाने के प्रयास में ही मैं साधना करता रहा हूँ । ११४

आदलि नदुपैरु वरुळैन् वुरैयाक्, कादलि यवळीडुङ्ग गदळैरि मुळुहिप्
पोदलै मरुविन तौरुनैरि पुहला, वेदमु मरिवरु मिहुपीरु लुणर्वान् 115

औरु नैरि पुकला-(केवल) एक मार्ग प्रतिपादित न करनेवाले; वेत्तमुम्-वेदों के भी; अरिवरु-अज्ञात; मिक्कु पीरुळ् उणर्वोन्-अनेक विषय के ज्ञानी महर्षि; आत्तलिन्-इसलिए; अतु पैरुल् अरुळ्-उसकी प्राप्ति का वर दीजिए; अँत उरैया-यह प्रार्थना करके; कात्तलि अवळीटुम्-प्रिया के साथ; कतळ् अँरि मूळ्कि-जलनेवाली आग में प्रवेश करके; पोतलै मरुवित्तन्-परमपदगमन में प्रवृत्त हुए । ११५

वेद भी, जो निश्चित रूप से एक मार्ग या एक पद की व्याख्या नहीं करते हैं, पर अनेक मार्गों और अनेक पदों का प्रतिपादन करते हैं, परमपद का मार्ग नहीं बताते । लेकिन महर्षि शरभंग उस परमपद (मुक्तिलोक) का लक्षण खूब जानते थे । इसलिए उन्होंने उसी पद-प्राप्ति की श्रीराम से प्रार्थना की और वे अपनी प्रिया पत्नी के साथ ज्वलन्त अग्नि में प्रवेश करके मोक्षपद जाने को उद्यत रहे । ११५

तेवरु मुत्तिवरु मुळुवतु तैरिवोर्, मावरु नरुविरै मलरयन् मुदलोर्
एवरु मुडिवित्ति लिऱुविनै यौरुविप्, पोवदु करुडुमव् वरु नैरिपुक्कान् 116

उळुवतु तैरिवोर्-भवितव्य समझनेवाले; मा वरु-गौरवपूर्ण; नरु विरै-सुवासित; मलर् अयन् मुत्तलोर्-कमलभव अज आदि; तेवर्-देवता लोग; मुत्तिवरुम्-मुनिगण; एवरुम्-कोई भी; इरुवित्तै औरुवि-दोनों कर्मों का नाश करके; मुडिवित्तिल्-अन्त में; पोवतु करुतुम्-जाना (जहाँ) चाहेंगे; अ अरु नैरि-उस परमगति को; पुक्कान्-पहुँचे । ११६

भावी की बातें जाननेवाले मूल्यवान और सुवासित कमल पर आसीन अजादि देवता लोग और मुनिगण —कोई भी अपने पाप-पुण्य दोनों कर्मों के नाश पर अन्तिम गति के रूप में जहाँ जाना चाहते हैं, उसी गति को शरभंग प्राप्त हो गये । ११६

अण्डमु महिलमु मरिवरु नैरियाल्, उण्डवः नौरुपय रुणरुहन्त रुहपे
इण्डव नैडिदुयि रिरुदियि लवनैक्, कण्डव रुपौरुहल् करुदुव दैळिदे 117

अण्डमुम्-सारे अण्ड; अकिलमुम्-और सारे लोक; अरिवु अरु नैरियाल्-
अनजानी रीति से; उण्डवन्-जिन्होंने उदरस्थ कर लिया था, उन श्रीराम का;
और पयर्-एक (परमपावन) नाम; उणरुकुत्तर-ध्यान करनेवाले; उरु पेड-
जिसको प्राप्त करते हैं, वह भाग्य; अण् तव नैदितु-अपार और अत्यधिक है; नैदितु
उयिर् इरुतियिल्-अपनी लम्बी आयु के अन्त में; अवतै कण्डवर्-जिन्होंने उनके दर्शन
किये, वे; उरु पौरुहल्-जो प्राप्त करेंगे, वह वस्तु; करुदुवतु अळिते-सोचना सुलभ है
क्या । ११७

अखिल अण्डों और लोकों को अपने पेट में प्रलयकाल में समा लेनेवाले
विष्णु भगवान के सहस्र रूप हैं और सहस्र नाम हैं । उनमें एक परम
पवित्र नाम है श्रीराम ! उसके स्मरण मात्र से लोग जो भाग्य प्राप्त करते
हैं, वह कल्पना के भी बाहर है; बहुत श्रेष्ठ है । तो अपनी लम्बी आयु के
अन्त में, मरणावसर पर उनके दर्शन करने का भाग्य जिनका हुआ है, वे
जिस पद को प्राप्त होंगे उसका महत्त्व कल्पना करना भी आसान है
क्या ? । ११७

3. अहत्तियप् पडलम् (अगस्त्य पटल)

अनैयव	निरुदियि	नमैवु	नोक्कलित्
इतियव	रित्तलि	तिरङ्गु	नैज्जित्तरु
कुनिवरु	तिण्शिलैक्	कुमरर्	कौम्बोडुम्
पुत्तिदत्त	दुइयुणिन्	ररिदिर्	पोयितार् 118

इतियवर्-सबके प्यारे (सबको सुख देनेवाले); कुत्ति वरु-नमनीय; तिण् चिलै-
और सारयुक्त धनुष के; कुमरर्-(धारण करनेवाले) राजपुत्र; कौम्पु ओडुम्-
पुष्प-शाखा (सीतादेवी) के साथ; अनैयवन्-उन महर्षि के; इरुतियिन् अमैव-अन्त
की व्यवस्था; नोक्कलित्-प्रत्यक्ष देखने से; इत्तलित्-परिताप से; इरङ्कु
नैज्जित्तरु-खिन्नमन होकर; पुत्तिदत्तनु उइयुल् निन्नु-पवित्रात्मा के आश्रम से;
अरितिल् पोयितार्-निकलकर सायास चले । ११८

सर्वभूतरंजक प्यारे राजकुमार और नमनीय धनुष के धारक श्रीराम
और लक्ष्मण, पुष्पलता-समाना श्रीसीतादेवी के साथ शरभंगदेह-वियोग देख
रहे थे । उन्हें परिताप हुआ । बड़े खिन्नमन होकर वे उन पवित्र ऋषि
के आश्रम से निकले और भारी मन के साथ सायास आगे जाने लगे । ११८

मलैहळु	मरङ्गळु	मणिक्कड्	पारैयुम्
अलैपुत्त	नदिहळु	मरुविच्	चारलुम्

इलैशैरि
निलैमिहु

पळुवमु
तडङ्गळु

मिन्निय
मिन्निदु

चूळलुम्
नीङ्गितार् 119

मलैकळुम्-पर्वत; मरङ्कळुम्-और अनेक तरु; मणि कल् पारैयुम्-और सुन्दर अनेक चट्टानों को; अलै पुतल् नतिकळुम्-तरंगसहित जल वाली नदियाँ; अरुवि चारलुम्-सरिताओ के साथ पर्वत-पाद-प्रदेश; इलै चैरि पळुवमुम्-पत्तों से पूर्ण वनप्रदेश; इत्तिय चूळलुम्-और सुन्दर स्थान; इत्तितिन्-सुख से देखते हुए; नीङ्कितार्-पार करके गये । ११६

वे अनेक पर्वत, वृक्ष, सुन्दर चट्टानें, तरंगसहित जल से पूर्ण नदियाँ, सरिताओं के साथ पर्वतों के पादप्रदेश और अन्य अनेक मनोरम स्थल—इनको देखते हुए सुख से आगे बढ़ते चले । ११९

ॐ पण्डैय
मुण्डरु
तण्डह
कण्डन

वयत्तुरुम्
मोनरु
वनत्तुर्
रिरामनैक्

वाल
मुदलि
तवत्तु
कळिक्कुञ्ज

किल्लरुम्
तोरुहळत्
ळोरैलाम्
जिन्दैयार् 120

पण्डैय अयन् तरुम्-पुरातन ब्रह्माजी से सृष्ट; पालकिल्लरुम्-वालखिल्य; मुण्डरुम्-मुण्डी; मोनरुम्-मौनी; मुतलितोरुक्ळ्-आदि; अ तण्डक वत्तु उरै-जो उस दण्डक वन में रहते थे; तवत्तु उळ्ळोरुक्ळ् अल्लाम्-सब तपस्वी लोगों ने; इरामनै कण्डत्तर्-श्रीराम के दर्शन किये; कळिक्कुम् चिन्तैयर्-मुदितमन हुए । १२०

दण्डक वन में अनेक तरह के तपस्वी रहे । सृष्टि के आदिपुरुष ब्रह्माजी के (रोम से उत्पन्न) वालखिल्य (साठ हजार), मुण्डी, मौनी आदि तपस्वी थे । वे सब श्रीराम के दर्शन करके बहुत हर्षित हुए । १२०

ॐ कनैवरु
विनैपिरि
अनैवरु
पुनैवरु

कडुञ्जिनत्
दिन्मैयिन्
कान्हत्
वुयिर्वरु

तरक्कर्
वैदुम्बु
तमुद
मुलवै

कायवोरु
हिन्ऱनर्
ळाविय
पोल्हिन्ऱार् 121

कनै वरु-शीघ्र अभिभूत कर आनेवाले; कडुम् चिन्तु-अत्यधिक क्रोध वाले; अरक्कर् काय-राक्षसों के सताने से; ओर् विनै पिरितु इन्मैयिन्-अपने पास कोई प्रतीकार-शक्ति न रहने के कारण; वैदुम्पुकिन्ऱत्-तप्त; अनै वरु कान्तत्तु-अग्नि-लगे कानन में; अमुतु अळाविय-अमृत-मिश्रित; पुनैवरु-जल के आने से; उयिर् वरुम्-प्राणवन्त होनेवाले; उल्लवै पोल्किन्ऱार्-ठूठ के समान बने । १२१

श्रीरामचन्द्र प्रभु का आगमन उनके लिए अग्निदग्ध कानन में सुधा-मिश्रित जलधारा के प्रवाह के समान रहा । वहाँ के प्राणवन्त बने ठूठों के समान उन्मत्त क्रोधी राक्षसों से पीड़ित वे निस्सहाय मुनिगण हरे हो उठे । १२१

✽ आय्वरुम्	वैरुवलि	यरक्कर	नाममे
वाय्वैरीइ	यलमरु	मरुक्क	नीङ्गित्तार्
तीवरु	वन्नत्तिडै	विट्टुत्	तीरुन्ददोर्
ताय्वर	नोक्किय	कन्नडिन्	इन्मैयार् 122

आय्वरुम्—उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; वैरुवलि अरक्कर—बड़े बल वाले राक्षसों का; नाममे—नाम; वाय्वैरीइ—कहने से भी डरकर; अलमरुम्—व्याकुल रहने की; मरुक्कम्—उद्विग्नता से; नीङ्गित्तार्—मुक्त होकर; ती वरु वन्नत्तु इटै—(वे) जलनेवाले जंगल-मध्य; विट्टु—छोड़कर; तीरुन्तु—जो गई थी; ताय्वरल्—उस माता गाय का आना; नोक्किय—देखते रहे; कन्नडिन् तन्मैयार्—बछड़े के समान स्थिति वाले हुए । १२२

वे वर्धनशील बल से युक्त राक्षसों का नाम लेने से भी डरते हुए अपार संकटग्रस्त होकर राक्षसों के त्रास के कारण बहुत व्याकुल व उद्विग्न रहते थे । तब श्रीराम पधारे तो उनकी स्थिति उस बछड़े की-सी उत्साहपूर्ण हो गयी, जिसके सामने उसकी माता गाय, जो उसको जलने वाले जंगल में अकेले छोड़कर चली गयी थी, आ गयी हो । १२२

करक्करुड्	गडुन्दोळि	लरक्कर	काय्दलिल्
पीरुक्किड	मिन्मैयिर्	पुळ्ळुङ्गिच्	चोरुनर्
अरक्करेन्	गडलिडै	याळ्हिन्	डारोरु
मरक्कलम्	पैरुत्त	मरुक्क	नोक्कित्तार् 123

करक्क अरुम्—लुक-छिपकर नहीं पर खुले रूप से; कडुम् तोळिल्—नृशंसकारी; अरक्कर—राक्षस; काय्दलिल्—वैर करके सताते रहे, इसलिए; पीरुक्कु इटम् इन्मैयिन्—वार करने का मौका न रहने के कारण; पुळ्ळुङ्कि चोरुनर्—तप्त होकर वेदना उठानेवाले; अरक्कर अन् कटल् इटै—राक्षस रूपी सागर में; आळ्किन्डार्—गिरकर डूबनेवाले; ओरु मरक्कलम् पैरुत्त—एक नाव मिल गई हो, जैसे; मरुक्कम् नीङ्गित्तार्—संकट से मुक्त हुए । १२३

उनकी स्थिति सागर-मध्य डूबनेवाले को नाव मिल गयी हो, ऐसी भी हो गयी । दिन-दहाड़े वे राक्षस उनको दिक कर रहे थे । इनके पास प्रतीकार का या अपनी रक्षा का कोई साधन नहीं था । इसलिए वे बहुत क्लेशित होकर राक्षस रूपी सागर में डूबते रहे । अब उनको श्रीराम रूपी नौका मिल गयी । १२३

✽ तैरिञ्जुड नोक्कित्तर् शैय्द शैय्दवम्, अरुञ्जिडप् पुदवनल् लडिवु कैदर
विरिञ्जुडप् पड्डिय पिडवि वेंदुयर्प्, पैरुञ्जिडै वोडुपैर् इनैय पड्डियार् 124

चैय्त् चैय् तवम्—तब तक किया हुआ श्रेष्ठ तप; अरुम् चिडप्पु उतव—उत्तम फल देने लगा तो; नल् अडिवु कै तर—परमज्ञान के फलस्वरूप; तैरिञ्चु—श्रीराम का परत्व पहचानकर; उड नोक्कित्तर्—खूब दर्शन करके; विरिञ्चु उड पड्डिय—

(जाल के समान) फैलकर उन्हें जो पकड़े रहा; वैम् पिऱवि तुयर्-भयंकर भवसंकट रूपी; पेरुम् चिरै-बड़ी कारा से; वीट्टु पेरुत्तैय-मोक्ष पा गये हों, ऐसी; पेरुय्यार्-दशा वाले हो गये । १२४

उन ऋषियों ने बहुत तप किया था । उसका फल अब उनकी सहायता करने आया । उनका ज्ञान उनका सहायक हुआ । वे पहचान गये कि श्रीराम परब्रह्म ही है । उन्होंने श्रीरामभद्र के खूब दर्शन कर लिये । अब उन्हें यही विश्वास हो गया कि जाल के समान फैलकर जिस भयंकर भवसंकट ने उन्हें ग्रस लिया था, उस बड़ी कारा से उनको मुक्ति मिल गयी । १२४

वेण्डित्त	वेण्डित्तर्क्	कळिक्कु	मैयत्तवम्
पूण्डुळ	रायिनुम्	पौरैयि	ताडुलाल्
मूण्डेळु	वैकुळियै	मुदलि	नीक्किनार्
आण्डुरै	यरक्करा	ललैप्पुण्	डाररो 125

वेण्डित्तवर्क्कु-प्राथियों को; वेण्डित्त अळिक्कुम्-प्राथित वस्तु दिलानेवाले; मैय तवम् पूण्डुळर्-यथार्थ तप के साधक थे; आयित्तुम्-तो भी; पौरैयिन् आडुलाल्-क्षमा के बल से; मूण्डु अळुम् वैकुळियै-अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को; मुतलिन् नीक्किनार्-जड़ से जिन्होंने काट दिया था, वे; आण्डु उरैन्तु-(वन में) वहाँ रहकर; अरक्कराल्-राक्षसों द्वारा; ललैप्पु उण्टार्-कष्ट में पड़े रहे । १२५

उनकी तपस्या भी अमोघ थी । इच्छित वस्तु दिला सकनेवाली ही थी । तो भी क्षमा के बल से उन्होंने अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को जड़ से काटकर दूर कर दिया था । इसीलिए वे वहाँ, उस वन में रहकर राक्षसों के हाथ त्रास सहते रहे । १२५

ॐ अळुन्दन	रैयदिन	रिरुण्ड	मेहत्तिन्
कोळुन्देन	निन्ऱवक्	कुरिशिल्	वीरत्तैप्
पौळिन्देळु	कादलिऱ्	पौरुन्दि	तारवन्
तौळुन्दौऱ्	दौळुन्दौऱ्	माशि	शौल्लुवार् 126

अळुन्तत्तर्-(वे) उठे और; अयत्तिन्-श्रीराम के पास आये; इरुण्ड मेकत्तिन्-काले मेघ की; कोळुन्तु अन्न-कोपल के समान; निन्ऱ-अपने सामने शोभायमान (खड़े) रहे; अ कुरिशिल् वीरत्तै-उन वीर राजकुमार के; पौळिन्तु अळु कातलि-आप्लावित कर उमड़नेवाले प्रेम के साथ; पौरुन्तिनार्-समीप आये; अवन् तौळुम् तौळुम् तौळुम्-ज्यों-ज्यों वे नमस्कार करते, त्यों-त्यों; आचि चौल्लुवार्-(ऋषियों ने) आशीर्वचन कहे । १२६

वे उठे और श्रीराम के पास, जो काले मेघ की, कोपल के समान सुन्दर थे, आये । उनके मन में श्रीराम को आप्लावित करते हुए उमड़ने

वाला प्रेम उठा था। श्रीराम ने उनको अलग-अलग एक-एक करके नमस्कार किया। तो उन्होंने भी हर बार उनको आशीर्वाद किया। १२६

❖ इत्थियदोर्	शालैकौण्	डेहि	यिव्वयिन्
नत्तियुर्	यैत्तवर्	कमैय	नल्हत्ताम्
तत्तिथिडम्	जार्न्दत्तर्	तड्गि	मर्त्तनाळ्
अनेवरु	मैय्दित्त	रल्लल्	शौल्लुवान् 127

अत्तैवरुम्-सभी (ऋषि); इत्थिय ओर् चालै कौण्डु एकि-मुखद एक आश्रम में ले जाकर; इ वयिन्-यहाँ; नत्ति उर् अँत्तु-खूब विश्राम करें, ऐसा कहकर; अवर्त्तु अमैय नल्कि-उनको आवश्यक वस्तुएँ देकर; ताम् तत्ति इटम् चार्न्दत्तर्-स्वयं अलग-अलग स्थानों में जाकर; तड्कि-ठहरे रहने के बाद; अल्लल् चौल्लुवान्-अपना दुखड़ा कहने; मैय्त्तिर्-(श्रीराम के पास) आ पहुँचे। १२७

फिर वे श्रीराम आदि को एक सुखद पर्णशाला में ले गये। 'यहाँ ठहरकर विश्राम करें'—कहकर उन्होंने दिव्य अतिथियों को वहाँ ठहराया। फिर आवश्यक सामग्रियाँ देकर वे अपने-अपने अलग-अलग स्थानों में चले गये। रात बिताकर वे सवेरे अपना दुखड़ा श्रीराम से बताने के लिए उनके पास पहुँचे। १२७

❖ अँय्दिय मुत्तिवरै यिर्त्तुजि येत्तुवन्, दैयन्तु मिरुन्दत्त नरुळैन् नैन्डुलुम्
वैयहड् गावलन् मैन्द वन्ददोर्, वैय्यवैड् गौडुन्दौळिल् विळैवु केळैना 128

ऐयन्तुम्-प्रभु ने भी; अँय्त्थिय मुत्तिवरै-आगत मुनियों का; इर्त्तुजि-नमस्कार करके; एत्तु उवन्तु-उनकी स्तुति करते हुए मुदित हो; इरुन्दत्त-रहकर; अरुळ् अँत्तु-कृपा की आज्ञा क्या है; अँत्तुलुम्-पूछने पर; वैयकम् कावलन् मैन्त-लोकपाल के पुत्र; वन्तु-हम पर आये; ओर् वैय्य वैम् कौटुम् तौळिल्-बहुत ही भयंकर नृशंसकार्य की; विळैवु-अधिकता; केळ-मुनि; अँता-कहकर। १२८

श्रीराम ने आगत मुनियों को नमस्कार किया; स्तुति की और मोद के साथ रहकर पूछा कि आप कौन सी आज्ञा सुनाने की कृपा करेंगे? ऋषियों ने उत्तर में कहा कि लोकपालक पुत्र! हमारे ऊपर जो बीत रहा है, उस भयंकर कष्ट की अधिकता सुनिए। १२८

❖ इरक्कमैन्	रौरौरु	ळिलाद	नैजित्तर्
अरक्करैन्	रुळर्शिल	रत्तत्ति	नीड्गित्तार्
नैरक्कवुम्	याम्बडर्	नैरिय	लानैरि
तुरक्कवु	मरुन्दवत्	तुरैयुम्	नीड्गित्तोम् 129

इरक्कम् अँत्तु-करुणा नाम का; और पौरुळ्-सर्वश्रेष्ठ गुण; इलात-से हीन; नैजित्तर्-मन वाले; अरत्तित्तु नीड्गित्तार्-धर्म-मार्ग से दूर; अरक्कर-राक्षस; अँत्तु उळर् चिलर्-कहे जानेवाले हैं कुछ लोग; नैरक्कवुम्-(उनके) हमें सताने से;

याम्-हम; पटर् नैरि-अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नैरि-विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्-चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुरैयुम् नीङ्किन्नेम्-उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे हैं । १२६

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं । इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं । १२९

वल्लियम्	बलतिरि	वन्नत्तु	मान्न
अल्लियुम्	बहलुनीन्	दिरङ्गि	याङ्गल्लेम्
शौल्लिय	वउन्नैरित्	तुरैयि	नीङ्गिनेम्
विल्लियन्	मौयम्बिनाय्	वीडु	काण्डुमो 130

विल् इयल् मौय्स्पित्ताय्-धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल-भयंकर अनेक बाघ; तिरि वन्नत्तु-जहाँ घूमते रहते हैं, उस वन में; मान् अन्न-मृगों के समान; अल्लियुम् पकलुम्-रात और दिन; नौन्तु-कृश होकर; इरङ्कि-डुखी होकर; आङ्गल्लेम्-अशक्त होकर; शौल्लिय-शास्त्रोक्त; अङ्ग नैरि-धर्म-मार्ग के; तुरैयिन्-कर्मों से; नीङ्किनेम्-हट गये; वीडु काण्डुमो-इससे विमोचन मिलेगा क्या । १३०

धनुर्द्धर वीर ! खूनी बाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं । हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है । कष्ट सह नहीं पाते । शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये हैं । क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे ? । १३०

❖ मादवत् तौळुहले मरैहळ् यावैयुम्, ओदल्ले मोदुवार्क् कुदव लाङ्गल्लेम्
मूदैरि वळर्क्कल्ले मुरैयि नीङ्गिनेम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ओळ्ळुल्लेम्-महत्त्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मरैहळ् यावैयुम् ओतल्लेम्-सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु-अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आङ्गल्लेम्-सहायता दे नहीं पाते; मूतु अरि वळर्क्कल्लेम्-सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुरैयिन् नीङ्किनेम्-अपने कर्मों से हटे रहते हैं; आतलिन्-इसलिए; अन्तणर् एयुम्-ब्राह्मण ही; आकिलेम्-बने नहीं । १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते । वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते । होमादि अग्निसंधान नहीं करते । इस तरह हम अपने योग्य कर्मों से हटे रह गये हैं । इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये । १३१

❖ इन्दिर	नैनिलव	तरक्क	रेविन्न
शिन्दैयिर्	चैन्तियिर्	कौळ्ळुञ्ज	जैय्हायान्
अन्दैमर्	रियारुळ	रिडुक्क	णीक्कुवार्
वन्दनै	याञ्जैय्द	तवत्तिन्	माट्चियाल् 132

अन्तै-हमारे तात; इन्तिरन् अंतिल्-इन्द्र हैं तो; अवन्-वे; अरक्कर् एवित्त-राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्-मन में; चैन्तियिल्-सिर पर; कौळ्ळुम् चैय्कैयान्-धारण करके बजा लानेवाले हैं; इटुक्कण् नीक्कुवार्-हमारा कण्ठ दूर करनेवाले; मड्डु यार् उळर्-और कौन हैं; याम् चैय्त तवत्तिन् माट्चियाल्-हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्तै-आप पधारे । १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है । क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं । अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे । १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पौरुळुडै मन्तवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्डिनाय्, अरुळुडै वीरनिन् नवयम् यामेन्डार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्-सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय-लोक-पालन जिन्होंने किया; पौरुळ् उटै मन्तवन्-प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व-पुत्र; अरुळ् उटै वीर-करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला-अकाट्य; इरुळ् उटै-अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्-जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्डिनाय्-आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्-आपकी शरण हैं हम; अन्डार्-कहा (ऋषियों ने) । १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है । आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं । हम आपकी शरण हैं । —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले । १३३

❀ पुहल्लु	हुन्दिलरेड	पुत्तत्तण्	डत्तिन्
अहल्व	रेनुमेन्	नम्बोडुम्	वीळ्वराल्
तहवि	रुन्बन्	दविरुदिर्	नीरैत्ताप्
पहल	वन्गुल	मैन्दन्	पणिक्किन्डान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्-दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुक्कल् पुकुन्तिलरेल्-(वे राक्षस क्षमा माँगते हुए) मेरी शरण नहीं आयेंगे तो; पुत्तत्तु अण्डत्तु अकल्वरेत्तुम्-बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; अन् अम्पोडुम् वीळ्वर् आल्-मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्-आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्-अनावश्यक दुख; तविरुदिर्-छोड़ दीजिए; अन्ता-कहकर; पणिक्किन्डान्-विश्वास दिलाया । १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— “वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्याण्ड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूंगा । मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे । आप अनावश्यक दुख छोड़ दें ।” ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे । १३४

याम्-हम; पटर् नैरि-अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नैरि-विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्-चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुरैयुम् नीङ्किन्नेम्-उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे हैं । १२६

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं । इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं । १२९

वल्लियम्	बलतिरि	वनत्तु	मानैन्
अैल्लियुम्	बहलुनौन्	दिरङ्गि	याड्डलैम्
शौल्लिय	वडनैरित्	तुरैयि	नीङ्गिन्नेम्
विल्लियन्	मौयम्बिनाय्	वीडु	काण्डुमो 130

विल् इयल् मौयम्पित्ताय्-धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल-भयंकर अनेक बाघ; तिरि वनत्तु-जहाँ घूमते रहते हैं, उस वन में; मान् अैन्-मृगों के समान; अैल्लियुम् पकलुम्-रात और दिन; नौन्तु-कृश होकर; इरङ्कि-डुखी होकर; आड्डलैम्-अशक्त होकर; शौल्लिय-शास्त्रोक्त; अड नैरि-धर्म-मार्ग के; तुरैयिन्-कर्मों से; नीङ्किन्नेम्-हट गये; वीडु काण्डुमो-इससे विमोचन मिलेगा क्या । १३०

धनुर्द्धर वीर ! खूनी वाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं । हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है । कष्ट सह नहीं पाते । शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये हैं । क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे ? । १३०

✽ मादवत् तौळुहले मडैहळ् यावैयुम्, ओदलै मोडुवार्क् कुदव लाड्डलैम्
मूदैरि वळर्क्कलै मुडैयि नीङ्गिन्नेम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ओळ्ळुक्कलैम्-महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मडैक्ळ् यावैयुम् ओतलैम्-सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु-अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आड्डलैम्-सहायता दे नहीं पाते; मूतु अैरि वळर्क्कलैम्-सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुडैयिन् नीङ्गिन्नेम्-अपने कर्मों से हटे रहते हैं; आतलित्-इसलिए; अन्तणर् एयुम्-ब्राह्मण ही; आकिलेम्-बने नहीं । १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते । वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते । होमादि अग्निसंधान नहीं करते । इस तरह हम अपने योग्य कर्मों से हटे रह गये हैं । इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये । १३१

✽ इन्दिर	नैनिलव	नरक्क	रेविन्
शिन्दैयिर्	चैन्निगिर्	कौळ्ळुञ्ज	जैयैयान्
अैन्दैम्	रियाळ्ळ	रिडुक्क	णीक्कुवार
वन्दनै	याञ्जैय्द	तवत्तिन्	मादचियाल् 132

अँनूतै-हमारे तात; इन्तिरन् अँतिल्-इन्द्र हैं तो; अवन्-वे; अरक्कर् एवित्त-राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्-मन में; चँन्तियिल्-सिर पर; कौळ्ळुम् चैय्कैयान्-धारण करके वजा लानेवाले हैं; इटुककण् नीक्कुवार्-हमारा कण्ठ दूर करनेवाले; मड्डु यार् उळर्-और कौन हैं; याम् चैय्त तवत्तिन् माट्चियाल्-हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै-आप पधारे । १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है । क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं । अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे । १३२

✽ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पौरुळुडै मन्तवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्ऱित्ताय्, अरुळुडै वीरनिन् तवयम् यामेन्ऱार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्-सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय-लोक-पालन जिन्होंने किया; पौरुळ् उटै मन्तवन्-प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व-पुत्र; अरुळ् उटै वीर-करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला-अकाट्य; इरुळ् उटै-अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्-जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्ऱित्ताय्-आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्-आपकी शरण हैं हम; अँन्ऱार्-कहा (ऋषियों ने) । १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है । आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं । हम आपकी शरण हैं । —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले । १३३

✽ पुहल्लु	हुन्दिलरेऽ	पुऱत्तण्	उत्तित्
अहल्व	रेनुमैन्	तम्बोडुम्	वीळ्वराल्
तहवि	रुन्बन्	दविरुदिर्	नीरैत्ताप्
पहल	वन्गुल	मैन्दन्	पणिक्किन्ऱान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्-दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुक्ल् पुकुन्तिलरेल्-(वे राक्षस क्षमा मांगते हुए) मेरी शरण नहीं आयेंगे तो; पुऱत्तु अण्डत्तु अकल्वरेत्तुम्-बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; अँन् अम्पौटुम् वीळ्वर् आल्-मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्-आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्-अनावश्यक दुख; तविरुतिर्-छोड़ दीजिए; अँता-कहकर; पणिक्किन्ऱान्-विश्वास दिलाया । १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— “वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्याण्ड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूंगा । मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे । आप अनावश्यक दुख छोड़ दें ।” ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे । १३४

ॐ वेन्दन् वीयवुम् याय्तुयर् मेववुम्, एन्द लैम्वि वरुन्दवु मँन्तहर्
मान्दर् वन्तुयर् कूरवुम् यान्वनम्, पोन्द दँन्नुडैप् पुण्णियत् तालँन्डान् 135

वेन्दन् वीयवुम्-चक्रवर्ती दिवंगत हुए; याय् तुयर् मेववुम्-और मेरी माता दुखग्रस्त हुई; एन्तल् अँम्पि-महिमायुक्त मेरे लघु भ्राता भरत; वरुन्तवुम्-संकटग्रस्त है; अँन् नकर् मान्दर्-मेरे नगर के लोग; वन् तुयर् कूरवुम्-कठोर वेदना का अनुभव करते है; यान् वनम् पोन्तु- (यह स्थिति पंदा करते हुए) मेरा वन में आगमन; अँन्तुडै पुण्णियत्ताल्-मेरे सुकृत (पुण्य) से ही; अँन्डान्-कहा । १३५

मुझे वन में आना पड़ा जिसके कारण मेरे पिता चक्रवर्ती दिवंगत हो गये । मेरी माता कौसल्यादेवी दुखग्रस्त हो गयीं । महिमावान मेरा लघुभ्राता भरत शोकपीड़ित हो गया । मेरे नगर के वासी दुख में पड़ गये । तो भी मैं समझता हूँ कि मेरा वन में आगमन मेरे सुकृत का ही फल है । १३५

ॐ अउन्द वानैरि यन्दणर् तन्मैयै, मउन्द पुल्लर् वलितौले येनैनिल्
इउन्दु पोहितु नन्डिडु वल्लडु, पिउन्दि यान्वैरुम् वेउँन्वदि यावदौ 136

अउम् तवा नैरि-धर्म से न हटनेवाले आचरण में लीन; अन्तणर् तन्मैयै-ब्राह्मणों के महत्व को; मउन्त-भूलकर (कष्ट देनेवाले); पुल्लर्-नीच राक्षसों का; वलि तौलैयेन्-बल नहीं मिटाऊँगा; अँतिल्-तो; इउन्तु पोकिनुम्-मर जाना भी; नन्डिडु-अच्छा; अल्लतु-नहीं तो; पिउन्तु यान् वैरुम् पेऊ-जन्म लेकर पाने का भाग्य; यावदौ-और क्या होगा । १३६

वे नीच राक्षस आपकी महिमा और आपका स्वभाव नहीं जानते और आपको बहुत कष्ट दे रहे है । उनका बल न मिटाऊँ तो मर जाना भी भला है । नही तो मैंने जन्म लेकर क्या पाया ? और कौन सा लाभ है जो मैं पाऊँ ? । १३६

निवन्द वेदियर् नीयिरुन् दीयवर्, कवन्द बन्दक् कळिनडड् गण्डिड
अमैन्द विल्लु मरुङ्गणैत् तूणियुम्, शुमन्द तोळुम् पीरैत्तुयर् तीरुमाल् 137

निवन्त-गुणोन्नत; वेतियर् नीयिरुम्-वेदज्ञ विप्र आप; तीयवर्-खलों के; कपन्त पन्तम्-कबन्ध-वृन्द का; कळि नटम्-कण्टिट-मुदित नाच देखें तब; अमैन्त विल्लुम्-मेरे पास बेकार रहा धनु; अरुम् कणै तूणियुम्-अपूर्व शरों का तूणीर; चुमन्त-इनको ढोनेवाली; तोळुम्-मेरी भुजाएँ; पीरै तुयर् तीरुम्-भार उठाने का दुख दूर होगा । १३७

आप गुणोन्नत ब्राह्मण उन खलों के कबन्ध-वृन्दों का मुदित नाच देख कर आनन्द मनावे, तभी भारस्वरूप बेकार यह धनु और उत्तम शरों का तूणीर —इनका बोझ व्यर्थ जो ढोती रही उन भुजाओं के भारवहन का दुख दूर होगा । १३७

आवुक् कायितु मन्दणर्क् कायितुम्, यावर्क् केनु सँळियवर्क् कायितुम्
शावप् पँड्रव रेतहै वानुरै, देवर्क् कुन्दौळुन् देवर्ह ळाहुवार् 138

आवुक्कु आयितुम्-गायों के क्षणार्थ हो; अन्तणर्क्कु आयितुम्-या ब्राह्मणों के लिए हो; सँळियवर् यावर्क्केतुम् आयितुम्-निर्बल किसी के लिए भी हो; चाव पँड्रवरे-जिनको मरने का भाग्य होता है, वे ही; तर्कै वान् उरै-महिमायुक्त स्वर्ग में वास करनेवाले; तेवर्क्कुम्-देवों के लिए भी; तौळुम्-बन्ध; तेवर्कळ आकुवार्-देव बनेंगे । १३८

वे ही मनुष्य देवबन्ध देव बनते हैं, जो गाय, ब्राह्मण या किसी और निर्बल की रक्षा में अपने प्राण खोते हैं । १३८

शूर रुत्त वतुज्जुडर् नेमियुम्, ऊर रुत्त वौरुवन्तु मोम्बिनुम्
आर इत्तिनीं डन्डिनिन् डारवर्, वेर रूपैन् वँरुवन्मि नीरैन्डान् 139

चूर् अरुत्तवतुम्-शूरपद्म के संहारक (कार्तिकेय) और; चुटर् नेमियुम्-ज्वलन्त चक्रधारी (विष्णुदेव); ऊर अरुत्त वौरुवन्तुम्-और त्रिपुरांतक (शिवजी); ओम्पितुम्-उनकी रक्षा करने आएँ (तो भी); आर्-जो; अरुत्तिनीं डन्डि-धर्म से अलग होकर; निन्डार- (पाप-कर्म में प्रवृत्त) रहते हैं; अवर्-उनको; वेर् अरुपैन्-जड़ से काट (मिट) दूँगा; नीर् वँरुवन्मिन्-आप मत डरिए; अँरुडान्-कहा । १३९

शूरपद्म के संहारक कार्तिकेय, दीप्तचक्रधारी विष्णु, त्रिपुरान्तक शिव —ये सब सहायतार्थ क्यों न आएँ तो भी अधर्मी लोगों को निर्मूल करके ही छोड़ूँगा । आप डरें नहीं । श्रीराम ने यह सुदृढ़ आश्वासन दिया । १३९

उरैत्त वाशहड् गेट्टुवन् दोङ्गिड, इरैत्त कादल रेहिय विन्नलर्
तिरित्त कोलितर् तेमरै पाडित्तर्, निरुत्त माडित्तर् निन्ड विळम्बुवार् 140

उरैत्त वाचकम् केट्टु-श्रीराम का कहा हुआ कथन सुनकर; उवन्तु-सन्तुष्ट होकर; ओङ्किट इरैत्त कातलर्-उत्कृष्ट और मुखर प्रेम वाले होकर; एकिय इन्नलर्-मुक्तदुःख हो; तिरित्त कोलितर्-दण्ड को घुमाते हुए; ते मरै पाडित्तर्-दिव्य वेदगान किया; निरुत्तम् आटित्तर्-नृत्य किया और; निन्ड विळम्बुवार्-फिर खड़े होकर (वे) बोले । १४०

ये आश्वासन के वचन सुनकर मुनिगण तृप्त हुए । उनका प्रेम उमड़ा और मुखर हुआ । चिन्ताविमुक्त होकर उन्होंने अपने दण्डों को घुमाया, वेदगान और नृत्य किया । बाद वे बोले । १४०

तोन्ड नीमुत्ति यिर्पुव त्तुत्तौहै, मून्ड पोल्वन्त मुप्पडु कोडिवन्
देन्ड पोडु सँदिरल वँन्डलिन्, शान्ड वेदम् तवप्पैरु जानमे 141

तोन्डल्-नायक; नी मुत्तियिल्-आप कुपित हों तो; मून्ड पुवन्त तौकै पोल्वन्त-तीन लोकों के समूह के समान; मुप्पडु कोटि वन्तु एन्ड पोतुम्-तीस करोड़ आकर

लड़े तो भी; अँतिर् इलै अँत्तुलिन्-सामना नहीं कर सकेंगे, इसके; चान्द्र-साक्षी;
वेतम् तव पैरु जातमे-वेदों का ज्ञान और उससे प्राप्त ज्ञान ही हैं; अरो-ऐसा है
न। १४१

प्रभु ! आप कुपित हो जायें तो यह एक लोकत्रय क्या तीस करोड़
लोकत्रय भी आपका सामना नहीं कर सकते। इसके साक्षी वेद हैं और
उनके ज्ञान से प्राप्त ज्ञान हैं। १४१

अन्न दादलि नेयिन वाण्डेलाम्, इन्नल् कात्तिड् गिनिदुर् वायैन्न
चौन्न मादवर् पादन् दौळुदुयर्, मन्नर् मन्नवन् मैन्दनुम् वैहितान् 142

अन्नत्तु आतलिन्-ऐसा है, इसलिए; एयिन आण्डु अँलाम्-वनवास के लिए नियत
सारे दिन; इन्नल् कात्तु-हमारी संकट से रक्षा करने; इङ्कु इत्ति उरैवाय्-यहाँ
सुख से रहें; अँत्त-ऐसा; चौन्न-जिन्होंने कहा, उन; मातवर् पातम् तौळु-
महान तपस्वियों के चरणों पर नमस्कार करके; उयर् मन्नर् मन्नन्-सर्वश्रेष्ठ
राजाधिराज (चक्रवर्ती) के; मैन्दनुम्-पुत्र भी; वैकितान्-वहाँ ठहरे। १४२

बात ऐसी है। अतः आप वनवास के लिए निर्धारित अवधि भर
यहीं सुख से वास करें और हमारी संकट से रक्षा करें। ऋषियों की
यह प्रार्थना सुनकर सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र उनके चरणों पर विनत
हुए और वहीं वास करने लगे। १४२

ॐ ऐन्दु मैन्दु ममैदियि नाण्डवण्, मैन्दर् तीदिलर् वैहितर् मादवर्
शिन्दै यैण्णि यहत्तियर् चेरैत्त, इन्दु नन्नद उन्नौडु मेहितार् 143

मैन्दर्-राजकुमार; अवण्-उस तपोवन में; ऐन्दुम् ऐन्दुम् आण्डु-पाँच और
पाँच (दस) साल; तीतु इलर्-बिना किसी कठिनाई के; अमैतियिन्-शान्ति के
साथ; वैकितर्-ठहरे; मातवर्-महान तपस्वियों के; चिन्तै अँण्णि-मन में सोचकर;
अकत्तियन् चैर्क-अगस्त्य से जा मिले; अँत्त-कहने पर; इन्दु नल् नुतल् तन्नौडुम्-
इन्दु-सम भाल वाली सीताजी-सह; एकितार्-चले। १४३

वे राजकुमार पाँच और पाँच (दस) साल वहीं ठहरे। कोई
असुविधा या कष्ट नहीं था। वे शान्ति के साथ वहाँ रहे। पश्चात् उन
ऋषियों ने मन में सोचकर श्रीराम को सुझाया कि आप अगस्त्यजी से
जाकर मिलें। तब श्रीराम और लक्ष्मण इन्दुसम सुन्दर भाल वाली
सीताजी के साथ चले। १४३

विडर हङ्गळुम् वेय्शैरि कानमुम्, पडरुज् जिन्नैरि पयप्पय नीड्गितार्
शुडरु मेनिच् चुदीक्कण तैन्नुमव्, इडरि लानुर् शोलैशैन् ईय्दिनार् 144

विडर् अकङ्कळुम्-पर्वत-घाटियाँ; वेय् चैरि कात्तमुम्-बाँसतरु-संकुल वन;
पडरुम्-इनमें जानेवाले; चिल् नैरि-सँकरे मार्ग; पय पय नीड्कितार्-(तीनों ने)

धीरे-धीरे तय किये; चुटुम् मेत्ति-तेजोमय शरीर वाले; चुतीक्कणन् अंतुम्-सुतीक्ष्ण नाम के; अ इटर् इलान् उरै-उत्तम दुख-निर्लिप्त ऋषि के वास के; चोलै चैत्तु-आश्रम जाकर; अय्यत्तितार्-पहुँचे । १४४

पर्वत प्रदेशों, बाँस के वनों आदि से होकर जानेवाले सँकरे मार्ग धीरे-धीरे तय करके वे तेजोमय शरीरी सुतीक्ष्ण नाम के ऋषि के आश्रम में पधारे । १४४

अरुक्क तन्न मुनिवत्तै यव्वळि, शैरुक्किल् शिन्दैयर् शेवडि ताळ्दलुम्
इरुक्क वीण्डेन् रिनियत्त कूडित्तान्, मरुक्कोळ् शोलैयिन् मैन्दरुम् वैहिनार् 145

चैरुक्कु इत् चिन्तैयर्-घमण्डरहित मन वालों (श्रीराम और लक्ष्मण) के; अ वळि-वहाँ; अरुक्कन् अन्न मुनिवत्तै-सूर्योपम मुनि के; चे अटि-मनोहर चरणों पर; ताळ्दलुम्-नमन करने पर; ईण्टु इरुक्क अन्तु-यहाँ रहें, ऐसा; इत्तियत्त कूडित्तान्-मधुर वचन कहे; मैन्दरुम्-राजकुमार भी; मरु कोळ् चोलैयिल्-सुवासपूर्ण तपोवन में; वैकित्तार्-ठहरे । १४५

अहंकाररून्य श्रीराम और लक्ष्मण सूर्य-सम तेजोवान उन ऋषि के उत्तम चरणों पर विनत हुए । तब ऋषि ने उन्हें आसन देकर विराजमान कराया । मधुर स्वागत-वचन कहे । सत्कारप्राप्त श्रीराम और लक्ष्मण भी अच्छे वास से युक्त उस आश्रम में ठहरे । १४५

वैहुम् वैहलिन् मादवन् मैन्दर्बाल, शैय् है यावैयुज् जैय्दिवण् शैल्वनी
अय्द यान्शैय्द दैत्तव मन्ऱुत्तन्, ऐय नुम्मवर् कन्बत्त कूडित्तान् 146

मातवन्-महान तपस्वी (सुतीक्ष्ण) के; वैकुम् वैकलित्-वास के आश्रम में; मैन्दर् पाल्-राजकुमारों को; चैय्कै यावैयुम् चैय्तु-सत्कार सब करके; चैल्व-धनवन्त; नी इवण् अय्त्-आप इधर पधारे, इसके लिए; यान् चैय्ततु अ तवम्-मेरा किया कौन सा तप था; अन्ऱुत्तन्-बोले; ऐयत्तुम्-प्रभु ने भी; अवर्कु-उनसे; अन्पत्त-स्नेहपूर्ण; कूडित्तान्-वाते कहीं । १४६

ऋषि ने अपने आश्रम में आगत दिव्य अतिथियों का खूब सत्कार किया । फिर कहा कि धनवन्त ! आप इधर पधारे हैं, तो मैंने कितनी विशिष्ट तपस्या की होगी और मेरी तपस्या का कितना ही शुभ फल मिला है ! श्रीराम इसके उत्तर में मधुर वचन बोले । १४६

शौन्न नान्मुहन् उन्वळित् तोन्ऱित्, मुन्तै योरुण् मुयर्व मुर्ऱित्तार्
उन्निल् यारुळ रुन्नरु लैय्दिय, अन्निन् यारुळ रिर्पिर्न् दारैन्ऱान् 147

चौन्न-प्रकीर्तित; नान्मुक्क तन् वळि तोन्ऱित्-चतुर्मुख के वंश में उत्पन्न; मुन्तैयोरुळ्-प्राचीन मुनियों में; मुयल् तवम् मुर्ऱित्तार्-कठिन तपस्या करके सुसम्पन्न करनेवाले; उन्नित् यार् उळर्-आपके समान कौन है; उन् अरुळ् अय्यत्तिय-आपकी कृपा के पात्र; इल् पिन्ऱित्तार्-गृहस्थों में; अन्नित् यार् उळर्-मेरे समान कौन हैं; अन्ऱान्-कहा । १४७

प्रकीर्तित ब्रह्मा के वंश में उदित अग्रगण्य महर्षियों में कौन हैं, जिन्होंने आपके समान तप सम्पन्न किया है ? वैसे ही गृहस्थों में कौन ऐसा है, जिसे आपकी कृपा मिली है, जैसे मुझे ? । १४७

उवमै नोङ्गिय तोन्ऱ लुरैक्कैदिर्, नवमै तोन्ऱिय नऱ्ऱवन् शौल्लुवान्
अवमि लाविरुन् दाहियेन् तालमै, तवमै लाङ्गोळत् तक्कनै यालेन्ऱान् 148

उवमै नोङ्किय-अनुपमेय; तोन्ऱल् उरैक्कु-प्रभु के कथन के; अँतिर्-उत्तर में; नवमै तोन्ऱिय नल् तवन्-नये प्रकार की तपस्या के श्रेष्ठ तपस्वी; शौल्लुवान्-बोले; अवम् इला विरुन्तु आकि-अमोघ अतिथि बने आप; अँत्ताल् अमे-मेरे अव तक सुसम्पन्न; तवम् अँलाम्-तप सब; कौळ तक्कनै-ग्रहण करने अहं हैं आप; अँन्ऱान्-कहा । १४८

श्रीराम थे उपमाहीन । ऋषि थे अपूर्व और नयी तपस्या के कर्ता । ऋषि ने श्रीराम से कहा कि आप अमोघ अतिथि हैं । आप मेरी की हुई तपस्या का सारा फल ग्रहण कर लीजिए । आप इसके अहं हैं । १४८

मऱैव लार्त्तैदिर् वळ्ळुलुङ् गूळ्वान्, इऱैव निन्ऱरु लैत्तवत् तिऱ्क्कळि
तऱैव दीण्डुण् डहत्यिऱ् काण्वदोर्, कुऱैहि डन्द दिनियेनक् कूऱित्तान् 149

वळ्ळुलुम्-उदार प्रभु; मऱैवलान् अँतिर्-वेदज्ञ उनके सामने; कूळ्वान्-बोले; इऱैव-स्वामी; निन्ऱ अरुळ्-आपका अनुग्रह; अँ तवत्तिऱ्क्कु अँळितु-किस तप के लिए सुलभ (प्राप्य) है; ईण्डु-अव; अऱैवतु उण्डु-कथनीय एक विषय है; इति-अव; अकत्तियर् काण्पतु-अगस्त्य के दर्शन का; ओर् कुऱै किटन्तु-एक इच्छा अपूर्ण रहती है; अँत कूऱित्तान्-ऐसा कहा । १४९

वेदव्युत्पन्न मुनिवर से प्रभु ने कहा कि स्वामी ! आपकी कृपा मुझ पर हुई —वह क्या कम है ? कितनी ही बड़ी तपस्या का फल है वह उपलब्धि ! अव आपसे एक निवेदन करना है । अगस्त्यजी के दर्शन की इच्छा अभी पूर्ण नहीं हुई । १४९

नल्ल देनितैन् दायदु नानुमुन्, शौल्लु वान्ऱुणि हिन्रदु तोन्ऱनी
शौल्दि याण्डवऱ् चेरुदि शेर्न्दपित्, इल्लै निन्ऱवयि नैय्दहि लादवे 150

तोन्ऱल्-प्रभु; नी नल्लते नितैन्ताय्-आपने अच्छा ही सोचा है; अतु-वही; नानुम्-मेरे द्वारा भी; मुन् शौल्लुवान्-पहले कहने का; तुणिकिन्ऱतु-निश्चय किया हुआ था; आण्डु चैल्ति-वहाँ पधारें; अदन् चेरुति-उनसे मिलें; चेरन्तपिन्-उनसे मिलने के बाद; निन्ऱ वयित्-आपके; अँय्त किल्लातवे-अप्राप्य कोई हित; इल्लै-नहीं ही होंगे । १५०

मुनि ने उत्तर में कहा कि राजकुमार ! आपने ठीक ही सोचा है । मेरा भी वह अभिप्राय था । उधर पधारिए, उनसे मिलिए । उसके वाद आपको प्राप्त न हों, ऐसे कोई मंगल रहेंगे ही नहीं ! । १५०

अन्त्रि युन्निन् वरविन्नै यादरित्, तिन्नु हारुनिन् रेमुन् मालवर्
चैन्नु शेरुदि शेरुदल् शैव्वियोय्, नन्नु देवर्क्कुम् यावर्क्कु नन्नेना 151

अन्त्रियुम्—इसके अलावा; चैव्वियोय्—पुरुषश्रेष्ठ; निन् वरविन्नै—आपके आगमन की; आतरित्तु—प्रतीक्षा करके; इन्नु कारुम्—आज तक; तिन्नु—रहकर; एम् उरुमाल्—तरसते होंगे; चैन्नु—जाकर; अवर् चेरुति—उनसे मिलिए; चेरन्त पिन्—मिलने के पश्चात; तेवर्क्कुम् नन्नु—देवों के लिए भी मंगल है; यावर्क्कुम् नन्नु—सबके लिए लाभकर है; अँता—कहकर । १५१

और भी आपके आगमन की प्रतीक्षा में वे उतावले हो रहे होंगे । इसलिए आप उनसे जाकर मिलिए । उनसे आपका मिलन देवों के लिए भी भला करनेवाला है और अन्य सभी के लिए भी । १५१

❀ वळियुङ्	गूरि	वरम्बिल	वाशिहळ्
मौळियु	मादवन्	मौय्मलर्त्	ताडौळाप
पिळियुन्	देत्तिर्	पिडङ्गह	वित्तिरळ्
पौळियुज्	जोलै	विरैवित्तिर्	पोयितार् 152

वळियुम् कूरि—मार्ग बताकर; वरम्पु इल—निस्सीम; आचिकळ् मौळियुम्—आशीर्वाद देनेवाले; मादवन्—महान तपस्वी के; मौय् मलर् ताळ् तौळा—घना-कमल-सम चरणों की पूजा करके; पिळियुम् तेत्तिल्—छत से निचोड़े जानेवाले शहद की धारा के समान; पिडङ्कु—वहाँ रहनेवाली; अरुवि तिरळ्—सरिताओं की राशि; पौळियुम्—जहाँ जल बहाती थी, उस; चोलै—आश्रम को छोड़कर; विरैवित्तिल्—वेग के साथ; पोयितार्—आगे चले । १५२

ऐसा कहकर उन्होंने श्रीराम को अगस्त्याश्रम जाने का मार्ग भी बताया । उन्हें पुष्कल आशीर्वाद भी किया । श्रीराम, उनके घने कमल-समान चरणों की वन्दना करके वहाँ से चल पड़े । उस आश्रम में शहद की धारा के समान स्वच्छ सरिताओं की राशि जल बहा रही थी । श्रीराम उस आश्रम से निकलकर वेग के साथ चलने लगे । १५२

❀ आण्डहैय	रव्वयि	तडैन्दमै	यत्तिन्दान्
ईण्डुवहै	वैलैतुणै	येळुलह	मैय्द
माण्डवर	दन्शरण	वणङ्गवैदिर्	वन्दान्
नीण्डतमि	ळालुहै	नेमियि	तळन्दान् 153

नेमियिन्—चक्रधारी के त्रिविक्रम अवतार के समान; उलकै—(ज्ञान) लोक को; नीण्ट तमिळाल्—बहुत प्राचीन तमिळ भाषा से; अळन्तान्—नापनेवाले (अगस्त्य); आण् तर्कै—पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम का; अ वयिन् अटैन्तमै—वहाँ आगमन; अत्तिन्तान्—जानकर; तुणै एळु उलकम्—चौदहों भुवनों को; ईण्टु उवकै वैलै अय्त—इधर सुखमग्न में मग्न करते हुए; माण्ट वरतन्—महिमावान वरद श्रीराम; चरण् वणङ्क—अपने चरण में वन्दना करें, यह सुविधा करते हुए; अँतिर् वन्तान्—श्रीराम के सामने (अपने कुटीर से निकलकर) आये । १५३

(वाल्मीकी में श्रीराम का पहले अगस्त्य के भाई सुदर्शन के आश्रम में जाने की चर्चा है। अगस्त्याश्रम जाने से पहले सीताजी ने श्रीराम को बताया कि अकारण राक्षसों को मारना पाप है —यह भी वृत्तान्त है।) अब वे अगस्त्याश्रम आ गये। अगस्त्य जिन्होंने, जैसे त्रिविक्रम ने तीनों लोकों को नापा था, तमिळ भाषा द्वारा ज्ञानलोक को मापा था यानी तमिळ में ज्ञान को समाहित किया था, जान गये कि श्रीराम अपने आश्रम में पधारें हैं। वे स्वयं उनके सामने आ गये ताकि महिमावान वरद श्रीराम चौदहों भुवनों को सन्तोष-सागर में मग्न करते हुए उनके चरणों पर विनत हों। १५३

ॐ पण्डवुणर्	मूळ्हितर्	पडार्हळैन्	वात्तोर्
अण्डव	वैमक्करुळ्	हैत्तक्कुर्	यिरप्पक्
कण्डोरुहै	वारित्तुमु	हन्डुकड	लैल्लाम्
उण्डवरहळ्	पित्तुमिळ्ह	वैन्डलु	मुमिळ्न्दान् 154

वात्तोर्-देव; पण्डु-पहले; अवुणर्-असुर लोग; मूळ्कितर्-समुद्र में डूबे; पटार्कळ्-नहीं मरेंगे; अँत-सोचकर; अँ तव-सम्मान्य तपोधन; अँमक्कु अरळ्क-हम पर कृपा करें; अँत कुर् इरप्प-ऐसा कष्ट निवेदन करने पर; कण्डु-विषय समझकर; कटल् अँल्लाम्-सातों समुद्रों को; और कै-वारित्तु मुकन्तु-एक हाथ में उठा लेकर; उण्डु-घूँट लेकर; पित्तु अवर्कळ् उमिळ्क अँन्डलुम्-फिर उनके 'बाहर उगल दीजिए' कहने पर; उमिळ्न्तान्-बाहर थूक दिया। १५४

पहले कभी, वृत्तासुर आदि समुद्र में जाकर छिप गये। देवेन्द्र और अन्य देव समझ गए कि ये समुद्र में छिपे हैं। उनको मारना असम्भव है। इसलिए वे अगस्त्य के पास आये और प्रार्थना की कि सम्मान्य तपोधन! हम पर कृपा कीजिए। अगस्त्य ने बात समझ ली। उन्होंने सातों समुद्रों का जल अपने चुल्लू में भरकर घूँट लिया। फिर देवों के प्रार्थना करने पर ही उसे थूका और समुद्रों को जल-भरा बनाया। ऐसे महिमावान थे वे। १५४

तूयकड	नीरैमुळ्	दुण्डवं	तुरन्तान्
आयवव	नालमरु	मैय्युडैय	तन्तान्
मायवित्तै	वाळवुणन्	वादवितन्	वन्मैक्
कायमिनि	दुण्डुलहि	नारिडर्	कळैन्दान् 155

तूय कटल् नीरै-पवित्र सागर-जल को; मुळुतु उण्डु-पूरा घूँटकर; अवै तुरन्तान्-उसे थूकनेवाले; आयवतुम्-वे ऋषि भी; आल् अमरुम् मैय् उडैयन्-वट-बीज-सम छोटी आकृति वाले हैं; अन्तान्-उन्होंने; माय वित्तै-मायावी कार्य करनेवाले; वाळ् अवुणन्-तलवारधारी असुर; वातवि-वातापि नाम के; वन्मै-शक्तियुक्त; कायम् इत्तिउ उण्डु-शरीर को सुखपूर्वक खाकर; उलकिन् आर् इटर्-संसार का घोर संकट; कळैन्तान्-दूर किया था। १५५

सागरजल सारा एक घूंट में पीनेवाले वे आकृति में बहुत छोटे थे और जैसे वट-बीज में उतना बड़ा वटवृक्ष अव्यक्त रहता है, उसी तरह उस आकृति के अन्दर बड़ी महिमा छिपी थी। उन्होंने मायावी, कपटकर्म वातापि का शरीर भक्षण करके उसकी मृत्यु द्वारा लोकहित किया था। कथा इस प्रकार है— इत्वल और वातापि दो दानव भाई थे। इत्वल वातापि को मेष बनाकर मारता और उसे पका देता। वह ब्राह्मणों को श्राद्ध कहकर निमन्त्रण देता और खिलाने के बाद वातापि को बुलाता। वातापि ब्राह्मण का पेट चीरकर बाहर आ जाता। दोनों मृतक ब्राह्मण को खा जाते। यही चाल उन्होंने अगस्त्य से भी चली। पर अगस्त्य वातापि को जीर्ण कर गये। संसार की आफत मिटी। १५५

ॐ योहमुख पेरुयिर्ह डामुलैवु रामल्, एहुनैरि यादैन मिदित्तडियि नेरि
मेहनेडु मालैतवळ् विन्दमैनुम् विण्डोय्, नाहमुड नाहमुड नाहमैन् नित्तुडान् 156

योक्म् उरु पेर् उयिर्कळ् ताम्—उद्योगशील बड़ी संख्या के जीव; उलैवु उडामल्—बिना हानि के; एकुम् नैरि यातु—जायें, ऐसा मार्ग क्या है; अँत—(देवों के) पूछने पर; अटियिन् मितित्तु एरि—अपने चरणों को रखते हुए उसके ऊपर चढ़कर; मेक्म् नैटु मालै तवळ्—मेघ-मालाएँ जिस पर रेंगती थीं, उस; विन्तम् अँनुतुम्—विन्ध्य नाम के; विण् तोय्—गगनस्पर्शी; नाक्म् अतु—पर्वत को; नाक्म् उरु—नागलोक (पाताल) तक धँसाते हुए; नाकमैन्—एक गज के समान; नित्तुडान्—खड़े रहे। १५६

(विन्ध्य पर्वत सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों से वैर करके ऊँचा बढ़ा और ग्रहों की गति रुक गयी और जीवों का उद्यम भी बेकार होने लगा।) देवों ने अगस्त्य से प्रार्थना की कि इन उद्यमी जीवों का आना-जाना कैसे हो? तब अगस्त्य उस पर पग धरकर चढ़े और गज के समान उसके ऊपर खड़े हो गये। तब वह पर्वत धँसकर नागलोक पहुँच गया। (नाक्म् के तीन अर्थ हैं—पर्वत, पाताललोक और गज।)। १५६

ॐ मूशरवु शूडुमुद लोनुरैयिन् मूवा, माशिरव वेहैन वडाडुदिसै मेताळ्
नीशमुड वान्तिनैडु मामलय नेरा, ईशनिह रायुलहु शीरपैरु विरुन्दान् 157

मेल् नाळ्—पहले किसी दिन; वटातु तिचै—उत्तर दिशा; नीचस् उरु—नीचे चली गई, तब; मूचु अरवु चटु मुतलोत—घने नागाभरण देव (शिवजी) ने; मूवा—वार्द्धक्य से अप्रभावित; माचु इल् तव—और अकलंक तपस्वी; एकु अँत—तुम (दक्षिण) जाओ, कहा, तब; वान्तिन् नैटु मा मलयम्—आकाश तक ऊँचे बढ़े मलयपर्वत; नेरा—पहुँचकर; ईचन् निकराय्—शिवजी की समान स्थिति में; उलकु चीर् पैरु—भूमि को सम बनाते हुए; इरुन्तान्—बस गये। १५७

(एक बार परमेश्वर के विवाह के अवसर पर सभी जीवराशियाँ उत्तर में आ गयीं और भूमि का उत्तरी भाग नीचा हो गया। भूमि का सन्तुलन बिगड़ गया। तब) अनेक सर्पों को आभरण के रूप में धारण

करनेवाले शिवजी ने अगस्त्यजी से कहा कि हे वाद्वैक्य से अप्रभावित तेज वाले ! अकलंक तपस्वी ! आप दक्षिण में चले जाइए । अगस्त्य दक्षिण गए और गगन तक उन्नत मलय पर्वत में रह गये । भूमि समतल हो गयी और अगस्त्य शिवजी की समानता की स्थिति में मान्य हो गये । १५७

उळक्कुमरै	नालिनु	मुयर्न्दुलंह	मोडुम्
वळक्किनु	मदिक्कवेयि	नुम्मरवि	नाडि
निळ्ळुपौळि	कणिच्चिमणि	नेर्ऱियुमिळ्	शौङ्गण्
तळ्ळुपुरै	शुडर्क्कडवु	डन्दतमिळ्	तन्दान् 158

निळ्ळु पौळि—प्रकाश वरसानेवाला; कणिच्चि—परशु (तप्त-आयस ?); मणि नेर्ऱि—सुन्दर भाल पर; उमिळ् चैम् कण्—लाली फँलानेवाली आँख; तळ्ळु पुरै चुटर्—अग्नि-सम तेज; कटवुळ्—इनसे युक्त ईश्वर ने; तन्त—जो दिया (सिखाया) था; तमिळ्—उस तमिळ को; उळक्कु मरै नालितुम्—परिश्रम के साथ अध्येय चारों वेदों; उलकम् उयर्न्तु ओतुम् वळक्किनुम्—संसार के श्रेष्ठ ज्ञानियों के प्रयोग-प्रणालियों; मति कवैयितुम्—और अपनी बुद्धि से किये हुए अन्वेषण के आधार पर; मरपित्—उचित परिपाटी के अनुसार; नाटि—खूब खोजकर; तन्तात्—व्याकरण शुद्ध बनाकर दिया था । १५८

जाज्वल्यमान परशु, सुन्दर भाल का लाल नेत्र और अग्निसम तेजोमय रूप —इनसे युक्त शिवजी ने अगस्त्यजी को तमिळ सिखायी । (पाणिनी को संस्कृत —ऐसा पुराण कहता है ।) तब अगस्त्य ने बहुत परिश्रम से अध्येय वेद, लोकरूढ़ी और अपनी मेधा-शक्ति का प्रयोग कर उचित रीति से अन्वेषण किया और तमिळ को व्याकरण-वद्ध श्रेष्ठ भाषा बना दिया । १५८

ॐ विण्णिनि	निलत्तिनिल्	विहर्ऱुपुल	हिर्ऱुपेर्
अँण्णिनि	लिरुक्किनि	लिरुक्कुर्मेन	यारुम्
उण्णिनै	करुत्तिनै	युर्ऱुप्पैरुवै	नार्लेन्
कण्णिनि	लैन्क्कोडु	कळिप्पुर्	मतत्तान् 159

विण्णित्तिल—देवलोक में; निलत्तिनिल्—भूलोक में; विकर्ऱुप उलकिल्—इनसे जुदा अन्य लोकों में; पेर् अँण्णित्तिल्—बड़े गणित-शास्त्रों में; इरुक्किन्निल्—वेदों के ऋचाओं में; इरुक्कुम् अँन्—विद्यमान हैं, ऐसा; यारुम् उळ् नित्तै करुत्तिनै—सभी जिसका मन में ध्यान करते हैं, उस परमतत्व को; अँन् कण्णित्तिल्—अपनी आँखों के; उर्ऱु पँऱुवैन्—गोचर बनते देखूंगा; अँन् कौटु—यह विचारकर; कळिप्पु उर्ऱु मतत्तान्—हर्षितमन हुए । १५९

ऐसे अगस्त्य अब अपार हर्ष से भर गये । क्या आज मुझे ऐसा भाग्य मिल रहा है जिससे वह तत्व, जिसको देवलोक, भूलोक और इनसे अलग अन्य लोकों के लोग वेदों और श्रेष्ठ गणित (तर्क) शास्त्रों में ढूँढ़ते

हैं और सदा-सर्वदा स्मरण करते हैं, आज दृष्टिगोचर होगा ? इस कल्पना से ही उनके मन में आनन्द उमड़ आया । १५९

❖ इरैत्तमरै	नालिनी	डियैन्दपिऱ	यावुम्
निरैत्तनैऱि	जात्तनिमिर्	कल्लिनैडु	नाळिड्
टुरैत्तुमय	नारुमऱि	यादपौरु	ळोविन्
रुरैत्तडुवु	मालैन्नु	मुणर्च्चियि	नुवप्पान् 160

इरैत्त मरै-उद्गीत वेद; नालिन् ओट्टु-चारों के साथ; डियैन्त पिऱ यावुम्-लगे रहनेवाले अन्य सभी शास्त्र, पुराण आदि में; निरैत्त-अभ्यस्त; नैऱि जात्तम्-सन्मार्ग से प्राप्त ज्ञान की; निमिर् कल्लिल्-उत्कृष्ट कसौटी में; नैडु नाळ् इट्टु उरैत्तुम्-अनेक दिन कसकर देखने पर भी; अयत्तारुम् अरियात्-ब्रह्मदेव को भी अज्ञात; पौरुळो-वह परवस्तु क्या; इन्ऱु-आज; उरैत्तु-मेरे साथ सम्भाषण करके; उतवुम् आल्-कृपा करेगी; अँत्तुम्-इस; उणर्च्चियिन्-भावोद्वेग में; उवप्पान्-बहुत आनन्दमग्न हुए । १६०

उद्गीत चारों वेद और अन्य शास्त्र, पुराण आदि का खूब अध्ययन, अन्वेषण करके उससे प्राप्त ज्ञान की कसौटी पर बहुत दिन कसकर देखने पर भी ब्रह्मादि देवों से भी जिस परतत्त्व को वस्तुतः समझना कठिन है, क्या वह परब्रह्म आज मेरे साथ वार्तालाप करेगा और मुझ पर कृपा करेगा ! हा ! कितना भाग्यवान हूँ ! इस भावोद्वेग में वे हर्षविह्वल हो गये । १६०

❖ उय्यन्दन्	रिमैप्पिल	रुयिर्त्तत्तर्	तवत्तोरु
अन्दण	रऱत्तित्तैऱि	निन्ऱत्तर्ह	ळान्तार्
वैन्दिऱ	लरक्कर्विड	वेर्मुद	लरूप्पान्
वन्दत्तन्	मरुत्तुव	तैत्तत्तत्ति	वलिप्पान् 161

वैम् तिऱल् अरक्कर्-भयंकर और शक्तिमन्त राक्षस रूपी; विट वेर् मुत्तल् अरूप्पान्-विषैली जड़ को जो निर्मूल करेंगे; मरुत्तुवन्-वे वैद्य; वन्त तन्-आये; इमैप्पु इलर्-निर्निमेष (सुर); उय्यन्तत्तर्-तर गये; तवत्तोरु उयिर्त्तत्तर्-तपस्वी लोग प्राण-रक्षित हो गये; अन्तत्तणर् अऱत्तित्तिन् नैऱि-ब्राह्मण धर्म-मार्ग में; निन्ऱत्तर्कळ् आन्तार्-चलनेवाले हो गये; अँत्त-ऐसा सोचकर; तत्ति वलिप्पान्-विशेष साहसपूर्ण हो गये । १६१

भयंकर और बलवान राक्षस रूपी विष की जड़ को ही उखाड़ने के लिए वैद्य के समान श्रीराम आ गये । अब निर्निमेष आँखों वाले देवों का संकट मिट गया और वे दुःखनिवृत्त हो गए । तपस्वीजन जीवन्त हो गए । ब्राह्मण लोग धर्ममार्गगामी बने । ऐसी धारणा करके वे उत्साही और साहसी बने । १६१

एनैयुयि रामुलवै यावुमिडै वेवित्, तूनुह ररक्करु मिश्चुडु शिनत्तिन्
आन्तव तलैक्कडि दवित्तुल हळिप्पान्, वान्तमळै वन्देत्त मैन्दुरु मनत्तान् 162

एनै उयिराम्-अन्य जीव; उलवै यावुम्-सभी मुरझाए (भयातुर) लोगों को;
वेवित्तु-उवालकर; ऊन्. नुकर-उनका मांस खानेवाले; अरक्कर-राक्षस रूपी;
उरुमिल् चुट्टु चित्तत्तिन्-वज्र के समान जलानेवाले क्रोध की; कान्त अळलै-दावाग्नि
को; कटित्तु अवित्तु-सत्वर बुझाकर; उलकु अळिप्पान्-लोकों की रक्षा करने के
लिए; वान्त मळै वन्तु-मेघों से बारिश आई; अँत्त-ऐसा; मैन्दु उरु मतत्तान्-
उत्साह-भरे मन वाले । १६२

राक्षस लोग, पहले ही उनसे डरकर मुरझाते रहे जीवों को पकड़कर
उन्हे उवालकर खा लेते थे । वे गाज के समान जलानेवाली दावाग्नि थे ।
उस दावाग्नि को बुझाने के लिए आकाश के मेघों से गिरनेवाले जल के
समान श्रीराम लोकरक्षणार्थ आ गए । यह सोचकर अगस्त्य उत्फुल्लमन
हो गए । १६२

❀ कण्डन	निरामन्तै	वरक्करुणै	कूरप्
पुण्डरिह	वाणयन	नीरपौळिय	निन्नान्
अँण्डिशैयु	मेळलहु	मैव्वयिरु	मुय्यक्
कुण्डिहैयि	निर्पौरविल्	काविरि	कौण्णन्दान् 163

अँण् तिचैयुम्-आठों दिशाएँ; एळ् उलकुम्-सातों लोक; अँ उयिरुम्-कोई
भी जीव; उय्य-तरे, इसके लिए; कुण्टिकैयित्तिल्-अपने मण्डलु में; पौरु इल्-
उपमा-रहित; काविरि कौण्णन्तान्-कावेरी नदी को (ब्रह्मलोक से) जो लाये, वे
अगस्त्य; इरामन्तै वर कण्टत्तन्-श्रीराम को आते हुए देखकर; करुणै कूर-कृपा के
उमगते; पुण्डरिक-कमलपुष्प के समान; वाळ्-प्रकाशमान; नयत्तम्-आँखों से;
नीर् पौळिय-अस्र बरसाते हुए; निन्नान्-खड़े रहे । १६३

अगस्त्य आठों दिशाओं और सातों लोकों में रहनेवाले जीवों के
उद्धार के लिए ब्रह्मलोक से अपने कमण्डलु में कावेरी नदी को लाये थे ।
ये श्रीराम को आते देखकर आनन्दवाष्पाकुल कमलनेत्रों के साथ श्रीराम के
सामने खड़े रहे । १६३

❀ निन्ऱवनै	वन्दनैडि	योत्तडि	पणिन्दान्
अन्ऱवनु	मन्वौडु	तळीइयळुद	कण्णान्
नन्ऱवर	वैन्ऱुपल	नल्लुरै	पहरन्दान्
अँन्ऱुमुळ	दैनऱमि	ळियम्बियिशै	कौण्डान् 164

निन्ऱवनै-वैसे स्थित उनके; वन्त नैटियोत्त-उधर जो पधारे, वे विष्णु श्रीराम;
अटि पणिन्तान्-चरणों पर नतमस्तक हुए; अन्ऱु-तव; अँन्ऱुम् उळ-सदा से
रहनेवाली; तैन् तमिळ्-(दक्षिणी या) मधुसम तमिळ्; इयम्पि-रचकर; इचै

कीर्णान्-कीर्ति जो पा चुके; अवन्तुम्-उन्होंने; अन्तर्पोतु तळीइ-प्रेम के साथ गले लगाकर; अल्लुत कण्णान्-बाष्पपूरित आँखों वाले बनकर; नन्नु वरवु-शुभ हो आपका आगमन; अन्नु-कहकर; पल नल् उरै-अनेक शिष्टाचार-वचन; पकरन्तान्-कहे । १६४

आत्मविभोर होकर जो खड़े रहे उनके चरणों को, श्रीराम ने, जो वहाँ पधारे और जो त्रिविक्रम देवता ही थे, नमस्कार किया । तब नित्य रहनेवाली मधुर तमिळ देकर जो कीर्तिमान बने, उन अगस्त्य ने उन्हें स्नेह के साथ गले लगाकर नेत्रों से आनन्द का बाष्प बहाते हुए कहा कि आपका आगमन शुभ हो । १६४

❖ वेदियर्हळ्	वेदमौळि	वेरुपल	कूरुक्
कादन्मिह	निन्नुळिर्	कमण्डलुवि	नन्नीर्
मादवर्हळ्	वीशिर्नैडु	मामलर्ह	डूवप्
पोदुमण	नारुकुळिर्	शौलैहौडु	पुक्कान् 165

वेदियर्हळ्-वेदज्ञ ब्राह्मण लोगों ने; वेरु पल-विभिन्न अनेक; वेत मौळि कूरु-वेद (के) मंगलाशासन किया; मादवर्हळ्-महान तपस्वियों ने; कातल् मिह-प्रेम के बढ़ते; निन्नु-सामने खड़े होकर; औळिर् कमण्डलुविन्-शुभकारी कमण्डलु के; नल् नीर् वीचि-पवित्र जल को (मन्त्रोच्चारण के साथ) छिड़काकर; नैडु मा मलर्हळ् तव-सुन्दर फूलों की देर तक वरसाया; पोतु कणम् नारुम्-(तब अगस्त्य) तभी खुले हुए पुष्पों की गन्ध से पूर्ण; कुळिर् चोलै कौटु-शीतल आश्रम में ले जाकर; पुक्कान्-प्रविष्ट हुए । १६५

वेदज्ञ ब्राह्मणों ने विविध वेदों के मन्त्र उच्चारण करते हुए मंगलाशासन किया । महान तपस्वियों ने बढ़ते प्रेम के साथ अपने कमण्डलुओं से पवित्र जल लेकर मंगलदायी मंत्रों को कहते हुए श्रीराम पर छिड़का । तब अगस्त्य श्रीराम (आदि) को लेते हुए नवीन, विकसित पुष्पों की सुगन्ध से पूर्ण अपने तपोवन में ले गये । १६५

❖ पौरुन्दवम्	लन्बौळि	लहत्तिन्निडु	पुक्कान्
विरुन्दव	णमैत्तपिन्	विरुम्बिनन्	विरुम्बि
इरुन्दव	मिळैत्तवैन्	दिल्लिडैयिल्	वन्देन्
अरुन्दव	मुडित्तनै	यरुत्करश	वैन्डान् 166

अमलन्-निर्मल श्रीराम; पौळिल् अकत्तु-तपोवन में; पौरुन्त-चाव के साथ ठहरने; इन्ति पुक्कान्-आनन्द के साथ पहुँचे; अवन्-वे महर्षि; विरुम्पितन्-प्यार के साथ; विरुन्तु अमैत्त पिन्-भोजन कराने के बाद; अरुत्कु अरच-कृपालु प्रभु; इरुम् तवम् इळैत्त-बड़ी तपस्या जहाँ करता रहा; अन्तु इल् इडैयिल्-मेरे इस कुटीर में; विरुम्पि वन्तु-आप ही चाहकर आये; अन् अरुम् तवम् मुडित्तनै-और मेरी तपस्या को सम्पन्न बना दिया; अन्डान्-बोले । १६६

पवित्र पुरुष श्रीराम भी उधर सुख से रहने का विचार करके आनन्द के साथ गये । महर्षि ने उनको भोजनादि सत्कार करने के बाद उनसे कहा कि कृपालु प्रभु ! मेरे इस तपोवन में, जहाँ मैं लम्बे अरसे से तपस्या कर रहा हूँ, आप पधारे और मेरे कुटीर को अपनी इच्छा से पवित्र किया है । आपने ऐसा करके मेरे तप को सुसंपन्न कराया है ! मेरी तपस्या सफलीभूत हुई । १६६

ॐ अँत्तमुत्ति	यँत्तौळु	दिराम	त्तिमैयोर्म्
निन्ऱतव	मुर्ऱुर्नेडि	योरिर्नेडि	योर्म्
उन्ऱनरळ्	पँऱ्ऱिलरह	ळुन्ऱनरळ्	शुमन्देन्
वँन्ऱन	तनैत्तुलहु	मेलिनियै	नैन्ऱान् 167

अँत्त मुत्तियै—ऐसा जिन्होंने कहा उन मुनि को; इरामन्—श्रीराम; तौळु—नमस्कार करके; इमैयोर्म्—देवता लोग; निन्ऱ तवम् मुर्ऱु—क्रियमाण तपस्या को जो पूरा कर चुके; नैटियोरिन् नैटियोर्म्—श्रेष्ठों से भी श्रेष्ठ वे तपस्वी भी; उन्ऱन् अरळ् पँऱ्ऱिलरह—आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके; उन् अरळ् शुमन्तेन्—मैं आपकी कृपा का पात्र बना हूँ; अनैत्तुलकुम्—सारे लोकों को; वँन्ऱनन्—जीतनेवाला बन गया; मेल्—इससे श्रेष्ठ; इति अँन्—अब क्या चाहिए; अँन्ऱान्—कहा । १६७

ऐसा शिष्टाचारवचन कहनेवाले अगस्त्यजी को नमस्कार करके श्रीराम ने कथन किया कि हे महर्षि ! देव क्या, अपनी तपस्या को सुसंपन्न कर चुके महान से महान तपस्वी क्या—वे भी आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके हैं । लेकिन मैं आपकी कृपा का पात्र बन गया । इसलिए सर्वलोक-जयी हो गया । इससे बढ़कर कौन सा भाग्य है, जो मैं पाना चाहूँ ? । १६७

ॐ तण्डह	वन्तत्तुर्ऱै	यँत्तुर्ऱै	तरक्कोण्
डुण्डुवर	वित्तिशै	यँत्तुर्पैरि	दुवन्देन्
अँण्डहु	गुणत्तिनै	यँत्तुर्कोडुयर्	शैन्तित्
तुण्डमदि	वैत्तवन्	यौत्तमुनि	शौल्लुम् 168

उयर् चैत्ति—अपने श्रेष्ठ सिर पर; तुण्ड मति—कलाचन्द्र को; कोटु—लेकर; वैत्तवन्—धरनेवाले; अँत्त—(शिवजी से) तुल्य; मुत्ति—महर्षि; अँन् तकु कुणत्तिनै—प्रशंसनीय गुण वाले; तण्डक वन्तत्तु उर्ऱैति—दण्डकवन में रहते हैं; अँन्ऱ—ऐसा; उर्ऱै तर कोण्डु—वचन के कहे जाते सुनकर; उण्डु वरवु इ तिचै—आना होगा आपको इस दिशा में; अँन्—यह निश्चय करके; पैरितु उवन्तेन्—बहुत आनन्दित हुआ; अँन्—कहा और; चौल्लुम्—और आगे कहा । १६८

अपने सिर पर कलाचन्द्र धारण करनेवाले शिवजी—सदृश अगस्त्य ने कहा कि सबसे प्रशंसनीय गुण वाले श्रीराम ! यहाँ आगत मुनियों से यह समाचार मिला था कि आप दण्डक वन में वास कर रहे हैं । तब

सोचा कि इसी ओर आपका आगमन संभाव्य है । इस विचार से मैं बहुत आनन्दित हुआ । वे आगे बोले । १६८

❖ ईण्डुरैदि	यैयविनि	यिव्वयि	तिरुन्दाल्
वेण्डियन्	मादवम्	विरुम्बिनै	मुडिप्पाय्
तूण्डुशित्त	वाणिरुदर्	तोन्डियुळ्	रैन्डाल्
माण्डुह	मलैन्दैमर्	मन्ततुयर्	तुडैप्पाय् 169

ऐय-प्रभु; ईण्डु उरैति-यहाँ ठहरिए; इ वयिन् इरुन्ताल्-इधर रहेंगे तो; इत्ति-आगे; वेण्डियन् मादवम्-जो चाहेंगे वे महान तप; मुटिप्पाय्-सम्पन्न कर सकेंगे; तूण्डु चिन-उकसाए हुए क्रोध के साथ; वाळ् निरुत्-तलवारधारी राक्षस; तोन्डि उळर् अन्डाल्-प्रकट हो आयेंगे तो; माण्डु उक-उनको मारकर गिराते हुए; मलैन्तु-उनसे लड़कर; अमर्-हम जैसे का; मन्त तुयर्-मन के क्लेश को; तुडैप्पाय्-दूर कर सकेंगे । १६८

प्रभु ! यहीं ठहरिए । इधर रहने से आपको सुविधा होगी । आप अपने इच्छित तप, व्रत आदि का पालन कर सकेंगे । और भी उकसाये क्रोध वाले तलवारधारी राक्षस इधर प्रकट होंगे तो आप उन्हें मार मिटाकर हमारी रक्षा कर सकेंगे और हम जैसे मुनियों का क्लेश दूर कर सकेंगे । १६९

❖ वाळुमरै	वाळुमन्	नीदियरम्	वाळम्
ताळुमिमै	योरुयर्वर्	तानवर्ह	डाळ्वार्
आळियुळ	वन्नुदल्	वैयमिलै	मैय्ये
एळुलहम्	वाळुमिनि	यिङ्गुरैदि	यैन्डान् 170

आळि उळवन् पुतल्-आज्ञाचक्र-कृषक चक्रवर्ती के पुत्र; इत्ति मरै वाळुम्-अब वेद जी गए; मन् नीति वाळुम्-मनुनीति स्थिर हो गई; अरम् वाळुम्-(बत्तीस) धर्म जी जायेंगे; एळ् उलकम् वाळुम्-सातों लोक जी जाएंगे; ताळुम् इमैयोर्-अवनत देवता लोग; उयर्वर्-उन्नत हो जायेंगे; तानवर्कळ् ताळ्वार्-दानव अवनत हो जायेंगे; ऐयम् इलै-सन्देह नहीं; मैय्ये-यह सत्य है; इङ्कु उरैति-यहाँ वास कीजिए; अन्डान्-(अगस्त्य) ऐसा बोले । १७०

आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती के पुत्र ! आगे वेद जी जायेंगे । मनुनीति सुस्थापित हो जायगी । (बत्तीस ?) धर्म टिक जायेंगे । सातों लोक पनपेंगे । अवनत देवता लोग उन्नत हो जायेंगे और राक्षस गिर जायेंगे । हाँ, शक नहीं । यह ध्रुवसत्य है । इसलिए आप यहीं वास कीजिए । १७०

❖ शैरुक्कुडै	यर्क्कर्पुरि	तीमैशदै	वैय्दत्
तरुक्कळि	दरक्कडिडु	कौल्वडु	शमैन्देन्

वरुक्कमरुं योयवर् वरुन्दिशैयिन् मुन्दुर्
रिरुक्कैनल नैरुकरुळ्ह वैनुरन निरामन् 171

इरामन्-श्रीराम ने; वरुक्क मरुंयोय्-अंग-उपांगों के साथ वेदों के ज्ञाता; चैरुक्कु उटै अरक्कर्-घमण्डी राक्षस; पुरि-जो करते हैं; तीमे-अत्याचार; चित्तैवु अय्यत्-उनको मिटाते हुए; तरुक्कु अळि तर-गर्व चूर करते हुए; कटितु कौलवतु चमैन्तेन्-शीघ्र उनको मारने का संकल्प कर लिया है; अवर् वरुम् तिचैयिल्-उनके आने की दिशा में; मुन्नु उरु-पहले जाकर; इरुक्कै-प्रतीक्षा में रहना; नलन्-अच्छा होगा; अरुक्क-हमें आज्ञा देने की कृपा करें; अन्नुरत्तन्-यह इच्छा मुनाई । १७१

श्रीराम ने अगस्त्य से कहा कि हे श्रेणीवद्ध वेदों के ज्ञाता ! मैंने इन गर्वीले राक्षसों के अत्याचारों का अन्त करने के लिए उनके घमण्ड को चूर करते हुए उन्हें मिटाने का संकल्प किया है । इसलिए उनके आने के मार्ग में सामने जाकर प्रतीक्षा में रहना सुविधाजनक होगा —ऐसा समझता हूँ । आप मुझे आशीर्वाद के साथ आज्ञा दें । १७१

ॐ विळुमियदु शौरुनैयिव् विल्लिदिवण् मेत्ताळ्
मुळुमुदल्वन् वैत्तुळुदु मूवल्लुम् यानुम्
वळिपड विरुप्पदिदु तन्नैवडि वाळिक्
कुळुवळुविल् पुट्टिलौडु कोडियैत्त नल्हि 172

विळुमियदु चौरुत्तै-श्रेष्ठ वात कही; इवण्-यहां; इ विल् इतु-यह धनु; मेल् नाळ्-पहले किसी दिन; मुळु मुत्तल्वन् वैत्तु उळुतु-परात्पर ब्रह्म ने रखा था; मू उलकुम्-त्रिभुवन; यानुम्-और मैं; वळि पट इरुप्पतु-इसकी पूजा करते हैं, ऐसा; इतु तन्नै-इसको; वटि वाळि कुळु-तीक्ष्ण शर-राशि; वळुवु इल्-अक्षय; पुट्टिल् औटु-तूणीर के साथ; कोटि-ग्रहण कर लें; अन्नै-कहकर; नल्कि-उन्हें प्रदान करके । १७२

अगस्त्यजी ने उत्तर में कहा कि हे श्रीराम ! आपने अच्छा सोचा है ! यहाँ यह जो धनुष है, यह परात्पर विष्णुदेव के पास रहा था । यह मेरे और त्रिभुवन द्वारा पूजित है । इसको और तीक्ष्ण अनेक शरों को अक्षय तूणीरों के साथ आप ग्रहण कर लीजिए । यह कहकर उन्होंने उनको श्रीराम के पास समर्पित किया । १७२

ॐ इप्पुवन मुरुरुमौरु तट्टिन्निडै यिट्टाल्
औप्पुर विरुत्तै वुरैप्परिय वाळुम्
वैप्पुरुवु पेरुवरन् मेरुवरै विल्ला
मुप्पुर मेरित्तदत्ति मौरुहणैयु नल्हा 173

इ पुवत्तम् मुरुरुम्-इस भुवन भर को; और तट्टिन् इटै-एक (तराजू के) पलड़े में रखकर; इट्टाल्-(इसको दूसरे पलड़े में) रखें तो; औप्पु वरविरु अन्नै-समान

होंगे; उरैपु अरिय-ऐसा कहने न योग्य; वाळम्-एक तलवार को; वैपु उरुवु पेरु-अग्नि रूप के; अरन्-हरदेव ने; मेरु वरै विल्ला-मेरुपर्वत को धनुष बनाकर; मुपपुरम् अरित्त-त्रिपुर को जिससे जलाया; तति मीय् कणैयुम्-उस अनुपम सारयुक्त शर को भी; नल्का-देकर । १७३

और भी एक तलवार है । उसे तराजू के एक पलड़े में और तीनों लोकों को एक पलड़े में रखेंगे तो दोनों समान होंगे—ऐसा कहना सही नहीं होगा क्योंकि तलवार तीनों लोकों की विजय करने की शक्ति रखती है और महिमामय है । उन्होंने वह तलवार श्रीराम के पास दी । और अग्निमूर्ति शिवजी ने महामेरु को धनुष बनाकर जिस अप्रतिम शर से त्रिपुरदाह कराया था, उस बाण को भी उनके पास दिया । १७३

❀ ओङ्गुमर	नोङ्गिमलै	योङ्गिमण	लोङ्गिप्
पूङ्गुलै	कुलावुहुळिर्	शोलैपुडै	विम्मित्
तूङ्गुदिरै	यारुतवळ्	शूळलदीर्	कुन्त्रिन्
पाङ्गरुळ	दालुरैयुळ्	पञ्जवडि	मञ्ज 174

मञ्च-राजकुमार; ओङ्कु मरन् ओङ्कि-ऊँचे पेड़ जहाँ ऊँचे उगे हैं; मलै ओङ्कि-उन्नत पर्वत हैं; मणल् ओङ्कि-बालू के ऊँचे टीले पाये जाते हैं; पूम् कुलै कुलावु-पुष्पों के गुच्छे मिलते हैं; कुळिर् चोलै-शीतल उपवन; पुटं विम्मि-पार्श्वों में उगे रहते हैं; तूङ्कु तिरै आरु-हिलनेवाली लहरों से युक्त नदियाँ; तवळ्-बहती है; चूळलतु-ऐसे पार्श्वस्थलों के; ओर् कुन्त्रिन् पाङ्कर्-एक पर्वत के पास; पञ्चवटि-पंचवटी नाम का; उरै उळ्-एक वासयोग्य स्थान; उळतु-है । १७४

यह सब देने के बाद अगस्त्य ने सुझाया कि श्रीराम ! पंचवटी नाम का एक स्थान है । वहाँ ऊँचे तरु हैं, उन्नत पर्वत है, उच्च सिक्ता-टीले हैं । वह ऐसे पर्वत पर है, जिसके पार्श्वों में पुष्प-भरे उपवन हैं और झलमलाती लहरों वाली नदियाँ बहती हैं । वह पंचवटी वासयोग्य स्थान है । १७४

कन्त्रियिळ वाळैकनि यीवकदिर् वालिन्, शैन्नेलुळ तेन्नीळ्हु पोडुमुळ दैय्वप्
पौन्त्रियेन लायपुत्त लारुमुळ पोदा, अन्तमुळ पौन्त्रिविळो डन्बिन्विळै याड 175

कन्त्रि इळ वाळै-बाल-कदलियाँ; कति ईव-फल देनेवाली हैं; कतिर् वालिन्-प्रकाशमय पूँछ जैसे छोटे भाग के साथ; चैन्नेल् उळ-शालि के धान मिलेंगे; तेन् ओळ्कु पोतुम् उळ-मधु बरसानेवाले पुष्प है; तैय्व पौन्त्रि अन्तल् आय-दिव्य कावेरी नदी के ही समान रहनेवाली; पुत्तल् आरुम् उळ-अच्छे जल की नदियाँ भी हैं; पौन् इवळोटु-श्रीलक्ष्मी इनके साथ; अन्पिन् विळैयाट-प्रेम के साथ मनोरंजन करने के लिए; पोता-सारस; अन्तम्-और हंस पक्षी; उळ-है । १७५

और भी वहाँ आपको कदली के बालवृक्ष मिलेंगे, जो मधुर फल दिलाएँगे । दुम के समान पतले अंग के साथ रहनेवाले लाल रंग के शालि के धान वहाँ पाये जाते हैं । मधु बरसानेवाले नवीन पुष्प हैं । दैवी

कावेरी नदी के समान पवित्र और मनोरम जल वाली नदियाँ हैं। इन श्रीलक्ष्मीदेवी (सीताजी) के साथ प्रेमसहित खेलने के लिए सारस और हंस पक्षी रहते हैं। १७५

❖ ऐहियिनि	यव्वयि	निरुन्दुरैमि	नैन्ऱान्
मेहनिऱ	वण्णनुम्	वणङ्गिविडै	कौण्डान्
पाहत्तैय	शौल्लियौडु	तम्बिपरि	विऱ्पिन्
पोहमुत्ति	शिन्दैतौड	रक्कडिदु	पोत्तान् 176

इति-आगे; अ वयिन् एक-उधर जाकर; इरुन्तु उरैमिन्-रहकर वास कीजिए; अन्ऱान्-(अगस्त्य ने) कहा; मेक निऱ वण्णनुम्-मेघवर्ण श्रीराम ने भी; वणङ्कि-नमन करके; विटै कौण्डान्-विदा ली; पाकु अत्तैय चौल्लि ओट्टु-चासनी-सम बोली वाली श्री सीताजी के साथ; तम्पि-अनुज लक्ष्मण भी; परिविन्-श्रद्धा के साथ; पिन् पोक्-उनका पीछा करते गये; मुत्ति चिन्तै तौट्टर-(अगस्त्य) मुनि का मन भी पीछा करता चला; कटितु पोत्तान्-वे शीघ्र वहाँ से गये। १७६

आप आगे वहीं जाकर वास करें। —अगस्त्य ने कहा। मेघवर्ण श्रीराम ने भी उनको नमस्कार करके उनसे विदा ली। जब वे जाने लगे, तो चासनी-सम बोली वाली देवी सीताजी और कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मण उनके पीछे गये। अगस्त्य का मन भी उनका पीछा करता गया। श्रीराम शीघ्र चले। १७६

4. शडायु काण् पडलम् (जटायु-दर्शन पटल)

❖ नडन्दत्तर्	कावदम्	बलवु	नन्ऱदि
किडन्दन	निन्ऱन	गिरिहळ्	केण्मैयिल्
तौडर्न्दन	तुवन्ऱित्त	शूळल्	यावैयुम्
कडन्दत्तर्	कण्डत्तर्	कळुहिन्	वेन्दैये 177

कावतम् पलवुम्-अनेक 'काद' (कोस) दूर; नडन्तत्तर्-पैदल चलकर; किडन्तत्त नल् नत्ति-मार्ग में पड़ी रही अनेक श्रेष्ठ नदियाँ; निन्ऱन-(अकेले) स्थित; केण्मैयिन् तौडर्न्तत्त-मित्रों के समान परस्पर मिले रहे; किरिकळ्-अनेक पर्वत; तुवन्ऱित्त चूळल् यावैयुम्-(बीच-बीच में) घने उपवन; कडन्तत्तर्-पार करके; कळुकिन् वेन्तै-गृध्रराज को; कण्डत्तर्-(उन्होंने) देखा। १७७

श्रीराम आदि तीनों अनेक कोस दूर गये। रास्ते में अनेक नदियाँ पड़ी थी। पर्वत और पर्वतश्रेणियाँ पाई गयी। अनेक उपवन मिले। उन सबको पार करके उन्होंने जटायु के दर्शन किये। १७७

❖ मुन्दौर	करुमलै	मुहट्टु	मुन्ऱिलिल्
शन्दिर	नौळियौडु	तळवच्	चात्तिय

अन्दमिल्	कनैहड	लमरर्	नाट्टिय
मन्दर	गिरियैत	वयङ्गु	वान्त्रनै 178

मुन्तु-पहले; अमरर्-सुर; अन्तम् इल्-अपार; कनै कटल्-गर्जनशील सागर में; चन्तिरन् ओळि ओट्टु तळुव-चन्द्र-किरण के साथ मिलाकर; चात्तिय नाट्टिय-आधार-स्तम्भ के रूप में स्थापित; मन्तर किरि अँन-मन्दरपर्वत के समान; ओरे कर मलै मुकट्टु मुन्त्रिलिल्-एक काली गिरि की चोटी पर खुले थल में; वयङ्कुवान् तनै-शोभायमान उनको । १७८

वे (जटायु) उस मन्दरपर्वत के समान शोभित थे, जिसको अमृतमंथन के उस समय गर्जनशील सागर-मध्य चन्द्र की किरणों से लगाते हुए आधार-स्तम्भ के रूप में गाड़ दिया गया था । वे एक काले (या बड़े) पर्वत की चोटी पर आँगन-सम खुले थल में शान के साथ विराजमान थे । १७८

उरुककिय	शुवणमौत्	तुदयत्	तुच्चिचेर्
अरुककन्ति	निळल्पडैत्	तलङ्गु	तिक्कैलाम्
तैरिप्पु	शैरिशुडर्च्	चिरेयि	नाड्डिशै
विरित्तिरन्	दत्तनै	विळङ्गु	वान्त्रनै 179

उरुककिय चुवणम् औत्तु-पिघले हुए सोने के समान; उदयत्तु उच्चि चेर्-उदयगिरि के शृंग पर पहुँचे हुए; अरुककत्तिल्-सूर्य के समान; निळल् पडैत्तु-कान्ति से युक्त होकर; अलङ्कु तिक्कु अँलाम्-अन्धकार के कारण व्यथित रहनेवाली सभी दिशाओं को; तैरिप्पु उरु-प्रकाश दिलानेवाले; चैरि चुटर् चिरेयित्ताल्-धनी दीप्ति वाले पक्षों को; तिचै विरित्तु इरुन्तत्तन्-सभी दिशाओं में फैलाये रहे; अँत-ऐसा कहने योग्य रीति से; विळङ्कुवान् तनै-दृश्यमान उनको । १७९

वे पिघला-स्वर्ण-सम थे । उदयगिरि पर आये सूर्य के समान कान्ति-युक्त थे । अन्धकार से आक्रान्त दिशाओं में प्रकाश करते हुए मानो वे अपने पक्ष फैलाए हुए थे, ऐसे दृश्यमान उनको श्रीराम आदि ने देखा । १७९

वान्त्र	विशुम्बैळिन्	मडैयत्	तन्मणिक्
कान्तिरच्	चैयौळि	कतुवक्	कण्णहल्
नीत्तिर	वरैयिनिर्	पवळ	नीळ्हाँडि
पोत्तिरम्	बौलिन्दिडप्	पौलिहिन्	शान्त्रनै 180

वाल् निर विचुम्पु-विशाल और प्रभावान आकाश की; औळिल् मडैय-छटा को छिपाते हुए; कण् अकल्-विस्तृत; नील् निर वरैयितिल्-नीलवर्ण पर्वत पर; तन् काल् निर-अपने पैरों का रंग; मणि चैय् औळि-लाल सुन्दर आभा; कतुव-फँलाते हुए; पवळ नीळ् कौटि पोल्-प्रवाल की लम्बी लताओं के समान; निरम् पौलित्तिट्ट-वहाँ शोभायमान करते हुए; पौलिकित्शान् तनै-तेज के साथ रहनेवाले उनको । १८०

उनके तेज के सामने विशाल और आभायुक्त आकाश की शोभा छिप

गयी थी। नीले पर्वत पर उनके लाल पैर माणिक की-सी प्रभा कर रहे थे। वे प्रवाललता-समान शोभ रहे थे। ऐसे विराजमान उनको; । १८०

ॐ तूय्मैय	निरुङ्गलै	तुणिन्द	केळवियन्
वाय्मैयन्	मरुविलन्	मदियिन्	कूर्मैयन्
आय्मैयिन्	मन्दिरत्	तडिअ	तामैन्नच्
चेय्मैयि	नोक्कु	शिरुह	णान्ऱुत्तै 181

तूय्मैयन्-शुचिकर्मा; इरुम् कलै तुणिन्त केळवियन्-गम्भीर अध्ययन-ज्ञान के साथ श्रवण-ज्ञान से युक्त; वाय्मैयन्-सत्यसंध; मरु इलन्-निर्दोष; मदियिन् कूर्मैयन्-सूक्ष्ममति; आय्मैयिन्-दीर्घदर्शी; मन्दिरत्तु अडिअन् आम् अन्न-मंत्रणा में कुशल मन्त्री के समान; चेय्मैयिन् नोक्कु उरुम्-दूर तक देख सकनेवाले; चिर कण्णान् तत्तै-छोटे नेत्रों वाले उनको । १८१

वे शुचिपूर्ण थे। अध्ययन और श्रवण से प्राप्त गम्भीर ज्ञान से युक्त थे। सत्यसंध थे और निर्दोष थे। सूक्ष्मबुद्धि थे। दीर्घदर्शिता रखनेवाले मंत्रणा में निपुण मन्त्री के समान उनके बहुत दूर तक देख सकनेवाली छोटी आँखें थीं। १८१

ॐ वोट्टिवा	ळवुणरै	विरुन्दु	कूड्डित्तै
ऊट्टिवीळ्	मिच्चिडा	नुण्डु	नाडौरुम्
तीट्टिमे	विन्दिरन्	शिरुहण्	यानैयिन्
तोट्टिपोड्	रेय्न्दीळिर्	तुण्डत्	तान्ऱुत्तै 182

वाळ् अवुणरै-तलवारधारी दानवों को; वोट्टि-मारकर; कूड्डित्तै विरुन्दु ऊट्टि-यम को दावत में खिलाकर; वीळ्-बचकर गिरनेवाले; मिच्चिल्-जूठन को; नाळ् तौरुम् उण्डु-प्रतिदिन खाकर; चिरु कण् यात्तैयिन् मेवु इन्ऱितरन्-छोटी आँखों वाले (ऐरावत-संज्ञित) गज पर आसीन इन्द्र के; तोट्टि पोल्-अंकुश के समान; तीट्टि-पैनायी जाकर; तेय्न्तु ओळिर्-उस कारण से घिसकर उज्ज्वल दिखनेवाली; तुण्डत्तान् तत्तै-चोंच के उनको । १८२

रोज वे तलवारधारी राक्षसों को युद्ध में मारकर यम को खिलाते थे और बचेखुचे जूठन को खाते थे। उनकी चोंचे छोटी-छोटी आँखों वाले ऐरावत गज पर सवार इन्द्र के अंकुश के समान पैनाई गयी और घिसी हुई थी और उससे चमकदार लगती थीं। १८२

ॐ कोळिरु नालिनो डौन्ऱु कूडिय, आळुरु तिहिरिबो लारत् तान्ऱुत्तै
नोळुयर् मेनियि नैड्डि मुड्डिय, वाळिर विथिड्पोलि मवुलि यान्ऱुत्तै 183

इरु नालिन् ओटु-दो के चार के साथ; औन्ऱु कूडिय-एक मिलाकर (नौ) रहे; कोळ्-ग्रहों को; आळ् उडु तिकिरि पोल्-चालित करनेवाले (शिशुमार नामक या

विष्णु के) चक्र के समान शोभायमान; आरतूतान् ततै-हार से अलंकृत उनको; नीळ उयर् मेत्तियिन्-विशाल और दीर्घ शरीर के; नैर्ऋ-शिखर पर; मुर्रिय-रखे गये; वाळ् इरविधिन्-उज्ज्वल सूर्य के समान; पौलि-शोभनेवाला; मवुलियान् ततै-किरीटधारी को । १८३

उनके वक्ष पर एक हार था । वह शिशुमार या विष्णु के चक्र और उसके अधीन घूमनेवाले नवग्रहों के समान शोभायमान था । उनके सिर पर उज्ज्वल सूर्य के समान किरीट सजा हुआ था । ऐसे हार और किरीटधारी को (श्रीराम ने देखा) । १८३

❖ शौर्पङ्ग मुरनिमि रिरैयिन् शुम्भैयै, अर्पङ्ग मुरवरु मरुणन् शम्भलैच्
चिर्पङ्गौल् पहलैन्तक् कडिडु शैन्ऋतीर्, कर्पङ्ग लैन्पल कण्डु लान्ऋतै 184

चौल् पङ्कम् उर्-शब्द (भाषा) को भग्न (पंगु) करते हुए; निमिर् इचैयिन् चुम्भैयै-उठे हुए यश की राशि के समान; अल् पङ्कम् उर्-अन्धकार को मिटाते हुए; वरुम्-आनेवाले; अरुणन् चैम्भलै-अरुण के पुत्र (जटायु) को; कटितु चैन्ऋ तीर्-शीघ्र व्यतीत होनेवाले; चिर्पम् कौल् पकल् अैन्त-अल्प दिन के समान; कर्पङ्कळ् अैतै-कल्प कहलानेवाले काल; पल-अनेक; कण्टु उळान् ततै-जो देख चुके, उनको । १८४

उनका यश इतना बड़ा था कि शब्द में उसको समझाने की शक्ति नहीं थी; शब्द भग्न हो जाते थे । वे अन्धकार को मिटाते हुए आनेवाले (सूर्य-सारथी) अरुण के पुत्र थे । उन्होंने कई कल्प देखे थे, जो छोटे-छोटे दिनों के समान व्यतीत हो चुके थे । ऐसे उनको; । १८४

❖ ओङ्गुयर् नैडुवरै यौन्ऋति न्ऋडु, ताङ्गल दिरुनिलन् वाळ्ऋडु ताळ्वुडु
वीङ्गिय वलिधित्ति न्ऋन्द वीरतै, आङ्गव रणुहित्ति रयिर्क्कुम् जिन्दैयार् 185

ओङ्कु उयर्-ऊँचे बड़े हुए; नैडु वरै यौन्ऋति-बड़े पर्वत पर; न्ऋडु-रहकर; अतु ताङ्कलतु-वह बोझ उठा न सककर; इरु निलम् ताळ्वन्तु-विशाल भूमि में घँसकर; ताळ्वु उर्-अन्दर चला गया, ऐसा; वीङ्किय वलिधित्ति न्ऋन्त-बड़े हुए बल के साथ रहे; वीरतै-वीर जटायु को; आङ्कु-वहाँ; अवर्-वे तीनों; अयिर्क्कुम् चिन्तैयर्-शंकितमन होकर; अणुकिन्ऋ-उनके समीप गए । १८५

वे एक उन्नत पर्वत पर विराजमान थे । वह पर्वत उनके बोझ से भूमि के अन्दर घँस गया था । उतने बलवान उन वीर पर श्रीराम आदि ने शंकित मन से दृष्टिपात किया । १८५

❖ इरुदियैत्	तन्वयि	नियर्ऋ	वैय्दित्तान्
अऋविलि	यरक्कन्ता	मल्ल	त्ता मैन्तिल्
अैरुळ्वलिक्	कलुळत्ते	यैन्त	वुन्तियच्
चैऋहळल्	वीररुज्	जैयिर्त्तु	नोक्किन्ऋ 186

चैत्रिकल्ल वीररुम्-ठोस पायलधारी वीर; तन् वयिन्-अपना; इरुतियै-अन्त;
इयर्-कराने के लिए; अय्यत्तितान्-जो आया; अरिवु इलि अरक्कन् आम्-यह
बुद्धिहीन राक्षस है; अल्लन् आम्-नहीं; अत्तिल-तो; अय्यल् वलि-अत्यधिक
बलशाली; कलुळन् आम्-गरुड़ होगा; अन्त उन्ति-ऐसा सोचकर; चैयिर्त्तु-
कोप करके; नोक्किन्नार्-उनको देखा । १८६

भारी चरणबलय-धारी वीरों ने अनुमान लगाया— “यह अपना अन्त
कराने के लिए आया हुआ एक राक्षस ही होगा ! नहीं तो वह बलवान
गरुड़ हो !” उन्होंने जटायु को खूब देखा । १८६

❖ वनैहळल्	वरिशिलै	मद्रुहै	मैन्दरै
अत्तैयवन्	रानुङ्गण्	अयिर्त्तु	नोक्किन्नान्
विनैयर्	नोन्बिन	रल्लर्	विल्लिनर्
पुनैशडै	मुडियिन्	पुलव	रोवैन्ना 187

अत्तैयवन् तातुम्-जटायु भी; वत्तै कळल् वरि चिलै-पहनी हुई पायल और
बन्धनयुक्त धनु के धारक; मतुकै मैन्दरै-बलवान राजकुमारों को; कण्डु-देखकर;
वित्तै अरु नोत्पित्तर् अल्लर्-कर्म काटने के द्रुती (तपस्वी) नहीं हैं; विल्लित्तर्-धनुर्धर
है; पुत्तै चटै मुडियित्तर्-निमित्त जटाधारी है; पुलवरो-देव हैं क्या; अन्त-ऐसा
अयिर्त्तु-सन्देह करके; नोक्किन्नान्-देखा । १८७

जटायु ने भी पायलधारी धनुर्धर वीरों को देखा । प्रतापी उनको
देखकर जटायु के मन में प्रश्न उठा कि ये कौन हैं ? ‘ये कर्मनाशार्थ तप
करनेवाले तपोव्रती नहीं हैं !- उनके हाथों में चाप है और सिरों पर जटा
है । क्या ये देवता हैं ?’ सन्देह के साथ उन्होंने उन पर दृष्टि दौड़ाई । १८७

❖ पुरन्दरन् मुदलिय पुलवर् यारैयुम्, निरन्दर नोक्कुवै नेमि यानुमव्
वरन्दरु मिऱैवनु मळुव लाळनुम्, करन्दिल रैन्नैया नैन्ऱुङ् गाण्वेनाल् 188

पुरन्तरन् मुतलिय पुलवर् यारैयुम्-पुरन्दर आदि सभी देवों को; निरन्तरम्
नोक्कुवैन्-प्रतिदिन देख रहा हूँ; नेमियातुम्-चक्रधारी विष्णु और; अ वरम् तरु
इरैवत्तुम्-वे वरदायी भगवान ब्रह्मा और; मळुवलाळत्तुम्-‘मळु’ नामक (परशु ?)
हथियारधारी (शिवजी) के भी; यान् अन्ऱुम् काण्पैन् आल्-मैं रोज दर्शन करता हूँ,
इसलिए; अन्तै करन्तिलर्-मुझसे अपना रूप नहीं छिपाएँगे । १८८

जटायु आगे भी सोचने लगे । पुरन्दर आदि देवों को तो मैं रोज
देख रहा हूँ । चक्रधारी विष्णु, भक्तों को इच्छित वर देनेवाले ब्रह्मा, मळु
(परशु या तप्तलौह) आयुधधारी शिव—इनके तो प्रतिदिन दर्शन कर रहा
हूँ । वे हमसे अपना यथार्थ रूप नहीं छिपा सकते । १८८

❖ कामत्तैन्	ववन्नैयुङ्	गण्णि	नोक्किन्नेन्
तामरैच्	चैङ्गणित्	तडक्कै	वीरुहळ्

पूमरु	पीलङ्गल्लर्	पीडियि	नोडुमोप्
पामलन्	वरुव	रार्हो	लामिवर् 189

कामन् अन्पवत्तैयुम्-मन्मथ को भी; कण्णिन् नोक्किनेन्-आँखों से देखा है; तामरै चैम् कण्-कमलदल-सम लाल आँखें; तट-कै-दीर्घ भुजाएँ; इ वीरर्कळ्- (इनसे युक्त) इन वीरों के; पू मरु पीलन् कळल्-कमलगन्ध-युक्त/उज्ज्वल चरणों की; पीडियित्तोडुम्-धूलि के साथ भी; ओप्पु आम् अलन्-तुल्य नहीं हो सकता; वरुपवर् इवर्-आनेवाले ये; आर् कौल्-कौन हैं । १८६

मैंने कामदेव को भी अपनी आँखों से देखा है । वह मन्मथ कमलदल के समान अरुण आँखें और दीर्घ विशाल हाथों के साथ मनोरम आभायुक्त इनके पास पायलधारी चरण पर लगी धूलि से भी तुल्य नहीं हो सकता । फिर ये कौन हैं, जो इस तरफ आ रहे हैं ? । १८९

ॐ उलहोरु	मूत्तुन्दम्	मुडैमै	याक्कुळुम्
अलहरू	मित्तक्कण	ममैन्द	मैय्यित्तर्
मलर्म्महट्	कुवमैया	ळोडुम्	वन्दविच्
चिलैवलि	वीररैत्	तैरिहि	लेनैना 190

उलकु ओरु मूत्तुम्-स्वर्ग, भूतल और पाताल के तीनों लोकों को; तम् उडैमै आक्कुळुम्-अपने अधीन बना सकनेवाला; अलकु अरुम्-अमाप; इलक्कणम् अमैन्त-सामुद्रिका लक्षणों से युक्त; मैय्यित्तर्-दिव्य रूप वाले हैं; मलर् मकट्कु उवमैयाळोडुम्-कमलजा से तुल्य देवी के साथ; वन्त-जो इधर आये हैं; इ चिलै वलि वीररै-इन धनुर्धर बलवान वीरों को; तैरिक्किनेन्-जान नहीं पाता; अत्ता-कहकर । १९०

इनके दिव्यशरीर अपार लावण्यमयी हैं । सभी सामुद्रिका लक्षणों के अनुसार सुघड़ बने हैं । उनकी सुन्दरता तीनों लोकों को अपने अधीन करनेवाली है । इनके साथ जो देवी आती हैं, वह कमलजा लक्ष्मीदेवी के समान हैं । ये वीर धनुर्धर कौन हैं ? मैं समझ नहीं पाता । १९०

ॐ करुमलै	शैम्मलै	यत्तैय	काट्चियर्
तिरुमहिळ्	मार्प्पित्तर्	शैङ्गण्	वीरर्दाम्
अरुमैशैय्	गुणत्तित्तैन्	रुणैव	नाळियान्
ओरुवन्नै	यिरुवरु	मौत्तु	ळाररो 191

करुमलै चैम्मलै अत्तैय-काली गिरि और लाल गिरि के समान; काट्चियर्-दर्शन देनेवाले; तिरु मक्किळ् मार्प्पित्तर्-वीरश्री जिन पर मोद के साथ वास करती थी, वैसे वक्ष वाले; चैङ्कण् वीरर्-अरुणाक्ष बली; अरुमै चैय्-अभूतपूर्व रूप से प्राप्त; गुणत्तित्तै-श्रेष्ठ गुणों के; अन् तुणैवन्-मेरे मित्र; आळियान्-चक्रवर्ती; ओरुवन्नै-उन अद्वितीय (दशरथ) के ही; इरुवरुम्-ये दोनों; मौत्तुळार्-सदृश दिखाई देते हैं । १९१

ये काले पर्वत और लाल स्वर्ण-पर्वत के समान दर्शन देते हैं । इनके

वक्षस्थल वीरश्री का वासस्थान-सा लगते हैं । अरुणाक्ष ये दोनों अच्छे श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण मेरे अत्यन्त मित्र चक्रवर्ती दशरथ के ही सदृश लगते हैं । १९१

ॐ अंतप्ल	नितैपपिनन्	मनत्तु	ळैण्णुवान्
शित्तप्लडै	वीरर्मेड्	चैल्लु	मन्विनान्
कनप्लडै	वरिशिलैक्	काळै	यीर्हळ्यार्
मनप्लड	वैत्तक्कुरै	वळङ्गु	वीरैन्ऱान् 192

अंत—ऐसे-ऐसे; मनत्तुळ् अँण्णुवान्—मन में सोचते हुए; पल नितैपपित्तन्—विविध अनुमान करनेवाले; चित्तम् पटै वीरर् मेल्—क्रोधशील हथियारधारी उन वीरों पर; चैल्लुम् अन्नपित्तान्—सहज उठते हुए प्रेम के साथ; कत्त पटै—भारी हथियार; वरि चिलै—और बन्धनसहित धनु के साथ रहनेवाले; काळै यीर्कळ्—ऋषभ-सम तरुण वीर; यार्—कौन हो; मत्तम् पटै—मेरे मन को समझाते हुए; अँत्तक्कु उरै वळङ्गुवीर्—मुझे उत्तर दो; अँन्ऱान्—(जटायु ने) कहा । १६२

इस तरह जटायु उधेड़वुन में लगे हुए अनेक विचार करते रहे । उन्होंने अनुभव किया, सहज ही उन भयंकर क्रोधशील हथियारधारी वीरों पर प्रेम पैदा हो रहा है । उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण से पूछ ही लिया कि भारी हथियार और बन्धनयुक्त शरासन रखनेवाले वीर ! ऋषभ-सम तरुण तुम लोग कौन हो ? मेरे मन में साफ़ जान हो, ऐसा मुझे प्रत्युत्तर दो । १९२

ॐ वित्तविय कालैयिन् मैय्मै यल्लडु, पुत्तैमलर्त्त तारवर् पुहल्हि लामैयाल्
कत्तैहडल् नडुनिलड् गाव लाळियान्, वत्तैहळर् उय्यरदन् मैन्दर् यामन्ऱार् 193

वित्तविय कालैयिन्—जब जटायु ने पूछा, तब; पुत्तै मलर् तार् अवर्—सुन्दर पुष्पमाला से अलंकृत उन्होंने; मैय्मै अल्लतु—सत्य के सिवा; पुक्किल्किलामैयाल्—नहीं बोल सकते, इसलिए; याम्—हम; कत्तै कटल् नैट्टु निलम्—गर्जनशील समुद्र से बलियत्त इस विशाल भूमि के; कावलु—रक्षक; आळियान्—चक्रवर्ती; वत्तै कळल् तय्यरतन्—वीर-चरण-कंकणधारी दशरथ के; मैन्दर्—पुत्र है; अँन्ऱार्—कहा । १६३

जब जटायु ने यह प्रश्न किया, तब उन्होंने सच्ची बात कह दी । वे सत्य के सिवा असत्य बोलनेवाले नहीं थे । इसलिए उन्होंने बताया कि गरजते सागर से बलियत्त भूलोक के भर्त्ता चक्रवर्ती, वीरचरणकंकण-धारी दशरथ के पुत्र है । १९३

ॐ उरैत्तलुम्	पौङ्गिय	वुवहै	वैलैयन्
तरैत्तलै	यिळिन्दवर्त्	तळुवु	कादलन्
विरैत्तडन्	दारित्तान्	वेन्दर्	वेन्दन्ऱन्
विरैत्तडन्	दोळिणै	वलिय	वोवैन्ऱान् 194

उरैत्तलुम्-कहते ही; पौङ्किय उवकै वेलैयन्-उमड़नेवाले मोद-सागर के समान जटायु; त्रै तलै इल्लिन्तु-भूमि पर उतर आकर; अवर् तळुवुन् कातलन्-उनको आलिंगन करके प्रेमातुर होकर; विरै तटम् तारित्तान्-सुवासित और बड़ी माला से अलंकृत; वेन्तर् वेन्तन् तन्-राजाधिराज के; वरै तटम् तोळ् इणै-पर्वत-सम बड़े कंधे दोनों; वलियवो-वल से पूर्ण हैं क्या; अन्नुरान्-(जटायु ने) पूछा । १६४

ज्योंही राजकुमारों ने यह उत्तर दिया, त्योंही जटायु के मन में आनन्द उठा और सागर-सा बढ़ गया । वे नीचे भूमि पर उतर आये । उनको गले से लगाकर प्रेम के साथ जटायु ने प्रश्न किया कि सुवासित और बड़ी माला से शोभित राजाधिराज दशरथ की पर्वत-सम विशाल भुजाओं का जोड़ा वल संयुक्त है ? । १९४

ॐ मरुक्कमुर्	राददन्	वाय्मै	कात्तवन्
तुर्क्कमुर्	रात्तै	विरामन्	चौल्ललुम्
इरुक्कमुर्	रात्तै	वेक्क	मैय्दित्तान्
उरुक्कमुर्	रात्तै	वृणर्वु	नीङ्गित्तान् 195

अवन्-वे; मरुक्क मुर्डात-अविस्मरणीय; तन् वाय्मै कात्तु-अपनी वचनसत्यता का; कात्तु-पालन करके; तुर्क्कम् उर्डात्-स्वर्गवासी हो गये; अत्त-ऐसा; इरामन् चौल्ललुम्-श्रीराम के कहते ही; इरुक्कम् उर्डात् अत्त-(दशरथ) मर गये, कहकर; एकम् मैय्दित्तान्-तरस खाकर; उरुक्कम् उर्डात् अत्त-निद्रामग्न हुए जैसे; उणर्वु नीङ्गित्तान्-अचेत हुए । १६५

चक्रवर्तीतनय श्रीराम ने उत्तर दिया कि चक्रवर्ती अविस्मरणीय अपनी सत्यवादिता के संरक्षण में स्वर्गवासी हो गये । ज्योंही श्रीराम ने यह कहा, त्योंही जटायु तरस खाकर निद्रामग्न हुए-से अचेत हो गये । १९५

ॐ तळुविन रैडुत्तन् तडक्कै यान्मुहम्, कळुविन् रिखरुड् गण्णि तीरित्ताल्
वळुविय तन्नुयिर् वन्द मन्नन्नुम्, अळिवु नैञ्जित्तरुत्ति नान्तरो 196

इखरुम्-दोनों ने; तटम् कैयाल्-विशाल हाथों से; तळुविन्-लपेटकर; अँटुत्तन्-उठाया; कण्णिन् तीरित्ताल्-आँखों के जल से; कळुविन्- (जटायु के मुख को) धोया; वळुविय-खोई हुई; तन्नुयिर्-अपनी जान को; वन्त मन्नन्नुम्-फिर से प्राप्त करके गृध्रराज भी; अळिवु उरु नैञ्चित्तन्-विगलित मन के होकर; अरुत्तित्तान्-विलाप करने लगे । १६६

श्रीराम और लक्ष्मण ने गिरे हुए उनको अपने हाथों से लपेटकर उठाया । उनकी आँखों से अश्रुजल उनके मुख को धुलाते हुए वहा । तब जटायु की खोयी हुई प्राणता फिर आयी । गृध्रराज विकलमन होकर विलापने लगे । १९६

ॐ परवलरुड् गौडैक्कुनिन्ऱन् इत्तिकुडैक्कुम् वौरैक्कुनैडुम् वण्बु तोर्ऱक्
करवलरुड् गर्पहमु मुडुपतियुड् गडलिडमुड् गळित्तु वाळप्

पुरवलरुदम् पुरवलने पौय्पहैये मय्क्कणिये पुहळिन् वाळ्वे
इरवलरु नल्लडुमुम् यानुमिति यन्वडनीत् तेहि नाये 197

पुरवलर् तम् पुरवलने-पालकों के पालक; पौय् पकैये-असत्य के शत्रु; मय्क्कु अणिये-सत्य के भूषण; पुकळिन् वाळ्वे-यश के वासस्थान; निन् तन्-आपकी; परवलर् अरु-अप्रशंसनीय; कौटैक्कुम्-दानशीलता और; तन्नि कुटैक्कुम्-अद्वितीय छत्र; पौरैक्कुम्-और क्षमाशीलता, इनके सामने; नट्टुम् पण्णु तोड्ड-अपने उच्च गुणों में जो हार गये, वे; करवलर् अरु कड्पकमुम्-अवंचक कल्पवृक्ष; उडुपतियुम्-चन्द्र; कटल् इट्टुम्-समुद्र की घिरी यह भूमि; कळित्तु वाळ्वे-(अपने प्रतिद्वन्द्वी के अभाव में) गर्व-मोद के साथ रहें, ऐसा; इरवलरुम्-याचक लोग; नल् अडुमुम्-श्रेष्ठ धर्म को; यातुम्-और मुझे; इति अन् पट-अब कौन सा दुख भोगने देकर; नीतूतु-हमें छोड़कर; एकिताय्-चले गये । १६७

हे राजाधिराज ! असत्य के शत्रु ! सत्य के भूषण ! कीर्ति के वासस्थान ! आपकी अवर्णनीय दानशीलता, शीतल श्वेतछत्र और क्षमाशीलता के सामने क्रमशः अवंचक कल्पतरु, उडुपति और समुद्र की घिरी भूमि जो हार गयी थी, अब प्रतिद्वन्द्वी से रहित होकर उत्साह के साथ रह रही है । और याचक, श्रेष्ठ धर्म और मैं —तीनों को कौन सा दुख भोगने के लिए छोड़कर आप स्वर्गवासी हुए हैं ? । १९७

अलङ्गार मैनवुलहुक् कमुदळिक्कुन् दनिककुडैया याळि शूळन्द्
निलङ्गाव लडुकिडक्क निलैयाद निलैयुडैये तेय नैञ्जिन्
नलङ्गाण नडन्दनैयो नायहने तीवित्तैये नण्वि निन्ऱुम्
विलङ्गान्ने त्तादलिनाल् विलङ्गिने निन्नुमुयिर् विट्टि लेत्ताल् 198

नायकते-नायक; अलङ्कारम् अन्त-साज-शृंगार है ऐसा; उलकुक्कु अमुतु अळिक्कुम्-(माने जाते हुए, पर असल में) लोकवासियों की कृपासुधा दिलानेवाला; तन्नि कुटैयाय्-अप्रतिम छत्रधारी; आळि चूळन्त निलम् कावल्-समुद्रवलयित पृथ्वी का शासन; अतु किटक्क-वह एक ओर रहे; निलैयात निलैयुडैयेन्-चंचल स्थिति वाले मेरे; तेय नैञ्चिन् नलम्-प्रेमपूर्ण मन की (सच्चाई) स्थिति; काण ओ-परखने के लिए क्या; नटन्तनै-आप चल बसे; तीवित्तैयेन्-पापी मैं; विलङ्कु आन्नेन्-जानवर रह गया; आतलित्ताल्-इसलिए; नण्विन् निन्ऱुम्-उत्तम मित्रता से; विलङ्क्किन्नेन्-अलग रह गया; उयिर् विट्टिलेन्-और प्राण नहीं त्यागे । १६८

नायक ! आपका श्वेतछत्र केवल अलङ्कार की वस्तु नहीं था । सुधासम कृपा बरसानेवाले शासन का प्रतीक था । ऐसे छत्रधारी ! अब समुद्रमेखला भूमि अनाथ हो गयी; वह एक ओर रहे ! क्या आप मेरे मन के प्रेम की स्थिरता की परीक्षा करने के हेतु चले गये क्योंकि मैं चंचलमन हूँ ! मैं पापी हूँ ! जानवर पैदा हुआ हूँ । तभी तो उत्तम मित्रता के अनुरूप उचित व्यवहार से डिगकर अब भी प्राण त्याग किये बिना जीवित रहता हूँ ! । १९८

❖ तयिरुडैक्कु मत्तैन्त वुलहैनलि शम्बरनैत् तडिन्द वन्नाळ्
अयिरुडैक्कुड् गडल्वलयत् तवररिय नीयुडल् यानावि यैन्तच्
चैयिरुडैत्तल् शैय्याद तिरुमन्तत्ताय् शैप्पिन्नाय् तिरुम्बाय् निन्शौल्
उयिरुडैक्कु वुडलैविशुम् बेरुडिना रुणर्विरुन्द कूडुडि नारे 199

चैयिरु किटत्तल् चैय्यात्-दोष को स्थान न देनेवाले; तिरु मन्तत्ताय्-पवित्र मन के स्वामी; तयिरु उडैक्कुम् मत्तु अन्त-दही मथनेवाली मथानी के समान; उलकै नलि-लोकवासक; चम्परनै-शंभरासुर को; तटिन्त अ नाळ्-जिस दिन काट गिराया, उस दिन; अयिरु किटक्कुम्-काले बालू से युक्त; कटल् वलयत्तवर्-समुद्रवलयित भूतलवासियों को; अरिय-जताते हुए; नी उटल् यान् आवि-तुम (दशरथ) शरीर, मैं प्राण; अन्त-ऐसा; चैप्पिन्नाय्-कहा; निन् चौल् तिरुम्पाय्-आप अपना वचन भंग करनेवाले नहीं हैं; उणर्वु इरुन्त-भावना न समझ सकनेवाले; कूडुडितार्-यमदेव भी; उयिरु किटक्कु विट्टु-प्राणों को इधर रहने देकर; उटलै-शरीर, आपको; विचुम्पु एरुडितारे-स्वर्ग पर चढ़ा ले गये । १९६

अकलंक पवित्र मन वाले ! दही को विलोडित करनेवाली मथानी के समान शंभरासुर लोगों को त्रास दे रहा था । जब आपने उनको मारा, उस दिन आपने सूक्ष्म काले बालुओं से युक्त समुद्र से वलयित भूमि के सारे लोगों के सामने उनके जाने, यह कहा कि जटायु तुम प्राण हो, मैं तुम्हारा शरीर हूँ । आप वचन भंग करनेवाले नहीं हैं । उस भावना की पवित्रता जड़मति यमदेव नहीं समझ सके । इसलिए प्राण—मुझे छोड़कर, शरीर—आपको उठा ले गये हैं । १९९

❖ अळुवदो रिशैप्पेरुह विप्पोळुदे यौप्परिय वैरियुन् दीयिल्
विळुवदे निरुक्कमड मेल्लियलार् तम्मैप्पो निलत्तिन् मेल्वीळुन्
दळुवदो यानैन्ना वरिवुड्रा तैन्वैळुन् दवरै नोक्कि
मुळुवदे लुलहुडैयान् मैन्दन्मीर् केण्मिर्त्त मुडैयिर् चोन्नान् 200

अळुवतु ओर् इचै पेरुक्-उन्नत यश के बढ़ते; इप्पोळुते-अभी; औप्पु अरिय-उपमाहीन; वैरियुम् तीयिल्-जलनेवाली आग में; विळुवते निरुक्क-गिरना छोड़कर; मट मेल्लियलार् तम्मै पोल्-अबोध सुकुमारी नारियों के समान; निलत्तिन् मेल् विळुन्तु-धरती पर गिरकर; यान् अळुवतो-मैं रोता रहूँ; अन्ता-कहकर; अरिवु उड्रान् अन्त-सूझ पा गये हों, ऐसा; अळुन्तु-उठकर; अवरै नोक्कि-उनको देखकर; एळु उलकु मुळुवतु उटैयान्-सातों लोकों के अकेले स्वामी; मैन्दन्तमीर्-(दशरथ के) पुत्र; केण्मिन्-मुनि; अन्त-ऐसा; मुडैयिल्-(निम्नोक्त) प्रकार से; चोन्नान्-बोले । २००

मुझे अभी खूब जलती आग में प्रवेश करके मरना चाहिए, उससे यश मिलेगा और मैं यशस्वी हो जाऊँगा । वह काम छोड़कर मैं अब अबोध सुकुमारी नारियों के समान भूमि पर गिरकर रोता-कलपता रहता हूँ ।

क्या यह मुझे सोहता है ? फिर वे सहसा कोई बात सूझ गई हो ऐसे उठे । राजकुमारों को सम्बोधित किया— सातों लोकों के शासक दशरथ के तनयो ! सुनो मेरी बात ! फिर वे निम्नप्रकार से बोले । २००

❀ अरुणत्तुत्तु बुदल्वन्त्या तवत्तुपडरु मुलहैलाम् पडर्वे त्ताळि
इरुण्मोय्म्बु कडत्तुरन्द तयरदत्किन् नुयिर्त्तुणैव तिमैयो रोडुम्
वरुणङ्गळ् विरिहिन्त्तु कालत्ते वन्दुदित्तेन् कळुहिन् वेन्दन्
तरुणङ्गौळ् पेरौळियीर् शम्वादि पित्पिन्त्तुन्द जटायु वेन्त्तान् 201

तरुणम् कौळ् पेर औळियीर्—तरुणई से युक्त बड़े तेजोमय; यान्—मैं; अरुणत्तुत्तु पुतल्वन्—अरुण का पुत्र हूँ; अवन् पटरुम्—वे जहाँ जाते हैं; उलकु अल्लाम्—उन सभी लोकों में; पटर्वेन्—जाने की शक्ति रखता हूँ; इमैयोर् ओटुम्—देवों के साथ; वरुणङ्गळ्—अनेक वर्ण-भेद; विरिकिन्त्तु कालत्ते—जब बँटे उसी (आदि) काल में; वन्दु उदित्तेन्—जनमा, वह मैं; कळुकिन् वेन्त्तन्—गृध्रराज; चम्पाति—सम्पाति; पित् पिन्त्तु—का अनुज; जटायु—जटायु हूँ; इरुळ् मोय्म्बु—(शत्रु रूपी) अन्धकार का बल; कड—नाश करते हुए; आळि तुरन्त्तु—आज्ञाचक्र-चालक; तयरदत्कु—दशरथ का; इन् उयिर् तुणैवन्—प्राण-प्यारा मित्र हूँ; वेन्त्तान्—कहा । २०१

तरुण तेजोमय वीर ! मैं अरुण का पुत्र हूँ । अरुण जहाँ चलते हैं, उन सभी स्थानों में जाने की मेरी शक्ति है । देवों के साथ जिस दिन सभी विविध जातियों के जीवों का प्रादुर्भाव हुआ, उसी प्राचीनकाल में मेरा जन्म हो गया । गीधों के राजा सम्पाति का अनुज हूँ मैं । शत्रु रूपी अन्धकार को नाश करते हुए जिन्होंने आज्ञाचक्र चलाया, उन दशरथ का प्राण-प्यारा मित्र हूँ । २०१

[इसके बाद पाँच पद्य पाये जाते हैं, जो क्षेपक माने जाते हैं । उनमें जटायु की वंशावली का विवरण पाया जाता है । जानकारी हेतु उनका सार यहाँ दिया जाता है— दक्ष प्रजापति की पचास उभरे उरोजों वाली सुताओं में तेरह पुत्रियों से काश्यप का विवाह हुआ । उनमें अदिति ने तैंतीस करोड़ देवों को जन्म दिया । कजरारी आँखों वाली दिति ने दुगुने दैत्यों को जनाया ।

दनु ने दानवों को, मति ने अपने अवयवों से मनुष्य की जातियों को और सुरभी ने धेनु, अश्व और अन्य जानवरों को पैदा किया । क्रोधवशा ने गर्दभ, मृग, उष्ट्र आदि को पैदा किया ।

अभ्रकुंतला विनता से वज्र, अरुण, वैनतेय (गरुड़), उल्लू-गीध आदि बड़े-बड़े पक्षी जनमे । ताम्रा ने गौरैये, तीतर, बटेर आदि पक्षियों को जन्म दिया । कळ्वा नाम की कोमलांगी ने तरु, लता आदि को जन्म दिया ।

कद्रू ने फनियों और व्यालों को जन्म दिया । सुधा से भुजंग उत्पन्न

हुए। अरिष्ठा द्वारा गिरगिट, घोरपड़ आदि आये। इला ने जलचरों को जन्म दिया।

अदिति, दिति, दनु, अरिष्ठा, सुधा, कळा, सुरभी, विनता, मति, इला, कद्रू, क्रोधवशा और ताम्रा—इन स्त्रियों ने ये सब जीव-जन्तु पैदा किये। विनता-सुत अरुण ने रम्भा से विवाह किया और हम भूमि पर पैदा हुए।]

ॐ आण्डवन्ती दुरैशैय्य वज्रजलित्त मलर्क्कैया रत्नवि तोडुम्
मूण्डपेडरुन् दुत्तवत्तान् मुट्टैमुट्टैयि निरैमलर्क्कण् मौयत्त नीरार्
पूण्डपेरुम् ब्रुह्मनिर्वित् तम्बोरुट्टाड् पौन्नुलहम् पुक्क तादे
मीण्डनन्वन् दानवन्तैक् कण्डन्तरे यौत्तन्तर् विलङ्गर् रोळार् 202

आण्डु-वहाँ; अवन्-उनके; ईतु उरै चैय्य-यह कहते ही; विलङ्कल् तोळार्-पर्वत-सम कंधों वाले; अञ्जलित्त मलर् कयार्-अञ्जलिबद्ध कमल-हस्त (वाले); अन्पित् ओटुम्-प्रेम के साथ; मूण्ड-बढ़नेवाले; पेरुम् तुत्तपत्ताल्-बड़े दुख से; मुट्टै मुट्टैयिन्-उत्तरोत्तर; मलर् कण् निरै-कमल-सम आँखों में भर आनेवाले; मौयत्त नीरार्-अधिक अश्रुजल के साथ; पूण्ड पेरुम् पुक्कल् निर्वि-अपना धृत बड़ा यश इधर स्थापित करके; तम् पौरुट्टाल्-अपने कारण; पौन् उलकम् पुक्क-स्वर्ण (स्वर्ग) लोक जो गये, उन; तातै-अपने पिता ही; मीण्डन् वन्तान्-अवनै-लौट आये जो, उनको; कण्डन्तरे यौत्तन्तर्-देख लिया हो, ऐसा हुए। २०२

जब जटायु ने यह वृत्तान्त कहा, तब पर्वत-सम कंधों वाले श्रीराम और लक्ष्मण ने अपने कमल-हाथ जोड़ लिये। स्नेह-विह्वल उनकी आँखों से अश्रुकण बारी-बारी से भर आये। उनकी स्थिति ऐसी हो रही, मानो वे दशरथ से ही प्रत्यक्ष मिल रहे हों, जो अब स्वर्ग से अपने उन पुत्रों को देखने के लिए लौट आये हों जिनके (वियोग के ही) कारण वे इस संसार में बड़ा यश स्थापित करके स्वर्गवासी हो गये थे। २०२

ॐ मरुवित्तिय कुणत्तवरै यिरुशिडहा लुत्तत्तळुवि मक्का नीरे
उरियकडन् विन्तयेड्कु मुदवुवी रुडलिरण्डुक् कुयिरीन् शान्तान्
पिरियवुन्दान् पिरियादे यित्तिदिरुक्कु मुडुप्पोडैयाम् वीळै पारा
तैरियदन्ति लिन्नेपुक् किडवेने लित्तुयर् मरवे नैन्शान् 203

मरुवु इत्तिय-अपनाने-योग्य मधुर; कुणत्तु अवरै-स्वभाव वाले उनको (श्रीराम आदि को); इरु चिडकाल्-अपने दोनों पक्षों से; उरु तळुवि-आलिंगन करते हुए; मक्काळ्-पुत्रों; नीरे-तुम ही; विन्तयेड्कुम्-पापी मेरा भी; उरिय कटन्-आवश्यक शक्कर; उतवुवीर्-करा दो; उटल् इरण्डुक्कु-दो शरीर का; उयिर् ओन्नु आनान्-जो प्राण एक रहे; पिरियवुम्-उनके मरने पर; तान् पिरियाते-खुद मरे वगैर; इत्तितु इरुक्कुम्-सुख से जीता रहने का; उटल् पीडै आम्-शरीर-वहन का; वीळै पारातु-दुख देखते हुए; अरि अतत्तिल्-आग में; इन्ने-अभी; पुक्कु-प्रवेश कर; इडवेन् एल्-न मरुगा तो; इ तुयर्म् मरवेन्-यह दुख भूल नहीं पाऊंगा। २०३

पश्चात् जटायु ने अपनाने योग्य अच्छे गुणों वाले उन कुँअरों को अपने विशाल पक्षों के अन्दर लेते हुए आलिंगन किया और कहा कि पुत्रो ! मैं बड़ा पापी हूँ । मेरा भी शव-संस्कार कर दो । यह मेरे प्रति उपकार होगा । दशरथ मेरे और उनके दोनों शरीरों का एकप्राण-सम रहे । उनकी मृत्यु होने के बाद मैं बिना मरे यह शरीर ढोता रहूँ, यह मेरे लिए असह्य है ! यह शरीरभार-वहन-दुख दूर करने के लिए आग में प्रवेश करके अभी मर जाऊँगा । नहीं तो यह वेदना भूल नहीं सकूँगा । २०३

ॐ नृ रत्त वरुवै यरशन्नैत्, तुन्न तारवर् नोक्कित् तौळुदुह्ण
औन्न मुत्त मुर्मुर् यायुह, निन्न मर्त्तिन्न नोर्मे निहळत्तिनार् 204

अन्न उरत्त-ऐसा कहनेवाले; अरुवै अरचत्त-गृध्रराज को; तुन्न तार अवर्-घनी माला से अलंकृत श्रीराम और लक्ष्मण; तौळुतु-विनय करके; कण् औन्नम्-आँखों में लगी; मुत्तम्-मुक्तापंकित-सम अश्रुकण; मुर् मुर्याय-क्रम से; उक्-टपके, ऐसा; निन्न-जटायु के सामने स्थित होकर; इन्न नोर्मे-इस प्रकार से; निहळत्तिनार्-बहस को । २०४

जब गृध्रराज जटायु ने अपना यह संकल्प सुनाया, तब मनोरम माला-धारी श्रीराम और लक्ष्मण शोकाकुल हुए । आँखों से मोतियों के समान अश्रुकण बहाते हुए उन्होंने जटायु के सामने खड़े होकर यों कहा । २०४

ॐ उय्विडत् तुदवर् कुरिया नुन्दन्, मैय्वि डक्करु दादुविण् णेरिनात्
इव्वि डत्तिनि लैम्बैरु माअन्नैम्, कैवि डिर्पित् यार्कळै कण्णुळार् 205

उय्वु इटत्तु-रक्षा के अवसर पर; उतवर्कु उरियात्तम्-रक्षा करनेवाले चक्रवर्ती भी; तन् मैय्वि विट करतातु-अपना वचन-परिपालन छोड़ना न चाहकर; विण् एरित्तान्-स्वर्गवासी हुए; इ इटत्तिन्निल्-इस स्थान (जंगल) में; अम् पैरुमा अन्-हमारे नाथ; अम् कै विटिल्-हमको असहाय छोड़ जाएँगे तो; पित्तै-फिर; कळै कण् उळार्-हमारे अवलम्ब (सहायक) रहनेवाले; यार्-कौन हैं । २०५

तात ! हमारी सहायता और रक्षण करने का भार जिन पर स्वयमेव था, वे हमारे सहायक और नाथ अपने वचन को छोड़ना न चाहकर स्वर्ग-वासी हो गए । हे हमारे नाथ ! यहाँ इस जंगल में आप भी हमें निस्सहाय करके छोड़ेंगे तो हमारे आधार कौन हैं ? । २०५

ॐ तायि नोङ्गरुन् दन्दैयिर् उण्णहर्, वायि नोङ्गि वनम् वुहुन् दैय्दिय
नोयु नोङ्गिर् नुन्निन्नै नोङ्गळै, नोयु नोङ्गुदि योर्नेट्टि नोङ्गलाय् 206

नैट्टि नोङ्कलाय्-धर्म-मार्ग से न हटनेवाले; नोङ्कु अरु-जिनसे अलग होना कठिन है, उन; तायित्त-माता से; तन्तैयिल्-पिता से; तन् नकर् वायिन्-अपने नगर के द्वार से; नोङ्कि-अलग होकर; वत्तम् पुकुन्तु-जंगल में प्रवेश करके; अय्यित्तिय-अब तक जो हमने भुगता है; नोयिन्-उस दुख से; नुन्तिन्-आपके मिलने

के कारण; नीङ्किर्त्तम्-विपुक्त हुए; अङ्कळै-ऐसे हमको; नीयुम्-आप भी; अन् नीङ्कुतियो-क्यों छोड़ जाएंगे । २०६

हे धर्म से कभी न हटनेवाले ! जिनसे अलग होना कठिन है उन माता से, पिता से और अपने नगर के द्वार से अलग होकर हम इधर आए । उससे हमारे मन में जो व्यथा हुई उससे, आपको देखने के बाद हम मुक्त हो पाये । इस स्थिति में आप हमें क्यों छोड़कर जायेंगे ? । २०६

ॐ अन्तु शौल्ल विरुन्दळि नैञ्जितन्, निन्तु वीररै नोक्कि नितैन्दवन्
अन्तु दैन्ति लयोत्तियि लैयनीर्, शैन्तु पिन्तवर् चेरुवैन् यातैन्शान् 207

अन्तु शौल्ल-ऐसा (श्रीराम और लक्ष्मण के) कहने पर; इरुन्तु अळि नैञ्चितन्-जो दुख से विगलित मन वाले रहे, उन जटायु ने; निन्तु वीररै-सामने खड़े रहे वीरों को; नोक्कि-देखकर; नितैन्तवन्-विचार करते हुए; अन्तु अन्तु अन्तिन्-वह तुमको (पसन्द) नहीं तो; ऐय नीर्-प्यारो; नीविर्-तुम लोगों के; अयोत्तियिल् चैन्तुपिन्-अयोध्या में लौट जाने के बाद; यान् अवन् चेरुवैन्-मैं उनके पास जाऊँगा; अन्शान्-कहा । २०७

जब श्रीराम और लक्ष्मण ने दुख के साथ अपनी यह बात कही, तब व्याकुलता से निर्बल हुए मन के जटायु ने उनको देखा और कुछ सोचा । फिर मन बदलकर उन्होंने कहा कि पुत्री ! अगर मेरा मरना आपको ठीक नहीं लगता तो लो मेरे प्यारो ! तुम्हारे अयोध्या लौट जाने के बाद मैं अपने मित्र के पास जाऊँगा । २०७

ॐ वेन्तन् विण्णडैन् दान्तैन्ति वीरर्नीर्, एन्तु जाल मिन्तिदळि यादिवण्
पोन्तु दैन्तै पुहुन्दवैन् बुन्दिपोय्क्, कान्तु हिन्तुडु कट्टुरै यीरैन्शान् 208

वेन्तन्-चक्रवर्ती; विण् अटैन्तान् अन्तिन्-स्वर्ग सिंघार गये तो; वीरर् नीर्-वीर तुम; एन्तु जालम्-भरणयोग्य राज्य को; इन्ति अळियातु-सुख से पालन किये बिना; इवण्-यहाँ; पोन्तु अन्तै-आये क्यों; अन् पुन्ति-मेरा मन; पोय्-अस्थिर होकर; कान्तुकिन्तु-दुखतप्त होता है; पुकुन्त अन्-बीच में हुए कौन से; कट्टुरैयीर्-समझाकर कहो; अन्शान्-पूछा । २०८

फिर जटायु को विचार आया कि ये जंगल क्यों आये हैं ? उन्होंने पूछा कि चक्रवर्ती स्वर्गवासी हुए तो वीर तुम्हारा कर्तव्य था कि भरण योग्य राज्य का पालन करो । पर सन्तोष के साथ राज्य-पालन करना छोड़कर यहाँ क्यों आये हो ? मेरा मन इधर-उधर भटककर दुखतप्त है ! क्या अनर्थ बीच में आये ? खूब खोलकर कहो । २०८

ॐ तेवर् तानवर् तिण्डिउ नाहर्वे, रेव राह विडरिळ्ळैत् तारैन्ति
पूव रावु पौलङ्गदिर् वेलिनीर्, शाव राक्कि त्रुवै नरशैन्शान् 209

पू अरावु-रेतकर तेज किए हुए; पौलन् कतिर् वेलितीर्-स्वर्ण-सम कान्ति

छिटकानेवाले भालों का धारण करनेवाले; तिण् तिउल्-फठोर शक्तिमन्त; तेवर्-देव हों चाहे; तातवर्-दानव; नाकर्-नागलोक-वासी; वेऊ एवर् आक्-अन्य कोई भी हों; इटर् इळैत्तार् अँतिल्-दुख दिया हो तो; चावर् आक्कि-उनको मृतक बनाकर; अरच्चु तरुवैन्-राज्य दिला दूंगा; अँन्नान्-कहा । २०६

खूब रेतकर तीक्ष्ण और स्वर्ण-सम कान्ति देनेवाले भाले के धारक कुँअर ! आपको देवों ने कष्ट दिया हो, चाहे दानव; नागलोकवासी हों या और कोई —कहो कि अमुकों ने कष्ट दिया तो उनको मृतक बनाकर आपको राज्य दिला दूंगा । २०९

❧ तादै कूउलुन् दम्बियै नोक्किनान्, शीदै केळ्व नवनुन्दन् शिउवै
माद राल्वन्द शैयहै वरम्बिला, ओद वैलै यौळिविन् रुणर्त्तितान् 210

तातै कूउलुम्-पिता के कहने पर; चीतै केळ्वतुम्-सीतापति ने भी; तम्पियै नोक्किनान्-अनुज को देखा; अवतुम्-उन्होंने भी; तन् चिउवै मातराल्-अपनी छोटी माता देवी कैंकेयी द्वारा; वन्त चैय्कै-किया हुआ कार्य; वरम्पु इला ओत-जो निस्सीम घोपयुक्त; वैलै-दुख-सागर या वह; यौळिवु इन्ड-बिना अन्तर के; उणर्त्तितान्-बताया । २१०

जब पिता-सम जटायु ने यह वचन कहा तब सीतापति ने अपने अनुज के प्रति अर्थभरी दृष्टि फेरी । लक्ष्मण ने भी अपनी सौतेली माता देवी कैंकेयी के कृत्य का घोपपूर्ण समुद्र-सा दुखवृत्तान्त पूर्ण रूप से, बिना कुछ छोड़े-छुड़ाये, कह सुनाया । २१०

❧ उन्दै युण्मैय नाक्कियुन् शिउवै, तन्द शौल्लैत् तलैक्कोण्डु तारणि
वन्द तम्बिक् कुदविय वळ्ळले, अँन्दै वल्ल दियावर्वल् लारँत्ता 211

उन्तै उण्मैयन् आक्कि-अपने पिता को सत्यनिष्ठ बनाकर; उन् चिउवै तन्त चौल्लै-अपनी सौतेली माता की आज्ञा; तलै कौण्डु-सिर पर धारण करके; तारणि-(अपने स्वत्व के) राज्य को; वन्त तम्पिक्कु-अपने अनुज भरत को देकर; उतविय-उपकार करनेवाले; वळ्ळले-दानी प्रभु; अँन्तै वल्लतु-मेरे तात (तुम) जो कर सके; यावर् वल्लार्-ऐसा कौन कर सकता है; अँत्ता-कहकर । २११

यह सुनकर जटायु ने साधुवाद दिया ! हे राम ! तुमने अपने पिता को सत्यसंध बनाया और अपनी सौतेली माता की आज्ञा शिरोधार्य करके धरणी को अपने कनिष्ठ भ्राता के पास सौंप दिया ! तुम दानियों में श्रेष्ठ दानी हो ! हे मेरे तात ! हा ! मेरा पुत्र जो कर चुका वह कौन कर सकता है ? । २११

❧ अल्लित्
पुल्लि

तामरैक्
मोन्द

कण्णनै
पौळिन्दकण्

यन्नुउप्
णोरित्तन्

वल्लै
अल्लै

मैन्दवम्
यिल्पुह

मन्तैयु
ळैय्दुवित्

मैन्तैयुम्
तार्त्तैन्नान् 212

अल्लि तामरै कण्णत्तै-पंखुड़ियों सहित कमल-सम आँखों वाले श्रीराम को; अन्नपु उर पुल्लि-प्रेम के साथ आलिंगित करके; मोन्तु-माथे पर चूमकर; पौळिन्त कण् नीरित्तन्-अश्रु बहानेवाले नेत्रों के साथ; मैन्त-पुत्र; अ मन्तैयुम्-उन चक्रवर्ती को; मैन्तैयुम्-और मुझे भी; अल्लै इल् पुकळ्-असीम यश; अय्त्तुवित्ताय्-दिला दिया; वल्लै-तुम समर्थ हो; अन्नान्-कहा (जटायु ने) । २१२

जटायु ने हर्षातिरेक से पद्मदलाक्ष श्रीराम को गले लगाया और सिर सँघा (माथा चूमा) । आँखों से आनन्दबाष्प बहाते हुए जटायु ने कहा— पुत्र ! तुमने चक्रवर्ती को और मुझे, दोनों को अपार यश दिला दिया ! तुम बड़े समर्थ हो ! । २१२

❧ पिन्त रुम्पप् पेरियवन् पय्वळै, अन्त मन्त वणङ्गिनै नोक्किन्नान्
मन्तर् मन्तवन् मैन्दविव् वाणुदल्, इन्त ळैन्त वियम्बुदि यालैन्नान् 213

पिन्तरुम्-फिर भी; अ पेरियवन्-उन बड़े ने; पय्वळै-कंकणधारिणी; अन्तम् अन्त-हंसिनी-सदृश; अणङ्कितै-देवी सीता को; नोक्किन्नान्-देखकर; मन्तर् मन्तवन् मैन्त-राजाधिराज के पुत्र; इ वाळ् नुतल्-यह उज्ज्वल ललाट वाली; इन्तळ-अमुक (कौन) है ऐसा; इयम्पुत्ति-बतलाओ; अन्नान्-कहा । २१३

फिर भी उन वृद्ध जटायु ने कंकणधारिणी मरालीतुल्य देवी सीता को देखा और श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र ! यह उज्ज्वल ललाट वाली कौन है ? यह बताओ । २१३

अल्लि

रुत्तन्

ताडहै

यादिया

विल्लि

रुत्तड्

गरिवैयै

मेलैनाळ्

पुल्लु

रुत्तदि

यावुम्

बुहन्ऋतन्

शौल्लि

रुत्तनन्

रौन्ऋल्पिन्

रौन्ऋत्तान् 214

तोन्ऋल् पिन् तोन्ऋत्तान्-श्रीराम के अनुज (लक्ष्मण) ने; मेलै नाळ्-पहले, आरम्भ में; अल् इरुत्तु अन्न-अन्धकारालय-सी; ताटकै आतिया-ताड़का (वृत्तान्त) आदि; विल् इरुत्तु-धनुर्भंग करके; अङ्कु-उधर; अरिवैयै-सीतादेवी से; पुल्लु उरुत्तु-विवाह करना; यावुम् पुक्कन्-सभी सुनाकर; तन् चोल् इरुत्तन्-अपना कथन पूरा किया । २१४

तब श्रीराम के अनुज लक्ष्मण ने सारा श्रीराम-चरित सुनाया । अन्धकार के आगार-सी ताड़का का वध, मिथिला में शिव-धनुष तोड़ना, सीताजी का विवाह आदि सभी घटनाएँ वर्णन करके श्रीलक्ष्मण ने अपना कथन समाप्त किया । २१४

केट्टु वन्द किळरीळि मोलियान्, तोट्ट लङ्गलि नीरुत्तुन् दीरुवळम्
नाट्टु नीरिनि नण्णुदल् कारुमिक्, काट्टिल् वेहुदिर् काक्कुवैन् यान्नेन्नान् 215

केट्टु उवन्त-सुनकर आनन्दित हुए; किळर् ओळि मोलियान्-वधनशील प्रभा
के किरीट के धारी; तोट्ट अलङ्कलितीर्-पुष्पमाला वाले; वळम् तुन्तीर्-धन-समृद्धि
छोड़ आये हो; नाट्टु-अपने राज्य में; नीर् इति नण्णुतल् कारुम्-तुम लोगों के आगे
पहुँचते तक; इ काट्टिल् वैकुतिर्-इस जंगल में रहो; यान् काक्कुवैन्-में रक्षा
करूँगा; अन्नान्-कहा । २१५

जाज्वल्यमान किरीट से शोभायमान जटायु ने तुष्ट होकर वादा
किया कि हे पुष्पदलमाला-धारी वीरो ! तुम लोग धन आदि वैभव त्यागकर
आये हो ! जब तक तुम अयोध्या लौट नहीं जाओगे, तब तक इसी वन में
वास करो । मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा । २१५

इरैव वैण्णि यहत्तिय नीन्दुळ, तैयु नन्मणि याऽऽि नहन्गरेत्
तुऽयि नुण्डौरु शूळल् चूळल् पुक्, कुऽदु मेन्ऽन नुळ्ळत् तुऽहुवान् 216

उळ्ळत्तु उऽकुवान्-अन्तर्यामी भगवान श्रीराम; इरैव-नाथ; अकत्तियन्-
अगस्त्य का; वैण्णि-विचारकर; ईन्तु उळ्ळत्तु-वतलाया हुआ स्थान; अऽयुम्
नल् मणि-कलरवयुक्त सुन्दर; याऽऽिन् अकत् करै-गोदावरी नदी के विशाल तट पर;
ओरु चूळल् उण्डु-एक स्थान है; अ चूळल् पुक्कु-उस स्थान में जाकर; उऽतुम्-
रहेंगे; अन्नान्-कहा । २१६

सर्वान्तर्यामी भगवान श्रीराम ने उत्तर में कहा कि हे नाथ ! अगस्त्य
ने वासयोग्य कोई स्थान बताया है । वह कलरव सहित बहनेवाली श्रेष्ठ
गोदावरी नदी के विशाल तट पर स्थित एक स्थान है । वहीं जाकर हम
वास करेंगे । २१६

ॐ पेरिट्टु नन्ऽप् पेरुन्दुऽ वैहिनीर्, पुरिदिर् मादवम् वोडुमिन् यानदु
तैरिवु रुत्तुवै नैन्ऽवर् तिण्शिऽ, विरियु नीळलिल् मेवविण् शेन्ऽनन् 217

पैरितुम् नन्ऽ-बड़ा अच्छा है; नीर् अ पेरुन् तुऽ वैकि-तुम उस नदी के श्रेष्ठ
घाट पर रहकर; मा तवम् पुरितिर्-महान तप करो; पोतुमिन्-चलो; यान् अतु
तैरिवुऽतुवैन्-मैं वह स्थान दिखाऊँगा; अन्ना-कहकर; तिण् चिऽ निळलिल्-बलवान
अपने पक्षों की छाया में; अवर् मेव-उनको आने देते हुए; विण् चैन्ऽनन्-आकाश
में उड़ता चला । २१७

जटायु ने उसे उचित समझा । कहा कि वह स्थान अवश्य बड़ा
अच्छा है । तुम उसी घाट पर जाकर रहो और बड़ी तपस्या करो ।
चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा और वह स्थान दिखा आऊँगा । वे
आकाश पर उड़ते चले और उनके बलवान और विशाल पक्षों की छाया के
नीचे श्रीराम आदि सुख से गये २१७

❖ आय चूळ लरिय वुणरत्तिय, तूय शिन्दैयत् तोमिल् गुणत्तवन
पोय पित्तैप् पौरुशलै वीररुम्, एय शोलै यिनिदुशैन् रेय्दिनार् 218

आय चूळल्-उस (पंचवटी के) स्थान को; अरिय उणरत्तिय—समझा-बुझाकर;
अ तूय चिन्तै-वे पवित्रमन; तोम् इल् कुणत्तु-निर्मल गुणों वाले; अवन्-वे जटायु;
पोय पित्तै-चले गये, उसके बाद; पौरु विलै वीररुम्-युद्धोपयोगी धनुओं के स्वामी
श्रीराम आदि; एय चोलै-वहाँ रहनेवाले एक उपवन में; इत्तितु चैन्ऱु अयत्तितार्-
सुख से जाकर रहे । २१८

उस स्थान, पंचवटी को दिखाकर और उसके सम्बन्ध में समझाकर
पवित्रमन और उत्तम, निर्मल गुणों वाले जटायु चले गये । उसके बाद
युद्धोपयोगी धनुष के रखनेवाले दोनों वीर देवी सीता के साथ वहाँ स्थित
एक उपवन में गये । २१८

❖ वार्प्पौऱ् कौङ्गै मरुहियै मक्कळै
एरप्पच् चिन्दनै यिट्टव् वरक्कर्दम्
शौर्प्पैच् चिक्कुरत् तेरिनन् शेक्कैयिल्
पार्प्पैप् पार्क्कुम् बरवैयिऱ् पार्क्किन्ऱान् 219

अ अरक्कर् तम् चोर्प्पै-वहाँ के राक्षसों की बलविशिष्टता को; चिक्कु अर-
संशय के बिना; एरप्-खूब; चिन्तनै इट्टु-सोचकर; तेरिन्-जो निश्चित रूप
से जानते थे, वे जटायु; वार् पौन् कौङ्गै-अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली; मरुहियै-
पुत्रवधू सीताजी को; मक्कळै-और अपने पुत्रों को; शेक्कैयिल् पार्प्पै पार्क्कुम्-
घोंसलों में पोतों की देखरेख करनेवाली; बरवैयिल्-मादा पक्षी के समान;
पार्क्किन्ऱान्-देखते रहे । २१९

जटायु राक्षसों के बल का पूरा ज्ञान रखते थे । उन्होंने खूब सोचा
और मन में धारणा बना ली (कि इनकी रक्षा का खूब ध्यान रखना
आवश्यक है) । अतः वे अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली पुत्रवधू सीताजी
और दोनों कुमारों पर, सावधानी से अपने बच्चों की देखरेख करनेवाली
मादा पक्षी के समान उन पर निगरानी रखते थे । २१९

5. शूर्प्पणहैप् पडलम् (शूर्पणखा पटल)

पुवियित्तुक् कणिया यात्तुऱ् पौरुडन्दु पुलत्तिऱ् राहि
आवियहत् तुऱैह डाङ्गि यैन्दिणै नैरियळाविच्
चवियुऱत् तैळिन्दु तण्णैन् तौळुक्कमुन् दळुविच् चान्ऱोर्
कवियेनक् किडन्द कोदा वरियिन् वीरर् कण्डार् 220

पुवियित्तुक्कु अणियाय्-भूलोक का शृंगार (भूषण) बनकर; आत्तुऱ् पौरुड-
तन्तु-श्रेष्ठ वस्तुएँ (पुरुषार्थ) प्रदान करते हुए; पुलत्तिऱ् आकि-खेतों (बुद्धि) का

पोषक रहकर; अवि अफ तुरैकळ ताङ्कि-अपने में बने हुए अनेकों घाटों के साथ (प्रसादगुणपूर्ण अनेक कथाप्रसंगों के साथ); ऐ तिणै नैरि अळावि-पाँचों भूभागों पर से बहती हुई (पाँचों अंगों का वर्णन करती हुई); चवि उर तैळिन्नु-छविमान रूप से साफ़ रहते हुए (जल्दी समझ में आकर ज्ञान दिलानेवाले रूप से साफ़ रहते हुए); तण् अन्नू ओळुक्कमुम् तळुवि-शीतल धारा-प्रवाह के साथ (रम्य शैली के साथ); चान्नोर् कवि अत्त-उत्तम कवियों के काव्य के समान; किटन्त-दृश्यमान; कोतावरियिन्नै-गोदावरी नदी को; वीरर् कण्टार्-वीरों ने देखा । २२०

(इस पद में गोदावरी नदी और उत्तम कवि के रचे काव्य का श्लिष्ट वर्णन है ।) वीरों (सीताजी के साथ श्रीराम और लक्ष्मण) ने उस गोदावरी को देखा, जो उत्तम कवि के रचे काव्य के समान पड़ी (बहती) थी ।

[भुवि का शृंगार, चारों पुरुषार्थों का दायक, बुद्धि का पोषक, शृंगार रस के सुन्दर उपांगों के प्रसंगों का वर्णनकारी, (शृंगार) रस भरे काव्य के प्रधान अंगों का (तिणै) चित्रण करनेवाला, मनोहारी छटा के साथ स्वच्छ और शीतल प्रवाहमयी शैली के साथ रहनेवाले उत्तम कवि के काव्य के समान भुवि का शृंगार बनकर अनेक पदार्थों को देती हुई या पैदा करने में सहायता देती हुई, खेतों की पोषक, ताप शान्त करनेवाले अनेक घाटों से युक्त, पाँचों (पर्वत, वन, नदी की कछार, समुद्र तट और मरु के) प्रदेशों से होकर सुन्दर रूप से स्वच्छ और शीतल सुखावह प्रवाह के साथ बहनेवाली गोदावरी नदी को वीरों ने देखा ।]

[पौरुळ्-पुरुषार्थ या पदार्थ; पुलम्-बुद्धि (ज्ञान) या खेत; तुरैहळ्-शृंगार-रस-कथा के उपांगों का वर्णन या घाट; तिणै-प्रधान भाग, प्रधान भूभाग] । २२०

वण्डुडै	कमलच्	चव्वि	वाण्मुहम्	बौलिय	वाशम्
उण्डुडै	कुवळ	यौण्ग	णौरुङ्गुड	नोक्कि	यूळिन्
तैण्डिरैक्	करत्तिन्	वारित्	तिरुमलर्	तूविच्	चैल्वर्क्
कण्डडि	पणिव	दैन्तप्	पोलिन्ददक्	कडवुळ्	यारु 221

अ कटवुळ् यारु-वह दिव्य नदी; चैल्वर् कण्टु-उन श्रीमानों को देखकर; वण्टु उरै कमलम्-अलिकुलावृत कमल रूपी; चैव्वि वाळ् मुक्कम्-सुन्दर उज्ज्वल मुख; पौलिय-आनन्द से शोभित करके; वाचम् उण्टु-सुगन्धिपुक्त; उरै-वहाँ रहनेवाले; कुवळ ओण् कण्-कुवलय रूपी प्रभापूर्ण आँखों से; ओरुङ्कु उर नोक्कि-एकाग्रता से खूब देखकर; ऊळिन् तैळ् तिरै करत्तिन्-क्रम से उठनेवाली तरंग रूपी हाथों से; तिरु मलर् वारि-सुन्दर पुष्पों को लेकर; तूवि-बरसाकर; अटि पणिवतु अन्न-चरणों पर विनत हो रही हो, ऐसा; पौलिन्ततु-दर्शनीय रही । २२१

उस दिव्य नदी ने उन श्रीमंत कुमारों को देखा तो उसका अलिकुल-कलित कमल रूपी मुख विकसित हुआ । वह सुवासित वनप्राय कुवलय रूपी

आँखों द्वारा देखते हुए क्रमानुक्रम में उठनेवाली स्वच्छ तरंगों रूपी हाथों से पुष्पों को लेकर उनके चरणों पर डालते हुए प्रणमन कर रही हो — ऐसा लगा । २२१

अल्लवुरु	कादलारि	निरैत्तिरैत्	तेङ्गि	येङ्गिप्
पल्लवनाद्	कुवळैच्	चैव्विक्	कण्वनि	परन्तु
वळुविला	वाय्मै	मैन्दर्	वत्तत्तुडै	वरुत्त
अल्लवतु	मौत्त	दालव्	वलङ्गु	नीरारु
				मन्तो 222

अलङ्कु नीर्-हिलती बहनेवाली जलधारा की; अ आरु-वह नदी; वळु इला वाय्मै मैन्दर्-अचल सत्यसंध उन कुमारों का; वत्तत्तु उडै वरुत्तम् नोक्कि-वनवास का दुख देखकर; अल्ल उरु कातलाल्-उठे हुए प्रेम के साथ; इरैत्तु इरैत्तु-लम्बी साँस लेते-लेते; एङ्कि एङ्कि-तरस खाते-खाते; पल्लव-वन-सम घने; नाळ् कुवळै-उसी दिन विकसित कुवलय रूपी; चैव्वि कण्-आकर्षक आँखों से; पत्ति-जलकण; परन्तु चोर-बरसाकर बहाते हुए; अल्लवतु औत्ततु-रोती हो, ऐसा लगा । २२२

वह हिलती हुई बहनेवाली नदी सत्यनिष्ठ उन वीरों के वनवास-जनित दुख को देखकर लम्बी आँहें भरते हुए तरस के साथ रो रही हो, ऐसा भी लगा । उनके वनप्राय कुवलय रूपी नेत्रों में हिमकण दिखाई दिये । २२२

नाळङ्गो	णळित्त्	पळ्ळि	नयत्तङ्ग	ळमैय	नेमि
वाळङ्ग	ळुडैव	कण्डु	मङ्गैतन्	कौङ्गै	नोक्क
नीळङ्गौळ्	शिलैयोन्	मड्डन्	नेरिळै	नैडिय	नम्बि
तोळिन्ग	णयत्तम्	वैत्ताळ्	शुडर्मणित्	तडङ्गळ्	कण्डाळ् 223

नीळम् कौळ् चिलैयोन्-दीर्घ धनु के धारक श्रीराम ने; नाळम् कौळ्-नाल सहित; नळित पळ्ळि-कमल रूपी शय्या पर; नयत्तङ्कळ् अमैय-आँखें उन्मीलित करके; नेमि वाळङ्कळ्-चक्रवाक पक्षियों को; उडैव कण्डु-रहते देखकर; मङ्कै तन् कौङ्कै नोक्क-देवी के स्तनों पर दृष्टि लगाई, तब; अ नेरिळै-उन आभरणभूषिता देवी ने; चूटर् मणि-कान्तियुक्त नीले रत्नों से भरे; तडङ्कळ् कण्डाळ्-टीलों को देखकर; नैडिय नम्पि-उन्नत नायक श्रीराम के; तोळिन् कण्-कंधों पर; नयत्तम् वैत्ताळ्-आँखें डालीं । २२३

(पति-पत्नी दोनों विविध दृश्य देखते हैं और परस्पर अर्थभरी निगाहें डालकर रसानुभव प्राप्त करते हैं ।) दीर्घ-धनुर्धर श्रीराम ने कमलों पर आँखें उन्मीलित करते हुए चक्रवाक पक्षियों के जोड़े को देखा और अपनी अर्द्धांगिनी के उरोजों पर दृष्टि चलायी । तो श्रेष्ठ आभरणालङ्कृता सीताजी ने उज्ज्वल नीले रत्नों से युक्त बालू के टीलों को देखा और सहज रूप से अपनी दृष्टि श्रीराम के सुडौल दीर्घ कंधों पर डाली । २२३

ॐ ओदिम मीडुङ्गक् कण्ड वुत्तम नुळय लाहुम्
 शीदैतन् नडैय नोक्किच् चिरियदोर् मुरुवल् शैय्दान्
 मादव डानु माण्डु वन्दुनी रुण्डु मीळुम्
 पोदह नडप्प नोक्किप् पुदियदोर् मुरुवल् पूत्ताळ् 224

ओतिमम्-हंस को; ओतुङ्क कण्ट-किनारा खींचते देखकर; उत्तमन्-
 पुरुपोत्तम श्रीराम; उळयळ् आकुम्-पास आनेवाली; चीतं तन् नटैय नोक्कि-सीताजी
 की चाल देखते हुए; चिरियतु ओर् मुरुवल्-एक मन्दहास; चैय्दान्-किया; मातु
 अवळ् तातुम्-देवी, उन्होंने भी; आण्डु-(उस नदी पर) वहाँ; वन्दु नीर् उण्डु
 मीळुम्-आकर जल पीकर लौटनेवाले; पोतकम् नटप्प नोक्कि-गज को डग भरते
 देखकर; पुतियतु ओर् मुरुवल्-नया (विचित्र) एक हास; पूत्ताळ्-विकसित
 किया । २२४

वहाँ एक हंस (सीताजी की चाल देखकर) हटकर जाने लगा ।
 श्रीराम ने वह देखा और पास आनेवाली सीताजी की चाल देखकर मन्दहास
 किया । देवी ने एक गज को देखा जो नदी पर आकर पानी पीने के बाद
 लौट जा रहा था और अनोखा अर्थ-भरा हास हँसीं । २२४

ॐ विल्लियड् इडक्कै वीरन् वीडुगु नीराड्डिन् पाङ्गर्
 वल्लिह ण्डङ्गक् कण्डान् मङ्गदन् मरुङ्गु नोक्क
 अल्लियड् गुवळक् कात्तत् तिडैयिडै मलर्न्दु नित्तु
 अल्लियड् गमलड् गण्डा लण्णडन् वडिवड् गण्डाळ् 225

विल् इयल्-धनुर्विद्या में अभ्यस्त; तट कै वीरन्-विशालहस्त वीर; वीडुक्कु
 नीर् आड्डिन् पाङ्कर्-समृद्ध-जल नदी के पास; वल्लिकळ्-लताओं को; नुटङ्क
 कण्डान्-लचकते देखा; मङ्कल् तन्-देवी की; मरुङ्कुल् नोक्क-कमर पर दृष्टि डाली
 तो; अल्लि अम् कुवळै कात्तत्तु-अन्धकार के समान फैले पड़े कुवलय वन के; इटै
 इटै-बीच-बीच में; मलर्न्दु नित्तु-विकसित रहे; अल्लि अम् कमलम्-पंखुड़ियों
 से भरे कमलों को; कण्डाळ्-देखनेवाली (देवी) ने; अण्णल् तन् वडिवु कण्डाळ्-
 महिमावान नायक के शरीर पर दृष्टि दौड़ाई । २२५

धनुर्धर श्रीराम ने समृद्धजल वाली नदी के पास लताओं को देखा
 और उसी स्मृति में सुमध्यमा की कमर निहारी ! तब देवी ने अंधकार-सम
 रंग वाले कुवलय-वन को बीच-बीच में कमलों के साथ देखा और लगे हाथ
 महिमावान प्रभु के शरीर पर उनकी दृष्टि जा जमी । २२५

अनेयदोर् तन्मै यान् वरुविनी राड्डिन् पाङ्गर्प्
 पत्तिदरु दैय्वप् पञ्ज वडियैनुम् वरुवच् चोलेत्
 तत्तियिड मदनै नण्णित् तम्बियाड् चमैक्कप् पट्ट
 इनियपूञ् जाल यैय्दि यिरुन्दन् तिराम तिप्पाल् 226

इरामन्-श्रीराम; अनैयतु ओर् तन्मैयान्-वैसी एक स्थिति की; अरुवि नीर् आइरिन् पाङ्कर-सरिताओं की मिलकर बनी गोदावरी नदी के पास; पति तर तैयव-शीतल और दिव्य; पञ्चवटि अन्तुम्-पञ्चवटी नाम के; परव चोर्ल-सभी ऋतुओं में मनोरम रहनेवाले उपवन में; तति इटम् अतनै-एकान्त स्थान को; नण्णि-जाकर; तम्पियाल् चमैक्क पट्ट-छोटे भाई द्वारा निर्मित; इत्तिय पुम् चालै अय्यति-प्यारी मनोरम, पर्णशाला में पहुँचकर; इरुन्तन्-रहे; इप्पाल्-इसके बाद । २२६

ऐसी गोदावरी नदी के किनारे पञ्चवटी नाम के स्थान में एक उपवन में, जो सभी ऋतुओं में मनोरम और सुखद रहता था, श्रीराम आदि गये । वहाँ छोटे भाई लक्ष्मण ने एक सुन्दर पर्णशाला निर्मित की । श्रीराम उसमें (अपनी प्रिया के साथ) रहने लगे । तब शूर्पणखा वहाँ आयी । २२६

नीलमा	मणिनिऱ	निरुदर्	वेन्दनै
मूलना	शम्बैऱ	मुडिक्कु	मुन्बिन्नाल्
मेलैना	ळुयिरोडुम्	पिऱुन्नु	तान् विळै
कालमोर्न्	डुडुन्ऱै	कडिय	नोयत्ताळ् 227

मा नील मणि निऱ निरुदर् वेन्दनै-बड़े नीले रत्न के समान रंग वाली राक्षस-राजा (रावण) को; मूल नाचम् पेंड-समूल नाश करने के लिए; मुडिक्कुम्-उपाय कर चुकने की; मुन्बिन्नाल्-प्रेरणा से; मेलै नाळ्-आरम्भ के दिन में ही; उयिरोडुम् पिऱुन्नु-जन्म के साथ पैदा होकर; तान् विळै कालम् ओर्न्तु-फलदान का समय देखकर; उटन् उऱै-(जीव के) साथ रहनेवाली; कडिय नोय् अत्ताळ्-कठोर व्याधि के समान जो रही, ऐसी । २२७

शालीन नीले रत्न के समान काले रंग के राक्षस रावण का समूल नाश करने का उपाय करनेवाली विधि की प्रेरणा से शूर्पणखा वहाँ आयी । वह ऐसे रोग के समान थी, जो शरीर के साथ-साथ जन्म के अवसर पर पैदा हो जाता है और ऐन समय की प्रतीक्षा में उसके साथ लगा रहता है । २२७

शैम्बरा	हम्बडच्	चैरिन्द	कून्दलाळ्
वैम्बरा	हन्दति	विळैन्द	मैय्यित्ताळ्
उम्बरा	तवर्क्कुमोण्	डवर्क्कु	मोदनीर्
इम्बरा	तवर्क्कुमो	रुदुदि	योट्टुवाळ् 228

चैम्पु अराकम् पट-ताम्र का रंग बिछुड़ जाय, ऐसे लाल; चैरिन्त-और घने; कून्तलाळ्-केश वाली; वैम्पु-उष्णतप्त; अराकम् तति विळैन्त-कामराग-विर्वाधित; मैय्यित्ताळ्-शरीर वाली; उम्पर् आतवर्क्कुम्-देवों का; ओण् तवर्क्कुम्-और श्लाघ्य तपस्वियों का; ओतम् नीर्-समुद्रजल से; इम्पर् आतवर्क्कुम्-(वलयित) इस लोक के वासियों का; ओर् उऱ्ति ईट्टुवाळ्-एक अपूर्व हित साधन करनेवाली । २२८

उसके केश ताम्र के रंग को मात देनेवाले अरुण वर्ण के थे । उसका

शरीर कामेच्छा के उष्ण से तप्त था । वह अनजान में ही देवों, श्रेष्ठ तपस्वी लोगों और इस समुद्र-मेखला पृथ्वी के वासियों का हित करनेवाली बनी आयी । २२८

✽ वैय्यदोर्	कारण	मुण्मे	मेविताळ्
वैहलुन्	दमियळव्	वत्तत्तु	वैहुवाळ्
नौय्दितिव्	वुलहैला	नुळैयु	नोन्मैयाळ्
अय्दिन्	ळिराहव	तिरुन्द	शूळल्वाय् 229

वैय्यतु ओर् कारणम्-अनर्थकारी एक कारण (कामवासना) के; उण्मे मेविताळ्-अस्तित्व को अपनानेवाली; तमियळ्-अकेली; अ वत्तत्तिल्-उस वन में; वैकुवाळ्-वास करनेवाली; नौय्दितिन्-अनायास; इ-इस; उलकु अँलाम् नुळैयुम्-लोक में सर्वत्र पहुँचने का; नोन्मैयाळ्-सामर्थ्य वाली; इराकवन् इरुन्त चूळल् वाय्-(जहाँ) श्रीराघव रहे, उस स्थान में; अय्दितिळ्-आई । २२६

भयंकर एक कारण था, जिसके संपादनार्थ वह वन में अकेली रहती थी । (वह कारण उसकी कामलिप्सा हो सकता है या अपने पति को मारने वाले अपने भाई रावण के प्रति उसका क्रोध भी हो सकता है ।) वह सारे लोक में घुसकर चलने की शक्ति और साहस रखती थी । वह अकस्मात् उस स्थान पर आयी, जहाँ श्रीराम रहते थे । २२९

✽ अँडरु	मिमैयव	ररक्क	रँड्गण्मेल्
विण्डनर्	विलक्कुदि	यैन्न	मेलन्नाळ्
अण्डशत्	तरुन्दुयि	इरुन्द	वैयत्तैक्
कण्डन	डन्गिळैक्	किरुदि	काट्टुवाळ् 230

तन् किळैक्कु-अपने परिवारों को; इरुति काट्टुवाळ्-अन्त दिखाने (दिलाने) वाली ने; मेलन् नाळ्-पहले कभी; अँण् तरुम् इमैयवर्-सबसे प्रशंसित सूर लोगों के; अरक्कर् अँड्कळ् मेल् विण्टत्तर्-राक्षसों ने हमसे वैर किया है; विलक्कुति अँन्त-मिटाइए यह प्रार्थना करने पर; अण्टत्तु-अण्डज नाग पर; अरुन्तुयिल् तुरन्त-अपूर्व योगनिद्रा-त्यागी (अवतरित हुए); ऐयनै-महाप्रभु को; कण्टत्तळ्-देखा । २३०

अपने बन्धु-बान्धवों को अंत दरसानेवाली उसने श्रीराम पर दृष्टि लगायी । किस श्रीराम पर ? एक समय पूजनीय देवों ने विष्णु भगवान से प्रार्थना की कि राक्षस हमसे वैर करते हैं; हमें बचा लीजिए । तब परमात्मा ने अण्डज नाग पर अपना शयन और योगनिद्रा त्यागकर इस संसार पर श्रीराम का अवतार लिया था । ऐसे श्रीराम को उसने देखा । २३०

✽ शिन्दैयि	लुउँबवड्	कुरुवन्	दीय्न्ददाल्
इन्दिरड्	कायिर	नयन्	मीशड्कु

मुन्दिय	मलर्क्कणोर्	मून्ऱु	नान्गुतोळ्
उन्दियि	लुलहळित्	ताङ्कैन्	रुन्नुवाळ् 231

चिन्तैयिल् उरैपवङ्कु-मन में वास करनेवाले (मन्मथ) का; उरुवम् तीयन्तु-शरीर जल गया; इन्तिरङ्कु-देवेन्द्र के तो; आयिरम् नयत्तम्-सहस्र आँखें हैं; इचङ्कु-ईश्वर शिव के; मुन्तियिन्-अपूर्व; मलर्क्कण-कमल-सम नेत्र; ओर् मून्ऱु-तीन हैं; उन्तियिन्-नाभी से; उलकु अळित्तार्क्कु-लोकों को दिलानेवाले (विष्णुदेव) के; नान्कु तोळ्-चार हाथ हैं; अँन्ऱु-ऐसा; उन्नुवाळ्-सोचती। २३१

वह विचार करने लगी कि ये कौन हैं ? मनोवासी मन्मथ है क्या ? पर उसका शरीर तो जल गया और वह अशरीरी है ! देवेन्द्र ? उसके तो सहस्र नेत्र हैं। शिवजी हैं क्या ? उनके तो तीन आँखें हैं। विष्णु भी नहीं हो सकते, जिन्होंने अपनी नाभि से लोकों की सृष्टि की क्योंकि उनके चार हाथ होते हैं और इसके तो दो ही हैं। २३१

✽ कङ्ऱैयन्	जडैयवन्	कण्णिङ्	काय्दलाल्
इङ्ऱव	नन्ऱुत्तोड्	टिन्ऱु	कारुन्दान्
नङ्ऱव	मियङ्ऱियव्	वन्डङ्ग	नल्लुरुप्
पैङ्ऱत्त	त्तार्मेत्तप्	पैयर्त्तु	मैण्णुवाळ् 232

कङ्ऱै अम् चडैयवन्-जूट बनी सुन्दर जटा वाले की; कण्णिल्-(भाल की) आँख (की अग्नि) से; काय्दलाल्-जला देने से; इङ्ऱवन्-अरूप बना; अ अनङ्कन् तान्-वह अनंग ही; अन्ऱु तौट्टु इन्ऱु कारुम्-उस दिन से आज तक; नल् तवम् इयङ्ऱि-अच्छा तप करके; नल् उरु पैङ्ऱत्तन् आम्-यह सुन्दर रूप पा गया हो; अँत्-ऐसा; पैयर्त्तुम्-फिर भी; मैण्णुवाळ्-सोचती। २३२

वह आगे सोचती—जटाधारी शिवजी के भाल के नेत्र से निकली आग से जलकर जो अरूप बन गया था, वह अनंग उस दिन से आज तक तपस्या करके यह सुन्दर रूप पा गया क्या ? । २३२

✽ तरङ्गळि	नमैन्दुताळन्	दुयर्न्द	तालमा
मरङ्गळ्	निहर्क्किल	मलैयुम्	बुल्लिय
उरङ्गळि	नुयर्दिशै	योम्बु	मानैयिन्
करङ्गळे	यिवन्मणिक्	करमैन्	रुन्नुवाळ् 233

इवन् मणि करम्-इसके सुन्दर हाथ; तरङ्कळिन् अमैन्तु-सम और श्रेष्ठ बनकर; ताळन्तु-दीर्घ रहते हैं; उयर्न्त ताल मा मरङ्कळुम्-ऊँचे तालवृक्ष भी; निकर्क्किल-तुलना नहीं कर सकते; मलैयुम् पुल्लिय-पर्वत भी अल्प है; उरन्कळिल् उयर्-बल में बढ़े-चढ़े; तिचै ओम्पु-दिशाओं में रहकर पालन करनेवाले; यातैयिन्-गजों के; करङ्कळे-कर ही हैं; अँन्ऱु उन्नुवाळ्-ऐसा सोचती। २३३

इसके सुन्दर हाथ परस्पर सम, बड़े ही सुन्दर और आजानु लम्बे हैं।

इनकी उपमा बड़े तालवृक्ष नहीं कर सकते; पर्वत भी अल्प रह जायेंगे ।
इसलिए बल में बड़े हुए दिग्गजों के कर ही हैं इनके हाथ ! । २३३

विन्मलं	वल्लवन्	वीरत्	तोळोडुम्
कन्मलं	निहर्क्किल	कनिन्द	नीलत्तिन्
नन्मलं	यल्लु	नाम	मेरवुम्
पोन्मलं	यादलाऽ	पोरवि	लादेन्वाळ् 234

विल् मलं वल्लवन्-धनुर्युद्धसमय इसके; वीर तोळ ओट्टुम्-वीरता-मेरे कंधों से; कल मलं निहर्क्किल-नामूली पत्थर के पर्वत तुम नहीं गकने; कनिन्त नीलत्तिन्-पथके नीले रत्नों के; नन् मलं अल्लु-मुन्दर पर्वत के गया; नाम मेरवुम्-नामी मेरु पर्वत भी; पोन् मलं आत्तलान्-स्वर्ण-पर्वत होने के कारण; पोरवल्लु-समान नहीं बन सकता; अन्पाळ्-कहती । २३४

धनुर्युद्ध में समर्थ इसके वीरतापूर्ण सबल कंधों की समता साधारण पत्थर का पर्वत नहीं कर सकता । युद्ध प्रवृद्ध नीली मणि का श्रेष्ठ पर्वत कर सकता है । उसके सिवा नामी मेरु पर्वत भी नहीं कर सकता क्योंकि वह स्वर्णमय है । —ऐसी राय कहती वह शूर्पणखा । २३४

ताळुयर्	तामरंत्	तळङ्ग	टम्मोडुम्
केळुयर्	नाट्टत्तन्	गिरियिन्	ओडुत्तान्
तोळोडु	तोळित्तन्	तोडुन्नु	नोक्कुडिन्
नोळिय	वल्लकण्	नेडिडु	मार्वेन्वाळ् 235

ताळ उयर्-नाल के कारण ऊँचे रहनेवाले; तामरं तळङ्ग तम् ओट्टुम्-कमल की पंखुड़ियों सहित; केळ उयर्-उज्ज्वलता में बढ़ी; नाट्टत्तन्-आँखों वाला है; गिरियिन् ओडुत्तान्-गिरि-सम आकार का है; तोळ ओट्टु तोळित्तन्-एक कन्धे के साथ दूसरे कन्धे की; तोडुन्नु नोक्कुडिन्-बराबर एक ही दृष्टि में देखना चाहें तो; कण् नोळिय अल्ल-मेरी आँखें लम्बी नहीं हैं (दृष्टि में सामर्थ्य नहीं है); नेडिडु मार्वु अन्पाळ्-विशाल वक्ष वाला है, कहती । २३५

वह उनके रूप को अंग-अंग देखती और सराहती । इनकी आँखें कमलदल की शोभा लिये बहुत मनोरम हैं । पर्वत-समान आकार के इसके दोनों कंधों को एक साथ, एक दृष्टि में देखना कठिन है क्योंकि मेरी आँखें उतनी लम्बी नहीं रहती । इसका वक्ष बहुत विशाल है । २३५

अदिहनिन्	रौळिरुमिक्	वळहन्	वाण्मुहम्
बौदियविळ्	तामरंप्	पूर्व	योप्पदो
कदिर्म्मदि	यामेत्तिऽ	कलैह	डेयुमम्
मदियेत्तिन्	मदिक्कुमोर्	मरुवण्	उत्तमाल् 236

निनृञ् अतिकम् औल्लिहम्-स्थिर रूप से अधिक दीप्तिमान; इ अल्लकन् वाळ् मुकम्-इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल मुख; पौति अविळ् तामरै पूवै औपपतो-पंखुड़ियाँ जिसकी विकसित हो रही हैं, उस कमल की उपमा बन सकता है; कतिर् मति आस्- (शीतल-) किरण (पूर्ण) चन्द्र है (कहाँ); अँतिल्-तो; कलैकळ् तेयुम्-कलाएँ लुप्त होती जाती हैं; अ मति अँतिल्-वह चन्द्र (सम) है, कहा भी जाय तो; मतिक्कुम्-पूर्ण चन्द्र में भी; ओर् मरु उण्टु-एक कलंक है; अँन्नुम्-ऐसा कहती । २३६

स्थिर रूप से अत्यधिक शोभायमान रहनेवाले इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल आनन विकासशील कमल से उपमित हो सकता है क्या ? नहीं । उज्ज्वल किरणों वाला पूर्ण-चन्द्र उपमान बन सकता है क्या ? नहीं । क्योंकि दूसरे दिन से वह क्षीण होने लग जाता है । पूर्णता स्थायी न होने पर भी राका-चन्द्र की उपमा मान जायँ तो भी उसमें कलंक है । अतः राका-चन्द्र भी इसकी उपमा नहीं बन सकता । २३६

ॐ अँवन्शैय	विन्नियवि	वळहै	यैय्दित्तान्
अवञ्जैय्दु	तिरुवुडम्	बलन	नोऽकिन्नान्
नवञ्जैयत्	तहैयविन्	नळित्त	नाट्टत्तान्
तवञ्जैयत्	तवञ्जैय्द	तवमै	तैन्निगिराळ् 237

इत्तिय इ अल्लकै-मधुर इस सुन्दरता को; अँय्दित्तान्-जो प्राप्त है, यह; अवम् चैय-अपना रूप बिगाड़ने के लिए; तिरु उटम्पु-शरीर; अलच-कण्ट उठाए, ऐसा; अँवन् चैय-क्या साधने के लिए; नोऽकिन्नान्-तप करता है; नवम् चैयत्तकैय-नित-नवीन; इ नळित्त नाट्टत्तान्-यह कमल-सम आँखों वाला; तवम् चैय-तपस्या करे, इसके लिए; तवम् चैयत् तवम् अँन्-तप ने किया कैसा तप है; अँन्किन्नाळ्-कहती । २३७

इतनी सुन्दरता पाने का भाग्यशाली यह अपने लावण्य को नष्ट करते हुए और श्री शरीर को दुख देते हुए कौन सा कार्य साधने के लिए तपस्या करता है ? हा ! नितनवीन कमलसम आँखों वाला यह तप करे, इसके लिए तप ने क्या ही तप किया है ? —यह आश्चर्य करती ! । २३७

उडुत्तनी	राडैय	ळुरुवच्	चैव्वियळ्
पिडित्तरु	नडैयित्तळ्	पैण्मै	नन्निवन्
अडित्तलन्	दीण्डलि	तवत्तिक्	कस्मयिर्
पौडित्तल	पोलुमिप्	पुल्लैन्	रुन्नुवाळ् 238

उडुत्त नीर् आटैयळ्-समुद्रवसना; उरुव चैव्वियळ्-रूपसौन्दर्यवती; पिटि तरु नडैयित्तळ्-हथिनी-सम चाल वाली (भूदेवी का); पैण्मै तन्नृ-स्त्रीत्व श्लाघनीय है; इ पुल्लै-ये घासें; इवन् अडित्तलम् तीण्टलिन-इसके चरणों के स्पर्श से; अ मयिर्-उसके रोगटे; पौडित्तल पोलुम्-खड़े हुए हों, ऐसी लगती हैं; अँन्नु उन्नुवाळ्-ऐसा सोचती । २३८

समुद्रवसना, सौन्दर्यवती और हथिनी-सी चाल वाली भूमिदेवी का स्त्रीत्व भाग्यवान हो गया। इन घासों को देखो। भूमि के रोम के समान हैं जो इसके चरण-स्पर्श से पुलकित हो खड़े रहते हैं —यह कवित्वपूर्ण विचार करती। २३८

वाणिला	मरुवलान्	वयङ्गु	शोदियैक्
काणल	नेकौलाड्	कदिरि	नायहन्
शेणैलाम्	बुल्लौळि	शैलुत्तिच्	चिन्दयिल्
नाणिलन्	मीमिशै	नडक्कु	मैन्गिन्डाळ् 239

वाळ निला मुरुवलान्-उज्ज्वल चाँदनी-सम दाँतों वाले इसकी; वयङ्गु चोतियै-शोभायमान प्रभा को; कदिरिन् नायकन्-किरणनायक सूर्य ने; काणलने कौलाम्-देखा नहीं है शायद; चेण् अलाम् पुल्लु अँळि चैलुत्ति-(तभी तो) दूर-दूर तक अपनी मन्द प्रभा फैलाते हुए; चिन्दयिल्-मन में; नाण् इलन्-लाज-रहित; मी मिचै-आकाश में; नडक्कुम्-संचार करता है; मैन्गिन्डाळ्-यह निंदा करती। २३९

उज्ज्वल चाँदनी के समान दाँत वाले इसके शरीर की ज्योति को रश्मिपति सूर्य ने देखा नहीं है शायद क्या? तभी तो वह दूर-दूर तक अपना मंद प्रकाश फैलाते हुए, निर्लज्ज होकर, आकाश में संचार करता है! —ऐसा कहती। २३९

कुप्पुड्डु करियमाक् कुन्ऱै वैन्ऱुयर्, इप्पेरुन् दोळव निदळ्ळुक् केऱ्पदोर्
औप्पेन् वुलहमे युरैक्कि नौण्णुमो, तुप्पिनिर् रूपुडै यादैच् चैल्लुहेन् 240

कुप्पुड्डु अरिय-जिसको लाँघना मुश्किल है, उस; मा कुन्ऱै वैन्ऱु-बड़े पर्वत को हराकर; उयर्-उन्नत हुए; इप्पेरुन् तोळवन्-बड़े कन्धों वाले इसके; इतळ्ळुक्कु-अधरों की; औप्पु अँत-समता करनेवाला ऐसा; उलकमे उरैक्किन्-सारी दुनिया कहे तो भी; नौण्णुमे-वह समान हो सकता है क्या; तुप्पितिल्-प्रवाल से बढ़कर; तुप्पु उटै-(उपमा होने का) सामर्थ्य रखनेवाला; यातै चैल्लुकेन्-किसको कह सकूंगी। २४०

अलंघ्य पर्वत को भी नीचा दिखानेवाले कन्धों से शोभायमान इसके अधरों की तुलना प्रवाल से लोक करते है। तो क्या प्रवाल में वह सामर्थ्य है? लेकिन प्रवाल से बढ़कर समर्थ उपमा कहाँ खोजूँ? (तुप्पु-प्रवाल; सामर्थ्य)। २४०

नऱ्कलै मदियुऱ वयङ्गु नम्बितन्, अँऱ्कलै तिरुवरै यैय्दि येमुऱ
वऱ्कलै नोऱ्ऱन माशि लामणिप्, पौऱ्कलै नोऱ्ऱिल पोऴु मालैन्डाळ् 241

नल् कलै मति-पूर्ण-(कला)-चन्द्र की; उऱ्-तुलना करते हुए; वयङ्कुम्-शोभायमान; नम्पि तन्-इस पुरुष-नायक की; अँल् कलै-सूर्य (प्रभा)-हारी; तिरु अरै-श्रीयुक्त कमर को; अय्ति-प्राप्त करके; एम् उऱ्-आनन्द भोगने के लिए;

वड्कलै नोड्इत्त-वल्कल ने तप किया था; माचु इला मणि-निर्दोष और श्रेष्ठ; पौत्त कलै-स्वर्ण-वस्त्र ने; नोड्इल पोलुम्-तप नहीं किया शायद; अन्त्राळ्-कहती । २४१

वह वल्कल का भाग्य सराहती । कहती—सारी कलाओं से पूर्ण चन्द्र के समान शोभायमान 'इस पुरुषनायक की सूर्यप्रभाहारी श्रीकमर को लपेटकर सुखभोग करने का भाग वल्कल ने ही अपने तप द्वारा प्राप्त किया है । क्या स्वर्ण-वस्त्र ने तपस्या नहीं की है शायद ? । २४१

तौडैयमै	नैडुमळैत्	तौड्ग	लामैतक्
कडैहुळत्	रिडैनेरि	करिय	कुञ्जियैच्
चडैयैतप्	पुतैन्तिल	नैन्तिर्	रैयलार्
उडैयुयिर्	यावैयु	मुडैयु	मालैन्त्राळ् 242

तौटै अमै-बराबर और; नैटु मळै तौड्कल् आम् अन्त-लम्बी वारिश की धार के समान; कटै कुळन्नु-छोर कुंचित होकर; इटै नैरि-बीच में खूब घने; करिय कुञ्चियै-काले केश को; चटै अन्त पुतैन्तिलन् अन्तिल-जटा बनाकर नहीं रखता तो; तैयलार् उटै-स्त्रियों के; उयिर् यावैयुम्-सारे प्राण; उटैयुमाल्-मिट जाते; अन्त्राळ्-कहती । २४२

वह स्त्रियों पर तरस खाती, कहती । इनके काले केश मेघ से बराबर गिरनेवाली धार के समान लम्बे और छोर में कुंचित हैं । वे घने हैं । अगर यह उनको जटा के रूप में नहीं बाँधता तो स्त्रियों के प्राण मिट जाते (स्त्रियों के मन टूट जाते) । २४२

नाडिय	नहैयणि	नल्ल	पुल्लिन्नाल्
एडिय	शैव्वियै	यियर्	मोवैन्ना
माडहन्	मुळुमणिक्	करशित्	माट्चिदान्
वैशैरु	मणियिन्नाल्	विळङ्गु	मोवैन्त्राळ् 243

नाडिय-शोभायमान; अणि नकै-सुन्दर आभरणों में; नल्ल-श्रेष्ठ; पुल्लिन्नाल्-इसके शरीर का आलिंगन करें; एडिय चैव्वियै-(तो वे) और अधिक सुन्दरता को; इयर्कुमो-प्रदान कर सकेंगे क्या; अन्ना-सोचकर; माड् अकल्-लाजवाब; मुळु मणिक्कु अरचिन्-सारे रत्नों के राजा श्रीकौस्तुभ का; माट्चि-शान; वैड् और मणियिन्नाल्-दूसरी एक मणि से; विळङ्कुमो-प्रकाशित हो सकता है क्या; अन्त्राळ्-कहती । २४३

वह उनको आभरणभूषित के रूप में कल्पना करती है और पूछती है कि क्या अति सुन्दर आभरणों में अति श्रेष्ठ आभरणों को चुनकर इसको पहनाएँ तो वे आभरण इसकी दर्शनीयता को बढ़ा सकेंगे ? वह निश्चय करती कि मणियों में श्रेष्ठ श्रीकौस्तुभमणि का शान और रूप-गौरव अन्य रत्नों द्वारा बढ़ाया जा नहीं सकता । २४३

करन्दिल	निलक्कण	मैडुत्तुक्	काट्टिय
परन्दरु	नान्मुहन्	पळिप्पुडु	शान्तरो
इरन्दिव	त्तिणैयडिप्	पौडियु	मेरुक्किलाप्
पुरन्दर	नुलहैलाम्	पुरक्किन्	शानैन्डाळ् 244

इवन् इणै अटि-इसके चरणद्वय की; पौटियुम्-धूलि की महिमा; इरन्तुम् एरुक्किला-याचना करने पर भी जो प्राप्त न कर सकेगा; पुरन्तरन्-वह पुरन्दर; उलकु अलाम्-सारे लोकों का; पुरक्किन्शान्-पालन करता है; करन्तिलन्-विना छिपाये; इलक्कणम् अट्टुत्तु काट्टिय- (सामुद्रिका-) लक्षणों के साथ इनकी रचना करनेवाले; परम् तरु नान्मुक्कन्-महिमायुक्त ब्रह्मा; पळिप्पु उड्डान् अरो-अपराधी हो गया न; अन्डाळ्-कहती । २४४

इसके चरणद्वय की धूलि के समान भी पुरन्दर नहीं बन सकता । वह याचना कर पा लेने का प्रयास करे तो भी उसे इसकी-सी महिमा नहीं हो सकती । तो भी वह तीनों लोकों का पालन करता है ! ब्रह्मा ने बिना किसी दुराव के सारे लक्षणों से युक्त कराके इसको रचा है तो क्या लाभ है ? इसको तपस्वी बनाने से ब्रह्मा को अपयश मिल गया है । २४४

नीत्तमुम्	वात्तमुडु	गुरुह	नैर्जिडैक्
कोत्तवन्	बुणर्विडैक्	कुळित्तु	मीक्कोळ
एत्तवुम्	बरिवित्तौन्	रीह	लान्बोरुळ्
कात्तवन्	बुहळैन्	तेयुडु	गड्पित्ताळ् 245

नीत्तमुम्-समुद्रजल; वात्तमुम्-और आकाश को; कुरुक-छोटा दिखने देते हुए; नैर्चु इटै कोत्त-अपने मन में अंकित; अत्तु उणर्वु इटै-कामेच्छा में; कुळित्तु-मग्न होकर; मी कौळ-उस राग के बढ़ने से; एत्तवुम्-याचकों की प्रार्थना सुनकर भी; बरिवित्तु-अनुताप करके; अन्नु ईकलान्-कुछ न देनेवाले; पोरुळ् कात्तवन् पुक्कळ् अन्त-धन के परिग्रही (रक्षक) के यश के समान; तेयुम् कड्पित्ताळ्-क्षीणप्राय स्त्रीत्व (शील-संयम) वाली । २४५

शूर्पणखा के मन में कामसागर इतना भर आया कि उसके विस्तार के सामने समुद्र का जल और आकाश का फैलाव छोटे दिखे । उसमें मग्न उसके मन में ज्यों-ज्यों कामेच्छा बढ़ती गयी, त्यों-त्यों उसका स्त्रीसहज शील और संयम उस लोभी धनवान के यश के समान छीजने लगे, जो प्रार्थना करनेवाले याचक से सहानुभूति नहीं करता और न ही कुछ देता और धन की रक्षा करता है । २४५

❀ वात्तुनिल्	वरैन्दोर्	माद	रोवियम्
पोत्तुन	णिन्तुळ	पुळङ्गु	नैर्जित्ताळ्
तोत्तुडन्	शुडर्मणित्	तोळि	ताट्टङ्गळ्
ऊत्तिन्	परिक्कवो	रुड्डम्	वैरुडिलाळ् 246

पुच्छकुम् नैवचिताळ्—(काम-) तप्तमना; तोनुरल् तन्—चक्रवर्ती—तनय के;
 मणि तोळिन्—दीप्त-मणि—सम भुजाओं में; अन्नरित नाट्टङ्कळ्—गड़ी आँखों की;
 रिक्क—निकालने की; ओर् ऊरुम् पेरुल्लाळ्—आवश्यक शक्ति नहीं रखती थी;
 वान् ततिल् वरैन्त—आकाश में खींचे हुए; ओर् मातर ओवियम् पोन्नुरत्तळ्—एक स्त्री
 (प्रेम की स्त्री) के चित्र के समान लगी; निन्नुरत्तळ्—खड़ी रही। २४६

उसका मन कामतप्त हो गया। उसमें अपनी दृष्टि को, जो श्रीराम के कांतिमय कंधों पर गड़ गयी थी, उखाड़ लेने की क्षमता नहीं रह गयी थी। इसलिए वह बीच आकाश में ही निस्पंद—सी खड़ी रह गयी। तब वह आकाश में खींचे गये स्त्रीचित्र (या प्रेमचित्र) के समान दिखी। २४६

✽ निन्नुरत्त	ळिरुन्दव	नडिय	मारबहम्
औनूर्वै	त्तुर्त्ति	लमुद	मुण्णिनुम्
पौनूर्वैन्	पोक्किति	यरिदु	पोर्लैनाच्
चैन्नेर्दिर्	निस्पदोर	शैय्हे	तेडुवाळ् 247

निन्नुरत्तळ्—स्तब्ध खड़ी रही; इरुन्तवन्—वहाँ स्थित उसका; नैडिय मारपु
 अक्कम्—विशाल वक्षस्थल पर; औनूर्वैन्—लग जाऊँगी; अन्नुर अत्तिल्—(वह) नहीं
 (हो सका) तो; अमृतम् उण्णिनुम्—अमृत खाऊँगी तो भी; पौनूर्वैन्—(इस काम-
 वेदना के कारण) मर जाऊँगी; पोक्कु इति अरितु पोल् अँता—कोई गति दूसरी नहीं
 शायद; यह सोचकर; अँतिर् चैन्नुर निस्पतु—सामने जाकर स्थित होने का; ओर् चैय्के
 तेडुवाळ्—एक बहाना ढूँढ़ती। २४७

चित्र के समान स्थिर जो खड़ी रही, उस शूर्पणखा के मन में यह संकल्प उठा। वहाँ रहनेवाले उस पुरुष के विशाल वक्षस्थल में लिपट जाऊँगी। अगर वह नहीं हो सकता तो अमृत भी मुझे जीवित नहीं रख सकता—मैं मर जाऊँगी। कोई दूसरा चारा नहीं दीखता। अब श्रीराम के सामने आकर खड़ी होने के लिए मन में एक योग्य बहाना ढूँढ़ने लगी। २४७

✽ अयिरुडै	यरक्कियैव्	वुयिरु	मीट्टदोर्
वयिरुडै	याळैन्	मरुक्कु	मादलाल्
कुयिरुडै	कुदलैयोर्	कौव्वै	वायिळ्
मयिरुडै	रियलैळिल्	मरुव	नन्नुरत्ता 248

अयिरु उटै अरक्कि—वक्रदांत वाली राक्षसी; अँ उयिरु इट्टतु—सभी जीवों को
 जिसमें दफना लिया है, उस; ओर् वयिरु उटैयाळ्—उदर वाली है यह; अँत-
 समझकर; मरुक्कुम् आतलाल्—इनकार कर देगा, इसलिए; कुयिल् तौटर्—कोयल-
 सम; कुतलै—मधुर वाणी; ओर् कौव्वै वाय्—बिम्बाधर; इळमयिल् तौटर्—
 (इनके साथ) बालमयूर की—सी छटा वाली; इयल् अँळिल्—स्वाभाविक शोभा को;
 मरुवल्—अपनाना; नन्नुर अँता—अच्छा, समझकर। २४८

उसे संशय था कि श्रीराम से इस रूप में मिलूँ तो वे अस्वीकार कर देंगे। वे यह सोचेंगे कि इस राक्षसी का पेट सभी जीवों को जीवित ही गाड़ देने का गड्ढा है। इसलिए उसने विचार किया कि मैं एक सुन्दरी का रूप धारण करूँगी। उसकी वाणी कोकिल की-सी होगी। उसके अधर बिबफल के समान लाल होंगे। उसकी चमक-दमक बालमयूर की-सी होगी। और समूची सुन्दरता स्वाभाविक होगी। हाँ वही अच्छा कार्य होगा। २४८

ॐ पङ्कयच्च	चैल्वियै	मन्तत्तुप्	पाविया
अङ्गैयि	तायमन्	दिरत्तै	यायन्दत्तळ्
तिङ्गळिर्	चिउन्दोळिर्	मुहत्तत्तळ्	चैव्वियळ्
पौङ्गोळि	विशुम्बिनिर्	पौलियत्	तोन्डित्ताळ् 249

पङ्कय चैल्वियै-पंकज की स्वामिनी श्रीलक्ष्मी को; मन्तत्तु पाविया-मन में ध्यान करके; अम् कैयित् आय-खूब वश में रहे; मन्तिरत्तै-श्रीलक्ष्मी-मन्त्र को; आयन्दत्तळ्-जपा; तिङ्कळिल् चिउन्तु-चन्द्र से बढ़कर; ओळिर् मुक्त्तत्तळ्-शोभायमान मुख वाली; चैव्वियळ्-और तरुण सुन्दरी बनी; पौङ्कु ओळि-अपनी छिटकती छटा को; विचुम्पितिल् पौलिय-आकाश में फैलने देते हुए; तोन्डित्ताळ्-प्रकट हुई। २४९

उसने पंकजा श्रीलक्ष्मीदेवी का ध्यान किया। उसने लक्ष्मीदेवी का मन्त्र वश कर रखा था। उसने वह मन्त्र जपा। तब वह पूर्ण-चन्द्र से भी बढ़कर प्रभा छिटकानेवाला मुख, तरुण सौन्दर्य—इनसे युक्त होकर आकाश में अपना रूप-लावण्य-प्रकाश फैलाती हुई प्रकट हो गयी। २४९

पञ्जियौळि	विज्जुकुळिर्	पल्लव	मनुङ्गाच्च
चैज्जैविय	कज्जनिहर्	शोडि	पैयर्प्पाळ्
अज्जौलिळ	मज्जैयै	वन्तमै	मिन्नुम्
वज्जियै	नज्जमै	वज्जमहळ्	वन्दाळ् 250

ओळि विज्जु-आभा में बढ़कर; पञ्चि-लाल रुई व; कुळिर् पल्लवम्-शीतल पल्लव को; अत्तुङ्क-(परास्तना का) दुख देते हुए; चैम् चैविय-लाल और सुन्दर; कज्जम् निकर्-कंज-सम; शोडि-अपने छोटे पैरों को; पैयर्प्पाळ्-रखती हुई; अम् चोल् इळ मज्जै अँत-सुन्दर बोली वाले बालमयूर के समान (छटा वाली); अन्तम् अँत-हंस के समान (चाल वाली); मिन्नुम् वज्जि अँत-चमकती विजली के समान; नज्जम् अँत-और विष के समान; वज्ज मकळ्-बंचकी नारी; वन्दाळ्-आई। २५०

फिर वह बंचकी निशाचरी श्रीराम के सामने आयी। कैसे? उसके लाल, कंजतुल्य छोटे पैर लाल रुई और शीतल पल्लवों की मात दे रहे थे। वह कोकिल के समान मधुर-मधुर बोलनेवाले बालमयूर के

मान आभा वाली थी । वह विजली की लता के समान और विषतुल्य
। ऐसी वह मनोरम रूप से पग धरती हुई आयी । २५०

पौन्तीळुहु	पूविनीडु	पूविलुई	पूवै
पित्तैळिल्होळ	वाळिणै	पिउळ्न्दीळिर्	मुहत्ताळ
कन्तियैळिल्	कौण्डु	कलैत्तड	मणित्तेर्
मित्तिळिव	तन्मैयदु	विण्णिळिव	दैन्त 251

पौन् औळकु—स्वर्ण-वर्ण के साथ; पूविन् औटु—और कान्ति के साथ; पूविल्
ई—कमल के फूल पर रहनेवाली; पूवै—देवी, श्रीलक्ष्मी को; पित् औळिल् कोळ्—
सौंदर्य में पीछे ढकेलनेवाली सुन्दरता लेकर; वाळ् इणै—तलवार (-सम आँखों) के जोड़े;
पिउळ्न्तु औळिर्—जिसमें चलित होकर छवि दे रहे थे, वह; मुहत्ताळ—मुख वाली;
कन्ति औळिल् कौण्डु—एक अनोखी सुन्दरता लिये; कलै तड मणि तेर्—चित्रमयी
विशाल सुन्दर रथ; मित् इळिव तन्मैयदु—विजली गिरती-सी; विण् इळिवतु अन्त—
आकाश से उतरता हो, ऐसा । २५१

शूर्पणखा स्वर्णवर्ण, कमलजा से भी बढ़कर सुन्दरी बन गयी ।
उसका मुख दो चंचल और तलवार-सम आँखों के साथ बहुत ही छविमान
दिखा । वह आकाश से नीचे जब उतरती आयी तब वह एक अनोखे,
चित्र-प्रतिमाओं से अलंकृत विशाल और सुन्दर रथ के समान लगी, जो
विजली उतरती हो ऐसा आकर्षण लेकर आकाश से उतर रहा था । २५१

ॐ कान्तिलुयर्	कड्पह	मुयिर्त्त	कदिर्वल्लि
मेत्तिनन्ति	पैरुविळै	कामनैरि	वाशत्
तेत्तिन्मौळि	युर्रिनिय	शैव्विनन्ति	कौण्डोर्
मानिन्विळि	पैरुमयिल्	वन्ददैन्	वन्दाळ 252

ओर् मयिल्—एक मोर; कान्तिल् उयर्—सुगन्धि में बड़े हुए; कड्पकम् उयिर्त्त—
कल्पकतरु-सृष्ट; कतिर् वल्लि—उज्ज्वल कामलता का; मेत्ति नन्ति पैरु—रूप-सौंदर्य
पाकर; काम नैरि—काम-मार्ग में; वाच तेत्तिन् मौळि उर्रु—सुवासपूर्ण शहद की-सी
वोली के साथ; इत्तिय चैव्वि नन्ति कौण्डु—मनोरम छटा से खूब पूर्ण होकर; मान्
विळि पैरु—मृग के-से नयन ले; वन्ततु अन्त—आया हो, ऐसा; वन्ताळ—आई । २५२

फिर वह भूमि पर एक विचित्र मयूर के समान चलती आयी । कैसा
मयूर ? समझिए कि एक मयूर को सुवासित कल्पतरु द्वारा सृजित आभा-
युक्त कल्पवल्ली का रूप मिल गया । सुवासपूर्ण शहद-सी मधुर बोली,
बड़ी ही आकर्षक सुन्दरता और हरिण की-सी आँखें प्राप्त हो गयीं । ऐसा
एक मयूर पैदल आता हो ऐसे आकर्षण के साथ वह आयी । २५२

ॐ नूबुरमु	मेहलैयु	नूलुमर	लोदिप्
पुपुरलुम्	वण्डमिवै	पूशलिड	मोदै

तामुरैशैय् हिन्दुदौरु तैयल्वरु मन्नाक्
कोमहनु मत्तिशं कुरित्तनन् विळित्तान् 253

नूपुरमुम्-नूपुर और; मेकलयुम्-और मेखला; नूलुम्-हार; अरुल् ओति-काले बालू के समान केश के; पू मुरलुम्-पुष्पों पर गुंजार करनेवाले; वण्डुम्-धरमर; इवै-इनके; पूचल् इटुम् ओतै-जो मचाते थे, वह शब्द; और तैयल् वरुम् अन्ना-एक स्त्री आ रही है, ऐसा; उरै चैय्किन्नुरु-घोषणा कर रहा है; कोमकत्तुम्-चक्रवर्ती-सुत ने भी; अ तिचै-उस दिशा; कुरित्तनन्-को लक्ष्य करके; विळित्तान्-देखा । २५३

उसके नूपुर, मेखला, हार, केशालंकार के पुष्प पर गुंजार करनेवाले अलिकुल सब हर्षरव कर रहे थे । वह शब्द यह घोषणा कर रहा था कि कोई स्त्री आ रही है । चक्रवर्तीसुत दाशरथी ने यह जाना और उस दिशा में दृष्टि दौड़ाई, जहाँ से यह ध्वनि आ रही थी । (तुलसीदासजी ने इस ध्वनि को मदनदुंदुभी कहा है, पर वह सीताजी के मिलन के मंगलमयी पवित्र प्रसंग में ।) । २५३

❖ विण्णरुळ् वन्ददौरु मैल्लमुद मैत्त
वण्णमुलै कौण्डिडै वण्डुगवरु पोळ्दत्
तैण्णरुळि येळ्मै तुडैत्तैळ्मैय्ज् जानक्
कण्णरुळ्शैय् कण्णनिरु कण्णिर्नेदिर् कण्डान् 254

विण्-आकाश (स्वर्ग); और मैल् अमुत्तम्-अनुपम और नरम सुधा; अरुळ वन्ततु अन्न-देने की कृपा करने आया जैसे; वण्ण मुलै कौण्डु-आकर्षक उरोजों के साथ; इटै वण्डुक्-कमर लचकाते हुए; वरु पोळ्त्ततु-जब वह आई तब; अण् अरुळि-बुद्धिशक्ति प्रदान कर; एळ्मै तुडैत्तु-अज्ञान दूर करके; अळुम्-ऊपर उगने-वाली; मैय् जात कण् अरुळुम्-सच्ची ज्ञान-दृष्टि दिलाने की कृपा करनेवाले; कण्णन्-सर्वनेत्र श्रीराम ने; इरु कण्णिन् अतिर् कण्डान्-अपनी दोनों आँखों से (उसको) देखा । २५४

स्वर्ग अमृत दिलाने लाया हो, ऐसे स्तनों वाली और लचकती कमर वाली, शूर्पणखा जब आ रही थी तब श्रीराम ने, जो जीवों को विवेक देकर, तद्वारा अज्ञान मिटाकर, फलस्वरूप ज्ञानदृष्टि दिलानेवाले, सब नेत्रों के नेत्र, परब्रह्म हैं, अपनी दोनों आँखों से उसको देखा । २५४

❖ पैरुळैय नाहरुल हिर्पिर्दिदु वान्तिल्
पारुळैयि निल्लदौरु मैल्लुरुवु पारा
आरुळैय डङ्गुमळ् हिर्कवदि युण्डो
नेरिळैयर् यावरिव णेरैन् निनैन्दान् 255

पैर् उळैय-बहुत विशाल थल वाला; नाकर् उलकिल्-नागलोक में; पिर्दिदु वान्तिल्-उससे भिन्न स्वर्गलोक में; पार् उळैयिल्-भूतल में; इल्लतु-अप्राप्य; और-

अनुपम एक; मैल् उरवु पारा-कोमल रूप को देखकर; आर्-कौन; उल्लै अटङ्कुम् अल्लकिङ्कु-इसमें समाविष्ट सुन्दरता का; अवति उण्टो-ठिकाना है क्या; नेरिल्लैयर्-आभरणधारिणी नारियाँ; यार् इवळ् नेर्-कौन इसके समान हैं; अँत नितैन्तान्-ऐसा सोचा (श्रीराम ने) । २५५

विस्तृत नागलोक में, उससे भिन्न स्वर्ग में, या भूलोक में कहीं भी अप्राप्य था एक ऐसा कोमल रूप । श्रीराम सोचने लगे कि यह कौन है ? इसमें समाविष्ट सुन्दरता का ठिकाना भी है ? कौन आभरणभूषिता नारियाँ हैं जो इसकी समानता कर सकती हैं ? । २५५

ॐ अव्वयित्तव्	वाशैतन	हत्तुडैय	वन्नाळ्
शैव्विमुह	मुत्तियडि	शैडगैयि	निरैञ्जा
वैव्विय	नेडुङ्गणयिल्	वीशिययल्	पारा
नव्वियि	नौदुङ्गियिर्	नाणियय	निन्नाळ् 256

अ वयित्त-उस समय; अ आचै-वह राग; तत्तु अकत्तु उटैय-अपने मन में रखनेवाली; अन्नाळ्-वह (शूर्पणखा); चैव्वि मुक्कु मुत्ति-श्रीराम के मनोहर मुख को देख; अटि-उनके श्रीचरणों को; चैम् कैयित्त इरैञ्चा-लाल हाथ जोड़कर नमस्कार करके; वैव्विय-सालनेवाला; नेटुम् कण्-दीर्घ आँखों का; अयिल्-(दृष्टि रूपी) भाला; वीचि-फेंककर; अयल् पारा-आँख चुराकर दूसरी ओर देखती हुई; नव्वियित्त औडुकि-हरिण के समान एक ओर हटकर; इरै नाणि-थोड़ा लजाती हुई; अयल् निन्नाळ्-(श्रीराम के) पास खड़ी रही । २५६

तब तक शूर्पणखा श्रीराम के मुख के सामने आ गयी । उसने अपने मनोरम हाथ जोड़कर श्रीराम के चरणों को नमस्कार किया । अपने लाल डोरों सहित नेत्रों की भाला-सम दृष्टि श्रीराम पर फेंकी । झट आँख चुराकर दूसरी ओर देखने लगी । भीरु मृगी के समान थोड़ा हटी । लाज का किञ्चित् प्रदर्शन किया । इन सब नखरों के साथ वह उनके पास खड़ी रही । २५६

ॐ तीदिल्वर	वाहतिरु	निन्वरवु	शेयोय्
पोदवुळ्	दैम्मुळैयौर्	पुण्णियम	दन्त्रो
एटुपदि	येदुपैयर्	यावरु	वैन्नान्
वेदमुदल्	पेदैयव	डुत्तिलै	विरिप्पाळ् 257

चेयोय्-अपरिचित (या श्रीलक्ष्मी-सम) स्त्री; निन् तिरु वरवु-तुम्हारा श्रेष्ठ आगमन; तीतु इल्-अमंगलहीन (शुभ); वरवु आक-आगमन हो; पोत-तुम आओ इसका; अँम् उल्लै-हमारे पास; ओर् पुण्णियम् अतु अन्त्रो-एक सुकृत रहा है न; एतु पति-कौन सा स्थान; एतु पयर्-कौन सा नाम; यावर् उरवु-रिश्तेदार कौन हैं; वेत्त मुतल्-वेदमूल ने; अन्नान्-पूछा; पेटै अवळ्-अवोध ने; तन् तिलै-अपना वृत्तान्त; विरिप्पाळ्-विस्तार से कहा । २५७

श्रीराम ने सम्भाषण आरम्भ किया । आगन्तुक अजनबी ! (चेयोय् का अर्थ लक्ष्मी भी हो सकता है ।) तुम्हारा वर आगमन अमंगलरहित शुभ आगमन हो ! हमने पुण्य किया है, यह सच है तभी तो तुम आयी हो ! तुम्हारा वासस्थान कौन सा ? नाम क्या ? तुम्हारे रिश्तेदार कौन हैं ? —वेदमूल (बोध का आधार) श्रीराम ने प्रश्न किया । अबोध (बोध-हीन) शूर्पणखा अपना वृत्तान्त विस्तार से सुनाने लगी । २५७

❖ पूविलोन् पुदल्वन् मैन्दन् पुदल्विमुप् पुरङ्गळ् शैर्ऱु
 शेवलोन् तुणैव नान्न शैङ्गैयोन् इङ्गै तिक्किन्
 मार्वैलान् दौलैत्तु वैळ्ळि मलैयैडुत् तुलह मून्ऱुम्
 कावलोन् पिन्नै काम वल्लियाड् गन्ति यैन्ऱाळ् 258

पूविलोन्-कमलासन के; पुतल्वन् मैन्दन्-पुत्र के पुत्र की; पुतल्वि-बुहिता हैं; सु पुरङ्गळ् चैर्ऱु-त्रिपुरदाहक; शेवलोन्-ऋषभवाहन के; तुणैवन् आत्त-मित्र; चैम् कैयोन्-लाल (दान देते-देते लाल बने) हाथ वाले कुबेर की; तङ्क-छोटी बहिन; तिक्किन् मा-दिग्गज; अलाम् तौलैत्तु-सारे भगाकर; वैळ्ळि मलै अदुत्तु-चाँदी के पर्वत (कैलास) को उठाया (जिसने); उलकम् मून्ऱुम् कावलोन्-लोकत्रयी का पालक; पिन्नै-उस रावण की अनुजा; काम वल्लि-कामवल्ली; आम्-नाम की; कन्ति-कन्या; यैन्ऱाळ्-(अपना परिचय) कहा । २५८

कमलासन ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) के पुत्र (विश्ववा) की पुत्री हैं । त्रिपुर जलानेवाले ऋषभवाहन शिवजी के मित्र दान देते-देते लाल बने हाथ वाले कुबेर की बहिन हैं । दिग्गजों को भगानेवाले, चाँदी के पर्वत (कैलास) को उखाड़नेवाले त्रिलोकाधिपति रावण की अनुजा हैं । मेरा नाम कामवल्ली है । (बार-बार शिवजी की चर्चा त्रिपुरांतक, त्रिपुरदाहक आदि के साथ आयी है । उसका संक्षिप्त विवरण यों है— तारकासुर के पुत्र विद्युन्माली, तारकाक्ष और कमलाक्ष थे । इन्होंने कठोर तपस्या की और अपार बल-वैभव पा लिया । मय ने इनके लिए स्वर्ण, चाँदी और लोहों के प्राचीरों से युक्त तीन नगर निर्मित किये । ये नगर जहाँ चाहे उड़े जा सकते थे । वे तीनों असुर इनका उपयोग कर सर्वत्र जाते और सितम ढाते । देवों और मुनियों ने मिलकर शिवजी से प्रार्थना की । शिवजी ने भूमि को रथ, वेदों को चार अश्व, ब्रह्मा को सारथी, मेरु को धनुष, आदिशेषनाग को प्रत्यंचा, विष्णु रूपी पंखों से युक्त अग्नि को अस्त्र और अन्य देवों को अन्य अस्त्र-शस्त्र बना लिया । फिर युद्धसन्नद्ध हो चले । उन्होंने एक विचित्र हास के साथ उन असुरों को मय उनके नगरों के जला डाला । शूर्पणखा ने अपनी वंशावली की तीन पीढ़ियों की चर्चा की । क्योंकि उसका उद्देश्य 'विवाह' था ।) । २५८

अव्वुरे केट्ट वीर नैयुरु मन्तत्तान् शैय्यहै
 शैव्विदन् इरियलाहुम् जिडिदि नैन्ऱु णराच् चैङ्गण
 वैव्वुरु वमैन्दोत् इङ्गै यैत्तुडु मैय्मै याहिल्
 इव्वुरु वमैन्द तन्मै यियम्बुदि विरैवि नैन्ऱान् 259

अ उरै केट्ट-वह कथन सुनकर; ऐ उरु मन्तत्तान्-शंकितमन होकर; चैय्कै चैव्वितु अन्ऱु-इसके (हाव-भाव और) कार्य अच्छे नहीं; चिरित्तिन् अरित्तल् आकुम्-थोड़ा समझना आवश्यक है; अन्ऱु उणरा-ऐसा महसूस करके; चैम् कण्-रक्तम आँखों और; वैम् उरु अमैन्तोत्-भयंकर रूप वाले (रावण) की; तड्कै अन्ऱुत्तु-बहिन कहा जो, सो; मैय्मै आकिल्-सच है तो; इ उरु अमैन्त तन्मै-यह रूप (कैसे) मिला, वह प्रकार; विरैविन् इयम्पुत्ति-शीघ्र बताओ; अन्ऱान्-पूछा। २५६

शूर्पणखा का यह कथन सुनकर (उसकी अदाओं से) श्रीराम के मन में कुछ सन्देह पैदा हुआ। श्रीवीरराघव ने सोचा कि इसका कार्य भला नहीं लगता। थोड़ा जाँचकर समझा जा सकता है। यह सोचकर उन्होंने शूर्पणखा से पूछा कि लाल आँखों वाले और भयंकर रूप वाले रावण की बहिन होने की बात सत्य है, तो तुम्हें यह रूप कैसे मिला? शीघ्र बताओ। २५९

तूयवन् पणिया मुत्तन् जौल्लुवाळ् शोर्वि लाळम्
 मायवल् लरक्क रोडुम् वाळ्वित्तै मदक्कि लादे
 आय्वुरु मन्तत्ते ताहि यरुन्दलै निरुपदानेन्
 तीवित्तै तीय नोऱुत्तु तेवरिर् पेंडु देन्ऱाळ् 260

तूयवन् पणिया मुत्तन्-पवित्र पुरुष श्रीराम के पूछने पर; चोर्वु इलाळ्-उत्सुक उसने; अ माय वल् अरक्करोट्टम्-उन माया में समर्थ राक्षसों के साथ; वाळ्वित्तै-जीवन को; मत्तिक्किलात्ते-उचित न मानकर; आय्वु उरु मन्तत्तेन् आकि-विवेक से भरे मन वाली होकर; अरुम् तलै निरुपतु आत्तेन्-धर्मावलम्बी बनी; तीवित्तै तीय-पाप जलाने (मिटाने) के लिए; नोऱुत्तु-तपस्या करके; तेवरिल्-देवों की कृपा से; पेंडु- (जो) पाया (वह) यह है; अन्ऱाळ्-उत्तर दिया। २६०

पवित्र मन वाले श्रीराम ने जब ऐसा प्रश्न किया, तो शूर्पणखा समझ सकती थी कि श्रीराम इसके मन की बात माननेवाले अपवित्र-चरित्र नहीं है। तो भी वह हतोत्साह होनेवाली नहीं थी। उसने उत्तर दिया कि मैं उन मायाकार्य में प्रवृत्त और चतुर राक्षसों के साथ रहना उचित नहीं समझकर विवेकशीला बन गयी हूँ। धर्ममार्गावलम्बी हो गयी। अपने सभी पापों को, तपस्या करके जला दिया। देवों की कृपा से प्राप्त यह रूप है। २६०

इमैयवर् तलैव तेयु मैळिमैयि नेवल् शैय्युम्
 अमैदियि तुलह मून्ऱु माळ्बवन् इङ्गै याहिल्

शुमैयुरु शैल्वत् तोडुन् दोन्ऱले तुणैयु मिन्ऱित्
तमियणी वरुदऱ् कौत्त तन्मैयैन्ऱ् रेय लैन्ऱान् 261

तैयल्-नारी; इमैयवर् तलैवन् ए उन्-देवेन्द्र भी; अळिमैयिन्-दीन बनकर;
एवल् चैय्युम्-जिसकी सेवा करता है; अमैतियिन्-उस स्थिति में; उलकम्-मून्डम्
आळपवन्-जो त्रिलोकाधिपत्य करता है, उस रावण की; तड्कै आकिल्-वहिन हो तो;
चुमै उरु-गुरु; शैल्वत्तोडुम्-धन-वैभव के साथ; तोन्ऱले-नहीं दिखाई देती; तुणैयुम्
इन्ऱि-सहायक से रहित; तमियळ्-अकेली; वरुत्ऱकु-आओ, इसका; औत्त
तन्मै-योग्य कारण; अन्-कौन सा है; अन्ऱान्-पूछा । २६१

श्रीराम ने आगे पूछा— हे नारी ! तुम कहती हो कि रावण की
भगिनी हूँ । रावण त्रिलोकाधिपति है । देवों के राजा देवेन्द्र भी उसका
किकर होकर उसकी सेवा-टहल करता है । वह बड़ा ही श्रीमंत है ।
उसके भारी धन-वैभव के योग्य रूप में तुम नहीं दिखाई देती । और भी
तुम अकेली और कोई साथी-संगी के बिना आयी हो । ऐसा दीन-हीन
और असहाय आना क्योंकि हुआ ? कारण क्या है ? । २६१

वीरन्ऱः(ह्) डुरैत्त लोडु म्मैयिलाळ् विमल यानच्
चीरिय रत्तलार् माट्टुच् चैर्हिलैन्ऱ् रेवर् पालुम्
आरिय मुनिवर् पालु मडैन्दनै निरैव वीण्डोर्
कारिय मुण्मै निन्ऱैक् काणिय वन्दे तैन्ऱाळ् 262

वीरन्-वीर के; अ.तु-वह; उरैत्तलोडुम्-कहने पर; म्मै इलाळ्-असत्यवादी
ने; विमल-निर्मल; यान्-मै; अ चीरियर् अत्तलार् माट्टु-उन श्रेष्ठताहीन
(नीच) लोगों से; चैर्हिलैन्-नहीं मिल सकती; तेवर् पालुम्-देवों के पास और;
आरिय मुनिवर् पालुम्-सुशील मुनियों के पास; अडैन्तनैन्-आकर रहती हूँ; इरैव-
नाथ; ईण्डु ओर् कारियम् उण्मै-इधर मेरा एक कार्य है, इसलिए; निन्ऱै काणिय
वन्देन्-तुमको देखने आई; अन्ऱाळ्-कहा । २६२

श्रीवीरराघव के इस प्रश्न के उत्तर में उस मिथ्याभाषिणी ने कहा
कि विमल वीर ! मैं उन नीच लोगों से नहीं मिलती । देवों और मुनियों
से ही सम्पर्क रखती हूँ । प्रभु ! मेरा एक कार्य है । उसी के सिलसिले
में मैं तुमसे भेंट करने आयी हूँ । २६२

अन्नव डुरैत्त लोडु मैयन् मरिदऱ् कौव्वा
नन्नुदन् महळिर् शिन्दै नन्ऱैरिप् पाल वल्ल
पिन्निडु तैरियु मँन्नाप् पय्यवळैत् तोळि यैन्ऱाल्
अन्नका रियत्त शैल्लः(ह्) दियैयुमे लिळैप्प लैन्ऱान् 263

अन्नवळ्-उसके; उरैत्तलोडुम्-कह चुकते ही; ऐयन्-प्रभु ने भी; नल्
नुतल् मकळिर् चिन्तै-सुन्दर भाल वाली इस स्त्री का अभिप्राय; अरितऱकु औव्वा-

जानने में आनेवाला नहीं होता; नल् नैरि पाल अल्ल-अच्छे पथ पर जानेवाला नहीं लगता; इतु-यह (इसका सत्य); पिन् तैरियुम्-पीछे मालूम होगा; अँनूता-विचार करके; पैय वळै तोळि-भुजबलय-भूषित कंधों वाली; अँन् पाल-मेरे पास; अँनूत कारियत्तै-कौन से कार्य की अपेक्षा करती हो; चोल्-कहो; अ.तु इयैयुमेल-वह युक्त हो तो; इळैप्पल्-करूँगा; अँनूडान्-कहा । २६३

उसका वह उत्तर सुनकर श्रीराम ने सोचा कि इस सुन्दर भाल वाली के (मन के अंदर रहनेवाले) विचार हमारे जानने में नहीं आते । पर वे सन्मार्गगामी नहीं लगते । इसका सत्य पीछे मालूम होगा । फिर उन्होंने उससे कहा— हे अंगदालंकृत कंधों वाली ! मेरे पास क्या उद्देश्य ले आयी हो ? बताओ । अगर वह उचित और कार्यसाध्य होगा, तो अवश्य करूँगा । २६३

तामुऱु	कामत्	तन्मै	ताङ्गळे	युरैप्प	दैन्ब
दामैत	लाव	दन्डा	लरुङ्गुल	महळिर्क्	कम्मा
एमुऱु	मुयिर्क्कु	नोवे	नैन्शैय्हेत्	यारु	मिल्लेत्
कामत्तैन्	डोरुवन्	शैय्युम्	वन्मैयैक्	कात्ति	यैन्डाळ् 264

ताम् उऱु-आप में उठी; काम तन्मै-कामेच्छा की स्थिति; ताङ्गळे उरैप्पतु अँनूपतु-स्वयं कहना, यह; अरुम् कुल मकळिर्क्कु-उत्तम कुल की स्त्रियों के लिए; आम् अँतल्-हो सकेगा, ऐसा कहना; आवतु अन्नु-होनेवाला नहीं है; एम् उऱुम्-मोहमग्न; उयिर्क्कु-अपना जीवन रखने के लिए; नोवेत्-तड़प रही हूँ; अँन् चैय्केन्-क्या कर सकूँगी; यारुम् इल्लेन्-(अपना) कोई नहीं रखती; कामत् अँन्नु ओरुवन्-मन्मथ नाम का कोई; चैय्युम्-(जो) करता है; वन्मैयै-उस अत्याचार को; कात्ति-रोककर (मुझे) बचाओ; (अम्मा-री मैया); अँन्डाळ्-कहा । २६४

उसके उत्तर में शूर्पणखा ने कहा कि कुलीन स्त्रियों के लिए अपने काम की चर्चा स्वयं करना साध्यकाम समझना ठीक नहीं है । री मैया ! वह कठिन है । मेरा प्राण अब मोहमग्न होकर क्षीण हो रहा है । उसे बचाने को तरस रही हूँ । क्या करूँ ? मेरे कोई सहायक भी नहीं हैं । अब काम नाम का वह मेरे ऊपर अत्याचार कर रहा है । उसकी क्रूरता को रोको और मेरी रक्षा करो । २६४

शेणुऱु	नीण्डु	मीण्डु	शव्वरि	शिदरि	वैव्वे
रेणुऱु	मिळिर्न्नु	नात्ता	विदम्बुरण्	डिरुण्ड	वाट्कण्
पूणियल्	कौड्ना	यन्ना	ळम्मोळि	पुहल	लोडुम्
नाणिल	ळैय	णौय्य	णल्लळु	मल्ल	ळैन्डान् 265

चेण् उऱु नीण्डु-दूर तक जाकर; मीण्डु-(स्थानाभाव से) लौटकर; चैम् अरि चितरि-लाल डोरे (जिनमें) फैले रहे; वैव्वेऱु एण् उऱु-विविध वैशिष्ट्यों से भरे; मिळिर्न्नु-चलित होकर; नात्ता वितम् पुरण्डु-नाना प्रकार से घूमकर; इरुण्ड-

अन्धकार के समान काले; वाळ् कण्—तलवार-सम नेत्रों वाली; पूण् इयल् कौङ्कै—आभरणभूषित स्तनों वाली; अनुत्ताळ्—उस (शूर्पणखा) के; अ मौळि—वह वचन; पुकललोटुम्—कहने पर; नाण् इलळ्—निर्लज्ज है; ऐय नौय्यळ्—बहुत ही नीच है; नल्लळुम् अल्लळ्—भली भी नहीं है; अन्नुरान्—(श्रीराम ने) समझा । २६५

यह कहते हुए उसने जो नखरे दिखाये, वे उसकी निर्लज्जता को साफ़ प्रकट करते थे । उसकी आँखें, लम्बी जाकर स्थानाभाव के कारण मुड़ी हों, इतनी लम्बी थीं और विचित्र अदाएँ दिखाती हुई विविध प्रकार से चलित होती थीं । वे अन्धकार के समान काली थीं और तलवार के समान तीक्ष्ण थीं । उसके स्तन आभरणों से शोभित थे । ऐसी उसने जब वह कथन किया तब, श्रीराम समझे कि यह अतीव निर्लज्ज है । यही नहीं, वह बड़ी ओछी भी है । भली स्त्री नहीं है । २६५

पेशल	तिरुन्द	वळळ	लुळळत्तित्तु	पैरुडि	योराळ्
पूशलवण्	डरुडुडु	गुन्दर्	पौयम्महळ्	पुहन्ड	वैन्गण्
आशैकण्	डरुळिडु	रुण्डो	वन्नुत्त	लुण्डो	वैन्नुम्
ऊशलि	नुलावु	हिन्डाण्	मीट्टुमो	रुरैयच्	चौन्नाळ् 266

पेचलन् इरुन्त वळळल्—(विचारमग्न) बिना कुछ कहे जो रहे, उन उदार प्रभु के; उळळत्तित्तु पैरुडि ओराळ्—मन की स्थिति समझ नहीं सकी; वण्टु पूचल् अरुडुम्—भ्रमर नाद करते हैं (जिस पर बैठकर); कून्तल्—वैसा केश वाली; पौय् मकळ्—मायाविनी; पुकन्डु—(इसके) कथित वचन; अन्न कण्—मेरे प्रति; आच्च कण्टु—प्रेम करके; अरुळिडु उण्टो—कृपा करने के फलस्वरूप हैं; अन्नु अत्तल् उण्टो—‘न’ ऐसा कहना है; अन्नुम्—ऐसे (दो); ऊचलित्तु—विचारों के बीच में झूलने में जैसे; उलावुकिन्नाळ्—ढोलायमान रहनेवाली; मीट्टुम् ओरु उरैय चौन्नाळ्—फिर एक बात कहने लगी । २६६

यह सोचते हुए वे मौन रह गये । मायाविनी शूर्पणखा, जिसके केश पर सज्जित पुष्पों पर अलिकुल गुंजार कर रहे थे, श्रीराम के मन के भाव को समझ नहीं सकी । ‘इसने जो कहा क्या वह मेरे ऊपर प्रेम करने की कृपा के फलस्वरूप था ? या वह इन्कार करने के लिए था ?’ इन दो विचारों के बीच उसका मन झूले के समान झूलने लगा । फिर उसने एक बात कही । २६६

अळुदरु	मेनि	यायोण्	डैय्दिय	दरिन्दि	लादेन्
मुळुदुणर्	मुत्तिव	रेवडु	चैय्दौळित्तु	मुडैयिन्	मुडुडिप्
पळुदरु	पैण्मै	योडु	मिळमैयुम्	वयत्तित्तु	रेहप्
पौळुदौडु	नाळुम्	वाळा	कळिन्दन	पोलु	मैन्नाळ् 267

अळुनु अरु मेन्नियाय्—(जिसका) चित्र खींचना कठिन है, वैसे रूपधर; ईण्डु

अय्यतियत्तु-तुम्हारा यहाँ आगमन; अरिन्तिलातेन्-नहीं जानती मैं; मुळुत्तु उणर्-सर्वज्ञ; मुत्तिवर् एवल्-महर्षियों की आज्ञा से; चैय् तौळिल्-उनकी सेवा-टहल; मुर्इयिन् मुर्इ-यथाविधि पूरा करके; पळुत्तु अरु पण्मैयोदुम्-अकलंकित स्त्रीत्व के साथ; इळमैयुम्-यौवन को भी; पयन् इन्टि एक-व्यर्थ बीतने देते हुए; पौळुत्तौदु नाळुम्-समयों के साथ दिन भी; वाळा कळिन्तन-व्यर्थ बीत गये; अन्त्राळ्-कहा । २६७

ऐसे सुन्दर रूप वाले, जिसका चित्र खींचना कठिन है ! तुम इधर आये, यह मैं नहीं जानती थी । इसलिए सर्वज्ञ मुनियों की सेवा-टहल में श्रद्धा के साथ लगी रह गयी और मेरे अकलंक चरित्र के साथ मेरे यौवन को भी निरर्थक बनाते हुए अनेक काल यों ही व्यर्थ बीत गये । २६७

निन्दत्तै	यरक्कि	नीदि	निलैयिलाळ्	विनैमर्	इण्णि
वन्दत्त	ळाहु	मैन्ऱे	वळळु	मत्तत्तुद	कौण्डान्
सुन्दरि	मणत्तिर्	कौत्त	तौन्मैयिन्	इणिविर्	इन्त्राल्
अन्दणर्	पावै	नीया	नरशरिल्	वन्दे	नैन्त्रान् 268

वळळुम्-उदार प्रभु ने भी; निन्दत्तै अरक्कि-निन्द्य निशाचरी है; नीति निलै इलाळ्-नैतिक स्थिति वाली नहीं; मर्ऱु विनै अण्णि-कोई दूसरा (बुरा) कार्य सोचकर; वन्दत्तळ् आकुम्-आयी हुई है, यही होना चाहिए; अन्ऱे-ऐसे ही; मत्तत्तुळ् कौण्डान्-मन में धारणा कर ली; चुन्तरी-सुन्दरी; नी अन्तणर् पावै-तुम ब्राह्मण-कन्या हो; यान्-मैं; अरचरिल् वन्तेन्-राजाओं (के कुल) में पैदा हुआ (क्षत्रिय) हैं; मणत्तिर्कु औत्त-विवाह-क्रम के योग्य; तौन्मैयिन् तुणिविर्ऱु अन्ऱ-प्राचीन प्रथा को पुष्ट करनेवाला नहीं; अन्त्रान्-कहा । २६८

प्रभु को विश्वास हो गया कि यह निन्द्य निशाचरी है । न्याय-मार्ग पर जानेवाली नहीं है । कोई भयंकर उद्देश्य लेकर इधर आयी है । यह दृढ़ धारणा करके प्रभु ने समझाया कि सुन्दरी ! तुम ब्राह्मण-कुल-कन्या हो । मैं तो क्षत्रिय राजकुल का हूँ । विवाह सम्बन्धी जो क्रम निर्धारित हुए हैं, उन प्राचीन क्रमों के अनुसार हमारा विवाह होने योग्य नहीं है । २६८

आरण	मर्ऱयो	नैन्दै	यरुन्ददिक्	कर्प्पि	नैम्मोय्
तारणि	पुरन्द	शाल	कडङ्गडर्	मरविर्	ऱैयल्
पोरणि	पौलङ्गौळ्	वेलोय्	पौरुन्दलै	यिहळ्दर्	कौत्त
कारण	मिदुवे	याहि	लैन्तुयिर्	काण्वै	नैन्त्राळ् 269

पोर् अणि-युद्ध ही जिसका शृंगार हो, ऐसे; पौलन् कौळ् वेलोय्-सुन्दर शक्ति-धारी; अन्तै-मेरे पिता; आरण मर्ऱयोन्-वेदज्ञ विप्र हैं; अरुन्तति कर्प्पिन्-अरुन्धती-सम पतिव्रता; अम् ओय्-मेरी माँ; तारणि पुरन्त-धरणीपालक; चालकटङ्कटर्-सालकटंकट के; मरपिल् तैयल्-वंश की पुत्री है; पौरुन्तलै-सम्मत

न होकर; इकल्लतरकु ओत्त-उपेक्षा करने के लिए युक्त; कारणम् इतुवे आकिल्-कारण यही है, तो; अन् उयिर् फाण्पैन्-अपनी जान को (वचा हुआ) पा जाऊँगी; अन्नाळ्-कहा । २६६

शूर्पणखा ने उत्तर में कहा कि युद्ध ही जिसका शृंगार है, ऐसे उज्ज्वल भाला के धारी ! तुम यह जान लो कि मेरे पिता वेदज्ञ ब्राह्मण थे, पर अरुन्धती ही सम पतिव्रता मेरी माता धरणी के पालक 'सालकटंकट' नाम के राजवंश की संतान थी । (अध्यात्म रामायण के अनुसार तृणविदु राजा के सालकटंकटा नाम की लड़की थी । उसके पेट से विश्रवस के वर से शूर्पणखा पैदा हुई । दूसरा वृत्तान्त है कि राक्षस-कुल के हेति का पुत्र विद्युतकेश था । उसने सालकटंकटा से विवाह किया और उनके पुत्र माल्यवान, मालि और सुमालि थे । उनमें सुमाली की पुत्री कैकशी थी, जिसके रावण, शूर्पणखा आदि सन्तानें थीं ।) अगर तुम्हारी अस्वीकृति का कारण इतना ही था तो मैं वच गयी । क्षत्रिय से विवाह करने का मेरा अधिकार स्वतः सिद्ध है । इसलिए तुमसे विवाह न होने की हालत में जीवन त्यागने का विचार जो मैंने किया था अब उस विचार को त्याग दूँगी और अपने को जीवित रखूँगी । २६९

अरुत्तिय	ळन्	कूड	वहतुडु	नहैयिन्	वैळ्ळक्
कुरुत्तैळ्	हिन्ड	नीलक्	कौण्डलुण्	डाट्टड्	गौण्डान्
वरुत्तनीड्	गरक्कर्	तम्मिन्	मानुडर्	मणत्त	नङ्गे
पौरुत्तमन्	ईन्ड	शालप्	पुलैमैयोर्	पुहल्व	रैन्नान् 270

अरुत्तियळ्-अर्थिनी के; अन्त कूड-ऐसा कहने पर; अकत्तु उडु नकैयिन्-अन्दर उठे हास के; वैळ्ळै कुरुत्तु-श्वेत अंकुर; अळ्ळकिन्ड-फूट निकलते हों, ऐसे मन्दहास के साथ; नील कौण्डल्-श्यामलमेघ-सम श्रीराम ने; उण्डाट्टम् कौण्डान्-एक लीला रची; नङ्कै-वाले; वरुत्तम् नीडु-जो डुख से दूर है, उन; अरक्कर् तम्मिन्-राक्षसों से; मानुडर् मणत्तत्-मानवों का विवाह करना; पौरुत्तम् अन्ड-उचित नहीं; ईन्ड-ऐसा; चाल पुलैमैयोर्-गम्भीर विद्वान्; पुक्लवर्-कहेगे; अन्नान्-कहा । २७०

अर्थिनी शूर्पणखा ने यह कहा तो श्रीराम को हँसी आ गयी । वह हँसी अन्दर गड़ी हास-बीज के श्वेत अंकुर के समान बाहर प्रकट हुई । मेघश्याम ने एक लीला रचने का विचार किया । उन्होंने कहा कि अंगने ! राक्षस दुख से अभिभूत न होनेवाले हैं । मनुष्य तो विविध संकटों से ग्रस्त रहनेवाले हैं । मनुष्य-राक्षस का विवाह उचित नहीं होता । यह गम्भीर विद्वानों का मत है । २७०

परावरुज्	जिरत्तै	यारुम्	पत्तियिन्	पयत्तै	योरा
दिरावणन्	इङ्गे	यैन्ड	देळैमैप्	पाल	दैन्ना

अरावणै यमल नत्ता यद्वित्तेन् मुत्तन् देवर्प्
पराविन्नै नोङ्गि तेन्नप् पळिपडु पिउवि यैन्नाळ् 271

अरावणै अमलन् अन्ताय-शेषशायी निर्मल (विष्णु) देव के समान रहनेवाले; परावु अरुम्-जिसका विस्तार से कहना कठिन है; चिरत्तु आरुम्-श्रद्धा से युक्त; पत्तियिन् पयत्ते-उस भक्ति के फल को (जो मुझे मिला है); ओरातु-नहीं सोचकर; इरावणन् तङ्कै-रावण-भगिनी; अन्ता-कहना (और उपेक्षा करना); एळ्मै पालतु-अज्ञता से सम्बन्धित है; अन्ता-कहकर; तेवर् पराविन्नै-देवों की स्तुति की (मैंने); अ पळि पडु पिउवि-उस निन्दा योग्य जन्म से; नोङ्किन्ते-अलग हो गई हूँ; मुत्तन् अद्वित्तेन्-पहले ही समझा दिया (मैंने); यैन्नाळ्-कहा । २७१

शूर्पणखा ने तर्क प्रस्तुत किया कि हे शेषशायी विमल विष्णु-सम राम ! तुम मुझे रावण की भगिनी के रूप में ही देखते हो । मैंने कितनी श्रद्धा के साथ कैसी भक्ति की है, इसका यथार्थ विस्तार ही कठिन है । उसको भूल जाते हो और रावण की बहिन कहकर उपेक्षा दिखाते हो । यह तुम्हारी अज्ञता है ! उसने आगे विश्वास दिलाया कि मैंने देवों की स्तुति-पूजा आदि करके वह जन्म-कलंक धुला दिया है ! यह पहले ही मैंने तुमको बताया था । २७१

औरवत्तो वुलह मून्डिङ्ग कोङ्गौरु तलैव नूङ्गिल्
औरवत्तो कुवेर निन्ति नुडन्विडन् दार्ह ळन्तार्
तरुवरेड् कोडु मन्डेड् इमियवे रिडत्तुच् चारल्
वैरुवुवै नङ्गै यैन्नान् मीट्टव ळिनैय शौन्नाळ् 272

नङ्कै-नारीरत्न; निन्तिन् उटन् पिडन्तार्कळ्-तुम्हारे सहोदरों में; औरवत्तो-एक तो; उलकम् मून्डिङ्गु-तीनों लोकों का; ओङ्कु और तलैवन्-उन्नत और अकेला अधिपति है; ऊङ्किल्-वैभव में; औरवत्तो-और एक तो; कुपेरन्-धनद (कुवेर) है; अन्तार् तरुवरेल्-वे कन्यादान कर देंगे; कोडुम्-मैं ग्रहण कर सकूंगा; अन्डेल्-नहीं तो; तमियै-अकेली तुम; वैरु इटत्तु चारल्-दूसरे की हो जाओ; वैरुवुवैन्-उससे डरता हूँ; यैन्नान्-कहा; अवळ्-वह; मीट्टु-फिर; इन्नैय चौन्ताळ्-यों बोली । २७२

श्रीराम ने वहस की । हे नारी-रत्न ! तुम्हारे सहोदरों में एक तो तीनों लोकों का निर्द्वन्द्व अधिपति रावण है । दूसरा धन-देवता कुवेर है । वे तुमको मेरे पास कन्यादान में दे देंगे, तो मैं तुमको ग्रहण कर सकूंगा । नहीं तो, तुम अपनी इच्छा से किसी परपुरुष को वरो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता और मुझे डर पैदा होता है । तब शूर्पणखा ने यों उत्तर दिया । २७२

कान्दरप्प मैन्ब दुण्डाड् कादलिङ् कलन्द शिन्दै
मान्दरक्कु मडन्दै मार्क्कु मरैहळे बहुत्त कूट्टम्

एन्दर् पीर् शोळि नायिः(ह) दियैन्दपि तैन्क्कु मूत्त
वेन्दर्क्कुम् विरुप्पिर् इाहुम् वेरुमो रुरैयुण् उैन्ऱाळ् 273

एन्तल् पीन् तोळिनाय्—पर्वत-सम सुन्दर फंधों वाले; कातलिल् फलन्त चिन्तै-
प्रेम से परस्पर अनुरक्त मन वाले; मान्तरक्कुम्—पुरुषों और; मटन्तै मार्क्कुम्—
स्त्रियों के लिए; कान्तरप्पम् अैन्पतु—गान्धर्व प्रकार का; मरैक्ळे वकुत्त—वेदों से
ही निर्विष्ट; कूट्टम्—विवाह; उण्टु—है; इःतु इयैन्त पिन्—(ऐसा विवाह) यह
(हममें) हो जाने के बाद; अैन्क्कु मूत्त वेन्तरक्कुम्—मेरे बड़े भाइयों को भी;
विरुप्पिर् इाहुम्—पसन्द आयगा; अन्नैयुम्—इसके अलावा; वेरुन् ओर् उरै
उण्टु—दूसरी एक बात भी है; अैन्ऱाळ्—कहा । २७३

पर्वत-सम मनोरम कंधे वाले ! परस्पर प्रेम में संयुक्त मन वाले पुरुष
और स्त्रियाँ गान्धर्व विवाह कर ले सकते हैं । यह वेदसम्मत विवाहरीति
ही है । पहले हम विवाह कर ले तो देखोगे कि मेरे अग्रज इसे चाव के
साथ स्वीकार कर लेंगे । और भी एक लाभ है, इसमें । सुनो । २७३

ॐ मुनिवरो डुडैय मुत्ते मुदिर्पहै मुरैमै नोक्कार्
तनियेनो याद लान्मर् इवरोडुन् दळ्वर् कुत्त
विनैयमी दल्ल दिल्ले विण्णुनिन् नाट्चि याक्कि
इन्नियवर् महिळ्नुदु वन्दुन् नेवलि निरुप्प रैन्ऱाळ् 274

अवर्—वे (मेरे अग्रज); मुत्ते—पहले; मुनिवरोडु उटैय—मुनियों के साथ जो रखते
हैं; मुतिर् पक्कै मुरैमै—वह वैर की रीति; नोक्कार्—नहीं रखेंगे; नी तनियै आतलाल्—
तुम एकाकी हो, इसलिए; अवरोडुम्—उनके साथ; तळ्वर्कु—मिलकर रहने के लिए;
औत्त—अनुकूल; विनैयम्—उपाय; ईतु अल्लतु इल्लै—इसके सिवा कुछ नहीं है;
इत्ति—आगे; विण्णुम् निन् आट्चि आक्कि—स्वर्ग को तुम्हारे शासन के अधीन
बनाकर; अवर् मक्किळ्नुदु वन्दुन्—वे आनन्द के साथ आकर; उन् एवलिन्—तुम्हारे
आदेश की प्रतीक्षा में; निरुप्प—रहेगे; अैन्ऱाळ्—कहा । २७४

हमारा विवाह हो जायगा तो मेरे भाई रावण आदि मुनियों को वैर
की दृष्टि से नहीं देखेंगे । तुम इस जंगल में एकाकी रहते हो और राक्षसों
की मैत्री तुम्हारे कुशल के लिए आवश्यक है । उनसे मित्रता के साथ रहने
का एक मात्र उपाय यही—हमारा विवाह ही—हो सकता है । कोई
दूसरा मार्ग नहीं । अब वे स्वर्ग को भी तुम्हारे अधीन करके स्वयं तुम्हारे
पास सहर्ष आयेंगे और अधीन किंकर रहेंगे । तुम्हारी आज्ञाएँ मन् लगा
कर मानेंगे । २७४

ॐ निरुदर्ट मरुळुम् बैरुडे निन्नलम् बैरुडे निन्तो
डौरुवरुळ् जैल्वत् तियाण्डु मुरैयवुम् बैरुडे तौन्ऱो
तिरुनहर् तोरुन्द पिननर्च् चैयदवम् बयन्द दैन्ना
वरिशिलै वडित्त तोळान् वालैयि इिलङ्ग नक्कान् 275

वरिचिलै वटित्त तोळाङ्-बन्धनयुक्त धनुष चलाने में अभ्यस्त भुजा वाले; निरुत्तर तम् अरुल्लुम् पेर्रेन्-राक्षसों का अनुग्रह पा गया; निन् नलम् पेर्रेन्-तुम्हारी कृपा प्राप्त हो गई; याण्डुम्-कभी भी; औरु अरुम् चैल्वत्तु-क्षय न होनेवाले धन-वैभव के साथ; निन्नीटम् उरैय्युम् पेर्रेन्-तुम्हारे संग रहना भी प्राप्त हो गया; तिरुनकर् तीरन्त पित्तर्-सुन्दर अयोध्या नगर छोड़ आने के बाद; चैय तवम्-मेरे किये हुए तप ने; पयन्तु औन्नो-क्या एक (पर अनेक) फल प्रदान कर दिया है; अन्ता-(व्यंग्य से) कहकर; वाळ् अयिरु-उज्ज्वल दाँत; इलङ्क-प्रकट करते हुए; नक्कान्-हँसे । २७५

बन्धनयुक्त कठोर धनुष के प्रयोग में अभ्यस्त श्रीराम ने व्यंग्य किया । हा ! मेरा अहोभाग्य ! राक्षसों का अनुग्रह मिल गया ! तुम्हारी कृपा मिल गयी ! अक्षय धन-दौलत के साथ तुम्हारी संगति का भी बड़ा भाग्य हाथ आ गया ! श्रीनगर अयोध्या छोड़कर आने के बाद मैंने जो तपस्या की थी, उसका फल क्या एक है (अनेक हैं) ! यह कहकर श्रीराम सुन्दर दाँतों को प्रकट करते हुए हँसे । २७५

ॐ विण्णिडै यिम्बर् नाहर् विरिञ्जत्ते मुदलोर्क् कैल्लाम्
कण्णिडै यौळियिन् पाङ्गर्क् कडिहमळ् शालै निन्नम्
पैण्णिडै यरशि तेवर् पेरुनल् वरत्ताड् पित्तर्
मण्णिडै मणियिन् वन्द वञ्जिये पोल्वाळ् वन्दाळ् 276

विण् इटै-व्योम में; इम्पर्-भू पर; नाकर्-नागलोक में; विरिञ्जत्ते-विरिचि; मुतलोर्क्कु अल्लाम्-आदि सबके लिए; कण् इटै-नेत्रों की; औळियिन् पाङ्गर्-ज्योतिस्वरूप श्रीराम के पास; पैण् इटै अरचि-स्त्रियों में रानी; तेवर् पेरु नल् वरत्ताल्-देवों के प्राप्त वर से; पित्तर्-वाद; मण् इटै-पृथ्वी पर; मणियिन् वन्त वञ्जिये पोल्वाळ्-मणि से निकली लता के समान (अवतरित) सीतादेवी; कटि कमळ् चालै निन्नम्-सुगन्धि बिखरनेवाली पर्णशाखा से; वन्ताळ्-आने लगी । २७६

श्रीराम स्वर्ग, भूलोक और पाताल में रहनेवाले ब्रह्मा से लेकर सभी जीवों के नेत्रों के ज्योति-स्वरूप थे । उनके पास आने के लिए सीताजी तभी पर्णशाला के बाहर निकली । वे स्त्रियों में रानी थीं । देवों के वर को पूरा करने के लिए भूमि पर अवतरित हुई थीं । वे रत्न-वल्ली के समान सुवास से पूरित पर्णशाला के बाहर प्रकट हुईं । २७६

ॐ ऊन्नुड वुण्डु पेळ्वा युणर्विलि युरुवि तारुम्
वान्नुडर् चोदि वैळम् वन्दिडै वयङ्ग नोक्कि
मीन्नुडर् विण्णु मण्णुम् विरिन्द पोररक्क रैन्नुम्
कान्नुड मुळैत्त कर्पिन् कनलियैक् कण्णिड् कण्डाळ् 277

ऊन्-शरीर को; चूट-काम ने तपाया, उससे; उण्डु-मुरझाये रहनेवाली; पेळ् वाय्-बड़ा मुख वाली; उणर्वु इलि-मतिहीन शूर्पणखा; उरुविन्-भगवती के

रूप में; नारुम्-प्रकट हुई; वान् चुटर्-बड़ी कान्तिमय; चोति वैळ्ळम्-ज्योति-
प्रवाह; वन्तु इटे वयङ्क-आकर उनके मध्य प्रकट हुआ तो; नोक्कि-उसको
देखकर; सीन् चुटर् विण्णुम्-नक्षत्र-ज्योतिर आकाश में; मण्णुम्-धरती में;
विरिन्त-फैले हुए; पोर् अरक्कर् अन्नुम्-झगड़ालू राक्षस रूपी; कान् चुट-जंगल
को जलाने; मुळैत्त-उद्भूत; कर्प्पिन् कन्नलियै-पातिव्रत्य रूपी अग्निशिखा को;
कण्णिन् कण्टाळ्-अपनी आँखों से देखा (देखती ऐसा अनुभव किया) । २७७

शूर्पणखा ने, जिसका शरीर कामाग्नि से तप्त होकर मुरझा-सा गया
था, जिसका मुख बहुत बड़े बिल के समान था और जो अपनी बुद्धि खो
चुकी थी, सीताजी के रूप में उनके मध्य आनेवाली बड़ी कान्तिमय ज्योति
के प्रवाह को देखा । वह ऐसी थीं, मानो वह पातिव्रत्य की अग्निशिखा हैं,
जो नक्षत्रोज्ज्वल आकाश में और भूमि में फैले रहे राक्षस-कानन को जलाने
के लिए उद्भूत हैं । २७७

❀ पण्बुड नैडिटु नोक्किप् पडैक्कुनर् शिरुमै यल्लाल्
अण्बिरड् गळहुक् कैल्लै यिल्लैया मैनूर् नित्ताळ्
कण्बिर पौरुडिर् चैल्ला कर्त्तुत्ति तः(ह)दे कण्ड
पेण्बिरन् दैनुक् कैन्डा लैन्बडुम् पिरक्क् कैन्ताळ् 278

पण्पु उड-खूब आँख लगाकर; नैडिटु नोक्कि-दीर्घकाल तक देखकर; पडैक्कुनर्
चिरुमै अल्लाल्-सृष्टिकर्ता की गलती है, नहीं तो; अण् पिरड्कु-कल्पना में आनेवाली;
अळक्कुक्कु अल्लै इल्लै अम्-सुन्दरता की सीमा नहीं होता, इस बात को साबित करती
हुई; नित्ताळ्-यह शोभायमान (खड़ी) रहती है; कण् पिर पौरुडिल् चैल्ला-वृष्टि
दूसरे पदार्थ पर नहीं जाती; कर्त्तुत्ति अन्ति अ.ते-मन भी वही है; कण्ट-इसे जो
देखती; पेण् पिरन्तेनुक्कु-स्त्री पंदा हुई मेरी स्थिति यह है; कैन्ताळ्-तो; पिरक्क्कु
अन् पटुम्-दूसरे (पुरुषों) की क्या होगी; कैन्ताळ्-(आश्चर्य के साथ) कहा । २७८

उसने खूब आँखे फाड़कर बहुत देर तक देखा । उसे एक नया तथ्य
सूझा । प्रपंचसृजक ब्रह्मा की ही असमर्थता है कि उसकी सृष्टि में सुन्दरता
भी सीमित रहती है । नहीं तो सत्य यह है कि सुन्दरता की कोई सीमा
नहीं ! यह तथ्य साबित करती हुई सीताजी उनके सामने खड़ी थीं ।
शूर्पणखा ने विस्मय के साथ सोचा कि इस सुन्दरता के खजाने को जो देखता
है वह उस पर से आँख नहीं हटा सकता । उसके मन की भी वही हालत
होगी । मैं स्त्री हूँ । इसको देखकर मेरी भी यह हालत हो गयी तो
अन्य (पुरुष) लोगों की क्या स्थिति होगी ? । २७८

❀ पौरुडिर् तानै नोक्किप् पूवैयै नोक्कि नित्ताळ्
करुदमर् रिनिवै इल्लै कमलत्तुक् कडवु डानुम्
औरुडिर् तुणर नोक्कि युरुविनुक् कुलह मून्डिल्
इरुडिर् तार्क्कुज जैय्द वरम्बिव रिरुव रैन्ताळ् 279

पौर तिरुत्तात्तै-युद्धदध श्रीराम को; नोक्कि-देखकर; पूवैयै नोक्कि-फिर देवी को देखती; निन्ऱाळ-विस्मित खड़ी (जो) रही; कमलत्तु कटवुळ् तात्तुम्-कमलासन देवता (ब्रह्मा) भी; और तिरुत्तु-अपूर्व रीति से; उणर नोक्कि-विवेक से देखकर; उलकम् मून्ऱिन्-तीनों लोकों के; इरु तिरुत्तार्क्कुम्-पुरुष-स्त्री दोनों वर्गों के लिए; इवर् इरुवर्-ये दोनों; उरुविनुक्कु चैय्त् वरम्पु-रूपसौंदर्य की रची सीमाएँ हैं; मर्ऱु करुत-दूसरा सोचने के लिए; इत्ति वेऱु इल्लै-अब कुछ नहीं; अन्ऱाळ-धारणा बना ली। २७६

शूर्पणखा ने युद्धसमर्थ श्रीराम को देखा। फिर एक बार सीताजी पर दृष्टि डाली। विस्मयविमूढ़ खड़ी रह गयी। उसने विचार किया कि ब्रह्मा ने खूब सोचकर अच्छी तैयारी के साथ इन दोनों को पुरुष और स्त्री के सौन्दर्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में सरजा है। तीनों लोकों में पुरुष के सौन्दर्य की सीमा श्रीराम हैं और स्त्री-सौन्दर्य की सीमा यह स्त्री है। उसने दृढ़ धारणा बना ली, इसके सिवा सोचने के लिए गुंजाइश नहीं है। २७९

मरुवौन्ऱु	कून्ऱ	लाळै	वन्ऱत्तिवन्	कौण्डु	वारान्
उरुविङ्गि	डुडैय	राह	मर्ऱैयोर्	यारु	मिल्लै
अरविन्द	मलरु	णीङ्गि	यडियिणै	पडियिर्	रोयत्
तिरुविङ्गु	वरुव	वैन्ऱो	वैन्ऱहन्	दिहैत्तु	निन्ऱाळ 280

मरु औन्ऱु-सुवास-लगे; कून्ऱलाळै-केश वाली (इस) को; इवन् वन्ऱत्तु कौण्डु वारान्-यह वन में नहीं लायगा; इतु उरुवम् उटैयर् आक-ऐसी रूपवती; मर्ऱैयोर् यारुम्-दूसरी कोई; इङ्कु इल्लै-यहाँ नहीं है; तिरु-श्रीलक्ष्मीदेवी; अरविन्ऱ मलर् उळ-अरविन्द-मध्य वास; नोङ्कि-छोड़कर; अटि इणै-चरणद्वय; पडियिल् तोय-भूमि पर पड़ने देते हुए; इङ्कु वरुवतु-यहाँ आती; वैन्ऱो-व्योंकर; औन्ऱु-यह सोचकर; अकम् तिकैत्तु-मन में चकित होकर; निन्ऱाळ-खड़ी रही। २८०

उसने तर्क किया कि सुवासित केश वाली इसको यह पुरुष वन में अपने साथ नहीं लाया होगा। इतनी रूपवती स्त्रियाँ कोई अन्य हैं भी नहीं। इसलिए यह श्रीदेवी ही होगी, जो अपना कमल पर वास छोड़कर अपने चरणद्वय को भूमि पर पड़ने देती हुई आयी है। पर उसका इधर आगमन किस हेतु हुआ है? ऐसा विस्मय करती हुई चकितमन होकर शूर्पणखा खड़ी रही। २८०

ॐ पौन्ऱैप्	पोलौळिरु	मेनि	पूवैपोल्	वण्णत्	तानिम्
मिन्ऱैप्पो	लिडैया	ळोडु	मेवुम्	वेडत्त	नल्लन्
तन्ऱैप्पोर्	रुहैयो	रिल्लात्	तळिरैप्पो	लडियि	नाळुम्
अन्ऱैप्पो	लिडैये	वन्ऱा	ळिहळ्विप्पे	त्तिवळै	यैन्ऱा 281

पूवै पोल् वण्णत्तान्-अतसी पुष्प का-सा वर्ण-वाला; पौन्ऱै पोल् औळिरुम्

मेनि-स्वर्ण की-सी कान्ति का शरीर; मिन्नै पोल्-विजली-सम; इट्टयाळोडुम्-कमर वाली के साथ; मेवुम् वेटतुतन् अल्लन्-मिलकर रहे, ऐसे गृहस्थ धर्मोचित वेश का नहीं; तन्नै पोल् तर्कयोर् इल्ला-जिसके समान श्रेष्ठ स्त्रियाँ नहीं होतीं (जो अप्रतिम है); तळिरै पोल् अटिपिन्नाळुम्-जिसके पल्लव के समान चरण हैं; इट्टये- (यह) बीच में; अन्नै पोल् वन्ताळ-मेरे समान आई हुई होनी चाहिए; इवळे-इसको; इकळ्विप्पेन्-उपेक्षित करा दूंगी; अन्न-ऐसा निश्चय करके। २८१

अतसी-पुष्प का-सा रंग वाला यह स्वर्ण की-सी चमक वाली और विजली-सी कमर वाली इसके साथ गृहस्थी चलाता नहीं लगता। इसका वेश गृहस्थी योग्य नहीं है। तपस्वी का वेश है। यह अप्रमेय स्त्री, पल्लव-चरणा नारी मेरे समान बीच में आयी हुई है। हाँ, वही होना चाहिए। अब मैं उसको निन्दित कर उपेक्षित करवा दूंगी। —शूर्पणखा ने यह संकल्प किया। २८१

❖ वरुमिवळ् मायम् वल्लळ् वज्जन्नै यरक्कि नैज्जम्
तैरिविल तेरुन् दन्मै शीरियोय् शेव्वि दन्नाल्
उरुविदु मैय्य दन्ना लूनुहर् वाळ्क्कै याळ
वैरुविन्नै नैय्दि डामल् विलक्कुदि वीर वैन्नाळ् 282

चीरियोय्-हे अच्छे गुण वाले; वरुम् इवळ्-जो आ रही है, यह; मायम् वल्लळ्-माया में निपुण है; वज्जन्नै अरक्कि-वंचक राक्षसी है; नैज्जम् तैरिवु इल-इसका मन अगम्य है; तेरुम् तन्मै-इसको अच्छा मानना; शेव्वितु अन्ना-ठीक नहीं; उरु इतु मैय्यतु अन्ना-उसका यह रूप भी सच्चा नहीं; अन्नु नुक्क् वाळ्क्कैयाळ-मांसाहारी जीवन वाली इसे; वैरुविन्नै-(देखकर) डरती हूँ; अय्यतिदामल्-पास न आने दो; वीर-हे वीर; विलक्कुति-हटाओ; अन्न-कहा। २८२

ऐसा संकल्प करके शूर्पणखा श्रीराम से बोली। हे अच्छे गुण वाले! यह जो आ रही है माया में निपुण है। वंचकी निशाचरी है। इसके मन के भाव गूढ़ हैं और हमारी समझ में नहीं आ सकेंगे। इसको अच्छा मानना भला नहीं होगा। इसका रूप भी सच्चा नहीं है। मांस खाकर जीवन चलानेवाली इसको देखकर मेरे मन में भय पैदा होता है। हे वीर! उसको पास आने मत दो। रोको और भगाओ। २८२

❖ ओळ्ळिदुन् नुणर्वु मिन्ने युन्नैया रौळिक्कु मोट्टार्
तैळ्ळिय नलत्ति नालुन् शिन्दनै तैरिन्द दम्मा
कळ्ळवल् लरक्कि पोला मिवळुनी काण्डि यैन्ना
वैळ्ळिय मुञ्जवन् मुत्तम् वैळिप्पड वीर तक्कान् 283

वीरन्-वीर राधव; मिन्ने-विद्युत (-सम स्त्री); उन् उणर्वु ओळ्ळितु-तुम्हारी समझ बड़ी साफ़ है; उन्नै यार् ओळिक्कुम् ईट्टार्-तुमसे छिपने की किसके पास शक्ति है; तैळ्ळिय नलत्तिनाल्-मुलझी हुई शक्ति से; उन् चिन्नतसै-तुम्हारी

बुद्धि ने; तैरिन्तनु-यह बात जान ली; अम्मा-री माँ; इवळुम्-यह भी; कळ्ळ-चोर; वल् अरक्कि-भयंकर राक्षसी; पोल् आम्-होगी, अवश्य; नी काण्टि-तुम देख लो; अँन्ता-कहकर; वैळ्ळियि मुखवल् मुत्तम्-श्वेत दन्तमुक्ता; वैळिप्पट-प्रकट करके; नक्कान्-हँसे । २८३

श्रीवीरराघव ने इसके उत्तर में कहा कि विद्युत के समान लगनेवाली नारी ! तुम्हारी सूझ भी बड़ी साफ़ है ! कौन तुमसे छिपने-छिपाने की क्षमता रखता है ? तुम्हारी बूझ ने अपने सामर्थ्य से सच्चाई जान ली ! हा ! री मैया ! यह अवश्य चोरनी, भयंकर राक्षसी ही होगी शायद ! तुम भी देख लो । ऐसा कहकर मोती-समान मनोरम दाँतों को प्रकट करते हुए श्रीराम हँसे । २८३

ॐ आयिडै	यमुदिन्	वन्द	वरुन्ददिक्	कङ्गि	तञ्जौल्
वेयिडै	तोळि	नाळुम्	वीरनैच्	चेरुम्	वेलै
नीयिडै	वन्द	दैनै	निरुदरुतम्	बावै	यँन्ताक्
कायैरि	यनैय	कळ्ळ	वुळ्ळत्ताळ्	कदित्त	लोडुम् 284

अ इटै-उस समय; अमुतिन् वन्त-अमृत के समान आगत; अरुन्तति कङ्गिप्ति-अरुन्धती के समान पतिव्रत्य; अम् चौल्-मधुर बोली; वेय् इटै-बाँस को पीछे करनेवाले (बाँस से भी सुडौल); तोळित्ताळुम्-कंधे, इनसे युक्त सीताजी भी; वीरनै-श्रीवीरराघव के पास; चेरुम् वेलै-आई तब; काय् अँरि अतैय-जलती आग के समान; कळ्ळ उळ्ळत्ताळ्-कपट-भरे मन वाली के; निरुदरु तम् पावै-हे राक्षसी स्त्री; इटै नी वन्ततु-बीच में तुम्हारा आना; अँन्तै-कैसा; अँन्ता-कहकर; कतित्तलोडुम्-कोप के साथ बढ़ने पर । २८४

तब तक सुधा-सम वहाँ जो आयीं, वे अरुन्धती-सी पतिव्रता, मधुर-वाणी और बाँस के समान कंधों वाली सीताजी श्रीराम के पास आ गयीं । झट जलती आग के समान वंचना मन में रखनेवाली शूर्पणखा ने ताड़ना दी कि राक्षस-कुमारी ! तुम हमारे बीच में कैसी आयीं ? यह कहकर वह कोप के साथ श्रीसीता की तरफ बढ़ने लगी । २८४

ॐ अञ्जित्तळ्	वञ्जि	यन्त्र	मिन्निडै	यलश	वोडिप्
पञ्जिन्मैल्	लडिह	णोवप्	पदैत्तनळ्	परुवक्	काल
मञ्जिडै	वयङ्गित्	तोन्नुम्	पवळत्तिन्	वल्लि	येपोर्
कुञ्जर	मनैय	वीरन्	कुववुत्तो	डळुविक्	कौण्डाळ् 285

अञ्चित्तळ्-भयभीत (सीताजी); मिन् इटै-बिजली-सी कमर को; वञ्चि अन्त-लता के समान; अलच-वल खाने देती हुई; ओटि-दौड़कर; पञ्चिन् मैल् अटिकळ्-रुई-समान चरणों को; नोव-कण्ट देते हुए; पदैत्तनळ्-सिहरकर; परुव काल मञ्चु इटै-वर्षाकालीन मेघ के बीच; वयङ्कि तोन्नुम्-साफ़ दिखनेवाली; पवळत्तिन् वल्लिये पोत्-प्रवाल-लता ही के समान; कुञ्जरम् अतैय वीरन्-कुंजर-

सम वीर श्रीराम के; कुववु तोळ्-पुष्ट और उन्नत कन्धों से; तळुवि कौण्टाळ्-लिपट गई । २८५

शूर्पणखा को अपने पास आते देखकर श्री सीताजी भयभीत हो गयीं । अपनी बिजली-सी कमर को लता के समान लचकाती हुई दीड़ी । रई-समान पैरों को दुख देती हुई हड़बड़ाहट के साथ वह दीड़ी और कुंजर-सम श्रीराम के सबल और पुष्ट कंधों से ऐसे लग गयीं जैसे वर्षाकालीन मेघ के मध्य प्रवाललता लग गयी हो । २८५

ॐ वळैयैयिड्	इवरुह	ळोडु	वरुम्बिळै	याट्टेन्	शालुम्
विळैवन्न	तीमै	येया	मैन्वदै	युणरुन्दु	वीरन्
उळैवन	वियड्ड	लौल्लै	युन्निलै	युणरु	मायिन्
इळैयवन्	मुत्तियु	नङ्गै	येहुदि	विरैवि	नैन्ऱान् 286

वळै अयिड्ड-वक्रदांत वाले; अवर्कळोट्टम्-उन (राक्षसों) के साथ; वरुम्बिळै-विळैयाट्टु अन्ऱालुम्-होनेवाले खेल भी हों; विळैवन्न तीमैये आम्-फल घुरे ही होंगे; अन्पतै उणरुन्दु-यह महसूस कर; वीरन्-श्रीवीरराघव; नङ्कै-नारी; उळैवन इयड्डल्-मन को संकट देनेवाले काम न करो; इळैयवन्-मेरा अनुज; उन्निलै उणरुम् आयिन्-तुम्हारी बात जान लेगा तो; लौल्लै मुत्तियुम्-तुरन्त तुमसे कुपित हो जायगा; विरैविन् एकुति-शीघ्र चली जाओ; अन्ऱान्-कहा । २८६

अब श्रीराम महसूस करने लग गये कि वक्रदन्त राक्षसों के साथ विनोद भी अनर्थकारी है । वीर श्रीराम ने शूर्पणखा से कहा कि नारी ! तुम ऐसा काम मत करो, जिससे मन को क्लेश पहुँचे । मेरा छोटा भाई तुम्हारी स्थिति जानेगा तो तुरन्त कुपित हो जायगा । तुम शीघ्र यहाँ से चली जाओ । २८६

पौड्पुडै	यरक्कि	पूविड्	पुनलनिड्	पौरुप्पिल्	वाळुम्
अड्पुडै	युळ्ळत्	तारु	मन्नङ्गन्	ममरर्	मड्डुम्
अड्पैड्	तवर्ज्जय्	हिन्ऱा	रैन्ऱैनी	यिहळ्व	दैन्ने
नड्पौडै	नैज्जि	लिल्लाक्	कळ्वियै	नच्चि	यैन्ऱाळ् 287

पौड्पुडै अरक्कि-सुन्दर वेश में जो रही, उस राक्षसी ने; पूविल्-(कमल) पुष्प पर; पुनलिल्-(क्षीरसागर के) पथ पर; पौरुप्पिल्-(कैलास) पर्वत पर; वाळुम्-वास करनेवाले; अड्पु उटै उळ्ळत्तारुम्-प्रेम-मन के (तीनों देवता) और; अत्तङ्कतुम्-मन्मथ और; मड्डुम् अमरर्-अन्य देवता लोग; अन्ऱै पैंड-मुझे पाने के लिए; तवम् चैय्किन्ऱार्-तपस्या करते हैं; नल् पौरै-श्रेष्ठ क्षमा नामक गुण; नैज्जिल् इल्ला-जिसके मन में नहीं है, उस; कळ्वियै-चोरनी को; नच्चि-चाहकर; अन्ऱै नी इकळ्वतु-मेरी तुम्हारा उपेक्षा करना; अन्ऱै-क्यों; अन्ऱाळ्-पूछा । २८७

शूर्पणखा जानेवाली नहीं थी । मायारूपिणी उसने श्रीराम से

कहा— कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा, क्षीरसागरवासी विष्णु, कैलासपर्वत-पति शिव, अनंग और अन्य देवता लोग मुझ पर प्रेम रखते हैं और मुझे प्राप्त करने हेतु तपस्या कर रहे हैं, बात ऐसी है तब तुम असह्यशीला इस नारी को चाहकर मेरी उपेक्षा करते हो ! इसका कारण क्या है ?
—शूर्पणखा ने पूछा । २८७

❀ तन्तौडुन् दौडर्वि लादे मन्तवुन् दविरा डान्तिक्
कन्तडु मन्तत्ति शौल्लुङ् गळ्ळवा शहङ्ग लैन्ना
मिन्तौडु तौडर्नु शौल्लु मेहम्बोल् मिदिलै वेन्तन्
पौन्तौडुम् बुत्तिदन् बोयप् पूम्बौळिर् चालै पुक्कान् 288

इ कल् नैटुम् मन्तत्ति तन्तौडु—इस पत्थर-सम मन वाली के साथ; तौडर्वु इलातेम्—हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है; अन्तवुम्—कहने पर भी; तविराळ्—यहाँ से नहीं हटती; शौल्लुम्—इसके वचन भी; कळ्ळ वाचकङ्कळ्—वंचना-भरे वचन हैं; अन्ता—यह सोचकर; पुनितन्—पवित्र श्रीराम; मिन् ओटुम्—बिजली के साथ; तौडर्नु चैल्लुम्—लगे जानेवाले; और मेकम् पोल—मेघ के समान; मिदिलै वेन्तन् पौन् ओटुम्—मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ; पोय्—वहाँ से जाकर; अ पूम् पौळिल्—उस उपवन में रहनेवाली; चालै—पर्णशाला में; पुक्कान्—प्रविष्ट हुए । २८८

श्रीराम ने निश्चय कर लिया कि यह पत्थर-सम मन वाली है । इस कठोरमन स्त्री से हमने कह दिया कि हमारा-तुम्हारा रिश्ता कुछ नहीं हो सकता । तो भी वह हटती नहीं । इसके कथन भी कपट के वचन लगते हैं । यह सोचकर पवित्रचरित्र श्रीराम मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ जाकर उस उपवन में रही अपनी पर्णशाला में घुस गये । सीताजी जब उनके पीछे गयीं, तब ऐसा लगा कि मेघ के पीछे बिजली जा रही हो । २८८

❀ पुक्कपिन् बोत्त दैन्नु मुणर्विनळ् पौरैयि नीङ्गि
उक्कदा मुयिर लौन्नु मुयिर्त्तिल लौडुङ्गि निन्नाळ्
तक्किलन् मन्तत्तुळ् यादुन् दळ्ळुविलन् शलमुङ् गौण्डान्
मैक्कळ् गुळलि त्ताण्माट् टन्बिनिल् वलिय नैन्नाळ् 289

पुक्क पिन्—उनके पर्णशाला में प्रविष्ट होने के बाद; पौन्तु अन्तुम् उणर्वित्तळ्—वेसुध-सी; पौरैयिन् नीङ्कि—शरीर से छूटकर; उक्कतु आम् उयिरळ्—ध्वस्त हुए हों; ऐसे प्राणों वाली होकर; लौन्नु उयिर्त्तलळ्—साँस ही नहीं छोड़ी; लौडुङ्कि निन्नाळ्—सन्न खड़ी रही; तक्किलन्—मेरे योग्य नहीं; मन्तत्तुळ् यातुम् तळ्ळुविलन्—मन में कोई लगाव पैदा नहीं हुआ है; चलमुम् कौण्डान्—कोप भी करता है; मै करुम् कुळलिनाळ् माट्टु—अंजन-सम काला केश वाली के साथ; अन्पिनिल् वलियन्—प्रेम में दृढ़ है; नैन्नाळ्—अपने आप से कहा । २८९

उनके पर्णशाला में प्रवेश के बाद शूर्पणखा की दशा बहुत बिगड़

गयी । सुधि खोकर वह क्षीण-प्राणा-सी रह गयी । साँस भी नहीं छोड़ती थी । सन्न खड़ी रही । फिर उसने आप ही आप कहा कि यह मेरे योग्य नहीं लगता । अपने मन में किंचित भी स्नेह का भाव नहीं लाता । वही नहीं, मेरे प्रति कुपित भी है । उसका इस अंजन-सम काले केश वाली स्त्री पर प्रेम दृढ़ है । २८९

❖ निन्त्रिल ळवत्तैच् चेरु नैरियित्तै नित्तैन्दु पोत्ताळ्
इन्त्रिव ताहम् बुल्ले नैन्लुयि रिल्लप्पे नैन्नाप्
पौन्त्रिणि शारर् चोदप् पळिक्करेप् पौन्दुम्वर्प् पुक्काळ्
शैन्त्रुदु परिदि मेल्पाऱ् चैक्करवन् दिरुत्त दन्त्रे 290

निन्त्रिलळ्—(शूर्पणखा) खड़ी नहीं रही; अवत्तै—उसको; चेरु नैरियित्तै—प्राप्त करने का उपाय; नित्तैन्दु—सोचते हुए; पोत्ताळ्—गई; इन्त्रु—आज; इवन् आकम् पुल्लेन्—इसके वक्ष को आलिंगन नहीं करूँगी; नैन्लु—तो; उयिर् इळप्पैन्—प्राण छोड़ दूँगी; नैन्ना—ऐसा सोचकर; पौन् त्रिणि—स्वर्णमिश्रित; चारल्—एक तराई में; चोत्त पळिक्कु अरै—शीतल स्फटिक-चट्टान सहित रहनेवाले; पौन्दुम्वर्—उद्यान में; पुक्काळ्—घुसी; परिति मेल्पाल् चैन्त्रु—सूर्य पश्चिम दिशा में (अस्त हो) चला; चैक्कर वन्नु इरुत्तु—लालिमा आ फैली । २९०

फिर वह वहाँ खड़ी नहीं रही । उसका मन श्रीराम को भूल नहीं सका । उनसे मिलने का उपाय सोचने लगी । 'अगर मैं इसके वक्ष का आलिंगन नहीं करूँगी तो मैं प्राण त्याग दूँगी ।' —यह संकल्प करती हुई वह एक उपवन में गयी, जो तराई में था, और जिसमें शीतल स्फटिक-चट्टान थी । तब तक सूर्य पश्चिम में अस्त हो गया और गगन में लाली फैल गयी । २९०

❖ अळिन्द शिन्दैय ळाययर् वाळ्वयिन्
मौळिन्द कामक् कडुङ्गनन् मूण्डदाल्
वळिन्द नाहत्तिन् वन्त्रौळै वाळ्वियर्
रिळिन्द कार्विड मेरिय दैन्तवे 291

वळिन्त—छलककर; नाकत्तिन्—सर्प के; वन्—दृढ़; तौळै—रंध्रसहित; वाळ्व—उज्ज्वल; अयिर्कु—विषदाँत का; इळिन्त कार् विटम्—बाहर आया विष; एरियतु अँन्न—सिर पर चढ़ गया, जैसे; अळिन्त चिन्तैयळाय्—संज्ञाशून्य होकर; अयर्वाळ् वयिन्—शिथिल रहनेवाली शूर्पणखा के अन्दर; मौळिन्त—पूर्वोक्त; काम कटुम् कनल्—काम की भयंकर अग्नि; मूण्डतु—उद्दीप्त हुई । २९१

शूर्पणखा की स्थिति बहुत बुरी हो गयी । किसी सर्प के रंध्रसहित दृढ़ दाँत द्वारा निकले विष का असर सिर पर चढ़ गया हो, ऐसा वह स्वस्थता खोकर श्रांत हो गयी । पूर्वोक्त काम का कठोर ज्वर उसके शरीर को ताप देने लगा । २९१

❀ ताड हैक्कौडि याडड मारबिडै, आड वरक्कर शन्नयि लम्बुपोल्
पाड वत्तौळिन् सन्मदन् वाय्कणै, ओड वुट्कि युयिरुळैन् दाळरो 292

ताटकै कौटियाळ्-ताड़का, क्रूरी; तट मारपु इटै-के विशाल वक्ष के मध्य;
आटवरक्कु अरचन्-पुरुषों में राजा श्रीराम के; अयिल् असुप्पो पोल्-तीक्ष्ण शर जैसे;
पाटवम् तौळिल् मन्मतत्-कार्य-पटु मन्मथ के; पाय् कणै-प्रेषित शर; ओट-निफर
गए तो; उट्कि-सिहरकर; उयिर् उळैन्ताळ्-प्राणविह्वल हुई। २६२

मन्मथ कार्यपटु था। उसका प्रेषित शर इसकी छाती को ऐसा
निफर गया, जैसे पुरुषोत्तम श्रीराम का तीक्ष्ण शर क्रूरी ताड़का के वक्ष को
वेधकर चला गया था। शूर्पणखा सिहर उठी और वह मर्मान्तक पीड़ा का
अनुभव करने लगी। २९२

❀ कलैयु वामदि येकडि याहवन्, शिलैय सारन्नैत् तित्नु निनैप्पिनाळ्
मलैय मारुद मानैडुङ् गालवेल्, उलैय मारबिडै यून्डिड वोयुमाल् 293

कलै उवा मतिथे-कलाओं से पूर्ण चन्द्र को ही; कडि आक-व्यंजन बनाकर;
वन् चिलैय मारनै-कठोर धनुर्धर मारदेव को; तित्नुम् नित्तैप्पित्ताळ्-खाने का विचार
किया; मलय मारुतम् आम्-मलयमारुत रूपी; नैटुम् काल वेल्-दीर्घ यम-शूल;
उलैय-सालते हुए; मारपु इटै ऊन्डिड-छाती पर घुसा तो; ओयुम्-श्रान्त खो
गई। २६३

वह सोचती कि मैं पूर्णचन्द्र को व्यंजन बनाकर कठोर धनुर्धर कामदेव
को ही भक्षण कर लूँ। पर मलयपवन रूपी सशक्त शक्ति के उसके वक्ष
पर गड़ने से वह निर्बल रह जाती। २९३

❀ अलैक्कु	माळि	यडङ्गिड	वङ्गैयाल्
मलैक्कु	लङ्गळिर्	ऊर्क्कु	मत्तत्तिताळ्
निलैक्कुम्	वानि	नैडुमदि	नीणिला
वलैक्कु	नीङ्गु	मिडुक्किलण्	मान्तुवाळ् 294

अलैक्कुम्-उसको सालनेवाले; आळि-समुद्र को; अटङ्किट-चुप कराने के
लिए; अम् कैयाल्-अपनी हथेली से; मलै कुलङ्कळिन्-गिरियों की राशि उखाड़कर
उनसे; तूर्क्कुम् मत्तत्तिताळ्-पाटने का संकल्प किया; वानिल् निलैक्कुम् नैटु मति-
आकाश में स्थिर रहे चन्द्र की; नीळ् निला वलैक्कु-विस्तृत चाँदनी के जाल से;
नीङ्कुम्-बच जाने की; मिडुक्कु इलळ्-शक्ति नहीं रखती थी; मान्तुवाळ्-क्षोभ
करती। २६४

समुद्र-गर्जन उसे सालने लगा। उसने सोचा कि अपने हाथों से
गिरिराशियों को उखाड़कर समुद्र में डालूँ और उसे पाट दूँ। पर
आकाश में निरन्तर (चलते) रहनेवाले चन्द्र की किरणों के जाल से बच
निकलने की शक्ति उसमें नहीं थी। इसलिए विक्षुब्ध हो जाती। २९४

ॐ पूर्वे लाम्बोडि याहविप् पूमियिल्, कावै लाम्बोडिप् पेन्नैन्क् कान्दुवाळ्
शेव लोडुई शैन्दलै यन्त्रिलिन्, नावि नाल्वलि येञ्ज नडुङ्गुवाळ् 295

पू अलाम् पौटियाक-सारे पुष्पों को चूर्ण बनाते हुए; इ पूमियिल्-इस पृथ्वी पर रहनेवाले; का अलाम्-उद्यान सब; ओटिप्पेन् अन्न-तोड़-फोड़ वृंशी, ऐसा; कान्तुवाळ्-कोप करती; चेलोडु उरै-नर (क्रौंच) के साथ रहनेवाली; चैम् तलै अन्त्रिलिन्-लाल सिर की मादा क्रौंच पक्षी के; नाविनाल्-(मिलन-सुख-सूचक) बोली से; वलि अञ्च-अपनी शक्ति खोकर; नडुङ्कुवाळ्-काँप उठती । २६५

कभी वह सोचती कि सारे उद्यानों को तहस-नहस कर डालूँ ताकि सभी पुष्प चूर्ण-चूर्ण हो जायँ । पर अपने नर के साथ रहती हुई मादा क्रौंच अपने सुख-संभोग से उत्पन्न आनन्द का नाद करती तो उससे इसका बल छूट जाता और वह काँप उठती । २९५

अणैवि त्रिङ्गळै नुङ्ग वरावित्तैक्, कौणर्वै नोडि यैत्तक्कौदित् तुन्नुवाळ्
पणैयिन् मैन्मुलै मेरुपति मारुदम्, पुणर वारुयिर् वैन्दु पुळ्ळुङ्गुमाल् 296

अणैव इल् त्रिङ्गळै-प्रतिकूल चाँद को; नुङ्क-निगलने के लिए; अरावित्तै-(राहु या केतु) सर्प को; ओटि कौणर्वैन्-दोड़ जाकर लाऊँगा; अन्न-ऐसा; कौतित्तु-खोल उठती; तुन्नुवाळ्-सोचती; पणैयिन् मैन् मुलै मेल-पीन और नरम स्तनों पर; पति मारुदम् पुणर-शीतल पवन के लगने से; वारुयिर् वैन्नु-मर्मतप्त होकर; पुळ्ळुङ्कुम्-ताप से पीड़ित होती । २६६

वह कभी संकल्प करती कि यह चन्द्र मेरे अनुकूल नहीं है । उसे (राहु या केतु) सर्प द्वारा निगलवा लूँगी । बड़े क्रोध के साथ उसको पकड़ लाने की बात सोचती । पर उसके पीन और कोमल स्तनों पर शीतल पवन आकर लगता और उत्तेजित कामवासना से तप्त होकर थक जाती । उसके प्राण जर्जर हो जाते और वह वेदना का अनुभव करती । २९६

ॐ कैह् लाडुत्त कदिरिळ् गौङ्गै मेलु, ऐय तण्वनि यळ्ळिन लप्पिताळ्
मौय्हाँ डोयिडै वैन्दु मुरुङ्गिय, वैय्य पारैयिल् वैण्णैय् निहर्क्कुमाल् 297

तत्त कतिर् इळम् कौङ्कै मेलु-अपने छटामय तरुण उरोजों पर; कैकळाल्-अपने हाथों से; ऐय तण् पत्ति-छोटे शीतल हिमखण्डों को; अळ्ळितळ् अप्पिताळ्-उठाकर (शूर्पणखा ने) लगा लिया; ती इट्टै-अग्नि में; वैन्नु मुरुङ्किय-तपकर गरम बनी; वैय्य पारैयिल्-उष्ण चट्टान पर (रखे); वैण्णैय् निहर्क्कुम्-मक्खन के समान (बाष्प) बना । २६७

उसने अपना ज्वर शान्त करने की इच्छा से शीतल हिमकणों को लेकर अपने मनोरम तरुण स्तनों पर डाल लिया । पर वे इस तरह अदृश्य हो गये, जैसे आग से तप्त गरम चट्टान पर डाला गया मक्खन पिघलकर लुप्त हो जाता है । २९७

❖ अळिक्कु	मैय्युयिर्	कान्दळ	लज्जितळ
कुळिक्कु	नीरुड्	गौदित्तैळक्	कूशुमाल्
विळिक्कुम्	वेलैये	वैङ्गण	तङ्गनै
औळिक्क	लामिड	मामैत	वुन्नुमाल् 298

अळिक्कुम्-संरक्षणीय; मैय्-शरीर को और; उयिर्-प्राणों को; कान्तु-जलानेवाली; अळल्-कामाग्नि से; अज्जितळ-डरकर; कुळिक्क-नहायी; नीरुम्-वह जल भी; गौदित्तु अँळ-खौल उठा; कूचुम्-नहाने से सकुचाती; विळिक्कुम् वेलैयै-निनादी समुद्र को; वैम् कण् अत्तङ्कतै-भयंकर मन्मथ को; औळिक्कल् आम् इटम्-छिपाये रखनेवाला स्थान; आम् अन उन्नुवाळ्-होगा, ऐसा सोचती । २९८

वह अपने शरीर और प्राणों की रक्षा करना चाहती थी । पर उसकी कामेच्छा उनका शत्रु बनी थी । उस आग को शान्त करने की इच्छा से वह स्नान करने चली तो जल ही गरम हो गया । तो बेचारी नहाने से कतराती । वह गरजनेवाले सागर को कठोरमन मन्मथ का छिपकर रहने का स्थान मानती । २९८

❖ वन्तु कार्मळै तोन्निन्नु मामणिक, कन्तु काणित्तुङ् गैत्तलङ् गूप्पुमाल्
इन्तु कान्दत्ति तीर नैडुङ्गलुन्, वैन्तु कान्द वेदुम्बुळु मेत्तियाळ् 299

इन्तु कान्तत्तित्तु-चन्द्रकान्त के; ईर नैटुम् कलुम्-शीतल और विशाल पत्थर को भी; वैन्तु कान्त-जलाकर भस्म करे, ऐसे; वैन्तुम्पु उरु मेत्तियाळ्-तापशील शरीर वाली; कार् मळै वन्तु तोन्निन्नुम्-काला मेघ आकर दिखे तो भी; मा मणि कन्तु काणित्तुम्-श्रेष्ठ रत्नस्तम्भ को देखे, तब भी; कै तलम् कूप्पुम्-करतल जोड़ती । २९९

उसका शरीर इतना जलता था कि चन्द्रकान्त का बड़ा पत्थर भी उससे लगे तो जलकर राख बन जाय ! ऐसी कामाग्नि से दग्ध शरीर वाली वह काले मेघ को या रत्न-स्तम्भ को देखती तो हाथ जोड़कर नमस्कार करती (श्रीराम के रंग-साम्य के कारण) । २९९

वाम मामदि युम्बन्ति वाडैयुम्, काम तुन्दनैक् कण्डुण रावहै
नाम वाळैयिर् उरैह्द नाहमाय्च्, चेम माल्वरै यिन्मुळैच् चेरुमाल् 300

वाम मा मत्तियुम्-सुन्दर पूर्णचन्द्र और; पत्ति वाडैयुम्-शीतल पवन; कामतुम्-कामदेव; तनै कण्टु उणरा वकै-अपने को देख न पाये, इस तरह; नाम वाळ् अँयिर् उरु अँर कत नाकम् आय्-भयंकर दाँत वाला कुपित सर्प बनकर; चेम माल् वरैयिन्-सुरक्षित एक बड़े पर्वत की; मुळै-गुफा में; चेरुम्-जा पहुँचती । ३००

वह सुन्दर पूर्ण-चन्द्र, शीतल (उदीची) हवा और कामदेव से डरती थी । वह चाहती थी कि वे उसे देख न लें । इसलिए वह एक भयंकर तीक्ष्ण दाँतों का सर्प बनकर सुरक्षित एक पर्वत की गुफा में जाकर छिप

गयी। क्यों? नाग चन्द्र को ग्रसनेवाला है और हवा को खानेवाला। वह शिवजी का अलंकार था और मन्मथ शिवजी से डरता था। इसलिए शूर्पणखा सर्प बनकर छिप गयी। ३००

अन्त काले यल्लन्मिहुत् तेऽवुम्, मुन्त मेनिय लाय्मुल्ले वेंन्दुह
इन्त वाशैय्वे नैन्ऱुऱि यादिल्लम्, पौन्निन् वार्दळि रिऱ्पुरण् डाळरो 301

अन्त काले-तब; अल्ल् मिहुत्तु एऽवुम्-कामाग्नि चढ़ी; मुन्त मेतियलाय्-पहले का रूप लेकर; मुल्ले वेंन्दु उक-स्तनों से अंगारे निकालते हुए; इन्तवा वेंय्वेन्-किस प्रकार क्या करे; अन्ऱु अऱियातु-यह न जानकर; पौन्निन् वार् इल्लम् तळिरिल्-स्वर्ण के रंग वाले पल्लवों पर; पुरण्डाळ्-लेटकर लोटी। ३०१

पर वहाँ भी गरमी बढ़ी तो उसने अपना सर्प-रूप छोड़ दिया। अपना निजी रूप लिया। उसके स्तन इतने तपने लगे कि उनसे आग-सी निकली। क्या करे, कैसे करे? किंकर्तव्यमूढ़ होकर वह स्वर्णवर्ण पल्लवों पर गिरकर लोटने लगी। ३०१

ॐ वीरन् मेत्ति वैळिप्पड वेंय्दवन्, कार्हीण् मेत्तियेक् कण्डन लामैत्तच्
चोरुम् वैळ्हुन् दुणुक्कैन् सव्वुरुप्, पेऱुङ् गालप् पिणियिऱै पेऱ्हलाळ् 302

वीरन् मेत्ति वैळिप्पट-तब वीर श्रीराम का (भ्रान्ति का) रूप उसे दिखाई दिया; वेंय्दु-चाव के साथ; अवन् कार्कोळ् मेत्तिये-उनके मेघ-सम शरीर को; कण्डत्तळ् आम् अन्-सचमुच देख लिया हो जैसे; चोरुम्-शिथिल हो जाती; वैळ्कुम्-लजाती; दुणुक्कु अँतुम्-दलक जाती; अ उरु-वह (कल्पित) रूप; पेऱुम् काल्-जब अदृश्य हो जाता, तब; अ पिणि-उस काम-रोग से; इऱै पेऱ्कलाळ्-जरा भी छूट नहीं सकती थी। ३०२

तब उसे श्रीराम का भ्रान्ति का रूप शून्य में दिखाई दिया। उसके मन में प्रेम उमड़ आया। मेघश्याम को प्रत्यक्ष देखती हो, ऐसा भ्रम हो गया। वह शिथिल हुई, लाज से भरी; फिर सिहर उठी। वह रूप ओझल हो गया तो उसने अनुभव किया कि उसका रोग ज्यों का त्यों है और वह उससे थोड़ा भी छूट नहीं पायी है। ३०२

ॐ आहक् कौङ्गैयि नैयनैन् उम्जन्, मेहत् तैत्तळु वुम्मवै वेंन्दन्
पोहक् कण्डु पुलम्बुम् पुन्मैयाळ्, मोहत् तुक्कौर् मुडिवुमुण् डाङ्गौलो 303

अलत्त मेक्कत्तै-कजरारे (काले) मेघ को; ऐयन् अँन्ऱु-प्रभु श्रीराम समझकर; आक कौङ्कैयिन्-वक्ष के स्तनों के साथ; तळुवुम्-लगा लेती; अवै वेंन्तत-वे जलकर; पोक्-मिट जाते; कण्डु-देखकर; पुलम्पुम्-विलाप करती; अ पुन्मैयाळ् मोक्कत्तिऱ्कु-उस ओछी स्त्री के काम का; ओर् मुटिवु उण्डाम् कौलो-अन्त भी है क्या। ३०३

वह काले मेघों को प्रभु, कान्त श्रीराम समझकर अपने वक्षस्थल से स्तनों पर लगाकर कसकर पकड़ती। पर काले मेघ गरमी के कारण

वाष्प बनकर मिट जाते। तब वह मुख खोलकर विलाप करती, नीच शूर्पणखा के मोह का कोई अन्त है ? । ३०३

❖ ऊळि वैङ्गत्त लुङ्गत्त ळौत्तुमव्, वेळ्ळं यावि यिळ्ळन्दिलळ् शेंङ्गैयिन्
आळि यानै यडैन्दवळ् पित्तुनरुम्, वाळ्ळला मँनु माशै मरुन्दित्ते 304

ऊळि वैम् कत्तल् उङ्गत्तळ् ळौत्तुम्-युगान्त की अग्नि में पड़ गई हो ऐसा हो गई, तो भी; चैम् कैयिन्-लाल (श्रेष्ठ) हाथों वाले; आळियान् अटँनु- (आज्ञा) चक्रधारी श्रीराम को प्राप्त करके; अदळ्-वह; पित्तुनरुम् वाळ्ळलाम्-फिर भी जी सकेगी; अँतुम् आचै मरुन्तिन्-ऐसी आशा रूपी दवा के कारण; एळै-उस अवोध ने; आवि इळ्ळन्तिलळ्-प्राण नहीं त्यागे। ३०४

उस काममोह के कारण उसकी स्थिति युगान्त के अनल-प्रवाह में पड़ी हुई सी हो गयी। तो भी आशा बँधी थी कि लाल (मनोरम) हाथों वाले श्रीराम से मिलन होगा और वह मिलकर जिएगी। वही आशा दवा बनी और उसी से उसके प्राण बचे रहे। ३०४

वञ्ज नैक्कोडु मायै वळर्क्कुमेन्, नैञ्जु पुक्कैन् दावत्तै नीक्कैत्तुम्
अञ्ज नक्किरि येयरु ळायैनुम्, नञ्जु नक्किन् पोल् नडुङ्गुवाळ् 305

नञ्जु नक्किन् पोल्-जिसने विष चाट लिया हो, उसके समान; नडुङ्गुवाळ्-काँपती (हुई); अञ्जन् किरिये-अंजनगिरि (-सम राम); अरुळाय् अँतुम्-कृपा करो, कहती; वञ्जत्तै-वंचना और; कौटु मायै वळर्क्कुम्-कूर माया को पालनेवाले; अँन् नैञ्जु पुक्कु-मेरे मन में प्रवेश करके; अँतु आवत्तै नीक्कु-मेरी विपदा दूर करो; अँतुम्-कहती। ३०५

विष को जो चाट चुका हो, उसके समान उसका शरीर काँपने लगा। वह मन में श्रीराम से प्रार्थना करने लगी कि हे अंजनपर्वत ! मुझ पर कृपा करो। वह यह भी कहती कि मेरा मन कपटी है और माया को पालने-वाला है। उसमें तुम घुस जाओ और मुझे आफत से बचाओ। ३०५

❖ कावि योहय लोवैनुङ् गण्णिणैत्, तेवि योतिरु मङ्गैयिर् चैव्वियाळ्
पावि येनैयुम् पार्क्कुङ्गाँ लोवैनुम्, आवि योयित्तु साशैयि त्तोय्विलाळ् 306

आवि ओयित्तुम्-प्राण छूट जायँ, तो भी; आचैयिन् ओय्वु इलाळ्-जिसका राग नहीं थमता, वह; कावियो-नीला पुष्प है; कयलो-या 'कयल' मछली है; अँतुम्-ऐसा कहलानेवाली; कण् इणै-आँखों का जोड़ा; तेवियो-जिसका है वह (उसकी) देवी तो; तिरुमङ्कैयिल् चैव्वियाळ्-श्रीलक्ष्मीदेवी से भी सुन्दर है; पावियेनैयुम्-मुझ पापिनी पर; पार्क्कुम् कौलो-दृष्टि लगाएगा क्या; अँतुम्-(यह नैराश्य वचन) कहती। ३०६

चाहे उसके प्राण ही क्यों न छोड़ जायँ, वह तो श्रीराम पर काम को छोड़नेवाली नहीं थी। उसे सीतादेवी का स्मरण आया। 'नीलोत्पल

है या कयल नाम की मछली ? ऐसा सन्देह उत्पन्न करनेवाली आँखों के जोड़े से युक्त उसकी पत्नी श्रीलक्ष्मीदेवी से भी बढ़कर सुन्दरी है। वह क्या मेरी ओर आँख उठाकर भी देखेगा ?' ऐसा प्रश्न करके वह दुखी हुई। ३०६

❖ आन्ऱ काद लः(ह्)दुऱ वेंय्दुळि, मून्ऱ लोहमु मूडु मरक्कराम्
एन्ऱ कारिरु णीक्क विराहवन्, तौन्ऱि नानेन् वेंय्यवन् उोन्ऱिनान् 307

आन्ऱ कातल् अ.तु-गहरे काम-रोग से; उऱ अय्दुळि-खूब पीड़ित होकर जब रही; मून्ऱ लोकमुम् मूटुम्-(स्वर्ग-मध्य-पाताल) तीनों लोकों को आच्छादित कर जो रहे; अरक्कर् आम्-उन राक्षस रूपी; एन्ऱ कार् इरुळ्-अन्धकार को, जो सामने आया था; नीक्क-दूर करने के लिए; इराकवन् तौन्ऱितान् अँत-श्रीराघव आये, ऐसा; वेंय्यवन् तौन्ऱितान्-उष्णकिरण (सूर्य) उदित हुए। ३०७

रात भर वह इसी तरह काम के बढ़ने से उद्विग्न रही। तब सूर्य अन्धकार को दूर करते हुए उदित हुए, जैसे श्रीराघव तीनों लोकों पर छाये रहे राक्षस रूपी अन्धकार को मिटाने के लिए अवतार ले आये। ३०७

❖ विडियल् काण्डलु माण्डुत्तन् नुयिर्हण्ड वेंय्याळ्
पडियि लाण्मरुड् गुळळैन्नि लैन्नेयवन् वारान्
कडिदि नोडिन्ने नैडुत्तौल्लेक् करन्दवळ् कादल्
वडिवि तानुडन् चाळ्वदे मदियेन् मदिया 308

विडियल् काण्डलुम्-सवेरा होते ही; आण्डु तन् उयिर् कण्ड-तब अपनी प्राणता को प्राप्त कर; वेंय्याळ्-नृशंस निशाचरी; पडि इलाळ्-उपमा-हीन देवी; मरुड्कु उळळ् अँतिल्-पास रही तो; अवन् अँत पारान्-वह मेरी ओर ध्यान नहीं देगा; कडितिन् ओटिन्ने-सवेग दौड़कर; अँदुतु-उसको उठाकर; औल्लै करन्तु-जल्दी छिपाये रखकर; कातल् अवळ् वडिविल्-उसकी प्रिया के रूप में; नान् उटन् वाळ्वते-मेरा उसके साथ रहना ही; मति अँत-बुद्धिमाना है, ऐसा; मतिया-निश्चय करके। ३०८

सवेरा हुआ और शूर्पणखा ने देखा कि उसके प्राण वचे हैं। उसने सोचा कि जब तक वह स्त्री, जो अनुपम सुन्दरी है, उसके साथ रहेगी तब तक वह मेरी ओर दृष्टि देगा ही नहीं। इसलिए शीघ्र भागकर जाऊँगी और उसे उठा ले जाकर कहीं छिपा दूँगी। फिर राम की प्रिया उसका रूप लेकर उसके साथ रहूँगी। ऐसा जीना ही बुद्धिमत्ता है। ऐसा संकल्प करके;। ३०८

❖ वन्दु नोक्कितळ वळळपो यौरुमणित् तडत्तिल्
शन्दि नोक्कित् तिरुन्दु कण्डत्त डम्बि

इन्दु नोक्किय नुदलियैक् कात्तय लिरुण्ड
कन्द नोक्किय शोलैयि लिरुन्दु काणाळ 309

वन्तु नोक्कितळ-आकर देखा; वळळल्-प्रभु श्रीराम; पोय्-जाकर; और मणि तटत्तिल्-एक सुन्दर घाट पर; चन्ति नोक्किनत्-संध्यावन्दन में लगे; इरुन्तु-रहे; कण्टनळ्-देखा; तम्पि-कनिष्ठ (लक्ष्मण); इन्तु नोक्किय नुतलियै-चन्द्र-सम भाल वाली सीताजी का; कात्तु-रक्षण करते हुए; अयल्-पास; कन्तम् नोक्किय-सुबास निकालनेवाले; इरुण्ट चोलैयिल्-घने उपवन में; इरुन्तु-रहे, वह; काणाळ-नहीं देखा । ३०६

वह आयी । आश्रम के पास आकर उसने देखा कि प्रभु वहाँ से दूर मनोहर घाट पर संध्यावन्दन में दत्तचित्त है । उसका भाई इन्दु-सम ललाट वाली सीता के सरक्षण में ही पास में सुबास देनेवाले उस आश्रम के एक छाया के कारण अँधेरे स्थान में विराजे थे । पर शूर्पणखा ने लक्ष्मण को नहीं देखा । ३०९

ॐ तन्निय र्नित्तिय तुन्निय कन्निय र्न्दत्तळ् र्न्दत्तक् र्न्दवन् र्म्बोळिल् शमैन्ददन् कण्णुव मनत्तिन कात्तय कर्त्तत्तत् दिल्लेन डोहैयत् लिरुन्दवन् ताळ्वुड् वेण्णात् तौडर्न्दाळ् कण्डान् 310

तत्ति इरुन्तत्तळ्-एकाकिनी रहती है; अँत् कर्त्तु-मेरा विचार; चमैन्तु-चरितार्थ हुआ; अँत्-ऐसा और; इत्ति ताळ्वु उड्ड इरुन्तु-अब विलम्ब करते रहने से; अँत्क्कु अँण्णुवतु इल्-मुझे सोचने के लिए कुछ नहीं है; अँत्-ऐसा; अँण्णा-निश्चय करके; तुत्ति इरुन्त-घृणा से भरे; वन् मत्तत्तिनळ्-कठोर मन वाली; तोकैयै तौडर्न्ताळ्-मयूराभा सीताजी की ओर गई; कत्ति-फलों से युक्त; इरुम् पीळिल् कात्तु-विशाल उपवन में पहरा जो देते; अयल् इरुन्तवन्-पास रहे लक्ष्मण ने; कण्टान्-देखा । ३१०

शूर्पणखा को आश्वासन हो गया । 'सीता अकेली है ! मेरा संकल्प पूर्ण हो गया । अब विलम्ब करके सोचते रहने के लिए कुछ नहीं है ।' ऐसा घृणा से भरे कठोर मन वाली ने निश्चय किया । वह मयूराभा सीता की तरफ़ सवेग जाने लगी । लक्ष्मण ने, जो उस फलदार तरुओं से भरे विशाल आश्रम में पहरा देते हुए बैठे रहे, उसको देख लिया । ३१०

ॐ निल्ल डीर्यैक् कडुहिनत् पेंण्णैन् नित्तेन्दान् विल्ले डादवळ् वीड्गैरि यामेन विरिन्द शिल्ल लोदियैच् चिक्कुड् चेंड्गैयाड् पड्डि औल्लै यीरुत्तुदैत् तौळिहिल् शुरुवा लुरुवि 311

अदी निल अँन-री खड़ी रह कहकर; कटुक्किनत्-तेज चाल आये; पेंण् अँत् नित्तेन्तान्-स्त्री है, समझे; विल् अँटातु-धनुष न लेकर; अवळ्-उस (शूर्पणखा) के;

वीङ्कु अँरि आम् अँत-खूब अधिक जलती आग के समान; विरिन्त-विस्तृत रूप से सिर के चारों ओर बिखरे रहनेवाले; चिल्लल् ओतियै-कम लम्बे केश-जाल को; चैङ्कैयाल्-लाल हाथ से; चिक्कु उड पड्डि-हाथ को लपेट ले, ऐसा पकड़कर; ओल्लै-तेजी से; ईर्त्तु-छींचकर; उतैत्तु-उसके लात मारकर; ओळि किळर्-कान्तिमय; चुर्रुवाळ् उरुवि-कटार निकालकर । ३११

लक्ष्मण तुरन्त, 'री खड़ी रह ।' —डाँटते हुए उठ आये । वह स्त्री थी, इसलिए उसने धनुष नहीं लिया । उसने आकर जलती आग के समान उसके सिर पर बिखरे रहे केश को अपने हाथ से मरोड़कर पकड़ा, उसको झटका देकर खीचा और लात मारी । फिर उन्होंने अपनी उज्ज्वल कटार निकालकर; । ३११

ॐ अक्कि	ताङ्गिविण्	पडर्वैन्	रुत्तैळ्	वाळै
नूक्कि	नौय्दिनिल्	वैय्दिळै	यैल्लै	नुवला
मूक्कुड्	गादुम्बैम्	मुरण्मुलैक्	कण्गळ्	मुर्ऱ्याल्
पोक्किप्	पोक्किय	शित्तत्तौडुम्	बुरिहुळल्	विट्टान् 312

अक्कि-प्रयत्न करके; ताङ्कि-(इसको) उठाते हुए; विण् पटर्वैन्-आकाश में उड़ जाऊँगी; अँतु-ऐसा; उरुत्तु अँळुवाळै-कोप के साथ उछलनेवाली को; नौय्तिनिल् नूक्कि-आसानी से नीचे पछाड़कर; वैय्त्तु इळैयैल् अँत-ऐसा बुरा काम मत करो, यह; नुवला-कहकर; मूक्कुम् कातुम्-नाक और कानों को; वम् मुरण् मुलै-भयंकर क्रूरपी स्तनों के; कण्गळुम्-चूचुकों को; मुर्ऱ्याल् पोक्कि-एक के बाद एक क्रम से काटकर; पोक्किय चित्तत्तौडुम्-शान्त हुए कोप के साथ; पुरि कुळल् विट्टान्-एँठा केश छोड़ दिया । ३१२

उस शूर्पणखा को, जो उन्हें भी सयत्न उठाते हुए आकाश में उड़ जाने का विचार कर रही थी, नीचे पटक दिया । फिर 'ऐसे बुरे कार्य मत करो' कहते हुए उन्होंने उसकी नाक, कान और विकृत और भयंकर स्तनों के चूचुकों को क्रम से काट दिया । (यह चूचुक काटने की बात 'भागवत' में ही आयी है ।) तभी जाकर उनका क्रोध शान्त हुआ और उन्होंने अपने हाथ में एँठे रहे उसके केश को छोड़ा । ३१२

अक्क	णत्तवळ्	वाय्तिडन्	दरड्डिय	वमलै
तिक्क	नैत्तिनुज्	जैन्ऱुडु	तेवर्तज्	जैवियुम्
पुक्क	दुर्ऱुडु	पुहल्वदैन्	मूक्कैत्तुम्	बुळैय्
डुक्क	शोरियि	नीरमुर्ऱु	रुरुहिय	दुलहम् 313

अ कणत्तु-उस समय; अवळ्-शूर्पणखा ने; वाय् तिडन्तु-मुख खोलकर; अरड्डिय-जो विलाप किया, वह; अमलै-शोर; तिक्कु अनैत्तिन्तुम् चैन्ऱुडु-सारी दिशाओं में गया; तेवर् तम् जैवियुम्-देवों के कानों में भी; पुक्कतु-धुसा; उर्ऱुडु पुक्कल्वतु अँतु-वहाँ जो हुआ उसका क्या कहा जाय; मूक्कु अँतुम्-नाक रूपी; पुळै

ऊटु-विवरों द्वारा; उक्क-बहनेवाले; चोरियिन्-रक्त में; ईरम् उरू-भीगकर; उलकम् मुळुवतुम् उरुकियतु-सारा लोक गल गया । ३१३

तव शूर्पणखा अपना मुख खोलकर उच्च स्वर में रोने-चिल्लाने लगी । वह शोर सभी दिशाओं में व्यापा और देवों के कानों में भी जाकर भर गया । जो हुआ उसका क्या कहा जाय ? नासिका-विवर से जो रक्त बहा, वह इतना अधिक था कि विशाल भूमि ही गल गयी । ३१३

कौलैतु	मित्तुयर्	कौडुङ्गदिर्	वाळित्तक्	कौडियाळ
मुलैतु	मित्तुयर्	मूक्किनै	नीक्किय	मुडैमै
मलैतु	मित्तैन्न	विरावणन्	मणियुडै	महुडत्
तलैतु	मित्तत्तुक्कु	नाट्कौण्ड	दौत्तदोर्	तन्मै 314

कौलै तुमित्तु-मारना रोककर; उयर् कतिर् कौटुम् वाळित्त-अधिक चमकदार भयंकर कटार द्वारा; अ कौटियाळ-उस अत्याचारिणी का; मुलै तुमित्तु-स्तनों (के चूचुकों) को काटकर; उयर् मूक्किनै नीक्किय-उठी हुई नाक को काटने का; मुडैमै-कार्य; मलै तुमित्तु अन्न-पर्वत को काटने के समान; इरावणन् मणि उटै मकुटम्-रावण के मणिमण्डित किरीटधारी; तलै तुमित्तत्तुक्कु-सिरों को काट लेने के लिए; नाळ् कौण्डतोर् तन्मै-‘मुहूर्त’ (शुभारम्भ) करने के; औत्ततु-समान रहा । ३१४

लक्ष्मण ने शूर्पणखा को नहीं मारा । पर उसके स्तनों के अग्रभाग और नाक के उठे हुए भाग को काट दिया । वह कार्य पीछे होनेवाले रावण-वध का शुभ आरम्भ-सा था । पर्वतशिखरों के समान रावण के मणिमय किरीटधारी सिर काटकर अलग किये जायेंगे । उसका आरम्भ करने का मुहूर्त अब मनाया गया । ३१४

अदिर	मानिलत्	तडिपदैत्	तरङ्गिय	वरक्कि
कदिर्हौळ्	कालवेर्	करन्मुद	निरुदर्वैड्	गदप्पोर्
अदिर	लादव	रिरुदियि	निमित्तमा	यैळुन्दाण्
डुदिर	मारिपैय्	कार्निड	मेहमौत्	तुयर्न्दाळ् 315

अतिर-थरति हुए; मा निलत्तु-विशाल भूमि पर; अटि पतैत्तु-कोप और दुख के कारण पैर पटककर; अरङ्गिय-जो दहाड़ मारकर रोने लगी, वह; अरक्कि-राक्षसी; काल-यम के समान; कतिर् कौळ् वेल्-(और) चमकदार शक्ति-धारी; करन् मुतल्-खर आदि; वैम् कत पोर्-भयंकर और घमासान युद्ध में; अतिर् इलातवर्-जो सानी नहीं रखते थे, उन; निरुद-राक्षसों के; इरुतियिन् निमित्तमाय्-अन्त कराने के निमित्त; औळुन्तु-उठी और; आण्डु-वहाँ; उतिर मारि पयै-रक्तवर्षा करनेवाले; कार् निड मेकम् औत्तु-काले मेघ के समान; उयर्न्ताळ्-सिर ऊँचा कर खड़ी हुई । ३१५

शूर्पणखा वेदना से थर्रा उठी । भूमि पर पैर पटकने लगी । वह

दहाड़ मारकर रोयी । फिर वह सिर तानकर खड़ी हुई, तब वह रक्त बहानेवाले काले मेघ के समान लगी । कठोर युद्ध में निर्द्वन्द्व और यम के समान घातक और चमकदार भालों वाले खर आदि राक्षसों के नाश के लिए तत्पर हुई हो, ऐसा वह निशाचरी जोश के साथ उठी । ३१५

उयरुम् विण्णिडै मण्णिडै विळुङ्गिडन् दुळैक्कुम्
अयरुङ् गैहुलैत् तलमरु मारुयिर् शोरुम्
पैयरुम् पैण्बिरन् दियान्बट्ट पळियेनप् पिडरुम्
तुयरु मज्जिमुन् डीडरन्दिलात् तौल्हुडिप् पिडन्दाळ् 316

तुयरुम्-दुख नामक कुछ; अन्चि-डर से; मुन् तौटर्न्तिला-जिसके पास पहले नहीं गया था; तौल् कुटि पिडन्ताळ्-उस प्राचीन (राक्षस-) कुल में जो पैदा हुई थी, वह; विण् इटै उयरुन्-आकाश में उठती; मण् इटै विळुम्-भूमि पर गिरती; किटन्तु उळैक्कुम्-पड़ी चिल्लाती; अयरुम्-थकती; कै कुलैत्तु-हाथ मलकर; अलमरुम्-उद्विग्न होती; आर् उयिर् चोरुम्-क्षीणप्राण हो जाती; पैयरुम्-सुध पाकर चलने लगती; पैण् पिडन्त-स्त्री पैदा होकर; यान्-मुझे; पट्ट पळि-मिली निन्दा है; अँत-ऐसा; पितरुम्-बकती । ३१६

वह शूर्पणखा उस राक्षसकुल की थी, जिसके पास दुख भी डर के कारण नहीं आया था । अब उसे अपार दुख मिल गया । अत्यधिक वेदना का अनुभव करने लगी । वह ऊपर उठती पर भूमि पर गिर जाती । भूमि पर पड़ी रहकर चिल्लाती । थक जाती । हाथ मलकर उद्विग्न होती । प्राण-हीन-सी मूर्च्छित हो जाती । कुछ देर बाद सुध पाती और विलापती कि स्त्री पैदा होकर कैसी निन्द्य स्थिति को प्राप्त हो गयी ? । ३१६

❀ ओरुम् मूक्किन् युलैयुरु तीयेन् वुयिर्क्कुम्
अँरुङ् गैयिन् निलत्तिन् लिणैत्तडङ् गौङ्गै
परुडिप् पार्क्कुमेय् वेर्क्कुन्दन् बरुवरन् मयक्काल्
शुरु मोडुम्बोय्च् चोरिनीर् शौरिदरच् चोरुम् 317

मूक्किन्-नाक को; ओरुम्-पोंछती; उलै उरु ती अँत-भट्ठी की आग के समान; उयिर्क्कुम्-गरम साँस छोड़ती; कैयिन्-हाथों को; निलत्तितिल्-भूमि पर; अँरुम्-मारती; इणै तट कौङ्कै-जोड़े के बड़े स्तनों को; परुडि पार्क्कुम्-हाथों में ले देखती; मेय् वेर्क्कुम्-स्वेद-पूर्ण शरीर हो जाती; तन् परुवरल् मयक्काल्-अपने दुख से उत्पन्न भ्रम के कारण; चुरुम् ओटुम्-चारों ओर दौड़ती; पोय्-जाकर; चोरि नीर्-रक्त को; चौरि तर-बहाती हुई; चोरुम्-शिथिल पड़ जाती । ३१७

वह अपना दामन लेकर नाक को पोंछती । ऐसा गरम निश्वास छोड़ती, मानो भट्ठी से आग की ज्वाला निकल रही हो । हाथों से भूमि पर मारती । अपने दोनों स्तनों को हाथ से पकड़कर उन पर दृष्टि

दीड़ाती । उसका शरीर पसीने से भर जाता । असह्य वेदना के कारण उसका चित्त भ्रमित हो जाता और वह इधर चारों ओर घूमती । पर रक्त वहाते हुए निर्बल हो गिर जाती । ३१७

ऊर्ऋ	मिक्कनी	ररुवियि	नीळुहिय	कुरुदिच्
चेर्ऋ	वैळ्ळत्तुट्	तिरिबव	डेवरु	मिरियक्
कूर्ऋ	मुट्कुन्दन्	कुलत्तिनोर्	पैयर्लाड्	गूडि
आर्ऋ	हिर्ऋकिलळ्	पप्पल	पत्तिनिन्	उळैत्ताळ् 318

ऊर्ऋ मिक्क-सोते से अधिक बहनेवाले; नीर् अरुवियिन्-जल की पर्वत-सरिता के समान; ओळ्ळुक्किय-बहनेवाले; कुरुति चेरु-रक्त के पंकिल; वैळ्ळत्तु उळ्-प्रवाह के अन्दर; तिरिपवळ्-जो घूमती थी, वह; आर्ऋकिर्ऋलळ्-सह नहीं सकी और; तेवरुम् इरिय-देव भाग जाएँ, ऐसा; कूर्ऋम् उट्कुम्-यम को भी भयभीत करते हुए; तन् कुलत्तिनोर् पैयर् अलाम्-अपने कुल के सभी के नाम; कूडि-लेते हुए; पल् पल-अनेक प्रलाप; पत्ति निन्ऋ-करते हुए खड़ी रहकर; उळैत्ताळ्-बुलाया (शूर्पणखा ने) । ३१८

सोते से बहनेवाले जल की पर्वतसरिता के समान उसके कटे अंगों से पंकिल रक्त वह रहा था । वह उसके साथ बेचैनी से संचार करती थी । दुख उसे असह्य था । तब वह अपने कुल के राक्षसों के नाम लेकर विलापती हुई पुकार मचाने लगी । उसे सुनकर देव भाग गये और यम भी भयभीत हो गया । ३१८

निलैयैडुत्तु	नैडुनिलत्तु	नीयिरुक्कत्	तावदरुहळ्
शिलैयैडुत्तु	तिरियुमिडु	शिर्ऋदन्ऋ	देवरैर्दि
तलैयैडुत्तु	विळ्ळियामै	शमैप्पदे	तळलैडुत्तान्
मलैयैडुत्तु	तनिमलैये	यिवैहाण	वारायो 319

तळल् अँटुत्तान्-अग्निज्वाला को हाथ में रखनेवाले (शिवजी) के; मलै-कैलासपर्वत को; अँटुत्त-जिसने उखाड़ लिया, वह; तति मलैये-अनुपम पर्वत-सम (भाई रावण); नी-तुम; नैडु निलत्तु-विशाल भूमि पर; निलै अँटुत्तु इरुक्क-स्थायी यश के साथ रहते हो, तभी; तापतरुक्क-तपस्वी; चिलै अँटुत्तु तिरियुम् इतु-धनुष लेकर घूमते हैं, यह; चिर्ऋतु अन्ऋ-तुम्हारे गौरव में कमी नहीं है क्या; तेवर् अँतिर्-देवों के सामने; तलै अँटुत्तु-सिर उठाकर; विळ्ळियामै-देख न सकना; चमैप्पते-साध्य हो जाय क्या; इवै काण वारायो-ये देखने न आओगे क्या । ३१९

अनलधर शिवजी के कैलासपर्वत को उखाड़नेवाले पर्वत-सम मेरे भाई रावण ! तुम इस भूमि पर अभी स्थायी यश के साथ हो ! तो भी तापस लोग धनु लेकर घूम रहे हैं ! यह तुम्हारे यश को छोटा बनानेवाला नहीं है क्या ? और अब हम देवों के सामने सिर उठा नहीं सकेंगे ? उनकी दृष्टि से दृष्टि न मिला सकेंगे । ऐसी स्थिति भी आ जायगी

शायद ? इनको देखने नहीं आओगे क्या ? (दारुका वन के ऋषियों ने शिवजी पर अग्नि को भेजा था । उन्होंने उसे अपने हाथ में रख लिया । उसको 'मळु' कहते हैं । मळु का अर्थ परशु भी है । अतः मळु-धारी शब्द के दोनों अर्थ— परशुधर, अनलधर किये जाते हैं ।) । ३१९

पुलिताने	पुऱत्ताहक्	कुट्टिकोट्	पडादेन्नुम्
ओलियाळि	युलहुरैक्कु	मुरैपौय्यो	वूळियिनुम्
शलियाद	मूवरुक्कुन्	दानवर्क्कुम्	वानवर्क्कुम्
बलियात्ते	यान्पट्ट	वलिहाण	वारायो 320

ऊळियिनुम् चलियात्—कल्पान्त में भी अचल रहनेवाले; मूवरुक्कुम्—त्रिदेवों से और; तातवर्क्कुम्—असुरों से; वानवर्क्कुम्—देवों से; बलियात्ते—बढ़कर बली; पुलि पुऱत्तु आफ—मादा व्याघ्र के पास रहते; कुट्टि—उसका शावक; कोळ् पटानु—किसी की पकड़ में नहीं आया; अन्ननुम्—ऐसा; ओलि आळि उलकु—गर्जनशील सागर—बलियित भूतल (वासी); उरैक्कुम् उरै—जो कहता है, वह मसल; पौय्यो—असत्य है क्या; यान् पट्ट—मुझ पर आया; वलि काण—संकट देखने के लिए; वारायो—नहीं आओगे क्या । ३२०

हे भाई ! तुम कल्पान्त में भी अमिट रहनेवाले त्रिदेवों, दानवों और देवों से भी अधिक बली हो । तुम्हारे रहते मेरी यह दुर्गति हो गयी । लोकोक्ति है कि मादा व्याघ्र के पास रहते व्याघ्रशावक को कोई ग्रस नहीं सकता । क्या वह कथन असत्य है ? मुझ पर जो वीता है, वह बड़ी विपदा देखो, आओ । नहीं आओगे ? । ३२०

आर्त्तात्तैक्	करशुन्दि	यमरक्कणत्	तौडुमडर्त्त
पोर्त्तात्तै	यिन्दिरनैप्	पौरुदवत्तैप्	पोर्त्तौलैत्तु
वेर्त्तात्तै	युयिर्हीण्डु	मीण्डात्तै	वैरिन्पण्डु
पार्त्तात्तै	यान्पट्ट	पळिवन्दु	पारायो 321

पण्डु—पहले; आर्त्तु—बड़े हुल्लड़ के साथ; आत्तैक्कु अरचु उन्ति—गजराज ऐरावत को चलाते हुए; अमरर् कणत्तौटुम्—देवगणों के साथ मिलकर; अटर्त्त—(तुमसे) जिसने लड़ाई की; पोर् तात्तै इन्तिरत्तै—उस युद्धसन्नद्ध सेना के स्वामी इन्द्र से; पौरु—लड़कर; अवत्तै—उसको; पोर् तौलैत्तु—युद्ध में हराकर; वेर्त्तात्तै—डर से स्वेदयुक्त होकर; उयिर् कीण्डु मीण्डात्तै—जान लेकर भागनेवाले उसकी; पण्डु—पहले; वैरिन् पार्त्तात्तै—पीठ को जिसने देखा, ऐसे रावण; यान् पट्ट पळि—मुझे मिली दुर्गति की; वन्तु पारायो—तुम आकर नहीं देखोगे क्या । ३२१

पहले दिग्विजय के अवसर पर, हे रावण ! गजराज ऐरावत को चलाते हुए इन्द्र अपने देवगणों को साथ लेकर तुमसे लड़ने आया । युद्धसन्नद्ध सेना उसके साथ आयी थी । तुमने उससे लड़ाई की और समरभूमि में उसको हराया । वह पसीना-पसीना होकर जान लेकर तुमको

अपनी पीठ दिखाते हुए भागा ! ऐसे रावण ! क्या तुम इधर आकर मेरी दुर्गति नहीं देखोगे ? । ३२१

काश्चित्तैयुम्	पुत्रलितैयुम्	कतलितैयुड्	गडुङ्गालक्
कूश्चित्तैयुम्	विण्णिगड्गु	कोळितैयुम्	बणिहोड्
काश्चित्तैनी	यीण्डिरुवर्	मानिडवर्क्	काश्चाडु
माश्चित्तैयो	वुत्तवलत्तैच्	च्चित्तुडक्के	वाळ्हाँण्डाय् 322

चिवत् तट के वाळ्-शिवजी के दीर्घ हाथ से दी गई तलवार (चन्द्रहास); कौण्टाय्-रखनेवाले; काश्चित्तैयुम्-वायुदेव को; पुत्रलितैयुम्-और वरुण को; कतलितैयुम्-अग्निदेव को; कटुम् काल कूश्चित्तैयुम्-कठोर काल के देव यम को; विण् इयङ्कु-आकाश में संचार करनेवाले; कोळितैयुम्-नवग्रहों को; पणि कोट्ठुक्कु-सेवा लेने के लिए; आश्चित्तै-नियत किया; नी-तुमने; ईण्टु इरुवर् मात्तिडवर्क्कु-यहाँ दो मनुष्यों के सामने; आश्चातु-अशक्त होकर; उन् वलत्तै माश्चित्तैयो-अपना बल खो दिया है क्या । ३२२

शिवजी के हाथ से तुमको चन्द्रहास नाम की तलवार मिली । उस तलवार के धारक रावण ! तुमने वायुदेव, वरुण, अग्निदेव, कठोर कालदेव और आकाशचारी नवग्रह इन सबको अपने सेवक बना रखा है ! ऐसे बली अब इन दो मामूली मनुष्यों के सामने अशक्त होकर तुम अपना बल खो चुके क्या ? । ३२२

उरुप्पोडिया	मन्मदत्तै	यीत्तुळरे	यान्तालुम्
शैरुप्पडियिर्	पोडियौव्वा	मात्तिडरैच्	चीरुदियो
नैरुप्पोडियप्	पोडिशिडर	निरैमदत्त	तिशैयात्तै
मरुप्पोडियप्	पोरुप्पिडियत्	तोणिमिर्त्त	वलियोत्तै 323

निरै मतत्त-पूर्ण मद वाले; तिचैयात्तै-दिग्गजों के; मरुप्पु ओटिय-दाँत तोड़ते हुए; पोरुप्पु इटिय-कैलास को ढहते हुए; नैरुप्पु ओटिय-अग्निदेव को तोड़कर; पोडि चित्त-चूर-चर कर छितराते हुए; तोळ् निमिर्त्त-(दिग्विजय के अवसर पर) भुजाओं का बल दिखाकर जिसने लड़ाई की, ऐसे; वलियोत्तै-वलवान (रावण); उरु पोडिया-शरीर जिसका नष्ट नहीं हुआ हो, ऐसे; मन्मदत्तै-मन्मथ के; यीत्तु उळरे आन्तालुम्-समान हैं तो भी; चैरु पटियिल्-युद्धभूमि में (या जूते के तल की); पोडि ओव्वा-धूलि-सम भी जो नहीं हैं; मात्तिडरै-उन मनुष्यों पर; चीरुदियो-कोप करोगे क्या । ३२३

दिग्विजय के अवसर पर तुमने मदमत्त दिग्गजों के दाँतों को तोड़ा, कैलास को गिराया और अग्निदेव को चूर कर छितराया । ऐसे तुमने भुजाओं के बल का प्रदर्शन किया । ऐसे बली रावण ! ये दोनों सशरीर मन्मथ के समान हैं तो भी (चैरु पटियिल् =) युद्धभूमि में, या

(चैरूपटियिल् =) जूते के तल की धूलि के समान भी नहीं होंगे । वे इतने दुर्बल हैं । उन पर कोपकर उनसे लड़ोगे भी ? । ३२३

तेनुडैय	नरुन्दैरियर्	उवैरैयुन्	दैरुमाडुल्
तानुडैय	विरावणर्कुन्	दम्बियर्कुन्	दविरुन्ददो
ऊनुडैय	वुडम्बिनरा	यैङ्गुलत्तोरक्	कुणवाय
मानुडवर्	मरुङ्गेपुक्	कौडुङ्गिनदो	वलियम्मा 324

तेनु उदैय-शहद-मरे; नरुम् तैरियल्-मधुर सुगन्धयुक्त मालाधारी; तेवरैयुम्-देवों को भी; तैरुम्-आक्रान्त करनेवाले; आडुल् तान् उदैय-शक्तिसम्पन्न; इरावणर्कुम्-रावण का और; तम्पियर्कुम्-उसके छोटे भाइयों का; वलि-बल; तविरुन्ततो-छूट गया क्या; ऊनु उदैय उटम्पितर् आय्-मांसयुक्त शरीर के बनकर; अम् कुलत्तोरक्कु-हमारे राक्षसकुल के लोगों का; उणवु आय्-भोजन बननेवाले; मातुडवर् मरुङ्के पुक्कु-मनुष्यों के अन्दर घुसकर; औडुङ्कित्ततो-समा गया क्या; अम्मा-आश्चर्य । ३२४

अब जो हुआ है, उसका अर्थ क्या समझा जाय ? यह समझा जाय कि मधुयुक्त सुवासित मालाधारी देवों को आक्रान्त करनेवाले रावण का और उसके भाइयों का बल क्षीण हो गया ? और वह बल हमारे कुल के लोगों का भोज्य मांसधारी मानवों के शरीर के अन्दर प्रवेश कर समा गया ? । ३२४

मरन्नेयु	नैडुङ्गानित्तु	मरैन्दुडैयुन्	दापदरहळ्
उरन्नेयो	वडलरक्क	रोय्वेयो	वुडुर्दिरुन्दार्
अरन्नेयो	वरियेयो	वयत्तेयो	वैनुमाडुल्
करन्नेयो	यान्पट्ट	कैयडवु	काणायो 325

मरन् एयुम्-वृक्षाकीर्ण; नैटुम् कान्ति-विस्तृत वन में; मरैन्तु उरैयुम्-छिपकर रहनेवाले; तापतर्कळ्-तपस्वी लोगों का; वलिये ओ-बल है यह; अटल् अरक्कर्-(या) बली राक्षसों की; ओय्वेयो-शक्तिहीनता है; उडुर् अतिरुन्तार्-लड़ने आये हुए (लोग); अरन्ने ओ-हर है क्या; अरिये ओ-हरि है क्या; अयत्ते ओ-अज है क्या; वैनुम्-ऐसा माने उतना; आडुल्-बली; करन्ने ओ-हे खर; यान् पट्ट-मैंने जो पाया है; कै अडवु-वह संकट; काणाय् ओ-आकर देखोगे नहीं क्या । ३२५

यह घटना तरुसंकुल वन में छिपे रहनेवाले तपस्वियों के बल का द्योतक है ? या बली राक्षसों की शक्ति के क्षीण हो जाने का ? हे खर ! जिसको युद्ध में देखकर शत्रु यह सन्देह करते थे कि यह क्या हर ही है या हरि या अज ! ऐसी शक्ति वाले खर ! आकर मुझे क्या हो गया है —यह अनर्थ तुम नहीं देखोगे क्या ? । ३२५

इन्द्रिनु मलरयनु मिमैयवरुम् वणिकेट्पच्
 चुन्दरिपल् लाण्टिशैप्प वुलहेळुन् दीळूदेत्तच्
 चन्द्रिनुपीड् कुडैनिळ्ळुड् विशैन्दिरुन्द शवैनडुवे
 वन्दडिये नाणाडु मुहड्गाट्ट वल्लेत्तो 326

इन्द्रिनुम्-देवेन्द्र और; मलर् अयनुम्-सरोजासन ब्रह्मा; इमैयवरुम्-और
 अन्य देव; वणि केट्प-सेवाएँ करते हैं; चुन्दरि-सुन्दरी शची देवी; पल् लाण्ट
 इचैप्प-'जयजीव' गाती है, तब; उलकु एळुम् तोळुत्तु एत्त-सातों लोक विनय करके
 स्तुति करते; चन्द्रिनु-चन्द्र के; पीड् कुटै-स्वर्णछत्र; निळ्ळुड्-ले छाया करते;
 इचैन्तु इरुन्त-तुम ऐसा जिस सभा में उल्लास के साथ रहते हो; चपै नटुवे-उस सभा
 के मध्य; अट्टियेत्त वन्तु-दासी मैं आकर; नाणातु-विना शरमाये; मुक्कम् काट्ट
 वल्लेत्तो-मुख दिखा सकूंगी क्या । ३२६

हे रावण ! तुम अपनी सभा में बड़े ठाट-बाट के साथ बैठते हो । तब
 इन्द्र, सरसिजासन ब्रह्मा और अन्य देव तुम्हारी आज्ञाएँ मानते हुए सेवक के
 रूप में रहते हैं । सुन्दरी शची जयजीव का गान गाती है । सातों लोक
 तुम्हारी संस्तुति करते हैं । चन्द्र तुम्हारा स्वर्णछत्र धारण कर छाया
 बनाता है । ऐसी सभा में अब आकर बेशरम की तरह अपना मुख दिखाने
 योग्य रहती हूँ क्या ? । ३२६

✽ उरन्नेरिन्दु विळ्वैन्तै युदैत्तुरुट्टि मूक्करिन्द
 नरन्निरुन्दु तोळ्पार्क्क नात्तिरुन्दु पुलम्बुवदो
 करन्निरुन्द वनमन्शो विवैपडवुड् गडवेनो
 अरन्निरुन्द मलैयडुत्त वैयावो वैयावो 327

अरन् इरुन्त मलै अँटुत्त-हर जिसमें रहे, उस गिरि को उखाड़नेवाले; ऐयाओ
 ऐयाओ-प्रभु, प्रभु; उरन् नेरिन्तु विळ्व-मेरी छाती विदीर्ण हुई और मैं नीचे गिर गई,
 ऐसा; अँन्तै उतैत्तु उरुट्टि-मुझे लात मारकर, गिराकर और लुढ़काकर; मूक्कु
 अरिन्त- (जिसने) मेरी नाक काटी; नरन् इरुन्तु तोळ् पार्क्क-वह नर अभिमान के
 साथ अपने कंधों को देख रहा है, तब; नान् इरुन्तु पुलम्बुवतो-मैं बंठी विलाप करूँ
 (क्या यह ठीक है); करन् इरुन्त वरम् अन्शो-खर के वास का वन है न; इवै
 पट्टुम् कटवेनो-यह (अन्याय) सहने अर्ह हूँ क्या । ३२७

हे प्रभु ! हे रावण ! तुमने हरनिलय कैलास को उखाड़ लिया था !
 मुझे मेरी छाती विदीर्ण करते हुए नीचे गिरा दिया एक नर ने ! उसने
 मेरी नाक काट दी और वह आत्माभिमान के साथ अपने कंधों को देख
 रहा है, अपने बल पर इठला रहा है ! और मैं असहाय की तरह विलाप
 कर रही हूँ । क्या यह ठीक लगता है ? यह खर के शासनाधीन वन है ।
 इधर मेरी ऐसी दुर्गति हो —मैं इसके अर्ह हूँ क्या ? । ३२७

❖ नशैयाले	मूक्किल्लन्दु	नाणमिला	नान्वट्ट
वशैयाले	निन्नपुहळु	माचुण्ड	दाहादो
दिशैयाले	विशैहलङ्गच्	चैरुच्चैय्दु	मरुप्पोशित्त
इशैयाले	वैळुदुपैय	रिरावणवो	यिरावणवो 328

तिचै थात्तै-दिग्गजों के; विचै कलङ्क-क्रोधोद्वेग को मिटाते हुए; चैरु चैय्तु-लड़कर; मरुप्पु औचित्तल-उनके दाँतों को तोड़ा (जिसने); इचैयाले पयर् अळुतु-यश से (जिसने) अपना नाम अंकित किया; इरावण ओ इरावण ओ-हे वह रावण, वह रावण; नचैयालै-इच्छा के कारण; मूक्किल्लन्दु-नाक खोकर; नाणम् इला-लाज खोकर; नान् पट्ट वचैयाले-मुझे जो अपमान मिला, उससे; निन्न पुकळुम्-तुम्हारा यश भी; माचु उण्टतु आकातो-कलंकित नहीं होगा क्या । ३२८

हे रावण ! तुमने दिग्गजों के क्रोध को मिटाकर उनसे लड़कर उनके दाँत तोड़ दिये और अपना नाम यश से अंकित किया है । ऐसे हे रावण ! क्या प्रेम करना बुरा है ? अपने प्रेम के कारण मैंने अपनी नाक खोयी, लाज खोयी और मैं अपमानित हो गयी हूँ । इस मेरी निन्द्य स्थिति से तुम्हारे यश में भी बट्ठा नहीं लगेगा क्या ? । ३२८

❖ कानदत्ति	निडैयोरुवर्	कादोडुमूक्	कुडन्नरिय
मात्तमदाऽ	पाविये	निवण्मडियक्	कडवेत्तो
तात्तवरैक्	करुवळुत्तुप्	पुरन्दरत्तैत्	तळैयिट्टु
वात्तवरैप्	पणिहोण्ड	मरुहावो	मरुहावो 329

तात्तवरै करु अळुत्तु-दानवों का मान नाश कर; पुरन्दरत्तै-पुरन्दर को; तळैयिट्टु-बेड़ी पहनाकर; वात्तवरै-देवों को; पणि कौण्ड-नौकर (जिसने) बना लिया; मरुका ओ मरुका ओ-हे वह भतीजे, भतीजे; कान् अतत्तिन् इटै-जंगल में; ओरुवर्-एक मानव ने; कानु ओटु मूक्कु उटन् अरिय-कान के साथ नाक एक साथ काट दिया, तब; पावियेन्-पापिनी में; मात्तम् अताल्-अपमान से; इवण् मटिय कटवेत्तो-इधर मर जाने अर्ह हो गई क्या । ३२९

(अब वह इन्द्रजित् को पुकार रही है ।) हे मेरे भतीजे ! भतीजे ! तुमने दानवों का मान मिटाया, पुरन्दर को बेड़ियाँ पहनाकर कारागृह में रखा और देवों को नौकर बनाया और अपनी सेवा-टहल करायी । ऐसे भतीजे ! जंगल में एक नर ने मेरे नाक और कान एक साथ काट दिये । पापिनी मैं अपमान से यहीं मर जाऊँ —इसी के योग्य हूँ क्या मैं ? । ३२९

ओरुहालत्	तुलहेळु	मुरुत्तिरिय	तनुवोन्डाल्
तिरुहाद	शित्तन्दिरुहित्	तिशैतिशैये	शैलनूडि
इरुहालप्	पुरन्दरत्तै	यिरुञ्जिरैयि	लिट्टलैत्त
मरुहावो	मात्तिडवर्	वलिहाण	वारायो 330

और कालतु-पहले (दिग्विजय के समय) कभी; तनु औन्नाल-एक धनु द्वारा; तिरुकात चित्तम् तिरुकि-अदम्य क्रोध बढ़कर; उलकु एल्लुम् उरुत्तु-सातों लोकों पर कोप प्रदर्शित करके; इरिय-उनको अस्तव्यस्त करते हुए; तिरु चै तिरु चैल-दिशा-दिशा में भगाते हुए; नृत्ति-उनको मारकर; अ पुरन्तरत्तै-उस पुरन्दर को; इरु काल्-दो बार; इरुम् चिरै इट्टु-भयंकर कारा में डालकर; अलैत्त- (जिसने) सताया वह; मरुका ओ-भतीजे; मात्तिटवर्-इन मानवों का; वलि काण-बल देखने; वारायो-आओगे नहीं क्या । ३३०

हे भतीजे ! अपने पिता के दिग्विजय के समय में तुमने क्या-क्या साहस दिखाये । एक ही धनुष के सहारे तुमने बढ़ते क्रोध के साथ सातों लोकों पर कोप उतारकर उनके वासियों को भयभीत किया और वे भागने लगे । उनको तुमने मारा । फिर उस इन्द्र को दो बार कारागृह में डालकर दुख दिया । ऐसे तुम अब आकर दो अल्प नरों का बल देखो । देखने नहीं आओगे ? । ३३०

❁ कल्लीरुम्	बडैत्तडक्कै	यडङ्करत्तु	डणर्मुदला
अल्लीरुम्	जुडर्मणिप्पू	णरक्करकुलत्	तवदरित्तीर्
कौल्लीरुम्	बडैक्कुन्ब	करुणत्तैप्पोर्	कौडियीर्हाळ्
अल्लीरु	मुडङ्गुदिरो	यान्ळैप्प	केळीरो 331

कल् ईरुम्-पत्थर को भी बेधनेवाले; पटै तट कै-हथियारों को लिये हुए विशाल हाथों के; अटल्-बली; कर तूटणर् मुतला-खर, दूषण आदि; अल् ईरुम्-अन्धकार को भेदनेवाली; चुटर्मणि पूण्-कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित; अरक्कर कुलत्तु अवतरित्तीर्-राक्षसकुल में जात (राक्षसों); कौडियीर्काळ्-क्रूर; अल्लीरुम्-तुम लोग सब; कौल् ईरुम् पटै-लुहार से रेतकर तेज किए हुए आयुधों के; कुम्पकरणत्तै पोल्-कुम्भकर्ण की तरह; उडङ्कुत्तिरो-सो रहे हो क्या; यान्ळैप्प-मैं पुकार रही हूँ; केळीरो-वह नहीं सुनते क्या । ३३१

(खर-दूषण आदि राक्षसों को पुकारती है ।) कठोर पत्थर को भी बेधनेवाले हथियारधारी खर-दूषण आदि राक्षसों ! अन्धकार को भेदने वाली कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित राक्षसकुलोद्भूत निशाचरो ! तुम सब क्रूर राक्षस क्या उस कुम्भकर्ण के समान सो रहे हो, जिसके पास लुहार से रेतों द्वारा तेज किए हुए हथियार (बेकार) पड़े हैं ! मैं बुला रही हूँ— तुम सुन नहीं रहे हो क्या ? । ३३१

अन्निरिन्न	पलपत्ति	यिहलरक्कि	यळैत्तिरङ्गि
पीन्नन्नुम्	बडियहत्तुप्	पुरळ्हिन्ऱ	पीळुदत्तु
निन्ऱुन्द	नदियहत्तु	निऱैतवत्तिन्	तुऱैमुडित्तु
वन्ऱिण्गैच्	चिलैन्डुन्दोण्	सरहदत्तिन्	मलैवन्वान् 332

अन्न-ऐसा; इन्न पल-ऐसे विविध प्रलाप; पत्ति-कहते; इकल् अरक्कि-

वैर रखनेवाली राक्षसी के; अल्लैत्तु इरङ्कि-पुकारते और रोते हुए; पोन् तुन्नुम्-बहुत मनोहर; पटि अकत्तु-भूमि पर; पुरळ्किन्ड पौळुत्तु-लोहते समय; वन् तिण् कै-वलिष्ठ और सारयुक्त हाथों; चिलै नैटुम् तोळ्-धनु धारण करनेवाले उन्नत कंधों के; मरकतत्तिन् मलै-मरकत गिरि (-सम श्रीराम); अन्त नति अकत्तु-उस नदी के घाट पर; निरै तवत्तिन् कुरै मुटित्तु-यथावत कर्म अशेष पूरा करके; निन्ड-वहाँ से; वन्तान्-आश्रम की ओर पधारे । ३३२

वैर रखनेवाली शूर्पणखा ने इस तरह ऐसी विविध बातें कहती हुई अपने बन्धुओं को पुकार-पुकारकर विलाप किया । बिलापते हुए वह आश्रम की पवित्र भूमि पर गिरकर लोटी । तब श्रीराम, जिनके हाथ दीर्घ और बलवान थे और जिनके सवल कन्धे को धनु अलंकृत कर रहा था, नदी-घाट में सन्ध्या का नित्यकर्म यथावत अशेष रूप से सम्पन्न करके वहाँ से निकलकर इस स्थान पर आ गये । ३३२

वन्दात्तै	मुहनोक्कि	वयिरलैत्तु	मळैक्कण्णीर्
शैन्दारैक्	कुरुदियौडु	शैळुनिलत्तैच्	चेराक्कि
अन्दोवुन्	तिरुमेनिक्	कन्बिळैत्त	वन्बिळैयाल्
अन्दायान्	पट्टपडि	यिदुहाणन्	इन्दिरवीळ्न्दाळ् 333

वन्तात्तै-आये उनका; मुक् नोक्कि-श्रीमुख देखकर; वयिर अलैत्तु-पेट (छाती) पीटकर; मळै कण् नीर्-वर्षा के समान अश्रु; चेम् तारै कुरति ओटु-और धार रूप में बहनेवाले रक्त के साथ; शैळु निलत्तै चेरा आक्कि-श्रेष्ठ भूमि को कीचड़ बनाते हुए; अन्ताय-मेरे नाथ; अन्तो-हाथ; उन् तिरुमेनिक्कु-तुम्हारे श्रीशरीर पर; अन्पु इळैत्त-आसक्ति रखने के; वन् पिळैयाल्-कठोर अपराध के कारण; इतु-यह; यान् पट्ट पटि इतु-मुझे मिला प्रकार (संकट) यह; काण् अन्ड-देखो, कहकर; अन्तिर् वीळ्न्ताळ्-उनके सामने गिरी । ३३३

शूर्पणखा ने श्रीराम को देखा । उनके मुख के सामने अपना पेट (अपनी छाती को) पीटा । आँखों से अश्रुजल की धारा बहायी और शरीर से लाल रक्त की धारा । उनसे वहाँ की श्रेष्ठ भूमि पंकिल बन गयी । उसने श्रीराम से शिकायत की कि देखो ! मेरे नाथ ! हाथ ! तुम्हारे रूप पर मेरा जी ललचाया । इस घोर अपराध का फल मुझे भोगना पड़ा, वह यह देखो ! यह कहते हुए वह श्रीराम के सामने भूमि पर गिर पड़ी । ३३३

विरिन्दाय	कून्दलाळ्	वैय्यविनै	यादानुम्
पुरिन्दाळैन्	बदुन्दन्दु	पोरुवरिय	तिरुमन्त्ताल्
तैरिन्दानिन्	रिळैयोने	यिवळैन्डुब्	जैवियौडुम्क्
करिन्दानैन्	बदुमुणर्न्दा	नवळैनी	यारैन्डान् 334

विरिन्ताय कून्तलाळ्-बिखरे केश वाली ने; वैय्य विनै-कूर काम; यातेत्तुम् पुरिन्ताळ्-कुछ किया है; अन्पुत्तुम्-यह; तत्तु-अपने; पोरुव अरिय तिरुमन्त्ताल्-

अनुपम-श्रीमन में; तैरिन्तान्-समझकर; इळ्योत्ते-छोटे भाई ने; इवळ-इसके; इन्नु-अभी; नैटुम् चैवि ओटु-बड़े कानों के साथ; मूक्कु-नाक को; अरिन्तान्-अनुपम-काट लिया है, यह भी; उणरन्तान्-जानकर; अवळ-उससे; नी यार्-तुम कौन हो; अन्त्रान्-पूछा । ३३४

श्रीराम ने अपने श्रीमन में सोचा कि बिखरे केश वाली इसने नृशंस कोई काम किया होगा और अनुज लक्ष्मण ने अभी-अभी इसकी नाक और इसके कान काटे हैं । उन्होंने उससे प्रश्न किया कि तुम कौन हो ? । ३३४

अव्वुरैकेट्	टडलरक्कि	यडियायो	नीयैन्तैत्
तैव्वुरैयैन्	इव्वुलहु	मिल्लाद	शीइत्तान्
वैव्विलैवे	लिरावणत्ताम्	विण्णुलह	मुदलाय
अव्वुलहु	मुडैयानुक्	कुडन्बिरन्देन्	यानैन्त्राळ् 335

अ उरै केट्टु-वह वचन सुनकर; अटल् अरक्कि-सशक्त राक्षसी ने; अन्तै नी अडियायो-मुझे नहीं पहचानते क्या; अ उलकुम्-सभी लोकों में; तैव्व उरै अन्त्रा इत्तात्-जिसके शत्रु नहीं होते (सभी हराये गये हैं); चीइत्तान्-जो क्रोधी है; वैम् इलै वेल्-भयंकर पत्ताकार सिर वाला भालाधारी; इरावणन् आम्-रावण कहलानेवाले; विण् उलकम् मुतल् आय-स्वर्गलोक आदि; अ उलकुम् उडैयानुक्कु-सभी लोकों के स्वामी की; उटन् पिडन्तेन्-सहोदरा हैं; यान्-मैं; अन्त्राळ्-कहा । ३३५

वह प्रश्न सुनकर शूर्पणखा को आश्चर्य हो गया । उस क्रूर राक्षसी ने उत्तर में कहा कि क्या तुम मुझे नहीं जानते ? मैं उस रावण की बहिन हूँ, जिसका किसी भी लोक में कोई शत्रु नहीं है (क्योंकि उसने शत्रुओं को मिटा दिया है और कोई भी उससे वैर मोल लेने से डरते हैं), जो बड़ा क्रोधी है और जो पत्ताकार सिर के भाले का धारी है और जो स्वर्गादि लोकों में हर किसी लोक का स्वामी है । मैं उसकी सहोदरा हूँ । ३३५

तामिरुन्द	तहैयरक्कर्	पुहलौळियत्	तवमियर्ऱ
यामिरुन्द	नैडुज्जळ्	कैन्शेयवन्	दायैन्तलुम्
वैमिरुन्दै	यैन्ककनलु	मैरिहाम	वैम्बिणिक्कु
मामरुन्दै	नैरुनलितुम्	वन्दिलैन्नो	यानैन्त्राळ् 336

तकै अरक्कर्-निषिद्ध राक्षस; ताम् इरुन्त-जहाँ रहते हैं; पुक्ल् ओळिय-उन स्थानों को छोड़कर; याम्-हम; तवम् इयर्ऱ-तपस्या करते हुए; इरुन्त-जहाँ रहते हैं; नैटुम् चूळल्-इस विशाल आश्रम में; अन् चैय वन्ताय्-क्या करने आई; अन्तलुम्-पूछने पर; वैम् इरुन्तै अन्त-कोयले के समान; कत्तलुम्-जलनेवाले; अरि काम-तापक काम रूपी; वैम् पिणिक्कु-तपानेवाले भयंकर रोग की; मा मरुन्ते-श्रेष्ठ औषध; नैरुनलितुम्-कल भी; यान् वन्तिलैन्नो-मैं नहीं आई थी क्या; अन्त्राळ्-पूछा । ३३६

तब श्रीराम ने पूछा कि निषिद्ध राक्षसों के वासस्थानों को छोड़कर इस श्रेष्ठ आश्रम में तुम क्यों आयी, जहाँ हम तपस्या कर रहे हैं ? उसके उत्तर में शूर्पणखा श्रीराम से बोली— अग्नि में जलते कोयले के समान तपानेवाले काम रूपी रोग की श्रेष्ठ औषध ! क्या तुम भूल गए कि मैं कल भी आयी थी । कल आयी थी न ? । ३३६

शङ्गयल्पोऽ	करुनेडुङ्गद	टेमरुदा	मरैयुडैयुम्
नङ्गैयिव	रैतनेरुनल्	नडन्तवरो	नामैन्तक्
कौङ्गैहळुड्	गुळैहाडुड्	कौडिमूक्कुड्	गुडैत्तळित्ताल्
अङ्गणर	शैयैरुवरक्	कळियादो	वळहैन्डाळ् 337

चैम् कयल् पोल्-लाल 'कयल' मीनों के समान; करु नैट्टुम् कण्-काली और आयत आँखों वाली; तेमरु तामरै-शहद से युक्त कमल पर; उरैयुम्-रहनेवाली; नङ्कै अंत-श्रीलक्ष्मीदेवी के समान; नैरुनल्-कल; नडन्तवरो-आई जो थी; नाम् अन्त-वही हम है (तुम हो) क्या, यह पूछने पर; अरचे-राजा; कौङ्कैकळुम्-स्तन और; कुळै कातुम्-लचकदार कान; कौटि मूक्कुम्-और लता-समान नाक को; कुडैत्तु अळित्ताल्-काटकर दूर करने से; अङ्कण-तब; अळकु अळियातो-सौंदर्य मिट नहीं जायगा क्या; अन्डाळ्-पूछा । ३३७

श्रीराम ने कहा— ओफ़ ओह ! कल जो श्रीलक्ष्मी के समान लाल कयल-सी आँखों वाली कमलनिवासिनी है, इधर आयी, वह तुम्हीं हो क्या ? शूर्पणखा ने निष्ठुरता से कहा कि लटकनेवाले कानों को और लता-समान नाक को काट दिया गया तो क्या सौन्दर्य मिट नहीं जायगा ? (कल और आज के रूप में अन्तर क्या नहीं आ जायगा ?) । ३३७

मुरत्तुमूळ	वलत्तिळैय	मौयम्बितान्	मुहनोक्कि
वीरवैहुण्	डनैयिवडन्	विडुहाडुड्	गौडिमूक्कुम्
ईरनिनैन्	दिवळिळैत्त	पिळैयैन्नेन्	डिडैवित्तवच्
चूरनैडुन्	दहैयवत्तै	यडिवणङ्गिच्	चौल्लुवान् 338

इडै-भगवान श्रीराम के; मूरत्तु मूळवलन्-मन्दहास के साथ; इळैय मौयम्बितान्-पराक्रमी छोटे भाई के; मुक्कुम् नोक्कि-मुख को देखकर; वीर-वीर; इवळ् तन्-इसके; विटु कातुम्-लटकनेवाले कानों और; कौटि मूक्कुम्-लम्बी नाक को; वैकुण्ठतै-क्रोध करते हुए; ईर-काटने के लिए; इवळ् नितैन्नु इळैत्त-इसने सोचकर जो किया; पिळै-वह अपराध; अन्-क्या; अन्डु वित्तव-यह पूछने पर; चूर नैट्टुम् तकै-शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण; अवत्तै अटि वणङ्कि-उनको पैरों पर नमस्कार करके; चौल्लुवान्-बोले । ३३८

प्रभु श्रीराम को हँसी आ गयी । मन्दहास के साथ उन्होंने अपने भाई लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वीर ! इसके लटकते कानों और दीर्घ नाक को गुस्से के साथ इस तरह काटो, ऐसा इसने जान-बूझकर क्या अपराध

किया ? शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण ने श्रीराम को नमस्कार करके यों उत्तर दिया । ३३८

तेट्टन्दान्	वाळैयिर्इर्	तिन्नवो	तीवित्तैयोर्
कूट्टन्दान्	पुउत्तुळदो	कुडित्तपौरु	ळिन्दिर्लैन्नाल्
नाट्टन्दा	तैरियुमिळ	नल्लाण्मेर्	पौल्लादाळ्
ओट्टन्दा	ळरिदिनिव	ळुयिर्हवर्न्दा	ळनवन्दाळ् 339

तेट्टम् तान्—इसका इधर खोजते हुए आना; वाळ् अयिर्इल् तिन्नवो—(वक्र और) उज्ज्वल दाँतों से काटकर खाने के लिए था, या; ती वित्तैयोर्—नृशंसकारी; कूट्टम् तान्—राक्षसों का दल ही; पुउत्तु उळतो—पास रहता है; कुडित्त पौरु—जो उद्देश्य ले आई थी, वह बात; अरिन्तिलैन्—मैंने नहीं जाना; नाट्टम् तान् अरि उमिळ—आँखों से अग्नि प्रकट करते हुए; पौल्लाताळ्—यह क्रूरी; नल्लाळ् मेल्—साध्वी (भाभी) पर; अरितिन्—अप्रत्याशित रीति से; इवळ् उयिर् कवर्न्ताळ्—अंत—इनका प्राण हर लिया हो, ऐसा; ओट्टन्ताळ्—भागती; वन्ताळ्—आई । ३३९

प्रभु ! इसका उद्देश्य क्या था ? भाभी की खोज में यह आयी—उनको अपने सफ़ेद दाँतों से चबाकर खाने के लिए ? या क्रूरकर्मा राक्षसों का दल पास में कहीं है ? यह क्या करने आयी—मैं जान नहीं पाया । पर यह बुरी स्त्री आँखों से अग्नि निकालती हुई साध्वी देवी पर ऐसी झपटी कि मानो उसने उनकी जान ही हर ली हो ! वह तीव्र गति से भागती आयी । ३३९

एर्इवळै	वरिशिलैयो	त्तियम्बामुन्	त्तिहलरक्कि
शेर्इवळै	तत्कणव	नरुहिरुप्पच्	चित्तन्दिर्हिच्
चूर्इवळै	तुनियुळक्कुन्	दुर्ऱैहळ्नीर्	वळनाड
मार्इवळैक्	कण्डक्का	लळलादो	मतमैन्ऱाळ् 340

एर्इ—(हाथ में) धृत; वळै वरि चिलैयोन्—झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष वाले (लक्ष्मण) के; इयम्पा मुन्—कहने से पूर्व ही (कहते ही); इक्ल् अरक्कि—वैरमना राक्षसी; चूल् तवळै—गाभिन मेंढकी; तत् कणवन् अरुक्—अपने पति मेंढक के पास; चेर्इ वळै इरुप्प—कीचड़ में एक शंखकीट को रहते देख; चित्तम् तिरुक्कि—कोप में वढ़कर; तुत्ति उळक्कुम्—बहुत रूठकर जहाँ दुखी होती है; दुर्ऱै कळ्—ऐसे घाटों से भरे; नीर् नाटा—जलाशय जिसमें रहने हैं, ऐसे देश के अधिपति; मार्इवळै कण्ट काल्—सौत को देखकर; मतम् अळलातो—मन तप्त नहीं होगा क्या; अन्ऱाळ्—कहा । ३४०

झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष को हाथ में जो लिये रहे, उन लक्ष्मण के यह कह चुकने के पूर्व ही शूर्पणखा बोल उठी । हे अयोध्या देश के अधिपति, जहाँ ऐसे जलाशय बहुतायत से पाये जाते हैं, जिनमें गाभिन मेंढकियाँ कीच में अपने मेंढक के पास शंखकीट को देखकर मान करके बहुत दुखी हो रहती हैं ! सौत को देखने पर किसी का मन जल नहीं उठेगा

क्या ? (इस पद में सम्बोधन जो है, उसमें सौत के मनोभाव की चर्चा अप्रत्यक्ष रूप से हुई है। यह तमिळ काव्य की विशेषता है। शूर्पणखा अपने को मेंढकी और सीताजी को मादा शंखकीट मानती है। यानी अपने को पत्नी और सीता को सौत।) । ३४०

पेडिप्पोर्	वल्लरक्कर्	पैरुङ्गुलत्तै	यौरुङ्गविप्पान्
तेडिप्पोन्	दनमिन्ऱु	तीमाऱ्ऱुज्	जिलविळम्बि
वीडिप्पो	हादेयिव्	वैव्वत्तत्तै	विट्टहल
ओडिप्पो	वैन्ऱुरैत्त	वुरैहडन्दाऱ्	कवळुरैप्पाळ् 341

पेडि पोर्-भयजनक युद्ध में; वल्-समर्थ; अरक्कर् पैरुम् कुलत्तै-राक्षसों के बड़े कुल को; औरुङ्कु अविप्पान्-एक साथ मिटाने के लिए; तेडि पोन्तत्तैम्-हूँढ़ते हुए हम आये हैं; इन्ऱु-अब; ती माऱ्ऱुम्-बुरी बातें; चिल विळम्बि-कुछ कहकर; वीटि पोकाते-मिटो मत; इ वैव्व वत्तत्तै विट्टु-इस प्यारे वन को छोड़कर; अकल-दूर; ओटि पो-भाग जाओ; अन्ऱु उरैत्त-यह जिन्होंने कहा; उरै कटन्तार्क्कु-उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम से; अवळ् उरैप्पाळ्-वह बोली (उत्तर में) । ३४१

श्रीराम ने गम्भीरता से चेतावनी दी। हम इधर उन भयंकर युद्ध-समर्थ राक्षसों को एक साथ समूल नाश करने आये हैं। हम उन्हीं की खोज में इधर रहते हैं। अब तुम कुछ अंड-संड कहकर अपना अन्त मत करा लो। चलो इस प्यारे आश्रम को छोड़कर दूर भाग जाओ। उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम के ये वचन सुनकर शूर्पणखा उन्हीं को उपदेश देने लगी। ३४१

नरैतिरैयौन्	इल्लाद	नान्मुहत्ते	मुदलमर्ऱु
करैयिऱ्न्दो	रिरावणऱ्कुक्	करनिऱ्कुक्कुड्	गुडियन्ऱो
विरैयुमदु	नन्ऱुन्ऱु	वैऱाह	यानुरैक्कुम्
उरैयुळ्ळु	तुमक्कुऱुदि	युणऱुदिरै	लैन्ऱुरैप्पाळ् 342

नरै तिरै-बाल का पकना और खाल का झुरियों सहित हो जाना; औरुङ्कु इल्लात-कुछ जिनका नहीं है; नान्मुहत्ते मुतल्-वे चतुर्मुख आदि; अमर्ऱु-देव; करै इऱ्न्तोर्-असीम लोग; इरावणऱ्कु-रावण को; करन् इऱ्क्कुम्-कर देनेवाले; कुटि अन्ऱो-प्रजा है न; विरैयुम् अतु-तुम जिसके करने में त्वरा दिखाते हो वह; नन्ऱु अन्ऱु-अच्छा नहीं है; उऱुति उणऱुतिरेल्-अपना हित चाहते हो तो; तुमक्कु-तुम लोगों को; वैऱु आक-अलग; यान् उरैक्कुम् उरै-मेरे समझाने की एक बात; उळ्ळु-है; अन्ऱु-कहकर; उरैप्पाळ्-बताने लगी। ३४२

ब्रह्मा आदि देव सब, जो कभी बुढ़ापे को प्राप्त नहीं होते, जब बाल पक जाते हैं और खाल पर झुरियाँ पड़ जाती हैं, रावण को कर देनेवाले प्रजाजन हैं। यह तुम नहीं जानते क्या? तुम जो काम करने में तत्पर

रहते हो और जल्दी दिखाते हो, वह तुम्हारे हित में नहीं होगा । अगर तुम अपना भला सोचो तो मुझे तुमसे विशेष रूप से कहने की एक बात है । सुनो । वह कहने लगी । ३४२

आक्करिय	मूक्कुङ्गा	यरियुण्डा	ळैत्तारै
नाक्करियुन्	दयमुहनार्	नाहरिह	रल्लामै
मूक्करिन्दु	नुङ्गुलत्तै	मुदलरिन्दी	रित्तियुमक्कुप्
पोक्करिदिव्	वळ्ळैयैल्लाम्	पुल्लिडैये	युहुत्तीरे 343

उङ्कै-तुम्हारी छोटी बहिन; आक्कु अरिय-फिर से ठीक कराने के लिए कठिन रीति से; मूक्कु अरि उण्टाळ-नाक की कटी हो गई; ँत्तारै-यह समाचार कहनेवाले की; नाक्कु अरियुम्-नाक जो काट देंगे वे; तयमुकत्तार्-दशग्रीव; नाकरिक् अल्लामै-दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं है, इसलिए; मूक्कु अरिन्दु-नाक काटकर; नुम् कुलत्तै-अपने कुल को; मुत्तल् अरिन्तीर्-जड़ से काट लिया (तुमने); इति-अब; उमक्कु पोक्कु अरितु-तुम्हारा कोई मार्ग नहीं है; इ अळ्ळु ँल्लाम्-यह सब सौंदर्य; पुल्लिडैये-घास के मध्य; उकुत्तीर्-गिरा दिया (तुमने) । ३४३

कोई जाकर दशमुख से कहे कि तुम्हारी बहिन की नाक एकदम कट गयी और उसका कोई इलाज नहीं हो सकता तो झट वे उस कहनेवाले की जीभ काट देंगे । ऐसे वे दशग्रीव दया-दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं हैं । तुमने मेरी नाक क्या कटवायी, अपने कुल को जड़ से काट दिया समझो ! अब तुम्हारे बचाव का कोई मार्ग नहीं है । हन्त ! अपना यह सारा सौन्दर्य तुमने धूल में मिला लिया ! (घास में छितराना मुहावरा है ।) । ३४३

वान्गाप्पोर्	मण्गाप्पोर्	मानाहर्	वाळुलहम्
तान्गाप्पो	रित्तित्तङ्ग	डलैकात्तु	निन्ऱुङ्गळ्
ऊन्गाक्क	वुरियार्या	रैन्नैयुयिर्	नीर्हाक्किन्
यान्गाप्पे	नल्लालव्	विरावणत्ता	रळ्ळैन्ऱाल् 344

इरावणत्तार् उळ्ळै-रावण है; ँत्ताल्-इमलिए; नीर् ँन्नै उयिर् काक्किन्-तुम मेरे प्राण बचाओगे तो; यान् काप्पैन्-मैं तुमको (रावण से) बचा लूँगी; अल्लाल्-नहीं तो; वान् काप्पोर्-स्वर्गपालक; मण् काप्पोर्-भूपति; मा नाक् वाळ्-बड़े नाग जहाँ रहते हैं; उलकम् तान्-उस लोक के; काप्पोर्-राजा लोग; इत्ति-अब; तङ्कळ् तलै कात्तु-अपने सिरों को बचा लेकर; उङ्कळ् ऊन् काक्क-तुम्हारा शरीर भी बचाने की; उरियर् यार्-क्षमता रखनेवाले कौन हैं । ३४४

रावण हैं, इसका अर्थ है कि तुम बच नहीं सकते । हाँ, तुम मेरी बात मानकर मेरे प्राण बचाओगे तो मैं तुम्हें बचा सकूँगी । नहीं तो स्वर्ग, भूमि या नागलोक के राजाओं में अपने सिरों को बचा लेकर तुम्हारा शरीर भी बचा ले, ऐसे शक्तिसम्पन्न कौन होते हैं ? (कोई नहीं !) । ३४४

कावर्त्तित्तु	कड्पमैन्दार्	तम्वैरुमै	ताङ्गळडार्
आवर्त्ते	रत्तुविना	लङ्गेहिन्ऱे	नामन्ऱो
देवर्क्कुम्	वलियान्ऱुत्तु	डिऱुत्तडुंगे	याळिवळीण्
डेवर्क्कु	वलियाळैन्	डिळैयानुक्	कियम्वीरो 345

तिण् फावल् कड्पु अमैन्तार्—अपने स्त्रीत्व का सबल रक्षक जो पातिव्रत्य है, उससे युक्त पतिव्रता स्त्रियाँ; तम् पेरुमै—अपनी बड़ाई; ताम् कळडार्—खुद नहीं कहती; आवल् पेर् अन्पिताल्—इच्छा और गम्भीर प्रेम के कारण; अङ्किन्ऱैन् आम् अन्ऱो—इन बातों को खोलकर कह रही हूँ न; इवळ्—यह; तेवर्क्कुम् वलियान् तन्—देवों से भी अधिक शक्तिशाली की; तिरु तङ्कयाळ्—प्यारी बहिन है; ईण्डु—इधर; एवर्क्कुम् वलियाळ्—किसी से भी अधिक बलशालिनी है; अन्ऱु—ऐसा; इळैयानुक्कु—अपने भाई को; इयम्पीरो—नहीं समझाओगे क्या । ३४५

यह मेरे लिए बहुत संकोच की बात है । अपने स्त्रीत्व की रक्षा में जो पातिव्रत्य में दृढ़ है, वे कुलीन स्त्रियाँ अपनी बड़ाई अपने मुख से नहीं कह सकतीं । पर मेरा तुम पर इच्छा और प्रेम अगाध है । इसलिए मैं साफ़-साफ़ ये बातें कह रही हूँ । तुम अपने भाई को समझाओ कि यह शूर्पणखा देवों से भी अधिक शक्तिशाली रावण की भगिनी है और वह स्वयं किसी से भी बढ़कर बलवान है । यह नहीं बताओगे क्या ? । ३४५

माप्पोरिड्	पुडङ्गाप्पैन्	वान्शुमन्डु	शैलवल्लेन्
तूप्पोलक्	कत्तिपलवुन्	जुवैयुडैय	तरवल्लेन्
काप्पारैक्	कैत्तेनोर्	करुदियदे	तरुवेत्तिप्
पूप्पोलु	मैय्यिवळार्	पौरुळैन्ने	पुहल्वीराल् 346

मा पोरिल्—घोर युद्ध में; पुडम् काप्पैन्—पास रहकर रक्षा करूँगी; वान्—आकाश में; चुमन्तु चैल वल्लेन्—ढोते हुए ले जा सकूँगी; तू पोल—मांस के समान; चुवै उटैय—स्वादिष्ट; कत्ति पलवुम्—फल अनेक; तर वल्लेन्—लाकर दे सकूँगी; काप्पोरै कैत्तु—रक्षक को मिटाकर; अन् नोर् करुदियते—तुम जो चाहते हो, वह; तरुवेन्—लाकर दूँगी; इ पू पोलुम् मैय्—इस सुमन सदृश शरीर वाली; इवळ् आल्—इस स्त्री से; पौरुळ् अन्ने—लाभ क्या है; पुक्कल्वीर्—बताओ । ३४६

और भी सुनो । किसी से घोर युद्ध छिड़ा तो मैं तुम्हारे पास रहकर तुमको बचाऊँगी । तुमको उठाकर आकाश में संचार कर सकूँगी । श्रेष्ठ मांस के समान स्वादिष्ट फल संग्रह कर ला दूँगी । समझो कि तुम्हारा मन किसी वस्तु पर ललचाता है । उस वस्तु को, उसकी रक्षा करनेवाला कोई भी हो उसे मारकर, तुम्हारे लिए ला दूँगी । ऐसी शक्तिशालिनी भुक्तको छोड़कर तुम इस सुमन-समान कोमल शरीर वाली के पास क्यों रहो ? इस अवला से तुम्हारा क्या मिलेगा ? बताओ तो देखें । ३४६

कुलत्तालु	नलत्तालुङ्	गुडित्तनवे	कीर्णरदक्क
वलत्तालु	मदियालुम्	वडिवालु	मडत्तालुम्
निलत्तारुम्	विशुम्बारु	नेरिळैया	रैन्तैप्पोल्
शौलत्तानिङ्	गुरियारैच्	चौल्लीरो	वल्लीरेल् 347

कुलत्तालुम्-जाति से; नलत्तालुम्-गुणों से; कुडित्तनवे-तुमसे निर्दिष्ट वस्तुएँ; कीर्णर तक्क-लाने की; वलत्तालुम्-क्षमता में; मदियालुम्-बुद्धि में; वडिवालुम्-रूप-सौंदर्य में; मडत्तालुम्-सुकुमारता में; निलत्तारुम्-भूलोकवासी; विशुम्बारुम्-स्वर्गवासी; रैन्तै पोल् नेरिळियार्-मेरे समान कोई स्त्री; चौल तान्-कहने के लिए; उरियारै-योग्य हो तो उसे; वल्लीरेल्-कह सकते हो तो; चौल्लीर्-कहो । ३४७

जाति, श्रेष्ठ गुण, तुम्हारी इच्छित वस्तु ला देने की क्षमता, बुद्धि, रूप-सौन्दर्य और सुकुमारता में मेरे समान भूलोक, स्वर्ग और नागलोक के वासियों द्वारा मान्य योग्यता रखनेवाली कोई स्त्री हो और तुम उसे जानते हो तो बताओ तो सही ! । ३४७

पोक्किनी	रैन्नाशि	पोय्त्तैन्नीर्	पोरुक्किलिरेल्
आक्कुवैन्नीर्	नौडिवरैयि	लळहमैवै	नरळ्ळूरुम्
पाक्कियमुण्	डैनिलदनाल्	पैण्मैक्कोर्	पळ्ळुण्डो
मेक्कुयर्	नैडुमूक्कु	मडन्दैयर्क्कु	मिहैयन्डो 348

अँन् नाचि पोक्किनीर्-मेरी नाक कटा दी; पोय्त्तु अँन्-गया क्या; नीर् पोरुक्किलिरेल्-तुम इसे सह नहीं सको तो; अरळ् कूळ्म् पाक्कियम् उण्टु-कृपा मिलने का भाग्य दिया; अँन्तिल्-तो; ओर् नौटि वरैयिल्-एक ही क्षण के अन्दर; आक्कुवैन्-बना लूंगी; अळ्ळु अमैवैन्-सौंदर्यवती बन जाऊंगी; अतत्ताल्-बिना नाक की रह जाऊं तो; पैण्मैक्कु-स्त्रीत्व में; ओर पळ्ळिप्पु उण्टो-कमी होगी क्या; मेक्कु उयर्म्-उभरकर उगनेवाली; नैडु मूक्कुम्-दीर्घ नाक भी; मडन्तैयर्क्कु-नारियों के लिए; मिक्क अनुडो-अनावश्यक नहीं है क्या । ३४८

तुमने मुझे नासिका से हीन कर दिया । छोड़ दो ! उससे क्या नष्ट हुआ ? तो भी अगर तुमको मेरा नासिका बिना रहना असह्य हो तो फिर से अपनी नाक पूर्ववत् बना लूंगी इस शर्त पर कि तुम मुझ पर कृपा करो । वचन दो, देखो एक क्षण में ठीक हो जायगा । वही नहीं तुम जैसा रूप चाहो वैसा रूप ले लूंगी । नाक के न रहने से क्या स्त्रीत्व में कोई कमी होगी ? उभरकर उगी हुई लम्बी नाक आवश्यकता से अधिक नहीं है ? । ३४८

विण्डारे	यल्लारो	वेण्डादार्	मनम्वेण्ड
उण्डाय	कादलिलैन्	नुयिरैन्ब	दुमदन्डो

कण्डारे कादलिककुड् गट्टळहुम् विडमन्त्रो
 कौण्डारे कौण्डाडु मुरुप्पैरुडु कौळ्ळीरो 349

वेण्डातार्-जिनको हम नहीं चाहते; विण्डारे अल्लारो-वे न हमारे शत्रु बन जाते हैं; मत्तम् वेण्ड-मन के लगने से; उण्डाय-जो उत्पन्न होता है; कातलिन्-उस प्रेम से; अँन् उयिर्-मेरे प्राण; अँन्पु-जो है; उमतु अन्त्रो-वे तुम्हारे नहीं है क्या; कण्डारे कातलिककुम्-जो भी देखे वह प्रेम करे; कट्टळकुम्-ऐसा रूप-सौंदर्य भी; विटम् अन्त्रो-विष नहीं होगा क्या; कौण्डारे कौण्डाटुम्-जिसने अपना बना लिया है, वही सराहे; उरु पेरुडु-ऐसा रूप धरूँ तो; कौळ्ळीरो-तुम नहीं अपनाओगे क्या । ३४६

लोग, जिनको हम पसन्द नहीं करते, हमारे शत्रु हो जाते हैं । पर मेरा मन तुम पर आसक्त है, इसलिए तुमसे मेरा गाढ़ा प्रेम हो गया है और इससे क्या मेरे प्राण भी अब तुम्हारे नहीं हुए ? जो भी देखे, वही अनुरक्त हो जाय, ऐसा रूप-सौन्दर्य भी विष (के समान हानिकारक) नहीं है ? जिसकी मैं हो गयी, उसको जो भावे वही रूप मैं लूँ तो क्या तुम मुझे नहीं अपनाओगे ? । ३४९

शिवतुमलर्त्त तिशैमुहनुन् दिरुमालुन् दैरुकुलिशत्
 तवनुर्मेळुन् दौन्त्राहि निन्त्रुत्तुन् वुरुवोत्ते
 पुवनमनैत् तैयुमौरुवन् पूङ्गण्या लुयिर्वाङ्गुम्
 अवनुमुनक् किळ्ळ्यानो विवनेपो लरुळिलत्ताल् 350

चिवतुम्-शिवजी और; मलर् तिचै मुक्तुम्-कमलासन चतुर्मुख; तिरुमालुम्-और श्रीविष्णु; तैरु कुलिचत्तु अवनुम्-शत्रुसंहारक वज्र रखनेवाला वह (इन्द्र); अँळुन्तु-सब अपना-अपना अलग शरीर छोड़कर; अँन्त्रु आकि-एकाकार बनकर; निन्त्रु अन्त्र-खड़े हो (मानो); उरुवोत्ते-ऐसे दर्शन देनेवाले; पुवनम् अतैत्तैयुम्-सारे भुवनों को; अँरु वन् पूम् कणैयाल्-एक असरदार पुष्पशायक से; उयिर् वाङ्कुम्-प्राण हरनेवाला; अवनुन्-वह (मनोज) भी; इवत्ते पोल्-इस तुम्हारे भाई के समान; अरुळ् इलत्ताल्-दयाहीन लगता है, इसलिए; उत्तक्कु इळैयात्तो-(वह मन्मथ भी) तुम्हारा लघु-भ्राता है क्या । ३५०

हे राम ! तुम ऐसे रूपवान हो मानो शिव, कमलासन, श्रीविष्णु और संहारक वज्रपाणी सबने अपना-अपना रूप त्यागकर एकाकार होकर तुम्हारा रूप लिया हो ! सुन्दर राम ! तुमसे एक बात पूछूँ ? अपने एक अपार दुखदायी पुष्पास्त्र से सारे भुवनों के प्राण हरनेवाला (मर्मांतक पीड़ा पहुँचानेवाला) मन्मथ भी तुम्हारे इस भाई के समान कुपालु नहीं रहता । तो क्या वह भी तुम्हारा ही छोटा भाई है ? । ३५०

पौन्नुवप् पौरुहळ्ळीर् पिल्लैकाणीर् मूक्करिवान् पौरुळ्वेरुण्डो
 अँन्नुव्वैक् कैक्कौण्डो रिरुन्दौळियु नम्मरुङ्गे येहाळप्पाल्

पितृनिवर्त्तययलोत्सव् पारारा मैनवरिन्दीर् पित्रैश्व दीरो
अन्नदनै यरिन्दन्शो वन्बिरट्टि कौण्डदुना नरिवि लेतो 351

पाँत्र उरुव-स्वर्ण की; पाँर कल्लीर्-वीरपायलधारी; पित्रै काणीर्-तुम अपराध करनेवाले नहीं हो; अन्न उरुवै-मेरे शरीर को; कै कौण्टीर्-अपने अधीन कर लिया है; नम् मरुङ्के-हमारे ही पास; इरुन्तु ओळियुम्-ठहर जायगी; पितृत्तै-फिर; अप्पाल् एकाळ्-कहीं नहीं जायगी; इवळै अयल् ओरुवर् पारार् आम्-इस पर कोई अन्य दृष्टि नहीं डालेगा; अन्न अरिन्तीर्-ऐसा सोचकर ही मेरी नाक काट ली है; मूक्कु अरिवान् पाँरुळ्-(नहीं तो) नाक काटने का अर्थ; वेरु उण्टो-दूसरा है क्या; पित्रै चैय्तीरो-तुमने कोई गल्ती की है क्या (नहीं); अन्न तत्तै-उसको; अरिन्तु अन्नी-जानकर ही तो; नान् अन्पु इरट्टि कौण्टनु-दुगुना प्रेम रखती; नान् अरिवु इलेतो-क्या मैं बुद्धिहीन हूँ । ३५१

स्वर्णनिर्मित वीर पायलधारी ! तुम लोग अपराध करनेवाले नहीं हो । तुमने मेरे शरीर और रूप को अपना बना लिया है ! 'यह हमारे पास रह जायगी । अब उसके पास कोई चारा नहीं है । यह विकृत रूप लेकर वह कहीं नहीं जा सकेगी । इसको कोई दूसरा नहीं देखेगा ।'—यही सोचकर तुमने मेरी नाक काट दी है । नहीं तो मेरी नाक काट देने का कोई प्रयोजन है क्या ? तब क्या तुम अपराधी बन सकोगे ? नहीं । उस सच्चे अभिप्राय को मैं जान गयी । तभी तो मेरा तुम पर प्रेम दुगुना हो गया ! क्या मैं बुद्धिहीन हूँ ? । ३५१

वैप्पळिया नैडुवैहुळि वेलरक्क रीदरिन्दु वैहुण्डु नोक्किन्
अप्पळिया लुलहनैत्तु मुम्बोरुट्टा लळिन्दत्तवा मडत्तै नोक्किन्
ओप्पळियच् चैय्हिला रुयर्हुलत्तै तोन्निन्ना रुणर्न्दु नोक्किन्
इप्पळियैत् तुडैत्तुदवि यिन्निदिरुत्ति रैन्नीडुमैन् इरैन्जि निन्नाळ् 352

वैप्पु अळिया-उग्रता से मिले; वैकुळि-क्रोधी; नैडुवैल् अरक्कर्-लम्बे भालों के धारक राक्षस; ईतु अरिन्तु-यह जानकर; वैकुण्डु नोक्किन्-कोप करके देखें तो; अ पळियाल्-उनके बदला लेने से; उलकु अत्तैत्तुम्-सारे लोक; उम् पोरुट्टाल्-तुम्हारे कारण; अळिन्तत्त आम्-मिट जाते होंगे; अडत्तै नोक्किन्-धर्म देखा जाय तो; उयर् कुलत्तु तोन्निन्तीर्-उच्च कुल में जात तुम; ओप्पु अळिय-लोक-असम्मत कार्य; चैय्किलीर्-करोगे नहीं; उणर्न्तु नोक्कि-खूब सोचकर देखकर; इ पळियै तुटैत्तु-इस अपमान को दूर करके; उराविट-सहायता करने के लिए; अन्नीटम् इन्ति इरुत्तिर्-मेरे साथ सुख से रह जाओ; अन्नु इरैन्जि निन्नाळ्-ऐसी विनय कर खड़ी रही । ३५२

राक्षस उग्र क्रोधी हैं । वे यह जानेंगे तो कुपित होंगे और बदला लेने आयेंगे । उनके बदला लेने के सिलसिले में सारे लोक मिट जायेंगे और तुम ही उस नाश के निमित्त रह जाओगे । तुम लोग उच्चकुल-जात हो ! लोकों का असम्मत कार्य नहीं करोगे । धर्म की बात सोचो और खूब

विचार करो । मेरा अपमान दूर करके मेरी सहायता करने के लिए मेरे साथ सुखपूर्वक रह जाओ । —शूर्पणखा ने यह प्रार्थना की और खड़ी रही । ३५२

नाडयरत् तुयरिळैत्त नवैयरक्कि निन्नन्तै तन्तै नल्हुम्
ताडहैये युयिर्हवर्न्द शरमिरुन्द दन्त्रियुनान् उवमेर् कौण्डु
तोडशैयत् तुरुमलर्त्ता रिहलरक्कर् कुलन्दीलैप्पान् ओन्त्रि निन्नेन्
पाडहल पुल्लौळुक्किन् वल्लरक्कि येन्त्रिरैवन् पहरम् विन्नुम् 353

नाटु अयर-संसार को त्रस्त करते हुए; तुयर् इळैत्त-अत्याचार जो करती रही; नवै अरक्कि-अपराधिनी राक्षसी; निन् अन्तै तन्तै नल्कुम्-तुम्हारी माता की जननी; ताटकयै-ताड़का के; उयिर् कवर्न्त-प्राण हर चुका वह; चरम् इरुन्तु-शर मेरे पास अब भी है; अन्त्रियुम्-अलावा; नान्-मैं; तवम् मेल् कौण्डु-तपोव्रती बनकर; तोटु अचै-दल-सहित; अ मलर् तुडु तार्-पुष्पों की बनी मालाधारी; इक्ल् अरक्कर्-शत्रु राक्षसों का; कुलम् तौलैप्पान्-कुल का नाश करने के लिए; तोन्त्रि निन्नेन्-आया हूँ (इधर); पुल्लौळुक्किन्-नीच चरित्र की; वल् अरक्कि-बलवान राक्षसी; पाटु अकल-दूर चली जाओ; ऐन्डु-कहकर; इरैवन्-प्रभु श्रीराम; पिन्नुम् पकरम्-आगे बोले । ३५३

श्रीराम ने डाँट बतायी । री राक्षसी ! लोकों को त्रस्त करते हुए ऊधम जो मचाती रही, उस तुम्हारी माता की माता ताड़का का वध मैंने ही किया था । जिस शर से उसको मैंने मारा वह शर अब भी मेरे पास सुरक्षित है । और भी ध्यान रखो । मैं तपोव्रती होकर इधर आया हूँ पुष्पमालाधारी उन वैरी राक्षसों के कुल को ही मिटाने हेतु ! नीच चरित्र वाली क्रूर राक्षसी ! दूर हट जाओ, भागो, भागो ! फिर प्रभु और भी बोले । ३५३

तरैयळित्त तनिनेमित् तयरदन्ऱुन् पुदल्वर्यान् ताय्शौर् डाङ्गि
विरैयळित्त कान्बुहुन्देन् वेदियर् मादवरम् वेण्ड निन्ऱु
करैयळित्तर् करियपडैक् कडलरक्कर् कुलन्दीलैत्तुक् कण्डाय् पण्डै
वरैयळित्त कुलमाड नहर्पुहुवे मिवैर्त्तरिय मनक्कीं लैन्ऱान् 354

याम्-हम; तरै अळित्त-पृथ्वीपालक; तति नेमि-एकचक्राधिपति; तयरतन् तन् पुतल्वर्-दशरथ के पुत्र है; ताय् चौल् ताङ्कि-माता का वचन मानकर; विरै अळित्त-गुवास बरसानेवाले; कान् पुकुन्तेम्-जंगल में आये; वेतियर्म्-वेदज्ञ और; मा तवरम्-महान तपस्वियों के; वेण्ड-प्रार्थना करने से; निन्ऱु-यहाँ स्थित; करै अळित्तर्कु अरिय-अपार; कटल् पटै अरक्कर्-समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों का; कुलम् तौलैत्तु-दल मिटाकर; पण्डै-प्राचीन; वरै अळित्त-पर्वत-सम; कुल माट नकर्-अधिक संख्या में प्रासादों से पूर्ण (अयोध्या) नगर; पुकुवेम्-पहुँचेंगे; इवै-यह सब; तैरिय मतम् कौळ्-खूब जानकर मन में धरो; ऐन्ऱान्-श्रीराम ने समझाया । ३५४

हम उन दशरथ के पुत्र हैं, जो एकचक्राधिकार के साथ भूमि का पालन करते थे। अपनी (सौतेली) माता की आज्ञा सिर पर धारण करके हम सुबास से पूर्ण इस वन में आये। यहाँ के वेदवित ब्राह्मणों और महान तपस्वियों ने हमसे प्रार्थना की। उसको मानकर हमने यहाँ रहनेवाले असीम समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों के दल को मिटा चुककर अपने प्राचीन और पर्वत-सम ऊँचे सौधों से पूर्ण अयोध्या नगर लौट जाने का संकल्प किया है। ये बातें भी तुम ध्यान में रख लो। श्रीराम ने चेतावनी देते हुए यह कहा। ३५४

नैरित्तारै शैल्लाद निरुदरैदिर् निल्लाद नैडिय तेवर्
मरित्तारीण् डिरुवरिवर् मानिडव रैन्नाडु वल्लै याहिल्
वैरित्तारै वेलरक्कर् विरलियक्कर् मुदलिनर्त्ती मिडलो रैन्ऱु
कुडित्तारै यावरैयुम् कौणरुदिये निन्ऱैदिरे कोरु मँन्ऱान् 355

नैरि तारै चैल्लात-धर्म-मार्ग पर न जानेवाले; निरुतर्-राक्षसों के; अँतिर्-सामने; निल्लाते-न खड़े होकर; नैडिय तेवर्-बड़े-बड़े देव भी; मरित्तार्-मुड़कर भाग गये; ईण्टु इवर् इरुवर्-यहाँ ये दो; मानिडवर्-मनुष्य; अँन्ऱातु-यह न सोचकर; वल्लै आकिल्-समर्थ हो तो; वैरि तार्-सुबासपूर्ण मालाधारी; ऐ वेल अरक्कर्-सुन्दर भालों वाले राक्षस; विरल् इयक्कर्-पराक्रमी यक्ष; मुतलितर्-आदि में; नी मिडलोर् अँन्ऱु कुडित्तोरै-तुम जिनको शक्तिशाली मानती हो, उन; यावरैयुम्-सभी को; कौणरुतियेल्-लाओगी, तो; निन्ऱ अँतिरे-तुम्हारे सामने ही; कोरुम्-माहंगा; अँन्ऱान्-श्रीराम ने कहा। ३५५

श्रीराम ने आगे अपनी बात पर उसका विश्वास पैदा करने के लिए कहा— 'धर्म-मार्ग पर न जानेवाले राक्षसों के सामने चिरप्रतिष्ठित देव टिक नहीं सके। लौटकर भाग गये। यहाँ ये दोनों अल्पशक्ति मनुष्य हैं।' तुम ऐसा सोचोगी। ऐसा मत सोचो। तुम्हारे पास सामर्थ्य हो तो जाओ, सुबासपूर्ण मालाधारी राक्षस, शक्तिशाली यक्ष आदि लोगों में जिनको तुम पराक्रमी मानती हो, उन सबों को बुला लाओ। देखो, मैं तुम्हारी आँखों के सामने ही उनको मार दूँगा। ३५५

कौल्लला मायङ्गळ् कुडित्तन्नवे कौळ्ळलाड् गौर्ऱु मुर्ऱु
वैल्लला मवरियर्ऱुम् विन्नैयमँल्लाड् गडक्कला मेल्वाय् नीडिगिप्
पल्लैला मुडत्तोत्तुर्ऱुम् बहुवाय् लैन्नाडु पार्त्ति याहिल्
नैल्लैलाज् जुरन्नुदवु नीर्नाड केळैन्ऱु निरुदि कूरुम् 356

नैल् अँलाम् चुरन्तु-धान आदि खाद्य पदार्थ सब पैदा करके; उतवुम्-देनेवाले; नीर् नाट-जल-समृद्ध कोसल देश के राजा; केळ्-सुनो; मेल् वाय् नीडिक्कि-मुख (अधरों) को हटाकर; पल् अँलाम्-सारे दाँतों को; उर तोन्ऱुम्-खूब प्रकट होने देनेवाले; पकुवायळ्-बड़ा मुख वाली; अँन्ऱातु-ऐसा न सोचकर; पार्त्ति आयिन्-

मुझ पर प्रेम की दृष्टि रखोगे तो; कौलुलल् आम्-मारना हो सकता है; कुशित्तत्तवे मायङ्कल्-वे जो भी माया सोचेंगे; कौळल् आम्-उनको पहले ही समझना सम्भव होगा; कौर्इम्-विजय; मुर्इ-पूरी हमारी हो ऐसा; वैल्ललाम्-उनको हरा सकते हैं; अवर इयर्इम् वित्तयम् अलाम्-वे जो भी षड्यन्त्र रचेंगे, उन सबको; कटक्कलाम्-मिटा सकेंगे; अन्इ-ऐसा; निरुति कूम्-निशाचरी ने कहा । ३५६

शूर्पणखा हार मानने के लिए प्रस्तुत नहीं थी । उसने वहस की । धान आदि खाद्य पदार्थ कसरत से पैदा करनेवाले, जलसमृद्ध कोसल देश के अधिपति ! सुनो ! तुम इस छोटी सी बात को भूल जाओ कि मेरे दाँत बाहर निकले हुए हैं और मेरा मुख-विवर अधिक बड़ा है । मुझ पर कृपा-दृष्टि रखो तो तुम जिनको मारना चाहते हो, उन राक्षसों को अवश्य मार सकोगे । हम उनके माया कार्यों का पूर्व-ज्ञान प्राप्त करके उन पर पूर्ण रूप से विजय पा सकेंगे । उनके सभी षड्यन्त्रों को असफल बना सकेंगे । ३५६

काम्बुर्इल् दोळाळ् कैविडी रैन्निनुम्यान् मिहैयो कळ्वर्
आम्बौरियि लडलरक्क रवरोडे शैरुच्यवा तमैन्दी राहिल्
ताम्बौरियिर् पलमायन् दरुय्वौरिह ळरिन्दवर्इत् तडुप्पे नन्इ
पाम्ब्रियुम् पाम्बिनगा लैन्मौळियुम् पळ्मौळियुम् बारक्कि लीरो 357

काम्बु उर्इल्-वाँस की समानता करनेवाले; तोळाळ्-कंधे वाली को; कै विटीर् अन्निन्नुम्-नहीं छोड़ोगे तो भी; यान् मिक्कयो-मैं अधिक हो जाऊँगी क्या; कळ्वर् आम्-चोर; पौरि इल्-भीहीन; अटल् अरक्कर् आम्-पराक्रमी राक्षसों; अवरोटे-के साथ (विरुद्ध); वैरु च्यवान्-लड़ने के लिए; अमैन्तीर् आकिल्-प्रस्तुत हुए तो; पौरियिल्-इन्द्रियों के समान; पल मायम् तरुम्-विविध माया के कार्य करनेवाले; पौरिकल् अरिन्नु-उनके रहस्यों को पहले ही जानकर; अवर्इ तडुप्पेन् अन्इ-उनको रोक दूँगी न; पाम्बु-सर्प; पाम्पित काल्-सर्प का पैर; अरियुम्-जानता है; अन् मौळियुम्-ऐसा कहनेवाली; पळ्मौळियुम्-लोकोक्ति; पार्क्किलीरो-नहीं जानते क्या । ३५७

तुम वाँस की समानता करनेवाले कन्धों की इस स्त्री को छोड़ना नहीं चाहते तो भी मैं तुम्हारे लिए अधिक हो जाऊँगी या निरर्थक हो जाऊँगी ? नहीं । राक्षस बुरे हैं और पराक्रमी हैं । उनके विरुद्ध जब लड़ोगे, तब वे इन्द्रियों के समान अनेक अनर्थकारी मायाकार्य करेंगे । मैं उनका रहस्य जानकर उनको रोक लूँगी । क्या तुम यह लोकोक्ति नहीं जानते, जो यह बताती है कि सर्प, सर्प का पैर जानता है । राक्षसी हैं, राक्षसों की चाल जानती हैं । इस पर विचार नहीं करोगे । ३५७

उळङ्गोडर् कन्बिळैत्ता ळुण्डीरुत्ति यैन्नुदिये निरुद रोडुङ्
कळङ्गोडर् करियशैरुक् कण्णियक्का लौरुम्बेड गलन्द पोडु

कुळङ्गोडु मन्त्रेयक् कौडियविरल् वीरर्त्तमैक् कौन्त्र पित्तर
इळङ्गोवो डैन्त्रैयिरुत्ति यिरुकोळुज् जिउँवैत्तार् किलैया लैन्त्रे 358

उळम् कोटर्कु-मन में स्थान देने के लिए; अन्पु इळैत्ताळ् ओरुत्ति-मुझे प्रेम करनेवाली एक स्त्री; उण्डु-पहले से है; अन्तुतियेल्-कहोगे तो; निरुतरोटुम्-राक्षसों के साथ; कळम् कोटर्कु अरिय-समरांगण में जो दुस्तर करा देगा, ऐसा; चेरु कण्णियक्काल्-युद्ध करना चाहोगे तो; और मूवेम् कलन्त पोतु-हम तीनों मिले रहें तो; कुळम् कोटुम् अन्त्रे-वह समरभूमि रक्त का तालाब बन जायगी न; अ कौटिय-उन निर्मम; विरल् वीरर् तममै-बली वीरों को; कौन्त्र पित्तर-मारने के बाद; इरु कोळुम् चिरै वैत्तार्कु-दोनों ग्रहों (सूर्य और चन्द्र) को कारागृह में जिसने बन्द कर रखा था, उस रावण की; इळैयाळ् अन्त्रे-भगिनी के मान की रक्षा करते हुए; इळम् को ओटु-लघुराज लक्ष्मण के साथ; अँतै इरुत्ति-मुझे बिठा दो, (उसकी पत्नी बना लो) । ३५८

तुम कह सकते हो कि मेरे मन में स्थान पाकर मेरे साथ प्रेम करने के लिए पहले ही एक स्त्री है । तब एक काम करें । राक्षसों के साथ हम तीनों मिलकर युद्ध करेंगे । तब साधारण रूप से समरांगण में जाना भी जिसमें कठिन होगा, उस भयंकर युद्ध में हम रणभूमि को ही रक्त का तालाब बना देंगे और विजयी बनेंगे । उन वीर राक्षसों को मारने के बाद मुझे इतना मान दो कि मैं सूर्य-चन्द्र दोनों ग्रहों को कारागृह में जिसने बन्द कर दिया, उस रावण की भगिनी हूँ और मुझे अपने लघुराज लक्ष्मण के घर में (उसकी स्त्री के रूप में) बिठा दो । ३५८

पैरुङ्गुला वुरुनहरक्के पैयरुनाळ् वेण्डुमुर्प् पिडिप्पे नन्त्रेल्
अरुङ्गला मुर्त्तिरुन्दा नैन्त्रालु मिळैयवन्त्रा नरिन्द नाशि
औरुङ्गिला विवळोडु मुर्त्तवदो वैन्त्रवाने लिउँव वौन्त्र
मरुङ्गिला दवळोडु मन्त्रेयान् नैन्डुगालम् वाळ्न्दे नैन्बाय् 359

इउँव-सरदार; पैरुम् कुला उरु-बड़े कोलाहलमय; नकर्क्के-नगर (अयोध्या) को; पैयरु नाळ्-लौटते दिन; इळैयवन्-तुम्हारा छोटा भाई; अरुम् कलाम् उर्कु इरुन्तान्-गहरा कोप करता होता; अँन्त्रालुम्-तो भी; तान् अरिन्त नाचि औरुङ्कु इला-खुद जो उसने काटी, उस नाक से हीन; इवळोटुम् उउँवतो-इसके साथ रहूँगा क्या; अँन्पात्तेल्-कहेगा तो; औन्त्र मरुङ्कु इलातवळोटुम् अन्त्रे-युक्त कमर से हीन स्त्री के साथ तो; यान् नैटुम् कालम् वाळ्न्तेन्-मैं बहुत काल से रहता हूँ; अँन्पाय्-कहो; अन्त्रेल्-वह तब भी न माने तो; वेण्डुम् उरु पिटिप्पेन्-उसके पसन्द का रूप धारण कर लूँगी । ३५९

नाथ ! जब तुम लोग बड़े कोलाहलमय अयोध्या नगर को लौटोगे, तब लक्ष्मण क्रोध न छोड़कर यह कहे कि यह नासिका से हीन है, यद्यपि उसी ने मुझे नाक से हीन कर दिया था तो तुम उससे समाधान कहो कि क्या मैं कमर से हीन स्त्री के साथ बहुत दिन से नहीं रह रहा ? नहीं तो

मैं वह जैसा चाहे वैसा रूप धारण कर लूंगी; नहीं तो भी मैं उसका चाहा रूप धर लूंगी । ३५९

अँन्रुलुमे यिळैयवन्त्रा निलङ्गिलवेल कडैक्कणिया यिवळ यीण्डु
कौन्ऱुहळै योमेन्ति नैडिदलैक्कु मरुळन्गौल् कोवे यँन्त
नन्ऱुदुवे यामन्ऱो पोहाळे लाहवैन नादन् कूऱ
औन्ऱुमिव रैनक्किरङ्गा रुयिरिळप्पे निऱ्क्किलेन वरक्कि युन्ना 360

अँन्रुलुमे—उसके ऐसा कहते ही; इळैयवन्—कनिष्ठ ने; इलङ्कु इल वेल—
दृश्यमान पत्राकार सिर वाले भाले को; कडैक्कणिया—आँख की कोर से दिखाकर;
कोवे—स्वामी; इवळ कौन्ऱु—इसको मारकर; कळैयोम् अँन्रिल्—नहीं मिटायेंगे तो;
नैडितु अलैक्कुम्—बड़ा ऊधम मचायगी; अरळ् अँन् कौल्—कृपापूर्ण आज्ञा क्या है;
अँन्त—यह पूछने पर; नातन्—नायक श्रीराम के; पोकाळेल्—नहीं जायगी तो;
अतुवे—वही; नन्ऱु आम् अन्ऱो—भला होगा न; आक अँत—वही हो, कहने पर;
कूऱ—कहने पर; इवर् अँतक्कु औन्ऱुम् इरङ्कार्—ये मेरी दया कुछ नहीं करेंगे;
निऱ्क्किन्—खड़ी रहूँ तो; उयिर् इळप्पेन्—प्राण गँवा दूँगी; अँन—ऐसा; अरक्कि
उन्ना—राक्षसी सोचकर । ३६०

लक्ष्मण ने यह बात सुनी । उनकी सहनशीलता जाती रही ।
उन्होंने श्रीराम का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने दृश्यमान, पत्रसिर-
भाले को अपनी आँखों की कोरों से देखा । फिर कहा— हे स्वामी !
अगर हम इसे मारकर दूर नहीं करेंगे तो यह बड़ा अनर्थ करा देगी ।
आपकी आज्ञा क्या है ? तब नायक श्रीराम ने मान लिया । कहा कि
हाँ ! अगर यह जानेवाली नहीं है तो क्या वैसा करना ही न भला होगा ?
वही हो ! शूर्पणखा ने सुना तो वह समझ गयी कि ये हमारे ऊपर कृपा
नहीं करेंगे । इधर ठहरूंगी तो प्राण से हाथ धोना पड़ जायगा । (यह
सोचकर) । ३६०

एऱ्ऱनैडुङ् गौडिमूक्कु मिरुकादु मुलैयिरण्डु मिळन्डु वाळल्
आऱ्ऱुवत्ते वज्जत्तैया लुमैयुळ् परिशरिवा नमैन्द दन्ऱो
काऱ्ऱिनिलुङ् कनलितुङ् कडियानैक् कौडियानैक् करनै युङ्गळ्
कूऱ्ऱुवत्तै यिप्पोळुदे कौणर्हिन्ऱे तैन्ऱुशलङ् गौण्डु पोनाळ् 361

एऱ्ऱ—युवत; नैटुम् कौटि मूक्कुम्—लम्बी, लता-सम नाक को; इरु कातुम्—
दोनों कानों को; मुलै इरण्डुम्—दोनों स्तनों को; इळन्तुम्—खोने के बाद भी;
वाळल् आऱ्ऱुवत्ते—जीना सह सकूंगी क्या; उमै उळ्ळ परिचु—तुम्हारे गूढ़ अभिप्राय;
वज्जत्तैयाल्—कपट से; अरिवान्—जानने को; अमैन्ततु अन्ऱो—रचा गया (नाटक)
न; काऱ्ऱिनिलुम् कटियात्तै—वायु से अधिक तीव्र और बलवान; कनलितुम् कौटियात्तै—
अग्नि से भी बढ़कर निर्मम; करत्तै—खर को; उड्कळ् कूऱ्ऱुवत्तै—तुम्हारे यम को;
इ पोळुते कौणर्किन्ऱेन्—यहाँ अभी लाऊंगी; अँन्ऱु—कहकर; चलम् कौण्डु पोताळ्—
वैर लेकर चली । ३६१

जाते-जाते शूर्पणखा यह कह गयी कि मेरी लम्बी लता-सी नाक मेरे रूप के योग्य सुन्दर थी। उसको, दोनों कानों और स्तनों को खोने के बाद कोई अपने जीवन को सह सकेगा क्या ? मैं जीवित रहने की क्षमता रख सकूंगी क्या ? यह सब जो मैंने तुमसे कहा, वह तुम्हारे गूढ़ अभिप्रायों को जानने के लिए रचा गया कपट नाटक था। अब मैं जा रही हूँ और वायु से भी तीव्रगामी और बलवान, अग्नि से भी निर्मम खर को, जो तुम्हारा यम होगा, अभी ले आऊँगी। ३६१

6. करन् वदेप् पडलम् (खर-वध पटल)

❀ इरुन्द	माक्करन्	डाळिणै	यिन्मिशैच्
चौरिन्द	शोरियळ्	कून्दल	डूम्बैतत्
तैरिन्द	सूक्किन्तळ्	वायित्तळ्	शैक्कर्मेल्
विरिन्द	मेह	मैत्तविळुन्	डाळरो 362

चौरिन्त चोरियळ्-बहते हुए रक्त के साथ; कून्तलळ्-बिखरे केश वाली; तूमपु अँत-मोरी की नली के द्वार के समान; तैरिन्त सूक्किन्तळ्-दिखनेवाली नाक की; वायित्तळ्-(मोरी के द्वार के समान) बड़ा मुख वाली; चैक्कर् मेल् विरिन्त-लाल गगन पर फैले; मेक्कम् अँत-मेघ के समान; इरुन्त मा करन्-(जनस्थान में) रहनेवाले प्रख्यात खर के; ताळ् इणैयिन् मिचै-जोड़े के पैरों पर; विळुन्ताळ्-जा गिरी। ३६२

शूर्पणखा के शरीर के कटे अंगों से रक्त वह रहा था। उसका केश खुला और बिखरा हुआ था। उसकी नाक और मुख मोरी के द्वार के समान खुले थे। वह भागी और जनस्थान में रहे प्रख्यात खर के चरणों पर लाल गगन के ऊपर छाये हुए मेघ के समान गिरी। ३६२

❀ अळुङ्गु नाळिदेन् इन्दह नाणैयाल्, तळुङ्गु पेरि यैत्तत्तनिन् तेङ्गुवाळ्
मुळुङ्गु मेह मिडित्तवैन् दीयिनाल्, पुळुङ्गु नाह् मैत्तप्पुरण् डाळरो 363

अन्तकन् आणैयाल्-यम की आज्ञा से; अळुङ्कु नाळ् इत्तु-अन्त होने का काल यह है; अँत्त-ऐसा घोषित करते हुए; तळुङ्कु पेरि अँत्ति-पिटनेवाली भेरी के समान; तत्तित्तु एङ्कुवाळ्-विविन्न रूप से रोने का स्वर करती हुई; मुळुङ्कुम् मेक्कम्-गरजनेवाले मेघ से; इडित्त वैम् तीयिनाल्-गिरी गाज की अग्नि से; पुळुङ्कुम् नाकम् अँत-व्यग्र नाग के समान; पुरण्णाळ्-लोटने लगी। ३६३

उसका अनोखा रुदन का गम्भीर स्वर यम की आज्ञा के अनुसार राक्षसों के अन्त की घोषणा करनेवाली भेरी के नाद के समान था। वह उस सर्प के समान छटपटाकर लोटने लगी, जो गरजते मेघ से गिरी गाज की अग्नि से तप रहा हो। ३६३

❖ वाक्किर्	कौप्पप्	पुहैमुन्डु	वायिनान्
नोक्किक्	कूशलर्	नुन्तैयित्	तन्मैयै
आक्किप्	पोनव	रार्हौलैन्	शानवळ्
सूक्किर्	चोरि	मुळीइक्कौण्ड	कण्णिनान् 364

अवळ् सूक्किल् चोरि—उसकी नाक से वहते हुए रक्त में; मुळीइ कौण्ड—मग्न रही; कण्णिनान्—आँखों का; वाक्किर्कु औप्प—शब्द के अनुकूल; पुक्कै मुन्तु—धुआँ निकालनेवाले; वायिनान्—मुख का (खर); नोक्कि—देखकर; कूचलर्—निस्संकोच होकर; नुन्तै—तुम्हारी; इ तन्मै आक्कि—इस दुर्गति में पहुँचाकर; पोन्तवर्—जानेवाले; आर् कौल्—कौन हैं तो; अँनुशान्—पूछा। ३६४

खर की दृष्टि शूर्पणखा की नाक से निकलनेवाले रक्त के प्रवाह में मानो डूब सी गयी। उसके मुख से ज्यों-ज्यों शब्द निकलते, त्यों-त्यों धुआँ भी निकलता। उतने क्रोध के साथ उसने शूर्पणखा से प्रश्न किया कि ऐसा निस्संकोच होकर तुम्हारी दुर्गति कर गये जो वे कौन है?। ३६४

❖ इरुवर् मानिडर् तापद रेन्दिय, वरिविल् वादकैयर् मन्मदन् मेत्तियर्
तरुम नीरर् तयरदन् कादलर्, शेरुवि नेरु निरुदरैन् तेडुवार् 365

इरुवर् मानिडर्—दो मानव; तापद—तपस्वी; एन्तिय—धृत; वरिविल्—बन्धनयुक्त धनु; वाळ्—तलवार के; कैयर्—हाथ वाले; मन्मतन् मेत्तियर्—मन्मथ के समान रूप वाले; तरुम नीरर्—धर्मपथचारी; तयरदन् कातलर्—दशरथ के प्यारे पुत्र; चेरुविल् नेरुम्—युद्ध में लड़नेवाले; निरुदरै—राक्षसों को; तेडुवार्—ढूँढ़नेवाले। ३६५

(शूर्पणखा का उत्तर भी देखिये!) वे दोनों मानव हैं तप में लीन! हाथ में धनुष और तलवार रखते हैं। उनका रूप मन्मथ का-सा है। धर्मपथचारी है। दशरथ के प्यारे पुत्र हैं और युद्ध में लड़नेवाले राक्षसों की खोज में लगे रहनेवाले हैं। ३६५

❖ औन्ऱु नोक्कल रुन्वलि योङ्गऱम्, निन्ऱु नोक्कि निरुत्तु नितैप्पितर्
वैन्ऱि वेऱ्कै निरुदरै वेरऱक्, कौन्ऱु नोक्कुडु मँन्ऱुणर् कौळ्कैयार् 366

औङ्कु अऱम् निन्ऱु—उत्कृष्ट धर्म खुद अवलम्बन कर; नोक्कि—उनकी गति शोधकर; निरुत्तुम् नितैप्पितर्—स्थापित करने का संकल्प करते हुए; उन् वलि औन्ऱुम् नोक्कलर्—तुम्हारे बल की परवाह नहीं करते; वैन्ऱि वेल्—विजयशील भालेधारी; कै—हस्त वाले; निरुदरै—राक्षसों को; वेऱ् अऱ—निर्मूल करके; कौन्ऱु नोक्कुतुम् अँन्ऱु—मार मिटाएँगे, ऐसा; उणर्—निश्चय जिसमें हो; कौळ्कैयार्—ऐसे संकल्प वाले। ३६६

वे उत्कृष्ट धर्म के मार्ग में खुद रहते हुए, धर्म की गति को शोधकर उसकी संस्थापना में दत्तचित्त रहनेवाले हैं। वे तुम्हारे बल का कोई महत्त्व न देते। यही संकल्प रखनेवाले हैं कि हम विजयशील भालों के धारी राक्षसों का उन्मूलन करके मिटा देंगे। ३६६

❖ मण्णि	नोक्कर	वानिनिन्	मड्डितिल्
एण्णि	नोक्कुडिल्	यावर	नेरहिलाप्
पेण्णि	नोक्कुडै	याळौर	पेदैयेन्
कण्णि	नोक्कि	युरैप्परुड्	गाट्चियाळ् 367

मण्णिल्-धरती पर; नोक्कु अरु-दर्शन-दुर्लभ; वातितिल्-आकाश में; मड्डितिल्-अन्य लोकों में; एण्णि-सोचकर; नोक्कुडिल्-देखने पर; यावरम् नेरहिला-कोई उसकी समानता न कर सके, ऐसी; पेण्णिन् नोक्कु उट्टयाळ्-स्त्री-सौंदर्य वाली; अन् कण्णिन् नोक्कि-अपनी आँखों से देखकर; उरैप्पु अरम्-अवर्णनीय; काट्चियाळ्-आकार-प्रकार वाली । ३६७

और भी, उनके साथ एक स्त्री है । स्वर्ग, भूलोक, पाताल आदि कहीं भी हूँडो, उसकी समानता करनेवाली कोई नहीं मिलेगी । बड़ी सुन्दरी स्त्री है । उसका आकर्षण इतना अधिक है कि मैं अपनी आँखों से देखा उसके मनोहारी रूप का वर्णन करूँ, इतनी क्षमता मेरे शब्दों में नहीं है । ३६७

❖ कण्डु नोक्कुडु गारिहै याडनैक्, कौण्डु पोवै निलङ्गैयर् कोक्कैन्ता विण्डु मेलेळुन् दैतै वैहुण्डवर्, तुण्ड माक्किन्नर् मूक्कैन् चोल्लिनाळ् 368

नोक्कु उडुम् कारिकैयाळ् ततै-सुन्दरी उस स्त्री को; कण्डु-देखकर; इलङ्कैयर् कोक्कु-लंकेश्वर के लिए; कौण्डु पोवैन् अँता-ले जाऊँगी कहकर; विण्डु-शत्रुता दिखाकर; मेल् अँळुन्तेतै-उस पर लपकनेवाली मुझे; अवर्-उन दोनों ने; वैकुण्डु-गुस्सा करके; मूक्कु तुण्डम् आक्किन्नर्-नाक के टुकड़े कर लिये; अँता-ऐसा; चोल्लिनाळ्-शूर्पणखा ने कहा । ३६८

मैंने उस अनुपम सुन्दरी को देखा तो सोचा कि उसको लंकेश के लिए ले जाऊँ । इसी विचार से मैं उसकी ओर लपकी । तब उन दोनों मनुष्यों ने मेरी नाक काट दी । —शूर्पणखा ने घटना का अपनी रीति से वर्णन किया । ३६८

❖ केट्ट तन्नुरे कण्डनन् कण्णिताल्, तोट्ट नुङ्गिर् रौळैयुरु मूक्किन्नैक् काट्टे तावैळुन् दार्तेदिर कण्डन्नर्, नाट्टन् दीय वुलहै नडुक्कुवान् 369

अँतिर् कण्टवर् नाट्टम्-सामने से देखनेवालों की दृष्टि को; तीय-जलाते हुए; उलकै नडुक्कुवान्-लोक को कम्पित करनेवाले खर ने; उरै केट्टतन्न-शूर्पणखा का कथन सुना; तोट्ट नुङ्गिल्-कोए निकालने के बाद ताल-फल जैसे हो जाता है, वैसे; रौळै उरु-गड्ढों सहित; मूक्किन्नै-नाक को; कण्णिताल्-अपनी आँखों से; कण्डनन्-देखा; काट्टु-उनको दिखाओ; अँता-कहते हुए; अँळुन्तान्-उठा । ३६९

खर ऐसा भयंकर और उग्र राक्षस था कि उसको सामने से देखनेवाले की आँखें जलकर भस्म हो जातीं और लोक काँप उठते । उसने शूर्पणखा के मुख को गौर से देखा, जो कोए से हीन ताल-फल के

समान लगता था । देखकर उसने तैश में आकर कहा कि दिखाओ उन्हें । यह कहते हुए वह उठा । ३६९

❖ अँळुन्दु निन्ऱुल हँळु मँरिन्दुहप्, पौळिन्द कोवक् कनलित्तिर् पौङ्गुवान्
कळिन्दु पोयितर् मात्तिड रँन्नुङ्गाल्, अळिन्द दोविव् वरुम्बळि अँन्नुमाल् 370

अँळुन्दु निन्ऱु-उठकर खड़ा होकर; उलकु एळुम् अँरिन्दु उक-सातों लोकों को भस्म होकर घूने देते हुए; पौळिन्द-बढ़नेवाली; कोप कत्तलित्-कोपाग्नि में; पौङ्गुवान्-जो भड़क उठा, उसने; मात्तिटर् कळिन्दु पोयितर्-(ये) मनुष्य मिट-चले; अँन्नुम् काल्-ऐसी स्थिति में भी; इ अरुम् पळि-यह कठोर अपयश; अळिन्दतो-मिटेशा क्या; अँन्नुम्-कहा । ३७०

उठकर खड़ा हुआ वह खर ऐसी कोपाग्नि के साथ भड़क उठा, जो सातों लोकों को जला दे और भस्म करके छितरा दे । उसे इतना क्षोभ हुआ कि उसके मुख से प्रश्न उठा । अगर मैं उन मानवों को मार भी दूँ और वे मिट जायें तो भी यह अपयश दूर हो सकेगा क्या ? । ३७०

❖ वरुह तेरँन्नु मात्तिरै माडुळोर्, इरुहै माल्वरै येळित्तो डेळत्तार्
औरुहै यालुल हेन्दु मुरत्तित्तार्, तरुह विप्पणि यैम्बयिर् इरैन्नुडार् 371

तेर् वरुह-रथ आ जायें; अँन्नुम् मात्तिरै-ऐसा (आज्ञा) सुनाते ही तत्क्षण; माडु उळोर्-पास रहनेवाले; इरु कै माल्वरै-दो-दो हाथों के साथ बड़े-बड़े पर्वत; येळित्तोडु एळु अत्तार्-सात और सात (चौदह) के समान जो थे; और कैयाल्-अपने एक हाथ से; उलकु एन्नुम्-भूलोक को उठाते की; उरत्तित्तार्-शक्ति रखनेवाले; इ पणि-यह काम; अँम् वयिन् तान् तरुह-हमारे पास छोड़ दें; अँन्नुडार्-बोले । ३७१

फिर उसने आज्ञा दी कि रथ आ जाय । तब उसके पास चौदह सेनापति थे । वे ऐसे पर्वतों के समान थे जिनके दो-दो हाथ हों । वे अपने एक हाथ पर ही धरणी को उठा सकनेवाले थे । उन्होंने प्रार्थना की कि यह काम हमें सौंप दें । ३७१

❖ चूलम् वाण्मळुत् तोमरञ् जक्करम्, काल पाशङ् गदैपौरुङ् गैयित्तार्
वैलै जालम् वैरुवुळु मारुप्पित्तार्, आल कालन् दिरण्डन्त वाक्कैयार् 372

चूलम् वाळ्-शूल और तलवार; मळु तोमरम्-परशु और तोमर; जक्करम् कालपाचम्-चक्र, कालपाश; कत्तै-गदा; पौरुम् कैयित्तार्-इनको लेकर लड़नेवाले हाथों के; वैलै जालम्-समुद्रवलित्त भूतल को; वैरुवु उळुम् मारुप्पित्तार्-हराते हुए शोर मचानेवाले; आल कालम् तिरण्डु अन्त-हलाहल रूप ले आया हो ऐसा; वाक्कैयार्-शरीर वाले । ३७२

(वाल्मीकी में इनके नाम दिये गये हैं ।) वे शूल, तलवार, परशु, तोमर, कालपाश और गदा इनका उपयोग कर लड़ सकते थे । जब वे

उच्चैः स्वीर उठाते तव समुद्र और उसके मध्य रहनेवाली भूमि थरा उठती थी। उनके शरीर हलाहल के पिण्डों के समान थे। ३७२

ॐ वम्बु वेलैक् कत्तलन्त वम्बैयार्, नम्बि नम्मडि मैत्तौळि तन्ऱैना

उम्बर् मेलु मुरुत्तनै पोदियो, इम्बर् मेलित्ति यामुळै मेयैन्ऱार् 373

वम्बु वेलै—गरम और समुद्र से निकली; कत्तल अन्त—(बड़वा) आग के समान (वे); वम्बैयार्—क्रोधशील; नम्पि—नायक; नम् अट्टि मै तौळिल्—हमारी सेवकाई भी; नन्ऱु अँता—अच्छी रही, कहके; उम्पर् मेलुम्—देवों पर; उरुत्तनै—गुस्सा कर; पोतियो—जा रहे हो क्या; इम्पर् मेलु—इस लोकवासी पर (आक्रमण करने); इति याम् उळ्मे—अब हम तो हैं; अँन्ऱार्—बोले। ३७३

अत्यन्त गरम बड़वाग्नि के समान क्रोध से भरे उन्होंने खर को देखकर कहा कि नायक ! हमारी सेवकाई भी कितनी खूब है (कि हमारे रहते आप लड़ने चले) ! और भी क्या वे देव हैं कि आप क्रोध के साथ लड़ने जायँ ? वे धरती के मानव हैं और हम इधर प्रस्तुत हैं। ३७३

ॐ नन्ऱु	शैलुविर्	नात्तिच्	चिऱार्कण्मेलु
शैन्ऱु	पोर्शैयिर्	रेवर्	शिरिप्परालु
कौन्ऱु	शोरि	कुडित्तवर्	कौळ्ऱैयै
वैन्ऱु	मीळुविर्	मैल्लिय	लोडैन्ऱान् 374

नन्ऱु—ठीक है; चैलुतिर्—चलो; नात्—मैं; इ चिऱार्कळ् मेलु—इन लड़कों पर; चैन्ऱु पोर् चैयिन्—जाकर युद्ध करूँ तो; तेवर् चिरिप्पर्—मुर लोग हँसेंगे; कौन्ऱु—मारकर; चोरि कुडित्तु—रक्त पीकर; अवर् कौळ्ऱैयै—उनका संकल्प; वैन्ऱु—बधा करके (उन्हें जीतकर); मैल्लियलोडु—कोमल नारी को साथ ले; मीळुतिर्—लौट आओ; अँन्ऱान्—कहा। ३७४

खर ने भी उसे ठीक माना। उसने कहा कि तुम ठीक कहते हो। तुम ही जाओ। मैं इन मानव-बालकों के विरुद्ध लड़ने जाऊँ तो देव मेरी हँसी उड़ायेंगे। तुम जाओ उन्हें मारो, उनका खून पीओ और उनका संकल्प हरा दो। फिर उस कोमल नारी को साथ लेकर लौट आओ। ३७४

ॐ अन्त लोडुम् विरुम्बि यिऱैञ्जित्तार्, शौन्त नाणिलि यन्दहन् रुदँत

अन्तळ् पिऱ्पडर् वारँन् वायित्तार्, मन्तन् कादलर् वैहिड नण्णित्तार् 375

अन्तलोडुम्—उसके यों कहते ही; विरुम्पि—खुश होकर; इऱैञ्चित्तार्—विनय करके; चौन्त—जिसने उनके सम्बन्ध में कहा था, उस; नाण् इलि—निर्लज्ज (शूर्पणखा) को; अन्तकन् तूतु अँत—यम का दूत मानकर; अन्तळ् पिन् पटर्वार अँत—उसके पीछे जानेवाले; आयित्तार्—वनकर वे; मन्तन् कादलर्—(दशरथ-) राज के पुत्र; वैकु इटम्—जहाँ रहे, वह स्थान; नण्णित्तार्—पहुँचे। ३७५

यह अनुमति पाकर वे हर्षित हुए। खर को नमस्कार करके

निकले । यम के भेजे दूत के समान वह निर्लज्ज शूर्पणखा आगे-आगे गयी और ये उसका अनुकरण करते गये । वे दाशरथि जहाँ रहे वहाँ आये । ३७५

❀ तुमिलप्	पोर्वल्	लरक्कर्क्कुच्	चुट्टिये
अमलत्	तौल्पैय	रायिरत्	ताळियान्
निमलप्	पाद	निनैवि	लिरुन्दवक्
कमलक्	कण्णनैक्	कैयितिल्	काट्टिनाळ् 376

अमलम् तौल्-निर्मल और प्राचीन; पॅयर् आयिरत्तु-सहस्रनाम-धारी; आळियान्-चक्रपाणी के; निमल पात नित्तैविल् इरुन्त-पवित्र चरण-स्मरण में रहे; अ कमल कण्णनै-उन कमलाक्ष को; तुमिलम् पोर् वल्-तुमुल युद्ध करने में समर्थ; अरक्कर्क्कु-राक्षसों को; कैयितिल् चुट्टिये-हाथ के इशारे से; काट्टिनाळ्-दिखाया (शूर्पणखा ने) । ३७६

वे प्राचीन और सहस्र नामों से भूषित चक्रपाणी श्रीविष्णु के निर्मल पवित्र चरणों का स्मरण करके ध्यानमग्न थे । शूर्पणखा ने अपने हाथ से उन कमलाक्ष को उन तुमुल युद्ध-निपुण राक्षसों को दिखाया । ३७६

❀ अँरु वाम्बिडित् तेन्नुदु मैन्नुगुनर्, पड्रु वान्नेडुम् बाशत्ति नैन्नुगुनर्
मुड्रु वामिडै शौत्तुमुडै याल्लेताच्, चुड्रि नारवर् शूळ्न्तन्न तोड्रुत्तार् 377

अँरुवाम्-उसको ढकेलकर उछालेंगे; पिटित्तु एन्तुतुम्-पकड़कर धारण करेंगे; अँन्कुनर्-कहनेवाले; नैटुम् पाचत्तित्तु-लम्बे पाश से; पड्रुवाम्-कस लेंगे; अँन्कुनर्-कहनेवाले; इडै चौल् मुड्रैयाल्-हमारे राजा के कहे प्रकार; मुड्रुवाम्-कार्य पूरा करेंगे; अँता-कहते हुए; वरै शूळ्न्तन्न तोड्रुत्तार्-पहाड़ घेर आये हों, ऐसे दृश्य वाले; चुड्रितार्-घेर गये । ३७७

उनको देखते ही कुछ ने कहा कि हम उसे उछालेंगे और हाथों में पकड़ लेंगे । कुछ ने कहा कि लम्बे पाश से उसे बाँध देंगे । और कुछ ने कहा कि हम अपने राजा का आशय पूरा करेंगे । ऐसी-ऐसी बातें शोर के साथ कहते हुए पर्वतों के समान जो रहे वे उन्हें घेर गये । ३७७

❀ एत्तु वाय्मै यिराम त्रिळवलैक्, कात्ति तैयलै यैन्नुत्तन् कड्रुपहम्
पूत्त दन्न पौरुवि इडक्कैयाल्, आत्त नाणि नरुवरै वाङ्गित्तान् 378

एत्तु वाय्मै इरामन्-प्रशंसित सत्यसन्ध श्रीराम ने; त्रिळवलै-अपने अनुज से; तैयलै कात्ति-देवी की रक्षा करो; अँन्नु-कहकर; कड्रुपहम् पूत्तत्तु अन्त-कल्पतरु पुष्पित हो, ऐसे; तन् पौरुवु इल् तट कैयाल्-अपने उपमाहीन विशाल हाथ से; आत्त नाणिन्-चढ़ी हुई प्रत्यंचा के साथ; अरु वरै-श्रेष्ठ पर्वत-सम धनुष को; वाङ्गित्तान्-ले लिया । ३७८

(श्रीराम ने देखा ।) प्रशंसित सत्यसन्ध श्रीराम ने अपने कनिष्ठ से

कहा कि लक्ष्मण ! तुम सीताजी की रक्षा करो । उन्होंने अपने पुष्पित कल्पतरु के समान विशाल हाथ में प्रत्यंचा-चढ़े और पर्वतसम धनुष को ले लिया । ३७८

❖ वाङ्गि वाळीडु वाळिपैय् पुट्टिलुम्, ताङ्गित् तामरैक् कण्णन् चालैयै
नीङ्गि यिव्वयि तेर्मि नडावैन्ता, वीडुगु तोळन् मलैदलै मेयित्तान् 379

तामरै कण्णन्-कमलाक्ष; वाळ् ओट्टु-तलवार के साथ; वाळि पैंय् पुट्टिलुम्-शरों के साथ तूणीर भी; वाङ्कि-लेकर; अ चालैयै नीङ्कि-उस पर्णशाला के बाहर आकर; इ वयिन् नेर्मिन् अटा-इस ओर आकर लड़ो रे; अँता-ललकारते हुए; वीडुगु तोळन्-(युद्धोत्साह में) विवृद्ध कन्धों वाले (श्रीराम); मलैतलै मेयित्तान्-युद्ध में प्रवृत्त हुए । ३७८

कमलाक्ष ने तलवार और शर-भरे तूणीर भी लिया । आश्रम से बाहर आये और उन्होंने ललकारा कि रे आओ इधर ! लड़ो । युद्धोत्साह के कारण उनके कंधे फूल उठे । वे युद्ध में प्रवृत्त हो गये । ३७९

मळुवुम्	वाळुम्	वयङ्गैरि	मुच्चिहैक्
कळुवुङ्	गालवैन्	दीयन्त	काट्चियार्
अँळुवि	नीडडक्	कैयँळु	नान्गैयुन्
दळुवुम्	वाळिह	ळाङ्गुलम्	जार्त्तित्तान् 380

काल वैम् ती अन्न-युगान्तकालीन भयंकर आग के समान; काट्चियार्-दृश्यमान; मळुवुम्-परशु; वाळुम्-और तलवारें; वयङ्कु अँरि-जलती आग के समान; मु चिकै कळुवुम्-त्रि (सिर) शूल, इनके साथ; अँळुविन् नीळ्-स्तम्भ-सम लम्बे; तट-और विशाल; कै अँळु नान्कैयुम्-(सात के चार) अट्ठाईस हाथों को; तळुवुम् वाळिकळाल्-निशाने पर अचूक लगनेवाले शरों से; तलम् चार्त्तित्तान्-काटकर भूमि पर गिराया । ३८०

श्रीराम ने उनके स्तम्भ-सम लम्बे और मोटे अट्ठाईस हाथों को अपने अचूक बाणों से विद्ध कर गिराया । युगान्तकालीन अग्नि के समान क्रोधी उन राक्षसों के हाथों में परशु, तलवारें, अग्नि के समान उज्ज्वल त्रिशूल आदि थे । उनके साथ वे हाथ कट कर गिर गये । ३८०

❖ मरङ्गळ् पोनेडु वाळीडु तोळ्विळ, उरङ्ग लालडर्त्त तारु वोन्विडुम्
शरङ्ग लोडित्त तैत्त वरक्कर्दम्, शिरङ्ग लोडिन तीयव लोडिनाळ् 381

नेट्टु वाळीडु-लम्बी तलवारों के साथ; तोळ्-हाथ; मरङ्कळ् पोल्-पेड़ों के समान; विळ-गिरे, तब; उरङ्कळाल् अटर्त्तुतार्-छातियों से टकराये; उरवोन् विटुम् चरङ्कळ्-बलवान श्रीराम से प्रेषित शर; ओटित्त तैत्त-चलकर घुसे; अरक्कर् तम् चिरङ्कळ्-राक्षसों के सिर; ओटित्त-कट कर दौड़े (दूर गये); तीयवळ् ओटिताळ्-दुराचारिणी भागी । ३८१

लम्बी तलवारों (व अन्य हथियारों) के साथ हाथों के अलग हो पड़ों के समान गिरने के बाद भी वे सेनानायक लड़ने लगे । अपनी छाती से उन्होंने प्रहार किया । तब प्रबल प्रतापी श्रीराम ने तेजी से शर प्रेषित किये, जिन्होंने जाकर उनके सिरों को धड़ों से अलग कर दिया । शूर्पणखा ने देखा और वह नृशंस राक्षसी वहाँ से भाग चली । ३८१

ॐ ओळिळु वेङ्करङ् कुङ्गु दुणर्त्तित्ताळ्, कुळिळु कोबवेंडु गौळरि मावडक्
कळिरें लाम्बडक् कैदलें मेनुङ्ग्, पिळ्ळिळि योडुम् बिडियन्त पेंड्रियाळ् 382

कुळिळु-गरजनेवाले; कोप वेंम् कोळ् अरि मा-क्रोधी, भयंकर सिंह के; अट-प्रहार करने से; कळिळु अलाम् पट-सभी गज मर गये और; कै तलें मेल् उड्-हाथ सिर पर रखते हुए; पिळ्ळिळि ओटुम्-चिघाड़ती भागनेवाली; पिटि अन्त-हथिनी के समान; पेंड्रियाळ्-स्थिति वाली ने; ओळिळु वेल्-चमकीले भाले के; करङ्कु-खर की; उङ्गु दुणर्त्तित्ताळ्-जो हुआ वह सुनाया । ३८२

वह उस हथिनी के समान सिर पर हाथ रखे भागी, जो गरजनेवाले क्रोधी भयंकर सिंह के युद्ध में प्रहार से सभी गजों के मर जाने पर अपने सिर पर सँड रखकर चिघाड़ती हुई भाग रही हो । जाज्वल्यमान भाला-धारी खर के पास जाकर उसने समाचार सुनाया । ३८२

ॐ अङ्ग रक्क रविन्दौळिन् दारैन्, पौङ्ग रत्तम् विळिवळिप् पोन्नुह
वैङ्ग रप्पेय रोन्वैहुण्डान् विडैच्, चङ्ग रङ्कुन् दडुप्परुन् दन्मैयान् 383

विटै चङ्करङ्कुम्-ऋषभवाहन शंकर से भी; तटुप्पु अरुम् तन्मैयान्-जो रोका नहीं जा सकता, वैसा; वेंम् कर पयरोन्-क्रूर खर नाम का राक्षस; अङ्कु अरक्कर अविन्तु ओळिन्तार् अन्त-वहाँ राक्षस मर मिटे; अन्त-यह सुनकर; पौङ्कु अरत्तम्-उफन उठनेवाला रक्त; विळि वळि-आँखों द्वारा; पोन्नु उक्-निकलने देते हुए; वैकुण्डान्-क्रुद्ध हुआ । ३८३

खर नामक वह राक्षस ऐसा दुर्द्ध था कि ऋषभवाहन शंकर से भी हराया न जा सके । उसने जब सुना कि राक्षस वहाँ हत हो मिट गये, तो उसे बड़ा क्रोध हुआ । उसकी आँखें लाल हो गयीं । उसकी आँखें ऐसी लगीं, मानो रक्त खोल उठा हो और वह आँखों से बाहर निकल रहा हो । ३८३

ॐ अळैयैन् उरैन्तक् काक्कुहैन् पोर्प्पडै, उळैय रोडि यौरुनीडि युम्बल्मेल्
मळैयिन् मामुर शैरुदिर् वल्लैन्डान्, मुळैयिन् वाळरि यन्ज मुळङ्गुवान् 384

मुळैयिन् वाळ् अरि-गुफा में रहनेवाले सिंह को भी; अम्ब मुळङ्कुवान्-भयभीत करते हुए दहाड़नेवाले खर ने; अन् तेर् अळै-मेरे रथ को बुलाओ; अन् पोर् पटै-मेरी युद्ध-सन्नद्ध सेना को; अंतक्कु आक्कुक्-मेरे साथ करो; वल्-सत्वर; उळैयै-सेवक; ओटि-भाग जाकर; और कौटि उम्पल् मेल्-उत्तम पताका से अलंकृत गज

पर; मल्लयित्-मेघ के समान; मा मुरचु-बड़ा ढोल; अँडुतिर्-पिटवा दें;
अँडुत्तान्-कहा। ३८४

खर भीषण स्वर वाला था। उसका नाद सुनकर गुफा के अन्दर सुरक्षित रहनेवाले सिंह भी सिंह उठते थे। उसने आज्ञा निकाली कि मेरा रथ बुला लो। मेरी सेनाओं को मेरे साथ कर दो। जल्दी सेवक जायँ और ध्वजासहित गज पर ढोल रखकर यह मुनादी पिटवा दें। वह ठनक मेघ के गर्जन के समान उच्च हो। ३८४

❖ पेरि योशं पिउत्तलुम् बैट्पुरु, मारि मेहम् वरम्बिल वन्देत्त
तेरिन् शेत्तै तिरण्डु तेवर्दम्, ऊरु नाह रुलहु मुलैयवे 385

पेरि ओचं पिउत्तलुम्—भेरी-नाद के उठते ही; पेट्पु उरु—विपुल; मारि मेहम्—वर्षाकालीन मेघ; वरम्पु इल—असीम; वन्त अँत—आये हों ऐसा; तेवर् तम् ऊरुम्—देवों का लोक; नाकर् उलकुम्—नागों का (पाताल) लोक; उलैय—अस्तव्यस्त करते हुए; तेरिन् चेत्तै—रथों की सेना; तिरण्डु—जुट आई। ३८५

भेरी का नाद हुआ कि गुरुत्वपूर्ण वर्षाकालीन मेघों के समान अगणित रथ आ गये। उनकी भीड़ और उनके शब्द के कारण आकाश और पाताल अस्तव्यस्त हो गये। ३८५

❖ पोर्प्पे	रुम्बणै	बौम्मन्	मुळक्कमा
नीरुत्त	रङ्ग	नैडुन्दडन्	दौळ्हळा
आरुत्तै	ळुन्द	दिरुदियि	नारुहलक्
कारक्क	रङ्गडल्	काल्हिळर्न्	देन्तवे 386

इडुतियिन्—कल्पान्त में; आर् कलि—सघोष; कार् करुम् कटल्—अति विशाल काला सागर; काल् किळर्न्तु अँन्त—पवनोद्वेलित हुआ हो, ऐसा; पोर् पँरुम् पणै—युद्धसूचक बड़े ढोलों का नाद; पौम् अँन् मुळक्कमा—‘भों’ का उच्च नाद हुआ; नैडुम् तटम् तोळ्कळ्—दीर्घ और विशाल भुजाएँ; नीर् तरङ्कमा—जल-तरंगें हुई; आरुत्तु अँळुन्तु—(रथ-सेना) कोलाहल के साथ उठी। ३८६

वह सेना युगान्तकाल में पवनाद्वेलित हो उमड़नेवाले सघोष समुद्र के समान तुमुल नाद के साथ उठ आयी। युद्धसूचक ढोल ही उस समुद्र का गर्जन था। वीरों की सबल और लम्बी भुजाएँ उसकी तरंगें थीं। ३८६

❖ काडु तुन्ऱि विशुम्बु करन्देत्त, नीडि येंडु निमिर्न्द नैडुङ्गोडि
औडु मेंडुळ् पशियेन् रुवन्देळुन्, दाडु हिन्ऱु वल्लैयि नाडवे 387

काडु तुन्ऱि—सब वनों ने मिलकर; विचुम्पु—करन्तैत—आकाश को ढक दिया हो, ऐसा; अँडकुम्—सर्वत; नीडि—फैलकर; निमिर्न्त—ऊँची उठी; नैडुम् कौटि—लम्बी ध्वजाएँ; अँड्कळ् पचि ओटुम्—हमारी भूख मिट जायगी; अँडु—मानकर; उवन्तु अँळुन्तु आटुकिन्ऱु—हर्ष के साथ उठकर नाचनेवाले; अलकैयिन्—प्रेतों के समान; आट—फहरती हैं, ऐसी स्थिति में। ३८७

रथ की ध्वजाएँ इतनी विपुल थीं कि वनों ने मिलकर आकाश को ढक दिया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित होता था । वे ध्वजाएँ ऐसा दृश्य प्रस्तुत करते हुए फहराईं कि 'हमारी भूख मिट गयी'—यह कहते हुए प्रेत नाच रहे हों । ३८७

❀ तरियि	नीङ्गिय	ताळदडक्	कैतुण्क्
कुडिहो	ळामद	वेळक्	कुळुवनार्
शैरिविन्	वाळोडु	वाळिडैत्	तेय्नुहुम्
पौरियिर्	कानैङ्गुम्	वैङ्गन्ल्	पौङ्गवे 388

तरियिन् नीङ्किय-खूंटों से अलग हुए; कुडि कौळा-किसी की परवाह न करनेवाले; ताळ तट के तुण-नीचे तक लटकनेवाली बड़ी दो सूँडों वाले; मत वेळ कुळु अन्तार्-मत्तगजों के झुण्ड के समान राक्षसों की; शैरिविन्-भरी भीड़ से; इटै-बीच में; वाळोडु वाळ तेय्नु-तलवारों के टकराने से; उकुम्-गिरनेवाले; पौरियिल्-अग्निकणों से; कान् अँङ्कुम्-वन में सर्वत्र; वैम् कतल् पौङ्क्-जलानेवाली आग के उमड़ते । ३८८

(सेनाओं का वर्णन जारी है ।) खूंटों से अलग छूटे हुए और बेपरवाह और नीचे लटकनेवाली दो मोटी सूँडों के मत्त गजदल के समान राक्षसों की भीड़ में तलवारें परस्पर टकरायाँ । तब अग्निकण नीचे गिरे । उनके कारण जंगल भर में गरम आग प्रज्वलित हुई । (ऐसी सेना) । ३८८

मुरुडि रण्डु मुळङ्गु मुळक्कोलि, उरुडि रण्डैळुन् देरीलि युट्पुह
अरुडि रण्ड वरुक्कन्ऱुत् मेलळुन्, इरुडि रण्डुवन् दीण्डिय वैन्न्वे 389

इरण्डु-दोनों बाजुओं में; मुरुडु मुळङ्कु-‘मुरुडु’ नामक ढोल की; मुळक्कु ओलि-ठनक का शब्द; उरुळ् तिरण्डु अँळुम्-चलनेवाले पहियों से उठनेवाले; तेर् ओलियित्तुळ्-रथ के शब्दों से; पुक्-मिल गया, इस प्रकार; अरुळ् तिरण्डु-घनीभूत कृपा के समान; अरुक्कन् तन् मेल-सूर्य पर; अळुन्ऱु-कोप करके; इरुळ्-अन्धकार; तिरण्डु वन्नु-मिल आकर; ईण्डियतु अँन्त-धावा बोल रहा हो ऐसा । ३८९

दोनों बाजुओं में ‘मुरुडु’ नाम के ढोलों का नाद उठा और वह चलने वाले अनेक रथों के पहियों से उठे हुए नाद में समा गया । सभी जीवों पर होनेवाली दया घनीभूत हो उठी हो, ऐसा दिखनेवाले सूर्य पर सारे अन्धकार ने मानो दल बाँधकर आक्रमण किया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करती हुई (वह सेना आई) । ३८९

❀ तलैयिन् माशुणन् दाङ्गिय तारणि, निलैनि लाडु मुडुहै नैळिप्पुड
उलैवि लेळुल हत्तिन् मोङ्गिय, मलैयै लामोर माडुतीक् कँन्न्वे 390

माचणम् तलैयिल् ताङ्किय-शेषनाग के सिर पर धृत; तारणि-धरणी के;

निलै निलातु-अस्थिर होकर; मुतुकै नैळिप्पु उर-अपनी पीठ पर बल खाते; एळ् उलकत्तित्तुम्-सातों लोकों में; ओङ्किय मलै अलाम्-ऊँचे उगे पर्वत सभी; और माटु-एक ही स्थान पर; तौक्कतु अन्न-एकत्रित हो आये हों, ऐसा । ३६०

आदिशेष के द्वारा उसके सिर पर धारण की हुई भूमि की पीठ पर बल पड़ गयी; ऐसा सातों लोकों के अति ऊँचे सभी पहाड़ एक स्थान पर जुट आये हों (ऐसा वह सेना आई) । ३९०

आळिहळ् पूण्डन वरिहळ् पूण्डन, मीळिहळ् पूण्डन वेङ्गै पूण्डन
जाळिहळ् पूण्डन नरिहळ् पूण्डन, कूळिहळ् पूण्डन कुदिरै पूण्डन 391

आळिकळ् पूण्डन-‘याळियों’ (अप्राप्य भयंकर सिंहों) से युक्त; अरिकळ् पूण्डन-सिंहों के साथ जुते हुए; मीळिकळ् पूण्डन-प्रेतों से युक्त; वेङ्गै पूण्डन-बाघों से युक्त; जाळिकळ् पूण्डन-कुत्तों से जुते हुए; नरिकळ् पूण्डन-सियारों से युक्त; कूळिकळ् पूण्डन-भूतों से युक्त; कुदिरै पूण्डन-घोड़ों से युक्त (रथ आये) । ३६१

रथों में शरभों (‘याळि’ नामक अब अप्राप्य केसरी जाति के भयंकर जानवरों) से युक्त, सिंहों से जुते हुए, प्रेतों, भूतों, व्याघ्रों, कुत्तों, सियारों और अश्वों से जुते हुए रथ थे । ३९१

वल्लियक्	कुळाङ्गळो	मळैयि	नीट्टमो
ऑल्लिवत्	तौहुदियो	वोङ्गु	मौङ्गलो
अल्लमड्	उरिहळि	नत्तिह्	मोर्वेत्तप्
पल्पदि	नायिरम्	पडैक्कै	वीररे 392

वल्लिय कुळाङ्कळो-बाघों के दल या; मळैयिन् ईट्टमो-मेघ-समूह या; ऑल् इप तौकुतियो-तेज चाल के गजों के झुण्ड या; ओङ्कुम् ओङ्कलो-ऊँचे पर्वत; अल्ल-जो नहीं थे; अरिकळिन् अतिकमो-सिंहों की सेना क्या; अत्त-ऐसे कहने योग्य; पल् पत्तिनायिरम्-अनेक दस सहस्र; पडै कै वीरर्-शस्त्रधारी वीर (आये) । ३६२

अनेक सहस्र वीर आये, जिनकी व्याघ्रों का समूह, मेघमण्डल, त्वरित-गति गज, ऊँचे पर्वत या सिंहों की सेनाओं से तुलना की जा सकती थी । वे हाथों में हथियार लिये आये । ३९२

एरुडिन् मारुत्तन् वेत्त मारुत्तन्, काडुडिन् मारुत्तन् कळुदै यारुत्तन्
तोडुडिन् मात्तिरत् तुलहु शूळ्वरुम्, पाडुडिन् मारुत्तन् पणिल मारुत्तन् 393

एरुड् इत्तम् आरुत्तन्-सिंहों के ‘लेंहड़े’ (झुण्ड) गरजे; एत्तम् आरुत्तन्-सुअर चिल्लाये; काडुड् इत्तम् आरुत्तन्-प्रेतों के दलों ने शोर मचाया; कळुदै आरुत्तन्-गधे रेंके; तोडुडिन् मात्तिरत्तु- (भाव) उठते ही; उलकु चूळ्वरुम्-संसार भर में घूम आनेवाले; पाडुड् इत्तम्-गीधों के समूह; आरुत्तन्-बोले; पणिलम् आरुत्तन्-शंख बजे । ३६३

उनमें सिंह गरजे, सुअर चीखे; प्रेत चिल्लाए और गधे रेंके । विचार

करते ही सारी दुनिया घूम आ सकनेवाले गीध जोर से बोले । शंख बजे । (आर्ततन का अर्थ 'बँधे थे' भी ह) । ३९३

तेरितन् द्वुवन्दिन शिरुहट् चैम्मुहक्, कारित नैरुङ्गित कालिर् काऽपरित्
तारिनङ् गुळुविन दडैयिल् कूऽरैन्प, पेरित्तङ् गडलैन्प प्यैरुङ् गालैये 394

पेर् इत्तम्-पदाति ने; तटैयिल् कूऽरु अँत-दुद्धर्प यम के समान; कटल् अँत-समुद्र के समान; प्यैरुम् कालै-जव कूच किया; तेर् इत्तम् तुवन्दिन-रथदल मिल आये; चिरु कण-छोटी आँखों और; चैम् मुक-लाल मुख के; कार् इत्तम्-गज-समूह; नैरुङ्कित-आ जुटे; कालिल्-वायु के समान; काल् परि-पँर रखनेवाले (बोझनेवाले) अश्वों की; तार् इत्तम्-सेना के दल; कुळुविन्-भौड़ लगाते आये । ३९४

पदाति वीर आये । वे अप्रतिहत यम के समान, सघोष समुद्र के समान कूच कर आये । तब उनके साथ रथों, छोटी आँखों के और लाल मुखों के गजों और वायुवेग से चलनेवाले अश्वों की सेनाएँ भी आ सम्मिलित हुई । ३९४

मळुक्कळुम्	मयिल्हळुम्	वयिर	वाट्कळुम्
अँळुक्कळुन्	दोमरत्	तौहैयु	मोट्टियुम्
मुळक्कलु	मुशुण्डियुन्	दण्डु	मत्तलैक्
कळुक्कळु	मुलक्कयुङ्	गाल	पाशमुम् 395

मळुक्कळुम्-परशु; अयिल्कळुम्-भाले; वयिर वाट्कळुम्-सुदृढ़ तलवारें; अँळुक्कळुम्-लोहे के मूसल; तोमर तौकैयुम्-तोमर-समूह; ईट्टियुम्-बछियाँ; मुळक्कलुम्-वर्तुल पत्थर; मुशुण्डियुम्-'भुशुण्डी' नाम के हथियार; तण्डुम्-दण्ड; मु तलै अँळुक्कळुम्-तीन सिर वाले शूल; उलक्कयुम्-और मुद्गर; काल पाचमुम्-काल-पाश । ३९५

उनके पास निम्नलिखित हथियार थे । परशु, भाले, सुदृढ़ असियाँ, लोहे के मूसल, तोमर-समूह, वर्तुल पत्थर, भुशुण्डी नामक हथियार, दण्डायुध, त्रिशूल व काले पाश; । ३९५

कुन्दमुङ्	गुलिशमुङ्	कोलुम्	पालमुम्
अन्दमिल्	शावमुम्	शरमु	माळियुम्
वैन्दौळिल्	वल्लयमुम्	विळङ्गुज्	जङ्गमाम्
पन्दमुम्	कप्पणप्	पडैयुम्	पल्लमुम् 396

कुन्तमुम्-सांग; कुलिचमुम्-कुलिश; कोलुम्-छड़ियाँ; पालमुम्-भिण्डिपाल; अन्तम् इल् चापमुम्-बेशुमार चाप; चरमुम्-शर; आळियुम्-चक्र; वैम् तौळिल् वल्लयमुम्-भयंकर वलय; विळङ्कु चङ्कमाम्-श्वेत शंखों की; पन्तमुम्-राशियाँ; कप्पण पडैयुम्-'कप्पण' नामक हथियार; पल्लमुम्-बल्लम । ३९६

कुंत, कुलिश, छड़ियाँ, भिण्डिपाल, असंख्यक चाप, शर, चक्र, भयंकर वलय, श्वेत शंखबंद, कप्पण नामक हथियार और बल्लम । ३९६

आदियि लरुक्कनु मत्तलु मञ्जुरुम्, शोदिय शोरियुन् तूवुन् दुत्तित्त
एदिहण् मिडेन्दत्त विमैय वरुक्कलाम्, वेदनै कौडुत्तत्त वाहै वेयुन्दत्त 397

एतिकळ-हथियार; आति इल् अरुक्कत्तुम्-अनादि सूर्य; अत्तलुम्-अग्नि भी;
अञ्चु उरुम्-(जिसको देख) भयभीत हो जायें, ऐसी; चोतिय-ज्योति वाले; चोरियुम्
तूवुम्-रक्त और मांस से; तुत्तित्त-लिप्त थे; इमैयवरुक्कु अलाम्-सभी देवों को;
वेतत्तै कौडुत्तत्त-जिन्होंने वेदना दी थी, ऐसे; वाकै वेयुन्दत्त-अनेक विजय पा चुके हैं,
वे; मिडेन्दत्त-भरे रहे । ३६७

ये ऐसे हथियार थे, जिनकी ज्योति के सामने अनादि सूर्य और अनल
भी डरते थे; जो मांस और रक्त से लिप्त थे; जिन्होंने देवों को त्रास दिया
था और जो हर बार उन राक्षसों को विजय दिला चुके थे । ३९७

आयिर मायिरङ् गळिङ्गि नाङ्गलर्, मायिरु जालत्तै विळुङ्गुम् वायिनर्
तीयैरि विळियिनर् निरुदरु शेत्तैयिन्, नायहर् पदिन्मरो डडुत्त नाल्वरे 398

निरुदरु चेत्तैयिन् नायकर्-राक्षस-सेना के नायक; पदिन्मरोडु अडुत्त नाल्वरु-
दस और चार चौदह; आयिरम् आयिरम् कळिङ्गिन्-सहस्र (अनेक) सहस्र गजों के;
नाङ्गलर्-बल वाले; मा इरु जालत्तै-बहुत बड़े लोक को; विळुङ्गुम् वायित्तर्-
निगल सकनेवाले मुखों के; ती अरि विळियित्तर्-आग उगलती दृष्टि वाले । ३६८

इन सेनाओं के चौदह सेनानायक थे । वे एक-एक सहस्र-सहस्र गजों
का बल रखते थे । वे एक-एक सारी धरती को निगल सकें, ऐसा बड़ा मुख
रखते थे । उनकी आँखें आग बरसाती थीं । ३९८

आरित्तो डायिर ममैन्द वायिरम्, कूडिन दौरुपडै कुरित्त वप्पडै
एरित्त देळित्त दिरट्टि यैत्तबाल्, ऊरित्त शेत्तैयिन् शौहुदि युत्तुवार् 399

ऊरित्त चेत्तैयिन् तौकुति-युद्ध-निपुण सेना की संख्या का; युत्तुवार्-हिसाब
लगानेवालों का; कूडित्तु-कहना है; और पट्टै-एक पलटन; आरित्तोडु आयिरम्
अमैन्त-छः हजार के; आयिरम्-हजार (छः लाख); कुरित्त अ पट्टै-जिसकी गणना
हुई, उस पूरी सेना की संख्या; एळित्तु इरट्टि-चौदह (पलटनों का कुल); अत्तुपर-
कहते हैं । ३६९

उस सेना में चौदह सेनाएँ मिली थीं । किसी ने गिनकर बताया
कि हर सेना में साठ लाख संख्या के वीर थे । ऐसी चौदह सेनाओं का
मेल था वह बड़ी सेना । ३९९

उरत्तित्त	रुमैन्	वुरङ्गुम्	वायित्तर्
करत्तैरि	पडैयित्तर्	कमलत्	तोत्तुङ्गुम्
वरत्तित्तर्	मलैयैत्त	मळैत्तु	यित्तुङ्गुम्
शिरत्तित्तर्	तरुक्कित्तर्	शैरुक्कुञ्	जिन्दैयार् 400

उरत्तित्तर्-वीर्यवान; उरुम् अत उरङ्गुम् वायित्तर्-वज्र के समान नाद करनेवाली

वोली के; करत्तु अँडि पटैयित्तर्-हाथ से फेंके जानेवाले हथियार-धारी; कमलत्तोन तरुम् वरत्तित्तर्-ब्रह्माजी से प्राप्त वर वाले; मलै अँत-पर्वत समझकर; मळै तुयिन्नु अँळुम्-मेघ जिन पर सोकर उठ जाते हैं, वैसे; चिरत्तित्तर्-सिर वाले; तरुक्किनर्-गर्विले; चैरुक्कुम् चिन्तैयार्-युद्धोत्साही मन वाले । ४००

उस सेना के वीर बड़े ही बली थे । वज्र के समान बोली वाले थे । हाथों से हथियार चलाकर लड़नेवाले थे । उन्हें ब्रह्माजी से वर मिले थे । उनके सिर ऐसे थे कि मेघ भी उन्हें पर्वत समझकर उन पर आकर ठहरते, सोते और उनसे उठकर चले जाते । बड़े गर्विले थे और शत्रुओं को मिटाने का अभिमान व उत्साह रखते थे । ४००

विण्णळ	विडनिमिर्न्	दुयर्न्द	मेत्तियर्
कण्णळ	विडलर्	मार्वर	कालिनाल्
मण्णळ	विडुनेडु	वलत्तर्	वात्तिडै
अँण्णळ	विडलरुञ्	जैरुवैन्	ऐरिन्नार् 401

विण् अळवु इट-आकाश को नापने के लिए; निमिर्न्नु उयर्न्त-सीधे और ऊँचे हुए; मेत्तियर्-शरीर वाले; कण् अळवु इटर् अरुम्-दृष्टि से नापना कठिन; मार्पर-ऐसे छाती वाले; कालिनाल्-पैरों से; मण् अळवु इट-पृथ्वी को नाप सकनेवाली; नेडुवलत्तर्-अधिक शक्ति वाले; वान् इटै-आकाश में; अँण् अळवु इट अरुम्-गिनना कठिन; चैरु वैन्नु-उतने युद्ध में जीतकर; ऐरिन्नार्-बड़े-चढ़े थे । ४०१

उनके शरीर इतने ऊँचे थे कि वे आकाश को नाप सकते थे । वे दृष्टि माप न सके ऐसे विशाल वक्ष वाले थे । उनके पैरों में इतना बल था कि भूमि को नाप सकते थे । गिनती असम्भव हो, उतनी लड़ाई में विजय पाकर वे बड़े-चढ़े हो गये थे । ४०१

इन्दिरन् मुदलित्तो रैरिन्द माप्पडै, शिन्दिन तैरित्तुहच् चैरिन्द तोळिन्नार्
अन्दह तडित्तोळ् दडङ्गु माणैयार्, वैन्दिड लुरुवुहोण् उतैय मेत्तियार् 402

इन्तिरन् मुतलितोर्-इन्द्रादि देव; अँरिन्त-जो फेंकते थे; मा पटै-उन श्रेष्ठ हथियारों को; तैरित्तु चिन्तित्त उक्-झेलकर तोड़कर छितरा दिया (जिन्होंने), ऐसे; चैरिन्त तोळिन्नार्-कठोर कंधों वाले; अनुत्तकन्-यम; अटित्तोळु अटङ्कुम्-चरण-वन्दना करके अधीन रहेगा; आणैयार्-ऐसे रोवीले; वैम् तोळिल्-क्रूर काम ने ही; उरुवु कौण्टतैय-रूप धर लिया हो, ऐसे; मेत्तियार्-शरीर वाले । ४०२

उनके सारयुक्त सबल कंधे ऐसे थे कि इन्द्रादि देवों द्वारा फेंके गये सशक्त हथियार उनसे लगकर टूट गये और बिखर गये । यम भी विनत होकर उनकी आज्ञा मानता था, ऐसे रोवीले थे । क्रूर कार्य ने ही एक रूप धर लिया हो, ऐसे रूप वाले थे । ४०२

चूलमुम्	पाशमुन्	दौडर्नुव	शैम्भयिर्च्
चालमुन्	दरुहणु	मैयिरुन्	दाङ्गितार्
आलमुस्	वैळित्तु	निउत्त	राङ्गलाल
कालनुङ्	गालनेन्	इयिर्क्कुङ्	गाट्चियार् 403

चूलमुम् पाचमुम्-शूल और पाश; तौडर्नुत-मिले रहे; चैम् भयिर्'चालमुम्-लाल बाल-जाल; तरुहणुम्-भयंकर आँखें; मैयिरुम्-और वक्र दाँत; ताङ्गितार्-धारण करनेवाले; आलमुम् वैळित्तु अंतुम्-इसके सामने हलाहल श्वेत है, ऐसा; निउत्तर्-रंग वाले; आङ्गलाल-शक्ति में; कालनुम्-यम भी; कालन् अंतु-अपना काल समझे; अयिर्क्कुम् काट्चियार्-संशय और भय करेगा, ऐसे आकार वाले । ४०३

उनके पास शूल, पाश आदि हथियार थे । शरीर पर लाल बाल घने रूप से उगे थे । भयंकर आँखें थीं । उनका रंग इतना काला था कि हलाहल भी श्वेत लगता था । शक्ति में वे इतने बढ़े थे कि यम भी उन्हें अपने यम की शंका करता और भय मानता । ४०३

कळलिनर् तारिनर् कवच मार्विनर्, निळलुरु पूणितर् नैरित्त नैरियर्
अळलुरु कुम्जिय रमरै वेट्टुवन्, वैळलुरु मत्तत्तिन रौरुमै यैय्दितार् 404

कळलितर्-पायलधारी; तारितर्-मालाधारी; कवच मार्वितर्-कवचवक्ष; निळल् उरु पूणितर्-प्रभापूर्ण आभरणधारी; नैरित्त नैरियर्-कोप से कुंचित भाल वाले; अळल् उरु कुम्चियर्-अग्निशिखा के समान घने केश वाले; अमरै वेट्टु-युद्ध चाहकर; उवन्तु अळल् उरु-चाव लिये उमंगनेवाले; मत्तत्तिन-मन के; रौरुमै यैय्दितार्-आपस में मेल रखनेवाले । ४०४

उनके पैरों में वीर कंकण पड़े थे । छाती पर कवच थे । वे कान्ति-पूर्ण आभरण पहने हुए थे । उनके भाल कोप-कुंचित थे । केश अग्नि-शिखा के समान लाल और डरावने थे । युद्ध करना चाहकर चाव के साथ उमंगित होनेवाले मन के वे परस्पर मेल रखते थे । ४०४

मरुप्पिडा	मदक्कळिर्	उमरर्	मत्तनुम्
विरुप्पुडा	मुहत्तैदिर्	विळिक्किन्	वैन्निडुम्
उरुप्पडा	उलैवुरु	मुलह	मून्निनुम्
शैरुप्पडात्	तिनवुरु	शिहरत्	तोळितार् 405

इडा मरुप्पु-अटूट (सबल) दाँतों के; मत्त कळिङ्ग-मत्तगज (ऐरावत) पर सवार; अमरर् मत्तनुम्-देवेन्द्र भी; मुक्कत्तु अँतिर्-इनके मुख के सामने; विळिक्किन्-आँख खोल देखेगा तो; विरुप्पु उडा-सामने रहना न चाहकर; वैन् इटुम्-पीठ दिखाते हुए भाग जायगा; उरु पँडा-अस्थिर और; उलैवुरुम्-चंचल; उलकम् मून्निनुम्-तीनों लोकों में; चैरु पँडा-युद्ध प्राप्त न करके; तितवु उरु-खुजली से भरे; चिक्क तोळितार्-यवतशिखर-सम कन्धों वाले । ४०५

वे राक्षस ऐसे (वीर) थे कि देवेन्द्र भी, जो अक्षुण्ण, सबल दाँतों वाले ऐरावत गज का स्वामी है, उनको सामने से देखे तो ठहरना न चाहकर पीठ दिखाते हुए भाग जाय ! नश्वर तीनों (स्वर्ग, मध्य और पाताल) लोकों में उन्हें युद्ध का अवसर नहीं मिला था अतः पर्वतशिखर-सम उनके कंधों में खुजली (युद्ध की प्यास) हो गयी थी । ४०५

कुञ्जरङ्	गुदिरं पेय्	कुरङ्गु	कोळरि
वैञ्जित्तक्	करडित्ताय्	वेङ्गं	याळियेन्
रञ्जुर्	कनल्वुरै	मुहत्त	रारहलि
नञ्जुदौक्	कैन्पपुरै	नयनत्	तार्हळुम् 406

कुञ्चरम् कुतिरै—कुंजर, अश्व; पेय्—प्रेत; कुरङ्कु—वानर; कोळरि—सबल सिंह; वैन् चित्तम् करडि—मयंकर क्रुद्ध रीछ; नाय्—कुत्ता; वेङ्कं—व्याघ्र; याळि—'याळि' (शरभ) नामक जानवर; अन्नुडु—समझकर; अञ्चु उडु—भय खाए ऐसा; कत्तल् पुरै मुक्तत्तर्—अनल-सम मुख वाले; आर्कलि नञ्चु—सघोष सागर से (मन्थन के समय) उत्पन्न विष; तौक्कैत्त पुरै—घनीभूत हुआ हो ऐसे; नयत्तत्तार्कळुम्—नैत्र वाले थे । ४०६

किसी का मुख कुंजर के समान था, किसी का अश्व के समान । प्रेत, वानर, बली सिंह, भयंकर और क्रुद्ध रीछ, कुत्ता, व्याघ्र और शरभ के समान लगनेवाले उनके डरावने मुख अनल-सदृश थे । समुद्र से (क्षीरसागर-मन्थन के अवसर पर) उत्पन्न हलाहल के समान उनकी आँखें थीं । ४०६

अँण्गैय	रैळुहैय	रेळु	मैट्टुमाय्क्
कण्गनल्	शौरिदरु	मुहत्तर्	कालिनर्
वण्गैयिल्	वळैत्तुयिर्	वारि	वायिलिट्
टुण्गैयि	नुवहैय	रुलप्पि	लार्हळुम् 407

अँण् कैयर्—आठ हाथ वाले; रैळु कैयर्—सात हाथ वाले; एळुम् अँट्टुम् आय्—सात-सात और आठ-आठ; कण्—आँखें; कनल् चौरि तरु—अंगार उगलती रीं (जिनमें); मुक्तत्तर्—ऐसे मुख वाले; कालित्तर्—वैसे ही पैरों वाले; उयिर्—जीवों को; वण् कैयिल्—सबल हाथों से; वळैत्तु वारि—समेट लेकर; वायिल् इट्टु—मुख में डालकर; उण्कैयिल्—खाने में; उवकैयर्—आनन्द पानेवाले; उलप्पु इलार्कळुम्—असंख्यक लोग । ४०७

किसी के आठ हाथ थे, किसी के सात । वैसे ही सात-सात, आठ-आठ आँखों के द्वारा उनके मुख आग वरसा रहे थे । वैसे ही उनके पैर सात-सात या आठ-आठ थे । उनको जीवों को अपने सबल हाथों से समेट ले अपने मुख में डालकर खाने में बड़ा आनन्द आता था । वे अगणित थे । ४०७

इयक्करिस्	परित्तत	ववुण	रिट्टत्त
मयक्कुत्तु	तमररै	वलियिन्	वाङ्गिन्
तुयक्किल्हन्	दिरुवरैत्	तुरन्तु	वारिन्
नयप्पु	शित्तरै	नलिन्तु	वव्वित्त 408

इयक्करिल् परित्तत-यक्षों से छीन लिये गये; अवुणर् इट्टत्त-दानवों से (भागते वक्त) नोचे डाले हुए; अमररै-सुरों को; मयक्कुत्तु-माया से मोहित करके; वलियिन् वाङ्गिन्-अपने बल से लिये गये; तुयक्कु इल्-अथक; कन्तिरुवरै-गन्धर्वों को; तुरन्तु वारिन्-(डरा-धमकाकर उनको) भगाकर उनसे लिये गये; नयप्पु उरु चित्तरै-मुलह करनेवाले सिद्धों से; नलिन्तु वव्वित्त-दुख देकर उगाह लिये गये (झण्डे आदि) । ४०८

उनके पास झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने यक्षों के पास से छीन लिया था; दानवों ने युद्धभूमि में छोड़ दिया था; देवों को भ्रमित करके ले लिया था; अथक गन्धर्वों को भगाकर उनसे ग्रस लिया था। वे भी झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने सन्धि करने को उत्सुक सिद्धों को सताकर छीन लिया था । ४०८

कौडिदळै	कविहैवान्	रौङ्गल्	कुम्जरम्
पडियुरु	पदाहैमी	विदानम्	बन्मणि
इडैमिळिर्	शामरैक्	कुळाङ्गोण्	डैङ्गणुम्
मिडैदलि	तुलहैलाम्	वैयिलि	ळन्दवे 409

कौटि-वस्त्र-झण्डे; तळै-मोरछल; कविकै-छत्र; वान् तौङ्कल्-बड़े हार; कुम्जम् मेल् पटि उड्ड-झालरों से युक्त; पताकै-बड़ी पताकाएँ; मी वितानम्-उच्च वितान; पल् मणि इट्टै मिळिर्-अनेक रत्न बीच-बीच में चमकते हैं, ऐसे; चामरै कुळाम्-चँवर-समूह; कौण्डु-इनको लेकर; अङ्कणुम् मिटैतलिल्-सब जगह भीड़ लगाते रहे, इसलिये; उलकु अलाम्-सारी धरती; वैयिल् इळन्त-धूप से वंचित हो गई । ४०९

उस विपुल सेना के पास झण्डे थे, मोरछल थे और छत्र थे। बड़े-बड़े हार, झालरों सहित बड़ी-बड़ी पताकाएँ, वितान और ऐसे चामरों की राशियाँ जो रत्नों से सजे थे। ये सब लिये हुए वह सेना भूमि पर सर्वत्र फैली रही। इसलिए भूतल धूप से वंचित रह गया । ४०९

अळुवरौ	डैळुवर्नी	ळुलह	मेळौडेळ्
तळुविय	वैन्त्रियर्	तलैवर्	तानैयर्
मळुविन्नर्	वाळिन्नर्	वयङ्गु	शूलत्तार्
उळुवैयौ	डरियैन्	वुडङ्गु	जीङ्गुत्तार् 410

तानैयिन् तलैवर्-सेनानायक; अळुवरौट्टु अळुवर्-सात और सात (चौदह); नौळ् उलकम्-विस्तृत लोक; एळौट्टु एळ्-सात और सात; तळुविय-(इनमें) व्याप्त;

वैन्न्रियर्-विजय के स्वामी; मळुवित्तर्-परशु; वाळितर्-तलवार; वयङ्कु चूलत्तर्-
और उज्ज्वल शूलधारी; उळुवैयाटु अरि अँत-व्याघ्र और केसरी के समान; उट्टुडम्-
दुखानेवाले; चीडुत्तर्-क्रोधी । ४१०

सेनानायक चौदह थे । उनकी विजय चौदहों भुवनों पर व्याप्त
थी । उनके पास परशु तलवारें और चमकदार शूल आदि हथियार थे ।
वे व्याघ्र और सिंहों के समान लोगो को अपार दुख देनेवाले क्रोधशील
राक्षस थे । ४१०

विल्लिनर्	वाळित	रिदळै	मेलिडुम्
पल्लिनर्	मेरुवैप्	पडिक्कु	माडुलर्
पुल्लित्तर्	तिशैदीरुम्	पुरवित्	तेरिनर्
शौल्लित्त	मुडिक्कुरुन्	दुणिवि	नैञ्जिनार् 411

विल्लित्तर्-धनुर्धर; वाळितर्-तलवारधारी; इतळै मेलिडुम् पल्लिनर्-अधरों पर
टिके दाँत वाले; मेरुवै पडिक्कुम् आडुलर्-मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले;
पुरवि तेरित्तर्-अश्व-जुते रथ वाले; चौल्लित् मुडिक्कुरुम्-कहे हुए कार्य को पूरा
करने का; दुणिवित् नैञ्जिनार्-साहस रखनेवाले मन के; तिचै तौडुम्-सभी दिशाओं
में; पुल्लित्तर्-आ जुटे । ४११

वे सेनानायक धनुष और तलवारों से लैस थे । उनके दाँत
अधरों को काट रहे थे । मेरु को भी उखाड़ सकनेवाले वे अश्व-जुते रथों
पर सवार थे । जो कहते वही कर दिखाने का साहस रखते थे । वे
सभी दिशाओं में घेरकर खड़े रहे । ४११

तूडणन्	त्रिरिशिरात्	तोन्ड	लादियर्
कोडणं	मुरशित्तड्	गुळिरुज	जेनैयर्
आडव	रुयिर्हव	रलङ्गल्	वेलिनार्
पाडव	निलैयित्तर्	पलरुज्	जुडुत्तिनार् 412

आटवर् उयिर् कवर्-(सामने लड़नेवाले) वीरों की जान हर लेनेवाली; अलङ्कल्
वेलिनार्-माला से अलंकृत बछीं वाले; पाटव निलैयित्तर्-पटु स्थिति में रहनेवाले;
कोटणै मुरचु इत्तम्-गम्भीर नादयुक्त ढोलों के समूह; कुळिरुज्-जिसमें ठनक उठते थे,
ऐसी; चेतैयर्-सेना वाले; तूडणन् तिरिचिरा तोन्डल् आतियर्-दूषण, त्रिशिरा आदि
नायकों को पुरस्सर करते हुए; पलरुम्-अनेक सेनानी; चुडुत्तिनार्-आ जुटे । ४१२

उनके पास माला से अलंकृत भाले थे, जो सामने आये शत्रुओं के प्राण
हर लेते थे । वे दक्षता में बड़ी-चढ़ी स्थिति में थे । उनके पास बड़ी
सेनाएँ थीं, जिनमे ढोलो की उच्च ठनक सुनाई देती थी । दूषण, त्रिशिरा
आदि अधिपतियों को पुरस्सर करके वे आ एकत्र हुए । ४१२

आन्ऱुमै यँऱिपडै यळुवत् तार्हलि, वान्ऱीडर् मेरुवै वळैत्त दामैन्
ऊन्ऱिन तेरित्त नुयर्न्द तोळित्त, तोन्ऱित्त करन्ऱमन् रुणुक्क मैय्दवे 413

आन्ऱु अमै-खूब मिली रही; अँऱि पटै-शत्रुघातक सेनाएँ रूपी; अळुवत्तु
आर् कलि-गम्भीर सघोष सागर; वान् तोटर् मेरुवै-गगनस्पर्शी मेरु को घेर आया हो,
ऐसा; ऊन्ऱिय तेरित्त-मध्य में स्थापित रथ वाला; उयर्न्द तोळित्त-उन्नत
मुजाओं वाला; करन्-खर; नमन् तुणुक्कम् अँय्त-यम को आतंकित करते हुए;
तोन्ऱित्त-प्रकट हुआ (दिखाई दिया) । ४१३

वे सेनाएँ, जो बड़ी थीं और वीरों से भरी थी, गम्भीर समुद्रों के समान
थीं । उनके मध्य खर का रथ स्थापित था । यह दृश्य ऐसा लगा,
मानो समुद्र ने मेरु को घेर लिया हो ! वह रथ आकाश तक ऊँचा था और
मेरु के समान था । उसमें बैठे हुए उन्नत कंधों वाला खर, यम को भी
भयभीत करते हुए दिखाई दिया । ४१३

अशुम्बुरु मदहरि पुरवि याडहत, तशुम्बुरु शयन्दत्त मरक्कर् ताडर
विशुम्बुरु तूळियाल् वैण्मै मेयित्त, पशुम्बरि पहलवन् बंम्बोड् डेररो 414

अचुम्पु उरु-मद बहानेवाले; मत करि-मत्तगज; पुरवि-अश्व; आटक्
तचुम्पु उरु-स्वर्णकलशों वाले; चयन्तनम्-स्यंदन; अरक्कर् ताळ्-पदाति राक्षस
वीरों के; ताळ्-अपने पैरों से; तर-उठनेवाली; विचुम्पु उरु तूळियाल्-व आकाश
पर जमी धूलि से; पकलवन्-दिनकर के; पचुम् करि-हरे घोड़े; पैम् पौन् तेर्-
व चोखे स्वर्ण का रथ; वैण्मै मेयित्त-धवलता से ढक गये । ४१४

मद बहानेवाले मत्तगज, अश्व, स्वर्णकलशों वाले रथ, पदाति के
राक्षस वीर —इन सबके पदाघात से धूलि जो उड़ी, उससे दिनकर के हरे
घोड़ों और स्वर्णरथ पर भी धवलता छा गयी । यानी वे श्वेत
दिखे । ४१४

वत्तन्दुहळ् पट्टत्त मलैयित्त वानुयर्, कत्तन्दुहळ् पट्टत्त कडल्ह डूर्न्दत्त
इत्तन्दोहु तूळिया लिशैप्प दैन्ऱित्तिच्, चित्तन्दोहु नैडुङ्गडर् चेतै शैल्लवे 415

चित्तम् तौकु-उमड़ते क्रोध की; नैटुम् कटल् चेतै-विशाल सागर-सी सेना;
चैल्ल-जब (जनस्थान से पंचवटी की ओर) चली तब; इत्तम् तौकु तूळियाल्-विपुल
राशि में उठी धूलि से; वत्तम्-वे वन; तुक्क पट्टत्त-सर्वत्र धूलि से ढक गये;
वान् उयर्-आकाश में ऊँचे उठे; मलैयित्त कत्तम्-पर्वतों पर के घन; तुक्क पट्टत्त-
धूलि से भर गये; कटल्कळ्-समुद्र; तूर्न्तत्त-भरकर धरती बन गये; इति अँन्
इचैप्पनु-आगे क्या कहा जाय । ४१५

जब क्रोधोन्मत्त, विशाल सागर-सम सेना जनस्थान से पंचवटी जाने
लगी, तब धूलि की राशि इतनी उठी कि वन सब धूलिधूसरित हो गये ।
आकाशस्पर्शी पर्वतों पर के मेघ ढक गये । समुद्र भी पटकर धरती बन
गये । इससे बढ़कर क्या कहा जाय ? । ४१५

निलमिशै	विशुम्बिडै	नैरुक्क	लानैडु
मलैमिशै	मलैयिनम्	वरुव	पोन्मलैत्
तलैमिशैत्	तलैमिशैत्	ताविच्	चैन्ऱुत्तर
कौलैमिशै	नञ्जैन्क	कौदिक्कु	नैञ्जितार् 416

कौलै मिच्चै-मारने के उत्साह में; नञ्चु अँत-विष के समान; कौतिक्कुम् नैञ्चितार्-खोलते मन वाले; निलमिच्चै-भूमि पर; विचुम्पु इटै-आकाश पर; नैरुक्कलाल्-स्थानाभाव हो जाने से; नैटु मलै मिच्चै-बड़े पर्वतों पर; मलै इतम् वरुव पोल्-पर्वत-समूह आ रहा हो, ऐसा; मलै तलै मिच्चै तलै मिच्चै-पर्वत-शिखर से शिखर पर; तावि चैन्ऱुत्तर-लपकते चले । ४१६

युद्ध में शत्रुसंहार करने के उत्साह के साथ, खोलता विष-सम मन लेकर जो वीर जा रहे थे, उनको पर्वतों के शिखरों पर चलनेवाले अन्य पर्वतों के समान शिखर से शिखर उछलकर जाना पड़ता था; क्योंकि सारी भूमि वीरों से भर गयी थी । ४१६

❀ वन्ददु	शेत्तै	वैळ्ळम्	वळ्ळियोन्	मरुङ्गिन्	माया
वन्दमा	वित्तैयम्	माळप्	पड्डु	पैड्डि	योर्क्कुम्
उन्दरु	निलैय	दाहि	युडनुऱैन्	दुयिरह	डम्मे
अन्दहर्	कळिक्कु	नोय्पो	लरक्किमुन्	ताह	वम्मा 417

माया-अनंत; पन्त मा वित्तैयम्-वन्धन जो कर्म हैं, उनके; माळ-मिटने पर; पड्डु अरु-राग-हीन; पैड्डियोर्क्कुम्-श्रेष्ठ ज्ञानियों के लिए भी; उन्तु अरु निलैयतु आकि-अप्रतिहत वन; उटन् उऱैन्तु-शरीर के साथ रहकर; दुयिरक्क तम्मे-जीवों को; अन्तकड्कु अळिक्कुम्-यम के हाथ सौंप देनेवाले; नोय् पोल्-रोग के समान; अरक्कि मुन्ताक-राक्षसी शूर्पणखा को आगे करके; वळ्ळियोन् मरुङ्किन्-उदार प्रभु के पास; चेत्तै वैळ्ळम् वन्ततु-सेना-प्रवाह आया । ४१७

वह सेना-सागर प्रभु श्रीराम के सम्मुख आ गयी । उसको शूर्पणखा आगे रहकर ले आयी । वह उस रोग के समान थी, जो कर्मवन्धननाशक रागरहित ज्ञानियों के लिए भी अप्रतिहत वनकर शरीर के साथ रहता है और जीवों को यम के हाथ सौंप देता है । ४१७

तूरियक्	कुरलित्	वानिन्	मुहिङ्कणन्	दुणुक्कड्	गौळ्ळ
वार्शिलै	यौलियि	तञ्जि	युरुमौर	मरुक्कड्	गौळ्ळ
आरहलि	तानु	मुटकि	यशंवुऱ	वरक्कर्	शेत्तै
पोरुवन्	दिरुन्द	वीर	नुऱैविडम्	बुक्क	दत्तु 418

तूरिय कुरलित्-बाजों के नाद से; वातिन् मुकिल् कणम्-आकाश के मेघ-समूहों को; तुणुक्कम् कौळ्ळ-कंपाते हुए; वार् चिलै औलियिन्-लम्बे धनुष की टंकार की ध्वनियों से; अञ्चि-डरकर; उरुम्-वज्र भी; और मरुक्कम् कौळ्ळ-व्यथ हों,

ऐसा; आर् कलि तातुम्-गरजते सागर भी; उट्कि-भीतर से काँपकर; अचंबु उड-उट्टेलित हों, ऐसे; अरक्कर चेतै-राक्षस-सेना; पोर् उवन्तु इरुन्त-युद्ध की सानन्द प्रतीक्षा में जो रहे; वीरन्-श्रीरघुवीर के; उरैवु इटम्-रहने के स्थान को; पुक्कतु-जा पहुँचौं । ४१८

मारु वाजे बजे और आकाश के मेघसमूह वह सुनकर काँप उठे । दीर्घ धनुषों की टंकारें निकलीं तो वज्र भी उनसे डर गये और समुद्र भी भीतर से उट्टेलित होकर मथ गये । इस ठाट-वाट के साथ वे राक्षस-सेनाएँ उस पर्णशाला के पास आयीं, जिसमें रघुकुलवीर श्रीराम युद्ध की, आनन्द के साथ प्रतीक्षा करते हुए रह रहे थे । ४१८

वाय्बुलर्न् दळिन्द मैय्यिन् वरुत्तत्त वळियिल् याण्डुम्
ओय्विल् निमिरन्नु वीड्गु मुयिर्प्पित्त वूलैन्द कण्ण
तीयवर् शेत्तै वन्दु शेर्न्दमै तैरियच् चैन्ऱु
वेय्दैरिन् डुरैप्प पोन्ऱु पुळ्ळौडु विलङ्गु मम्मा 419

पुळ् ओट्टु विलङ्कुम्-पक्षी और जानवर; वाय् पुलर्न्तु-मुख सूखकर; अळिन्त-मिटे जो; मैय्यिन् वरुत्तत्त-शरीर में रुग्ण हुए जो; वळियिल् याण्डुम् ओय्वु इल-मार्ग में कहीं विश्राम न लेकर; निमिरन्नु वीड्कुम् उयिर्प्पित्त-मुख ऊपर कर लम्बी साँसें छोड़नेवाले; उलैन्त कण्ण-प्रभाहीन आँख वाले; तीयवर् चेतै वन्दु चेर्न्तमै-खलों की सेना के आगमन का समाचार; तैरिय चैन्ऱु-पहले जानकर दौड़कर; वेय् तैरिन्नु उरैप्प पोन्ऱु-चर जाकर खबर देते हों जैसे (वने) । ४१९

इस विपुल सेना से आक्रांत होकर पक्षी और जानवर भागे । उनके मुख भय के मारे सूख गये । शरीर रुग्ण हो गये । बीच में वे कहीं विश्राम नहीं कर सके । मुख ऊपर उठाकर लम्बी साँसें छोड़ते हुए वे भागे और उनकी आँखें प्रभाहीन हो गयीं । वे चरों का काम करते हुए बुरे लोगों की सेना के आगमन की खबर सुनाने आये हों —ऐसे भागते आये । ४१९

तूळियिन् पडलै वन्दु तौडर्वुड मरमुन् दूळुम्
ताळिडै यौडियु मोशै शडशड वौलिप्पक् कान्तत्
ताळियु मरियु मञ्जि यिरिदरु ममलै नोक्कि
मीळिमीय्म् बित्तरुञ्ज जेतै मेल्वन्द दुळ्ळदन् रुन्ता 420

तूळियिन् पटलै-धूलि-पटल; वन्दु तौडर्वु उड-आकर जमे, इसलिए; मरमुम् तूळुम्-पेड़ और झाड़; ताळ् इटै-उनके पैरों के नीचे; ओट्टियुम् ओचै-टूटते हैं, वह नाद; चटचट ओलिप्प-तड़-तड़ शब्द उठाते हैं; कान्तत्तु-वन में; आळियुम् अरियुम्-शरभ और सिंह; अञ्चि-डरकर; इरि तरुम्-दूर भागते हैं; अमलै नोक्कि-वह शब्द सुनकर; मीळि मीय्म्पित्तुम्-सबल झुजा वाले श्रीराम और लक्ष्मण भी; चेतै मेल् वन्दु उळ्ळु-सेना हम पर चढ़ आई है; अन्ऱु उन्ता-यह सोचकर । ४२०

धूलिपटल आकर तरुओं और झाड़ों पर जम गया । वे वीरों के पैरों के नीचे और मध्य पड़कर टूटे । उस तड़-तड़ शब्द से शरभ और सिंह डरकर भागे । उनके हड़बड़ाकर भागने का शोर सुनकर सबल कंधे वाले वीरों (श्रीराम और लक्ष्मण) ने ताड़ लिया कि सेना हम पर चढ़ आयी है । (ऐसा सोचकर —) । ४२०

ॐ मरम्बडर् कान्त नैङ्गु मदर्वड वन्द शेन
करन्वडै यैन्व देण्णिक् करुनिडक् कमलक् कण्णन्
शरम्बडर् पुट्टिल् कट्टिच् चावमुन् दरित्तान् इळ्ळा
उरम्बडर् तोळिन् मोळ्ळाक् कवचमिट् टुडैवा छार्त्तान् 421

मरम् पटर् कान्तम् अँडकुम्-तरुसंकुल वन में सर्वत्र; अतर् पट-मार्ग बनाते हुए; वन्त चैत्तै-जो सेना आई वह; करन् पटै अँत्तपतु-खर की सेना है, यह; करु निड-नीले वर्ण के; कमल कण्णन्-कमलाक्ष श्रीराम ने; अँण्णि-निश्चय करके; चरम् पटर् पुट्टिल् कट्टि-शरवहुल तूणीर बाँधकर; चापमुम् तरित्तान्-धनुष भी उठा लिया; तळ्ळा उरम् पटर्-अटल वीरता से युक्त; तोळिन्-कन्धों पर; मोळ्ळा-अट्ट; कवचम् इट्टु-कवच बाँधकर; उटैवाळ् आर्त्तान्-कटार बाँध ली । ४२१

कमलाक्ष और नीलवर्ण श्रीराम ने यह भी निश्चय कर लिया कि वन में सर्वत्र मार्ग बनाते हुए जो आयी है, वह विपुल सेना खर की है । उन्होंने युद्ध में जाने की तैयारी की । तूणीर, चाप, अक्षय सबल कंधों से कसा हुआ कवच और तलवार आदि को यथोचित रीति से यथास्थान धारण कर लिया । ४२१

मिन्निन्ड शिलैयन् वीरक् कवचत्तन् विचित्त वाळन्
पौन्निन्ड वडिम्बिन् वाळिप् पुट्टिलन् पुहैयु नैञ्जन्
इन्निन्ड काण्डि यान्शैय् निलैयैन् विरुम्बि नेरा
मुन्निन्ड पिन्वन् दानै नोक्किन्न् मौळिय लुड्डान् 422

मिन् निन्ड चिलैयन्-विजली ने धनु का रूप धर लिया हो, ऐसे धनुष के धारक; वीर कवचत्तन्-वीरोचित कवच से अलंकृत; विचित्त वाळन्-बँधी हुई तलवार वाले; पौन् निन्ड वटिम्पिन्-स्वर्णमय कोरों के; वाळि पुट्टिलन्-तूणीर वाले; पुहैयु नैञ्जन्-क्रोधाग्नि के धुएँ से भरा मन वाले (लक्ष्मण); विरुम्पि- (स्वयं जाना) चाहकर; यान् चैय् निलै-मेरे (युद्ध) कार्य की स्थिति; इन् इन्ड काण्डि-आज अभी देखिए; अँत्त-कहकर; मुन् नेरा निन्ड-जो अग्रस्थ हुए उन; पिन् वन्तात्तै-अनुज की; नोक्किन्न्-देखकर; मौळियल् उड्डान्-कहने लगे । ४२२

तब लक्ष्मण उनके सामने आये । विजली के अवतार-सा धनुष, वीरोचित (दृढ़) कवच, तलवार, स्वर्णमुख तूणीर आदि के साथ मन में धुआँ निकालनेवाली कोपाग्नि लेकर जो आये, उन्होंने श्रीराम से कहा कि आज मेरा युद्ध-सामर्थ्य देखिए । ऐसा कहते हुए अग्रस्थ अनुज से श्रीराम बोले । ४२२

कावातु नीयौळियिर् पळिपेरिदो वन्ऱेर्
करुङ्गडलिर् कण्वळरन्दीय् कैम्मारु मुण्डो 101

तेवा-देव; करुम् कटलिल-(आपके रंग के कारण) काले (वने) या विशाल क्षीरसागर में; कण् वळरन्तोय्-निद्रा करनेवाले; मेवातवर् इल्लै-आपके शत्रु नहीं है; मेवित्तुम् इल्लै-मित्र भी नहीं हैं; वैळियोट्टु इरुळ् इल्लै-प्रकाश के साथ अन्धकार भी नहीं है; मेल् कीळुम् इल्लै-ऊपर, नीचे नहीं है; मूवामेयुम् इल्लै-उमर में कम होता भी नहीं; मूत्तमेयुम् इल्लै-वढ़ना भी नहीं; मुत्तल् इट्टे ओट्टु-आदि, मध्य के साथ; ईरु इल्लै-अवसान भी नहीं; मुन् ओट्टु पिन् इल्लै-पूर्व और पश्चात नहीं है; निन् तोन्ऱु निलै-आपके स्वरूप के लक्षण; इव्वो-ये है क्या; अन्ऱाल्-तो; नी चिलै एन्ति-आप धनुष लेकर; चेवटिकळ् नोव-लाल (मनोरम) परों को दुख देते हुए; वन्तु कावातु ओळियिल्-आकर रक्षा नहीं करेंगे तो; पळि पेरितो-बड़ा अपयश होगा क्या; अन्ऱेल्-या; कै मारुम् उण्टो-प्रत्युपकार भी हो सकता है क्या । १०१

आप काल-देश-वस्तु-परिच्छेद रहित हैं । इसलिए आपके न शत्रु है, न मित्र है । देवाधिदेव ! क्षीरसागरशायी ! आपके लिए न प्रकाश है, न अँधेरा । ऊपर कुछ नहीं है, न आपके नीचे कुछ है (आप सर्वत्र व्याप्त हैं) । आपकी न जवानी होती है, न वार्द्धक्य होता है (आप कालातीत हैं) । आपका न आदि है, न मध्य, न अन्त । आपके पूर्व या बाद कुछ नहीं होता । आप सभी काल में वर्तमान हैं । आपके लक्षण ऐसे हैं न ? फिर क्या आश्चर्य है कि आप धनुष लेकर अपने श्रीचरणों को दुखाते हुए हमारे रक्षणार्थ इधर आये हैं । ऐसा रक्षण नहीं करेंगे तो आपका अपयश हो जायगा क्या ? या हम आपका कोई प्रत्युपकार करनेवाले हैं क्या ? । १०१

नाळि	नवैतो	रुलहर्मेला	माह
नळित्तुत्तु	नीतन्द	नान्मुहत्तार्	तामे
ऊळि	पलपलवु	निन्ऱुळन्दा	लैर्ऱु
मुलवाप्	पैरुङ्गुणत्तै	मुत्तमत्ते	मेनाळ्
ताळि	तरैयाहत्	तण्डियर्	नीराहत्
तडवरैये	मत्ताहत्	तामरैक्कै	नोव
आळि	कडैन्दमुद	मैङ्गळुक्के	यीन्दा
यवुणर्हडा	मुत्तक्कडिमै	यल्लामै	युण्डो 102

नी-आपने; नळित्तुत्तु तन्त-अपनी नाभी-कमल से जिनको सृष्ट किया; नान् मुक्त्तार् तामे-वे चतुर्मुख; नवै तोर् उलकम् अँलाम्-निर्दोष प्रपंच सब; नाळि आक्-माप बनाकर; ऊळि पल पलवुम्-अनेक-अनेक युग; निन्ऱु अळन्ताल्-रहकर मापें तो भी; अँन्ऱुम् उलवा पैरुम् कुणत्तु-कभी पूरा न होनेवाले (अमाप) उत्तम गुणों के; अँम् उत्तमत्ते-हमारे पुरुषश्रेष्ठ; मेल् नाळ्-प्राचीनकाल में; तरै ताळि

आक-भूमि को मथनी (पात्र) बनाकर; नीर् तण् तयिर् आक-सागरजल को दही बनाकर; मत्तु तटवरैये आक-मथानी, बड़े मन्दरपर्वत को बनाकर; तामर के नौव-कमल-सम हाथों को दुखाते हुए; आळि कटैन्तु-समुद्र को मथकर; अमृतम्-अमृत को; अङ्कळुक्के ईन्ताय्-हमें ही दे दिया; अवुणर्कळ् ताम्-दानव तो; उन्नक्कु अटिमै अल्लामै उण्टो-आपके दास नहीं हैं, ऐसा क्या । १०२

आपके, अपनी नाभि से सृजित चतुर्मुख ब्रह्मा स्वयं, निर्दोष लोकों को माप बनाकर अनेक युगों तक आपके गुणों का माप लगाने लगें, तो भी आपके गुणों का माप नहीं मिल सकता । ऐसे अमाप कल्याण-गुणपूर्ण ! पुरुषोत्तम ! प्राचीन काल में सारी पृथ्वी को मथनी बनाकर क्षीरसागरपय को दही बनाकर और मन्दर पर्वत को मथानी बनाकर अपने कमल-सम हाथों को दुखाते हुए मथन किया; पर सुधा निकला तो उसे हम देवों को दे दिया ! तब क्या दानव आपके दास नहीं हैं —यह बात है क्या ? । १०२

औन्नाहि	मूलत्	तुरुवम्	बलवाहि
युणर्वा	युयिराहिप्	पिडिदाहि	यूळि
शैन्ना	शरुङ्गालैत्	तन्निलैय	दाहित्
तीर्न्दुलहन्	दानाहिच्	चैव्वेता	निन्ना
नन्नात्त	जानत्	तत्तिक्कोळुन्दे	यैङ्ग
णवैदोर्कुक्कु	नायहन्ने	नल्वित्तैये	नोक्कि
निन्नारैक्	कात्ति	ययलारैक्	काय्दि
निलैयिल्लात्	तीविनैयु	नीतन्द	दन्ने 103

मूलत्तु औन्ना आकि-मूल में एक रहकर; उरुवम् पल आकि-अनेक रूप बनकर; उणर्वु आय्-ज्ञानगोचर बनकर; उयिर् आकि-प्राण बनकर; पिडितु आकि-इस तरह भिन्न-भिन्न होकर; ऊळि चैन्ना आचु उरुम् कालै-युगान्त में प्रपंच-नाश के समय; तन् निलैयतु आकि तीर्न्तु-अपनी पूर्व-स्थिति में आ (अपनी लीला) समाप्त करके; उलकम् तान् आकि-तब प्रपंच स्वयं आप होकर; चैव्वे निन्ना-शोभित रहनेवाले; नन्नाय जात्त तत्ति कौळुन्ते-श्रेष्ठ ज्ञान के पल्लव (सार) समान; अङ्कळ् नवै तीर्क्कुम्-हमारे अपराधों को दूर करनेवाले; नायक्के-नाथ; नल् वित्तैये नोक्कि निन्नारै-अच्छे कर्म ही करते रहनेवाले साधुओं की; कात्ति-आप रक्षा करते हैं; अल्लारै-इतरों की; काय्ति-दण्ड देते हैं; निलै इल्ला तीवित्तैयुम्-अस्थायी बुरे कर्म भी; नी तन्तु अन्ने-आपके ही बने हुए हैं न । १०३

मूल में एक रहकर फिर अनेक रूप में बदले । भिन्न-भिन्न सृष्टि में ज्ञान से अनुभव में आनेवाले तत्व रहे । उसके प्राण रहे । इस तरह अनेक जीवों में बँटे से रहने के बाद युगांत में फिर आपने उन सबको अपने में समेट लिया । तब प्रपंच सब आप ही हो गया । उस स्थिति में शोभायमान जो रहते हैं, वे ज्ञानसार ! हमारे अपराधों को मिटानेवाले नायक ! अच्छे कर्म करनेवाले साधुओं को रक्षित और इतरों को दण्डित

करनेवाले हैं आप । पर क्या अस्थायी पाप भी आपके ही कारण स्थिति नहीं पाते ? । १०३

वल्लै	वरम्बिल्लाद	मायविन्नै	तन्नान्
मयङ्गिन्नर्	हळोडे	मदिमयङ्गि	मेत्ताळ्
अल्लै	यिऱैयवन्ती	यादियेन्नप्	पेटुर्
इलमर्	वेमुन्नै	यउप्पयन्नुण्	डाह
अल्लै	वलयङ्गळ्	नुम्मुळैयेन्	इन्ना
अरियोन्नैत्	तीण्डि	यैळुव	रैन्नित्तु
तौल्लै	मुदन्मुत्तिवर्	शूळुर्	पोदे
तौहैन्नित्तु	वैयन्	दुडैत्तिलैयो	वैन्दाय् 104

अन्ताय्—हमारे पिता; वल्लै—बलवती; वरम्पु इल्लात—असीम; माय विन्नै तन्नाल्—माया के कार्य से; मयङ्कित्तर्कळ् ओटु—भ्रमित रहे (देवों) के साथ; मति मयङ्कि—मोहमग्न होकर; मेल् नाळ्—प्राचीन समय में; इऱैवन् नी अल्लै—आप आदि भगवान नहीं हैं; आति अन्न—आदिदेव हैं, ऐसा; पेटुर्—संशय में पड़कर; अलमर्वेम्—संकट में रहे हमारे; मुन्नै अउ पयन् उण्टाक—पूर्वकृत सुकर्म का फल सहायता करने आया; अन्नाळ्—उस दिन; अल्लै वलयङ्कळ्—सीमा पर स्थित सारे कुवलय; नुम् उळै अन्नु—आप ही पर स्थित हैं, ऐसा; अळुवर् अन्न नित्तु तौल्लैमुत्तल् मुत्तिवर्—“सप्तक” के रूप में प्रख्यात सप्तर्षियों ने; अरियोन्नै तीण्डि—अग्नि को स्पर्श करके; चूळ् उर् उर् पोते—शपथ कही; तौकै नित्तु ऐयम्—तब घनीभूत रहा संशय; तुडैत्तिलैयो—आपने मिटाया नहीं क्या । १०४

धाता! पहले कुछ देवों ने बलवती और असीम माया के कार्य के वश में होकर आपके परत्व के सम्बन्ध में संशय किया । यह उनका भ्रम था । हम भी उनके साथ भ्रमित होकर आप परब्रह्म आदिदेव हैं, नहीं हैं, ऐसे संशय में पड़कर गड़बड़ा रहे थे । पर हमारा सुकृत था, जिसके फलस्वरूप (अत्रि, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगीरस आदि) सप्तर्षियों ने अग्नि में हाथ रखकर शपथ खायी कि सारे कुवलय आपके ही शरीर पर घृत है । तब परब्रह्म कौन है, इस पर उठा घनीभूत सन्देह मिट गया । आप ही न ऐसी व्यवस्था करके हमारा सन्देह मिटाया ! (वाल्मीकी में ये बातें पायी नहीं जातीं ।) । १०४

इन्नन्न	पलनिन्नैन्	देत्तिन्न	नियम्बात्
तुन्नद	लिडैयुळ	दैन्ननि	तुणिवान्
तन्निहर्	मुत्तिवन्नैत्	तरविडै	येन्नाप्
पौन्नीळिर्	नैडुमुडिप्	पुरन्दरन्	पोनान् 105

पौन् ओळिर् नैडु मुदि पुरन्तरन्—स्वर्ण की चमकदार दीर्घकिरीटी पुरन्दर ने; इन्नन्न पल—ऐसी अनेक व्राते; नित्तैन्नु—सोचकर; इयम्पा एत्तिन्नन्—और कहकर

स्तुति की; इटं तुत्तुतल् उल्लु-बीच में होनेवाली एक घटना है; अँन-ऐसा; नत्ति तुणिवान्-खूब निश्चय करके; तन् निकर् मुनिवत्तै-स्वोपम महर्षि को; विटै तर-विदा दें; अँत्ता-कहकर (ले); पोत्तान्-सिधारे । १०५

स्वर्ण के कारण जाज्वल्यमान दीर्घ किरीटधारी पुरन्दर ने ऐसी बहुत सी बातों का स्मरण करके उनकी स्तुति की । उन्होंने सोच लिया कि बीच में घटनेवाली एक विशेष घटना है । इसलिए उन्होंने शरभंग मुनि को, जो अपनी उपमा स्वयं आप ही थे, नमस्कार करके विदा ली और वे वहाँ से चले गये । १०५

पोत्तव तह्निलै पुलमयि नुणर्वान्, वात्तवर् तलैवत्तै वरवैदिर् कौण्डान्
आत्तव नडितौळ वरुळ्वर मुत्तिवन्, तानुडै यिडवहै तळुवित्त नुळैवान् 106

पोत्तवन् अक निलै-वैसे निर्गत देवेन्द्र का मनोभाव; पुलमैयिन्-अपनी ज्ञान-दृष्टि से; उणर्वान्-समझकर ऋषि ने; वात्तवर् तलैवत्तै-देवदेव श्रीराम को; वरवु अँतिर् कौण्डान्-अपने सामने आते पाया; आत्तवन्-(आगत) श्रीराम ने; अटि तौळ-नमस्कार किया; मुत्तिवन् अरुळ्वर-मुनि ने कृपापूर्ण होकर; तळुवित्तन्-आलिंगन कर लिया; तानुडै इट वकै-अपने वासस्थान (कुटीर) को; नुळैवान्-प्रवेश करके । १०६

महर्षि ने, वहाँ से जो गये, उन पुरन्दर का मनोभाव अपनी ज्ञानदृष्टि से जान लिया । तब देवाधिदेव श्रीराम उनके सामने पधारें । उन्होंने आकर महर्षि के चरणों में नमन किया । महर्षि उन्हें गले लगाकर अपने आश्रम में लिवा ले जाने लगे । १०६

एळैयु मिळवलुम् वरुहैन विन्निदा, वाळिय ववरीडु वळ्ळलु सहिळ्वा
ऊळियिन् मुदन्मुत्ति युडैयुळै यणुह, आळियि लडितुयि लवत्तैन् सहिड्वान् 107

वळ्ळलुम्-श्रीराम ने; एळैयुम् इळवलुम् इतिता वरुह अँत-देवी और छोटे भाई सुख से आँवें, कहा, तब; अवरीडु-उनके साथ; मकिळ्वा-खुश होकर; ऊळियिन् मुत्तन् मुत्ति-युग के पूर्व से भी विद्यमान महर्षि के; उडैयुळै-कुटीर में; अणुक-श्रीराम आये तब; आळियिल् अडि तुयिल्-क्षीरसागर में योगनिद्रा में लीन रहनेवाले; अवन् अँत-परब्रह्म, विष्णु भगवान है, समझकर; मकिळ्वान्-हर्षरत हुए । १०७

तब श्रीराम ने अपनी देवी सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मण को अपने साथ आने की आज्ञा दी । युगारम्भ के पहले से ही रहनेवाले मुनिवर उन सबको लेकर अपने कुटीर में आये । वे श्रीराम को क्षीरसागरशायी विष्णु भगवान जानकर अत्यन्त हर्षित हुए । १०७

अव्वयि	तळहन्नु	वैहिन	नडिजन्
शैव्विय	वडिवुरै	शैव्विय	नुहरा
नव्वियिन्	विळियव	ळौडुननि	यिरुळैक्
कव्विय	निशियौरु	कडैयुरु	मळविल् 108

अ वयिन्-उस आश्रम में; अळकतुम्-सुन्दरराज; नव्वियिन् विळि अवळोट्टु-भृगनयनी सीताजी के साथ; वैकित्तन्-ठहरे; अरिजन्-ज्ञानी ऋषि के; चैव्विय अरिवु उरै-श्रेष्ठ उपदेशों को; चैवि वयिन् नुकरा-कानों से सुनकर; इरुळै ननि कव्विय-अन्धकार-ग्रस्त; निचि-निशा; - और कटै उरुम् अळविल्-अन्त होने को आई, तब । १०८

आश्रम में सुन्दरराज श्रीराम, भृगनयना सीतादेवी के साथ ठहरे । (लक्ष्मण शायद कुटीर के बाहर ही रह गये थे ।) महान ज्ञानी शरभंग ने अनेक श्रेष्ठ उपदेश दिये । उपदेशों को ध्यान से श्रीराम ने सुना । यों रात बीती और अन्धकारग्रस्त रात एक तरह से अपने अन्तिम समय में आ गयी । तब— । १०८

विलहिडु	निळलिनन्	वैयिल्विरि	ययिल्वाळ
इलहिडु	शुडरव	निशैयन	तिशंदोय्
अलहिड	वरिदेंनु	मविर्हर	निरैयाल्
उलहिडु	निरैयिरु	ळुडैयिन्नै	युरिवान् 109

विलकिट्टु निळलित्तन्-कलनेवाले प्रकाश के स्वामी; इलकिट्टु चुडरवन्-व्यक्त गर्मी वाले; इचै अन्न-अपनी कीर्ति के समान; तिचै तोय्-चारों दिशाओं में व्याप्त; अलकु इट्ट अरितु अँत्तुम्-अगणित; वैयिल् विरि-दीप्तियुत; अयिल् वाळ्-तीक्ष्ण तलवार-सम; अविर् कर निरैयाल्-शोभायमान किरण-हस्तों से; उलकु इट्ट-संसार पर आच्छादित; निरै इरुळ् उरैयिन्नै-घने अन्धकार रूपी चादर को; उरिवान्-उधेड़ लेने लगे । १०९

व्यापनेवाले प्रकाश के और जाज्वल्यमान तेज के स्वामी सूर्य ने अपनी ही कीर्ति के समान चारों दिशाओं में व्याप्त तलवारे-सम धूप की किरण-करोँ से भूमि पर आच्छादित अन्धकार रूपी चादर को उधेड़ दिया । (अन्धकार सूर्य-रश्मि के पड़ते ही हट गया ।) । १०९

आयिडै यरिजन् मवनेदि रळुवत्, तीयिडै नुळैवदोर् तैळिविनै युडैयान् नोविडै तरुहैन निरुविन नैरियाल्, कार्यैरि वरन्मुडै कडिदिनि लिडुवान् 110

अ इटै-तब; अरिजत्तुम्-ज्ञानी; अवन् अँतिर्-(श्रीराम) उनके सामने; अळुवम् ती इटै-अधिक पुष्ट अग्नि में; नुळैवतु ओर् तैळिविनै उडैयान्-प्रवेश करने का एक शुद्ध संकल्प लेकर; काय् अँरि-जलनेवाली अग्नि को; नैरियाल्-यथाक्रम; वरन्मुडै-शास्त्रोक्त रीति से; कटितितिल् इट्टुवान्-जल्दी प्रज्वलित करके; नो विटै तरुक्कै-आप आज्ञा दें, यह; निरुवित्तन्-माँग लिया । ११०

तब महान ज्ञानी शरभंग मुनि ने श्रीराम के सामने अधिक परिमाण में अग्नि जलाकर उसमें प्रवेश करने का संकल्प लेकर उचित क्रम से, शास्त्रोक्त प्रकार से सत्वर प्रज्वलित किया । फिर श्रीराम से विदा माँगी । ११०

वरिशिलै युल्वन्तु मरैयुल वतैनी, पुरितौलि लैतैयदु पुहलुदि यैतलुम्
तिरुमह डलैवशैय तिरुविनै युडयान्, अरिपुह नितैहुवै त्रुळैन्न विरैवन् 111

वरिशिलै उल्लवन्तुम्—बन्धनयुक्त धनुष चलाने—में दक्ष श्रीराम के; मरै उल्लवतै—
वेदकृषक को; नी पुरि तौलिळ् अतै—आप करते है, वह कार्य क्या है; अतु पुकलुति—
वह बतलाइए; अतलुम्—पूछने पर; तिरुमकळ् तलैव—श्रीलक्ष्मीपति; चैय् इरुविनै—
मेरे कृत दोनों कर्म; अरु—नष्ट हो जायँ, इसलिए; यान् अरि पुक नितैकुवैन्—मैं
अग्निप्रवेश करना चाहता हूँ; अरुळ् अतै—आज्ञा देने की कृपा करें, प्रार्थना करने पर;
इरैवन्—भगवान् । १११

धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम ने, वेदविद्याप्रवीण महर्षि से प्रश्न किया
कि यह आप क्या करने जा रहे हैं ? कृपया बताइए तो । तब शरभंग ने
कहा कि हे लक्ष्मीपति ! मैं अपने दोनों (पाप-पुण्य) कर्मों का नाश करने
के लिए अग्नि में प्रवेश करना चाहता हूँ । आप कृपया अनुमति प्रदान
करें । तब भगवान् ने— । १११

यान्वरु ममैदियि लिदुशैय लैवतो, मान्वरु ततियुरि मारुबिनै यैतलुम्
मीन्वरु कौडियवन् विरुलडु मरुवोन्, ऊन्विडु मुवहैय नुरैन्ति पहरवान् 112

मान् वरु—मृग के; तति उरि मारुपितै—श्रेष्ठ चर्म से आच्छादित वक्ष वाले;
यान् वरुम् अमैतियिन्—मेरे आगमन के इस समय में; इतु चैयल् अैवन्—यह करना क्यों;
अैतलुम्—(श्रीराम के) यह पूछने पर; मीन् वरु कौडि अवन्—मकरध्वज (मन्मथ)
का; विरुल् अटु—प्रताप नष्ट करनेवाले; मरुवोन्—महर्षि; ऊन् विडुम् उवकै यिन्—
शरीर-त्याग से उत्पन्न हृष के साथ; उरै—वचन; नति पकरवान्—खूब बोले । ११२

मृगचर्मालंकृत वक्ष वाले ! यह अग्निप्रवेश का कार्य आप अब करना
चाहते हैं, जब मैं इधर आया हूँ ! यह क्यों ? —यह पूछा । तब
मकरध्वज मन्मथ के प्रताप-नाशक महर्षि, जो इस उल्लास में थे कि शरीर
छूटनेवाला है, बोले । ११२

आयिर युहमुळ तवमयर् हुवैन् यान्, नीयिवण् वरुहुदि यैनुत्तिलै युडैयेन्
पोयित्त दरुविनै पुहलुरु विदियान्, मेयित्तै यिनियौरु वितैयिलै विरुलोय् 113

विरुलोय्—विजयी वीर; - यान्—मैं; आयिरम् उकम् उळ—सहस्र युगपर्यन्त;
तवम् अयरकुवैन्—तपस्या करता रहा हूँ; नी इवण् वरुकुति—आप इधर पधारेंगे;
अैतुम् निलै उडैयेन्—इस स्थिरता पर रहा; पुकल् उरु वितियान्—शास्त्र-विधि के
अनुसार; पोयित्तु अरु वितै—मिटे मेरे कठिन कर्म; मेयित्तै—आप भी पधारें; इति
और वितै इलै—अब कोई कर्म नहीं है । ११३

विजयी वीर ! सहस्र युग पर्यन्त मैंने तपस्या की साधना की है ।
आप इधर पधारेंगे, इस बात की दृढ़ प्रतीक्षा में रहा । शास्त्र-विधान के
अनुसार मेरे दोनों कर्म कट गये । तभी तो आप पधारें हैं । आगे मेरा
कर्तव्यकर्म कुछ नहीं है । ११३

इन्दिरन् नाळित दिरुदिहळ् पहर, वन्दनन् मरुवुदि मलरय नुलहम्
तन्दन नैत्तवदु शारलै नुरवोय्, अन्दमि लुयर्पद मडैदलै मुयल्वेन् 114

उरवोय्-बलवान; इन्तिरन्-देवेन्द्र के; नाळित्तु इरुतिकळ् पकर-मेरे जीवन का अन्त कहने के लिए; वन्तत्तन्-आये; मलर् अयन् उलकम्-कमलासन ने अपने लोक का वास; तन्तत्तन्-दिया; मरुवुति-आ जायें; अन्न-कहने पर; अतु चारलै-वह नहीं चाहते हुए; अन्तम् इल् उयर पतम् अटैतलै-अक्षय परम (मोक्ष) पद प्राप्त करना; मुयल्वेत्-साधुंगा । ११४

शक्तिमन्त ! अभी देवेन्द्र आये थे और मेरी आयु का अन्त जताकर उन्होंने कहा कि कमलोद्भव ने आपको अपने लोक में आमन्त्रित किया है । पधारिए । पर मैं वह लोक नहीं चाहता । पर अक्षर परमपद (मुक्तिलोक) पाने के प्रयास में ही मैं साधना करता रहा हूँ । ११४

आदलि नदुपैर वरुळैन वुरैयाक्, कादलि यवळीडुड् गदळैरि मुळुहिप्
पोदलै मरुविन तौरुनैरि पुहला, वेदमु मरिवरु मिहुपौरु लुणर्वान् 115

औरु नैरि पुकला-(केवल) एक मार्ग प्रतिपादित न करनेवाले; वेत्तमुम्-वेदों के भी; अरिवरु-अज्ञात; मिकु पौरुळ् उणर्वोन्-अनेक विषय के ज्ञानी महर्षि; आतलिन्-इसलिए; अतु पेरुल् अरुळ्-उसकी प्राप्ति का वर दीजिए; अन्न उरैया-यह प्रार्थना करके; कातलि अवळीडुम्-प्रिया के साथ; कतळ् अरि मूळ्कि-जलनेवाली आग में प्रवेश करके; पोतलै मरुवितन्-परमपदगमन में प्रवृत्त हुए । ११५

वेद भी, जो निश्चित रूप से एक मार्ग या एक पद की व्याख्या नहीं करते हैं, पर अनेक मार्गों और अनेक पदों का प्रतिपादन करते हैं, परमपद का मार्ग नहीं बताते । लेकिन महर्षि शरभंग उस परमपद (मुक्तिलोक) का लक्षण खूब जानते थे । इसलिए उन्होंने उसी पद-प्राप्ति की श्रीराम से प्रार्थना की और वे अपनी प्रिया पत्नी के साथ ज्वलन्त अग्नि में प्रवेश करके मोक्षपद जाने को उद्यत रहे । ११५

तेवरु मुत्तिवरु मुळुवतु तैरिवोर्, मावरु नरुविरै मलरयन् मुदलोर्
एवरु मुडिवित्ति लिखिनै यौरुविप्, पोवदु करुदुम्व वरु नैरिपुक्कान् 116

उळुवतु तैरिवोर्-भवितव्य समझनेवाले; मा वरु-गौरवपूर्ण; नरु विरै-सुवासित; मलर् अयन् मुतलोर्-कमलभव अज आदि; तेवर्-देवता लोग; मुत्तिवरुम्-मुनिगण; एवरुम्-कोई भी; इरुवित्तै औरुवि-दोनों कर्मों का नाश करके; मुटिवितिल्-अन्त में; पोवतु करुतुम्-जाना (जहाँ) चाहेंगे; अ अरु नैरि-उस परमगति को; पुक्कान्-पहुँचे । ११६

भावी की बातें जाननेवाले मूल्यवान और सुवासित कमल पर आसीन अजादि देवता लोग और मुनिगण —कोई भी अपने पाप-पुण्य दोनों कर्मों के नाश पर अन्तिम गति के रूप में जहाँ जाना चाहते हैं, उसी गति को शरभंग प्राप्त हो गये । ११६

अण्डमु महिलमु मरिवरु नैरियाल्, उण्डवः नौरपेय रुणरुहन्त रुहपे
 ईण्डव नैडिदुयि रिरुदियि लवनैक्, कण्डव रुहपौरुळ् करुदुव दैळिदे 117

अण्डमुम्-सारे अण्ड; अकिलमुम्-और सारे लोक; अरिवु अरु नैरियाल्-
 अनजानी रीति से; उण्डवन्-जिन्होंने उदरस्थ कर लिया था, उन श्रीराम का;
 और पेर-एक (परमपावन) नाम; उणरकुत्तर-ध्यान करनेवाले; उरु पेह-
 जिसको प्राप्त करते हैं, वह भाग्य; अण् तव नैदितु-अपार और अत्यधिक है; नैदितु
 उयिर् इरुतियिल्-अपनी लम्बी आयु के अन्त में; अवतै कण्डवर्-जिन्होंने उनके दर्शन
 किये, वे; उरु पौरुळ्-जो प्राप्त करेंगे, वह वस्तु; करुदुवतु अळिते-सोचना सुलभ है
 क्या । ११७

अखिल अण्डों और लोकों को अपने पेट में प्रलयकाल में समा लेनेवाले
 विष्णु भगवान के सहस्र रूप हैं और सहस्र नाम हैं । उनमें एक परम
 पवित्र नाम है श्रीराम ! उसके स्मरण मात्र से लोग जो भाग्य प्राप्त करते
 हैं, वह कल्पना के भी बाहर है; बहुत श्रेष्ठ है । तो अपनी लम्बी आयु के
 अन्त में, मरणावसर पर उनके दर्शन करने का भाग्य जिनका हुआ है, वे
 जिस पद को प्राप्त होंगे उसका महत्त्व कल्पना करना भी आसान है
 क्या ? । ११७

3. अहत्तियप् पडलम् (अगस्त्य पटल)

अनैयव	निरुदियि	नमैवु	नोक्कलिन्
इतियव	रिन्तलि	निरङ्गु	नैञ्जित्तर
कुनिवरु	तिण्शिलैक्	कुमरर्	कौम्बोडुम्
पुत्तिदन्त	दुर्ऱैयुणिन्	इरिदिर्	पोयितार् 118

इतियवर्-सबके प्यारे (सबको सुख देनेवाले); कुत्ति वरु-नमनीय; तिण् चिलै-
 और सारयुक्त धनुष के; कुमरर्-(धारण करनेवाले) राजपुत्र; कौम्पु ओटुम्-
 पुष्प-शाखा (सीतादेवी) के साथ; अनैयवन्-उन महर्षि के; इरुतियिन् अमैव-अन्त
 की व्यवस्था; नोक्कलिन्-प्रत्यक्ष देखने से; इत्तलिन्-परिताप से; इरङ्कु
 नैञ्चित्तर-खिन्नमन होकर; पुत्तिननु उर्ऱैयुळ् निन्ऱु-पवित्रात्मा के आश्रम से;
 अरितिल् पोयितार्-निकलकर सायास चले । ११८

सर्वभूतरंजक प्यारे राजकुमार और नमनीय धनुष के धारक श्रीराम
 और लक्ष्मण, पुष्पलता-समाना श्रीसीतादेवी के साथ शरभंगदेह-वियोग देख
 रहे थे । उन्हें परिताप हुआ । बड़े खिन्नमन होकर वे उन पवित्र ऋषि
 के आश्रम से निकले और भारी मन के साथ सायास आगे जाने लगे । ११८

मलैहळु
 अलैपुत्त

मरङ्गळु
 नदिहळु

मणिक्कड्
 मरुविच्

पाऱैयुम्
 चारलुम्

इलैशैरि निलैमिहु	पळुवमु तडङ्गळु	मिन्निय मिन्नितु	शूळुमु नीङ्गितार् 119
---------------------	-------------------	---------------------	--------------------------

मलैकळुम्-पर्वत; मरङ्कळुम्-और अनेक तरु; मणि कल् पारैयुम्-और सुन्दर अनेक चट्टानों को; अलै पुत्तल् नत्तिकळुम्-तरंगसहित जल वाली नदियाँ; अरुवि चारलुम्-सरिताओं के साथ पर्वत-पाद-प्रदेश; इलै चैरि पळुवमुम्-पत्तों से पूर्ण वनप्रदेश; इत्तिय चूळुमुम्-और सुन्दर स्थान; इत्तित्तु-सुख से देखते हुए; नीङ्गितार्-पार करके गये । ११६

वे अनेक पर्वत, वृक्ष, सुन्दर चट्टानें, तरंगसहित जल से पूर्ण नदियाँ, सरिताओं के साथ पर्वतों के पादप्रदेश और अन्य अनेक मनोरम स्थल—इनको देखते हुए सुख से आगे बढ़ते चले । ११९

❖ पण्डैय मुण्डरु तण्डह कण्डन	वयत्तुरुम् मोनरु वनत्तुर् रिरामनैक्	वाल मुदलि तवत्तु कळिक्कुम्	किल्लरुम् नोर्हळत् ळोर्लाम् जिन्दैयार् 120
---------------------------------------	--	-------------------------------------	---

पण्डैय अयन् तरुम्-पुरातन ब्रह्माजी से सृष्ट; पालकिल्लरुम्-वालखिल्य; मुण्डरुम्-मुण्डी; मोनरुम्-मौनी; मुतलितोर्कळ्-आदि; अ तण्डक वत्तु उरै-जो उस दण्डक वन में रहते थे; तवत्तु उळ्ळोर्कळ् अल्लाम्-सब तपस्वी लोगों ने; इरामनै कण्डत्तर्-श्रीराम के दर्शन किये; कळिक्कुम् चिन्तैयर्-मुदितमन हुए । १२०

दण्डक वन में अनेक तरह के तपस्वी रहे । सृष्टि के आदिपुरुष ब्रह्माजी के (रोम से उत्पन्न) वालखिल्य (साठ हजार), मुण्डी, मौनी आदि तपस्वी थे । वे सब श्रीराम के दर्शन करके बहुत हर्षित हुए । १२०

❖ कनैवरु विनैपिडि अनैवरु पुनैवरु	कडुम्जिनत् दिन्मैयिन् कान्तहत् वुयिर्वरु	तरक्कर् वैदुम्बु तमुद मुलवै	कायवोर् हिन्ऱनर् ळाविय पोल्हिन्ऱार् 121
---	---	--------------------------------------	--

कनै वरु-शीघ्र अभिभूत कर आनेवाले; कडुम् चिन्तु-अत्यधिक क्रोध वाले; अरक्कर् काय-राक्षसों के सताने से; ओर् विन्तै पिडितु इन्मैयिन्-अपने पास कोई प्रतीकार-शक्ति न रहने के कारण; वैदुम्पुकिन्ऱत्तर्-तप्त; अनै वरु कान्तकत्तु-अग्नि-लगे कानन में; अमुत्तु अळाविय-अमृत-मिश्रित; पुनैवरु-जल के आने से; उयिर् वरुम्-प्राणवन्त होनेवाले; उलवै पोल्किन्ऱार्-ठूठ के समान बने । १२१

श्रीरामचन्द्र प्रभु का आगमन उनके लिए अग्निदग्ध कानन में सुधा-मिश्रित जलधारा के प्रवाह के समान रहा । वहाँ के प्राणवन्त बने ठूठों के समान उन्मत्त क्रोधी राक्षसों से पीड़ित वे निस्सहाय मुनिगण हरे हो उठे । १२१

✽ आय्वरुम्	बैरुवलि	यरक्कर्	नाममे
वाय्वेरीड	यलमरु	मरुक्क	नीङ्गित्तार्
तीवरु	वन्नत्तिडै	विट्टुत्	तीरुन्ददोर्
ताय्वर	नोक्किय	कन्ऱिन्	रन्मैयार् 122

आय्वरुम्—उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; बैरुवलि अरक्कर्—बड़े बल वाले राक्षसों का; नाममे—नाम; वाय्वेरीड—कहने से भी डरकर; अलमरुम्—व्याकुल रहने की; मरुक्कम्—उद्विग्नता से; नीङ्गित्तार्—मुक्त होकर; ती वरु वन्नत्तु इटै—(वे) जलनेवाले जंगल-मध्य; विट्टु—छोड़कर; तीरुन्तनु—जो गई थी; ताय्वरल्—उस माता गाय का आना; नोक्किय—देखते रहे; कन्ऱिन् तन्मैयार्—बछड़े के समान स्थिति वाले हुए । १२२

वे वर्धनशील बल से युक्त राक्षसों का नाम लेने से भी डरते हुए अपार संकटग्रस्त होकर राक्षसों के त्रास के कारण बहुत व्याकुल व उद्विग्न रहते थे । तब श्रीराम पधारे तो उनकी स्थिति उस बछड़े की-सी उत्साहपूर्ण हो गयी, जिसके सामने उसकी माता गाय, जो उसको जलने वाले जंगल में अकेले छोड़कर चली गयी थी, आ गयी हो । १२२

करक्करुड्	गडुन्दीळि	लरक्कर्	काय्दलिल्
पौरुक्किड	मिन्मैयिर्	पुळुङ्गिच्	चोरुनर्
अरक्करैन्	गडलिडै	याळ्हिन्	ऱारौरु
मरक्कलम्	पैरुन्त	मरुक्क	नोक्कित्तार् 123

करक्क अरुम्—लुक-छिपकर नहीं पर खुले रूप से; कटुम् तौळिल्—नृशंसकारी; अरक्कर्—राक्षस; काय्दलिल्—वैर करके सताते रहे, इसलिए; पौरुक्कु इटम् इन्मैयिन्—वार करने का मौका न रहने के कारण; पुळुङ्कि चोरुनर्—तप्त होकर वेदना उठानेवाले; अरक्कर् अन् कटल् इटै—राक्षस रूपी सागर में; आळ्हिन्ऱार्—गिरकर डूबनेवाले; और मरक्कलम् पैरुन्त—एक नाव मिल गई हो, जैसे; मरुक्कम् नोङ्कित्तार्—संकट से मुक्त हुए । १२३

उनकी स्थिति सागर-मध्य डूबनेवाले को नाव मिल गयी हो, ऐसी भी हो गयी । दिन-दहाड़े वे राक्षस उनको दिक कर रहे थे । इनके पास प्रतीकार का या अपनी रक्षा का कोई साधन नहीं था । इसलिए वे बहुत क्लेशित होकर राक्षस रूपी सागर में डूबते रहे । अब उनको श्रीराम रूपी नौका मिल गयी । १२३

✽ तैरिञ्जुऱ नोक्कित्तर् शैय्द शैय्दवम्, अरुञ्जिऱप् पुदवनल् लऱिवु कैदर
विरिञ्जुऱप् पऱ्ऱिय पिऱिवि वैन्युयर्प्, पैरुञ्जिऱै वीडुपैर् इन्नैय पऱ्ऱियार् 124

चैय्त् चैय् तवम्—तब तक किया हुआ श्रेष्ठ तप; अरुम् चिऱप्पु उतव—उत्तम फल देने लगा तो; नल् अऱिवु कै तर—परमज्ञान के फलस्वरूप; तैरिञ्चु—श्रीराम का परत्व पहचानकर; उऱ नोक्कित्तर्—खूब दर्शन करके; विरिञ्चु उऱ पऱ्ऱिय—

(जाल के समान) फैलकर उन्हें जो पकड़े रहा; वैम् पिउवि तुयर्-भयंकर भवसंकट रूपी; पैहम् चिद्रै-बड़ी कारा से; वोट्टु पेरुत्तैय-मोक्ष पा गये हों, ऐसी; पेरुत्तियार्-दशा वाले हो गये । १२४

उन ऋषियों ने बहुत तप किया था । उसका फल अब उनकी सहायता करने आया । उनका ज्ञान उनका सहायक हुआ । वे पहचान गये कि श्रीराम परब्रह्मा ही है । उन्होंने श्रीरामभद्र के खूब दर्शन कर लिये । अब उन्हें यही विश्वास हो गया कि जाल के समान फैलकर जिस भयंकर भवसंकट ने उन्हें ग्रस लिया था, उस बड़ी कारा से उनको मुक्ति मिल गयी । १२४

वेण्डित्त	वेण्डित्तर्क्	कळिक्कु	मैयत्तवम्
पूण्डुळ	रायिनुम्	पौरैयि	ताडुलाल्
मूण्डेळु	वैहुळियै	मुदलि	नीक्किनार्
आण्डुरै	यरक्करा	ललैप्पुण्	डाररो 125

वेण्डित्तवर्क्कु-प्रार्थियों को; वेण्डित्त अळिक्कुम्-प्रार्थित वस्तु दिलानेवाले; मैय् तवम् पूण्डुळर्-यथार्थ तप के साधक थे; आयित्तुम्-तो भी; पौरैयिन् आडुलाल्-क्षमा के बल से; मूण्डु अँळुम् वैकुळियै-अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को; मुतलित्तु नीक्किन्नार्-जड़ से जिन्होंने काट दिया था, वे; आण्डु उरैन्नु- (वन में) वहाँ रहकर; अरक्कराल्-राक्षसों द्वारा; ललैप्पु उण्डार्-कष्ट में पड़े रहे । १२५

उनकी तपस्या भी अमोघ थी । इच्छित वस्तु दिला सकनेवाली ही थी । तो भी क्षमा के बल से उन्होंने अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को जड़ से काटकर दूर कर दिया था । इसीलिए वे वहाँ, उस वन में रहकर राक्षसों के हाथ त्रास सहते रहे । १२५

✽ अँळुन्दन	रैय्दिन	रिरुण्ड	मेहत्तिन्
कौळुन्दन	निन्ऱवक्	कुरिशिल्	वीरत्तैप्
पौळिन्देळु	कादलिर्	पौरुन्दि	तारवन्
तौळुन्दौरुन्	दौळुन्दौरु	माशि	शौल्लुवार् 126

अँळुन्तत्तर्-(वे) उठे और; अँप्पित्तर्-श्रीराम के पास आये; इरुण्ट मेकत्तिन्-काले मेघ की; कौळुन्नु अँन-कौपल के समान; निन्ऱ-अपने सामने शोभायमान (खड़े) रहे; अ कुरिचिल् वीरत्तै-उन वीर राजकुमार के; पौळिन्नु अँळु कातलिल्-आप्लावित कर उमड़नेवाले प्रेम के साथ; पौरुन्तिन्नार्-समीप आये; अवन् तौळुम् तौळुम् तौळुम्-ज्यों-ज्यों वे नमस्कार करते, त्यों-त्यों; आचि चौल्लुवार्-(ऋषियों ने) आशीर्वाचन कहे । १२६

वे उठे और श्रीराम के पास, जो काले मेघ की, कौपल के समान सुन्दर थे, आये । उनके मन में श्रीराम को आप्लावित करते हुए उमड़ने

वाला प्रेम उठा था। श्रीराम ने उनको अलग-अलग एक-एक करके नमस्कार किया। तो उन्होंने भी हर बार उनको आशीर्वाद किया। १२६

❖ इत्थिदोर्	शालैकोण्	डेहि	यिव्वयिन्
नत्तियुरै	यैन्ऱवऱ्	कमैय	नल्हित्ताम्
तत्तिथिडञ्	जार्न्दनर्	तड्गि	मऱ्ऱैनाळ्
अनैवरु	मैय्दित्त	रल्लल्	शौल्लुवान् 127

अतैवरुम्-सभी (ऋषि); इत्थि ओर् चालै कौण्डु एक-सुखद एक आश्रम में ले जाकर; इ वयिन्-यहाँ; नत्ति उरै अन्ऱु-खूब विश्राम करें, ऐसा कहकर; अवऱ्कु अमैय नल्कि-उनको आवश्यक वस्तुएँ देकर; ताम् तत्ति इटम् चार्न्तत्तर्-स्वयं अलग-अलग स्थानों में जाकर; तड्कि-ठहरे रहने के बाद; अल्लल् चौल्लुवान्-अपना दुखड़ा कहने; मैय्दित्तर्-(श्रीराम के पास) आ पहुँचे। १२७

फिर वे श्रीराम आदि को एक सुखद पर्णशाला में ले गये। 'यहाँ ठहरकर विश्राम करें'—कहकर उन्होंने दिव्य अतिथियों को वहाँ ठहराया। फिर आवश्यक सामग्रियाँ देकर वे अपने-अपने अलग-अलग स्थानों में चले गये। रात बिताकर वे सवेरे अपना दुखड़ा श्रीराम से बताने के लिए उनके पास पहुँचे। १२७

❖ अय्दिय मुत्तिवरै यिऱैज्जि येत्तुवन्, दैयन्तु मिरुन्दन् नऱळैन् नैन्ऱलुम्
वैयहड् गावलन् मैन्द वन्ददोर्, वैय्यवैड् गौडुन्दौळिल् विळैवु केळैना 128

ऐयन्तुम्-प्रभु ने भी; अय्दिय मुत्तिवरै-आगत मुनियों का; इऱैज्जि-नमस्कार करके; एत्तु उवन्तु-उनकी स्तुति करते हुए मुदित हो; इरुन्तत्तन्-रहकर; अऱळ् अन्-कृपा की आज्ञा क्या है; अन्ऱलुम्-पूछने पर; वैयक्म् कावलन् मैन्त-लोकपाल के पुत्र; वन्तु-हम पर आये; ओर् वैय्य वैम् कौडुम् तौळिल्-बहुत ही भयंकर नृशंस्कार्य की; विळैवु-अधिकता; केळ-सुनिए; अत्ता-कहकर। १२८

श्रीराम ने आगत मुनियों को नमस्कार किया; स्तुति की और मोद के साथ रहकर पूछा कि आप कौन सी आज्ञा सुनाने की कृपा करेंगे? ऋषियों ने उत्तर में कहा कि लोकपालक पुत्र! हमारे ऊपर जो बीत रहा है, उस भयंकर कष्ट की अधिकता सुनिए। १२८

❖ इरक्कर्मन्	ऱौरुपौरु	ळिलाद	नैज्जित्तर्
अरक्कर्ऱन्	ऱुळर्शिल	रऱत्ति	नीड्गित्तार्
नैरक्कवुम्	याम्बडर्	नैऱिय	लानैऱि
तुरक्कवु	मरुन्दवत्	तुरैयुम्	नीड्गित्तोम् 129

इरक्कम् अन्ऱु-कृष्णा नाम का; और पौरु-सर्वश्रेष्ठ गुण; इलात-से हीन; नैज्जित्तर्-मन वाले; अऱत्तित् नीड्गित्तार्-धर्म-मार्ग से दूर; अरक्कर्-राक्षस; अन्ऱु उळर् चिलर्-कहे जानेवाले हैं कुछ लोग; नैरक्कवुम्-(उनके) हमें सताने से;

याम्-हम; पटर् नैरि-अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नैरि-विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्-चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुरैयुम् नीड्किनेम्-उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे हैं । १२६

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं । इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं । १२९

वल्लियम्	बलतिरि	वन्नत्तु	मान्न
अल्लियुम्	बहलुनौन्	दिरङ्गि	याड्डलैम्
शौल्लिय	वन्नैरित्	तुरैयि	नीड्गिनेम्
विल्लियन्	मौयम्बिनाय्	वीडु	काण्डुमो 130

विल् इयल् मौय्म्पिताय्-धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल-भयंकर अनेक बाघ; तिरि वन्नत्तु-जहाँ घूमते रहते हैं, उस वन में; मान्न अन्न-भृगों के समान; अल्लियुम् पकलुम्-रात और दिन; नौन्तु-कृश होकर; इरङ्कि-दुखी होकर; आड्डलैम्-अशक्त होकर; शौल्लिय-शास्त्रोक्त; अन्न नैरि-धर्म-मार्ग के; तुरैयिन्-कर्मों से; नीड्किनेम्-हट गये; वीडु काण्डुमो-इससे विमोचन मिलेगा क्या । १३०

धनुर्द्धर वीर ! खूनी बाघों के संचार के वन के भृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं । हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है । कष्ट सह नहीं पाते । शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये हैं । क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे ? । १३०

❖ मादवत् तौळुहले मडैहळ् यावैयुम्, ओदल्लै मोडुवार्क् कुदव लाड्डलैम्
सूदैरि वळर्क्कल्लै मुडैयि नीड्गिनेम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ओळुक्कल्लैम्-महत्त्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मडैहळ् यावैयुम् ओतल्लैम्-सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु-अध्ययन करनेवालों को; उतवल्लैम्-सहायता दे नहीं पाते; मूतु अरि वळर्क्कल्लैम्-सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुडैयिन् नीड्किनेम्-अपने कर्मों से हटे रहते हैं; आतलिन्-इसलिए; अन्तणर् एयुम्-ब्राह्मण ही; आकिलेम्-बने नहीं । १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते । वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते । होमादि अग्निसंधान नहीं करते । इस तरह हम अपने योग्य कर्मों से हटे रह गये हैं । इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये । १३१

❖ इन्दिर	नैनिलव	नरक्क	रेवित्त
शिन्दैयिर्	चैन्तियिर्	कौळुळु	जैय्हायान्
अन्दैमर्	रियारुळ	रिडुक्क	णीक्कुवार्
वन्दै	यावैयुद	तवत्तिन्	माद्वियाल् 132

अँनूतै-हमारे तात; इन्तिरन् अँतिल्-इन्द्र हैं तो; अवन्-वे; अरक्कर् एवित्त-राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्-मन में; चँन्तिथिल्-सिर पर; कौळ्ळुम् चैय्कैयान्-धारण करके बजा लानेवाले है; इट्टक्कण् नीक्कुवार्-हमारा कण्ठ दूर करनेवाले; मरुडु यार् उळर्-और कौन हैं; याम् चैयत् तवत्तिन् माट्चियाल्-हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै-आप पधारे । १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है । क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं । अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे । १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पौरुळुडै मन्तवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्निताय्, अरुळुडै वीरनिन् नबयम् यामेन्डार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्-सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय-लोक-पालन जिन्होंने किया; पौरुळ् उटै मन्तवन्-प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व-पुत्र; अरुळ् उटै वीर-करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला-अकाट्य; इरुळ् उटै-अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्-जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्निताय्-आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्-आपकी शरण हैं हम; अँन्डार्-कहा (ऋषियों ने) । १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है । आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं । हम आपकी शरण हैं । —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले । १३३

❀ पुहल्लु	हुन्दिलरेडु	पुत्तत्तण्	डत्तिन्
अहल्व	रेनुमैन्	तम्बोडुम्	वीळ्वराल्
तहवि	रुन्बन्	दविरुदिर्	नीरैत्ताप्
पहल	वत्तुगुल	मैन्दन्	पणिक्किन्डार् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्-दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुक्कल् पुकुन्तिलरेल्-(वे राक्षस क्षमा मांगते हुए) मेरी शरण नहीं आयेंगे तो; पुत्तत्तु अण्दत्तु अकल्वरेत्तुम्-बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; अँन् अम्पौडुम् वीळ्वर् आल्-मेरे वाणों के साथ गिरेगे; नीर्-आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्-अनावश्यक दुख; तविरुदिर्-छोड़ दीजिए; अँता-कहकर; पणिक्किन्डार्-विश्वास दिलाया । १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— “वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्याण्ड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूंगा । मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे । आप अनावश्यक दुख छोड़ दें ।” ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे । १३४

याम्-हम; पटर् नैरि-अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नैरि-विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्-चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुरैयुम् नीड्किन्नेम्-उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे हैं । १२६

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं । इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं । १२९

वल्लियम्	बलतिरि	वनत्तु	मान्न
अल्लियुम्	बहलुनौन्	दिरङ्गि	याड्डल्लेम्
शौल्लिय	वउन्नैरित्	तुरैयि	नीड्किन्नेम्
विल्लियन्	मौय्म्बिनाय्	वीडु	काण्डुमो 130

विल् इयल् मौय्म्पिनाय्-धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल-भयंकर अनेक बाघ; तिरि वत्तत्तु-जहाँ घूमते रहते हैं, उस वन में; मान् अन्न-मृगों के समान; अल्लियुम् पकलुम्-रात और दिन; नौन्तु-कृश होकर; इरङ्कि-डुखी होकर; आड्डल्लेम्-अशक्त होकर; शौल्लिय-शास्त्रोक्त; अउ नैरि-धर्म-मार्ग के; तुरैयिन्-कर्मों से; नीड्किन्नेम्-हट गये; वीडु काण्डुमो-इससे विमोचन मिलेगा क्या । १३०

धनुर्द्धर वीर ! खूनी बाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं । हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है । कष्ट सह नहीं पाते । शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये हैं । क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे ? । १३०

❀ मादवत् तौळुहले मडैहळ् यावैयुम्, ओदल्ले मोडुवार्क् कुदव लाड्डल्लेम्
मूदैरि वळर्क्कल्ले मुडैयि नीड्किन्नेम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ओळुक्कल्लेम्-महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मडैहळ् यावैयुम् ओतल्लेम्-सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु-अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आड्डल्लेम्-सहायता दे नहीं पाते; मूतु अरि वळर्क्किल्लेम्-सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुडैयिन् नीड्किन्नेम्-अपने कर्मों से हटे रहते हैं; आतलिन्-इसलिए; अन्तणर् एयुम्-ब्राह्मण ही; आकिलेम्-बने नहीं । १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते । वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते । होमादि अग्निसंधान नहीं करते । इस तरह हम अपने योग्य कर्मों से हटे रह गये हैं । इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये । १३१

❀ इन्दिर	नैनिलव	नरक्क	रेवित्त
शिन्दैयिर्	चैन्नियिर्	कोळ्ळुञ्ज	जैयैयान्
अन्दैमर्	रियारुळ	रिडुक्क	णीक्कुवार्
वन्दनै	याञ्जैय्द	तवत्तिन्	मादचियाल् 132

अँनूतै-हमारे तात; इन्तिरन् अँतिल्-इन्द्र हैं तो; अवन्-वे; अरक्कर् एवित्त-राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्-मन में; चँन्तियिल्-सिर पर; कौळ्ळुम् चैय्कैयान्-धारण करके बजा लानेवाले हैं; इटुक्कण् नीक्कुवार्-हमारा कण्ठ दूर करनेवाले; मड्डु यार् उळर्-और कौन हैं; याम् चैय् तवत्तिन् माट्चियाल्-हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै-आप पधारे । १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है । क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं । अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे । १३२

❖ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पौरुळुडै मन्तवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्ऱित्ताय्, अरुळुडै वीरनिन् तवयम् यामेन्ऱार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्-सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय-लोक-पालन जिन्होंने किया; पौरुळ् उटै मन्तवन्-प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व-पुत्र; अरुळ् उटै वीर-करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला-अकाट्य; इरुळ् उटै-अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्-जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्ऱित्ताय्-आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्-आपकी शरण हैं हम; अँन्ऱार्-कहा (ऋषियों ने) । १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है । आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं । हम आपकी शरण हैं । —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले । १३३

❖ पुहल्लु	हुन्दिलरेऽ	पुऱत्तण्	डत्तिन्
अहल्व	रेनुमैन्	तम्बोडुम्	वीळ्वराल्
तहवि	रुन्बन्	दविरुदिर्	नीरैत्ताप्
पहल	वन्गुल	मैन्दन्	पणिक्किन्ऱान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्-दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुक्कल् पुक्कुन्तिलरेल्-(वे राक्षस क्षमा मांगते हुए) मेरी शरण नहीं आयेंगे तो; पुऱत्तु अण्डत्तु अकल्वरेतुम्-बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; अँन् अम्पौडुम् वीळ्वर् आल्-मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्-आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्-अनावश्यक दुख; तविरुतिर्-छोड़ दीजिए; अँता-कहकर; पणिक्किन्ऱान्-विश्वास दिलाया । १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— “वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्याण्ड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूंगा । मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे । आप अनावश्यक दुख छोड़ दें ।” ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे । १३४

ॐ वेन्दन् वीयवुम् याय्तुयर् मेववुम्, एन्द लैम्बि वरुन्दवु मँन्तहर
मान्दर् वन्ऱुयर् कूरवुम् यान्ऱवन्नम्, पोन्द दँन्नुडैप् पुण्णियत् तालैन्ऱान् 135

वेन्तन् वीयवुम्—चक्रवर्ती दिवंगत हुए; याय् तुयर् मेववुम्—और मेरी माता दुखग्रस्त हुई; एन्तल् अँम्पि—महिमायुक्त मेरे लघु भ्राता भरत; वरुन्तवुम्—संकटग्रस्त है; अँन् नकर् मान्तर—मेरे नगर के लोग; वन् तुयर् कूरवुम्—कठोर वेदना का अनुभव करते हैं; यान् वन्नम् पोन्ततु—(यह स्थिति पैदा करते हुए) मेरा वन में आगमन; अँन्तुडै पुण्णियत्ताल्—मेरे सुकृत (पुण्य) से ही; अँन्ऱान्—कहा । १३५

मुझे वन में आना पड़ा जिसके कारण मेरे पिता चक्रवर्ती दिवंगत हो गये । मेरी माता कौसल्यादेवी दुखग्रस्त हो गयीं । महिमावान मेरा लघुभ्राता भरत शोकपीड़ित हो गया । मेरे नगर के वासी दुख में पड़ गये । तो भी मैं समझता हूँ कि मेरा वन में आगमन मेरे सुकृत का ही फल है । १३५

ॐ अरुन्द वानैऱि यन्दणर् तन्मैयै, मरुन्द पुल्लर् वलितौलै येनैन्लि
इरुन्दु पोहितु नन्ऱिडु वल्लडु, पिउन्दि यान्ऱैरुम् वेऱैन्वदि यावदो 136

अरुम् तवा नैऱि—धर्म से न हटनेवाले आचरण में लीन; अन्तणर् तन्मैयै—ब्राह्मणों के महत्व को; मरुन्त—भूलकर (कष्ट देनेवाले); पुल्लर्—नीच राक्षसों का; वलि तौलैयेन्—बल नहीं मिटाऊँगा; अँतिल्—तो; इरुन्तु पोकितुम्—मर जाना भी; नन्ऱितु—अच्छा; अल्लतु—नहीं तो; पिउन्तु यान् पेरुम् पेरु—जन्म लेकर पाने का भाग्य; यावतो—और क्या होगा । १३६

वे नीच राक्षस आपकी महिमा और आपका स्वभाव नहीं जानते और आपको बहुत कष्ट दे रहे हैं । उनका बल न मिटाऊँ तो मर जाना भी भला है । नहीं तो मैंने जन्म लेकर क्या पाया ? और कौन सा लाभ है जो मैं पाऊँ ? । १३६

निवन्द वेदियर् नीयिरुन् दीयवर्, कवन्द वन्दक् कळिन्नड्ड् गण्डिड
अमैन्द विल्लु मरुङ्गणैत् तूणियुम्, शुमन्द तोळुम् पौऱैत्तुयर् तीरुमाल् 137

निवन्त—गुणोन्नत; वेतियर् नीयिरुम्—वेदज्ञ विप्र आप; तीयवर्—खलों के; कपन्त पन्तम्—कबन्ध-वृन्द का; कळि नटम्—कण्ठिड—मुदित नाच देखें तब; अमैन्त विल्लुम्—मेरे पास बेकार रहा धनु; अरुम् कणै तूणियुम्—अपूर्व शरों का तूणीर; चुमन्त—इनको ढोनेवाली; तोळुम्—मेरी भुजाएँ; पौऱै तुयर् तीरुम्—भार उठाने का दुख दूर होगा । १३७

आप गुणोन्नत ब्राह्मण उन खलों के कबन्ध-वृन्दों का मुदित नाच देख कर आनन्द मनावे, तभी भारस्वरूप बेकार यह धनु और उत्तम शरों का तूणीर—इनका बोझ व्यर्थ जो ढोती रही उन भुजाओं के भारवहन का दुख दूर होगा । १३७

आवुक् कायिनु मन्दणर्क् कायिनुम्, यावर्क् केनु सँळियवर्क् कायिनुम्
शावप् पेंडुव रेतहै वानुइ, देवर्क् कुन्दौळुन् देवर्ह लाहुवार् 138

आवुक्कु आयिनुम्-गायों के क्षणार्थ हो; अन्तणर्क्कु आयिनुम्-या ब्राह्मणों के लिए हो; अँळियवर् यावर्क्केतुम् आयिनुम्-निर्बल किसी के लिए भी हो; चाव पेंडुवरे-जिनको मरने का भाग्य होता है, वे ही; तर्कै वान् उइ-महिमायुक्त स्वर्ग में वास करनेवाले; तेवर्क्कुम्-देवों के लिए भी; तौळुम्-वन्द्य; तेवर्कळ आकुवार्-देव बनेंगे । १३८

वे ही मनुष्य देववन्द्य देव बनते हैं, जो गाय, ब्राह्मण या किसी और निर्बल की रक्षा में अपने प्राण खोते हैं । १३८

शूर रुत्त वनुञ्जुडर् नेमियुम्, ऊर रुत्त वौरुवनु मोम्बिनुम्
आर इत्तिनीं डन्डिनिन् शारवर्, वेर रूप्पेन् वौरुवनुमि तीरेन्शान् 139

चूर् अरुत्तदनुम्-शूरपद्म के संहारक (कार्तिकेय) और; चुटर् नेमियुम्-ज्वलन्त चक्रधारी (विष्णुदेव); ऊर् अरुत्त ओरुवनुम्-और त्रिपुरांतक (शिवजी); ओम्पितुम्-उनकी रक्षा करने आएँ (तो भी); आर्-जो; अरुत्तिनीं डन्डि-धर्म से अलग होकर; निन्शार्-(पाप-कर्म में प्रवृत्त) रहते हैं; अवर-उनको; वेर् अरूप्पेन्-जड़ से काट (मिट) दूंगा; नीर् वौरुवनुमिन्-आप मत डरिए; अँन्शान्-कहा । १३९

शूरपद्म के संहारक कार्तिकेय, दीप्तचक्रधारी विष्णु, त्रिपुरान्तक शिव —ये सब सहायतार्थ क्यों न आएँ तो भी अधर्मी लोगों को निर्मूल करके ही छोड़ूंगा । आप डरें नहीं । श्रीराम ने यह सुदृढ़ आश्वासन दिया । १३९

उरैत्त वाशहड् गेट्टुवन् दोङ्गिड, इरैत्त कादल रेहिय विन्तलर्
तिरित्त कोलितर् तेमइ पाडित्तर्, निरुत्त माडित्तर् निन्ऱु विळम्बुवार् 140

उरैत्त वाचकम् केट्टु-श्रीराम का कहा हुआ कथन सुनकर; उवनु-सन्तुष्ट होकर; ओङ्किट इरैत्त कातलर्-उत्कृष्ट और मुखर प्रेम वाले होकर; एकिय इन्तलर्-मुक्तदुःख हो; तिरित्त कोलितर्-दण्ड को घुमाते हुए; ते मइ पाडित्तर्-दिव्य वेदगान किया; निरुत्तम् आटित्तर्-नृत्य किया और; निन्ऱु विळम्बुवार्-फिर खड़े होकर (वे) बोले । १४०

ये आश्वासन के वचन सुनकर मुनिगण तृप्त हुए । उनका प्रेम उमड़ा और मुखर हुआ । चिन्ताविमुक्त होकर उन्होंने अपने दण्डों को घुमाया, वेदगान और नृत्य किया । बाद वे बोले । १४०

तोन्ऱ नीमुत्ति यिऱ्पुव नत्तौहै, मून्ऱु पोल्वन्त मुप्पडु कोडिवन्
देन्ऱु पोडु मैदिरल वेंन्ऱुलिन्, शान्ऱु वेदम् तवप्पेरु जानमे 141

तोन्ऱु-नायक; नी मुत्तियिल्-आप कुपित हों तो; मून्ऱु पुवन्त तौकै पोल्वन्त-तीन लोकों के समूह के समान; मुप्पडु कोटि वन्तु एन्ऱु पोतुम्-तीस करोड़ आकर

लड़े तो भी; अँतिर् इलै अँन्ऱलिन्-सामना नहीं कर सकेंगे, इसके; चान्ऱ-साक्षी; वेतम् तव पँरु जातमे-वेदों का ज्ञान और उससे प्राप्त ज्ञान ही हैं; अरो-ऐसा है न । १४१

प्रभु ! आप कुपित हो जायें तो यह एक लोकत्रय क्या तीस करोड़ लोकत्रय भी आपका सामना नहीं कर सकते । इसके साक्षी वेद हैं और उनके ज्ञान से प्राप्त ज्ञान हैं । १४१

अन्ऱन दादलि नेयिन वाण्डेलाम्, इन्ऱल् कात्तिड् गिनिदुऱै वायँत्तच्
चौन्ऱ मादवर् पादन् दौळुदुयर्, मन्ऱनर् मन्ऱवन् मैन्दनुम् वैहितान् 142

अन्ऱत्तु आतलिन्-ऐसा है, इसलिए; एयिन आण्डु अँलाम्-वनवास के लिए नियत सारे दिन; इन्ऱल् कात्तु-हमारी संकट से रक्षा करने; इङ्कु इत्तिउ उरँवाय्-यहाँ सुख से रहें; अँत-ऐसा; चौन्ऱ-जिन्होंने कहा, उन; मातवर् पातम् तौळु-महान तपस्वियों के चरणों पर नमस्कार करके; उयर् मन्ऱनर् मन्ऱन्-सर्वश्रेष्ठ राजाधिराज (चक्रवर्ती) के; मैन्ऱनुम्-पुत्र भी; वैकितान्-वहाँ ठहरे । १४२

बात ऐसी है । अतः आप वनवास के लिए निर्धारित अवधि भर यहीं सुख से वास करें और हमारी संकट से रक्षा करें । ऋषियों की यह प्रार्थना सुनकर सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र उनके चरणों पर विनत हुए और वहीं वास करने लगे । १४२

ॐ ऐन्ऱु मैन्ऱु ममैदियि त्ताण्डवण्, मैन्दर् तीदिलर् वैहितर् मादवर्
शिन्दै यँण्णि यहत्तियर् चेरुहँत, इन्ऱु नन्ऱुद इन्ऱौडु मेहितार् 143

मैन्ऱर्-राजकुमार; अचण्-उस तपोवन में; ऐन्ऱुम् ऐन्ऱुम् आण्डु-पाँच और पाँच (दस) साल; तीतु इलर्-बिना किसी कठिनाई के; अमैतियिन्-शान्ति के साथ; वैकितर्-ठहरे; मातवर्-महान तपस्वियों के; चिन्ऱै अँण्णि-मन में सोचकर; अकत्तियिन् चेरु-अगस्त्य से जा मिले; अँत-कहने पर; इन्ऱु नल् नुतल् तन्ऱौडुम्-इन्दु-सम भाल वाली सीताजी-सह; एकितार्-चले । १४३

वे राजकुमार पाँच और पाँच (दस) साल वहीं ठहरे । कोई असुविधा या कष्ट नहीं था । वे शान्ति के साथ वहाँ रहे । पश्चात् उन ऋषियों ने मन में सोचकर श्रीराम को सुझाया कि आप अगस्त्यजी से जाकर मिलें । तब श्रीराम और लक्ष्मण इन्दुसम सुन्दर भाल वाली सीताजी के साथ चले । १४३

विडर हङ्गळुम् वेय्शैडि कानमुम्, पडरुज् जिन्ऱैडि पयप्पय नीड्गितार्
शुडरु मेनिच् चुदीक्कण नैन्ऱुमव्, इडरि लान्ऱुऱै शोलैशैन्ऱै रैय्दिनार् 144

विडर् अकङ्कळुम्-पर्वत-घाटियाँ; वेय् चैडि कानमुम्-बाँसतरु-संकुल वन; पडरुम्-इनमें जानेवाले; चिल् नैडि-सँकरे मार्ग; पय पय नीड्गितार्-(तीनों ने)

धीरे-धीरे तय किये; चूटरुम् मेति-तेजोमय शरीर वाले; चुतीक्कणन् अंतुम्-सुतीक्ष्ण नाम के; अ इटर् इलान् उर्रै-उत्तम दुख-निर्लिप्त ऋषि के वास के; चोलै चैन्ऱु-आश्रम जाकर; अय्यत्तार्-पहुँचे । १४४

पर्वत प्रदेशों, बाँस के वनों आदि से होकर जानेवाले सँकरे मार्ग धीरे-धीरे तय करके वे तेजोमय शरीरी सुतीक्ष्ण नाम के ऋषि के आश्रम में पधारे । १४४

अरुक्क तन्न मुनिवन्नै यव्वळि, शैरुक्किल् शिन्दैयर् शेवडि ताळ्दलुम्
इरुक्क वीण्डेन् रिनियत्त कूऱिन्नान्, मरुक्कौळ् शोलैयिन् मैन्दरुम् वैहिनार् 145

चैरुक्कु इल् चिन्तैयर्-घमण्डरहित मन वालों (श्रीराम और लक्ष्मण) के; अ वळि-वहाँ; अरुक्कन् अन्न मुनिवन्नै-सूर्योपम मुनि के; चे अटि-मनोहर चरणों पर; ताळ्दलुम्-नमन करने पर; ईण्डु इरुक्क अँन्ऱु-यहाँ रहें, ऐसा; इतियत्त कूऱिन्नान्-मधुर वचन कहे; मैन्तरुम्-राजकुमार भी; मरु कौळ् चोलैयिल्-सुवासपूर्ण तपोवन में; वैक्किन्नार्-ठहरे । १४५

अहंकारशून्य श्रीराम और लक्ष्मण सूर्य-सम तेजोवान उन ऋषि के उत्तम चरणों पर विनत हुए । तब ऋषि ने उन्हें आसन देकर विराजमान कराया । मधुर स्वागत-वचन कहे । सत्कारप्राप्त श्रीराम और लक्ष्मण भी अच्छे बास से युक्त उस आश्रम में ठहरे । १४५

वैहुम् वैहलिन् मादवन् मैन्दरुवाल्, शैयहै यावैयुञ् जैयदिवन् शैल्वनी
अय्द यान्शैय्द दैत्तव मँन्ऱत्तन्, ऐय नुम्मवर् कन्वन् कूऱिन्नान् 146

मातवन्-महान तपस्वी (सुतीक्ष्ण) के; वैकुम् वैकलिन्-वास के आश्रम में; मैन्तर् पाल्-राजकुमारों को; चैय्कै यावैयुम् चैय्तु-सत्कार सब करके; चैल्व-धनवन्त; नी इवण् अय्त-आप इधर पधारे, इसके लिए; यान् चैय्तु अँ तवम्-मेरा किया कौन सा तप था; अँन्ऱत्तन्-बोले; ऐयत्तुम्-प्रभु ने भी; अवर्कु-उनसे; अन्नपत्त-स्नेहपूर्ण; कूऱिन्नान्-वाते कहीं । १४६

ऋषि ने अपने आश्रम में आगत दिव्य अतिथियों का खूब सत्कार किया । फिर कहा कि धनवन्त ! आप इधर पधारे हैं, तो मैंने कितनी विशिष्ट तपस्या की होगी और मेरी तपस्या का कितना ही शुभ फल मिला है ! श्रीराम इसके उत्तर में मधुर वचन बोले । १४६

शौन्न नान्मुहन् इन्वळित् तोन्ऱित्, मुन्नै योरुण् मुयडव मुऱ्ऱित्
उन्निल् यारुळ् रुन्नरु लैय्दिय, अँन्निन् यारुळ् रिर्पिऱन् दारँन्ऱान् 147

चौन्न-प्रकीर्तित; नान्मुक्कन् तन् वळि तोन्ऱित्-चतुर्मुख के वंश में उत्पन्न; मुन्नैयोरुळ्-प्राचीन मुनियों में; मुयल् तवम् मुऱ्ऱित्-कठिन तपस्या करके सुसम्पन्न करनेवाले; उन्नित् यार् उळर्-आपके समान कौन है; उन् अरुळ् अँय्तिय-आपकी कृपा के पात्र; इल् पिऱन्तार्-गृहस्थों में; अँन्निल् यार् उळर्-मेरे समान कौन हैं; अँन्ऱान्-कहा । १४७

प्रकीर्तित ब्रह्मा के वंश में उदित अग्रगण्य महर्षियों में कौन हैं, जिन्होंने आपके समान तप सम्पन्न किया है ? वैसे ही गृहस्थों में कौन ऐसा है, जिसे आपकी कृपा मिली है, जैसे मुझे ? । १४७

उवमै नोङ्गिय तोन्ऱु लुरैक्कैदिर्, नवमै तोन्ऱिय नऱ्ऱवन् शौल्लुवान्
अवमि लाविरुन् दाहियेन् तालमै, तवमै लाङ्गौळत् तक्कनै यालेन्ऱान् 148

उवमै नोङ्किय-अनुपमेय; तोन्ऱल् उरैक्कु-प्रभु के कथन के; अँतिर्-उत्तर में; नवमै तोन्ऱिय नल् तवन्-नये प्रकार की तपस्या के श्रेष्ठ तपस्वी; शौल्लुवान्-बोले; अवम् इला विरुन्तु आकि-अमोघ अतिथि बने आप; अँन्नाल् अमै-मेरे अब तक सुसम्पन्न; तवम् अँलाम्-तप सब; कौळ तक्कनै-ग्रहण करने अहं हैं आप; अँन्ऱान्-कहा । १४८

श्रीराम थे उपमाहीन । ऋषि थे अपूर्व और नयी तपस्या के कर्ता । ऋषि ने श्रीराम से कहा कि आप अमोघ अतिथि हैं । आप मेरी की हुई तपस्या का सारा फल ग्रहण कर लीजिए । आप इसके अहं हैं । १४८

मऱैव लानैदिर् वळ्ळुडु गूळ्वान्, इऱैव निन्ऱुळ्ळैत्तवत् तिऱ्क्कळि
तऱैव दीण्डुण् डहत्तियर् काण्वदोर्, कुऱैहि डन्द दिनियेन्क् कूऱितान् 149

वळ्ळुडुम्-उदार प्रभु; मऱैवलान् अँतिर्-वेदज्ञ उनके सामने; कूळ्वान्-बोले; इऱैव-स्वामी; निन् अरुळ्-आपका अनुग्रह; अँ तवत्तिऱ्कु अँळितु-किस तप के लिए सुलभ (प्राप्य) है; ईण्डु-अव; अऱैवतु उण्डु-कथनीय एक विषय है; इति-अव; अकत्तियर् काण्वतु-अगस्त्य के दर्शन का; ओर् कुऱै किटन्तु-एक इच्छा अपूर्ण रहती है; अँत कूऱितान्-ऐसा कहा । १४९

वेदव्युत्पन्न मुनिवर से प्रभु ने कहा कि स्वामी ! आपकी कृपा मुझ पर हुई —वह क्या कम है ? कितनी ही बड़ी तपस्या का फल है वह उपलब्धि ! अब आपसे एक निवेदन करना है । अगस्त्यजी के दर्शन की इच्छा अभी पूर्ण नहीं हुई । १४९

नल्ल देनिनैन् दायदु नानुमुन्, शौल्लु वान्ऱुणि हिन्ऱदु तोन्ऱनी
शौल्दि याण्डवर् चेरुदि शेर्न्दपित्, इल्लै निन्वयि नैय्दहि लादवे 150

तोन्ऱल्-प्रभु; नी नल्लते निनैन्ताय्-आपने अच्छा ही सोचा है; अतु-वही; नातुम्-मेरे द्वारा भी; मुन् शौल्लुवान्-पहले कहने का; तुणिकिन्ऱु-निश्चय किया हुआ था; आण्डु चैल्ति-वहाँ पधारें; अवन् चेरुति-उनसे मिलें; चेरन्तपित्-उनसे मिलने के बाद; निन् वयित्-आपके; अँय्त्त किल्लातवे-अप्राप्य कोई हित; इल्लै-नहीं ही होंगे । १५०

मुनि ने उत्तर में कहा कि राजकुमार ! आपने ठीक ही सोचा है । मेरा भी वह अभिप्राय था । उधर पधारिए, उनसे मिलिए । उसके वाद आपको प्राप्त न हों, ऐसे कोई मंगल रहेंगे ही नहीं ! । १५०

अन्त्रि युन्निन् वरविनै यादरित्, तिन्ऱु हाऱुनिन् रेमुऱु मालवऱु
चैन्ऱु शेऱुदि शेऱुदल् शैव्वियोय्, नन्ऱु देवर्क्कुम् यावर्क्कु नन्ऱैना 151

अन्त्रियुम्-इसके अलावा; चैव्वियोय्-पुरुषश्रेष्ठ; तिन् वरविनै-आपके आगमन की; आतरित्तु-प्रतीक्षा करके; इन्ऱु काऱुम्-आज तक; निन्ऱु-रहकर; एम् उऱुमाल्-तरसते होंगे; चैन्ऱु-जाकर; अवऱु चैरुति-उनसे मिलिए; चैन्ऱु पित्-मिलने के पश्चात; तेवर्क्कुम् नन्ऱु-देवों के लिए भी मंगल है; यावर्क्कुम् नन्ऱु-सबके लिए लाभकर है; अँता-कहकर । १५१

और भी आपके आगमन की प्रतीक्षा में वे उतावले हो रहे होंगे । इसलिए आप उनसे जाकर मिलिए । उनसे आपका मिलन देवों के लिए भी भला करनेवाला है और अन्य सभी के लिए भी । १५१

❖ वळियुङ्	गूऱि	वरम्बिल	वाशिहळ्
मौळियु	मादवन्	मौय्मलर्त्	ताडौळाप्
पिळियुन्	देत्तिऱु	पिऱुङ्गऱु	वित्तिरळ्
पौळियुङ्	जोलै	विरैवित्तिऱु	पोयितार् 152

वळियुम् कूऱि-मार्ग बताकर; वरम्पु इल-निस्सीम; आचिकळ् मौळियुम्-आशीर्वाद देनेवाले; मादवन्-महान तपस्वी के; मौय् मलर् ताळ् तोळा-घना-कमल-सम चरणों की पूजा करके; पिळियुम् तेत्तिल्-छत से निचोड़े जानेवाले शहद की धारा के समान; पिऱुङ्कु-वहाँ रहनेवाली; अरुवि तिरळ्-सरिताओं की राशि; पौळियुम्-जहाँ जल बहाती थी, उस; चोलै-आश्रम को छोड़कर; विरैवित्ति-वेग के साथ; पोयितार्-आगे चले । १५२

ऐसा कहकर उन्होंने श्रीराम को अगस्त्याश्रम जाने का मार्ग भी बताया । उन्हें पुष्कल आशीर्वाद भी किया । श्रीराम, उनके घने कमल-समान चरणों की वन्दना करके वहाँ से चल पड़े । उस आश्रम में शहद की धारा के समान स्वच्छ सरिताओं की राशि जल बहा रही थी । श्रीराम उस आश्रम से निकलकर वेग के साथ चलने लगे । १५२

❖ आण्डहैय	रव्वयि	नडैन्दमै	यऱिन्दान्
ईण्डुवहै	वैलैतुणै	येळुलह	मैय्द
माण्डवर	दन्शरण्	वणङ्गवैदिर्	वन्दान्
नीण्डतमि	ळालुहै	नेमियि	तळन्दान् 153

नेमियिन्-चक्रधारी के त्रिविक्रम अवतार के समान; उलकै-(ज्ञान) लोक को; नीण्ड तमिळाल्-बहुत प्राचीन तमिळ भाषा से; अळन्तान्-नापनेवाले (अगस्त्य); आण् तकै-पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम का; अ वयिन् अटैन्तमै-वहाँ आगमन; अऱिन्तान्-जानकर; तुणै एळु उलकम्-चौदहों भुवनों को; ईण्डु उवकै वैलै अँय्त-इधर सुखसमुद्र में मग्न करते हुए; माण्ड वरतन्-महिमावान वरद श्रीराम; चरण् वणङ्क-अपने चरण में वन्दना करें, यह सुविधा करते हुए; अँतिर् वन्तान्-श्रीराम के सामने (अपने कुटीर से निकलकर) आये । १५३

(वाल्मीकी में श्रीराम का पहले अगस्त्य के भाई सुदर्शन के आश्रम में जाने की चर्चा है। अगस्त्याश्रम जाने से पहले सीताजी ने श्रीराम को बताया कि अकारण राक्षसों को मारना पाप है—यह भी वृत्तान्त है।) अब वे अगस्त्याश्रम आ गये। अगस्त्य जिन्होंने, जैसे त्रिविक्रम ने तीनों लोकों को नापा था, तमिळ भाषा द्वारा ज्ञानलोक को मापा था यानी तमिळ में ज्ञान को समाहित किया था, जान गये कि श्रीराम अपने आश्रम में पधारे हैं। वे स्वयं उनके सामने आ गये ताकि महिमावान वरद श्रीराम चौदहों भुवनों को सन्तोष-सागर में मग्न करते हुए उनके चरणों पर विनत हों। १५३

❀ पण्डवुणर्	मूळ्हिनर्	पडार्हळैन	वातोर्
अण्डव	वैमक्करुळ्	हैत्तक्कुट्टे	यिरप्पक्
कण्डोरुहै	वारित्तुमु	हन्नुकड	लैल्लाम्
उण्डवर्हळ्	पिन्नुमिळ्ह	वैन्डुलु	मुमिळ्न्दान् 154

वातोर्-देव; पण्डु-पहले; अवुणर्-असुर लोग; मूळ्हित्तर्-समुद्र में डूबे; पडार्कळ्-नहीं मरेंगे; अँत-सोचकर; अँण तव-सम्मान्य तपोधन; अँमक्कु अरुळ्क-हम पर कृपा करें; अँन कुट्टे इरप्प-ऐसा कष्ट निवेदन करने पर; कण्डु-विषय समझकर; कटल् अँल्लाम्-सातों समुद्रों को; ओरु कै वारित्तु मुकन्तु-एक हाथ में उठा लेकर; उण्डु-घूँट लेकर; पिन्नु अवर्कळ् उमिळ्क अँन्डुलुम्-फिर उनके 'बाहर उगल दीजिए' कहने पर; उमिळ्न्तान्-बाहर थूक दिया। १५४

पहले कभी, वृत्तासुर आदि समुद्र में जाकर छिप गये। देवेन्द्र और अन्य देव समझ गए कि ये समुद्र में छिपे हैं। उनको मारना असम्भव है। इसलिए वे अगस्त्य के पास आये और प्रार्थना की कि सम्मान्य तपोधन! हम पर कृपा कीजिए। अगस्त्य ने बात समझ ली। उन्होंने सातों समुद्रों का जल अपने चुल्लू में भरकर घूँट लिया। फिर देवों के प्रार्थना करने पर ही उसे थूका और समुद्रों को जल-भरा बनाया। ऐसे महिमावान थे वे। १५४

तूयकड	नीरैमुळ्	दुण्डवै	तुरन्दान्
आयवव	नालमरु	मैय्युडैय	तन्तान्
मायविन्ने	वाळवुणत्	वादवितन्	वन्मैक्
कायमिति	दुण्डुलहि	तारिडर्	कळैन्दान् 155

तूय कटल् नीरै-पवित्र सागर-जल को; मुळ्ळुतु उण्डु-पूरा घूँटकर; अब तुरन्तान्-उसे थूकनेवाले; आयवन्तुम्-वे ऋषि भी; आल् अमरुम् मैय् उटैयन्-वट-बीज-सम छोटी आकृति वाले हैं; अन्तान्-उन्होंने; माय विन्ने-मायावी कार्य करनेवाले; वाळ् अवुणत्-तलवारधारी असुर; वातधि-वातापि नाम के; वन्मै-शक्तियुक्त; कायम् इत्तितु उण्डु-शरीर को सुखपूर्वक खाकर; उलकिन् आर् इटर्-संसार का घोर संकट; कळैन्तान्-दूर किया था। १५५

सागरजल सारा एक घूंट में पीनेवाले वे आकृति में बहुत छोटे थे और जैसे वट-बीज में उतना बड़ा वटवृक्ष अव्यक्त रहता है, उसी तरह उस आकृति के अन्दर बड़ी महिमा छिपी थी। उन्होंने मायावी, कपटकर्म वातापि का शरीर भक्षण करके उसकी मृत्यु द्वारा लोकहित किया था। कथा इस प्रकार है— इल्वल और वातापि दो दानव भाई थे। इल्वल वातापि को मेष बनाकर मारता और उसे पका देता। वह ब्राह्मणों को श्राद्ध कहकर निमन्त्रण देता और खिलाने के बाद वातापि को बुलाता। वातापि ब्राह्मण का पेट चीरकर बाहर आ जाता।^{१५३} दोनों मृतक ब्राह्मण को खा जाते। यही चाल उन्होंने अगस्त्य से भी चली। पर अगस्त्य वातापि को जीर्ण कर गये। संसार की आफ़त मिटी। १५५

ॐ योहमुख पेययिर्ह डामुलैवु डामल्, एहुर्नेडि यादैन मिदित्तडियि तेडि
मेहर्नेडु मालैतवळ् विन्दमेनुम् विण्डोय्, नाहमडु नाहमुड नाहमेन्न नित्तुडान् 156

योक्म् उडु पेर् उयिर्कळ् ताम्—उद्योगशील बड़ी संख्या के जीव; उलैवु डडामल्—बिना हानि के; एकुम् नैडि यातु—जायें, ऐसा मार्ग क्या है; अँत—(देवों के) पूछने पर; अटियिन् मितित्तु एडि—अपने चरणों को रखते हुए उसके ऊपर चढ़कर; मेक्म् नैडु मालै तवळ्—मेघ-मालाएँ जिस पर रेंगती थीं, उस; विन्तम् अँनुतुम्—विन्ध्य नाम के; विण् तोय्—गगनस्पर्शी; नाक्म् अतु—पर्वत को; नाक्म् उडु—नागलोक (पाताल) तक धँसाते हुए; नाक्मेन्न—एक गज के समान; नित्तुडान्—खड़े रहे। १५६

(विन्ध्य पर्वत सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों से वर करके ऊँचा बड़ा और ग्रहों की गति रुक गयी और जीवों का उद्यम भी बेकार होने लगा।) देवों ने अगस्त्य से प्रार्थना की कि इन उद्यमी जीवों का आना-जाना कैसे हो? तब अगस्त्य उस पर पग धरकर चढ़े और गज के समान उसके ऊपर खड़े हो गये। तब वह पर्वत धँसकर नागलोक पहुँच गया। (नाक्म् के तीन अर्थ हैं—पर्वत, पाताललोक और गज।)। १५६

ॐ मूशरवु शूडुमुद लोनुरैयिन् मूवा, माशिशव वेहैन वडाडुदिशै मेत्ताळ्
नीशमुड वात्तिर्नेडु मामलय नेरा, ईशनिह रायुलहु शीर्पेड विरुन्दान् 157

मेल् नाळ्—पहले किसी दिन; वडातु तिचै—उत्तर दिशा; नीचम् उडु—नीचे चली गई, तब; मूचु अरवु चटु मुतलोत्त—घने नागाभरण देव (शिवजी) ने; मूवा—वार्द्धक्य से अप्रभावित; माचु इल् तव—और अकलंक तपस्वी; एकु अँत—तुम (दक्षिण) जाओ, कहा, तब; वात्तिन् नैडु मा मलयम्—आकाश तक ऊँचे बड़े मलयपर्वत; नेरा—पहुँचकर; ईचन् निकराय्—शिवजी की समान स्थिति में; उलकु चीर् पेडु—भूमि को सम बनाते हुए; इरुन्तान्—बस गये। १५७

(एक बार परमेश्वर के विवाह के अवसर पर सभी जीवराशियाँ उत्तर में आ गयीं और भूमि का उत्तरी भाग नीचा हो गया। भूमि का सन्तुलन बिगड़ गया। तब) अनेक सर्पों को आभरण के रूप में धारण

करनेवाले शिवजी ने अगस्त्यजी से कहा कि हे वार्द्धक्य से अप्रभावित तेज वाले ! अकलंक तपस्वी ! आप दक्षिण में चले जाइए । अगस्त्य दक्षिण गए और गगन तक उन्नत मलय पर्वत में रह गये । भूमि समतल हो गयी और अगस्त्य शिवजी की समानता की स्थिति में मान्य हो गये । १५७

उळक्कुमरै	नालिनु	मुयर्न्दुलंह	मोडुम्
वळक्किनु	मदिक्कवैयि	नुम्मरवि	नाडि
निळर्पोळि	कणिच्चिमणि	नैर्ऱियुमिळ्	शैङ्गण्
तळ्ऱुपुरै	शुडर्क्कडवु	उन्दतमिळ्	तन्दान् 158

निळल् पोळि—प्रकाश वरसानेवाला; कणिच्चि—परशु (तप्त-आयस?); मणि नैर्ऱि—सुन्दर भाल पर; उमिळ् चैम् कण्—लाली फलानेवाली आंख; तळल् पुरै चूटर्—अग्नि-सम तेज; कटवुळ्—इनसे युक्त ईश्वर ने; तन्त—जो दिया (सिखाया) था; तमिळ्—उस तमिळ को; उळक्कु मरै नालितुम्—परिश्रम के साथ अध्वेय चारों वेदों; उलक्कु उयर्न्तु ओतुम् वळक्किनुम्—संसार के श्रेष्ठ ज्ञानियों के प्रयोग-प्रणालियों; मति कवैयितुम्—और अपनी बुद्धि से किये हुए अन्वेषण के आधार पर; मरपिन्—उचित परिपाटी के अनुसार; नाडि—खूब खोजकर; तन्तात्—व्याकरण शुद्ध बनाकर दिया था । १५८

जाज्वल्यमान परशु, सुन्दर भाल का लाल नेत्र और अग्निसम तेजोमय रूप —इनसे युक्त शिवजी ने अगस्त्यजी को तमिळ सिखायी । (पाणिनी को संस्कृत —ऐसा पुराण कहता है ।) तब अगस्त्य ने बहुत परिश्रम से अध्वेय वेद, लोकरूढ़ी और अपनी मेधा-शक्ति का प्रयोग कर उचित रीति से अन्वेषण किया और तमिळ को व्याकरण-वद्ध श्रेष्ठ भाषा बना दिया । १५८

❀ विण्णित्ति	निलत्तिनिल्	विहर्ऱुपुल	हिर्ऱुपेर्
अँण्णित्ति	लिरुक्किनि	लिरुक्कुमैत	यारुम्
उण्णिनै	करुत्तिनै	युऱुपुपैरुवै	नार्लैन्
कण्णित्ति	लैत्तक्कोडु	कळिप्पुऱु	मतत्तान् 159

विण्णित्ति—देवलोक में; निलत्तिनिल्—भूलोक में; विहर्ऱुपु उलक्किन्—इनसे जुदा अन्य लोकों में; पेर् अँण्णित्ति—बड़े गणित-शास्त्रों में; इरुक्किन्—वेदों के ऋचाओं में; इरुक्कुम् अँत—विद्यमान हैं, ऐसा; यारुम् उळ् नित्तै करुत्तिनै—सभी जिसका मन में ध्यान करते हैं, उस परमतत्त्व को; अँत् कण्णित्ति—अपनी आंखों के; उऱु पँऱुवैन्—गोचर बनते देखूंगा; अँत् कौटु—यह विचारकर; कळिप्पु उऱु मतत्तान्—हर्षितमन हुए । १५९

ऐसे अगस्त्य अब अपार हर्ष से भर गये । क्या आज मुझे ऐसा भाग्य मिल रहा है जिससे वह तत्त्व, जिसको देवलोक, भूलोक और इनसे अलग अन्य लोकों के लोग वेदों और श्रेष्ठ गणित (तर्क) शास्त्रों में ढूँढ़ते

हैं और सदा-सर्वदा स्मरण करते हैं, आज दृष्टिगोचर होगा ? इस कल्पना से ही उनके मन में आनन्द उमड़ आया । १५९

❀ इरैत्तमरै	नालिनी	डियैन्दपिऱ	यावुम्
निरैत्तनैऱि	जान्निमिर्	कल्लिनेडु	नाळिड्
टुरैत्तुमय	नारुमऱि	यादपौरु	ळोविन्
रुरैत्तदुवु	मालैन्नु	मुणर्च्चियि	नुवप्पान् 160

इरैत्त मरै—उद्गीत वेद; नालिन् ओटु—चारों के साथ; डियैन्त पिऱ यावुम्—लगे रहनेवाले अन्य सभी शास्त्र, पुराण आदि में; निरैत्त—अभ्यस्त; नैऱि जात्तम्—सन्मार्ग से प्राप्त ज्ञान की; निमिर् कल्लिल्—उत्कृष्ट कसौटी में; नैडु नाळ् इट्टु उरैत्तुम्—अनेक दिन कसकर देखने पर भी; अयत्तारुम् अरियात्—ब्रह्मदेव को भी अज्ञात; पौरुळो—वह परवस्तु क्या; इन्ऱु—आज; उरैत्तु—मेरे साथ सम्भाषण करके; उतवुम् आल्—कृपा करेगी; अँत्तुम्—इस; उणर्च्चियिन्—भावोद्वेग में; उवप्पात्त—बहुत आनन्दमग्न हुए । १६०

उद्गीत चारों वेद और अन्य शास्त्र, पुराण आदि का खूब अध्ययन, अन्वेषण करके उससे प्राप्त ज्ञान की कसौटी पर बहुत दिन कसकर देखने पर भी ब्रह्मादि देवों से भी जिस परतत्त्व को वस्तुतः समझना कठिन है, क्या वह परब्रह्म आज मेरे साथ वार्तालाप करेगा और मुझ पर कृपा करेगा ! हा ! कितना भाग्यवान हूँ ! इस भावोद्वेग में वे हर्षविह्वल हो गये । १६०

❀ उय्न्दन	रिमैप्पिल	उयिर्त्तत्तर्	तवत्तोर्
अन्दण	रत्तत्तिनैऱि	निन्ऱत्तर्ह	ळान्नार्
वैन्दिऱ	लरक्कर्विड	वेर्मुद	लरुप्पान्
वन्दतन्	मरुत्तुव	नैन्तत्तत्ति	वलिप्पान् 161

वैम् तिऱल् अरक्कर्—भयंकर और शक्तिमन्त राक्षस रूपी; विड वेर् मुतल् अरुप्पान्—विषैली जड़ को जो निर्मूल करेंगे; मरुत्तुवन्—वे वैद्य; वन्त तन्—आये; इमैप्पु इलर्—निर्निमेष (सुर); उय्न्तत्तर्—तर गये; तवत्तोर् उयिर्त्तत्तर्—तपस्वी लोग प्राण-रक्षित हो गये; अत्तत्तर् अत्तत्तिन् नैऱि—ब्राह्मण धर्म-मार्ग में; निन्ऱत्तर्कळ् आन्नार्—चलनेवाले हो गये; अँत्त—ऐसा सोचकर; तत्ति वलिप्पान्—विशेष साहसपूर्ण हो गये । १६१

भयंकर और बलवान राक्षस रूपी विष की जड़ को ही उखाड़ने के लिए वैद्य के समान श्रीराम आ गये । अब निर्निमेष आँखों वाले देवों का संकट मिट गया और वे दुःखनिवृत्त हो गए । तपस्वीजन जीवन्त हो गए । ब्राह्मण लोग धर्ममार्गगामी बने । ऐसी धारणा करके वे उत्साही और साहसी बने । १६१

एनैयुयि रामुलवै यावुमिडै वेवित्, तूनुह ररक्करु मिच्चुडु शिनत्तिन्
आन्व तलैक्कडि दवित्तुल हळिप्पान्, वात्तमळै वन्ददत्त मैन्दुरु मनत्तान् 162

एतै उयिराम्-अन्य जीव; उलवै यावुम्-सभी मुरझाए (भयातुर) लोगों को;
वेवित्तु-उवालकर; ऊन्. नुकर्-उनका मांस खानेवाले; अरक्कर्-राक्षस रूपी;
उरुमिल् चुट्टु चित्तत्तिन्-वज्र के समान जलानेवाले क्रोध की; कात्त अळलै-दावाग्नि
को; कटितु अवित्तु-सत्वर बुझाकर; उलकु अळिप्पान्-लोकों की रक्षा करने के
लिए; वात्त मळै वन्ततु-मेघों से बारिश आई; अँत्त-ऐसा; मैन्तु उरु मनत्तान्-
उत्साह-भरे मन वाले । १६२

राक्षस लोग, पहले ही उनसे डरकर मुरझाते रहे जीवों को पकड़कर
उन्हे उवालकर खा लेते थे । वे गाज के समान जलानेवाली दावाग्नि थे ।
उस दावाग्नि को बुझाने के लिए आकाश के मेघों से गिरनेवाले जल के
समान श्रीराम लोकरक्षणार्थ आ गए । यह सोचकर अगस्त्य उत्फुल्लमन
हो गए । १६२

❀ कण्डन	तिरामत्तै	वरक्करुणै	कूरप्
पुण्डरिह	वाणयन	नीरपौळिय	निन्ऱान्
अँण्डिशैयु	मेळलहु	मैव्वुयिरु	मुय्यक्
कुण्डिहैयि	निऱ्पौरविल्	काविरि	कौण्ऱन्दान् 163

अँण् तिचैयुम्-आठों दिशाएँ; एळ् उलकुम्-सातों लोक; अँ उयिरुम्-कोई
भी जीव; उय्य-तरें, इसके लिए; कुण्टिकैयित्तिल्-अपने मण्डलु में; पौरुवु इल्-
उपसा-रहित; काविरि कौण्ऱन्तान्-कावेरी नदी को (ब्रह्मलोक से) जो लाये, वे
अगस्त्य; इरामत्तै वर कण्टत्तन्-श्रीराम को आते हुए देखकर; करुणै कूर-कृपा के
उमगते; पुण्टरिक-कमलपुष्प के समान; वाळ्-प्रकाशमान; नयत्तम्-आँखों से;
नीर् पौळिय-आँसू बरसाते हुए; निन्ऱान्-खड़े रहे । १६३

अगस्त्य आठों दिशाओं और सातों लोकों में रहनेवाले जीवों के
उद्धार के लिए ब्रह्मलोक से अपने कमण्डलु में कावेरी नदी को लाये थे ।
ये श्रीराम को आते देखकर आनन्दवाष्पाकुल कमलनेत्रों के साथ श्रीराम के
सामने खड़े रहे । १६३

❀ निन्ऱवनै	वन्दनैडि	योत्तडि	पणिन्दान्
अन्ऱवनु	मन्वौडु	तळीइयळुद	कण्णान्
नन्ऱुवर	वैन्ऱुपल	नल्लुरै	पहरन्दान्
अँन्ऱुमुळ	दैन्ऱमि	ळियम्बियिशै	कौण्डान् 164

निन्ऱवनै-वैसे स्थित उनके; वन्त नैटियोत्-उधर जो पधारे, वे विष्णु श्रीराम;
अटि पणिन्तान्-चरणों पर नतमस्तक हुए; अन्ऱु-तब; अँन्ऱुम् उळ-सदा से
रहनेवाली; तैन् तमिळ्-(दक्षिणी या) मधुसम तमिळ्; इयम्पि-रचकर; इचै

कीण्टान्-कीर्ति जो पा चुके; अवतुम्-उन्होंने; अन्तर्पादु तल्लीङ्-प्रेम के साथ गले लगाकर; अल्लुत कण्णान्-बाष्पपूरित आँखों वाले बनकर; नन्नू वरवु-शुभ हो आपका आगमन; अन्नू-कहकर; पल नल् उरै-अनेक शिष्टाचार-वचन; पकर्न्तान्-कहे । १६४

आत्मविभोर होकर जो खड़े रहे उनके चरणों को, श्रीराम ने, जो वहाँ पधारे और जो त्रिविक्रम देवता ही थे, नमस्कार किया । तब नित्य रहनेवाली मधुर तमिळ् देकर जो कीर्तिमान बने, उन अगस्त्य ने उन्हें स्नेह के साथ गले लगाकर नेत्रों से आनन्द का बाष्प बहाते हुए कहा कि आपका आगमन शुभ हो । १६४

❖ वेदियर्हळ्	वेदमोळि	वेरुपल	कूडक्
कादन्मिह	निन्नूळिर्	कमण्डलुवि	नन्नीर्
मादवर्हळ्	वोशिनैडु	मामलर्ह	डूवप्
पोदुमण	नारुकुळिर्	शौलैहोडु	पुक्कान् 165

वेदियर्कळ्-वेदज्ञ ब्राह्मण लोगों ने; वेरु पल-विभिन्न अनेक; वेत मोळि कूड-वेद (के) मंगलाशासन किया; मातवर्कळ्-महान तपस्वियों ने; कातल् मिह-प्रेम के बढ़ते; निन्नू-सामने खड़े होकर; ओळिर् कमण्डलुविन्-शुभकारी कमण्डलु के; नल् नीर् वोचि-पवित्र जल को (मन्त्रोच्चारण के साथ) छिड़काकर; नैडु मा मलर्कळ् तव-सुन्दर फूलों को देर तक वरसाया; पोतु कणम् नारुम्-(तब अगस्त्य) तभी खुले हुए पुष्पों की गन्ध से पूर्ण; कुळिर् चोलै कौटु-शीतल आश्रम में ले जाकर; पुक्कान्-प्रविष्ट हुए । १६५

वेदज्ञ ब्राह्मणों ने विविध वेदों के मन्त्र उच्चारण करते हुए मंगलाशासन किया । महान तपस्वियों ने बढ़ते प्रेम के साथ अपने कमण्डलुओं से पवित्र जल लेकर मंगलदायी मंत्रों को कहते हुए श्रीराम पर छिड़का । तब अगस्त्य श्रीराम (आदि) को लेते हुए नवीन, विकसित पुष्पों की सुगन्ध से पूर्ण अपने तपोवन में ले गये । १६५

❖ पोरुन्दवम्	लन्बोळि	लहत्तित्तिडु	पुक्कान्
विरुन्दव	णमैत्तपिन्	विरुम्बिनन्	विरुम्बि
इरुन्दव	मिळैत्तवैन्	दिल्लिडैयिल्	वन्देन्
अरुन्दव	मुडित्तनै	यरुट्करश	वैन्डान् 166

अमलन्-निर्मल श्रीराम; पोळिल् अकत्तु-तपोवन में; पोरुन्त-चाव के साथ ठहरने; इन्तु पुक्कान्-आनन्द के साथ पहुँचे; अवन्-वे महर्षि; विरुम्पित्तन्-प्यार के साथ; विरुन्तु अमैत्त पिन्-भोजन कराने के बाद; अरुट्कु अरच-कृपालु प्रभु; इरुम् तवम् इळैत्त-बड़ी तपस्या जहाँ करता रहा; अन्नतु इल् इटैयिल्-मेरे इस कुटीर में; विरुम्पि वन्तु-आप ही चाहकर आये; अन्न अरुम् तवम् मुडित्तनै-और मेरी तपस्या को सम्पन्न बना दिया; वैन्डान्-बोले । १६६

पवित्र पुरुष श्रीराम भी उधर सुख से रहने का विचार करके आनन्द के साथ गये । महर्षि ने उनको भोजनादि सत्कार करने के बाद उनसे कहा कि कृपालु प्रभु ! मेरे इस तपोवन में, जहाँ मैं लम्बे अरसे से तपस्या कर रहा हूँ, आप पधारे और मेरे कुटीर को अपनी इच्छा से पवित्र किया है । आपने ऐसा करके मेरे तप को सुसंपन्न कराया है ! मेरी तपस्या सफलीभूत हुई । १६६

ॐ अँत्तमुत्ति	यैत्तौळु	दिराम	तिमैयोरुम्
निन्ऱुत्तव	मुर्ऱुर्नैडि	योरिर्नैडि	योरुम्
उन्ऱुत्तवळ्	पैर्ऱिलर्ह	ळुन्ऱुत्तवळ्	शुमन्ऱेन्
वैन्ऱुत्त	तनैत्तुलहु	मेलित्तिये	नैन्ऱान् 167

अँत्त मुत्तियै—ऐसा जिन्होंने कहा उन मुनि को; इरामन्—श्रीराम; तौळु-नमस्कार करके; इमैयोरुम्—देवता लोग; निन्ऱु तवम् मुर्ऱु—क्रियमाण तपस्या को जो पूरा कर चुके; नैटियोरिन् नैटियोरुम्—श्रेष्ठों से भी श्रेष्ठ वे तपस्वी भी; उन्ऱुन् अरळ् पैर्ऱिलर्ह—आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके; उन् अरळ् शुमन्ऱेन्—मैं आपकी कृपा का पात्र बना हूँ; अनैत्तुलकुम्—सारे लोकों को; वैन्ऱुत्तन्—जीतनेवाला बन गया; मेल्—इससे श्रेष्ठ; इति अँन्—अब क्या चाहिए; अँन्ऱान्—कहा । १६७

ऐसा शिष्टाचारवचन कहनेवाले अगस्त्यजी को नमस्कार करके श्रीराम ने कथन किया कि हे महर्षि ! देव क्या, अपनी तपस्या को सुसंपन्न कर चुके महान से महान तपस्वी क्या—वे भी आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके हैं । लेकिन मैं आपकी कृपा का पात्र बन गया । इसलिए सर्वलोक-जयी हो गया । इससे बढ़कर कौन सा भाग्य है, जो मैं पाना चाहूँ ? । १६७

ॐ तण्डह	वत्तुर्ऱैदि	यैन्ऱुर्	तरक्कोण्
डुण्डुवर	वित्तिशै	यैत्तपैरि	दुवन्ऱेन्
अँण्डहु	गुणत्तिनै	यैत्तक्कोडुयर्	शैन्ऱित्
तुण्डमदि	वैत्तवन्नै	यौत्तमुनि	शौल्लुम् 168

उयर् चैत्ति—अपने श्रेष्ठ सिर पर; तुण्ड मति—कलाचन्द्र को; कौटु—लेकर; वैत्तवन्—धरनेवाले; औत्त—(शिवजी से) तुल्य; मुत्ति—महर्षि; अँण् तकु कुणत्तिनै—प्रशंसनीय गुण वाले; तण्डक वत्तु उरैति—दण्डकवन में रहते हैं; अँन्ऱु—ऐसा; उरै तर कौण्डु—वचन के कहे जाते सुनकर; उण्डु वरवु इ तिचै—आना होगा आपकी इस दिशा में; अँन्—यह निश्चय करके; पैरितु उवन्ऱेन्—बहुत आनन्दित हुआ; अँन्—कहा और; शौल्लुम्—और आगे कहा । १६८

अपने सिर पर कलाचन्द्र धारण करनेवाले शिवजी—सदृश अगस्त्य ने कहा कि सबसे प्रशंसनीय गुण वाले श्रीराम ! यहाँ आगत मुनियों से यह समाचार मिला था कि आप दण्डक वन में वास कर रहे हैं । तब

सोचा कि इसी ओर आपका आगमन संभाव्य है । इस विचार से मैं बहुत आनन्दित हुआ । वे आगे बोले । १६८

❖ ईण्डुरैदि	यैयविति	यिव्वयि	तिरुन्दाल्
वेण्डियत्त	मादवम्	विरुम्बिनै	मुडिप्पाय्
तूण्डुशित्त	वाणिरुदर्	तोन्न्रियुळ	रैन्नाल्
माण्डुह	मलैन्दैमर्	मन्तत्तुयर्	तुडैप्पाय् 169

ऐय-प्रभु; ईण्डु उरैति-यहाँ ठहरिए; इ वयिन् इरुन्ताल्-इधर रहेंगे तो; इति-आगे; वेण्डियत्त मातवम्-जो चाहेंगे वे महान तप; मुटिप्पाय्-सम्पन्न कर सकेंगे; तूण्डु चिन-उकसाए हुए क्रोध के साथ; वाळ् निरुतर्-तलवारधारी राक्षस; तोन्न्रि उळर् अँन्नाल्-प्रकट हो आयेंगे तो; माण्डु उक-उनको मारकर गिराते हुए; मलैन्तु-उनसे लड़कर; अँमर्-हम जैसे का; मन्त तुयर्-मन के क्लेश को; तुडैप्पाय्-दूर कर सकेंगे । १६८

प्रभु ! यहीं ठहरिए । इधर रहने से आपको सुविधा होगी । आप अपने इच्छित तप, व्रत आदि का पालन कर सकेंगे । और भी उकसाये क्रोध वाले तलवारधारी राक्षस इधर प्रकट होंगे तो आप उन्हें मार मिटाकर हमारी रक्षा कर सकेंगे और हम जैसे मुनियों का क्लेश दूर कर सकेंगे । १६९

❖ वाळुमरै	वाळुमन्तु	नीदियडम्	वाळुम्
ताळुमिमै	योरुयर्वर्	तात्तवर्ह	डाळ्वार्
आळियुळ	वन्बुदल्व	वैयमिलै	मैय्ये
एळुलहम्	वाळुमिनि	यिङ्गुरैदि	यैन्नान् 170

आळि उळवन् पुतल्व-आज्ञाचक्र-कृषक चक्रवर्ती के पुत्र; इति मरै वाळुम्-अब वेद जी गए; मन्तु नीति वाळुम्-मनुनीति स्थिर हो गई; अडम् वाळुम्-(बत्तीस) धर्म जी जायेंगे; एळ् उलकम् वाळुम्-सातों लोक जी जाएँगे; ताळुम् इमैयोर्-अवनत देवता लोग; उयर्वर्-उन्नत हो जायेंगे; तात्तवर्कळ् ताळ्वार्-दानव अवनत हो जायेंगे; ऐयम् इलै-सन्देह नहीं; मैय्ये-यह सत्य है; इङ्कु उरैति-यहाँ वास कीजिए; अँन्नान्-(अगस्त्य) ऐसा बोले । १७०

आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती के पुत्र ! आगे वेद जी जायेंगे । मनुनीति सुस्थापित हो जायगी । (बत्तीस ?) धर्म टिक जायेंगे । सातों लोक पनपेंगे । अवनत देवता लोग उन्नत हो जायेंगे और राक्षस गिर जायेंगे । हाँ, शक नहीं । यह ध्रुवसत्य है । इसलिए आप यहीं वास कीजिए । १७०

❖ शैरुक्कुडै	यरक्कर्पुरि	तीमैशिदै	वैय्दत्
तरक्कळि	दरक्कडिडु	कौल्वडु	शमैन्देन्

वरुक्कमरुं योयवर् वरुन्दिशियिन् मुनुदुर्
रिरुक्कैनल नैरुकरुळ्ह वैन्ऱन निरामन् 171

इरामन्-श्रीराम ने; वरुक्क मरुंयोय्-अंग-उपांगों के साथ वेदों के ज्ञाता; रैरुक्कु उटै अरक्कर्-घमण्डी राक्षस; पुरि-जो करते हैं; तीमे-अत्याचार; चितैवु अय्त-उनको मिटाते हुए; तरुक्कु अळि तर-गर्व चूर करते हुए; कटितु कौल्वतु चमैन्तेन्-शीघ्र उनको मारने का संकल्प कर लिया है; अवर् वरुम् तिचैयिल्-उनके आने की दिशा में; मुन्तु उरु-पहले जाकर; इरुक्क-प्रतीक्षा में रहना; नलन्-अच्छा होगा; अैरुक्कु अरुळ्क-हमें आज्ञा देने की कृपा करें; अैन्ऱनन्-यह इच्छा सुनाई । १७१

श्रीराम ने अगस्त्य से कहा कि हे श्रेणीवद्ध वेदों के ज्ञाता ! मैंने इन गर्वीले राक्षसों के अत्याचारों का अन्त करने के लिए उनके घमण्ड को चूर करते हुए उन्हें मिटाने का संकल्प किया है । इसलिए उनके आने के मार्ग में सामने जाकर प्रतीक्षा में रहना सुविधाजनक होगा —ऐसा समझता हूँ । आप मुझे आशीर्वाद के साथ आज्ञा दें । १७१

❖ विळुमियदु शौरुन्नैयिव् विल्लिदिवण् मेन्नाळ्
मुळमुदल्वन् वैत्तुळु मूवुलहुम् यानुम्
वळिपड विरुप्पदिदु तन्नेवडि वाळिक्
कुळुवळुविल् पुट्टिलौडु कोडियैत नल्हि 172

विळुमियदु चौरुन्नै-श्रेष्ठ वात कहो; इवण्-यहाँ; इ विल् इतु-यह धनु; मेल् नाळ्-पहले किसी दिन; मुळु मुतल्वन् वैत्तु उळु-परात्पर ब्रह्म ने रखा था; मू उलकुम्-त्रिभुवन; यानुम्-और मैं; वळि पड इरुप्पतु-इसकी पूजा करते हैं, ऐसा; इतु तन्ने-इसको; वटि वाळि कुळु-तीक्ष्ण शर-राशि; वळुवु इल्-अक्षय; पुट्टिल् औटु-तूणीरों के साथ; कोटि-ग्रहण कर लें; अैत-कहकर; नल्कि-उन्हें प्रदान करके । १७२

अगस्त्यजी ने उत्तर में कहा कि हे श्रीराम ! आपने अच्छा सोचा है ! यहाँ यह जो धनुष है, यह परात्पर विष्णुदेव के पास रहा था । यह मेरे और त्रिभुवन द्वारा पूजित है । इसको और तीक्ष्ण अनेक शरों को अक्षय तूणीरों के साथ आप ग्रहण कर लीजिए । यह कहकर उन्होंने उनको श्रीराम के पास समर्पित किया । १७२

❖ इप्पुवन मुरुमौरु तट्टिन्निडै यिट्टाल्
औप्पुर विरुन्नै वुरैप्परिय वाळुम्
वैप्पुवु पेरुवरन् मेरुवै विल्ला
मुप्पुर मेरित्तदनि मौय्हणैयु नल्हा 173

इ पुवतम् मुरुम्-इस भुवन भर को; और तट्टिन् इटै-एक (तराजू के) पलड़े में रखकर; इट्टाल- (इसको दूसरे पलड़े में) रखें तो; औप्पु वरविर्ऱु अैत-समान

होंगे; उरैपु अरिय-ऐसा कहने न योग्य; वाल्म-एक तलवार को; वैपु उरुवु
पैश-अग्नि रूप के; अरत्-हरदेव ने; मेरु वरै विल्ला-मेरुपर्वत को धनुष बनाकर;
मुपपुरम् अरित्त-त्रिपुर को जिससे जलाया; तत्ति मीय् कणैयुम्-उस अनुपम सारयुक्त
शर को भी; नल्का-देकर । १७३

और भी एक तलवार है । उसे तराजू के एक पलड़े में और तीनों
लोकों को एक पलड़े में रखेंगे तो दोनों समान होंगे—ऐसा कहना सही नहीं
होगा क्योंकि तलवार तीनों लोकों की विजय करने की शक्ति रखती है और
महिमामय है । उन्होंने वह तलवार श्रीराम के पास दी । और अग्निमूर्ति
शिवजी ने महामेरु को धनुष बनाकर जिस अप्रतिम शर से त्रिपुरदाह कराया
था, उस बाण को भी उनके पास दिया । १७३

ॐ ओङ्गुमर	नोङ्गिमलै	योङ्गिमण	लोङ्गिप्
पूङ्गुलै	कुलावुहुळिर्	शोलैपुडै	विम्मिन्
तूङ्गुदिरै	यारुतवळ्	चूळलदीर्	कुन्नरिन्
पाङ्गरुळ	दालुरैयुळ्	पञ्जवडि	मञ्ज 174

मञ्च-राजकुमार; ओङ्कु मरन् ओङ्कि-ऊँचे पेड़ जहाँ ऊँचे उगे हैं; मलै
ओङ्कि-उन्नत पर्वत हैं; मणल् ओङ्कि-बालू के ऊँचे टीले पाये जाते हैं; पूम् कुलै
कुलावु-पुष्पों के गुच्छे मिलते हैं; कुळिर् चोलै-शीतल उपवन; पुटै विम्मि-पाश्वर्
में उगे रहते हैं; तूङ्कु तिरै आङ्-हिलनेवाली लहरों से युक्त नदियाँ; तवळ्-बहती
है; चूळलतु-ऐसे पाश्वर्यस्थलों के; ओर् कुन्नरिन् पाङ्कर्-एक पर्वत के पास;
पञ्चवटि-पंचवटी नाम का; उरै उळ्-एक वासयोग्य स्थान; उळतु-है । १७४

यह सब देने के बाद अगस्त्य ने सुझाया कि श्रीराम ! पंचवटी नाम
का एक स्थान है । वहाँ ऊँचे तरु हैं, उन्नत पर्वत है, उच्च सिक्ता-टीले हैं ।
वह ऐसे पर्वत पर है, जिसके पाश्वर् में पुष्प-भरे उपवन हैं और झलमलाती
लहरों वाली नदियाँ बहती हैं । वह पंचवटी वासयोग्य स्थान है । १७४

कन्तिथिळ वालैकनि यीवकदिर् वालिन्, शैन्तैलुळ तेन्नीळुहु पोदुमुळ दैय्वप्
पौन्तिथेन लायपुत्त लारुमुळ पोदा, अन्तमुळ पौन्तिवळीं डन्बिन्विळै याड 175

कन्ति इळ वालै-बाल-कदलियाँ; कति ईव-फल देनेवाली हैं; कतिर् वालिन्-
प्रकाशमय पूँछ जैसे छोटे भाग के साथ; चैन्तैल् उळ-शालि के धान मिलेंगे; तेन्
ओळुक्कु पोतुम् उळ-मधु बरसानेवाले पुष्प है; तैय्व पौन्ति अँतल् आय-दिव्य कावेरी
नदी के ही समान रहनेवाली; पुत्तल् आङ्म् उळ-अच्छे जल की नदियाँ भी हैं; पौन्
इवळोटु-श्रीलक्ष्मी इनके साथ; अन्पिन् विळैयाट-प्रेम के साथ मनोरंजन करने के
लिए; पोता-सारस; अन्तम्-और हंस पक्षी; उळ-है । १७५

और भी वहाँ आपको कदली के बालवृक्ष मिलेंगे, जो मधुर फल
दिलाएँगे । दुम के समान पतले अंग के साथ रहनेवाले लाल रंग के शालि
के धान वहाँ पाये जाते हैं । मधु बरसानेवाले नवीन पुष्प हैं । दैवी

कावेरी नदी के समान पवित्र और मनोरम जल वाली नदियाँ हैं। इन श्रीलक्ष्मीदेवी (सीताजी) के साथ प्रेमसहित खेलने के लिए सारस और हंस पक्षी रहते हैं। १७५

✽ ऐहियिनि	यव्वयि	निरुन्दुऱैमि	नैन्ऱान्
मेहनिऱ	वण्णनुम्	वणङ्गिविडै	कौण्डान्
पाहन्ऱैय	शौल्लियौडु	तम्बिपरि	विऱ्पिन्
पोहमुत्ति	शिन्दैतौड	रक्कडिडु	पोत्तान् 176

इत्ति-आगे; अ वयिन् एक-उधर जाकर; इरुन्तु उऱैमिन्-रहकर वास कीजिए; अन्ऱान्-(अगस्त्य ने) कहा; मेक निऱ वण्णनुम्-मेघवर्ण श्रीराम ने भी; वणङ्कि-नमन करके; विटै कौण्डान्-विदा ली; पाकु अतैय चौल्लि ओट्टु-चासनी-सम बोली वाली श्री सीताजी के साथ; तम्पि-अनुज लक्ष्मण भी; परिविन्-श्रद्धा के साथ; पिन् पोक्-उनका पीछा करते गये; मुत्ति चिन्तै तौट्टर-(अगस्त्य) मुत्ति का मन भी पीछा करता चला; कटितु पोत्तान्-वे शीघ्र वहाँ से गये। १७६

आप आगे वहीं जाकर वास करें। —अगस्त्य ने कहा। मेघवर्ण श्रीराम ने भी उनको नमस्कार करके उनसे विदा ली। जब वे जाने लगे, तो चासनी-सम बोली वाली देवी सीताजी और कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मण उनके पीछे गये। अगस्त्य का मन भी उनका पीछा करता गया। श्रीराम शीघ्र चले। १७६

4. शडायु काण् पडलम् (जटायु-दर्शन पटल)

✽ नडन्ऱत्	कावदम्	वलवु	नन्ऱदि
किडन्ऱन	निन्ऱन	गिरिहळ्	केण्मैयिल्
तौडन्ऱन	तुवन्ऱित	शूळल्	यावैयुम्
कडन्ऱत्	कण्डन्ऱ	कळुहिन्	वेन्ऱेये 177

कावतम् पलवुम्-अनेक 'काद' (कोस) दूर; नटन्ऱत्-पैदल चलकर; किटन्ऱत् नल् नत्ति-मार्ग में पड़ी रही अनेक श्रेष्ठ नदियाँ; निन्ऱन्-(अकेले) स्थित; केण्मैयिन् तौट्टन्ऱन्-मित्रों के समान परस्पर मिले रहे; किरिकळ्-अनेक पर्वत; तुवन्ऱित चूळल् यावैयुम्-(बीच-बीच में) घने उपवन; कटन्ऱत्-पार करके; कळुकिन् वेन्ऱै-गृध्रराज को; कण्डन्ऱ-(उन्होंने) देखा। १७७

श्रीराम आदि तीनों अनेक कोस दूर गये। रास्ते में अनेक नदियाँ पड़ी थी। पर्वत और पर्वतश्रेणियाँ पाई गयी। अनेक उपवन मिले। उन सबको पार करके उन्होंने जटायु के दर्शन किये। १७७

✽ मुन्दौरु	करुमलै	मुहट्टु	मुन्ऱिलिल्
शन्दिर	नीळियौडु	तळवच्	चात्तिय

अन्दमिल्
मन्दर

कतैहड
गिरियैत

लमरर्
वयङ्गु

नाट्टिय
वान्इतै 178

मुन्तु-पहले; अमरर्-सुर; अन्तम् इल्-अपार; कतै कटल्-गर्जनशील सागर में; चन्तिरन् ओळि ओट्टु तळुव-चन्द्र-किरण के साथ मिलाकर; चात्तिय नाट्टिय-आधार-स्तम्भ के रूप में स्थापित; मन्तर किरि अँन-मन्दरपर्वत के समान; ओरु करु मलै मुकट्टु मुन्त्रिलिल्-एक काली गिरि की चोटी पर खुले थल में; वयङ्कुवान् ततै-शोभायमान उनको । १७८

वे (जटायु) उस मन्दरपर्वत के समान शोभित थे, जिसको अमृतमंथन के उस समय गर्जनशील सागर-मध्य चन्द्र की किरणों से लगाते हुए आधार-स्तम्भ के रूप में गाड़ दिया गया था । वे एक काले (या वड़े) पर्वत की चोटी पर आँगन-सम खुले थल में शान के साथ विराजमान थे । १७८

उरुक्किय
अरुक्कन्ति
तैरिप्पुरु
विरित्तिरुन्

शुवणमौत्
निळल्पडैत्
शैरिशुडर्च्
दन्नेन

तुदयत्
तलङ्गु
चिरैयि
विळङ्गु

तुच्चिशैर्
तिक्कैलाम्
नार्इशै
वान्इतै 179

उरुक्किय चुवणम् ओत्तु-पिघले हुए सोने के समान; उदयत्तु उच्चि चैर्-उदयगिरि के शृंग पर पहुँचे हुए; अरुक्कन्ति-सूर्य के समान; निळल् पडैत्तु-कान्ति से युक्त होकर; अलङ्कु तिक्कु अँलाम्-अन्धकार के कारण व्यथित रहनेवाली सभी दिशाओं को; तैरिप्पु उरु-प्रकाश दिलानेवाले; चैरि चुटर् चिरैयित्ताल्-घनी दीप्ति वाले पक्षों को; तिच्चै विरित्तु इरुन्तत्तन्-सभी दिशाओं में फैलाये रहे; अँत-ऐसा कहने योग्य रीति से; विळङ्कुवान् ततै-दृश्यमान उनको । १७९

वे पिघला-स्वर्ण-सम थे । उदयगिरि पर आये सूर्य के समान कान्ति-युक्त थे । अन्धकार से आक्रान्त दिशाओं में प्रकाश करते हुए मानो वे अपने पक्ष फैलाए हुए थे, ऐसे दृश्यमान उनको श्रीराम आदि ने देखा । १७९

वान्इ
कान्इच्
नीन्इ
पोन्इम्

विशुम्बैळिन्
चैयौळि
वरैयिन्इ
बौलिन्दिडप्

मरैयत्
कतुवक्
पवळ
पौलिहिन्

तन्मणिक्
कण्णहल्
नीळ्हौडि
इान्इतै 180

वान् इन् विचुम्पु-विशाल और प्रभावान आकाश की; ओळिल् मरैय-छटा को छिपाते हुए; कण् अकल्-विस्तृत; नील् इन् वरैयितिल्-नीलवर्ण पर्वत पर; तन् काल् इन्-अपने पैरों का रंग; मणि चैय् ओळि-लाल सुन्दर आभा; कतुव-फँलाते हुए; पवळ नीळ् कौटि पोल्-प्रवाल की लम्बी लताओं के समान; इन्म् पौलिन्तिट्ट-वहाँ शोभायमान करते हुए; पौलिक्किन्इन् ततै-तेज के साथ रहनेवाले उनको । १८०

उनके तेज के सामने विशाल और आभायुक्त आकाश की शोभा छिप

गयी थी। नीले पर्वत पर उनके लाल पैर माणिक की-सी प्रभा कर रहे थे। वे प्रवाललता-समान शोभ रहे थे। ऐसे विराजमान उनको; । १८०

✽ तूय्मैय	निरुङ्गलै	तुणिन्द	केळ्वियन्
वाय्मैयन्	मरुविलन्	मदियिन्	कूर्मैयन्
आय्मैयिन्	मन्दिरत्	तडिअ	तामैतच्
चेय्मैयि	नोक्कु	शिरुह	णान्ऱनै 181

तूय्मैयन्-शुचिकर्मा; इरुम् कलै तुणिन्त केळ्वियन्-गम्भीर अध्ययन-ज्ञान के साथ श्रवण-ज्ञान से युक्त; वाय्मैयन्-सत्यसंध; मरु इलन्-निर्दोष; मतियिन् कूर्मैयन्-सूक्ष्ममति; आय्मैयिन्-दीर्घदर्शी; मन्तिरत्तु अडिअन् आम् अँत-मंत्रणा में कुशल मन्त्री के समान; चेय्मैयिन् नोक्कु उरुम्-दूर तक देख सकनेवाले; चिरु कण्णान् तनै-छोटे नेत्रों वाले उनको । १८१

वे शुचिपूर्ण थे। अध्ययन और श्रवण से प्राप्त गम्भीर ज्ञान से युक्त थे। सत्यसंध थे और निर्दोष थे। सूक्ष्मबुद्धि थे। दीर्घदर्शिता रखनेवाले मंत्रणा में निपुण मन्त्री के समान उनके बहुत दूर तक देख सकनेवाली छोटी आँखें थीं। १८१

✽ वीट्टिवा	ळवुणरै	विरुन्दु	कूऱ्ऱितै
ऊट्टिवीळ्	मिच्चिऱा	नुण्डु	नाडौरुम्
तीट्टिमे	विन्दिरन्	शिरुहण्	यानैयिन्
तोट्टिपोऱ्	रेय्न्दौळिर्	तुण्डत्	तान्ऱनै 182

वाळ् अवुणरै-तलवारधारी दानवों को; वीट्टि-मारकर; कूऱ्ऱितै विरुन्दु ऊट्टि-यम को दावत में खिलाकर; वीळ्-वचकर गिरनेवाले; मिच्चिल्-जूठन को; नाळ् तोरुम् उण्डु-प्रतिदिन खाकर; चिरु कण् यानैयिन् मेवु इन्तिरन्-छोटी आँखों वाले (ऐरावत-संज्ञित) गज पर आसीन इन्द्र के; तोट्टि पोल्-अंकुश के समान; तीट्टि-पैनायी जाकर; तेय्न्तु औळिर्-उस कारण से घिसकर उज्ज्वल दिखनेवाली; तुण्डत्तान् तनै-चोंच के उनको । १८२

रोज वे तलवारधारी राक्षसों को युद्ध में मारकर यम को खिलाते थे और बचेखुचे जूठन को खाते थे। उनकी चोंचे छोटी-छोटी आँखों वाले ऐरावत गज पर सवार इन्द्र के अंकुश के समान पैनाई गयी और घिसी हुई थी और उससे चमकदार लगती थीं। १८२

✽ कोळिरु नालिनो डौन्ऱु कूडिय, आळुर् तिहिरिबो लारत् तान्ऱनै
नीळुयर् मेनियि नैऱ्ऱि मुऱ्ऱिय, वाळिर वियिर्पोलि मवुलि यान्ऱनै 183

इरु नालिन् ओटु-दो के चार के साथ; औन्ऱु कूडिय-एक मिलाकर (नौ) रहे; कोळ्-ग्रहों को; आळ् उरु तिकिरि पोल्-चालित करनेवाले (शिशुमार नामक या

विष्णु के) चक्र के समान शोभायमान; आरतूतान् ततै-हार से अलंकृत उनको; नीळ उयर् मेतियिन्-विशाल और दीर्घ शरीर के; नैर्द्रि-शिखर पर; मुर्द्रिय-रखे गये; वाळ् इरवियिन्-उज्ज्वल सूर्य के समान; पौलि-शोभनेवाला; मवुलियान् ततै-किरीटधारी को । १८३

उनके वक्ष पर एक हार था । वह शिशुमार या विष्णु के चक्र और उसके अधीन घूमनेवाले नवग्रहों के समान शोभायमान था । उनके सिर पर उज्ज्वल सूर्य के समान किरीट सजा हुआ था । ऐसे हार और किरीटधारी को (श्रीराम ने देखा) । १८३

❖ शौर्पङ्ग मुर्निमि रिशैयिन् शुम्भैयै, अर्पङ्ग मुर्वरु मरुणन् शौम्भलैच्
चिर्पङ्गौळ् पहलैतक् कडिडु शैन्नूतीर्, कर्पङ्ग लैतैप्पल कण्डु लान्नुतै 184

चौल् पङ्कम् उर्-शब्द (भाषा) को भग्न (पंगु) करते हुए; निमिर् इचैयिन् चुम्भैयै-उठे हुए यश की राशि के समान; अल् पङ्कम् उर्-अन्धकार को मिटाते हुए; वरुम्-आनेवाले; अरुणन् चैम्भलै-अरुण के पुत्र (जटायु) को; कटितु चैन्नू तीर्-शीघ्र व्यतीत होनेवाले; चिर्पम् कौळ् पक्ल् अन्नै-अल्प दिन के समान; कर्पङ्कळ् अँतै-कल्प कहलानेवाले काल; पल-अनेक; कण्डु उळान् ततै-जो देख चुके, उनको । १८४

उनका यश इतना बड़ा था कि शब्द में उसको समझाने की शक्ति नहीं थी; शब्द भग्न हो जाते थे । वे अन्धकार को मिटाते हुए आनेवाले (सूर्य-सारथी) अरुण के पुत्र थे । उन्होंने कई कल्प देखे थे, जो छोटे-छोटे दिनों के समान व्यतीत हो चुके थे । ऐसे उनको; । १८४

❖ ओङ्गुयर् नैडुवरै यौन्निरि निन्नुडु, ताङ्गल दिरुनिलन् दाळ्नुडु ताळ्वुर्
वीङ्गिय वलियिन् निरुन्द वीरतै, आङ्गव रणुहित रयिर्क्कुञ्ज जिन्दैयार् 185

ओङ्कु उयर्-ऊँचे बड़े हुए; नैडु वरै औन्निरि-बड़े पर्वत पर; निन्नू-रहकर; अतु ताङ्कलतु-वह बोझ उठा न सककर; इरु निलम् ताळ्नुतु-विशाल भूमि में घँसकर; ताळ्वु उर्-अन्दर चला गया, ऐसा; वीङ्किय वलियित्तिन् इरुन्त-बढ़े हुए बल के साथ रहे; वीरतै-वीर जटायु को; आङ्कु-वहाँ; अवर्-वे तीनों; अयिर्क्कुम् चिन्तैयर्-शंकितमन होकर; अणुकिन्तर्-उनके समीप गए । १८५

वे एक उन्नत पर्वत पर विराजमान थे । वह पर्वत उनके बोझ से भूमि के अन्दर घँस गया था । उतने बलवान उन वीर पर श्रीराम आदि ने शंकित मन से दृष्टिपात किया । १८५

❖ इरुदियैत्	तन्वयि	नियर्	वैय्दित्तान्
अरिविलि	यरक्कत्ता	मल्ल	ता मैत्तिल्
अँरुळ्वलिक्	कलुळ्त्ते	यैन्न	वुत्तियच्
चैरिहळल्	वीरुञ्	जैयिर्त्तु	नोक्किन्नार् 186

चैत्रिकल्ल वीररुम्-ठोस पायलधारी वीर; तन् वयिन्-अपना; इरुतियै-अन्त;
इयर्-कराने के लिए; अय्यत्तिन्नान्-जो आया; अरिवु इलि अरक्कन् आम्-यह
बुद्धिहीन राक्षस है; अल्लन् आम्-नहीं; अत्तिल-तो; अरुळ् वलि-अत्यधिक
बलशाली; कलुळन् आम्-गरुड़ होगा; अन्नत्त उन्नत्ति-ऐसा सोचकर; चैयिर्त्तु-
कोप करके; नोक्किन्नार्-उनको देखा । १८६

भारी चरणबल-धारी वीरों ने अनुमान लगाया— “यह अपना अन्त
कराने के लिए आया हुआ एक राक्षस ही होगा ! नहीं तो वह बलवान
गरुड़ हो !” उन्होंने जटायु को खूब देखा । १८६

ॐ वनैहळल्	वरिशिलै	मदुहै	मैन्दरै
अनैयवन्	रानुङ्गण्	डयिर्त्तु	नोक्किन्नान्
विनैयर्	नोन्ननि	रल्लर्	विल्लिनर्
पुनैशडै	मुडियिन्	पुलव	रोवैन्ना 187

अनैयवन् तातुम्-जटायु भी; वनै कळल् वरि चिलै-पहनी हुई पायल और
बन्धनयुक्त धनु के धारक; मदुकं मैन्दरै-बलवान राजकुमारों को; कण्डु-देखकर;
विनै अरु नोन्नपितर् अल्लर्-कर्म काटने के ब्रती (तपस्वी) नहीं है; विल्लित्तर्-धनुर्धर
है; पुनै चटै मुडियित्तर्-निमित्त जटाधारी है; पुलवरो-देव हैं क्या; अन्न-ऐसा
अयिर्त्तु-सन्देह करके; नोक्किन्नान्-देखा । १८७

जटायु ने भी पायलधारी धनुर्धर वीरों को देखा । प्रतापी उनको
देखकर जटायु के मन में प्रश्न उठा कि ये कौन हैं ? ‘ये कर्मनाशार्थ तप
करनेवाले तपोव्रती नहीं हैं !- उनके हाथों में चाप है और सिरों पर जटा
है । क्या ये देवता हैं ?’ सन्देह के साथ उन्होंने उन पर दृष्टि दौड़ाई । १८७

ॐ पुरन्दरन् मुदलिय पुलवर् यारैयुम्, निरन्दर नोक्कुर्वै नेमि यानुमव्
वरन्दर मिन्नैवन् मळुव लाळत्तुम्, करन्दिल रैन्नैया नैन्नूड् गाण्वेन्नाल् 188

पुरन्दरन् मुदलिय पुलवर् यारैयुम्-पुरन्दर आदि सभी देवों को; निरन्दरम्
नोक्कुर्वै-प्रतिदिन देख रहा हूँ; नेमियात्तुम्-चक्रधारी विष्णु और; अ वरम् तरु
इरैवत्तुम्-वे वरदायी भगवान् ब्रह्मा और; मळुवलाळत्तुम्-‘मळु’ नामक (परशु ?)
हथियारधारी (शिवजी) के भी; यान् अन्नूम् काण्वैन् आल्-मैं रोज दर्शन करता हूँ,
इसलिए; अन्नै करन्तिलर्-मुझसे अपना रूप नहीं छिपाएंगे । १८८

जटायु आगे भी सोचने लगे । पुरन्दर आदि देवों को तो मैं रोज
देख रहा हूँ । चक्रधारी विष्णु, भक्तों को इच्छित वर देनेवाले ब्रह्मा, मळु
(परशु या तप्तलौह) आयुधधारी शिव—इनके तो प्रतिदिन दर्शन कर रहा
हूँ । वे हमसे अपना यथार्थ रूप नहीं छिपा सकते । १८८

ॐ कामन्नैन्	बवन्नैयुड्	गण्णि	नोक्किन्नैन्
तामरैच्	चैडगणित्	तडक्कं	वीररुहळ्

पूमरु	पीलङ्गलुङ्	पीडियि	तोडुमौप्
पामलन्	वरुव	रार्हौ	लामिवर् 189

कामन् अन्पवत्तैयुम्-मन्मथ को भी; कण्णिन् नोककिनेन्-आँखों से देखा है; तामरै चैम् कण्-कमलदल-सम लाल आँखें; तट-कै-दीर्घ भुजाएँ; इ वीररुक्क- (इनसे युक्त) इन वीरों के; पू मरु पीलन् कळल्-कमलगन्ध-युक्त/उज्ज्वल चरणों की; पीडियित्तोडुम्-धूलि के साथ भी; औप्पु आम् अलन्-तुल्य नहीं हो सकता; वरुवर् इवर्-आनेवाले ये; आर् कौल्-कौन हैं । १८६

मैंने कामदेव को भी अपनी आँखों से देखा है । वह मन्मथ कमलदल के समान अरुण आँखें और दीर्घ विशाल हाथों के साथ मनोरम आभायुक्त इनके पास पायलधारी चरण पर लगी धूलि से भी तुल्य नहीं हो सकता । फिर ये कौन हैं, जो इस तरफ आ रहे हैं ? । १८९

ॐ उलहौरु	मून्नुन्दम्	मुडैमै	याक्कुडुम्
अलहरू	मिलक्कण	ममैन्द	मैय्यित्तर्
मलर्म्हट्	कुवमैया	ळोडुम्	वन्दविच्
चिलैवलि	वीररैत्	तैरिहि	लेनैना 190

उलकु और मून्नुडुम्-स्वर्ग, भूतल और पाताल के तीनों लोकों को; तम् उडैमै आक्कुडुम्-अपने अधीन बना सकनेवाला; अलकु अरुम्-अमाप; इलक्कणम् अमैन्त-सामुद्रिका लक्षणों से युक्त; मैय्यित्तर्-दिव्य रूप वाले हैं; मलर् मकट्कु उवमैयाळोडुम्-कमलजा से तुल्य देवी के साथ; वन्त-जो इधर आये हैं; इ चिलै वलि वीररै-इन धनुर्धर बलवान वीरों को; तैरिकिलेन्-जान नहीं पाता; अन्ता-कहकर । १९०

इनके दिव्यशरीर अपार लावण्यमयी हैं । सभी सामुद्रिका लक्षणों के अनुसार सुघड़ वने हैं । उनकी सुन्दरता तीनों लोकों को अपने अधीन करनेवाली है । इनके साथ जो देवी आती हैं, वह कमलजा लक्ष्मीदेवी के समान हैं । ये वीर धनुर्धर कौन हैं ? मैं समझ नहीं पाता । १९०

ॐ करुमलै	शैम्मलै	यत्तैय	काट्चियर्
तिरुमहिळ्	मार्बित्तर्	शैङ्गण्	वीरर्दाम्
अरुमैशैय्	गुणत्तित्तैन्	रुणव	नाळियान्
औरुवन्नै	यिरुवरु	मौत्तु	ळाररो 191

करुमलै चैम्मलै अत्तैय-काली गिरि और लाल गिरि के समान; काट्चियर्-दर्शन देनेवाले; तिरु मकिळ् मार्पिनर्-वीरश्री जिन पर मोद के साथ वास करती थी, वैसे वक्ष वाले; चैङ्कण् वीरर्-अरुणाक्ष बली; अरुमै चैय्-अभूतपूर्व रूप से प्राप्त; गुणत्तित्तै-श्रेष्ठ गुणों के; अन् तुणैवन्-मेरे मित्र; आळियान्-चक्रवर्ती; औरुवन्नै-उन अद्वितीय (दशरथ) के ही; इरुवरुम्-ये दोनों; औत्तुळार्-सदृश दिखाई देते हैं । १९१

ये काले पर्वत और लाल स्वर्ण-पर्वत के समान दर्शन देते हैं । इनके

वक्षस्थल वीरश्री का वासस्थान-सा लगते हैं । अरुणाक्ष ये दोनों अच्छे श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण मेरे अत्यन्त मित्र चक्रवर्ती दशरथ के ही सदृश लगते हैं । १९१

ॐ अंतप्ल	नितैपपित्तन्	मनत्तु	ळैण्णवान्
शित्तपपडै	वीरर्मेड्	चैल्लु	मन्विनान्
कनपपडै	वरिशिलैक्	काळै	यीरुहळ्यार्
मनपपड	वैत्तक्कुरै	वळङ्गु	वीरैन्ऱान् 192

अंत—ऐसे-ऐसे; मनत्तुळ् अँण्णवान्—मन में सोचते हुए; पल नितैपपित्तन्—विविध अनुमान करनेवाले; चित्तम् पटै वीरर् मेल्—क्रोधशील हथियारधारी उन वीरों पर; चैल्लुम् अन्नपित्तान्—सहज उठते हुए प्रेम के साथ; कत्त पटै—भारी हथियार; वरि चिलै—और बन्धनसहित धनु के साथ रहनेवाले; काळै यीरुहळ्—ऋषभ-सम तरुण वीर; यार्—कौन हो; मत्तम् पटै—मेरे मन को समझाते हुए; अँत्तक्कु उरै वळङ्कुवीर—मुझे उत्तर दो; अँन्ऱान्—(जटायु ने) कहा । १६२

इस तरह जटायु उधेड़वुन में लगे हुए अनेक विचार करते रहे । उन्होंने अनुभव किया, सहज ही उन भयंकर क्रोधशील हथियारधारी वीरों पर प्रेम पैदा हो रहा है । उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण से पूछ ही लिया कि भारी हथियार और बन्धनयुक्त शरासन रखनेवाले वीर ! ऋषभ-सम तरुण तुम लोग कौन हो ? मेरे मन में साफ़ जान हो, ऐसा मुझे प्रत्युत्तर दो । १९२

ॐ वित्तविय कालैयिन् मैय्मै यल्लडु, पुत्तैमलर्त्त तारवर् पुहल्हि लामैयाल्
कत्तैहडल् नंडुनिलड् गाव लाळियान्, वत्तैहळ् उयरदन् मैन्दर् यामन्ऱार् 193

वित्तविय कालैयिन्—जब जटायु ने पूछा, तब; पुत्तै मलर् तार् अवर—सुन्दर पुष्पमाला से अलंकृत उन्होंने; मैय्मै अल्लतु—सत्य के सिवा; पुक्कल्लिलामैयाल्—नहीं बोल सकते, इसलिए; याम्—हम; कत्तै कटल् नैट्टु निलम्—गर्जनशील समुद्र से वलयित इस विशाल भूमि के; कावल—रक्षक; आळियान्—चक्रवर्ती; वत्तै कळल् तयरतन्—वीर-चरण-कंकणधारी दशरथ के; मैन्दर्—पुत्र है; अँन्ऱार्—कहा । १६३

जब जटायु ने यह प्रश्न किया, तब उन्होंने सच्ची बात कह दी । वे सत्य के सिवा असत्य बोलनेवाले नहीं थे । इसलिए उन्होंने बताया कि गरजते सागर से वलयित भूलोक के भर्ता चक्रवर्ती, वीरचरणकंकण-धारी दशरथ के पुत्र है । १९३

ॐ उरैत्तलुम्	पौङ्गिय	वुवहै	वैलैयन्
तरैत्तलै	यिळिन्दवर्त्त	तळुवु	कादलन्
विरैत्तडन्	दारिन्नान्	वेन्दर्	वेन्दन्ऱन्
विरैत्तडन्	दोळिणै	वलिय	वोवैन्ऱान् 194

उरैत्तलुम्-कहते ही; पौङ्किय उवकं वेलैयन्-उमड़नेवाले मोद-सागर के समान जटायु; त्रै तलै इल्लिन्तु-भूमि पर उतर आकर; अवर् तळुवुन् कातलन्-उनको आलिंगन करके प्रेमातुर होकर; विरै तटम् तारित्तान्-सुवासित और बड़ी माला से अलंकृत; वेन्तर् वेन्तन् तन्-राजाधिराज के; वरै तटम् तोळ् इणै-पर्वत-सम बड़े कंधे दोनों; वलियवो-वल से पूर्ण हैं क्या; अन्नुरान्-(जटायु ने) पूछा । १६४

ज्योंही राजकुमारों ने यह उत्तर दिया, त्योंही जटायु के मन में आनन्द उठा और सागर-सा बढ़ गया । वे नीचे भूमि पर उतर आये । उनको गले से लगाकर प्रेम के साथ जटायु ने प्रश्न किया कि सुवासित और बड़ी माला से शोभित राजाधिराज दशरथ की पर्वत-सम विशाल भुजाओं का जोड़ा बल संयुक्त है ? । १९४

ॐ मउक्कमुर्	उाददन्	वाय्मै	कात्तवन्
तुउक्कमुर्	उात्तैन्	विरामन्	चौल्ललुम्
इउक्कमुर्	उात्तैन्	वेक्क	मैय्दित्तान्
उउक्कमुर्	उात्तैन्	वुणर्वु	नीङ्गित्तान् 195

अवन्-वे; मउक्क मुउत्तात-अविस्मरणीय; तन् वाय्मै कात्तु-अपनी वचनसत्यता का; कात्तु-पालन करके; तुउक्कम् उउत्तान्-स्वर्गवासी हो गये; अत्त-ऐसा; इरामन् चौल्ललुम्-श्रीराम के कहते ही; इउक्कम् उउत्तान् अत्त-(दशरथ) मर गये, कहकर; एकम् मैय्दित्तान्-तरस खाकर; उउक्कम् उउत्तान् अत्त-निद्रामग्न हुए जैसे; उणर्वु नीङ्गित्तान्-अचेत हुए । १६५

चक्रवर्तीतनय श्रीराम ने उत्तर दिया कि चक्रवर्ती अविस्मरणीय अपनी सत्यवादिता के संरक्षण में स्वर्गवासी हो गये । ज्योंही श्रीराम ने यह कहा, त्योंही जटायु तरस खाकर निद्रामग्न हुए-से अचेत हो गये । १९५

ॐ तळुविन् रैडुत्तन् तडक्कै यान्मुहम्, कळुविन् रिखरुड् गण्णि तीरित्ताल्
वळुविय तन्तुयिर् वन्द मन्तन्तुम्, अळिवु नैञ्जित् तरउत्ति तान्तरो 196

इखरुम्-दोनों ने; तटम् कैयाल्-विशाल हाथों से; तळुवित्-लपेटकर; अटुत्तन्-उठाया; कण्णिन् तीरित्ताल्-आँखों के जल से; कळुवित्- (जटायु के मुख को) धोया; वळुविय-खोई हुई; तन् उयिर्-अपनी जान को; वन्त मन्तन्तुम्-फिर से प्राप्त करके गृध्रराज भी; अळिवु उरु नैञ्चित्तन्-विगलित मन के होकर; अरउत्तित्तान्-विलाप करने लगे । १६६

श्रीराम और लक्ष्मण ने गिरे हुए उनको अपने हाथों से लपेटकर उठाया । उनकी आँखों से अश्रुजल उनके मुख को धुलाते हुए वहा । तब जटायु की खोयी हुई प्राणता फिर आयी । गृध्रराज विकलमन होकर विलापने लगे । १९६

ॐ परवलरुड् गौडैक्कुनिन्ऱन् इत्तिकुडैक्कुम् बौरैक्कुनैडुम् वण्बु तोउक्क
करवलरुड् गर्पहमु मुडुपतियुड् गडलिडमुड् गळित्तु वाळप्

पुरवलरुदम् पुरवलने पौयप्पहैये मैय्क्कणिये पुहळिन् वाळ्वे
इरवलरु नल्लरुमुम् यानुमिति यन्वडनीत् तेहि नाये 197

पुरवलर् तम् पुरवलते—पालकों के पालक; पौय् पकैये—असत्य के शत्रु; मैय्क्कु अणिये—सत्य के भूषण; पुहळिन् वाळ्वे—यश के वासस्थान; निन् तन्—आपकी; परवलर् अरु—अप्रशंसनीय; कौटैक्कुम्—दानशीलता और; तति कुटैक्कुम्—अद्वितीय छत्र; पौरैक्कुम्—और क्षमाशीलता, इनके सामने; नैटुम् पण्णु तोरु—अपने उच्च गुणों में जो हार गये, वे; करवलर् अरु कर्प्पकमुम्—अवंचक कल्पवृक्ष; उटुपतियुम्—चन्द्र; कटल् इटमुम्—समुद्र की घिरी यह भूमि; कळित्तु वाळ—(अपने प्रतिद्वन्द्वी के अभाव में) गर्व-मोद के साथ रहें, ऐसा; इरवलरुम्—याचक लोग; नल् अरुमुम्—श्रेष्ठ धर्म की; यात्तुम्—और मुझे; इति अन् पट—अब कौन सा दुख भोगने देकर; नीत्तु—हमें छोड़कर; एकिताय्—चले गये । १९७

हे राजाधिराज ! असत्य के शत्रु ! सत्य के भूषण ! कीर्ति के वासस्थान ! आपकी अवर्णनीय दानशीलता, शीतल श्वेतछत्र और क्षमाशीलता के सामने क्रमशः अवंचक कल्पतरु, उडुपति और समुद्र की घिरी भूमि जो हार गयी थी, अब प्रतिद्वन्द्वी से रहित होकर उत्साह के साथ रह रही है । और याचक, श्रेष्ठ धर्म और मैं —तीनों को कौन सा दुख भोगने के लिए छोड़कर आप स्वर्गवासी हुए है ? । १९७

अलङ्गार मैन्वुलहुक् कमुदळिक्कुन् दनिकुडैया याळि शूळ्न्द
निलङ्गाव लटुकिडक्क निलैयाद निलैयुडैये तेय नैञ्जिन्
नलङ्गाण नडन्दनैयो नायहने तीवित्तैये नण्वि नित्तरुम्
विलङ्गात्ते त्तादलिनाल् विलङ्गिने नित्नुमुयिर् विट्टि लेत्ताल् 198

नायकते—नायक; अलङ्कारम् अन्त—साज-शृंगार है ऐसा; उल्लुक्कु अमुतु अळिक्कुम्—(माने जाते हुए, पर असल में) लोकवासियों की कृपासुधा दिलानेवाला; तति कुटैयाय्—अप्रतिम छत्रधारी; आळि चूळन्त निलम् कावल्—समुद्रवलयित पृथ्वी का शासन; अतु किटक्क—वह एक ओर रहे; निलैयात् निलैयुडैयेन्—चंचल स्थिति वाले मेरे; तेय नैञ्चिन् नलम्—प्रेमपूर्ण मन की (सच्चाई) स्थिति; काण ओ—परखने के लिए क्या; नटन्तनै—आप चल बसे; तीवित्तैयेन्—पापी मैं; विलङ्कु आत्तेन्—जानवर रह गया; आत्तलिनाल्—इसलिए; नण्विन् नित्तरुम्—उत्तम मित्रता से; विलङ्किन्तेन्—अलग रह गया; उयिर् विट्टिलेन्—और प्राण नहीं त्यागे । १९८

नायक ! आपका श्वेतछत्र केवल अलंकार की वस्तु नहीं था । सुधासम कृपा बरसानेवाले शासन का प्रतीक था । ऐसे छत्रधारी ! अब समुद्रमेखला भूमि अनाथ हो गयी; वह एक ओर रहे ! क्या आप मेरे मन के प्रेम की स्थिरता की परीक्षा करने के हेतु चले गये क्योंकि मैं चंचलमन हूँ ! मैं पापी हूँ ! जानवर पैदा हुआ हूँ । तभी तो उत्तम मित्रता के अनुरूप उचित व्यवहार से डिगकर अब भी प्राण त्याग किये बिना जीवित रहता हूँ ! । १९८

ॐ तयिरुडैक्कु मत्तैन्तु वुलहैनलि शम्बरनैत् तडिन्द वन्नाळ्
अयिरहिडक्कुड् गडल्वलयत् तवररिय नोयुडल् यानावि यैन्तुच्
चैयिरहिडत्तल् शैय्याद तिरुमन्तत्ताय् शैप्पित्ताय् तिडम्बाय् निन्शौल्
उयिरहिडक्क वुडलैविशुम् बेर्रिना रुणर्विरन्द कूर्रि तारे 199

चैयिर् किटत्तल् चैय्यात्-दोष को स्थान न देनेवाले; तिरु मन्तत्ताय्-पवित्र
मन के स्वामी; तयिर् उटैक्कुम् मत्तु अन्त-दही मथनेवाली मथानी के समान;
उलकै नलि-लोकत्रासक; चम्परने-शंभरासुर को; तटिन्त अ नाळ्-जिस दिन काट
गिराया, उस दिन; अयिर् किटक्कुम्-काले बालू से युक्त; कटल् वलयत्तवर-
समुद्रवलयित भूतलवासियों को; अरिय-जताते हुए; नी उटल् यान् आवि-तुम
(दशरथ) शरीर, मैं प्राण; अन्त-ऐसा; चैप्पित्ताय्-कहा; निन् चोल् तिडम्पाय्-
आप अपना वचन भंग करनेवाले नहीं हैं; उणर्वु इरन्त-भावना न समझ सकनेवाले;
कूर्रितार्-यमदेव भी; उयिर् किटक्क विट्टु-प्राणों को इधर रहने देकर; उटलै-
शरीर, आपको; विचुम्पु एर्रितारे-स्वर्ग पर चढ़ा ले गये । १९९

अकलंक पवित्र मन वाले ! दही को विलोडित करनेवाली मथानी के
समान शंभरासुर लोगों को त्रास दे रहा था । जब आपने उनको मारा,
उस दिन आपने सूक्ष्म काले बालुओं से युक्त समुद्र से वलयित भूमि के सारे
लोगों के सामने उनके जाने, यह कहा कि जटायु तुम प्राण हो, मैं तुम्हारा
शरीर हूँ । आप वचन भंग करनेवाले नहीं हैं । उस भावना की पवित्रता
जड़मति यमदेव नहीं समझ सके । इसलिए प्राण—मुझे छोड़कर, शरीर—
आपको उठा ले गये हैं । १९९

ॐ अल्लुवदो रिशैपेरुह विप्पोळुदे योप्परिय वैरियुन् दीयिल्
विळुवदे निष्कमड मैल्लियलार् तम्मैप्पो निलत्तिन् मेल्वीळ्न्
दळुवदो यानैन्ना वरिवुर्त्ता नैन्वैळुन् दवरै नोक्कि
मुळुवदे लुलहुडैयान् मैन्दन्मीर् केण्मिन्नैन् मुरैयिर् चोन्नान् 200

अल्लुवतु ओर् इच्चै पेरुह-उन्नत यश के बढ़ते; इप्पोळुते-अभी; ओप्पु अरिय-
उपमाहीन; वैरियुम् तीयिल्-जलनेवाली आग में; विळुवते निष्क-गिरना छोड़कर;
मट मैल्लियलार् तम्मै पोल्-अबोध सुकुमारी नारियों के समान; निलत्तिन् मेल्
विळुन्तु-धरती पर गिरकर; यान् अल्लुवतो-मैं रोता रहूँ; अन्ता-कहकर; अरिवु
उर्रान् अन्त-सूझ पा गये हों, ऐसा; अल्लुन्तु-उठकर; अवरै नोक्कि-उनको देखकर;
एळ् उलकु मुळुवतु उटैयान्-सातों लोकों के अकेले स्वामी; मैन्तन्मीर्-(दशरथ के)
पुत्र; केण्मिन्-सुनिष्ट; अन्त-ऐसा; मुरैयिल्-(निम्नोक्त) प्रकार से; चोन्नान्-
बोले । २००

मुझे अभी खूब जलती आग में प्रवेश करके मरना चाहिए, उससे यश
मिलेगा और मैं यशस्वी हो जाऊँगा । वह काम छोड़कर मैं अब अबोध
सुकुमारी नारियों के समान भूमि पर गिरकर रोता-कलपता रहता हूँ ।

क्या यह मुझे सोहता है ? फिर वे सहसा कोई बात सूझ गई हो ऐसे उठे । राजकुमारों को सम्बोधित किया— सातों लोकों के शासक दशरथ के तनयो ! सुनो मेरी बात ! फिर वे निम्नप्रकार से बोले । २००

❀ अरुणन्तुत्त बुदल्वन्त्या नवन्पडर मुलहैलाम् पडर्वं ताळि
इरुण्मोय्म्बु कडत्तुरन्द तयरदस्किन् नुयिर्त्तुणैव तिमैयो रोडुम्
वरुणङ्गळ् विरिहिन्तु कालत्ते वन्दुदित्तेन् कळुहिन् वेन्दन्
तरुणङ्गौळ् पेरौळियीर् शम्बादि पिन्पिन्तुन्द जडायु वैन्तान् 201

तरुणम् कौळ् पेर औळियीर्—तरुणाई से युक्त बड़े तेजोमय; यान्—मैं; अरुणन्तु पुतल्वन्—अरुण का पुत्र हूँ; अवन् पडरम्—वे जहाँ जाते हैं; उलकु अल्लाम्—उन सभी लोकों में; पटर्वेन्—जाने की शक्ति रखता हूँ; इमैयोर् ओट्टुम्—देवों के साथ; वरुणङ्गळ्—अनेक वर्ण-भेद; विरिकिन्तु कालत्ते—जब बँटे उसी (आदि) काल में; वन्दु उतित्तेन्—जनमा, वह मैं; कळुकिन् वेन्तन्—गृध्रराज; चम्पाति—सम्पाति; पिन् पिन्तु—का अनुज; चडायु—जडायु हूँ; इरुळ् मोय्म्बु—(शत्रु रूपी) अन्धकार का बल; कड—नाश करते हुए; आळि तुरन्तु—आज्ञाचक्र-चालक; तयरत्तु—दशरथ का; इन् उयिर् तुणैवन्—प्राण-प्यारा मित्र हूँ; वैन्तान्—कहा । २०१

तरुण तेजोमय वीर ! मैं अरुण का पुत्र हूँ । अरुण जहाँ चलते हैं, उन सभी स्थानों में जाने की मेरी शक्ति है । देवों के साथ जिस दिन सभी विविध जातियों के जीवों का प्रादुर्भाव हुआ, उसी प्राचीनकाल में मेरा जन्म हो गया । गीधों के राजा सम्पाति का अनुज हूँ मैं । शत्रु रूपी अन्धकार को नाश करते हुए जिन्होंने आज्ञाचक्र चलाया, उन दशरथ का प्राण-प्यारा मित्र हूँ । २०१

[इसके बाद पाँच पद्य पाये जाते हैं, जो क्षेपक माने जाते हैं । उनमें जडायु की वंशावली का विवरण पाया जाता है । जानकारी हेतु उनका सार यहाँ दिया जाता है— दक्ष प्रजापति की पचास उभरे उरोजों वाली सुताओं में तेरह पुत्रियों से काश्यप का विवाह हुआ । उनमें अदिति ने तैंतीस करोड़ देवों को जन्म दिया । कजरारी आँखों वाली दिति ने दुग्ने दैत्यों को जनाया ।

दनु ने दानवों को, मति ने अपने अवयवों से मनुष्य की जातियों को और सुरभी ने धेनु, अश्व और अन्य जानवरों को पैदा किया । क्रोधवशा ने गर्दभ, मृग, उष्ट्र आदि को पैदा किया ।

अभ्रकुंतला विनता से वज्र, अरुण, वैन्तेय (गरुड़), उल्लू-गीध आदि बड़े-बड़े पक्षी जनमे । ताम्रा ने गौरैया, तीतर, बटेर आदि पक्षियों को जन्म दिया । कळ्ळा नाम की कोमलांगी ने तरु, लता आदि को जन्म दिया ।

कडू ने फनियों और व्यालों को जन्म दिया । सुधा से भुजंग उत्पन्न

हुए। अरिष्ठा द्वारा गिरगिट, घोरपड़ आदि आये। इला ने जलचरों को जन्म दिया।

अदिति, दिति, दनु, अरिष्ठा, सुधा, कळा, सुरभी, विनता, मति, इला, कद्रू, क्रोधवशा और ताम्रा—इन स्त्रियों ने ये सब जीव-जन्तु पैदा किये। विनता-सुत अरुण ने रम्भा से विवाह किया और हम भूमि पर पैदा हुए।]

ॐ आण्डवन्ती दुरैशैय्य वज्जलित्त मलर्क्कैया रत्नवि त्तोडुम्
मूण्डपेडरुन् दुन्बत्तान् मुडैमुडैयि निरैमलर्क्कण् मौयत्त नीरार्
पूण्डपेरुम् बृहन्निरुवित् तम्बोरुट्टाड् पौन्तुलहम् पुक्क तादे
मीण्डनन्वन् दानवन्तैक् कण्डन्तरे यौत्तन्तर्क् विलङ्गड् रोळार् 202

आण्डु-वहाँ; अवन्-उनके; ईतु उरै चैय्य-यह कहते ही; विलङ्कल् तोळार्-पर्वत-सम कंधों वाले; अज्जलित्त मलर् कयार्-अज्जलिबद्ध कमल-हस्त (वाले); अन्नपित् ओटुम्-प्रेम के साथ; मूण्ड-बढ़नेवाले; पेरुम् तुन्पत्ताल्-बड़े दुख से; मुडै मुडैयिन्-उत्तरोत्तर; मलर् कण् निरै-कमल-सम आँखों में भर आनेवाले; मौयत्त नीरार्-अधिक अश्रुजल के साथ; पूण्ड पेरुम् पुक्क निरुवि-अपना धृत बड़ा यश इधर स्थापित करके; तम् पौरुट्टाल्-अपने कारण; पौन् उलकम् पुक्क-स्वर्ग (स्वर्ग) लोक जो गये, उन; तातै-अपने पिता ही; मीण्डन् वन्तान् अवन्-लौट आये जो, उनको; कण्डन्तरे यौत्तन्तर्-देख लिया हो, ऐसा हुए। २०२

जब जटायु ने यह वृत्तान्त कहा, तब पर्वत-सम कंधों वाले श्रीराम और लक्ष्मण ने अपने कमल-हाथ जोड़ लिये। स्नेह-विह्वल उनकी आँखों से अश्रुकण बारी-बारी से भर आये। उनकी स्थिति ऐसी हो रही, मानो वे दशरथ से ही प्रत्यक्ष मिल रहे हों, जो अब स्वर्ग से अपने उन पुत्रों को देखने के लिए लौट आये हों जिनके (वियोग के ही) कारण वे इस संसार में बड़ा यश स्थापित करके स्वर्गवासी हो गये थे। २०२

ॐ मरुविन्निय कुणत्तवरै यिरुशिरुहा लुउत्तळुवि मक्का णीरे
उरियकडन् वित्तैयेड्कु मुदवुवी रुडलिरण्डुक् कुयिरौन् ज्ञानान्
पिरियवून्दान् पिरियादे यिनिदिरुक्कु मुडड्पौरैयाम् वीळै पारा
तैरियदन्ति लिन्रैपुक् किडवेने लित्तुयर् मडवे नैन्जान् 203

मरुवु इत्तिय—अपनाने-योग्य मधुर; कुणत्तु अवर्-स्वभाव वाले उनको (श्रीराम आदि को); इरु चिरकाल्-अपने दोनों पक्षों से; उउ तळुवि-आलिंगन करते हुए; मक्काळ्-पुत्रो; नीरे-तुम ही; वित्तैयेड्कुम्-पापी मेरा भी; उरिय कटन्-आवश्यक शक्कम्; उतवुवीर्-करा दो; उटल् इरण्डुक्कु-दो शरीर का; उयिर् ओन्नु आनान्-जो प्राण एक रहे; पिरियवुम्-उनके मरने पर; तान् पिरियाते-खुद मरे वगैर; इत्तितु इरुक्कुम्-सुख से जीता रहने का; उटल् पौरै आम्-शरीर-वहन का; वीळै पारातु-दुख देखते हुए; अरि अतत्तिल्-आग में; इन्डै-अभी; पुक्कु-प्रवेश कर; इडवेन् एल्-न मरुगा तो; इ तुयर्म् मडवेन्-यह दुख भूल नहीं पाऊंगा। २०३

पश्चात् जटायु ने अपना योग्य अच्छे गुणों वाले उन कुँअरों को अपने विशाल पक्षों के अन्दर लेते हुए आलिंगन किया और कहा कि पुत्रो ! मैं बड़ा पापी हूँ । मेरा भी शव-संस्कार कर दो । यह मेरे प्रति उपकार होगा । दशरथ मेरे और उनके दोनों शरीरों का एकप्राण-सम रहे । उनकी मृत्यु होने के बाद मैं विना मरे यह शरीर ढोता रहूँ, यह मेरे लिए असह्य है ! यह शरीरभार-बहन-दुख दूर करने के लिए आग में प्रवेश करके अभी मर जाऊँगा । नहीं तो यह वेदना भूल नहीं सकूँगा । २०३

ॐन्नु रैत्त वैरुवै यरशन्त, तुन्नु तारवर् नोककित् तौळुवुहण्
औन्नु मुत्त मुर्मुर् यायुह, निन्नु मर्इन्नु नीर्मे निहळत्तिनार् 204

औन्नु उरैत्त-ऐसा कहनेवाले; अरुवै अरचत्तै-गृध्रराज को; तुन्नु तार् अवर्-घनी माला से अलंकृत श्रीराम और लक्ष्मण; तौळु-विनय करके; कण् औन्नुम्-आँखों में लगी; मुत्तम्-मुक्तापंकित-सम अश्रुकण; मुर् मुर्याय्-क्रम से; उक-टपके, ऐसा; निन्नु-जटायु के सामने स्थित होकर; इन्नु नीर्मे-इस प्रकार से; निहळत्तिनार्-बहस की । २०४

जब गृध्रराज जटायु ने अपना यह संकल्प सुनाया, तब मनोरम माला-धारी श्रीराम और लक्ष्मण शोकाकुल हुए । आँखों से मोतियों के समान अश्रुकण बहाते हुए उन्होंने जटायु के सामने खड़े होकर यों कहा । २०४

ॐय्विडत् तुदवर् कुरिया नुन्दन्, मैय्वि डक्करु दादुविण् णेरिनान्
इव्वि डत्तिनि लैम्वैरु माअनैमैक्, कैवि डिर्पितै यार्कळै कण्णुळार् 205

उय्वु इट्त्तु-रक्षा के अवसर पर; उतवर्कु उरियातुम्-रक्षा करनेवाले चक्रवर्ती भी; तन् मैय् विट करतातु-अपना वचन-परिपालन छोड़ना न चाहकर; विण् एरितान्-स्वर्गवासी हुए; इ इट्त्तिन्निल्-इस स्थान (जंगल) में; अम् पैरुमा अन्-हमारे नाथ; अम् कै विटिल्-हमको असहाय छोड़ जाएँगे तो; पितै-फिर; कळै कण् उळार्-हमारे अवलम्ब (सहायक) रहनेवाले; यार्-कौन है । २०५

तात ! हमारी सहायता और रक्षण करने का भार जिन पर स्वयमेव था, वे हमारे सहायक और नाथ अपने वचन को छोड़ना न चाहकर स्वर्ग-वासी हो गए । हे हमारे नाथ ! यहाँ इस जंगल में आप भी हमें निस्सहाय करके छोड़ेंगे तो हमारे आधार कौन है ? । २०५

ॐयि नीड्गरुन् दन्दैयिर् उण्णहर्, वायि नीड्गि वनम् वुहुन् दैय्दिय
नोयु नीड्गिन नुन्निनैन् नैङ्गळै, नोयु नीड्गुदि योर्नैडि नीड्गलाय् 206

नैडि नीड्कलाय्-धर्म-मार्ग से न हटनेवाले; नीड्कु अरु-जिनसे अलग होना कठिन है, उन; तायित्त-माता से; तन्तैयिल्-पिता से; तन् नकर् वायिन्-अपने नगर के द्वार से; नीड्कि-अलग होकर; वत्तम् पुकुन्नु-जंगल में प्रवेश करके; अय्यित्तिय-अब तक जो हमने भुगता है; नोयिन्-उस दुख से; नुन्तिन्-आपके मिलने

के कारण; नीङ्किर्त्तम्-विमुक्त हुए; अङ्कळ-ऐसे हमको; नीयुम्-आप भी; अन् नीङ्कुतियो-क्यों छोड़ जाएँगे । २०६

हे धर्म से कभी न हटनेवाले ! जिनसे अलग होना कठिन है उन माता से, पिता से और अपने नगर के द्वार से अलग होकर हम इधर आए । उससे हमारे मन में जो व्यथा हुई उससे, आपको देखने के बाद हम मुक्त हो पाये । इस स्थिति में आप हमें क्यों छोड़कर जायेंगे ? । २०६

ॐ अन्तु शौल्ल विरुन्दळि नैञ्जितन्, निन्तु वीररै नोक्कि नितैन्दवन्
अन्तु दैन्ति लयोत्तियि लैयनीर्, शैन्तु पिन्तवर् चेरुवैन् यानैन्तान् 207

अन्तु शौल्ल-ऐसा (श्रीराम और लक्ष्मण के) कहने पर; इरुन्तु अळि नैञ्चितन्-जो दुख से विगलित मन वाले रहे, उन जटायु ने; निन्तु वीररै-सामने खड़े रहे वीरों को; नोक्कि-देखकर; नितैन्तवन्-विचार करते हुए; अतु अन्तु अँतिन्-वह तुमको (पसन्द) नहीं तो; ऐय नीर्-प्यारो; नीविर्-तुम लोगों के; अयोत्तियिल् चैन्तुपिन्-अयोध्या में लौट जाने के बाद; यान् अवन् चेरुवैन्-मैं उनके पास जाऊँगा; अँन्तान्-कहा । २०७

जब श्रीराम और लक्ष्मण ने दुख के साथ अपनी यह बात कही, तब व्याकुलता से निर्बल हुए मन के जटायु ने उनको देखा और कुछ सोचा । फिर मन बदलकर उन्होंने कहा कि पुत्री ! अगर मेरा मरना आपको ठीक नहीं लगता तो लो मेरे प्यारो ! तुम्हारे अयोध्या लौट जाने के बाद मैं अपने मित्र के पास जाऊँगा । २०७

ॐ वेन्तन् विण्णडैन् दानैन्तिल् वीरर्नीर्, एन्तु आल मिन्दिळि यादिवण्
पोन्द दैन्तै पुहुन्दवैन् बुन्दिपोय्क्, कान्तु हिन्तु कट्टुरै यीरैन्तान् 208

वेन्तन्-चक्रवर्ती; विण् अँन्तान् अँतिल्-स्वर्ग सिंघार गये तो; वीरर् नीर्-वीर तुम; एन्तु आलम्-भरणयोग्य राज्य को; इन्तु अळियातु-सुख से पालन किये बिना; इवण्-यहाँ; पोन्ततु अँन्तै-आये क्यों; अँन् पुन्ति-मेरा मन; पोय्-अस्थिर होकर; कान्तुकिन्तु-दुखतप्त होता है; पुकुन्त अँन्-बीच में हुए कौन से; कट्टुरैयीर्-समझाकर कहो; अँन्तान्-पूछा । २०८

फिर जटायु को विचार आया कि ये जंगल क्यों आये हैं ? उन्होंने पूछा कि चक्रवर्ती स्वर्गवासी हुए तो वीर तुम्हारा कर्तव्य था कि भरण योग्य राज्य का पालन करो । पर सन्तोष के साथ राज्य-पालन करना छोड़कर यहाँ क्यों आये हो ? मेरा मन इधर-उधर भटककर दुखतप्त है ! क्या अनर्थ बीच में आये ? खूब खोलकर कहो । २०८

ॐ तेवर् तात्तवर् तिण्डिड ताहर्वे, रेव राह विडरिळैत् तारैन्तिल्
पूव रावु पौलङ्गदिर् वेलिनीर्, शाव राक्किन् तरुवै नरशैन्तान् 209

पू अरावु-रेतकर तेज किए हुए; पौलन् कतिर् वेलिनीर्-स्वर्ण-सम कान्ति

छिटकानेवाले भालों का धारण करनेवाले; तिण् तिडल्-कठोर शक्तिमन्त; तेवर्-देव हों चाहे; तातवर्-दानव; नाकर्-नागलोक-वासी; वेड् एवर् आक्-अन्य कोई भी हों; इटर् इळत्तार् अँतिल्-दुख दिया हो तो; चावर् आक्कि-उनको मृतक बनाकर; अरच्चु तरुवैन्-राज्य दिला दूंगा; अँन्नान्-कहा । २०६

खूब रेतकर तीक्ष्ण और स्वर्ण-सम कान्ति देनेवाले भाले के धारक कुँअर ! आपको देवों ने कण्ट दिया हो, चाहे दानव; नागलोकवासी हों या और कोई —कहो कि अमुकों ने कण्ट दिया तो उनको मृतक बनाकर आपको राज्य दिला दूंगा । २०९

ॐ तादै कूडलुन् दम्बियै नोक्किनान्, शीदै केळ्व तवनुन्दन् शिड्डवै
माद राल्वन्द शैय् है वरम्बिला, ओद वैलै यौळिविन् रुणर्त्तित्तान् 210

तातै फूरलुम्-पिता के कहने पर; चीतै केळ्वतुम्-सीतापति ने भी; तम्बियै नोक्कितान्-अनुज को देखा; अवतुम्-उन्होंने भी; तन् चिड्डवै मातराल्-अपनी छोटी माता देवी कैंकेयी द्वारा; वन्त चैय्कै-किया हुआ कार्य; वरम्पु इला ओत-जो निस्सीम घोपयुक्त; वैलै-दुख-सागर था वह; औळिवु इन्ड-बिना अन्तर के; उणर्त्तित्तान्-बताया । २१०

जब पिता-सम जटायु ने यह वचन कहा तब सीतापति ने अपने अनुज के प्रति अर्थभरी दृष्टि फेरी । लक्ष्मण ने भी अपनी सौतेली माता देवी कैंकेयी के कृत्य का घोपपूर्ण समुद्र-सा दुखवृत्तान्त पूर्ण रूप से, बिना कुछ छोड़े-छुड़ाये, कह सुनाया । २१०

ॐ उन्दै युण्मैय नाक्कियुन् शिड्डवै, तन्द शौल्लैत् तलैक्कौण्डु तारणि
वन्द तम्बिक् कुदविय वळ्ळले, अँन्दै वल्ल दियावर्वल् लारैन्ना 211

उन्तै उण्मैयन् आक्कि-अपने पिता को सत्यनिष्ठ बनाकर; उन् चिड्डवै तन्त चौल्लै-अपनी सौतेली माता की आज्ञा; तलै कौण्डु-सिर पर धारण करके; तारणि-(अपने स्वत्व के) राज्य को; वन्त तम्बिक्कु-अपने अनुज भरत को देकर; उतविय-उपकार करनेवाले; वळ्ळले-दानी प्रभु; अँन्तै वल्लतु-मेरे तात (तुम) जो कर सके; यावर् वल्लार्-ऐसा कौन कर सकता है; अँन्ना-कहकर । २११

यह सुनकर जटायु ने साधुवाद दिया ! हे राम ! तुमने अपने पिता को सत्यसंध बनाया और अपनी सौतेली माता की आज्ञा शिरोधार्य करके धरणी को अपने कनिष्ठ भ्राता के पास सौंप दिया ! तुम दानियों में श्रेष्ठ दानी हो ! हे मेरे तात ! हा ! मेरा पुत्र जो कर चुका वह कौन कर सकता है ? । २११

ॐ अल्लित्	तामरैक्	कण्णनै	यन्बुडप्
पुल्लि	मोन्द	पौळिन्दकण्	णीरित्तन्

वल्लै	मैन्दवम्	मन्तैयु	मैन्तैयुम्
अँल्लै	यिल्पुह	ळैय्दुवित्	तार्यैन्तान् 212

अल्लि तामरै कण्णत्तै-पंखुडियों सहित कमल-सम आँखों वाले श्रीराम को; अन्नु उर पुल्लि-प्रेम के साथ आलिंगित करके; मोन्तु-माथे पर चूमकर; पौळिन्त कण् नीरित्तन्-अश्रु बहानेवाले नेत्रों-के साथ; मैन्त-पुत्र; अ मन्तैयुम्-उन चक्रवर्ती को; अँन्तैयुम्-और मुझे भी; अँल्लै इल् पुकळ्-असीम यश; अँय्तुवित्ताय्-दिला दिया; वल्लै-तुम समर्थ हो; अँन्तान्-कहा (जटायु ने) । २१२

जटायु ने हर्षातिरेक से पद्मदलाक्ष श्रीराम को गले लगाया और सिर सूँघा (माथा चूमा) । आँखों से आनन्दबाष्प बहाते हुए जटायु ने कहा— पुत्र ! तुमने चक्रवर्ती को और मुझे, दोनों को अपार यश दिला दिया ! तुम बड़े समर्थ हो ! । २१२

❀ पित्त रुम्प पेरियवन् पय्वळै, अन्त मन्त वणङ्गिनै नोक्किन्नान्
मन्तर् मन्तवन् मैन्दविव् वाणुदल्, इन्त ळैन्त वियम्बुदि यालैन्तान् 213

पित्तरुम्-फिर भी; अ पेरियवन्-उन बड़े ने; पय्वळै-कंकणधारिणी; अन्तम् अन्त-हंसिनी-सदृश; अणङ्कितै-देवी सीता को; नोक्किन्नान्-देखकर; मन्तर् मन्तवन् मैन्त-राजाधिराज के पुत्र; इ वाळ् नुतल्-यह उज्ज्वल ललाट वाली; इन्तळ्-अमुक (कौन) है ऐसा; इयम्पुत्ति-बतलाओ; अँन्तान्-कहा । २१३

फिर भी उन वृद्ध जटायु ने कंकणधारिणी मरालीतुल्य देवी सीता को देखा और श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र ! यह उज्ज्वल ललाट वाली कौन है ? यह बताओ । २१३

अल्लि	इत्तन्	ताडहै	यादिया
विल्लि	इत्तड्	गरिवैयै	मेलैनाळ्
पुल्लु	इत्तदि	यावुम्	बुहन्ऋतन्
शौल्लि	इत्तनन्	रौन्ऋत्तिन्	रौन्ऋत्तान् 214

तोन्ऋत् पित् तोन्ऋत्तान्-श्रीराम के अनुज (लक्ष्मण) ने; मेलै नाळ्-पहले, आरम्भ में; अल् इऋत्तु अन्-अन्धकारालय-सी; ताडकै आतिया-ताड़का (वृत्तान्त) आदि; विल् इऋत्तु-धनुर्भंग करके; अङ्कु-उधर; अरिवैयै-सीतादेवी से; पुल्लु इऋत्तु-विवाह करना; यावुम् पुक्कन्-सभी सुनाकर; तन् चोल् इऋत्तन्-अपना कथन पूरा किया । २१४

तब श्रीराम के अनुज लक्ष्मण ने सारा श्रीराम-चरित सुनाया । अन्धकार के आगार-सी ताड़का का वध, मिथिला में शिव-धनुष तोड़ना, सीताजी का विवाह आदि सभी घटनाएँ वर्णन करके श्रीलक्ष्मण ने अपना कथन समाप्त किया । २१४

केट्टु वन्द किळरीळि मोलियान्, तोट्ट लङ्गलि नीरुत्तुन् दीरुवळम्
नाट्टु नीरिनि नण्णुदल् कारुमिक्, काट्टिल् वैहुदिर् काक्कुवैन् यान्त्तुन् 215

केट्टु उवन्त-मुनकर आनन्दित हुए; किळर् ओळि मोलियान्-वर्धनशील प्रभा
के किरीट के धारी; तोट्ट अलङ्कलिनीर्-पुष्पमाला वाले; वळम् तुत्तुन्तीर्-धन-समृद्धि
छोड़ आये हो; नाट्टु-अपने राज्य में; नीर् इत्ति नण्णुतल् कारुम्-तुम लोगों के आगे
पहुँचते तक; इ काट्टिल् वैकुतिर्-इस जंगल में रही; यान् काक्कुवैन्-मैं रक्षा
करूँगा; यान्त्तुन्-कहा । २१५

जाज्वल्यमान किरीट से शोभायमान जटायु ने तुष्ट होकर वादा
किया कि हे पुष्पदलमाला-धारी वीरो ! तुम लोग धन आदि वैभव त्यागकर
आये हो ! जब तक तुम अयोध्या लौट नहीं जाओगे, तब तक इसी वन में
वास करो । मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा । २१५

इरैव वैण्णि यहत्तिय नीन्डुळ, तरैयु नन्मणि याऽऽऽ तहन्गरैत्
तुरैयि नुण्डीरु शूळलच् शूळलपुक्, कुऽऽऽ मन्त्तुन् नुळ्ळत् तुरैह्वान् 216

उळ्ळत्तु उरैकुवान्-अन्तर्यामी भगवान श्रीराम; इरैव-नाथ; अकत्तियन्-
अगस्त्य का; वैण्णि-विचारकर; ईन्तु उळ्ळत्तु-वतलाया हुआ स्थान; अरैयुम्
नल् मणि-कलरवयुक्त सुन्दर; याऽऽऽ अकन् करै-गोदावरी नदी के विशाल तट पर;
ओरु चूळल् उण्टु-एक स्थान है; अ चूळल् पुक्कु-उस स्थान में जाकर; उरैतुम्-
रहेंगे; मन्त्तुन्-कहा । २१६

सर्वान्तर्यामी भगवान श्रीराम ने उत्तर में कहा कि हे नाथ ! अगस्त्य
ने वासयोग्य कोई स्थान बताया है । वह कलरव सहित बहनेवाली श्रेष्ठ
गोदावरी नदी के विशाल तट पर स्थित एक स्थान है । वहीं जाकर हम
वास करेंगे । २१६

✽ पैरिडु नन्डप् पैरुन्दुऽ वैहिनीर्, पुरिदिर् मादवम् वोडुमिन् यान्दु
तैरिवु इत्तुवै नन्डवर् तिण्शिऽ, विरियु नोळलिल् मेवविण् शेन्त्तुन् 217

पैरितुम् नन्ड-बड़ा अच्छा है; नीर् अ पैरुन् तुरै वैकि-तुम उस नदी के श्रेष्ठ
घाट पर रहकर; मा तवम् पुरितिर्-महान तप करो; पोतुमिन्-चलो; यान् अतु
तैरिवुऽत्तुवैन्-मैं वह स्थान दिखाऊँगा; नन्ड-कहकर; तिण् चिरै निळलिल्-बलवान
अपने पक्षों की छाया में; अवर् मेव-उनको आने देते हुए; विण् चैन्त्तुन्-आकाश
में उड़ता चला । २१७

जटायु ने उसे उचित समझा । कहा कि वह स्थान अवश्य बड़ा
अच्छा है । तुम उसी घाट पर जाकर रहो और बड़ी तपस्या करो ।
चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा और वह स्थान दिखा आऊँगा । वे
आकाश पर उड़ते चले और उनके बलवान और विशाल पक्षों की छाया के
नीचे श्रीराम आदि सुख से गये २१७

❖ आय शूल लङ्घ्य वुणर्त्तिय, तूय शिन्दैयत् तोमिल् गुणत्तवन्
पोय पित्तैप् पौरुशलै वीररुम्, एय शोलै यिनिदुशैन् रेय्दिनार् 218

आय चूल्ल-उस (पंचवटी के) स्थान को; अङ्घ्रिय उणर्त्तिय—समझा-बुझाकर;
अ तूय चिन्तै-वे पवित्रमन; तोम् इल् कुणत्तु-निर्मल गुणों वाले; अवन्-वे जटायु;
पोय पित्तै-चले गये, उसके बाद; पौरु विलै वीररुम्-युद्धोपयोगी धनुओं के स्वामी
श्रीराम आदि; एय चोलै-वहाँ रहनेवाले एक उपवन में; इत्तितु चैन्ऱु अय्त्तिनार्-
सुख से जाकर रहे । २१८

उस स्थान, पंचवटी को दिखाकर और उसके सम्बन्ध में समझाकर
पवित्रमन और उत्तम, निर्मल गुणों वाले जटायु चले गये । उसके बाद
युद्धोपयोगी धनुष के रखनेवाले दोनों वीर देवी सीता के साथ वहाँ स्थित
एक उपवन में गये । २१८

❖ वारप्पौर् कौङ्गै मरुहियै मक्कळै
एरप्पच् चिन्दनै यिट्टव् वरक्कर्दम्
शोरप्पैच् चिक्करुत् तेरिन्नन् शेक्कैयिल्
पारप्पैप् पारक्कुम् बरवैयिर् पारक्किन्ऱान् 219

अ अरक्कर् तम् चीरप्पै-वहाँ के राक्षसों की बलविशिष्टता को; चिक्कु अर-
संशय के बिना; एरप्-खूब; चिन्ततै इट्टु-सोचकर; तेरिन्नन्-जो निश्चित रूप
से जानते थे, वे जटायु; वार पौन् कौङ्कै-अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली; मरुहियै-
पुत्रवधू सीताजी को; मक्कळै-और अपने पुत्रों को; शेक्कैयिल् पारप्पै पारक्कुम्-
घोंसलों में पोटों की देखरेख करनेवाली; बरवैयिल्-मादा पक्षी के समान;
पारक्किन्ऱान्-देखते रहे । २१९

जटायु राक्षसों के बल का पूरा ज्ञान रखते थे । उन्होंने खूब सोचा
और मन में धारणा बना ली (कि इनकी रक्षा का खूब ध्यान रखना
आवश्यक है) । अतः वे अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली पुत्रवधू सीताजी
और दोनों कुमारों पर, सावधानी से अपने बच्चों की देखरेख करनेवाली
मादा पक्षी के समान उन पर निगरानी रखते थे । २१९

5. शूर्पणहैप् पडलम् (शूर्पणखा पटल)

पुवियित्तुक् कणिया यान्ऱ पौरुडन्ऱु पुलत्तिर् झाहि
आवियहत् तुरैह डाङ्गि यैन्दिणै नैरियळाविच्
चवियुत्त तैळिन्ऱु तण्णैन् नौळुक्कमुन् दळुविच् चान्ऱोर्
कवियेनक् किडन्ऱु कोदा वरियिनै वीरर् कण्डार् 220

पुवियित्तुक्कु अणियाय्-भूलोक का शृंगार (भूषण) बनकर; यान्ऱ पौरुड-
तन्तु-श्रेष्ठ वस्तुएँ (पुरुषार्थ) प्रदान करते हुए; पुलत्तिर् आकि-खेतों (बुद्धि) का

पोषक रहकर; अवि अक तुरैकळ् ताड्कि-अपने में बने हुए अनेकों घाटों के साथ (प्रसादगुणपूर्ण अनेक कथाप्रसंगों के साथ); ऐ तिणै नैडि अळ्वावि-पाँचों भूभागों पर से बहती हुई (पाँचों अंगों का वर्णन करती हुई); चवि उर तैळिन्तु-छविमान रूप से साफ़ रहते हुए (जल्दी समझ में आकर ज्ञान दिलानेवाले रूप से साफ़ रहते हुए); तण् अँन्ऱु ओळ्क्कमुम् तळ्ळुवि-शीतल धारा-प्रवाह के साथ (रम्य शैली के साथ); चान्ऱोर् कवि अँन्-उत्तम कवियों के काव्य के समान; किटन्त-दृश्यमान; कोतावरियिन्ने-गोदावरी नदी को; वीरर् कण्टार्-वीरों ने देखा । २२०

(इस पद में गोदावरी नदी और उत्तम कवि के रचे काव्य का श्लिष्ट वर्णन है ।) वीरों (सीताजी के साथ श्रीराम और लक्ष्मण) ने उस गोदावरी को देखा, जो उत्तम कवि के रचे काव्य के समान पड़ी (बहती) थी ।

[भुवि का शृंगार, चारों पुरुषार्थों का दायक, बुद्धि का पोषक, शृंगार रस के सुन्दर उपांगों के प्रसंगों का वर्णनकारी, (शृंगार) रस भरे काव्य के प्रधान अंगों का (तिणै) चित्रण करनेवाला, मनोहारी छटा के साथ स्वच्छ और शीतल प्रवाहमयी शैली के साथ रहनेवाले उत्तम कवि के काव्य के समान भुवि का शृंगार बनकर अनेक पदार्थों को देती हुई या पैदा करने में सहायता देती हुई, खेतों की पोषक, ताप शान्त करनेवाले अनेक घाटों से युक्त, पाँचों (पर्वत, वन, नदी की कछार, समुद्र तट और मरु के) प्रदेशों से होकर सुन्दर रूप से स्वच्छ और शीतल सुखावह प्रवाह के साथ बहनेवाली गोदावरी नदी को वीरों ने देखा ।]

[पौरुळ्-पुरुषार्थ या पदार्थ; पुलम्-बुद्धि (ज्ञान) या खेत; तुरैहळ्-शृंगार-रस-कथा के उपांगों का वर्णन या घाट; तिणै-प्रधान भाग, प्रधान भूभाग] । २२०

वण्डुर्	कमलच्	चव्वि	वाण्मुहम्	बौलिय	वाशम्
उण्डुर्	कुवळै	यौण्ग	णौरुङ्गुर्	नोक्कि	यूळिन्
तैण्डिरैक्	करत्तिन्	वारित्	तिरुमलर्	तूविच्	चैल्वर्क्
कण्डडि	पणिव	दैनन्प्	पोलिन्ददक्	कडवुळ्	यारु 221

अ कटवुळ् यारु-वह दिव्य नदी; चैल्वर् कण्टु-उन श्रीमानों को देखकर; वण्टु उरै कमलम्-अलिकुलावृत कमल रूपी; चव्वि वाळ् मुकम्-सुन्दर उज्ज्वल मुख; पौलिय-आनन्द से शोभित करके; वाचम् उण्टु-सुगन्धियुक्त; उरै-वहाँ रहनेवाले; कुवळै ओण् कण्-कुवलय रूपी प्रमापूर्ण आँखों से; ओरुङ्कु उर नोक्कि-एकाग्रता से खूब देखकर; अळिन् तैळ् तिरै करत्तिन्-क्रम से उठनेवाली तरंग रूपी हाथों से; तिरु मलर् वारि-सुन्दर पुष्पों को लेकर; तूवि-बरसाकर; अटि पणिवतु अँन्त-चरणों पर विनत हो रही हो, ऐसा; पौलिन्तु-दर्शनीय रही । २२१

उस दिव्य नदी ने उन श्रीमंत कुमारों को देखा तो उसका अलिकुल-कलित कमल रूपी मुख विकसित हुआ । वह सुवासित वनप्राय कुवलय रूपी

आँखों द्वारा देखते हुए क्रमानुक्रम में उठनेवाली स्वच्छ तरंगों रूपी हाथों से पुष्पों को लेकर उनके चरणों पर डालते हुए प्रणमन कर रही हो —ऐसा लगा । २२१

अल्लुवुरु	कादलारि	निरैत्तिरैत्	तेङ्गि	येङ्गिप्
पल्लुवनाद्	कुवळैच्	चैव्विक्	कण्बनि	परन्तु
वल्लुविला	वाय्मै	मैन्दर्	वत्तत्तु	नोक्कि
अल्लुवतु	मौत्त	दालव्	वलङ्गु	नीराळु
				मत्तु 222

अलङ्कु नीर्-हिलती बहनेवाली जलधारा की; अ आरु-वह नदी; वल्लु इला वाय्मै मैन्तर्-अचल सत्यसंघ उन कुमारों का; वत्तत्तु उरै वरत्तम् नोक्कि-वनवास का दुख देखकर; अल्लु उरु कातलात्-उठे हुए प्रेम के साथ; इरैत्तु इरैत्तु-लम्बी साँस लेते-लेते; एङ्कि एङ्कि-तरस खाते-खाते; पल्लुव-वन-सम घने; नाळ् कुवळै-उसी दिन विकसित कुवलय रूपी; चैव्वि कण्-आकर्षक आँखों से; पत्ति-जलकण; परन्तु चोर-बरसाकर बहाते हुए; अल्लुवतु औत्ततु-रोती हो, ऐसा लगी । २२२

वह हिलती हुई बहनेवाली नदी सत्यनिष्ठ उन वीरों के वनवास-जनित दुख को देखकर लम्बी आहें भरते हुए तरस के साथ रो रही हो, ऐसा भी लगा । उनके वनप्राय कुवलय रूपी नेत्रों में हिमकण दिखाई दिये । २२२

नाळङ्गो	णळित्तप्	पळ्ळि	नयत्तङ्ग	ळमैय	नेमि
वाळङ्ग	ळुदैव	कण्डु	मङ्गैतन्	कौङ्गै	नोक्क
नीळङ्गौळ्	शिलैयोन्	मङ्गुन्	नेरिळै	नैडिय	नम्बि
तोळित्तुग	णयत्तम्	वैत्ताळ्	शुडर्मणित्	तडङ्गळ्	कण्डाळ् 223

नीळम् कौळ् चिलैयोन्-दीर्घ धनु के धारक श्रीराम ने; नाळम् कौळ्-नाल सहित; नळित्त पळ्ळि-कमल रूपी शय्या पर; नयत्तङ्कळ् अमैय-आँखें उन्मीलित करके; नेमि वाळङ्कळ्-चक्रवाक पक्षियों को; उदैव कण्डु-रहते देखकर; मङ्कै तन् कौङ्कै नोक्क-देवी के स्तनों पर दृष्टि लगाई, तब; अ नेरिळै-उन आभरणभूषिता देवी ने; चूटर् मणि-कान्तियुक्त नीले रत्नों से भरे; तडङ्कळ् कण्डाळ्-टीलों को देखकर; नैडिय नम्बि-उन्नत नायक श्रीराम के; तोळित्तु कण्-कंधों पर; नयत्तम् वैत्ताळ्-आँखें डालीं । २२३

(पति-पत्नी दोनों विविध दृश्य देखते हैं और परस्पर अर्थभरी निगाहें डालकर रसानुभव प्राप्त करते हैं ।) दीर्घ-धनुर्धर श्रीराम ने कमलों पर आँखें उन्मीलित करते हुए चक्रवाक पक्षियों के जोड़े को देखा और अपनी अर्द्धांगिनी के उरोजों पर दृष्टि चलायी । तो श्रेष्ठ आभरणालङ्कृता सीताजी ने उज्ज्वल नीले रत्नों से युक्त बालू के टीलों को देखा और सहज रूप से अपनी दृष्टि श्रीराम के सुडौल दीर्घ कंधों पर डाली । २२३

ॐ ओदिम मीदुङ्गक् कण्ड वुत्तम नुळैय लाहुम्
 शीदैतन् नडैय नोक्किच् चिरियदोर् मुरुवल् शैय्दान्
 मादव डानु माण्डु वन्दुनी रुण्डु मीळुम्
 पोदह नडप्प नोक्किप् पुदियदोर् मुरुवल् पूत्ताळ् 224

ओतिमम्-हंस को; ओतुङ्क् कण्ट-किनारा खींचते देखकर; उत्तमन्-
 पुरुषोत्तम श्रीराम; उळैयळ् आकुम्-पास आनेवाली; चीतै तन् नडैय नोक्कि-सीताजी
 की चाल देखते हुए; चिरियतु ओर् मुरुवल्-एक मन्दहास; चैय्दान्-किया; मातु
 अवल् तातुम्-देवी, उन्होंने भी; आण्डु-(उस नदी पर) वहाँ; वन्दु नीर् उण्डु
 मीळुम्-आकर जल पीकर लौटनेवाले; पोतकम् नटप्प नोक्कि-गज को डग भरते
 देखकर; पुतियतु ओर् मुरुवल्-नया (विचित्र) एक हास; पूत्ताळ्-विकसित
 किया । २२४

वहाँ एक हंस (सीताजी की चाल देखकर) हटकर जाने लगा ।
 श्रीराम ने वह देखा और पास आनेवाली सीताजी की चाल देखकर मन्दहास
 किया । देवी ने एक गज को देखा जो नदी पर आकर पानी पीने के बाद
 लौट जा रहा था और अनोखा अर्थ-भरा हास हँसीं । २२४

ॐ विल्लियड् इडक्कै वीरन् वीङ्गु नीराड्डिन् पाङ्गर्
 वल्लिह ण्डङ्गक् कण्डान् मङ्गदन् मरुङ्गु नोक्क
 अल्लियड् गुवळैक् कात्तत् तिडैयिडै मलरन्नु निन्ऱ
 अल्लियड् गमलड् गण्डा लण्णडन् वडिवड् गण्डाळ् 225

विल् इयल्-धनुर्विद्या में अभ्यस्त; तट कै वीरन्-विशालहस्त वीर; वीङ्कु
 नीर् आड्डिन् पाङ्कर्-समृद्ध-जल नदी के पास; वल्लिकळ्-लताओं को; नुटङ्क
 कण्डान्-लचकते देखा; मङ्कैल् तन्-देवी की; मरुङ्कुल् नोक्क-कमर पर दृष्टि डाली
 तो; अल्लि अम् कुवळै कात्तत्तु-अंधकार के समान फैले पड़े कुवलय वन के; इटै
 इटै-बीच-बीच में; मलरन्नु निन्ऱ-विकसित रहे; अल्लि अम् कमलम्-पंखुड़ियों
 से भरे कमलों को; कण्डाळ्-देखनेवाली (देवी) ने; अण्णल् तन् वटिवु कण्डाळ्-
 महिमावान नायक के शरीर पर दृष्टि डोड़ाई । २२५

धनुर्धर श्रीराम ने समृद्धजल वाली नदी के पास लताओं को देखा
 और उसी स्मृति में सुमध्यमा की कमर निहारी ! तब देवी ने अंधकार-सम
 रंग वाले कुवलय-वन को बीच-बीच में कमलों के साथ देखा और लगे हाथ
 महिमावान प्रभु के शरीर पर उनकी दृष्टि जा जमी । २२५

अतैयदोर् तन्मै यान् वरुविनी राड्डिन् पाङ्गर्प्
 पत्तिदरु दैय्वप् पञ्ज वडियैन्नुम् वरुवच् चोलैत्
 तत्तियिड मदनै नण्णिन् तम्बियाड् चमैक्कप् पट्ट
 इनियपूञ् जाल यैय्दि यिरुन्दन् तिराम त्रिप्पाल् 226

इरामन्-श्रीराम; अनैयतु ओर् तन्मैयान्न-वैसी एक स्थिति की; अरुवि नीर् आर्त्तिन् पाङ्कर्-सरिताओं की मिलकर बनी गोदावरी नदी के पास; पनि तर तैयव-शीतल और दिव्य; पञ्चवटि अँत्तुम्-पंचवटी नाम के; परुव चोलै-सभी ऋतुओं में मनोरम रहनेवाले उपवन में; तत्ति इटम् अतनै-एकान्त स्थान को; नण्णि-जाकर; तम्पियाल् चमैक्क पट्ट-छोटे भाई द्वारा निर्मित; इत्तिय पूम् चालै अँयति-प्यारी मनोरम, पर्णशाला में पहुँचकर; इरुन्तत्तन्-रहे; इप्पाल्-इसके बाद । २२६

ऐसी गोदावरी नदी के किनारे पंचवटी नाम के स्थान में एक उपवन में, जो सभी ऋतुओं में मनोरम और सुखद रहता था, श्रीराम आदि गये । वहाँ छोटे भाई लक्ष्मण ने एक सुन्दर पर्णशाला निर्मित की । श्रीराम उसमें (अपनी प्रिया के साथ) रहने लगे । तब शूर्पणखा वहाँ आयी । २२६

नीलमा	मणिनिड	निरुदर्	वेन्दनै
मूलना	शम्बैड	मुडिक्कु	मुन्बिन्नाल्
मेलैना	ळुयिरोडुम्	पिडुन्दु	तान्बिळै
कालमोर्न्	डुडुन्डै	कडिय	नोयत्ताळ् 227

मा नील मणि निड निरुदर् वेन्दनै-बड़े नीले रत्न के समान रंग वाले राक्षस-राजा (रावण) को; मूल नाचम् पँड-समूल नाश करने के लिए; मुडिक्कुम्-उपाय कर चुकने की; मुन्पिन्नाल्-प्रेरणा से; मेलै नाळ्-आरम्भ के दिन में ही; उयिरोडुम् पिडुन्दु-जन्म के साथ पैदा होकर; तान् बिळै कालम् ओरन्तु-फलदान का समय देखकर; उटन् उडै-(जीव के) साथ रहनेवाली; कडिय नोय् अत्ताळ्-कठोर व्याधि के समान जो रही, ऐसी । २२७

शालीन नीले रत्न के समान काले रंग के राक्षस रावण का समूल नाश करने का उपाय करनेवाली विधि की प्रेरणा से शूर्पणखा वहाँ आयी । वह ऐसे रोग के समान थी, जो शरीर के साथ-साथ जन्म के अवसर पर पैदा हो जाता है और ऐन समय की प्रतीक्षा में उसके साथ लगा रहता है । २२७

शैम्बरा	हम्बडच्	चैरिन्द	कून्दलाळ्
वैम्बरा	हन्दन्ति	बिळैन्द	मैय्यिन्नाळ्
उम्बरा	त्तवर्क्कुमीण्	डवर्क्कु	मोदनीर्
इम्बरा	त्तवर्क्कुमो	रुरुदि	यीट्टुवाळ् 228

चैम्पु अराकम् पट-ताम्र का रंग बिछुड़ जाय, ऐसे लाल; चैरिन्त-और घने; कून्तलाळ्-केश वाली; वैम्पु-उष्णतप्त; अराकम् तत्ति बिळैन्त-कामराग-विवर्धित; मैय्यिन्नाळ्-शरीर वाली; उम्पर् आत्तवर्क्कुम्-देवों का; औण् तवर्क्कुम्-और श्लाघ्य तपस्वियों का; ओतम् नीर्-समुद्रजल से; इम्पर् आत्तवर्क्कुम्-(वलयित) इस लोक के वासियों का; ओर् उरुत्ति ईट्टुवाळ्-एक अपूर्व हित साधन करनेवाली । २२८

उसके केश ताम्र के रंग को मात देनेवाले अरुण वर्ण के थे । उसका

शरीर कामेच्छा के उष्ण से तप्त था। वह अनजान में ही देवों, श्रेष्ठ तपस्वी लोगों और इस समुद्र-मेखला पृथ्वी के वासियों का हित करनेवाली बनी आयी। २२८

✽ वैय्यदोर्	कारण	मुण्मै	मेविताळ्
वैहलुन्	दमियळव्	वन्तत्तु	वैहुवाळ्
नौय्दितिव्	बुलहैला	नुळैयु	नोन्मैयाळ्
अय्दिन	ळिराहव	तिरुन्द	शूळल्वाय् 229

वैय्यतु ओर् कारणम्-अनर्थकारी एक कारण (कामवासना) के; उण्मै मेविताळ्-अस्तित्व को अपनानेवाली; तमियळ्-अकेली; अ वन्तत्तिल्-उस वन में; वैकुवाळ्-वास करनेवाली; नौय्तिन्-अनायास; इ-इस; उलकु अलाम् नुळैयुम्-लोक में सर्वत्र पहुँचने का; नोन्मैयाळ्-सामर्थ्य वाली; इराकवन् इरुन्त चूळल् वाय्-(जहाँ) श्रीराघव रहे, उस स्थान में; अय्दितिव्-आई। २२६

भयंकर एक कारण था, जिसके संपादनार्थ वह वन में अकेली रहती थी। (वह कारण उसकी कामलिप्सा हो सकता है या अपने पति को मारने वाले अपने भाई रावण के प्रति उसका क्रोध भी हो सकता है।) वह सारे लोक में घुसकर चलने की शक्ति और साहस रखती थी। वह अकस्मात् उस स्थान पर आयी, जहाँ श्रीराम रहते थे। २२९

✽ अण्डरु	मिमैयव	ररक्क	रैङ्गण्मेल्
विण्डनर्	विलक्कुदि	यैन्न	मेलत्ताळ्
अण्डशत्	तरुन्दुयि	इरुन्द	वैयत्तैक्
कण्डन	डन्गिळैक्	किरुदि	काट्टुवाळ् 230

तन् किळैक्कु-अपने परिवारों को; इरुन्ति काट्टुवाळ्-अन्त दिखाने (दिलाने) वाली ने; मेलै नाळ्-पहले कभी; अण् तरुन् इमैयवर्-सबसे प्रशंसित सुर लोगों के; अरक्कर् अङ्कळ् मेल् विण्डनर्-राक्षसों ने हमसे वैर किया है; विलक्कुत्ति अन्त-मिटाइए यह प्रार्थना करने पर; अण्डचत्तु-अण्डज नाग पर; अरुन्तुयिल् तुरुन्त-अपूर्व योगनिद्रा-त्यागी (अवतरित हुए); ऐयनै-महाप्रभु को; कण्डत्तळ्-देखा। २३०

अपने बन्धु-बान्धवों को अंत दरसानेवाली उसने श्रीराम पर दृष्टि लगायी। किस श्रीराम पर? एक समय पूजनीय देवों ने विण्णु भगवान से प्रार्थना की कि राक्षस हमसे वैर करते हैं; हमें बचा लीजिए। तब परमात्मा ने अण्डज नाग पर अपना शयन और योगनिद्रा त्यागकर इस संसार पर श्रीराम का अवतार लिया था। ऐसे श्रीराम को उसने देखा। २३०

✽ शिन्दैयि	लुऱैववर्	कुरुवन्	दीय्न्दवाल्
इन्दिरर्	कायिर	नयन्	मीशर्कु

मुन्दिय	मलर्क्कणोर्	सून्ऱु	नान्गुतोळ्
उन्दियि	लुलहळित्	ताङ्कैन्	उन्नुवाळ् 231

चिन्तैयिल् उरैपवर्कु-मन में वास करनेवाले (मन्मथ) का; उरुवम् तीयन्ततु-शरीर जल गया; इन्तिरङ्कु-देवेन्द्र के तो; आयिरम् नयतम्-सहस्र आँखें हैं; इचङ्कु-ईश्वर शिव के; मुन्दियि-अपूर्व; मलर् कण्-कमल-सम नेत्र; ओर् सून्ऱु-तीन हैं; उन्तियिन्-नाभी से; उलकु अळित्तार्क्कु-लोकों को दिलानेवाले (विष्णुदेव) के; नान्कु तोळ्-चार हाथ है; अँन्ऱु-ऐसा; उन्नुवाळ्-सोचती। २३१

वह विचार करने लगी कि ये कौन हैं ? मनोवासी मन्मथ है क्या ? पर उसका शरीर तो जल गया और वह अशरीरी है ! देवेन्द्र ? उसके तो सहस्र नेत्र हैं। शिवजी हैं क्या ? उनके तो तीन आँखें हैं। विष्णु भी नहीं हो सकते, जिन्होंने अपनी नाभि से लोकों की सृष्टि की क्योंकि उनके चार हाथ होते हैं और इसके तो दो ही हैं। २३१

ॐ कङ्ऱैयन्	जडैयवन्	कण्णिल्	काय्दलाल्
इङ्ऱव	नन्ऱुत्तौट्	टिन्ऱु	काङ्गन्दान्
नङ्ऱव	मियङ्ऱियव्	वन्डङ्ग	नल्लुरुप्
पैङ्ऱन्	त्तमैन्	पैयर्त्तु	मैण्णुवाळ् 232

कङ्ऱै अम् चडैयवन्-जूट बनी सुन्दर जटा वाले की; कण्णिल्-(भाल की) आँख (की अग्नि) से; काय्दलाल्-जला देने से; इङ्ऱवन्-अरूप बना; अ अनङ्कन् तान्-वह अनंग ही; अन्ऱु तौट्टु इन्ऱु काङ्गम्-उस दिन से आज तक; नल् तवम् इयङ्ऱि-अच्छा तप करके; नल् उरु पैङ्ऱन् आम्-यह सुन्दर रूप पा गया हो; अँ-ऐसा; पैयर्त्तुम्-फिर भी; मैण्णुवाळ्-सोचती। २३२

वह आगे सोचती-जटाधारी शिवजी के भाल के नेत्र से निकली आग से जलकर जो अरूप बन गया था, वह अनंग उस दिन से आज तक तपस्या करके यह सुन्दर रूप पा गया क्या ? । २३२

ॐ तरङ्गळि	नमैन्दुताळन्	दुयर्न्द	तालमा
मरङ्गळु	निहर्क्किल	मलैयुम्	बुल्लिय
उरङ्गळि	नुयर्दिशै	योम्बु	मात्तैयिन्
करङ्गळे	यिवन्मणिक्	करमन्	उन्नुवाळ् 233

इवन् मणि करम्-इसके सुन्दर हाथ; तरङ्कळिन् अमैन्तु-सम और श्रेष्ठ बनकर; ताळन्तु-दीर्घ रहते हैं; उयर्न्त ताल मा मरङ्कळुम्-ऊँचे तालवृक्ष भी; निकर्क्किल-तुलना नहीं कर सकते; मलैयुम् पुल्लिय-पर्वत भी अल्प है; उरन्कळिल् उयर्-बल में बढ़े-चढ़े; तिचै ओम्पु-दिशाओं में रहकर पालन करनेवाले; यात्तैयिन्-गजों के; करङ्कळे-कर ही हैं; अँन्ऱु उन्नुवाळ्-ऐसा सोचती। २३३

इसके सुन्दर हाथ परस्पर सम, बड़े ही सुन्दर और आजानु लम्बे हैं।

इनकी उपमा बड़े तालवृक्ष नहीं कर सकते; पर्वत भी अलग रह जायेंगे ।
इसलिए बल में बड़े हुए दिग्गजों के कर ही हैं इनके हाथ ! । २३३

विन्मलं	वल्लवन्	वीरत्	तोळीट्टम्
कन्मलं	निहर्क्किल	कनिन्द	नीलत्तिन्
नन्मलं	यल्लडु	नाम	मेरवुम्
पौन्मलं	यादलाऽ	पौरवि	लादेन्वाळ् 234

विल् मलं वल्लवन्-धनुर्वृद्धसमयं इसके; वीर तोळ ओट्टम्-वीरता-मरे कण्ठों से; कल मलं निहर्क्किल-मामूली पत्थर के पर्वत तुम नहीं गकने; कनिन्त नीलत्तिन्-पक्के नीले रत्नों के; नन् मलं अल्लवु-मुन्दर पर्वत के गिया; नाम मेरवुम्-नामो मेरु पर्वत भी; पौन मलं आतलान्-स्वर्ण-पर्वत होने के कारण; पौरवल्लवु-समान नहीं बन सकता; अँन्पाळ्-कहती । २३४

धनुर्वृद्ध में समर्थ इसके वीरतापूर्ण सज्जन कंधों की समता साधारण पत्थर का पर्वत नहीं कर सकता । मृन् प्रवृद्ध नीली मणि का श्रेष्ठ पर्वत कर सकता है । उसके सिवा नार्मी मेरु पर्वत भी नहीं कर सकता क्योंकि वह स्वर्णमय है । —ऐसी राय कहती वह दूर्पणखा । २३४

ताळुयर्	तामरत्	तळङ्ग	टम्मीट्टम्
केळुयर्	नाट्टत्तन्	गिरियिन्	ओड्डत्तान्
तोळीट्टु	तोळित्तन्	तोड्डन्नु	नोक्कुडिन्
नीळिय	वल्लकण्	णैडिडु	मार्वेन्वाळ् 235

ताळ् उयर्-नाल के कारण ऊँचे रहनेवाले; तामरं तळङ्क्क तम् ओट्टम्-कमल की पंखुड़ियों सहित; केळ् उयर्-उज्ज्वलता में बढ़ी; नाट्टत्तन्-आँखों वाला है; गिरियिन् तोड्डत्तान्-गिरि-सम आकार का है; तोळ् ओट्टु तोळित्तं-एक कण्ठ के साथ दूसरे कण्ठ की; तोड्डन्नु नोक्कुडिन्-बराबर एक ही दृष्टि में देखना चाहें तो; कण् नीळिय अल्ल-मेरी आँखें लम्बी नहीं हैं (दृष्टि में सामर्थ्य नहीं है); नैडितु मार्पु अँन्पाळ्-विशाल वक्ष वाला है, कहती । २३५

वह उनके रूप को अंग-अंग देखती और सराहती । इनकी आँखें कमलदल की शोभा लिये बहुत मनोरम हैं । पर्वत-समान आकार के इसके दोनों कंधों को एक साथ, एक दृष्टि में देखना कठिन है क्योंकि मेरी आँखें उतनी लम्बी नहीं रहती । इसका वक्ष बहुत विशाल है । २३५

अदिहन्तिन्	रौळिरुमिव्	वळहन्	वाण्मुहम्
बौदियविळ्	तामरैप्	पूर्व	योप्पदो
कदिर्मदि	यामैत्तिऽ	कलैह	डेयुमम्
मदियैत्तिन्	मदिक्कुमोर्	मरुवण्	डैन्तमाल् 236

निनृञ् अतिकम् औल्लिहम्-स्थिर रूप से अधिक दीप्तिमान; इ अल्लकन् वाळ् मुकम्-इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल मुख; पौति अविळ् तामरै पूवै औप्पतो-पंखुडियाँ जिसकी विकसित हो रही हैं, उस कमल की उपमा बन सकता है; कतिर् मति आस्- (शीतल-) किरण (पूर्ण) चन्द्र है (कहूँ); अँतिल्-तो; कलंकळ् तेषुम्-कलाएँ लुप्त होती जाती हैं; अ मति अँतिल्-वह चन्द्र (सम) है, कहा भी जाय तो; मतिकूकुम्-पूर्ण चन्द्र में भी; ओर् मञ् उण्टु-एक कलंक है; अँनूतुम्-ऐसा कहती । २३६

स्थिर रूप से अत्यधिक शोभायमान रहनेवाले इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल आनन विकासशील कमल से उपमित हो सकता है क्या ? नहीं । उज्ज्वल किरणों वाला पूर्ण-चन्द्र उपमान बन सकता है क्या ? नहीं । क्योंकि दूसरे दिन से वह क्षीण होने लग जाता है । पूर्णता स्थायी न होने पर भी राका-चन्द्र की उपमा मान जायें तो भी उसमें कलंक है । अतः राका-चन्द्र भी इसकी उपमा नहीं बन सकता । २३६

✽ अँवत्शैय	विन्नियविव्	वळहै	यैय्दिन्नान्
अवञ्जैय्दु	तिरुवुडम्	वलश	नोऽकिन्नान्
नवञ्जैय्त्	तहैयविन्	नळित्त	नाट्टत्तान्
तवञ्जैय्त्	तवञ्जैय्द	तवमँ	अँन्किन्नाळ् 237

इत्तिय इ अळकै-मधुर इस सुन्दरता को; अँयत्तिन्नान्-जो प्राप्त है, यह; अवम् चैय-अपना रूप विगाड़ने के लिए; तिरु उटम्पु-श्रीशरीर; अलच-कण्ठ उठाए, ऐसा; अँवत् चैय-क्या साधने के लिए; नोऽकिन्नान्-तप करता है; नवम् चैयत्तकैय-नित-नवीन; इ नळित्त नाट्टत्तान्-यह कमल-सम आँखों वाला; तवम् चैय-तपस्या करे, इसके लिए; तवम् चैयत् तवम् अँन्-तप ने किया कैसा तप है; अँन्किन्नाळ्-कहती । २३७

इतनी सुन्दरता पाने का भाग्यशाली यह अपने लावण्य को नष्ट करते हुए और श्री शरीर को दुख देते हुए कौन सा कार्य साधने के लिए तपस्या करता है ? हा ! नितनवीन कमलसम आँखों वाला यह तप करे, इसके लिए तप ने क्या ही तप किया है ? —यह आश्चर्य करती ! । २३७

उडुत्तनी	राडैय	ळुरुवच्	चैव्वियळ्
पिडित्तरु	नडैयितळ्	पैण्मै	नन्ऱिवन्
अडित्तलन्	दीण्डलि	त्तवत्तिक्	कम्मयिर्
पौडित्तन	पोलुमिप्	पुल्लैन्	रुन्नुवाळ् 238

उडुत्त नीर् आटैयळ्-समुद्रवसना; उरुव चैव्वियळ्-रूपसौन्दर्यवती; पिटि तरु नडैयितळ्-हथिनी-सम चाल वाली (भूदेवी का); पैण्मै तन्ऱ-स्त्रीत्व श्लाघनीय है; इ पुल्ल-ये घास; इवन् अडित्तलम् तीण्डलिन्-इसके चरणों के स्पर्श से; अ मयिर्-उसके रोगटे; पौडित्तन पोलुम्-खड़े हुए हों, ऐसी लगती है; अँनृञ् उन्नुवाळ्-ऐसा सोचती । २३८

समुद्रवसना, सौन्दर्यवती और हथिनी-सी चाल वाली भूमिदेवी का स्त्रीत्व भाग्यवान हो गया। इन घासों को देखो। भूमि के रोम के समान हैं जो इसके चरण-स्पर्श से पुलकित हो खड़े रहते हैं —यह कवित्वपूर्ण विचार करती। २३८

वाणिला	मुखलान्	वयङ्गु	शोदियैक्
काणल	नेकौलाड्	कदिरि	नायहन्
शेणैलाम्	बुल्लौळि	शैलुत्तिच्	चिन्दयिल्
नाणिलन्	मीमिशै	नडक्कु	मैन्गिन्नाळ् 239

वाळ निला मुखलान्—उज्ज्वल चाँदनी-सम दाँतों वाले इसकी; वयङ्गु चोतियै-शोभायमान प्रभा को; कतिरिन् नायकन्—किरणनायक सूर्य ने; काणलने कौलाम्—देखा नहीं है शायद; चेण् अलाम् पुल्लौळि चैलुत्ति—(तभी तो) दूर-दूर तक अपनी मन्द प्रभा फैलाते हुए; चिन्दयिल्—मन में; नाण् इलन्—लाज-रहित; मी मिच्चै—आकाश में; नडक्कुम्—संचार करता है; मैन्गिन्नाळ्—यह निंदा करती। २३९

उज्ज्वल चाँदनी के समान दाँत वाले इसके शरीर की ज्योति को रश्मिपति सूर्य ने देखा नहीं है शायद क्या? तभी तो वह दूर-दूर तक अपना मंद प्रकाश फैलाते हुए, निर्लज्ज होकर, आकाश में संचार करता है! —ऐसा कहती। २३९

कुप्पुड्डु करियमाक् कुन्ऱै वेंऱुयर्, इप्पेरुन् दोळव त्रिदळुक् केड्पदोर्
ओप्पेन् वुलहमे युरैक्कि नौण्णुमो, तुप्पिनिड् रूप्पुडै यादेच् चौल्लुहेन् 240

कुप्पुड्डु अरिय—जिसको लाँघना मुश्किल है, उस; मा कुन्ऱै वेंऱु—बड़े पर्वत को हराकर; उयर्—उन्नत हुए; इप्पेरुम् तोळवन्—बड़े कन्धों वाले इसके; इतळुक्कु—अधरों की; ओप्पु अँत—समता करनेवाला ऐसा; उलकमे उरैक्किन्—सारी दुनिया कहे तो भी; नौण्णुमे—वह समान हो सकता है क्या; तुप्पितिल्—प्रवाल से बढ़कर; तुप्पु उटै—(उपमा होने का) सामर्थ्य रखनेवाला; यातै चौल्लुकेन्—किसको कह सकूँगी। २४०

अलंघ्य पर्वत को भी नीचा दिखानेवाले कन्धों से शोभायमान इसके अधरों की तुलना प्रवाल से लोक करते हैं। तो क्या प्रवाल में वह सामर्थ्य है? लेकिन प्रवाल से बढ़कर समर्थ उपमा कहाँ खोजूँ? (तुप्पु—प्रवाल; सामर्थ्य)। २४०

नड्कलै मदियुड वयङ्गु नम्बितन्, अँड्कलै तिरुवरै यैय्दि येमुड
वड्कलै नोड्डुत्त माशि लामणिप्, पौड्कलै नोड्डिल पोलु मालैन्नाळ् 241

नल् कलै मति-पूर्ण-(कला)-चन्द्र की; उड्—तुलना करते हुए; वयङ्कुम्—शोभायमान; नम्बि तन्—इस पुरुष-नायक की; अँल् कलै—सूर्य (प्रभा-) हारी; तिरु अरै—श्रीयुक्त कमर की; अय्ति—प्राप्त करके; एम् उड्—आनन्द भोगने के लिए;

वर्कलै नोर्इत-वल्कल ने तप किया था; माचु इला मणि-निर्दोष और श्रेष्ठ;
पौन् कलै-स्वर्ण-वस्त्र ने; नोर्इल पोलुम्-तप नहीं किया शायद; अँन्त्राळ्-
कहती । २४१

वह वल्कल का भाग्य सराहती । कहती—सारी कलाओं से पूर्ण
चन्द्र के समान शोभायमान 'इस पुरुषनायक की सूर्यप्रभाहारी श्रीकमर को
लपेटकर सुखभोग करने का भाग वल्कल ने ही अपने तप द्वारा प्राप्त किया
है । क्या स्वर्ण-वस्त्र ने तपस्या नहीं की है शायद ? । २४१

तौडैयमै	नँडुमळैल्	तौङ्ग	लामैतक्
कडैहुळन्	रिडैनेरि	करिय	कुञ्जियैच्
चडैयैत्तप्	पुत्तैन्दिल	नँन्तिर्	रैयलार्
उडैयुयिर्	यावैयु	मुडैयु	मालैन्त्राळ् 242

तौटै अमै-बराबर और; नँटु मळै तौङ्कल् आम् अँन्त्र-लम्बी बारिश की धार के
समान; कटै कुळन्नु-छोर कुंचित होकर; इटै नँरि-बीच में खूब घने; करिय
कुञ्चियै-काले केश को; चटै अँत्त पुत्तैन्तिलन् अँन्तिल्-जटा बनाकर नहीं रखता तो;
तैयलार् उटै-स्त्रियों के; उयिर् यावैयुम्-सारे प्राण; उटैयुमाल्-मिट जाते; अँन्त्राळ्-
कहती । २४२

वह स्त्रियों पर तरस खाती, कहती । इनके काले केश मेघ से
बराबर गिरनेवाली धार के समान लम्बे और छोर में कुंचित हैं । वे घने
हैं । अगर यह उनको जटा के रूप में नहीं बाँधता तो स्त्रियों के प्राण
मिट जाते (स्त्रियों के मन टूट जाते) । २४२

नाडिय	नहैयणि	नल्ल	पुल्लित्ताल्
एडिय	शैव्वियै	यियर्इ	मोवैन्ना
माडहन्	मुळुमणिक्	करशिल्	माट्चिदान्
वैरू	मणियित्ताल्	विळङ्गु	मोवैन्त्राळ् 243

नाडिय-शोभायमान; अणि नकै-सुन्दर आभरणों में; नल्ल-श्रेष्ठ; पुल्लित्ताल्-
इसके शरीर का आलिंगन करें; एडिय चैव्वियै-(तो वे) और अधिक सुन्दरता को;
इयर्इमो-प्रदान कर सकेंगे क्या; अँन्ना-सोचकर; माड् अकल्-लाजवाब; मुळु
मणिक्कु अरविन्-सारे रत्नों के राजा श्रीकौस्तुभ का; माट्चि-शान; वैरू और
मणियित्ताल्-दूसरी एक मणि से; विळङ्कुमो-प्रकाशित हो सकता है क्या; अँन्त्राळ्-
कहती । २४३

वह उनको आभरणभूषित के रूप में कल्पना करती है और पूछती
है कि क्या अति सुन्दर आभरणों में अति श्रेष्ठ आभरणों को चुनकर इसको
पहनाएँ तो वे आभरण इसकी दर्शनीयता को बढ़ा सकेंगे ? वह निश्चय
करती कि मणियों में श्रेष्ठ श्रीकौस्तुभमणि का शान और रूप-गौरव अन्य
रत्नों द्वारा बढ़ाया जा नहीं सकता । २४३

करन्दिल	निलक्कण	मंडुत्तुक्	काट्टिय
परन्दरु	नान्मुहन्	पळिप्पु	रान्तरो
इरन्दिव	निणैयडिप्	पौडियु	मेरुक्किलाप्
पुरन्दर	नुलहैलाम्	पुरक्किन्	रान्नेन्नाळ् 244

इवन् इणै अटि-इसके चरणद्वय की; पौटियुम्-धूलि की महिमा; इरन्तुम् एरुक्किला-याचना करने पर भी जो प्राप्त न कर सकेगा; पुरन्तरन्-वह पुरन्दर; उलकु अलाम्-सारे लोकों का; पुरक्किन्नान्-पालन करता है; करन्तिलन्-विना छिपाये; इलक्कणम् अटुत्तु काट्टिय-(सामुद्रिका-) लक्षणों के साथ इनकी रचना करनेवाले; परम् तरु नान्मुकन्-महिमायुक्त ब्रह्मा; पळिप्पु उरान् अरो-अपराधी हो गया न; अन्नाळ्-कहती । २४४

इसके चरणद्वय की धूलि के समान भी पुरन्दर नहीं बन सकता । वह याचना कर पा लेने का प्रयास करे तो भी उसे इसकी-सी महिमा नहीं हो सकती । तो भी वह तीनों लोकों का पालन करता है ! ब्रह्मा ने विना किसी दुराव के सारे लक्षणों से युक्त कराके इसको रचा है तो क्या लाभ है ? इसको तपस्वी बनाने से ब्रह्मा को अपयश मिल गया है । २४४

नीत्तमुम्	वात्तमुड्	गुरुह	नैञ्जिडैक्
कोत्तवन्	बुणर्विडैक्	कुळित्तु	मीक्कोळ
एत्तवुम्	बरिविन्तीन्	रीह	लान्बोरुळ्
कात्तवन्	बुहळैन्	तेयुड्	गर्पिताळ् 245

नीत्तमुम्-समुद्रजल; वात्तमुम्-और आकाश को; गुरुह-छोटा दिखने देते हुए; नैञ्चु इटै कोत्त-अपने मन में अंकित; अन्पु उणर्वु इटै-कामेच्छा में; कुळित्तु-मग्न होकर; मी कौळ-उस राग के बढ़ने से; एत्तवुम्-याचकों की प्रार्थना सुनकर भी; बरिविन्-अनुताप करके; औन्नु ईकलान्-कुछ न देनेवाले; पोरुळ् कात्तवन् पुक्कळ् अत्त-धन के परिग्रही (रक्षक) के यश के समान; तेयुम् कर्पिताळ्-क्षीणप्राय स्त्रीत्व (शील-संयम) वाली । २४५

शूर्पणखा के मन में कामसागर इतना भर आया कि उसके विस्तार के सामने समुद्र का जल और आकाश का फैलाव छोटे दिखे । उसमें मग्न उसके मन में ज्यों-ज्यों कामेच्छा बढ़ती गयी, त्यों-त्यों उसका स्त्रीसहज शील और संयम उस लोभी धनवान के यश के समान छीजने लगे, जो प्रार्थना करनेवाले याचक से सहानुभूति नहीं करता और न ही कुछ देता और धन की रक्षा करता है । २४५

✽ वान्ऱनिल्	वरैन्ददोर्	माद	रोवियम्
पोन्ऱन	णिन्ऱनळ्	पुळङ्गु	नैञ्जिनाळ्
तोन्ऱन	शुडर्मणित्	तोळि	नाट्टङ्गळ्
ऊन्ऱित	परिक्कवो	रुड्ऱम्	वैऱ्ऱिलाळ् 246

पुल्लङ्कुम् नैवचित्ताळ्—(काम-) तप्तमना; तोनूइल् तन्—चक्रवर्ती—तनय के;
 मणि तोळिन्—दीप्त-मणि—सम भुजाओं में; ऊन्नरित नाटङ्कळ्—गड़ी आँखों को;
 रिक्क—निकालने की; ओर् ऊरुम् पेरुल्लाळ्—आवश्यक शक्ति नहीं रखती थी;
 तन् तत्तिल् वरैन्त—आकाश में खींचे हुए; ओर् मातर ओवियम् पोनुत्तळ्—एक स्त्री
 (प्रेम की स्त्री) के चित्र के समान लगी; निनुत्तळ्—खड़ी रही। २४६

उसका मन कामतप्त हो गया। उसमें अपनी दृष्टि को, जो श्रीराम के कांतिमय कंधों पर गड़ गयी थी, उखाड़ लेने की क्षमता नहीं रह गयी थी। इसलिए वह बीच आकाश में ही निस्पंद-सी खड़ी रह गयी। तब वह आकाश में खींचे गये स्त्रीचित्र (या प्रेमचित्र) के समान दिखी। २४६

✽ निनुत्त	ळिरुन्दव	नडिय	मार्वहम्
औनुर्वै	तनुर्इति	लमुद	मुण्णिनुम्
पौनुर्वैन्	पोक्किति	यरिडु	पोलैनाच्
चैनुर्इदिर्	निस्पदोर	शैय् है	तेडुवाळ् 247

निनुत्तळ्—स्तब्ध खड़ी रही; इरुन्तवन्—वहाँ स्थित उसका; नैटिय मार्वु
 अकम्—विशाल वक्षस्थल पर; औनुर्वैन्—लग जाऊँगी; अन्नु अँतिल्—(वह) नहीं
 (हो सका) तो; अमृतम् उण्णिनुम्—अमृत खाऊँगी तो भी; पौनुर्वैन्—(इस काम-
 वेदना के कारण) मर जाऊँगी; पोक्कु इति अरितु पोल् अँता—कोई गति दूसरी नहीं
 शायद, यह सोचकर; अँतिर् चैन्नु निस्पु—सामने जाकर स्थित होने का; ओर् चैय्कै
 तेडुवाळ्—एक बहाना ढूँढ़ती। २४७

चित्र के समान स्थिर जो खड़ी रही, उस शूर्पणखा के मन में यह संकल्प उठा। वहाँ रहनेवाले उस पुरुष के विशाल वक्षस्थल में लिपट जाऊँगी। अगर वह नहीं हो सकता तो अमृत भी मुझे जीवित नहीं रख सकता—मैं मर जाऊँगी। कोई दूसरा चारा नहीं दीखता। अब श्रीराम के सामने आकर खड़ी होने के लिए मन में एक योग्य बहाना ढूँढ़ने लगी। २४७

✽ अँयिरुडै	यरक्कियैव्	वुयिरु	मीट्टदोर
वयिरुडै	याळैन्	मरुक्कु	मादलाल्
कुयिरुडै	कुदलैयोर्	कौव्वै	वायिळ
मयिरुडै	रियलैळिल्	मरुव	तनुर्इता 248

अँयिरु उटै अरक्कि—वक्रदांत वाली राक्षसी; अँ उयिरुम् इट्टु—सभी जीवों को
 जिसमें दफ़ना लिया है, उस; ओर् वयिरु उटैयाळ्—उदर वाली है यह; अँत-
 समझकर; मरुक्कुम् आतलाल्—इनकार कर देगा, इसलिए; कुयिल् तौटर्—कोयल-
 सम; कुतलै—मधुर वाणी; ओर् कौव्वै वाय्—बिम्बाधर; इळमयिल् तौटर्—
 (इनके साथ) बालमयूर की-सी छटा वाली; इयल् अँळिल्—स्वाभाविक शोभा को;
 मरुवल्—अपनाना; तनुर् अँता—अच्छा, समझकर। २४८

उसे संशय था कि श्रीराम से इस रूप में मिलूँ तो वे अस्वीकार कर देंगे। वे यह सोचेंगे कि इस राक्षसी का पेट सभी जीवों को जीवित ही गाड़ देने का गड्ढा है। इसलिए उसने विचार किया कि मैं एक सुन्दरी का रूप धारण करूँगी। उसकी वाणी कोकिल की-सी होगी। उसके अधर बिबफल के समान लाल होंगे। उसकी चमक-दमक बालमयूर की-सी होगी। और समूची सुन्दरता स्वाभाविक होगी। हाँ वही अच्छा कार्य होगा। २४८

ॐ पङ्कयच्	चैल्वियै	मन्तत्तुप्	पाविया
अङ्गैयि	नायमन्	दिरत्तै	यायन्दनळ्
तिङ्गळिङ्	चिडन्दौळिर्	मुहत्तळ्	चैव्वियळ्
पौङ्गौळि	विशुम्बित्तिङ्	पौलियत्	तोन्डित्ताळ् 249

पङ्कय चैल्वियै—पंकज की स्वामिनी श्रीलक्ष्मी को; मन्तत्तु पाविया—मन में ध्यान करके; अम् कैयित् आय—खूब वश में रहे; मन्तिरत्तै—श्रीलक्ष्मी-मन्त्र को; यायन्दनळ्—जपा; तिङ्कळिळ् चिडन्तु—चन्द्र से बढ़कर; औळिर् मुकत्तळ्—शोभायमान मुख वाली; चैव्वियळ्—और तरुण सुन्दरी बनी; पौङ्कु औळि—अपनी छिटकती छटा को; विचुम्पित्तिल् पौलिय—आकाश में फैलने देते हुए; तोन्डित्ताळ्—प्रकट हुई। २४९

उसने पंकजा श्रीलक्ष्मीदेवी का ध्यान किया। उसने लक्ष्मीदेवी का मन्त्र वश कर रखा था। उसने वह मन्त्र जपा। तब वह पूर्ण-चन्द्र से भी बढ़कर प्रभा छिटकानेवाला मुख, तरुण सौन्दर्य—इनसे युक्त होकर आकाश में अपना रूप-लावण्य-प्रकाश फैलाती हुई प्रकट हो गयी। २४९

पञ्जियौळि	विञ्जुक्कुळिर्	पल्लव	मनुङ्गच्
चैञ्जैविय	कञ्जनिहर्	शीरडि	पैयर्प्पाळ्
अञ्जौलिळ	मञ्जैयैन्	वन्तमैन्	मिन्नुम्
वञ्जियैन्	नञ्जमैन्	वञ्जमहळ्	वन्दाळ् 250

औळि विञ्जु—आभा में बढ़कर; पञ्चि—लाल रुई व; कुळिर् पल्लवम्—शीतल पल्लव को; अत्तुङ्क—(परास्तना का) दुख देते हुए; चैम् चैविय—लाल और सुन्दर; कञ्चम् निकर्—कंज-सम; चीरटि—अपने छोटे पैरों को; पैयर्प्पाळ्—रखती हुई; अम् चौल् इळ मञ्जै अँत—सुन्दर बोलों वाले बालमयूर के समान (छटा वाली); अत्तम् अँत—हंस के समान (चाल वाली); मिन्नुम् वञ्चि अँत—चमकती विजली के समान; नञ्चम् अँत—और विष के समान; वञ्च मकळ्—बंचकी नारी; वन्ताळ्—आई। २५०

फिर वह बंचकी निशाचरी श्रीराम के सामने आयी। कैसे? उसके लाल, कंजतुल्य छोटे पैर लाल रुई और शीतल पल्लवों को मात दे रहे थे। वह कोकिल के समान मधुर-मधुर बोलनेवाले बालमयूर के

मान आभा वाली थी । वह बिजली की लता के समान और विषतुल्य
। ऐसी वह मनोरम रूप से पग धरती हुई आयी । २५०

पौत्तौळुहु	पूविन्तौडु	पूविलुर्	पूवै
पिन्तौळिल्हौळ	वाळिणै	पिरळ्न्दीळिर्	मुहत्ताळ्
कन्तिर्यैळिल्	कौण्डु	कलैततड	मणित्तेर्
मिन्निळिव	तन्मैयडु	विण्णिळिव	दन्त 251

पौन् औळुकु—स्वर्ण-वर्ण के साथ; पूविन् औडु—और कान्ति के साथ; पूविल्
र्—कमल के फूल पर रहनेवाली; पूवै—देवी, श्रीलक्ष्मी को; पिन् औळिल् कौळ-
सौंदर्य में पीछे ढकेलनेवाली सुन्दरता लेकर; वाळ् इणै—तलवार (-सम आँखों) के जोड़े;
पिरळ्न्तु औळिर्—जिसमें चलित होकर छवि दे रहे थे, वह; मुहत्ताळ्—मुख वाली;
तन्ति औळिल् कौण्डु—एक अनोखी सुन्दरता लिये; कलै तड मणि तेर्—चित्रमयी
विशाल सुन्दर रथ; मिन् इळिव तन्मैयडु—बिजली गिरती-सी; विण् इळिवतु अन्त-
आकाश से उतरता हो, ऐसा । २५१

शूर्पणखा स्वर्णवर्ण, कमलजा से भी बढ़कर सुन्दरी बन गयी ।
उसका मुख दो चंचल और तलवार-सम आँखों के साथ बहुत ही छविमान
दिखा । वह आकाश से नीचे जब उतरती आयी तब वह एक अनोखे,
चित्र-प्रतिमाओं से अलंकृत विशाल और सुन्दर रथ के समान लगी, जो
बिजली उतरती हो ऐसा आकर्षण लेकर आकाश से उतर रहा था । २५१

ॐ कान्तिलुयर्	कड्पह	मुयिर्त्त	कदिर्वल्लि
मेत्तिनत्ति	पैरुविळै	कामनैर्	वाशत्
तेत्तिन्मौळि	युर्त्तिनिय	शैव्विनत्ति	कौण्डोर्
मानिन्विळि	पैरुमयिल्	वन्ददै	वन्दाळ् 252

ओर् मयिल्—एक मोर; कानिल् उयर्—सुगन्धि में बड़े हुए; कड्पकम् उयिर्त्त-
कल्पकतरु-सृष्ट; कतिर् वल्लि—उज्ज्वल कामलता का; मेत्ति नत्ति पैरु—रूप-सौंदर्य
पाकर; काम नैर्—काम-मार्ग में; वाच तेत्तिन् मौळि उर्—सुवासपूर्ण शहद की-सी
बोली के साथ; इत्ति य शैव्वि नत्ति कौण्डु—मनोरम छटा से खूब पूर्ण होकर; मान्
विळि पैरु—मृग के-से नयन ले; वन्ततु अन्त—आया हो, ऐसा; वन्ताळ्—आई । २५२

फिर वह भूमि पर एक विचित्र मयूर के समान चलती आयी । कैसा
मयूर ? समझिए कि एक मयूर को सुवासित कल्पतरु द्वारा सृजित आभा-
युक्त कल्पवल्ली का रूप मिल गया । सुवासपूर्ण शहद-सी मधुर बोली,
बड़ी ही आकर्षक सुन्दरता और हरिण की-सी आँखें प्राप्त हो गयीं । ऐसा
एक मयूर पैदल आता हो ऐसे आकर्षण के साथ वह आयी । २५२

ॐ नूबुरमु	मेहलैयु	नूलुमड	लोदिप्
पूबुरलुम्	वण्डमिवै	पूशलिड	मोदै

तामुरेशैय् हिन्रदौर तैयल्वर मन्नाक्
कोमहनु मत्तिशं कुरित्तनन् विळित्तान् 253

नूपुरमुम्-नूपुर और; मेकलैयुम्-और मेखला; नूलुम्-हार; अइल् ओति-काले बालू के समान केश के; पू मुरलुम्-पुष्पों पर गुंजार करनेवाले; वण्टुम्-ध्रमर; इवै-इनके; पूचल् इटुम् ओतै-जो मचाते थे, वह शब्द; और तैयल् वरुम् अन्ना-एक स्त्री आ रही है, ऐसा; उरै चैय्किन्नडु-घोषणा कर रहा है; कोमकत्तुम्-चक्रवर्ती-सुत ने भी; अ तिचै-उस दिशा; कुरित्तनन्-को लक्ष्य करके; विळित्तान्-देखा । २५३

उसके नूपुर, मेखला, हार, केशालंकार के पुष्प पर गुंजार करनेवाले अलिकुल सब हर्षरव कर रहे थे । वह शब्द यह घोषणा कर रहा था कि कोई स्त्री आ रही है । चक्रवर्तीसुत दाशरथी ने यह जाना और उस दिशा में दृष्टि दौड़ाई, जहाँ से यह ध्वनि आ रही थी । (तुलसीदासजी ने इस ध्वनि को मदनदुंदुभी कहा है, पर वह सीताजी के मिलन के मंगलमयी पवित्र प्रसंग में ।) । २५३

विण्णरुळ् वन्ददौर मॅल्लमुद मॅन्न
वण्णमुलै कौण्डिडै वणङ्गवर पोळ्दत्
तैण्णरुळि येळ्मै तुडैत्तैळ्मैय्ज् जानक्
कण्णरुळ्शैय् कण्णनिर कण्णिर्नैदिर् कण्डान् 254

विण्-आकाश (स्वर्ग); और मॅल् अमुतम्-अनुपम और नरम सुधा; अरुळ् वन्ततु अन्न-देने की कृपा करने आया जैसे; वण्ण मुलै कौण्डु-आकर्षक उरोजों के साथ; इटै वणङ्क-कमर लचकाते हुए; वरु पोळ्त्तत्तु-जब वह आई तब; अण् अरुळि-बुद्धिशक्ति प्रदान कर; एळ्मै तुडैत्तु-अज्ञान दूर करके; अळ्ळुम्-ऊपर उगने-वाली; मैय् जात कण् अरुळुम्-सच्ची ज्ञान-दृष्टि दिलाने की कृपा करनेवाले; कण्णन्-सर्वनेत्र श्रीराम ने; इरु कण्णिन् अतिर् कण्डान्-अपनी दोनों आँखों से (उसको) देखा । २५४

स्वर्ग अमृत दिलाने लाया हो, ऐसे स्तनों वाली और लचकती कमर वाली, शूर्पणखा जब आ रही थी तब श्रीराम ने, जो जीवों को विवेक देकर, तद्वारा अज्ञान मिटाकर, फलस्वरूप ज्ञानदृष्टि दिलानेवाले, सब नेत्रों के नेत्र, परब्रह्म हैं, अपनी दोनों आँखों से उसको देखा । २५४

पेरुळ्ळैय् नाहरुल हिर्पिरिडु वानिल्
पारुळ्ळैयि निल्लदौर मॅल्लुरुवु पारा
आरुळ्ळैय् उङ्गुमळ् हिर्कवदि युण्डो
नेरिळ्ळैयर् यावरिव णेरैन् निनैन्दात् 255

पेरु उळ्ळैय-बहुत विशाल थल वाला; नाकर् उलकिल्-नागलोक में; पिरितु वानिल्-उससे भिन्न स्वर्गलोक में; पार् उळ्ळैयिल्-भूतल में; इल्लतु-अप्राप्य; और-

अनुपम एक; मैल् उरवु पारा-कोमल रूप को देखकर; आर्-कौन; उल्लै अटङ्कुम् अल्लकिङ्कु-इसमें समाविष्ट सुन्दरता का; अवति उण्टो-ठिकाना है क्या; नेरिल्लैयर्-आभरणधारिणी नारियाँ; यार् इवळ् नेर्-कौन इसके समान हैं; अँत नितैन्तान्-ऐसा सोचा (श्रीराम ने) । २५५

विस्तृत नागलोक में, उससे भिन्न स्वर्ग में, या भूलोक में कहीं भी अप्राप्य था एक ऐसा कोमल रूप । श्रीराम सोचने लगे कि यह कौन है ? इसमें समाविष्ट सुन्दरता का ठिकाना भी है ? कौन आभरणभूषिता नारियाँ हैं जो इसकी समानता कर सकती हैं ? । २५५

ॐ अव्वयित्तव्	वाशैतन	हतुतुडैय	वन्त्ताळ्
शैव्विमुह	मुत्तियडि	शैङ्गैयि	निर्ऱैञ्चा
वैव्विय	नैडुङ्गणयिल्	वीशिययल्	पारा
नव्वियि	नौडुङ्गियिर्	नाणियय	निन्ऱाळ् 256

अ वयित्तु-उस समय; अ आचै-वह राग; तत्तु अकत्तु उटैय-अपने मन में रखनेवाली; अन्ताळ्-वह (शूर्पणखा); वैव्वि मुक्कु मुत्ति-श्रीराम के मनोहर मुख को देख; अटि-उनके श्रीचरणों को; चैम् कैयित्तु इर्ऱैञ्चा-लाल हाथ जोड़कर नमस्कार करके; वैव्विय-सालनेवाला; नैटुम् कण्-दीर्घ आँखों का; अयिल्-(दृष्टि रूपी) भाला; वीचि-फेंककर; अयल् पारा-आँख चुराकर दूसरी ओर देखती हुई; नव्वियित्तु औत्तुङ्कि-हरिण के समान एक ओर हटकर; इर्ऱै नाणि-थोड़ा लजाती हुई; अयल् निन्ऱाळ्-(श्रीराम के) पास खड़ी रही । २५६

तब तक शूर्पणखा श्रीराम के मुख के सामने आ गयी । उसने अपने मनोरम हाथ जोड़कर श्रीराम के चरणों को नमस्कार किया । अपने लाल डोरों सहित नेत्रों की भाला-सम दृष्टि श्रीराम पर फेंकी । झट आँख चुराकर दूसरी ओर देखने लगी । भीरु मृगी के समान थोड़ा हटी । लाज का किंचित प्रदर्शन किया । इन सब नखरों के साथ वह उनके पास खड़ी रही । २५६

ॐ तीदिल्वर	वाहतिरु	निन्वरवु	शेयोय्
पोदवुळ	वैम्मुळैयौर्	पुण्णियम	वत्तुऱो
एदुपदि	येदुपैयर्	यावहऱ	वैन्ऱान्
वेदमुदल्	पेदैयव	डन्तिलै	विरिप्पाळ् 257

चेयोय्-अपरिचित (या श्रीलक्ष्मी-सम) स्त्री; निन् तिरु वरवु-तुम्हारा श्रेष्ठ आगमन; तीतु इल्-अमंगलहीन (शुभ); वरवु आक-आगमन हो; पोत-तुम आओ इसका; अँम् उल्लै-हमारे पास; ओर् पुण्णियम् अतु अत्तुऱो-एक सुकृत रहा है न; एतु पति-कौन सा स्थान; एतु पयैर्-कौन सा नाम; यावर् उरवु-रिश्तेदार कौन हैं; वेत मुत्तल्-वेदमूल ने; वैन्ऱान्-पूछा; पेतै अवळ्-अबोध ने; तन् तिलै-अपना वृत्तान्त; विरिप्पाळ्-विस्तार से कहा । २५७

श्रीराम ने सम्भाषण आरम्भ किया । आगन्तुक अजनबी ! (चेयोय् का अर्थ लक्ष्मी भी हो सकता है ।) तुम्हारा वर आगमन अमंगलरहित शुभ आगमन हो ! हमने पुण्य किया है, यह सच है तभी तो तुम आयी हो ! तुम्हारा वासस्थान कौनसा ? नाम क्या ? तुम्हारे रिश्तेदार कौन हैं ? —वेदमूल (बोध का आधार) श्रीराम ने प्रश्न किया । अबोध (बोध-हीन) शूर्पणखा अपना वृत्तान्त विस्तार से सुनाने लगी । २५७

❀ पूर्विलोन्	पुदल्वन्	मैन्दन्	पुदल्विमुप्	पुरङ्गळ्	शैर्ऱ
शेवलोन्	तुणैव	तान्	शैङ्गैयोन्	इङ्गै	तिक्किन्
मावैलान्	दौलैत्तु	वैळ्ळि	मलैयैडुत्	तुलह	मून्ऱुम्
कावलोन्	पित्तुनै	काम	वल्लियाड्	गन्ति	यैन्ऱाळ् 258

पूर्विलोन्—कमलासन के; पुदल्वन् मैन्दन्—पुत्र के पुत्र की; पुदल्वि—डुहिता हैं; मु पुरङ्कळ् चैर्ऱ—त्रिपुरदाहक; चे वलोन्—ऋषभवाहन के; तुणैवन् आत्-मित्र; चैम् कैयोन्—लाल (दान देते-देते लाल बने) हाथ वाले कुबेर की; तङ्कै—छोटी बहिन; तिक्किन् मा—दिग्गज; अलाम् तौलैत्तु—सारे भगाकर; वैळ्ळि मलै अँटुत्तु—चाँदी के पर्वत (कैलास) को उठाया (जिसने); उलकम् मून्ऱुम् कावलोन्—लोकत्रयी का पालक; पित्तुनै—उस रावण की अनुजा; काम वल्लि—कामवल्ली; आम्—नाम की; कन्ति—कन्या; यैन्ऱाळ्—(अपना परिचय) कहा । २५८

कमलासन ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) के पुत्र (विश्रवा) की पुत्री हैं । त्रिपुर जलानेवाले ऋषभवाहन शिवजी के मित्र दान देते-देते लाल बने हाथ वाले कुबेर की बहिन हैं । दिग्गजों को भगानेवाले, चाँदी के पर्वत (कैलास) को उखाड़नेवाले त्रिलोकाधिपति रावण की अनुजा हैं । मेरा नाम कामवल्ली है । (बार-बार शिवजी की चर्चा त्रिपुरांतक, त्रिपुरदाहक आदि के साथ आयी है । उसका संक्षिप्त विवरण यों है— तारकासुर के पुत्र विद्युन्माली, तारकाक्ष और कमलाक्ष थे । इन्होंने कठोर तपस्या की और अपार बल-वैभव पा लिया । मय ने इनके लिए स्वर्ण, चाँदी और लोहों के प्राचीरों से युक्त तीन नगर निर्मित किये । ये नगर जहाँ चाहे उड़े जा सकते थे । वे तीनों असुर इनका उपयोग कर सर्वत्र जाते और सितम ढाते । देवों और मुनियों ने मिलकर शिवजी से प्रार्थना की । शिवजी ने भूमि को रथ, वेदों को चार अश्व, ब्रह्मा को सारथी, मेरु को धनुष, आदिशेषनाग को प्रत्यंचा, विष्णु रूपी पंखों से युक्त अग्नि को अस्त्र और अन्य देवों को अन्य अस्त्र-शस्त्र बना लिया । फिर युद्धसन्नद्ध हो चले । उन्होंने एक विचित्र हास के साथ उन असुरों को मय उनके नगरों के जला डाला । शूर्पणखा ने अपनी वंशावली की तीन पीढ़ियों की चर्चा की । क्योंकि उसका उद्देश्य 'विवाह' था ।) । २५८

अव्वुरै	केट्ट	वीर	नैयुरु	मनत्तान्	शैय्है
शैव्विदन्	उरियलाहुम्	जिरिदि	नैन्	णराच्	चैङ्गण्
वैव्वुरु	वमैन्दोन्	उङ्गै	यैन्नुदु	मैय्मै	याहिल्
इव्वुरु	वमैन्द	तन्मै	यियम्बुदि	विरैवि	नैन्डान् 259

अ उरै केट्ट-वह कथन सुनकर; ऐ उरु मनत्तान्-शंकितमन होकर; चैय्कै चैव्वितु अन्नु-इसके (हाव-भाव और) कार्य अच्छे नहीं; चिरित्तिन् अशितल् आकुम्-थोड़ा समझना आवश्यक है; अन्नु उणरा-ऐसा महसूस करके; चैम् कण्-रक्तम आँखों और; वैम् उरु अमैन्तोन्-भयंकर रूप वाले (रावण) की; तङ्कै अन्नुत्तु-बहिन कहा जो, सो; मैय्मै आकिल्-सच है तो; इ उरु अमैन्त तन्मै-यह रूप (कैसे) मिला, वह प्रकार; विरैविन् इयम्पुति-शीघ्र बताओ; अन्डान्-पूछा । २५९

शूर्पणखा का यह कथन सुनकर (उसकी अदाओं से) श्रीराम के मन में कुछ सन्देह पैदा हुआ । श्रीवीरराघव ने सोचा कि इसका कार्य भला नहीं लगता । थोड़ा जाँचकर समझा जा सकता है । यह सोचकर उन्होंने शूर्पणखा से पूछा कि लाल आँखों वाले और भयंकर रूप वाले रावण की बहिन होने की बात सत्य है, तो तुम्हें यह रूप कैसे मिला ? शीघ्र बताओ । २५९

तूयवन्	पणिया	मुन्तन्	जौल्लुवाळ्	शोर्वि	लाळम्
मायवल्	लरक्क	रोडुम्	वाळ्वित्तै	मदिक्कि	लादे
आय्वुरु	मनत्ते	ताहि	यड्न्दलै	निडपदानेन्	
तीवित्तै	तीय	नोड्डुत्	तेवरिर्	पैड्ड	देन्डाल् 260

तूयवन् पणिया मुन्तन्-पवित्र पुरुष श्रीराम के पूछने पर; चोर्वु इलाळ्-उत्सुक उसने; अ माय वल् अरक्करोट्टम्-उन माया में समर्थ राक्षसों के साथ; वाळ्वित्तै-जीवन को; मतिक्किलाते-उचित न मानकर; आय्वु उरु मनत्तेन् आकि-विवेक से भरे मन वाली होकर; अड्म् तलै निडपतु आत्तेन्-धर्मावलम्बी बनी; तीवित्तै तीय-पाप जलाने (मिटाने) के लिए; नोड्डु-तपस्या करके; तेवरिल्-देवों की कृपा से; पैड्डु- (जो) पाया (वह) यह है; अन्डाल्-उत्तर दिया । २६०

पवित्र मन वाले श्रीराम ने जब ऐसा प्रश्न किया, तो शूर्पणखा समझ सकती थी कि श्रीराम इसके मन की बात माननेवाले अपवित्र-चरित्र नहीं है । तो भी वह हतोत्साह होनेवाली नहीं थी । उसने उत्तर दिया कि मैं उन मायाकार्य में प्रवृत्त और चतुर राक्षसों के साथ रहना उचित नहीं समझकर विवेकशीला बन गयी हूँ । धर्ममार्गावलम्बी हो गयी । अपने सभी पापों को, तपस्या करके जला दिया । देवों की कृपा से प्राप्त यह रूप है । २६०

इमैयवर्	तलैव	नेयु	मैळिमैयि	नेवल्	शैय्युम्
अमैदियि	नुलह	मून्नु	माळ्बवन्	उङ्गै	याहिल्

शुमैयुरु शैल्वत् तोडुन् दोन्ऱुलै तुणैयु मिन्ऱित्
तमियणी वरुदऱ् कौत्त तन्मैयैन् रैय लैन्ऱान् 261

तैयल्-नारी; इमैयवर् तलैवन् ए उन्-देवेन्द्र भी; अळिमैयिन्-दीन बनकर;
एवल् चैयैयुम्-जिसकी सेवा करता है; अमैतियिन्-उस स्थिति में; उलकम्-मूतुम्
आळपवन्-जो त्रिलोकाधिपत्य करता है, उस रावण की; तड्कै आकिल्-बहिन हो तो;
चुमै उरु-गुरु; चैल्वत्तोडुम्-धन-वैभव के साथ; तोन्ऱुलै-नहीं दिखाई देती; तुणैयुम्
इन्ऱि-सहायक से रहित; तमियळ्-अकेली; वरुतऱ्कु-आओ, इसका; औत्त
तन्मै-योग्य कारण; अैन्-कौन सा है; अैन्ऱान्-पूछा। २६१

श्रीराम ने आगे पूछा— हे नारी ! तुम कहती हो कि रावण की
भगिनी हूँ । रावण त्रिलोकाधिपति है । देवों के राजा देवेन्द्र भी उसका
किंकर होकर उसकी सेवा-टहल करता है । वह बड़ा ही श्रीमंत है ।
उसके भारी धन-वैभव के योग्य रूप में तुम नहीं दिखाई देतीं । और भी
तुम अकेली और कोई साथी-संगी के बिना आयी हो । ऐसा दीन-हीन
और असहाय आना क्योंकर हुआ ? कारण क्या है ? । २६१

वीरनः(ह) डुरैत्त लोडु मैययिलाळ् विमल यानच्
चीरिय रल्लार् माट्टुच् चैरहिलैन् रेवर् पालुम्
आरिय मुनिवर् पालु मडैन्दर् नैरैव वीण्डोर्
कारिय मुण्मै निन्ऱैक् काणिय वन्दे तैन्ऱाळ् 262

वीरन्-वीर के; अ. तु-वह; उरैत्तलोडुम्-कहने पर; मैय् इलाळ्-असत्यवादी
ने; विमल-निर्मल; यान्-मै; अ चीरियर् अल्लार् माट्टु-उन श्रेष्ठताहीन
(नीच) लोगों से; चैरहिलैन्-नहीं मिल सकती; तेवर् पालुम्-देवों के पास और;
आरिय मुनिवर् पालुम्-सुशील मुनियों के पास; अटैन्तैन्-आकर रहती हैं; इरैव-
नाथ; ईण्डु ओर् कारियम् उण्मै-इधर मेरा एक कार्य है, इसलिए; निन्ऱै काणिय
वन्देन्-तुमको देखने आई; अैन्ऱाळ्-कहा। २६२

श्रीवीरराघव के इस प्रश्न के उत्तर में उस मिथ्याभाषिणी ने कहा
कि विमल वीर ! मैं उन नीच लोगों से नहीं मिलती । देवों और मुनियों
से ही सम्पर्क रखती हूँ । प्रभु ! मेरा एक कार्य है । उसी के सिलसिले
में मैं तुमसे भेंट करने आयी हूँ । २६२

अन्ऱव डुरैत्त लोडु मैयन् मडिदऱ् कौव्वा
नन्ऱुदन् महळिर् शिन्दै नन्ऱैरिप् पाल वल्ल
पिन्ऱिदु तैरियु मैन्नाप् पयवळैत् तोळि यैन्बाल्
अैन्ऱका रियत्त शैल्लः(ह) दियैयुमे लिळैप्प लैन्ऱान् 263

अन्ऱवळ्-उसके; उरैत्तलोडुम्-कह चुकते ही; ऐयत्तुम्-प्रभु ने भी; नल्
मुतल् मकळिर् चिन्ऱै-सुन्दर भाल वाली इस स्त्री का अभिप्राय; अरितऱ्कु औव्वा-

जानने में आनेवाला नहीं होता; नल् नैरि पाल अल्ल-अच्छे पथ पर जानेवाला नहीं लगता; इतु-यह (इसका सत्य); पिन् तैरियुम्-पीछे मालूम होगा; अन्ता-विचार करके; प्यै वळै तोळि-भुजबलय-भूषित कंधों वाली; अन् पाल-मेरे पास; अन्त कारियत्तै-कौन से कार्य की अपेक्षा करती हो; चौल्-कहो; अ.तु इयैयुमेल-वह युक्त हो तो; इळैपल्-करूँगा; अन्तात्-कहा । २६३

उसका वह उत्तर सुनकर श्रीराम ने सोचा कि इस सुन्दर भाल वाली के (मन के अंदर रहनेवाले) विचार हमारे जानने में नहीं आते । पर वे सन्मार्गगामी नहीं लगते । इसका सत्य पीछे मालूम होगा । फिर उन्होंने उससे कहा— हे अंगदालंकृत कंधों वाली ! मेरे पास क्या उद्देश्य ले आयी हो ? बताओ । अगर वह उचित और कार्यसाध्य होगा, तो अवश्य करूँगा । २६३

तामुऱ्	कामत्	तन्मै	ताङ्गळे	युरैप्प	दैन्ब
दामैत्त	लाव	दन्ऱा	लरुङ्गुल	महळिर्क्	कम्मा
एमुऱ्	मुयिर्क्कु	नोवे	नैन्शैय्हेत्	यारु	मिल्लेत्
कामन्नेत्	डौरवन्	शैय्युम्	वन्मैयैक्	कात्ति	यैन्ऱाळ् 264

ताम् उऱ्-आप में उठी; काम तन्मै-कामेच्छा की स्थिति; ताङ्गळे उरैप्पतु अन्पतु-स्वयं कहना, यह; अरुम् कुल मकळिर्क्कु-उत्तम कुल की स्त्रियों के लिए; आम् अत्तल्-हो सकेगा, ऐसा कहना; आवतु अन्ऱु-होनेवाला नहीं है; एम् उऱ्म्-मोहमग्न; उयिर्क्कु-अपना जीवन रखने के लिए; नोवेत्-तड़प रही हूँ; अन् चैय्केन्-क्या कर सकूँगी; यारुम् इल्लेन्-(अपना) कोई नहीं रखती; कामन् अन्ऱु औरवन्-मन्मथ नाम का कोई; चैय्युम्-(जो) करता है; वन्मैयै-उस अत्याचार को; कात्ति-रोककर (मुझे) बचाओ; (अम्मा-री मैया); अन्ऱाळ्-कहा । २६४

उसके उत्तर में शूर्पणखा ने कहा कि कुलीन स्त्रियों के लिए अपने काम की चर्चा स्वयं करना साध्यकाम समझना ठीक नहीं है । री मैया ! वह कठिन है । मेरा प्राण अब मोहमग्न होकर क्षीण हो रहा है । उसे बचाने को तरस रही हूँ । क्या करूँ ? मेरे कोई सहायक भी नहीं हैं । अब काम नाम का वह मेरे ऊपर अत्याचार कर रहा है । उसकी क्रूरता को रोको और मेरी रक्षा करो । २६४

शेणुऱ्	नीण्डु	मीण्डु	शव्वरि	शिदरि	वैव्वे
रेणुऱ्	मिळिर्न्नुडु	नात्ता	विदम्बुरण्	डिरुण्ड	वाट्कण्
पूणियल्	कौङ्ग	यन्ना	ळम्मौळि	पुहल	लोडुम्
नाणिल	ळैय	णौय्य	णल्लळु	मल्ल	ळैन्ऱान् 265

चेण् उऱ् नीण्डु-दूर तक जाकर; मीण्डु-(स्थानाभाव से) लौटकर; चैम् अरि चित्ति-लाल डोरे (जिनमें) फँसे रहे; वैव्वेऱ् एण् उऱ्-विविध वैशिष्ट्यों से भरे; मिळिर्न्नु-चलित होकर; नात्ता वितम् पुरण्डु-नाना प्रकार से घूमकर; इरुण्ड-

अन्धकार के समान काले; वाळ् कण्—तलवार-सम नेत्रों वाली; पूण् इयल् कौङ्कै-आभरणभूषित स्तनों वाली; अन्ताळ्-उस (शूर्पणखा) के; अ मौळि-वह वचन; पुकललोट्टुम्-कहने पर; नाण् इलळ्-निर्लज्ज है; ऐय नौय्यळ्-बहुत ही नीच है; नल्लळुम् अल्लळ्-भली भी नहीं है; अन्नान्-(श्रीराम ने) समझा । २६५

यह कहते हुए उसने जो नखरे दिखाये, वे उसकी निर्लज्जता को साफ़ प्रकट करते थे । उसकी आँखें, लम्बी जाकर स्थानाभाव के कारण मुड़ी हों, इतनी लम्बी थीं और विचित्र अदाएँ दिखाती हुई विविध प्रकार से चलित होती थीं । वे अन्धकार के समान काली थीं और तलवार के समान तीक्ष्ण थीं । उसके स्तन आभरणों से शोभित थे । ऐसी उसने जब वह कथन किया तब, श्रीराम समझे कि यह अतीव निर्लज्ज है । यही नहीं, वह बड़ी ओछी भी है । भली स्त्री नहीं है । २६५

पेशल	तिरुन्द	वळ्ळ	लुळ्ळत्तिन्	पैरुडि	योराळ्
पूशलवण्	डरुडुड्	गून्दड्	पौय्म्महळ्	पुहन्ड	वैन्नगण्
आशैकण्	डरुळिड्	रुण्डो	वन्नेत	लुण्डो	वैन्नुम्
ऊशलि	नुलावु	हिन्डाण्	मीट्टुमो	रुरैयैच्	चौन्नाळ् 266

पेचलन् इरुन्त वळ्ळल्-(विचारमग्न) बिना कुछ कहे जो रहे, उन उदार प्रभु के; उळ्ळत्तिन् पैरुडि ओराळ्-मन की स्थिति समझ नहीं सकी; वण्ट् पूचल् अरुडुम्-भ्रमर नाद करते हैं (जिस पर बैठकर); कून्तल्-वैसा केश वाली; पौय् मकळ्-मायाविनी; पुकन्ड-(इसके) कथित वचन; अन् कण्-मेरे प्रति; आचै कण्ट्-प्रेम करके; अरुळिड् उण्टो-कृपा करने के फलस्वरूप हैं; अन्ड अन्तल् उण्टो-'न' ऐसा कहना है; अन्नुम्-ऐसे (दो); ऊचलिन्-विचारों के बीच में झूलने में जैसे; उलावुकिन्नाळ्-डोलायमान रहनेवाली; मीट्टुम् ओर् उरैयै चौन्नाळ्-फिर एक बात कहने लगी । २६६

यह सोचते हुए वे मौन रह गये । मायाविनी शूर्पणखा, जिसके केश पर सज्जित पुष्पों पर अलिकुल गुंजार कर रहे थे, श्रीराम के मन के भाव को समझ नहीं सकी । 'इसने जो कहा क्या वह मेरे ऊपर प्रेम करने की कृपा के फलस्वरूप था ? या वह इन्कार करने के लिए था ?' इन दो विचारों के बीच उसका मन झूले के समान झूलने लगा । फिर उसने एक बात कही । २६६

अळुदरु	मेनि	यायीण्	डैय्दिय	दरिन्दि	लादेन्
मुळुदुणर्	मुनिव	रेवड्	चैय्दौळिन्	मुदैयिन्	मुड्डिप्
पळुदरु	पैन्मै	योडु	मिळमैयुम्	बयत्तिन्	उेहप्
पौळुदौडु	नाळुम्	वाळा	कळिन्दत्त	पोलु	मैन्नाळ् 267

अळुतु अरु मेन्नियाय्-(जिसका) चित्र खींचना कठिन है, वैसे रूपधर; ईण्डु

अय्यित्यनु-तुम्हारा यहाँ आगमन; अङ्गितिलातेन्-नहीं जानती मैं; मुळुतु उणर्-सर्वज्ञ; मुत्तिवर् एवल्-महर्षियों की आज्ञा से; चैय् तौळिल्-उनकी सेवा-टहल; मुर्गैयिन् मुर्गि-यथाविधि पूरा करके; पळुतु अरु पण्मैयोदुम्-अकलंकित स्त्रीत्व के साथ; इळमैयुम्-यौवन को भी; पयन् इत्तुर् एक-व्यर्थ बीतने देते हुए; पौळुतौदु नाळुम्-समयों के साथ दिन भी; वाळा कळिन्तन-व्यर्थ बीत गये; अन्नाळ्-कहा । २६७

ऐसे सुन्दर रूप वाले, जिसका चित्र खींचना कठिन है ! तुम इधर आये, यह मैं नहीं जानती थी । इसलिए सर्वज्ञ मुनियों की सेवा-टहल में श्रद्धा के साथ लगी रह गयी और मेरे अकलंक चरित्र के साथ मेरे यौवन को भी निरर्थक बनाते हुए अनेक काल यों ही व्यर्थ बीत गये । २६७

निन्दतै	यरक्कि	नीदि	निलैयिलाळ्	विनैमर्	इण्णि
वन्दत	ळाहु	मैन्ऱे	वळळु	मत्तत्तुद	कौण्डान्
सुन्दरि	मणत्तिर्	कौत्त	तौन्मैयिन्	इणिविर्	इन्नाल्
अन्दणर्	पावै	नीया	तरशरिल्	वन्दे	तैन्नाल् 268

वळळुम्-उदार प्रभु ने भी; निन्दतै अरक्कि-निन्द्य निशाचरी है; नीति निलै इलाळ्-नैतिक स्थिति वाली नहीं; मर्ऱु विनै अण्णि-कोई दूसरा (बुरा) कार्य सोचकर; वन्दत आकुम्-आयी हुई है, यही होना चाहिए; अन्ऱे-ऐसे ही; मत्तत्तुळ् कौण्डान्-मन में धारणा कर ली; चुन्तरी-सुन्दरी; नी अन्तणर् पावै-तुम ब्राह्मण-कन्या हो; यान्-मैं; अरचरिल् वन्तेन्-राजाओं (के कुल) में पैदा हुआ (क्षत्रिय) हूँ; मणत्तिर्कु औत्त-विवाह-क्रम के योग्य; तौन्मैयिन् तुणिपिर्ऱु अन्ऱु-प्राचीन प्रथा को पुष्ट करनेवाला नहीं; अन्नाल्-कहा । २६८

प्रभु को विश्वास हो गया कि यह निन्द्य निशाचरी है । न्याय-मार्ग पर जानेवाली नहीं है । कोई भयंकर उद्देश्य लेकर इधर आयी है । यह दृढ़ धारणा करके प्रभु ने समझाया कि सुन्दरी ! तुम ब्राह्मण-कुल-कन्या हो । मैं तो क्षत्रिय राजकुल का हूँ । विवाह सम्बन्धी जो क्रम निर्धारित हुए हैं, उन प्राचीन क्रमों के अनुसार हमारा विवाह होने योग्य नहीं है । २६८

आरण	मर्ऱैयो	तैन्दै	यरुन्ददिक्	कर्प्पि	नैम्मोय्
तारणि	पुरन्द	शाल	कडङ्गडर्	मरविर्	रैयल्
पोरणि	पौलङ्गौळ्	वेलोय्	पौरुन्दलै	यिहळदर्	कौत्त
कारण	मिदुवे	याहि	लैन्नुयिर्	काण्वै	तैन्नाळ् 269

पोर् अणि-युद्ध ही जिसका शृंगार हो, ऐसे; पौलङ्ग कौळ् वेलोय्-सुन्दर शक्ति-धारो; अन्तै-मेरे पिता; आरण मर्ऱैयोन्-वेदज्ञ विप्र हैं; अरुन्तति कर्प्पिन्-अरुन्धती-सम पतिव्रता; अम् ओय्-मेरी माँ; तारणि पुरन्त-धरणीपालक; चालकटङ्कटर्-सालकटङ्कट के; मरपिल् तैयल्-वंश की पुत्री है; पौरुन्तलै-सम्मत

न होकर; इकल्लुत्तर्कु ओत्त-उपेक्षा करने के लिए युक्त; कारणम् इतुवे आकिल्-कारण यही है, तो; अन् उयिर् काण्पैन्-अपनी जान को (बचा हुआ) पा जाऊँगी; अन्नाळ्-कहा । २६६

शूर्पणखा ने उत्तर में कहा कि युद्ध ही जिसका शृंगार है, ऐसे उज्ज्वल भाला के धारी ! तुम यह जान लो कि मेरे पिता वेदज्ञ ब्राह्मण थे, पर अरुन्धती ही सम पतिव्रता मेरी माता धरणी के पालक 'सालकटंकट' नाम के राजवंश की संतान थी । (अध्यात्म रामायण के अनुसार तृणविट् राजा के सालकटंकटा नाम की लड़की थी । उसके पेट से विश्रवस के वर से शूर्पणखा पैदा हुई । दूसरा वृत्तान्त है कि राक्षस-कुल के हेति का पुत्र विद्युतकेश था । उसने सालकटंकटा से विवाह किया और उनके पुत्र माल्यवान, मालि और सुमालि थे । उनमें सुमाली की पुत्री कैकशी थी, जिसके रावण, शूर्पणखा आदि सन्तानें थीं ।) अगर तुम्हारी अस्वीकृति का कारण इतना ही था तो मैं बच गयी । क्षत्रिय से विवाह करने का मेरा अधिकार स्वतः सिद्ध है । इसलिए तुमसे विवाह न होने की हालत में जीवन त्यागने का विचार जो मैंने किया था अब उस विचार को त्याग दूंगी और अपने को जीवित रखूंगी । २६९

अस्तुतिय लन्न कूड वहत्तुळ नहैयिन् वैळ्ळक्
कुरुत्तैळ् हिन्ड नीलक् कौण्डलुण्ड डट्टड् गौण्डान्
वरुत्तनीड् गरक्कर् तम्मिन् मानुडर् मणत्त नङ्गै
पौरुत्तमन् ईन्ड शालप् पुल्लैयोर् पुहल्व रैन्डान् 270

अस्तुतियळ्-अर्थिनी के; अन्न कूड-ऐसा कहने पर; अकत्तु उड नकैयिन्-अन्दर उठे हास के; वैळ्ळै कुरुत्तु-श्वेत अंकुर; अळ्ळुकिन्ड-फूट निकलते हों, ऐसे मन्दहास के साथ; नील कौण्डल्-श्यामलमेघ-सम श्रीराम ने; उण्डाट्टम् कौण्डान्-एक लीला रची; नङ्गै-वाले; वरुत्तम् नीड्कु-जो दुख से दूर है, उन; अरक्कर् तम्मिन्-राक्षसों से; मानुडर् मणत्तत्-मानवों का विवाह करना; पौरुत्तम् अन्ड-उचित नहीं; ईन्ड-ऐसा; चाल पुल्लैयोर्-गम्भीर विद्वान्; पुहल्व-कहेगे; रैन्डान्-कहा । २७०

अर्थिनी शूर्पणखा ने यह कहा तो श्रीराम को हँसी आ गयी । वह हँसी अन्दर गड़ी हास-बीज के श्वेत अंकुर के समान बाहर प्रकट हुई । मेघश्याम ने एक लीला रचने का विचार किया । उन्होंने कहा कि अंगने ! राक्षस दुख से अभिभूत न होनेवाले हैं । मनुष्य तो विविध संकटों से ग्रस्त रहनेवाले हैं । मनुष्य-राक्षस का विवाह उचित नहीं होता । यह गम्भीर विद्वानों का मत है । २७०

परावरम् जिरत्तै यारम् पत्तियिन् पयत्तै योरा
दिरावणन् इङ्गै यैन्ड देळैमैप् पाल दैन्ता

अरावणै यमल नत्ता यद्वित्तेन् मुत्तन् देवर्प
पराविन्ने नीड्गि नेत्तप् पळिपडु पिडवि येन्नाळ् 271

अरावणै अमलन् अन्नाय-शेषशायी निर्मल (विष्णु) देव के समान रहनेवाले; परावु अरुम्-जिसका विस्तार से कहना कठिन है; चिरत्तै आरुम्-श्रद्धा से युक्त; पत्तिपिन् पयत्ते-उस भक्ति के फल को (जो मुझे मिला है); ओरातु-नहीं सोचकर; इरावणन् तड्कै-रावण-भगिनी; अँन्नु-कहना (और उपेक्षा करना); एळ्मै पालतु-अज्ञता से सम्बन्धित है; अँन्ना-कहकर; तेवर् पराविन्नेन्-देवों की स्तुति की (मैंने); अ पळि पडु पिडवि-उस निन्दा योग्य जन्म से; नीड्किनेन्-अलग हो गई हूँ; मुत्तन्म् अद्वित्तेन्-पहले ही समझा दिया (मैंने); अँन्नाळ्-कहा । २७१

शूर्पणखा ने तर्क प्रस्तुत किया कि हे शेषशायी विमल विष्णु-सम राम ! तुम मुझे रावण की भगिनी के रूप में ही देखते हो । मैंने कितनी श्रद्धा के साथ कैसी भक्ति की है, इसका यथार्थ विस्तार ही कठिन है । उसको भूल जाते हो और रावण की बहिन कहकर उपेक्षा दिखाते हो । यह तुम्हारी अज्ञता है ! उसने आगे विश्वास दिलाया कि मैंने देवों की स्तुति-पूजा आदि करके वह जन्म-कलंक धुला दिया है ! यह पहले ही मैंने तुमको बताया था । २७१

औरवत्तो वुलह मून्निर् इ कोङ्गौर तलैव नूङ्गिल्
औरवत्तो कुबेर निन्ति नुडन्विडन् दारुह ळन्तार्
तरुवरेड् कोडु मन्नेड् इमियवे रिडत्तुच् चारल्
वैरुवैन् नङ्गै येन्नान् मीट्टव ळिनैय शौन्नाळ् 272

नङ्कै-नारीरत्न; निन्तिन् उटन् पिडन्तार्कळ्-तुम्हारे सहोदरों में; औरवत्तो-एक तो; उलकम् मून्निर्कु-तीनों लोकों का; ओङ्कु और तलैवन्-उन्नत और अकेला अधिपति है; ऊङ्किल्-वैभव में; औरवत्तो-और एक तो; कुपेरन्-धनद (कुबेर) है; अन्तार् तरुवरेल्-वे कन्यादान कर देंगे; कोडुम्-मैं ग्रहण कर सकूंगा; अन्नेल्-नहीं तो; तमियै-अकेली तुम; वेरु इट्त्तु चारल्-दूसरे की हो जाओ; वैरुवैन्-उससे डरता हूँ; अँन्नान्-कहा; अवळ्-वह; मीट्टु-फिर; इन्नैय चौन्नाळ्-यों बोली । २७२

श्रीराम ने बहस की । हे नारी-रत्न ! तुम्हारे सहोदरों में एक तो तीनों लोकों का निर्द्वन्द्व अधिपति रावण है । दूसरा धन-देवता कुबेर है । वे तुमको मेरे पास कन्यादान में दे देंगे, तो मैं तुमको ग्रहण कर सकूंगा । नहीं तो, तुम अपनी इच्छा से किसी परपुरुष को वरो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता और मुझे डर पैदा होता है । तब शूर्पणखा ने यों उत्तर दिया । २७२

ॐ कान्दर्प्प मैन्ब दुण्डाड् कादलिड् कलन्द शिन्दै
मान्दर्क्कु मडन्दै मार्क्कु मरैहळे बहुत्त कूट्टम्

एन्दर् पौर् ओळि नायिः(ह) दियैन्दपि तैन्क्कु मूत्त
वेन्दर्क्कुम् विरुप्पिर् राहुम् वेरुमो रुरैयुण् डैन्ऱाळ् 273

एन्तल् पौन् तोळिनाय्—पर्वत-सम सुन्दर कंधों वाले; कातलिल् फलन्त चिन्तै-प्रेम से परस्पर अनुरक्त मन वाले; मान्तरक्कुम्-पुरुषों और; मटन्तै मारक्कुम्-स्त्रियों के लिए; कान्तरप्पम् अँत्पतु-गान्धर्व प्रकार का; मरैकळे वकुन्त-वेदों से ही निविष्ट; कूट्टम्-विवाह; उण्टु-है; इ.तु इयैन्त पिन्- (ऐसा विवाह) यह (हममें) हो जाने के बाद; अँतक्कु मूत्त वेन्तरक्कुम्-मेरे बड़े भाइयों को भी; विरुप्पिर् आकुम्-पसन्द आयगा; अन्नियुम्-इसके अलावा; वेरुन् ओर् उरै उण्टु-दूसरी एक बात भी है; अँन्ऱाळ्-कहा । २७३

पर्वत-सम मनोरम कंधे वाले ! परस्पर प्रेम में संयुक्त मन वाले पुरुष और स्त्रियाँ गान्धर्व विवाह कर ले सकते हैं । यह वेदसम्मत विवाहरीति ही है । पहले हम विवाह कर ले तो देखोगे कि मेरे अग्रज इसे चाव के साथ स्वीकार कर लेंगे । और भी एक लाभ है, इसमें । सुनो । २७३

ॐ मुनिवरो डुडैय मुन्ने मुदिर्पहै मुरैमै नोक्कार्
तनियैनी याद लान्मर् इवरोडुन् दळ्वर् कौत्त
वित्तैयमी दल्ल दिल्लै विण्णुनिन् नाट्चि याक्कि
इत्तियवर् महिळ्न्डु वन्डुन् नेवलि निरुप्प रैन्ऱाळ् 274

अवर्-वे (मेरे अग्रज); मुन्ने-पहले; मुनिवरोडु उटैय-मुनियों के साथ जो रखते हैं; मुतिर् पक्कै मुरैमै-वह वर की रीति; नोक्कार्-नहीं रखेंगे; नी तनियै आतलाल्-तुम एकाकी हो, इसलिए; अवरोडुम्-उनके साथ; तळ्वर्कु-मिलकर रहने के लिए; औत्त-अनुकूल; वित्तैयम्-उपाय; ईतु अल्लतु इल्लै-इसके सिवा कुछ नहीं है; इत्ति-आगे; विण्णुम् निन् आट्चि आक्कि-स्वर्ग को तुम्हारे शासन के अधीन बनाकर; अवर् मक्किळ्न्तु वन्तु-वे आनन्द के साथ आकर; उन् एवलिन्-तुम्हारे आदेश की प्रतीक्षा में; निरुप्-रहेगे; अँन्ऱाळ्-कहा । २७४

हमारा विवाह हो जायगा तो मेरे भाई रावण आदि मुनियों को वर की दृष्टि से नहीं देखेंगे । तुम इस जंगल में एकाकी रहते हो और राक्षसों की मैत्री तुम्हारे कुशल के लिए आवश्यक है । उनसे मित्रता के साथ रहने का एक मात्र उपाय यही—हमारा विवाह ही—हो सकता है । कोई दूसरा मार्ग नहीं । अब वे स्वर्ग को भी तुम्हारे अधीन करके स्वयं तुम्हारे पास सहर्ष आयेंगे और अधीन किकर रहेंगे । तुम्हारी आज्ञाएँ मन् लगा कर मानेंगे । २७४

ॐ निरुदरुत् मरुळुम् बैर्रे निन्नलम् बैर्रे तिनत्तो
डौरुवरुन् जैल्वत् तियाण्डु मुरैयवुम् बैर्रे तौन्ऱो
तिरुनहर् तोरुन्द पिन्नर्च् चैय्दवम् बयन्द दैन्ना
वरिशिलै वडित्त तोळान् वाळैयि इलङ्ग नक्कान् 275

वरिचिलै वटित्त तोळान्-बन्धनयुक्त धनुष चलाने में अभ्यस्त भुजा वाले; निरुत्तर तम् अरुल्लम् पेंड्रेन्-राक्षसों का अनुग्रह पा गया; निन् नलम् पेंड्रेन्-तुम्हारी कृपा प्राप्त हो गई; याण्डुम्-कभी भी; औरु अरुम् चैल्वत्तु-क्षय न होनेवाले धन-वैभव के साथ; निन्तौटम् उरैय्युम् पेंड्रेन्-तुम्हारे संग रहना भी प्राप्त हो गया; तिरुनकर् तीरन्त पिन्नर्-सुन्दर अयोध्या नगर छोड़ आने के बाद; चैय् तवम्-मेरे किये हुए तप ने; पयन्ततु औन्डो-क्या एक (पर अनेक) फल प्रदान कर दिया है; अन्ता- (व्यंग्य से) कहकर; वाळ् अयिरु-उज्ज्वल दाँत; इलङ्क-प्रकट करते हुए; नक्कान्-हैंसे । २७५

बन्धनयुक्त कठोर धनुष के प्रयोग में अभ्यस्त श्रीराम ने व्यंग्य किया । हा ! मेरा अहोभाग्य ! राक्षसों का अनुग्रह मिल गया ! तुम्हारी कृपा मिल गयी ! अक्षय धन-दौलत के साथ तुम्हारी संगति का भी बड़ा भाग्य हाथ आ गया ! श्रीनगर अयोध्या छोड़कर आने के बाद मैंने जो तपस्या की थी, उसका फल क्या एक है (अनेक हैं) ! यह कहकर श्रीराम सुन्दर दाँतों को प्रकट करते हुए हैंसे । २७५

❀ विण्णिडै यिम्बर् नाहर् विरिञ्जते मुदलोर्क् कैल्लाम्
कण्णिडै यौळियिन् पाङ्गर्क् कडिहमळ् शालै निन्नरुम्
पेण्णिडै यरशि तेवर् पेंड्रेनल् वरत्ताड् पिन्नर्
मण्णिडै मणियिन् वन्द वञ्जिये पोलवाळ् वन्दाळ् 276

विण् इटै-व्योम में; इम्पर्-भू पर; नाकर्-नागलोक में; विरिञ्जते-विरंचि; मुतलोर्क्कु अल्लाम्-आदि सबके लिए; कण् इटै-नेत्रों की; यौळियिन् पाङ्गर्-ज्योतिस्वरूप श्रीराम के पास; पेण् इटै अरचि-स्त्रियों में रानी; तेवर् पेंड्रे नल् वरत्ताल्-देवों के प्राप्त वर से; पिन्नर्-बाद; मण् इटै-पृथ्वी पर; मणियिन् वन्त वञ्जिये पोलवाळ्-मणि से निकली लता के समान (अवतरित) सीतादेवी; कटि कमळ् चालै निन्नरुम्-सुगन्धि बिखेरनेवाली पर्णशाखा से; वन्ताळ्-आने लगी । २७६

श्रीराम स्वर्ग, भूलोक और पाताल में रहनेवाले ब्रह्मा से लेकर सभी जीवों के नेत्रों के ज्योति-स्वरूप थे । उनके पास आने के लिए सीताजी तभी पर्णशाला के बाहर निकली । वे स्त्रियों में रानी थीं । देवों के वर को पूरा करने के लिए भूमि पर अवतरित हुई थीं । वे रत्न-वल्ली के समान सुवास से पूरित पर्णशाला के बाहर प्रकट हुईं । २७६

❀ अन्शुड वुण्डु पेळ्वा युणर्विलि युरुवि तारुम्
वान्शुडर्च् चोदि वैळ्ळम् वन्दिडै वयङ्ग नोक्कि
मीन्शुडर् विण्णु मण्णुम् विरिन्द पोररक्क रैन्नुम्
कान्शुड मुळैत्त कड्पिन् कनलियैक् कण्णिड् कण्डाळ् 277

अन्-शरीर को; चुट-काम ने तपाया, उससे; उण्ड्कु-मुरझाये रहनेवाली; पेळ् वाय्-बड़ा मुख वाली; उणर्वु इलि-मतिहीन शूर्पणखा; उरुविन्-भगवती के

रूप में; नाऋम्-प्रकट हुई; वान् चुटर्-बड़ी कान्तिमय; चोति वैळळम्-ज्योति-
प्रवाह; वन्तु इटै वयङ्क-आकर उनके मध्य प्रकट हुआ तो; नोक्कि-उसको
देखकर; मीन् चुटर् विण्णुम्-नक्षत्र-ज्योतिर् आकाश में; मण्णुम्-धरती में;
विरिन्त-फैले हुए; पोर् अरक्कर् अँन्नुम्-झगड़ा लू राक्षस रूपी; कान् चुट-जंगल
को जलाने; मुळैत्त-उद्भूत; कर्प्पिन् फन्नलियै-पातिव्रत्य रूपी अग्निशिखा को;
कण्णिन् कण्टाळ्-अपनी आँखों से देखा (देखती ऐसा अनुभव किया) । २७७

शूर्पणखा ने, जिसका शरीर कामाग्नि से तप्त होकर मुरझा-सा गया
था, जिसका मुख बहुत बड़े बिल के समान था और जो अपनी बुद्धि खो
चुकी थी, सीताजी के रूप में उनके मध्य आनेवाली बड़ी कान्तिमय ज्योति
के प्रवाह को देखा । वह ऐसी थीं, मानो वह पातिव्रत्य की अग्निशिखा हैं,
जो नक्षत्रोज्ज्वल आकाश में और भूमि में फैले रहे राक्षस-कानन को जलाने
के लिए उद्भूत हैं । २७७

ॐ पण्बुड नंडिडु नोक्किप् पडैक्कुनर् शिरुमै यल्लाल्
अँब्बिड्डु गळहुक् कैल्लै यिल्लैया मँन्ऱु निन्ऱाळ्
कण्बिड् पौरळिड् चैल्ला कर्त्तुत्ति तः(ह)दे कण्ड
पँब्बिडन् दैनुक् कैन्ऱा लँन्नुडुम् पिऱरुक् कैन्ऱाळ् 278

पण्पु उड-खूब आँख लगाकर; नँडितु नोक्कि-दीर्घकाल तक देखकर; पडैक्कुनर्
चिरुमै अल्लाल्-सृष्टिकर्ता की गलती है, नहीं तो; अँप् पिऱड्कु-कल्पना में आनेवाली;
अळकुक्कु अँल्लै इल्लै आम्-सुन्दरता की सीमा नहीं होता, इस बात को साबित करती
हुई; निन्ऱाळ्-यह शोभायमान (खड़ी) रहती है; कण् पिऱ पौरळिल् चैल्ला-वृष्टि
दूसरे पदार्थ पर नहीं जाती; कर्त्तु अँन्नि अ.ते-मन भी वही है; कण्ट-इसे जो
देखती; पँप् पिऱन्तेनुक्कु-स्त्री पैदा हुई मेरी स्थिति यह है; अँन्ऱाळ्-तो; पिऱरुक्कु
अँन् पट्टम्-दूसरे (पुरुषों) की क्या होगी; कैन्ऱाळ्-(आश्चर्य के साथ) कहा । २७८

उसने खूब आँखे फाड़कर बहुत देर तक देखा । उसे एक नया तथ्य
सूझा । प्रपंचसृजक ब्रह्मा की ही असमर्थता है कि उसकी सृष्टि में सुन्दरता
भी सीमित रहती है । नहीं तो सत्य यह है कि सुन्दरता की कोई सीमा
नहीं ! यह तथ्य साबित करती हुई सीताजी उनके सामने खड़ी थी ।
शूर्पणखा ने विस्मय के साथ सोचा कि इस सुन्दरता के खजाने को जो देखता
है वह उस पर से आँख नहीं हटा सकता । उसके मन की भी वही हालत
होगी । मैं स्त्री हूँ । इसको देखकर मेरी भी यह हालत हो गयी तो
अन्य (पुरुष) लोगों की क्या स्थिति होगी ? । २७८

ॐ पौरुडिडत् तानै नोक्किप् पूवैयै नोक्कि निन्ऱाळ्
करुदमड् रिनिवे इिल्लै कमलत्तुक् कडवु डानुस्
औरुतिडत् तुणर नोक्कि युरुविनुक् कुलह मन्ऱिल्
इरुतिडत् तार्क्कुज जैय्द वरम्बिव रिऱव रँन्ऱाळ् 279

पौर तिरुत्तात्तै-युद्धदध श्रीराम को; नोक्कि-देखकर; पूवैयै नोक्कि-फिर देवी को देखती; निन्ऱाळ्-विस्मित खड़ी (जो) रही; कमलत्तु कटवुळ तात्तुम्-कमलासन देवता (ब्रह्मा) भी; और तिरुत्तु-अपूर्व रीति से; उणर नोक्कि-विवेक से देखकर; उलकम् मून्ऱिन्-तीनों लोकों के; इरु तिरुत्तार्क्कुम्-पुरुष-स्त्री दोनों वर्गों के लिए; इवर् इरुवर्-ये दोनों; उरुविनुक्कु चैय्त् वरम्पु-रूपसौंदर्य की रची सीमाएँ है; मर्ऱु करुत-दूसरा सोचने के लिए; इत्ति वेरु इल्लै-अब कुछ नहीं; अन्ऱाळ्-धारणा बना ली । २७६

शूर्पणखा ने युद्धसमर्थ श्रीराम को देखा । फिर एक बार सीताजी पर दृष्टि डाली । विस्मयविमूढ़ खड़ी रह गयी । उसने विचार किया कि ब्रह्मा ने खब सोचकर अच्छी तैयारी के साथ इन दोनों को पुरुष और स्त्री के सौन्दर्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में सरजा है । तीनों लोकों में पुरुष के सौन्दर्य की सीमा श्रीराम हैं और स्त्री-सौन्दर्य की सीमा यह स्त्री है । उसने दृढ़ धारणा बना ली, इसके सिवा सोचने के लिए गुंजाइश नहीं है । २७९

मरुवौन्ऱु	कून्द	लाळै	वत्तत्तिवन्	कौण्डु	वारान्
उरुविङ्गि	दुडैय	राह	मर्ऱैयोर्	यारु	मिल्लै
अरविन्द	मलरु	णीङ्गि	यडियिणै	पडियिर्	डोयत्
तिरुविङ्गु	वरुव	दैन्तो	वैन्ऱहन्	दिहैत्तु	निन्ऱाळ् 280

मरु औन्ऱु-सुवास-लगे; कून्तलाळै-केश वाली (इस) को; इवन् वत्तत्तु कौण्डु वारान्-यह वन में नहीं लायगा; इतु उरुवम् उटैयर् आक-ऐसी रूपवती; मर्ऱैयोर् यारुम्-दूसरी कोई; इङ्कु इल्लै-यहाँ नहीं है; तिरु-श्रीलक्ष्मीदेवी; अरविन्द मलर् उळ्-अरविन्द-मध्य वास; नीङ्कि-छोड़कर; अटि इणै-चरणद्वय; पडियिल् तोय-भूमि पर पड़ने देते हुए; इङ्कु वरुवतु-यहाँ आती; अन्ऱो-क्योंकर; औन्ऱु-यह सोचकर; अकम् तिकैत्तु-मन में चकित होकर; निन्ऱाळ्-खड़ी रही । २८०

उसने तर्क किया कि सुवासित केश वाली इसको यह पुरुष वन में अपने साथ नहीं लाया होगा । इतनी रूपवती स्त्रियाँ कोई अन्य हैं भी नहीं । इसलिए यह श्रीदेवी ही होगी, जो अपना कमल पर वास छोड़कर अपने चरणद्वय को भूमि पर पड़ने देती हुई आयी है । पर उसका इधर आगमन किस हेतु हुआ है ? ऐसा विस्मय करती हुई चकितमन होकर शूर्पणखा खड़ी रही । २८०

* पौन्ऱैप्	पोलौळिरु	मेनि	पूवैपोल्	वण्णत्	तानिम्
मिन्ऱैप्पो	लिडैया	ळोडु	मेवुम्	वेडत्त	नल्लन्
तन्ऱैप्पोर्	इहैयो	रिल्लात्	तळिरैप्पो	लडियि	नाळुम्
अन्ऱैप्पो	लिडैये	वन्दा	ळिहळ्विप्पे	तिवळै	यैन्ऱा 281

पूवै पोल् वण्णत्तान्-अतसी पुष्प का-सा वर्ण-वाला; पौन्ऱै पोल् ओळिरुम्

मेनि-स्वर्ण की-सी कान्ति का शरीर; मिन्नं पोल्-विजली-सम; इटैयाळीटुम्-कमर वाली के साथ; मेवुम् वेटत्तन् अल्लन्-मिलकर रहे, ऐसे गृहस्थ धर्मोचित वेश का नहीं; तन्नै पोल् तर्कयोर् इल्ला-जिसके समान श्रेष्ठ स्त्रियाँ नहीं होतीं (जो अप्रतिम है); तळिरै पोल् अटियिताळुम्-जिसके पल्लव के समान चरण हैं; इटये- (यह) बीच में; अन्नै पोल् वन्ताळ्-मेरे समान आई हुई होनी चाहिए; इवळ-इसको; इक्कळ्विप्पेन्-उपेक्षित करा दूँगी; अन्ना-ऐसा निश्चय करके । २८१

अतसी-पुष्प का-सा रंग वाला यह स्वर्ण की-सी चमक वाली और विजली-सी कमर वाली इसके साथ गृहस्थी चलाता नहीं लगता । इसका वेश गृहस्थी योग्य नहीं है । तपस्वी का वेश है । यह अप्रमेय स्त्री, पल्लव-चरणा नारी मेरे समान बीच में आयी हुई है । हाँ, वही होना चाहिए । अब मैं उसको निन्दित कर उपेक्षित करवा दूँगी । —शूर्पणखा ने यह संकल्प किया । २८१

✽ वरुमिवळ्	मायम्	वल्लळ्	वज्जत्तै	यरक्कि	नैज्जम्
तैरिविल	तेरुन्	दन्मै	शोरियोय्	शैव्वि	दन्नाल्
उरुविटु	मैय्य	दन्ना	लूनुहर्	वाळ्क्कै	याळै
वैरुविने	नैय्दि	डामल्	विलक्कुदि	वीर	वैन्नाळ् 282

चोरियोय्-हे अच्छे गुण वाले; वरुम् इवळ्-जो आ रही है, यह; मायम् वल्लळ्-माया में निपुण है; वज्जत्तै अरक्कि-वंचक राक्षसी है; नैज्जम् तैरिवु इल-इसका मन अगम्य है; तेरुम् तन्मै-इसको अच्छा मानना; शैव्वितु अन्ना-ठीक नहीं; उरु इतु मैय्यतु अन्ना-उसका यह रूप भी सच्चा नहीं; अत् नुकर् वाळ्क्कैयाळै-मांसाहारी जीवन वाली इसे; वैरुविनेन्-(देखकर) डरती हूँ; अय्यतिडामल्-पास न आने दो; वीर-हे वीर; विलक्कुति-हटाओ; अन्नाळ्-कहा । २८२

ऐसा संकल्प करके शूर्पणखा श्रीराम से बोली । हे अच्छे गुण वाले ! यह जो आ रही है माया में निपुण है । वंचकी निशाचरी है । इसके मन के भाव गूढ़ हैं और हमारी समझ में नहीं आ सकेंगे । इसको अच्छा मानना भला नहीं होगा । इसका रूप भी सच्चा नहीं है । मांस खाकर जीवन चलानेवाली इसको देखकर मेरे मन में भय पैदा होता है । हे वीर ! उसको पास आने मत दो । रोको और भगाओ । २८२

✽ ओळ्ळिटुन्	नुणर्वु	मिन्ने	युन्नैया	रौळ्ळिक्कु	मोट्टार्
तैळ्ळिय	नलत्ति	नालुन्	शिन्दनै	तैरिन्द	दम्मा
कळ्ळवल्	लरक्कि	पोला	मिवळुनी	काण्डि	यैन्ता
वैळ्ळिय	मुखवन्	मुत्तम्	वैळिप्पड	वीर	तक्कान् 283

वीरन्-वीर राघव; मिन्ने-विद्युत (-सम स्त्री); उन् उणर्वु ओळ्ळिटु-तुम्हारी समझ बड़ी साफ़ है; उन्नै यार् ओळ्ळिक्कुम् ईट्टार्-तुमसे छिपने की किसके पास शक्ति है; तैळ्ळिय नलत्तिनाल्-सुलझी हुई शक्ति से; उन् चिन्तनै-तुम्हारी

बुद्धि ने; तैरिन्तु-यह बात जान ली; अस्मा-री माँ; इवळुम्-यह भी; कळ-चोर; वल् अरक्कि-भयंकर राक्षसी; पोल् आम्-होगी, अवश्य; नी काण्टि-तुम देख लो; अँत्ता-कहकर; वैळ्ळिय मुखवल् मुत्तम्-श्वेत दन्तमुक्ता; वैळिप्पट-प्रकट करके; नक्कान्-हँसे । २८३

श्रीवीरराघव ने इसके उत्तर में कहा कि विद्युत के समान लगनेवाली नारी ! तुम्हारी सूझ भी बड़ी साफ़ है ! कौन तुमसे छिपने-छिपाने की क्षमता रखता है ? तुम्हारी बूझ ने अपने सामर्थ्य से सच्चाई जान ली ! हा ! री मैया ! यह अवश्य चोरनी, भयंकर राक्षसी ही होगी शायद ! तुम भी देख लो । ऐसा कहकर मोती-समान मनोरम दाँतों को प्रकट करते हुए श्रीराम हँसे । २८३

❖ आयिडै	यमुदिन्	वन्द	वरुन्ददिक्	कऱ्पि	तञ्जौल्
वेयिडै	तोळि	नाळुम्	वीरनैच्	चेरुम्	वेलै
नीयिडै	वन्द	दैनै	निरुदरुत्तम्	बावै	यँत्ताक्
कार्यैरि	यनैय	कळळ	वुळ्ळत्ताळ	कदित्त	लोडुम् 284

अ इटै-उस समय; अमुतिन् वन्त-अमृत के समान आगत; अरुन्तति कऱ्पिन्-अरुन्धती के समान पातिव्रत्य; अम् चौल्-मधुर बोली; वेय् इटै-बाँस को पीछे करनेवाले (बाँस से भी सुडौल); तोळिताळुम्-कन्धे, इनसे युक्त सीताजी भी; वीरनै-श्रीवीरराघव के पास; चेरुम् वेलै-आई तब; काय् अँरि अँनैय-जलती आग के समान; कळळ उळ्ळत्ताळ-कपट-भरे मन वाली के; निरुदरुत्तम् पावै-हे राक्षसी स्त्री; इटै नी वन्तु-बीच में तुम्हारा आना; अँत्तै-कैसा; अँत्ता-कहकर; कतित्तलोडुम्-कोप के साथ बढ़ने पर । २८४

तब तक सुधा-सम वहाँ जो आयीं, वे अरुन्धती-सी पतिव्रता, मधुर-वाणी और बाँस के समान कंधों वाली सीताजी श्रीराम के पास आ गयीं । झट जलती आग के समान वंचना मन में रखनेवाली शूर्पणखा ने ताड़ना दी कि राक्षस-कुमारी ! तुम हमारे बीच में कैसी आयीं ? यह कहकर वह कोप के साथ श्रीसीता की तरफ़ बढ़ने लगी । २८४

❖ अञ्जित्तळ	वञ्जि	यन्त	मिन्लिडै	यलश	वोडिप्
पञ्जिन्मैल्	लडिह	णोवप्	पदैत्तनळ	परुवक्	काल
मञ्जिडै	वयङ्गित्	तोन्नुम्	पवळत्तिन्	वल्लि	येपोर्
कुञ्जर	मनैय	वीरन्	कुववुत्तो	उळ्ळुविक्	कौण्डाळ 285

अञ्चित्तळ-भयभीत (सीताजी); मिन् इटै-बिजली-सी कमर को; वञ्चि अन्त-लता के समान; अलच-बल खाने देती हुई; ओटि-दौड़कर; पञ्चिन् मैल् अटिकळ-रुई-समान चरणों को; नोव-कष्ट देते हुए; पदैत्तनळ-सिहरकर; परुव काल मञ्चु इटै-वर्षाकालीन मेघ के बीच; वयङ्कि तोन्नुम्-साफ़ दिखनेवाली; पवळत्तिन् वल्लिये पोत्-प्रवाल-लता ही के समान; कुञ्चरम् अँनैय वीरन्-कुंजर-

सम वीर श्रीराम के; कुववु तोळ्-पुष्ट और उन्नत कंधों से; तळुवि कौण्टाळ्-लिपट गई । २८५

शूर्पणखा को अपने पास आते देखकर श्री सीताजी भयभीत हो गयीं । अपनी बिजली-सी कमर को लता के समान लचकाती हुई दौड़ीं । रुई-समान पैरों को दुख देती हुई हड़बड़ाहट के साथ वह दौड़ी और कुंजर-सम श्रीराम के सबल और पुष्ट कंधों से ऐसे लग गयीं जैसे वर्षाकालीन मेघ के मध्य प्रवाललता लग गयी हो । २८५

❀ वळैयैयिर्	रवरह	ळोडु	वरुम्बिळै	याट्टेन्	रालुम्
विळैवन्न	तीमै	येया	मैन्वदै	युणर्न्दु	वीरन्
उळैवन	वियर्ऱु	लौल्लै	युन्निलै	युणरु	मायिन्
इळैयवन्	मुत्तियु	नङ्गै	येहुदि	विरैवि	नैन्ऱान् 286

वळै अयिर्ऱु-वक्रदांत वाले; अवरुक्कोटुम्-उन (राक्षसों) के साथ; वरुम्बिळैयाट्टु अन्नरालुम्-होनेवाले खेल भी हों; विळैवन्न तीमैये आम्-फल घुरे ही होंगे; अन्नपत्तै उणर्न्दु-यह महसूस कर; वीरन्-श्रीवीरराघव; नङ्गै-नारी; उळैवन इयर्ऱुल्-मन को संकट देनेवाले काम न करो; इळैयवन्-मेरा अनुज; उन्निलै उणरुम् आयिन्-तुम्हारी बात जान लेगा तो; औल्लै मुत्तियुम्-तुरन्त तुमसे कुपित हो जायगा; विरैविन् एकुत्ति-शीघ्र चली जाओ; अन्नऱान्-कहा । २८६

अब श्रीराम महसूस करने लग गये कि वक्रदन्त राक्षसों के साथ विनोद भी अनर्थकारी है । वीर श्रीराम ने शूर्पणखा से कहा कि नारी ! तुम ऐसा काम मत करो, जिससे मन को क्लेश पहुँचे । मेरा छोटा भाई तुम्हारी स्थिति जानेगा तो तुरन्त कुपित हो जायगा । तुम शीघ्र यहाँ से चली जाओ । २८६

पौऱुपुडै	यरक्कि	पूविर्	पुनलिनिर्	पौरुप्पिल्	वाळुम्
अऱुपुडै	युळ्ळत्	तारु	मन्नङ्गनु	ममरर्	मऱुरुम्
अऱुपैऱुत्	तवज्जैय्	हिन्ऱा	रैन्तैनी	यिहळ्व	दैन्ने
नऱुपौऱै	नैज्जि	लिल्लाक्	कळवियै	नच्चि	यैन्ऱाळ् 287

पौऱुपुडै अरक्कि-सुन्दर वेश में जो रही, उस राक्षसी ने; पूविल्-(कमल) पुष्प पर; पुनलिल्-(क्षीरसागर के) पथ पर; पौरुप्पिल्-(कैलास) पर्वत पर; वाळुम्-वास करनेवाले; अऱुपु उटै उळ्ळत्तारुम्-प्रेम-मन के (तीनों देवता) और; अन्नङ्कतुम्-मन्मथ और; मऱुरुम् अमरर्-अन्य देवता लोग; अन्नपैऱु-मुझे पाने के लिए; तवम् चैय्किन्ऱार्-तपस्या करते हैं; नल् पौरै-श्रेष्ठ क्षमा नामक गुण; नैज्जिल् इल्ला-जिसके मन में नहीं है, उस; कळवियै-चोरनी को; नच्चि-चाहकर; अन्नै नो इकळ्ववु-मेरी तुम्हारा उपेक्षा करना; अन्नै-क्यों; अन्नऱाळ्-पूछा । २८७

शूर्पणखा जानेवाली नहीं थी । मायारूपिणी उसने श्रीराम से

कहा— कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा, क्षीरसागरवासी विष्णु, कैलासपर्वत-पति शिव, अनंग और अन्य देवता लोग मुझ पर प्रेम रखते हैं और मुझे प्राप्त करने हेतु तपस्या कर रहे हैं, बात ऐसी है तब तुम असह्यशीला इस नारी को चाहकर मेरी उपेक्षा करते हो ! इसका कारण क्या है ?
—शूर्पणखा ने पूछा । २८७

❁ तन्तौडुन् दौडर्बि लादे मन्तवुन् दविरा डानिक्
कन्तडु मन्तत्ति शौल्लुङ् गळ्ळवा ळैन्ता
मिन्तौडु तौडर्नुडु शौल्लु मेहम्बोल् मिदिलै वेन्तन्
पौन्तौडुम् बुन्तिदन् बोयप् पूम्बौळिङ् चालै पुक्कान् 288

इ कल् नैटुम् मन्तत्ति तन्तौडु—इस पत्थर-सम मन वाली के साथ; तौडर्बु इलातेम्—हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है; अन्तवुम्—कहने पर भी; तविराळ्—यहाँ से नहीं हटती; शौल्लुम्—इसके वचन भी; कळ्ळ वाचकङ्कळ्—वंचना-भरे वचन हैं; अन्ता—यह सोचकर; पुन्तिदन्—पवित्र श्रीराम; मिन् ओटुम्—बिजली के साथ; तौडर्नुतु चैल्लुम्—लगे जानेवाले; और मेकम् पोल—मेघ के समान; मितिलै वेन्तन् पौन् ओटुम्—मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ; पोय्—वहाँ से जाकर; अ पूम् पौळिल्—उस उपवन में रहनेवाली; चालै—पर्णशाला में; पुक्कान्—प्रविष्ट हुए । २८८

श्रीराम ने निश्चय कर लिया कि यह पत्थर-सम मन वाली है । इस कठोरमन स्त्री से हमने कह दिया कि हमारा-तुम्हारा रिश्ता कुछ नहीं हो सकता । तो भी वह हटती नहीं । इसके कथन भी कपट के वचन लगते हैं । यह सोचकर पवित्रचरित्र श्रीराम मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ जाकर उस उपवन में रही अपनी पर्णशाला में घुस गये । सीताजी जब उनके पीछे गयीं, तब ऐसा लगा कि मेघ के पीछे बिजली जा रही हो । २८८

❁ पुक्कपिन् बोन्त दैन्नु मुणर्विनळ् पौरैयि नीड्गि
उक्कदा मुयिर ळौन्नु मुयिर्त्तिल ळौडुङ्गि निन्नाळ्
तक्किलन् मन्तत्तुळ् यादुन् दळ्ळुविलन् शलमुङ् गौण्डान्
मैक्कळ्ळु गुळलि त्ताण्माट् टन्निनिल् वलिय नैन्नाळ् 289

पुक्क पिन्—उनके पर्णशाला में प्रविष्ट होने के बाद; पौन्तु अन्तुम् उणर्वित्तळ्—बेसुध-सी; पौरैयिन् नीड्कि—शरीर से छूटकर; उक्कतु आम् उयिरळ्—ध्वस्त हुए हों; ऐसे प्राणों वाली होकर; औन्नुम् उयिर्त्तलळ्—साँस ही नहीं छोड़ी; औटुङ्कि निन्नाळ्—सन्न खड़ी रही; तक्किलन्—मेरे योग्य नहीं; मन्तत्तुळ् यादुम् तळ्ळुविलन्—मन में कोई लगाव पैदा नहीं हुआ है; चलमुम् कौण्डान्—कोप भी करता है; मै करम् कुळलिनाळ् माट्टु—अंजन-सम काला केश वाली के साथ; अन्पिनिल् वलियन्—प्रेम में दृढ़ है; अन्नाळ्—अपने आप से कहा । २८९

उनके पर्णशाला में प्रवेश के बाद शूर्पणखा की दशा बहुत बिगड़

गयी । सुधि खोकर वह क्षीण-प्राणा-सी रह गयी । साँस भी नहीं छोड़ती थी । सन्न खड़ी रही । फिर उसने आप ही आप कहा कि यह मेरे योग्य नहीं लगता । अपने मन में किंचित भी स्नेह का भाव नहीं लाता । वही नहीं, मेरे प्रति क्रुपित भी है । उसका इस अंजन-सम काले केश वाली स्त्री पर प्रेम दृढ़ है । २८९

❀ निन्निलळवत्तैच्चेरु नैरियिनै निनैन्दु पोत्ताळ्
इन्निव नाहम् बुल्ले नैतिलुयि रिल्लप्पे नैन्नाप्
पौन्न्रिणि शारर् चीडप् पळिक्करेप् पौदुम्बर्प् पुक्काळ्
शैन्न्रुदु परिदि मेल्पार् चैक्कर्वन् दिरुत्त दन्ने 290

निन्निलळ्-(शूर्पणखा) खड़ी नहीं रही; अवत्तै-उसको; चेर्म् नैरियितै-प्राप्त करने का उपाय; निनैन्दु-सोचते हुए; पोत्ताळ्-गई; इन्न-आज; इवन् आकम् पुल्लेन्-इसके वक्ष को आलिंगन नहीं करूँगी; नैतिल्-तो; उयिर् इल्लप्पैन्-प्राण छोड़ दूँगी; नैन्ना-ऐसा सोचकर; पौन् त्रिणि-स्वर्णमिश्रित; चारल्-एक तराई में; चीत् पळिक्कु अर्-शीतल स्फटिक-चट्टान सहित रहनेवाले; पौदुम्बर्-उद्यान में; पुक्काळ्-घुसी; परिति मेल्पाल् चैन्न्रु-सूर्य पश्चिम दिशा में (अस्त हो) चला; चैक्कर् वन्नु इरुत्त-तालिमा आ फैली । २९०

फिर वह वहाँ खड़ी नहीं रही । उसका मन श्रीराम को भूल नहीं सका । उनसे मिलने का उपाय सोचने लगी । 'अगर मैं इसके वक्ष का आलिंगन नहीं करूँगी तो मैं प्राण त्याग दूँगी ।' —यह संकल्प करती हुई वह एक उपवन में गयी, जो तराई में था, और जिसमें शीतल स्फटिक-चट्टान थी । तब तक सूर्य पश्चिम में अस्त हो गया और गगन में लाली फैल गयी । २९०

❀ अळिन्द शिन्दैय ळाययर् वाळ्वयिन्
मौळिन्द कासक् कडुङ्गनन् मूण्डदाल्
वळिन्द नाहत्तिन् वन्ऱौळै वाळ्वियर्
रिळिन्द कार्विड मेरिय दैन्नवे 291

वळिन्त-छलककर; नाहत्तिन्-सर्प के; वन्-दृढ़; तौळै-रंध्रसहित; वाळ्व-उज्ज्वल; अयिर्-विषदांत का; इळिन्त कार् विटम्-बाहर आया विष; एरियतु अन्न-सिर पर चढ़ गया, जैसे; अळिन्त चिन्तैयळाय्-संज्ञाशून्य होकर; अयर्वाळ्व वयिन्-शिथिल रहनेवाली शूर्पणखा के अन्दर; मौळिन्त-पूर्वोक्त; काम कटुम् कनल्-काम की भयंकर अग्नि; मूण्टु-उद्दीप्त हुई । २९१

शूर्पणखा की स्थिति बहुत बुरी हो गयी । किसी सर्प के रंध्रसहित दृढ़ दाँत द्वारा निकले विष का असर सिर पर चढ़ गया हो, ऐसा वह स्वस्थता खोकर श्रांत हो गयी । पूर्वोक्त काम का कठोर ज्वर उसके शरीर को ताप देने लगा । २९१

❖ ताड हैक्कोडि याडड मारबिडै, आड वरक्कर शन्नयि लम्बुपोल्
पाड वत्तोळिन् सन्मदन् वाय्कणै, ओड वुट्कि युयिरुळैन् दाळरो 292

ताडकै कौटियाळ-ताड़का, क्रूरी; तट मारपु इटै-के विशाल वक्ष के मध्य;
आटवरक्कु अरचन्-पुरुषों में राजा श्रीराम के; अयिल् अम्पु पोल्-तीक्ष्ण शर जैसे;
पाटवम् तोळिल् मन्मथन्-कार्य-पटु मन्मथ के; पाय् कणै-प्रेषित शर; ओट-निफर
गए तो; उट्कि-सिहरकर; उयिर् उळैन्ताळ्-प्राणविह्वल हुई । २६२

मन्मथ कार्यपटु था । उसका प्रेषित शर इसकी छाती को ऐसा
निफर गया, जैसे पुरुषोत्तम श्रीराम का तीक्ष्ण शर क्रूरी ताड़का के वक्ष को
वेधकर चला गया था । शूर्पणखा सिहर उठी और वह मर्मन्तिक पीड़ा का
अनुभव करने लगी । २९२

❖ कलैयु वामदि येकरि याहवन्, शिलैय मारन्नैत् तित्नु निनैप्पिनाळ्
मलैय मारुद मानैडुङ् गालवेल्ल, उलैय मारबिडै यूनरिड वोयुमाल् 293

कलै उवा मत्तिये-कलाओं से पूर्ण चन्द्र को ही; करि आक-व्यंजन बनाकर;
वन् चिलैय मारनै-कठोर धनुर्धर मारदेव को; तित्नुम् नितैप्पित्ताळ्-छाने का विचार
किया; मलय मारुतम् आम्-मलयमारुत रूपी; नैटुम् काल वेल्-दीर्घ यम-शूल;
उलैय्-सालते हुए; मारपु इटै ऊन्नरिट-छाती पर घुसा तो; ओयुम्-श्रान्त खो
गई । २६३

वह सोचती कि मैं पूर्णचन्द्र को व्यंजन बनाकर कठोर धनुर्धर कामदेव
को ही भक्षण कर लूँ । पर मलयपवन रूपी सशक्त शक्ति के उसके वक्ष
पर गड़ने से वह निर्वल रह जाती । २९३

❖ अलैक्कु	माळि	यडङ्गिड	वङ्गैयाल्
मलैक्कु	लङ्गळिर्	ऊर्क्कु	मन्नत्तित्ताळ्
निलैक्कुम्	वानि	नैडुमदि	नीणिला
वलैक्कु	नीङ्गु	मिडुक्किलण्	मान्दुवाळ् 294

अलैक्कुम्-उसको सालनेवाले; आळि-समुद्र को; अटङ्किट-चुप कराने के
लिए; अम् कैयाल्-अपनी हथेली से; मलै कुलङ्कळिन्-गिरियों की राशि उखाड़कर
उनसे; तूरक्कुम् मन्नत्तित्ताळ्-पाटने का संकल्प किया; वानिल् निलैक्कुम् नैटु मति-
आकाश में स्थिर रहे चन्द्र को; नीळ् निला वलैक्कु-विस्तृत चाँदनी के जाल से;
नीङ्कुम्-बच जाने को; मिडुक्कु इलळ्-शक्ति नहीं रखती थी; मान्तुवाळ्-क्षोभ
करती । २६४

समुद्र-गर्जन उसे सालने लगा । उसने सोचा कि अपने हाथों से
गिरिराशियों को उखाड़कर समुद्र में डालूँ और उसे पाट दूँ । पर
आकाश में निरन्तर (चलते) रहनेवाले चन्द्र की किरणों के जाल से बच
निकलने की शक्ति उसमें नहीं थी । इसलिए विक्षुब्ध हो जाती । २९४

❖ पूर्वं लाम्बोडि याहविप् प्रमियिल्, कावै लाम्बोडिप् पेन्नैन्क् कान्दुवाळ्
शेव लोडुडै शैन्दलै यन्त्रिलिन्, नावि नाल्वलि यैञ्ज नडुङ्गुवाळ् 295

पू अँलाम् पौटियाक्-सारे पुष्पों को चूर्ण बनाते हुए; इ प्रमियिल्-इस पृथ्वी पर रहनेवाले; का अँलाम्-उद्यान सब; ओटिप्पेन् अँत-तोड़-फोड़ दूंगी, ऐसा; कान्तुवाळ्-कोप करती; चेवलोडु उरै-नर (क्रौंच) के साथ रहनेवाली; चैम् तलै अन्त्रिलिन्-लाल सिर की मादा क्रौंच पक्षी के; नाविन्नाल्-(मिलन-सुख-सूचक) बोली से; वलि अँञ्च-अपनी शक्ति छोकर; नडुङ्गुवाळ्-काँप उठती । २६५

कभी वह सोचती कि सारे उद्यानों को तहस-नहस कर डालूँ ताकि सभी पुष्प चूर्ण-चूर्ण हो जायँ । पर अपने नर के साथ रहती हुई मादा क्रौंच अपने सुख-संभोग से उत्पन्न आनन्द का नाद करती तो उससे इसका बल छूट जाता और वह काँप उठती । २९५

अणैवि इङ्गळै नुङ्ग वरावित्तैक्, कौणर्वै नोडि यैन्क्कोदित् तुन्नुवाळ्
पणैयिन् मैन्मुलै मेरुपत्ति मारुदम्, पुणर वारुयिर् वैन्नु पुळ्ळुङ्गुमाल् 296

अणैव इल् तिङ्गळै-प्रतिकूल चाँद को; नुङ्क-निगलने के लिए; अरावित्तै-(राहु या केतु) सर्प को; ओटि कौणर्वैन्-दोड़ जाकर लाऊँगा; अँत-ऐसा; कौतित्तु-खोल उठती; तुन्नुवाळ्-सोचती; पणैयिन् मैन् मुलै मेल्-पीन और नरम स्तनों पर; पति मारुदम् पुणर-शीतल पवन के लगने से; आरुयिर् वैन्नु-मर्मतप्त होकर; पुळ्ळुङ्कुम्-ताप से पीड़ित होती । २६६

वह कभी संकल्प करती कि यह चन्द्र मेरे अनुकूल नहीं है । उसे (राहु या केतु) सर्प द्वारा निगलवा लूँगी । बड़े क्रोध के साथ उसको पकड़ लाने की बात सोचती । पर उसके पीन और कोमल स्तनों पर शीतल पवन आकर लगता और उत्तेजित कामवासना से तप्त होकर थक जाती । उसके प्राण जर्जर हो जाते और वह वेदना का अनुभव करती । २९६

❖ कैह् लाडुन्न कदिरिळ् गौङ्गै मेल्, ऐय तण्वनि यळ्ळिन लप्पिन्नाळ्
मौय्हाँ डीयिडै वैन्नु मुरुङ्गिय, वैय्य पारैयिल् वैण्णैय् निहर्क्कुमाल् 297

तत्त कतिर् इळम् कौङ्कै मेल्-अपने छटामय तरुण उरोजों पर; कैकळाल्-अपने हाथों से; ऐय तण् पत्ति-छोटे शीतल हिमखण्डों को; अळ्ळितळ् अप्पिन्नाळ्-उठाकर (शूर्पणखा ने) लगा लिया; ती इटै-अग्नि में; वैन्नु मुरुङ्किय-तपकर गरम बनी; वैय्य पारैयिल्-उष्ण चट्टान पर (रखे); वैण्णैय् निहर्क्कुम्-मक्खन के समान (वाष्प) बना । २६७

उसने अपना ज्वर शान्त करने की इच्छा से शीतल हिमकणों को लेकर अपने मनोरम तरुण स्तनों पर डाल लिया । पर वे इस तरह अदृश्य हो गये, जैसे आग से तप्त गरम चट्टान पर डाला गया मक्खन पिघलकर लुप्त हो जाता है । २९७

❖ अळिक्कु	मैय्युयिर्	कान्दळ	लज्जितळ
कुळिक्कु	नीरुड्	गौदित्तैळक्	कूशुमाल्
विळिक्कुम्	वेलैये	वैङ्गण	नङ्गनै
औळिक्क	लामिड	मामैन्	वुन्नुमाल् 298

अळिक्कुम्-संरक्षणीय; मैय्-शरीर को और; उयिर्-प्राणों को; कान्तु-जलानेवाली; अळल्-कामाग्नि से; अज्चित्तळ्-डरकर; कुळिक्क-नहायी; नीरुम्-वह जल भी; कौदित्तु अळ्-खौल उठा; कूशुम्-नहाने से सकुचाती; विळिक्कुम् वेलैयै-निनादी समुद्र को; वैम् कण् अत्तङ्कतै-भयंकर मन्मथ को; औळिक्कल् आम् इटम्-छिपाये रखनेवाला स्थान; आम् अन उन्नुवाळ्-होगा, ऐसा सोचती । २६८

वह अपने शरीर और प्राणों की रक्षा करना चाहती थी । पर उसकी कामेच्छा उनका शत्रु बनी थी । उस आग को शान्त करने की इच्छा से वह स्नान करने चली तो जल ही गरम हो गया । तो बेचारी नहाने से कतराती । वह गरजनेवाले सागर को कठोरमन मन्मथ का छिपकर रहने का स्थान मानती । २९८

❖ वन्डु कार्मळै तोन्निन्नु मामणिक्, कन्डु काणित्तुड् गैत्तलड् गूप्पुमाल्
इन्डु कान्दत्ति तीर नैङ्गलुम्, वैन्डु कान्द वेदुम्बुळ् मेत्तियाळ् 299

इन्नु कान्तत्तिन्-चन्द्रकान्त के; ईर नैटुम् कलुम्-शीतल और विशाल पत्थर को भी; वैन्नु कान्त-जलाकर भस्म करे, ऐसे; वैन्नुम् उळ् मेत्तियाळ्-तापशील शरीर वाली; कार् मळै वन्नु तोन्निन्नुम्-काला मेघ आकर दिखे तो भी; मा मणि कन्नु काणित्तुम्-श्रेष्ठ रत्नस्तम्भ को देखे, तब भी; कै तलम् कूप्पुम्-करतल जोड़ती । २६९

उसका शरीर इतना जलता था कि चन्द्रकान्त का बड़ा पत्थर भी उससे लगे तो जलकर राख बन जाय ! ऐसी कामाग्नि से दग्ध शरीर वाली वह काले मेघ को या रत्न-स्तम्भ को देखती तो हाथ जोड़कर नमस्कार करती (श्रीराम के रंग-साम्य के कारण) । २९९

वाम मामदि युम्बन्नि वाडैयुम्, काम तुन्दनैक् कण्डुण रावहै
नाम वाळैयिड् उरैहद नाहमाय्च्, चेम माल्वरै यिन्मुळैच् चेरुमाल् 300

वाम मा मत्तियुम्-सुन्दर पूर्णचन्द्र और; पत्ति वाडैयुम्-शीतल पवन; कामतुम्-कामदेव; तत्तै कण्डु उणरा वकै-अपने को देख न पाये, इस तरह; नाम वाळ् अयिड् और कत नाकम् आय्-भयंकर दाँत वाला कुपित सर्प बनकर; चेम माल् वरैयिन्-सुरक्षित एक बड़े पर्वत की; मुळै-गुफा में; चेरुम्-जा पहुँचती । ३००

वह सुन्दर पूर्ण-चन्द्र, शीतल (उदीची) हवा और कामदेव से डरती थी । वह चाहती थी कि वे उसे देख न ले । इसलिए वह एक भयंकर तीक्ष्ण दाँतों का सर्प बनकर सुरक्षित एक पर्वत की गुफा में जाकर छिप

गयी । क्यों ? नाग चन्द्र को ग्रसनेवाला है और हवा को खानेवाला । वह शिवजी का अलंकार था और मन्मथ शिवजी से डरता था । इसलिए शूर्पणखा सर्प बनकर छिप गयी । ३००

अन्न काले यल्लन्मिहुत् तेउवुम्, मुन्न मेन्निय लाय्मुलं वेंदुह
इन्न वाशैय्वे नैन्डि यादिल्लम्, पौन्निन् वार्दळि रिङ्पुरण् डाळरो 301

अन्न काले-तब; यल्ल् मिहुत्तु एउवुम्-कामाग्नि चढ़ी; मुन्न मेन्नियलाय्-
पहले का रूप लेकर; मुलं वेंनु उक-स्तनों से अंगारे निकालते हुए; इन्नवा वेंवें-
किस प्रकार क्या करूँ; अन्ड अडियातु-यह न जानकर; पौन्निन् वार् इळम्
तळिरिल्-स्वर्ण के रंग वाले पल्लवों पर; पुरण्डाळ्-लेटकर लोटी । ३०१

पर वहाँ भी गरमी बढ़ी तो उसने अपना सर्प-रूप छोड़ दिया । अपना निजी रूप लिया । उसके स्तन इतने तपने लगे कि उनसे आग-सी निकली । क्या करें, कैसे करे ? किंकर्तव्यमूढ़ होकर वह स्वर्णवर्ण पल्लवों पर गिरकर लोटने लगी । ३०१

ॐ वीरन् मेनि वैळिप्पड वैय्दवन्, कार्हीण् मेनियक् कण्डन्न लामैन्तच्
चोरुम् वैळुहन् दुण्कुक्कैन् मव्वुरुप्, पेरुङ् गालप् पिणियिरे पेर्हलाळ् 302

वीरन् मेनि वैळिप्पट-तब वीर श्रीराम का (भ्रान्ति का) रूप उसे दिखाई दिया;
वैय्त्तु-चाव के साथ; अवन् कार्कोळ् मेन्निय-उनके मेघ-सम शरीर को; कण्डन्न
आम् अन्न-सचमुच देख लिया हो जैसे; चोरुम्-शिथिल हो जाती; वैळ्कुम्-लजाती;
तुण्कुक्कैन्-दलक जाती; अ उरु-वह (कल्पित) रूप; पेर्म् काल्-जब अदृश्य
हो जाता, तब; अ पिणि-उस काम-रोग से; इरे पेर्कलाळ्-जरा भी छूट नहीं
थी । ३०२

तब उसे श्रीराम का भ्रान्ति का रूप शून्य में दिखाई दिया । उस मन में प्रेम उमड़ आया । मेघश्याम को प्रत्यक्ष देखती हो, ऐसा भ्रम गया । वह शिथिल हुई, लाज से भरी; फिर सिहर उठी । वह ओझल हो गया तो उसने अनुभव किया कि उसका रोग ज्यों का त्यों और वह उससे थोड़ा भी छूट नहीं पायी है । ३०२

ॐ आहक् कौङ्गैयि नैयन्न उञ्जन्, मेहत् तैत्तळु वुम्मे वेंदन्
पोहक् कण्डु पुलम्बुमप् पुन्मैयाळ्, मोहत् तुक्कोर् मुडिवुमुण् डाङ्गौलो

अञ्चन् मेकत्तै-कजरारे (काले) मेघ को; ऐयन् अन्ड-प्रभु श्रीराम ..
आह कौङ्गैयिन्-वक्ष के स्तनों के साथ; तळुवुम्-लगा लेती; अवै वेंन्तत-वे
पोक-मिट जाते; कण्डु-देखकर; पुलम्पुम्-विलाप करती; अ पुन्मैयाळ् मे
उस ओछी स्त्री के काम का; ओर् मुटिवु उण्डाम् कौलो-अन्त भी है क्या । ३

वह काले मेघों को प्रभु, कान्त श्रीराम समझकर अपने स्तनों पर लगाकर कसकर पकड़ती । पर काले मेघ गरमी के

बाष्प बनकर मिट जाते। तब वह मुख खोलकर विलाप करती, नीच शूर्पणखा के मोह का कोई अन्त है ? । ३०३

❖ ऊळि वैङ्गत लुङ्गत लौत्तुमव्, वेळं यावि यिळन्दिलळ् शेंङ्गैयिन्
आळि यानै यडैन्दवळ् पित्तरुम्, वाळला मैनु माशै मरुन्दिने 304

ऊळि वैम् कत्तल् उरुत्तळ् लौत्तुम्-युगान्त की अग्नि में पड़ गई हो ऐसा हो गई, तो भी; चैम् कैयिन्-लाल (श्रेष्ठ) हाथों वाले; आळियान् अटैन्तु-(आज्ञा) चक्रधारी श्रीराम को प्राप्त करके; अदळ्-वह; पित्तरुम् वाळलाम्-फिर भी जी सकेगी; अँत्तुम् आचै मरुन्तिन्-ऐसी आशा रूपी दवा के कारण; एळै-उस अवोध ने; आवि इळन्तिलळ्-प्राण नहीं त्यागे । ३०४

उस काममोह के कारण उसकी स्थिति युगान्त के अनल-प्रवाह में पड़ी हुई सी हो गयी। तो भी आशा बँधी थी कि लाल (मनोरम) हाथों वाले श्रीराम से मिलन होगा और वह मिलकर जिएगी। वही आशा दवा बनी और उसी से उसके प्राण बचे रहे । ३०४

वञ्ज नैक्कोडु मायै वळरक्कुमैन्, नैञ्जु पुक्कैन् दावत्तै नैक्कैन्तुम्
अञ्ज नक्किरि येयरु लायैन्तुम्, नञ्जु नक्किन् पोल नडुङ्गुवाळ् 305

नञ्चु नक्किन् पोल-जिसने विष चाट लिया हो, उसके समान; नडुङ्गुवाळ्-काँपती (हुई); अञ्चत्त किरिये-अंजनगिरि (-सम राम); अरुळाय् अँत्तुम्-कृपा करो, कहती; वञ्चत्तै-वंचना और; कौटु मायै वळरक्कुम्-कूर माया को पालनेवाले; अँत्तु नैञ्चु पुक्कु-मेरे मन में प्रवेश करके; अँत्तु आवत्तै नैक्कु-मेरी विपदा दूर करो; अँत्तुम्-कहती । ३०५

विष को जो चाट चुका हो, उसके समान उसका शरीर काँपने लगा। वह मन में श्रीराम से प्रार्थना करने लगी कि हे अंजनपर्वत ! मुझे पर कृपा करो। वह यह भी कहती कि मेरा मन कपटी है और माया को पालने-वाला है। उसमें तुम घुस जाओ और मुझे आफ़त से बचाओ । ३०५

❖ कावि योहय लोवैन्नुङ्गु गण्णिणैत्, तेवि योतिरु मङ्गैयिर् चैव्वियाळ्
पावि येनैयुम् पार्क्कुङ्गौ लोवैन्नुम्, आवि योयिन्नु माशैयि न्नोय्विलाळ् 306

आवि ओयिन्नुम्-प्राण छूट जायें, तो भी; आचैयिन्नु ओय्वु इलाळ्-जिसका राग नहीं थमता, वह; कावियो-नीला पुष्प है; कयलो-या 'कयल' मछली है; अँत्तुम्-ऐसा कहलानेवाली; कण् इणै-आँखों का जोड़ा; तेवियो-जिसका है वह (उसकी) देवी तो; तिरुमङ्कयिल् चैव्वियाळ्-श्रीलक्ष्मीदेवी से भी सुन्दर है; पावियेनैयुम्-मुझ पापिनी पर; पार्क्कुम् कौलो-दृष्टि लगाएगा क्या; अँत्तुम्-(यह नैराश्य वचन) कहती । ३०६

चाहे उसके प्राण ही क्यों न छोड़ जायें, वह तो श्रीराम पर काम को छोड़नेवाली नहीं थी। उसे सीतादेवी का स्मरण आया। 'नीलोत्पल

है या कयल नाम की मछली ? ऐसा सन्देह उत्पन्न करनेवाली आँखों के जोड़े से युक्त उसकी पत्नी श्रीलक्ष्मीदेवी से भी बढ़कर सुन्दरी है। वह क्या मेरी ओर आँख उठाकर भी देखेगा ?' ऐसा प्रश्न करके वह दुखी हुई। ३०६

ॐ आन्ऱ काद लः(ह्)दुऱ वेंय्दुळि, मून्ऱ लोहमु मूडु मरक्कराम्
एन्ऱ कारिरु णीक्क विराहवन्, तौन्ऱि नानैऱ वेंय्यवन् ओन्ऱिनान् 307

आन्ऱ कातल् अ. तु-गहरे काम-रोग से; उऱ अय्दुळि-खूब पीड़ित होकर जब रही; मून्ऱ लोकमुम् मूटुम्-(स्वर्ग-मध्य-पाताल) तीनों लोकों को आच्छादित कर जो रहे; अरक्कर् आम्-उन राक्षस रूपी; एन्ऱ कार् इरुळ्-अन्धकार को, जो सामने आया था; नीक्क-दूर करने के लिए; इराकवन् तौन्ऱिनान् अँत-श्रीराघव आये, ऐसा; वेंय्यवन् तौन्ऱिनान्-उष्णकिरण (सूर्य) उदित हुए। ३०७

रात भर वह इसी तरह काम के बढ़ने से उद्विग्न रही। तब सूर्य अन्धकार को दूर करते हुए उदित हुए, जैसे श्रीराघव तीनों लोकों पर छाये रहे राक्षस रूपी अन्धकार को मिटाने के लिए अवतार ले आये। ३०७

ॐ विडियल् काण्डलु माण्डुत्तन् नूयिर्हण्ड वेंय्याळ्
पडियि लाण्मरुड् गुळळैन्नि लैऱैयवन् वारान्
कडिवि नोडिर्ने नैडुत्तौल्लेक् करन्दवळ् कादल्
वडिवि तानुडन् चाळ्वदे मदियेन् मदिया 308

विडियल् काण्डलुम्-सवेरा होते ही; आण्डु तन् उयिर् कण्ट-तब अपनी प्राणता को प्राप्त कर; वेंय्याळ्-नृशंस निशाचरी; पडि इलाळ्-उपमा-हीन देवी; मरुड्कु उळळ् अँतिल्-पास रही तो; अवन् अँतै पारान्-वह मेरी ओर ध्यान नहीं देगा; कडितिन् ओडितैन्-सवेग दौड़कर; अँटुत्तु-उसको उठाकर; ओल्लै करन्तु-जल्दी छिपाये रखकर; कातल् अवळ् वडिविल्-उसकी प्रिया के रूप में; नान् उटन् चाळ्वते-मेरा उसके साथ रहना ही; मति अँतै-बुद्धिमानी है, ऐसा; मतिया-निश्चय करके। ३०८

सवेरा हुआ और शूर्पणखा ने देखा कि उसके प्राण वचे है। उसने सोचा कि जब तक वह स्त्री, जो अनुपम सुन्दरी है, उसके साथ रहेगी तब तक वह मेरी ओर दृष्टि देगा ही नहीं। इसलिए शीघ्र भागकर जाऊँगी और उसे उठा ले जाकर कहीं छिपा दूँगी। फिर राम की प्रिया उसका रूप लेकर उसके साथ रहूँगी। ऐसा जीना ही बुद्धिमत्ता है। ऐसा संकल्प करके;। ३०८

ॐ वन्दु नोक्कितळ् वळ्ळल्पो यौरुमणित् तडत्तिल्
शन्दि नोक्कित न्तिरुन्दु कण्डल डम्बि

इन्दु	नोक्किय	नुदलियैक्	कात्तय	लिरुण्ड
कन्द	नोक्किय	शोलैयि	लिरुन्ददु	काणाळ 309

चन्तु नोक्किन्नळ-आकर देखा; वळ्ळल्-प्रभु श्रीराम; पोय-जाकर; औरु मणि तटत्तिल्-एक सुन्दर घाट पर; चन्ति नोक्किनन्-संध्यावन्दन में लगे; इरुन्तु-रहे; कण्टनळ-देखा; तम्पि-कनिष्ठ (लक्ष्मण); इन्तु नोक्किय नुतलियै-चन्द्र-सम भाल वाली सीताजी का; कात्तु-रक्षण करते हुए; अयल्-पास; कन्तम् नोक्किय-सुवास निकालनेवाले; इरुण्ट चोलैयिल्-घने उपवन में; इरुन्तु-रहे, वह; काणाळ-नहीं देखा । ३०६ ।

वह आयी । आश्रम के पास आकर उसने देखा कि प्रभु वहाँ से दूर मनोहर घाट पर संध्यावन्दन में दत्तचित्त है । उसका भाई इन्दु-सम ललाट वाली सीता के सरक्षण में ही पास में सुवास देनेवाले उस आश्रम के एक छाया के कारण अँधेरे स्थान में विराजे थे । पर शूर्पणखा ने लक्ष्मण को नहीं देखा । ३०९

❖ तन्नियि	रुन्दत्तळ	शमैन्ददेन्	करुत्तेत्तत्	ताळ्वुड्
रित्तियि	रुन्देत्तक्	कण्णुव	दिल्लेत्त	वैण्णात्
तुन्नियि	रुन्दवन्	मन्तत्तिन	डोहैयैत्	तौडरन्दाळ्
कन्नियि	रुम्बोळिल्	कात्तय	लिरुन्दवन्	कण्डान् 310

तत्ति इरुन्तन्नळ-एकाकिनी रहती है; अँन् करुत्तु-मेरा विचार; चमैन्तु-चरितार्थ हुआ; अँत्त-ऐसा और; इत्ति ताळ्वु उड्ड इरुन्तु-अब विलम्ब करते रहने से; अँत्तक्कु अँण्णुवत्तु इल्-मुझे सोचने के लिए कुछ नहीं है; अँत्त-ऐसा; अँण्णा-निश्चय करके; तुत्ति इरुन्त-घृणा से भरे; वन् मन्तत्तिन्नळ-कठोर मन वाली; तोक्कै तौडरन्दाळ्-मयूराभा सीताजी की ओर गई; कत्ति-फलों से युक्त; इरुम् पौळिल् कात्तु-विशाल उपवन में पहरा जो देते; अयल् इरुन्तवन्-पास रहे लक्ष्मण ने; कण्डान्-देखा । ३१०

शूर्पणखा को आश्वासन हो गया । 'सीता अकेली है ! मेरा संकल्प पूर्ण हो गया । अब विलम्ब करके सोचते रहने के लिए कुछ नहीं है ।' ऐसा घृणा से भरे कठोर मन वाली ने निश्चय किया । वह मयूराभा सीता की तरफ़ सवेग जाने लगी । लक्ष्मण ने, जो उस फलदार तरुओं से भरे विशाल आश्रम में पहरा देते हुए बैठे रहे, उसको देख लिया । ३१०

❖ निल्ल	डीयैत्तक्	कडुहिनन्	पैण्णैन्	निनैन्दात्
विल्ले	डादवळ्	वीङ्गोरि	यामेन्	विरिन्द
शिल्ल	लोदियैच्	चिक्कुड्चं	चैङ्गैयाड्	पड्डि
ओल्लै	यीरुत्तुदैत्	तौळिहिळर्	शुड्डुवा	ळुखि 311

अटी निल्ल अँन्-री खड़ी रह कहकर; कटुकिन्नन्-तेज चाल आये; पैण् अँन् निनैन्तान्-स्त्री है, समझे; विल् अँटातु-धनुष न लेकर; अवळ्-उस (शूर्पणखा) के;

वीङ्कु अँरि आम् अँत-खूब अधिक जलती आग के समान; विरिन्त-विस्तृत रूप से सिर के चारों ओर बिखरे रहनेवाले; चिललल् ओतिये-कम लम्बे केश-जाल को; चैङ्कयाल्-लाल हाथ से; चिक्कु उर पड्डि-हाथ को लपेट ले, ऐसा पकड़कर; ओल्ले-तेजी से; ईरुत्तु-खींचकर; उतैत्तु-उसके लात मारकर; ओळि किळर-कान्तिमय; चुर्रुवाळ् उरुवि-कटार निकालकर । ३११

लक्ष्मण तुरन्त, 'री खड़ी रह ।' —डाँटते हुए उठ आये । वह स्त्री थी, इसलिए उसने धनुष नहीं लिया । उसने आकर जलती आग के समान उसके सिर पर बिखरे रहे केश को अपने हाथ से मरोड़कर पकड़ा, उसको झटका देकर खीचा और लात मारी । फिर उन्होंने अपनी उज्ज्वल कटार निकालकर; । ३११

ॐ ऊक्कि	ताङ्गिविण्	पटर्वेन्	रुस्तैळ्	वाळ्
नूक्कि	नीय्दिनिल्	वैय्दिल्	यैलैन्	नुवला
मूक्कुड्	गादुम्बैम्	मुरण्मुलैक्	कण्गळ्	मुडैयाल्
पोक्किप्	पोक्किय	शित्तुत्तौडुम्	बुरिहुळल्	विट्टान् 312

ऊक्कि-प्रयत्न करके; ताङ्कि-(इसको) उठाते हुए; विण् पटर्वेन्-आकाश में उड़ जाऊँगी; अँनुड-ऐसा; उरुत्तु अँळुवाळ्-कोप के साथ उछलनेवाली को; नीय्तिनिल् नूक्कि-आसानी से नीचे पछाड़कर; वैय्तु इळ्ळैल् अँत-ऐसा बुरा काम मत करो, यह; नुवला-कहकर; मूक्कुम् कातुम्-नाक और कानों को; वैम् मुरण् मुलै-भयंकर कुरूपी स्तनों के; कण्गळुम्-चूचुकों को; मुडैयाल् पोक्कि-एक के बाद एक क्रम से काटकर; पोक्किय चित्तुत्तौडुम्-शान्त हुए कोप के साथ; पुरि कुळल् विट्टान्-एँठा केश छोड़ दिया । ३१२

उस शूर्पणखा को, जो उन्हें भी सयत्न उठाते हुए आकाश में उड़ जाने का विचार कर रही थी, नीचे पटक दिया । फिर 'ऐसे बुरे कार्य मत करो' कहते हुए उन्होंने उसकी नाक, कान और विकृत और भयंकर स्तनों के चूचुकों को क्रम से काट दिया । (यह चूचुक काटने की बात 'भागवत' में ही आयी है ।) तभी जाकर उनका क्रोध शान्त हुआ और उन्होंने अपने हाथ में एँठे रहे उसके केश को छोड़ा । ३१२

अक्क	णत्तवळ्	वाय्तिडुन्	दरड्डिय	वमलै
तिक्क	नैत्तिनुज्	जैन्डु	तेवर्तज्	जैवियुम्
पुक्क	डुड्डु	पुहल्वदैन्	मूक्कैत्तुम्	बुळैय्
डुक्क	शोरियि	नीरमुड्	रुहिय	डुलहम् 313

अ कणत्तु-उस समय; अवळ्-शूर्पणखा ने; वाय् तिडुन्-मुख खोलकर; अरड्डिय-जो विलाप किया, वह; अमलै-शोर; तिक्कु अतैत्तिनुम् चैन्डु-सारी दिशाओं में गया; तेवर् तम् जैवियुम्-देवों के कानों में भी; पुक्कतु-धुसा; उड्डु पुक्कवतु अँन्-वहाँ जो हुआ उसका क्या कहा जाय; मूक्कु अँत्तुम्-नाक रूपी; पुळै

ऊटु-विवरों द्वारा; उक्क-बहनेवाले; चोरियिन्-रक्त में; ईरम् उरु-भीगकर; उलकम् मुल्लुवतुम् उरुकियतु-सारा लोक गल गया । ३१३

तव शूर्पणखा अपना मुख खोलकर उच्च स्वर में रोने-चिल्लाने लगी । वह शोर सभी दिशाओं में व्यापा और देवों के कानों में भी जाकर भर गया । जो हुआ उसका क्या कहा जाय ? नासिका-विवर से जो रक्त बहा, वह इतना अधिक था कि विशाल भूमि ही गल गयी । ३१३

कौलैतु	मित्तुयर्	कौडुङ्गदिर्	वाळिन्नक्	कौडियाळ
मुलैतु	मित्तुयर्	मूक्किनै	नीक्किय	मुडैमै
मलैतु	मित्तैन्न	विरावणन्	मणियुडै	महुडत्
तलैतु	मित्तत्तुङ्कु	नाट्कौण्ड	दौत्तदोर्	तन्मै 314

कौलै तुमित्तु-मारना रोककर; उयर् कतिर् कौटुम् वाळिन्-अधिक चमकदार भयंकर कटार द्वारा; अ कौटियाळ-उस अत्याचारिणी का; मुलै तुमित्तु-स्तनों (के चूचुकों) को काटकर; उयर् मूक्कित्तै नीक्किय-उठी हुई नाक को काटने का; मुडैमै-कार्य; मलै तुमित्तु अन्न-पर्वत को काटने के समान; इरावणन् मणि उटै मकुटम्-रावण के मणिमण्डित किरीटधारी; तलै तुमित्तत्तुङ्कु-सिरों को काट लेने के लिए; नाळ् कौण्टतोर् तन्मै-‘मुहूर्त’ (शुभारम्भ) करने के; औत्ततु-समान रहा । ३१४

लक्ष्मण ने शूर्पणखा को नहीं मारा । पर उसके स्तनों के अग्रभाग और नाक के उठे हुए भाग को काट दिया । वह कार्य पीछे होनेवाले रावण-वध का शुभ आरम्भ-सा था । पर्वतशिखरों के समान रावण के मणिमय किरीटधारी सिर काटकर अलग किये जायेंगे । उसका आरम्भ करने का मुहूर्त अब मनाया गया । ३१४

अदिर	मानिलत्	तडिपदैत्	तरङ्गिय	वरक्कि
कदिर्हौळ्	कालवेर्	करन्मुद	निरुदर्वैड्	गदप्पोर्
अदिरि	लादव	रिरुदियि	निमित्तमा	यैळुन्दाण्
डुदिर	मारिपैय्	कार्निड	मेहमात्	तुयर्न्दाळ् 315

अतिर-थरति हुए; मा निलत्तु-विशाल भूमि पर; अटि पतैत्तु-कोप और दुख के कारण पैर पटककर; अरङ्गिय-जो दहाड़ मारकर रोने लगी, वह; अरक्कि-राक्षसी; काल-यम के समान; कतिर् कौळ् वेल्-(और) चमकदार शक्ति-धारी; करन् मुतल्-खर आदि; वैम् कत पोर्-भयंकर और घमासान युद्ध में; अतिर् इलातवर्-जो सानी नहीं रखते थे, उन; निरुद-राक्षसों के; इरुतियिन् निमित्तमाय्-अन्त कराने के निमित्त; अळुन्तु-उठी और; आण्डु-वहों; उतिर मारि पय्-रक्तवर्षा करनेवाले; कार् निड मेकम् औत्तु-काले मेघ के समान; उयर्न्दाळ्-सिर ऊंचा कर खड़ी हुई । ३१५

शूर्पणखा वेदना से थर्रा उठी । भूमि पर पैर पटकने लगी । वह

दहाड़ मारकर रोयी। फिर वह सिर तानकर खड़ी हुई, तब वह रक्त बहानेवाले काले मेघ के समान लगी। कठोर युद्ध में निर्द्वन्द्व और यम के समान घातक और चमकदार भालों वाले खर आदि राक्षसों के नाश के लिए तत्पर हुई हो, ऐसा वह निशाचरी जोश के साथ उठी। ३१५

उयरुम् विण्णिडै मण्णिडै विळुङ्गिडन् दुळैक्कुम्
अयरुङ्गै गैहुलैत् तलमरु मारुयिर् शोरुम्
पैयरुम् पेंबिरन् दियान्बट्ट पळियेनप् पिङ्गुरुम्
तुयरु मञ्जिमुन् तौडर्न्तिलात् तौल्हुडिप् पिङ्गन्दाळ् 316

तुयरुम्-दुख नामक कुछ; अञ्चि-डर से; मुन् तौडर्न्तिला-जिसके पास पहले नहीं गया था; तौल् कुटि पिङ्गन्ताळ्-उस प्राचीन (राक्षस-) कुल में जो पैदा हुई थी, वह; विण् इटै उयरुम्-आकाश में उठती; मण् इटै विळुम्-भूमि पर गिरती; किटन्तु उळैक्कुम्-पड़ी चिल्लाती; अयरुम्-थकती; कै कुलैत्तु-हाथ मलकर; अलमरुम्-उद्विग्न होती; आर् उयिर् चोरुम्-क्षीणप्राण हो जाती; पैयरुम्-सुध पाकर चलने लगती; पें पिङ्गन्त-स्त्री पैदा होकर; यान्-मुझे; पट्ट पळि-मिली निन्दा है; अँत्त-ऐसा; पितरुम्-बकती। ३१६

वह शूर्पणखा उस राक्षसकुल की थी, जिसके पास दुख भी डर के कारण नहीं आया था। अब उसे अपार दुख मिल गया। अत्यधिक वेदना का अनुभव करने लगी। वह ऊपर उठती पर भूमि पर गिर जाती। भूमि पर पड़ी रहकर चिल्लाती। थक जाती। हाथ मलकर उद्विग्न होती। प्राण-हीन-सी मूर्च्छित हो जाती। कुछ देर बाद सुध पाती और विलापती कि स्त्री पैदा होकर कैसी निन्द्य स्थिति को प्राप्त हो गयी?। ३१६

ॐ ओरुम् मूक्किन्तै युलैयुरु तीयैन्त वुयिर्क्कुम्
अँरुङ्गै गैयिन्तै निलत्तित्ति लिणैत्तडङ्गै गौङ्गै
पर्त्तिप् पार्क्कुमैय् वेर्क्कुन्दन् वरुवरन् मयक्काल्
शुर्शु मोडुम्बोय् चोरिनीर् शौरिदरच् चोरुम् 317

मूक्किन्तै-नाक को; ओरुम्-पोंछती; उलै उरु ती अँत्त-सट्ठी की आग के समान; उयिर्क्कुम्-गरम साँस छोड़ती; कैयिन्तै-हाथों को; निलत्तित्तिल्-भूमि पर; अँरुम्-मारती; इणै तट्ट कौङ्कै-जोड़े के बड़े स्तनों को; पर्त्ति पार्क्कुम्-हाथों में ले देखती; मेय् वेर्क्कुम्-स्वेद-पूर्ण शरीर हो जाती; तन् वरुवरल् मयक्काल्-अपने दुख से उत्पन्न भ्रम के कारण; चुर्शु ओदुम्-चारों ओर दौड़ती; पोय्-जाकर; चोरि नीर्-रक्त को; चौरि तर-बहाती हुई; चोरुम्-शिथिल पड़ जाती। ३१७

वह अपना दामन लेकर नाक को पोंछती। ऐसा गरम निश्वास छोड़ती, मानो भट्ठी से आग की ज्वाला निकल रही हो। हाथों से भूमि पर मारती। अपने दोनों स्तनों को हाथ से पकड़कर उन पर दृष्टि

दीड़ती । उसका शरीर पसीने से भर जाता । असह्य वेदना के कारण उसका चित्त भ्रमित हो जाता और वह इधर चारों ओर घूमती । पर रक्त वहाते हुए निर्बल हो गिर जाती । ३१७

ॐ ऊर्ऋ	मिक्कनी	ररुवियि	नीळ्हिय	कुरुदिच्
चेर्ऋ	वैळ्ळत्तुद	टिरिवव	डेवरु	मिरियक्
कूर्ऋ	मुदकुन्दन्	कुलत्तिनोर्	पैयर्ऌलाड्	गूडि
आर्ऋ	हिर्ऌकिलळ	पड्पल	पन्निनिन्	उळैत्ताळ् 318

ऊर्ऋ मिक्क-सोते से अधिक बहनेवाले; नीर् अरुवियिन्-जल की पर्वत-सरिता के समान; औळ्ळुक्किय-बहनेवाले; कुरुति चेरु-रक्त के पंकिल; वैळ्ळत्तु उळ्-प्रवाह के अन्दर; तिरिववळ्-जो घूमती थी, वह; आर्ऋकिर्ऌलळ्-सह नहीं सकी और; तेवरुम् इरिय-देव भाग जाएँ, ऐसा; कूर्ऋम् उदकुम्-यम को भी भयभीत करते हुए; तन् कुलत्तिनोर् पैयर् अलाम्-अपने कुल के सभी के नाम; कूडि-लेते हुए; पल् पल-अनेक प्रलाप; पन्नि निन्-करते हुए खड़ी रहकर; उळैत्ताळ्-बुलाया (शूर्पणखा ने) । ३१८

सोते से बहनेवाले जल की पर्वतसरिता के समान उसके कटे अंगों से पंकिल रक्त वह रहा था । वह उसके साथ वेचैनी से संचार करती थी । दुख उसे असह्य था । तब वह अपने कुल के राक्षसों के नाम लेकर बिलापती हुई पुकार मचाने लगी । उसे सुनकर देव भाग गये और यम भी भयभीत हो गया । ३१८

निलैयैडुत्तु	नैडुनिलत्तु	नीयिरुक्कत्	तावदरहळ्
शिलैयैडुत्तुत्	तिरियुमिदु	शिरिदन्ऱो	देवरैदिर्
तलैयैडुत्तु	विळ्ळियामै	शमैप्पदे	तळलैडुत्तान्
मलैयैडुत्तु	तनिमलैये	यिवैहाण	वारायो 319

तळल् अँदुत्तान्-अग्निज्वाला को हाथ में रखनेवाले (शिवजी) के; मलै-कैलासपर्वत को; अँदुत्त-जिसने उखाड़ लिया, वह; तत्ति मलैये-अनुपम पर्वत-सम (भाई रावण); नी-तुम; नैडु निलत्तु-विशाल भूमि पर; निलै अँदुत्तु इरुक्क-स्थायी यश के साथ रहते हो, तभी; तापतर्कळ्-तपस्वी; चिलै अँदुत्तु तिरियुम् इतु-धनुष लेकर घूमते हैं, यह; चिर्ऌत्तु अन्ऱो-तुम्हारे गौरव में कमी नहीं है क्या; तेवर् अँतिर्-देवों के सामने; तलै अँदुत्तु-सिर उठाकर; विळ्ळियामै-देख न सकना; चमैप्पते-साध्य हो जाय क्या; इवै काण वारायो-ये देखने न आओगे क्या । ३१९

अनलधर शिवजी के कैलासपर्वत को उखाड़नेवाले पर्वत-सम मेरे भाई रावण ! तुम इस भूमि पर अभी स्थायी यश के साथ हो ! तो भी तापस लोग धनु लेकर घूम रहे हैं ! यह तुम्हारे यश को छोटा बनानेवाला नहीं है क्या ? और अब हम देवों के सामने सिर उठा नहीं सकेंगे ? उनकी दृष्टि से दृष्टि न मिला सकेंगे । ऐसी स्थिति भी आ जायगी

शायद ? इनको देखने नहीं आओगे क्या ? (दारुका वन के ऋषियों ने शिवजी पर अग्नि को भेजा था । उन्होंने उसे अपने हाथ में रख लिया । उसको 'मळु' कहते हैं । मळु का अर्थ परशु भी है । अतः मळु-धारी शब्द के दोनों अर्थ— परशुधर, अनलधर किये जाते हैं ।) । ३१९

पुलिताने	पुउत्ताहक्	कुट्टिकोट्	पडादेन्नुम्
ओलियाळि	युलहुरैक्कु	सुरैपौय्यो	वूळियिन्नुम्
शलियाद	मूवरक्कुन्	दानवर्क्कुम्	वानवर्क्कुम्
वलियाते	यान्पट्ट	वलिहाण	वारायो 320

ऊळियिन्नुम् चलियात—कल्पान्त में भी अचल रहनेवाले; मूवरक्कुम्—त्रिदेवों से और; तातवर्क्कुम्—असुरों से; वानवर्क्कुम्—देवों से; वलियाते—बढ़कर बली; पुलि पुउत्तु आफ—मादा व्याघ्र के पास रहते; कुट्टि—उसका शावक; कोळ् पटानु—किसी की पकड़ में नहीं आयगा; ऐन्नुम्—ऐसा; ओलि आळि उलकु—गर्जनशील सागर—वलियित भूतल (वासी); उरैक्कुम् उरै—जो कहता है, वह मसल; पौय्यो—असत्य है क्या; यान् पट्ट—मुझ पर आया; वलि काण—संकट देखने के लिए; वारायो—नहीं आओगे क्या । ३२०

हे भाई ! तुम कल्पान्त में भी अमिट रहनेवाले त्रिदेवों, दानवों और देवों से भी अधिक बली हो । तुम्हारे रहते मेरी यह दुर्गति हो गयी । लोकोक्ति है कि मादा व्याघ्र के पास रहते व्याघ्रशावक को कोई ग्रस नहीं सकता । क्या वह कथन असत्य है ? मुझ पर जो वीता है, वह बड़ी विपदा देखो, आओ । नहीं आओगे ? । ३२०

आर्त्तात्तैक्	करशुन्दि	यमरर्क्कणत्	तौडुमडर्त्त
पोर्त्तानै	यिन्दिरनैप्	पौरुदवत्तैप्	पोर्त्तौलैत्तु
वेर्त्तानै	युयिर्हौण्डु	मीण्डात्तै	वैरिन्पण्डु
पार्त्ताने	यान्पट्ट	पळिवन्डु	पारायो 321

पण्डु—पहले; आर्त्तु—बड़े हुल्लड़ के साथ; आर्त्तैक्कु अरचु उन्ति—गजराज ऐरावत को चलाते हुए; अमरर् कणत्तौडुम्—देवगणों के साथ मिलकर; अटर्त्त—(तुमसे) जिसने लड़ाई की; पोर् तात्तै इन्तिरत्तै—उस युद्धसन्नद्ध सेना के स्वामी इन्द्र से; पौरु—लड़कर; अवत्तै—उसको; पोर् तौलैत्तु—युद्ध में हराकर; वेर्त्तानै—डर से स्वेदयुक्त होकर; उयिर् कौण्डु मीण्डात्तै—जान लेकर भागनेवाले उसकी; पण्डु—पहले; वैरिन् पार्त्तानै—पीठ को जिसने देखा, ऐसे रावण; यान् पट्ट पळि—मुझे मिली दुर्गति को; वन्तु पारायो—तुम आकर नहीं देखोगे क्या । ३२१

पहले दिग्विजय के अवसर पर, हे रावण ! गजराज ऐरावत को चलाते हुए इन्द्र अपने देवगणों को साथ लेकर तुमसे लड़ने आया । युद्धसन्नद्ध सेना उसके साथ आयी थी । तुमने उससे लड़ाई की और समरभूमि में उसको हराया । वह पसीना-पसीना होकर जान लेकर तुमको

अपनी पीठ दिखाते हुए भागा ! ऐसे रावण ! क्या तुम इधर आकर मेरी दुर्गति नहीं देखोगे ? । ३२१

काऽरित्तैयुम्	पुत्रलित्तैयुम्	कनलित्तैयुङ्	गडुङ्गालक्
कूऽरित्तैयुम्	विण्णियङ्गु	कोळित्तैयुम्	बणिहोड्
काऽरित्तैनी	यीण्डिरुवर्	मानिडवर्क्	काऽऽतु
माऽरित्तैयो	वुत्तुवलत्तैच्	चिवत्तुडक्कै	वाळ्हीण्डाय् 322

चिवत् तट कै वाळ्-शिवजी के दीर्घ हाथ से दी गई तलवार (चन्द्रहास); कौण्टाय्-रखनेवाले; काऽरित्तैयुम्-वायुदेव को; पुत्रलित्तैयुम्-और वरुण को; कनलित्तैयुम्-अग्निदेव को; कटुम् काल कूऽरित्तैयुम्-कठोर काल के देव यम को; विण् इयङ्कु-आकाश में संचार करनेवाले; कोळित्तैयुम्-नवग्रहों को; पणि कोट्ऽकु-सेवा लेने के लिए; आऽरित्तै-नियत किया; नी-तुमने; ईण्टु इरुवर् मानिडवर्क्कु-यहाँ दो मनुष्यों के सामने; आऽऽतु-अशक्त होकर; उन् वलत्तै माऽरित्तैयो-अपना बल खो दिया है क्या । ३२२

शिवजी के हाथ से तुमको चन्द्रहास नाम की तलवार मिली । उस तलवार के धारक रावण ! तुमने वायुदेव, वरुण, अग्निदेव, कठोर कालदेव और आकाशचारी नवग्रह इन सबको अपने सेवक बना रखा है ! ऐसे बली अब इन दो मामूली मनुष्यों के सामने अशक्त होकर तुम अपना बल खो चुके क्या ? । ३२२

उरुप्पोंडिया	मत्तमदत्तै	योत्तुळरे	यान्नालुम्
शैरुप्पडियिर्	पोंडियौव्वा	मानिडरैच्	चौरुदियो
नैरुप्पोंडियप्	पोंडिशिदऽ	निऽसदत्त	तिशैयात्तै
मरुप्पोंडियप्	पौरुप्पिडियत्	तोणिमिऽत्त	वलियोत्तै 323

निऽसदत्त-पूर्ण मद वाले; तिचैयात्तै-दिग्गजों के; मरुप्पु ओटिय-दाँत तोड़ते हुए; पौरुप्पु इटिय-कैलास को ढहते हुए; नैरुप्पु ओटिय-अग्निदेव को तोड़कर; पोंडि चितऽ-चूर-चर कर छितराते हुए; तोळ् निमिऽत्त-(दिग्विजय के अवसर पर) भुजाओं का बल दिखाकर जिसने लड़ाई की, ऐसे; वलियोत्तै-वलवान (रावण); उरु पोंडिया-शरीर जिसका नष्ट नहीं हुआ हो, ऐसे; मत्तमदत्तै-मन्मथ के; योत्तु उळरे आन्नालुम्-समान हैं तो भी; चैरु पटियिल्-युद्धभूमि में (या जूते के तल की); पोंडि औव्वा-धूलि-सम भी जो नहीं हैं; मानिडरै-उन मनुष्यों पर; चौरुतियो-कोप करोगे क्या । ३२३

दिग्विजय के अवसर पर तुमने मदमत्त दिग्गजों के दाँतों को तोड़ा, कैलास को गिराया और अग्निदेव को चूर कर छितराया । ऐसे तुमने भुजाओं के बल का प्रदर्शन किया । ऐसे बली रावण ! ये दोनों सशरीर मन्मथ के समान हैं तो भी (चैरु पटियिल् =) युद्धभूमि में, या

(चैरुप्पटियिल् =) जूते के तल की धूलि के समान भी नहीं होंगे । वे इतने दुर्बल हैं । उन पर कोपकर उनसे लड़ोगे भी ? । ३२३

तेनुडैय	नरुन्दैरियर्	रेवरैयुन्	दैरुमाडुल्
तानुडैय	विरावणडुकुन्	दम्बियर्कुक्कुन्	दविरुन्ददो
ऊनुडैय	वुडम्बिनरा	येडुगुलत्तोरक्	कुणवाय
मानुडवर्	मरुडुगेपुक्	कौडुङ्गिनदो	वलियम्मा 324

तेनु उडैय-शहद-भरे; नरुम् तैरियल्-मधुर सुगन्धयुक्त मालाधारी; तेवरैयुम्-देवों की भी; तैरुम्-आक्रान्त करनेवाले; आडुल् तानु उडैय-शक्तिसम्पन्न; इरावणडुकुम्-रावण का और; तम्पियर्कुक्कुम्-उसके छोटे भाइयों का; वलि-बल; तविरुन्ततो-छूट गया क्या; ऊनु उडैय उडम्पितर् आय्-मांसयुक्त शरीर के बनकर; अम् कुलत्तोरक्कु-हमारे राक्षसकुल के लोगों का; उणवु आय-भोजन बननेवाले; मानुडवर् मरुडुके पुक्कु-मनुष्यों के अन्दर घुसकर; औडुङ्किततो-समा गया क्या; अम्मा-आश्चर्य । ३२४

अब जो हुआ है, उसका अर्थ क्या समझा जाय ? यह समझा जाय कि मधुयुक्त सुवासित मालाधारी देवों को आक्रान्त करनेवाले रावण का और उसके भाइयों का बल क्षीण हो गया ? और वह बल हमारे कुल के लोगों का भोज्य मांसधारी मानवों के शरीर के अन्दर प्रवेश कर समा गया ? । ३२४

मरुत्तेयु	नैडुङ्गात्तिन्	मरैनुडुडैयुन्	दापदरुहळ्
उरुत्तेयो	वडलरक्क	रोय्वेयो	वुडुर्दिरुन्दार्
अरुत्तेयो	वरियेयो	वयत्तेयो	बैनुमाडुल्
करुत्तेयो	यान्पट्ट	कैयडु	काणायो 325

मरुन् एयुम्-वृक्षाकीर्ण; नैडुम् कात्तिन्-विस्तृत वन में; मरैनु उडैयुम्-छिपकर रहनेवाले; तापतर्कळ्-तपस्वी लोगों का; वलिये ओ-बल है यह; अटल् अरक्कर्-(या) बली राक्षसों की; ओय्वेयो-शक्तिहीनता है; उडु अतिरुन्तार्-लड़ने आये हुए (लोग); अरुत्ते ओ-हर है क्या; अरिये ओ-हरि है क्या; अयत्ते ओ-अज है क्या; अँनुम्-ऐसा माने उतना; आडुल्-बली; करुत्ते ओ-हे खर; यान् पट्ट-मैंने जो पाया है; कै अडु-वह संकट; काणाय् ओ-आकर देखोगे नहीं क्या । ३२५

यह घटना तरुसंकुल वन में छिपे रहनेवाले तपस्वियों के बल का द्योतक है ? या बली राक्षसों की शक्ति के क्षीण हो जाने का ? हे खर ! जिसको युद्ध में देखकर शत्रु यह सन्देह करते थे कि यह क्या हर ही है या हरि या अज ! ऐसी शक्ति वाले खर ! आकर मुझे क्या हो गया है —यह अनर्थ तुम नहीं देखोगे क्या ? । ३२५

इन्दिरिनु मलरयनु मिमैयवरुम् बणिकेट्पच्
 चुन्दरिपल् लाण्टिशैप्प वुलहेळुन् दौळदेत्तच्
 चन्दिरिन्पीड् कुडैनिळ्डुड् विशैन्दिरुन्द शवैनडुवे
 वन्दडिये नाणादु मुहड्गाट्ट वल्लेत्तो 326

इन्दिरिनुम्—देवेन्द्र और; मलर् अयनुम्—सरोजासन ब्रह्मा; इमैयवरुम्—और
 अन्य देव; पणि केट्प—सेवाएँ करते हैं; चुन्दरि—सुन्दरी शची देवी; पल्लाण्टु
 इचैप्प—‘जयजीव’ गाती है, तब; उलकु एळुम् तौळुतु एत्त—सातों लोक विनय करके
 स्तुति करते; चन्दिरिन्—चन्द्र के; पीन् कुडै—स्वर्णछत्र; निळ्डुड्—ले छाया करते;
 इचैन्तु इरुन्त—तुम ऐसा जिस सभा में उल्लास के साथ रहते हो; चपै नट्टुवे—उस सभा
 के मध्य; अट्टियेत्त वन्तु—दासी मैं आकर; नाणातु—विना शरमाये; मुक्कम् काट्ट
 वल्लेत्तो—मुख दिखा सकूंगी क्या । ३२६

हे रावण ! तुम अपनी सभा में बड़े ठाट-बाट के साथ बैठते हो । तब
 इन्द्र, सरसिजासन ब्रह्मा और अन्य देव तुम्हारी आज्ञाएँ मानते हुए सेवक के
 रूप में रहते हैं । सुन्दरी शची जयजीव का गान गाती है । सातों लोक
 तुम्हारी संस्तुति करते हैं । चन्द्र तुम्हारा स्वर्णछत्र धारण कर छाया
 बनाता है । ऐसी सभा में अब आकर बेशरम की तरह अपना मुख दिखाने
 योग्य रहती हूँ क्या ? । ३२६

ॐ उरन्तिरिन्दु विळ्वैन्तै युदैत्तुरुट्टि मूक्करिन्द
 नरन्तिरिन्दु तोळ्पार्क्क नात्तिरुन्दु पुलम्बुवदो
 करन्तिरुन्द वनमन्डो विवैपडवुड् गडवेनो
 अरन्तिरुन्द मलैर्यडुत्त वैयावो वैयावो 327

अरन्तु इरुन्त मलै अँटुत्त—हर जिसमें रहे, उस गिरि को उखाड़नेवाले; ऐयाओ
 ऐयाओ—प्रभु, प्रभु; उरन्तु नैरिन्तु विळ्वै—मेरी छाती विदीर्ण हुई और मैं नीचे गिर गई,
 ऐसा; अँत्तै उतैत्तु उरुट्टि—मुझे लात मारकर, गिराकर और लुढ़काकर; मूक्कु
 अरिन्तु—(जिसने) मेरी नाक काटी; नरन्तु इरुन्तु तोळ् पार्क्क—वह नर अभिमान के
 साथ अपने कंधों को देख रहा है, तब; नान् इरुन्तु पुलम्बुवतो—मैं बँठी विलाप करूँ
 (क्या यह ठीक है); करन्तु इरुन्त वरम् अन्डो—खर के वास का वन है न; इवै
 पटवुम् कटवेनो—यह (अन्याय) सहने अर्ह हूँ क्या । ३२७

हे प्रभु ! हे रावण ! तुमने हरनिलय कैलास को उखाड़ लिया था !
 मुझे मेरी छाती विदीर्ण करते हुए नीचे गिरा दिया एक नर ने ! उसने
 मेरी नाक काट दी और वह आत्माभिमान के साथ अपने कंधों को देख
 रहा है, अपने बल पर इठला रहा है ! और मैं असहाय की तरह विलाप
 कर रही हूँ । क्या यह ठीक लगता है ? यह खर के शासनाधीन वन है ।
 इधर मेरी ऐसी दुर्गति हो—मैं इसके अर्ह हूँ क्या ? । ३२७

❖ नशैयाले	मूक्किळनुदु	नाणमिला
वशैयाले	निन्नुपुहळु	माशुण्ड
दिशैयालै	विशैहलङ्गच्	चैरुच्चैय्दु
इशैयाले	वैळुदुपैय	रिरावणवो

तिचै थातै-दिग्गजों के; विचै कलङ्क-क्रोधोद्वेग को मिटाते हुए; चैरु लङ्कर; मरुप्पु ओचित्त-उनके दाँतों को तोड़ा (जिसने); इचैयाले पयर् यश से (जिसने) अपना नाम अंकित किया; इरावण ओ इरावण ओ-हे वह वह रावण; नचैयालै-इच्छा के कारण; मूक्किळनुतु-नाक खोकर; नाणम् लाज खोकर; नात्तु पट्ट वचैयाले-मुझे जो अपमान मिला, उससे; निन्नु तुम्हारा यश भी; माचु उण्टतु आकातो-कलंकित नहीं होगा क्या । ३२८

हे रावण ! तुमने दिग्गजों के क्रोध को मिटाकर उनसे लड़कर उन दाँत तोड़ दिये और अपना नाम यश से अंकित किया है । ऐसे हे रावण ! क्या प्रेम करना बुरा है ? अपने प्रेम के कारण मैंने अपनी नाक खोयी, लाज खोयी और मैं अपमानित हो गयी हूँ । इस मेरी निन्द्य स्थिति से तुम्हारे यश में भी बट्ठा नहीं लगेगा क्या ? । ३२८

❖ कानदत्ति	निडैयोरुवर्	कादोडुमूक्	कुडनरिय
मानमदाऱ्	पाविये	निवण्मडियक्	कडवेत्तो
तात्तवरैक्	करुवळुत्तुप्	पुरन्दरत्तैत्	तळैयिट्टु
वात्तवरैप्	पणिहोण्ड	मरुहावो	मरुहावो 329

तात्तवरै करु अळुत्तु-दानवों का मान नाश कर; पुरन्दरत्तै-पुरन्दर को; तळैयिट्टु-बेड़ी पहनाकर; वात्तवरै-देवों को; पणि कौण्ट-नौकर (जिसने) बना लिया; मरुका ओ मरुका ओ-हे वह भतीजे, भतीजे; कान् अतत्तिन् इटै-जंगल में; ओरुवर्-एक मानव ने; कात्तु ओटु मूक्कु उटन् अरिय-कान के साथ नाक एक साथ काट दिया, तब; पावियेन्-पापिनी मैं; मात्तम् अताल्-अपमान से; इवण् मटिय कटवेत्तो-इधर मर जाने अर्ह हो गई क्या । ३२९

(अब वह इन्द्रजित् को पुकार रही है ।) हे मेरे भतीजे ! भतीजे ! तुमने दानवों का मान मिटाया, पुरन्दर को बेड़ियाँ पहनाकर कारागृह में रखा और देवों को नौकर बनाया और अपनी सेवा-टहल करायी । ऐसे भतीजे ! जंगल में एक नर ने मेरे नाक और कान एक साथ काट दिये । पापिनी मैं अपमान से यहीं मर जाऊँ —इसी के योग्य हूँ क्या मैं ? । ३२९

ओरुहालत्	तुलहेळु	मुळुत्तिरिय	तत्तुवोत्तुऱल्
तिरुहाद	शित्तन्दिऱुहित्	तिशैत्तिशैये	शैलन्नुऱि
इरुहालप्	पुरन्दरत्तै	यिरुज्जिऱैयि	लिट्टलैत्तु
मरुहावो	मात्तिडवर्	वलिहाण	वारायो 330

और कालतु-पहले (दिग्विजय के समय) कभी; तत्तु औन्डाल-एक धनु द्वारा; तिरुकात चिन्नम् तिरुकि-अदम्य क्रोध बढ़कर; उलकु एल्लुम् उरुत्तु-सातों लोकों पर कोप प्रदर्शित करके; इरिय-उनको अस्तव्यस्त करते हुए; तिच्चै तिच्चै चैल-दिशा-दिशा में भगते हुए; नूडि-उनको मारकर; अ पुरन्तरत्तै-उस पुरन्दर को; इरु काल्-दो बार; इरुम् चिरै इट्टु-भयंकर कारा में डालकर; अलैत्त- (जिसने) सताया वह; मरुका ओ-भतीजे; मात्तिटवर्-इन मानवों का; वलि काण-बल देखने; वारायो-आओगे नहीं क्या । ३३०

हे भतीजे ! अपने पिता के दिग्विजय के समय में तुमने क्या-क्या साहस दिखाये । एक ही धनुष के सहारे तुमने बढ़ते क्रोध के साथ सातों लोकों पर कोप उतारकर उनके वासियों को भयभीत किया और वे भागने लगे । उनको तुमने मारा । फिर उस इन्द्र को दो बार कारागृह में डालकर दुख दिया । ऐसे तुम अब आकर दो अल्प नरों का बल देखो । देखने नहीं आओगे ? । ३३०

ॐ कल्लीरुम्	बडैत्तडक्कै	यड्डुकरतू	डणर्मुदला
अल्लीरुज्	जुडर्म्मणिप्पू	णरक्कक्कुलत्	तवदरित्तीर्
कौल्लीरुम्	बडैक्कुन्ब	करुणत्तैप्पोड्	कौडियीर्हाळ्
अल्लीरु	मुड्डुगुदिरौ	यान्ळैप्प	केळीरो 331

कल् ईरुम्-पत्थर को भी बेधनेवाले; पटै तट कै-हथियारों को लिये हुए विशाल हाथों के; अटल्-बली; कर तूटणर् मुतला-खर, दूषण आदि; अल् ईरुम्-अन्धकार को भेदनेवाली; चुटर्म्मणि पूण्-कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित; अरक्कर् कुलत्तु अवतरित्तीर्-राक्षसकुल में जात (राक्षसों); कौडियीर्काळ्-क्रूर; अल्लीरुम्-तुम लोग सब; कौल् ईरुम् पटै-लुहार से रेतकर तेज किए हुए आयुधों के; कुम्पकरणत्तै पोल्-कुम्भकर्ण की तरह; उड्डुक्कुतिरो-सो रहे हो क्या; यान् अळैप्प-मैं पुकार रही हूँ; केळीरो-वह नहीं सुनते क्या । ३३१

(खर-दूषण आदि राक्षसों को पुकारती है ।) कठोर पत्थर को भी बेधनेवाले हथियारधारी खर-दूषण आदि राक्षसों ! अन्धकार को भेदने वाली कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित राक्षसकुलोद्भूत निशाचरो ! तुम सब क्रूर राक्षस क्या उस कुम्भकर्ण के समान सो रहे हो, जिसके पास लुहार से रेती द्वारा तेज किए हुए हथियार (बेकार) पड़े हैं ! मैं बुला रही हूँ— तुम सुन नहीं रहे हो क्या ? । ३३१

अन्निन्न	पलपन्ति	यिहलरक्कि	यळैत्तिरड्गि
पौन्नन्नुम्	बडियहतुप्	पुरळ्हिन्ऱ	पौळुदत्तु
निन्ऱन्द	नदियहतु	निऱैतवत्तिन्	तुऱैमुडित्तु
वन्ऱिण्गैच्	चिलैन्डुन्दोण्	सरहदत्तिन्	मलैवन्दान् 332

अन्ऱ-ऐसा; इन्त पल-ऐसे विविध प्रलाप; पन्ति-कहते; इक्ल् अरक्कि-

वैर रखनेवाली राक्षसी के; अळैत्तु इरङ्कि-पुकारते और रोते हुए; पोन् तुन्तुम्-बहुत मनोहर; पटि अकत्तु-भूमि पर; पुरळ्किन्ऱ पौळुत्तु-लोहते समय; वन् तिण् कै-वलिष्ठ और सारयुक्त हाथों; चिलै नैट्टु तोळ्-धनु धारण करनेवाले उन्नत कंधों के; मरकतत्तिन् मलै-मरकत गिरि (-सम श्रीराम); अन्त नति अकत्तु-उस नदी के घाट पर; निरै तवत्तिन् कुरै मुटित्तु-यथावत कर्म अशेष पूरा करके; निन्ऱु-वहाँ से; वन्तात्-आश्रम की ओर पधारे । ३३२

वैर रखनेवाली शूर्पणखा ने इस तरह ऐसी विविध बातें कहती हुई अपने बन्धुओं को पुकार-पुकारकर विलाप किया । विलापते हुए वह आश्रम की पवित्र भूमि पर गिरकर लोटी । तब श्रीराम, जिनके हाथ दीर्घ और बलवान थे और जिनके सबल कन्धे को धनु अलंकृत कर रहा था, नदी-घाट में सन्ध्या का नित्यकर्म यथावत अशेष रूप से सम्पन्न करके वहाँ से निकलकर इस स्थान पर आ गये । ३३२

वन्दात्तै	मुहनोक्कि	वयिरुलैत्तु	मळैककण्णीर्
शैन्दारैक्	कुरुदियौडु	शौळुनिलत्तैच्	चेराक्कि
अन्दोवुन्	तिरुमेनिक्	कन्विळैत्त	वन्विळैयाल्
अन्दायान्	पट्टपडि	यिदुहार्णन्	ईदिर्वोळ्न्दाळ् 333

वन्तात्तै-आये उनका; मुक्कम् नोक्कि-श्रीमुख देखकर; वयिरु अलैत्तु-पेट (छाती) पीटकर; मळै कण् नीर्-वर्षा के समान अश्रु; चैम् तारै कुरुति ओट्टु-और धार रूप में बहनेवाले रक्त के साथ; चैळु निलत्तै चेरु आक्कि-श्रेष्ठ भूमि की कीचड़ बनाते हुए; अन्ताय्-मेरे नाथ; अन्तो-हाथ; उन् तिरुमेत्तिकु-तुम्हारे श्रीशरीर पर; अन्पु इळैत्त-आसक्ति रखने के; वन् पिळैयाल्-कठोर अपराध के कारण; इतु-यह; यान् पट्ट पटि इतु-मुझे मिला प्रकार (संकट) यह; काण् अन्ऱु-देखो, कहकर; अँतिर् वीळ्न्ताळ्-उनके सामने गिरी । ३३३

शूर्पणखा ने श्रीराम को देखा । उनके मुख के सामने अपना पेट (अपनी छाती को) पीटा । आँखों से अश्रुजल की धारा बहायी और शरीर से लाल रक्त की धारा । उनसे वहाँ की श्रेष्ठ भूमि पंकिल बन गयी । उसने श्रीराम से शिकायत की कि देखो ! मेरे नाथ ! हाथ ! तुम्हारे रूप पर मेरा जी ललचाया । इस घोर अपराध का फल मुझे भोगना पड़ा, वह यह देखो ! यह कहते हुए वह श्रीराम के सामने भूमि पर गिर पड़ी । ३३३

विरिन्दाय	कून्दलाळ्	वैय्यविनै	यादानुम्
पुरिन्दाळैन्	बदुन्दनदु	पौरुवरिय	तिरुमनत्ताल्
तैरिन्दानिन्	इळैयोने	यिवळैन्डुम्	जैवियौडुम्क्
करिन्दात्तैन्	बदुमुणर्न्दा	नवळैनी	यारैन्ऱान् 334

विरिन्ताय कून्तलाळ्-विखरे केश वाली ने; वैय्य विनै-क्रूर काम; यातेत्तुम् पुरिन्ताळ्-कुछ किया है; अँन्पु-यह; तत्तु-अपने; पौरुव अरिय तिरुमन्तत्ताल्-

अनुपम-श्रीमन में; तैरिन्तान्-समझकर; इळैयोत्ते-छोटे भाई ने; इवळै-इसके; इन्ड-अभी; नैटुम् चैवि ओटु-बड़े कानों के साथ; मूक्कु-नाक को; अरिन्तान्-अन्तपतुम्-काट लिया है, यह भी; उणर्न्तान्-जानकर; अवळै-उससे; नी यार्-तुम कौन हो; अन्त्रान्-पूछा । ३३४

श्रीराम ने अपने श्रीमन में सोचा कि बिखरे केश वाली इसने नृशंस कोई काम किया होगा और अनुज लक्ष्मण ने अभी-अभी इसकी नाक और इसके कान काटे हैं । उन्होंने उससे प्रश्न किया कि तुम कौन हो ? । ३३४

अव्वुरैकेट्	टडलरक्कि	यडियायो	नीयैन्तैत्
तैव्वुरैयैन्	इव्वुलहु	मिल्लाद	शीड्डत्तान्
वैव्विलैवे	लिरावणत्ताम्	विण्णुलह	सुदलाय
अव्वुलहु	मुडैयानुक्	कुडन्बिडन्दैन्	यानैन्त्राळ् 335

अ उरै केट्टु-वह वचन सुनकर; अटल् अरक्कि-सशक्त राक्षसी ने; अन्तै नी अडियायो-मुझे नहीं पहचानते क्या; अ उलकुम्-सभी लोकों में; तैव्व उरै अन्ड इत्तात्-जिसके शत्रु नहीं होते (सभी हराये गये हैं); चीड्डत्तान्-जो क्रोधी है; वैम् इलै वेल्-भयंकर पत्ताकार सिर वाला भालाधारी; इरावणन् आम्-रावण कहलानेवाले; विण् उलकुम् मुतल् आय-स्वर्गलोक आदि; अ उलकुम् उडैयानुक्कु-सभी लोकों के स्वामी की; उटन् पिडन्तेन्-सहोदरा हूँ; यान्-मैं; अन्त्राळ्-कहा । ३३५

वह प्रश्न सुनकर शूर्पणखा को आश्चर्य हो गया । उस क्रूर राक्षसी ने उत्तर में कहा कि क्या तुम मुझे नहीं जानते ? मैं उस रावण की बहिन हूँ, जिसका किसी भी लोक में कोई शत्रु नहीं है (क्योंकि उसने शत्रुओं को मिटा दिया है और कोई भी उससे वैर मोल लेने से डरते हैं), जो बड़ा क्रोधी है और जो पत्ताकार सिर के भाले का धारी है और जो स्वर्गादि लोकों में हर किसी लोक का स्वामी है । मैं उसकी सहोदरा हूँ । ३३५

तामिरुन्द	तहैयरक्कर्	पुहलौळियत्	तवमियर्ऱ
यामिरुन्द	नैडुञ्जळ्	कैन्शेयवन्	दायैत्तलुम्
वैमिरुन्दै	यैन्कुकनलु	मैरिहाम	वैम्बिणिक्कु
मामरुन्दै	नैरुनलितुम्	वन्दिलैन्नो	यानैन्त्राळ् 336

तकै अरक्कर्-निषिद्ध राक्षस; ताम् इरुन्त-जहाँ रहते हैं; पुक्ल् ओळिय-उन स्थानों को छोड़कर; याम्-हम; तवम् इयर्ऱ-तपस्या करते हुए; इरुन्त-जहाँ रहते हैं; नैटुम् चूळल्-इस विशाल आश्रम में; अन् चैय वन्ताय्-क्या करने आई; अत्तलुम्-पूछने पर; वैम् इरुन्तै अत्त-कोयले के समान; कत्तलुम्-जलनेवाले; अरि काम-तापक काम रूपी; वैम् पिणिक्कु-तपानेवाले भयंकर रोग की; मा मरुन्ते-श्रेष्ठ औषध; नैरुनलितुम्-कल भी; यान् वन्तिलैन्नो-मैं नहीं आई थी क्या; अन्त्राळ्-पूछा । ३३६

तब श्रीराम ने पूछा कि निषिद्ध राक्षसों के वासस्थानों को छोड़कर इस श्रेष्ठ आश्रम में तुम क्यों आयी, जहाँ हम तपस्या कर रहे हैं ? उसके उत्तर में शूर्पणखा श्रीराम से बोली— अग्नि में जलते कोयले के समान तपानेवाले काम रूपी रोग की श्रेष्ठ औषध ! क्या तुम भूल गए कि मैं कल भी आयी थी । कल आयी थी न ? । ३३६

शङ्खयल्पोऽ	करुनेडुङ्गट्	टेमरुदा	मरैयुऱैयुम्
नङ्गैयिव	रैन्नैरुनल्	नडन्तदवरो	नामैन्तक्
कौङ्गैहळुड्	- गुळैहाडुड्	कौडिमूक्कुड्	गुरैत्तळित्ताल
अङ्गणर	शेयौरुवर्क्	कळियादो	वळहैन्नाळ् 337

चैम् कयल् पोल्-लाल 'कयल' मीनों के समान; करु नैटुम् कण्-काली और आयत आँखों वाली; तेमरु तामरै-शहद से युक्त कमल पर; उरैयुम्-रहनेवाली; नङ्गै अन्न-श्रीलक्ष्मीदेवी के समान; नैरुनल्-कल; नडन्तवरो-आई जो थी; नाम् अन्न-वही हम है (तुम हो) क्या, यह पूछने पर; अरचे-राजा; कौङ्गैकळुम्-स्तन और; कुळै कातुम्-लचकदार कान; कौटि मूक्कुम्-और लता-समान नाक को; कुरैत्तु अळित्ताल-काटकर दूर करने से; अङ्कण-तब; अळकु अळियातो-सौंदर्य मिट नहीं जायगा क्या; अन्नाळ्-पूछा । ३३७

श्रीराम ने कहा— ओफ़ ओह ! कल जो श्रीलक्ष्मी के समान लाल कयल-सी आँखों वाली कमलनिवासिनी है, इधर आयी, वह तुम्हीं हो क्या ? शूर्पणखा ने निष्ठुरता से कहा कि लटकनेवाले कानों को और लता-समान नाक को काट दिया गया तो क्या सौन्दर्य मिट नहीं जायगा ? (कल और आज के रूप में अन्तर क्या नहीं आ जायगा ?) । ३३७

मुरन्मूळ	वलन्तिळैय	मौय्म्बित्तान्	मुहनोक्कि
वीरवैट्टुण्	डनैयिवडन्	विडुहाडुड्	गौडिमूक्कुम्
ईरनिनैन्	दिवळिळैत्त	पिळैयैन्नेन्	इरैवित्तवच्
चूरनेडुन्	दहैयवत्तै	यडिवणङ्गिच्	चौल्लुवान् 338

इरै-भगवान श्रीराम के; मुरन् मूळवलन्-मन्दहास के साथ; इळैय मौय्म्पित्तान्-पराक्रमी छोटे भाई के; मुक्कुम् नोक्कि-मुख को देखकर; वीर-वीर; इवळ् तन्-इसके; विट्टु कातुम्-लटकनेवाले कानों और; कौटि मूक्कुम्-लम्बी नाक को; वैकुण्ठसै-क्रोध करते हुए; ईर-काटने के लिए; इवळ् नितैन्तु इळैत्त-इसने सोचकर जो किया; पिळै-वह अपराध; अन्-क्या; अन्ना वित्तव-यह पूछने पर; चूर नैटुम् तर्क-शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण; अवत्तै अटि वणङ्कि-उनको पैरों पर नमस्कार करके; चौल्लुवान्-बोले । ३३८

प्रभु श्रीराम को हँसी आ गयी । मन्दहास के साथ उन्होंने अपने भाई लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वीर ! इसके लटकते कानों और दीर्घ नाक को गुस्से के साथ इस तरह काटो, ऐसा इसने जान-बूझकर क्या अपराध

किया ? शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण ने श्रीराम को नमस्कार करके यों उत्तर दिया । ३३८

तेट्टन्दान्	वाळ्ळिर्गिर्गिर्	तिन्नवो	तीवित्तैयोर्
कूट्टन्दान्	पुउत्तुळदो	कुडित्तपौर	ळिन्दिर्लैन्नाल्
नाट्टन्दा	तैरियुमिळ	नल्लाण्मेर्	पौल्लादाळ्
ओट्टन्दा	ळरिदिनिव	ळुयिर्हवर्न्दा	ळैन्वन्दाळ् 339

तेट्टम् तान्—इसका इधर खोजते हुए आना; वाळ् अँगिर्गिर् तिन्नवो—(वक्र और) उज्ज्वल दाँतों से काटकर खाने के लिए था, या; ती वित्तैयोर्—नृशंसकारी; कूट्टम् तान्—राक्षसों का दल ही; पुउत्तु उल्लतो—पास रहता है; कुडित्त पौरुळ्—जो उद्देश्य ले आई थी, वह बात; अडिन्तिलैन्—मैंने नहीं जाना; नाट्टम् तान् अँगि उमिळ्—आँखों से अग्नि प्रकट करते हुए; पौल्लाताळ्—यह क्रूरी; नल्लाळ् मेल्—साध्वी (भाभी) पर; अरितिन्—अप्रत्याशित रीति से; इवळ् उयिर् कवर्न्ताळ् अँत—इनका प्राण हर लिया हो, ऐसा; ओट्टन्ताळ्—भागती; वन्ताळ्—आई । ३३९

प्रभु ! इसका उद्देश्य क्या था ? भाभी की खोज में यह आयी—उनको अपने सफ़ेद दाँतों से चबाकर खाने के लिए ? या क्रूरकर्मा राक्षसों का दल पास में कहीं है ? यह क्या करने आयी—मैं जाने नहीं पाया । पर यह बुरी स्त्री आँखों से अग्नि निकालती हुई साध्वी देवी पर ऐसी झपटी कि मानो उसने उनकी जान ही हर ली हो ! वह तीव्र गति से भागती आयी । ३३९

एड्डवळै	वरिशिलैयो	नियम्बामुन्	निहलरक्कि
शेड्डवळै	तन्कणव	नरुहिरुप्पच्	चित्तन्दिरुहिच्
चूड्डवळै	तुनियुळक्कुन्	दुडैहँळुनोर्	वळनाड
माड्डवळैक्	कण्डक्का	लळलादो	मत्तमँन्डाळ् 340

एड्ड—(हाथ में) धृत; वळै वरि चिलैयोन्—झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष वाले (लक्ष्मण) के; इयम्पा मुन्—कहने से पूर्व ही (कहते ही); इक्कल् अरक्कि—वैरसना राक्षसी; चूल् तवळै—गाभिन मेंढकी; तन् कणवन् अरुक्—अपने पति मेंढक के पास; चेड्ड वळै इरुप्प—कीचड़ में एक शंखकीट को रहते देख; चित्तम् तिरुक्कि—कोप में बढ़कर; तुत्ति उळक्कुम्—बहुत रूठकर जहाँ दुखी होती है; दुडै कँळु—ऐसे घाटों से भरे; नोर् नाटा—जलाशय जिसमें रहने हैं, ऐसे देश के अधिपति; माड्डवळै कण्ट काल्—सौत को देखकर; मत्तम् अळलातो—मन तप्त नहीं होगा क्या; अँन्डाळ्—कहा । ३४०

झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष को हाथ में जो लिये रहे, उन लक्ष्मण के यह कह चुकने के पूर्व ही शूर्पणखा बोल उठी । हे अयोध्या देश के अधिपति, जहाँ ऐसे जलाशय बहुतायत से पाये जाते हैं, जिनमें गाभिन मेंढकियाँ कीच में अपने मेंढक के पास शंखकीट को देखकर मान करके बहुत दुखी हो रहती हैं ! सौत को देखने पर किसी का मन जल नहीं उठेगा

क्या ? (इस पद में सम्बोधन जो है, उसमें सौत के मनोभाव की चर्चा अप्रत्यक्ष रूप से हुई है। यह तमिळ काव्य की विशेषता है। शूर्पणखा अपने को मेंढकी और सीताजी को मादा शंखकीट मानती है। यानी अपने को पत्नी और सीता को सौत।) । ३४०

पेडिप्पोर्	वल्लरक्कर्	पैरुङ्गुलत्तै	यौरुङ्गविप्पान्
तेडिप्पोन्	दनमिन्ऱु	तीमाड्ऱुन्	जिलविळम्बि
वीडिप्पो	हादियिव्	वैव्वन्नत्तै	विट्टहल
ओडिप्पो	वैन्ऱुरैत्त	वुरैहडन्दाऱ्	कवळुरैप्पाळ् 341

पेडि पोर्-भयजनक युद्ध में; वल्-समर्थ; अरक्कर् पैरुम् कुलत्तै-राक्षसों के बड़े कुल को; ओरुङ्कु अविप्पान्-एक साथ मिटाने के लिए; तेडि पोन्तत्तैम्-हँदते हुए हम आये हैं; इन्ऱु-अब; ती माड्ऱुन्-बुरी बातें; चिल विळम्बि-कुछ कहकर; वीडि पोकाते-मिटो मत; इ वैव् वन्नत्तै विट्टु-इस प्यारे वन को छोड़कर; अकल-दूर; ओडि पो-भाग जाओ; वैन्ऱु उरैत्त-यह जिन्होंने कहा; उरै कटन्तार्क्कु-उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम से; अवळ् उरैप्पाळ्-वह बोली (उत्तर में) । ३४१

श्रीराम ने गम्भीरता से चेतावनी दी। हम इधर उन भयंकर युद्ध-समर्थ राक्षसों को एक साथ समूल नाश करने आये हैं। हम उन्हीं की खोज में इधर रहते हैं। अब तुम कुछ अंड-संड कहकर अपना अन्त मत करा लो। चलो इस प्यारे आश्रम को छोड़कर दूर भाग जाओ। उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम के ये वचन सुनकर शूर्पणखा उन्हीं को उपदेश देने लगी। ३४१

नरैतिरैयौन्	ऱिल्लाद	नान्मुहने	मुदलमरर्
करैयिड्ऱन्दो	रिरावणऱ्कुक्	करन्ऱुक्कुड्	गुडियन्ऱो
विरैयुमदु	नन्ऱुन्ऱु	वेऱाह	यानुरैक्कुम्
उरैयुळदु	नुमक्कुऱुदि	युणरुदिरै	लैन्ऱुरैप्पाळ् 342

नरै तिरै-बाल का पकना और खाल का झुर्रियों सहित हो जाना; ओन्ऱु इल्लात-कुछ जिनका नहीं है; नान्मुक्ते मुतल्-वे चतुर्मुख आदि; अमरर्-देव; करै इड्ऱन्तोरु-असीम लोग; इरावणऱ्कु-रावण को; करन्ऱु इरुक्कुम्-कर देनेवाले; कुटि अन्ऱो-प्रजा है न; विरैयुम् अतु-तुम जिसके करने में त्वरा दिखाते हो वह; नन्ऱु अन्ऱु-अच्छा नहीं है; उरुति उणरुतिरेल्-अपना हित चाहते हो तो; नुमक्कु-तुम लोगों को; वेऱु आक-अलग; यान् उरैक्कुम् उरै-मेरे समझाने की एक बात; उळतु-है; अन्ऱु-कहकर; उरैप्पाळ्-बताने लगी। ३४२

ब्रह्मा आदि देव सब, जो कभी बुढापे को प्राप्त नहीं होते, जब बाल पक जाते हैं और खाल पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, रावण को कर देनेवाले प्रजाजन हैं। यह तुम नहीं जानते क्या? तुम जो काम करने में तत्पर

रहते हो और जल्दी दिखाते हो, वह तुम्हारे हित में नहीं होगा । अगर तुम अपना भला सोचो तो मुझे तुमसे विशेष रूप से कहने की एक बात है । सुनो । वह कहने लगी । ३४२

आक्करिय	मूक्कुङ्गो	यरियुण्डा	ळैन्डारै
नाक्करियुन्	दयमुहनार्	नाहरिह	रल्लामै
मूक्करिन्दु	नुङ्गुलत्तै	मुदलरिन्दी	रित्तियुमक्कुप्
पोक्करिदिव्	वळ्ळहैयैल्लाम्	पुल्लिडैये	युहुत्तीरे 343

उङ्कै-तुम्हारी छोटी वहिन; आक्कु अरिय-फिर से ठीक कराने के लिए कठिन रीति से; मूक्कु अरि उण्टाळ-नाक की कटी हो गई; अँन्डारै-यह समाचार कहनेवाले की; नाक्कु अरियुम्-नाक जो काट देंगे वे; तयमुक्ता-दशग्रीव; नाकरिक् अल्लामै-दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं है, इसलिए; मूक्कु अरिन्दु-नाक काटकर; नुम् कुलत्तै-अपने कुल को; मुत्तल् अरिन्ती-जड़ से काट लिया (तुमने); इति-अब; उमक्कु पोक्कु अरितु-तुम्हारा कोई मार्ग नहीं है; इ अळ्कु अँल्लाम्-यह सब सौंदर्य; पुल्ल इट्टै-घास के मध्य; उकुत्ती-गिरा दिया (तुमने) । ३४३

कोई जाकर दशमुख से कहे कि तुम्हारी वहिन की नाक एकदम कट गयी और उसका कोई इलाज नहीं हो सकता तो झट वे उस कहनेवाले की जीभ काट देंगे । ऐसे वे दशग्रीव दया-दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं हैं । तुमने मेरी नाक क्या कटवायी, अपने कुल को जड़ से काट दिया समझो ! अब तुम्हारे बचाव का कोई मार्ग नहीं है । हन्त ! अपना यह सारा सौन्दर्य तुमने धूल में मिला लिया ! (घास में छितराना मुहावरा है ।) । ३४३

वान्गाप्पोर्	मण्गाप्पोर्	मानाहर्	वाळुलहम्
तान्गाप्पो	रित्तित्तङ्ग	डलैकात्तु	निन्डङ्गळ्
ऊन्गाक्क	वुरियार्था	रँन्नैयुयिर्	नीर्हाक्किन्
यान्गाप्पै	नल्लालव्	विरावणन्ना	ळळैन्डाल् 344

इरावणत्तार् उळर्-रावण है; अँन्डाल्-इमलिए; नीर् अँन्नै उयिर् काक्किन्-तुम मेरे प्राण बचाओगे तो; यान् काप्पैन्-मैं तुमको (रावण से) बचा लूंगी; अल्लाल्-नहीं तो; वान् काप्पोर्-स्वर्गपालक; मण् काप्पोर्-भूपति; मा नाकर् वाळ्-बड़े नाग जहाँ रहते हैं; उलकम् तान्-उस लोक के; काप्पोर्-राजा लोग; इति-अब; तङ्कळ् तलै कात्तु-अपने सिरों को बचा लेकर; उङ्कळ् ऊन् काक्क-तुम्हारा शरीर भी बचाने की; उरियर् यार्-क्षमता रखनेवाले कौन हैं । ३४४

रावण हैं, इसका अर्थ है कि तुम बच नहीं सकते । हाँ, तुम मेरी बात मानकर मेरे प्राण बचाओगे तो मैं तुम्हें बचा सकूंगी । नहीं तो स्वर्ग, भूमि या नागलोक के राजाओं में अपने सिरों को बचा लेकर तुम्हारा शरीर भी बचा ले, ऐसे शक्तिसम्पन्न कौन होते हैं ? (कोई नहीं !) । ३४४

कावर्त्तिन्	कर्प्पमैन्दार्	तम्वैरुमै	ताङ्गळडार्
आवर्प्पे	रन्बिना	लङ्गेहिन्ऱे	नामन्ऱो
देवर्क्कुम्	वलियान्ऱन्	डिरुत्तङ्गं	याळिवळीण्
डेवर्क्कु	वलियाळ्ळन्	डिळैयानुक्	कियम्बोरो 345

तिण् कावल् कर्प्पु अमैन्तार्-अपने स्त्रीत्व का सबल रक्षक जो पातिव्रत्य है, उससे युक्त पतिव्रता स्त्रियाँ; तम् पेरुमै-अपनी बड़ाई; ताम् कळडार्-खुद नहीं कहती; आवल् पेर् अन्नपित्ताल्-इच्छा और गम्भीर प्रेम के कारण; अङ्गेकिन्ऱेन् आम् अन्ऱो-इन बातों को खोलकर कह रही हूँ न; इवळ्-यह; तेवर्क्कुम् वलियान् तन्-देवों से भी अधिक शक्तिशाली की; तिरु तङ्कैयाळ्-प्यारी बहिन है; ईण्डु-इधर; एवर्क्कुम् वलियाळ्-किसी से भी अधिक बलशालिनी है; अँन्ऱु-ऐसा; इळैयात्तुक्कु-अपने भाई को; इयम्बोरो-नहीं समझाओगे क्या । ३४५

यह मेरे लिए बहुत संकोच की बात है । अपने स्त्रीत्व की रक्षा में जो पातिव्रत्य में दृढ़ है, वे कुलीन स्त्रियाँ अपनी बड़ाई अपने मुख से नहीं कह सकतीं । पर मेरा तुम पर इच्छा और प्रेम अगाध है । इसलिए मैं साफ़-साफ़ ये बातें कह रही हूँ । तुम अपने भाई को समझाओ कि यह शूर्पणखा देवों से भी अधिक शक्तिशाली रावण की भगिनी है और वह स्वयं किसी से भी बढ़कर बलवान है । यह नहीं बताओगे क्या ? । ३४५

माप्पोरिर्	पुडङ्गाप्पेन्	वान्शुमन्दु	शैलवल्लेन्
तूप्पोलक्	कत्तिपलवुन्	जुवैयुडैय	तरवल्लेन्
काप्पोरैक्	कैत्तेनीर्	करुदियदे	तरुवेत्तिप्
पूप्पोलु	मैय्यिवळाऱ्	पौरुळैन्ने	पुहल्वीराल् 346

मा पोरिल्-घोर युद्ध में; पुडम् काप्पेन्-पास रहकर रक्षा कहूँगी; वान्-आकाश में; चुमन्तु चैल वल्लेन्-ढोते हुए ले जा सकूँगी; तू पोल-मांस के समान; चुवै उटैय-स्वादिष्ट; कत्ति पलवुन्-फल अनेक; तर वल्लेन्-लाकर दे सकूँगी; काप्पोरै कैत्तु-रक्षक को मिटाकर; अँन् नीर् करुतियते-तुम जो चाहते हो, वह; तरुवेन्-लाकर दूँगी; इ पू पोलुम् मैय्य-इस सुमन सद्गुण शरीर वाली; इवळ् आल्-इस स्त्री से; पौरुळ् अँन्ने-लाभ क्या है; पुक्ल्वीर्-बताओ । ३४६

और भी सुनो । किसी से घोर युद्ध छिड़ा तो मैं तुम्हारे पास रहकर तुमको बचाऊँगी । तुमको उठाकर आकाश में संचार कर सकूँगी । श्रेष्ठ मांस के समान स्वादिष्ट फल संग्रह कर ला दूँगी । समझो कि तुम्हारा मन किसी वस्तु पर ललचाता है । उस वस्तु को, उसकी रक्षा करनेवाला कोई भी हो उसे मारकर, तुम्हारे लिए ला दूँगी । ऐसी शक्तिशालिनी मुझको छोड़कर तुम इस सुमन-समान कोमल शरीर वाली के पास क्यों रहो ? इस अवला से तुम्हारा क्या मिलेगा ? बताओ तो देखें । ३४६

कुलत्तालु	नलत्तालुङ्	गुडित्तनवे	कौणर्दक्क
वलत्तालु	मदियालुम्	वडिवालु	मडत्तालुम्
निलत्तारुम्	विशुम्बारु	नेरिळैया	रैन्तैप्पोल्
शौलत्तानिङ्	गुरियारैच्	चौल्लीरो	वल्लीरेल् 347

कुलत्तालुम्-जाति से; नलत्तालुम्-गुणों से; गुडित्तनवे-तुमसे निर्दिष्ट वस्तुएँ; कौणर् तक्क-लाने की; वलत्तालुम्-क्षमता में; मदियालुम्-बुद्धि में; वडिवालुम्-रूप-सौंदर्य में; मडत्तालुम्-सुकुमारता में; निलत्तारुम्-भूलोकवासी; विचम्पारुम्-स्वर्गवासी; रैन्तै पोल् नेरिळियार्-मेरे समान कोई स्त्री; चौल तान्-कहने के लिए; उरियारै-योग्य हो तो उसे; वल्लीरेल्-कह सकते हो तो; चौल्लीर्-कहो । ३४७

जाति, श्रेष्ठ गुण, तुम्हारी इच्छित वस्तु ला देने की क्षमता, बुद्धि, रूप-सौन्दर्य और सुकुमारता में मेरे समान भूलोक, स्वर्ग और नागलोक के वासियों द्वारा मान्य योग्यता रखनेवाली कोई स्त्री हो और तुम उसे जानते हो तो बताओ तो सही ! । ३४७

पोक्किनी	रैन्नाशि	पौयत्तैन्नीर्	पौरुक्किलिरेल्
आक्कुवैन्तोर्	नौडिवरैयि	लळहमैवै	नरुळ्हरूम्
पाक्कियमुण्	डैनिलदनाल्	पैण्मैक्कोर्	पळ्ळुण्डो
मेक्कुयर्	नैडुमूक्कु	मडन्दैयर्क्कु	मिहैयन्ऱो 348

अैन् नाचि पोक्किनीर्-मेरी नाक कटा दी; पौयत्तु अैन्-गया क्या; नीर् पौरुक्किलिरेल्-तुम इसे सह नहीं सको तो; अरुळ् कूळम् पाक्कियम् उण्ड-कृपा मिलने का भाग्य दिया; अैन्निल्-तो; ओर् नौडि वरैयिल्-एक ही क्षण के अन्दर; आक्कुवैन्-वना लूंगी; अळ्ळु अमैवैन्-सौंदर्यवती वन जाऊंगी; अतत्ताल्-बिना नाक की रह जाऊं तो; पैण्मैक्कु-स्त्रीत्व में; ओर पळ्ळिप्पु उण्डो-कमी होगी क्या; मेक्कु उयर्-उभरकर उगनेवाली; नैडु मूक्कुम्-दीर्घ नाक भी; मटन्तैयर्क्कु-नारियों के लिए; मिकै अन्ऱो-अनावश्यक नहीं है क्या । ३४८

तुमने मुझे नासिका से हीन कर दिया । छोड़ दो ! उससे क्या नष्ट हुआ ? तो भी अगर तुमको मेरा नासिका बिना रहना असह्य हो तो फिर से अपनी नाक पूर्ववत् बना लूंगी इस शर्त पर कि तुम मुझ पर कृपा करो । वचन दो, देखो एक क्षण में ठीक हो जायगा । वही नहीं तुम जैसा रूप चाहो वैसा रूप ले लूंगी । नाक के न रहने से क्या स्त्रीत्व में कोई कमी होगी ? उभरकर उगी हुई लम्बी नाक आवश्यकता से अधिक नहीं है ? । ३४८

विण्डारे	यल्लारो	वेण्डादार्	मनम्वेण्ड
उण्डाय	कादलिलैन्	नुयिरैन्व	दुमदन्ऱो

कण्डारे कादलिकुड् गट्टळहुम् विडमन्त्रो
कौण्डारे कौण्डाडु मुरुप्पेड्डाड् कौळ्ळीरो 349

वेण्टातार्-जिनको हम नहीं चाहते; विण्टारे अल्लारो-वे न हमारे शत्रु बन जाते हैं; मत्तम् वेण्ट-मन के लगने से; उण्टाय-जो उत्पन्न होता है; कातलिन्-उस प्रेम से; अँन् उयिर्-मेरे प्राण; अँन्पतु-जो है; उमतु अन्त्रो-वे तुम्हारे नहीं है क्या; कण्टारे कातलिकुम्-जो भी देखे वह प्रेम करे; कट्टळकुम्-ऐसा रूप-सौंदर्य भी; विटम् अन्त्रो-विष नहीं होगा क्या; कौण्टारे कौण्टाटुम्-जिसने अपना बना लिया है, वही सराहे; उरु पेड्डाड्-ऐसा रूप धरूँ तो; कौळ्ळीरो-तुम नहीं अपनाओगे क्या । ३४६

लोग, जिनको हम पसन्द नहीं करते, हमारे शत्रु हो जाते हैं । पर मेरा मन तुम पर आसक्त है, इसलिए तुमसे मेरा गाढ़ा प्रेम हो गया है और इससे क्या मेरे प्राण भी अब तुम्हारे नहीं हुए ? जो भी देखे, वही अनुरक्त हो जाय, ऐसा रूप-सौन्दर्य भी विष (के समान हानिकारक) नहीं है ? जिसकी मैं हो गयी, उसको जो भावे वही रूप मैं लूँ तो क्या तुम मुझे नहीं अपनाओगे ? । ३४९

शिवनुमलर्त्त तिशैमुहनुन् दिरुमालुन् देरुकुलिशत्
तवनुमँळुन् दौन्डाहि निन्ऱुन् वुरुवोत्ते
पुवनमनैत् तैयुमौरवत् पूड्गणैया लुयिर्वाड्गुम्
अवनुमुनक् किळैयानो विवनेपो लरुळिलत्ताल् 350

चिवत्तुम्-शिवजी और; मलर् तिवै मुक्तुम्-कमलासन चतुर्मुख; तिरुमालुम्-और श्रीविष्णु; तैरु कुलिचत्तु अवनुम्-शत्रुसंहारक वज्र रखनेवाला वह (इन्द्र); अँळुन्तु-सब अपना-अपना अलग शरीर छोड़कर; औन्ऱु आकि-एकाकार बनकर; निन्ऱु अन्न-खड़े हो (मानो); उरुवोत्ते-ऐसे दर्शन देनेवाले; पुवनम् अतैत्तैयुम्-सारे भुवनों को; और वन् पूम् कणैयाल्-एक असरदार पुष्पशायक से; उयिर् वाड्कुम्-प्राण हरनेवाला; अवनुन्-वह (मनोज) भी; इवत्ते पोल्-इस तुम्हारे भाई के समान; अरुळ् इलत्ताल्-दयाहीन लगता है, इसलिए; उतक्कु इळैयानो-(वह मन्मथ भी) तुम्हारा लघु-भ्राता है क्या । ३५०

हे राम ! तुम ऐसे रूपवान हो मानो शिव, कमलासन, श्रीविष्णु और संहारक वज्रपाणी सबने अपना-अपना रूप त्यागकर एकाकार होकर तुम्हारा रूप लिया हो ! सुन्दर राम ! तुमसे एक बात पूछूँ ? अपने एक अपार दुखदायी पुष्पास्त्र से सारे भुवनों के प्राण हरनेवाला (मर्मांतक पीड़ा पहुँचानेवाला) मन्मथ भी तुम्हारे इस भाई के समान कुपालु नहीं रहता । तो क्या वह भी तुम्हारा ही छोटा भाई है ? । ३५०

पौन्नुवव् पौरुहळ्ळीर् पिल्लैकाणीर् मूक्करिवान् पौरुळ्वेरुण्डो
अँन्नुवैक् कैक्कौण्डो रिरुन्दौळियु नम्मरुङ्गे येहाळप्पाल्

पितृनिवळे ययलीहवर् पारारा मैनवरिन्दोर् पिठैशैय् दीरो
अन्नदनै यरिन्दन्रो वन्बिरट्टि कौण्डुना नरिवि लेतो 351

पौत्र उरुव-स्वर्ण की; पौर कळलीर्-वीरपायलधारी; पिठै काणीर्-तुम अपराध करनेवाले नहीं हो; अन्न उरुवै-मेरे शरीर को; कै कौण्टीर्-अपने अधीन कर लिया है; नम् मरुड्के-हमारे ही पास; इरुन्तु ओळियुम्-ठहर जायगी; पितृत्तै-फिर; अप्पाल् एकाळ्-कहीं नहीं जायगी; इवळे अयल् ओहवर् पारार् आम्-इस पर कोई अन्य दृष्टि नहीं डालेगा; अन्न अरिन्तीर्-ऐसा सोचकर ही मेरी नाक काट ली है; मूक्कु अरिवात् पौरुळ्-(नहीं तो) नाक काटने का अर्थ; वेरु उण्टो-दूसरा है क्या; पिठै चैय्तीरो-तुमने कोई गलती की है क्या (नहीं); अन्न तत्तै-उसको; अरिन्तु अन्नो-जानकर ही तो; नान् अन्पु इरट्टि कौण्टु-दुगुना प्रेम रखती; नान् अरिवु इलेतो-क्या मैं बुद्धिहीन हूँ । ३५१

स्वर्णनिर्मित वीर पायलधारी ! तुम लोग अपराध करनेवाले नहीं हो । तुमने मेरे शरीर और रूप को अपना बना लिया है ! 'यह हमारे पास रह जायगी । अब उसके पास कोई चारा नहीं है । यह विकृत रूप लेकर वह कहीं नहीं जा सकेगी । इसको कोई दूसरा नहीं देखेगा ।'—यही सोचकर तुमने मेरी नाक काट दी है । नहीं तो मेरी नाक काट देने का कोई प्रयोजन है क्या ? तब क्या तुम अपराधी बन सकोगे ? नहीं । उस सच्चे अभिप्राय को मैं जान गयी । तभी तो मेरा तुम पर प्रेम दुगुना हो गया ! क्या मैं बुद्धिहीन हूँ ? । ३५१

वैप्पळिया नैडुवैहुळि वेलरक्क रीदरिन्दु वैहुण्डु नोक्किन्
अप्पळिया लुलहनैत्तु मुस्वौरुट्टा लळिन्दत्तवा मउत्तै नोक्किन्
ओप्पळियच् चैय्हिला रुयर्हुलत्तै तोन्निन्ना रुणर्न्दु नोक्किन्
इप्पळियैत्तु तुडैत्तुदवि यिन्निदिस्तति रैन्नीडुमैन् इरैञ्जि निन्नाळ् 352

वैप्पु अळिया-उग्रता से मिले; वैकुळि-क्रोधी; नैडुवैल् अरक्कर्-लम्बे भालों के धारक राक्षस; ईत्तु अरिन्तु-यह जानकर; वैकुण्डु नोक्किन्-कोप करके देखें तो; अ पळियाल्-उनके बदला लेने से; उलकु अत्तैत्तुम्-सारे लोक; उम् पौरुट्टाल्-तुम्हारे कारण; अळिन्तत्त आम्-मिट जाते होंगे; अउत्तै नोक्किन्-धर्म देखा जाय तो; उयर् कुलत्तु तोन्निन्तीर्-उच्च कुल में जात तुम; ओप्पु अळिय-लोक-असम्मत कार्य; चैय्किलीर्-करोगे नहीं; उणर्न्तु नोक्कि-खूब सोचकर देखकर; इ पळियै तुटैत्तु-इस अपमान को दूर करके; उताविट-सहायता करने के लिए; अन्नोन्टम् इन्ति इरुत्तिर्-मेरे साथ सुख से रह जाओ; अन्नू इरैञ्चि निन्नाळ्-ऐसी विनय कर खड़ी रही । ३५२

राक्षस उग्र क्रोधी हैं । वे यह जानेंगे तो कुपित होंगे और बदला लेने आयेंगे । उनके बदला लेने के सिलसिले में सारे लोक मिट जायेंगे और तुम ही उस नाश के निमित्त रह जाओगे । तुम लोग उच्चकुल-जात हो ! लोकों का असम्मत कार्य नहीं करोगे । धर्म की बात सोचो और खूब

विचार करो । मेरा अपमान दूर करके मेरी सहायता करने के लिए मेरे साथ सुखपूर्वक रह जाओ । —शूर्पणखा ने यह प्रार्थना की और खड़ी रही । ३५२

नाडयरत् तुयरिळैत्त नवैयरक्कि निन्नन्तै तन्तै नल्हुम्
ताडहैये युयिर्हवर्न्द शरमिरुन्द दन्त्रियुनान् इवमेऽर् कौण्डु
तोडशैयत् तुरुमलर्त्ता रिहलरक्कर् कुलन्दौलैप्पान् त्रोन्त्रि निन्त्रेन्
पाडहल पुल्लौळुक्किन् वल्लरक्कि येन्त्रिरैवन् पहरुम् विन्नुम् 353

नाटु अयर-संसार को त्रस्त करते हुए; तुयर् इळैत्त-अत्याचार जो करती रही; नवै अरक्कि-अपराधिनी राक्षसी; निन् अन्तै तन्तै नल्कुम्-तुम्हारी माता की जननी; ताडकै-ताड़का के; उयिर् कवर्न्त-प्राण हर चुका वह; चरम् इरुन्ततु-शर मेरे पास अब भी है; अन्त्रियुम्-अलावा; नान्-मैं; तवम् मेल् कौण्डु-तपोव्रती बनकर; तोडु अचै-दल-सहित; अ मलर् तुळु तार्-पुष्पों की बनी मालाधारी; इकल् अरक्कर्-शत्रु राक्षसों का; कुलम् तौलैप्पान्-कुल का नाश करने के लिए; तोन्त्रि निन्त्रेन्-आया हूँ (इधर); पुल्लौळुक्किन्-नीच चरित्र की; वल् अरक्कि-बलवान राक्षसी; पाटु अकल-दूर चली जाओ; अन्त्रु-कहकर; इरैवन्-प्रभु श्रीराम; पिन्नुम् पकरुम्-आगे बोले । ३५३

श्रीराम ने डाँट बतायी । री राक्षसी ! लोकों को त्रस्त करते हुए ऊधम जो मचाती रही, उस तुम्हारी माता की माता ताड़का का वध मैंने ही किया था । जिस शर से उसको मैंने मारा वह शर अब भी मेरे पास सुरक्षित है । और भी ध्यान रखो । मैं तपोव्रती होकर इधर आया हूँ पुष्पमालाधारी उन वैरी राक्षसों के कुल को ही मिटाने हेतु ! नीच चरित्र वाली क्रूर राक्षसी ! दूर हट जाओ, भागो, भागो ! फिर प्रभु और भी बोले । ३५३

तरैयळित्त तनिनेमित् तयरदन्त्रन् पुदल्वर्यान् तायशौर् डाङ्गि
विरैयळित्त कान्बुहुन्देन् वेदियर् मादवरुम् वैण्ड निन्त्र
करैयळित्तत् करियपडैक् कडलरक्कर् कुलन्दौलैत्तुक् कण्डाय् पण्डै
वरैयळित्त कुलमाड नहरपुहुवे मिवैर्त्तरिय मनक्की लैत्रान् 354

याम्-हम; तरै अळित्त-पृथ्वीपालक; तति नेमि-एकचक्राधिपति; तयरतन् तन् पुतल्वर्-दशरथ के पुत्र है; ताय चौल् ताङ्कि-माता का वचन मानकर; विरै अळित्त-सुवास बरसानेवाले; कान् पुकुन्तेम्-जंगल में आये; वेतियर्-वेदज्ञ और; मा तवरुम्-महान तपस्वियों के; वैण्ड-प्रार्थना करने से; निन्त्र-यहाँ स्थित; करै अळित्तत् अरिय-अपार; कटल् पटै अरक्कर्-समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों का; कुलम् तौलैत्तु-दल मिटाकर; पण्डै-प्राचीन; वरै अळित्त-पर्वत-सम; कुल माट नकर्-अधिक संख्या में प्रासादों से पूर्ण (अयोध्या) नगर; पुकुवेम्-पहुँचेंगे; इवै-यह सब; तैरिय मतम् कौळ्-खूब जानकर मन में धरो; अन्त्रान्-श्रीराम ने समझाया । ३५४

हम उन दशरथ के पुत्र हैं, जो एकचक्राधिकार के साथ भूमि का पालन करते थे। अपनी (सौतेली) माता की आज्ञा सिर पर धारण करके हम सुबास से पूर्ण इस वन में आये। यहाँ के वेदवित ब्राह्मणों और महान तपस्वियों ने हमसे प्रार्थना की। उसको मानकर हमने यहाँ रहनेवाले असीम समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों के दल को मिटा चुककर अपने प्राचीन और पर्वत-सम ऊँचे सौधों से पूर्ण अयोध्या नगर लौट जाने का संकल्प किया है। ये बातें भी तुम ध्यान में रख लो। श्रीराम ने चेतावनी देते हुए यह कहा। ३५४

नैरित्तारै शैल्लाद निरुदरैदिर् निल्लाद नैडिय तेवर्
मरित्ततारीण् डिरुवरिवर् मानिडव रैन्नादु वल्लै याहिल्
वैरित्तारै वेलरक्कर् विरलियक्कर् मुदलिनर्त्ती मिडलो रैन्ऱु
कुडित्तारै यावरैयुम् कौणरुदिये निन्ऱैदिरे कोरु मँन्ऱान् 355

नैरि तारै चैल्लात-धर्म-मार्ग पर न जानेवाले; निरुतर्-राक्षसों के; अँतिर्-सामने; निल्लाते-न खड़े होकर; नैडिय तेवर्-बड़े-बड़े देव भी; मरित्तार्-मुड़कर भाग गये; ईण्डु इवर् इरुवर्-यहाँ ये दो; मातिटवर्-मनुष्य; अँन्ऱातु-यह न सोचकर; वल्लै आकिल्-समर्थ हो तो; वैरि तार्-सुबासपूर्ण मालाधारी; ऐ वेल् अरक्कर्-सुन्दर भालों वाले राक्षस; विरल् इयक्कर्-पराक्रमी यक्ष; मुतलितर्-आदि में; नी मिटलोर् अँन्ऱु कुडित्तोरै-तुम जिनको शक्तिशाली मानती हो, उन; यावरैयुम्-सभी को; कौणरुतियेल्-लाओगी, तो; निन्ऱ अँतिरे-तुम्हारे सामने ही; कोरुम्-माँगा; अँन्ऱान्-श्रीराम ने कहा। ३५५

श्रीराम ने आगे अपनी बात पर उसका विश्वास पैदा करने के लिए कहा—‘धर्म-मार्ग पर न जानेवाले राक्षसों के सामने चिरप्रतिष्ठित देव टिक नहीं सके। लौटकर भाग गये। यहाँ ये दोनों अल्पशक्ति मनुष्य हैं।’ तुम ऐसा सोचोगी। ऐसा मत सोचो। तुम्हारे पास सामर्थ्य हो तो जाओ, सुबासपूर्ण मालाधारी राक्षस, शक्तिशाली यक्ष आदि लोगों में जिनको तुम पराक्रमी मानती हो, उन सबों को बुला लाओ। देखो, मैं तुम्हारी आँखों के सामने ही उनको मार दूँगा। ३५५

कौल्लला मायङ्गळ् कुडित्तनवे कौळ्ळलाड् गौर्ऱु मुर्ऱु
वैल्लला मवरियर्ऱुम् विनैयमैल्लाड् गडक्कला मेल्वाय् नीडिगिप्
पल्लैला मुडत्तोन्ऱुम् बहुवाय ळैन्ऱादु पार्त्ति याहिल्
नैल्लैलान् जुरन्ऱुदवु नीर्नाड केळैन्ऱु निरुदि कूरुम् 356

नैल् अँलाम् चुरन्तु-धान आदि खाद्य पदार्थ सब पैदा करके; उतवुम्-देनेवाले; नीर् नाट-जल-समृद्ध कोसल देश के राजा; केळ्-सुनो; मेल् वाय् नीडिक्कि-मुख (अधरों) को हटाकर; पल् अँलाम्-सारे दाँतों को; उर तोन्ऱुम्-खूब प्रकट होने देनेवाले; पकुवायळ्-बड़ा मुख वाली; अँन्ऱातु-ऐसा न सोचकर; पार्त्ति आयिन्-

मुझ पर प्रेम की दृष्टि रखोगे तो; कौल्लल् आम्-मारना हो सकता है; कुश्तित्तवे मायङ्कळ्-वे जो भी माया सोचेंगे; कौळ्ळल् आम्-उनको पहले ही समझना सम्भव होगा; कौर्ऱम्-विजय; मुर्ऱ्-पूरी हमारी हो ऐसा; वैल्ललाम्-उनको हरा सकते हैं; अवर् इयर्ऱम् वित्तैयम् अँलाम्-वे जो भी षड्यन्त्र रचेंगे, उन सबको; कटक्कलाम्-मिट सकेंगे; अँन्ऱ्-ऐसा; निरुति कूऱ्म्-निशाचरी ने कहा । ३५६

शूर्पणखा हार मानने के लिए प्रस्तुत नहीं थी। उसने बहस की। धान आदि खाद्य पदार्थ कसरत से पैदा करनेवाले, जलसमृद्ध कोसल देश के अधिपति ! सुनो ! तुम इस छोटी सी बात को भूल जाओ कि मेरे दाँत बाहर निकले हुए हैं और मेरा मुख-विवर अधिक बड़ा है। मुझ पर कृपा-दृष्टि रखो तो तुम जिनको मारना चाहते हो, उन राक्षसों को अवश्य मार सकोगे। हम उनके माया कार्यों का पूर्व-ज्ञान प्राप्त करके उन पर पूर्ण रूप से विजय पा सकेंगे। उनके सभी षड्यन्त्रों को असफल बना सकेंगे। ३५६

काम्बुऱ्ळन् दोळाळ्क् कैविडी रँन्निनुम्यान् मिहैयो कळ्वर् आम्बोऱियि लडलरक्क रवरोडे शैरुच्चैय्वा त्तमैन्दी राहिल् ताम्बोऱियिर् पलमायन् दरुय्बोऱिह ळरिन्दवर्ऱैत् तडुप्पे नन्ऱे पाम्बऱियुम् पाम्बिनगा लँत्तमोऴियुम् पळ्मोऴियुम् वार्क्कि लीरो 357

काम्पु उऱ्ळम्-बाँस की समानता करनेवाले; तोळाळ्-कंधे वाली को; कै विटीर् अँन्तिनुम्-नहीं छोड़ोगे तो भी; यान् मिक्कैयो-मैं अधिक हो जाऊँगी क्या; कळ्वर् आम्-चोर; पोंऱि इल्-श्रीहीन; अटल् अरक्कर् आम्-पराक्रमी राक्षसों; अवरोटे-के साथ (विरुद्ध); वैरु चैय्वान्-लड़ने के लिए; अमैन्तीर् आकिल्-प्रस्तुत हुए तो; पोंऱियिल्-इन्द्रियों के समान; पल मायम् तरुम्-विविध माया के कार्य करनेवाले; पोंऱिकळ् अरिन्तु-उनके रहस्यों को पहले ही जानकर; अवर्ऱै तडुप्पेन् अन्ऱे-उनको रोक दूँगी न; पाम्पु-सर्प; पाम्पित काल्-सर्प का पैर; अरियुम्-जानता है; अँत्त मोऴियुम्-ऐसा कहनेवाली; पळ्मोऴियुन्-लोकोक्ति; वार्क्किलीरो-नहीं जानते क्या। ३५७

तुम बाँस की समानता करनेवाले कन्धों की इस स्त्री को छोड़ना नहीं चाहते तो भी मैं तुम्हारे लिए अधिक हो जाऊँगी या निरर्थक हो जाऊँगी ? नहीं। राक्षस बुरे हैं और पराक्रमी है। उनके विरुद्ध जब लड़ोगे, तब वे इन्द्रियों के समान अनेक अनर्थकारी मायाकार्य करेंगे। मैं उनका रहस्य जानकर उनको रोक लूँगी। क्या तुम यह लोकोक्ति नहीं जानते, जो यह बताती है कि सर्प, सर्प का पैर जानता है। राक्षसी हूँ, राक्षसों की चाल जानती हूँ। इस पर विचार नहीं करोगे। ३५७

उळङ्गोडर् कन्बिळैत्ता ळुण्डीरुत्ति यँन्नुदिये निरुद रोडुङ्
कळङ्गोडर् करियशैरुक् कण्णियक्का लौरुम्बेड गलन्द पोडु

कुलङ्गोडु मन्त्रेयक् कौडियविरल् वीररत्तमैक् कौन्त्र पित्तर
इळङ्गोवो डैतैयिरुत्ति यिरुकोळुज् जिउँवैत्ताऱ् किलैया लैन्त्रे 358

उळम् कोटर्कु-मन में स्थान देने के लिए; अन्पु इळैत्ताळ् औरुत्ति-मुझे प्रेम करनेवाली एक स्त्री; उण्टु-पहले से है; अन्तुतियेल्-कहोगे तो; निस्तरोटुम्-राक्षसों के साथ; कळम् कोटर्कु अरिय-समरांगण में जो दुस्तर करा देगा, ऐसा; चैरु कण्णियक्काल्-युद्ध करना चाहोगे तो; औरु मूवेम् कलन्त पोतु-हम तीनों मिले रहें तो; कुळम् कोटुम् अन्त्रे-वह समरभूमि रक्त का तालाब बन जायगी न; अ कौटिय-उन निर्मम; विरल् वीरर् तम्मै-बली वीरों की; कौन्त्र पित्तर-मारने के बाद; इरु कोळुम् चिरै वैत्ताऱ्कु-दोनों ग्रहों (सूर्य और चन्द्र) को कारागृह में जिसने बन्द कर रखा था, उस रावण की; इळैयाळ् अन्त्रे-भगिनी के मान की रक्षा करते हुए; इळम् को ओटु-लघुराज लक्ष्मण के साथ; अतै इरुत्ति-मुझे बिठा दो, (उसकी पत्नी बना लो) । ३५८

तुम कह सकते हो कि मेरे मन में स्थान पाकर मेरे साथ प्रेम करने के लिए पहले ही एक स्त्री है। तब एक काम करें। राक्षसों के साथ हम तीनों मिलकर युद्ध करेंगे। तब साधारण रूप से समरांगण में जाना भी जिसमें कठिन होगा, उस भयंकर युद्ध में हम रणभूमि को ही रक्त का तालाब बना देंगे और विजयी बनेंगे। उन वीर राक्षसों को मारने के बाद मुझे इतना मान दो कि मैं सूर्य-चन्द्र दोनों ग्रहों को कारागृह में जिसने बन्द कर दिया, उस रावण की भगिनी हूँ और मुझे अपने लघुराज लक्ष्मण के घर में (उसकी स्त्री के रूप में) बिठा दो। ३५८

पैरुङ्गुला वुरुनहरक्के पैयरुनाळ् वेण्डुमुर्प् पिडिप्पे नन्त्रेल्
अरुङ्गला मुर्त्तिरुन्दा नैन्त्रालु मिळैयवन्त्रा नरिन्द नाशि
औरुङ्गिला विवळोडु मुर्दैवदो वैन्वाने लिउँव वौन्त्रु
मरुङ्गिला दवळोडु मन्त्रेयान् नैडुङ्गालम् वाळ्न्दे नैन्बाय् 359

इउँव-सरदार; पैरुम् कुला उरु-बड़े कोलाहलमय; नकर्क्के-नगर (अयोध्या) को; पैरु नाळ्-लौटते दिन; इळैयवन्-तुम्हारा छोटा भाई; अरुम् कलाम् उरु इरुन्तान्-गहरा कोप करता होता; अन्त्रालुम्-तो भी; तान् अरिन्त नाचि औरुङ्कु इला-खुद जो उसने काटी, उस नाक से हीन; इवळोटुम् उउँवतो-इसके साथ रहूँगा क्या; अन्पात्तैल्-कहेगा तो; औन्त्रु मरुङ्कु इलातवळोटुम् अन्त्रे-युक्त कमर से हीन स्त्री के साथ तो; यान् नैटुम् कालम् वाळ्न्तेन्-मैं बहुत काल से रहता हूँ; अन्पाय्-कहो; अन्त्रेल्-वह तब भी न माने तो; वेण्टुम् उरु पिटिप्पेन्-उसके पसन्द का रूप धारण कर लूँगी। ३५९

नाथ ! जब तुम लोग बड़े कोलाहलमय अयोध्या नगर को लौटोगे, तब लक्ष्मण क्रोध न छोड़कर यह कहे कि यह नासिका से हीन है, यद्यपि उसी ने मुझे नाक से हीन कर दिया था तो तुम उससे समाधान कहो कि क्या मैं कमर से हीन स्त्री के साथ बहुत दिन से नहीं रह रहा ? नहीं तो

मैं वह जैसा चाहे वैसा रूप धारण कर लूंगी; नहीं तो भी मैं उसका चाहा रूप धर लूंगी । ३५९

अँन्रुलुमे यिळैयवन्त्रा निलङ्गिलेवेल् कडैक्कणिया यिवळै यीण्डु
कौन्ऱुहळै योमैन्नि नैडिलैक्कु मरुळन्गौल् कोवे यैन्त
नन्ऱुदुवे यामन्ऱो पोहाळे लाहवैन नादन् कू
औन्ऱुमिव रैनक्किरङ्गा रुयिरिळप्पै निरुक्किलेन वरक्कि युन्ना 360

अँन्रुलुमे—उसके ऐसा कहते ही; इळैयवन्—कनिष्ठ ने; इलङ्कु इल वेल्—
दृश्यमान पत्राकार सिर वाले भाले को; कडैक्कणिया—आँख की कोर से दिखाकर;
कोवे—स्वामी; इवळै कौन्ऱु—इसको मारकर; कळैयोम् अँन्रितिल्—नहीं मिटायेंगे तो;
नैडितु अलैक्कुम्—बड़ा ऊधम मचायगी; अरळ् अँन् कौल्—कृपापूर्ण आज्ञा क्या है;
अँन्रुत—यह पूछने पर; नातन्—नायक श्रीराम के; पोकाळेल्—नहीं जायगी तो;
अतुवे—वही; नन्ऱु आम् अन्ऱो—भला होगा न; आक अँत—वही हो, कहने पर;
कू—कहने पर; इवर् अँतक्कु औन्ऱुम् इरङ्कार्—ये मेरी दया कुछ नहीं करेंगे;
निरुक्किन्—खड़ी रहें तो; उयिर् इळप्पैन्—प्राण गेवा दूंगी; अँन—ऐसा; अरक्कि
उन्ना—राक्षसी सोचकर । ३६०

लक्ष्मण ने यह बात सुनी । उनकी सहनशीलता जाती रही ।
उन्होंने श्रीराम का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने दृश्यमान, पत्रसिर-
भाले को अपनी आँखों की कोरों से देखा । फिर कहा— हे स्वामी !
अगर हम इसे मारकर दूर नहीं करेंगे तो यह बड़ा अनर्थ करा देगी ।
आपकी आज्ञा क्या है ? तब नायक श्रीराम ने मान लिया । कहा कि
हाँ ! अगर यह जानेवाली नहीं है तो क्या वैसा करना ही न भला होगा ?
वही हो ! शूर्पणखा ने सुना तो वह समझ गयी कि ये हमारे ऊपर कृपा
नहीं करेंगे । इधर ठहरूंगी तो प्राण से हाथ धोना पड़ जायगा । (यह
सोचकर) । ३६०

एरुन्नैडुङ् गौडिमूक्कु मिरुकादु मुलैयिरण्डु मिळन्तु वाळल्
आरुवन्ते वञ्जत्तैया लुमैयुळल् परिश्रिवा नमैन्द दन्ऱो
काऱ्ऱिनिलुङ् कनलिनुङ् कडियानैक् कौडियानैक् करत्तै युङ्गळ्
कूरुवन्ते यिप्पौळुदे कौणर्हिन्ऱे तैन्ऱुशलङ् गौण्डु पोनाळ् 361

एरुन्—युवत; नैटुम् कौटि मूक्कुम्—लम्बी, लता-सम नाक को; इरु कातुम्—
दोनों कानों को; मुलै इरण्डुम्—दोनों स्तनों को; इळन्तुम्—खोने के बाद भी;
वाळल् आरुवन्ते—जीना सह सकूंगी क्या; उमै उळ्ळ परिचु—तुम्हारे गूढ़ अभिप्राय;
वञ्जत्तैयाल्—कपट से; अश्रिवान्—जानने को; अमैन्ततु अन्ऱो—रचा गया (नाटक)
न; काऱ्ऱिनिलुम् कटियातै—वायु से अधिक तीव्र और बलवान; कनलितुम् कौटियातै—
अग्नि से भी बढ़कर निर्मम; करत्तै—खर को; उङ्कळ् कूरुवन्ते—तुम्हारे यम को;
इ पौळुते कौणर्किन्ऱेन्—यहाँ अभी लाऊंगी; अँन्ऱु—कहकर; चलम् कौण्डु पोताळ्—
वैर लेकर चली । ३६१

जाते-जाते शूर्पणखा यह कह गयी कि मेरी लम्बी लता-सी नाक मेरे रूप के योग्य सुन्दर थी। उसको, दोनों कानों और स्तनों को खोने के बाद कोई अपने जीवन को सह सकेगा क्या ? मैं जीवित रहने की क्षमता रख सकूंगी क्या ? यह सब जो मैंने तुमसे कहा, वह तुम्हारे गूढ़ अभिप्रायों को जानने के लिए रचा गया कपट नाटक था। अब मैं जा रही हूँ और वायु से भी तीव्रगामी और बलवान, अग्नि से भी निर्मम खर को, जो तुम्हारा यम होगा, अभी ले आऊँगी। ३६१

6. करन् वदप् पडलम् (खर-वध पटल)

❖ इरुन्द	माक्करन्	राळिणै	यिन्मिशैच्
चौरिन्द	शोरियळ्	कून्दल	डुम्बैन्तत्
तैरिन्द	मूक्किन्तळ्	वायिन्तळ्	शैक्कर्मेल्
विरिन्द	मेह	मैन्विळुन्	दाळरो 362

चौरिन्त चोरियळ्-बहते हुए रक्त के साथ; कून्तलळ्-बिखरे केश वाली; तूमपु अँत-मोरी की नली के द्वार के समान; तैरिन्त मूक्किन्तळ्-दिखनेवाली नाक की; वायिन्तळ्-(मोरी के द्वार के समान) बड़ा मुख वाली; चैक्कर् मेल् विरिन्त-लाल गगन पर फैले; मेकम् अँत-मेघ के समान; इरुन्त मा करन्-(जनस्थान में) रहनेवाले प्रख्यात खर के; ताळ् इणैयिन् मिचै-जोड़े के पैरों पर; विळुन्ताळ्-जा गिरी। ३६२

शूर्पणखा के शरीर के कटे अंगों से रक्त वह रहा था। उसका केश खुला और बिखरा हुआ था। उसकी नाक और मुख मोरी के द्वार के समान खुले थे। वह भागी और जनस्थान में रहे प्रख्यात खर के चरणों पर लाल गगन के ऊपर छाये हुए मेघ के समान गिरी। ३६२

❖ अळुङ्गु नाळिदैन् उन्दह नाणैयाल्, तळुङ्गु पेरि यैन्तत्तनिन् तेङ्गुवाळ्
मुळुङ्गु मेह मिडित्तवैन् दीयिनाल्, पुळुङ्गु नाह सैन्तप्पुरण् डाळरो 363

अन्तकन् आणैयाल्-यम की आज्ञा से; अळुङ्कु नाळ् इन्-अन्त होने का काल यह है; अँन्ड-ऐसा घोषित करते हुए; तळुङ्कु पेरि अँलि-पिटनेवाली भेरी के समान; तत्तिन्तु एङ्कुवाळ्-विविन्न रूप से रोने का स्वर करती हुई; मुळङ्कुम् मेकम्-गरजनेवाले मेघ से; इटित्त वैम् तीयिनाल्-गिरी गाज की अग्नि से; पुळुङ्कुम् नाकम् अँत-व्यग्र नाग के समान; पुरण्टाळ्-लोटने लगी। ३६३

उसका अनोखा रुदन का गम्भीर स्वर यम की आज्ञा के अनुसार राक्षसों के अन्त की घोषणा करनेवाली भेरी के नाद के समान था। वह उस सर्प के समान छटपटाकर लोटने लगी, जो गरजते मेघ से गिरी गाज की अग्नि से तप रहा हो। ३६३

❖ वाक्किर्	कौप्पप्	पुहैमुन्डु	वायिनान्
नोक्किक्	कूशलर्	नुन्तैयित्	तन्मैयै
आक्किप्	पोनव	रार्हौलैन्	डानवळ्
मूक्किर्	चोरि	मुळीइक्कोण्ड	कण्णिनान् 364

अवळ् मूक्किल् चोरि—उसकी नाक से बहते हुए रक्त में; मुळीइ कोण्ड—मग्न रही; कण्णिनान्—आँखों का; वाक्किर्कु ओप्प—शब्द के अनुकूल; पुक् मुन्तु—धुआँ निकालनेवाले; वायिनान्—मुख का (खर); नोक्कि—देखकर; कूचलर्—निस्संकोच होकर; नुन्तै—तुम्हारी; इ तन्मै आक्कि—इस दुर्गति में पहुँचाकर; पोन्तवर्—जानेवाले; आर् कोल्—कौन हैं तो; अन्नान्—पूछा। ३६४

खर की दृष्टि शूर्पणखा की नाक से निकलनेवाले रक्त के प्रवाह में मानो डूब सी गयी। उसके मुख से ज्यों-ज्यों शब्द निकलते, त्यों-त्यों धुआँ भी निकलता। उतने क्रोध के साथ उसने शूर्पणखा से प्रश्न किया कि ऐसा निस्संकोच होकर तुम्हारी दुर्गति कर गये जो वे कौन हैं ?। ३६४

❖ इरुवर् मान्निडर् तापद रेन्दिय, वरिविल् वाट्कैयर् मन्मदन् मेत्तियर्
तरुम नीरर् तयरदन् कादलर्, शैरुदि नेरु निरुदरैत् तेडुवार् 365

इरुवर् मान्निडर्—दो मानव; तापदर्—तपस्वी; एन्तिय—धृत; वरिविल्—बन्धनयुक्त धनु; वाळ्—तलवार के; कैयर्—हाथ वाले; मन्मदन् मेत्तियर्—मन्मथ के समान रूप वाले; तरुम नीरर्—धर्मपथचारी; तयरदन् कातलर्—दशरथ के प्यारे पुत्र; चैरुविल् नेरुम्—युद्ध में लड़नेवाले; निरुदरै—राक्षसों को; तेडुवार्—ढूँढ़नेवाले। ३६५

(शूर्पणखा का उत्तर भी देखिये!) वे दोनों मानव हैं तप में लीन! हाथ में धनुष और तलवार रखते हैं। उनका रूप मन्मथ का-सा है। धर्मपथचारी है। दशरथ के प्यारे पुत्र हैं और युद्ध में लड़नेवाले राक्षसों की खोज में लगे रहनेवाले हैं। ३६५

❖ औन्ऱु नोक्कल रुन्वलि योङ्गुम्, निन्ऱु नोक्कि निरुत्तु नितैप्पित्तर्
वैन्ऱि वेऱ्कै निरुदरै वेरऱ्क्, कौन्ऱु नोक्कुडु मन्ऱुणर् कौळ्कैयार् 366

ओङ्कु अऱ्म् निन्ऱु—उत्कृष्ट धर्म खुद अवलम्बन कर; नोक्कि—उनकी गति शोधकर; निरुत्तुम् नितैप्पित्तर्—स्थापित करने का संकल्प करते हुए; उन् वलि औन्ऱुम् नोक्कलर्—तुम्हारे बल की परवाह नहीं करते; वैन्ऱि वेल्—विजयशील भालेधारी; कै—हस्त वाले; निरुदरै—राक्षसों को; वेर् अऱ्—निर्मूल करके; कौन्ऱु नोक्कुतुम् औन्ऱु—मार मिटाएँगे, ऐसा; उणर्—निश्चय जिसमें हो; कौळ्कैयार्—ऐसे संकल्प वाले। ३६६

वे उत्कृष्ट धर्म के मार्ग में खुद रहते हुए, धर्म की गति को शोधकर उसकी संस्थापना में दत्तचित्त रहनेवाले हैं। वे तुम्हारे बल का कोई महत्त्व न देते। यही संकल्प रखनेवाले हैं कि हम विजयशील भालों के धारी राक्षसों का उन्मूलन करके मिटा देंगे। ३६६

ॐ मण्णि	नोक्कर	वानितिन्	मर्इत्तिल्
एण्णि	नोक्कुडिल्	यावर	नेर्हिलाप्
पेण्णि	नोक्कुडै	याळोर्	पेदैयैन्
कण्णि	नोक्कि	युरैप्परुड्	गाट्चियाळ् 367

मण्णिल्-धरती पर; नोक्कु अरु-दर्शन-दुर्लभ; वातितिल्-आकाश में; मर्इत्तिल्-अन्य लोकों में; एण्णि-सोचकर; नोक्कुडिल्-देखने पर; यावरम् नेर्हिला-कोई उसकी समानता न कर सके, ऐसी; पेण्णिन् नोक्कु उटैयाळ्-स्त्री-सौंदर्य वाली; अन् कण्णिन् नोक्कि-अपनी आँखों से देखकर; उरैप्पु अरम्-अवर्णनीय; काट्चियाळ्-आकार-प्रकार वाली । ३६७

और भी, उनके साथ एक स्त्री है । स्वर्ग, भूलोक, पाताल आदि कहीं भी हूँदो, उसकी समानता करनेवाली कोई नहीं मिलेगी । बड़ी सुन्दरी स्त्री है । उसका आकर्षण इतना अधिक है कि मैं अपनी आँखों से देखा उसके मनोहारी रूप का वर्णन करूँ, इतनी क्षमता मेरे शब्दों में नहीं है । ३६७

ॐ कण्डु नोक्कुडु गारिहै याडनैक्, कौण्डु पोवै निलङ्गैयर् कोक्कैन्ता विण्डु मेलेळुन् दैन् वैहुण्डवर्, तुण्ड माक्किन्नर् मूक्कैन् चोल्लिनाळ् 368

नोक्कु उरुन् कारिकैयाळ् तत्तै-सुन्दरी उस स्त्री को; कण्डु-देखकर; इलङ्कैयर् कोक्कु-लंकेश्वर के लिए; कौण्डु पोवैन् अन्ता-ले जाऊँगी कहकर; विण्डु-शत्रुता दिखाकर; मेल् अळुन्तै-उस पर लपकनेवाली मुझे; अवर्-उन दोनों ने; वैकुण्डु-गुस्सा करके; मूक्कु तुण्डम् आक्किन्नर्-नाक के टुकड़े कर लिये; अन्ता-ऐसा; चोल्लिनाळ्-शूर्पणखा ने कहा । ३६८

मैंने उस अनुपम सुन्दरी को देखा तो सोचा कि उसको लंकेश के लिए ले जाऊँ । इसी विचार से मैं उसकी ओर लपकी । तब उन दोनों मनुष्यों ने मेरी नाक काट दी । —शूर्पणखा ने घटना का अपनी रीति से वर्णन किया । ३६८

ॐ केट्ट तन्नुरै कण्डनन् कण्णिताल्, तोट्ट नुङ्गिर् रौळैयुरु मूक्कितैक् काट्टे नावैळुन् दान्नेदिर कण्डन्नर्, नाट्टन् दीय वुलहै नडुक्कुवान् 369

अत्तिर् कण्टवर् नाट्टम्-सामने से देखनेवालों की दृष्टि को; तीय-जलाते हुए; उलक्कै नडुक्कुवान्-लोक को कम्पित करनेवाले खर ने; उरै केट्टतन्-शूर्पणखा का कथन सुना; तोट्ट नुङ्गिल्-कोए निकालने के बाद ताल-फल जैसे हो जाता है, वैसे; तौळै उरु-गड़ढों सहित; मूक्कितै-नाक को; कण्णिताल्-अपनी आँखों से; कण्टनन्-देखा; काट्ट-उनको दिखाओ; अन्ता-कहते हुए; अळुन्तान्-उठा । ३६९

खर ऐसा भयंकर और उग्र राक्षस था कि उसको सामने से देखनेवाले की आँखें जलकर भस्म हो जातीं और लोक काँप उठते । उसने शूर्पणखा के मुख को गौर से देखा, जो कोए से हीन ताल-फल के

समान लगता था । देखकर उसने तैश में आकर कहा कि दिखाओ उन्हें । यह कहते हुए वह उठा । ३६९

❖ अँलुन्नु नित्तुल हँलु मँरिन्दुहप्, पौळिन्द कोवक् कनलित्तिर् पौङ्गुवान्
कळिन्दु पोयितर् मानिड रँन्नुङ्गाल्, अळिन्द दोविव् वरुम्बळि अँन्नुमाल् 370

अँलुन्नु नित्तुल—उठकर खड़ा होकर; उलकु एळुम् अँरिन्नु उक—सातों लोकों को भस्म होकर चूने देते हुए; पौळिन्नु—बढ़नेवाली; कोप कत्तलित्तु—कोपाग्नि में; पौङ्गुवान्—जो भड़क उठा, उसने; मानिटर् कळिन्नु पोयितर्—(ये) मनुष्य मिट-चले; अँन्नुम् काल्—ऐसी स्थिति में भी; इ अरुम् पळि—यह कठोर अपयश; अळिन्नुततो—मिटेगा क्या; अँन्नुम्—कहा । ३७०

उठकर खड़ा हुआ वह खर ऐसी कोपाग्नि के साथ भड़क उठा, जो सातों लोकों को जला दे और भस्म करके छितरा दे । उसे इतना क्षोभ हुआ कि उसके मुख से प्रश्न उठा । अगर मैं उन मानवों को मार भी दूँ और वे मिट जायें तो भी यह अपयश दूर हो सकेगा क्या ? । ३७०

❖ वरुह तेरँन्नु मात्तिरै माडुळोर्, इरुहै माल्वरै येळित्तो डेळत्तार्
औरुहै यालुल हेन्दु मुरत्तिन्नार्, तरुह विप्पणि यैम्बयिर् इरँन्नुडार् 371

तेर् वरुह—रथ आ जायें; अँन्नुम् मात्तिरै—ऐसा (आज्ञा) सुनाते ही तत्क्षण; माडु उळोर्—पास रहनेवाले; इरु के माल्वरै—दो-दो हाथों के साथ बड़े-बड़े पर्वत; एळित्तोडु एळु अत्तार्—सात और सात (चीवह) के समान जो थे; और कँयाल्—अपने एक हाथ से; उलकु एन्नुम्—भूलोक को उठाने की; उरत्तिन्नार्—शक्ति रखनेवाले; इ पणि—यह काम; अँम् वयिन् तान् तरुह—हमारे पास छोड़ दें; अँन्नुडार्—बोले । ३७१

फिर उसने आज्ञा दी कि रथ आ जाय । तब उसके पास चौदह सेनापति थे । वे ऐसे पर्वतों के समान थे जिनके दो-दो हाथ हों । वे अपने एक हाथ पर ही धरणी को उठा सकनेवाले थे । उन्होंने प्रार्थना की कि यह काम हमें सौंप दें । ३७१

❖ चूलम् वाण्मळुत् तोमरञ्ज जक्करम्, काल पाशङ् गदैपौरुड् गैयित्तार्
वेलै जालम् वैरुवुर् मारुप्पिनार्, आल कालन् दिरण्डन्त वाक्कैयार् 372

चूलम् वाळ्—शूल और तलवार; मळु तोमरम्—परशु और तोमर; जक्करम् कालपाचम्—चक्र, कालपाश; कतै—गदा; पौरुम् गैयित्तार्—इनको लेकर लड़नेवाले हाथों के; वेलै जालम्—समुद्रवलयित भूतल को; वैरुवु उरुम् मारुप्पित्तार्—हराते हुए शोर मचानेवाले; आल कालम् तिरण्डु अन्त—हलाहल रूप ले आया ही ऐसा; आक्कैयार्—शरीर वाले । ३७२

(वाल्मीकी में इनके नाम दिये गये हैं ।) वे शूल, तलवार, परशु, तोमर, कालपाश और गदा इनका उपयोग कर लड़ सकते थे । जब वे

उच्च स्वर उठाते तब समुद्र और उसके मध्य रहनेवाली भूमि थर्रा उठती थी। उनके शरीर हलौहल के पिण्डों के समान थे। ३७२

ॐ वम्बु वेलैक् कत्तलन्त वम्मैयार्, नम्बि नम्मडि मैत्तौळि नन्ऱैना

उम्बर् मेलु मुरुत्तन् पोदियो, इम्बर् मेलित्ति यामुळ् मैयैन्ऱार् 373

वम्पु वेलै-गरम और समुद्र से निकली; कत्तल् अनुत्त-(बड़वा) आग के समान (वे); वम्मैयार्-क्रोधशील; नम्पि-नायक; नम् अटिमै तौळिल्-हमारी सेवकाई भी; नन्ऱु अँता-अच्छी रही, कहके; उम्पर् मेलुम्-देवों पर; उरुत्तन्-गुस्सा कर; पोतियो-जा रहे हो क्या; इम्पर् मेल-इस लोकवासी पर (आक्रमण करने); इति याम् उळ्मे-अब हम तो है; अँन्ऱार्-बोले। ३७३

अत्यन्त गरम बड़वाग्नि के समान क्रोध से भरे उन्होंने खर को देखकर कहा कि नायक ! हमारी सेवकाई भी कितनी खूब है (कि हमारे रहते आप लड़ने चलें) ! और भी क्या वे देव हैं कि आप क्रोध के साथ लड़ने जायँ ? वे धरती के मानव हैं और हम इधर प्रस्तुत हैं। ३७३

ॐ नन्ऱु	शैल्लुदिर्	नान्तिच्	चिऱार्कण्मेलु
शैन्ऱु	पोर्शैयिऱु	तेवर्	शिरिप्परालु
कौन्ऱु	शोरि	कुडित्तवर्	कौळ्कैयै
वैन्ऱु	मीळुदिर्	मैल्लिय	लोडैन्ऱान् 374

नन्ऱु-ठीक है; शैल्लुतिर्-चलो; नान्-मैं; इ चिऱार्कळ् मेलु-इन लड़कों पर; शैन्ऱु पोर् चैयिन्-जाकर युद्ध कळें तो; तेवर् चिरिप्पर्-मुर लोग हँसेंगे; कौन्ऱु-मारकर; चोरि कुडित्तु-रक्त पीकर; अवर् कौळ्कैयै-उनका संकल्प; वैन्ऱु-बधा करके (उन्हें जीतकर); मैल्लियलोडु-कोमल नारी को साथ ले; मीळुतिर्-लौट आओ; अँन्ऱान्-कहा। ३७४

खर ने भी उसे ठीक माना। उसने कहा कि तुम ठीक कहते हो। तुम ही जाओ। मैं इन मानव-बालकों के विरुद्ध लड़ने जाऊँ तो देव मेरी हँसी उड़ायेंगे। तुम जाओ उन्हें मारो, उनका खून पीओ और उनका संकल्प हरा दो। फिर उस कोमल नारी को साथ लेकर लौट आओ। ३७४

ॐ अन्त लोडुम् विरुम्बि यिऱैञ्जितार्, शौन्त नाणिलि यन्दहन् रुदँत

अन्तळ् पिऱ्पडर् वारँत वायितार्, मन्तन् कादलर् वैहिड नण्णितार् 375

अन्तलोडुम्-उसके यों कहते ही; विरुम्पि-खुश होकर; इऱैञ्चितार्-विनय करके; शौन्त-जिसने उनके सम्बन्ध में कहा था, उस; नाण् इलि-निर्लज्ज (शूर्पणखा) को; अन्तकन् तूतु अँत-यम का दूत मानकर; अन्तळ् पिन् पटर्वार् अँत-उसके पीछे जानेवाले; आयितार्-वनकर वे; मन्तन् कातलर्-(दशरथ-) राज के पुत्र; वैकु इटम्-जहाँ रहे, वह स्थान; नण्णितार्-पहुँचे। ३७५

यह अनुमति पाकर वे हर्षित हुए। खर को नमस्कार करके

निकले । यम के भेजे दूत के समान वह निर्लज्ज शूर्पणखा आगे-आगे गयी और ये उसका अनुकरण करते गये । वे दाशरथि जहाँ रहे वहाँ आये । ३७५

ॐ तुमिलप्	पोर्वल्	लरक्करक्कुच्	चुट्टिये
अमलत्	तौल्पैय	रायिरत्	ताळियान्
निमलप्	पाद	निनैवि	लिरुन्दवक्
कमलक्	कण्णनैक्	कैयिनिर्	काट्टिनाळ् 376

अमलम् तौल्-निर्मल और प्राचीन; पॅयर् आयिरत्तु-सहस्रनाम-धारी; आळियान्-चक्रपाणी के; निमल पात नितैविल् इरुन्त-पवित्र चरण-स्मरण में रहे; अ कमल कण्णनै-उन कमलाक्ष को; तुमिलम् पोर् वल्-तुमुल युद्ध करने में समर्थ; अरक्करक्कु-राक्षसों को; कैयितिल् चुट्टिये-हाथ के इशारे से; काट्टिनाळ्-दिखाया (शूर्पणखा ने) । ३७६

वे प्राचीन और सहस्र नामों से भूषित चक्रपाणी श्रीविष्णु के निर्मल पवित्र चरणों का स्मरण करके ध्यानमग्न थे । शूर्पणखा ने अपने हाथ से उन कमलाक्ष को उन तुमुल युद्ध-निपुण राक्षसों को दिखाया । ३७६

ॐ अँरु वाम्बिडित् तेन्दुदु मैन्नुगुन्, प॑रु वार्नेडुम् बाशत्ति नैन्नुगुन्
मु॑रु वामिर् शौन्मु॑र् यालैताच्, चु॑र्रि नार्वरै शूळ्न्तन् तो॑र्रुत्तार् 377

अँरुवाम्-उसको ढकेलकर उछालेंगे; पिटित्तु एन्तुतुम्-पकड़कर धारण करेंगे; अँन्कुन्-कहनेवाले; नैन्डु पाचत्तिन्-लम्बे पाश से; प॑रुवाम्-कस लेंगे; अँन्कुन्-कहनेवाले; इ॑रै चोल् मु॑र्रयाल्-हमारे राजा के कहे प्रकार; मु॑रुवाम्-कार्य पूरा करेंगे; अँता-कहते हुए; वरै शूळ्न्तन् तो॑र्रुत्तार्-पहाड़ घेर आये हों, ऐसे दृश्य वाले; चु॑र्रितार्-घेर गये । ३७७

उनको देखते ही कुछ ने कहा कि हम उसे उछालेंगे और हाथों में पकड़ लेंगे । कुछ ने कहा कि लम्बे पाश से उसे बाँध देंगे । और कुछ ने कहा कि हम अपने राजा का आशय पूरा करेंगे । ऐसी-ऐसी बातें शौर के साथ कहते हुए पर्वतों के समान जो रहे वे उन्हें घेर गये । ३७७

ॐ ए॑त्तु वा॒य्मै यिराम॑ त्रि॒ळवलै॑क्, का॒त्ति तै॒यलै॑ यै॒न्नु॑त्तन् क॒रु॒पह॑म्
पू॒त्त द॑न् न पौरु॒वि इ॒डक्कैया॑ल्, आ॒त्त ना॒णि न॑रु॒वरै वा॑ङ्कि॒त्तान् 378

ए॑त्तु वा॒य्मै इ॒रामन्-प्रशंसित सत्यसन्ध श्रीराम ने; त्रि॒ळवलै॑-अपने अनुज से; तै॒यलै॑ का॒त्ति-देवी की रक्षा करो; यै॒न्नु॑-कहकर; क॒रु॒पह॑म् पू॒त्ततु॑ अ॒न्त-कल्पतरु पुष्पित हो, ऐसे; तन् पौरु॒वु इ॒ल् तट॑ कै॒याल्-अपने उपमाहीन विशाल हाथ से; आ॒त्त ना॒णिन्-चढ़ी हुई प्रत्यंचा के साथ; अरु वरै-श्रेष्ठ पर्वत-सम धनुष को; वा॑ङ्कि॒त्तान्-ले लिया । ३७८

(श्रीराम ने देखा ।) प्रशंसित सत्यसंध श्रीराम ने अपने कनिष्ठ से

कहा कि लक्ष्मण ! तुम सीताजी की रक्षा करो । उन्होंने अपने पुष्पित कल्पतरु के समान विशाल हाथ में प्रत्यंचा-चढ़े और पर्वतसम धनुष को ले लिया । ३७८

❖ वाङ्गि वाळीडु वाळिपैय् पुट्टिलुम्, ताङ्गित् तामरैक् कण्णत्तच् चालैयै
नीङ्गि यिव्वयि नेर्मि नडावैत्ता, वीङ्गु तोळन् मलैदलै मेयितान् 379

तामरै कण्णन्-कमलाक्ष; वाळ् ओट्टु-तलवार के साथ; वाळि पैंय् पुट्टिलुम्-शरों के साथ तूणीर भी; वाङ्कि-लेकर; अ चालैयै नीङ्कि-उस पर्णशाला के बाहर आकर; इ वयिन् नेर्मिन् अटा-इस ओर आकर लड़ो रे; अँत्ता-ललकारते हुए; वीङ्कु तोळन्-(युद्धोत्साह में) विवृद्ध कंधों वाले (श्रीराम); मलैतलै मेयितान्-युद्ध में प्रवृत्त हुए । ३७९

कमलाक्ष ने तलवार और शर-भरे तूणीर भी लिया । आश्रम से बाहर आये और उन्होंने ललकारा कि रे आओ इधर ! लड़ो । युद्धोत्साह के कारण उनके कंधे फूल उठे । वे युद्ध में प्रवृत्त हो गये । ३७९

मळुवुम्	वाळुम्	वयङ्गेरि	मुच्चिहैक्
कळुवुङ्	गालवैन्	दीयन्त	काट्चियार्
अँळुवि	तीडडक्	कैयैळु	नात्तुगैयुन्
दळुवुम्	वाळिह	ळाङ्गुलज्	जार्त्तितान् 380

काल वैम् ती अन्त-युगान्तकालीन भयंकर आग के समान; काट्चियार्-दृश्यमान; मळुवुम्-परशु; वाळुम्-और तलवारें; वयङ्कु अँरि-जलती आग के समान; मु चिकै कळुवुम्-त्रि(सिर) शूल, इनके साथ; अँळुविन् नीळ्-स्तम्भ-सम लम्बे; तट-और विशाल; कै अँळु नात्तुगैयुम्-(सात के चार) अट्ठाईस हाथों की; तळुवुम् वाळिकळाल्-निशाने पर अचूक लगनेवाले शरों से; तलम् चार्त्तितान्-काटकर भूमि पर गिराया । ३८०

श्रीराम ने उनके स्तम्भ-सम लम्बे और मोटे अट्ठाईस हाथों को अपने अचूक बाणों से विद्ध कर गिराया । युगान्तकालीन अग्नि के समान क्रोधी उन राक्षसों के हाथों में परशु, तलवारें, अग्नि के समान उज्ज्वल त्रिशूल आदि थे । उनके साथ वे हाथ कट कर गिर गये । ३८०

❖ मरङ्गळ् पोन्नैडु वाळीडु तोळ्विळ, उरङ्ग लालडर्त्त तारु वोन्विडुम्
शरङ्ग लोडित्त तैत्त वरक्कर्दम्, शिरङ्ग लोडित्त तीयव लोडित्ताळ् 381

नैट्टु वाळीडु-लम्बी तलवारों के साथ; तोळ्-हाथ; मरङ्कळ् पोल्-पेड़ों के समान; विळ-गिरे, तब; उरङ्कळाल् अटर्त्तुतार्-छातियों से टकराये; उरवोन् विट्टुम् चरङ्कळ्-बलवान श्रीराम से प्रेषित शर; ओटित्त तैत्त-चलकर घुसे; अरक्कर्त्तम् चिरङ्कळ्-राक्षसों के सिर; ओटित्त-कट कर दौड़े (दूर गये); तीयवळ् ओटित्ताळ्-दुराचारिणी भागी । ३८१

लम्बी तलवारों (व अन्य हथियारों) के साथ हाथों के अलग हो पेटों के समान गिरने के बाद भी वे सेनानायक लड़ने लगे। अपनी छाती से उन्होंने प्रहार किया। तब प्रबल प्रतापी श्रीराम ने तेजी से शर प्रेषित किये, जिन्होंने जाकर उनके सिरों को धड़ों से अलग कर दिया। शूर्पणखा ने देखा और वह नृशंस राक्षसी वहाँ से भाग चली। ३८१

❖ ओळिळ वेङ्करङ् कुङ्गु डुणर्त्तित्ताळ्, कुळिळ कोववेंड् गौळरि मावडक्
कळिर् लाम्बडक् कैदल मेळुङ्, पिळिळि योडुम् बिडियन्त पेंड्रियाळ् 382

कुळिळ-गरजनेवाले; कोप वेंम् कोळ् अरि मा-क्रोधी, भयंकर सिंह के; अट-प्रहार करने से; कळिळ् अलाम् पट-सभी गज मर गये और; कै तल मेल् उङ्-हाथ सिर पर रखते हुए; पिळिळि ओटुम्-चिघाड़ती भागनेवाली; पिटि अन्त-हथिनी के समान; पेंड्रियाळ्-स्थिति वाली ने; ओळिळ वेल्-चमकीले भाले के; करङ्कु-खर को; उङ्गु उणर्त्तित्ताळ्-जो हुआ वह सुनाया। ३८२

वह उस हथिनी के समान सिर पर हाथ रखे भागी, जो गरजनेवाले क्रोधी भयंकर सिंह के युद्ध में प्रहार से सभी गजों के मर जाने पर अपने सिर पर सँड़ रखकर चिघाड़ती हुई भाग रही हो। जाज्वल्यमान भाला-धारी खर के पास जाकर उसने समाचार सुनाया। ३८२

❖ अङ्ग रक्क रविन्दौळिन् दारैन्, पौङ्ग रत्तम् विळिवळिप् पोन्डुह
वेंङ्ग रप्पेय रोन्नेहुण् डात्विडेच्, चङ्ग रङ्कुन् दडुप्परुन् दन्मैयान् 383

विटै चङ्करङ्कुम्-ऋषभवाहन शंकर से भी; तटुप्पु अरुम् तन्मैयान्-जो रोका नहीं जा सकता, वैसा; वेंम् कर पयरोन्-क्रूर खर नाम का राक्षस; अङ्कु अरक्कर् अविन्तु ओळिन्तार् अंत-वहाँ राक्षस मर मिटे; अंत-यह सुनकर; पौङ्कु अरत्तम्-उफन उठनेवाला रक्त; विळि वळि-आँखों द्वारा; पोन्तु उक-निकलने देते हुए; वेंकुण्डान्-क्रुद्ध हुआ। ३८३

खर नामक वह राक्षस ऐसा दुर्द्धर्ष था कि ऋषभवाहन शंकर से भी हराया न जा सके। उसने जब सुना कि राक्षस वहाँ हत हो मिट गये, तो उसे बड़ा क्रोध हुआ। उसकी आँखें लाल हो गयीं। उसकी आँखें ऐसी लगीं, मानो रक्त खौल उठा हो और वह आँखों से बाहर निकल रहा हो। ३८३

❖ अळैयन् उरैन्क् काक्कुहैन् पोर्प्पडै, उळैय रोडि यौरुनीडि युम्बल्मेल
मळैयिन् मामुर शेंडुदिर् वल्लैन्डान्, मुळैयिन् वाळरि यम्ज मुळङ्गुवान् 384

मुळैयिन् वाळ् अरि-गुफा में रहनेवाले सिंह को भी; अम्च मुळङ्कुवान्-भयभीत करते हुए दहाड़नेवाले खर ने; अन् तेर् अळै-मेरे रथ को बुलाओ; अन् पोर् पटै-मेरी युद्ध-सन्नद्ध सेना को; अंतक्कु आक्कुक्-मेरे साथ करो; वल्-सत्वर; उळैयर्-सेवक; ओटि-भाग जाकर; और काटि उम्पल् मेल्-उत्तम पताका से अलंकृत गज

पर; मल्लयिन्-मेघ के समान; मा मुरचु-बड़ा ढोल; अँरुतिर्-पिटवा दें;
अँतुशान्-कहा । ३८४

खर भीषण स्वर वाला था । उसका नाद सुनकर गुफा के अन्दर सुरक्षित रहनेवाले सिंह भी सिंह उठते थे । उसने आज्ञा निकाली कि मेरा रथ बुला लो । मेरी सेनाओं को मेरे साथ कर दो । जल्दी सेवक जायँ और ध्वजासहित गज पर ढोल रखकर यह मुनादी पिटवा दें । वह ठनक मेघ के गर्जन के समान उच्च हो । ३८४

❖ पेरि योशै पिउत्तलुम् बँट्पुरु, मारि मेहम् वरम्बिल वनूदँतु
तेरिन् शेनै तिरण्डडु तेवर्दम्, ऊरु नाह रुलहु मुलैयवे 385

पेरि ओचै पिउत्तलुम्—भेरी-नाद के उठते ही; पँटपु उरु—विपुल; मारि मेकम्—वर्षाकालीन मेघ; वरम्पु इल—असीम; वनूत अँत—आये हों ऐसा; तेवर् तम् ऊरुम्—देवों का लोक; नाकर् उलकुम्—नागों का (पाताल) लोक; उलैय—अस्तव्यस्त करते हुए; तेरिन् चेतै—रथों की सेना; तिरण्डतु—जुट आई । ३८५

भेरी का नाद हुआ कि गुरुत्वपूर्ण वर्षाकालीन मेघों के समान अगणित रथ आ गये । उनकी भीड़ और उनके शब्द के कारण आकाश और पाताल अस्तव्यस्त हो गये । ३८५

❖ पोर्प्पे	रुम्बणै	बौम्मेन्	मुळक्कमा
नीरुत्त	रङ्ग	नँडुन्दडन्	दोळ्हळा
आरुत्तै	ळुन्द	दिरुदियि	तारुहलिक्
कारुक्क	रङ्गडल्	काल्हिळर्न्	दँतुत्तवे 386

इउतियिन्—कल्पान्त में; आर् कलि—सघोष; कारु करुम् कटल्—अति विशाल काला सागर; काल् किळर्न्तु अँतुत्त—पवनोद्वेलित हुआ हो, ऐसा; पोर् पँरुम् पणै—युद्धसूचक बड़े ढोलों का नाद; पौम् अँतु मुळक्कमा—‘भों’ का उच्च नाद हुआ; नँटुम् तटम् तोळक्क—दीर्घ और विशाल भुजाएँ; नीर् तरङ्कमा—जल-तरंगें हुई; आरुत्तु अँळुन्तु—(रथ-सेना) कोलाहल के साथ उठी । ३८६

वह सेना युगान्तकाल में पवनाद्वेलित हो उमड़नेवाले सघोष समुद्र के समान तुमुल नाद के साथ उठ आयी । युद्धसूचक ढोल ही उस समुद्र का गर्जन था । वीरों की सबल और लम्बी भुजाएँ उसकी तरंगें थीं । ३८६

❖ काडु तुन्नि विशुम्बु करन्दँत, नीडि यँडु निमिरुन्द नँडुङ्गोडि
औडु मँडगळ् पशियँत्त रुवन्दँळुन्, दाडु हित्तर वलहैयि ताडवे 387

काडु तुन्नि—सब वनों ने मिलकर; विचुम्पु—करन्तैत—आकाश को ढक दिया हो, ऐसा; अँडकुम्—सर्वत्र; नीटि—फँलकर; निमिरुन्त—ऊँची उठी; नँटुम् कौटि—लम्बी ध्वजाएँ; अँडक्क पचि ओटुम्—हमारी भूख मिट जायगी; अँतुश—सानकर; उवन्तु अँळुन्तु आटुकिन्त्र—हर्ष के साथ उठकर नाचनेवाले; अलकैयिन्—प्रेतों के समान; आट—फहरती हैं, ऐसी स्थिति में । ३८७

रथ की ध्वजाएँ इतनी विपुल थीं कि वनों ने मिलकर आकाश को ढक दिया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित होता था। वे ध्वजाएँ ऐसा दृश्य प्रस्तुत करते हुए फहरीं कि 'हमारी भूख मिट गयी'—यह कहते हुए प्रेत नाच रहे हों। ३८७

❖ तडियि	नीङ्गिय	ताळदडक्	कैत्तुणैक्
कुरिहो	ळामद	वैळक्	कुळुवनार्
शैरिविन्	वाळोडु	वाळिडैत्	तेय्न्दुहुम्
पौरियि	कानैङ्गुम्	वैङ्गत्तल्	पौङ्गवे 388

तडियिन् नीङ्किय-खूंटों से अलग हुए; कुरि कौळा-किसी की परवाह न करनेवाले; ताळ तट के तुणै-नीचे तक लटकनेवाली बड़ी दो सूँड़ों वाले; मत वैळ कुळु अतार्-मत्तगजों के झुण्ड के समान राक्षसों की; शैरिविन्-भरी भीड़ से; इटै-बीच में; वाळोडु वाळ तेय्न्दु-तलवारों के टकराने से; उकुम्-गिरनेवाले; पौरियिन्-अग्निकणों से; कान् अँङ्कुम्-वन में सर्वत्र; वैङ् कत्तल् पौङ्क-जलानेवाली आग के उमड़ते। ३८८

(सेनाओं का वर्णन जारी है।) खूंटों से अलग छूटे हुए और बेपरवाह और नीचे लटकनेवाली दो मोटी सूँड़ों के मत्त गजदल के समान राक्षसों की भीड़ में तलवारें परस्पर टकरायीं। तब अग्निकण नीचे गिरे। उनके कारण जंगल भर में गरम आग प्रज्वलित हुई। (ऐसी सेना)। ३८८

मुरुडि रण्डु मुळङ्गु मुळक्कोलि, उरुडि रण्डेळुन् देरीलि युदपुह
अरुडि रण्ड वरुक्कन्ऱुन् मेलळुन्, इरुडि रण्डुवन् दीण्डिय वैन्न्वे 389

इरण्डु-दोनों बाजुओं में; मुरुडु मुळङ्कु-'मुरुडु' नामक ढोल की; मुळक्कु ओलि-ठनक का शब्द; उरुळ तिरण्डु अँळुम्-चलनेवाले पहियों से उठनेवाले; तेर् ओलियितुळ-रथ के शब्दों से; पुक्-मिल गया, इस प्रकार; अरुळ तिरण्ड-घनीभूत कृपा के समान; अरुक्कन् तन् मेल-सूर्य पर; अळुन्ऱु-कोप करके; इरुळ-अन्धकार; तिरण्डु वन्नु-मिल आकर; ईण्टियतु अँन्त-धावा बोल रहा हो ऐसा। ३८९

दोनों बाजुओं में 'मुरुडु' नाम के ढोलों का नाद उठा और वह चलने वाले अनेक रथों के पहियों से उठे हुए नाद में समा गया। सभी जीवों पर होनेवाली दया घनीभूत हो उठी हो, ऐसा दिखनेवाले सूर्य पर सारे अन्धकार ने मानो दल बाँधकर आक्रमण किया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करती हुई (वह सेना आई)। ३८९

❖ तलैयिन् माशुणन् दाङ्गिय तारणि, निलैनि लाडु मुडुहै नैळिप्पुड
उलैवि लेळुल हत्तिन् मोङ्गिय, मलैयै लामोरु माडुतीक् कैन्न्वे 390

माचणम् तलैयिल् ताङ्किय-शेषनाग के सिर पर धृत; तारणि-धरणी के;

निलै निलातु-अस्थिर होकर; मुतुकै नैलिपु उर-अपनी पीठ पर बल खाते; एळ् उलकत्तिनुम्-सातों लोकों में; ओङ्किय मलै अलाम्-ऊँचे उगे पर्वत सभी; ओरु माटु-एक ही स्थान पर; तौक्कुतु अन्न-एकत्रित हो आये हों, ऐसा । ३६०

आदिशेष के द्वारा उसके सिर पर धारण की हुई भूमि की पीठ पर बल पड़ गयी; ऐसा सातों लोकों के अति ऊँचे सभी पहाड़ एक स्थान पर जुट आये हों (ऐसा वह सेना आई) । ३९०

आळिहळ् पूण्डन वरिहळ् पूण्डन, मीळिहळ् पूण्डन वेङ्गै पूण्डन
जाळिहळ् पूण्डन नरिहळ् पूण्डन, कूळिहळ् पूण्डन कुदिरै पूण्डन 391

आळिकळ् पूण्डन-‘याळियों’ (अप्राप्य भयंकर सिंहों) से युक्त; अरिकळ् पूण्डन-सिंहों के साथ जुते हुए; मीळिकळ् पूण्डन-प्रेतों से युक्त; वेङ्गै पूण्डन-बाघों से युक्त; जाळिकळ् पूण्डन-कुत्तों से जुते हुए; नरिकळ् पूण्डन-सियारों से युक्त; कूळिकळ् पूण्डन-भूतों से युक्त; कुदिरै पूण्डन-घोड़ों से युक्त (रथ आये) । ३६१

रथों में शरभों (‘याळि’ नामक अब अप्राप्य केसरी जाति के भयंकर जानवरों) से युक्त, सिंहों से जुते हुए, प्रेतों, भूतों, व्याघ्रों, कुत्तों, सियारों और अश्वों से जुते हुए रथ थे । ३९१

वल्लियक्	कुळाङ्गळो	मळैयि	नीट्टमो
ओल्लिवत्	तौहुदियो	वोङ्गु	मीङ्गलो
अल्लमर्	उरिहळि	नत्तिह	मोवैत्तप्
पल्पदि	नायिरम्	पडैक्कै	वीररे 392

वल्लिय कुळाङ्कळो-बाघों के दल या; मळैयिन् ईट्टमो-मेघ-समूह या; ओल् इप तौकुतियो-तेज चाल के गजों के झुण्ड या; ओङ्कुम् ओङ्कलो-ऊँचे पर्वत; अल्ल-जो नहीं थे; अरिकळिन् अतिकमो-सिंहों की सेना क्या; अत्त-ऐसे कहने योग्य; पल् पत्तिनायिरम्-अनेक दस सहस्र; पटै कै वीरर्-शस्त्रधारी वीर (आये) । ३६२

अनेक सहस्र वीर आये, जिनकी व्याघ्रों का समूह, मेघमण्डल, त्वरित-गति गज, ऊँचे पर्वत या सिंहों की सेनाओं से तुलना की जा सकती थी । वे हाथों में हथियार लिये आये । ३९२

एरुडिन् मारुत्तन्न वेत्त मारुत्तन्न, काडुडिन् मारुत्तन्न कळुदै यारुत्तन्न
तोडुडिन् मात्तिरत्तु तुलहु शूळ्वरुम्, पाडुडिन् मारुत्तन्न पणिल मारुत्तन्न 393

एरुड इन्नम् आरुत्तन्न-सिंहों के ‘लेंहड़े’ (झुण्ड) गरजे; एत्तम् आरुत्तन्न-सुअर चिल्लाये; काडुड इन्नम् आरुत्तन्न-प्रेतों के दलों ने शोर मचाया; कळुदै आरुत्तन्न-गधे रेंके; तोडुडिन् मात्तिरत्तु- (भाव) उठते ही; उलकु चूळ्वरुम्-संसार भर में घूम आनेवाले; पाडु इन्नम्-गीधों के समूह; आरुत्तन्न-बोले; पणिलम् आरुत्तन्न-शंख बजे । ३६३

उनमें सिंह गरजे, सुअर चीखे; प्रेत चिल्लाए और गधे रेंके । विचार

करते ही सारी दुनिया घूम आ सकनेवाले गीध जोर से बोले । शंख वजे । (आर्तुतत का अर्थ 'बँधे थे' भी ह) । ३९३

तेरित्तन् दुवन्डिन शिरुहट् चैम्मुहक्, कारित्त नैरुङ्गित्त कालिड् काड्परित्त
तारिनड् गुळुविन दडैयिल् कूड्डेनप्, पेरिनड् गडल्लेनप् पेरुड् गालैये 394

पेर् इतम्-पदाति ने; तडैयिल् कूड्ड अँत-दुद्धर्प यम के समान; कटल् अँत-समुद्र के समान; पेरुम् कालै-जव कूच किया; तेर् इतम् तुवन्डित्त-रथदल मिल आये; चिड् कण-छोटी आँखों और; चैम् मुक्-लाल मुख के; कार् इतम्-गज-समूह; नैरुङ्गित्त-आ जुटे; कालिल्-वायु के समान; काल् परि-पर रखनेवाले (बीड़नेवाले) अश्वों की; तार् इतम्-सेना के दल; कुळुवित्त-भीड़ लगाते आये । ३९४

पदाति वीर आये । वे अप्रतिहत यम के समान, सघोष समुद्र के समान कूच कर आये । तब उनके साथ रथों, छोटी आँखों के और लाल मुखों के गजों और वायुवेग से चलनेवाले अश्वों की सेनाएँ भी आ सम्मिलित हुई । ३९४

मळुक्कळु	मयिल्हळुम्	वयिर	वाट्कळुम्
अँळुक्कळुन्	दोमरत्	तौहैयु	मीट्टियुम्
मुळक्कलु	मुशुण्डियुन्	दण्डु	मत्तलैक्
कळुक्कळु	मुलक्कयुड्	गाल	पाशमुम् 395

मळुक्कळुम्-परशु; अयिल्कळुम्-भाले; वयिर वाट्कळुम्-सुदृढ़ तलवारें; अँळुक्कळुम्-लोहे के मूसल; तोमर तौकैयुम्-तोमर-समूह; ईट्टियुम्-बछियाँ; मुळक्कलुम्-वर्तुल पत्थर; मुशुण्डियुम्-'मुशुंडी' नाम के हथियार; तण्डुम्-दण्ड; मु तलै अँळुक्कळुम्-तीन सिर वाले शूल; उलक्कैयुम्-और मुद्गर; काल पाचमुम्-काल-पाश । ३९५

उनके पास निम्नलिखित हथियार थे । परशु, भाले, सुदृढ़ असियाँ, लोहे के मूसल, तोमर-समूह, वर्तुल पत्थर, भुशुण्डी नामक हथियार, दण्डायुध, त्रिशूल व काले पाश; । ३९५

कुन्दमुड्	गुलिशमुड्	कोलुम्	पालमुम्
अन्तमिल्	शावमुम्	शरमु	माळियुम्
वैन्दौळिल्	वलयमुम्	विळङ्गुम्	जङ्गमाम्
पन्दमुम्	कप्पणप्	पडैयुम्	पल्लमुम् 396

कुन्तमुम्-सांग; कुलिचमुम्-कुलिश; कोलुम्-छड़ियाँ; पालमुम्-भिण्डिपाल; अन्तम् इल् चापमुम्-बेशुमार चाप; चरमुम्-शर; आळियुम्-चक्र; वैम् तौळिल् वलयमुम्-भयंकर वलय; विळङ्गु कूड्कमाम्-श्वेत शंखों की; पन्तमुम्-राशियाँ; कप्पण पडैयुम्-'कप्पण' नामक हथियार; पल्लमुम्-बल्लम । ३९६

कुंत, कुलिश, छड़ियाँ, भिण्डिपाल, असंख्यक चाप, शर, चक्र, भयंकर वलय, श्वेत शंखबंद, कप्पण नामक हथियार और बल्लम । ३९६

आदियि लरुक्कन्तु मन्तलु मञ्जुरुम्, शोदिय शोरियुन् तूवुन् दुन्तिन्
एदिहण् मिडेन्तन्त विमैय वरुक्कैलाम्, वेदनै कौडुत्तन्त वाहै वेय्न्तन्त 397

एतिकळ्-हथियार; आति इल् अरुक्कन्तुम्-अनादि सूर्य; अन्तलुम्-अग्नि भी;
अञ्चु उरुम्-(जिसको देख) भयभीत हो जायँ, ऐसी; चोतिय-ज्योति वाले; चोरियुम्
तूवुम्-रक्त और मांस से; दुन्तिन्-लिप्त थे; इमैयवरुक्कु अँलाम्-सभी देवों को;
वेतन्तै कौडुत्तन्त-जिन्होंने वेदना दी थी, ऐसे; वाकै वेय्न्तन्त-अनेक विजय पा चुके हैं,
वे; मिडेन्तन्त-भरे रहे । ३९७

ये ऐसे हथियार थे, जिनकी ज्योति के सामने अनादि सूर्य और अनल
भी डरते थे; जो मांस और रक्त से लिप्त थे; जिन्होंने देवों को त्रास दिया
था और जो हर बार उन राक्षसों को विजय दिला चुके थे । ३९७

आयिर मायिरङ् गळिइरि त्ताइलर्, मायिरु जालत्तै विळुङ्गुम् वायिनर्
तीयैरि विळियिनर् निरुदरु शेनैयिन्, नायहर् पदिन्मरो डडुत्त नाल्वरे 398

निरुदरु चेन्नैयिन् नायकर्-राक्षस-सेना के नायक; पदिन्मरोडु अडुत्त नाल्वर्-
दस और चार चौदह; आयिरम् आयिरम् कळिइरिन्-सहस्र (अनेक) सहस्र गजों के;
आइलर्-बल वाले; मा इरु जालत्तै-बहुत बड़े लोक को; विळुङ्गुम् वायिनर्-
निगल सकनेवाले मुखों के; ती अँरि विळियितर्-आग उगलती दृष्टि वाले । ३९८

इन सेनाओं के चौदह सेनानायक थे । वे एक-एक सहस्र-सहस्र गजों
का बल रखते थे । वे एक-एक सारी धरती को निगल सकें, ऐसा बड़ा मुख
रखते थे । उनकी आँखें आग बरसाती थीं । ३९८

आरित्तो डायिर ममैन्द वायिरम्, कूरिन् दौरुपडै कुरित्त वप्पडै
एरित्त देळित्त दिरट्टि यैन्बराल्, ऊरित्त शेनैयिन् रौहुदि युन्नुवार् 399

आरित्त चेन्नैयिन् तौकुति-युद्ध-निपुण सेना की संख्या का; उन्नुवार्-हिसाब
लगानेवालों का; कूरित्तु-कहना है; और पटै-एक पलटन; आरित्तोडु आयिरम्
अमैन्त-छः हजार के; आयिरम्-हजार (छः लाख); कुरित्त अ पटै-जिसकी गणना
हुई, उस पूरी सेना की संख्या; एळित्तु इरट्टि-चौदह (पलटनों का कुल); अँन्पर-
कहते हैं । ३९९

उस सेना में चौदह सेनाएँ मिली थीं । किसी ने गिनकर बताया
कि हर सेना में साठ लाख संख्या के वीर थे । ऐसी चौदह सेनाओं का
मेल था वह बड़ी सेना । ३९९

उरत्तिन्	रुम्मेन्	वुररुम्	वायिनर्
करत्तैरि	पडैयित्	कमलत्	तोन्नुरुम्
वरत्तिनर्	मलैयैन्	मळैतु	यित्त्तैळुम्
शिरत्तिनर्	तरुक्किन्	शैरुक्कुन्	जिन्दैयार् 400

उरत्तिनर्-वीरवान; उरुम् अँत उररुम् वायिनर्-वज्र के समान नाद करनेवाली

वोली के; करत्तु अँरि पटैयित्तर्-हाथ से फेंके जानेवाले हथियार-धारी; कमलत्तोन तर्म् वरत्तित्तर्-ब्रह्माजी से प्राप्त वर वाले; मल्लै अँत-पर्वत समझकर; मल्लै तुयिन्ऱु अँळुम्-मेघ जिन पर सोकर उठ जाते हैं, वैसे; चिरत्तित्तर्-सिर वाले; तरुक्किनर्-गर्वीले; चैरुक्कुम् चिन्तयार्-युद्धोत्साही मन वाले । ४००

उस सेना के वीर वड़े ही वली थे । वज्र के समान वोली वाले थे । हाथों से हथियार चलाकर लड़नेवाले थे । उन्हें ब्रह्माजी से वर मिले थे । उनके सिर ऐसे थे कि मेघ भी उन्हें पर्वत समझकर उन पर आकर ठहरते, सोते और उनसे उठकर चले जाते । वड़े गर्वीले थे और शत्रुओं को मिटाने का अभिमान व उत्साह रखते थे । ४००

विण्णळ	विडनिमिर्न्	दुयर्न्द	मेत्तियर्
कण्णळ	विडलर्	मार्वर्	कालिनाल्
मण्णळ	विडुनैडु	वलत्तर्	वात्तिडै
अँण्णळ	विडलरुज्	जैरुवैन्	रेडिनार् 401

विण् अळवु इट-आकाश को नापने के लिए; निमिर्न्तु उयर्न्त-सीधे और ऊँचे हुए; मेत्तियर्-शरीर वाले; कण् अळव इटर् अरुम्-दृष्टि से नापना कठिन; मार्पर-ऐसे छाती वाले; कालिनाल्-पैरों से; मण् अळवु इट-पृथ्वी को नाप सकनेवाली; नैटुवलत्तर्-अधिक शक्ति वाले; वान् इटै-आकाश में; अँण् अळवु इट अरुम्-गिनना कठिन; चैरु वैन्ऱु-उतने युद्ध में जीतकर; एडितार्-बड़े-चढ़े थे । ४०१

उनके शरीर इतने ऊँचे थे कि वे आकाश को नाप सकते थे । वे दृष्टि माप न सके ऐसे विशाल वक्ष वाले थे । उनके पैरों में इतना बल था कि भूमि को नाप सकते थे । गिनती असम्भव हो, उतनी लड़ाई में विजय पाकर वे बड़े-चढ़े हो गये थे । ४०१

इन्दिरन् मुदलिनो रैडिन्द माप्पडै, शिन्दिन तैडित्तुहच् चैडिन्द तोळिनार्
अन्दह तडित्तोळु दडङ्गु माणयार्, वैन्दिर लुरुवुहोण् उन्नैय मेत्तियार् 402

इन्तिरन् मुतलितोर्-इन्द्रादि देव; अँरिन्त-जो फेंकते थे; मा पटै-उन श्रेष्ठ हथियारों को; तैडित्तु चिन्तित्त उक्-झेलकर तोड़कर छितरा दिया (जिन्होंने), ऐसे; चैडिन्द तोळितार्-कठोर कन्धों वाले; अन्तकन्-यम; अटित्तोळु अटङ्कुम्-चरण-वन्दना करके अधीन रहेगा; आणयार्-ऐसे रोबीले; वैम् तोळिल्-क्रूर काम ने ही; उरुवु कौण्टनैय-रूप धर लिया हो, ऐसे; मेत्तियार्-शरीर वाले । ४०२

उनके सारयुक्त सबल कंधे ऐसे थे कि इन्द्रादि देवों द्वारा फेंके गये सशक्त हथियार उनसे लगकर टूट गये और बिखर गये । यम भी विनत होकर उनकी आज्ञा मानता था, ऐसे रोबीले थे । क्रूर कार्य ने ही एक रूप धर लिया हो, ऐसे रूप वाले थे । ४०२

चूलमुम्	पाशमुन्	दौडर्न्त	शैम् मयिर्च्
चालमुन्	दरुहणु	नैयिरुन्	दाङ्गितार्
आलमुम्	वैळिदेन्	निउत्त	राङ्गलाल्
कालनुङ्	गालनेन्	इयिर्क्कुङ्	गाट्चियार् 403

चूलमुम् पाशमुम्-शूल और पाश; दौडर्न्त-मिले रहे; शैम् मयिर् चालमुम्-लाल बाल-जाल; तरुहणुम्-भयंकर आँखें; नैयिरुम्-और वक्र दाँत; दाङ्गितार्-धारण करनेवाले; आलमुम् वैळितु अँतुम्-इसके सामने हलाहल श्वेत है, ऐसा; निउत्तर्-रंग वाले; राङ्गलाल्-शक्ति में; कालनुम्-यम भी; कालन् अँनुङ्-अपना काल समझे; अयिर्क्कुम् काट्चियार्-संशय और भय करेगा, ऐसे आकार वाले । ४०३

उनके पास शूल, पाश आदि हथियार थे । शरीर पर लाल बाल घने रूप से उगे थे । भयंकर आँखें थीं । उनका रंग इतना काला था कि हलाहल भी श्वेत लगता था । शक्ति में वे इतने बढ़े थे कि यम भी उन्हें अपने यम की शंका करता और भय मानता । ४०३

कळलिनर् तारिनर् कवच मार्विनर्, निळलुरु पूणिनर् नैरित्त नैर्शियर्
अळलुरु कुञ्जिय रमरै वेट्टुवन्, वैळलुरु मत्तुत्तिन रौरुमै यैय्दितार् 404

कळलितर्-पायलधारी; तारितर्-मालाधारी; कवच मार्वितर्-कवचवक्ष; निळल् उरु पूणिनर्-प्रभापूर्ण आभरणधारी; नैरित्त नैर्शियर्-क्रोध से कुंचित भाल वाले; अळल् उरु कुञ्चियर्-अग्निशिखा के समान घने केश वाले; अमरै वेट्टु-युद्ध चाहकर; उवन्तु अँळल् उरु-चाव लिये उमंगनेवाले; मत्तुत्तितर्-मन के; रौरुमै यैय्दितार्-आपस में मेल रखनेवाले । ४०४

उनके पैरों में वीर कंकण पड़े थे । छाती पर कवच थे । वे कान्ति-पूर्ण आभरण पहने हुए थे । उनके भाल क्रोध-कुंचित थे । केश अग्नि-शिखा के समान लाल और डरावने थे । युद्ध करना चाहकर चाव के साथ उमंगित होनेवाले मन के वे परस्पर मेल रखते थे । ४०४

मरुप्पिडा	मदक्कळिर्	अमरर्	मत्तुत्तुम्
विरुप्पुडा	मुहत्तैवर्	विळिक्किन्	वैन्निडुम्
उरुप्पैडा	दुलैवुरु	सुलह	मूत्तिनुम्
शैरुप्पैडात्	तिनवुरु	शिहरत्	तोळितार् 405

इरा मरुप्पु-अटूट (सबल) दाँतों के; मत्त कळिङ्ग-मत्तगज (ऐरावत) पर सवार; अमरर् मत्तुत्तुम्-देवेन्द्र भी; मुक्त्तु अँतिर्-इनके मुख के सामने; विळिक्किन्-आँख खोल देखेगा तो; विरुप्पु उरा-सामने रहना न चाहकर; वैन् इट्टुम्-पीठ दिखाते हुए भाग जायगा; उरु पँडा-अस्थिर और; उलैवुरुम्-चंचल; उलकम् मूत्तिनुम्-तीनों लोकों में; शैरु पँडा-युद्ध प्राप्त न करके; तित्तु उरु-खुजली से भरे; चिकर तोळितार्-पर्वतशिखर-सम कन्धों वाले । ४०५

वे राक्षस ऐसे (वीर) थे कि देवेन्द्र भी, जो अक्षुण्ण, सबल दाँतों वाले ऐरावत गज का स्वामी है, उनको सामने से देखे तो ठहरना न चाहकर पीठ दिखाते हुए भाग जाय ! नश्वर तीनों (स्वर्ग, मध्य और पाताल) लोकों में उन्हें युद्ध का अवसर नहीं मिला था अतः पर्वतशिखर-सम उनके कंधों में खुजली (युद्ध की प्यास) हो गयी थी । ४०५

कुञ्जरङ्	गुदिरं पेय्	कुरङ्गु	कोळरि
वैञ्जित्तक्	करडिन्नाय्	वेङ्गै	याळियेन्
उञ्जुऱक्	कन्नल्वुरै	मुहत्त	रार्हलि
नञ्जुदीक्	कैत्तपपुरै	नयनत्	तार्हळुम् 406

कुञ्जरम् कुतिरै-कुंजर, अश्व; पेय्-प्रेत; कुरङ्कु-वानर; कोळ् अरि-सबल सिंह; वैम् चित्तम् करटि-भयंकर क्रुद्ध रीछ; नाय्-कुत्ता; वेङ्कै-व्याघ्र; याळि-‘याळि’ (शरभ) नामक जानवर; अन्नळ-समझकर; अञ्चु उड-भय खाए ऐसा; कत्तल् पुरै मुकत्तर्-अनल-सम मुख वाले; आर्कलि नञ्चु-सघोष सागर से (मन्थन के समय) उत्पन्न विष; तौक्कैत्त पुरै-घनीभूत हुआ हो ऐसे; नयत्तर्तार्कळुम्-नेत्र वाले थे । ४०६

किसी का मुख कुंजर के समान था, किसी का अश्व के समान । प्रेत, वानर, बली सिंह, भयंकर और क्रुद्ध रीछ, कुत्ता, व्याघ्र और शरभ के समान लगनेवाले उनके डरावने मुख अनल-सदृश थे । समुद्र से (क्षीरसागर-मन्थन के अवसर पर) उत्पन्न हलाहल के समान उनकी आँखें थीं । ४०६

अण्गैय	रैळुहैय	रेळु	मैट्टुमाय्क्
कण्गन्तल्	शौरिदरु	मुहत्तर्	कालितर्
वण्गैयिल्	वळैत्तुयिर्	वारि	वायिल्
टुण्गैयि	नुवहैय	रुलप्पि	लार्हळुम् 407

अण् कैयर्-आठ हाथ वाले; अँळु कैयर्-सात हाथ वाले; एळुम् अँट्टुम् आय्-सात-सात और आठ-आठ; कण्-आँखें; कन्नल चौरि तरु-अंगार उगलती थीं (जिनमें); मुकत्तर्-ऐसे मुख वाले; कालितर्-वैसे ही पैरों वाले; उयिर्-जीवों को; वण् कैयिल्-सबल हाथों से; वळैत्तु वारि-समेट लेकर; वायिल् इट्टु-मुख में डालकर; उण्कैयिल्-खाने में; उवकैयर्-आनन्द पानेवाले; उलप्पु इलार्कळुम्-असंख्यक लोग । ४०७

किसी के आठ हाथ थे, किसी के सात । वैसे ही सात-सात, आठ-आठ आँखों के द्वारा उनके मुख आग वरसा रहे थे । वैसे ही उनके पैर सात-सात या आठ-आठ थे । उनको जीवों को अपने सबल हाथों से समेट ले अपने मुख में डालकर खाने में बड़ा आनन्द आता था । वे अगणित थे । ४०७

इयक्करिर्	परित्तत	ववुण	रिट्त्त
मयक्कुरुत्	तमररै	वलियिन्	वाङ्गित
तुयक्किल्हन्	दिरुवरैत्	तुरन्तु	वारित
नयप्पुरु	शित्तरै	नलिनन्दु	वव्वित 408

इयक्करिल् परित्तत-यक्षों से छीन लिये गये; अवुणर् इट्त्त-दानवों से (भागते वक्त) नोचे डाले हुए; अमररै-सुरों को; मयक्कुरुत्तु-माया से मोहित करके; वलियिन् वाङ्गित-अपने बल से लिये गये; तुयक्कु इल्-अथक; कन्तिरुवरै-गन्धर्वों को; तुरन्तु वारित-(डरा-धमकाकर उनको) भगाकर उनसे लिये गये; नयप्पु उरु चित्तरै-मुलह करनेवाले सिद्धों से; नलिनतु वव्वित-दुख देकर उगाह लिये गये (झण्डे आदि) । ४०८

उनके पास झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने यक्षों के पास से छीन लिया था; दानवों ने युद्धभूमि में छोड़ दिया था; देवों को भ्रमित करके ले लिया था; अथक गन्धर्वों को भगाकर उनसे ग्रस लिया था। वे भी झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने सन्धि करने को उत्सुक सिद्धों को सताकर छीन लिया था । ४०८

कौडिदल्लै	कविहैवान्	रौङ्गल्	कुञ्जरम्
पडियुरु	पदाहैमी	विदानम्	बन्मणि
इडैमिळिर्	शामरैक्	कुळाङ्गोण्	डैङ्गणुम्
मिडैदलि	नुलहैलाम्	वैयिलि	ळन्दवे 409

कौटि-वस्त्र-झण्डे; तल्लै-मोरछल; कविकै-छत्र; वात् तौङ्कल्-बड़े हार; कुञ्चम् मेल् पटि उरु-झालरों से युक्त; पताकै-बड़ी पताकाएँ; मी वितानम्-उच्च वितान; पल् मणि इटै मिळिर्-अनेक रत्न बीच-बीच में चमकते हैं, ऐसे; चामरै कुळाम्-चैवर-समूह; कौण्टु-इनको लेकर; अङ्गणुम् मिटैतलिल्-सब जगह भीड़ लगाते रहे, इसलिए; उलकु अलाम्-सारी धरती; वैयिल् इळन्त-धूप से वंचित हो गई । ४०९

उस विपुल सेना के पास झण्डे थे, मोरछल थे और छत्र थे। बड़े-बड़े हार, झालरों सहित बड़ी-बड़ी पताकाएँ, वितान और ऐसे चामरों की राशियाँ जो रत्नों से सजे थे। ये सब लिये हुए वह सेना भूमि पर सर्वत्र फैली रही। इसलिए भूतल धूप से वंचित रह गया । ४०९

अळुवरी	डैळुवर्नी	ळुलह	मेळीडेळ्
तळुविय	वैन्डियर्	तलैवर्	तानैयर्
मळुवित्तर्	वाळित्तर्	वयङ्गु	शूलत्तार्
उळुवैयी	डरियेन	वुडङ्गु	जोङ्गत्तार् 410

तानैयिन् तलैवर्-सेनानायक; अळुवरीटु अळुवर्-सात और सात (चौदह); नोळ् उलकम्-विस्तृत लोक; एळीटु एळ्-सात और सात; तळुविय-(इनमें) व्याप्त;

वैन्नूरियर्-विजय के स्वामी; मळुवित्तर्-परशु; वाळितर्-तलवार; वयङ्कु चूलत्तर्-
और उज्ज्वल शूलधारी; उळुवैयोटु अरि अंत-व्याघ्र और केसरी के समान; उटर्त्तम्-
डुखानेवाले; चीर्त्तर्-क्रोधी । ४१०

सेनानायक चौदह थे । उनकी विजय चौदहों भुवनों पर व्याप्त
थी । उनके पास परशु तलवारें और चमकदार शूल आदि हथियार थे ।
वे व्याघ्र और सिंहों के समान लोगो को अपार दुख देनेवाले क्रोधशील
राक्षस थे । ४१०

विल्लिनर्	वाळित	रिदळै	मेलिटुम्
पल्लिनर्	मेरुवैप्	पडिक्कु	माड्डलर्
पुल्लित्तर्	तिशैदोडुम्	पुरवित्	तेरिनर्
शौल्लित्त	मुडिक्कुळुन्	दुणिवि	नैन्जिनार् 411

विल्लित्तर्-धनुर्धर; वाळितर्-तलवारधारी; इतळै मेलिटुम् पल्लिनर्-अधरों पर
टिके दाँत वाले; मेरुवै पडिक्कुम् आड्डलर्-मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले;
पुरवि तेरित्तर्-अश्व-जुते रथ वाले; चौल्लित्तु मुडिक्कुळुम्-कहे हुए कार्य को पूरा
करने का; दुणिवित्तु नैन्जिनार्-साहस रखनेवाले मन के; तिचै तौडुम्-सभी दिशाओं
में; पुल्लित्तर्-आ जुटे । ४११

वे सेनानायक धनुष और तलवारों से लैस थे । उनके दाँत
अधरों को काट रहे थे । मेरु को भी उखाड़ सकनेवाले वे अश्व-जुते रथों
पर सवार थे । जो कहते वही कर दिखाने का साहस रखते थे । वे
सभी दिशाओं में घेरकर खड़े रहे । ४११

तूडणन्	त्रिरिशिरात्	तोन्डु	लादियर्
कोडणै	मुरशित्तड्	गुळिरुज	जेनैयर्
आडव	रुयिर्हव	रलङ्गल्	वेलिनार्
पाडव	निलैयित्तर्	पलरुज्	जुर्त्तिनार् 412

आटवर् उयिर् कवर्-(सामने लड़नेवाले) वीरों की जान हर लेनेवाली; अलङ्कल्
वेलिनार्-माला से अलंकृत बर्छी वाले; पाटव निलैयित्तर्-पटु स्थिति में रहनेवाले;
कोटणै मुरचु इत्तम्-गम्भीर नादयुक्त ढोलों के समूह; कुळिडुम्-जिसमें ठनक उठते थे,
ऐसी; चेतैयर्-सेना वाले; तूटणन् तिरिचिरा तोन्डुल् आतियर्-दूषण, त्रिशिरा आदि
नायकों को पुरस्सर करते हुए; पलरुम्-अनेक सेनानी; चुर्त्तिनार्-आ जुटे । ४१२

उनके पास माला से अलंकृत भाले थे, जो सामने आये शत्रुओं के प्राण
हर लेते थे । वे दक्षता में बड़ी-चढ़ी स्थिति में थे । उनके पास बड़ी
सेनाएँ थीं, जिनमे ढोलो की उच्च ठनक सुनाई देती थी । दूषण, त्रिशिरा
आदि अधिपतियों को पुरस्सर करके वे आ एकत्र हुए । ४१२

आन्ऱुमै यँरिपडै यळुवत् तार्हलि, वान्ऱीडर् मेरुवै वळैत्त दामैन्
ऊन्ऱिन तेरित्त नुयर्न्द तोळिनन्, तोन्ऱित्तन् करन्नमन् रुणुक्क मैय्दवे 413

आन्ऱु अमै-खूब मिली रही; अँरि पटै-शत्रुघातक सेनाएँ रूपी; अळुवत्तु
आर् कलि-गम्भीर सघोष सागर; वान् तौटर् मेरुवै-गगनस्पर्शी मेरु को घेर आया हो,
ऐसा; ऊन्ऱिय तेरित्तन्-मध्य में स्थापित रथ वाला; उयर्न्त तोळित्तन्-उन्नत
भुजाओं वाला; करन्-खर; नमन् तुणुक्कम् अँय्त-यम को आतंकित करते हुए;
तोन्ऱित्तन्-प्रकट हुआ (दिखाई दिया) । ४१३

वे सेनाएँ, जो बड़ी थीं और वीरों से भरी थी, गम्भीर समुद्रों के समान
थीं । उनके मध्य खर का रथ स्थापित था । यह दृश्य ऐसा लगा,
मानो समुद्र ने मेरु को घेर लिया हो ! वह रथ आकाश तक ऊँचा था और
मेरु के समान था । उसमें बैठे हुए उन्नत कंधों वाला खर, यम को भी
भयभीत करते हुए दिखाई दिया । ४१३

अशुम्बुरु मदहरि पुरवि याडहत, तशुम्बुरु शयन्दन् मरक्कर् ताडर
विशुम्बुरु तूळियाल् वैण्मै मेयित्त, पशुम्बरि पहलवन् बैम्बौर् रेररो 414

अशुम्पु उरु-मद बहानेवाले; मत करि-मत्तगज; पुरवि-अश्व; आटक
तचुम्पु उरु-स्वर्णकलशों वाले; चयन्तनम्-स्यंदन; अरक्कर् ताळ्-पदाति राक्षस
वीरों के; ताळ्-अपने पैरों से; तर-उठनेवाली; विचुम्पु उरु तूळियाल्-व आकाश
पर जमी धूलि से; पकलवन्-दिनकर के; पचुम् करि-हरे घोड़े; पैम् पौन् तेर्-
व चोखे स्वर्ण का रथ; वैण्मै मेयित्त-धवलता से ढक गये । ४१४

मद बहानेवाले मत्तगज, अश्व, स्वर्णकलशों वाले रथ, पदाति के
राक्षस वीर —इन सबके पदाघात से धूलि जो उड़ी, उससे दिनकर के हरे
घोड़ों और स्वर्णरथ पर भी धवलता छा गयी । यानी वे श्वेत
दिखे । ४१४

वत्तन्दुहळ् पट्टन् मलैयित् वानुयर्, कत्तन्दुहळ् पट्टन् कडल्ह डूर्न्दन्
इत्तन्दौहु तूळिया लिशैप्प दैन्तित्तिच्, चित्तन्दौहु नैडुङ्गडर् चैत्तै शैल्लवे 415

चित्तम् तौकु-उमड़ते क्रोध की; नैटुम् कटल् चैत्तै-विशाल सागर-सी सेना;
चैल्ल-जब (जनस्थान से पंचवटी की ओर) चली तब; इत्तम् तौकु तूळियाल्-विपुल
राशि में उठी धूलि से; वत्तम्-वे वन; तुकळ् पट्टन्-सर्वत्र धूलि से ढक गये;
वान् उयर्-आकाश में ऊँचे उठे; मलैयित् कत्तम्-पर्वतों पर के घन; तुकळ् पट्टन्-
धूलि से भर गये; कटल्कळ्-समुद्र; तूर्न्तन्-भरकर धरती बन गये; इत्ति अँन्
इचैप्पतु-आगे क्या कहा जाय । ४१५

जब क्रोधोन्मत्त, विशाल सागर-सम सेना जनस्थान से पंचवटी जाने
लगी, तब धूलि की राशि इतनी उठी कि वन सब धूलिधूसरित हो गये ।
आकाशस्पर्शी पर्वतों पर के मेघ ढक गये । समुद्र भी पटकर धरती बन
गये । इससे बढ़कर क्या कहा जाय ? । ४१५

निलमिशं	विशुम्विडं	नैरुक्क	लानेडु
मलैमिशे	मलैयित्तम्	वरुव	पोन्मलैत्
तलैमिशैत्	तलैमिशैत्	ताविच्	चैन्ऱुत्तर
कौलैमिशं	नञ्जैन्क	कौदिक्कु	नैञ्जितार् 416

कौलै मिचै-मारने के उत्साह में; नञ्चु अँत-विष के समान; कौतिक्कुम् नैञ्चितार्-खोलते मन वाले; निलमिचै-भूमि पर; विचुम्पु इटै-आकाश पर; नैरुक्कलाल्-स्थानाभाव हो जाने से; नैटु मलै मिचै-बड़े पर्वतों पर; मलै इत्तम् वरुव पोल्-पर्वत-समूह आ रहा हो, ऐसा; मलै तलै मिचै तलै मिचै-पर्वत-शिखर से शिखर पर; तावि चैन्ऱुत्तर-लपकते चले । ४१६

युद्ध में शत्रुसंहार करने के उत्साह के साथ, खोलता विष-सम मन लेकर जो वीर जा रहे थे, उनको पर्वतों के शिखरों पर चलनेवाले अन्य पर्वतों के समान शिखर से शिखर उछलकर जाना पड़ता था; क्योंकि सारी भूमि वीरों से भर गयी थी । ४१६

ॐ वन्ददु	शैतै	वैळ्ळम्	वळ्ळियोन्	मरुङ्गिन्	माया
वन्दमा	वित्तैयम्	माळप्	पङ्ऱु	पैङ्ऱि	योरुक्कुम्
उन्दरु	निलैय	दाहि	युडुन्ऱुन्	डुयिरुह	उम्मै
अन्दहर्	कळिक्कु	नोयपो	लरक्किमुन्	ताह	वम्मा 417

माया-अनंत; पन्त मा वित्तैयम्-बन्धन जो कर्म हैं, उनके; माळ-मिटने पर; पङ्ऱु अङ्ग-राग-हीन; पैङ्ऱियोरुक्कुम्-श्रेष्ठ ज्ञानियों के लिए भी; उन्तु अरु निलैयतु आकि-अप्रतिहत वन; उडुन् उडैन्तु-शरीर के साथ रहकर; डुयिरुक्कु तम्मै-जीवों को; अन्तकङ्कु अळिक्कुम्-यम के हाथ सौंप देनेवाले; नोय पोल्-रोग के समान; अरक्कि मुन्ताक-राक्षसी शूर्पणखा को आगे करके; वळ्ळियोन् मरुङ्किन्-उदार प्रभु के पास; चैतै वैळ्ळम् वन्ततु-सेना-प्रवाह आया । ४१७

वह सेना-सागर प्रभु श्रीराम के सम्मुख आ गयी । उसको शूर्पणखा आगे रहकर ले आयी । वह उस रोग के समान थी, जो कर्मबन्धननाशक रागरहित ज्ञानियों के लिए भी अप्रतिहत बनकर शरीर के साथ रहता है और जीवों को यम के हाथ सौंप देता है । ४१७

तूरियक्	कुरलिन्	वानिन्	मुहिङ्कणन्	टुणुक्कड्	गौळ्ळ
वार्शिलै	यौलियि	नञ्जि	युरुमौर	मरुक्कड्	गौळ्ळ
आरुहलि	तानु	मुट्कि	यशंवुड	वरक्कर्	शैतै
पोरुवन्	दिरुन्द	वीर	नुरैविडम्	बुक्क	दन्ऱे 418

तूरिय कुरलिन्-बाजों के नाद से; वातिन् मुकिल् कणम्-आकाश के मेघ-समूहों को; टुणुक्कम् गौळ्ळ-कंपाते हुए; वार् चिलै औलियिन्-लम्बे धनुष की टंकार की ध्वनियों से; अञ्चि-डरकर; उरुम्-वज्र भी; और मरुक्कम् गौळ्ळ-व्यग्र हों,

ऐसा; आर् कलि तातुम्-गरजते सागर भी; उट्कि-भीतर से काँपकर; अचंबु उड-उट्टेलित हों, ऐसे; अरक्कर् चेत-राक्षस-सेना; पोर् उवनतु इरुन्त-युद्ध की सानन्द प्रतीक्षा में जो रहे; वीरन्-श्रीरघुवीर के; उरुवु इटम्-रहने के स्थान को; पुक्कतु-जा पहुँचीं । ४१८

मारु वाजे बजे और आकाश के मेघसमूह वह सुनकर काँप उठे । दीर्घ धनुषों की टंकारें निकलीं तो वज्र भी उनसे डर गये और समुद्र भी भीतर से उट्टेलित होकर मथ गये । इस ठाट-वाट के साथ वे राक्षस-सेनाएँ उस पर्णशाला के पास आयीं, जिसमें रघुकुलवीर श्रीराम युद्ध की, आनन्द के साथ प्रतीक्षा करते हुए रह रहे थे । ४१८

वाय्वुलर्न् दळिन्द मैय्यिन् वरुत्तत्त वळियिल् याण्डुम्
 ओय्विल निमिरन्दु वीडुगु मुयिर्प्पित्त वलैन्द कण्ण
 तीयवर् शेत्तै वन्दु शेर्न्दमै तैरियच् चैन्ऱु
 वेय्दैरिन् दुरैप्प पोत्तु पुळ्ळौडु विलङ्गु मम्मा 419

पुळ् औट्ट विलङ्कुम्-पक्षी और जानवर; वाय् पुलर्न्तु-मुख सूखकर; अळिन्त-मिटे जो; मैय्यिन् वरुत्तत्त-शरीर में रुग्ण हुए जो; वळियिल् याण्डुम् ओय्वु इल-मार्ग में कहीं विश्राम न लेकर; निमिरन्दु वीडुगु उयिर्प्पित्त-मुख ऊपर कर लम्बी साँसें छोड़नेवाले; उलैन्त कण्ण-प्रभाहीन आँख वाले; तीयवर् चेतै वन्दु चेर्न्तमै-खलों की सेना के आगमन का समाचार; तैरिय चैन्ऱु-पहले जानकर दौड़कर; वेय्दैरिन्तु उरैप्प पोत्तु-चर जाकर खबर देते हों जैसे (वने) । ४१९

इस विपुल सेना से आक्रांत होकर पक्षी और जानवर भागे । उनके मुख भय के मारे सूख गये । शरीर रुग्ण हो गये । बीच में वे कहीं विश्राम नहीं कर सके । मुख ऊपर उठाकर लम्बी साँसें छोड़ते हुए वे भागे और उनकी आँखें प्रभाहीन हो गयीं । वे चरों का काम करते हुए बुरे लोगों की सेना के आगमन की खबर सुनाने आये हों —ऐसे भागते आये । ४१९

तुळियिन् पडलै वन्दु तौडिर्वुड मरमुन् दूरुम्
 ताळिडै यौडियु मोशै शडशड वौलिप्पक् कान्तु
 ताळियु मरियु मञ्जि यिरिदरु ममलै नोक्कि
 मोळिमौय्म् बित्तरुञ्ज जेत्तै मेल्वन्द दुळ्ळदन् रुन्ता 420

तुळियिन् पडलै-धूलि-पटल; वन्दु तौडिर्वु उड-आकर जमे, इसलिए; मरमुन् दूरुम्-पेड़ और झाड़; ताळ् इटै-उनके पैरों के नीचे; ओळियुम् ओचै-टूटते हैं, वह नाद; चटचट ओलिप्प-तड़-तड़ शब्द उठाते हैं; कान्ततु-वन में; आळियुम् अरियुम्-शरभ और सिंह; अञ्चि-डरकर; इरि तरुम्-दूर भागते हैं; अमलै नोक्कि-वह शब्द सुनकर; मोळि मौय्म्पित्तु-सबल भुजा वाले श्रीराम और लक्ष्मण भी; चेतै मेल् वन्दु उळ्ळतु-सेना हम पर चढ़ आई है; औन्ऱु उन्ता-यह सोचकर । ४२०

धूलिपटल आकर तरुओं और झाड़ों पर जम गया । वे वीरों के पैरों के नीचे और मध्य पड़कर टूटे । उस तड़-तड़ शब्द से शरभ और सिंह डरकर भागे । उनके हड़बड़ाकर भागने का शोर सुनकर सबल कंधे वाले वीरों (श्रीराम और लक्ष्मण) ने ताड़ लिया कि सेना हम पर चढ़ आयी है । (ऐसा सोचकर —) । ४२०

ॐ मरम्बडर् कान्न नैङ्गु मदरवड वन्द शेनै
करन्वडै यैन्व दैण्णिक् करुनिडक् कमलक् कण्णन्
शरम्बडर् पुट्टिल् कट्टिच् चावमुन् दरित्तान् उळ्ळा
उरम्बडर् तोळिन् मोळ्ळाक् कवचमिट् टुडैवा लार्त्तान् 421

मरम् पटर् कान्नम् अङ्कुम्-तरुसंकुल वन में सर्वत्र; अतर् पट-मार्ग बनाते हुए; वन्त चेन्नै-जो सेना आई वह; करन् पटै अत्तपतु-खर की सेना है, यह; करु निड-नीले वर्ण के; कमल कण्णन्-कमलाक्ष श्रीराम ने; दैण्णि-निश्चय करके; चरम् पटर् पुट्टिल् कट्टि-शरवहुल तूणीर बाँधकर; चापमुम् तरित्तान्-धनुष भी उठा लिया; उळ्ळा उरम् पटर्-अटल वीरता से युक्त; तोळिन्-कन्धों पर; मोळ्ळा-अट्ट; कवचम् इट्टु-कवच बाँधकर; उदैवाळ् आर्त्तान्-कटार बाँध ली । ४२१

कमलाक्ष और नीलवर्ण श्रीराम ने यह भी निश्चय कर लिया कि वन में सर्वत्र मार्ग बनाते हुए जो आयी है, वह विपुल सेना खर की है । उन्होंने युद्ध में जाने की तैयारी की । तूणीर, चाप, अक्षय सबल कंधों से कसा हुआ कवच और तलवार आदि को यथोचित रीति से यथास्थान धारण कर लिया । ४२१

मिन्निन्डु चिलैयन् वीरक् कवचत्तन् विचित्त वाळन्
पोन्निन्डु वडिम्बिन् वाळिप् पुट्टिलन् पुहैयु नैञ्जन्
इन्निन्डु काण्डि यान्शैय् निलैयैन् विरुम्बि नेरा
मुन्निन्डु पिन्वन् दानै नोक्किन्न् मौळिय लुङ्गान् 422

मिन् निन्डु चिलैयन्-विजली ने धनु का रूप धर लिया हो, ऐसे धनुष के धारक; वीर कवचत्तन्-वीरोचित कवच से अलंकृत; विचित्त वाळन्-बँधी हुई तलवार वाले; पोन् निन्डु वडिम्पिन्-स्वर्णमय कोरों के; वाळि पुट्टिलन्-तूणीर वाले; पुहैयु नैञ्जन्-क्रोधाग्नि के धुएँ से भरा मन वाले (लक्ष्मण); विरुम्पि-(स्वयं जाना) चाहकर; यान् चैय् निलै-मेरे (युद्ध) कार्य की स्थिति; इन् इन्डु काण्डि-आज अभी देखिए; अत्तै-कहकर; मुन् नेरा निन्डु-जो अग्रस्थ हुए उन; पिन् वन्तानै-अनुज को; नोक्किन्न्-देखकर; मौळियल् उङ्गान्-कहने लगे । ४२२

तब लक्ष्मण उनके सामने आये । विजली के अवतार-सा धनुष, वीरोचित (दृढ़) कवच, तलवार, स्वर्णमुख तूणीर आदि के साथ मन में धुआँ निकालनेवाली कोपाग्नि लेकर जो आये, उन्होंने श्रीराम से कहा कि आज मेरा युद्ध-सामर्थ्य देखिए । ऐसा कहते हुए अग्रस्थ अनुज से श्रीराम बोले । ४२२

नेत्रिकोण्मा दवरक्कु मुत्ते नेरुन्दत्ते निरुद रावि
 पत्रिकुर्वेन् यात्ते येन्नु मस्मोळि पळुदु रामे
 वैत्रिकोळ्बूड गुळलि नाळै वीरने वेण्डि नेन्यान्
 कुरिक्कोण्डु कात्ति यिन्ते कौल्वेनिक् कुळुवै येन्नान् 423

नेत्रि कौळ् मातवरक्कु-तपोमार्गरत महान तपस्विधों को; मुत्ते नेरुन्दत्ते-
 पहले ही (मैंने) वचन दिया है; यात्ते निरुद आवि-मैं ही राक्षसों की जान;
 पत्रिकुर्वेन्-हूँगा; येन्नु अ मोळि-ऐसा वह वचन; पळुदु उरामे-व्यर्थ न जाए;
 यात्त वेण्डित्तेन्-मैं याचना करता हूँ; वीरत्ते-हे वीर; वैत्रि कौळ्-सुगन्ध-युक्त;
 पू कुळलिनाळै-पुष्पालंकृत केश वाली (सीताजी) की; कुरि कोण्डु कात्ति-सावधानी
 से रक्षा करो; इ कुळुवै अल्लाम्-इन सेनादलों को; इत्ते कौल्वेन्-अभी मार देता हूँ;
 येन्नान्-कहा (श्रीराम ने) । ४२३

लक्ष्मण ! मैंने तपोरत महात्मा मुनिवरों को वचन दिया है कि मैं
 उन राक्षसों के प्राण हूँगा । वह वचन वृथा न हो यही मैं तुमसे याचना
 करता हूँ । वीर लक्ष्मण ! तुम सुवासित केश वाली सीता की सावधानी
 से रक्षा करते रहो । मैं अभी इन दलों का नाश किये देता हूँ । ४२३

ॐ मीळरुब् जेरुविल् विण्णु मण्णुमेन् मेल्वन् दालुम्
 नाळुलन् दळियु मन्ने नानुनक् कुरैप्प देन्ते
 आळियिन् मौय्म्वि नायिव् वमरैनक् करुळि यिन्नेन्
 तोळित्तै तित्तुहिन्ने शौम्बिनैत् तुटैत्ति येन्नान् 424

आळियिन् मौय्म्विप्ताय्-शरभ-समान वाली; विण्णुम् मण्णुम्-आकाशलोकवासी
 और पृथ्वीवासी; मेल् वन्तालुम्-मुझ पर चढ़ आएँ तो भी; मीळ् अल्म जेरुविल्-
 जिससे लौट जाना मुश्किल है, उस युद्ध में; नाळ् उलन्नु-(आयु के) दिन खोकर;
 अळियुम् अन्ने-मर जायेंगे न; नान् उन्नक्कु उरैप्पतु अन्ने-मैं तुमको कहूँ क्या;
 इ अमर् अन्नक्कु अरुळि-यह युद्ध मुझे दे दो; अन् तोळित्तै तित्तुकिन्ने-मेरे कंधों को
 खानेवाले; चौम्पित्तै-आलस्य को; तुटैत्ति येन्नान्-मिटायो, कहा । ४२४

श्रीराम ने आगे कहा । शरभ-सम वाली भाई ! क्यों डरते हो ?
 आकाश और भूलोकवासी सभी चढ़ आवें तो भी उनकी आयु शेष नहीं
 रहेगी और वे समाप्त हो जायेंगे । तुमसे अधिक क्या कहूँ ? यह युद्ध मुझे
 प्रदान करने की कृपा करो । मेरे कंधों को आलस्य से (युद्धाभाव पर)
 उत्पन्न क्लेश खा रहा है । उसको मिटा दो । [इसको लक्ष्मण का कहा
 माननेवाले भी हैं । उनको 'प्रदान करने की कृपा करो' की प्रार्थना
 श्रीराम के मुख से निकली मानना असह्य है । विवाद में हम नहीं पड़ेंगे ।
 वही अर्थ लिया गया तो आगे के ४२५वें पद्य में 'येन्नुलुम्' जो है, जिसका
 अर्थ 'कहने पर' है । उसका पाठान्तर येन्नुन्नन् (कहा) होगा] । ४२४

❖ अँत्तुलु मिळैय वीर तिशैन्दन निराम तेन्दु
कुत्तुत्त तोळि नाडु लुळ्ळत्ति नुणरक् कौण्डान्
अन्त्रियु मण्ण लाणै मरुक्किल तङ्गै कूपि
निन्ऱत्त निरुन्दु कण्णीर् निलम्बुहप् पुलर्हिन् डाळ्वाल् 425

अँत्तुलुम्—यह कहने पर; इळैय वीरन्—वीर अनुज ने; इचैन्तत्तन्—मान लिया; इरामन् एन्तुम् कुन्ऱु अत्त—श्रीराम के पर्वत के समान; तोळिन् आडुल्—कन्धों का बल; उळ्ळत्तिन् उणर कौण्डान्—मन में समझ लिया; अन्त्रियुम्—और भी; अण्णल् आणै मरुक्किलन्—प्रभु की आज्ञा अस्वीकार नहीं की; इरुन्तु—(पर्णशाला में) रहकर; कण् नीर्—अशुजल; निलम् पुक्—भूमि को पहुँचाते हुए; पुलर्किन्डाळ् पाल्—दुखनेवाली देवी के पास; अम् कँ कूपि—सुन्दर हाथ जोड़े; निन्ऱत्तन्—खड़े रहे। ४२५

श्रीराम के यह कहने पर लघुभ्राता सहमत हो गये। उन्होंने श्रीराम के पर्वत से उन्नत स्कन्धों की शक्ति का भी स्मरण कर लिया। और भी ज्येष्ठ भ्राता है, उनकी बात अस्वीकार करना नहीं चाहा। इसलिए वे पर्णशाला में अंजलिबद्ध हो आँखों से आँसू बहाती हुई रहने वाली सीता की रक्षा में खड़े रहे। ४२५

❖ कुळैयुर् मदियम् बूत्त कौम्बत्ताळ् कुळैन्दु शोरत्
तळैयुर् शालै निन्ऱुम् तन्निच्चिलै तरित्त मेरु
मळैयैत्त मुळङ्गु हिन्ऱु वाळैयिर् इरक्कर् काण
मुळैयिन्नि ईळुन्दु शैल्लु मडङ्गलिन् मुत्तिन्दु शैन्ऱान् 426

कुळै उडु—कुण्डलधारिणी; मदियम् पूत्त—चन्द्र जैसा वदन जिस लता का खिला फूल हो, ऐसी; कौम्पु अत्ताळ्—लता-सदृश सीताजी; कुळैन्तु चोर—मुरझाकर शिथिल हुई; तळै उडु चालै निन्ऱुम्—पर्णशाला से; तन्नि चिलै तरित्त—अनुपम धनु लिये हुए; मेरु—मेरुपर्वत (श्रीराम); मळै अँत्त मुळङ्कुकिन्ऱु—मेघ के समान शोर मचानेवाले; वाळ् अँयिर्—खड्ग-समान दाँत वाले; इरक्कर् काण—राक्षसों को देखने देते हुए; मुळैयिन् निन्ऱु—गुफा से; अँळुन्तु चैल्लुम्—निकल आनेवाले; मडङ्कलिन्—सिंह के समान; मुत्तिन्तु चैन्ऱान्—क्रोध के साथ गये। ४२६

सीताजी कुण्डल-पत्र और चन्द्रवदनमुख-सुमन के साथ लता के समान रहीं। वह लता अब मुरझायी। उनको उसी दशा में छोड़कर श्रीराम पर्णशाला से बाहर आये। उनके हाथ में अनुपम कोदण्ड था। वे मेरु-सम लगे। उनको मेघों के समान शोर मचानेवाले खड्गवक्रदन्त राक्षसों ने देखा। श्रीराम गुफा से निकलकर आनेवाले सिंह के समान कोप के साथ उनके सामने गये। ४२६

तोन्ऱिय तोन्ऱु रन्नेच्च चुट्टिन्ऱु काट्टिच्च चैन्ऱाळ्
वान्ऱीडर् मूङ्गि इन्द वयङ्गुर्वन् दीयदैन्ऱन्

तान्त्रीडर् कुलतूतै यैल्लान् दौलैक्कुमा शमैन्दु निन्डाळ्
 अँन्नुवन् दैदिरन्द वीर निवनिह लिराम नैन्त्रे 427

तोन्त्रिय-ऐसे प्रकट हुए; तोन्डल् तन्त्रै-प्रभु श्रीराम को; वान् तोटर् मूड्किल्
 तन्त-आकाश तक उन्नत बाँसों (के रगड़ने) से उत्पन्न; वयड्कु वैम् ती अतु अँन्त-
 जलनेवाली भयंकर आग ही सम; तान् तोटर् कुलतूतै अँल्लाम्-अपने रिश्ते के सारे
 कुल को; तौलैक्कुम् आ चमैन्नु निन्डाळ्-मिटाने के काम में जो प्रवृत्त रही;
 चूटितिल् काट्टि-संकेत करके; एन्नु वन्तु-युद्धसन्नद्ध हो जो आया है; अँतिरन्त
 वीरन्-और सामने प्रकट हुआ है वीर; इवन्-यह; इक्ल् इरामन्-शत्रु राम है;
 अँन्नु चोन्ताळ्-ऐसा कहा । ४२७

आकाश तक उन्नत बाँसों का नाश वही अग्नि कर देती है जो उन्हीं
 से (उनके आपस में हवा के कारण टकराने से) उत्पन्न होती है, वैसे ही यह
 शूर्पणखा भी अपने कुल की नाशक शक्ति निकली । वह मानो उस कार्य
 में दत्तचित्त और तत्पर रही । ऐसी उसने उनके सामने प्रकट हुए श्रीराम
 को अपने हाथ के इशारे से दिखाया और कहा कि देखो ! जो युद्धसन्नद्ध
 होकर सामने आ रहा है वही वीर राम है, जिसने हमारे साथ वैर ठाना
 है ! । ४२७

कण्डतन् कन्तहत् तेरमेड् कदिरवन् कलङ्गि नीड्ग
 विण्डन् निन्ड् वैन्त्रिक् करन्नुम् विलङ्गड् डोळान्
 मण्डमर् यान्ने शैय्दिम् मानिडन् वलियै नीड्क्किक्
 कौण्डनैन् वाहै यैन्नु पडैजरेक् कुरित्तुच् चोन्तान् 428

कन्तक तेर् मेल-स्वर्ण-रथ पर; कतिरवन्-सूर्य; कलङ्कि-व्यग्र होकर;
 नीड्क-हटे; विण्डतन् निन्ड्-वैर के साथ स्थित; वैन्त्रि-विजयशील; करन्
 अँन्नुम्-खर नाम के; विलङ्कल् तोळान्-पर्वत-सम कन्धों वाले ने; कण्डतन्-
 श्रीराम को देखा (देखकर); पडैजरे कुरित्तु-सेनावीरों को उद्दिश्य करके; यान्ने-मैं
 स्वयं; मण्डु अमर् चैय्तु-यह बड़ा युद्ध करके; इ मानिटन् वलियै नीड्क्कि-इस
 मनुष्य का बल मिटाकर; वाकै कौण्डनैन्-विजय पा लूंगा; अँन्नु-ऐसा; चोन्तान्-
 कहा । ४२८

खर भी कम वैर नहीं रखता था । उसके वैर के सामने कनकरथ
 सूर्य भी डरकर हट गया । पर्वत-सम कन्धे वाले विजयशील खर ने श्रीराम
 को देखकर अपनी सेना के वीरो से कहा कि मैं ही बड़ा युद्ध करके इस
 मनुजपुत्र का बल मिटा दूंगा और विजय पाऊँगा । ४२८

मानिड नौरुवन् वन्द वलिहैल्लु शैलैक् कम्मा
 कानिड मिल्लै यैन्नुड् गट्टुरै कलन्द कालै
 यानुडै वैन्त्रि यैन्नाम् यावरुड् गण्डु निन्ड्रिर्
 ऊनुडै यिवनै यान्ने युण्गुवै नुयिरै यैन्डान् 429

मानिटन् ओखवन्-एक मनुज; वन्त-(उससे लड़ने) आई; वलि कँळु चेतैक्कु-सशक्त सेना के लिए; कान् इटम् इल्लै-जंगल में स्थान नहीं है; अँत्तुम्-ऐसी; कट्टुरै-वात; कलन्त कालै-जब फैल जायगी; यान् उटै वँत्तिरि-मेरी विजय का (महत्त्व); अँत्ताम्-क्या होगा; यावरुम् कण्टु निर्रिर्-सब देखते रहो; यात्ते-मैं अकेला ही; ऊन् उटै इवनै-(हमारे खाने योग्य) मांसधारी इसको; उयिरै उण्कुर्वेन्-प्राण अशन कर लूँगा; अँत्तान्-कहा । ४२६

लोग यह जानने लगे और यह बात फैल जाय कि एक अकेला मनुष्य आया था और उसके विरुद्ध इतनी बड़ी सेना ने युद्ध किया जिसके लिए वन में खड़े होने को भी स्थान नहीं मिला, तो मेरी जीत का क्या महत्त्व होगा ? इसलिए सब चुप देखते खड़े रहो । अकेला मैं ही इस मांसपिंड का प्राण पी लूँगा । खर ने ऐसा कहा । ४२९

अव्वुरै	केट्टु	वन्दा	नहम्बलैन्	उमैन्द	कल्विच्
चैव्विया	तौरव	तैय	शैप्पुवैन्	शैरुविर्	चाल
वैव्विय	राद	तन्त्रे	वीररि	लाण्मै	वीर
इव्वयि	तुळदान्	दीय	निमित्तमैन्	इयम्ब	लुड्डान् 430

अकम्पन् अँत्तु-अकम्पन नाम के; अमैन्त कल्वि चैव्वियान्-युक्त विद्या-विदग्ध; ओखवन्-एक राक्षस ने; अ उरै केट्टु-वह वचन सुनकर; वन्तान्-पास आकर; ऐय-प्रभु; वीरळ् आण्मै वीर-वीरों में सर्वश्रेष्ठ वीर; चैप्पुवैन्-विनय करता हूँ; चैरुविल् चाल वैव्वियर् आतल्-युद्ध में बड़ा उत्साही रहना; तन्त्रे-अच्छा ही है; इ वयित्-इस संदर्भ में; तीय निमित्तम् उळ आम्-बुरे शकुन होते हैं; अँत्तु-कहकर; इयम्पल् उड्डान्-विस्तार किया । ४३०

यह खर का वचन सुनकर अकंपन नाम का राक्षस सामने आया । वह विद्वान था । उसने कहा—स्वामी ! एक विनयवचन है—सुनाऊँगा । युद्ध में उत्साह दिखाना अच्छा ही है । पर शकुन बुरे दिखते हैं । उसने आगे उस बात का विस्तार किया । ४३०

कुरुदि	मामळै	शौरिन्दन	मेहड्गळ्	कुमुडिप्
परुदि	वानव	तूर्वळैप्	पुण्डु	पाराय्
करुडु	वीरनिन्	गौडिमिशक्	काक्कैयिन्	कण्ड्गळ्
पौरुडु	वीळ्वन	पुलम्बुव	निलम्बडप्	पुरळ्व 431

करुडु वीर-प्रतिष्ठित वीर; मेकड्कळ् कुमुडि-मेघ गर्जन करते हुए; कुरुदि मा मळै चौरिन्तन्-बड़ी रक्त-वर्षा बरसायी; परित्ति वानवन्-सूर्यदेव; ऊर् वळैपुण्डु-परिवेश से घिरे हुए हो गये; काक्कैयिन् कण्ड्कळ्-कोओं के समूह; निन् कौटि मिचै-तुम्हारी ध्वजा पर; पौरुडु वीळ्वन्-आपस में लड़ते हुए गिरते और; पुलम्बुव-चीखते-चिल्लाते हैं; निलम्पट पुरळ्व-भूमि पर गिरकर लोटते हैं; पाराय्-तुम देखो । ४३१

प्रतिष्ठित वीर ! मेघ गरजते हुए रक्तवर्षा कर रहे हैं । सूर्य के परिवेश बना है । काकवृन्द आपस में लड़ते हुए ध्वजा पर गिरते हैं, फिर चिल्लाते हुए नीचे गिरते हैं और भूमि पर गिरकर लोटते हैं । देखो । ४३१

वाळि	वाय्हळै	यीवळैक्	किन्ऱत्त	वयवर्
तोळु	नाट्टमु	मिडन्दुडिक्	किन्ऱत्त	तूङ्गि
मीळि	मीय्म्बुडै	यिवुळिहळ्	विळुवन	विऱलोय्
आळि	योडुनिन्	रुळैप्पत्त	नरिक्कुलम्	वलवाल् 432

विऱलोय्-विजयी वीर; वाळि वाय्कळै-वाणों के मुखों पर; ई वळैक्किन्ऱत्त-मक्खियाँ मँड़राती हैं; वयवर्-वीरों की; तोळुम् नाट्टमुम्-मुजाएँ और आँखें; इट्टम् तुडिक्किन्ऱत्त-वाई ओर (की) फड़कती हैं; मीळि मीय्म्बु उटै-अपार शक्ति वाले; इवुळिहळ्-अश्व; तूङ्गि विळुवन-सोते हुए गिरते हैं; नरि कुलम्-सियारों के झुण्ड; पल-अनेक; आळियोडु निन्ऱ-कुत्तों के साथ खड़े होकर; उळैप्पत्त-रुदन-स्वर में झूंकते हैं; पाराय्-देखो । ४३२

वीर ! वाणों के फलों पर मक्खियाँ मँड़रा रही हैं । वीरों के वाम नेत्र और हाथ फड़क रहे हैं । ताकतवर अश्व सोते और गिर पड़ते हैं । सियारों के झुण्ड आकर कुत्तों से मिल गये हैं और दोनों रुदन कर रहे हैं । तुम देखो । ४३२

पिडियै	लामदम्	वैय्दिडप्	पैरुङ्गवुळ्	वेळम्
ओडियुम्	मान्मरुप्	पुलहमुड्	गम्बिक्कु	मुयर्वाळ्
इडियुम्	वीळ्न्दिडु	मैरिन्दिडुम्	बैरुन्दिशै	यैवर्क्कुम्
मुडियिन्	मालैहळ्	पुलालौडु	मुळ्मुडै	नारुम् 433

पिडि अलाम्-हथिनियाँ, सभी; मतम् पैय्तिट-मद बहाते हुए; पैरुम् कवुळ् वेळम्-बड़े-बड़े गण्डस्थल वाले गजों के; माल् मरुप्पु ओडियुम्-बड़े दाँत टूट जाते हैं; उलकमुम् कम्पिक्कुम्-पृथ्वी में कम्पन होता है; उयर् वान् इडियुम्-ऊँचे आकाश से गाज; वीळ्न्दिडुम्-गिरती है; पैरुम् तिच्चै-लम्बी दिशाएँ; अरिन्दिडुम्-जलती है; यैवर्क्कुम्-सभी की; मुडियिन् मालैहळ्-सिर की मालाएँ; पुलाल् ओडु-मांसगन्ध के साथ; मुटै नारुम्-दुर्गन्ध निःसृत करती हैं । ४३३

हथिनियाँ मद बहा रही हैं और बड़े गाल वाले हाथियों के दाँत टूट जाते हैं । भूकम्प होता है । आकाश से गाज गिरती है । दिशाएँ जलती हैं । सबके सिर की मालाओं से सड़े मांस की-सी गन्ध और दुर्गन्ध निकलती है । ४३३

इनैय	वाहलिन्	मानिड	नीरुवत्तै	रिवत्तै
नितैय	लावदिङ्	गेळैमै	नीयमर्क्	कियन्ऱ

वित्तैयै लाज्जैयडु वल्ललान् दन्मैय तल्लन्
पुत्तैयुम् वाहैयाय् पौरुत्तियैन् तुरैयैन्प् पुहन्नान् 434

पुत्तैयुम् वाकैयाय्-‘वाहै’ (विजय-सूचक) मालाधारी; इत्तैय आकलिन्-ऐसे हैं (शकुन) इसलिए; इवत्तै-इसको; मान्तिटन् औरवन्-केवल एक मनुष्य है; अन्ड-ऐसा; इङ्कु नित्तैयल् आवतु-यहाँ सोचना; एल्लै-अज्ञता होगा; नी अमर्क्कु इयन्-तुम युद्ध-योग्य; वित्तै अलाम् चैय्तु-सभी कार्य करके; वल्लल् आम्-उस पर विजय पाओ; तन्मैयन् अल्लन्-ऐसा मनुष्य नहीं; अन् उरै पौरुत्ति-मेरी बात के लिए क्षमा करो; अन् पुक्कन्नान्-ऐसा कहा (अकम्पन ने) । ४३४

ये सब बुरे शकुन हैं । ये हो रहे हैं । इसलिए इसको मामूली अल्प मानव समझना अज्ञता होगा । तुम्हारे युद्ध-तन्त्र और सामर्थ्य द्वारा वह जीता जानेवाला नहीं लगता । मैं यह कह रहा हूँ, उसके लिए क्षमा कर दो । अकम्पन ने विनय के साथ यों बताया । ४३४

उरैत्त वाशहड् गेट्टलु मुलहैला मुलैयच्
चिरित्तु नन्ऱिदैन् शेवहन् देवरैत् तेय
अरैत्त वम्मिया मलङ्गैळिर् शोळमर् वेण्डि
इरैत्तु वीङ्गुव मान्तिडर् कैळियवो वेन्नान् 435

उरैत्त वाचकम् केट्टलुम्-(उसका) कहा वचन सुनकर; उलकु अलाम्-सारे लोकों को; उलैय-कंपाते हुए; चिरित्तु-ठठाकर (हँसकर); तेवरै तेय अरैत्त-देवों को पिचकाते हुए पीसनेवाले; अम्मि आम्-सिल है, ऐसा; अलङ्कु अल्लिल् तोळ्-हिलनेवाले सुन्दर मेरे ये कन्धे; अमर् वेण्डि-युद्ध मांगते हुए; इरैत्तु वीङ्कुव-फूले और उभरे हैं; मान्तिडर्कु कैळियवो-मनुष्य के लिए अल्प (जैय) हो गये क्या; नम् चैवकम् नन्ऱित्तु-हमारी वीरता भी बड़ी भली; अन्नान्-कहा । ४३५

यह सुनते ही खर ऐसा ठाया कि सारे लोक काँप गये । उसने कहा—अकम्पन ! इन मेरे अनुपम कन्धों को देखो जो मेरे हँसते समय हिलते हैं । और सिल के समान इनसे देव पीसे और पिचक गये थे । ये फूले हुए पुष्ट कन्धे उस अल्प मानव के लिए क्षुद्र हो गये क्या ? हमारी वीरता भी भली रही ! । ४३५

अन्नु मात्तिरत् तैरिपडै पिडियैन् विडिया
मन्त्तर् मन्तवन् मदलैयै वळैन्दन वळैन्दु
मिन्नुम् वालुळ मडङ्गलै मुनिन्दत् वेळम्
तुन्ति तालैत्तच् चुडुशिनत् तरक्करन्द दौहुदि 436

अन्नुम् मात्तिरत्तु-(खर के) यह कहते ही; मिन्नुम् वाल् उळै मडङ्कलै-प्रकाशमय लम्बे अयाल वाले सिंह को; मुत्तिन्तत्-बैर करके; वेळम् वळैन्नु तुन्तिनाल् अन्त-गजों ने घेर लिया हो, ऐसा; चुटु चित्तु-तापक क्रोधशील; अरक्कर् तम् तोकुत्ति-राक्षसों के दल; अन्ऱि पटै-आपस में टकरानेवाले हथियारों के; इटि अन् इटिया-

वज्र के समान नाद करते; मन्तर् मन्तवन् मतलैयै—राजाधिराज के पुत्र श्रीराम को; वळैन्तत—घेर गये । ४३६

खर के यह कहते ही अग्नि के समान क्रोधी राक्षसों की सेना ने आकर चक्रवर्तीसुत श्रीराम को घेर लिया, मानो उज्ज्वल अयाल वाले सिंह से वैर करके गजों ने आकर घेर लिया हो । तब उनके हथियार आपस में टकराये और वज्र के समान नाद पैदा हुआ । ४३६

वळैन्द	कालैयिल्	वळैन्ददव्	विरामन्गै	वरिविल्
विळैन्द	पोरैयु	मावदुम्	विळम्बुदुम्	विशैयाल्
पुळैन्द	पाय्बरि	पुरण्डत्त	पुहरमुहप्	पूट्कै
उळैन्द	माल्वरै	युरुमिडि	पडवौडिन्	देन्त 437

वळैन्त कालैयिल्—जब घिर गये तब; इरामन् कै वरि विल्—श्रीराम के हाथ का बन्धनयुक्त धनुष भी; वळैन्ततु—झुका; विळैन्त पोरैयुम्—तब जो युद्ध हुआ, उसको; आवतुम्—उसके फल को; विळम्पुतुम्—कहेंगे; विचैयाल् पुळैन्त—अपनी तीव्र गति से जो विद्ध हुए वे; पाय् परि—तीव्रगामी अश्व; पुरण्डत्त—नीचे गिरकर लोटे; माल्वरै—बड़े-बड़े पर्वत; उरुम् इटि पट—घोर वज्र के गिरने से; ओटिन्तैन्त—टूट जाते हों जैसे; पुकर् मुक् पूट्कै—बिन्दियों सहित मुख वाले गज; उळैन्त—डुखी हो गिरे । ४३७

जब वे घेर आये तब श्रीराम ने अपने प्रतापी चाप को झुकाया और युद्ध छिड़ गया । उसके फलस्वरूप क्या-क्या आश्चर्य हुए ? हम उनका वर्णन करेंगे । एक दम विद्ध होकर दुलकी चलनेवाले अश्व गिरे और भूमि पर लोटे । गज, जिनके माथाओं पर बिन्दियाँ थीं, ऐसे पर्वतों के समान टूटकर गिरे जिन पर वज्र-पात हुआ हो । ४३७

शूल	मर्त्त	वर्त्त	शुडर्मळुत्	तीहैवाळ्
मूल	मर्त्त	वर्त्त	सुरट्टण्डु	पिण्डि
पाल	मर्त्त	वर्त्त	पहळिवैम्	बहुवाय्
वेलु	मर्त्त	वर्त्त	विल्लौडु	पल्लम् 438

चूलम् अर्त्त—शूल कटे; चुटर् मळु तौकै—उज्ज्वल परशु-वृन्द; अर्त्त—बेकार हुए; वाळ् मूलम्—तलवारों के मूल; अर्त्त—छिन्न हुए; सुरण् तण्डु अर्त्त—सुदृढ़ दण्डायुध नष्ट हुए; पिण्डिपालम् अर्त्त—भिण्डिपाल मिटे; वैम् पकुवाय्—चीरकर जानेवाले फल के; वेलुम्—माले भी; अर्त्त—नष्ट हुए; विल् औटु पल्लम्—धनुष के साथ बल्लम व्यर्थ हुए । ४३८

और भी राक्षसों के शूल और कान्तियुक्त परशुसमूह नष्ट हुआ । तलवारों के मूल (या रूप) छिन्न हुए । सुदृढ़ दण्डायुध टूटे । भिण्डिपाल, भेदनेवाले शूल, चाप और बल्लम सभी तहस-नहस हुए । ४३८

तौडितु	णिन्दन	तोळौडुन्	दोमरन्	टुणिन्द
अडितु	णिन्दन	कडहळि	उच्चौडु	नैडुन्देर्क्
कौडितु	णिन्दन	कुरहदन्	टुणिन्दन	कुलमा
मुडितु	णिन्दन	तुणिन्दन	मुळैयौडु	मुशालम् 439

तौटि तुणिन्तत-वीरकंकण टूटे; तोळौटु तोमरम् तुणिन्तत-कन्धों के साथ तोमर खण्ड-खण्ड हुए; कट कळिळ अटि-मत्तगजों के पैर; तुणिन्तत-कटे; नैडुम् तेर्-वड़े रथ; अच्चौडु कौटि-धुरों के साथ ध्वजाएँ; तुणिन्तत-कटी; कुरकतम् तुणिन्तत-घोड़े कटे; कुल मा मुटि-वड़ी संख्या में एक साथ वड़े किरौट; तुणिन्तत-खण्डित हुए; मुळैयौडु-मुद्गरों के साथ; मुचलम् तुणिन्तत-मूसल टूटे। ४३६

और भी अंगवलय आदि वलय कटकर गिरे और भुजाओं के साथ तोमर आदि कटे। मत्तगजों के पैर, ऊँचे रथों की धुरियाँ और ध्वजाएँ आदि छिन्न हो गयीं। घोड़े टुकड़े-टुकड़े हुए। दण्ड और मुद्गर छिन्न-भिन्न हुए। ४३९

करुवि	मावौडु	कार्मदक्	कैम्मलैक्	कणत्तो
डुरुवि	मादिरत्	तोडित्त	शुडुशर	मुदिरम्
अरुवि	मालैयिर्	पिरुङ्गिय	दवत्तियि	लरक्कर्
तिरुविन्	मार्वहन्	दिउन्दन	तुउन्दन	शिरङ्गळ् 440

चूटु चरम्-श्रीराम के भयंकर शर; करुवि मा औटु-जीन वाले घोड़ों के साथ; कार्-काले; मत कै मलै-मत्तगजों के; कणत्तौटु-दलों को; उरुवि-आर-पार होकर; मातिरत्तु ओटित्त-(वाहर निकल) दिशाओं में चले; उतिरम् अरुवि-रक्त नदियों; मालैयिल् पिरुङ्कित्त-के रूप में बहा; अवत्तियिल्-भूमि में; अरक्कर्-राक्षसों के; तिरु इल् मारुपु अकम्-श्रीहीन वक्षस्थलों को; तिउन्तत-खोलकर (रक्त) बाहर आया; चिरङ्कळ् तुउन्तत-सिर (धड़ों से) अलग हुए। ४४०

श्रीराम के सन्तापी शर जीन वाले अश्वों और काले रंग के मत्तगजों को निफरकर आगे सभी दिशाओं में गए। रक्त की सरिताएँ वह चलीं। शरों ने राक्षसों के श्रीहीन वक्षों को विदीर्ण कर दिया और उनके सिरों को काटकर धड़ों से अलग कर दिया। ४४०

औन्ऱु	पत्तुन्	आयिरङ्	गोडियैन्	रुणरात्
तुन्ऱु	पत्तिय	विराहवन्	शुडुशरन्	दुरक्कच्
चैन्ऱु	पत्तिरत्	तलैयिन्	मलैदिरण्	डैन्ऱुक्
कौन्ऱु	पत्तियिर्	कुविन्दन	पिणप्पेरुङ्	गुन्ऱुम् 441

औन्ऱु पत्तु नूऱु-एक, दस, सौ; आयिरम् कोटि-सहस्र, करोड़; औन्ऱु उणरा-ऐसा अगण्य; तुन्ऱु पत्तिय-बहुत मिली हुई पंक्तियों में; चूटु चरम्-जला डालनेवाले शरों को; इराक्कवन् तुरक्क-श्रीराघव ने चलाया तब; चैन्ऱु-जाकर; कौन्ऱु-मारकर; पत्तिर तलैयिन्-शरसहित सिरों की; मलै तिरण्ट औन्ऱु-पर्वत

एकत्र हुए हों, जैसे; पिण्ड-पैरुम्-कुत्तुम्-लाशों के बड़े पर्वतों को; पत्तिथिल् कुवित्तत्त-श्रेणियों में लगा दिया (शरों ने) । ४४१

श्रीराघव ने कितने शर लगातार छोड़े ? एक, दस, सौ, हजार, करोड़...? कोई गणना नहीं थी ! उनके भयंकर अस्त्र धनुष से छूटे और गये । राक्षस मरे और उनके सिरों पर वे अस्त्र गड़े रहे । उन अस्त्रों के साथ उन राक्षसों की लाशों के ढेर के ढेर पंक्तियों में बन गये । ४४१

काडु	कोण्डहा	रुलवैहळ्	कार्यैरि	कटुवच्
चूडु	कोण्डत	वैन्तत्तौडर्	कुरुदिमीत्	तोत्तु
आडु	हिन्तुत्त	वरुहुरै	यथिलम्बु	विण्मेल्
औडु	हिन्तुत्त	वुयिरैयुन्	दौडर्वन्त	वौत्त 442

काटु कोण्ड-वन में भरे; कार् उलवैकळ्-काले ठूँठ; काय् अँरि क्तुव-जलती आग के लगने से; चूटु कोण्डत अँत-गरम हो गए जैसे; अडु कुरै-सिर-कटे राक्षसों के कवन्ध; तौटर् कुरुति मी तोत्तु-रक्त की धार के ऊपर उछलते रहने से; आटुकिन्तुत्त-और नाचते हैं, तब; अयिल् अम्पु-श्रीराम के तीक्ष्ण शर; विण् मेल् ओटुकिन्तुत्त उयिरैयुम्-आकाश में जानेवाले उनके प्राणों को भी; तौटर्वन्त औत्त- (पकड़ने के लिए) पीछे जाते थे, ऐसे लगा । ४४२

राक्षसों के सिर-रहित कवन्ध नाचे । उनके शरीरों पर से लाल रक्त उछल रहा था । उनको देखकर ऐसा लगता था, मानो वन के ठूँठ आग से जल रहे हों । उछलते रक्त के फौवारे श्रीराम के बाणों के समान दिखे, जो स्वर्गगामी राक्षसों के प्राणों का पीछा कर रहे हों । ४४२

कैहळ्	वाळौडु	कळप्पड	कळुत्तुत्तुक्	कवश
मैय्हळ्	पोळ्वडत्	ताळ्विळ	मिहनेडु	निरुदर
शैय्य	मात्तलै	शिन्दिडत्	तिशैयुत्तुच्	चैन्तु
तैय	लार्नेडु	विळियेत्तक्	कौडियत्त	शरङ्गळ् 443

तैयलार् नैटु विळि अँत-दयिताओं के आयत नेत्रों के समान; कौडियत्त-घातक; चरङ्कळ्-श्रीराम के शर; मिक् नैटु निरुदर-बहुत ऊँचे कद के राक्षसों के; कैकळ् वाळौडु कळम् पट-हाथों को तलवारों के साथ युद्धभूमि पर गिराते हुए; कळुत्तु अड-गलाओं को काटते हुए; कवच् मैय्कळ्-कवचसहित शरीरों को; पोळ् पट-चौरते हुए; ताळ् विळ-पैरों को काटते; चैय्य मा तलै चिन्तिट-लाल सिरों को छितराते हुए; तिचै उड चैन्तु-दिशाओं में लगे हुए उड़ चले । ४४३

श्रीराम के बाण दयिताओं के आयत नेत्रों के समान थे । वे अत्यन्त भयंकर थे । वे चारों दिशाओं में बड़ा उत्पात मचाते हुए उड़े । ऊँचे कद के राक्षसों के हाथ तलवारों के साथ कटकर गिरे । उन शरों से गर्दनें कटीं । कवच विदीर्ण हुए । बड़े और लाल सिर अलग हुए । ४४३

मारि	याक्किय	वडिक्कणै	वरैपुरै	निरुदरु
पेरि	याक्कैयिन्	पैरुङ्गारै	वयिन्ऱोऱुम्	बिऱुङ्ग
एरि	याक्कित्त	वारुह	ळाक्कित्त	विरैक्कुम्
शोरि	याक्कित्त	पोक्कित्त	वत्तमैनुन्	दौत्तुमै 444

मारि आक्किय—वर्षा हो रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करनेवाले; वडि कणै—(श्रीराम के) तीक्ष्ण बाणों ने; वरै पुरै निरुदरु—पर्वत-सम राक्षसों के; पेरु याक्कैयिन्—बड़े शरीरों के (रूपी); पैरुम् करै—बड़े तटों के; वयिन् तौऱुम् पिऱुङ्ग—स्थान-स्थान पर दृश्यमान होते; एरि आक्कित्त—झीलें बनाई; आरुहळ् आक्कित्त—नदियों की सृष्टि की; विरैक्कुम् चोरि आक्कित्त—उनको खून से भरा बना दिया; वत्तम् अँतुम् तौत्तुमै पोक्कित्त—वन का प्राचीन प्रकार मिटा दिया। ४४४

श्रीराम के तीक्ष्ण बाणों की वर्षा ने बड़ी-बड़ी नदियाँ और झीलें बनायीं, जिनके तट पर्वत-सम राक्षसों के बड़े शरीरों के बनाये और उनमें रक्त भर दिया। अब वन का प्राचीन रूप बदल गया। ४४४

अलैमि	दन्दत्त	कुरुदियिन्	बैरुङ्गड	लरक्कर्
तलैमि	दन्दत्त	नैडुन्दडि	मिदन्दन	तडक्कै
मलैमि	दन्दत्त	वाम्बेरि	मिदन्दन	वयप्पोर्च्
चिलैमि	दन्दत्त	मिदन्दन	कौडियौडु	तेरुहळ् 445

अलै मितन्तत्त—लहरें जिसमें उठती थी, उस; कुरुदियिन् पैरुम् कटल्—रक्त के बड़े सागर पर; अरक्कर् तलै मितन्तत्त—राक्षसों के सिर तैरे; नैडुम् तटि मितन्तत्त—लम्बे मांसखण्ड तैरे; तट कै मलै—विशाल हाथों (सूँड़ों) के गज बहे; वाम् परि मितन्तत्त—फाँदकर चलनेवाले अश्व बहे; वय पोर् चिलै मितन्तत्त—सारयुक्त युद्ध-धनु बहे; कौडि ओडु तेरुहळ् मितन्तत्त—ध्वजाओं-सहित रथ बहे। ४४५

रक्त का सागर-सा बन गया और उस पर तरंगें भी उठीं। उस रक्त पर राक्षसों के सिर, उनके बड़े-बड़े मांसखण्ड, अनेक करी, अश्व, बलवान चाप और ध्वजाओं के साथ रथ उतराये। ४४५

आय	कालैयि	लत्तल्विळित्	तार्त्तिरैत्	तरक्कर्
तीय	वारुहणै	मुदलिय	तैरुशिनप्	पडैहळ्
मेय	माल्वरै	यौत्तिन्नै	वळैत्तिन्न	मेहम्
तूय	तारैहळ्	शौरिवन	वामैन्नच्	चौरिन्दार् 446

आय कालैयिल्—तब; अरक्कर्—राक्षसों ने (जो बचे रहे); मेय माल् वरै—स्थायी, बड़े एक पर्वत; यौत्तिन्नै—एक को; इत्त मेक्कु वळैत्तु—श्रेणीबद्ध मेघ घेरकर; तूय तारैहळ् चौरिवन आम्—शुद्ध धारें गिरा रहे हों; अँत—ऐसा; तीय वार् कणै—भयंकर लम्बे अस्त्र; मुतलिय—आदि; चित्त तैरु पटैहळ्—क्रोध के साथ फेंके, घातक हथियार; चौरिन्दार्—बरसाये। ४४६

तब राक्षसों ने श्रीराम को घेर लिया और भयंकर अस्त्र आदि-

चलाये। वह दृश्य ऐसा था, मानो मेघों के समूहों ने एक पर्वत को घेर लिया हो और वे उस पर शुद्ध जलधारे वरसा रहे हों। राक्षसों ने क्रोध के साथ अस्त्र चलाये और वे अस्त्र भयंकर और घातक थे। ४४६

शौरिन्द	पल्पडै	तुणिबडत्	तुणिबडच्	चरत्ताल्
अरिन्दु	वैन्दन	शिन्दिडत्	तिशैतिशै	यह्इइ
नैरिन्दु	पार्मह	णैळिवुइ	वत्तमुइ	निइय
विरिन्द	शैम्मयिर्क्	करुन्दलै	मलैयैत्त	वीळत्तान् 447

चरत्ताल्-शरों द्वारा (श्रीराम ने); चौरिन्त पल् पटै-(राक्षसों के) वरसाये अनेक हथियारों को; तुणि पट तुणि पट-आते-आते खण्डित करके; अरिन्तु-काटकर; वैन्तत्त चिन्तिट-जलाकर छितराया; तिचै तिचै अकइइ-दिशा-दिशा में फिकवा दिया; पार् मकळ्-भूदेवी को; नैरिन्तु नैळिवु उइ-कुचलकर झुकने देते हुए; वत्तम् मुइम् निइय-सारे वन को भरते हुए; विरिन्त चैम्मयिर्-बिखरे लाल केशों के; करुम् तलै-काले सिरों को; वीळत्तान्-गिराया। ४४७

श्रीराम ने अपने शरों से उन हथियारों को, जो राक्षसों द्वारा अत्यधिक परिमाण में उन पर चलाये गये, आते-आते काट दिया। उनको जलाकर छितराया। उनको सभी दिशाओं में दूर-दूर तक फेंक दिया। उन्होंने राक्षसों के लाल वालों से भरे काले सिरों को काट गिराया। उन सिरों की इतनी भारी संख्या थी कि उनके भार से भूदेवी कुचल गयीं और वह लचक गयीं। वन में सर्वत्र सिर ही सिर दिखाई दिये। ४४७

कवन्द	पन्दङ्गळ्	कळित्तत्त	कुळित्तकैम्	मलैहळ्
शिवन्दु	पाय्न्दवैड्	गुरुदियिइ	तिरुहित	शित्तत्ताल्
निवन्द	वैन्दौळि	निरुदरुदम्	नैडुनिणन्	दैवट्टि
उवन्द	वन्गळ्	दुयिर्शुमन्	दुळुक्किय	दुम्बर् 448

कवन्त पन्तङ्कळ्-कवन्धराशियाँ; कळित्तत्त-मुदित हुए; कै मलैकळ्-'सूँड़ वाले पर्वत' (करी); शिवन्तु पाय्न्त वैम् कुरुतियिल्-लाल और बहते रक्त-प्रवाह में; कुळित्त-नहाये; तिरुक्ति चित्तत्ताल्-भयंकर क्रोध के कारण; निवन्त-उभरे; वैम् तौळिल्-भयंकर काम करनेवाले; निरुदरु तम्-राक्षसों के; नैडु निणम्-अधिक मांसों को खाकर; तिवट्टि-अघाकर; वन् कळुत्तु-बलवान प्रेत; उवन्त-हर्षित हुए; उम्पर-देवलोक; उयिर् चुमन्तु-(राक्षसों के) प्राणों को ढोते हुए; उळुक्कियतु-लचक उठा। ४४८

भयंकर युद्ध में कवन्धराशियाँ मुदित हुईं। करी रक्त-प्रवाह में नहाये। बलवान प्रेतों ने क्रुद्ध राक्षसों के मांस खाकर अघाकर आनन्द मनाया। देवलोक में इतने राक्षसों के प्राण आ भर गये कि लोक ही झुक गया। ४४८

मरुड	रुङ्गळि	वज्जनै	वळैयैयिर्	उरक्कर्
गरुड	नज्जुळ	कण्मणि	काहमुड्	गवर्न्द
इरुड	रुम्बुडत्	तिळुदैयर्	पळुडुड्	कैळिवे
अरुड	रुन्दिरत्	तउनन्त्रि	वलियवुण्	डामो 449

मरुड् तरुम्-मोह में डालनेवाले (मायावी); कळि-मत्त; वज्जत्तै-कपटी; वळै अयिर्-वक्रवांत वाले; अरक्कर्-राक्षसों की; कट्टन् अज्जुळ-गरुड को भी भयभीत करनेवाली; कण्मणि-आँखों की पुतलियों को; काहमुम् कवर्न्द-कौओं ने छीन लिया; इरुड् तरुम् पुडुत्तु-अन्धकार-सम काले शरीरों के; इळुदैयर्-नीच लोग; पळुत्तु उडुक्कु अळिते-नष्ट होंगे, यह सुलभ ही है; अरुड् तरुम् तिडुत्तु-कृपा देनेवाले; अरुन् अन्त्रि-धर्म के सिवा; वलियवु-वलवान; उण्टामो-कोई दूसरा होगा क्या । ४४६

उन मायावी, मत्त, कपटी और वक्रदांत वाले राक्षसों की आँखों की पुतलियों को अब कौए नोचकर खाने लगे । पहले उन आँखों को देखकर स्वयं गरुड भी डरता था । अब उनकी स्थिति ऐसी हो गयी ! क्यों ? उन नीचों की अवनति सुगमता से हो जाती है, जो अन्धकार के समान काले होते हैं ! धर्म कृपा का जनक है । उससे बढ़कर वलवान और क्या है ? । ४४९

पल्लायिर	मिरुळ्	कीरिय	पहलोत्तै	वैळिरुम्
विल्लाळत्तै	मुत्तियावैयि	लयिलामैत्त	विळियाक्	
कल्लार्मळै	कणमामुहिल्	कडैनाळुविळ्	वन्नवोल्	
अल्लामोर्	तौडैयावुड	नय्दार्वित्तै	शैय्दार्	450

पल् आयिरम् इरुळ्-अनेक सहस्र अन्धकार पुंजों को; कीरिय-चीरनेवाले; पकलोन् अत्त औळिरुम्-सूर्य के समान प्रभावान; विल्लाळत्तै-कोदण्डपाणी श्रीराम को; अल्लामोर् और् तौडैया-सभी (बचे हुए) राक्षसों ने एक साथ मिलकर; मुत्तिया-कोप करके; वैयिल् अयिल् आम् अत्त-चमकदार भाले के समान; विळिया-तरेरकर; कण मा मुकिल्-समूहों में मिले बड़े-बड़े मेघ; कटै नाळ-युगान्त में; कल् आर् मळै-पत्थर की वर्षा; विट्टवत्त पोल्-गिराते हों, जैसे; अल्लाम् उटन् अय्यार्-सभी अस्त्र एक साथ चलाते हुए; वित्तै चैय्यार्-(युद्ध-) कार्य किया । ४५०

श्रीराम अन्धकार के समूहों को चीरकर हटानेवाले सूर्य के समान प्रभावान थे । उन कोदण्डपाणी पर सभी (बचे हुए) राक्षसों ने एक साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया । उनकी तरेरती आँखों ने भयंकर भालों के समान दृष्टि चलायी । युगान्त में पत्थर बरसानेवाले मेघों के समान वे सभी अस्त्रों को एक साथ चलाने लगे । ४५०

अयिन्दारैत्त	वैय्यारैत्त	वयियानितैन्	दत्तवुम्
अयिन्दारैत्त	वयियावहै	ययिल्वाळियि	नरुत्तान्

शैरिन्दारैयुम् विरिन्दारैयुज् जैरुत्तारैयुन् दिरुत्ताल्
मरिन्दारैयुम् वलित्तारैयु मडित्तान्शिले पिडित्तान् 451

चिले पिडित्तान्—कोदण्डपाणी श्रीराम ने; जैरुत्तारैयुम्—दलों में आनेवालों को; विरिन्दारैयुम्—अलग-अलग आनेवालों को; जैरुत्तारैयुम्—द्वेष करके आनेवालों को; चित्तत्ताल् मरिन्दारैयुम्—(जो भागे थे पर) क्रोध के कारण मुड़ आये उनको; वलित्तारैयुम्—अन्याय करनेवालों को; मडित्तान्—मिटायी; अरिन्दारै अन्त—ये शस्त्र फेंकनेवाले; अय्तार् अन्त—ये अस्त्र चलानेवाले; अरिया निनैन्ततवुम्—चलाने योग्य हथियारों को; अरिन्दारै अन्त—परखकर लेनेवाले थे; अरिया वकै—ऐसा पहचाना न जा सके, ऐसा; अयिल् वाळियिन् अरुत्तान्—तीक्ष्ण अपने शरों से छिन्न-भिन्न कर दिया । ४५१

कोदण्डपाणी श्रीराम ने सब राक्षसों को मार दिया । उनमें दल बाँधकर आनेवाले, पृथक-पृथक आनेवाले, क्रुद्ध राक्षस, भाग जाकर वर-प्रेषित हो लौट आनेवाले और अन्यायी सभी थे । इस तेजी से वे हत हुए कि यह जानना भी कठिन हो गया कि कौन क्या कर रहा था । अस्त्र चलानेवाले, शस्त्र चलानेवाले, चलाने के लिए चुनाव में लगे रहनेवाले सभी थे । वे भी कुछ करने से पहले ही हत हो गये । ४५१

वातूतत कडलिन्बुड वलयत्तन मदिलुळ्
मीतूतत मिळिर्हीण्डलिन् मिशैयत्तन मिडल्वम्
कातूतत मलैयत्तन तिशैमुड्रिय करियिन्
तातूतत काहुत्तल शरमुन्दिय शिरमे 452

काकुत्तत—काकुत्स्थ के; चरम् उन्तिय—शरों द्वारा उकसाये गये; चिरमे—राक्षसों के सिर; वातूतत—आकाश में गये; कडलिन् बुड वलयत्तन—समुद्र के पार के चक्रवाल में गये; मति चूळ्—चन्द्रवलयित; मीतूतत—नक्षत्र-मण्डल में गये; मिळिर् हीण्डलिन्—दृश्यमान मेघमण्डलों के; मिशैयत्तत—ऊपर वाले हो गये; मिडल्वम् कातूतत—घने भयंकर वनों में गये रहे; मलैयत्तत—पर्वतों पर के हुए; तिशै मुड्रिय—दिशाओं के छोर में रहनेवाले; करियिन्—करियों के; तातूतत—स्थानों पर गये । ४५२

काकुत्स्थ के शरों से कटे हुए राक्षसों के सिर कहाँ-कहाँ दिखे ! आकाश, समुद्र पार चक्रवाल पर्वत, चन्द्र को मध्य में लिये रहे मीनमण्डल, सुदृश्य मेघमण्डल, घने भयंकर वन, पर्वत, दिशाओं के अन्त में रहनेवाले दिग्गजों के स्थान —सभी स्थानों पर गये रहे । ४५२

मण्मेलन मलैमेलन मल्लैमेलन मदितोय्
विण्मेलन नैडुवैलैयि निडमेलन मिडलोर्
पुण्मेलन कुरुदिप्पोरु तिरैयारुहळ् पौङ्गत
तिण्मेरुवै नहुमारबिनै युरुवुन्दैरि शरमे 453

तिण् मेरुवै नकु-सुदृढ़ मेरु का परिहास करनेवाली; मारुपित्तै-(राक्षसों की) छातियों को; उरुवुम् तैरि चरम्-वेध जानेवाले (श्रीराम के) चुने हुए शर; पौरै कुरुति आरुक्कळ्-आपस में टकरानेवाली तरंगों से युक्त रक्त-नदियाँ; पौक्क-उमंगकर बढ़ें, ऐसा; मण् मेलत्त-पृथ्वी में गये; मलै मेलत्त-पर्वतों पर गये; मळ्ळै मेलत्त-मेघों पर गये; मत्ति तोय् विण् मेलत्त-चन्द्राश्रयी आकाश पर के हो रहे; नैट्टु वैलैयिन् इटम् मेलत्त-विस्तृत समुद्रतलों के हो रहे; मिटलोर् पुण् मेलत्त-वली (राक्षसों) के व्रणों पर रहनेवाले बने । ४५३

जो मेरु-समान कठिन छाती वाले राक्षसों को भेद चले, वे श्रीराम के चुने हुए शर कहाँ-कहाँ पाये गये ! राक्षसों के रक्त की नदियों को उमंगकर बहने देते हुए वे शर पृथ्वी पर, पर्वतों पर, मेघमण्डल पर, चन्द्राश्रयी आकाश पर, समुद्र पर और वली राक्षसों के व्रणों पर रहनेवाले बने । ४५३

पौलन्दारिन	रत्तलिन्शिहै	पौळिहण्णिन्न	रैवरुम्
वलन्दाङ्गिय	वडिवैम्बडै	विडुवार्शर	मळैयाल्
उलन्दाळल्	कडलोडुड	वुलवारुड	लुड्डार्
अलन्दार्निशि	शररामैन्	विमैयोरोडु	मार्त्तार् 454

पौलम् तारित्-मनोरम मालाधारी; अतलिन् चिकै पौळि कण्णिन्न-अग्नि की ज्वालाएँ-सी निकालनेवाली आँखों के; वडि वैम् पडै विडुवार्-तीक्ष्ण भयंकर हथियार चलानेवाले; रैवरुम्-सभी राक्षस; चर मळैयाल्-शर-वर्षा से; उटल् कटल् ओट्टु उड-शरीर जाकर समुद्र में मिल गये, इस रीति से; उलन्तार्-मरे; उलवा उटल् उड्डार्-अमर शरीर पाकर; इमैयोर् ओट्टुम्-देवों के साथ मिलकर; निचिचर् अलन्तार् आम् अँत्त-निशिचर मरे, यह कहकर; मार्त्तार्-सन्तोषरव उत्पन्न किया । ४५४

मनोरम मालाधारी सभी राक्षस, जिनकी आँखों से अग्निज्वालाएँ निकलती थी और जो भयंकर तीक्ष्ण हथियार चलाते थे, श्रीराम की शरवर्षा के सामने मर गये । उनकी लाशें समुद्र में जाकर मिल गयीं । अब उन्हें अमर शरीर मिल गया । वे देवों में मिल गये । अब वे नीचे देखते हैं और मरते हुए राक्षसों को देखकर हर्षरव निकालते हैं कि वाह ! राक्षस मर गये । ४५४

ईरुच्चैडि	कमलत्तन्न	विरदक्कुडै	पुळित्तम्
वीरक्करि	मुदलैक्कुल	विडुपाय्परि	कुरम्वाप्
पारक्कुडर्	मिडैपाशडै	पडर्हित्तन्न	पलवा
मूरित्तिरै	युदिरक्कुळ	मुळुहिक्कुळ	दळुमै 455

ईरल्-युक्त (रूपी); चैडि कमलत्तन्न-दलसंकुल कमल वाले; इरत्त कुडै-टूटे रथ; पुळित्तम्-पुलिन; वीर करि-साहसी गज; मुतलै कुलम्-नक्रसमूह; परि-अश्व; विटु-बैधे; कुरम्पा-बांध; पार कुटर्-भारी आँते; मिडै-लसे

रहनेवाले; पत् पाचट आ-अनेक ताजे पत्ते, इनसे युक्त; मूरि तिरै-बड़ी-बड़ी तरंगों वाले; उतिर कुळम्-रक्त के तालाबों में; कळ्ळु-भूत; मुळ्ळुकि अँल्लुव-नहा उठते हैं । ४५५

युद्धभूमि में एक अनोखा तालाब बन गया । उसमें रक्त भरा था । यकृत् कमल बने, टूटे रथ पुलिन । साहस के साथ मरे गज नक्र बने और अश्व की लाशें बाँध बनीं । भारी आँतों ने विविध पत्तों का स्थान लिया ! ऐसे तालाब में, जिसमें बड़ी-बड़ी तरंगें उठ रही थीं, प्रेत नहा उठते थे । ४५५

अळैत्तार्शिल	रार्त्तार्शिल	रळिन्दार्शिलर्	कळिन्दार्
उळैत्तार्शिल	रुयिर्त्तार्शिल	रुरुण्डार्शिलर्	पुरण्डार्
कुळैत्ताळ्दिरैक्	कुरुदिक्कडर्	कुळित्तार्शिलर्	कौलैवाय्
मळैत्तार्हळ्	पडप्पारिडै	मडिन्दार्शिल	रुडैन्दार् 456

कौलै वाय्-मारक; मळै तारैकळ् पट-शरवर्षा के लगने से; चिलर्-कुछ राक्षसों ने; अळैत्तार्-पुकार मचायी; चिलर् आर्त्तार्-कुछ ने (भीषण) गर्जन किया; चिलर् अळिन्तार्-कुछ मिटे; चिलर् कळिन्तार्-कुछ भागे; चिलर् उळैत्तार्-कुछ तड़पे; चिलर् उयिर्त्तार्-कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी; चिलर् उरुण्डार्-कुछ लोटे; चिलर् पुरण्डार्-कुछ लुढ़के; कुळै ताळ्-गहरे पंक के साथ; तिरै कुरुति कटल्-लहरों से युक्त रक्त-सागर में; चिलर् कुळित्तार्-कुछ डूबे; चिलर् पार् इटै मडिन्तार्-कुछ भूमि पर गिरकर मरे; उडैन्तार्-हारे । ४५६

श्रीराम के संहारक वर्षा-धारों के समान शरों के आकर लगने से कुछ राक्षस त्राहि ! त्राहि ! पुकारने लगे । कुछ राक्षसों ने घोर शब्द किया । कुछ राक्षस वहीं ढेर हो गये । कुछ जान लेकर भागे । कुछ तड़पकर रह गये । कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी । कुछ लुढ़कते हुए गये । कुछ करवट बदलते बेचैन रहे । कुछ लोग कीच से भरे रक्त-सागर में डूबकर संकटग्रस्त हो रहे । कुछ लोग भूमि पर ही गिरकर मरे । कुछ लोग हारकर हटे । ४५६

उडैत्तार्हळै	नहैशैय्दन	रुरुडेरिन	रुडनाय्
अडैन्दार्पडैत्	तलैवीरर्हळ्	पदिनाल्वरु	मयिल्वाळ्
मिडैन्दार्नेडुड्	गडर्त्तानैयर्	मिडल्विल्लिनर्	विरिनोर्
कडैन्दार्वैरु	वुडुमीदैळ्	कडुवार्मेत्तक्	कौडियार् 457

चिरि नोर्-विस्तृत (क्षीर-) सागर को; कडैन्तार्-जिन्होंने मथा उन (देवों और असुरों) को; वैरुवु उर-भयभीत करते हुए; मीतु अँल्लु-ऊपर उठ आये; कटु आम् अँल्ल-विष के समान; कौडियार्-निर्मम; पटै तलै वीरर्कळ् पतित्रालवरुम्-सेनापति चौदहों ने; उडताय्-एक साथ; उडैन्तार्कळै-हारकर भागनेवालों की; नैक् चैयत्तर्-हँसी उड़ाई; उरुळ् तेरितर्-पहियों वाले रथ पर सवार हो; अयिल् वाळ् मिटैन्तु आर्-भालों और तलवारों को लिये हुए मिल आनेवाली; नैटुम् कटल्

तातैयार्-विशाल समुद्र-सम सेना के साथ; मिटल् विल्लित्तर्-सबल धनु वाले हो; उटताय्-एक साथ; अटैन्तार्-(वे) आये । ४५७

चौदहों सेनापतियों ने यह देखा तो उनका परिहास किया । देवों और असुरों को भयभीत करते हुए जो विष क्षीरसागर से उठ आया था, उस विष के समान बड़े ही भयंकर और खूनी वे सेनापति एक साथ निकलकर रथों पर युद्धभूमि में आये । उनके साथ बड़ी सेना आयी, जिसके वीर भालों और तलवारों से युक्त थे । सेना विपुल सागर के समान थी और वीरों से खूब भरी थी । ४५७

नाहत्तति	यौरुविल्लियै	नळिमुप्पुर	मुन्ताळ
माहत्तिडै	वळैयुर्त्तुन	वैन्नवळलै	मदियार्
आहत्तैल्ल	कनल्हणवळि	युहवैर्त्तुदि	रळन्डार्
मेहत्तति	नैडुविल्लियै	वळैत्तार्शैर	विळैत्तार् 458

मुन्ताळ-प्राचीनकाल में; नाकम् तति और विल्लियै-(मेरु) पर्वत को श्रेष्ठ धनु बनाकर जिन्होंने लिया था, उन (मेरुधन्वा) को; नळि मुप्पुरम्-बड़े त्रिपुरो ने; माकत्तु इटै-आकाश में; वळैयुर्त्तुन अँन-घेर लिया हो ऐसा; मेक तति नैट्ट विल्लियै-मेघश्याम, उत्तम दीर्घ धनु के स्वामी कोदण्डपाणी; वळलै-प्रभु श्रीराम को; मतियार्-कुछ न माननेवाले; आकत्तु अँळ कन्तल्-शरीर के अन्दर उठनेवाली आग को; कण् वळि उक उर्त्तु-आँखों द्वारा निकलने देते हुए; अँतिर् अळन्डार्-सामने द्वेष करते हुए; वळैत्तार्-घेरकर; चैर विळैत्तार्-युद्ध किया । ४५८

वे श्रीराम का महत्त्व जान नहीं पाये । उनके मन में उनके प्रति आदर ही नहीं था । मेघसम दीर्घ धनु के साथ दृश्यमान उन उदार प्रभु श्रीराम को उन्होंने आकर ऐसा घेरा, जैसा मेरुधन्वा शिवजी को त्रिपुरों ने आकाश में घेर लिया था । उनकी आँखों से मानो उनके अन्दर की कोपाग्नि निकल रही थी । बड़े वैर के साथ वे घेर गये । ४५८

अँय्दार्पल	रैर्त्तिन्दार्पल	रैळ्ळुवोच्चित्तर्	मळ्ळुवाल्
पौय्दार्पलर्	पडैत्तार्पलर्	किडैत्तार्पलर्	पौरुप्पाल्
पैय्दार्मळै	पिदिर्त्तार्रैरि	पिर्त्तैवाळैयिर्	इरक्कर्
वैदार्पलर्	तैळित्तार्पलर्	मलैयामैन	वळैत्तार् 459

पिर्त्तै वाळ् अँयिर्त्तु-अपूर्ण चन्द्र-सम वक्रदांत वाले; अरक्कर्-राक्षसों में; पलर्-अनेकों ने; अँय्त्तार्-शर चलाये; पलर्-अनेकों ने; अँळ्ळु-दण्ड; ओच्चित्तर्-फेंके; पलर् मळ्ळुवाल् पौय्त्तार्-अनेकों ने परशुओं से वार किया; पलर् पुटैत्तार्-अनेकों ने मारा; पलर् किडैत्तार्-अनेक पास आये; पलर् पौरुप्पाल् मळ्ळै पैय्त्तार्-अनेकों ने पर्वतों को वर्षा के समान लगातार फेंके; अँरि पित्तिर्त्तार्-(अनेकों ने) आग बरसायी; पलर् वैत्तार्-अनेकों ने गाली दी; पलर् तैळित्तार्-अनेक डाँटे; मलै आम् अँत वळैत्तार्-पर्वत के समान घेर लिया । ४५९

उनके साथ कितने ही राक्षस-वीर आये थे । चन्द्रकला के समान श्वेत और वक्रदाँत वाले उनमें अनेकों ने श्रीराम पर बाण चलाये । कितनों ने दण्ड फेंके । परशु और अन्य हथियार चलानेवाले भी अनेक, अनेक थे । अनेक उन पर झपटने आये । अनेक राक्षसों ने पर्वतों को उठाकर वर्षा के समान निरन्तर फेंका । अनेकों ने आग बरसायी । अनेकों ने गालियाँ दीं और अनेक डाँटे । अनेक पर्वतों के समान श्रीराम के चारों ओर आकर उनको घेर गये । ४५९

तेर्पूण्डत्त	विलङ्गियावैयुज्	जिलैपूण्डेळु	कणैयाल्
पार्पूण्डत्त	मदमाकरि	पलिपूण्डन	परिमात्
तार्पूण्डत्त	बुडल्पूण्डिल	तलैवैङ्गदिर्	तळिवन्
दूर्पूण्डन	पिरिन्दाळैत्त	विरिन्दाख्यि	रुलन्दार् 460

चिलै पूण्डु अँळु—(श्रीराम के) कार्मुक से छूटे हुए; कणैयाल्—शरों से; तेर्पूण्डत्त—रथों में जुते हुए; विलङ्कु यावैयुम्—जानवर सब; पार् पूण्डत्त—भूमि पर गिरकर मरे; मत मा करि—मत्त, बड़े-बड़े गज; पलि पूण्डत्त—बलि चढ़े; तार् पूण्डत्त परि मा—हारों से युक्त अश्व; उटल् तलै पूण्डिल—शरीरों से सिर-जुड़े नहीं रहे; चैरु विळैत्तार्—युद्ध करने जो आये थे, वे; वैम् कतिर् तळि वन्तु—गरम सूर्य को घेर जो आया; ऊर् पूण्डत्त—उस परिवेश के; पिरिन्ताल् अँत्त—हटने के समान; उयिर् उलन्तार्—प्राण खोकर; विरिन्तार्—सब जगह अलग-अलग पड़े रहे । ४६०

श्रीराम ने तब शर चलाये । उनके कोदण्ड से निकले बाणों के लगने से राक्षसों के रथों में जुते हुए जानवर भूमि पर गिरकर मर गये । मत्तगज बलि चढ़े । हारों से भूषित अश्व सिर से विहीन हो गये । उनको घेर आये हुए राक्षस सूर्य के परिवेश के समान, जो जल्दी दूर हो जाता है, मर गये । उनकी लाशें सर्वत्र फैली पड़ी रहीं । ४६०

माल्पोत्तिय	मरुवोरुडन्	मलैयीत्तुड	तळिशैम्
पाल्पोत्तित्त	नदियिर्किळर्	पडियौत्तदु	पत्तिवान्
मेल्पोत्तिय	कुळुविण्णवर्	विळिपोत्तित्तर्	विरैवैम्
काल्पोत्तित्तर्	नमन्तूदुवर्	कडिदुर्इयिर्	कवर्वार 461

माल् पोत्तिय—मूर्च्छा में पड़े रहे; मरुवोर् उटल्—वीरों के शरीर; मलै औत्तु—पर्वतों से तुले; उटल् अळि—उन शरीरों से निकलनेवाले; चैम् पाल् पोत्तित्त—रक्त से भरी; नतियिल्—नदियों के कारण; किळर् पटि औत्ततु—दृश्यमान भूमि के समान लगे; पत्ति वान् मेल्—शीतल आकाश पर; पोत्तिय कुळु विण्णवर्—एकत्रित हुए देवों ने; विळि पोत्तित्तर्—अपनी आँखें मूँद ली; नमन् तूतुवर्—यमदूतों ने; कटितु उर्इ—जल्दी आकर; उयिर् कवर्वार—(राक्षसों के) प्राण हरकर; मिटल् वैम्—सशक्त और भयंकर; काल् पोत्तित्तर्—अपने पैरों से (युद्धभूमि को) आच्छादित कर दिया । ४६१

मूर्च्छित-वीरों के शरीर पर्वतों के समान लगे । उनके शरीरों से निकलनेवाले रक्त की भरी नदियों के कारण भूमि शोभित लगी । आकाश में देवों ने भीड़ लगायी थी । उन्होंने यह दृश्य देखकर अपनी आँखें मूँद लीं । उस युद्धभूमि को यम के दूतों के पैरों ने ढँक दिया । वे जल्दी-जल्दी राक्षसों के प्राण लेने आ-जा रहे थे । ४६१

पेयेडिनर्	शंखेदुट्टु	पित्तेडिनर्	पिलवाय्त्
तीयेडिह	लरियेडिनर्	करियेडिनर्	शंडिवाय्
नायेडित्त	तलैमेनडु	नरियेडित्त	वैरिहाल्
वायेडिय	वडिवाळियिन्	वानेडित्तर्	वन्दार् 462

पिल वाय्-बिल के समान मुख वाले; ती एडु इकल्-बड़ी आग के समान लड़नेवाले; अरि एडित्तर्-सिंहों पर सवार; करि एडित्तर्-गजों पर सवार; चेंडु वेदुट्टु अँल्लु-युद्ध चाहते हुए आये; पेय् एडित्तर्-भूतग्रस्त; पित्तु एडित्तर्-उन्मत्त (राक्षसों के); तलै मेल्-सिरों पर; चेंडिवाय्-भीड़ लगाकर; नाय् एडित्तर्-कुत्ते चढ़े; नैटु नरि एडित्तर्-लम्बी कतार में सियार चढ़े; अँरि काल्-आग उगलनेवाले; वाय् एडिय-मुखों से युक्त; वडि वाळिन्-तीक्ष्ण वाणों से; वान् एडित्तर्-(हत होकर) आकाश में चढ़े; वन्दार्-आये । ४६२

राक्षस, जिनके मुख बिल के समान थे, भयंकर सिंहों पर और गजों पर सवार होकर चाव के साथ भूतग्रस्त या उन्मत्त के समान युद्ध करने आये थे । पर वे मर गये । उनकी लाशों पर अब कुत्ते, सियार आदि चढ़ रहे थे । वे राक्षस श्रीराम के अग्निमुख और तीक्ष्ण वाणों से हत हुए थे । इसलिए उनकी आत्माएँ स्वर्ग पहुँच गयीं । ४६२

तलैशिनन्दित्त	विळिशिनन्दिन	तळल्शिनन्दिन	तरैमेल्
मलैशिनन्दिन	पडिशिनन्दिन	वरुशिनन्दुर	मळ्ळबोल्
शिलैशिनन्दित्त	कणैशिनन्दित्त	तेर्शिनन्दित्त	तिशैय्
डुलैशिनन्दित्त	पौडिशिनन्दित्त	वुयिर्शिनन्दित्त	वुडलम् 463

मळ्ळ पोल्-मेघ (वर्षा) के समान; चिलै चिन्तित्त-धनु से निकले; कणै चिन्तित्त-शर फँले; तलै चिन्तिन्-सिर गिरे; विळि चिन्तित्त-आँखें बिखरीं; तळल् चिन्तित्त-आग फँली; वरु चिन्तुरम्-आगत गज; तरै मेल्-भूमि पर; मलै चिन्तित्त-पट्टि पोल्-पर्वत बिखरे पड़े हों, इस प्रकार; चिन्तित्त-बिखरे पड़े थे; तेर् चिन्तित्त-रथ टूटकर छितराये; तिचै ऊटु-दिशाओं में सर्वत्र; उलै चिन्तित्त-सट्ठी से निकली; पौडि चिन्तित्त-आग के कणों के समान अंगार बिखरे; उडलम्-शरीरों ने; उयिर् चिन्तित्त-प्राण छोड़ दिये । ४६३

श्रीराम के कोदण्ड ने वर्षा की धारों के समान शर बरसाये । इसलिए राक्षसों के सिर छितरे; आँखें बिखरीं और उन आँखों से अंगार छितरे । उन शरों से आहत होकर गज पर्वत के समान यत्न-तत्न पड़े रहे और रथ

टूटकर गिरे । दिशाओं में अंगारे उड़े और राक्षसों के शरीरों ने प्राण त्याग दिये । ४६३

पडैत्तलै	वरुमवर्	पडैत्त	तेरुहळुम्
उडैत्तडम्	बडैहळु	मौळिय	वुडुडैर्
विडैत्तडर्न्	दैर्न्तदवर्	वीरन्	वाळियाल्
मुडैत्तवैड्	गुरुदियिन्	कडलिन्	मूळ्हितार् 464

पटै तलैवरुम्-सेनापति; अवर् पटैत्त तेरुहळुम्-उनके अपने रथ; उडैत्तडम्-उनके अपने बड़े-बड़े युद्ध-हथियार; मौळिय-इनको छोड़कर; उडुडैर्-(युद्धभूमि में) आकर; वैर्न्तदवर्-(श्रीराम के) सम्मुख; विडैत्तु-तनकर; अडैत्तु-युद्ध करके; वैर्न्तदवर्-सामना जिन्होंने किया, वे सब; वीरन् वाळियाल्-वीर (श्रीराम) के शरों द्वारा; मुडैत्त-दुर्गन्धपूर्ण; कुरुदियिन्-रक्त के; कडलिन्-समुद्र में; मूळ्हितार्-डब (मिट) गये । ४६४

सब मर-मिट गये । केवल वे चौदह सेनापति, उनके रथ और उनके पास रहे हथियार—ये ही बचे । अन्य सभी, जो दम्भ के साथ श्रीराम के सामने लड़ने आये थे, श्रीराम के बाणों से आहत हुए और दुर्गन्धपूर्ण रक्त-सागर में डूबकर मर गये । ४६४

गुडुडु नोक्किन् तौडर्न्तु शेनैयिल्, अडुडु तलैयैन्तु माक्क कण्डिलर्
तेरुडु रैयिक्क डिर्हि तारुशित्त, मुडुडु रिरामन्तै मुडुहु तेरितार् 465

गुडुडु उडु नोक्किन्-सिर घुमाकर देखा; तौडर्न्तु शेनैयिल्-अनुगामिनी सेना में; तलै अडुडु अंतुम्-सिर न कटे ऐसा कहने योग्य; माक्क कण्डिलर्-शरीर नहीं देखे; चित्तम् तिरुकिन्तार्-क्रोध से ऐंठे; रैयिक्कळु-तेरुडु-दांत चबाये; मुडुहु तेरितार्-तेजी से चलाये जानेवाले रथों के होकर; इरामन्तै मुडुडु-श्रीराम को घेर लिया (चौदहों सेनापतियों ने) । ४६५

सेनापतियों ने सिर घुमाकर चारों ओर देखा । अपनी सेना के किसी वीर को नहीं देख सके, जिसके शरीर का सिर कटा नहीं हो ! उनके कोप का पारा चढ़ गया । दांत पीसे । और रथ को सवेग चलाते हुए उन्होंने श्रीराम को चारों ओर से घेर लिया । ४६५

एळिरु तेरुम्बन् दिमैप्पिन् मुन्बिडैच्, चूळ्वन्त कणैहळिर् रुणिय नूडित्तान्
आळियु माणियुम् माळु मडुवै, अळिवैड् गालैरि योडुग लीत्तवे 466

वन्तु इटै चूळ्वन्त-पास आकर घेरनेवाले; एळु इरु तेरुम्-(सात के दो) चौदहों रथों को; दिमैप्पिन् मुन्-पलक मारने के अन्दर; कणैहळिल्-अपने बाणों से; रुणिय नूडित्तान्-(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न क दिया; आळियुम् आणियुम् आळुम्-चक्रों; धुर और सारथी से; अडु-हीन होकर; अवै-वे; अळिवैड् कालु अडि-मयंकर युगान्तकालीन जंझा द्वारा प्रताड़ित; ओडुक्कलु औत्त-पर्वत-समान नष्ट हुए । ४६६

पल भर में श्रीराम ने उनके चौदहों रथों को अपने वाणों से तोड़कर चूर-चूर कर दिया। पहिये और धुर ही नहीं, सारथी भी नहीं बचे। युगान्त के झंझे से जंजर हुए पर्वतों के समान वे रथ (नष्ट) हो गये। ४६६

अळिन्दन	तेरव	रवनि	कोण्डुह
इळिन्दनर्	वरिशिल	येडुत्त	कयिनर्
ओळिन्दिलर्	शरङ्गळ	युरमि	नेरुनप्
पोळिन्दनर्	पोळिहनल्	पोडिक्कुड्	गण्णिनार् 467

तेर् अळिन्तत अवर्-रव-नष्ट हुए वे; अवति कोण्ट उक-भूमि में दरार बनाने हुए (उतनी उग्रता से); इळिन्ततर्-उतरे; वरि चित्त अंडुत्त कयिनर्-बन्धनपुस्त धनु हाथ में लेकर; मिक्कु कत्तल् पोडिक्कुम् कण्णिनार्-अधिक अंगार निकालनेवाली आँखों के साथ; शरङ्गळ-शरों को; ओळिन्तिलर् पोळिन्ततर्-निरन्तर बताये। ४६७

रथों को नष्ट-भ्रष्ट पाकर वे सेनापति जल्दी-जल्दी रथों पर से ऐसे कूदे कि भूमि पर दरार पड़ गयी! धनुर्धर उन्होंने आँखों से अंगार उगलते हुए श्रीराम पर निरन्तर बाणवर्षा की। ४६७

नूडिय	शरमैला	नुरुङ्ग	वाळियाल्
ईरुशैय्	दवर्शिल	येळी	डेळैयुम्
आडित्तो	डाशुमो	रिरण्डु	मम्बिनाल्
कूशैय्	दमर्त्ततीळिड्	कोदिप्प	नोक्किनाल् 468

चरम् अँलाम्-सभी बाण; नूडिय नुरुङ्क-मिटकर चूर हुए; वाळियाल् ईड् चैय्तु-ऐसा अपने बाणों द्वारा मिटाकर; अवर् चित्त एलोट्टु एलैयुम्-उनके चौदहों बाणों को; आडित् ओट्टु आडुम् ओर् इरण्डुम्-छः छः ओर दो (= चौदह); मम्बिनाल्-बाणों से; कूड् चैय्तु-छण्ड-छण्ड करके; दमर्त्ततीळिल् कोदिप्प-उनके युद्ध-कर्म की भयंकरता को; नोक्किनाल्-दूर किया (श्रीराम ने)। ४६८

श्रीराम ने न केवल उन बाणों को नहीं मिटाया बल्कि उनके चौदहों बाणों के भी चौदह बाण चलाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उन वीरों के युद्धोत्साह को और युद्ध की भयंकरता को दूर कर दिया। ४६८

विल्लिल्लन्	दत्तैवरुम्	वैकुळि	मोक्कोळक्
कल्लुयर्	नेडुवरै	कडिटि	नेन्वितार्
ओल्लैयि	नुरुत्तुयर्	विशुम्बि	नोङ्गिनिन्
रैल्लैयिल्	पोडियुह	वैरिदन्	मेयितार् 469

अत्तैवरुम्-वे सब; विल्ल इल्लन्तु-चाप छोकर; वैकुळि मो कोळ-क्रोध के उमड़ने से; कल् उयर् नेडु वरै-पत्थर के बड़े पर्वतों को; कडितित् एन्वितार्-वेग के साथ उठाकर; ओल्लैयित्-जल्दी; नुरुत्तु-कोप करके; उयर् विशुम्बित् ओङ्कि नित्तु-आकाश में ऊपर स्थित होकर; अँल्लैयिल् पोडि उक-अगणित अंगार छितराते हुए; अँडितल् मेयितार्-फँकने लगे। ४६९

उन सेनापतियों को धनुष-विहीन होने से अपार क्रोध हुआ । वे पत्थर के बड़े पर्वतों को उठा-उठाकर ऊपर आकाश में खड़े होकर श्रीराम पर फेंकने लगे । उनकी गति इतनी तीव्र थी कि उनसे अंगार निकले और फैले । ४६९

कलैहळिन्	परुङ्गडल्	कडन्द	विल्लित्तान्
इलैहौळ्वम्	बहळिये	ळिरण्डु	वाङ्गित्तान्
कौलैहौळ्वम्	जिलैयीडु	पुरुवड्	गोट्टित्तान्
मलैहळुन्	दलैहळुम्	विळुन्द	मण्णिले 470

कलैहळिन् पेरुम् कटल्-(६४) कलाओं के बड़े सागरों को; कटन्त-जिन्होंने पार किया था (निपुण); विल्लित्तान्-उन कोदण्डपाणी ने; इलै कौळ्-पत्र-सम फल वाले; व्वम् पकळि-भयंकर अस्त्र; एळ् इरण्डु-सात के दो; वाङ्गित्तान्-लेकर; कौलै कौळ् व्वम् चिलै ओटु-मारक धनुष और; पुरुवम्-भौहों को; कोट्टित्तान्-झुकाया (कुंचित किया); मलैहळुम् तलैहळुम्-पर्वत और सिर; मण्णिले विळुन्त-भूमि पर गिर गये । ४७०

श्रीराम चौंसठ कलाओं के पारंगत धनुर्धर थे । उन्होंने चौदह पत्ताकार सिर वाले बाण लिये । उन भयंकर बाणों को मारक धनु पर रखा । धनु को झुकाया जब उनकी भौहें भी झुकीं ! उसके फलस्वरूप पर्वत और सेनापतियों के सिर एक साथ भूमि पर गिर गये । ४७०

पडैत्तलै	वीररुहळ्	पडलुम्	बल्पडै
पुडैत्तडर्त्	तार्त्तैरि	पुहैयुड्	गण्णित्तार्
किडैत्तत्त	ररक्करुहळ्	कीळु	मेलुमोय्त्
तडैत्तनर्	तिशैहळै	यमर	रञ्जित्तार् 471

पडै तलै वीररुहळ्-सेनापति वीरों के; पडलुम्-हत हो जाने पर; अरक्करुहळ्-(बचे रहे) राक्षस; पल् पडै पुडैत्तु-अनेक हथियारों से प्रहार करके; आर्त्तु-नारे लगाकर; अरि पुक्कैयुम् कण्णित्तार्-आग और धुएँ सहित आँखों के साथ; किडैत्तत्तर्-(श्रीराम के) समीप आकर; तिचैकळै-चारों दिशाओं में; कीळुम् मेलुम् मोय्त्तु-नीचे और ऊपर भीड़ लगाकर; अडैत्तत्तर्-भर गए; अमरर् अञ्चित्तार्-देव डरे । ४७१

सेनापति वीर हत हो गये तो अन्य बचे हुए राक्षस क्रोध करके श्रीराम के समीप पिल पड़े और सभी दिशाओं में सर्वत्र भर गये । उनकी आँखों से आग और धुआँ-सा निकल रहा था । वे विविध प्रकार के अनेक हथियार चलाने लगे । उनकी संख्या, उनका क्रोध और युद्ध देखकर देव भी डर गये । ४७१

मुळङ्गित्त	पेरुम्बणै	मूरि	माल्हरि
मुळङ्गित्त	वरिशिलै	मुडुहु	नाणैलि

मुळङ्गित	शङ्गोलि	पुरवि	मौयत्तुड
मुळङ्गिन	वरक्कर्दम्	मुहिलि	नारप्परो 472

पैरम् पणै—बड़े-बड़े मारु ढोल; मूरि माल् करि—बड़े और बलवान करी; मुळङ्कित—नाद कर उठे; वरि चिलै—बन्धनयुक्त धनुओं की; मुट्टु नाण् ओलि—कठोर प्रत्यंचा की टंकार; मुळङ्कित—उठी; चङ्कु ओलि—शंखनाद मुळङ्कित—हुए; पुरवि मौयत्तु उड—अश्व ठस मिलकर आये; अरक्कर् तम् मुकिलिन् आरप्पु—राक्षसों का मेघगर्जन; मुळङ्कित—उच्च स्वर में उठा । ४७२

बड़े ढोलों का नाद, गजों की चिंघाड़, भयंकर बलवान चापों की टंकार, शंखध्वनि आदि तुमुल नाद उठा । अश्व ठस जुंटा आये और राक्षसों का मेघ-सा गर्जन उच्च रहा । ४७२

वैम्बडै	निरुदर	वीश	विण्णिडै	मिडैन्द	वीरन्
अम्बिडै	यरुक्कच्	चिन्दि	यडुत्त	विळुमैन्	इञ्जि
उम्वर	मिरियल्	पोत्ता	रुलहैला	मुलैन्दु	शाय्न्द
कम्बमि	इशैयि	निन्ड	कळिळ्कण्	णिमैत्त	वन्ड्रे 473

निरुदर—राक्षसों के; वीच—फेंकने से; वैम् पटै—(वे) भयंकर हथियार; विण् इटै मिडैन्त—जो आकाश में घने रूप से भरे; वीरन्—वीर श्रीराम के; अम्पु इटै अरुक्क—शरों के मध्य घुसकर काटने से; चिन्ति अडुत्त—छितरकर वेकार हुए; विळुम्—वे गिरेंगे; अँन्डु अञ्चि—ऐसा डरकर; उम्पुक्क—देव; इरियल्—अलग; पोत्तार्—हट गये; उलकु अँलाम्—सारे लोक; उलैन्तु—अस्त-व्यस्त होकर; चाय्न्त—अस्थिर हुए; कम्पम् इल्—अचल; तिचैयिल् निन्ड—दिशाओं में खड़े रहे; कळिळ्म—गजों ने भी; कण् इमैत्त—आँखें मूंद लीं । ४७३

राक्षसों ने जो भयंकर हथियार फेंके, वे आकाश में घने रूप से भरे आये । पर वीर श्रीराम ने उनको बीच में ही खण्डित कर वेकार करा दिया । 'वे वेकार खण्ड हम पर गिरेंगे' —इस डर से देव भी हटकर भाग गये । सारे लोकों के वासी भी अस्तव्यस्त होकर शिथिल पड़ गये । अचल रहनेवाले दिग्गजों ने भी डर से अपनी आँखें मूंद लीं । ४७३

ॐ अत्तलैत्	तानैयन्	नळवि	लाडुलन्
मुत्तलैक्	कुरिशिल्वाँन्	मुडियन्	मुक्कणान्
कैत्तलैच्	चूलमे	यनैय	काट्चियान्
वैत्तलैप्	पहळियान्	मळैशैय्	विल्लितान् 474

अ तलै—तब; अळविल् तानैयन्—अपार सेना वाले; आडुलन्—शक्तिमान; पौन् मुट्टियन्—स्वर्णकिरीटधारी; मुत्तलै कुरिचिल्—तीन सिरो का राजा त्रिशिरा; मुक्कणान्—त्रिनेत्र (शिवजी) के; कै तलै—हाथ में रहनेवाले; चूलमे अतैय—त्रिशूल की ही तरह; काट्चियान्—दृश्यमान; वै तलै पळियान्—तीक्ष्ण सिर (फल) वाले बाणों का रखनेवाला; मळै चैय्—(शर-) वर्षक; विल्लितान्—धनुर्धर । ४७४

तब त्रिशिरा अपनी सेना के साथ बढ़ आया । कैसा था वह ? अपार सेना का स्वामी, अगाध शक्ति का नाथ; स्वर्णकिरीट-धारी और तीन सिरों वाला था वह । वह त्रिनेत्र शिवजी के हाथ के त्रिशूल के समान दृश्यमान था । उसके पास तीक्ष्णमुखी भयंकर शर थे । उसका शरासन भयंकर रूप से शरवर्षक था । ४७४

अन्तव	नडुवुड	वलि	याळियो
दँन्तवन्	दँङ्गणु	मिरैत	शैनेयुळ्
तन्तिहर्	वीरनुन्	दमियन्	विल्लितन्
तुन्तिह	ळिडैयदोर्	विळक्किड्	तोन्डितान् 475

अन्तवन्-वह; नडुवु उड-मध्य में रहा; ऊळि आळि-युगान्त समुद्र; ईतु अँन्त-यह है, ऐसा; वन्तु-आकर; अँङ्कणुम् इरैत-सब जगह गौर के साथ आ गई; चेत उळ्-उस सेना के अन्दर; तन् निकर् वीरनुम्-स्वोपम वीर भी; तमियन् विल्लितन्-अकेले, धनु के साथ; तुन् इरुळ् इटै-घने अन्धकार के मध्य; ओर् विळक्किल्-एक दीप के समान; तोन्डितान्-शोभित रहे । ४७५

उसको मध्य में रखते हुए उसकी अपार सेना युगान्तकालीन समुद्र के समान उमड़ी आयी । सब स्थानों पर उसका विस्तार था । उस सेना के मध्य श्रीराम, जिनकी तुलना का वीर और कोई नहीं था, हाथ में धनुष लिये अकेले स्थित थे । वे घने अंधकार के मध्य रहनेवाले दीप के समान शोभे । ४७५

ओङ्गिय	वाळित	नुरुमि	नारूपपितन्
वोङ्गिय	वेहत्तन्	वैय्य	कण्णितन्
आङ्गव	नणिक्कदि	रणिह	ळाहनेर्
ताङ्गिन	निरामनुञ्	जरत्तिन्	डानैयाल् 476

ओङ्किय वाळितन्-उठाई हुई तलवार वाले; उरुमिन् आरूपपितन्-वज्रनिनादी; वोङ्किय वेकत्तन्-बहुत वेगवान; वैय्य कण्णितन्-भयंकर आँखों वाला; आङ्कु अवत्-वहाँ (जो आया) उस (त्रिशिरा) को; अणिक्कु-सेना भागों के; नेर्-सामने; अणिकळ् आक-सेनाओं के रूप में; चरत्तिन् तानैयाल्-शरों की सेनाओं (पंक्तियों) से; नेर् ताङ्कितन्-श्रीराम ने सामना किया । ४७६

त्रिशिरा तलवार उठाये हुए तुमुल नाद के साथ नारे लगाते हुए आया । वह बड़ा वेगवान था । उसकी आँखें क्रूर और भयंकर थी । उसकी सेना के सामने श्रीराम खड़े रहे । श्रीराम ने उसकी सेना के भागों के सामने अपने शरों की पंक्तियों को ही पलटनों के रूप में स्थापित किया और युद्ध किया । ४७६

ताळिडै यरुन तलैयु मरुन, तोळिडै यरुन तौडैह लरुन
वाळिडै यरुन मळुवु मरुन, कोळिडै यरुन कुडैह लरुन 477

ताळ् इटै अरुन-(राक्षसों के) पैर बीच से कटे; तलैयुम् अरुन-सिर अलग हुए; तोळ् इटै अरुन-भुजाएँ बीच से कटीं; तौडैकळ् अरुन-ऊर कटे; वाळ् इटै अरुन-तलवारें नष्ट हुईं; मळुवुम् अरुन-परशु भी मिटे; कोळ् इटै अरुन-उनका बल भी मध्य में बेकार हुआ; कुटैयुम् अरुन-छत्र भी छिन हुए । ४७७

राक्षसों का क्या हाल हुआ ? पैर कटे, सिर लुढ़के, हाथ कटे और ऊर खण्डित हुए । तलवारें कटीं, परशु मिटे और छत्र नष्ट हुए । राक्षसों का बल भी बेकार हुआ । ४७७

कौडियौडु	कौडिज्जिरुप्	पुरविक्	कूट्टरुप्
पडियौडु	पडिन्दन	परुदित्	तेरुप्पणै
नैडियवैडु	गडहरि	पुरण्ड	नैरुिवीळ्
इडियौडु	मिडिन्दुवीळ्	शिहर	मैन्नवे 478

पहति तेर् पणै-चक्रव्यूह में रहे रथों के समूह; कौटि ओट्टु-ध्वजाओं के साथ; कौटिज्ज-‘कौडिज्जु’ (रथी के स्थान के सामने रहनेवाला कमल के आकार का वह अवलम्ब, जिस पर हाथ रखकर आराम लिया जाता है); इरु-टूटे, इसलिए; पुरवि कूट्टु अरु-अश्व अलग हुए और मिटे, इसलिए; पटि ओट्टु पटिन्दन-भूमि पर गिरकर नष्ट हुए; नैरुिवीळ्-अपने ऊपर गिरे; इटि ओट्टु-वज्र के साथ; इटिन्दु वीळ्-टूटकर गिरनेवाले; चिकरम् मैन्नवे-पर्वतशिखरों के समान; नैडिय वैम् कट करि-बड़े, भयंकर और मत्त गज; पुरण्ड-लोट गये । ४७८

चक्रव्यूह में रथ थे । उनकी ध्वजाएँ कटीं । उनके अन्दर रहने वाले कमलाकार अवलम्ब (जिनका रथी अपनी थकन मिटाने के लिए सहारा लिया करते हैं) खण्ड हुए । अश्व भी मरकर अलग हो गये । फलस्वरूप रथ ही भूमि पर सिर के बल गिरे और टूट गये । बड़े-बड़े भयंकर मत्तगज भी वज्राहत पर्वत-शिखरों के समान, जो वज्र के साथ ही नीचे गिरते हैं, नीचे गिरकर लुढ़क गये । ४७८

अरुन	शिरमैन्न	वरिद	रेरुलर्
कौरुवैम्	जिलैच्चरडु	गोत्तु	वाङ्गुवार्
इरुल	ताळैन	वैळुन्दु	विण्णितैप्
परुनितर्	मळैयैन्प्	पडैव	ळङ्गुवार् 479

चिरम् अरुन अँत-सिर कट गये, यह बात; अरितल् तेरुलर्-(जो) समझ न सके, वे; कौरु वैम् चिलै-बलवान भयंकर धनुषों में; चरम् गोत्तु वाङ्गुवार्-शर-संधान करते थे; ताळ् इरुल-पैरों को न कटा; अँत-समझकर; वैळुन्दु विण्णितै परुनितर्-उठकर आकाश में खड़े होकर; मळै अँत-वर्षा के समान; पटै वळङ्गुवार्-हथियार फेंके (कुछ राक्षसों ने) । ४७९

राक्षसों की विचित्र शक्ति और श्रीराम के शरों की तीव्रगति की विशेषता देखिए। सिर कटकर गिर गये तो भी राक्षस धनुष पर शर-संधान कर रहे हैं, मानो उनको विदित ही नहीं हुआ हो कि उनके सिर कट गये। कुछ राक्षसों के पैर कट गए; पर वे बिना उसकी सुध लिये ही आकाश में उछल उठे और वहाँ से वर्षा के समान हथियार बरसा रहे हैं ! ४७९

केडहत् तडक्कैय किरियिन् शोइत्त, आडहक् कवशत्त कवन्द माडुव
पाडहत् तरम्बैयर् मरुळप् पल्विद, नाडहत् तौळिलत्त नान्द हत्तत्त 480

कवन्तम् आडुव-कबन्ध (सिर कटे रुण्ड) जो नाच रहे थे; केटक तट कैय-ढाल सहित विशाल हाथों वाले थे; किरियिन् तोइत्त-पर्वत-सम आकार के थे; आटक कवचत्त-हाटक-कवच वाले थे; नान्तकत्तत्त-तलवारधारी थे; पाटकत्तु अरम्पैयर्-पाटक (पैजनी ?) पहनी हुई अप्सराओं को; मरुळ-विस्मित करते हुए; पल् वित-विविध अनेक; नाटक तौळिलत्त-नृत्य-कर्म में लीन थे। ४८०

युद्धभूमि में कबन्ध ऐसे नाच रहे हैं कि पैजनीविभूषित अप्सराएँ भी उनके विविध नाच देखकर विस्मय से हार मान लेती हैं ! गिरि के समान उन कबन्धों के एक हाथ में ढाल और दूसरे हाथ में तलवार है। वे हाटक-कवच-धारी हैं। ४८०

कवरिवेण् कुडैयैनु नुरैय कैम्मलैच्, चुवरिन कवन्दमाळ् शुळिय तण्डुइप्
पवरित्तप् पडुमणि कुविककुम् वण्णैय, उवरियैप् पुदुक्किन् वुदिर वाइरो 481

उतिर आड-रक्त-नदियाँ; कवरि वेण् कुटै अंतुम्-चँवर और छत्र रूपी; नुरैय-झागों वाली थीं; कैम् मलै चुवरित्त-गज रूपी तटों की; कवन्तम् आळ् चुळिय-कबन्ध जिनमें डूब जायें, ऐसे आवर्त वाली; तण् तुइ-शीतल घाटों की; पवर इत्त-विविध प्रकार के समूहों के; पटु मणि-दिखनेवाले रत्न; कुविककुम्-जिनमें आकर ढेरों में पाये जाते हैं, उन; वण्णैय-सभीपवर्तों खेतों वाली; उवरियै पुदुक्किन्-समुद्र को नया रंग-रूप देनेवाली हैं। ४८१

राक्षसों के मृत-शरीरों से जो रक्त बहा, वह नदियाँ बन गया। उन नदियों में चामर और श्वेत छत्र झाग के स्थान में थे। गज तट बने। आवर्त ऐसे थे जिनमें कबन्ध डूब जाते थे। शीतल घाट थे। उस नदी द्वारा अनेक रत्न बहते आये, जो पास के खेतों में जा पड़े रहे। उन नदियों ने समुद्र को नया रंग-रूप दिला दिया। ४८१

चण्डवैड्	गडुङ्गणै	तडियत्	ताज्जिल
तिण्डिउल्	वळैयैयिउ	इरक्कर्	तेवराय्
वण्डुळल्	पुरिहुळल्	मडन्दै	मारीडुम्
कण्डत्तर्	तम्मुडक्	कवन्द	नाडहम् 482

चण्ड वेंम् कटुम् कणै-प्रचण्ड और अति कठोर (श्रीराम के) बाणों ने; ताम् तटिय-प्रहार कर हत किया, इसलिए; चिल-कुछ; तिण् तिरुल्-अति बली; वळ्ळै अयिरु अरक्कर-वक्रदांत वाले राक्षस; तेवराय्-देव बनकर; वण्डु उळल्-भ्रमरावृत; पुरि कुळल्-वेणी वाले केशों की; मटन्तैमार् ओटुम्-(देव-) स्त्रियों के साथ; तम् उटै कवन्त-अपने ही कवन्धों के; नाटकम्-नृत्य; कण्टत्तर्-देखकर आनन्दित हो रहे थे । ४८२

श्रीराम के शरों का यह गुण था कि उनसे आहत शत्रु वीर-स्वर्ग पहुँच जाया करते थे । यहाँ भी उनके प्रचण्ड बाणों से आहत वक्रदांतों वाले राक्षस स्वर्ग के देव बन गये । वे वहाँ उन अप्सराओं के साथ, जिनकी वेणी वाले केश पर भ्रमर मँड़रा रहे थे, युद्धभूमि देखने लगे । अपने ही कवन्धों को नाचते देखकर उन्हें मजा आया । ४८२

आय्वळै महळिरो डमर रीट्टत्तर्, तूयवैड् गडुङ्गणै तुणित्त तड्गडोळ्
पेयौर तलैहोळप् पिणङ्गि वाय्विडा, नायौर तलैहोळ नहैयुड् शार्शिलर् 483

आय् वळै मकळिरोट्टु-चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराओं के साथ; अमरर् ईट्टत्तार्-देवगण बने (जो थे, वे) राक्षस; तूय वेंम् कटुम् कणै-पवित्र और भयंकर (श्रीराम के) अस्त्रों से; तुणित्त-कटे; तड्कळ् तोळ्-अपने कन्धों की; और तलै पेय् कौळ-एक ओर प्रेत के खींचते; पिणङ्कि-उससे झगड़कर; वाय् विटा-अपने मुख से न जाने देते हुए; नाय्-कुत्ते की; और तलै कौळ-दूसरी ओर छीनते; नकैयुड्-देखकर हँस रहे थे । ४८३

चुने हुए कंकण-धारिणी अप्सराओं के साथ वे यह भी देख रहे थे कि श्रीराम के पवित्र और प्रचण्ड बाणों से कटे उनके हाथों को कुत्तों ने अपने मुख में ग्रस लिया है; और एक ओर प्रेत उनको छीनने का प्रयास करते हैं और उस ओर कुत्ते अपने मुख से छीनने न देते हुए खींच लेने के प्रयास में लगे हैं । यह देखकर उन्हें मनोरंजन हुआ । ४८३

तैरिहणै	मूळ्हलिर्	रिरन्द	मार्बिनर्
इरुवित्तै	कडन्दुपो	युम्ब	रैय्दिनार्
निरुदरुदम्	बैरुम्बडै	नैडिडु	निन्ऱवन्
औरुवनेन्	ऊळत्ति	नुलैवुड्	शार्शिलर् 484

तैरि कणै-चुने हुए (श्रेष्ठ) शरों के; मूळ्कलिल्-घुस जाने से; तिरुन्त मार्पितर् चिलर्-विदीर्ण छाती वाले कुछ राक्षस; इरु वित्तै कटन्तु-दोनों कर्मों का निराकरण करके; पोय् उम्पर् अय्यित्तार्-स्वर्ग जो जा पहुँचे थे; निरुत्तर् तम् पैरुम् पटै-राक्षसों की सेना; नैटितु-अतिविशाल है; निन्ऱवन्-(सामना करके) स्थित रहनेवाले; औरवन्-एकाकी है; अन्ऱु-सोचकर; उळत्तिन् उलैवु उर्ऱार्-मन में चिंतित हुए । ४८४

श्रीराम के उत्तम बाणों के राक्षसों के शरीर के आर-पार होने से उनकी छातियाँ विदीर्ण हो गयीं। वे पाप-पुण्य दोनों कर्मों का निराकरण हो जाने से स्वर्ग पहुँच गये। वहीं से वे देखते हैं कि युद्धभूमि की स्थिति बड़ी विषम है। राक्षसों की सेना अत्यधिक विशाल है और उनके सम्मुख श्रीराम अकेले खड़े हैं। वे श्रीराम से सहानुभूति करके दुखी हुए। ४८४

कैक्कळि	इनैयवन्	पहळि	कण्डहर
मैयक्कुलम्	वेरौडुन्	दुडैत्तु	वीळ्त्तित्त
सैक्कर	मनत्तोर	वज्जन्	माण्बिलन्
पौयक्करि	कूडिय	कौडुजौड्	पोलवे 485

मै कर मतत्तु—अंजन-सम काले मन के; और वज्जन्—एक वंचक; माण्पु इलन्—गुण-हीन मनुष्य को; पौय करि—झूठी गवाही (देते हुए); कूडिय कौटुम् चोल्—जो कहा, उस घातक वचन; पौलवे—के समान; कै कळिइ अनैयवन्—सूँड़ वाला जानवर (गज) सम श्रीराम के; पकळि—शरों ने; कण्टकर—लोककंटक; मैयकुलम्—राक्षसों के शरीरों की राशि को; वेर् ओटुम्—समूल; दुडैत्तु वीळ्त्तित्त—मार-मिटाय। ४८५

सूँड़ वाले जानवर करी के समान दर्शनीय श्रीराम के बाणों ने लोक-कंटक राक्षसों के शरीरों को समूल मिटा दिया। उनका क्षय होना ऐसा था जैसे अंजन के समान काले मन वाले, कपटी और नीच प्रकृति के आदमी के झूठी गवाही के वचन कहने पर उसका नाश हो जाता है। ४८५

अज्जुदड्	कुरुपहै	यरुत्त	नीदियर्
तज्जैत्त	तन्मय	माक्कुन्	दन्मैपोल्
वज्जहत्	तरक्करै	वळैत्तु	वळ्ळडान्
शौज्जरत्	तूयमैयाड्	रेव	राक्किन्नान् 486

वळ्ळल्—उदार प्रभु श्रीराम ने; अज्जुत्तड्कु उरु—भयावह; पकै अरुत्त—अंतश्शत्रु के नाशक; नीतियर्—नीतिमान ज्ञानियों से; तज्जु अत्त—शरण कहने पर; तन्मयम् आक्कुम् तन्मै पोल्—(ज्ञानी) अपने ही समान (शरणागतों को) बना लेते हैं; उसी प्रकार; वज्जकत्तु अरक्करै—कपटी राक्षसों को; वळैत्तु—लपेट में लेकर; चैम् चर तूयमैयाल्—श्रेष्ठ शरों की पवित्रता द्वारा; तेवर् आक्किन्नान्—देव बना दिया। ४८६

सबको भयातुर करनेवाले कामादि दुर्गुण रूपी शत्रुओं को मिटाकर रहनेवाले ज्ञानियों के पास कोई जाकर यह कहे कि मैं आपकी शरण में आया हूँ, तो वे उसे अपने समान बना लेते हैं। वैसे ही श्रीराम ने उन कपटी राक्षसों को अपने शरों के दायरे के अन्दर बलात् लाकर उन्हें मारा और उन्हें देव बना दिया। ४८६

वलङ्गोळ्पोर्	मानिडन्	वलिनन्दु	कौन्ऱुमै
अलङ्गल्वे	लिरावण्ड्	कश्चिप्	पामैन्च्
चलङ्गोळ्पो	ररक्कर्द	मुरुक्क	डाङ्गित्त
इलङ्गैयि	लुयत्तदक्	कुरुदि	याऱुरो 487

वलम् कौळ्-वलशाली; पोर् मानिडन्-योद्धा, एक मनुष्य का; वलिनन्दु कौन्ऱुमै- (अनेक राक्षसों को) बलात मारना; अलङ्गल्-मालाधारी; वेल्-माला वाले; इरावण्ड्कु-रावण को; अश्चिप्पाम् अँत-जाकर सुनायेंगे, सोचकर; कुरुदि आङ्-रक्तनदी ने; चलम् कौळ्-आवेग के साथ; पोर्-लड़नेवाले; अरक्कर् तम् उरक्कळ्-राक्षसों के शरीरों को; ताङ्कित्त-वहा ले जाकर; इलङ्कैयिन्-लका में; उयत्ततु-पहुँचाया । ४८७

प्राण या जीव देव बन गये । पर राक्षसों के मृत शरीरों का क्या हुआ ? रक्त की नदी उन्हें वहा ले गयी और वे लाशें लंका पहुँच गयीं । वे, मानो माला से भूषित और मालाधारी रावण को यह सन्देशा देने चलीं कि एक बलवान मनुष्य ने ही इन राक्षसों को बलात मारा था ! । ४८७

चूळ्न्दुयर्	नैडुम्बडै	पहळि	शुऱुऱुप्
पोळ्न्दुयिर्	कुडित्तलिऱ्	पुरळप्	पौङ्गित्तान्
ताळ्न्दिलन्	मुत्तलैत्	तलैवन्	शोरियिन्
आळ्न्दते	रम्बरत्	तोट्टि	यार्क्किन्ऱान् 488

चूळ्न्दु उयर्-अपने को घेरकर बढ़ी; नैडुम् पटै-विशाल सेना (के वीरों) के; पकळि-श्रीराम के बाणों ने; चूऱुऱु उऱ-चारों ओर से; पोळ्न्दु-चोरकर; उयिर् कुडित्तलि-प्राण हर लिये; पुरळ-वे लोट गये, इसलिए; मुत्तलै तलैवन्-त्रिशिरा नामक सेनापति; पौङ्गित्तान्-उबल पड़ा; ताळ्न्दिलन्-विलम्ब नहीं किया; चोरियिन् आळ्न्दते तेर्-रक्त में मग्न अपने रथ को; अम्परत्तु ओट्टि-अन्तरिक्ष में चलाते हुए; यार्क्किन्ऱान्-गरज उठा । ४८८

श्रीराम के बाणों ने उनको घेरे आये सभी राक्षसों को लपेटकर उनको मार दिया । वे सब लोट गये । त्रिशिरा नामक तीन सिर वाले राक्षस ने यह देखा और वह बौखला गया । बिना विलम्ब के उसने रक्त में मग्न रहे अपने रथ को ऊपर आकाश में चलाया । उसने भीषण गर्जन किया । ४८८

ऊन्ऱिय	तेरिन्	नुरुमिन्	वैङ्गणै
वान्ऱौडर्	मळैयैन्	वाय्मै	यावर्क्कुम्
शान्ऱुन्	निन्ऱुवत्	तरुम्	मन्ऱवन्
तोन्ऱुन्	ऱिरुवुऱु	मऱैयत्	तूवित्तान् 489

ऊन्ऱिय तेरित्तन्-सुस्थापित रथ वाले ने; उरुमिन्-वज्र के समान; वैम् कणै-भयंकर अस्त्र; वान् तोट्टर् मळै अँत-मेघ-वर्षित निरन्तर धारों के समान; वाय्मै

यावर्क्कुम्-सभी सत्यप्रिय लोगों के लिए; चान्द्र अँत निन्त्र-दृष्टान्त के समान विद्यमान; तरुमम् अन्तवन्-धर्म-सूति; तोन्त्रल् तन्-(दशरथ के) पुत्र श्रीराम के; तिरु उरु-श्रीशरीर को; मरैय-आवृत करते हुए; तूविनान्-वरसाये । ४८६

अपने रथ को अन्तरिक्ष में स्थिर रूप से खड़ा करके उसने वज्र के समान शरों को मेघ-वर्षा की धारों के समान निरन्तर चलाया । उन शरों में सत्यवादियों के दृष्टान्तस्वरूप और धर्मावतार दशरथ के पुत्र श्रीराम का दिव्य शरीर छिप गया । ४८९

❀ तूविय	शरमैलान्	दुणिय	वङ्गणै
एवित्त	निरामनु	मेवि	येळिरु
पूवियल्	वाळियाल्	पौलङ्गो	डेरळित्
ताविर्वम्	बाहन्	यळित्तु	माड्डिनान् 490

तूविय चरम् अँलाम्-वर्षित सभी अस्त्र; दुणिय-छण्डित करते हुए; इरामनुम्-श्रीराम ने भी; वैम् कणै एवित्तन्-भयंकर शर चलाये; एवि-चलाकर; एळ् इरु-(और) चौदह; पू इयल् वाळियाल्-तीक्ष्ण शरों से; पौलन् कोळ् तेरु-स्वर्ण-निर्मित रथ को; अळित्तु-नष्ट करके; वैम् पाकन्नै-पराक्रमी सारथी को; आवि अळित्तु-जान से मारकर; माड्डिनान्-युद्ध की स्थिति में परिवर्तन पैदा कर लिया । ४९०

तब श्रीराम ने बाण चलाकर उन सभी तीरों को काट दिया । फिर उन्होंने चौदह अतितीक्ष्ण तीर चलाये और उसके रथ को ध्वस्त कर दिया और सारथी को भी मार दिया । तब युद्ध का रवैया ही बदल गया । ४९०

❀ अन्त्रियु	मक्कणत्	तमर	रार्त्तेळप्
पौन्त्रैरि	वडिम्बुडैप्	पौरुविल्	वाळियाल्
वन्त्रौळिर्	श्रीयवन्	महुड	मात्तलै
औन्त्रौळित्	तिरण्डैयु	मुट्टिटि	तानरो 491

अन्त्रियुम्-उसके अलावा; अ कणत्तु-उसी क्षण में; अमरर् आर्त्तु अँळ-देवों को हर्षरव करने देते हुए; पौन् तैरि-मुनहले; वडिम्पु उटै-किनारों वाले; पौरुवु इल् वाळियाल्-अनुपम अस्त्रों से; वन् तौळिल् तीयवन्-नृशंसकारी क्रूर के; मकुटम् मा तलै-किरीटधारी (तीन) बड़े सिरों में; औन्त्र औळित्तु-एक को छोड़कर; इरण्टैयुम्-अन्य दोनों को; उट्टिनान्-लुढ़काया । ४९१

श्रीराम वही तक नहीं रुके । उसी क्षण उन्होंने अपने स्वमपंख अस्त्र चलाकर उस नृशंस पापी के किरीटधारी बड़े सिरों में एक को छोड़कर बाकी दोनों को काट दिया । वे सिर भूमि पर गिरकर लोटने लगे । इसको देखकर देवगण सन्तोष का नाद कर उठे । ४९१

ॐ तेरळिन्	दव्वळिन्	तिरिशि	रावैनुम्
पेरळिन्	दन्निन्	मरुम्बि	ळैत्तिलन्
नारिळिन्	दुमिळ्शिलै	वान	नाट्टुळिक्
कारिळिन्	दालैन्क्	कणहळ्	शिन्दितान् 492

अ वळि-उस स्थान में; तेर् अळिन्नु-रय खो गया; तिरिचिरा-त्रिशिरा; अँनुम् पेर्-का नाम; अळिन्तैन्निनुम्-मिट (निरयंक हो) गया तो भी; मरुम् पिळैत्तिलन्-वीरता से वंचित न होकर; चिलै-धनु से; नार् इळिन्नु उमिळ्-प्रत्यंचा द्वारा प्रेषित; कणकळ्-शरीं को; वान नाट्टु उळि-आकाशलोक से; कार् इळिन्ताल् अँत-मेघ (पानी) गिरता हो जैसे; चिन्दितान्-चलाया । ४६२

अव त्रिशिरा त्रिशिरा नहीं रहा । दो सिर खोकर उसने अपना नाम ही खो दिया । उसका रथ भी ब्रेकार हो गया । तो भी उसने अपनी वीरता और साहस नहीं छोड़ा, पर अपने धनुष के डोरे खींचकर, व्योमनगर से मेघ-वर्षा गिरती हो, ऐसा अस्त्र निरन्तर छोड़े । ४९२

ॐ एर्ऱिय	नुदलिन	निरुण्ड	कार्मळै
तोर्ऱिय	विल्लोडुन्	दौडर	मीमिशक्
कार्ऱिडै	यळित्तैन्क्	कार्मु	हत्तैयुम्
माऱ्ऱरुम्	वहळिया	लरुत्तु	माऱ्ऱितान् 493

एर्ऱिय नुतलित्तन्-चढ़ी हुई भीहों के भाल वाले (धोराम) ने; इरुण्ट कार्-काले मेघ ने; मळै तोर्ऱिय-वर्षा कराई जैसे; विल् ओट्टुम्-अपने धनु से; तौडर-शर चलाकर युद्ध किया; मी मिच्चै-आकाश में; कार्ऱु इटै अळित्तु अँत-वायु ने प्रवेश कर मिटा दिया जैसे; कार्मुकत्तैयुम्-त्रिशिरा के धनु को भी; माऱ्ऱु अरुम् पफळियाल्-अलंघ्य वाणों से; अरुत्तु माऱ्ऱितान्-काटकर ध्वस्त कर दिया । ४६३

श्रीराम की भी त्योरियाँ चढ़ीं । उन्होंने भी काले मेघ के समान जो वर्षा कराता है, अपने धनुष के साथ युद्ध किया और अपने अमोघ और अवार्य अस्त्रों से त्रिशिरा के धनुष को काट दिया । धनु विल्कुल नष्ट हो गया । ४९३

ॐ विल्लि	ळन्दत्त	नैन्निनुम्	विळङ्गुवाण्	मुहत्तिन्
अँल्लि	ळन्दिल	निळन्दिलन्	वैङ्गद	मिडिक्कुम्
शौल्लि	ळन्दिलन्	रोळवलि	यिळन्दिलन्	शौरियुम्
कल्लि	ळन्दिल	निळन्दिलन्	करङ्गैन्त	तिरिदल् 494

विल् इळन्तनन् अँन्निनुम्-धनु गँवा दिया तो भी; विळङ्कु वाळ् मुकत्तिन्-शोभनेवाले उज्ज्वल चेहरे का; अँल् इळन्तिलन्-प्राकृतिक सौंदर्य न खोया; वैम् कतम् इळन्तिलन्-भयंकर क्रोध भी न गँवाया; इटिक्कुम् चौल्-वज्र-सम बोली; इळन्तिलन्-न गँवायी; तोळ् वलि-भुजबल; इळन्तिलन्-न खोया; चौरियुम्

कल्-पत्थर बरसाना; इल्लन्तिलन्-न छोड़ा; कइडकु अँत-वातचक्र के समान;
तिरितल्-धूमना; इल्लन्तिलन्-न छोड़ा । ४६४

त्रिशिरा ने अब धनुष भी गँवा दिया । तो भी उसके उज्ज्वल मुख की प्रभा नहीं गयी । उसका क्रोध दूर नहीं हुआ और उसके वचन की वज्र की-सी कड़क और उग्रता भी नहीं गयी । उसका भुजबल भी नहीं गया और उसने पत्थर बरसाना नहीं छोड़ा । (पतंग या) वातचक्र के समान वह धूमता हुआ लड़ा । ४९४

❀ आळि	रण्डुन्	रुळवैन्	वन्दरत्	तौखवन्
मूळि	रुम्बैरु	मायैयिन्	शैरुमुयल्	वानैत्
ताळि	रण्डैयु	मिरण्डुवैङ्	गणहळाङ्	इडिन्दु
तोळि	रण्डैयु	मिरण्डुवैङ्	जरङ्गळाङ्	रुणित्तान् 495

अन्तरत्तु-अन्तरिक्ष में; औखवन्-एकाकी; मूळ् इरुम्-छानेवाली बड़ी; पैरु मायैयिन्-विस्तृत माया से; आळ् इरण्डु नूळ् उळ्-योद्धा दो सौ हैं; अँत-ऐसा; चैरु मुयल्वानै-युद्ध करनेवाले उसके; ताळ् इरण्डैयुम्-दोनों पैरों को; इरण्डु वैम् कणैकळाल् तटिन्तु-दो घातक बाणों से काटकर; तोळ् इरण्डैयुम्-दोनों भुजाओं को; इरण्डु वैम् चरङ्कळाल् दो भयंकर बाणों द्वारा; तुणित्तान्-काट लिया । ४६५

अन्तरिक्ष में एकाकी रहकर त्रिशिरा ऐसी माया के साथ लड़ा कि यह भ्रम हो जाता था कि दो सौ राक्षस एक साथ युद्ध कर रहे थे । अदम्य उत्साह के साथ वह युद्ध कर रहा था । श्रीराम ने दो-दो अस्त्र चलाकर उसके दोनों हाथों और दोनों पैरों को काटकर अलग कर दिया । ४९५

❀ अइइ	ताळौडु	तोळिन्	तयिलैयि	इलङ्गप्
पौइइ	मामुळैप्	पुलालुडै	वायित्तिइ	पुहुन्दु
पइइ	वादरिप्	पान्इन्नै	नोक्कित्तन्	परियान्
कौइइ	वार्शरत्	तौळिन्ददोर्	शिरत्तैयुङ्	गुइत्तान् 496

अइइ ताळ् औटु तोळित्तन्-पैरों और हाथों से हीन; अयिल् अयिरु इलङ्क-तेज दाँतों को प्रकट करते हुए; पौइइ मा मुळै-पर्वत की बड़ी कन्दरा के समान; पुलाल् उटै वायितिल्-मांस की गन्ध निकालनेवाले मुख में; पुकुन्तु पइइल्-जाकर ग्रसने का; आतरिप्पात् ततै-प्रयत्न करनेवाले उसको; नोक्कित्तन्-(श्रीराम ने) देखकर; परियान्-कृपा न करके; कौइइ वार् चरत्तु-दृढ़ एक लम्बे बाण से; औळिन्तु ओर् चिरत्तैयुम्-बचे रहे एक सिर को भी; कुइत्तान्-काटकर अलग किया । ४६६

हाथ और पैर खोकर राक्षस ने अपने तीक्ष्ण दाँतों को निकालते हुए श्रीराम को अपने मांस-गन्ध-पूर्ण, विलसदृश मुख से ग्रसने का उपक्रम किया । श्रीराम ने उसको देखा, दया नहीं की और एक लम्बा और बलवान अस्त्र चलाकर उसका बचा हुआ सिर भी धड़ से अलग कर दिया । ४९६

✽ तिरिशि	रावेनुज्	जिहरमण्	चेरदलुज्	जिदरि
निरुद	रोडिनर्	तूडणन्	विलक्कवु	निल्लार्
परुदि	वाळिनर्	केडहत्	तडक्कैयर्	परन्द
कुरुदि	नीरिडै	वारुहुळल्	कौळुङ्गुडर्	तौडक्क 497

तिरिचिरा अैनम् चिकरम्-त्रिशिरा रूपी शिखर; मण् चेरतलुम्-धराशायी हुआ तो; परुति वाळितर्-सूर्यप्रभ तलवारधारी; केटक तट कैयर्-ढाल लिये बड़े हाथ वाले; निन्ऱ निरुतर्-विद्यमान राक्षस; चित्ति-अस्तव्यस्त होकर; तूटणन् विलक्कवुम्-दूषण के रोकने पर भी; निल्लार्-न रुके; परन्त-फैले रहे; कुरुति नीर् इटै-रक्त-प्रवाह के मध्य; कौळुम् कुटर्-मोटी आँतों के; वार् कळल्-लम्बे पैरो से; तौडक्क-उलझकर रोकते; ओटिनर्-(उनको भी खींचते हुए) भागे। ४६७

त्रिशिरा रूपी शिखर (शिखर-सम नेता) मरकर भूमि पर गिर गया, तो अर्क-सम प्रकाशमान तलवारें और ढाल रखनेवाले विशाल हाथों के राक्षस भय से अस्तव्यस्त होकर भागे। दूषण ने रोकना चाहा तो भी वे नहीं रुके। सारी युद्धभूमि रक्त और कीच से भरी थी। वे उसी में घुसकर भागे। आँतों ने उनके पैरो से उलझकर बाधा डाली। तो भी लस्टम-पस्टम वे भागे ही। ४९७

कणत्तिन्	मेत्तिन्ऱ	वात्तवर्	कैवुडैत्	तार्प्पप्
पणत्तिन्	मेनिलङ्	गुलैवुडक्	काल्हौडु	पडप्पार्
निणत्तिन्	मेल्विळुन्	दळुन्दिनर्	शिलर्शिलर्	निवन्द
पिणत्तिन्	मेल्विळुन्	दुरुण्डन	रयिर्हौडु	पिळैप्पार् 498

मेल्-अन्तरिक्ष में; कणत्तिन् निन्ऱ-दलबद्ध स्थित; वात्तवर्-देवों ने; कै पुटैत्तु आर्प्प-तालियाँ पीटकर आनन्दरव किया; पणत्तिन् मेल् निलम्-शेषनाग पर भूमि; कुलैवु उड-थरों उठी, तब; काल् कौटु पडप्पार्-पैरों के सहारे उड़नेवाले; चिलर्-(राक्षसों में) कुछ; निणत्तिन् मेल् विळुन्तु-मांस-पंक में गिरकर; अळुन्तित्त-मग्न हुए; चिलर्-कुछ; निवन्त पिणत्तिन् मेल् विळुन्तु-ढेर बनी रही लाशों पर गिरकर; उरुण्टत्तर्-लुढ़के; उयिर् कौटु पिळैप्पार्-किसी विध जान से बचे। ४६८

वे राक्षस ऐसे दौड़े, मानो उनके पैर ही पंख हों। उनको देखकर आकाश में देवगण तालियाँ पीटकर हँसे। शेषनाग पर धृत यह भूमि राक्षसों के पदाघातों से डोल उठी। उनमें कुछ रक्त-कीच में मग्न होकर डूब गये। कुछ ढेर बनी पड़ी रही लाशों पर टकराकर गिरे और किसी तरह बचकर भागे। ४९८

वेय्न्द	वाळौडु	वेलिडै	मिडैन्दन	वैट्ट
ओय्न्दु	ळार्शिल	रुलन्दन	रुदिरनीर्	याड्रिल्
पाय्न्दु	काल्पदिन्	दळुन्दिनर्	शिलर्शिलर्	पयत्ताल्
नीन्दि	तार्नेडुड्	गुरुदियड्	गडलपुक्कु	निलैयार् 499

चिलर्-कुछ; इटै-बीच में; वेयन्त-पड़ी रही; वाळ् ओटु वेल्-तलवारों और भालों के; मिटैन्तन-जो सटे हुए थे; वेदट-काटने से; ओयन्तुळार्-(दौड़ नहीं सके) शिथिल हुए; उलन्तन्तर्-मरे; चिलर्-और कुछ; उतिर नीर् आइइल् पायन्तु-रक्त-नदी में गिरकर; काल् पतिन्तु-पैरों के गड़ जाने से; अळुन्तिन्तर्-डूब मरे; चिलर् पयत्ताल्-कुछ, डरते हुए; नीन्तिनार्-तैरे; कुरुति अम् कटल् पुक्कु-रक्त-सागर में पहुँचकर; निलैयार्-चंचल रहे । ४६६

राक्षसों के मार्ग में तलवारें, भाले आदि कसरत से पड़े थे । कुछ राक्षसों के पैर उनसे कट गये और वे राक्षस निर्बल होकर गिरे और मरे । कुछ रक्त-प्रवाह में घुसे और कीच में पैरों के गड़ जाने से मरे । कुछ भयातुर होकर उस रक्त-नदी में उतरे और बहते जाकर रक्त-सागर में पहुँचे । वहाँ वे डूब-उतराये । ४९९

❖ मण्डि	योडितर्	शिलर्नडुङ्	गडहरि	वयिइइल्
पुण्डि	इन्दमा	मुळैयिडै	वाळोडुम्	बुहुवार्
तीण्डै	नीङ्गिय	कवन्दत्तैत्	तुणैवनी	यैम्बैक्
कण्डि	लेत्तैत्	पुहलैत्	कैदलैक्	कौळ्वार् 500

मण्डि ओडितर् चिलर्-तेज जो भागे, वे कुछ; नैटुम् कट करि वयिइइल्-मतगजों के पेट में; पुण् तिउन्त-व्रण जो खुले थे; मा मुळै इटै-उन विलों में; वाळ् ओटुम् पुकुवार्-तलवारों के साथ घुसे; तीण्डै नीङ्गिय-गले से (कटकर) हीन; कवन्दत्तै-कवन्ध को; तुणैव-मित्र; नी अँम्मै कण्टिलेन्-तुम 'मुझे नहीं देखा'; अँत-यह; पुकल् अँत-(श्रीराम के बाणों से) कहो, ऐसा; कै तलै कौळ्वार्-सिर पर हाथ (जोड़कर) रख लेते । ५००

कुछ राक्षस दौड़े । वचने का कोई स्थान नहीं मिला । वहाँ हाथी मरे पड़े थे, जिनके पेट विलों के समान खुले थे । राक्षस अपनी तलवारों के साथ उन्हीं में घुस गये । कुछ राक्षस भागते जा रहे थे । उनको डर था कि श्रीराम के शर पीछा करके आ रहे हैं । उन्होंने कवन्धों को देखा और अंजलिबद्ध हाथ अपने सिरों पर रखते हुए उनसे प्रार्थना की कि तुम श्रीराम के बाणों से मत कहो कि तुमने हमें देखा था । ५००

❖ कच्चुम्	वाळुन्दङ्	गाडोडुन्	दोर्प्पत्त	काणार्
अच्च	मैन्वदीन्	रुवुहोण्	डालैत्त	वळिवार्
उच्च	वीरन्गैच्	चुडुशर	निरुदरन्	जुवित्
तच्चु	निन्तुत्त	कण्डत्त	रव्वळित्	तविर्न्दार् 501

उच्च वीरन्-सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के; कै-हाथ के; चुटु चरम्-मारक वंश; निरुत्तर् नैञ्चु उरुवि-राक्षसों की छाती में घुसकर; तच्चु निन्तुत्त-गड़े रहे; कण्टत्तर्-उनको देखकर; अ वळि तविर्न्दार्-उस मार्ग को वचाकर; कच्चुम् वाळुम्-कमरबन्द और तलवार; तम् काल् तीटर्न्तु ईर्प्पत्त-उनके पैरों को काटती

रहती है; काणार्-उसकी भी सुध न लेते हुए; अच्चम् अँत्तपु ओर् उरुवु कौण्डात् अँत-मानो भय नामक वस्तु ने रूप लिया हो, ऐसा; अळिवार्-वहीं रहकर मरते । ५०१

कुछ वीरों ने देखा कि मार्ग में सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के हाथ के प्रेरित भयानक शर राक्षसों के वक्षों में घुसकर वही गड़े रहे । वे उस मार्ग से नहीं गये । वे इतने भयभीत हो गये कि उनके कमरबन्द और उनकी तलवारें उन्हें निरन्तर काट रही थी—इसकी भी उन्होंने सुध नहीं ली । वे बिल्कुल भय के मूर्त आकार थे । वे जहाँ-तहाँ रहकर मरने लगे । ५०१

❖ अनैय	राहिय	वरक्करै	याण्डौळिर्	कमैन्द
विनैय	नीङ्गिय	मनित्तरै	वैरुवन्मि	नैन्ता
निन्नैयु	यानौत्तु	निरप्पुव	दुण्डैन्	निन्नान्
तुन्नैयुम्	वाम्बरित्	तेरितन्	रूडणन्	शौन्नान् 502

तूटणन्-दूषण; तुन्नैयुम्-तीव्रगामी; वाम् परि-अश्व-जुते; तेरितन्-रथ पर सवार; अतैयर् आकिय अरक्करै-वैसे भागते हुए राक्षसों को; याण् तौळिर्कु अमैन्त-पुरुष के कार्य योग्य; विन्नैयम् नीङ्किय-काम जिनके पास नहीं, उन; मनित्तरै-मानवों से; वैरुवल्मिन्-मत डरो; नैन्ता-कहकर; यान् निन्नैयुम् औन्ड-मैं सोचता हूँ एक बात; निरप्पुवतु उण्डु-जो कहती है; अँत-ऐसा; निन्नान्-खड़ा होकर; शौन्नान्-बोला । ५०२

तब दूषण नामक सेनापति ने, जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार था, भागनेवाले राक्षसों को रोकते हुए कहा कि हे वीरो ! मत डरो, मत भागो । आखिर तुम्हारा शत्रु मनुष्य है । वह साहसपूर्ण वीरता युक्त (राक्षस) पुरुष का काम करने की शक्ति नहीं रखता । उससे मत डरो । फिर उसने वहीं खड़ा रहकर कहा कि मुझे तुमसे एक बात कहनी है । सुनो । ५०२

❖ वच्चै	यामैनुम्	वयमन्त	तुण्डेन	वाळुम्
कौच्चै	मान्दरैक्	कोल्वळै	महळिरुड्	गूशार्
निच्च	यमैनुड्	गवशत्ता	तिलैनिर्कु	मन्नेल्
अच्च	मैन्नुमो	दारुयिर्क्	करुन्दुणै	यामो 503

वच्चै आम् अँत्तुम् पयम्-अपमान योग्य यह भय; मतत्तु उण्डु अँत वाळुम्-मन में रखते हुए जो जीते हैं; कौच्चै मान्दरै-उन क्षुद्र मनुष्यों से; कोल् वळै मकळिरुम्-सुन्दर चूड़ियाँ जो पहनती है, वे स्त्रियाँ भी; कूचार्-नहीं शरमाती हैं (आदर नहीं करती); निच्चयम् अँत्तुम्-धैर्य रूपी; कवचत्ताल्-कवच धारण करने से ही; तिलै निर्कुम्-प्राण स्थायी रहेगा; मन्नेल्-नहीं तो; अच्चम् अँत्तुम् अतु-भय का यह गुण; आर् उयिरुक्कु-प्यारे प्राणों के लिए; अरुम् तुणै आमो-श्रेष्ठ सहायक होगा क्या । ५०३

भय अपयश है । उसके साथ रहनेवाले हैं मानव लोग । उनको

देखकर सुन्दर कंकणधारिणी स्त्रियाँ भी नहीं डरतीं, उनसे नहीं शरमातीं । और भी एक बात है । वीरता के कवच के अन्दर ही प्राण सुरक्षित रह सकते हैं । अब जो भीरुता तुम दिखा रहे हो, क्या वह तुम्हारे प्राणों का रक्षण कर सकेगी ? । ५०३

❀ पूव	रावुवेइ	पुरन्दरन्	इन्नीडु	पौन्ना
सूव	रोडुदान्	मुत्तिन्नू	मुट्टिय	मुनैयिल्
एव	रोडिता	रिराक्कदर्	नुमक्किडैन्	दोडुम्
देव	रोडुहइ	इडिन्दुळि	रोमन्नन्	दिहैत्तीर् 504

पू अरावु वेल्-तीक्ष्ण किये हुए भाले वाले; पुरन्तरन् तन्नीडु-पुरन्दर के साथ और; पौन्ना-अमर; सूवरोटु-त्रिदेवों के साथ; मुत्तिन्नू मुट्टिय-सामने स्थित जो की; मुनैयिल्-उस युद्धभूमि में; इराक्कतर् एवर् ओट्टितार्-राक्षस कौन भागे; मत्तम् तिकैत्तीर्-यहाँ चित्त-भ्रमित हुए; नुमक्कु इटैन्तु-तुमसे (हारकर) त्रस्त होकर; ओडुम्-जो भागते हैं; तेवरोटु-उन देवों से; कड्डु अडिन्तु उळिर् ओ-सीख ले गये हो क्या । ५०४

तीक्ष्ण भालाधारी पुरन्दर से और अमर रहनेवाले त्रिदेव से भी युद्ध हुआ था न ? उनके सामने डटकर जिन राक्षसों ने युद्ध किया, उनमें कौन थे जो मैदान छोड़कर भागे ? कोई नहीं ! अब क्यों विकलमन हुए हो ? क्या यह गुण तुमने उन देवों से सीख लिया है जो तुमको देखकर भयभीत होकर भाग जाते हैं ? । ५०४

इङ्गोर्	मान्निडइ	कित्तनै	वीरर्ह	ळिडैन्दीर्
उङ्गै	वाळीडु	पुहळ्विळ	वूरुपुह	वुवन्दीर्
कौङ्गो	मार्बिडैक्	कुळिप्पुडक्	कळिप्पुड	कौळुङ्गण्
नङ्गै	मार्हळैप्	पुल्लुदि	रोनल	नुहर्वीर् 505

इङ्कु ओर् मान्निडइ-यहाँ एक मनुज के सामने; इत्तनै वीरर्ह-इतने वीर; इटैन्तीर्-हार मान गये; उम् कै वाळ् ओटु-अपने हाथ की तलवार के साथ; पुहळ्विळ-यश को नीचे डालते हुए; ऊर् पुक उवन्तीर्-गाँव जाना पसन्द किया; नलम् नुकरवीर्-सुख-भोग चाहते हो; कळिप्पु उळु-मदमत्त; कौळुम् कण्-बड़ी आँखों की; नङ्कमारक्कळै-अपनी स्त्रियों को; कौङ्कै-उनके स्तन; मार्पु इटै कुळिप्पु उड-तुम्हारे वक्षों में दबें, ऐसा; पुल्लुतिरो-गले से लगाओगे क्या । ५०५

अकेले एक मनुज के सामने इतने राक्षस हार मानकर भागते हो ! युद्धस्थल में तलवारों के साथ अपने यश को गिराकर अपने स्थान में जा प्रविष्ट होना चाहते हो ! क्या सुख-भोग की इच्छा हो गयी और तुम जाकर उन मत्त और विशाल आँखों की अपनी स्त्रियों को इतना कसकर गले लगाना चाहते हो कि उनके पुष्ट स्तन तुम्हारे वक्षों में दब जायँ ? । ५०५

ॐ शैम्बु	काट्टिय	कण्णिण	पालेनन्	नेळिन्वीर्
वैम्बु	काट्टिड	नुळैनीरुम्	वैरिन्नुडप्	पाय्न्द
कौम्बु	काट्टिदि	रोनट	मार्विडक्	कुळित्त
अम्बु	काट्टुदि	रोहण	मङ्गैयर्क्	कम्मा 506

शैम्बु काट्टिय-ताम्र (क्रोध से लाल) बगो; कण्ण इन्ने-श्रीयों के लोहे; पाल्-अन्न-दूध के समान; नेळिन्वीर्-रक्त-लाल रंग, ऐमी-श्रीयों के हो गये; कुन्-मदकैयर्क्कु-तुम्हारे कुन् की विधियों को; मंग्बु काट्टु इट्टे-दिण्ड संगम में; नुळै-तोड़-धुआँकर दीड़ते भगव; वैरिन्-पीठ में; उर पाय्न्द-सूखी रही; कौम्बु काट्टुतिरो-पानियों दिवाओगे; नट मारुप् इट्टे कुळित्त- (मा) विगत वक्ष में पुरे; अम्बु काट्टुतिरो-पानों को दिवाओगे । ५०६

तुम्हारी श्रान्ति होना चाहिये ! पर अब वे अन्न दिवानी हैं—
हर से, क्रोध छोड़ देने में ! अब तुम अपने-अपने आश्रम पर श्राद्धों में तो
अपनी पत्नियों को क्या दिवाओगे अपनी बीरता के चिह्नों के रूप में ?
उन दहानियों और शायाओं को दिवाओगे तो जने वन के मध्य से भागते
समय तुम्हारी पीठ में चूभ जायेंगे ? या अपने यक्षमध्य भुस जर को ? । ५०६

मक्कु	मिर्गित्त	मेनुमुण्	डोविहन्	मनिवड्
काक्कुन्	वैज्जवत्	नाण्मैयन्	यमरर्क्कु	मरिद्वान्
ताक्कु	रन्वुयन्	वुर्गुणन्	तन्मैहन्	उड्ना
मूक्की	उत्तिन्नुन्	मुडुनीडम्	वौम्बळि	मुयन्डीर् 507

इप्प् मनिवड्कु आक्कुम्-सन्-मनुष्य से जो किया जाता है; कैम्-यमत्तु-
उत्त शीषण युद्ध में; नाण्मे-(तुम्हारा) पीरन; अ यमरर्क्कुम्-उन अमरों के लिए
भी; अरिन्-कुर्न है; इड्कु एकम् इत्तन् मेन्-उपटो-यहाँ हमारा नरताप इससे
बढ़कर हो सकता है क्या; ताक्कु अरन्-जिन पर प्रहार करना बर्तन है, ऐमी;
पुयत्तु-भुजाओं के म्दामी; उन् कुल तन्मैहन्-तुम्हारे कुल के उर नायक; तड्डे-
(रावण की) छोटी बहिन की; मूक्कु ओट्टु अड्डि-नाक के साथ ही नहीं बल्कि;
मुम् मुवुक्कु ओट्टुम्-तुम्हारी पीठ के साथ भी; पोन् पडि-जनेवाया अपयश;
मुयन्डीर्-हो, उतल उपक्रम किया है तुमने । ५०७

आखिर जन् मनुज के साथ जो हो रहा, उस युद्ध में तुम ऐसा पीरन
(पीरप-हीनता) दिखा रहे हो ! यह देखों के लिए भी दुर्लभ है । हन्त !
इससे अधिक दुःखदायिनी बात क्या होगी ? तुम कैसा कार्य कर रहे हो,
उसका अर्थ क्या होगा ? —मानुष है ? तुम्हारे कुलनायक, जो अलंघ्य
भुजावल रखते हैं, उन रावण की बहिन की नाक ही नहीं कटो, बल्कि
तुम्हारी पीठ पर अपयश लगेगा ! यही प्रयत्न तुम कर रहे हो । ५०७

ॐ आर	वाळ्क्कैयित्	वणिहरा	यमैदिरो	यविल्वेल्
वीर	वाट्कोळ्	वैतमडुत्	तुळ्ळिरो	वैडिप्पोरत्

तीर	वाळ्ककैयिर्	रेवरैच्	चैरुविडैप्	परित्त
वीर	वाट्कैयी	रैङ्ङत्तम्	वाळ्दिरो	विळम्बीर् 508

वैरि पोर्-उन्मत्तकारी युद्ध में; तीर वाळ्ककैयिल्-साहसपूर्ण जीवन के कारण; तेवरै चैरु इटै परित्त-देवों से युद्ध में छीनी हुई; वीर वाळ्-वीरता की तलवारें; कैयीर्-जिनमें हैं, ऐसे हाथों के राक्षसों; वाळ्ककैयिन् वणिकराय्-जीवन में व्यापारी; धार-वनकर; अमैतिरो-रहोगे क्या; अयिल् वेल्-तीक्ष्ण भाले; वीर वाळ्-वीरता की सहायक तलवारें; कौळ् अत्त मटुत्तु-हल की फाल बनाकर भूमि में खोदकर; उळ्ळुतिरो-जोतनेवाले हो; अैङ्ङत्तम् वाळ्तिरो-कैसे जीवन बिताओगे; विळम्पीर्-कहो। ५०८

उन्मत्तकारी युद्ध में अपूर्व धैर्य दिखाते हुए तुमने देवों के हाथों से उनकी तलवारें छीन ली थीं। ऐसी तलवारों के धारक ! अब जीवन वणिकों का बिताने का विचार किया है ? या तीक्ष्ण भालों और प्रतापी तलवारों को हल का फाल बनाकर भूमि की खेती करोगे और कृषक बनोगे ? बताओ तो सही। ५०८

ॐ अैन्ऱु	तानुन्द	नैरिहड्	चेनैयु	मिरैनीर्
निन्ऱु	काण्डिरैन्	नैडुञ्जिलै	वलियैन्	नेराच्
चैन्ऱु	ताक्किनन्	रेवरु	मरुळ्हाँण्डु	तिहैत्तार्
नन्ऱु	कात्तिर्यैन्	रिरामनु	मैदिर्	शैल नडन्दान् 509

अैन्ऱु-ऐसा कहकर; नीर्-तुम लोग; इरै-कुछ देर; निन्ऱु-खड़े होकर; अैन् नैडुम् चिलै-मेरे लम्बे धनुष का; वलि-पराक्रम; काण्डिर्-देखो; अैत्त-समझाकर; तानुम्-स्वयं और; तन् अैरि कटल् चेतैयुम्-उसकी तरंगाकुल समुद्र-संम सेना ने; नेरा चैन्ऱु ताक्किनन्-श्रीराम के सामने जाकर उन पर आक्रमण किया; तेवरुम् मरुळ् कौण्डु-देव भी चकराकर; तिकैत्तार्-भ्रमित हुए; इरामनुम्-श्रीराम ने भी; नन्ऱु कात्ति अैन्ऱु-अच्छा सावधान, बचा लो कहकर; अैतिर् चैल-उसके सामने; नडन्तान्-चलते आये। ५०९

दूषण ने यह वचन कहा। आगे यह बोला कि तुम मत भागो। ज़रा देर खड़े रहो और मेरे धनुष का अतुल प्रताप देखो। फिर वह आगे गया और उसकी सेना भी साथ गयी। उन्होंने जाकर श्रीराम पर आक्रमण किया। देवों को भी भय हो गया कि यह राक्षस वीर अनर्थ कर देगा। तब श्रीराम भी यह कहते हुए सामने आये कि ठहरो, अपनी रक्षा के लिए तैयार हो जाओ। सावधानी से अपनी रक्षा कर लो। ५०९

ऊड	रुप्पुण्ड	मौय्बडैक्	कैयीडु	मुयर्न्द
कोड	रुप्पुण्ड	कुञ्जरड्	गौडिञ्जौडु	कौडियिन्
काड	रुप्पुण्ड	कालिय	रेरुहदिर्च्	चालि
शूड	रुप्पुण्ड	वैत्तक्कळुत्	तरुप्पुण्ड	तुरहम् 510

मोय् पटै-सवल हथियार; ऊट्टु अरुप्पुण्ट-बीच में कटे; कुञ्चरम्-हाथी; कै ओट्टुम्-सूँड़ों सहित; उयर्न्त-उभर आये; कोट्टु-दाँतों के; अरुप्पुण्ट-कटे हो गये; काल् इयल् तेर्-हवा के समान चलनेवाले रथ; कौटिन्चु ओट्टु-पीठ के सामने के 'कौडिञ्जु' नाम के हस्तावलम्ब के साथ; कौटियिन् काटु-ध्वजाओं के वन के साथ; अरुप्पुण्ट-कटे हो गये; तुरकम्-अश्व; कतिर् चालि चूटु-शालि-पौधों की बालें; अरुप्पुण्ट अँत-कट गई हों, ऐसे; कळुत्तु अरुप्पुण्ट-गर्दन-कटे हो गये । ५१०

उस युद्ध में बलवान हथियार कटे । हाथी की सूँड़ें और दाँत कटे और वे गिर गये । रथ ध्वस्त हुए । ध्वजाएँ और पीठ के सामने के भाग आदि कटे । अश्वों के सिर धान की बालियों के समान गले से काट दिये गये । ५१०

तुरुवि	योडिन	वुयिर्निलै	शुडुशरन्	दुरन्द
करुवि	योडुवन्	कच्चैयुड्	गवशमुड्	गळल
अरुवि	योडित्त	वैन्विळि	कुरुदिया	उलैप्प
उरुवि	योडित्त	केडहत्	तट्टौडु	मुडलम् 511

चूटु चरम् तुरन्त-तापक शर (जो श्रीराम ने) छोड़े; उयिर् निलै-राक्षसों का मर्म स्थान; तुरुवि-ढूँढ़ते हुए; ओटित्त-चले; करुवि ओट्टु-हथियारों के साथ; वन् कच्चैयुम्-दूढ़ वन्दो और; कवचमुम् कळल-कवचों को उतारते हुए; अरुवि ओटित्त अँत-नदियाँ बहती हों जैसे; इळि कुरुति आरु-(राक्षसों के शरीरों से) निकलनेवाले रक्त की नदियाँ; अलैप्प-उनको इधर-उधर हिलाती ऐसा; केटक तट्टु ओट्टुम्-ढालों के थालों के साथ; उटलम्-शरीरों को भी; उरुवि ओटित्त-निकरकर चले । ५११

श्रीराम से प्रेरित सन्तापक वाण राक्षसों के मर्मस्थल की खोज में चले । उनके लगते ही राक्षसों के हथियार कमरबन्द और कवच आदि कटकर गिर गये । वे अस्त्र ढालों को भेदकर और राक्षसों के शरीरों के आर-पार हो गये । उनके शरीर से निकलकर रक्त वहा और उसकी नदियाँ बहीं । उन नदियों में कवच, कमरबन्द आदि उतराये और इधर-उधर चालित हुए । ५११

आय्न्द	कङ्गपत्	तिरङ्गळपुक्	करक्कर्दम्	मावि
तोय्न्द	तोय्विल	पिऱैमुहच्	चरञ्जिरन्	दुमित्त
काय्न्द	वैञ्जरम्	निरुदरुतड्	गवशमार्	बुरुवप्
पाय्न्द	वञ्जह	रिदयङ्गळ	पिळन्दन	पल्लम् 512

आय्न्त-चुनकर प्रेरित; कङ्क पत्तिरङ्कळ्-कंक-पत्र (चील के पंख से युक्त शर) वाण; पुक्कु-(राक्षसों के शरीरों के अन्दर) प्रविष्ट होकर; अरक्कर् तम् आवि तोय्न्त-राक्षसों के प्राणों में लगे; तोय्वु इल-ऐसा जो प्रविष्ट नहीं हुए वे; पिऱै मुक् चरम्-अर्द्धचन्द्र वाणों ने; चिरम् तुमित्त-सिर खण्डित कर दिये; काय्न्त

वैम् चरम्—उग्र और प्रचण्ड शर; निरुत् तम्—राक्षसों के; कवच मारुपु—कवच-सज्जित वक्षों के; उख पायुन्त—आर-पार गये; पल्लम्—अन्य शरों ने; वञ्चकर्—वंचकों के; इत्यङ्कळ् पिळन्तत्त—हृदय को फोड़ दिया । ५१२

श्रीराम के कंकपत्र नाम के चील के पंख से युक्त तीक्ष्ण शर राक्षसों के मर्म पर जा लगे । ऐसे जो जाकर नहीं लगे, उन अर्द्धचन्द्र बाणों ने राक्षसों के सिरों को काट दिया । कुछ उग्र बाण जो तेजी से गये कवच सहित शरीरों को निफरकर बाहर आ गये । अन्य अस्त्रों ने उनके हृदय (वक्षस्थल) को विदीर्ण कर दिया । ५१२

तूड	णन्विडु	शरमवै	यावैयुन्	तुणिया
माडु	निन्ऱवर्	वळङ्गिय	पडैहळु	माड्डा
आडल्	कौण्डत्त	नळप्परुम्	बैरुवलि	यरक्कर्
कूडि	निन्ऱवक्	कुरैहडल्	वडळ्बडक्	कुरैत्तान् 513

तूटणन्—दूषण ने; विटु—जो चलाया; चरम् अवै यावैयुम्—उन सभी बाणों को; तुणिया—(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न करके; माडु निन्ऱवर्—पास जो खड़े रहे; वळङ्किय पटैकळुम्—उनके चलाये हुए शरों को भी; माड्डा—लौटवा देकर; अळप्पु अरुम्—अगणित; पैरु वलि अरक्कर्—बड़े बलवान राक्षस; कूटि निन्ऱ—जिसमें मिले रहे; कुरै कटल्—उस गर्जनशील सागर-सम सेना को; वडळ् पट—सुखाते हुए; कुरैत्तान्—मिटकर; आटल्—विजय; कौण्डत्तन्—प्राप्त की । ५१३

श्रीराम ने दूषण-प्रेरित सभी शरों के खण्ड-खण्ड कर दिये । पास जो रहे, उन राक्षसों के प्रेरित शरों को बेकार करके फिरा दिया । इस तरह गर्जनशील सागर के समान जो सेना राक्षसों से भरी थी उसको श्रीराम ने सुखा दिया । वे विजयी हो गये । ५१३

आरुत्तै	ळुन्दन्ऱ	वानव	ररुवरै	मरुत्तो
डीरुत्तै	ळुन्दन्	कुरुदियिन्	पैरुनदि	यिरामन्
तूरुत्त	शैज्जरन्	दिशैत्तौण्	दिशैत्तौण्	दौडरुन्नु
पोरुत्त	वैज्जित्त	तरक्करैप्	पुरट्टिन्	पुवियिल् 514

वानवरै—देव; आरुत्तु अँळुन्तन्ऱ—हल्ला मचा उठे; कुरुदियिन् पैरु नति-रक्त की बड़ी नदियाँ; अरु वरै—बड़े पर्वतों को; मरुत्तौडु—पेड़ों के साथ; ईरुत्तु अँळुन्तत्त—बहाते हुए वहीं; इरामन्—प्रभु श्रीराम ने; तूरुत्त—जो ठैसे; वैम् चरम्—उन उत्तम बाणों ने; तिचै तौळुम् तिचै तौळुम्—दिशा-दिशा में सर्वत्र; तौडरुन्नु—(राक्षसों का) पीछा करके जाकर; पोरुत्त—उन दिशाओं को आच्छादित करते हुए जो रहे, उन; वैम् चित्तुत्तु अरक्करै—भयंकर, क्रुद्ध राक्षसों को; पुवियिल्—भूमि पर; पुरट्टित्त—लुढ़का दिया । ५१४

देवगण इससे हर्षित हो गये और उन्होंने हल्ला मचाया । रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बड़े-बड़े पर्वतों को तरुओ सहित बहाते हुए वही ।

श्रीराम लगातार शर चला रहे थे । वे हर दिशा में राक्षसों का पीछा करते गये और वहाँ भरे रहे क्रुद्ध राक्षसों के सिर कटकर भूमि पर लुढ़क गये । ५१४

तोन्ऱु	माल्वरैत्	तौहैयैन्त	तुवन्ऱिय	निणच्चे
ऱान्ऱु	पाळवयिऱ्	उलहैयैप्	पुहळ्वदै	नमर्वेट्
टून्ऱि	त्तारैला	मुलन्दन	रौल्लैयिन्	मडिन्दाऱ्
कान्ऱु	वव्वुयिऱ्क्	कालनुम्	वलित्तुमैय्	कवन्ऱान् 515

तोन्ऱु माल् वरै-दृश्यमान बड़े पर्वतों के; तौकै अँत-समूहों के समान; तुवन्ऱिय-घने रूप से रहे; निण चेऱु-मांस-पंक; आन्ऱु-खूब खाकर जो रहे; पाळ् वयिऱ्क् अलकैयै-उन रिक्त-पेट वाले प्रेतों की; पुहळ्वतु अँत्-प्रशंसा क्या हो; अमर् वेट्टु-युद्ध चाहकर; ऊन्ऱित्तार् अँलाम्-जो रहे वे सभी (राक्षस); औल्लैयिन्-जल्दी; उलन्तत्तर्-मरे; कान्ऱु-(प्रेतों से पेट भर जाने के कारण जो) यूके गये; अ उयिर्-उन प्राणों को; कालनुम्-यम भी; वलित्तु-छीन ले जाते-जाते; मैय् कवन्ऱान्-श्रान्त-शरीर हो गया । ५१५

चर्वी के पर्वतों के समान ढेर बने रहे । उसको खाकर प्रेत बड़े ही मजे में रहे । अब तक रिक्तपेट रहे उनको मनमाने ढंग से खाने को मिल गया । उनकी प्रशंसा क्या की जाय ? उससे बढ़कर यम की स्थिति कहना अधिक युक्त होगा, क्योंकि उसी से युद्धभूमि की स्थिति का सच्चा रूप मिलेगा । युद्ध में मन लगाकर जो राक्षस आये वे सब मरे । उनको प्रेतों ने खाया और जो पेट के भर जाने से उनके द्वारा त्यक्त थे, उन जीवों को उठाते-उठाते यम का शरीर थक गया । ५१५

कळिऱु	तेर्परि	कटुत्तवर्	मुडित्तलै	कवन्दम्
औळिऱु	पल्पडैत्	तेड्गुलत्	तरक्कर्द	मुडलम्
वळिऱु	शैर्निणम्	विऱड्गिय	वडुक्कलिन्	मीदिल्
कुळिऱु	तेर्हडि	दोट्टिनन्	ळुडणन्	कोदित्तान् 516

तूटणन्-दूषण; कळिऱु-हाथी; तेर्-रथ; परि-अश्व; कटुत्तवर्-(साथ लेकर) क्रोध के साथ जो लड़े; तन् कुलत्तु अरक्कर् तम्-अपने कुल के राक्षसों के; मुडित्तलै-किरीटधारी सिरों; कवन्तम्-कबन्धों; औळिऱु पल् पडै-शोभायमान अनेक हथियारों; वैळिऱु चेर् निणम्-श्वेत चर्वी; पिऱड्किय-के बने; अटुक्कलिन् मीते-पर्वतों पर ही; कुळिऱु तेर्-शब्दायमान रथ को; कटितु ओट्टित्तन्-सवेग चलाता गया; कोदित्तान्-क्रुद्ध रहा । ५१६

दूषण ने अब अपने रथ को आगे बढ़ाया । सामने हाथी, अश्व, राक्षसों के किरीटधारी सिर, उनके कबन्ध, अनेक उज्ज्वल हथियार श्वेत चर्वी आदि के पर्वतों के समान ढेर बने पड़े थे । क्रोध से उन्मत्त दूषण का रथ इन्हीं के ऊपर से चला और गरगराहट करता गया । ५१६

अरङ्गीळ	ळादव	राक्कैह	ळडुक्किय	वडुक्कल्
पिरङ्ग	नीण्डन्	कणिप्पिल	पेरुङ्गडु	विशैयाल्
करङ्गु	पोन्ऱुळ	दायिन्तुम्	विणप्पेरुङ्	गडत्तिल्
इरङ्गु	मेरुमत्	तेरपट्ट	दियादेन	विशैप्पाम् 517

अरम् कौळ्ळातवर्-अधर्मी (राक्षसों) के; आक्कैकळ्-शरीर; अटुक्किय अटुक्कल्-जिनमें परतों के रूप में चुने गये थे, वे पर्वत; पिरङ्क नीण्डन्-सब जगह दिखाई देते हुए विस्तृत रूप से पड़े रहे; कणप्पिल-हिसाब में नहीं आये (अगणित रहे); पिणम् पेरुम् कटत्तिल्-लाशों के उस बड़े वन में; पेरुम् कटुम् विचैयाल्-अधिक वेग के साथ; करङ्कु पोन्ऱु-लटटू के समान; उळ्ळतु आयिन्तुम्-घूमता रहा तो भी; इरङ्कुम् एरुम्-उतरता-चढ़ता गया; अ तेर् पट्टतु-उस रथ का हाल; यातु अन्न-क्या (था यह); इचैप्पाम्-कहें । ५१७

अधर्मी राक्षसों की असंख्य लाशें परतों में पहाड़ों के समान पड़ी रहीं । दूषण का रथ जब उन लाशों के वन-समान युद्धभूमि में लटटू के समान वेग से घूमता हुआ चला तो भी चढ़ावों और उतारों के कारण उसे बहुत संकट उठाना पड़ा । उसकी क्या गति हुई, उसका क्या कहा जाय ? । ५१७

अरिदि	तैय्दिन्	तैयैन्दु	कौय्युळैप्	परियाल्
उरुळु	माळिय	दौरुदनिन्	तेरिनन्	मेहत्
तिरुळि	नीङ्गिय	विन्दुविर्	पौलिहिन्ऱु	विरामन्
तैरुळुम्	वारुहणैक्	कूऱ्ऱैवि	राविशैन्	ईन्ऱ 518

ऐ ऐन्तु-(पाँच के पाँच =) पचीस; कौय् उळै परियाल्-सुन्दर रूप से कटे अयालों से भूषित अश्वों द्वारा; उरुळुम्-(खींचकर चलने से) चलनेवाले; आळियतु और तत्ति तेरित्तन्-चक्रों के अनुपम रथ पर आरुढ़ दूषण; मेकत्तु इरुळिन् नीङ्किय-मेघों के कारण वने अन्धकार से छूटकर जो आया है; इन्तुविल्-उस इन्दु के समान; पौलिक्किन्ऱु-शोभायमान; इरामन्-श्रीराम के; तैरुळुम्-साफ़; वारु-दीर्घ; कणै कूऱ्ऱु अँतिर्-बाण रूपी यम के सामने; आवि चैन्ऱु अँन्त-जीव पहुँचा हो, ऐसा; अरित्तन् अँयित्तन्-सायास पहुँचा । ५१८

उसके रथ में पचीस सुन्दर रूप से कटे (सजे) अयालों से भूषित अश्व जुते थे । उस पर आरुढ़ दूषण सायास श्रीराम के सामने, यम के सामने जानेवाले जीव के समान (अपने प्राण सौंपने के लिए) जा पहुँचा । श्रीराम मेघान्धकारनिवृत्त इन्दु के समान शोभायमान थे । ५१८

ॐ शैन्ऱु	तेरैयुम्	जिलैयुडै	मलैयैन्त	तेरमेल्
निन्ऱु	तूडणन्	इन्ऱैयु	नेडियव	तोक्कि
नन्ऱु	नन्ऱुनिन्	तिलैयैन्	वरुळुरै	नयन्दान्
अँन्ऱु	कालत्तव्	वैय्यवन्	पहळिसून्	ईय्दान् 519

नेटियवन्-विक्रमी श्रीराम ने; चैन्त्र तेरैयुम्-आगत रथ को; चिले उटे मले
 अँत-धनुर्धर पर्वत के समान; तेर् मेल् निन्त्र-रथ पर स्थित; तूटणन् तन्तैयुम्-दूषण
 को; नोक्कि-देखकर; निन् निले नन्ऱु नन्ऱु-तुम्हारा धैर्य अच्छा है, अच्छा है;
 अँत-ऐसा; अरुळ उरै नयन्तान्-कृपा-वचन कहे; अँन्त्र कालत्तु-जब उन्होंने यह
 कहा, तब; अ वैय्यवन्-उस दुराचारी ने; पकळि मून्ऱु-शर तीन; अँय्तान्-
 चलाये । ५१६

विक्रमी श्रीराम ने सामने आये रथ को और उस पर आरुढ़, धनुर्धर
 भूधर के समान दूषण को भी देखा । उन्होंने वाहवाही की— “तुम्हारा
 धैर्य धन्य है, धन्य है ।” जब वे कृपा के साथ यह वचन कह रहे थे, तभी
 उस दुराचारी दूषण ने तीन भयंकर शर लेकर उन पर चला दिये । ५१९

तूर	वट्टवैण्	डिशैहळैत्	तनित्तनि	शुमक्कुम्
पार	वैट्टित्तो	डिरण्डिनि	लौन्ऱुपार्	पुरक्कल्
पेर	विट्टवन्	करिनुद	लोडैयिर्	पिड्डुगुम्
वीर	पट्टत्तिर्	पट्टन	विण्णवर्	वैरुव 520

तूर वट्ट-दूर, मण्डलाकार; अँण् तिचैकळै-आठों दिशाओं को; तत्ति तत्ति
 चुमक्कुम्-अलग-अलग धारण करनेवाले; पार वैट्टित् ओट्टु-बली अष्ट (दिगजों)
 के साथ; इरण्डित्तिल ओन्ऱु-और (शेष व कूर्म में) एक (शेष) अपनी पादुकाओं
 को; पार् पुरक्क-लोकभरणार्थ; पेर विट्टवन्-जिन्होंने अलग भेजा था, उन
 (श्रीराम) के; करि नुतल् ओट्टैयिल्-गज के भाल पर शोभनेवाले पट्ट के समान;
 पिड्डुक्कुम्-मनोरम रूप से विद्यमान; वीर पट्टत्तिल्-वीरोचित पट्टों पर; विण्णवर्
 वैरुव-देवों को सिहरने देते हुए; पट्टन-(वे तीनों शर) लगे । ५२०

वे जाकर श्रीराम के भाल की वीरपट्टी पर लगे, जिसे देखकर
 देवगण सहम उठे । वह पट्टी गज के भाल पर सज्जित मुखपट्ट के समान
 शोभायमान थी । श्रीराम कौन थे ? वे स्वयं विण्णु भगवान थे, जिन्होंने
 अष्टदिगजों के भूभार-वहन के कार्य में सहायता देने के लिए अपनी पादुकाओं
 को अपने से अलग करके भेजा था । वे पादुकाएँ शेषनाग के अवतार थी,
 जो भूमि के भारवाही दो (शेष और कूर्म) में एक (माना जाता) है । ५२०

ॐ अँय्द	कालमुम्	वलियुनन्	इँत्तनिनैन्	दिरामन्
शैय्द	शैयौळि	मुखवलन्	कडुङ्गणै	तैरिन्दान्
नौय्दि	नङ्गव	नौरिल्परित्	तेर्बड	नूडिक्
कैयिल्	वैञ्जिलै	यरुत्तौळिर्	कवशमुड्	गडिन्दान् 521

इरामन्-श्रीराम ने; अँय्त कालमुम्-(दूषण के) शर चलाने का काल; वलियुम्-
 और उसका बल; नन्ऱु अँत-श्लाघ्य, यह; नितैन्तु-समझकर; चैय्त चेय् ओळि-
 लाल (सुन्दर) उज्ज्वल; मुखवलन्-हँसी के साथ; कटुम् कणै तैरिन्तान्-कठोर एक
 अस्त्र चुनकर चलाया; नौय्तिन्-सुगम रीति से (या जल्दी); अड्कु-वहाँ; अवन्-
 उसके; नौरिल् परि-तीव्रगति अश्व के; तेर्-रथ को; पट्ट नूडि-तहस-तहस

करके; कैयिन् वैम् चिल्ल अरुत्तु—(उसके) हाथ में रहे धनुष को भी काटकर; ओळिर् कवचमुम्—चमकदार कवच को भी; कटिन्तान्—तोड़ दिया । ५२१

तीनों शर श्रीराम के सिर की पट्टी पर लगे । श्रीराम मुस्कराये । उन्होंने मन में सोचा कि वाह ! उसका शरप्रेषणकाल यानी उसके बाण की गति और उसका बल प्रशंसनीय है ! फिर श्रीराम ने एक भयावह बाण चुन लिया और उससे उसके रथ को और उसमें जुते तीव्रगामी अश्वों को ध्वस्त किया; उसके हाथ में रहे भयंकर धनु को तोड़ा और उसके कवच को भी नष्ट कर दिया । ५२१

ॐ तेव	रार्त्तैळ	मुनिवर्ह	डिशैतीरुज्	जिलम्बुम्
ओविल्	वाळ्त्तौलि	कार्क्कडन्	मुळक्कैन्	वोङ्गक्
काव	डाविडु	वल्लैये	नीयैत्तक्	कणैयौन्
रेवि	तानव	नैयिरुडै	नैडुन्दलै	यिळन्तान् 522

तेवर् आर्त्तु अळ—देवों ने उठकर कोलाहल मचाया; मुनिवर्कळ—मुनियों का; तिचै तौडम्—दिशा-दिशा में; चिलम्पुम्—कहा हुआ; ओवु इल्—निरन्तर; वाळ्त्तु ओलि—आशीर्वाद का स्वर; कार् कटल् मुळक्कु अन्न—काले समुद्र के गर्जन के समान; ओङ्क—भर उठा; वल्लैयेल्—समर्थ हो तो; इतु का अटा नी—इसकी बचा रे तू; अन्न—कहकर; कणै औन्नु—एक बाण; एविनान्—चलाया; अवन्—उसने भी; अयिष्टै नैडुम् तलै—(भयंकर वक्र) दाँतों से युक्त अपना बड़ा सिर; इळन्तान्—गँवाया । ५२२

श्रीराम ने फिर एक अस्त्र छोड़ा । छोड़ते-छोड़ते उन्होंने ललकारा कि रे दुष्ट ! हो सके तो तू बचा ले इसे । दूषण बेचारा क्या करता ? उसने अपना सिर गँवाया । तब देव हर्षरव मचा उठे । चारों ओर ऋषियों ने साधुवाद और आशीर्वाद किया, जिसका स्वर काले समुद्र के गर्जन के समान सब ओर भर उठा । ५२२

ॐ तम्बितलै	यर्ऱुपडि	युन्दय	रदन्शेय्
अम्बुपडै	यैत्तुणि	पडुत्तडु	मरिन्दान्
वैम्बुपडै	विर्कैविश	यक्करन्	वैहुण्डान्
कौम्बुतलै	कट्टिय	कौलैक्करि	कडुप्पान् 523

कौम्पु तलै कट्टिय—जिसके दाँत, सिर जितना ऊँचा उगे हुए थे; कौलै करि—उस भयंकर गज की; कटुप्पान्—समता करनेवाला; वैम्पु पटै—भयंकर हथियार; विल्—धनुष को; कै—रखनेवाले हाथ का; विचय करन्—विजयी खर; तम्पि तलै अर्ऱु पटियुम्—भाई (दूषण) के सिर के कटने का प्रकार; तयरतन् चेय्—दशरथ के पुत्र के; अम्पु—बाणों का; पटैयै तुणि पटुत्ततुम्—उसकी सेना का नाश करना; अरिन्तान्—जानकर; वैकुण्ठान्—नाराज हुआ । ५२३

विजयी खर को यह समाचार मिला । खर ऐसे खूनी गज के समान

भयंकर आकार का था, जिसके दाँतों के छोर सिर तक ऊँचे उगे थे। वह अपने हाथों में बड़े ही घातक हथियार और धनुष रखता था। उसके भाई दूषण का सिर कैसे कटा? दशरथसुत, दाशरथी श्रीराम के बाणों ने राक्षस-सेना को कैसे हत कर मिटाया? —यह उसने सुना। उसे अपार क्रोध हुआ। ५२३

❀ अन्तहनु	मुट्किट	वरक्करहड	लोडुम्
शिन्दुरम्	वयप्पुरवि	तेर्दिशं	परप्पि
इन्दुवै	वळक्कुमैळि	लिक्कुल	मैन्तत्तान्
वन्दुवरि	विर्कैमद	यानैयै	वळैत्तान् 524

अन्तकनुम् उट्किट—यम को भी भयभीत करते हुए; अरक्कर कटल् ओटुम्—राक्षसों की सेना के सागर के साथ; चिन्तुरम्—गजों; वय पुरवि—बलवान अश्वों; तेर्—रथों को; तिचै परप्पि—चारों दिशाओं में वितरित करके; इन्दुवै वळक्कुम्—इन्दु को घेरनेवाले; अळिलि कुलम् अन्—मेघ-समूह के समान; वरि विल्कै—बन्धन-युक्त धनुर्धर-हस्त; मत यातैयै—मत्तगज-सम (श्रीराम) को; तान् वन्दु—स्वयं आकर; वळैत्तान्—घेर लिया (खर ने)। ५२४

वह तुरन्त उठकर अपनी सेना के साथ श्रीराम के पास आया और उसने अपनी सेना के साथ उन्हें घेर लिया। उस सेना में पदाति वीरों का दल सागर के समान था। उसमें गज, बलवान अश्व, रथ आदि की सेनाएँ भी थीं। वह सेना चन्द्र को घेर आनेवाले मेघमण्डलों के समान चारों ओर फैली रही। खर ने अपने दल-बल सहित धनुर्धर, मत्तगज-सम श्रीराम को घेरा। ५२४

❀ अडङ्गलि	कौडुन्दौळि	लरक्करव	वत्तन्दन्
पडङ्गलि	वुडप्पडि	पडप्पल	विदप्पोर्
कडङ्गलुळ	तडङ्गळिरु	तेर्परि	कडावित्
तौडङ्गितर्	नैडुन्दहैयुम्	वैङ्गणै	तुरन्दान् 525

अटङ्कल् इल्—अदम्य; कौटुम् तौळिल्—दुराचारी; अरक्कर—राक्षसों ने; अ अत्तन्तन्—उस अनन्तनाग के; पटम् किळिवु उडु—फनों को फाड़ते हुए; पटि पट—भूमि को मेटते हुए; पल वित्त—विविध; कटम् कलुळ—मद बहानेवाले; तटम् कळिळ—बड़े हाथियों; तेर्—रथों और; परि—अश्वों को; कटावि—चलाते हुए; पोर् तौटङ्कितर्—युद्ध आरम्भ किया; नैडुम् तक्कैयुम्—विक्रमी प्रभु ने भी; वैम् कर्णै—भयंकर अस्त्र; तुरन्दान्—चलाये। ५२५

वे अदम्य दुराचारी राक्षस घोर युद्ध करने लगे। भूमि का धारण करनेवाले आदिशेपनाग का फन ही फट गया; भूमि भी ध्वस्त हो गयी! वे राक्षस विविध बड़े-बड़े गज हाँकते आये। वे गज अपने गालों पर

मदनीर वहा रहे थे । वीर अश्वों के साथ रथ चलाते आये । विक्रमी श्रीराम ने बलवान अस्त्र छोड़े । ५२५

तुडित्तन्न	कडक्करि	तुडित्तन्न	परित्तेर्
तुडित्तन्न	मुडित्तलै	तुडित्तन्न	तौडित्तोळ्
तुडित्तन्न	मणिककुडर्	तुडित्तन्न	तशैत्तोल्
तुडित्तन्न	कळरुणै	तुडित्तन्न	विडित्तोळ् 526

कटम् करि तुडित्तन्न—(उनके लगने से) मत्तगज तड़पे; परि तेर्—अश्व-जुते रथ; तुडित्तन्न—उछले; मुडि तलै—किरीटधारी सिर; तुडित्तन्न—छटपटाये; तौडि तोळ्—बलयभूषित कन्धे; तुडित्तन्न—कटकर छटपटाये; मणि कुडर्—उनकी छोटी आँति; तुडित्तन्न—फड़कीं; तचै तोल् तुडित्तन्न—मांससहित खालें फड़कीं; कळल् तुणै—पैरों के जोड़े; तुडित्तन्न—फड़के; इटम् तोळ्—वायें हाथ । ५२६

मत्तगज तड़पकर गिरे । रथ उछलकर गिरे और टूटे । अश्व छटपटाते हुए गिरे । किरीटधारी राक्षसों के सिर तड़पे । बलयधारी कन्धे लुढ़के । राक्षसों की छोटी आँतें फड़कीं । दोनों पैर फड़फड़ाये । वायें हाथ फड़के । (तुडित्तन्न = शरीर के अंग जब शरीर से कटकर अलग होते हैं, तब कुछ देर तक उछलते-गिरते, तड़पते हैं और छटपटाते हैं । या जीवित शरीर के अंगों का फड़कना भी कहते हैं ।) । ५२६

ॐ वाळिन्वन्नम्	वेलिन्वन्नम्	वार्शिले	वत्तन्दिण्
तोळिन्वन्न	मैन्निवै	तुवन्नुनिरु	दपपेर्
आळिन्वन्न	निन्नुदलै	यम्बिन्वन्न	मैन्नुम्
कोळिन्	मळैवन्गुळ्	विन्निर्कुट्टे	पडुत्तान् 527

वाळिन् वत्तम्—तलवारों का कानन (समूह); वेलिन् वत्तम्—बछियों का जंगल; वार् चिलै वत्तम्—दीर्घ धनुषों का वन; तिण् तोळिन् वत्तम्—सुदृढ़ कन्धों का समूह; अन्नत्तवै तुवन्नु—वे सब खूब मिले रहे (जिसमें), उस; निस्त पेर् आळिन् वत्तम्—राक्षसों के वीरों का जंगल (अनीक); निन्नुदलै—जो सामने खड़ा था, उसे; अम्पिन् वत्तम् अँन्नुम्—शरों का वन रूपी; कोळिन्—बलवान; मळैयिन्—वर्षा द्वारा; कुळुवित्तिल् कुट्टपटुत्तान्—दल के दल श्रीराम ने काट गिराये । ५२७

युद्ध के मैदान में तलवारों की बहुलता थी । भालों का जंगल था । लम्बे धनुषों की भरमार थी । सबल कन्धों की विपुल भीड़ थी । इनसे भरी राक्षसों के पैदल वीरों की विशाल सेना थी । उसको श्रीराम ने शरों की वर्षा से ध्वस्त कर दिया । (तमिळ में वनम् = वन, कानन या जंगल किसी चीज़ की भीड़ या बड़े वृन्द को द्योतित करता है ।) । ५२७

तानुरुवु कौण्डदरु मन्दैरि शरन्दात्, मोनुरुवु मेरुवै विरैन्दुरुवु मेलाम्
वानुरुवु मण्णुरुवुम् वाळुरुवि वन्दार्, अन्नुवु मैन्नुमि दुणर्त्तवु मुरित्तो 528

तान् उरुवु कौण्ट तरुमम्-धर्मरूप श्रीराम के; तैरि चरम् तान्-चुने हुए शर; मीन् उरुवुम्-नक्षत्रमण्डल को भेदकर जायेंगे; मेरुवै विरेन्तु उरुवुम्-मेरु को तुरन्त भेद जायेंगे; मेल् आन् वान् उरुवुम्-ऊपर के आकाश के आर-पार जायेंगे; मण् उरुवुम्-भूमि को भी विद्ध कर जायेंगे; वाळ् उरुवि वनुतार्-तलवार लेकर आनेवाले; ऊन् उरुवुम्-राक्षसों के शरीरों को निफर जायेंगे; अन्नुतुम् इतु-यह बात; उणर्त्तवुम् उरित्तो-कहने अर्ह है क्या । ५२८

धर्मावतार श्रीराम के चुनकर प्रेषित शर तारामण्डलों को, मेरु को, आकाश को और भूमि को भी अनायास भेद चल सकते हैं । फिर तलवार-धारी राक्षसों के शरीरों को निफर सकते हैं —यह कहना क्या उनकी प्रशंसा करना होगा क्या ? । ५२८

अन्डिडर्	विळैत्तवर्	कुलङ्गळौ	डडङ्गच्
चैन्ऱुलै	वुरुम्बडि	तैरिन्दुहणै	शिन्दा
मन्डिडै	नलिन्दुवलि	योर्हळैळि	योर्क्
कौन्डुनर्	कवर्न्दपौरु	ळिड्कडिडु	कौन्डान् 529

अन्ऱु-तव; इटर् विळैत्तवर्-कण्ट देनेवाले राक्षसों को; कुलङ्कळ ओट्टु अटङ्क-कुल के साथ एक दम; चैन्ऱु उलैवु उरुम्पटि-जाकर मिटाते हुए; तैरिन्तु कणै चिन्ता-श्रीराम ने चुनकर अस्त्र छोड़े तो; मन्ऱु इटै-न्यायालय में; वलियोर्-शक्तिमन्त; अळियोरै-दीनों को; नलिन्तु-त्रास देकर; कौन्डवर्-मारकर; कवर्न्द पौरुळिल्-जो धन ग्रस लेते है, उसकी (मिटने की) से भी; कटितु-अधिक तीव्र गति से; कौन्डान्-मारा । ५२९

श्रीराम ने अस्त्र चुनकर उन राक्षसों पर चलाया जो इनको कण्ट देने आये थे और इस संकल्प के साथ चलाया कि राक्षसों का उनके कुलों के साथ नाश हो । समझिए कि कोई सवल आदमी गरीब आदमी को सताता है । न्यायालय में भी उसके विरुद्ध झूठा मामला चलाता है । अन्त में उसको मारकर उससे धन ग्रस लेता है । तो वह धन नहीं टिकता । वह बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है । उससे भी अधिक तेजी से राक्षसों की सेना को श्रीराम के वाणों ने मिटा दिया । ५२९

❖ कडुङ्गर	नैन्पपैयर्	पडैत्त	कळल्वीरन्
अडङ्गलु	मरक्करळि	वुड्डिड	वळन्डान्
औडङ्गलि	तिणक्कुरुदि	योदमदि	नूळळान्
नैडुङ्गडलित्	मन्दर	मैन्तत्तमिय	निन्डान् 530

औडङ्कल् इल्-अक्षय; तिण कुरुति ओतम् अतिल्-मांस और रक्त के सागर में; उळ्ळान्-जो रहा; नैटुम् कटलित्-वड़े (क्षीर-) सागर में; मन्तरम्-मन्दरपर्वत; अन्न-के समान; तमियन् निन्डान्-एकाकी जो खड़ा रहा; कटुम् करन् अन्न पयैर् पटैत्त-प्रखर खर नामक विद्युत्; कळल् वीरन्-पायलधारी वीर; अरक्कर्

अटङ्कलुम्-सारे राक्षसों के; अल्लिवु उड्डिट-मर-मिटने पर; अल्लुशान्-कुढ़ हुआ । ५३०

सेना-विहीन खर अक्षय मांस और रक्त के सागर के बीच में क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरु के समान खड़ा रहा । प्रखर और खर के नाम से विख्यात उस पायलधारी वीर ने देखा कि सारी सेना मिट गयी है । उसे अपार क्रोध हुआ । ५३०

ॐ शैङ्गणैरि	शिन्दवरि	विस्पहलि	शिन्दप्
पौङ्गुहुरु	दिप्पुणरि	धुट्पहैयु	नैञ्जन्
कङ्गमीडु	काहमिडै	यक्कडलि	तोडुम्
वङ्गमैत	लायदौरु	तेरिन्मिशै	वन्दान् 531

चैम् कण्-लाल आँखों से; अँरि चिन्त-अंगारे से उगलते हुए; विल् पकळि चिन्त-धनुष से बाण छोड़ते हुए; पौङ्गु कुरुति पुणरि-उमड़नेवाले रक्त का सागर और; उळ् पुक्कैयुम् नैञ्जन्-धुआँ जिसमें था, ऐसे मन के साथ; कङ्कम् ओटु काकळ् मिटैय-कंक के साथ कौए भी मिल आये; कटलिन् ओटुम् वङ्कम् अँतल् आयतु-समुद्र में चलनेवाले पोतोपम; ओरु तेरिन् मिचै-एक रथ पर; वन्तान्-आया । ५३१

उसकी लाल-लाल आँखों से अंगारे छूटे । धनुष ने शर छोड़े । रक्त सागर-सा उसके मन में उमग रहा था । उसके मध्य धुआँ उठ रहा था । खर समुद्र में चलनेवाले पोत के समान एक बड़े रथ पर सवार हो आया । उसके रथ के साथ कंक और काग उड़ते आ रहे थे । ५३१

ॐ शैरुत्तिरुदि	यिस्पुवन्ति	तीयवैल्लु	तीयिन्
मरुत्तिन्नवयि	रत्तीरुवन्	वन्दणुहु	मुन्दैक्
करुत्तमणि	कण्डर्हड	वुट्चिलै	करत्ताल्
इरुत्तवन्नुम्	वैङ्गणै	तेरिन्दत्त	तैदिरन्तान् 532

इरुत्तियिल्-युगान्त में; पुवन्ति तीय-भुवनों को जलाते हुए; चैरुत्तु अँल्लु-प्रचण्डता के साथ उठनेवाली; तीयिन्-आग के समान; मरुत्तिन् वयिरत्तु ओरुवन्-वीरता और शत्रुता में अद्वितीय (खर); वन्तु अण्कुम् मुन्तै-आकर नियराये, इसके पहले ही; करुत्त मणि कण्डर्-नीलकण्ठ श्रीशिवजी के; कटवुळ् चिलै-दिव्य (व्यंक्क नामक) धनु के; इरुत्तवन्नुम्-भञ्जक ने भी; वैम् कणै तेरिन्तत्तन्-तापक अस्त्र लेकर; अँतिरन्तान्-सामना किया । ५३२

खर भुवनों का अन्त करनेवाली युगान्त अग्नि के समान क्रूरता और वैर में अद्वितीय था । उसके अपने पास पहुँचने के पूर्व ही नीलकण्ठ शिवजी के धनु के भञ्जक श्रीराम ने बाण चुन लिये । फिर वे युद्धसन्नद्ध हो उसके सामने आये । ५३२

तीयुरुव	काल्विशैय	शैव्वियन्	वैव्वाय्
आयिरम्	वडिक्कणै	यरक्कर्पदि	यैय्दान्
तीयुरुव	काल्विशैय	शैव्वियन्	वैव्वाय्
आयिरम्	वडिक्कणै	यिरामन्नु	मरुत्तान् 533

ती उरुव-अग्नि के आकार के; काल विचैय-वायु की-सी गति के; चैव्वि अत्त-श्रेष्ठ; वैम् वाय्-भयंकर रूप से तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै-सहस्र तीक्ष्ण शर; अरक्कर् पति-राक्षसपति ने; यैय्दान्-चलाये; इरामन्नु-श्रीराम ने भी; ती उरुव-अग्नि रूपी; काल् विचैय-पवनगति; चैव्वियन्-श्रेष्ठ; वैम् वाय्-तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै-सहस्र तीक्ष्ण बाण; अरुत्तान्-चलाकर उनको काट दिया । ५३३

खर ने एक सहस्र शर चलाये । वे शर ज्वलन्त अग्नि के आकार के थे । पवनसम तेज चलनेवाले और तीक्ष्णमुखी थे । श्रीराम ने वैसे ही अग्नि रूपी, पवनगति, श्रेष्ठ और तीक्ष्णमुखी, एक सहस्र शर छोड़े और खर के अस्त्रों को काटकर मिटा दिया । ५३३

❀ ऊळियैरि	यिर्कोडिय	पाय्पहळि	यौन्वान्
एळुलहि	नुक्कुमौरु	नायहनु	मैय्दान्
शूळ्शुडर्	वडिक्कणै	यवर्इर्दिर्	तौडुत्ते
आळिवरि	विर्करन्नु	मन्नवै	यरुत्तान् 534

ऊळि अेरियिल् कौटिय-युगान्त की अग्नि से भी अधिक क्रूर; पाय् पकळि औन्वान्-तेज चलनेवाले नौ अस्त्र; एळ् उलकिनुक्कुम् और नायकनुम्-सातों लोकों के श्रेष्ठ नायक श्रीराम ने; यैय्दान्-खर पर चलाये; आळि-मण्डलाकार; वरि विल्-वन्धनयुक्त धनु के; करन्नुम्-खर ने भी; अवर्इर् अतिर्-उनके आगे; चुटर् चळ्-ज्वलन्त; वटि कणै-तीक्ष्ण बाण; तौडुत्ते-चलाकर; अन्नवै-उनको; अरुत्तान्-काट दिया । ५३४

फिर सर्वलोकनायक श्रीराम ने प्रलयकालीन अग्नि के समान तापक और तेज चलनेवाले सात बाण खर पर चलाये । खूब मण्डलाकार झुके धनुष के धारक खर ने भी उनके विरुद्ध ज्वलन्त और तीक्ष्ण अस्त्र भेजकर उन्हें काट दिया । ५३४

❀ कळ्ळविनै	मायमवर्	कल्वियिन्	विळैत्तान्
वळ्ळलुरु	वैप्पहळि	मारियिन्	मरैत्तान्
उळ्ळमुलै	दुर्इमर	रोडिन्	रौळित्तार्
वैळ्ळैयि	इदिळ्पिडळ	वीरन्नुम्	वैहुण्डान् 535

कल्वियिन्-अपनी विद्या में; कळ्ळविनै-वंचनापूर्ण; माय अमर्-मायायुद्ध; विळैत्तान्-करके; वळ्ळल् उरुवै-उदार प्रभु श्रीराम के शरीर को; पकळि मारियिन्-शर-वर्षा से; मरैत्तान्-छिपा दिया (खर ने); अमर्-देव; उळ्ळम् उळैवु उर्इ-

मन में व्याकुल होकर; ओटित्-भागे और; ओळित्तार्-छिप गये; वीरत्तुम्-वीर श्रीराम ने; वैळ् अयिळ्-श्वेत दाँतों से; इतळ् पिडळ्-अधर को दबाते हुए; वैकुण्ठान्-कोप किया । ५३५

खर माया-विद्या में निपुण था । उसने कपटपूर्ण मायायुद्ध करके श्रीराम के श्रीशरीर को शर-वर्षा से छिपा दिया । देव इसको देखकर व्याकुल हुए और दूर भागकर छिप गये । वीर श्रीराम ने भी दाँत पीसते हुए क्रोध का अवलम्बन किया । ५३५

❀ मुडिप्पे निन्ऱोर् मौय्हणै यालैन्तु, तौडुत्तु निन्ऱयर् तोळुऱ वाङ्गित्तान्
पिडित्त तिण्शिलै पेरहल् वानिडै, इडिप्पि न्नोशै पडक्कडि दिऱ्ऱदे 536

इन्ऱ-अभी; ओर् मौय् कणैयाल्-एक सारयुक्त वाण से; मुडिप्पेन् अन्त-समाप्त कर दूंगा, यह कहते हुए; तौडुत्तु निन्ऱ-संधान करके; उयर् तोळ् उऱ-उन्नत कन्धे तक; वाङ्गित्तान्-डोर खींचा; पिडित्त तिण् चिलै-उनसे प्रस्त बलवान धनुष; पेर अकल् वान् इटै-अति विस्तृत आकाश में; इडिप्पिन् ओचै-वज्र का-सानाद; पड-उठाते हुए; कटितु इऱ्ऱतु-शीघ्र टूट गया । ५३६

श्रीराम ने कहा कि अब एक ही सारयुक्त वाण चलाकर खर का काम तमाम कर दूंगा । उन्होंने शर संधान कर डोर को ऐसा खींचा कि धनुष का छोर उनके कन्धे को स्पर्श करे । बस, वह बलवान धनुष आकाश के वज्र के समान उच्च स्वर निकालते हुए उसी दम भग्न हो गया । ५३६

वैऱ्ऱि कूऱिय वान्नवर् वीरन्विल्, इऱ्ऱ पोडु तुणुक्कमुऱ् रेङ्गित्तार्
मऱ्ऱ वैञ्जिलै यिन्मै मत्तक्कोळा, अऱ्ऱ दालैम् वलियैन्त वञ्जित्तार् 537

वैऱ्ऱि कूऱिय वान्नवर्-(श्रीराम की) विजय के प्रशंसक देव; वीरन् विल् इऱ्ऱ पोतु-वीर श्रीराम के धनुष के टूटने पर; तुणुक्कम् उऱ्ऱ-डरकर; एङ्गित्तार्-दुखी हुए; मऱ्ऱम् वैम् चिलै इन्मै-अन्य किसी धनुष का अभाव; मत्तम् कोळा-मन में सोचकर; अम् वलि अऱ्ऱतु-हमारा बल मिटा; अन्-ऐसा; अञ्जित्तार्-भयभीत हुए । ५३७

देव श्रीराम की विजय की प्रशंसा करते रहे । अब उन्होंने देखा कि श्रीवीरराघव का धनुष टूट गया है । कोई दूसरा धनुष नहीं है । वे निस्सहाय खड़े हैं । उन्हें संशय और डर हो गया कि अब हमारा बल गया ! । ५३७

❀ अन्तु मात्तिरत् तेन्दिय कार्मुहम्, चिन्त मन्ऱन् दनिमैयुञ् जिन्दियान्
मन्ऱर् मन्ऱवन् शैम्मन् सरविन्नाल्, पिन्नु इत्तन् पेरुङ्गर नीट्टिनान् 538

अन्तुम् मात्तिरत्तु-उनके ऐसा कहते समय; मन्ऱर् मन्ऱवन्-राजाधिराज के; चैम्मल्-पुत्र श्रीराम ने; एन्तिय कार्मुक्कम्-अपना गृहीत कार्मुक; चिन्तम् अन्ऱम्-टूट गया, इसकी और; तनिमैयुम्-अपनी (एकाकी) निस्सहाय स्थिति की;

चिन्तितान्-चिन्ता न करके; मरपिताल्-पूर्व संकेत के अनुसार; तन् पेशम् करम्-अपना बढ़ा हाथ; पिन् उड-पीछे की तरफ़; नीट्टितान्-बढ़ाया । ५३८

देव इस प्रकार कह ही रहे थे कि उधर श्रीराम ने एक अद्भुत कार्य किया । दाशरथी ने किंचित भी चिन्ता नहीं की कि मेरा कोदण्ड टूट गया है और मैं बिना हथियार के एकाकी खड़ा हूँ । उन्होंने अपना दीर्घ हाथ पीछे की ओर बढ़ाया । उसका पूर्वसंकेत का कोई अर्थ था । ५३८

❀ कण्डु निन्ऱु करुत्तुणर्न् दानेन, अण्डर् नादन् इडक्कैयि तत्तुणे
पण्डु पोर्म्मळ् वाळियैप् पण्वित्ताल्, कौण्ड विल्लै वरुणन् कौडुत्ततन् 539

कण्डु निन्ऱु-उस स्थिति को देखते हुए खड़ा; करुत्तु उणर्न्तान् अन्त-उनका अभिप्राय समझ गया हो ऐसा; पण्डु-पहले; पोर् मळ् आळियै-युद्ध में परशु का प्रयोग करनेवाले परशुराम से; पण्वित्ताल्-अपने सामर्थ्य से; कौण्ड-गृहीत; विल्लै-धनु को; अत्तुणे-तब; वरुणन् तटक्कैयिल् कौडुत्ततन्-वरुण ने श्रीराम के विशाल हाथ में दिया । ५३९

वरुण यह सब देखते हुए पीछे खड़े थे । पहले जब श्रीराम ने युद्धोपयोगी परशु के धारक परशुराम को हराया था और अपने सामर्थ्य से उनका धनुष ले लिया था, तब उन्होंने वह कार्मुक वरुण के पास दे रखा था । वरुण ने श्रीराम का मन जान लिया और वह धनु श्रीराम के हाथ में धर दिया । ५३९

❀ कौडुत्त	विल्लैयक्	कौण्ड	निऱुत्तितान्
अडुत्तु	वाङ्गि	वलङ्गौण्	डिडक्कैयिर्
पिटित्त	पोडु	नैऱिपिळैत्	तार्क्कैलाम्
तुडित्त	वालिडक्	कण्णोडुन्	दोळ्हळै 540

कौडुत्त 'विल्लै'-वरुण-दत्त धनु को; अ कौण्डल् निऱुत्तितान्-उन मेघश्याम ने; अडुत्तु-लेकर; वलम् कौण्डु वाङ्कि-जोर से झुकाकर; इट कैयिल् पिटित्त पोतु-जब अपने बायें हाथ में धरा, तब; नैऱि पिळैत्तार्क्कु अल्लाम्-दुराचारी सभी राक्षसों के; इटम् कण् ओटु तोळ्कळ्-बाई आँखें और उनके साथ बाईं भुजाएँ; तुडित्त-फड़क उठीं । ५४०

मेघवर्ण श्रीराम ने वरुण-दत्त धनु को हाथ में लिया । उसको झुकाकर अपने बायें हाथ में धरा तो दुराचारी सभी राक्षसों की बायीं आँखें बायीं भुजाओं के साथ फड़क उठीं । ५४०

❀ एऱ्ऱि नाणिले यामुन् नैडुत्तदु, कूऱ्ऱि नारुड् गुनिक्कक् कुनित्तैर्दिर्
आऱ्ऱि नानव नाळियन् देऱ्शरम्, नूऱ्ऱि नानुण् पौडिपड नूऱिनान् 541

अतु अडुत्तु-उस चाप को लेकर; इमैया मुन्-पलक मारती देर से पहले; नाण् एऱ्ऱि-प्रत्यंचा बढ़ाकर; कूऱ्ऱिनारुन् कुत्तिक्क-यमदेव को भी नाचने देते हुए;

कुनित्तु-उसकी झुकाकर; अँतिर् आरुत्तान् अवन्-सामने लड़ने आगत उस (खर) के; आळि अस् तेर्-चक्रसहित सुन्दर रथ को; चरम् नूरुत्तिनाल्-सौ शरों से; नुण् पोटि पट-बारीक चूर्ण करते हुए; नूरुत्तिनाल्-मिट्टा दिया । ५४१

श्रीराम ने पलक मारने के समय के अन्दर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायी । शर संधान करके धनु को झुकाया । यम को आनन्द-नृत्य-मग्न करते हुए सौ अस्त्र चलाये । उनके सामने आये खर का सुन्दर पहियेदार रथ चूर-चूर हो गया । रथ ध्वस्त हो गया । ५४१

ॐ अँन्दि रत्तडन् देरिळन् दानिळिन्, दन्द रत्तिडं यार्त्तैळुन् दम्बैलाम्
सुन्द रत्तति विल्लिदन् डोळैत्तुम्, मन्द रत्तिन् मळैयिन् वळङ्गिन्नान् 542

अँन्तिर तटम् तेर्-यन्त्रचालित विशाल रथ; इळुन्तान्-खोकर; इळिन्तु- (खर) उतरकर; आरुत्तु-नारे लगाते हुए; अन्तरत्तु इटै-अन्तरिक्ष में; अँळुन्तु-उठ-जाकर; अम्पु अँलाम्-अपने सारे बाण; चुन्तर् तनि विल्लि तन्-सुन्दर कोदण्डपाणी के; तोळ् अँत्तुम्-भुजाओं रूपी; मन्तरत्तिल्-मन्दरपर्वत पर; मळैयिन्-वर्षा के समान; वळङ्कितान्-बरसाया । ५४२

खर का रथ यन्त्र-चालित था । वह नष्ट हो गया । खर उतरा और अन्तरिक्ष में खड़ा हो गया । भयंकर गर्जन करते हुए उसने अपने पास रहे सभी अस्त्रों को अद्वितीय सुन्दर कोदण्डपाणी पर वर्षा के समान बरसा दिया । ५४२

ॐ ताङ्गि निन्ऱ तयरद रामन्नुन्, तूङ्गु तूणि यिडैच्चुडु शैञ्जरम्
वाङ्गु हिन्ऱ वलक्कैयै वाळियाल्, वोङ्गु तोळोडुम् पारिडै वीळ्त्तित्तान् 543

ताङ्कि निन्ऱ-उन अस्त्रों का सामना करते हुए जो खड़े रहे, उन; तयरतरामन्नुम्-दशरथ के पुत्र, श्रीराम ने भी; तूङ्कु तूणियिटै-लटकनेवाले तूणीर में से; चुटु चैम् चरम्-तापक और श्रेष्ठ बाण; वाङ्कुकिन्ऱ-लेनेवाले; वल क्यै-दक्षिण हस्त को; तोळ् ओटु-कन्धे के साथ; पार् इटै-भूमि पर; वीळ्त्तित्तान्-काटकर गिरा दिया । ५४३

श्रीराम ने उनको धैर्य के साथ धारण किया । फिर उन्होंने खर के उस हाथ को भुजमूल से काटकर गिराया जो पीठ पर बँधे तूणीर से अस्त्र ले रहा था । ५४३

ॐ वलक्कै	वीळ्दलु	मरुरैक्कै	याल्वैर्ऱि
उलक्कै	वान्त	तुरुमैन्	वोच्चिन्नान्
इलक्कु	वर्कुमुन्	वन्द	विरामन्नुम्
विलक्कि	नात्तोरु	वैङ्गदिर्	वाळियाल् 544

वलम् क-दक्षिण हस्त के; वीळ्त्तलुम्-अलग हो गिरने पर; मरुरै कैयाल्-दूसरे हाथ से; वैर्ऱि उलक्कै-विजयदायक मूसल को; वान्तत्तु उरुम् अँत-आकाश

में वज्र के समान; ओच्छिनात्—(खर ने श्रीराम पर) फेंका; इलक्कुवड्कु मुन् वन्त इरामत्तुम्—लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने भी; और वम् कतिर् वाळियाल्—एक भयंकर ज्वलन्त बाण से; विलक्किन्नान्—उसको रोका । ५४४

खर का दक्षिण हस्त कटकर गिर गया । तो उसने बायें हाथ से एक विजयदायक मूसल उठाकर आकाश के वज्र के समान श्रीराम पर फेंका । लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने जाज्वल्यमान और संतापक एक अस्त्र से उसको बीच में रोक दिया । ५४४

ॐ विराव रङ्गाडु वैळ्ळैयि रिङ्गपिन्, अराव लुन्ऱु तनैयव नाङ्गलान्
मराम रङ्गैयिन् वाङ्गि वन्दैय्दिनान्, इराम नङ्गीर् तनिक्कर्ण येविनान् 545

अरा—एक सर्प; कट्टु विरा वरु—विष से पूरित रहनेवाले; वैळ्ळै अयिङ्ग—श्वेत दांतों के; इङ्ग पिन्—नष्ट हो जाने के बाद; अळुन्ऱु अन्नैयवन्—जैसे क्रुद्ध होता है, वैसा क्रुद्ध; आङ्गलान्—शक्तिशाली (खर); मरामरम्—सालवृक्ष; कैयिल् वाङ्कि वन्तु—अपने हाथ में ले आकर; अय्यित्तान्—पहुँचा; इरामन्—श्रीराम ने; अङ्कु—वहाँ; ओर् तति—एक अद्वितीय; कर्ण—बाण; एविनान्—चलाया । ५४५

खर उस सर्प के समान विफर उठा, जिसका विषैला श्वेत दाँत उखाड़ लिया गया हो । उस पराक्रमी खर ने एक सालवृक्ष ले लिया । उसके साथ जब वह लड़ने आया तो श्रीराम ने अप्रमेय एक शर छोड़ा । ५४५

ॐ वरम् रक्कन् पटैत्तलिन् मायैयिन्, उरमुडैत् तन्मै यालुल हेळैयुम्
परमु इत्तिय पावत्ति नाल्वलक्, करम् नक्करन् कण्डमुर् इन्नरो 546

अरक्कन्—(रावण) राक्षस की; वरम् पटैत्तलिन्—वर-प्राप्ति से; मायैयिन्—बंचना से; उरम् उटै तन्मैयाल्—बलवान होने से; उलकु एळैयुम्—सातों लोकों की; परम् उरुत्तिय—बहुत द्रस्त करनेवाले; पावत्तित्ताल्—पापकृत्यों से; वलम् करम् अन्न—दाहिने हाथ के समान; करन्—खर; कण्डम् उरुन्—खण्डित हुआ । ५४६

खर रावण का दाहिना हाथ था । अब वह मर गया । यह उसी रावण के किए पाप का फल था । रावण को वर प्राप्त थे और वह मायावी राक्षस था । वर के बल पर उसने अपने कपटी स्वभाव के कारण सातों लोकों पर सितम ढाया । उसका ही फल खर की मौत था । ५४६

ॐ आर्त्तु लुन्दन राडित्त् पाडिन्, तूर्त्त मैन्दत्तर् वान्नवर् तूय्मलर्
तीर्त्त नुम्बोर्लिन् दान्गदि रोन्ऱिशै, पोर्त्त मन्बनि पोक्किय पोलवे 547

वान्नवर्—सुरलोग; आर्त्तु अळुन्तन्—हर्षरव कर उठे; आटित्त् पाटित्त्—नाचे-गाये; तूय् मलर्—पवित्र फूल; तूर्त्तु अमैन्तन्—वरसाये और विश्रब्ध खड़े रहे; तीर्त्तनुम्—तीर्थ श्रीराम भी; कतिरोन्—सूर्य; तिच्चै पोर्त्त—दिशाओं को ढँके रहे; मन्त् पनि पोक्कियतु—नरम कुहरे को दूर कर शोभित रहे; अन्न—जैसे; पौल्लिन्तान्—प्रभावान बने रहे । ५४७

खर की मृत्यु पर देव आनन्द का कोलाहल कर उठे। वे नाचे और गाये। पवित्र कल्पसुमन बरसाकर वे प्रसन्नचित्त खड़े रहे। तीर्थ श्रीराम भी दिशाओं में भरे कुहरे को दूर कर शोभनेवाले सूर्यदेव के समान प्रभावान दिखे रहे। ५४७

❖ मुनिवर् वन्दु मुत्रैमुत्रै मौय्पुड, इत्तिय शिन्दै यिरामनु मेहितान्
अत्तिह वैज्जमत् तारुयिर् पोहत्तान्, तत्तिय रुन्द वुडलत्त तैयल्बाल् 548

मुनिवर् मुत्रै मुत्रै वन्दु-मुनिगण बारी-बारी से आये और; मौय्पु उड-घरे खड़े रहे; इत्तिय चिन्तै-प्रसन्नचित्त; इरामनुम्-श्रीराम भी; अत्तिक वैम् चमत्तु-राक्षस-सेना के साथ कठोर युद्ध में; तत् आर् उयिर् पोक-अपने प्यारे प्राणों को भेजकर; तनि इरुन्त-अलग रहे; उटल् तान् अन्त-शरीर ही के समान जो रहीं; तैयल् पाल्-उन देवी सीताजी के पास; एकितान्-पधारे। ५४८

ऋषियों ने दलों में आकर श्रीराम को घेर लिया। तब श्रीराम वहाँ से चले और देवी सीता के पास पधारे। देवी सीता निष्प्राण शरीर के समान थीं, क्योंकि उनके प्यारे प्राण राक्षसों के साथ कठोर युद्ध में चले गये थे। ५४८

❖ विण्णि नीङ्गिय वैय्यवर् मेत्तियिल्, पुण्णि नीरुम् पौडिहळुम् बोयुह
अण्णल् वीरनेत् तम्बियु मत्तमुम्, कण्णि नीरिनिर् पादङ् गळुवित्तार् 549

विण्णिन् नीङ्किय-(वीरों के प्राप्य) स्वर्ग में जो गये; वैय्यवर्-उन आततायी राक्षसों के; मेत्तियिल्-शरीर पर; पुण्णिन् नीरुम्-व्रणों से निकला रक्त-जल और; पौडिकळुम्-धूलि; पोय् उक-पोंछते हुए; अण्णल् वीरने-महिमावान वीर श्रीराम को; तम्बियुम् अन्तमुम्-उनके लघु भाई लक्ष्मण ने और हंसिनी (-सी सीताजी) ने; कण्णिन् नीरित्ताल्-आँखों के जल से; पातम् कळुवित्तार्-पाद-प्रक्षालन कराया। ५४९

राक्षस वीर मरकर स्वर्ग चले गये। उनके शरीरों पर लगे व्रणों से जो रक्त-जल बहा उससे श्रीराम का शरीर लिप्त हो गया। उनके शरीर पर धूलि भी जमी हुई थी। उनके लघु भ्राता ने और उनकी देवी हंसिनी-सी सीता ने श्रीराम को देखकर भावातिरेक से अश्रुजल बहाया, जिससे श्रीराम के श्रीचरण धुल गये। ५४९

❖ मूत्त मौन्निन् मुडिन्दवर् मौय्पुणीर्, नीत्त मोडि नैडुन्दिशै नेरुक्
कोत्त वेलैक् कुरलैन् वान्तवर्, एत्त वीर तित्तिदिरुन् दान्तरो 550

मूत्तम् औन्निन्-एक मुहूर्त में; मुटिन्तवर्-जो मरे; मौय्-(उनका) एकवित्त; पुण्णीर् नीत्तम्-व्रण-जल रक्त का प्रवाह; कोत्त वेलै-मिश्रित समुद्रों के; कुरल् अन-घोष के समान; ओटि-बहकर; नैटुम् तिचै-लम्बी दिशाओं के अन्तों से; नेर् उड-टकराकर मुड़ आया; वान्तवर् एत्त-देवों ने स्तुति की, इस प्रकार; वीरन्-रघुवीर श्रीराम; इत्तु इरुन्तान्-ससन्तोष रहे। ५५०

एक ही मुहूर्त में सारे राक्षस मर गये थे । उनके शरीरों से इतना रक्त बहा कि सागर-सा बन गया और उससे सम्मिलित सागरों के गर्जन के समान गर्जन निकला । उसका प्रवाह सभी दिगन्त तक गया और टकराकर मुड़ आया । श्रीराम की विजय पर देव इठलाये । उन्होंने श्रीराम की स्तुति की । श्रीराम विश्रब्धमन और सुख के साथ रहे । ५५०

❖ इङ्गु निन्ऱु डुरैत्तु मिरावणन्, तङ्गै तन्गै वयिरु तहरत्तत्तळ्
कङ्गु लन्न करत्तैत्त लीङ्गैन्डुम्, पौङ्गु वैङ्गुरु दिप्पुरण् डाळरो 551

इङ्गु निन्ऱु-यहाँ जो स्थिति है; उरैत्तुम्-कहें; इरावणन् तङ्गै-रावण की वहिन ने; तन्गै-अपने हाथों से; वयिरु तकरत्तत्तळ्-अपना पेट पीट लिया; कङ्गुल अन्न-रात के समान काले; करत्तै-खर को; तळीङ्गै-आलिंगन करके; पौङ्गु नैटुम्-उमड़नेवाले अधिक; वैम् कुरुति-गरम रक्त में; पुरण्डाळ्-लोटी । ५५१

अब हम (कवि) यहाँ जो हुआ वह कहें । रावण की वहिन ने अपने हाथों से अपना पेट पीट लिया । रात के समान काले खर का आलिंगन किया । उसके शरीर पर, वह निकलनेवाले अधिक रक्त के प्रवाह में लोटी । ५५१

❖ आक्कि नेन्मतत् ताशैयिव् वाशैयेन्, मूक्कि नोडु मुडिय मुडिन्दिलेन्
वाक्कि नालुङ्गळ् वाळ्वैयु नाळैयुम्, पोक्कि नेन्कोडि येनेन्ऱु पोयित्ताळ् 552

मतत्तु-अपने मन में; आचै आक्किनेत्त-(श्रीराम के प्रति) प्रेम किया; अ आचै-वह इच्छा; अन् मूक्किनोडु-मेरी नाक के साथ; मुडिय-चली जाय; मुडिन्ऱु इलेन्-ऐसा मरी नहीं; वाक्किन्नाल्-अपने वचनों से; उङ्गळ् वाळ्वैयुम्-तुम लोगों का जीवन और; नाळैयुम्-आयु को; पोक्किनेत्त-समाप्त कर दिया; कोटियेन्-निर्मम हैं; अन्ऱु-कहती हुई; पोयित्ताळ्-वहाँ से चली । ५५२

वह उठी । अपने को धिक्कारने लगी । मैंने श्रीराम से प्रेम किया । वह इच्छा मेरी नाक के साथ चली जाती तो कोई बात नहीं । वहीं तक बात समाप्त करते हुए मैं मरी नहीं । अपने वचनों से मैंने तुम्हें युद्ध में प्रेरित किया और तुम्हारा जीवन और आयु खतम हो गयी । बड़ी निर्मम निकली मैं । ऐसा विलाप करती हुई वह वहाँ से चली गयी । ५५२

❖ अलङ्गल्	वेरुक्	यरक्करै	याशङ्क्
कुलङ्गळ्	वेरुप्	पान्गुडित्	ताळ्हडल्
कलङ्गु	उरैत्तळ्	कालैन्क्	कालिन्नाल्
इलङ्गै	मानर्	नीय्दिर्चेन्	रैय्दिन्नाळ् 553

अलङ्कल् वेल् कै अरक्करै-माला से अलंकृत भाले हाथ में लिये रहनेवाले राक्षसों को; आचु अर-निर्मूल करते हुए; कुलङ्कळ् वेर् अरुप्पान्-राक्षसकुलों की जड़ काटने का; कुडित्तु-संकल्प लेकर; आळ् कटल् कलम्-गहरे सागर में पीत को;

कुरैत्तु अँलु—अस्त-व्यस्त कर उठनेवाले; काल् अँत-झंजे के समान; कालिताल्-
पैदल चलकर; नीयत्तिन्—आयास के साथ; इलङ्कै मा नकर् चैत्तु—लंकानगर जा;
अयत्तिनाळ्—पहुँची । ५५३

वहाँ कहाँ रुकी ? उसका आशय माला से अलंकृत भाले लिये
रहनेवाले राक्षसों को निर्मूल करने का, उनके कुलों की जड़ ही खोद लेने
का था ! इसलिए वह आयास के साथ पैदल चली और लंका जा पहुँची ।
वह इस कार्य में गहरे समुद्र में फँसे पोत को हिला देनेवाली आँधी के
समान लगी । ५५३

7. शूर्पपणहै शूळ्चचिप् पडलम् (शूर्पणखा-योजना पटल)

इरैत्तनैडुम् बडैयरक्क रिउन्ददत्तै मउन्दत्तळ्बो रिरामन् रुङ्ग
वरैप्पुयत्ति तिडैक्किडन्द पेराशै मत्तङ्गवड्ड वाड्डा लाहित्
तिरैप्परवैप् पेरहळित् तिरुनहरिर् कडिदोडिच् चीदै तन्मै
उरैप्पैत्तैन् चूर्पपणहै वरविरुन्दा तिरुन्दपरि शुरैत्तु मन्तो 554

इरैत्तु नैडुम् पटै—शोर मचाते हुए जो चली उस सेना के; अरक्कर—(खर
मिलाकर) सभी वीर; इउन्दतत्तै—मरे, वह बात; मउन्दत्तळ्—भूल गई; पोर्
इरामन्—युद्ध-चतुर श्रीराम के; तुङ्क—उन्नत; वरै पुयत्तिन् इटै—पर्वत-सम कन्धों
में; किडन्त—बँधे रहे; पेर् आचै—गम्भीर प्रेम के; मत्तम् कवड्ड—मन को व्यथित
करने से; आड्डाळ् आकि—असहनशील बनकर; तिरै परवै—तरंग-भरा समुद्र;
पेर् अकळि—बड़ी खाई के रूप में जिसे प्राप्त था; तिरु नकरिल् कटितु ओटि—उस
श्रीनगर में सवेग दौड़कर; चीदै तन्मै उरैप्पैन्—सीता का लक्षण बताऊँगी; अँत—
सोचकर; चूर्पपणकै वर—शूर्पणखा के आते समय; इरुन्तान्—वहाँ विद्यमान;
इरुन्त परिच्—श्रीरावण के रहने का प्रकार; उरैत्तुम्—कहेंगे । ५५४

शूर्पणखा अब यह बात भूल गयी कि खर और बड़ी धूम मचानेवाली
उसकी सेना विनष्ट हो गयी । उसका मन युद्ध-कला-प्रवीण श्रीराम के
उन्नत, पर्वतसम मनोरम कन्धों से आकृष्ट हो गया । श्रीराम पर उसका
प्रेम उसे व्यग्र करने लगा । वह संयम नहीं रख सकी, काम-ताप सह नहीं
सकी । उसने यह सोचा कि मैं लंका में, जिसके चारों ओर तरंगाकुल समुद्र
ही खाई के रूप में पड़ा है और जो श्रीसमृद्ध है, शीघ्र जाऊँगी और रावण के
पास सीता की स्थिति, उसके लक्षण आदि कहूँगी । जब वह उधर आयी तब
लंकेश रावण किस ठाट के साथ शोभायमान था, उसका वर्णन करेंगे । ५५४

निलैयिला वुलहिन्निडै निन्ऱुत्तवुन् दिरिन्दत्तवु नैऱियि नीन्द
मलरिन्मे नान्मुहड्डकुम् बहुप्परिय नुत्तिप्पदोर वरम्बि लाद
उलैविला वहैयिळैत्त दरुममैन् निनैन्दवैला मुदवुन् दच्चन्
पुलनैलान् दैरिप्पदोर पुनैमणिमण् उवमदन्निर् पीलिय मन्तो 555

उलकिन् इटै-इस भूमि में; निलै इला-नश्वर; निन्नूत्तवुम्-स्थावर; तिरिन्तत्तवुम्-और-जंगम; नैरियिन् ईन्त-यथाक्रम सृष्ट करनेवाले; मलरिन् मेल्-कमल पर आसीन; नात् मुकड्कुम्-चतुर्मुख को; वकुप्परिय-जिसकी सृष्टि नहीं हो सकती; नुनिप्पत्तु और वरम्पु इलात-सूक्ष्म रूप से जिसकी सीमा माप करना कठिन है; तरुमम् अँत-उस धर्म के समान; नितैन्त अँलाम् उतवुम्-इच्छित सभी पदार्थ देनेवाले; तच्चत्त-देवशिल्पी विश्वकर्मा के; पुलन् अँलाम् तैरिप्पत्तु-सारे सामर्थ्य का प्रदर्शक; पुतै-सुन्दर; उलैवु इला वकै-अमिट रूप से; इळ्ळैत्त-रचित; और मणि मण्टपम् अतन्निल्-एक मणिमण्डप में; पौलिय-शोभायमान रहते (रावण के) । ५५५

रावण एक मणिमण्डप में विराजमान था । वह मणिमण्डप देवशिल्पी विश्वकर्मा से बनाया गया था । वह विश्वकर्मा की सारी शक्ति का, शिल्पशास्त्र के गम्भीर और सूक्ष्म ज्ञान का पूर्ण परिचायक था । नश्वर विश्व और उसमें रहनेवाले स्थावर और जंगम —सभी जीवों के सृष्टिकर्ता, कमलवासी ब्रह्मा के लिए भी वह मण्डप अभाव्य था । वह धर्म के समान सभी मनोरथ पूरा करने की शक्ति रखता था । वह बड़ा ही सुन्दर था और अक्षय रूप से शोभायमान रहनेवाला था । ५५५

पुलियिन्द लुडैयानुम् पौन्ताडै पुतैन्तानुम् पूवि तानुम्
नलियुमन्तत् तारल्लर् देवरिलिङ् गियावरिति नाट्ट वल्लार्
मैलियुमिडै तडिक्कुमुलै वेयिळ्ळन्दोद् चेरिकृक्कन् वैन्त्रि मादर्
वलियनैडुम् बुलवियिनुम् वणङ्गाद महुडनिरै वयङ्ग मन्तो 556

पुलियिन् अतळ् उटैयानुम्-बाघम्बरधारी; पौन् आटै पुतैन्तानुम्-पीताम्बरधारी; पूवितानुम्-और कमलवासी; नलियुम् मन्तत्तार्-(रावण के पराक्रम, वैभव आदि देख) आतंकित थे; अल्लर् तेवरिल्-वे ही नहीं तो अन्य देव; इङ्कु-यहाँ; यावर्-कौन; इति नाट्टवल्लार्-अब इसकी समता कर सकते हैं; मैलियुम् इटै-क्षीण-कटि; तटित्त मुलै-पीन स्तन; वेय् इळम् तोळ्-बाँस के समान और बाल कन्धे; चेरि कृक्क-लाल डोरों से युक्त आँखें, इनसे शोभित; वैन्त्रि मातर्-मनोहारिणी स्त्रियों के; वलिय नैडुम् पुलवियिनुम्-शान्त करने में कठिन और लम्बी रूठन के अवसर में भी; वणङ्कात-जो नहीं झुकती; मकुटम् निरै-मुकुटपंकित; वयङ्क-(के) शोभते । ५५६

(५५५वें पद से ५७६वें पद तक रावण की सभा में स्थिति का वर्णन है । पूर्णक्रिया पद आखिरी पद में आता है ।) स्वयं बाघम्बर शिव, पीताम्बर विष्णु और कमलवासी ब्रह्मा उसके ठाट-वाट से उद्विग्न थे यानी उनका स्थान भी इसके सामने घटा हुआ लगता था । फिर कौन देव हैं जो इसकी समानता कर सकें ? वह बड़ा अभिमानी था । क्षीण-कटि, पीन-स्तना, छोटे बाँस-सी भुजाओं और लाल डोरों के साथ मनोरम आँखों से भूषित और विजयशीला स्त्रियों की लम्बी और दुर्बल रूठन के अवसर पर भी उसके किरीट (सिर) नहीं झुकते थे । ऐसे (सिरों के) किरीटों की पंकित दृश्यमान करते हुए रावण विराजमान था । ५५६

वण्डलङ्गु नुदङ्गिश्यै वयक्कळिङ्गिन् मरुप्पोडिय वडर्त्त पौङ्गोळ्
विण्डलङ्ग लुङ्गोङ्गि योङ्गुदय माल्वरैयिन् विळङ्ग मीदिल्
कुण्डलङ्गळ् कुलवरैयै वलम्बवत्वा निरविहोळुङ् गदिर्शूळ् कङ्गै
मण्डलङ्गळ् पन्निरण्डु नालैन्दायप् पौलिन्ददत्त वयङ्ग मन्नो 557

वण्ड अलङ्कु नुतल्-भ्रमरावृत भालों के; तिचैय-दिशाओं में स्थित; वय-विजयशील; कळिङ्गिन्-हाथियों के; मरुप्पु ओटिय-दाँतों को तोड़ते हुए; अटर्त्त-(उन गजों से) जिन्होंने टकराया; पौन् तोळ्-वे मनोरम कन्धे; विण तलङ्कळ् उर-आकाश के लोकों में जा लगे, ऐसा; वीङ्कि-फूलकर, बढ़कर; ओङ्कु-उन्नत; उतय माल् वरैयिन्-उदयगिरि के समान; विळङ्क-दृश्यमान रहे और; मीतिल्-उन पर; कुण्डलङ्कळ्-कुण्डल; कुल वरैयै-मेरुपर्वत की; वलम्ब वरुवान्-परिक्रमा करनेवाले; इरवि-सूर्य के; कौळुम्-पुष्कल; कतिर् चूळ्-किरणसंकुल; कङ्गै-पुंज; मण्डलङ्कळ्-मण्डल; पन्निरण्डुम्-बारह; नालु ऐन्ताय्-(चार के पाँच) बीस बनकर; पौलिन्दतु अत्त-प्रकाशमय विद्यमान रहते हों जैसे; वयङ्क-दृश्यमान रहे । ५५७

उसके कन्धों ने दिग्गजों के साथ युद्ध करते हुए उनके दाँतों को तोड़ा था । दिग्गज इतने मदमत्त थे कि हमेशा भ्रमर उनके भालों पर मँड़राते थे । ऐसे बलवान् कन्धे बहुत ही दर्शनीय और फूलकर उन्नत उदयगिरि के समान शोभ रहे थे । कानों के कुण्डल, जो उनके कन्धों को स्पर्श करते हुए हिल रहे थे, किरण-पुंज बारह आदित्यों के समान प्रकाशमान थे जो बीस बन गये हों । ५५७

वाळुला मुळुमणियिन् वयङ्गोळियिन् रौहैवळङ्ग वयिरक् कुन्ऱत्
तोळैलाम् वडिगुमन्ऱद विडवरविन् वडनिरैयिर् रोन्ऱ वान्ऱ
नाळैलाम् पडैदयङ्ग नामनी रिलङ्गैयिर्ऱ नलङ्ग विट्ट
कोळैलाङ् गिडन्दनेडुङ् जिरेयन्त निरैयारङ् गुलव मन्नो 558

वाळ् उलाम्-उज्ज्वल; मुळु मणियिन्-बड़े-बड़े रत्नों की; वयङ्कु ओळियिन्-छिटकनेवाली कान्ति की; तौकै-राशि; वळङ्क-दृश्यमान रही; वयिर कुन्ऱ तोळ् अलाम्-वज्र गिरि-सम सब कन्धे; पटि चुमन्त-भू-भार-वाही; विट अरविन्-विषले नाग के; पट निरैयिन्-फनों की पंक्ति के समान; तोन्ऱ-दिखाई दिये; नाम नीर्-इलङ्कैयिल्-भयोत्पादक समुद्रजल सहित लंका में; तान् नलङ्क विट्ट-उससे आक्रान्त; कोळ् अलाम्-सब (नव) ग्रह; आन्ऱ-श्रेष्ठ; नाळ् अलाम्-सभी नक्षत्र; पुटै तयङ्क-पास-पास रहें, ऐसा; किटन्त-(बद्ध) पड़े रहे; नेदुस् चिरै अन्त-बड़ी कारा के समान; निरै आरम्-रत्नमय हार; कुलव-शोभ रहा था । ५५८

रावण अनेक आभरण पहने हुए था । उनमें जड़ित रत्न बड़े-बड़े थे और बड़े ही जाज्वल्यमान थे । उनकी ज्योतियों की राशि शोभित थी । उसके वज्रगिरिसम कन्धे भूभारवाही शेषनाग के फनों के समान दर्शनीय थे (वे रत्न उन फनों के ऊपर रहनेवाली मणियों के समान थे ।)

उसने एक रत्नहार पहन रखा था, जो उस कारा के समान था जिसमें उसने ग्रहों और नक्षत्रों को हराकर डाल रखा था। यानी वह हार श्रेष्ठ और ज्वलन्त रत्नों का बना था। ५५८

❀ आय्वरुम्	वैरुवलि	यरक्क	रादियोर्
नायहर्	नळिमणि	महुड	नण्णलाल्
तेय्वुडत्	तेय्वुडप्	पैयरन्दु	शैजुडर्
आय्मणिप्	पौलनगळ	लडिनिन्	डार्प्पवे 559

आय्वु अरु-अकृत; पैरु वलि-बहुत बल से युक्त; अरक्कर् आतियोर्-राक्षस आदि राजा लोगों के; नळि मणि मकुटम्-बहुमूल्य रत्न-जड़ित किरीट; नण्णलाल्-मिले आते हैं, इसलिए; तेय्वु उड तेय्वु उड-घिसते-घिसते; पैयरन्दु-फिर से; चैम् चुटर्-लाल प्रकाश की; मणि पौलन् कळल्-मणिमण्डित पायल; अटि निन्नुड आर्प्प-उसके पैरों में रहकर क्वणित हो रही थी। ५५६

राक्षस वीर आकर उसके पैरों पर सिर झुकाते थे। उन राक्षसों के बल का अनुमान भी नहीं हो सकता था। उनके मुकुटों के लगने से उसकी पायल घिसी हुई थी और उस पर जड़ित रत्न अधिक निखरे हुए हो गये थे। वह पायल उसके पैरों में क्वणित हो रही थी। ५५९

❀ मूवहै युलहिन् मुदल्वर् मुन्दैयोर्, ओविल रुदविय परिशि नोङ्गल्बोल्
तेवरु मवुणरु मुदलि त्तोर्दिशै, तूविय नरुमलर्क् कुप्पै तुत्तवे 560

मूवकै उलकिन्मु-तीन प्रकार (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों के; मुतल्वर्-नायकों ने; मुन्दैयोर्-मैं पहले, मैं पहले करते हुए; ओविलर्-निरन्तर; उदविय-लाकर जो दिये; परिचिन्-उन उपहारों के; ओङ्गल् पोल्-पर्वत के समान; तेवरुम् अवुणरुम् मुतलित्तोर्-देव, अगुर और अन्यो के; तिवै-चारों दिशाओं से; तूविय-बरसाये; नरुमलर्-सुगन्धित फूलों की; कुप्पै-राशियाँ; तुत्त-ठस भरकर पड़ी रहीं। ५६०

तीनों लोकों के नायक लोग पहले आने की स्पर्द्धा करते हुए आकर निरन्तर उपहार देते रहे। उन उपहारों के पर्वत-से ढेर हो गये थे। देवों और राक्षसों द्वारा चारों ओर से बरसाये सुवासित फूलों के ढेर सर्वत्र पाये जाते थे। ५६०

❀ इन्नुवो दिव्वळि नोक्कु मैन्बदै, उन्नलर् करदलळ् जुमन्द वुच्चियर्
मिन्नविर् मणिमुडि विञ्जै वेन्दर्हळ्, तुन्निनर् मुडैमुडै तुडैयिर् चुड्डवे 561

मिन् अविर्-विजली के समान चमकनेवाले; मणि मुडि-रत्नकिरीट-धारी; विञ्जै वेन्दर्कळ्-विद्याधर राजा लोग; इन्न पोतु-कब; इ वळि नोक्कुम् अन्नपतै-इस तरफ़ देखेगा, यह; उन्नलर्-नहीं जानते; करदलम् चुमन्त उच्चियर्-हाथ सिर पर रखे; तुन्नितर्-समीपस्थ होकर; मुडै मुडै-यथाक्रम; तुडैयिल्-अपनी-अपनी निदिष्ट सेवा में लगे; चुड्ड-घेरे रहे, ऐसा। ५६१

विद्याधर राजा लोग थे । उनके रत्नकिरीट विजली के समान चमकते थे । वे अपने हाथों को जोड़े अपने सिरों पर रखे हुए थे । वे हमेशा सतर्क रहते थे, क्योंकि उन्हें मालूम नहीं हो सका कि रावण किस समय किस ओर दृष्टि फेंकेगा । वे अपने-अपने स्थान पर निर्दिष्ट सेवा में लगे हुए, रावण की दृष्टि की भी प्रतीक्षा करते हुए चारों ओर पाये गये । ५६१

❀ मङ्गैयर् तिरुत्तोरु माड्डु गूडितुम्, तङ्गळै यामेनत् ताळुञ् जैन्तियर्
अङ्गैयु मुळ्ळमुड् गुविन्द वाक्कैयर्, शिङ्गवे ईनत्तिड्डु चित्तर शेरवे 562

चिङ्क एड् अँत-पुरुषकेसरी के समान वलिष्ठ; चित्तर-सिद्ध लोग; मङ्कैयर् तिरुत्तु-अपनी दासियों के प्रति; और माड्डुम् कूडितुम्-(रावण) एक बात कहता तो भी; तङ्गळै आम् अँत-अपने से कहता है, समझ; ताळुम् जैन्तियर्-सिर झुकाते हैं (झुके सिर वाले होकर); अम् कँयुम्-हथेलियों; उळ्ळमुम्-और मन को जोड़कर; कुविन्द आक्कैयर्-शरीर झुकाकर (विनय की मुद्रा में); शेरवे-(रावण के चारों ओर) समीप खड़े रहे, ऐसा । ५६२

कभी सिंहसदृश रावण अपने पास स्थित किसी स्त्री से कोई बात कहता तो वहाँ रहे सिद्ध जाती के लोग सोचते कि वह हमारे प्रति ही कुछ कह रहा है ! वे हाथ जोड़े । मन को एकाग्र किये और सिर झुकाये बहुत ही विनय के साथ स्थित रहे । 'सिंह-सदृश' सिद्धों पर भी लग सकता है । ५६२

अन्नव	नमैच्चरै	नोक्कि	याण्डोरु
नन्मोळि	पहरिनु	नडुङ्गुञ्	जिन्दैयर्
अँनैहोल्	पणियेत्त	विडैञ्जु	हिन्डुत्तर्
किन्नरर्	पैरुम्बयड्	गिडन्द	नैज्जिनार् 563

किन्नरर्-किन्नर जाति के लोग; अन्नवन्-वह (रावण); नमैच्चरै नोक्कि-मन्त्रियों को देखकर; याण्डु और नल् मीळि-वह एक शिष्ट-वचन; पकरितुम्-कहता तो भी; नडुङ्कुम् चिन्तैयर्-कम्पित-मन होकर; पैरुम्पयम् किरुन्त-बहुत भयाक्रान्त; नैज्जिनार्-मन के साथ; अँनैहोल् पणि-व्या सेवा है; अँत-ऐसा; इडैच्चकिन्डुत्तर्-विनय करते । ५६३

किन्नर लोग पाये गये । अगर रावण अपने अमात्यों से कोई मधुर वचन भी कहता तो वे समझ लेते कि वह हमसे कुछ कह रहा है । वस, सिहर उठते । पास आकर पूछते कि कौन सी सेवा है जो बजा लानी है ? यह अत्यन्त विनय के साथ पूछते । ५६३

पिरहर	नैडुन्दिशैप्	पैरुन्दण्	डेन्दिय
करदलत्	तण्णलैक्	कण्णि	नोक्किय

नरहिन	रामेन	नडुङ्गु	नाविनर्
उरहरन्	दममत्त	मुलैन्दु	शूळवे 564

उरकरुम्-नागलोकवासी; पिरकर नैटुम् तिचै-(जीवों को) दण्ड जहाँ दिया जाता है, उस (दक्षिणी) दिगा के देव; पेरुम् तण्टु एन्तिय-बड़ा कालदण्ड-धारी; करतलत्तु-हाथ के; अण्णलै-राजा (धर्मदेवता) को; कण्णिन् नोक्किय-अपनी आँखों के सामने जिन्होंने देखा हो, ऐसे; नरकर् आम् अत्त-नरकवास योग्य पापियों के समान; नडुङ्कुम् नावितर्-स्वलित-वचन (लड़खड़ाती-वाणी वाले) होकर; तम् मत्तम् उळैन्तु-मन में व्यथित होकर; चूळ-घेरे खड़े रहे । ५६४

नागलोकवासी रावण के सामने इतना डरे हुए खड़े रहे जितना कि नरक-योग्य जीव उस यमलोक के देव दण्डधर यम को देखकर डरते हैं, जहाँ जीवों को दण्ड का विधान हो, दण्ड दिया जाता है । उनकी जिह्वाएँ लड़खड़ातीं; मन व्यग्र रहता । वे भी रावण को घेरे खड़े रहे । ५६४

✽ तिशैयुरु	करिहळैच्	चैरुत्तु	तेवनुम्
वशैयुर्क्	कयिलैयै	मरित्तु	वानैलाम्
अशैयुर्प्	पुरन्दरु	कडन्द	तोळ्हळिन्
इशैयिनैत्	तुम्बुरु	विशैयि	तेत्तवे 565

तिचै उरु करिकळै-दिग्गजों को; चैरुत्तु-हराकर; तेवनुम् वचै उरु-परमेश्वर को भी अपयश दिलाते हुए; कयिलैयै मरित्तु-कैलास को उखाड़कर; वान् अलाम् अचैवु उरु-सारा आकाश कँपाते हुए; पुरन्तरन् कटन्त-पुरन्दर को जिन्होंने प्रताड़ित किया; तोळ्हळिन् इचैयितै-उन कन्धों की प्रशंसा; तुम्पुरु-तुम्बुरु; इचैयिन् एत्त-गीत गाते (रहे, ऐसा रावण सभा में विराजमान था) । ५६५

रावण ने दिग्गजों का बल दमन किया था । कैलास पर्वत को उखाड़कर परमेश्वर शिव को भी अपयश दिलाया था । पुरन्दर को हराकर आकाश भर को उद्ध्विग्न कराया था । ऐसे रावण के पराक्रम की प्रशंसा तुम्बुरु गा रहे थे । ५६५

✽ शेणुयर्	नैरिमुट्टै	तिरम्ब	लित्त्रिये
पाणिहळ्	पणिशैयप्	पळुदिल्	पण्णिर्
वीणैयि	नरम्बिडै	विळैन्द	तेमरै
वाणियि	नारदन्	शैवियिन्	वाक्कवे 566

चेण् उयर्-अत्युन्नत; नैरि मुट्टै तिरम्पल् इत्त्रिये-गति-विधि का उल्लंघन किये बिना; पाणिकळ् पणि चैय-ताल काल-निर्णय का काम करते हैं, ऐसा; पळुत्तु इल्-दृष्टिहीन; पण् निरै-राग-युक्त; वीणैयिन् नरम्पु इटै-वीणा की तन्त्रियों से; विळैन्त-उत्पन्न; ते नरै-मधुर वेद-रूप संगीत; वाणियिन्-मुख-स्वर के साथ; नारतन्-नारद ऋषि; शैवियिन् वाक्क-उसके बीसों कानों में भर रहे थे । ५६६

नारद अपनी वीणा से संगीतमय स्वर निकालते हुए ताल-मेल के साथ श्रुति-शुद्ध, लय-शुद्ध रीति से वेदसमान गन्धर्वगान कर रहे थे। रावण के बीसों कान उसे श्रवण कर रहे थे। ५६६

मेहमैन्	रुरुत्ति	वीक्कि	विण्णवर्	तरुवुम्	विज्जै
नाहमुज्	जुरन्द	तीन्दे	नरुपुन	लोड	ळावित्
तोहैयर्	तुहिलिड्	रोय्क्कु	मन्तवदोर्	तुणुक्कत्	तोडुज्
जीहर	महर	वेलैक्	कावलन्	शिन्द	मन्तो 567

मकर, वेलै कावलन्-मकरालय के देवता वरुण; विण्णवर् तरुवुम्-देवों का कल्पतरु; विज्जै नाकमुम्-विद्याधर लोक का सुरपुन्नाग; चुरन्त- (अपने फूलों से जो) ढलकते थे; तीम् तेन्-वह मधुर शहद; नरु पुनलोड-सुवासित जल के साथ; अळावि-मिश्रित करके; मैक्कम् अन्तु-तुरुत्ति वीक्कि-मेघ की मशक में भरकर; तोकैयर् तुक्किलि- (रावण के पास रहनेवाली) स्त्रियों के वस्त्र; तोय्क्कुम्-गीला ही जायगा; अन्तुपतोर् तुणुक्कत्तोडुम्-इस डर से (अत्यन्त सावधानी के साथ); वीकरम्-जल-सीकर; चिन्त-छिड़का रहे थे। ५६७

मकरालय के अधिदेवता वरुण मण्डप में जल छिड़कने का कार्य कर रहे थे। कैसा जल था ? उत्तम जल में आकाश के कल्पतरु से झरनेवाला शहद और नागलोक के सुरपुन्नाग तरुओं से मिलनेवाला शहद मिला हुआ था। मेघ की मशक में उसे भरकर सीकरो में छिड़कता था। यह भय लगा हुआ था कि कहीं रावण की नारियों के वस्त्र पर पड़ जायगा तो रावण का कोप अनर्थ कर देगा। इसलिए बहुत सावधानी से वे जल की बौछार कर रहे थे। ५६७

नरैमलर्त्	तादुन्	देनु	नळिन्नेडु	महुड	कोडि
मुरैमुरै	यरैयच्	चिन्दि	मुरिन्दुहु	मणियु	मुत्तुम्
तरैयिडे	युहाद	मुत्तन्	दाङ्गिनन्	इळुवि	वाङ्गित्
तुरैदीरुन्	दीडरुन्डु	निन्ऱु	समीरणन्	रुडैप्प	मन्तो 568

चमीरणन्-वायुदेव; नरै मलर् तातुम्-सुगन्धपूर्ण पुष्पों का पराग; तेत्तुम्-और शहद; नळि-वड़े; नेटु-लम्बे; मकुट कोटि-किरीट-कोटि के; मुरै मुरै अरैय-बार-बार टकराने से; चिन्ति मुरिन्तु उकु-टूटकर जो गिरे, वे; मणियुम् मुत्तुम्-रत्न और मोती; तरैयिडे-भूमि पर; उकात मुत्तम्-गिरे, इसके पहले ही; ताङ्किन्नन्-पकड़कर; तळुवि वाङ्कि-समेट लेकर; तुरै तोरुम् तीटर्न्तु निन्ऱु-हर स्थान में निरन्तर खड़े होकर; तुरैप्प-झाड़कर शुद्ध कर रहे थे। ५६८

वायुदेव का क्या काम था ? सुवासित पुष्पों से मकरन्द चूते थे। उनसे शहद भी गिरता था। रावण से भेंट करने जो आये उनके किरीटों के आपस में टकराने से रत्न और मोती अलग होकर गिरते थे। समीरण

का काम था कि उनको भूमि पर गिरने से पहले ही ग्रहण कर ले। वे सर्वत्र रहकर ब्रुहारने का काम करते रहे। ५६८

मिन्नुडै वेत्तिरक् कैयर् मैय्वुहत्, तुन्निडु कञ्जुहत् तुहिलर् शोर्विलाप्
पौन्त्तौडु वैळ्ळियप् पुरन्द रादियर्क्, किन्तियन् मुऱैमुऱै यिरुक्कै यीयवे 569

पौन् ओट्टु-वृहस्पति के साथ; वैळ्ळि-असुर-गुरु शुक्र; मिन् उटै-चमकीले;
वेत्तिर कैयर्-वेत्तपाणी होकर; मैय् पुक्-शरीर जिसमें प्रविष्ट हो, ऐसा; तुन्निडु-
सिये हुए; कञ्जुक् तुकिलर्-कंचुक् की पोशाक से अलंकृत; चोर्वु इलर्-बिना
आलस्य के; पुरन्तरातियर्क्कु-पुरन्दरादि देवता लोगों को; इन् इयल्-मधुर व्यवहार
के साथ; मुऱै मुऱै-उचित प्रकार से; इरुक्कै ईय-आसन की व्यवस्था कर रहे थे,
ऐसा। ५६९

स्वर्णदेव वृहस्पति, शुक्लदेव शुक्राचार्य दोनों कंचुकी पहने हुए वेत्त
हाथ में लेकर आलस्य त्यागकर पुरन्दर आदि को उनका योग्य स्थान दिखा
रहे थे। आगतों का स्वागत करना और उनके आसन की व्यवस्था करना
उनका काम था। ५६९

शूलमे मुदलिय तुऱन्नु शुऱ्ऱिय, शैलैयाऱ् चैय्यवाय् पुदैत्त शैङ्गैयन्
तोलुडै नैडुम्बणै तुवैक्कुन् दोरैलाम्, कालत्तिन् शिशैक्कुनाट् कडिहै कूऱवे 570

कालन्-कालदेव (यम); शूलमे मुतलिय तुऱन्नु-शूल आदि त्यागकर; शुऱ्ऱिय
शैलैयाल्-अपने शरीर पर लपेटे वस्त्र के छोर से; चैय्य वाय्-लाल मुख को; पुदैत्त-
जो ढक रहे थे; चैम् कैयन्-उन अरुण हाथों के साथ; तोल् उटै नैडुम् पणै-चमड़ा-
मढ़े बड़े ढोलो के; तुवैक्कुम् तोऱ् अलैलाम्-पिटते हर समय; इचैक्कुम् नाऱ् कटिकै-
निर्दिष्ट दिन की घड़ी; वन्नु कूऱ-सभा में आकर बता रहे थे। ५७०

यम का क्या हाल था? ढोल बजाकर घड़ी बतायी जाती। यम
का काम था कि वे अन्दर आते और अपने वस्त्र से मुख ढाँपे विनय के साथ
घड़ी बतावे। समय-सूचक का काम उनका था। वे अपना शूल आदि
त्याग चुके थे। ५७०

नयङ्गिळर्	नऱुविरै	नात्त	नैय्यळाय्
वियन्गर्	पूरमैन्	पञ्जिन्	मीक्कौळीडै
कयङ्गळिन्	मरैमलर्क्	काडु	पूतत्तै
वयङ्गैरिक्	कडवुळुम्	विळक्क	माट्टवे 571

वयङ्कु-प्रकाशमान; अरि कटवुळुम्-अग्निदेव ने भी; नयम् किळर्-श्रेष्ठतायुक्त;
नऱु विरै-सुवासपूर्ण; नात्तम्-कस्तूरी को; नैय् अळाय्-घृत से मिलाकर; वियन्
करूपूरम्-उत्तम कपूर को; मैन् पञ्चिल् मी-नरम रुई पर रख के; कौळीई-
(उस बाती को) जलाकर; कयङ्कळिल्-तालाबों में; मरै मलर् काटु-कमलपुष्प-
फानन; पूतत्त-फूल, जैसे; विळक्कम् माट्ट-दिये जलाये। ५७१

प्रकाशमान अग्निदेव पर दीया जलाने का जिम्मा था । उन्होंने अनेक दीये जलाये, जिनका तेल श्रेष्ठ और सुगन्धित कस्तूरी और उत्तम घृत का मिश्रण था और कर्पूर को रुई में रखकर उसकी बातियाँ जलायी गयीं । उन्होंने उन्हें जलाशयों पर विकसित कमलों के समान सजाए । ५७१

अदिशय मळिप्पदस् करुळ रिन्दुनल्, पुदिदलर् कर्प्पहत् तरुवुम् वीय्यिलाक्
कदिर्नेट्टु मणिहळुड् गरुवै यान्गळुम्, निदिहळु मुरैमुरै निन्ऱु नोदटवे 572

नत् पुत्ति तु अलर्-अच्छे और ताजा फूले हुए; कर्प्पक तरुवुम्-कल्पतरु और; वीय् इला-अभंग; नेट्टु कतिर्-लम्बी ज्योति से युक्त; मणिकळुम्-(चिन्तामणि आदि) रत्न; गरुवै आन्कळुम्-दुधारू गायें (कामधेनु); नितिकळुम्-(शंख आदि नव-) निधियाँ; अतिचयम् अळिप्पत्तर्कु-रावण को विस्मयगर्भित मनोरंजन करने के लिए; अरुळ अरिन्तु-उसकी कृपा की ताक में रहकर; मुरै मुरै-अपने-अपने क्रम से; निन्ऱु-खड़ा होकर; नोदट-अपना उपहार बढ़ातीं, ऐसे संभ्रम के साथ । ५७२

नवविकसित फूलों के साथ कल्प, संतान, मन्दार, पारिजात, हरिचन्दन के तरु, अमन्द और लम्बी ज्योतियुक्त चिन्तामणि, दुधारू कामधेनु आदि गायें, शंख, (पद्म, महापद्म, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, हीरे आदि) निधियाँ—ये सब रावण को प्रसन्न करने के लिए बारी-बारी से अपना-अपना उपहार बढ़ा रही थीं । तब । ५७२

कुण्डल मुदलिय कुलङ्गौळ् पेरणि, मण्डिय पेरोळि वयङ्गि वीशलाल्
उण्डुहो लिरविति युलह मेळित्तुम्, अण्डिशै मरुङ्गित्तु मिऱुळित् ईन्नवे 573

कुण्डलम् मुतलिय-कुण्डल आदि; कुलम् कौळ् पेर अणि-उत्तम और बहुमूल्य आभरणी की; मण्डिय-परिपूर्ण; पेर ओळि-बड़ी कान्ति; वयङ्कि वीचलाल्-भरपूर फैलती है, इसलिए; उलकम् एळित्तुम्-सातों लोकों में; इति-अब; इरवु उण्डु कौल्-रात भी है क्या; अण् तिच्चै मरुङ्कित्तुम्-आठों दिशाओं में सर्वत्र; इरुळ इन्ऱु-अन्धकार नहीं है; ईन्न-कहा जाय, ऐसा । ५७३

रावण के कर्ण-कुण्डल और अन्य श्रेष्ठ आभरण घनी कान्ति बिखेर रहे थे । वह प्रकाश सर्वत्र फैला हुआ था । इस वजह से ऊपर के और नीचे के सातों लोकों में क्या कभी रात हो सकेगी ? आठों दिशाओं में कहीं अन्धकार का नाम तक नहीं था । ५७३

कङ्गैय मुदलिय कडवुट् कन्तियर्, कौङ्गैहळ् शुमन्दिडै कौडियि तौल्हिडच्
चैङ्गैयि लिरियुम् मलरुञ्जिन्दिनर्, मङ्गल मुरैमौळि कूऱि वाळ्त्तवे 574

कङ्कैय मुतलिय-गंगाजी आदि; कडवुळ् कन्तियर्-(नदी की) देव-कन्याएँ; कौङ्कैकळ् चुमन्तु-स्तनों को ढोने से; इटै-कमर को; कौडियित् औल्किट-लता के समान झुकने देते हुए; चैम् कैयित्तु-लाल (नरम और सुन्दर) हाथों से; अरिचियुम् मलरुम्-अक्षत और फूल; चिन्तितर्-(रावण पर) चढ़ाकर; मङ्कल मुरै मौळि कूऱि-मंगलाशासन के वाक्य कहकर; वाळ्त्त-‘जय जीव’ कहतीं, ऐसा । ५७४

गंगाजी आदि दिव्य जल-कन्याएँ, जिनकी कमरें भारी स्तनों के बोझ के कारण लचक-लचक जाती थीं, अपने लाल (मनोरम और कोमल) हाथों से चावल और फूल रावण पर चढ़ाकर मंगलाशासन करके स्तुति के गीत गा रही थीं । ५७४

ऊरुविर् इन्द्रिय वरुप्प शिर्पैयर्क्, कारिहै यारमुदर् कलाप मञ्जवोल्
वार्विशिक् करुवियोर् बहुत्त पाणियिन्, नारिय ररुनड नडिप्प नोक्किये 575

ऊरुविल् तोन्द्रिय-श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न; उरुप्पचि प्यैयर्-उर्वशी नाम की; कारिकैयार् मुतल्-सुरवाला आदि; नारियर्-नारियाँ; कलाप मञ्जै पोल्-कलापी मोरों के समान; वार् विचि-फीते से कसे; करुवियोर्-मृदंग आदि के वादकों के; वकुत्त पाणियिन्-वादन से निर्दिष्ट ताल-लय में; अरु नटम् नटिप्प-श्रेष्ठ नाच नाचतीं, तब । ५७५

वहाँ मृदंग आदि बाजे बज रहे थे । उन्हीं के ताल-मेल में श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न उर्वशी आदि अप्सराएँ नाच रही थीं । उसका रसास्वादन करते हुए— (नर और नारायण बदरिकाश्रम में तपस्या कर रहे थे । देवेन्द्र ने उनके तप को भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजा । श्रीमन्नारायण ने अपने ऊरु से उर्वशी को पैदा किया । उसका सौन्दर्य देखकर अप्सराएँ लज्जित होकर चली गयीं ।) । ५७५

इरुन्दन	तुलहङ्ग	ळिरण्डु	मौन्नरुन्दन्
अरुन्दव	मुडैमैयि	नळवि	लाड्डलिल्
पौरुन्दिय	विरावणन्	पुरुवक्	कारमुहक्
करुन्दड्ड	गण्णियर्	कण्णिन्	वैळ्ळत्ते 576

उलकड्कळ् इरण्डुम् औन्नरुम्-दो और एक (तीनों) लोकों में; तन् अरुम् तवम् उटैमैयिन्-अपने अपूर्व तपस्या के होने से; अळवु इल् आड्डल्-(प्राप्त) अपार पराक्रम का स्वामी; विरावणन्-रावण; पुरुव कारमुक्-भौहें रूपी धनुओं के साथ; करुम् तटम् कण्णित्तर-काली और विशाल आँखों की; कण्णिन् वैळ्ळत्ते-दृष्टि रूपी प्रवाह में; इरुन्तन्न-तैरता रहा । ५७६

रावण सभा में विराजमान था । उसने ऐसा कठोर तप किया था, जैसा तीनों लोकों का और कोई नहीं कर सकता था । अतः उसे अपार बल प्राप्त था । उस पर नारियाँ बड़े प्रेम के साथ दृष्टि दिये रहती थीं । कवि कहते हैं कि रावण उनकी काली और दीर्घ आँखों की दृष्टि के प्रवाह में तैरता रहा । ५७६

❀ तङ्गैयु
शैङ्गैयळ्

मव्वळि
शोरियिन्

तलैयिर्
रारै

राङ्गिय
शेरुन्दिलि

कौङ्कयल् मूक्किलल् कुळैयिन् कादिलल्
मङ्गुलि नीलिपडत् तिउन्द वायित्ताळ् 577

अ वळि-तव; तङ्कैयुम्-(रावण की) बहिन; तलैयिल् ताङ्किय-सिर पर रखे; चैम् कैयल्-हाथों के साथ; चोरियिन् तारै-रक्त की धारा; चेर्न्तु इळि-जिन पर बहती रही; कौङ्कयल्-उन स्तनों के साथ; कुळैयिन् कातु इलल्-कुण्डल सहित कानों से रहित; मङ्कुलिन् ओलि पट-मेघ-गर्जन करते हुए; तिउन्त वायित्ताळ्-खुले मुख के साथ । ५७७

जब रावण इस ठाट-बाट के साथ राजदरबार में विराजमान रहा, तब (उसकी बहिन शूर्पणखा) हाथ सिर पर रखते हुए, स्तनों पर रक्त को बहने देते हुए नासिकाहीन मुख खोलकर मेघगर्जन-से उच्च स्वर में— । ५७७

❀ मुडैमिडै वायित्तिन् मुडैयिट् टार्हलि
कडैयुहत् तैळुमीलि काट्टक् कान्दुवाळ्
कुडिशैच् चैक्करिर् चेन्द कून्दलाळ्
वडिशै वायिलिन् वन्दु तोन्डित्ताळ् 578

मुटै मिटै-मांस-गन्ध-युक्त; वायित्तिन्-मुख से; मुडैयिट्-शिकायत करते हुए; आर् कलि-सघोष समुद्र से; कटै युक्ततु-युगान्त में; तैळुम् ओलि-जो उठती है, उस ध्वनि को; काट्ट-प्रकट करते हुए; कान्दुवाळ्-जो मुरझायी रही; कुट तिवै चैक्करिल्-पश्चिमी दिशा के गगन की लालिमा से; चेन्त कून्तलाळ्-अधिक लाल केश वाली; वड तिवै वायिलिन्-उत्तर के द्वार पर; वन्दु तोन्डित्ताळ्-आकर प्रकट हुई (शूर्पणखा) । ५७८

मांसगन्धयुक्त अपने मुख से प्रलाप करती हुई उत्तरी द्वार पर आ प्रकट हुई । उसने जो शोर मचाया वह युगान्त के नाद के समान भयंकर था । अग्नितप्त-सी, लाल सन्ध्या-राग से भी अधिक लाल केश के साथ वह आयी । ५७८

तोन्डुल् एन्डैर् दौन्तह वयित्तैत् ररक्कर् तोहैयर्
मून्ऱुल हुडैयवन् तिरङ्गि येङ्गितार्
तान्डुलि यवळ्वरत् तरिक्क वल्लरो 579

तोन्डुल्-प्रकट होते ही; तौल् नकर्-प्राचीन नगर की; अरक्कर्-तोकैयर्-राक्षस-स्त्रियाँ; अँतिर् एन्ऱु-सामने स्थित हो; वयिऱु अलैत्तु-पेट पीटते हुए; इरङ्कि एङ्कितार्-अनुताप करके रोई; मून्ऱु उलकु उडैयवन्-तीनों लोकों के पति की; तङ्कै-बहिन; मूक्कु इलल्-नासिका से हीन; तत्ति अवळ् तान् वर-अकेली स्वयं आए; तरिक्क वल्लरो-सह सकेंगी क्या । ५७९

उसके उस रूप में प्रकट होने पर उस प्राचीन नगर की राक्षस-नारियाँ सामने आकर (अपनी छाती) अपना पेट पीटते हुए अनुताप के साथ रोयीं ।

तीनों लोकों के स्वामी की सगी बहिन थी वह । उसकी यह स्थिति ! उसकी नाक कटी हुई है ! अकेली आ रही है । यह देखकर कोई सब्र कर सकता है क्या ? । ५७९

❀ पौरुक्कैन्	नोक्किन्	पुहल्व	दोर्हिल्
अरक्करु	मिरैत्तन	रशति	येरैत्तक्
करत्तौडु	करङ्गळप्	पुडैत्तुक्	कण्गळिन्
नैरुप्पेळ	विळित्तुवाय्	मडित्तु	निङ्किन्ऱार् 580

अरक्करु-राक्षसों ने भी; पौरुक्कु अँत नोक्किन्-सहमकर देखा; पुक्लवतु ओर्किल्-क्या कहना, नहीं जानते; अचत्ति एरु अँत-अशनिराज के समान; करत्तु ओट्टु करङ्गळै-हाथों से हाथों को पीटकर; कण्गळिन् नैरुप्पु अँळ-आँखों से अंगार निकालते हुए; विळित्तु-आँख फाड़े देखकर; वाय् मडित्तु-दाँत पीसकर; निङ्किन्ऱार्-खड़े रहे । ५८०

राक्षसों ने भी सहमकर देखा । क्या कहना —यह भी न सूझा । अशनि का-सा नाद पैदा करते हुए हाथों से हाथ मारे । उनकी आँखों से आग उगलने लगी । दाँत पीसते हुए आँखें फाड़े देखते हुए खड़े के खड़े रह गये । ५८०

❀ इन्दिरन् पालदो वुलह् मीन्ऱपेर्, अन्दणन् पालदो वाळि यान्दो
शन्दिर मवुलिपाऱ् रङ्गु मेहौलो, अन्दर मिदुवैन् वळल्हिन् ऱार्शिलर् 581

चिलर्-(उनमें) कुछ; इन्तिरन् पालतु ओ-क्या इन्द्र की तरफ़ से हुआ है; उलक्म् ईन्ऱ-लोकों के सर्जक; पेर् अन्तणन् पालतो-बड़े ब्राह्मण (ब्रह्मवित) ब्रह्मा की तरफ़ से क्या; आळियान् अतो-चक्रधारी (क्षीर-) सागर-निवासी का है; चन्तिर मवुलि पाल्-चन्द्रमौलि पर; तङ्कुमे कौलो-इसका जिम्मा रहता है; अन्तरम् इतु-सितम है यह; अँत वळल्किन्ऱार्-समझकर कोप से तपते हैं । ५८१

उनमें कुछ राक्षसों ने बड़े क्रोध के साथ प्रश्न किया कि क्या यह घोर अपराध इन्द्र की तरफ़ से हुआ है ? या विश्व के सृष्टि-कर्ता ब्राह्मण (ब्रह्मवित) द्वारा हो गया ? या क्षीरसागरशायी, चक्रधर श्रीविष्णु के हाथों हो गया है ? (आळि का अर्थ चक्र भी है, सागर भी ।) या चन्द्र-मौलीश्वर पर ही यह लगेगा ? जो हो यह बड़ी आफ़त है ! वे क्रोध से उबले । ५८१

पोरिलान् पुरन्दर नेवल् पूण्डत्तन्, आरुला नेमिया नाऱ्ऱु शोऱ्ऱुप्पोय्
नोरित्ता नैरुप्पनान् पौरुप्पि नान्तिनि, यार्हौलो मीदैन् वरैहिन् ऱार्शिलर् 582

चिलर्-(और) कुछ; पुरन्तरन्-पुरन्दर; पोर् इलान्-युद्ध छोड़कर; एवल् पूण्डत्तन्-सेवक बन गया; आर् उलाम् नेमियान्-तीक्ष्ण चक्रधारी; आऱ्ऱुल् तोऱ्ऱु पोय्-बल से हारकर; नोरित्तान्-(क्षीरसागर का) जलवासी हो गया है; नैरुप्पु

अत्तान्—अग्नि-समान शिव; पौरुषपित्तान्—पर्वतवासी हो गया; इति—अब; यार् कौल् आम् ईतु—यह कौन हो सकता है; अँत—ऐसा; अँरकिन्डार्—पूछते । ५८२

और कुछ राक्षसों ने यों कहा— पुरन्दर तो युद्ध से एक दम विरत होकर रावण का नौकर बन गया है । तीक्ष्ण चक्र के रखनेवाले विष्णु भी रावण से हारकर (क्षीर-सागर-) जलवासी हो गये । अग्नि-समं शिवजी (डर से) पर्वत पर चढ़ बैठे हैं । फिर किसने यह काम किया होगा ? । ५८२

ॐ शैप्पुदत्	कुरियवर्	तैव्व	रारुळर्
मुप्पुत्तु	तुलहमु	मडङ्ग	मूडिय
इप्पुत्तु	तण्डत्तोरक्	कियैव	दन्डिदु
अप्पुत्तु	तण्डत्ता	रारैन्	डार्शिलर् 583

चिलर्—(और) कुछ; तैव्वर्—शत्रु; चैप्पुत्तुर्कु उरियवर्—कहाने योग्य; यार् उळर्—कौन हैं; मुप्पुत्तु उलकमुम्—तीनों लोकों को; अटङ्क मूडिय—पूर्ण रूप से जिसने अपने में समा लिया है; इ पुत्तु अण्टत्तोरक्कु—इस तरफ़ के अण्ड के वासियों का; इतु इयैवतु अन्डु—यह हो सकने का काम नहीं; अ पुत्तु—उस तरफ़ के; अण्टत्तोर आम्—अण्ड के वासियों का ही हो सकता है; आर्—कौन हैं (वे); अँन्डार्—पूछते । ५८३

और कुछ राक्षसों ने तर्क किया । हमारे रावण का शत्रु कहाने योग्य है कौन ? आकाश, पाताल और भूलोक को अन्तर्निहित रखनेवाले इस अण्डगोल का कोई भी यह नहीं कर सकता ? अपराण्ड (बहिरण्ड) में भी कौन है ? । ५८३

अँन्तैये यिरावणन् इङ्गै यँन्डपिन्, अँन्तैये यँन्डि वणङ्ग लन्डिये
उन्तवे यौण्णुमो वौरुव रालिवळ्, तन्तैये यरिन्दत्त डारैन् डार्शिलर् 584

चिलर्—कुछ; अँन्तैये—यह क्या (आश्चर्य); इरावणन् तङ्कै—रावण की बहिन; अँन्ड पिन्—यह जानने के बाद भी; अँन्तैये अँन्डु—माताजी कहकर; अटि वणङ्कल् इन्डि—चरण में विनत हुए बिना; वौरुवराल्—किसी से; उन्तवे यौण्णुमे—(ऐसी बात) सोची भी जा सकेगी क्या; इवळ्—इसने; तन्तैये तान् अरिन्तत्तळ्—खुद अपने अंगों को काट लिया है; अँन्डत्तर्—बोले । ५८४

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान लगाया । यह क्या आश्चर्य हो गया ! रावण की छोटी बहिन जानने पर कोई भी 'माताजी' कहकर उसके पैरों पर झुक जायगा । इसको छोड़कर वह ऐसा काम मन में भी नहीं ला सकेगा । इसलिए अवश्य इसने स्वयं अपने अंग काट लिये हैं । ५८४

शौड्पिन्	दार्क्किडु	तुणिय	वौण्णुमो
इड्पिन्	दार्तमक्	कियैव	शौयदिलळ्

कड्पिउन्	दाळैतक्	करन्गो	तामिवळ्
पौड्पडै	याक्किन्नन्	पोलैन्	डार्शिलर् 585

चिलर्-कुछ; चोल् पिउन्तार्क्कु-कीतिमानों को; इतु तुणिय औण्णुमो- (स्त्री के अंग काटने का) यह काम करने योग्य है क्या; इल् पिउन्तार्क्कु इयैव- फुलीन स्त्री के लिए उचित काम; चैय्तिलळ्-इसने नहीं किया; कड्पु इउन्ताळ्- शील को मारा है; अँत- (कुछ ऐसा) देखकर; इवळ् पौड्पु-इसके रूप को; अँरे आक्किन्नन्-विकृत कर दिया; करन् कोल् आम्-खर ने ही शायद; अँन्डार्- बोले । ५८५

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान किया— गौरवपूर्ण कुल में उत्पन्न किसी के लिए भी ऐसा करना सूझ सकता है क्या ? (इसलिए मेरा मत है—) इसने कुलीन स्त्रियों के लिए उचित कार्य नहीं किया होगा । अपना शील त्याग दिया होगा । इसलिए खर ने ही इसका अंग-भंग करके रूप को विकृत करा दिया है । ५८५

तत्तुर्	शिन्दैयर्	तळरुन्	देवरिप्
पित्तुर्	वल्लरे	पिळैप्पिल्	शूळ्चचियार्
मुत्तिउत्	तुलहैयु	मुडिक्क	वैण्णुवार्
इत्तिउम्	पुणर्त्तन	रैन्गिन्	डार्शिलर् 586

तत्तु उर् चिन्तैयार्-मन डगमगाकर; तळरुम्-निर्बल रहनेवाले; तेवर्-देव; इ पित्तु उर् वल्लरे-यह पागलपन कर सकनेवाले है क्या; पिळैप्पु इल् शूळ्चचियार्-अचूक तन्त्रशाली; मु तिरत्तु उलकैयुम्-तीनों तरह (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों को; मुडिक्क वैण्णुवार्-मिटाना चाहनेवाले कोई; इ तिउम् पुणर्त्तन-यह काम कर चुके होंगे; अँन्डार्-कहा; चिलर्-कुछ ने । ५८६

देव यह पागलपन नहीं कर सकते, क्योंकि उनका मन रावण के डर से हड़बड़ाता रहता है । वे निर्बल बने हुए हैं । अचूक तन्त्रशाली, तीनों लोकों के नाश को चाहनेवाले किसी ने यह काम किया है । —ऐसा कुछ राक्षसों ने कहा । ५८६

इत्तियैरु	कड्पमुण्	उँत्ति	नन्ऱिये
वनैहळल्	वयङ्गुवाळ्	वीरर्	वल्लरो
पत्तिवरु	कानिडैप्	पळिप्पि	नोन्बुडे
मुनिवरर्	वैहृळियिन्	मुडिवैन्	डार्शिलर् 587

चिलर्-(और) कुछ (राक्षसों) ने; इति और कड्पम् उण्ड-अब किसी दूसरे कल्प में होगा; अँत्तिल् अन्ऱिये-यह बात छोड़कर; वनै कळल्-पायल पहने हुए; वयङ्कु वाळ्-प्रकाशमान तलवार धारण किये रहनेवाले; वीरर्-(इस कल्प के) वीर; वल्लरो-समर्थ हैं क्या; पत्ति वरु कान् इटै-शीतल कानन में; पळिप्पु इल् नोन्पु उटै-अनिन्द्य व्रतधारी; मुत्तिवरर्-मुनिवरों के; वैहृळियिन् मुटिव-कोप का फल है; अँन्डार्-कहा । ५८७

ऐसा काम किसी दूसरे कल्प में हो सकता है तो हो सकता है । इस कल्प का कौन पायलधारी असिहस्त होगा जो यह कर सकेगा ? इसलिए यह अवश्य उन मुनिवरों के कोप का फल है, जो ठण्डे जंगल में अनिन्द्य तपोव्रत में लगे हैं । ५८७

❀ करैयर्	तिरुनहरक्	करुङ्ग	णङ्गैमार्
निरैवळैत्	तळिर्क्कर	नैरित्तु	नोक्किनर्
पिरैयुरु	पालैत	निलैयिर्	पिन्ऱिय
उरैयित्त	रौरुवर्मु	नौरुवर्	मुन्दिनार् 588

करै अरु तिरुनकर-असीम सम्पत्तिशाली इस श्रीनगर लंका की; करम् कण् नङ्कैमार्-नीलाक्षी स्त्रियों ने; निरै वळै-पंक्तिवद्ध कंकणों से भूषित; तळिर् करम्-पल्लव-सम हाथों की; नैरित्तु-मलते हुए; नोक्किनर्-देखा; पिरै उरु पाल् अत-जामन-लगे दूध की तरह; निलैयिल् पिन्ऱिय-स्खलित (अव्यवस्थित); उरैयित्तर्-बोली बोलते हुए; औरुवर् मुन् औरुवर्-एक के आगे एक; मुन्दिनार्-पहले आईं । ५८८

राक्षस पुरुषों की यह बात थी । स्त्रियों ने क्या किया ? इसका वर्णन आगे मिलता है । असीम सम्पत्तिशाली उस नगर की वासिनी, काली आँखों की सुन्दर राक्षसियों ने पंक्ति में कंकणों से भूषित अपने हाथ मलते हुए देखा । जामन-लगे दूध के समान उनकी बोली अव्यवस्थित रही । वे एक के पहले एक दौड़ती आयीं । ५८८

❀ मुळवित्तिल्	वीणैयित्तु	मुरनल्	याळित्तिल्
तळुविय	कुळलित्तिल्	चङ्गिल्	तारैयिल्
अळुहुर	लन्ऱिये	यैन्ऱु	मिल्लदोर्
अळुहुरल्	पिन्ऱन्ददव्	विलङ्गैक्	कन्ऱो 589

मुळवित्तिल्-‘मृत्तलम्’ (मृदंग-सम बाजे) से; वीणैयित्तु-वीणा से; मुरन् ल् याळित्तिल्-सुरीले श्रेष्ठ ‘याळ’ नामक वाद्य से; तळुविय कुळलित्तिल्-संगीतमयी बाँसुरी से; चङ्गिल्-शंख वाद्य से; तारैयिल्-लगातार; अळु कुरल्-उठनेवाला नाद; अन्ऱिये-नहीं आया पर; अन्ऱु-उस दिन; अ इलङ्कक्कु-उस लंका के लिए; अन्ऱम् इल्लतु ओर्-अभूतपूर्व एक; अळुक्कुरल् पिन्ऱन्तु-रुदन-स्वर उठा । ५८९

साधारण रूप से लंका में ‘मृदल’ (मृदंग-सा बाजा) सुरीला याळ, संगीतमयी बाँसुरी, शंख —इन वाद्यों का निरन्तर गान सुनाई देता था । पर आज इसके विपरीत, अभूतपूर्व रीति से रुदन का स्वर उठा । ५८९

❀ कळुडै	चळमुडु	गळित्तु	वैम्बिय
उळमु	मौरुवळिक्	किडक्क	वोडिनार्
वैळमु	नाणुड	विरिन्द	कण्णिनर्
तळुडु	मरुङ्गित्तर्	तळीडक्कौण्	डेहितार् 590

वैळळमुम् नाण् उर-वाढ़ को भी शरमानेवाले; विरिन्त कण्णितर्-अश्रुप्रवाह से भरी आँखों से युक्त स्त्रियाँ; कळ् उटै वळ्ळमुम्-सुरा-भरे प्यालों और; कळित्तु वैम्पिय उळ्ळमुम्-सुरापान से गरम हुए मनो को; और वळि किटक्क-एक ओर रहने देकर; ओटित्तार्-दौड़ी; तळ्ळु-बल खानेवाली; मरुक्किन्तर्-कमरों के साथ; तळ्ळीइ कौण्टु-आपस में पकड़ लेते हुए; एकितार्-शूर्पणखा के पास गई। ५६०

स्त्रियाँ सुरापान में लगी रहीं। उन्होंने सुरा का प्याला और पीने से उत्तप्त मन दोनों को एक ओर रख दिया। उनकी आँखें वाढ़ को भी शरमाती हुई अश्रुजल से भर गयीं। वे दौड़ीं। उनकी कमरें लचकीं। एक दूसरे को पकड़ती हुई, सहारा लेती हुई शूर्पणखा के पास गयीं। ५९०

❀ नान्दह	वुळवर्मे	नाडुन्	दण्डत्तार्
कान्दिन	मन्तत्तिन्तर्	पुलवि	कैम्मिहच्
चेन्दह	णदिहमुज्	जिवन्दु	नीरुह
वेन्दनुक्	किळैयव	डाळिन्	वीळ्न्दन्तर् 591

नान्तक उळवर् मेल्-तलवार-कृषक (अपने पतियों) को; नाटुम् तण्डत्तार्-दण्ड देने को आतुर स्त्रियाँ; कान्तिन्त मन्तत्तिन्तर्-कोपसंतप्त मन के साथ; पुलवि कै मिक्-मान के बढ़ने से; चेन्त कण् अतिक्रमुम् चिवन्तु-लाल आँखों को और अधिक लाल करते हुए; नीर् उक्-आँसू निकालकर; वेन्तत्तुक्कु इळैयवळ्-(राक्षस-) राजा की छोटी बहिन के; ताळिल् वीळ्न्तन्तर्-पैरों पर गिरीं। ५६१

कुछ स्त्रियाँ अपने तलवार के धनी पतियों से खीझ गयी थीं। वे उनको दण्ड देने की खोज में थीं। उनका मन गरम था और आँखें लाल थीं। अब डर के कारण उनकी आँखें अधिक तीव्र लाल हो गयीं। वे आकर अपने राजा की बहिन शूर्पणखा के पैरों पर गिरीं। ५९१

पौडुलै मरहदप् पूह नोवुडच्, चुड्रिय मणिवडन् दूडुगु मूशलिन् मुड्रिय पाडलै मुत्तिवुड् रेङ्गितार्, शिड्रिडै यलमरत् तैरुवु शेर्हिन्डार् 592

पौन् तलै-सिरों पर स्वर्ण-सदृश फलों से भरे; मरकत्त पुक्कम्-मरकतवर्ण पूग-तरुओं को; नोवु उर-कण्ट देते हुए; चुड्रिय-लपेटकर बंधे हुए; मणि वटम् तूङ्कुम्-मणिमय जंजीरों से लटकनेवाले; ऊचलिन्-झूलों में रहकर; मुड्रिय आटलै-उच्चतम वेग से झूलना; मुत्तिवु उड्-कोप से छोड़कर; एङ्किता-दुःखित जो हुई; वे; चिड् इट्टै अलमर-पतली कमरों को दुखने देते हुए; तैरुवु चेर्किन्डार्-बीबी में आ गई। ५६२

कुछ स्त्रियाँ पूगतरुओं से बंधे झूलों में बैठकर झूल रही थीं। वे पूगतरु मरकततरु के समान हरे और मनोहारी थे और उनके सिरों पर स्वर्ण-सम फल लगे थे। उन तरुओं को संकट देते हुए स्त्रियों का झूलना उच्चतम दशा पर था। जब उन्होंने शूर्पणखा को देखा तो उन्होंने गुस्से के

साथ झूलना छोड़ा। पतली कमर को कण्ट देती हुई वे वीथी में आ गयीं। ५९२

❀ अँलुवँत	मलैयँत	वँलुन्द	तोळ्हळैत
तळुविय	वळैततळिर्	नँहिल्ल	तामरै
मुळुमुहत्	तिरुहयन्	मुत्ति	तालिहळ
पौळिदरच्	चिलरुळम्	पौरुमि	विस्मुवार् 593

चिलर्—(और) कुछ (राक्षसी स्त्रियाँ); अँलु अँत—स्तम्भ-सम; मलै अँत—पर्वत-से; अँलुन्त—उन्नत; तोळ्हळै—(अपने पतियों के) कन्धों से; तळुविय—लिपटे रहे; वळै तळिर्—वलय-भूषित पल्लवों (हस्तों) को; नँहिल्ल—अलग करके; तामरै—मुळु मुकतु—वदन रूपी पुष्ट कमल पर की; इर कयल्—दो कयलों (आँखों) में; मुत्तिन् आलिकळ—मोती-से अश्रुकण; पौळि तर—भरते हुए; उळम् पौरुमि—मन को दुख से भरकर; विस्मुवार्—सिसकौं। ५९३

अन्य कुछ राक्षस-नारियाँ अपने पतियों के स्तम्भ और पर्वत-सम कन्धों से लिपटी रहीं। जब उन्हें समाचार मिला तो उनके वलय-भूषित पल्लव-सम हाथ ढीले पड़ गए। पुष्ट कमल-सम मुखों में रही कयल मछली-सी आँखों में मोतियों के समान अश्रुकण ढलक आये। उनका मन दुखी हुआ और वे सिसकियाँ भरने लगीं। ५९३

नैय्न्निंलैय	वेलरश	नेरुनरै	यिल्लान्
इन्निंलैयु	णरुन्दबोळु	दैनिलैय	नैन्ता
मैन्निंलैने	डुङ्गण्मळै	वानिलैय	वाहप्
पौय्न्निंलैम	रुङ्गितर्	पुलम्बितर्	पुरण्डार् 594

नेरुनरै इल्लान्—टक्कर लेनेवाला जिसकी कोई नहीं रहा; नैय् निंलैय—धूत-लगे; वेल् अरचन्—भाले का धारण करनेवाला राजा (रावण); इ निंलै उणरुन्त पौळुतु—(शूर्पणखा की) यह स्थिति जब जानेगा; अँ निंलैयन् अँन्ता—किस स्थिति का होगा, यह सोचकर; मै निंलै—अंजनयुक्त; नैटुम् कण्—आयत आँखों के; मळै वान् निंलैयु आक—जल-वर्षक मेघ की-सी स्थिति में आते; पौय् निंलै मरुङ्कितर्—मिथ्या-कटि स्त्रियाँ; पुरण्डार् पुलम्बितर्—लोटीं और विलपीं। ५९४

कुछ स्त्रियों के मन में यह प्रश्न उठा कि अजातशत्रु धृतरंजित भाले के स्वामी, रावण को जब शूर्पणखा की स्थिति मालूम होगी तो उसकी स्थिति क्या होगी? तो उनकी काजल-लगी दीर्घ आँखें जलवर्षक मेघों के समान हो गयीं। नाम-मात्र की कटि से युक्त वे भूमि पर लोटती हुई विलाप करने लगीं। ५९४

मनन्दलै	वरुङ्गन्नलि	निन्नुवै	मडुन्दार्
कनन्दलै	वरुङ्गुळल्	शरिन्दुहलै	शोर

ननन्दलेय	कौङ्गैह	डडुम्बिड	नडन्दार्
अनन्दलिळ	मङ्गैय	रळुङ्गिययर्	हिन्ऱार् 595

अत्तन्तल् इळ मङ्कैयर्-सोती रहीं (जो) वे कुछ तरुणी रमणियाँ; मत्तम् तलै-मन में इच्छा करने से; वरु-होनेवाले; कत्तवु इन्नु चुवै-सपनों का मधुर रस; मडन्तार्-भूलकर; कत्तम् तलै वरुम्-घन-सदृश विशिष्ट; कुळल् चरिन्तु-केश को खुलकर बिखरने देते हुए; कलै चोर-वस्त्र को खिसकने देते हुए; नत्तम् तलैय-पृथुल; कौङ्कैकळ्-स्तनों को; ततुम्पिट-उछलने देते हुए; नटन्तार्-पैदल आई; अळुङ्कि-दुखी होकर; अयर्किन्ऱार्-श्रांत हुई। ५६५

कुछ स्त्रियाँ निद्रा कर रही थीं। उनका मन आनन्द के साथ स्वप्न देखने लगा था। जब उन्हें यह समाचार मिला तो स्वप्न का रस भूलकर उठीं। मेघ-सम केश खुलकर बिखर गये। वस्त्र भी ढीले हो खिसकने लगा गये। जब वे पैदल चलने लगीं तो उनके बड़े-बड़े स्तन उछलने लगे। वे बहुत दुखी हुई। ५९५

अङ्गैयि	नरन्गयिलै	कौण्डविऱ	लैयन्
तङ्गैनिलै	चिङ्गिदुहो	लैन्ऱुतळर्	हिन्ऱार्
कौङ्गैयिणै	शङ्गैयिन्	मलैन्दुकुलै	कोवै
मङ्गैयर्ह	णङ्गैयडि	वन्डुविळ्	हिन्ऱार् 596

कुलै कोतै मङ्कैयर्कळ्-स्त्रियाँ, जिनके केश छूटे और बिखरे थे; अम् कैयिल्-अपनी हथेलियों में; अरन्तु कयिलै कौण्ड-हर के कैलास को जिसने उखाड़ा था, उस; तिरुल् ऐयन्-पराक्रमी राजा की; तङ्कै निलै-बहिन की दशा; इङ्कु इतु कौल्-यहाँ यह हुई तो; अन्ऱु तळर्किन्ऱार्-यह सोचकर बलान्त हुई; कौङ्कै इणै-स्तन-द्वय पर; चैम् कैयिल् मलैन्तु-अपने लाल हाथों से पीटती हुई; नङ्कै अटि वन्तु-उस नायिका के चरणों पर आकर; विळुकिन्ऱार्-गिरती है। ५६६

कुछ स्त्रियाँ, जिनके केश खुले हुए बिखरे थे; अपनी छाती पीटते हुए रोने लगी। उन्हें दुख इस बात का था कि अपनी हथेली में जिसने हर के कैलास पर्वत को उठाया था, उस पराक्रमी स्वामी की बहिन की भी यह हालत हो गयी। रोती हुई आकर वे नायिका के पैरों पर गिरीं। ५९६

इलङ्गैयिल्	विलङ्गुमिवै	यैय्दलिल	वैन्ऱुम्
वलङ्गैयि	लिलङ्गुमयिन्	मन्ऱन्ऱुळ	लैन्ना
नलङ्गैयि	लहन्ऱुदुहो	नम्मित्तैन	नैन्दार्
कलङ्गलिल्	करुङ्गणिणै	वारिहलुळ्	हिन्ऱार् 597

वलम् कैयिल् इलङ्कुम् अयिल्-दाहिने हाथ में प्रकाशमान भाला रखनेवाला; मन्ऱन्ऱु उळन्-राजा है; अन्ऱुता-यह सोचकर (डर से); अन्ऱुम्-सदा; इलङ्कैयिल्-लंका के; विलङ्कुम्-जानवर भी; इवै अयत्तल् इल-ऐसी आफत के भागी नहीं होते थे; नम्मित्तु-हमसे; नलम् कैयिल् अकन्ऱुतु कौल्-भलाई छोड़कर अलग हो गई

शायद; अँत-यह सोचकर; नैन्तार्-दुख से क्षीण होती हुई; कलङ्कलिल्-व्यथा के कारण; करुम्-कण् इणै-काली दोनों आँखों से; वारि-जल को; कलुळ्किन्तार्-गिराती हैं । ५६७

अपने दाहिने हाथ में भाला लिये हुए राजा रावण विद्यमान था । उसके कारण लंका में किसी जानवर पर भी ऐसा संकट नहीं आया था । 'अब क्या हमारी सुरक्षितता चली गयी ?' यह सोचकर वे व्यथित हुई । व्याकुलता के कारण उनकी काली आँखों के जोड़ों में अश्रु भर आया । ५९७

ॐ अँन्त्रित्तैय	वन्तुय	रिलङ्गैनह	रैय्द
निन्त्रव	रिरुन्दवरी	डोडुनैरि	तेडक्
कुन्त्रिन्डि	वन्दुपडि	कौण्डलन	मन्तन्
पौन्त्रिणि	पौलन्गळल्	विळुन्दनळ्	पुरण्डाळ् 598

अँन्ड इतैय-ऐसा, ऐसा; इलङ्कै नकर्-लंका नगर; वन् तुयर् अँय्त-कठोर दुख को प्राप्त हुआ, तब; निन्त्रवर् इरुन्तवर् ओट्टु-सभा में जो खड़े रहे वे, जो बैठे रहे उनके साथ; ओट्टु नैरि तेड-भागने का मार्ग देखने लगे; कुन्त्रिन् अटि वन्तु पटि-पर्वत के तल में आकर जमनेवाले; कौण्डल् अँत-घन के समान; मन्तन्-(राक्षस) राजा रावण के; पौन् त्रिणि-स्वर्णमय; पौलन् कळल्-सुन्दर पायल से अलंकृत पैरों पर; विळुन्तत्तळ्-गिरी; पुरण्डाळ्-लोटी (शूर्पणखा) । ५६८

इस तरह लंका का नगर ही व्याकुलता से भर गया । तब रावण की सभा में शूर्पणखा आयी और रावण के स्वर्णमय पायलधारी चरणों पर गिरी । जब वह वहाँ आयी तो सभा में जो खड़े रहे और जो बैठे रहे, सभी भागने का मार्ग ढूँढ़ने लगे । जब वह रावण के पैरों पर गिरी, तब पर्वत के तल में मेघ आकर पड़ा हो, ऐसा लगा । वह गिरकर लोटने लगी । ५९८

मूडिय	तिरुट्पडल	मूवलहु	मुर्त्तुच्च
चेडन्तुम्	वैरुक्कौडु	शिरत्तीहै	नैळित्तान्
आडिन	कुलक्किरि	यरक्कनु	मयिरत्तान्
ओडिन	तिशैक्करिह	ळुम्बरु	मौळित्तार् 599

मू उलकुम् मुर्त्तु-तीनों लोकों में सर्वत्र; इळ् पटलम् मूडियतु-अँधेरा-पटल ढँक गया; चेडन्तुम्-शेषनाग ने भी; वैरु कौटु-डरकर; चिरम् तौकै-सिरों की राशि को; नैळित्तान्-लचकाया; कुल किरि आटित्त-कुलपर्वत हिल उठे; अरुक्कन्तुम् अयिरत्तान्-सूर्यदेव भी ठिठके; तिचै करिकळ्-दिग्गज; ओटित्त-भागे; उम्परुम्-देव भी; मौळित्तार्-छिप गये । ५६९

तब तीनों लोकों को अन्धकार ढाँप गया । शेषनाग ने डरकर अपने सिरों के समूह को लचका दिया । (कैलास, हिमालय, मन्दर, विन्ध्य,

निपट; हेमकूट, नील, गन्धमादन नाम की) सातों कुलगिरियाँ हिल गयीं । सूर्य भी भयभीत और संशयसहित हो गया । दिग्गज भाग गये और देव भी छिप गये । ५९९

विरिन्दवल	यङ्गण्मिडे	तोळ्वडर	मोदिट्
देरिन्दनय	तङ्गळैयिड्	रिन्बुड	मिमैप्प
नेरिन्दपुरु	वङ्गण्डु	नेङ्गियितै	मुङ्गुत्त
तिरिन्दपुव	तङ्गळ्विनै	तेवरु	मयिरुत्तार् 600

विरिन्त चलयङ्कळ् मिदै-विशाल वलयों से लसे; तोळ पटर-कन्धे फूल उठे, तव; मोतु इट्टु-ऊपर उठती; अरिन्त नयनङ्कळ्-ज्वाला के साथ जलनेवाली लाल आँखें; ऐयिङ्गिन् पुडम्-वक्रदांतों के वाजू में; इमैप्प-प्रकाश फैलाती तो; नेरिन्त पुरुवङ्कळ्-देही हुई भौंहें; नेट्टु नेङ्गियितै-लम्बे भालों को; मुङ्गु-डंक गई, तो; पुवतङ्कळ्-सारे भुवन; तिरिन्त-गति बदलकर घूम उठे; विन्नै-विपरीत कार्य देख; तेवरु अयिरुत्तार्-देवता लोग भी भय करने लगे । ६००

रावण के कन्धे, जिन पर वलय लगे थे, फूल उठे । उसकी आँखों से जो ज्वाला-सी उठी उसका प्रकाश वक्रदन्तों के वाजुओं में फैला । घनी भौंहें तनीं और भाल पर फैल गयीं । सारे भुवन डगमगा गये । यह विपरीत स्थिति देखकर देव सिहर उठे । ६००

तेन्डिशै	नमन्डुनौडु	तेवरुहुल	मैल्लाम्
इन्डिरुदि	वन्दतु	नमक्कैत	विरुन्द
निन्डुयिर्	नडुङ्गवुडल्	विम्मनिलै	यिल्ला
वौन्डुमुदै	याडलिल	रुम्बरित्तौ	डिम्बर् 601

तेन् तिवै नमन् तन् ओट्टु-दक्षिणी दिशा के (अधिदेवता) यम के साथ; तेवरु कुलम् मैल्लाम्-देवों के कुल सब; नमक्कु-हमारा; इत्तु-आज; इत्ति वन्ततु-अन्त आ गया; अन्न-सोचकर; इरुन्त-रहे; उम्पर् ओट्टु-देवों के साथ; इम्पर्-इस लोक के वासी भी; उयिर् नडुङ्क-काँपते प्राणों के साथ; निन्डु-खड़े होकर; उटल् विम्म-शरीर-स्पन्दन के साथ; निलै निल्लातु-कहीं स्थिर न रह सके; औन्डुम् उरै आटल् इलर्-एक शब्द भी नहीं बोल सके । ६०१

दक्षिण दिशा के यम से लेकर सारे देवता भयभीत हो गये कि आज हमारा अन्त आ गया । वे खड़े रह गये । आकाशवासी के साथ इहलोक-वासी भी काँपने लगे । उनके प्राण सूख गये, शरीर काँपने लगे और वे अस्थिर और मौन हो रहे । ६०१

ॐ मडित्तपिल	वाय्हुडौरुम्	वन्दुबुहै	मुन्दत्
तुडित्ततौडर्	मोशैहळ्	शुरूक्कोळ	वुयिर्प्पक्
कडित्तहदिरु	वाळैयिरु	मित्तकजल	मेहत्
तिडित्तवुरु	मौत्तुरडि	यावर्शैय	लैन्डान् 602

मटित्त पिल वाय्कळ् तौरुम्—(कोप से रावण ने जिनके) अधरों को मोड़कर दाँतों से दबा रखा था, उन मुखों में; पुके वन्तु मुन्त-धुआँ निकल रहा था; तुटित्त-फड़कती; तौटर् मीचकळ्-मूँछों की शृंखला को; चुक्कोळ्-झुलसाते (काला बनाते) हुए; उयिर्प्प-साँसें छोड़ रहा था; कटित्त-जिनको पीसता था; कतिर् वाळ् अयिर्-प्रकाशमय तलवार-सम वक्र (या खड्ग) दाँतों के; मिन् कजल-विद्युत्-से चमकते; मेकतु इटित्त उरुम् औत्तु-मेघ में उठनेवाले वज्र-नाद के समान; उररि-स्वर में बोलते हुए; यावर् चैयल्-किसका काम है; अँन्शान्-पूछा । ६०२

रावण ओंठ चबा रहा था । उन बिल-समान मुखों से धुआँ उठ रहा था । उसकी मूँछें पंक्ति में हिल रही थीं । और उनको झुलसाते हुए वह गरम साँसें छोड़ रहा था । उसके वक्र दाँत, जो ओंठों को दबा रहे थे, बिजली के समान चमक रहे थे । मेघ में उठनेवाले वज्र के से स्वर में उसने शूर्पणखा से पूछा कि यह किसका काम है ? । ६०२

❀ कानिडं	यडैन्दुबुवि	कावल्वुरि	हिन्शार्
मीनुडै	नैडुङ्गोडियि	नोननैयर्	मेल्हीळ्
ऊनुडै	युडम्बुडैमै	योरुवमै	यिल्ला
मानिडर्	तडिन्दनरहळ्	वाळुरुवि	यँन्शाल् 603

पुवि कावल्वु पुरिकिन्शार्-भूपालक; मीन् उटै नैटुम् कौटियित्तोन्-मकरांकित लम्बी ध्वजा वाले के; अतैयर्-समान रूप रखनेवाले; मेल् कीळ्-ऊपर और नीचे के लोकों में; ऊन् उटै-मांस सहित; उटम्पु उटैमैयोर्-शरीरधारी; ओर् उवमै इल्ला-अनुपम; मानिडर्-मनुष्य; कान् इटै अटैन्तु-कानन में आकर; वाळ् उरुवि-तलवार चींचकर; तटिन्तनरकळ्-काट लिया; अँन्शाल्-कहा । ६०३

शूर्पणखा ने उत्तर दिया कि वे भूमि के पालक राजकुमार हैं । मकरकेतु के समान रूपवान हैं । ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों लोकों में वे मांसधारी मनुष्य अनुपम हैं । वे वन में आये हैं और उन्होंने कटार निकालकर मेरा अंग-भंग कर दिया । ६०३

❀ शैय्दनरहण्	मानिड	रँनत्तिशै	यनैत्तुम्
अैय्दनहै	वन्ददैरि	शिन्दिनह	णैल्लाम्
नोय्दवर्	वलित्तौळि	नुवन्शमीळि	यौन्श
पौय्तविर्	पयत्तैयौळि	पुक्कपह	लैन्शान् 604

मानिडर् चैयत्तनरकळ् अँत-मानवों ने किया, यह कहने पर; तिचै अतैत्तुम् अैय्त-दिशाओं भर में गूँजे, ऐसा; नकै-हास; वन्तु-आया; कण् अैल्लाम्-सभी आँखों ने; अैरि-आग; चिन्तित्त-बरसायी; नौय्तवर्-अल्प (मानव); वलि तौळिल्-बलवान का कार्य; नुवन्श मीळि-तुम्हारा कहा वचन; औन्श-मेल नहीं खाता; पौय्तविर्-झूठ छोड़ा; पयत्तै औळि-भय त्यागो; पुक्क-जो हुआ; पुक्क-बताओ (सच); अँन्शान्-कहा (रावण ने) । ६०४

मनुष्यों ने यह काम किया—यह सुनकर रावण को हँसी आ गयी। उसकी गूँज आठों दिशाओं में भर उठी। आँखों ने आग उगली। उसने शूर्पणखा को डाँटा कि क्या बकती हो ? वे दुर्बल मानव हैं और यह काम बड़े वीरों का काम है। दोनों में मेल नहीं है। असत्य कहना छोड़ो। भय के कारण ऐसा कहती हो तो भय त्याग दो। जो हुआ वह सच-सच बताओ। ६०४

मन्मदतै	यौप्परमणि	मेत्तिवड	मेरुत्
तन्मद	नेळिप्परदिर	डोळिन्वलि	तन्नाल्
अँन्नदने	यिप्पोळु	दिशैप्पदुल	हेळिन्
नन्मदम	ळिप्परौरि	मैप्पितति	विल्लाल 605

मणि मेत्ति—सुन्दर रूप में; मन्मदतै औप्पर—मन्मथ की समानता करते हैं; तिरळ तोळिन् वलि तन्नाल्—पुष्ट भुज-बल के पराक्रम में; वट मेरु तन्—उत्तर के मेरु का; मतन् अळिप्पर—घमण्ड चूर कर देंगे; विज्जाल्—धनुर्युद्ध में; ओर् इमैप्पिल्—एक पल में; उलकु एळिन्—सातों लोकों का; नल् मतन्—बड़ा बल; नति ओळिप्पर—खव नष्ट कर सकेंगे; अतनै—उसको; इप्पोळुतु—अब; इचैप्पतु अँन्—कहना कैसा। ६०५

शूर्पणखा फिर उनके सौन्दर्य का वर्णन करने लगी। वे रूप में मन्मथ हैं। पुष्ट कन्धों के बल में मेरु का गर्व चूर करनेवाले हैं। एक ही धनु के बल से एक ही पल में वे सातों लोकों का बल मिटा सकनेवाले हैं। हा ! हा ! उसका अब कैसा वर्णन किया जायगा ? । ६०५

वन्दनैमु	तित्तलैवर्	पालुडैयर्	वात्तत्
तिन्दुविन्मु	हत्तरैर्	नीरिल्लैळु	नाळक्
कन्दमल	रैप्पोरुवु	कण्णर्हळल्	कैयर्
अन्मिड	वत्तौळिल	रारवरै	यौप्पार् 606

मुत्ति तलैवर् पाल्—मुनिवरों के प्रति; वत्तत्त उटैयर्—पूजा का भाव जो रखते हैं; वात्तत्तु इन्तुविन् मुक्तुत्तर्—आकाश के चन्द्र के समान मुख वाले; अँर्—तरंगाकुल; नीरिल्—जलाशय में; अँळु—उत्पन्न; नाळ—नालसहित; कन्त मलरै—सुवासपूर्ण (कमल-) पुष्प की; पोरुवु—समानता करनेवाली; कण्णर्—आँखों वाले; कळल्—चरण वाले; कैयर्—हाथों वाले; अन्तम् इल्—असीम; तव तौळिलर्—तपस्या-कार्य में लीन; आर् अवरै औप्पार्—कौन उनकी समानता करेगा। ६०६

शूर्पणखा ने आगे कहा कि वे मुनिवरों के प्रति श्रद्धाभाव रखनेवाले हैं। आकाश के चन्द्र के समान उनके मुख प्रकाशमान और मनोरम हैं। उनकी आँखें तरंग-भरे जलाशयों में विकसित नालयुक्त सुगंधित-कमल के समान हैं। हा ! हा ! वे कमल-हस्त हैं और कमल-चरण हैं। अपार

तप के कर्म में लगे हुए हैं। उनकी उपमा कहाँ ढूँढी जाय ? कौन उनकी तुलना कर सकेंगे ? । ६०६

वङ्कलैयर्	वारहळलर्	मारबिलणि	नूलर्
विङ्कलैयर्	वेदमुउं	नावर्तनि	मैय्यर्
उङ्कलैय	रुन्तैयौर्दु	हट्टुणैयु	मुत्तार्
शौङ्कलैयै	नत्तौलैवि	रूणिहळ्	शुमन्दार् 607

वङ्कलैयर्—वल्कल-वसन; वारहळलर्—लम्बी पायलधारी; मारपिल् अणि—वक्ष में धृत; नूलर्—यज्ञोपवीत वाले; विल् कलैयर्—धनुर्विद्या-विशारद; वेतम् उउं नावर्—वेदाश्रय-जिह्वा; तत्ति मैय्यर्—अनुपम सत्यसंध; उत्त कलैयर्—कला-श्रेष्ठ; चोत् कलै अंत-शब्द-विद्या के समान; तौलैवु इल्—अक्षय; तूणिकळ् चुमन्तार्—तूणीर रखनेवाले; उन्तै और् तुकळ् तुणैयुम्—तुमको एक धूलि के समान भी; उन्तार्—नहीं समझते । ६०७

‘वे वल्कलवसन हैं। पायलधारी हैं। उनके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभायमान हैं। युद्धविद्याविशारद हैं। उनकी जीभ वेदों का आश्रय हैं। अनुपम सत्यसंध हैं। कलाओं में उत्कृष्ट निपुण हैं। शब्द-शास्त्र के समान उनके तूणीर अक्षय हैं। वे तुमको धूलि के समान भी नहीं मानेंगे । ६०७

✽ माररुळ	रेयिरुव	रोरुयिरिन्	वाळ्वार्
वीररुळ	रेयवरिन्	विल्लिन्वलि	वल्लार्
आरौरुव	रन्नवरै	यौप्पवरह	ळैया
ओरौरुव	रेमुदल्वर्	मूवरैयु	मौप्पार् 608

ऐया—महिमावान; इरुवर् मारर् उळरे—दो मार देव हैं क्या; ओर् उयिरिन् वाळ्वार्—एकप्राण हो रहते हैं; विल् अमरिल्—धनुर्विद्या में; वल्लार्—कुशल; अवरिन् वीरर्—उनसे बढ़कर वीर; उळरे—हैं क्या; अन्नतवरै औप्पवरकळ्—उनकी समानता करनेवाले; ओरुवर् आर्—कोई एक कौन हैं; ओर् ओरुवरे—उनमें एक-एक; मुतल्वर् मूवरैयुम्—प्रधान त्रिदेवों की; औप्पार्—समानता करेंगे । ६०८

हे मेरे तात, प्रभु ! कहीं मन्मथ दो है क्या ? वे एक प्राण हो रहते हैं। धनुर्विद्या में वे बड़े ही समर्थ हैं। उनसे बढ़कर कोई वीर भी है क्या ? उनकी तुलना करनेवाले कोई कहाँ हैं ? उनमें एक-एक त्रिदेवों की समानता कर सकेंगे । ६०८

✽ आरुमन्	मज्जिन	मरक्करै	यैन्चर्चैन्
इरुनैडि	यन्दण	रियम्बवुल	हैल्लाम्
वेरुमैनु	नुङ्गळहुलम्	वेरौडु	मडङ्गक्
कौरुमैन्	मुन्दैयौरु	शूळुडु	कौण्डार् 609

एरु नैरि अन्तणर्-उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते जानेवाले ब्राह्मणों (ऋषियों) ने; चैन्ऱु-उनके पास जाकर; अरक्करै-राक्षसों को; आरुम् मन्ऱम्-शान्तमन वाले हम; अञ्चित्तम्-डरते हैं; अँत इयम्प-यह कहा, तो; उलकु अँलाम्-सारे लोक; वेरुम् अँतुम्-हराकर मिटा देंगे, कहनेवाले; उड्कळ् कुलम्-तुम्हारे कुल का; अटक्क-सारा; वेर् ओटुम् कोरुम् अँत-समूल नाश करेंगे, ऐसा; मुन्तै-पहले; और चूळ्-एक शपथ; उडुवु कौण्टार्-कर ली है। ६०६

उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते चलनेवाले मुनिवरों ने उन मानवों के पास जाकर बताया कि हम शान्त-प्रकृति हैं और हमें इन राक्षसों से भय है। तब उन्होंने शपथ खायी कि 'संसार का नाश कर देंगे'—यह कहनेवाले राक्षसों के कुल को ही हम समूल नाश कर देंगे। पहले की हुई उस शपथ से वे बद्ध हैं। ६०९

ॐ तरावल्य	नेमियुळ	वन्ऱयर्	दप्पेर्प्
परावरु	नलत्तोरुवन्	मैन्दर्पळि	यिल्लार्
विरावरुम्	वन्ऱत्तवन्	विळम्बवुडु	हिन्ऱार्
इरामनु	मिलक्कुवन्	मैन्बर्पेय	रैन्ऱाळ् 610

तरा वलयम्-भूमण्डल का; नेमि उळवन्-चक्रवर्ती राजा; तयर्त पेर्-दशरथ नाम का; परावरु नलत्तु ओरुवन्-प्रशंसनीय गुण वाला एक; मैन्दर्-उसके पुत्र; पळि इल्लार्-अनिन्द्य; अवन् विळम्प-उसके कहने पर; विरावु अरु वत्तत्तु-वास के लिए अयोग्य कानन में; उरैकिन्ऱार्-रहते हैं; पयर्-नाम; इरामन्तुम् इलक्कुवन्-श्रीराम और लक्ष्मण; अँन्ऱर्-कहते हैं; अँन्ऱाळ्-कहा (शूर्पणखा ने)। ६१०

इस भूमण्डल का राजा, चक्रवर्ती दशरथ नाम का प्रशंसनीय गुणी था। ये उस श्रेष्ठ राजा के पुत्र हैं। ये अनिन्द्य हैं। दशरथ की आज्ञा से वे इस वन में आकर ठहरते हैं, जहाँ स्वच्छन्द होकर वास करना कठिन है। उनके नाम राम और लक्ष्मण हैं। —शूर्पणखा ने अपनी बात समाप्त की। ६१०

मरुन्दनैय	तङ्गैमणि	नाशिवडि	वाळाल्
अरिन्दवरु	मात्तिड	रत्तिन्ऱुमुयिर्	वाळ्वार्
विरुन्दनैय	वाळोडुम्	विळित्तित्तैयुम्	बैल्हा
दिरुन्दन	तिरावणन्	मिन्नुयिर्ही	डित्तुन् 611

मरुन्तु अतैय तङ्कै-अमृत-सम छोटी बहिन को; मणि नाचि-सुन्दर नासिका को; वटि वाळाल्-तीक्ष्ण तलवार से; अरिन्तवरुम् मात्तिटर्-काटनेवाले भी मानव हैं; अरिन्तुम्-यह विदित होने पर भी; उयिर् वाळ्वार्-जीवित हैं; इरावणन्-रावण भी; विरुन्तु अतैय वाळ् ओटुम्-नई तलवार के साथ; विळित्तु-ताकते हुए; इरैयुम् बैल्कातु-किंचित भी लाज का अनुभव किये बिना; इन् उयिर् कौटु-अपने प्यारे प्राणी के साथ; इरुन्तत्तन्-चुप रह गया। ६११

रावण को यह सब सुनकर बड़ा बुरा लगा । वह कहने लगा—
मेरी अमृत-सी प्यारी वहिन की सुन्दर नासिका को तीक्ष्ण असि से
काटनेवाले हैं मनुष्य ! यह विदित होने पर भी वे जीवित है ! क्या
अपमान है ! रावण भी अपनी नवीन तलवार के साथ, बीसों आँखों से
देखता हुआ, विना शरम खाये प्यारे प्राण लेकर रहता है ! । ६११

❀ कौड्रमदु	मुड्रिवलि	यालरशु	कौण्डेन्
उड्रपयन्	मड्रिदुहौ	लामुरै	यिड्रन्देन्
मुड्रवुल	हत्तुमुदल्	वीरर्	मुडियैल्लाम्
अड्रपौळु	दिड्रिदुपौ	रुन्दुमेन्	लामो 612

कौड्रम् अतु मुड्रि-विजय का पक्का बनाकर; वलियाल्-अपनी शक्ति से;
अरचु कौण्डेन्-त्रिलोकाधिपत्य अपनाया (मैंने); उड्र पयन्-उसका प्राप्त फल;
इतु कौल् आम्-यही है क्या; उरं इड्रन्देन्-(गौरव-) गाथा खोई; मुड्र उलकत्तु-
सारे विश्व में; मुत्तल् वीरर्-पहले सिर के वीरों के; मुटि अल्लाम्-सिरों को;
अड्रपौळु-जब काटा गया तब; इड्र इतु-जो गया यह यश; पौरुन्तुम् अत्तल्
आमो-फिर मिलेगा, यह माना जा सकेगा । ६१२

मैंने अपनी विजय-यात्रा पूरी करके अपने पराक्रम के बल पर तीनों
लोकों का राज पाया ! उसका यही फल रहा क्या ? हाय ! यश मेरा
नष्ट हो गया ! सभी लोकों के सारे प्रथम श्रेणी के वीरों के सिर काट भी
लूँ तो यह नष्ट हुआ यश फिर मिल सकेगा क्या ? । ६१२

❀ मूळमुळ	दायपळि	यैन्वयित्	मुडित्तोर
आळुमुळ	वामवर्द	मारुयिरु	मुण्डाम्
वाळुमुळ	दोदविड	मुण्डवन्	वळङ्कु
नाळुमुळ	तोळमुळ	नात्तुमुळै	तत्तुडो 613

अन् वयित्-मेरे प्रति; उळतु आय-स्थायी; मूळम् पळि-और व्यापी अपयश
का काम; मुटित्तोर-करनेवाले; आळुम् उळ-मनुष्य अब भी है; अवर तम् आर्
उयिरुम् उण्डाम्-उनके प्यारे प्राण अब भी है; वाळुम् उळतु-(चन्द्रहास-) तलवार
भी है; ओतम् विटम् उण्डवन्-समुद्र का विष के भोक्ता शिव के द्वारा; वळङ्कु-
दत्त; नाळुम् उळ-आयु के दिन भी हैं; तोळम् उळ-भुजाएँ हैं; नात्तुम् उळैन् अत्तुडो-
मैं भी रहता हूँ । ६१३

वे मनुष्य भी हैं जो मेरे प्रति इतना बड़ा अपराध, मेरे इतने बड़े
अपयश का काम कर चुके । और उनके प्राण अब भी बचे हैं ! मेरे हाथ
मे चन्द्रहास भी है । समुद्र से निकला विष जिन्होंने खाया, उन शिवजी से
वर के रूप में दत्त आयु भी है । मेरे कन्धे भी हैं । मैं भी जीवित हूँ
न ! । ६१३

❀ पौतुउ	वुडुपळि	पुहुन्देन	नाणित्
ततुव	देन्नेमन	नेतळर	लम्मा
अतुय	रुनक्कुळ	दिनिप्पळि	शुमक्कप्
पतुळ	तलेप्पहुदि	तोळ्हळ	पलवन्ऱो 614

मतते-रे मन; उटल् पौतु उऱ-मेरे शरीर को विद्ध करते हुए; पळि पुकुन्तु-अपयश लग गया; अत-यह सोचकर; नाणि-शरमाकर; ततुव-हड़बड़ाने से; अन्ने-क्यों; इति तळरल्-अव मत भ्रष्टा; अतुय-कौन सा दुःख; उतक्कु उळतु-तुम्हें है; इति-आगे; पळि चुमक्क-कलंक ढोने के लिए; तले पकुति-मेरे सिर के अंश; पतु उळतु-दस हैं; तोळ्हळ पल अन्ऱो-कन्धे भी अनेक (बीस) हैं न । ६१४

रे मन ! यह अपयश ऐसा आकर लगा है कि मेरा शरीर ही विद्ध हो गया । यह सोचकर तुम क्यों शरमाकर हड़बड़ाते हो ? तुम दुख से निर्बल मत हो जाओ । तुम्हारा क्या दुख है ? अपयश ढोने के लिए मेरे दस सिर हैं । कन्धे तो अनेक हैं न ! । ६१४

❀ अन्ऱै	शैयानहै	शैयावरि	विळिप्पान्
वन्ऱुणैयि	लाविरुवर्	मानिडरै	वाळाल्
कौन्ऱिलर्ह	ळानैडिय	कुन्ऱुडैय	कानिल्
निन्ऱुकर	तेमुदलि	नोर्निरुद	रैन्ऱान् 615

अन्ऱै उरै चैया-यह (स्वनिदा में) कहकर; नकै चैया-हँसकर; अरि विळिप्पान्-आग के समान दृष्टि चलाते हुए; नैटिय कुन्ऱु-उच्च पर्वत; उटैय कानिल्-जहाँ रहते हैं, उस वन में; निन्ऱु-रहनेवाले; करते मुतलितोर्-निरुद-खर आदि राक्षसों ने; वन् तुणै इला-कठोर बल से रहित; इरुवर् मातिडरै-वो मनुष्यों को; वाळाल्-अपनी तलवार से; कौन्ऱिलर्कळा-नहीं मारा था क्या; अन्ऱान्-यह पूछा । ६१५

इस तरह (अपनी निन्दा का वचन) कहता हुआ रावण हँस उठा । आग-सी दृष्टि करते हुए रावण ने शूर्पणखा से पूछा कि उस कानन में, जिसमें उन्नत पर्वत हैं, खर आदि राक्षस थे न ? क्या उन्होंने इन निर्बल और असहाय मानवों का अपनी तलवार से वध नहीं किया ? । ६१५

अऱुव	नुरैत्त	लोडु	मळुदिलि	यरुविक्	कण्णाल्
अऱुयि	वयिऱुळ्	पारि	निडेविळुन्	देङ्गु	हिन्ऱाल्
शुऱुमुन्	दौलन्द	वैय	नौय्देनच्	चुमन्द	कैयाळ्
उऱुडु	तैरियुम्	वण्ण	मौरुवहै	युरैक्क	तुऱुऱाल् 616

अऱु अवन् उरैत्तलोडुम्-वैसा उसके कहने पर; अळुतु इळि-रोने से बहनेवाले; अरुवि कण्णाल्-सरिता-सम अशु-भरी आँखों के साथ; अऱुयि वयिऱुळ्-पेट पीटती (हुई); पारिन् इटै-भूमि पर; वीळुन्तु-गिरकर; एङ्कुकिन्ऱाल्-रोती

(हुई शूर्पणखा); ऐय-प्रभु; चुर्रमुम्-हमारे बन्धु-बान्धव सभी; नौय्तु तौलैन्तु-अनायास मिट गये; अँत्त-कहकर; चुमन्त कैयाळ्-सिर पर हाथ धरकर; उर्रुत्तु तैरियुम् वण्णम्-वृत्तान्त समझाते हुए; ओरु वकै-एक प्रकार से; उरैक्कल् उर्राळ्-बताने लगी । ६१६

जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब शूर्पणखा ने आँखों से सरिता के समान अश्रु की धार बहायी । पेट को पीटते हुए भूमि पर गिरी । खूब रोती हुई उसने कहा कि सारा परिवार ही अनायास मिट गया । यह कहकर उसने अपने हाथ सिर पर रख लिये । सारा वृत्तान्त समझाते हुए वह एक प्रकार से कहने लगी । ६१६

शौल्लैन्नु वायिर् केट्टार् तौडर्न्दळ् शेनै योडुम्
कल्लैन्नु वौलियिर् चैन्नु करन्मुदर् काळै वीरर्
अँल्लौन्नु कमलच् चैङ्ग निरामनैन् रियेन्द वेन्दल्
विल्लौन्नुर् कडिहै मून्नि लेर्न्निन् विण्णि लैन्नाळ् 617

चौल्-बात; अँत्त तत् वायिल् केट्टार्-मेरे मुख से मुनकर; तौडर्न्नु अँळ्-साथ उठी; चैत्त ओट्टुम्-सेना के साथ; कल् अँन्नु ओलियिल्-'घल्' शब्द के साथ; चैन्नु-जो गये; करन् मुतल् काळै वीरर्-खर आदि ऋषभ-सम वीर; अँल् ओन्नु-किरणस्पृष्ट; कमलम्-कमल-सम; चैम् कण्-लाल आँखों के; इरामन् अँन्नु इयेन्त-श्रीराम के नाम से युक्त; एन्तल्-महिमावान ने; विल् ओन्नुर्-एक धनु से; कटिकै मून्नुर्-तीन घड़ियों में; विण्णिल्-स्वर्ग पर; एर्न्निन्-चढ़ा दिया; अँन्नाळ्-शूर्पणखा ने कहा । ६१७

भाई ! मैंने उनसे यह अपना हाल कहा तो वे अपनी सेना के साथ शोर करते हुए राम से लड़ने गये । किरण-प्रफुल्लित कमल-सम आँखों के राम नाम के वीर के धनु द्वारा तीन ही घड़ियों में स्वर्ग चढ़ गये । —शूर्पणखा ने कहा । ६१७

तारुडै तानैयोडुन् दम्बियर् तमियन् शैय्द
पोरिडै मडिन्दा रैन्नु वुरैशैवि पुहाद मुत्तन्म्
कारिडै युरुमिन् मारि कन्तलीडु पिउक्कु माबोल्
नीरौडु नैरुप्पुक् कान्नु निरैन्डुङ् गण्ग लैल्लाम् 618

तमियन् चैय्त पोर् इटै-एकाकी श्रीराम ने जो किया, उस युद्ध में; तम्पियर्-छोटे भाई; तार् उटै तानै ओट्टुम्-हारयुक्त वीरों की सेना के साथ; मडिन्तार्-मेरे; अँन्नु उरै-यह कथन; चैवि पुक्कात मुत्तन्म्-कान में घुसा इसके पूर्व ही; कार् इटै उरुमिन्-मेघमध्य वज्र के; कन्तल् ओट्टु-अनल के साथ; मारि-वर्षा; पिउक्कुमा पोल्-होती हो जैसे; निरै नैट्टुम् कण्कळ् अँल्लाम्-पंक्ति में रही सभी आँखों ने; नीरौट्टु नैरुप्पु-जल के साथ अग्नि की; कान्नु-उगला । ६१८

एकाकी राम से लड़कर मेरे छोटे भाई, हारों से भूषित वीरों की

बड़ी सेना के साथ मर गये —यह बात ज्योंही रावण के कानों में पड़ी, त्योंही उसकी पंक्ति की आँखों में मेघमध्य वज्र के साथ अनल और जल जैसे भर जाता है वैसे आग और जल भर गया । ६१८

आयिडै	यैळुन्द	शीरुत्तु	तळुन्दिय	तुत्तव	माऱित्
तीयिडै	युहुत्त	नैय्यिर्	चीरुत्तुतिर्	कूऱुम्	जैय्य
नीयिडै	यिळैत्त	कुऱु	मैन्तवर्	निन्तै	यिन्ने
वायिडै	यिदळु	मूक्कुम्	वलिनन्दर्	कौय्य	वैन्ऱान् 619

अ इटै-तव; अळुन्त-उभरे; चीरुत्तु-कोप में; अळुन्तिय-मग्न; तुत्तव-माऱि-दुःख बदलकर; ती इटै-अग्नि में; उकुत्त नैय्यिल्-छोड़े गये घी के समान; चीरुत्तुक्कु-कोप को; ऊऱुम् चैय्य-बल दिलाने पर; अवर्-उन्होंने; निन्तै-तुम्हारे; इन्ते-इस प्रकार; वाय् इटै इतळुम्-मुख पर के अधरों को; मूक्कुम्-और नाक को; वलिनन्दर् कौय्य-बलात् काटा, इसके निमित्त-रूप में; नी-तुमने; इटै इळैत्त कुऱुम्-उनके प्रति किया (जो) अपराध; यातु-वह कौनसा; वैन्ऱान्-पूछा । ६१९

रावण को एक साथ क्रोध आया और दुख भी । उसने कुछ देर बाद दुख छोड़ा । आग में घी छोड़ने पर भड़क उठनेवाली आग के समान क्रोध उभर आया । उसने पूछा कि इस तरह वे तुम्हारे अधर और नाक को बलात् काट दें, इसके लिए तुमने उनके प्रति क्या अपराध किया ? । ६१९

ॐ अँवयि	तुऱु	कुऱुम्	यावर्क्कु	मैळुद	वौण्णात्
तन्मैय	तिराम	तोडुन्	दामरै	तविरप्	पोन्दाळ्
मिन्वयिन्	मरुडुगुल्	कौण्डाळ्	वैय्वयिन्	मैन्ऱोळ्	कौण्डाळ्
पोन्वयिन्	मेनि	कौण्डाळ्	पौरुटिनाऱ्	पुहुन्द	वैन्ऱाळ् 620

अँव वयिन् उऱु कुऱुम्-मुझसे हुआ अपराध; यावर्क्कुम् अँळुत औण्णात्-किसी से भी चित्र बनाना (जिसका) असम्भव है; तन्मैयन्-ऐसे रूप वाले; इरामतोडुम्-राम के साथ; तामरै तविर-(अपना वासस्थान) कमल छोड़कर; पोन्दाळ्-जो आयी है; मिन् वयिन् मरुडुगुल् कौण्डाळ्-बिजली से अपनी कमर पानेवाली; वैय्वयिन् मैन् तोळ् कौण्डाळ्-वाँस से जिसने अपने कन्धे पाये हैं; पोन् वयिन् मेनि कौण्डाळ्-स्वर्ण से जिसने अपनी शोभा पाई है; पौरुटिताल्-ऐसी एक स्त्री के कारण; पुकुन्तु-हो गया; वैन्ऱाळ्-कहा । ६२०

शूर्पणखा ने उत्तर दिया— इस अपराध के हो जाने का एक निमित्त भी है । जिसका चित्र खींचना असम्भव है, उस रूप से युक्त राम के साथ एक स्त्री आयी है ! वह ऐसी लगती है कि मानो कमल पर अपना वास छोड़कर इधर आयी है । उसने बिजली से कमर पायी है, वाँस से कन्धे, और स्वर्ण से रूप-रंग । उसी स्त्री के कारण यह हुआ । ६२०

आरव लैन्ड लोडु मरक्कियु मैय वाळि
 तेरव ललहुल् कीङ्गै शैम्बीन्जैय् कुलिहच् चैप्पु
 पारवळ् पादन् दीण्डप् पाक्कियम् बडैत्त दम्मा
 पेरवळ् शीद यैन्डु वडिवैलाम् वेशलुड्डाळ् 621

अवळ् आर्-वह कौन; अँन्तल् ओटुम्-पूछने पर; अरक्कियुम्-राक्षसी भी;
 ऐया-महिमावान; वाळि-जिओ; अवळ् अत्कुल् तेर्-उसका कटि-प्रदेश रथ ही है;
 कीङ्कै-स्तन; चैम् पोन् चैय्-लाल स्वर्ण की बनी; कुलिक चैप्पु-इंगुरौटियाँ हैं;
 पार्-भूमि ने; अवळ् पातम् तीण्ड-उसके चरण-स्पर्श का; पाक्कियम् पटैत्ततु-
 बड़ा भाग्य पाया है; अम्मा-मैया; अवळ् पेर चीतै-उसका नाम सीता है; अँन्ड-
 कहकर; वटिवु अँलाम्-सारा रूप; पेचल् उड्डाळ्-वर्णन करने लगी। ६२१

रावण ने पूछा कि वह कौन स्त्री है? तुरन्त शूर्पणखा ने कहा।
 महिमावान! जिओ! क्या कहूँ? उसका कटिप्रदेश रथ है! स्तन स्वर्ण-
 निर्मित इंगुरौटियाँ हैं। भूमि ने बड़ा पुण्य किया है, तभी वह उसके चरणों
 को स्पर्श कर सकी है। मैया! उसका नाम सीता है। वह उत्साह के
 साथ उनके रूप का वर्णन करने लगी। ६२१

कामरम् वळुत्त पाडर् कळळैन्क कत्तिन्द शैञ्जोर्
 तेमलर् शैरिन्द कून्दर् रेवर्क्कु मणङ्गा मँन्तत्
 तामरै यिरुन्द नङ्गै शेडियान् दरमु मल्लळ्
 यामुरै वळङ्ग लैन्ब देळैमैप् पाल दन्डै 622

पळुत्त कामरम् पाटल्-पूर्णसिद्ध 'कामर' राग के; कळ् अँत कत्तिन्त-मधु के
 समान मधुर; चैम् चोल्-सुन्दर बोली वाली; ते मलर्-शहद-भरे पुष्पों से; चैरिन्त
 कून्तल्-घने केश-भूषित; तेवर्क्कु अण्डकाम्-देववाला-सी उसकी; तामरै इरुन्त
 नङ्कै-कमलनिवासिनी लक्ष्मी; चेटि आम् तरमुम् अल्लळ्-चेरी भी बनने योग्य नहीं;
 याम् उरै वळङ्कल्-हम (प्रशंसा का) वचन कहें; अँत्पतु-यह; एळैमै पालतु-
 अज्ञता होगा। ६२२

(कामर एक राग है।) पूर्ण-सिद्ध कामर राग के समान मधुरबयनी
 है वह। केश पर शहदसहित फूल शोभित हैं। देवांगना-सी उस (सुन्दरी)
 की, कमला श्रीदेवी दासी बनने भी योग्य नहीं है। उसका वर्णन करने का
 प्रयास करना बुद्धिहीनता ही होगा। ६२२

मञ्जोक्कु मळह वोदि मळैयोक्कुम् वडिन्द कून्दल्
 पञ्जोक्कु मडिहळ् शैय्य पवळत्तिन् विरल्ह लैय
 अञ्जोक्कु लमुदि तळळिक् कौण्डवळ् वदन मैदीर्
 कञ्जत्तिर् कौण्ड देनुड् गडलित्तुम् बैरिय कण्गळ् 623

ऐय-महिमायुक्त; अम् चोङ्कळ्-सुन्दर बोली को; अमुत्तिल् अळळि कौण्डवळ्-
 अमृत से उठा ली है; उसका; अळक ओत्ति-भाल पर का छल्लेदार केश; मञ्जु

ओंकुम्-मेघ की समानता करता है; वटिन्त कून्तल्-लटकता केश; मळ्ळ ओंकुम्-जल-भरे घन की तुलना करता है; अटिकळ्-उसके चरण; पञ्च ओंकुम्-रई की भांति हैं; विरल्कळ् चेंय्य पवळ्त्तित्तु-लाल प्रवाल की (-सी) हैं; वततम्-आनन; मै तीर्-निष्कलंक; कञ्चत्तित् कौण्टेतुम्-कमल से प्राप्त है तो भी; कण्कळ्-उसकी आँखें; कटलित्तुम् पेरिय-समुद्र से भी विशाल हैं । ६२३

महिमायुक्त भाई ! उसने अपनी बोली अमृत से उठा ली है । सामने का केश मेघ-सा और लटकनेवाली वेणी वर्षक घन-सी है । उसके चरण रई के समान (कोमल) है । पैर की उँगलियाँ लाल प्रवाल की वनी-सी हैं । आनन रूपी निष्कलंक कमल पर जो आँखें हैं, वे कमल से ली गयी हैं; तो भी समुद्र से भी बड़ी हैं । ६२३

ईशनार्	कण्णिन्	वैन्दा	नैन्नुमि	दिळ्ळुदच्च	चील्तिल्
वाशना	डोदि	याळैक्	कण्डत्तन्	वव्व	लाड्डान्
पेशलान्	दहैमैत्	तल्लाप्	पेरुम्विणि	पिणिप्प	नीण्ड
आशैया	लळिन्दु	वैन्दा	ननङ्गतव्	वुव्व	मम्मा 624

अनङ्कन्-अनंग; ईचतार् कण्णिन् वैन्तान्-ईश्वर (शिव) की (भाल की) आँख से जला; अन्तुम् इतु-कही जानेवाली यह बात; इळ्ळुतं चील्-अल्पज्ञ कथन है; इ वाचम् नाड् ओतियाळ्-इस सुवासित केश वाली को; कण्डत्तन्-देखकर; वव्वल् आड्डान्-प्रसने की शक्ति से हीन होने के कारण; पेचल् आम् तक्तु अल्ला-अवर्ण्य; पेरुम् पिणि पिणिप्प-बड़े (काम-) रोग से पीड़ित होकर; नीण्ड आचैयाल्-लम्बी बढ़ी उस इच्छा से; अ उव्वम्-वह रूप; अळिन्दु-गला; तैयन्तान्-वह मिटा; अम्मा-मैया री । ६२४

मन्मथ परमेश्वर से भाल-नेत्र की आग से जल गया —यह कथन असत्य है । असल में हुआ दूसरा है । उसने इस सुवासित केशिनी को देखा । उसके मन में अपार राग पैदा हुआ । वह उसे ले जा नहीं सका । अकथ्य काम-रोग ने उसे सताया । धीरे-धीरे छीजकर उसका रूप मिट गया । माँ, उतनी सुन्दर है वह ! । ६२४

तैव्वुल	हत्तुड्	गाण्डि	शिरत्तिनिर्	पणत्ति	नोर्हळ्
अव्वुल	हत्तुड्	गाण्डि	यलैहड	लुलहिर्	काण्डि
वैव्वुलै	युड्ड	वेलै	वाळिनै	वैन्ड	कण्णाळ्
अव्वुल	हत्ता	ळङ्गम्	यावर्कु	मैळ्ळुदी	णादाळ् 625

वैम् उलै उड्ड-गरम भट्ठी में ताप कर बनाये गये; वेलै वाळिनै-भाले और असि को; वैन्ड-जो जीत चुकी है; कण्णाळ्-ऐसी आँखों से शोभित है; तैव्वुल कत्तुम्-देवों के लोकों में भी; काण्डि-खोजो; चिरत्तितिल् पणत्तितोर्कळ्-सिर पर (जिनके) फन हैं, उन; अ उलकत्तुम्-(नागों के) उस (नाग-)लोक में भी; काण्डि-खोजो; अलै कटल् उलकिल् काण्डि-तरंग-भरे समुद्र से वलयित भूतल में

खोजो; अङ्कम् यावर्क्कुम् अँलुत औणाताळ्-ऐसे अंगों से युक्त है, जिनका कोई चित्रण नहीं कर सकता; अँव्वुलकत्ताळ्-किस लोक की है । ६२५

उसकी आँखों ने उस भाले और असि को अपनी कान्ति और तीक्ष्णता में हराया है, जो भट्ठी की आग में तपाकर बनाया गया था । तुम चाहे सुरलोक में ढूँढो; चाहे फणी नागों के लोक में । तरंगायमान समुद्र से वलयित भूलोक में ही क्यों न ढूँढो । उसके समान स्त्री नहीं मिलेगी । उसके अंगों का चित्रण ही किसी के लिए असम्भव है ! फिर वह किस लोक की होगी ? नहीं जानते । ६२५

ॐ तोळैये	शौल्लु	हेतो	शुडर्मुहत्	तुलवु	हिन्ऱ
वाळैये	शौल्लु	हेतो	वल्लव	वळुत्तु	हेतो
मीळवुन्	दिहैप्प	दल्लाऱ्	इनित्तति	विळम्ब	लाऱ्ऱेन्
नाळैये	काण्डि	यन्ऱे	नानुत्तक्	कुरैप्प	देन्तो 626

तोळैये चौल्लुकेतो-भुजाएँ ही कहूँ; चुटर् मुकत्तु-प्रकाशमय मुख में; उलवुकिन्ऱ-चलित रहनेवाली; वाळैये चौल्लुकेतो-तलवारें (आँखें) ही बखानूँ; वल् अवै-गोटियाँ (स्तन) उनको; वळुत्तुकेतो-बताऊँ; मीळवुम् तिकैप्पतु अल्लाल्-फिर-फिर चक्कर खाने के सिवाय; तति तति-अलग-अलग; विळम्बल् आऱ्ऱेन्-कह नहीं सकूँगी; नाळैये काण्डि अन्ऱे-कल तुम ही देख लो न; नान् उत्तक्कु उरैप्पतु अन्तो-मैं तुमको बताऊँ क्या । ६२६

हा ! क्या मैं उसकी भुजाओं को कहूँ ? या उज्ज्वल मुख में जो चंचल आँखें हैं, उन तलवारों का वर्णन करूँ ? गोटी के समान उन स्तनों को कहूँ ? (वल् + अवै का यह अर्थ होगा; अल + अवै शब्द लिये जायँ तो 'अन्य अंगों को कहूँ ?' होगा ।) किस अंग का वर्णन कर सकूँगी । कोई भी अंग लूँ तो फिर-फिर चक्रित होकर सक जाना पड़ेगा । अलग-अलग किसी का उचित वर्णन नहीं कर पाऊँगी । तुम तो कल ही उसे देख लोगे न ? फिर मैं क्या कहूँ तुमसे ? । ६२६

ॐ विल्लौक्कु	नुदलैन्	ऱालुम्	वेलौक्कुम्	विळियैन्	ऱालुम्
पल्लौक्कु	मुत्तैन्	ऱालुम्	ववळत्तै	यिदळैन्	ऱालुम्
शौल्लौक्कुम्	बौरुळीव्	वादाऱ्	चौल्लला	मुवमै	युण्डो
नैल्लौक्कुम्	बुल्लैन्	ऱालुम्	नेरुरैन्	ताह	वऱ्ऱो 627

नुतल् विल् औक्कुम्-उसका भाल धनु की समता करेगा; अँन्ऱालुम्-कहें तो भी; विळि-आँखें; वेल् औक्कुम्-भाले की समता करेगी; अँन्ऱालुम्-कहें तो भी; पल् मुत्तु औक्कुम् अँन्ऱालुम्-बाँत मोती के समान हैं, कहने पर भी; पवळत्तै इतळ् अँन्ऱालुम्-प्रवाल की अधर कहें तो भी; चौल् औक्कुम्-कहने भर के लिए ही समानता होगी; पौरुळ् औव्वातु आल्-पदार्थ देखने पर समानता नहीं पाई जायगी; आल्-इसलिए; चौल्लल् आम् उवमै उण्टो-कहने के लिए कोई उपमा है क्या;

नैल् ओक्कुम् पुल्-धान धास-सा है; अँनूशालुम्-कहें तो भी; नेर् उरैत्तु आक वरुओ-सही बात कही गई क्या । ६२७

भाल धनु के समान है; आँखें भालों के समान, मोती दाँत के समान । ऐसा कहा जा सकता है । प्रवाल को उसका अधर कह सकते हैं । तो भी वह क्या सही रूप में उपमा कहना बन सकेगा ? केवल शाब्दिक उपमा होगी । तत्त्वतः उपमा ठीक नहीं उतरेगी । उसके अंगों से उपमेय वस्तुएँ हैं कहाँ ? कहने को तो कह सकते हैं कि धान धास है ! पर क्या वह सही अर्थ में सार्थक हो सकता है ? । ६२७

इन्दिरत्	शशियैप्	पैरुडा	निरुमूनरु	वदत्तत्	तोनुडन्
तन्दैयु	मुमैयैप्	पैरुडान्	डामरैच्	चैङ्गण	मालुम्
शैन्दिर	महळैप्	पैरुडान्	शोदैयै	नीयुम्	पैरुडाय्
अन्दरम्	वारुक्कि	नन्मै	यवरुक्किल्लै	युत्तक्के	यैया 628

ऐया-महिमावान; इन्दिरत् चचियै पैरुडान्-इन्द्र ने शची को पाया; इरु मूनरु वदत्तत्तोन् तन्- (दो के तीन = छः) षण्मुख के; तन्दैयुम्-पिता (शिवजी) को; उमैयै पैरुडान्-उमादेवी प्राप्त हुई; तामरै चैम् कणातुम्-कमलाक्ष ने भी; चैम् तिरु मळै-गोरी श्रीदेवी को; पैरुडान्-प्राप्त किया; नीयुम्-तुमने भी; चीतैयै पैरुडाय्-सीता को प्राप्त किया; अन्तरम् पारुक्किन्-अन्तर देखा जाय तो; अवरुक्कु नन्मै इल्लै-सौभाग्य उनका नहीं है; उत्तक्के-तुम्हारा ही । ६२८

(सूर्पणखा रावण के मन में सीता-प्रेम जाग्रत् करती है ।) इन्द्र को शचीदेवी प्राप्त हुई । षण्मुख के पिता ने उमा को प्राप्त किया । कमलाक्ष विष्णु को कमला मिली । तुम्हें सीता मिल गयी । पर अन्तर देखने पर उन सबका भाग्य उतना खरा नहीं । तुम्हारा ही सर्वश्रेष्ठ होगा । तुम्हारा भाग्य ही इलाघनीय है । ६२८

ॐ पाहत्ति	लौरवन्	वैत्तान्	पङ्गयत्	तिरुन्द	पौन्ने
आहत्ति	लौरवन्	वैत्ता	नन्दण	नाविन्	वैत्तान्
मेहत्तिन्	मिन्ने	मुन्ने	वैन्नुण्	णिडैयि	ताळै
माहत्तोळ्	वीर	पैरुडा	लैङ्गनम्	वैत्तु	वाळ्ळि 629

पाहत्तिन् लौरवन् वैत्तान्-एक ने अपने बायें भाग में रख लिया (शिव की पार्वती अधागिनी वनी); पङ्कयत्तु इरुन्त पौन्ने-कमला श्री को; लौरवन्- (त्रिदेवों में) एक (विष्णु) ने; आहत्तिन् वैत्तान्-वक्ष में रख लिया; अन्तणन्-ब्राह्मण (ब्रह्मा) ने; नाविन् वैत्तान्-जोम में रख लिया; माहत्तोळ् वीर-आकाश तक उन्नत कन्धे वाले वीर; मेहत्तिन् मिन्ने-मेघ की विजली को; मुन्ने वैन्नु-जिसने पहले ही हरा दिया; नुण् इटैयित्ताळै-उस क्षीण कटि-सूचित सीता को; पैरुडान्-पाओगे तो; लैङ्गनम्-कहाँ; वैत्तु वाळ्ळि-रखकर जीवन चलाओगे । ६२९

हाँ ! आकाश तक उन्नत कन्धों वाले वीर भाई ! त्रिदेवों में एक, शिव

ने उमा को अपने शरीर के वाम भाग में स्थान दिया । दूसरे (विष्णु) ने कमला श्रीदेवी को अपने वक्ष में रख लिया । तीसरे, ब्राह्मणोत्तम (ब्रह्मा) ने सरस्वती को अपनी जीभ में स्थान दे दिया । सीता बड़ी सुन्दरी है । उसकी कमर ने मेघ की बिजली को हरा दिया है । उस सीता को प्राप्त करके तुम कहाँ स्थान देकर उसके साथ जीवन बिताओगे ? । ६२९

❖ पिळ्ळैपोर् पेशुवाळैप् पेरुपिन् पिळ्ळैक्क लाड्राय्
कौळ्ळैमा निदियमैल्ला मवळुक्के कौडुत्ति यैय
वळ्ळले युत्तक्कु नल्लेन् मरुन्निन् मत्तैयिन् वाळुम्
किळ्ळैवोन् मौळियार्क् केल्लाड् गेडुशुळ् हित्तुऱे नन्ऱे 630

ऐया-महिमावान्; वळ्ळले-दानी; पिळ्ळैक्कल् आड्राय्-अचूक परिश्रमी;
पिळ्ळै पोल् पेच्चिताळै-सारिका की-सी बोली वाली को; पेरुपिन्-पाने के बाद;
कौळ्ळै पोकिन्ऱ चैल्वम्-लूटी जानेवाली अपनी सम्पत्ति को; अवळुक्के कौडुत्ति-
उसी को दे दो; उत्तक्कु नल्लेन्-तुम्हारी हित्तु हैं; उन् मत्तैयिल् वाळुम्-तुम्हारे
महल में रहनेवाली; किळ्ळै पोल्-शुक-सम; मौळियार्क्कु अल्लाम्-बोलनेवाली
सभी (स्त्रियों) को; केट्टू चूळ्किन्ऱेन् अन्ऱे-अहित करती हैं न । ६३०

महिमावान् ! यह सर्वविदित है कि तुम्हारे प्रयत्न कभी असफल नहीं होते । सीता तुम्हारी हो जायगी । सारिका-वाणी को लाने के बाद तुम अपनी सारी सौभाग्यश्री को, जिसे अब तुम्हारी अन्य प्रियाएँ लूट रही हैं, उसे दे दो । देखो मैं तुम्हारा हित कर रही हूँ । पर तुम्हारे महल में तुम्हारी कृपा का पात्र बनी जो स्त्रियाँ रहती हैं, उनको कष्ट दिला रही हूँ न ? । ६३०

❖ तेरुतन्द वल्हुर् चीदै तेवर्द मुलहि लिम्बर्
वार्तन्द मुलैयि नार्दम् वयिरुतन् दाळु मल्लळ्
तार्तन्द कमलत् ताळत् तरुक्किन्ऱ कडैयच् चङ्ग
नीरुतन्द ददनै वैल्वान् निलन्दन्दु निमिरन्द दन्ऱे 431

तेरु तन्त अल्कुल्-रथ-समान जघन वाली; चीतै-सीता; तेवर् तम् उलकिल्-
देवों के लोक में; इम्पर्-इहलोक में; वार् तन्त कौडुक्कियार् तम्-अंगिया-वद्ध
उरोजो से शोभित स्त्रियों की; वयिरु तन्ताळुम् अल्लळ्-कोख से आई हुई नहीं है;
चङ्क नीर्-शंखकीटों से युक्त क्षीरसागर को; तरुक्किन्ऱ कडैय-गर्वालि (देवासुरों)
के मथने पर; तार् तन्त कमलत्ताळै-कमलपुष्पमाला-धारिणी को; तन्ततु-(उसने)
पैदा किया; अततै वैल्वान्-उसको हराने के लिए; निलम् तन्तु-भूमि इसे पैदा
करके; निमिरन्ततु-उत्कृष्ट हुई । ६३१

रथ के समान नितम्बयुक्त सीता स्वर्ग या भूलोक की किसी अंगिया-
वद्ध उरोजों के साथ शोभनेवाली स्त्री के पेट से पैदा हुई नहीं है । शंखों
से भरे क्षीरसागर ने, बलवान् देवासुरों से मथने पर कमलमालाधारिणी

श्रीलक्ष्मीदेवी को उत्पन्न किया। उस क्षीरसागर को नीचा दिखाने के लिए भूमि इसको उत्पन्न करके तर्जोह (श्रेष्ठता) पा गयी। ६३१

❀ सीत्तुगोण्ड कीडि यिन्नाड्कु विळ्ळावयर्न् दुलह मेत्तत्
तेत्तुगोण्ड नैरिमेन् कून्दड् चिड्डिडैच् चीदैयैन्नुम्
मान्गोण्डुण्ड डाडु नीयुन् वाळ्वलि युलहड् गाण
यान्गोण्डु डाडुम् वण्ण मिरामत्तैत् तरुदि यैन्बाल् 632

सीत्तु कौण्ट कौटियितार्कु-मत्स्य की ध्वजा वाले (मन्मथ) का; उलकम् विळ्ळा अयर्न्तु एत्त-लोक उत्सव मनाकर उसकी स्तुति करे; उन् वाळ्वलि उलकम् काज-तुम्हारी तलवार की शक्ति भुवन देखे; तेत्तु कौण्ट-मधु-भरा; नैरि-धुंधराला; मेन् कून्तल्-कोमल केश; चिड्डि इट-पतली कमर; चीदै अँत्तुम्-(इनसे युक्त) सीता नाम की; मान्-हरिणी (-सी सीता) की; नी कौण्ट-तुम लाकर; उन्टाट-उसके साथ केलि करो; यान् कौण्ट अटाटुम् वण्णम्-मैं लेकर खेलूं; अँत्ताल् इरामत्तै तरुति-मेरे पास राम की दिला दो। ६३२

तुम मकरकेतन का उत्सव और स्तुति लोक द्वारा कराते हुए और अपनी असि का पराक्रम दिखाते हुए उस सीता को हर ले आओ। उसका केश मधुमिश्रित धुंधुराला और कोमल है। कमर पतली है और वह हरिणी-सी है। उसको लाकर तुम उसके साथ केलि करो और मुझे लेकर खेलने के लिए उस राम को मुझे दिला दो। ६३२

❀ तरुवदु विदिये यैन्नाड् इवम्बैरि दुडैय रेनुम्
वरुवदु वरुना लन्त्रि वन्दुकै कूड वड्डो
औरुवदु मुहमु मारुवु मुरुवमुड् गण्णुन् दोळ्हळ्
इरुवदुम् वडैत्त शैल्व मैय्दुव दिनिन्नी यैन्नाळ् 633

तरुवतु वितिये-(भलाई) देनेवाली विधि ही है; अँन्नाड्-कहा जाय तो; तवम् पैरितु उटैयरेत्तुम्-बड़ा तपस्वी हो तो भी; वरुवतु-होनी; वरुम् नाळ् अन्त्रि-होने का काल छोड़कर; वन्तु कै कूट वड्डो-आ मिल सकनेवाली है क्या; और पतु मुकमुम्-दस मुख; मारुपुम्-वक्ष; कण्णुम् तोळ्कळ् इरुपतुम्-और बीस-बीस आँख और कन्धे; उरुवमुम्-इनसे युक्त शरीर; पडैत्त शैल्वम्-(और तुम्हारा) प्राप्त धन; नी अँय्वतु-तुम सच्चे अर्थ में पाओगे (उसका भोग करोगे); इति-(सीता-प्राप्ति पर) आगे ही; अँन्नाळ्-कहा। ६३३

विधि ही भला देनेवाली है। तो भी बड़े तपस्वी को भी तभी कुछ प्राप्त होता है, जब उचित काल आकर मिलता है। तुम्हारे दस सिर हैं, दस वक्ष और बीस नेत्र और कन्धे। तुम्हारे पास असीम सम्पत्ति है। तो भी उनके भोग का अब तक समय नहीं आया है। सीता की प्राप्ति के बाद ही वह काल आयगा। — यह सब कहकर शूर्पणखा ने रावण के मन में सीता के प्रति काम को पैदा करके उभारा। ६३३

ॐ अन्तव डन्तै युन्वा लुय्पपदेन् रणुह लुइइ
 अन्तैयव विरामन् इम्बि यिडैबुहुन् दिलङ्गु वाळाल्
 मुन्तैमूक् करिन्दु विट्टान् मुडिन्ददेन् वाळ्वु मुन्तिन्
 शीन्तपि तुयिरै नीप्पान् रुणिन्दनै नैन्तच् चीन्ताळ् 634

अन्तवळ् तन्तै-ऐसी सीता को; उन् पाल् उयप्पतु अन्तै-तुम्हारे पास पहुँचाने का विचार करके; अणुकल् उइइ-समीप (जो) गई; अन्तै-मुझे; अ इरामन् तम्पि-उस राम के छोटे भाई ने; इट्टै पुकुन्तु-बीच में घुसकर; इलङ्कु वाळाल्- (अपने पास रहे) कटार से; मुन्तै-(सीता को पकड़ने से) पहले ही; मूक्कु अरिन्तु विट्टान्-मेरी नाक काट दी; अन् वाळ्वुम् मुटिन्ततु-मेरा जीवन भी (व्यर्थ) गया; उन्तिल् चीन्त पिन्-तुमसे कहने के बाद; उयिरै नीप्पान्-प्राण छोड़ने का; तुणिन्तनैन्-निश्चय किया; अन्त चीन्ताळ्-ऐसा कहा । ६३४

आगे कहा कि भाई ! ऐसी सीता को तुम्हारे पास ले आने का निश्चय करके मैं उसके समीप जाने लगी । तभी उस राम के छोटे भाई ने बीच में घुसकर अपने पास रहे खड्ग से मेरी नासिका काट दी । मेरा जीवन उसके साथ गया, समझ लिया । पर तुम्हारे पास आकर यह कहने के बाद प्राण त्याग दूंगी —यही विचार ले इधर आयी हूँ । ६३४

कोबमु मइत्तु मातक् कौदिप्पुमैन् रिन्तैय वैल्लाम्
 पाबनिन् रिडत्ति निल्लाप् पेंड्रिबोइ पइइ विट्ट
 तीबमौन् औन्तै युइइ लैन्तलाज् जैयलिइ पुक्क
 ताबमु नाणु मौन्डा युयिरौडुन् दळ्ळीइय वन्तै 635

कोपमुम्-क्रोध; मइत्तुम्-और वीरता; मात कौतिप्पुम्-अपमानजनित ताप; अन्तै-आदि; रिन्तैय वैल्लाम्-ऐसे सभी भाव; पापम् निन्ट्रिटत्तु-पाप के स्थान पर; निल्ला पेंड्रि पोल्-जो रह नहीं सकता, उस पुण्य-भाग के समान; पइइ विट्ट-रावण का साथ छोड़ गये; तीपम् औन्तै औन्तु उइइ-एक दीये से दूसरा दिया लगा तो; अन्तल् आम् चैयलिल्-जो होगा ऐसी रीति से; तापमुम्-ताप; काम नोयुम्-और कामरोग; उयिरौडु तळ्ळीय-रावण के प्राणों से मिले और बढ़े । ६३५

यह सुनने पर रावण की विचित्र दशा हो गयी । पुरुषोचित क्रोध, वीरोचित साहस, अपमानजनित सन्ताप —सभी भाव ऐसे भाग गये जैसे पाप जहाँ है वहाँ से पुण्य का सुखसौभाग्य भाग जाता है । एक से एक दीप मिल जाने पर जैसा फल होगा, उसके समान उसके प्राणों में राग का ज्वर और कामरोग मिल गये । ६३५

ॐ करत्तैयु मइन्दान् उइन्गै मूक्किनैक् कडिन्दु निन्डार्
 उरत्तैयु मइन्दा नुइइ पळ्ळियैयु मइन्दान् वैइइ
 अरत्तैयुड् गौण्ड काम तम्बितान् मुन्बु पेंड्रि
 वरत्तैयु मइन्दान् केट्ट मङ्गैयै मइन्दि लादान् 636

अरत्तयुम् वैरुडि कौण्ट-हर को हरानेवाले; कामन् अम्पिताल्-काम-वाण से; केट्ट मरुकैये-मुनी हुई (सीता) देवी को; मरुन्तिलातान्-जो नहीं भूला; करनेयुम् मरुन्तात्-(वह) खर को भूला; तट्टकै-अनुजा को; मूक्कित्तै-नाक को; कटिन्नु-काटकर; निन्नार-जो बचे रहते हैं, उनका; उरत्तयुम् मरुन्तान्-बल भूला; उरु पळियैयुम्-प्राप्त अपयश; मरुन्तान्-भूला; मुन्नै वैरु-पहले (ब्रह्मा, शिव आदि से) प्राप्त; वरत्तयुम् मरुन्तान्-वरीं को भूल गया । ६३६

रावण हरविजयी था । पर काम का वाण बली था । उससे आहत वह देवी सीता को, जिसके सम्बन्ध में शूर्पणखा से सुना भर था, भूल नहीं सका । पर खर मरा —यह भूल गया; छोटी वहिन की नाक कटी है —यह भी भूल गया । राम का बल भी स्मरण नहीं रहा । अपने पर लगा अपयश, ब्रह्मा, शिव आदि द्वारा दत्त वर —सभी भूल गया, रावण । ६३६

शिर्इडिच्च चीदै येन्नु नाममुज् जिन्दे तानुम्
उर्रिरण् डौन्नाय् निन्ना लौन्नीळित् तौन्ने युन्न
मरुडौरु मत्तमु मुण्डो मरक्कलाम् वळिमर् इयादो
करुडि ज्ञान मिन्नेर् कामत्तैक् कडक्क लामो 637

चिड्ड इट्टे चीत्तै-क्षीण-कटि सीता; ऐन्नुम् नाममुम्-का नाम और; चिन्तै तानुम्-उसका मन; इरण्डुम्-दोनों; औन्नाय् उरु निन्नाल्-एक साथ मिले रहे तो; औन्नु औळिन्नु-एक को छोड़कर; औन्ने-उन्न- (दूसरे) एक को सोचने के लिए; मरुड औरु मत्तमु उण्डो-(दूसरा) एक मन है क्या; मरक्कल् आम् वळि-भूलने का मार्ग; मरुडम्-और कोई; यातो-कौन सा है; करुड अरि वातम् इन्नेल्-सोखकर प्राप्त ज्ञान नहीं हो तो; कामत्तै कडक्कल् आम्-काम को जीतना हो सकता है क्या । ६३७

रावण का मन और पतली कमर की सीता का नाम दोनों बहुत ही प्रबल रूप से जुड़ गये । फिर एक से रहित दूसरे का अस्तित्व असम्भव हो गया । फिर दूसरा अलग एक मन भी नहीं था; जो उनमें एक को छोड़ दूसरा स्मरण करे । भूलने का कोई दूसरा मार्ग भी नहीं रहा । शास्त्र पढ़कर उसके उपदेशों के कार्यान्वित अभ्यास द्वारा प्राप्त (अमली) ज्ञान जिसमें नहीं है, वह काम पर विजय पा कैसे सकेगा ? । ६३७

मयिलुडैच्च चाय लाळै वज्जिया मुन्न नीण्ड
अयिलुडै यिलङ्गै वेन्द निदयमाज् जिरेयि लिट्टान्
आयिलुडै यरक्क नुळ्ळ मव्वळि मैल्ल मैल्ल
वैयिलुडै नाळि लुर्इ वैण्णैवोल् वैदुम्बिर् इन्ने 638

नीण्ट अयिल् उट्टै-लम्बे प्राचीरों से आवृत्त; इलङ्कै वेन्तन्-लंका के राजा ने; मयिल् उट्टे चायलाळै-मयूरनिभ सीता को; वज्जिया मुन्नम्-प्रवचना से लाने से पहले

ही; इतयम् आम् चिरेयिल्-हृदय रूपी कारा में; इट्टान्-बन्द कर दिया; अयिल् उटै-भालाधारी; अरक्कन् उळ्ळम्-राक्षस का मन; अ वळि-तब; वैयिल् उटै नाळिल्-धूप-तप्त दिन में; उरु-धूप में रखे; वैण्णैय् पोल्-मक्खन के समान; मैल्ल मैल्ल-धीरे-धीरे; वैतुम्पिर्-गरम होकर पिघला । ६३८

प्राचीरों से आवृत लंका के राजा रावण ने मयूराभा सीताजी को बंधना द्वारा हर लाने के पूर्व ही अपने हृदय की कारा में कैद कर रख लिया ! भालाधारी राक्षस का हृदय तब गरम दिन में आतपदग्ध मक्खन के समान धीरे-धीरे पसीजने लगा । ६३८

विदियुदु	वलियि	नालु	मेलुळ	विळैवि	नालुम्
पदियुरु	केडु	वनुदु	कुरुहिय	बयत्ति	नालुम्
कदियुरु	पीरियित्तु	वैय्य	कामनोय्	कल्वि	नोक्का
मदियिलि	मरैयच्	चैय्द	तीमैबोल्	वळरन्द	दन्ऱे 639

वितियतु वलियित्तालुम्-विधि के बल से और; मेलु उळ-आगे की; विळैवित्तालुम्-होनी के निमित्त; पति उरु केडु-और लंका नगर पर जो आना था, वह कष्ट; कुरुकिय पयत्तित्तालुम्-निकट आ गया, उस भावी के फल के कारण; कति उरु पीरियिल्-गतियुक्त यन्त्र के समान; वैय्य काम नोय्-पीड़क कामरोग; कल्वि नोक्का-विद्याविहीन; मति इलि-बुद्धि-रहित किसी का; मरैय चैय्-छिपाकर किया; तीमै पोल्-बुरा काम-सा; वळरन्तु-बड़ा; (अन्ऱ-ए) । ६३९

विधि प्रबल थी । होनी होनेवाली थी । लंका पर विनाश लाने का समय निकट आ गया था । इसलिए गतियुक्त यन्त्र के समान भयंकर कामरोग राक्षस के शरीर भर में, विद्यावंचित बुद्धिहीन आदमी से किये गये अनर्थ के समान, व्याप्त हो गया । ६३९

पीन्मय	मात्त	नङ्गै	मत्तम्बुहप्	पुत्तमै	पूण्ड
तन्मैयो	वरक्कन्	उन्नै	ययर्त्तदोर्	तहैमै	यालो
मन्मदन्	वाळि	तूवि	नलिवदोर्	वलत्त	नात्तान्
वन्मैयै	माऱु	माऱुल्	कामत्ते	वदिन्द	दन्ऱे 640

पीन् मयम् आत्त-स्वर्णमय (आभा से) शोभायमान; नङ्गै-नायिका के; मत्तम् पुक्-मन में प्रवेश के कारण; पुत्तमै पूण्ड तन्मैयो-(रावण) बलहीनता पा गया था, या; तन्नै अयर्त्ततु ओर्-अपने को भूले रहने की; तक्कैयालो-एक स्थिति रही, इस वजह से; अरक्कन् तन्तै-राक्षस को; मन्मतन्-मनोज; वाळि तूवि-पुष्प-शर वरसाकर; नलिवतु-द्रस्त कर देनेवाला; ओर वलत्तन् आत्तान्-एक बली बन गया; वन्मैयै माऱुम् आऱुल्-बल को वृथा करने की शक्ति; कामत्ते-काम में; वत्तिन्तु अन्ऱे-रही न । ६४०

स्वर्णमय देवी के रावण के मन में प्रविष्ट होने से रावण दुर्बल हो

गया ? या वह अपने को भूले रहा ? अब राक्षस को मन्मथ अपने पुष्प-शरों से आहत करने में समर्थ हो गया ! हाँ ! बल को बेकार करने की शक्ति कामेच्छा में निहित रहती है न ? । ६४०

इल्लिन्दन	तिरुक्क	निन्नाण्	डेळुल	हत्तु	ळोरुम्
मौल्लिन्दन	राशि	योश	मुळङ्गिन्	शङ्ग	मैङ्गुम्
पौल्लिन्दनर्	पूविन्	मारि	पोयिनर्	पुत्ततो	रैल्लाम्
अल्लिन्दयर्	शिन्दै	योडु	माडहक्	कोयिल्	पुक्कान् 641

इरुक्क निन्नु-आसन से; इल्लिन्दतन्-उतरा; आण्डु-तब वहाँ; एल्लुलकत्तोरुम्-सातों लोकवासी; आचि मौल्लिन्दतन्-आशीर्वचन बोले; चङ्कम् अङ्कुम्-शंख सर्वज; ओचै मुळङ्गित्त-नाद कर उठे; पुत्ततोर् अल्लाम्-पास रहे सभी; पूविन् मारि-पुष्पवर्षा; पौल्लिन्दतन्-करके; पोयितर्-हटे; अल्लिन्दु अयर्-शिथिल होकर मुरझानेवाले; चिन्तैयोदुम्-मन के साथ; आटक कोयिल्-स्वर्णमय भवन में; पुक्कान्-प्रविष्ट हुआ । ६४१

रावण आसन से उतरा । तब जो सातों लोकों के लोग वहाँ थे, उन्होंने आशीर्वचन कहे । सब स्थानों पर शंख वज उठे । पास जो रहे उन्होंने पुष्पवर्षा की । वे हट गये । रावण खिन्न और श्रांतमन होकर स्वर्णनिर्मित अपने महल में प्रविष्ट हुआ । ६४१

पूविनाल्	वेय्नुडु	शैय्द	पौङ्गुपे	रमळिप्	पौङ्गिप्
वैविमार्	वैळ्ळ	नीङ्गिच्	चेरुन्दतन्	शेरुव	लोडुम्
नाचिना	डोदि	नव्वि	नयत्तमुन्	नलन्तु	नण्णिप्
पावियाक्	कौडुत्त	वैम्मै	पयप्पयप्	परन्द	दन्त्रे 642

वैविमार् वैळ्ळम् नीङ्गि-स्त्रियों की भीड़ त्यागकर; पूविनाल् वेय्नुडु चैय्त्त-पुष्प छाकर निर्मित; पौङ्गिप्-सुन्दरता में; पौङ्कु पेर् अमळि-अधिक उत्कृष्ट शय्या में; चेरुन्दतन्-गया; चेरुत्तलोडुम्-उसमें जाते ही; नावि नाडु ओत्ति-कस्तूरी की गन्ध से युक्त केशिनी की; नव्वि नयत्तमुम्-मृग की-सी आँखों; नलन्तुम्-और अन्य अंग-सौष्ठव ने; नण्णि-आकर; पाविया-भावना करने से; कौडुत्त-जो बिया; वैम्मै-वह ताप; पय पय-धीरे-धीरे; परन्तु-उसके शरीर भर में व्याप्त हो गया । ६४२

पत्नियों की भीड़ का निवारण करके वह एक पुष्पशय्या पर लेटा । उस सुन्दर शय्या के ऊपर का वितान भी फूलों से सज्जित था । उस पर लेटते ही उसके मन ने कस्तूरी की सुगन्ध से भरे केश से युक्त सीतादेवी के मृग के-से नयन और अन्य अंगसौष्ठव की भावना की । उस भावना के कारण बड़ा ताप पैदा हुआ और वह धीरे-धीरे शरीर में व्यापकर पीड़ा देने लगा । ६४२

नूक्क	लाह	लाद	काद	नूरु	नूरु	कोडियायप्
पूक्क	वाश	वाडै	वीञु	शीद	नीर्बो	दिन्दमैन्
शेक्कै	वीक	रिन्दु	तिक्क	यङ्ग	ळैट्टुम्	वैन्ऱतोळ्
आक्कै	तीय	वुळ्ळ	नैय	वावि	वैव	दायित्तान् 643

नूक्कल् आकलात-अनिवार्य; कातल्-कामेच्छा; नूरु नूरु कोटियाय-शत-शत करोड़ गुना; पूक्क-विकसित हुई; वाटै वीञु-उदीची से आनेवाली; चीत नीर्-शीत जल से; पौतिन्त-भरी; मैन् चेक्कै-कोमल शय्या के; वाच वी-सुगन्धयुक्त पुष्प; करिन्दु-झुलस गये और; तिक्कु कयङ्कळ् अँट्टुम्-आठों दिग्गजों को; वैन्ऱ-जिन्होंने हराया था, वे; तोळ् आक्कै-कंधे और शरीर; तीय-जल उठे; आवि वैवतु-प्राण मुरझाये; आयित्तान्-ऐसी स्थिति का हो गया । ६४३

सीता पर उसकी कामेच्छा निवार्य नहीं लगी । वह शत-शत कोटि-कोटि गुना विकसित हुई । तब उसकी शय्या के सुवासित फूल सूखने लग गये, यद्यपि उसमें उदीची हवा द्वारा लायी गयी शीतल सीकरें खूब भरी थीं । और भी उसका शरीर और उसके कंधे भी, जिन्होंने आठों दिग्गजों को हराया था, जलने लगे । प्राण भी जलते-से लगे । ऐसी विकट स्थिति में पड़ गया रावण । ६४३

तादु	कौण्डु	शीद	मुञ्जु	मन्दु	तण्ण	तन्दमैन्
पोदु	कौण्ड	डुत्त	पोदु	पौङ्गु	तीम	रुन्दिनाल्
वेदु	कौण्ड	वैन्त	मेत्ति	वैन्दु	शिन्द	विस्मुदी
ऊदु	वन्ऱु	रुत्ति	पोलु	यिर्त्तु	यिर्त्तु	यङ्गित्तान् 644

तादु कौण्डु-मकरन्द लेकर; चीतमुम् चुमन्तु-शीतलता ढोते हुए; तण् अँन्-शीतल; अन्त-उन; पोतु कौण्डु-पुष्प लेकर; अटुत्त पोतु-(जब वह उदीची हवा) आई तब; पौङ्कु ती मरुन्तिनाल्-भभकती आग रूपी दवा से; वेतु कौण्डु अँन्-सँका गया, ऐसा; मेत्ति वैन्तु-शरीर गरम होकर; चिन्त-छितर जाय, ऐसा; विस्मु ती-बढ़नेवाली आग को; ऊतु-फूंकनेवाली; वन् तुरुत्ति पोल-बलवान भाथी के समान; उयिर्त्तु उयिर्त्तु-लम्बी साँसें छोड़ते-छोड़ते; उयङ्कित्तान्-श्लथ हुआ । ६४४

उदीची हवा-मकरन्द, शीतल जल और कुसुमों को लेकर, स्वयं ठण्डी रहकर आयी । पर उससे भभकनेवाली ज्वाला से सँका गया हो, ऐसा वह गरम साँसें छोड़ने लगा । वे साँसें धौंकनी की हवा के समान उसके शरीर को अंगारे छितरानेवाली आग के समान पीड़ा देने लगीं और वह छटपटाने लगा । ६४४

तावि	यादु	तीयै	नादु	तैयलाळै	मैय्युऱप्
पावि	याद	पोदि	लाद	पावि	माळै
कावि	यात्त	कण्णि	मेत्ति	काण	मूळु
आवि	शाल	नौन्दु	नौन्द	ळङ्गु	वानु
					सायित्तान् 645

तावियातु-स्थिर न करके; ती अँतातु-(परदार-प्रेम) अग्नि है, यह न सोचकर;
तैयलाळ-देवी की; सैय् उर-सचमुच; पावियात-नहीं स्मरण किया हो, ऐसा;
पोतु इलात-जिसका समय नहीं रहा; पावि-वह पापी (रावण); माळ-आम;
पातल्-कुवलय; वेल्-भाला; कावि-नीलोत्पल; आत-ऐसे; कण्णि-नेत्रों की;
मेत्ति काण-(देवी का) रूप देखने के लिए; मूळम्-वढ़नेवाली; आर्चयाल्-लालसा
से; आवि चाल नौन्तु नौन्तु-प्राणों के खूब पीड़ित होते-होते; अळ्ळुक्कुवातुम्
आयितान्-बहुत कष्ट उठाता रहा । ६४५

वह अपने मन को वश में न रख सका; न सीता को आग समझकर
उनकी इच्छा करने से विरत हो सका । उस पापी के पास समय ही नहीं
रहा, जब उसने सीताजी की भावना नहीं की ! उसके मन में आम की
फाँकें, कुवलय, भाला और नीलोत्पल —इनके समान जिनके नेत्र थे, उनका
पूरा रूप देखने की दुर्दम लालसा उठी । वह बढ़ने लगी । उस कारण
उसके प्राण बहुत कष्ट उठाने लगे । वह भी बहुत कष्ट में पड़ा । ६४५

परङ्गि	डन्द	मादि	रञ्जु	मन्द	पाळि	यानैयिन्
करङ्गि	डन्द	कौम्बो	डिन्द	डङ्ग	वैन्ऱ	कावलान्
मरङ्गु	डैन्द	तुम्बि	पोल	तङ्ग	वाणम्	वन्दुवन्
दुरङ्गु	डैन्दु	नौन्दु	नौन्दु	ळैन्दु	ळैन्दो	डुङ्गिनान् 646

परम् किटन्त मातिरम्-भारयुक्त दिशाओं के; चुमन्त-वाहक; पाळि यानैयिन्-
मोटे (दिग्-) गजों की; करम् किटन्त-सूँडों के बाजू में रहे; कौम्बु ओटिन्तु-दाँत
टूटकर; अटङ्क-(उसके) वक्ष में समा गये; वैन्ऱ कावलान्-ऐसा विजयी राजा;
अनङ्कपाणम्-अनंग-वाणों के; वन्तु वन्तु-आ-आकर; मरम् कुटैन्त-काठ को
छेदनेवाले; तुम्पि पोल-कीड़े (भ्रमर?) के समान; उरम् कुटैन्तु-वक्ष को छेदने
से; नौन्तु नौन्तु-वेदना सहते-सहते; उळैन्तु उळैन्तु-बहुत दर्द पाते-पाते;
ओट्टुक्किन्नान्-शिथिल हो गया । ६४६

रावण वली वीर था । वोझीली दिशाओं के वाही दिग्गजों से जब
उसने युद्ध किया था, तब उनके दाँत उसके कठोर वक्ष से टकराकर टूट गये
और उसके वक्ष में ही रह गये । ऐसे राजा के वक्ष में अब मन्मथ के
पुष्पशर घुसकर छेद बनाने लगे । काठ में जैसे कीड़ा छेद बना देता है,
वैसा उन शरों ने उसके वक्ष को भेद डाला । रावण वेदना के मारे थक
गया । ६४६

कौन्ऱै	तुन्ऱु	कोदै	योडोर्	कौम्बु	वन्दे	तैञ्जिडै
निन्ऱ	दुण्डु	कण्ड	दैन्ऱु	ळन्द	ळुङ्गु	नोर्मैयान्
मन्ऱ	उङ्ग	लङ्गन्	मारन्	वाळि	पोल	मल्लिहैत्
तैन्ऱल्	वन्दे	दिर्न्द	पोडु	शोर्	वानु	मायितान् 647

कौन्ऱै तुन्ऱु-अमलतास के फलों के समान; कोतै ओट्टु-केश के साथ; ओर्

कौमु पु वन्तु—एक पुष्पशाखा आकर; अन् नैञ्चु इटै—मेरे मन में; निन्नुत्तु—रह गई; कण्टतु उण्टु—मैंने देखा; अन्नु—यह कहते हुए; उल्लन्तु अल्लुङ्कु नीरमैयान्—दुखी होकर संकट उठानेवाला; मन्नुल् तङ्कु—सुवास-निलय; अलङ्कल् मारन्—मालाधारी मन्मथ के; वाळि पोल—(पुष्प-) शरों के समान; मल्लिके तैन्नुल् वन्तु—मल्लिका के बास के साथ मलयपवन आकर; अँतिरन्त पोतु—जब उस पर लगा, तब; चीरुवात्तुम् आयितान्—कोप करनेवाला भी बना । ६४७

उसे ऐसा भान रहा कि अमलतास के फलों के समान काले केश के साथ एक पुष्पलता के समान सुन्दरी उसके दिल में आकर ठहर गयी । तब वह दुखी होकर क्लान्त रहा । पर जब मलयपवन मल्लिका के फूलों का बास ढोता हुआ मन्मथ के शरों के समान उस पर लगा तो उसने कोप दिखाया । ६४७

अन्त कालै यङ्गु निन्नुँ लुन्द लुङ्गु शिन्दैयान्
इन्न वारु शैय्वै नैन्नुँ रेण्णि लानि रङ्गुवान्
पन्तु कोडि दीव मालै पालै याळप्प लिन्नतशौ
पौन्त तारै डुक्क वङ्गोर् शोलै यूडु पोयितान् 648

अन्त कालै—तब; अल्लुङ्कु चिन्तयान्—क्लान्तमन; अङ्कु निन्नु—(रावण) वहाँ से; अँल्लन्तु—उठकर; इन्न आरु चैय्वैन्—ऐसा करूँ; अन्नु—यह; ओर् अँन्—किसी एक विचार; इलान्—के विना; इरङ्कुवान्—दुखी रहा; पालै याळ्—‘पालै’ नाम की ‘याळ’ (वीणा) के स्वर को; पल्लित्त चोल—परिहसित करनेवाली बोली वाली; पौन् अतार—स्वर्ण-सम सुन्दरियों के; पन्तु—प्रशंसित; कोडि तीप मालै अँटुक्क—बहुसंख्यक दीप-माला लेते आते; अङ्कु—वहाँ; ओर् चोलै अँटु—एक उद्यान में; पोयितान्—गया । ६४८

तब रावण वहाँ से उठा । उसका मन बड़ा क्लेशपूर्ण था । उसे नहीं सूझ रहा था कि क्या किया जाय । उससे वह और भी उद्विग्न हुआ । तब वह पास के एक उद्यान में चला । उसके साथ ‘पालै याळ’ नाम की वीणा के स्वर से भी मधुर बोली वाली सुन्दरियाँ बहुत बड़ी संख्या में दीप की मालाएँ लेते हुए चलीं । ६४८

माणिक्कम् पनशम् वाळै मरहदम् वयिरन् देमा
आणिप्पौन् वेङ्गै कोङ्ग मरविन्द रागम् बूगम्
शेणुर् उ नीलम् जालङ् गुरुविन्दन् दैङ्गु वैळ्ळि
पाणित्तैण् पळिङ्गु नाहम् पाटलम् पवळ मन्तो 649

पतचम्—पनस (कटहल); माणिक्कम्—माणिक्यमय हैं; वाळै—कदली; मरकतम्—मरकतमय; तेमा वयिरम्—मधुर आम हीरे से; वेङ्कै—‘वैंगै’ वृक्ष; आणिप् पौन्—चोखे स्वर्णमय; कोङ्कु—‘कोंगु’ तरु; अरविन्त राकम्—पद्मराग; चेण् उर् उक्कम्—गगनस्पर्शी पूगतरु; नीलम्—इन्द्रनील; चालम्—सालवृक्ष; कुरुविन्तम्—रत्नमय;

तैङ्कु वैळ्ळि-नारियल चांदी के; नाकम्-सुरपुन्नाग; पाणि तैळ् पळिङ्कु-जल
स्वच्छ स्फटिक; पाटलम्-पाटल; पवळम्-प्रवाल । ६४६

उस उद्यान के पेड़ विचित्र थे । पनस माणिक्यमय थे ।
मरकत के, आम के पेड़ हीरे के, 'वैंगै' तरु चोखे स्वर्ण के, 'कोंगु' पद्मराग
गगनस्पर्शी पूगतर् इन्द्रनीलमय, सालवृक्ष एक तरह के रत्न के,
के पेड़ चांदी के और सुरपुन्नाग जल-स्वच्छ स्फटिक के थे । पाटल के
प्रवालमय थे । ६४९

वानुर्	निवन्द	शैङ्गेळ	मणिमरन्	दुवन्त्रि
मीनीडु	मलरुह	डम्मिल्	वेरुमै	तैरिद
तेनुहु	शोलै	नाप्पण्	शैम्बोन्मण्	डवत्तु
पानिर्	वमळि	शैरन्दान्	पैयुळुर्	रुयङ्गि

पैयुळ् उरु-पीड़ित होकर; उयङ्कि नैवान्-दुःख-मग्न हो विगलित
वान् उर् निवन्त-गगन को स्पर्श करते हुए उन्नत; चैम् केळ्-उत्तम रंग वाले
मरम् तुवन्त्रि-रत्नमय तरुओं से भरे रहकर; मलरुक्क-उनके फूल; वान
आकाश के नक्षत्रों के साथ; तम्मिल्-उनसे; वेरुमै तैरितल् तैरु-
कठिन हो ऐसा, रहकर; तेन् उकु-जहाँ शहद चूते थे; चोलै नाप्पण्
मध्य; चैम् पोन् मण्डपत्तुळ्-लाल स्वर्ण-मण्डप में; आण्डु-वहाँ;
क्षीरवर्ण; ओर् अमळि-एक शय्या में; चैरन्तान्-गया । ६५०

कामवेदना से व्यग्र रावण उस उद्यान के बीच में रहे स्पर्श
अन्दर दुग्ध-सम श्वेत एक शय्या पर गया । उस उद्यान में
हुए वड़े और रत्नमय तरु खूब भरे थे । उनके फूलों और
नक्षत्रों में भेद जानना कठिन था । वे फूल शहद चू रहे थे । ६

कनिहळिन्	मलरिन्	वन्द	कळ्ळुण्ड	कळिह
वत्तिदैयर्	मळलै	यिन्शौर्	किळ्ळैयुङ्	कुयिलुम्
इनियन	मिळ्ळु	हिन्ऱ	यावैयु	मिलङ्गै
मुत्तियुमैन्	रविन्द	वाय	मूङ्कैयर्	पोन्ऱ

कन्निकळिन्-फलों से और; मलरिन्-फूलों से; वन्त-निकला
मधु पीकर; कळिक्क अन्न-पियक्कड़ों के समान; वत्तिदैयर्
इन् चोलै-तुतलाते मधुर वचन बोलनेवाले; किळ्ळैयुम्-शुक;
वण्डुम्-भ्रमर; इतियन् मिळ्ळुकिन्ऱ यावैयुम्-मधुर बोलनेवाले
वेन्तन्-लंकाधिपति; मुत्तियुम् अन्ऱु-कोप करेगा, यह सोचकर;
मुख बन्द कर; मूङ्कैयर् पोन्ऱ-गूँगे के समान हो रहे । ६५१

उस उद्यान में शुक, पिक, भ्रमर आदि थे । वे उस
के फलों और फूलों से निकलनेवाले मधु और रस के
समान मत्त हो स्त्रियों की-सी तुतलाती मधुर बोली में

अब वे, इस डर से कि लंकेश रावण गुस्सा करेगा, मुख बन्द करके गूंगे के समान हो रहे । ६५१

परुवत्ताल् वाडै तन्द पशुम्बन्ति यत्तङ्ग बाणम्
उरुविप्पुक् कौळित्त पुण्णिर् कुळित्तलु मुळैन्दु विम्मि
इरुदुत्तान् याद डावैन् रियम्बिना न्तिम्ब लोडुम्
वैरुविप्पोय्च् चिशर नीडङ्गि वेनिल्वन् दिरुत्त दन्त्रे 652

परुवत्ताल्-ऋतु के धर्म के अनुसार; वाडै तन्त-उदीची हवा द्वारा लाई गई; पशुम् पत्ति-शीतल हिम; अतङ्कपाणम् उरुवि-अनंग-बाण छेदकर; पुक्कु ओळित्त-प्रवेश कर (छिपे) जहाँ रहे; पुण्णिल्-उन व्रणों में; कुळित्तलुम्-जब पैठे तभी; उळैन्दु विम्मि-पीड़ा से व्यग्र होकर; इरुत्तान् यातदा-ऋतु कौन है, रे; अन्त्र-ऐसा; इयम्पित्तान्-रावण ने प्रश्न किया; इयम्पलोडुम्-कहते ही; चिचिरम्-शिशिर; वैरुवि पोय् नीडङ्कि-डरकर चला, हटा और; वेतिल् वन्तु इरुत्ततु-वसन्त आ गया । ६५२

ऋतु शिशिर की थी । इसलिए उदीची हवा द्वारा शीतल हिम आकर लग रहा था । वह काम-शर-विद्ध रावण के शरीर के व्रणों में जब पैठा, तब वह छटपटाने लगा । वेदना से हड़बड़ाकर उसने डाँटा कि क्या ऋतु है यह ? यह पूछना था कि शिशिरऋतु डरकर भाग गयी । उसके स्थान पर वसन्तऋतु आ रही । ६५२

वन्त्रणै मरमुन् दीयुम् मलैहळुड् गुळिर वाळुम्
मैन्त्रन्ति यैरिन्द दैन्त्राल् वेनिलै विळम्ब लामो
अन्त्रैन्तुम् विडमुण् डारै यार्त्तला मरुन्दु मुण्डो
इन्त्रमुन् दुन्त्रमुन् दानु मुळत्ततो डियैन्द वन्त्रे 653

वन् पणै मरमुम्-कठोर बड़े तरु भी; दीयुम्-अग्नि; मलैकळुम्-पहाड़; गुळिर-शीतल बने; वाळुम्-प्राणपूर्ण; मैल् पत्ति-कोमल हिम ने; यैरिन्तु-जलाया; अन्त्राल्-तो; वेतिलै विळम्पलामो-धूप का कहना क्या; अन्तु अन्तुम् विटम् उण्टारै-काम नाम का विष जिसने खाया है, उसका; यार्त्तल् आम् मरुन्तुम्-शमन करनेवाली दवा भी; उण्टो-है क्या; इन्त्रमुम् तुन्त्रम् तात्तुम्-सुख और दुःख; उळत्ततो-मन के साथ; डियैन्त अन्त्रे-लगे हुए (अनुभव) हैं न । ६५३

वसन्त के कारण बड़े-बड़े कठोर पेड़ भी मनोरम हो गये । पर्वत भी आँखों को ठण्डक (आराम) पहुँचानेवाले हो गये । पर धूप तो थी । जिसको हिम भी ताप दे रहा था उसको धूप क्या देगी, यह कहने की आवश्यकता है क्या ? काम का विष जिसने पिया है, उसके ताप को शान्त करनेवाली दवा इस लोक में कहाँ प्राप्य है ? सुख व दुःख अपने-अपने मन की अनुभूत दशाएँ हैं न ? फिर बाहर का उपचार क्या कर सकता है ? । ६५३

मादिरत्	तिरुदि	कारुन्	दन्मनत्	तैलुन्द	मैयल्
वेदने	वैप्पम्	जैय्य	वेतिलुम्	वैदुप्पुड्	गाले
यादिदिड्	गिदन्तिन्	मुन्तैच्	चिशिरत्तन्	त्रिदने	नीक्किक्
कूदिराम्	वरुवन्	दन्तैक्	कौणरुदिर्	विरैवि	नेन्त्रान् 654

तन् मत्तत्तु अँलुन्त-अपने मन में उठी; मैयल् वेतने-प्रेम की वेदना ने; मातिरत्तु इति कारुम्-दिगन्त तक; वैप्पम् चैय्य-गरमी दिला दी, तब; वेतिलुम् वैदुप्पुम् काले-धूप ने भी ताप दिया, तो; यातु इङ्कु-कौन (सी ऋतु) यहाँ; मुन्तै चिचिरम् इतत्तिन् नन्ऱु-पहले का शिशिर इससे बेहतर रहा; इतने नीक्कि-इसको दूर करके; कूतिर् आम् परुवम् तन्तै-शरद ऋतु को; विरैविल् कौणरुतिर्-तुरन्त लाओ; अँन्त्रान्-कहा। ६५४

रावण के मन का ताप दिगन्त तक फैलकर तपाने लगा। उस पर वसन्त की धूप भी मिल गयी। वह और भी गरम हो गया। पूछा कि अब कौन सी ऋतु आयी है यह? पहले जो शिशिरकाल था वह इससे बेहतर था, ऐसा लगता है। उसने आज्ञा दी— हटाओ इसे। शरदऋतु को लाओ शीघ्र। ६५४

कूदिर्वन्	दडेन्द	काले	कौदित्तन्	कुववुत्	तिण्डोळ्
शीदमुज्	जुडुमो	मुन्तैच्	चिशिरमे	काणि	देन्त्रान्
आदिया	यञ्जु	मन्ऱे	यरुळल	दियर्ऱ	लेन्त
यादुमिड्	गिरुडु	माहा	यावैयु	महर्ऱ	मेन्त्रान् 655

कूतिर् वन्तु अँन्त काले-शरद जब आया; कुववु तिण् तोळ्-पुण्ट और सुबूढ़ कंधे; कौदित्तन्-गरम हो गये; चीतमुम् चुडुमो-शीत भी जलायगा क्या; मुन्तै चिचिरमे इतु-पहले का शिशिर ही यह; काण्-देखो; अँन्त्रान्-बोला; आतियाय्-नाय; अरुळ् अलतु-आज्ञा के सिवाय; इयर्ऱल्-करना; अञ्चुम्-डरते है; अँन्त-कहा, तो; इङ्कु-यहाँ; इरुतु यातुम्-कोई भी ऋतु; आकातु-(मली) नहीं हो सकती; यावैयुम् अकर्ऱम्-सबको हटाओ; अँन्त्रान्-कहा; (अन्ऱ-ए)। ६५५

शरद आया। (पर क्या फल होता?) उसके पुण्ट और सबल कंधे जल उठे। “ऐ! शीत भी जला सकेगा क्या? वही शिशिर यह है! देखो!” जब रावण ने यह कहा तब उसके दासों ने विनय की कि महाराज! हम आपकी आज्ञा के सिवा कुछ अन्य करने से डरेंगे। (आप विश्वास मानें कि यह शरद है।) तब रावण ने आज्ञा दी कि सो बात है तो कोई भी ऋतु कुछ नहीं करेगी। यहाँ कोई ऋतु न हो। हटाओ सबको। ६५५

अँन्तलु	मिरुडु	वैल्ला	मेहलुम्	यावुन्	दन्दम्
पन्तरुम्	वरुवम्	जैय्या	योहिपोल्	पर्ऱु	नीत्त
पिन्तरु	मुलह	मैल्लाम्	पिणिमुदर्	पाशम्	वीशित्
पुन्तरुन्	दवत्तो	रैय्दुन्	दुऱक्कम्बोर्	रोन्ऱिर्	उन्ऱे 656

अँतुनलुम्-कहते ही; इरुतु अँल्लाम्-सभी ऋतुएँ; एकलुम्-चली गई, तब; पावुम्-सभी (पदार्थ); पन् अरुम्-अवर्ण्य; परुवम् चैय्या-मौसम के अनुसार व्यापार छोड़कर; योकि पोल्-यतियों की तरह; पड्क् नोतत-निर्लिप्त रह गये; पिन्तुम्-और फिर; उलकम् अँल्लाम्-सारे लोक; पिणि मुतल् पाचम् वीचि-रोग आदि कर्म-पाश हटाकर; तवत्तोर् अँयुतुम्-तपस्वी द्वारा प्राप्य; तुन् अरुम् तुडक्कम् पोल्-दुर्गम स्वर्ग के समान; तोन्निड्क्-दिखाई दिया । ६५६

उसके ऐसा कहने पर सारी ऋतुएँ चली गयीं । उनके साथ कालोचित व्यापार भी रुक गये । इसलिए उस उद्यान में रहे चल और अचल सभी पदार्थ और जीव योगी के समान अचल और निर्लिप्त रह गये । वे ही क्या सारे लोकों के सारे जीव रोग आदि कर्मबन्धन काटकर स्थिर रहे । इसलिए लोक तपस्वी द्वारा प्राप्य और साधारण रीति से दुर्गम स्वर्ग के समान दिखे । ६५६

कूलत्ता रुलह मँल्लाड् गौदिप्पोडु कुळिर्प्पु नीड्ग
नीलत्ता ररक्कन् मेनि नैय्यिन्नि यैरिन्द दन्ने
कालत्ताल् वरुव दौन्डो कामत्ताड् कनलुम् वँन्दीच्
चीलत्ता लविप्प दन्निच् चैय्यत्ता नाव दुण्डो 657

कूलत्तु आर्-सीमा-वद्ध; उलकम् अँल्लाम्-सारे लोक; कौतिप्पु और कुळिर्प्पु नीड्क-गरमी व ठण्डी से रहित हुए, तब; नीलत्तु आर् अरक्कन् मेनि-नीलवर्ण राक्षस का शरीर; नैय्य इन्नि-घी के बिना ही; अँरिन्ततु-जला; कालत्ताल् वरुवतु औन्डो-ऋतु के कारण आया वह क्या; कामत्ताल्-काम के कारण; कनलुम् वँम् ती-जलनेवाली गरम आग की; चीलत्ताल्-शीलगुण द्वारा; अविप्पतु अन्नि-बुझाना छोड़कर; चैय्य तान् आवतु उण्डो-करने के लिए कोई दूसरा है क्या । ६५७

संसार सीमावद्ध है । उसकी गति-विधि आदि के नियम हैं । अब वे नियम नहीं रहे । अतः न शीत था, न ताप । तब भी नीलवर्ण रावण का शरीर ताप का अनुभव करने लगा । वह बिना घी के ही जलने लगा ! उसका ताप काल के व्यापार के फलस्वरूप आनेवाला नहीं था ! पर उसके मन की काम रूपी जलती आग से होनेवाला ताप था । उसकी शान्ति शीलगुण से ही हो सकती थी । दूसरा कोई परिहार क्या होगा ? । ६५७

नारमुण् डैळुन्द मेहन् दामरै वळैय नात्तच्
चारमुण् डिरुन्द शीदच् चन्दन्तन् दळिर्मेन् उादो
डारमुण् डैरिन्दु शिन्द ययर्हिन्डा तयतिन् उारै
ईरमुण् डैन्व रोडि यिन्दुवैक् कौणरु मेन्डान् 658

नारम् उण्डु अँळुन्त-जल पीकर जो उठे; मेकम्-वे मेघ; तामरै वळैयम्-कमलनालों के वलय; नात्त चारम् उण्डु इरुन्त-कस्तूरी और गन्ध-द्रव्य-मिला; चीत चन्ततम्-शीतल चन्दन; तळिर्-पल्लव; मँल तातोडु-कोमल पराग के साथ;

आरम्-मोती; उण्डु-उसके शरीर पर रखे गये; अरिन्तु-(पर) जलन से; चिन्त
अयर्किन्त्रान्-मन में तप्त हो यकता है; अयल् निन्त्रारै-पार्श्व में स्थित लोगों को;
ईरम् उण्डु अन्पर-शीतलता है, कहते; ओटि-भागो; इन्तुवै-इन्दु को; कोणरुम्
अन्त्रान्-लाओ, कहा । ६५८

रावण के शरीर पर शीत देनेवाले पदार्थ रखे गये । जल-भरे मेघ;
कमलनालों के बने वलय; कस्तूरी-मिला शीतल चन्दन; पल्लव; कोमल
मकरन्द; मोती आदि उसका ताप हर नहीं रहे थे चल्कि ताप को बढ़ाने
लगे । तब उसने अपने पार्श्वस्थों से कहा कि लोग कहते हैं कि चन्द्र में
शीत (देने की शक्ति) है । जाकर इन्दु को पकड़ लाओ । ६५८

वैञ्जिनत्	तरक्क	नाण्ड	वियनहर्	मीदु	मेव
नैञ्जयिर्त्	तौडुङ्गु	हिन्ऱ	निर्ऱमदि	योन्नै	नेडि
अञ्जलै	वरुदि	निन्नै	यळैत्तन	तरश	तैत्तन्च्
चञ्जलन्	दुऱन्ऱु	तानच्	चन्दिऱ	नुदिक्क	लुऱ्ऱान् 659

वैम् चित्तत्तु-भयंकर क्रोधी; अरक्कन् आण्ट-राक्षस से पालित; वियन् नक्क
मीदु-बड़े उस नगर के ऊपर; मेव-जाने से; नैञ्च् अयिर्त्तु-मन में डरकर;
ओतुङ्कुकिन्ऱ-परे चलता जो रहा, उस; निर्ऱ मत्तियोन्नै-पूर्णचन्द्र को; नेडि-ढूँढ़कर;
अञ्चलै-मत डरो; निन्नै-तुमको; अरवन्-राजा ने; यळैत्तन-बुलाया है;
अन्त-कहने पर; अ चन्तिरन्-वह चन्द्र भी; चञ्चलम् तुऱन्तु-घबड़ाहट छोड़कर;
उत्तिकल् उऱ्ऱान्-उदित हुआ । ६५९

चन्द्र तो भयंकर क्रोधी राक्षसराज से पालित बड़े नगर—लंका—के
ऊपर जाने से विलकुल डरता था । इसलिए वह उसे वचाकर कहीं धूमता
रहा । राक्षसों ने उसे ढूँढ़कर पकड़ा । उससे कहा—मत डरो । राजा
ने तुम्हें बुलाया है । वह चन्द्र भी कुछ अधैर्य छोड़कर धीरता का अवलंबन
करके उदित हुआ । ६५९

अयिरुऱ्क्	कलन्ऱ	तीम्बा	लाळिनिन्	आळि	यिन्दु
शैयिरुऱ्ऱ	करश	नाण्डोर्	तेयवुवन्	दुऱ्ऱ	पोळ्ळिन्
वयिरमुऱ्	रुडैन्ऱ	माऱ्ऱान्	वलियऱच्	चैन्ऱ	वन्ऱन्
उयिर्त्तैऱ	वुवन्ऱु	वन्दा	नौत्तन	नुदयञ्	जैय्दान् 660

चैयिर् उऱ्ऱ्क् अरवन्-अपने शत्रु राजा के; ओर् तेयवु उऱ्ऱ पोळ्ळिल्-निर्बल
रहते समय; आण्टु-तब; वयिरम् उऱ्ऱ-वैर साधकर; उटैन्त माऱ्ऱान्-बलहीन
शत्रु के; वलि अऱ-बल को छवस्त करने; चैन्ऱ-चढ़ जाकर; अवन् तन् उयिर्
तैऱ-उसके प्राणों का अन्त करने की; उवन्तु वन्तान्-चाह लेकर आया हो; नौत्तन-
उसकी तरह; अयिर् उऱ कलन्त-शर्करा (या सूक्ष्म सिकता) से युक्त; तीम् पाल्
आळि निन्ऱ-मधुर क्षीरसागर से; आळि इन्तु-गोल चाँद; उतयम् चैय्दान्-उदित
हुआ । ६६०

कोई राजा है । उसका शत्रु निर्बल हो गया है । उस समय यह राजा अपना वैर साधने के इरादे से विकट स्थिति में रहनेवाले उस शत्रु पर आक्रमण करके उसके प्राण हरने के लिए आता हो ऐसा, शर्करा-भरे क्षीर-सागर-मध्य से गोल पूर्णचन्द्र उगकर आया । ६६०

परावरुड् गदिरह् लेंङ्गुम् परप्पिमोप् पडरन्दु वानिल्
तरादलत् तैवरुम् बेणत् तण्मदि युदित्त तोड्डम्
अरावणैत् तुयिलु मण्णल् कालमोर्न् दड्ड नोक्कि
इरावण नुयिरमे लुयत्त तिहिरियु मँत्त लान् 661

पराव अरुम्-जिसकी पूरी प्रशंसा करना कठिन है; तण् मति-वह शीतल चन्द्र; कतिरुक्क अँङ्कुम् परप्पि-सर्वत्र किरणें फैलाते हुए; वानिल् मी पटरन्तु-ऊपर आकाश-में चलकर; तरातलत्तु अँवरुम् पेण-धरातल के सबका स्वागत पाकर; उतित्त तोड्डम्-उदित जो हुआ वह दृश्य; अरा अणै तुयिलुम् अण्णल्-शेष-शय्या पर निद्रा करनेवाले प्रभु द्वारा; कालम् ओरन्तु-समय विचारकर; अड्डम् नोक्कि-सन्दर्भ निश्चित कर; इरावणन्-रावण के; उयिरमेल् उयत्त-प्राणों पर चलाया गया; तिकिरियुम् अँत्तल्-(सुदर्शन) चक्र-सम; आत्त-हुआ । ६६१

अवर्णनीय यशस्वी शीतल चन्द्र आकाश में ऊपर उदित हुआ । तब उसकी किरणें सब जगह फैलीं । भूमि के सभी लोग उसका चाव के साथ स्वागत करने लगे । तब वह दृश्य शेषशायी श्रीमन्नारायण के चक्र के समान था, जिसे उन्होंने उचित समय विचारकर और ठीक सन्दर्भ देखकर रावण पर चलाया ही । ६६१

अरुहुड् पालिन् वेलै यमुदँला मळैन्दु वारिप्
परुहित् परन्दु पाय्न्द निलाच्चुडर् पतिमँन् कड्डै
नैरिवुड् पुरुवच् चेंङ्ग णर्क्कड्डु नैरुप्पि नाप्पण्
उरुहिय वैळ्ळि यळ्ळि वीशिता लीत्त दन्त्रे 662

अरुहु उड्ड-पास रहे; पालिन् वेलै-क्षीरसागर के; अमुतु अँलाम्-सारे अमृत को; अळैन्तु वारि परुहित्-(चन्द्र ने) टटोल, उठाकर खा लिया; परन्तु पाय्न्त-(वही अमृत) सर्वत्र फैलकर व्यापा; निला चुडर्-(उस अमृत को) चाँदनी की किरणों की; पति मँल् कड्डै-शीतल कोमल राशि; नैरिवु उड्ड पुरुव-तनी हुई भौंहों के; चैम्-कण् अरक्कड्डु-अरुणाक्ष राक्षस रावण के लिए; नैरुप्पिन् नाप्पण्-अग्नि-मध्य; उरुहिय-पिघली हुई; वैळ्ळि-चाँदी; अळ्ळि वीचिताल्-उठाकर जो फेंकी गई; औत्ततु-उसके समान रही । ६६२

चन्द्र की चाँदनी की शीतल किरणों की राशि क्या थी ! उसने अपने पास के क्षीरसागर से टटोल लेकर जो अमृत खाया था, वह मानो सब जगह फैल रहा था । लेकिन वह तनी हुई भौंहों और लाल आँखों के साथ जो रहा, उस रावण के लिए अग्निमध्य चाँदी को पिघलाकर प्राप्त द्रव के समान था जिसे उस पर उड़ेल दिया हो । ६६२

मिन्नलन् दिहळ्ज जोदि विळुनिला मिदिलै शूळ्न्द
 शैन्तैलङ् गळुनि नाडन् तिरुमहळ् शैव्वि केळा
 नन्तलन् दौलैन्दु शोरु मरक्कनै नाळुन् दोलात्
 तुन्नल नौरवन् बैरु पुहळैन्च् चुट्ट दन्ने 663

मिन् नलम् तिकळुम् चोति-विद्युत के गुण के साथ विद्यमान ज्योति की; विळु
 निला-श्रेष्ठ चाँदनी ने; शूळ्न्द-चारों ओर घेरे रहनेवाले; शैम् नैल्-लाल धान के;
 अम् कळुत्ति-मनोहर खेतों से युक्त; मिदिलै नाडन्-मिथिलेश की; तिरुमहळ् शैव्वि-
 दिव्य मृता सीता का रूपसौंदर्य; केळा-श्रवण कर; नन् नलम् तौलैन्तु चोरम्-
 (उसके फलस्वरूप) अपना बल सब खोकर लटनेवाले; अरक्कनै-राक्षस, रावण को;
 नाळुम् तोला-कभी न हारनेवाले; तुन्नलन् औरवन् पैरु पुक्क अँत-शत्रु से प्राप्त
 यश के समान; चुट्ट-तपाया । ६६३

उस चाँदनी में विद्युत की-सी ज्योति भरी थी । रावण उस विदेह
 देश के राजा की सुपुत्री जानकीदेवी का रूपसौंदर्य सुनकर अपने सभी तरह
 के बल को क्षीण होने देते हुए छटपटा रहा था; जिस देश के चारों ओर
 लाल धान के पौधों से भरे खेत पाये जाते थे । वह चाँदनी उस रावण को
 इस तरह तपाने लगी, जिस तरह अजेय शत्रु का यश किसी वीर को
 तपाता है । ६६३

करुङ्गळ् काल तञ्जुङ् गावलन् करुत्तु नोक्कि
 तरुङ्गदिर्च् चीद याक्कैच् चन्दिरु इरुदि रैन्त
 मुरुङ्गिय क्तलिल् मूरि विटत्तित्तै यौळ्क्कुञ् जोरुत्त
 तरुङ्गदि ररुक्कन् इन्तै यारळैत् तीरुह ळैन्डान् 664

करुम् कळल् कालन्-बड़ी पायलों से भूषित यम भी; अञ्चुम्-जितसे डरता है;
 गावलन्-राक्षसराज; करुत्तु नोक्कि-(भृत्यों को) गुस्से के साथ देखकर; चीतम्
 तरुम् कतिर् याक्कै-शीत देनेवाली किरणों के शरीर के; चन्तिरन् तरुतिर् अँन्त-
 चन्द्र को लाओ, कहा; मुरुङ्गिय क्तलिल्-खूब जलती हुई आग के साथ; मूरि
 विटत्तित्तै-भयंकर विष को; यौळ्क्कुम्-बरसानेवाले; जोरुत्तु-क्रुद्ध; अरुम्
 कतिर् अरुक्कन् तन्तै-संतापी किरणमाली सूर्य को; यार् अळैत्तीरुक्क-तुम लोगों में
 किसने बुलाया; अँन्डान्-पूछा । ६६४

बड़ी पायलधारी यम के भी भयदायी रावण ने अपने भृत्यों को
 देखकर पूछा कि शीतल-किरण-शरीरी चन्द्र को लाओ—यही मैंने कहा था ।
 लेकिन यह सर्वदाहक अग्नि के साथ भयंकर विष को बरसानेवाले और
 विवृद्ध कठोर किरणमाली को लाया गया है । तुम लोगों में किसने उसको
 बुलाया ? । ६६४

अव्वळिच् चिलद रञ्जि यादिया यरुळिल् लारै
 इव्वळित् तरुडु मैन्ब दियम्बला मियल्बिड् इन्डाल्

शैव्वळिक् कदिरो तैन्नन् देरित्तमे लन्नरि वारान्
 अैव्वळित् तैत्तिनुन् दिङ्गळ् विमान्तत्तिन् मेल दैन्ऱार् 665

अ वळि-तव; चिलत्तर-भृत्यों ने; अञ्चि-डरकर; आतियाय्-नायक;
 अरुळ् इल्लार्-आपने जिसको लाने की आज्ञा देने की कृपा नहीं की; इ वळि-(उसको)
 इधर; तरुतुम् अँत्पतु-लायेंगे, ऐसा करना; इयम्पल् अम् इयल्पिरु अन्न-कहने
 योग्य बात नहीं है; चैम् वळि कतिरोन्-अपने मार्ग पर सीधे चलनेवाला सूर्य; अँत्तम्-
 सदा; तेर् मेल अन्नरि-रथ पर आना छोड़कर; वारान्-नहीं आयगा; तिङ्कळ्-
 चन्द्र; अँ वळित्तु अँत्तिनुम्-किसी भी मार्ग पर क्यों न हो; विमान्तत्तिन् मेलतु-
 यान पर ही चलेगा; अँन्ऱार्-(उत्तर में) कहा । ६६५

तव भृत्यों ने भयभीत होकर विनय की । हे नाथ ! आपने जिसको
 लाने की आज्ञा कृपापूर्वक नहीं की, उसको हम लायेंगे, यह बात कथनीय
 नहीं है । सीधे मार्ग पर जानेवाला सूर्य कभी भी रथ पर आना छोड़कर
 किसी दूसरी तरह से नहीं आयगा । और चन्द्र, जहाँ भी जाये, यान पर
 ही जायगा । ६६५

पणन्दा लल्लुहुर् पत्तिमौळियार्क् कन्बु पट्टार् पडुङ्गामक्
 कुणन्दात् मुन्त मडियादात् कौदिया निन्ऱान् मदियाले
 तणन्दा मरैयिन् इत्तिप्पहैज तैन्नुन् दन्मै यौरुदाने
 उणर्न्दा नुणर्वुर् उवन्मेलिट् टुयत्त तुन्वम् सुरैशैय्वान् 666

पणम् ताळ् अल्लकुल्-सर्पफन को उपमा में नीचे दिखानेवाला वरांग; पत्ति
 मौळियार्क्कु-शीतल बोली, इनसे युक्त स्त्रियों के प्रति; अन्नपु पट्टार्-काम के वश
 में जो हुए; पटुम्-उसको सतानेवाला; काम कुणन्तात्-कामरोग की स्थिति को;
 मुन्तम् अडियातात्-जो पहले नहीं जानता था, वह रावण; मतियाल्-उस चन्द्र से;
 कौदिया निन्ऱान्-तप्त रहा; तण् अम् तामरैयिन्-शीतल सुन्दर कमल का; तत्ति
 पकैन्न-विशेष शत्रु वह; अँत्तुम् तन्मै-यह रीति; और तात् उणर्न्तान्-एक तरह
 से स्वयं जानकर; उणर्वु उर्ऱु-होश में आकर; उधिर् तन्तु उयक्क-प्राण
 (स्वस्थता) पाकर बचने के लिए; अवन् मेलिट्-उस चन्द्र-के प्रति; उरै शैय्वान्-
 बोलने लगा । ६६६

रावण को कभी सर्प-फन के समान वरांग और शीतल, मधुर वाणी
 की स्त्रियों के प्रेम में फँसे हुए लोगों के काम-ताप की वेदना का प्रकार नहीं
 मालूम था । अब वह इस चन्द्र के कारण वेदना से तड़पने लगा । तब
 उसे स्मरण आया कि यह शीतल, सुन्दर कमल का अनोखा शत्रु है । तब
 उसे सुध आयी कि मैं इससे प्राण पाकर बचने के लिए कुछ कहूँ —यह
 सोचकर वह चन्द्र के प्रति कहने लगा । ६६६

तेया निन्ऱाय् मैय्वळुत्ता युळ्ळुङ् गरुत्ताय् निलै तिरिन्दु
 काया निन्ऱा यौरुनियुङ् कण्डार् शौल्लक् केट्टायो

पाया निन्ऱु मलर्वाळि पडिया निन्ऱा रिल्लेयाल्
ओया निन्ऱे नुयिर्हात्तुऱ् कुरिया रारे युडुवविये 667

उटुपतिये—उडुपति; तेया निन्ऱाय्—क्षीण होता जाता है; मैय् वैळुत्ताय्—शरीर पाण्डुर है; उळ्ळम् कऱुत्ताय्—दिल काला है; निले तिरिन्ऱु काया निन्ऱाय्—गुण बदलकर सूख गया; ओरु नीयुम्—अनोखी स्थिति में रहनेवाला तू भी; कण्टार् चोल्ल—किसी के एक स्त्री को देखकर तेरे पास बताने से; केट्टायो—तूने सुन (कर प्रेम करने लग) गया क्या; पाया निन्ऱु—सवेग आनेवाले; मलर् वाळि—सुमन-शर; पडिया निन्ऱार्—निकालनेवाले; इल्लैयाल्—नहीं है, इसलिए; ओया निन्ऱेन्—यका हूँ; उयिर् कात्तुऱ्कु—मेरे प्राण बचाने का; उरियार् रारे—जिम्मा लेनेवाले कौन है। ६६७

रावण ने कहा— उडुपति ! तू दिन व दिन क्षीण होता जाता है । तेरा शरीर पाण्डुर है । दिल काला है । तेरी स्थिति बदल गयी है और तू झुलस गया है । इस विचित्र दशा में रहनेवाले तूने भी क्या किसी के द्वारा उसकी देखी हुई स्त्री के सम्बन्ध में सुनकर प्रेम किया है ? वेग से आकर मेरे ऊपर लगकर जो मन्मथ-शर मुझे सता रहे हैं उनको निकालकर मुझे बचानेवाला कोई नहीं रहा । इसलिए मैं निर्वल होकर थका हुआ हूँ । मेरी जान बचानेवाले कौन हैं ? । ६६७

आऱ्ऱा राहिऱ् उम्मैक्कोण् डडङ्गा रोवैन् त्रायिर्क्कुक्
कूऱ्ऱाय् निन्ऱु कुलच्चनहि कुवळे मलर्न्द तामरैक्कुत्
तोऱ्ऱा यदन्ना लहङ्गरिन्दाय् मैलिन्दाय् वैदुम्बत् तौडङ्गित्ताय्
माऱ्ऱार् शैल्वड् गण्डळिन्दाल् वैऱ्ऱि याह वऱ्ऱामो 668

अँन् आर् उयिर्क्कु—मेरे प्रिय प्राणों का; कूऱ्ऱाय् निन्ऱु—यम जो बनी खड़ी है; कुल चत्कि—उच्चकुल-जात जानकी के; कुवळे मलर्न्द—विकसित नीलोत्पलों (औखों) सहित; तामरैक्कु—कमल (मुख) के सामने; तोऱ्ऱाय्—तू हार गया; अतत्ताल्—उस कारण; अकम् करिन्ऱाय्—दिल का (क्रोध से) काला हो गया; मैलिन्ऱाय्—पतला हो गया; वैदुम्प तौडङ्कित्ताय्—झुलसने लगा; माऱ्ऱार् शैल्वम् कण्टु अळिन्ऱाल्—अन्य मनुष्य का धन देखकर जलेगा तो; वैऱ्ऱि आक—विजयी बनने का; वऱ्ऱ आमो—वल मिलेगा क्या । ६६८

हे चाँद ! तू उस कुलीन जानकी के कमल-सम मुख के सामने हार गया, जो मेरे प्यारे प्राणों का यम बनी है । उस जानकी के कमल-सम मुख में दो नीलोत्पल-सम आँखें हैं । हार जाने की वजह से तेरा दिल झुलस गया है । तू क्षीण होकर जल रहा है । प्रतिद्वन्द्वी का धन देखकर ईर्ष्या के कारण छीजने से विजय पाने की शक्ति मिल जायगी क्या ? । ६६८

अँन्तप् पन्नि यिडरुळ्वा विरवो डिवन्नेक् कौण्डहऱ्ऱि
मुन्नेप् पहलुम् पहलोनम् वरुह वैन्ऱान् मौळियामुन्

उत्तङ्करिय वुडुबदियु मिरवु मौळित्त वीरुनीडियिल्
पत्तङ् करिय पहलवनुम् पहलुम् वन्दु परन्दवाल् 669

उत्त पत्ति—ऐसा विलाप करके; इटर् उल्लावा—दुःख से पीड़ित होकर; इरवोट्टु इवत्तै—रात के साथ इसको; कौण्टु अकङ्गि—पकड़कर दूर करो; मुत्तै पकलुम्—पहले रहा दिन और; पकलौतुम्—दिनकर को; वरुक—आने दो; अत्तान्—कहा; मौळियामुत्—उसके कहने के पूर्व ही; उत्तङ्कु अरिय—अचिन्त्य यशस्वी; उट्टुपतियुम्—उडुपति और; इरवुम्—रात्रि; ओरु नौटियिल्—एक चुटकी भर में; औळित्त—छिप गये; पत्तङ्कु अरिय—अवर्ण्य यशस्वी; पकलवनुम्—दिनकर और; पकलुम्—दिन; वन्दु परन्त—आकर व्याप गया। ६६६

इस तरह विविध प्रकार से रावण विलापते हुए दुखता रहा। फिर उसने कहा—रात के साथ चाँद को भी हटा देकर पहले की तरह दिन और दिनकर को आने दो। उसके कहते ही अचिन्त्य यशस्वी उडुपति रात के साथ चुटकियों में छिप गया। अवर्णनीय यशस्वी दिन और दिनकर आ गये। ६६९

इरुक्किन् मौळिया लैरिमुहत्ति नीन्द नैय्यि नैरिशम्बोन्
उरुक्कि यत्तैय कदिर्बाय वतल्वोल् विरिन्द वुयर्हमलम्
अरुक्क नैय्द वमैन्दडङ्गि वाळा दडाद पौरुळ्ळैय्दिच्
चैरुक्कि यिडैये तिरुविलन्द शिरियोर् पोन्ऱ चेदाम्बल् 670

अरुक्कन्—सूर्य; अैरि-मुरवत्तिन्—अग्नि में; इरुक्किन् मौळियाल्—वेदमन्त्रों के साथ; ईन्त—डाले गये; नैय्यिन्—घी के समान; अैय्त्त—आ गया तब; कतिर्—उसकी किरणें; अैरि—भट्ठी में; चैम्पोन् उरुक्कि अत्तैय—लाल स्वर्ण के गले हुए द्रव के समान; पाय—भूमि पर आ फैलीं; उयर् कमलम्—उत्कृष्ट कमल; अत्तल् पोल् विरिन्त—अग्निज्वालाओं के समान खिले; चेताम्पल्—लाल कुमुद; चिरियोर्—नीच लोग; अटात पौरुळ् अैय्ति—अनुचित रीति से धन प्राप्त करके; अमैनुतु अटङ्कि वाळातु—शम-दम के साथ जीवन न बिताकर; चैरुक्कि—गर्व करते हुए (जब रहते हैं) तब; इटैये—बीच में ही; इळन्त—खो गये हों, ऐसा; तिरु—विकास; इळन्त—खो गये (बन्द हो गये)। ६७०

सूर्य क्या आया? होमाग्नि में वेदमन्त्र के साथ पड़नेवाले घी के समान रहा वह। उसकी किरणें भट्ठी में पिघलाये हुए चोखे स्वर्ण के द्रव के समान भूमि पर फैलीं। तब श्रेष्ठ कमल अग्निज्वाला के समान विकसित हुए। लाल कुमुद उन छुद्र मनुष्यों के समान श्रीहीन हुए, जो अधार्मिक रास्तों से धन प्राप्त कर शम और दम के साथ नहीं रहते, पर गर्वीले रहते हैं और जिनकी सम्पत्ति बीच में ही लुप्त हो जाती है। ६७०

नाणि निन्ऱ वौळिमळुङ्गि नडुङ्गा निन्ऱ वुडम्बित्ताय्च्
चेणि निन्ऱुम् बुऱज्जाय्न्दु कङ्गुऱ्ऱ रारम् बित्शैल्लप्

पूणिन् वैय्यो नौरुदिशेये पुहुदप् पोवान् पुहळ्वेन्दर्
आणै शैल्ल निलैयिळुन्द वरशन् बोन्डा नल्लाण्डान् 671

पूणिन् वैय्योन्-संसार का आभरण-स्वरूप सूर्य; और तिचैये पुकुत-उत्तम एक (पूर्व) दिशा में उदय हुआ; अल् आण्डान्-रात का नायक; नाणि-लजाकर; निन्ड ओळि-अपने पास रही ज्योति के; मळुङ्कि-मन्द पड़ते; नटुङ्का निन्ड उटम्पितन् आय्-काँपते शरीर का बनकर; चेणिन् निन्ड-आकाशमध्य से; पुडम् चाय्न्तु-एक ओर उतरकर; कङ्कुल् तारम् पिन् चैल्ल-रात रूपी पत्नी के पीछा करते; पोवान्-जो गया वह; पुकळ्वेन्दर्-विख्यात राजा के; आणै चैल्ल-शासन में; निलै इळुन्त-अपनी स्थिति से च्युत; अरचन् पोन्डान्-छोटे राजा के समान लगा । ६७१

संसार का आभरणरूप सूर्य उत्तम पूर्व दिशा में उदय हुआ तो रात का शासक चाँद उसको देखकर शरमाया, मन्दप्रभ हुआ और आकाश-मध्य से काँपते हुए उतरकर हट गया । उसके पीछे रात रूपी उसकी पत्नी भी चली । बड़े राजा के शासन में छोटे राजा की स्थिति जैसे बिगड़ जाती है, वैसे चन्द्र का शासन भी बिगड़ गया । ६७१

मणन्दपे रन्वरं मलरिन् शेक्कैयुळ्
पुणरुन्दिल रिडैयौरु वैहुळि पौङ्गलाल्
कणङ्गुळै महळिरुहळ् कङ्गुल् वीयुन्दवैन्
रुणरुन्दिलर् कनविन् मूड् डीरुन्दिलार् 672

कत्तम् कुळ् मकळिरुक्कळ्-भारी कुण्डलधारिणी स्त्रियों ने; मलरिन् चेक्कै उळ्-पुष्पशय्या पर; मणन्त पेर् अन्परै-मिले रहे पतियों के साथ; इटै और वैकुळि पौङ्कल् आल्-बीच में रोष के होने से; पुणरुन्दिलर्-सम्भोग नहीं किया था; कङ्कुल् वीयुन्तु-रात चली गई; अन्ड उणरुन्दिलर्-यह नहीं समझी; कत्तविलुम्-तब के स्वप्न में भी; अटल् तीरुन्दिलार्-रुठन नहीं छोड़ी । ६७२

(अकाल में अकस्मात् अर्क के आगमन से क्या-क्या हुआ, उसका रसीला वर्णन है ।) कुछ राक्षस-स्त्रियाँ, जिनके कर्णों को भारी कुण्डल अलंकृत कर रहे थे, अपने पतियों के साथ पुष्पशय्या पर लेटी हुई थी । अकस्मात् उनके मन में रुठन हो गयी और रोष उभर आया था । अतः क्रीड़ा रुक गयी थी । अब उन्हें ज्ञात नहीं था कि सवेरा हो आया है । इसलिए वे स्वप्न में भी मान कर रही थीं । रुठन नहीं छोड़ी । ६७२

अणैमलर्च् चेक्कैयु लीड् डीरुन्दनर्
पणैहळैत् तळुविय पवळ् वल्लिबोल्
इणैमलर्क् कंहळि निरुह् विन्नुयिर्त्
तुणैवरैत् तळुविनर् तुयिल्हिन् डार्शिलर् 673

चिलर्-कुछ स्त्रियाँ; अणै मलर् चेक्कै उळ्-गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में;

आटल् तीरन्तत्तर्-रतिक्रीड़ा समाप्त करके; पणैकळै तळुविय-मोटी डालों से लिपटी;
पबळ वल्लि पोल्-प्रवालवल्लरी के समान; इण् मलर् कँकळिन्-जोड़े के सुमन-हस्तों
से; इन् उयिर् तुणैवरै-प्राणप्यारे पतियों का; तळुवितर्-आलिगन करती हुई;
तुयिल्किन्तार्-सोती हैं । ६७३

और कुछ राक्षस-स्त्रियों ने रतिक्रीड़ाएँ पूरा कर ली थीं । गद्दे के
समान बनी पुष्पशय्या में वे अपने प्यारे पति का आलिगन करती हुई,
स्थूल वृक्ष से लिपटी प्रवालवल्लरी के समान सो रही थीं । ६७३

तळुळु	मुयिरिन्	तळैवर्	नीङ्गलाल्
नळ्ळिर	विडैयुर्	नडुक्क	नीङ्गलर्
कौळ्ळैयि	त्तलर्दरुड्	गुवळै	नाण्मलर्क्
कळ्ळुहु	वत्तवैत्तक्	कलुळुड्	गण्णितार् 674

तलैवर् नीङ्कलाल्-पतियों के चले जाने से; तळ् उरुम् उयिरितर्-चलित-प्राण
होकर; नळ् इरवु इटै-अर्धरात्रि के समय; उरु-जो हुआ; नटुक्कम् नीङ्कलर्-
उस भय के कम्पन से मुक्त न होकर; अलर् तरु-विकसित; गुवळै नाण् मलर्-
कुवलय के नवीन पुष्पों से; कळ् कौळ्ळैयिन् उकुवत्त-मधु अधिक परिमाण में ढलकता
है; अँत्त-जैसे; कलुळुम् कण्णितार्-जल बहानेवाली आँखों की बनीं । ६७४

कुछ स्त्रियों के प्रेमी पति उनको छोड़कर गये हुए थे । रात आधी
बीत गयी । उनके प्राण डगमगाये । (उनका मन डोलायमान था ।)
उनके शरीर काँप रहे थे । उनकी आँखों से, नवीन कुवलयफूलों से शहद
झरता हो, ऐसा अश्रु बहने लगे । ६७४

अळियिन्	दडन्दीरु	मारप्प	वाय्हदिर
ओळिबड	वुणर्हिल	वुडङ्गु	हिन्तन्न
तैळिविल	विन्ऱयिल्	विळैक्कुम्	जेक्कैयुळ्
कळिहळै	निहर्त्तन्न	कळिहौळ्	ळत्तमे 675

आय् कतिर् ओळि पट-श्रेष्ठ सूर्यकिरण के लगते ही; अळि इत्तम्-भ्रमरकुल;
तटम् तौरुम् आरप्प-सब स्थानों में गुंजारने लगे; कळि कौळ् अत्तम्-मुदित हंस;
कळिकळै निकर्त्तन्न-पियक्कडों के समान; इन् तुयिल् विळैक्कुम्-मधुर निद्रादायक;
चेक्कै उळ्-(कमल की) शय्या में; तैळिवु इल उणर्किल-विना सुध-बुध के;
उड्डक्किन्ऱत्त-सोते हैं । ६७५

रावण की आज्ञा से अप्रत्याशित रीति से सूर्य का उदय हो गया ।
अलिकुल-यत्न-तत्न गुंजार कर रहे थे । मुदित हंसवृन्द पियक्कडों के समान
मधुर निद्रादायी कमल-शय्याओं पर सुध-बुध के विना सो रहे थे । ६७५

विरिन्दुडै	तुडैतीरुम्	विळक्कम्	यावैयुम्
अँरिन्दिळु	दः(ह)कल	वौळियि	ळन्दवाल्

अरुन्दुरै	निरम्पिय	वुयिरि	नन्बरेप्
पिरिन्दुरै	तरुङ्गुलप्	पेदै	मारित्ते 676

अरुम् तुरै निरम्पिय-मनोरम शृंगार-प्रकार जाननेवाले; उयिरिन् अन्परे-प्राप्त-प्यारे पतियों से; पिरिन्दु उरैतरुम्-अलग होकर रहनेवाली; कुल पेत्त मारित्ते-कुलीन स्त्रियों की तरह; विरिन्दु उरै-विशाल नगर के; तुरै तौरुम्-प्रासादों में; विळक्कम् यावैयुम्-सभी दीपक; इळुतु अरिन्दु-घो जलकर; अ. (ह) कल-कम नहीं हुआ तो भी; ओळि इळुन्त-मन्दप्रभ हुए । ६७६

कुछ स्त्रियों के रतिकलाविदग्ध प्रेमी पति उनको छोड़कर दूर चले गये थे और ये वियोगिनी नायिकाएँ घर पर रहीं । उन्हीं के समान बड़े-बड़े सौधों में रहे दीप भी मन्दप्रभ हो गये, यद्यपि उनमें वी अभी वाकी था (जलकर समाप्त न हुआ था) । ६७६

पुनैन्दिद	ळुरिञ्जुरुम्	वौळुदु	पुल्लियुम्
वनैन्दिल	वैहुरै	मलरु	मामलर्
ननन्दलै	यमळियिर्	रुयिलु	नङ्गैमार्
अत्तन्दलि	नैडुङ्गणो	डौत्त	वामरो 677

इतळ पुनैन्दु उरिञ्जुरुम्-दलों को सुन्दर रीति से विकसित करनेवाला; पौळुतु पुल्लियुम्-समय (सूर्योदय का) आया, तो भी (अप्रत्याशित रीति से हो जाने के कारण); वैकुरै मलरुम् मा मलर्-सवेरे फूलनेवाले उत्तम फूल; वनैन्दिल-मनोरम (विकसित) नहीं हुए; ननम् तलै-विशाल; अमळियिल् तुयिलुम्-शय्या पर सोनेवाली; नङ्गैमार्-स्त्रियों की; अनन्तलिन्-निद्रा में रहनेवाली; नैडुम् कणोट औत्त आम्-दीर्घ आँखों के समान (मुकुलित रहे) । ६७७

दलों का स्पर्श कर उन्हें विकसित करनेवाली उदय-वेला आ गयी । तो भी सवेरे जिन श्रेष्ठ फूलों को विकसना था, वे मनोरम प्रकार से नहीं विकसे । विशाल शय्या में सोनेवाली स्त्रियों की निद्रामग्न आँखों के समान बन्द ही रहे । ६७७

इच्चैयिर्	रुयिल्बवर्	यावर्	कण्णळुम्
निच्चयम्	पहलुन्द	मिमैह	णीङ्गिल
पिच्चैयु	मिडुडुमैन्	रुणर्दल्	पेणला
वच्चैयर्	नैडुमनै	वायिन्	मानवे 678

पिच्चैयुम् इडुतुम् अन्नुङ्-भिक्षा दोगे, यह; उणर्तल् पेणला-भाव न रखनेवाले; वच्चैयर्-कृपणों के; नैडु मनै वायिल् मात्र-बड़े घर के द्वार के समान; इच्चैयिल्-अपनी इच्छा भर; तुयिल्पवर् यावर् कण्णळुम्-सोनेवाले सभी की आँखें; पकलुम्-दिन होने पर भी; तम् इमैकळ्-अपनी पलकें; निच्चयम् नौङ्किला-निश्चय खोलकर नहीं जागीं । ६७८

सुप्त लोगों की आँखें नहीं खुलीं । उदय होने के बाद भी निश्चित

रूप से नहीं खुलीं। उनकी पलकें उन लोभी कृपण लोगों के घरों के द्वारों के समान बन्द रहे, जो कभी याचकों को कुछ नहीं देते। ६७८

नञ्जुः	पिरिवित्त	नळ्ळि	नीळमोर्न्
दञ्जुः	नडुवणो	रयर्बु	ताङ्गिय
वैञ्जिः	नीङ्गिय	विनैयि	नोर्न्
नैञ्जुः	कळित्तत्त	नेमिप्	पुळ्ळैलाम् 679

नेमि पुळ्ळैलाम्—चक्रवाक पक्षी सब; नळ्ळित्—रात में; नञ्चु उः पिरिवित्त—विष-सम वियोग में रहे; नीळम् ओर्न्तु—रात की लम्बाई का विचार करके; अञ्चुः—भय के साथ; ओर् अयर्बु ताङ्गिय—क्लेशयुक्त रहे; नडुवण्—उस दुःख के समय के बीच; वैम् चिः नीङ्गिय—कठोर कारा से विमुक्त; विनैयितोर् अँत—सुकृतों के समान; नैञ्चु उः कळित्तत्त—मन से मुदित हुए। ६७९

चक्रवाक पक्षियों को जब मालूम हुआ कि उदय-समय आ गया, तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। वे रात की लम्बाई का विचार करके भय के साथ निद्रा में लगी थीं। अब उसके बीच में ही उदय हो गया। कारामुक्त सुकृत्य वाले लोगों के समान वे बहुत आनन्दित हुए। ६७९

नाण्मदिक्	कल्लडु	नडुव	णैय्दिय
आणैयिः	तिरुक्कला	वलरिः	पाय्वत्त
माण्वित्तैप्	पयन्ः	वच्चै	वायिल्शेर्
पाणरिः	तळर्न्तत्त	पाडः	रुम्बिये 680

पाटल् तुम्पि—सुरीले गानेवाले भ्रमर; नाळ् मतिकुक्कु अल्लतु—नवोदित चन्द्र के सिवा; आणैयिल्—रावण की आज्ञा से; नडुवण् अँयित्तिय—(अकाल में) बीच में आये दिन में; तिरुक्कला अलरिल्—जो नहीं विकसते, उन (कुवलय आदि) पुष्पों में; पाय्वत्त—सवेग आते हैं; माण् वित्तै पयन् अः—महान सुकृत्यों से वंचित; वच्चै—कृपणों के; वायिल् शेर्—द्वार पर आये; पाणरिल्—याचकों के समान; तळर्न्तत्त—हतोत्साह हुए। ६८०

सुरीला गान गानेवाले भ्रमर बहुत शीघ्र उड़ते हुए कुवलय आदि पुष्पों के पास आये। वे तो नवोदित चन्द्र के सामने ही खिलने के आदी थे। अब तो रावणाज्ञा से सूर्य आ गया है। इसलिए वे बन्द रहे। भ्रमरों की स्थिति उन गवैये याचकों के समान हो गयी, जो कृपणों के द्वार पर जाते हैं और उसको बन्द पाते हैं। ६८०

अरुमणिच्	चाळर	मदन्ति	नडुबुक्
कैरिहदि	रिन्ः	लैळुप्प	वैय्दवुम्
मरुळोडु	तैरुळु	निलैयर्	मङ्गैयर्
तैरुळुः	मैय्पपौरु	डैरिन्दि	लारिन्ने 681

अरु मणि चाळरम् अतनिन् ऊटु-श्रेष्ठ रत्नमय गवाक्षों द्वारा; पुक्कु-प्रवेश करके; अरि कतिर्-सूर्य की किरणें; इन् तुयिल् अल्लुप्प-मधुर नींद से जगाने के लिए; अय्तवुम्-आ गई, आने पर; मङ्कयर्-राक्षस-स्त्रियाँ; तैरुळ उर मैय् पोरुळ तैळिन्तिलारिन्-पूर्णरूप से साफ ज्ञान न रखनेवाले के समान; मरुळ ओटु तैरुळ उर-भ्रम और बोध (तन्द्रा और जागरण) की मिश्रित; निलैयर्-दशा में रहें। ६८१

सूर्य की किरणें उत्तम और बहुमूल्य रत्नजड़ित गवाक्षों द्वारा अन्दर घुसकर स्त्रियों को मधुर निद्रा से जगाने लगीं। तब वे न तो पूर्णरूपेण जाग पायीं, न निद्रा में ही रहें। उनकी निद्रा-स्थिति उन लोगों के ज्ञान की स्थिति के समान थी, जो अपूर्ण रूप से विवृद्ध है। यानी संदिग्ध अवस्था में रही। ६८१

एवलित्	वन्मैयै	यैण्ण	तेरुडलर्
नावलर्	नविड्रिय	नाळि	नामनूल
कावलि	नुत्तित्तुणर्	कणिद	माक्कळुम्
कूवुरु	कोळियुन्	डुयिल्वु	कोण्डवे 682

एवलित् वन्मैयै-आज्ञा के प्रताप को (रात में दिन होने की स्थिति को); यैण्ण तेरुडलर्-ज्ञान नहीं सके; नावलर् नविड्रिय-विद्वानों के रचित; नाळि नाम नूल-समय के श्रेष्ठ शास्त्र के अनुसार; कावलित् नुत्तित्तु उणर्-रात में सचेत रहकर काल की गणना करनेवाले; कणित माक्कळुम्-ज्योतिषी लोग और; कूवु उरु कोळियुम्-बाँग देनेवाले मुर्गे; तुयिल्वु कोण्ड-निद्रामग्न हो रहे। ६८२

विद्वान ज्योतिषियों से रचे शास्त्र के निष्णात काल-गणितज्ञ, जो रात के काल की गणना करते रहे, सो गये। पहरों को बताने के लिए टेर लगानेवाले मुर्गे भी सोये रहे, क्योंकि उन्हें रावण की आज्ञा और उसके प्रताप से हुआ नतीजा मालूम नहीं था। यानी सूर्योदय हो गया सो बात उन्हें विदित नहीं थी। ६८२

इत्तैयन	वुलहिनि	तिहळु	मैल्वैयिल्
कत्तैहळु	लरक्कनुडु	गण्णि	नोक्किन्नान्
नित्तैवुरु	मत्तत्तैयु	नैरुप्पिडु	रीयक्कुमाल
अनैयवत्	तिड्गळे	याहुसा	लैन्डान् 683

इत्तैयन्-ऐसी बातें; उलकिन् निकळुम् अल्लवैयिन्-जब संसार में हो रही थीं, तब; कत्तै कळल् अरक्कत्तुम्-क्वणनशील पायलधारी राक्षस (रावण) ने भी; कण्णिन् नोक्किन्नान्-आँखों से (सूर्य को) देखकर; नित्तैवु उरु मत्तत्तैयुम्-स्मरणशील मन को भी; नैरुप्पिल् तीयक्कुम् आल्-आग से जला देगा; (आतलित्-इसलिए); अनैय अ तिड्गळे आकुम्-वही चन्द्र यह है; अल्लान्-(अपनी धारणा कही। ६८३

जब ये बातें हो रही थी, तो क्वणनशील पायल-चरण रावण ने सूर्य

को अपनी आँखों से देखा । कहा कि इसके बारे में सोचनेवाले मन को भी यह जला डालेगा । इसलिए यह वही चन्द्र है (जिसको हटाने की आज्ञा मैंने दी थी) । ६८३

तिङ्गळो	वन्त्रिदु	शैल्वच्	चैङ्गदिर
पौङ्गुळप्	पच्चैमाप्	पुरवित्	तेरदाल्
वैङ्गदिर	शुङ्गुवदे	यन्त्रि	मैय्युत्त
तङ्गुदण्	कदिरशुङ्ग	तहादेन्	शरशिलर् 684

चिलर्-कुठ (भृत्यों) ने; इतु तिङ्गळो अन्त्र-यह चन्द्र ही नहीं है; चैल्व चैम् कतिर्-श्रेष्ठ लाल किरणमाली; पौङ्गु उळै-उभरे, बड़े अयाल वाले; पच्चै मा पुरवि-हरे बड़े अश्वों का; तेरतु आल्-रथ का है, इसलिए; वैम् कतिर्-तापक किरणों का; मैय्य-शरीरी; उद् चूटवते अन्त्रि-खूब जलायगा, उसके सिवा; तण् तङ्गु कतिर्-शीत-भरी किरणों का चन्द्र; चूट तकातु-जला नहीं सकेगा; अन्त्रार्-कहा । ६८४

वहाँ जो रहे, उन किकरों ने उत्तर में निवेदन किया कि नहीं ! यह चन्द्र ही नहीं है । विश्वास मानिए । यह उत्तम और लाल किरणमाली है । उसके रथ में बड़े और हरे अश्व जुते हैं । इसी की किरणें गरम होती हैं और वे ही ताप देती हैं । चन्द्र शीतल-किरण है और वह नहीं जलाता । ६८४

नीलच्	चिहरक्	किरियन्तव	निन्त्र	वैय्योन्
आलत्	तिन्तुम्वैय्य	तहर्त्रि	यरर्त्र	हिन्त्र
वैलैक्	कुरलैत्	तविर्हैन्त्र	विलक्कि	मेलै
मालेप्	पिरैप्पिळ्ळयैक्	कूवुदिर	वल्लै	यैन्त्रान् 685

चिकर नील किरि अन्तवन्-शिखरों-सहित नीले पर्वत के समान रावण; निन्त्र वैय्योन्-सामने स्थित यह सूर्य; आलत्तिन्तुम् वैय्यन्-हलाहल से भी तापक है; अक्त्रि-इसे दूर करके; अरर्त्रकिन्त्र-रोनेवाले; वैलै कुरलै-समुद्र के गले को; तविर्क अन्त्र-चुप रहो, कहकर; विलक्कि-रोककर; मेलै-पश्चिम दिशा में उदित; मालै पिरै पिळ्ळयै-शाम के बालचन्द्र को; वल्लै-शीघ्र; कूवुतिर्-पुकारो; अन्त्रान्-आज्ञा दिलाई । ६८५

तब शिखरों सहित पर्वत-सम रावण ने आज्ञा सुनायी कि सामने जो है, वह सूर्य हलाहल से भी संतापी लगता है । उसको हटाओ । साथ-साथ उस समुद्र को भी चुप कराओ जो विलाप रहा है ! फिर पश्चिम दिशा में जो उदित होता है, उस बाल-कला-चन्द्र को पुकारो । ६८५

शैन्ता	तिरुदरक्किरै	यम्मोळि	शैल्ल	लोडुम्
अन्नाळि	तिरुम्बिय	वम्मदि	याण्डोर्	वैलै

मुन्नाळि	निळम्बिर्	याहि	मुळैत्त	वैन्नाल्
अन्नाळु	मरुन्दव	मन्त्रि	यियर्	लामो 686

निरुत्कर्कु इरै-राक्षसों के राजा ने; चीन्तान्-वैसा कहा; अ मौळि चीन्ताल् ओटुम्-वह वचन कहते ही; अ नाळित् निर्म्पिय-वह (पन्द्रह) दिनों का; अ मति-पूर्णचन्द्र; आण्टु-तब; ओर् वैलै-उसी समय; मु नाळ् इळम् पिर् आकि-तीन दिनों का कलाचन्द्र बनकर; मुळैत्ततु-उदय हुआ; अन्नाल्-तो; अरुम् तवम् अन्त्रि-विना कठिन तपस्या के; अ नाळुम्-किसी भी दिन; इयर्ल् आमो-ऐसा किया जा सकता है क्या । ६८६

राक्षसाधिपति ने यह आज्ञा सुनायी । सुनाते ही वह पूर्णचन्द्र तिरोहित हो गया । वहाँ तीन दिन का बालचन्द्र उदित हुआ । तो (कवि तपस्या की शक्ति की महिमा में कहते हैं कि) तपस्या की महिमा कितनी बड़ी है ? उसके सिवा कौन सी चीज़ है जो ऐसा कर सकती है ? (यह अर्थ भी लग सकता है कि तपस्या को छोड़ कौन कार्य है जो करने योग्य है ?) । ६८६

कुडपालिन्	मुळैत्तदु	कण्ड	कुण्डग	डीयोन्
वडवावत्त	लन्त्रैन्ति	मण्विडर्	वैत्त	पाम्बिन्
विडवा	ळैयिर्न्त्रैन्ति	लैन्ने	वैङ्गुडु	मालै
अडवा	ळुरुविक्कोडु	तोन्त्रिय	दाहु	मन्त्रे 687

कुटपालिन्-पश्चिमी दिशा में; मुळैत्ततु-उदय हुआ; कण्ड-वेख; कुण्डकळ् दीयोन्-दुर्गुणी; वडवा अत्तल्-वड़वाग्नि है; अन्त्र अत्तिल्-नहीं तो; मण् पिटर् वैत्त-भूमि को गले पर ढोनेवाले; पाम्पिन्-शेषनाग का; विट वाळ् अयिड-विषैला प्रकाशमय दाँत है; अन्त्र अत्तिल्-वह भी नहीं तो; अन्त्रै वैङ्गुडु-मेरे विषैले गुस्सा करके; मालै-संध्याकाल में; अट-मारने के लिए; वाळ् उरुवि कोटु-तलवार खींच लेकर; तोन्त्रियतु आकुम्-प्रकट हुआ होगा । ६८७

दुर्गुणी रावण ने पश्चिमी दिशा में उदित कला-चन्द्र को देखा । उसने कहा कि रे, यह तो वड़वाग्नि है ! अगर नहीं तो भूभारवाही शेषनाग का उज्ज्वल विषैला दाँत होगा ! वह भी नहीं है तो संध्याकाल मुझसे वैर करके मुझे मारने के लिए तलवार लिये हुए प्रकट हो आया होगा ! । ६८७

तादुण्	शडिलत्तलै	वैत्तदु	तण्ड	रङ्गम्
मोदुड्	गडलिर्	किडैमुन्दु	पिर्न्द	पोदै
ओदुड्	गडुवैत्तन्	मिडर्	लौळित्त	तक्कोन्
ईदुड्	गडुवामैन्	वैण्णिय	वैण्ण	मन्त्रे 688

ओतुम्-सबसे चंचित; कटुवै-विष को; तन् मिटर्लि ओळित्त-कण्ड में जिन्होंने दबा रखा है; तक्कोन्-श्रेष्ठ शिवजी ने; तण् तरङ्गम् ओतुम्-शीतल तरंग-ताड़ित; कटलिर्कु इटै-(क्षीर-) सागर से; मुनुतु पिर्न्त पोते-पहले जब प्रकट

हुआ तभी; तातु उण्—मकरन्द-भरी; चटिल तलै—जटा से अलंकृत सिर पर; वंतुततु—रक्त लिया तो; ईतुम्—यह (चाँद) भी; कटु आम्—विष है; अँत अँण्णिष्—ऐसा सोचा हुआ; अँण्णम् अन्तरो—विचार था न । ६८८

हाँ ! यह भयंकर विष ही होगा । क्योंकि विषकंठ शिवजी ने शीतल तरंगाकुल क्षीरसागर पर उस विष के पहले इस चाँद को लेकर अपनी परागयुक्त जटा से अलंकृत सिर पर धारण क्यों किया ? यही समझकर न कि यह भयंकर विष है ? । ६८८

उरुमौत्त	वलत्तुयिर्	नुङ्गिय	तिङ्ग	ळोडित्
तिरुमिच्	चिरुमैन्	पिरैदीमै	कुरैन्द	दिल्लै
करुमैक्	करैयैञ्जलि	नञ्जु	कलन्द	पाम्बित्
पैरुमै	शिरुमैक्कौरु	पैर्रि	कुरैन्द	टुण्डो 689

अञ्चल् इल् नञ्चु—अक्षय विष; कलन्त पाम्पित्—(से) युक्त सर्पों में; पैरुमै चिरुमैक्कु—बड़ा क्या, छोटा क्या; और पैर्रि—(विष के) रखने में; कुरैन्ततु उण्टो—कमी है क्या; उरुम् औत्त वलत्तु—वज्र-सम बल के साथ; उयिर् नुङ्किय—प्राण खानेवाला; तिङ्कळ्—पूर्णचन्द्र; ओटि—भागकर; तिरुमि—बदलकर; इ चिरु मैल् पिरै—यह छोटा कोमल बालचन्द्र (जो आया); तीमै कुरैन्ततु इल्लै—बुराई में कम नहीं है । ६८९

अक्षय विष-भरे साँपों में छोटा क्या बड़ा क्या ? विष के सम्बन्ध को लेकर सोचा जाय तो कोई किसी से कम नहीं ! वज्र-सम बल के साथ मेरी जान का ग्राहक जो रहा वह पूर्णचन्द्र चला, फिर इस कोमल बालचन्द्र के रूप में आया । यह उससे कम दुखदायी नहीं लगता । ६८९

कन्तक्	कत्तियुमिर्	डन्तैयुङ्	गाण्डु	मन्त्रे
मुन्तैक्	कदिन्नन्त्रि	दहर्ऋदिर्	मोय्म्बु	शान्त्र
अँन्तैच्	चुडुमेलिन्नि	येळुल	हत्तिल्	वाळ्वोर्
पित्तैच्	चिलरुय्वरैन्	उङ्गौरु	पेच्चु	मुण्डो 690

मुन्तै कतिर् नन्ऋ—पहले आया सूर्य ही अच्छा; कन्त कत्तियुम्—पूर्णरूप से घना; इरळ् तन्तैयुम्—अन्धकार भी; काण्डुम्—देख लूँगा; इतु अक्ऋतिर्—इसको हटा दो; मोय्म्बु चान्त्र—बलवान; अँन्तै चुडुमेल—मुझे जलायगा (यह चाँद) तो; इत्ति—आगे; एळु उलकत्तिल् वाळ्वोर्—सातों लोकों में रहनेवाले; पित्तै चिलर्—फिर कुछ लोग; उय्वर् अँन्ऋ—इससे बच पायेंगे, ऐसा; अक्कु और पेच्चुम् उण्टो—वहाँ वचन होगा क्या । ६९०

पहले जो सूर्य रहा वही अच्छा लगता है ! पूर्णरूप से घना बना अन्धकार कैसा होगा ? —यह भी देख लूँ । हटाओ इसको । बलशाली मुझे भी यह इस प्रकार जला सकता है, तो सातों लोकों के वासियों में किसी के जान से बचने की बात ही उठेगी ! । ६९०

आण्डप्	पिउँनीङ्गलु	मैय्दिय	वन्द	कारम्
तीण्डर्	करिदाय्पपल	तेय्पपितुन्	दैय्क्क	लाहा
वेण्डिर्	करवत्तिरप्	पत्तियि	नीर्न्दु	वीळ्त्तुक्
काण्डर्	करिदाय्पपल	कन्दु	तिरट्ट	लाहुम् 691

आण्डु-तव; अ पिउँ नीड्कलुम्-वह वालचन्द्र हटा तो; मैय्तिय अन्तकारम्-आया अन्धकार; तीण्डर्कु अरिताय्-अस्पृश्य; पल तेय्पपितुम्-खूब बार-बार रगड़ने पर भी; तेय्क्कल् आका-रगड़कर मिटाना कठिन था; वेण्डिल्-चाहने पर; करपत्तिर पत्तियिल्-आरे से; ईर्न्दु-काटकर; वीळ्त्तु-गिराकर; काण्डर्कु अरिताय्-अवर्शनीय; पल कन्दु-अनेक खम्भों के रूप में; तिरट्टल् आकुम्-संवारा जा सकता है। ६६१

तव वालचन्द्र हट गया। अन्धकार आ गया। वह ऐसा था कि कोई उसे स्पर्श नहीं कर सकता, न उसे रगड़कर उसका अभाव किया जा सकता था। चाहने पर शायद उसे आरे से काटकर उसके अनेक गोल खम्भे बनाये जा सकते थे। ६९१

मुरुडीर्न्	उरुट्टर्	कैळिदैन्वदैन्	मुर्त्तु	मुर्त्तिप्
पौरुडीर्न्द	जानत्	चुडर्बुक्कु	वळङ्ग	लिन्त्रिक्
कुरुडीङ्गि	दैन्तक्	कुर्त्तिकीण्डहण्	णोट्टड्	गुन्त्रि
अरुडीर्न्द	नैम्बजिर्	करिदैन्वदव्	वन्द	कारम् 692

मुरुट्टु ईर्न्दु-गाँठें आदि काट फेंककर; उरुट्टर्कु-गोल (खम्भों के रूप में) बनाना; कैळितु अँत्पतु अँन्-आसान है, यह कहना क्या (विशेषता रखता) है; मुर्त्तु मुर्त्ति-सम्पूर्ण रूप से पक्व; पौरुळ् तीर्न्त-असंदिग्ध तत्त्वज्ञ; जानम् चुट्टर् पुक्कु-ज्ञान की ज्योति प्रवेश करके; वळङ्गल् इन्त्रि-प्रकाशमान नहीं है (जिसमें); ईङ्कु-इतु कुरुट्टु-यहाँ यह अन्धा है; अँत्तु कुर्त्तिकीण्ट-ऐसा कहा जानेवाला; कण्णोट्टम् कुन्त्रि-दाक्षिण्य से हीन; अरुळ् तीर्न्त-दया से रहित; नैम्बिल्-(जो है उस) मन के समान; अ अन्तकारम्-वह अन्धकार; करितु अँत्पतु-काला कहा जा सकता था। ६६२

हाँ—गाँठें आदि हटाकर उसके खम्भे बनाये जा सकते हैं—यह कहना कौन सी विशेषता रखता है? वह अन्धकार उस अज्ञ-जन के मन से बढ़कर काला था, जिसमें तत्त्वदर्शी पक्व ज्ञान प्रवेश नहीं कर पाया था, जो 'यह अन्धा है', इस कथन का पात्र हो गया था और जिसमें न दाक्षिण्यभाव था, न दयाभाव। ६९२

विळ्ळाडु	शैर्त्तिन्दिडै	मेलुर्	वीङ्गि	यैङ्गुम्
नळ्ळा	विरुळ्वन्दहन्	जालम्	विळ्ळुङ्ग	लोडुम्
अँळ्ळा	बुलहियावैयुम्	यावरुम्	वीव	दैन्ब
दुळ्ळा	दुमिळ्न्दान्	विडमुण्ड	वीरुत्त	नैन्त्रान् 693

विळ्ळातु-अखण्डित; इट्टे चेरिन्तु-ठस; मेल् उर वीड्कि-ऊपर बढ़कर; अँड्कुम् नळ्ळा-कहीं भी न लगनेवाला; इरुळ् वन्तु-अन्धकार आया; अकल् मालम् विळ्ळुक्कल् ओट्टुम्-और उसके विशाल संसार को निगलते ही; विटम् उण्ट ओरुत्तन्-विषखादक शिव ने; अँळ्ळा उलकु यावैयुम्-अनिष्ट सभी लोक; यावरुम्-और उनके वासी; वीयुम् अँत्तु उळ्ळातु-मिट जायेंगे, यह नहीं सोचकर; उमिळ्न्तान्-उगल लिया है; अँत्तान्-कहा । ६६३

अविच्छिन्न, घना और सर्वत्र व्याप्त विपुल अन्धकार, जो कहीं चिपका नहीं रहता, आकर विशाल विश्व को निगल गया । रावण ने टीका की कि शिवजी ने जो पहले विष को निगल लिया था अब उसे उगल दिया है, बिना यह सोचे-विचारे कि इसके फैलने से सारे लोक और उन लोकों के वासी मिट जायेंगे । ६९३

वैलैत्	तलैवन्	दौरवन्वलि	याल्वि	ळ्ळुगुम्
आलत्ति	नडङ्गुव	दन्त्रि	दरिन्दु	णरन्देन्
जालत्तीडु	विण्मुदल्	यावैयु	नावि	नक्कुम्
कालक्	कनल्हार	विडमुण्डु	करुत्त	दन्त्रे 694

औरवन्-अद्वितीय शिव ने; वैलै तलै वन्तु-समुद्र पर आकर; वलियाल्-अपने बल से; विळ्ळुक्कुम्-(जिसको) निगला; आलत्तिन्-उस हलाहल में; इतु अट्टकुवतु अन्त्रु-यह समाविष्ट होनेवाला नहीं; अरिन्तु उणरन्देन्-जान-समझ लिया है; मालत्तु ओट्टु-भू के साथ; विण् मुत्तल् यावैयुम्-आकाश आदि सभी (भूतों) को; नाविन् नक्कुम्-अपनी जीभ से चाट लेनेवाला; काल कनल्-युगान्तकाल की आग; कार् विटम् उण्टु-काला विष खाकर; करुत्ततु-जो काली बनी, वह । ६६४

(फिर उसे लगा कि) यह विष उस हलाहल के समान खाया नहीं जा सकता, जिसको अद्वितीय परमेश्वर ने क्षीरसागर-तट पर आकर उस दिन ले निगल लिया । मैंने जान-बूझ लिया है । यह युगांत अग्नि है, जो भूलोकों के साथ आकाशलोकों को भी चाट ले सकती है और जो विष खाकर काली बन आयी है । ६९४

अम्बु	मतलु	नुळैयाक्कन्	वन्द	कारत्
तुम्बु	मळैहोण्डय	लोप्परि	दाय	तुप्पिन्
कौम्बर्	कुरुम्बैक्	कुलङ्गोण्डु	तिङ्ग	डाङ्गि
वैम्बुन्	दमियेन्मुन्	विळक्कैन्त	तोन्नु	मन्त्रे 695

अयल् औप्पु-कोई दूसरी उपमा; अरितु आय-जिसके लिए कहना कठिन है; तुप्पिन् कौम्बर् अतु-एक प्रवालवल्ली; अम्पुम् अत्तलुम् नुळैया-बाण या अत्तल प्रविष्ट न हो सके; कन्-उतना घना; अन्तकार तुम्पु मळै कौण्टु-अन्धकारमय मेघ ढोकर; कुरुम्पु कुलम् कौण्टु-दो नारियल के कच्चे फलों से युक्त; तिङ्कळ् ताङ्कि-

चन्द्र को धरकर; वैम्पुम् तमियेन् मुन्-तप्त मेरे सामने; विळक्कु अंत-दीप के समान; तोन्ऱुम्-दिखाई देता है; (अन्ऱु-ए) । ६६५

(रावण के सामने देवी का मिथ्या रूप प्रकट होता है ।) यह क्या ? एक अनुपम प्रवाललता दिखाई देती है ! उसके सिर पर वाणों और अग्नि से भी अभेद्य और घना मेघ है और उसकी देह पर दो नारियल के कच्चे फल हैं । इनके साथ वह चन्द्र को भी धारण किये हुए अकेले दुःख-पीड़ित मेरे सामने दीप के समान प्रकट हुई है । ६९५

मरुळुडु	वन्द	मयक्कोमदि	मरुडु	मुण्डो
तेरुळेमि	दैन्तो	दिणिमैयिळैत्	तालु	मौवा
इरुळडिरु	कुण्डलड्	गौण्डु	मिरुण्ड	नीलच्
चुरुळोडुम्	वन्दोर्	शुडरमामदि	तोन्ऱु	मन्ऱे 696

मरुळु ऊटु वन्त मयक्को-चित्त-भ्रम से आया मोह; मति मरुडुम् उन्तो-दूसरा (अनोखा) चन्द्र भी है क्या; इतु अैन्तो-यह क्या ही है; तेरुळेम्-मेरी समझ में नहीं आता; तिणि मै इळैत्तालुम्-अंजन को ठस भरने पर भी; मौवा-वह इसकी तुलना नहीं कर सकता, ऐसा; इरुळ ऊटु-अन्धकार-मध्य; इरु कुण्डलम् कौण्ट-दो (कर्ण-) कुण्डलों से भूषित होकर; इरुण्ट नील चुरुळ ओटुम्-अन्धकार-सम काले घुंघराले केश के साथ और; चुटर् मा मति तोन्ऱुम्-उज्ज्वल श्रेष्ठ चन्द्र दिखाई देता है । ६६६

क्या यह मेरा भ्रमजन्य मोह है ? या सचमुच ऐसा अनोखा चाँद भी तत्त्वतः है ? मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पाता । अंजन को ठस भरकर ऐसा बनाने की कोशिश करे तो भी नहीं बन सके, ऐसे अन्धकार के मध्य वह दिखाई देता है । उसके दो कर्णकुण्डल हैं और अन्धकार-सम काला घुंघराला केश है । इस सजधज के साथ एक पूर्णचन्द्र आकर दिखाई देता है । ६९६

पुडैहीण्डैळु	कौङ्गैयु	मल्लुलुम्	बुल्हि	निङ्कुम्
इडैहण्डिल	मल्लदैल्	लावुरु	वुन्दै	रिन्ऱाम्
विडनुङ्गिय	कण्णुडै	यारिवर्	मैल्	मैल्
मडमङ्गैय	रायैन्	मन्तुत्तव	रायि	तारे 697

पुडै कौण्टु अैळु-वक्ष के दोनों पार्श्वों में उठे हुए; कौङ्कैयुम्-स्तनों और; अल्लुलुम्-कटिप्रदेश से; पुल्लि निङ्कुम्-लगी रहनेवाली; इटै कण्टिलम्-कमर नहीं देखी; अल्लतु-उसके बिना; अैल्ला उरुवुम्-सारा रूप; तैरिन्ऱाम्-(मैंने) देख लिया; विटम् नुङ्किय-विषमक्षक; कण् उटैयार्-आँखों की स्वामिनी; इवर्-यह; मैल् मैल्-धीरे-धीरे; मट मङ्कैयर् आय्-बाला स्त्री बनकर; अैन् मन्तुत्तवर् आयितार्-मेरे मन की (वासिनी) हो गई । ६६७

छाती के दोनों पार्श्वों में उठे रहनेवाले उरोजों को देखता हूँ । नीचे

नितंब देखता हूँ । पर इन दोनों के बीच दोनों से लगी रहनेवाली कमर नहीं देख पाता । धीरे-धीरे उस कटिहीना सुन्दरी का सारा रूप प्रकट हो गया है । विषभक्षक आँखों से भूषित यह वाला स्त्री हैं ! वह मेरे मन में आकर बस गयी हैं । ६९७

पण्डे	युलहेळिनु	मुळळ	पडैक्क	णारेक्
कण्डे	निदुबोलौर	पेण्णुरुक्	कण्डि	लेत्ताल्
उण्डे	यैत्तिल्वेरिति	यैङ्गै	युणर्त्तति	निन्ऱु
वण्डेरु	कोदै	मडवारिव	राहु	मन्ऱे 698

पण्डु ए-पहले ही; उलकु एळितुम् उळळ-सातों लोकों की; पटै कण्णारे- (भाला, तलवार आदि) हथियार-सी आँखों वालियों की; कण्टेन्-देखा है; इवर् पोत्तु-इनके समान; ओर् पेण् उरु-एक स्त्रीरूप; कण्टिलेन्-नहीं देखा है; वेरु इति उण्टे ऐत्तिल्-दूसरी अब एक (देखी जाती) है तो; अँङ्कै उणर्त्तति निन्ऱु-मेरी छोटी बहिन ने जिसका वर्णन किया; वण्डु एरु कोतै मडवार्-वह भ्रमरवाही केश वाली स्त्री; इवर् आकुम्-यही होगी । ६९८

पहले ही मैंने सातों लोकों की वासिनी, भाला, तलवार आदि हथियारों से तुल्य आँखों से शोभित स्त्रियों को देखा है । पर इनकी-सी सुन्दरता को प्राप्त स्त्री को नहीं देखा है । अब जो ऐसी एक दिखाई देती है, तो यह अवश्य वही स्त्री होगी जिस भ्रमरवाही केश से भूषित सुन्दरी का वर्णन मेरी छोटी बहिन शूर्पणखा ने किया था । ६९८

पूण्डिप्	पिणिषा	नुरुहिन्ऱुदु	तान्बौ	डादाळ्
तेण्डिक्	कौडुवन्दत्तळ्	शैय्ववौर्	माऱु	मुण्डो
काण्डर्	किन्नियाळुरुक्	कण्डवर्	केट्कु	माऱ्ऱाल्
ईण्डिप्	पौळुदैविरैन्	दैङ्गैयैक्	कूवु	हैन्ऱान् 699

इ पिणि पूण्डु-यह रोग पाकर; यान् उरुकिन्ऱुतु-जो कण्ट उठा रहा हूँ, उसे; तान् पौडाताळ्-खुद न सह सककर; तेण्टि कौटु वन्तत्तळ्-ढूँढ़ लाई है; चैय्वतु ओर् माऱुम् उण्टो-प्रत्युपकार क्या होगा; काण्टर्कु इत्तियाळ्-देखने में मधुर; उरु-इनका रूप; अवळ् कण्टु-वह (शूर्पणखा) देखे; केट्कुम् माऱु आल्-मैं भी पूछकर जान लूँ (कि क्या यह वही है); ईण्टु-यहीं; इ पौळुते-अभी; विरैन्तु-शीघ्र जाकर; अँङ्कैयै-मेरी अनुजा की; कूवुक-बुलाओ; अँन्ऱान्-कहा । ६९९

(मेरी बहिन भी कितनी अच्छी है !) मेरी बहिन ने मेरी व्यथा देखी और वह सह नहीं सकी । इसलिए वह उसे ढूँढ़ लायी है । उसका क्या प्रत्युपकार करूँ ? जो सामने है, इस सुन्दर रूपवती को वह भी देखे और मैं प्रश्न कर ठीक-ठीक जान लूँ । उसने आज्ञा दी कि अभी यहीं मेरी बहिन को शीघ्र बुलाओ । ६९९

अँन्डा तँनलुङ् गडिदेहितर् कूवु मैल्लै
 वन्डा णिरुदक्कुलम् वेरु माय्त्तल् शैय्वाळ्
 ओन्डाद कामक् कनलुट्टै लोडु नाशि
 पौन्डाळ्हुळै कौङ्गहळ् पोक्किन्नळ् पोय्प्पु हुन्दाळ् 700

अँन्डान्—(रावण ने) कहा; अँतलुम्—कहते ही; कटितु एकितर्—शोध गये;
 कूवुम् अँल्लै—पुकारने पर; वन् ताळ्—वली, उद्यमी; निरुत कुलम्—राक्षसकुल को;
 वेर् अरु—जड़ से काटकर; माय्त्तल् चैय्वाळ्—मिटाने में तत्पर; ओन्डात—अनुचित;
 काम कतल्—कामाग्नि के; उळ् तैरुल् ओट्टुम्—अन्दर दाहने से; नाचि—नासिका;
 पौन् ताळ् कुळै—स्वर्णकुण्डल-धारी कानों और; कौङ्क्कळ्—स्तनों को; पोक्किन्नळ्—
 (जिसने) गवाया; पोय् पुकुन्ताळ्—(वह शूर्पणखा) जा पहुँची । ७००

रावण का यह कहना था कि किकरों ने जाकर शूर्पणखा को बुलाया ।
 वह तो पराक्रमी और उद्यमी राक्षसकुल को ही जड़ से काटकर मिटाने के
 कार्य में तत्पर रही ! उसने अपने लिए विल्कुल अनुचित प्रेम किया और
 उस कामाग्नि के अन्दर जलाते उसने जाकर अपनी नाक को, स्वर्णकुण्डलभूषित
 कानों को और स्तनों को कटवा लिया था । ऐसी शूर्पणखा रावण के पास
 जा पहुँची । ७००

पौय्न्निन्डु नैञ्जिङ्कोडि याळ्वुहुन् दाळै नोक्कि
 नैय्न्निन्डु कूर्वाळव नेरु नोक्कि नङ्ग
 मैन्निन्डु वाट्कण् मयित्तिन्ऱै वन्देन् मुत्तर्
 इन्निन्डुव लाङ्गी लियम्बिय शोदै यँन्डान् 701

नैय् निन्डु कूर् वाळ्—घूत-लगी तीक्ष्ण तलवार-धारी; अवन्—उस (रावण) ने;
 पौय् निन्डु नैञ्चिल्—असत्य जिसमें स्थायी रहा, उस मन की; कौटियाळ्—कूरी;
 पुकुन्ताळै—जो पहुँची, उसको; नेर् उरु नोक्कि—सामने आया देख; नङ्क्—बाले;
 इयम्पिय—तुमने (जिसके बारे में) कहा; चीतै—वह सीता; मै निन्डु वाळ् कण्—
 अंजनयुक्त तलवार-सी आँखों की हो; मयिल् निन्डु अँत—मोर आकर खड़ा हो, ऐसा;
 अँन् मुत्तर् वन्तु—मेरे सामने आकर; इ निन्डुवळ् आम् कौल्—जो यह खड़ी है, यही
 है क्या; अँन्डान्—पूछा । ७०१

घी-लगी तलवारधारी रावण ने कपटनिलय मन वाली शूर्पणखा को
 वहाँ आया देखकर पूछा कि बाले ! तुमने किसी सीता के बारे में कहा न ?
 इधर मेरे सामने अंजनभूषित तलवार-सम आँखें लिये, मोर-सी एक स्त्री
 खड़ी है । देखो और कहो कि क्या यही वह सीता है ? । ७०१

शैन्दासरैक् कण्णौडुञ् जैङ्गनि वायि नोडुम्
 शन्दार्दडन् दोळौडुन् दाळ्दडक् कैह ओडुम्
 अन्दारह लत्तौडु मञ्जन्नक् कुन्ऱुमैन् न
 वन्दात्तिव त्राहुमव् वल्वि लिराम नैन्डाळ् 702

चैम् तामरे कण् ओटुम्-लाल कमल-सम आँखों के साथ; चैम् कनि वायित् ओटुम्-लाल (विब-) फल-सम अधरों के साथ; चन्तु आर्-सुन्दरता-भरे; तटम् तोळ् ओटुम्-विशाल कंधों के साथ और; ताळ् तट कंकळ् ओटुम्-दीर्घ और विशाल हाथों के साथ; अम् तार् अकलत्तु ओटुम्-सुन्दर हार-शोभित वक्ष के साथ; अञ्चत्त कुन्नुम् अन्त-अंजन-पर्वत के समान; वन्तान् इवन्-जो यह आया है; अ वल् विल्-वह कठोर धनुर्धर; इरामन् आकुम्-राम ही है; अँन्नाळ्-वोली । ७०२

(शूर्पणखा तो हमेशा श्रीराम के ध्यान में रहती रही । उसे श्रीराम का रूप ही दिखाई दिया ।) उसने कहा कि जो रूप यह दिखाई दे रहा है, वह अंजनगिरि के समान धनु हाथ में लिये आया हुआ राम है । उसके लाल कमल के समान आँखें हैं, लाल बिम्बफल के समान अधर हैं । मनोरम विशाल कंधों और दीर्घ विशाल हस्तों के साथ वह दिखता है, देखो । ७०२

पेण्वालुरु	नात्तिडु	कण्डडु	पेदै	नीयीण्
डेण्वालु	मिलाददो	राणुरु	वैन्ऱु	दैन्ने
कण्वालुरु	मायै	कवर्ऱुदल्	कऱ्ऱु	नम्मै
मण्वालव	रेहौल्	विळैप्पवर्	मायै	यैन्ऱान् 703

पेत्तै-मूढ़ स्त्री; नात्तु कण्डतु इतु-जो मैं देख रहा हूँ, यह; पेण् पाल् उरु-स्त्री जाती का रूप है; नी-तुम; ईण्डु-यहाँ; अँण् पालुम् इलाततु-कहाँ भी असम्भाव्य; ओर् आण् उरु-एक पुरुष का रूप; अँन्ऱतु-कहती हो, सो; अँन्ने-क्या है; कण् पाल्-आँखों के सामने ही; उरु मायै-बड़ी माया द्वारा; कवर्ऱुदल् कऱ्ऱु-(दूसरों को) धोखा देना जो जानते हैं; नम्मै-उन हमको; मण्पालवरे-मर्त्य-मानव; मायै विळैप्पवर् कौल्-वंचित करनेवाले हैं क्या; अँन्ऱान्-(आश्चर्य से) पूछा । ७०३

रावण को अचम्भा हुआ । उसने कहा कि हे अवोध नारी ! मेरे सामने जो दिखता है, वह तो स्त्री का रूप है । तुम तो असम्भाव्य किसी पुरुष की बात कह रही हो ! यह क्या बात है ? हम मायाकार्य में प्रवीण हैं । हमें भी धोखा दे रहे हैं क्या ये मर्त्यलोक के मानव ? । ७०३

ऊन्ऱुमुणर्	वप्पुऱु	मौन्ऱित्तु	मोड	लित्ऱि
आन्ऱुमुळ	दाय्नेडि	दाशै	कन्ऱऱु	निन्ऱायक्
केन्ऱुत्तेदि	रेविळि	नोक्कु	मिडङ्ग	डोरुम्
तोन्ऱुमनै	याळिडु	तौन्ऱैऱि	याहु	मैन्ऱाळ् 704

ऊन्ऱुम् उणर्वु-सुस्थिर भावना; अ पुऱुम् ओन्ऱित्तुम्-दूसरी तरफ कहीं; ओटल् इन्ऱि-नहीं जाती; आन्ऱुम्-बहुत; उळ्ळु आम्-बनी है; नैटितु आच्चे कन्ऱऱु-गम्भीर काम-राग जलता है, उस स्थिति में; निन्ऱायक्कु-जो स्थित हो उस तुम्हें; उन् अँतिरे-तुम्हारे सामने; एन्ऱु विळि नोक्कुम्-तुम्हारी दृष्टि जहाँ गौर करती है, वहाँ; इट्ऱुक्ळु तोळुम्-उन सभी स्थानों में; अत्तैयाळु तोन्ऱुम्-वही दिखाई देगी; इतु-यह; तौल् नैऱित्तु आकुम्-प्राचीन (मनो-) धर्म ही है; अँन्नाळ्-(शूर्पणखा ने) कहा । ७०४

शूर्पणखा ने समझाया कि भाई तुम्हारी सीता की भावना स्थिर और दृढ़ है। इसलिए तुम्हारी कल्पना दूसरी ओर नहीं जाती। तुम्हारा सीता के प्रति राग तुम्हें जला रहा है और तुम तप्त स्थिति में हो। इस स्थिति में तुम सर्वत्र सीता को ही देखो—यह कोई नई या विचित्र बात नहीं। यह तो प्राचीन और परिचित मनोधर्म ही है। ७०४

अन्ताळदु	कूड	वरक्कनु	मन्त	दाह
निन्नालव्	विरामत्तैक्	काण्गुरु	नीर्	नेन्नान्
अन्ताळव	नेन्नैयित्	तीर्वरु	मिन्तल्	शैय्दान्
अन्ताण्मुदल्	यानु	मयर्त्तिल	नाहु	मेन्नाळ् 705

अन्ताळ्-उसके; अतु कूड-ऐसा कहने पर; अरक्कनुम्-राक्षस रावण ने; अन्ततु आक-वही हो; निन्ताल्-तुमसे; अ इरामत्तै काण्गुरुम्-उस राम को देखे जाने का; नीर्-गुण; अन् अन्नान्-कंसा, पूछा; अ नाळ-जिस दिन; अन्तै-मुझे; इ तीर्व अरु-यह प्रत्यवायहीन; इन्तल् चैय्दान्-कष्ट दिया; अ नाळ् मुतल्-उस दिन से; यानुम्-मैं भी; मयर्त्तिलन् आकुम्-भूली नहीं हूँ; अन्नाळ्-कहा। ७०५

यह सफाई सुनकर रावण ने सकारा कि हाँ! वही ठीक हो सकता है। फिर पूछा कि तुम राम को ही देख रही हो, इसका रहस्य क्या है? शूर्पणखा ने यह सुनकर चातुर्य से उत्तर दिया। भाई यह क्या पूछते हो? जिस दिन राम ने यह प्रत्यवायहीन कष्ट दिया उस दिन से मैं उसे कहाँ भूल सकी हूँ? नहीं भूल पायी हूँ। ७०५

आमाम	दडुक्कुम्	ताक्कंयो	डावि	नैय
वेमाल्वित्तै	येर्किन्ति	येन्विडि	वाहु	मेन्नक्
कोमानुल	हुक्कोरु	नीकुडै	हिन्ड	वैन्ने
पूमाण्गुळ	लाडनै	वव्वुदि	पोदि	येन्नाळ् 706

आम् आम्-हाँ, हाँ; अतु अडुक्कुम्-वह सम्भव ही है; अन् आक्क ओटु-मेरे शरीर के साथ; आवि नैय-प्राण छीजते है; वेम् आल्-जलते हैं; आल्-इसलिए; वित्तैयेर्कु-कामकार्य-तप्त मुझे; इति विटिवु अन्त आकुम्-अब निस्सरण क्या है; अन्त-पूछने पर; नी उलकुक्कु ओरु कोमान्-तुम भुवनपति हो; कुडैकिन्डतु अन्तै-अपने को हीन क्यों मानते हो; पू माण् कुळालै-पुष्पालंकृत सुकेशिनी को; वव्वुति-हर लाओ; पोति-जाओ; अन्नाळ्-कहा। ७०६

रावण ने उत्तर में कहा कि ओफ़ ओह! हाँ, हाँ वह सम्भव बात ही है। पर देखो। मेरा शरीर दुर्बल हो रहा है; मेरे प्राण विगलित हो रहे हैं। शरीर और प्राण जल रहे हैं। कामेच्छा अपना निर्मम कार्य कर रही है। उसके वश होकर मैं बहुत कष्ट उठा रहा हूँ! अब उससे छूटना कैसे हो? शूर्पणखा ने उसे धीरज दिया। भाई! तुम भुवनपति हो।

फिर क्यों ऐसी हीनता का अनुभव करते हो ! जाकर पुष्पालंकृत सुकेशिनी सीता को हर लाओ । अभी जाओ ! उसने भाई को उकसाया । ७०६

अँत्रा	ळहन्त्राळ	वरक्कनु	मीड	ळिन्दान्
औन्त्रानु	मुणर्न्दिल	नावि	युलैन्दु	शोर्न्दान्
निन्त्रारु	नडुङ्गितर्	निन्त्रुळ	नाळि	नाले
पौन्त्राडुळ	नायित	नत्तत्तै	पोलु	मन्त्रे 707

अँत्राळ-कहकर; अकन्त्राळ-शूर्पणखा चली; अ अरक्कनुम्-वह राक्षस भी; ईटु अळिन्तान्-अधीर हुआ; औन्त्रानुम् उणर्न्दिलन्-कोई सुध नहीं रही; आवि उलैन्नु-प्राणविह्वल होकर; चोर्न्तान्-थक गया; निन्त्रारुम् नडुङ्गितर्-(वहाँ जो) खड़े (थे) वे भी (भय से) काँपे; निन्त्रु उळ नाळिताल् ए-आयु शेष रही इसलिए; पौन्त्राडु-विना मरे; उळन् आयितन्-जीवंत रहा; अ तुणै पोलुम्-वही कारण था; (अन्त्र-ए) । ७०७

यह कहकर शूर्पणखा चली गयी । राक्षस संकट सह नहीं सका । अधीर हो गया । सुध-बुध खोयी और उसके प्राण सूखने लगे । पास जो थे वे भी उसकी स्थिति देखकर डर गये । रावण की आयु शेष थी । इसलिए वह मरा नहीं; जीवित रहा । वही कारण था ! नहीं तो आसार आशादायी नहीं लगते थे । ७०७

इअन्तार्	पिअन्तार्न	विन्नुयिर्	पैअ	मन्तन्
मअन्दा	नुणर्न्दान्तवण्	माडुनिन्	शारै	नोक्किक्
कअन्दा	लैन्नीरदरु	शन्दिर	कान्तत्	तालोर्
शिअन्तार्	मणिमण्डवन्	जैय्हेन्च	चैप्पु	हेन्त्रान् 708

इअन्तार् पिअन्तार् अँत-मृतक फिर जीवित हो आया जैसे; इन् उयिर् पैअ मन्तन्-प्यारे प्राणों को फिर से पाकर राक्षसराज; मअन्तान् उणर्न्दान्-सुध-बुध जो खोई थी, उसे फिर पाकर; अवण् माटु निन्त्रारै नोक्कि-वहाँ पास जो खड़े रहे उनको देखकर; कअन्ताल् अँन्-दुहने पर जैसे; नीर् तरु-जल बहानेवाला; चन्तिर कान्तत्ताल्-चन्द्रकान्त मणि से; ओर्-एक; चिअन्नु आर्-श्रेष्ठ वने; मणि मण्डपम्-सुन्दर मण्डप को; चैय्क् अँत-निमित्त करो, ऐसी; चैप्पुक अन्त्रान्-(आज्ञा) सुनाओ, कहा । ७०८

कुछ देर के बाद रावण होश में आया । तब यही लगा कि मृतक ही जी उठा हो । राक्षसराज अब तक भूला-सा रहा । फिर से स्मरण आ गया । उसने अपने पास जो रहे उनसे कहा कि चन्द्रकान्त-शिलाओं का एक रत्नमण्डप बना लेने को कहो । उन शिलाओं से ऐसा शीतल जल निकलता रहे— मानो कोई उन्हें दुह रहा हो । ७०८

वन्दा	नैडुवानुडै	तच्चन्	मनत्तु	णर्न्दान्
शिन्दा	विनैयत्त्रियुड	गैविनै	यालुज्	जैय्दान्

अन्दाम	नैडुन्दरि	यायिरत्	ताल	मैन्द
शन्दार्	मणिमण्डबन्	दामरै	योनु	नाण 709

नैटु वान् उरै-विस्तृत आकाशलोक का वासी; तच्चत्त-(विश्वकर्मा नाम का) शिल्पी; वन्तान्-वहाँ आया; मत्तुत्तु उणर्न्तान्-मन में समझा; अम् तामम्-सुन्दर और; नैटुम् तरि आयिरत्ताल्-ऊँचे हज़ार खम्भों के साथ; अमैन्त-निर्मित; चन्तु आर् मणि मण्डपम्-सौन्दर्य-भरा रत्नमय मण्डप; तामरैयोनुम् नाण-कमलासन की भी शरम से भरते हुए; चिन्ता वित्तै अन्त्रियुम्-परिकल्पना के साथ; कै वित्तैयानुम्-हस्त-कौशल द्वारा भी; चैय्तान्-रचा । ७०६

विस्तृत आकाशलोक का शिल्पी विश्वकर्मा आया । उसने रावण की इच्छा ध्यान से जान ली । एक सहस्र खम्भों के साथ उसने एक बड़ा मनोरम मण्डप निर्मित किया । ऐसा मण्डप बनाया कि सृष्टि-कर्म में अद्वितीय ब्रह्मा भी देखकर अपनी हीनता पर शरम खाये ! उसमें उसकी भावना, कल्पना आदि का भी विशेष सामर्थ्य प्रकट होता था, बल्कि उसके हस्तकौशल की भी झाँकी मिलती थी । ७०९

कान्दम्	ममुदिन्नळि	काल्वन	काल	मीनिन्
वेन्दन्	नौळियन्त्रियु	मेलौडु	कीळ्वि	रित्तान्
पून्दैन्त्रल्	पुहुन्दुरै	शाळर	मुम्बु	तैन्दान्
एन्दुम्	मणिक्कड्पहच्	चीदळक्	कावि	ळैत्तान् 710

काल मीनिन् वेन्तन्-कालदर्शी नक्षत्रों के राजा; ओळि अन्त्रियुम्-(चन्द्र की) ज्योति के बिना भी; अमुत्तिन् तुळि काल्वन्-अमृत की बूँदें निकालनेवाले; कान्दम्-चन्द्रकान्त पत्थरों को; मेल् ओटु कीळ् विरित्तान्-ऊपर-नीचे सर्वत्र बिछाया; पूम् तैन्त्रल्-मधुर (पुष्पगन्ध-युक्त) मलयपवन; पुकुन्तु उरै-प्रवेश कर रहे, इस निमित्त; चाळरमुम् पुतैन्तान्-गवाक्ष भी बनाये; मणि एन्तुम्-(फूल-फलों के रूप में) रत्नधारी; कड्पक् चीतळ का-कल्पक तरुओं का शीतल उद्यान; अमैत्तान्-निर्मित किया । ७१०

उसने उस मण्डप में ऊपर और नीचे सर्वत्र ऐसे चन्द्रकान्त के पत्थर जड़े जिनसे कालदर्शी, नक्षत्रों के राजा चन्द्र के स्पर्श के बिना भी जल स्रव सकता था । फिर मण्डप में गवाक्ष निर्मित किये, जिनसे मधुर पुष्पगन्धवाही मलयपवन अन्दर आकर ठहर सके । फिर उसके चारों ओर एक कल्प-तरुओं का शीतल उद्यान बनाया जिनके फल, फूल आदि रत्नमय थे । ७१०

आणिक्कमै	पौड्डट्टिन्	मणिच्चुड	रार्वि	ळक्कम्
शेणुड्	डिरुळ्शीप्पन	दैय्व	मडन्दे	मारुहळ्
पूणिड्	पौलिवारुडै	येन्दैडैप्	पौङ्गु	तोळान्
माणिक्क	मानत्तिडै	मण्डबड्ड	गाण	वन्दान् 711

आणिक्कु अमै-प्रामाणिक सोने (की कील) से समता रखनेवाले; पौन् तट्टिन्-

स्वर्ण की बनी थालियों में; मणि चुटर् आर् विळक्कम्-सुन्दर रत्नप्रकाशमय दीप; चेण् उड्ड इळ् चोप्पत्त-जो दूर तक जाकर अन्धकार मिटानेवाले थे; पूणिल् पौलिवार्-आभरणों से शोभित; तैयव मटन्तै मार्क्कळ्-सुरस्त्रियाँ; पुटै एन्तिट-पार्श्व में ले आयीं; पौङ्कु तोळान्-उन्नत भुजा वाला; माणिक्क विमात्तत्तु इटै-माणिक्य-वाहन पर; मण्टपम् काण वन्तान्-मण्डप देखने आया । ७११

रावण उस मण्डप को देखने आया । वह माणिक्यजड़ित एक यान पर आया । पुष्ट और उन्नत कन्धों से युक्त उसके साथ अनेक सहस्र कोटि देवांगनाएँ हाथ में स्वर्णथालियों में दीप लिये आयीं । थालियों का स्वर्ण बहुत ही उच्च कोटि का था । उसका खरापन उसके लिए नियत प्रामाणिक सोने की कील से परखा जाता तो शुद्ध निकलता । दीपों की ज्वालाएँ रत्न ही थीं । उनमें से जो प्रकाश निकलता था वह दूर-दूर तक जाकर अन्धकार को मिटाता था । वे देवांगनाएँ बहुत मनोरम भूषणों से भूषित थीं । ७११

अल्लायिर	कोडि	यडुक्किय	दौत्त	देनुम्
नल्लार्	मुहमाम्	नळिर्वान्लि	विन्त्रि	नामप्
पल्लायिर	कोडि	पत्तिच्चुड	रीन्ऱ	तिङ्गळ्
अल्ला	मुडना	विरुळोडि	यिरिन्द	दन्ऱे 712

नळिर् वान् निलवु इन्ऱि-शीतल आकाश में चाँद नहीं रहा, तो भी; अल् आयिर कोटि-रातें हजारों की संख्या में; अडुक्कियतु औत्ततेत्तुम्-एक के ऊपर एक रखी गयी हों, जैसे रहने पर भी; नल्लार् मुक्कम् आम्-उन सुन्दरियों के मुख रूपी; नाम-श्लाघनीय; पल् आयिर कोटि-अनेक सहस्र कोटि; पत्ति चुटर् ईन्ऱ-शीतल प्रकाशमय; तिङ्गळ् अल्लाम्-चन्द्र सभी; उडना-साथ आने से; इळ्-अन्धकार; ओटि-भागकर; इरिन्तत्तु-हट गया । ७१२

उनके मुख चन्द्र-सम उज्ज्वल थे । अनेक रातों का सम्मिलित अन्धकार हो तो भी बहुत मानाहूँ अनेक सहस्र शीतल प्रकाशदायी मुख रूपी चन्द्र साथ आये, इसलिए चाँद के बिना भी वह अन्धकार दूर हो गया था । ७१२

पौऱ्पुऱ्ऱन	मामणि	यौत्तवडुम्	वूवि	निन्ऱ
कऱ्पत्तरु	विन्गदिर्	नाणिळ्ऱ	कऱ्ऱै	नाऱ
अऱ्पऱ्ऱळि	यप्पह	लाक्किय	दाल	रुक्कन्
निऱ्पत्तैरिक्	किन्ऱु	नीळ्शुडर्	नीर्मे	यन्ऱो 713

पौऱ्पु उऱ्ऱत्त-मनोहारिता से युक्त; मा मणि औत्तपुत्तुम्-श्रेष्ठ नवरत्न; वूविन्-फूल बने; निन्ऱ-ऐसे स्थित; कऱ्प तरुविन्-कल्पतरुओं की; कतिर्-कान्ति-किरणें; नाळ् निळल् कऱ्ऱै-दिन के-से प्रकाश की रेखाओं के समान; नाऱ-निकल

रही थीं; अल् पड्डु अल्लिय-रात का सम्बन्ध मिट गया; पकल् आककियताल्-दिन-सा बनाने से; अरुक्कन् निरूप-सूर्य के (दूर) रहने पर भी; नीळ चुटर् तैरिक्किन्नुत्तु-लम्बी प्रकाश-रेखाएँ निकालना; नीरुमे अन्नी- (कल्पतरुओं का) गुण है न । ७१३

उस उद्यान के कल्पतरु भी आसाधारण थे । उनके फल बहुत ही छटापूर्ण नवरत्न थे । उनसे जो प्रकाश छूटता था उससे दिन-सा प्रकाश होता था । विना सूर्य के ही उजाला देना कल्पतरु का गुण था न ? । ७१३

ऊरुशै	मुदरुपीरि	यावैयु	मीन्ऱि	नीन्ऱु
तेरानिलै	युर्ऱुदोर्	शिनर्दयन्	शैय्ऱै	योरात्
वेराय	पिरुप्पिडै	वेट्कै	विशित्त	दीरुप्प
माऱुरुडल्	पुक्कैन्	मण्डवम्	वन्दु	पुक्कान् 714

ऊरु-स्पर्शेन्द्रिय; ओचै-श्रवणेन्द्रिय; मुतला-आदि; पीरि यावैयुम्-इन्द्रिय सब; नीन्ऱिन् नीन्ऱु-एक सा एक; तेरा-सतर्क नहीं रही; निलै-ऐसी स्थिति में; उर्ऱुत्तु-पड़ा; ओर् चिन्तैयन्-मन वाला; चैय्कै ओरात्-क्या करना, यह न जानकर; वेट्कै विचित्तु-राग ने उसको बांधकर; अतुईरुप्प-खींचा; माऱु ओर् उटल् पुक्कत्तु अन्त-दूसरे एक शरीर में प्रविष्ट हुआ हो ऐसा; मण्डवम् वन्तु पुक्कान्-मण्डप में आ पहुँचा । ७१४

रावण की दशा दयनीय थी । उसकी स्पर्श, शब्द आदि परखनेवाली कोई भी इन्द्रिय सतर्क नहीं थी । एक से एक बढ़कर सब इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गयी थीं । मन भी जड़वत हो गया । क्या करना है, यह भी निश्चय कर नहीं पाया । उधर सीता के प्रति राग उसे बलात् खींच रहा था । उससे वह मानो, दूसरे शरीर में प्रवेश कर रहा हो, इस विचित्र भावना के साथ मण्डप में आ पहुँचा । ७१४

तण्डलिल्	तवम्जैय्	वोर्हल्	वेण्डिन	दायिन्	नल्हुम्
मण्डल	महर	वैलै	यमुदोडुम्	वन्द	दैन्ऱुत्तप्
पण्डरुम्	जुरुम्बु	शेरुम्	पशुमर	मुयिर्त्त	पैम्बोन्
तण्डळिर्	मलरिर्	चैय्द	शीदळच्	चेक्कै	शार्न्दान् 715

तण्डल् इल्-निर्वाध रूप से; तवम् चैय्वोर्कळ-तपस्या करते रहनेवाले; वेण्डिन-जो मांगते हैं उन्हें; तायिन् नल्कुम्-माता के समान देगा; मकर मण्डल वैलै-मण्डलाकार मकरालय (क्षीरसागर); अमुतु ओटुम्-अमृत के साथ; वन्तु अन्त-आया हो जैसे; पण् तरु-संगीत-सम गुंजारशील; चरुम्पु चेरुम्-भ्रमरों से आवृत; पच्चु मरम्-हरे पेड़ों से; उयिर्त्त-निकले; पैम् पोन् तण् तळिर्-ताजे स्वर्णवर्ण शीतल पल्लव; मलरिल्-और फूलों से; चैय्-वनी; चीतळ चेक्कै-शीतल शय्या पर; चार्न्तान्-पहुँचा । ७१५

उसमें एक पुष्पशय्या थी जो क्षीरसागर अमृत के साथ आया हो ऐसा लगती थी । क्षीरसागर तपस्वियों को उनकी याचित वस्तुओं को माता के

समान दे सकता था । यह शय्या भी वैसी थी क्योंकि कल्पतरु के ताजे स्वर्णवर्ण पल्लव और मनोरम फूल उस पर बिछे हुए थे । उस पर सुरम्य संगीत-सा गुंजार करते हुए भ्रमर मँडरा रहे थे । रावण उस शीतल शय्या पर आया । ७१५

नेरिळै	महळिर्	कून्द	तिरैनरै	वाश	नीन्दि
वेरियञ्	जरळच्	चोले	वेतिलान्	विरुन्दु	शैय्य
आर्हलि	यळ्वन्	दन्द	वमिळ्दैन	वीरव	रावि
तीरिन्नु	मुदवर्	कौत्त	तैन्ऱुल्वन्	दिरुत्त	दन्ऱे

716

औरवर् आवि तीरिन्नुम्—एक के प्राणों के जाने की स्थिति में रहे, तो भी; उतवर्कु औत्त—प्राण रोकने में सहायता जो दे सकता था उस; आर्कलि अळ्वम् तन्त—(क्षीर-) सागर की गहराई से प्राप्त; अमिळ्नु अँन—अमृत के समान; तैन्ऱुल्-दक्षिणी (मलय-) पवन; इळै मकळिर् कून्तल्—आभरणालङ्कृता स्त्रियों के केश पर की; तिरै नरै वाचम्—भरी शहद-युक्त सुगन्ध; नीन्ति—तैरकर; वेरि अम् चरळम् चोले—शहदयुक्त, सुन्दर देवदार तरुओं के उपवन में; वेतिलान्—वसन्तकाल का राजा, मन्मथ के; विरुन्नु चैय्य—स्वागत करते; वन्नु इरुत्ततु—आ पहुँचा । ७१६

क्षीरसागर की गहराई से प्राप्त अमृत मरणोन्मुख मनुष्य को जिला कर उसकी सहायता कर सकता है । मलयपवन उसी अमृत के समान वहाँ संचार कर रहा था । वह आभूषणभूषिता सुन्दरियों के केशों के शहद-भरे फूलों की सुगन्धि में घुसकर बाहर आया हुआ था । शीतल देवदार तरुओं से भरे उस उद्यान में वसन्त का राजा मन्मथ उसका स्वागत कर रहा था । इस रीति से वह मलयपवन वहाँ आया । ७१६

शाळरत्	तूडु	वन्दु	तवळ्दलुन्	दरित्त	रेरुडान्
नीळरत्	तड्गळ्	शिन्द	नैरुप्पुह	नोक्कु	नीरान्
वाळ्मनैप्	पुहुन्द	दाण्डोर्	माचुणम्	वरक्कण्	डन्त
कोळुउक्	कौदित्तु	विम्मि	युळैयरैक्	कूविच्	चीन्तान्

717

चाळरत्तु ऊटु वन्नु—खिड़कियों से होकर आया; तवळ्दलुम्—और मन्द-मन्द बहा; तरित्तल् तेरुडान्—तब असहनीय वेदना के साथ; नीळ् अरुत्तड्कळ् चिन्त—लम्बी रक्त-धाराएँ बहाते हुए; नैरुप्पु उक् नोक्कुम्—आग निकालते हुए देखने का; नीरान्—स्वभाव वाला; वाळ् मत्तै पुकुन्तनु—वास के घर में घुसा; ओर् माचुणम्—एक सर्प; आण्डु वर—वहाँ आया; कण्डु अन्न—देखा-सा; कोळु उर कौत्तित्तु—संकट पाकर उबला; विम्मि—सिसकते हुए; उळैयरै—समीपस्थ लोगों को; कूवि—पुकार कर; चीन्तान्—बोला । ७१७

वह मलयपवन खिड़कियों के रास्ते से अन्दर आया । पर रावण उसे सह नहीं सका । उसकी आँखों से रक्त की बूँदें ढलक आयीं । अंगार भी प्रकट हुए । वह कोप, दुःख दोनों से प्रभावित था । उसने उस मलयपवन

को वासस्थान के घर में घुस आये सर्प के रूप में देखा । उससे कष्ट हुआ और उस पर गुस्सा भी । वह उबल पड़ा । सिसकने भी लगा । समीपस्थ भृत्यों को पास बुलाकर उसने (निम्न बातें) कहीं । ७१७

कूवलि	नुयिर्त्त	शित्नी	रुलहिनैक्	कुप्पुर्	ऐन्नन्
तेवरि	तीरुव	तैनै	यित्तलुम्	जैयत्तक्	कान्तो
एवलि	नन्दि	वन्दिड्	गिव्वळ	लैय्दिर्	ऐन्नाक्
कावलि	तुळैयर्	तम्मैक्	कौणरुदिर्	कडिदि	तैन्नान् 718

कूवलिन् उयिर्त्त-(छोटे से) कुएँ से छनकर निकला; चिल् नीर्-थोड़ा जल; उलकिनै-संसार भर को; कुप्पुर् ऐन्न-डुबो रहा हो जैसा; तेवरिन् तीरुवन्-देवों में एक; ऐन्नै-मुझे; इत्तलुम् जैय तक्कान्तो-संकट दे सका क्या; इ अळल्-यह आग; एवल् इन्दि-विना अनुमति के; इड्कु वन्तु अय्यतिर्-यहाँ आ पहुँची है; ऐन्-कहकर; कावलिन् तुळैयर् तम्मै-पहरेदारों को; कटितिन् कौणरुदिर्-जलदी लाओ; ऐन्नान्-कहा । ७१८

कूप का रिसता जल क्या संसार भर को डुबो सकेगा ? वैसा देवों में एक यह मुझे इतना कष्ट दे सकता है क्या ? यह अग्निदेव मेरी आज्ञा के बिना आया कैसे ? बुलाओ पहरेदारों को । ७१८

अव्वळि	युळैय	रोडि	याण्डवर्क्	कौणर्द	लोडुम्
वैव्वळि	यमैन्द	शैङ्गण्	वैरुवुर्	नोक्कि	वैय्योन्
शैव्वळि	दैन्	लाड्कुत्	तिरुत्तिनीर्	नीर्हो	लैन्न
इव्वळि	यिरुन्द	वालैत्	तडैयवर्	किल्लै	यैन्डार् 719

अव्वळि-तब; उळैयर्-पास जो रहे, वे; ओदि-दौड़े; आण्डु-वही; अवर् कौणरुत् ओडुम्-उनको (बुला) लाये, तब; वैय्योन्-आततायी राक्षस ने; वैम् वळि अमैन्न-क्रूर बनी; चैम् कण्-लाल आँखों से; वैरुवु उर्-भयभीत करते हुए; नोक्कि-देखकर; नीर् कौल्-तुम्हीं ने तो; तैन्डलाड्कु-मलयपवन को; चैल् वळि तिरुत्तिनीर्-जाने का मार्ग दिखाया; ऐन्न-पूछा, तो; इ वळि इरुन्त कालै-यह (खिड़कियों का) मार्ग जब रहता तब; अवर्कु तटै इल्लै-उनको रोक नहीं; ऐन्डार्-कहा । ७१९

समीप जो रहे वे भृत्य दौड़े । उन्होंने पहरेदारों को बुलाया और वे आये । निर्मम रावण क्रूर आँखों से उनको भयभीत करते हुए तरेरा और पूछा कि मलयपवन को अन्दर आने का सीधा मार्ग तुम्हीं ने बना दिया न ? तब उन्होंने उत्तर दिया कि जब खिड़कियाँ हैं, तब उसको आने से कौन रोक सकता है ? कोई बाधा नहीं होगी । ७१९

वैण्डिय	दुणर्न्दु	शैय्वान्	विण्णवर्	वरुव	रैन्डाल्
माण्डु	पोलुड्	गौळ्है	यान्नुडै	वन्सै	वल्लै

तेण्डिनीर् तिशैह डोरुज् जेणुर् विशैयिर् चैल्हुर्
रीण्डिवन् इन्नैप् पड्डि यिरुज्जिरै यिडुदि रैन्नान् 720

वेण्डियतु उणरन्तु चैय्वान्-में जो चाहूँ वही करने के लिए; विण्णवर् वरुवर्
अँन्नान्-सुरलोकवासी आते हैं, तो; यान्तुदै कौळकै वन्नै-मेरे (शासन-) सिद्धान्त का
बल; माण्डतु पोलुम्-मिट गया शायद; वल्लै-शीघ्र; नीर् तिचैकळ् तोरुम्-
तुम दिशा-दिशा में; तेण्टि-खोजकर; चेण् उड्-बहुत दूर; विचैयिल् चैल्कुर्कु-
तेज जाकर; इवन् तन्नै-इसको; पड्डि-पकड़कर; ईण्डु-यहाँ; इरुम् चिरै-
बड़े कारागृह में; इट्टिर्-डाल दो; अँन्नान्-यह हुक्म दिया । ७२०

रावण को आश्चर्य हुआ । देवता हैं तो मेरी इच्छा के अनुसार सेवा
करने के लिए । आज बात विपरीत चली है । क्या मेरा शासन अपना
अधिकार-बल खो गया है ? दौड़ो । दिशा-दिशा में भागो और इस
पवनदेव को पकड़ो और भयंकर कारागृह में डाल दो । ७२०

काड्डिन्नोन् इन्नै वाळा मुनिदलिर् कण्ड दिल्लै
कूड्डुम्बन् दैन्नै यित्तै कुरुहुमाड् कुडित्त वाड्डाल्
वेड्डुर्गुड् गरुड्गट् चीदै सैय्यरुळ् पुनैये नैन्नान्
आड्डाला लडुत्त दैण्णु मसैच्चरैक् कौणर्दि रैन्नान् 721

काड्डिन्नोन् तन्नै-पवन पर; वाळा मुनितलिल्-अकारण कोप करने से; कण्डतु
इल्लै-कोई लाभ नहीं देखते; कुडित्त आड्डाल्-अपनी इच्छा के अनुसार; वेल् तरुम्-
भाला-तुल्य; करुन् कण्-असितेक्षणा; चीतै-सीता की; सैय्य अरुळ्-सच्ची कृपा
का; पुतैयेन अँन्नान्-धारक नहीं वनूँ तो; कूड्डुम् वन्तु-यम भी आकर; अँन्नै-
मुझे; इन्नै कुरुकुम्-अभी पा लेगा; आल्-इसलिए; अट्टुत्ततु-आगे जो करना है;
आड्डाला अँण्णुम्-बुद्धि-बल से सोचनेवाले; अमैच्चरै-मन्त्रियों को; कौणर्दि-
लाओ; अँन्नान्-कहा । ७२१

रावण ने फिर भी सोचा कि वायुदेव पर बेकार क्रोध दिखाने से क्या
लाभ ? कुछ नहीं देखता । अगर अपनी इच्छा के अनुसार सीताजी की
कृपा पा नहीं सकूँगा तो यम भी मुझे मारने के लिए आ पहुँचेगा । इसलिए
जो आगे की करनी के बारे में, अपनी बुद्धि के बल पर सोचकर मार्ग बता
सकते हैं वे हमारे मन्त्री ही हैं । इसलिए चलकर उनको बुला लाओ ।
उसने श्रुतियों को आज्ञा दी । ७२१

एवित्त शिलत रोडि यैयैनु मळवि लैङ्गुम्
कूविनर् कूव लोडुड् गुरुहिनर् कौडित्तिण् डेरुमेल्
माविनिर् चिविहै तम्मेन् मळैमदक् कळिड्डिन् मीदिल्
तेवरुम् वानन् दन्तिर् शिशैदौरुज् जिन्दे शिन्द 722

एवित्त विलतर् ओटि-आज्ञापित श्रुत्य दौड़े और; एय् अँनुम् अळविल्-‘रे’ कहने

के समय के अन्दर; अँडकुम् कूवितर्-सर्वत्र पुकारा; कूवलोडुम्-पुकारने पर; तेवरुम्-देव भी; वातम् तन्तिल्-आकाश में; तिचै तौरुम्-दिशा-दिशा में; चिन्तै चिन्त-चिन्ताग्रस्त हो रहे और; कौटि तिण् तेर् मेल्-ध्वजासहित सुबूढ़ रथों पर; मावितिल्-अश्वों पर; चिविकै तममेल्-शिविकाओं पर; मळै मत कळिइरिन् मीतिल्-मेघवर्ण मत्तगजों पर; कुरुकितर्-(वे मन्त्री) रावण के पास आये । ७२२

तुरन्त कुछ भृत्य दौड़े । 'रे' कहने की जितनी देर में सब जगह दौड़कर उन्होंने ढेर लगायी । तो मन्त्री लोग आये । कुछ एक मन्त्री ध्वजामण्डित रथों पर आये । कुछ घोड़ों पर और कुछ पालकियों में आये । कुछ मेघसदृश मत्तगजों पर सवार हो आये । तब देव सब आकाश में एकत्र हो गये और वे बहुत ही चिंतित दिखाई दिये । ७२२

वन्दमन्	दिरिह	ळौडु	माशउ	मनत्ति	नैण्णिच्
शिन्दैयि	नितैन्द	शैय्युज्	जैय्यैयन्	रैळिवि	नैज्जन्
अन्दरज्	जैल्व	दाण्डोर्	विमानत्ति	तारु	मिन्डि
इन्दिय	मडक्कि	निन्ऱ	मारीश	तिरुक्कै	शेरुन्दान् 723

वन्त मन्तिरिक्कोट्टु-आगत मन्त्रियों-सह; माचु अउ मनत्तिन् अँण्णि-दोष-रहित रीति से मन में सोचकर; चिन्तैयिल् नितैन्त-चित्त में सोचा हुआ; जैय्युम् जैय्यैयन्-करने में समर्थ; रैळिविन् नैज्जन्-सुलझा हुआ विचारक; आण्डु-तब; अन्तरम् जैल्वतु-आकाशचारी; ओर् विमात्तत्तिन्-एक (पुष्पक-) यान पर; आरुम् इन्डि-विना किसी को साथ लिये (अकेले); इन्तियम् अटक्कि निन्ऱ-इन्द्रिय-दमन जो किये रहा; मारीचन् इरुक्कै चेरुन्तान्-मारीच के यहाँ जा पहुँचा । ७२३

मन्त्री आये । मंत्रणा हुई । कोई त्रुटि न रहे, ऐसा उपाय सोचा गया । रावण दृढसंकल्प था, कार्यचतुर था । वह आकाशचारी एक यान पर चढ़ा और मारीच के पास आया, जो इन्द्रियों का दमन करके तपस्या करता था । ७२३

8. मारीशन् वदैप् पडलम् (मारीच-वध पटल)

इरुन्दमा	रीश	तन्द	विरावण	नैय्द	लोडुम्
पौरुन्दिय	पयत्तिन्	शिन्दै	पौरुमुर्ऱु	वैरुवु	हिन्ऱान्
करुन्दड	मलैयनानै	यैदिरुहोण्डु	कडन्गळ्	यावुम्	
तिरुन्दिय	शैय्दु	शैवित्	तिरुमुहम्	नोक्किच्	चैप्पुम् 724

इरुन्त मारीचन्-(तपोरत जो) रहा, वह मारीच; अन्त विरावणन् अयत्तु ओटुम्-उस रावण के आते ही; पौरुन्तिय-उत्पन्न; पयत्तिन्-मय के कारण; चिन्तै पौरुमुर्ऱु-व्यग्र-मन होकर; वैरुवुकिन्ऱान्-डरते-डरते; करुम् तटम् मलै अन्तान्-काले बड़े पर्वत के समान उसको; अँतिर् कौण्डु-स्वागत करके; कटन्गळ् यावुम्-कर्तव्य सब; तिरुन्तिय जैय्यु-उचित रूप से करके; चैव्वि तिरुमुक्क नोक्कि-दर्शनीय उसका मुख देखकर; चैप्पुम्-(यों) बोला । ७२४

तपोरत मारीच ने रावण को देखा । जब रावण आया तो उसे बड़ा भय हो गया । भय के कारण चित्त व्याकुल हो गया । उसने बड़े काले पर्वत-सम रावण की अगवानी की । फिर अतिथि-सत्कार उचित रीति से किये । बाद उसके दर्शनीय मुख को देखकर वह बोला । ७२४

शन्द	मलर्त्तत्तण्	कइप्पह	नीळइ	उलैवर्क्कुम्
अन्दह	तुक्कु	मज्ज	वडुक्कु	मरशाळ्वाय्
इन्द	वत्तत्तेन्	त्तिन्	लिरुक्कै	येळियोरिन्
वन्द	करुत्तेन्	शील्लुदि	येन्नान्	मरुह्तिन्नान् 725

मरुह्किन्नान्-भ्रमित; चन्तम् मलर्-सुन्दर फूलदार; तण् कइप्पक नीळ-शीतल कल्पतरु की छाया में रहकर शासन करनेवाले; तलैवर्क्कुम्-देवेन्द्र को; अन्तकतुक्कुम्-यम को भी; अज्च अटुक्कुम्-भयभीत होने देते हुए शासन करते हुए; अरच्च आळ्वाय्-राज्यपालन करनेवाले; इन्त-इस; वत्तत्तु-वन में; येन् इन्तल् इरुक्कै-मेरे संकट-दायक वासस्थान में; येळियारिन्-दीन के समान; वन्त करुत्तु-आने का अर्थ; येन्-क्या है; शील्लुति-कहो; येन्नान्-कहा । ७२५

मारीच के मन में संशयजनित भ्रम था । देवेन्द्र मनोरम शीतल कल्पतरु की छाया में सुख से रहकर आकाशलोक का शासन करता है । यम है । उनको भी भयभीत करते हुए शासन करनेवाले राजा ! तुम इस वन में मेरे तुच्छ और कष्टदायी वासस्थान में दीन मनुष्य के समान आये हो ! इसका क्या अर्थ है ? बताओ । —मारीच ने जानना चाहा । ७२५

आन्	दनेत्तु	मावि	तरित्ते	तयर्ह्तिन्नेन्
पोन्नु	पोऽपु	मेन्मैयु	मइऽन्	पुहळोडुम्
यान्	दुनक्किन्	इऽड	नुरैक्के	त्तिन्नियेन्ना
वान्	वरुक्कु	नाण	वडुक्कुम्	वशैमन्तो 726

आन्तु अनेत्तुम्-आने के (सभी) कष्ट आ गये; आवि तरित्तेन्-(किसी तरह) प्राण धारण कर रहा हूँ; अयर्ह्तिन्नेन्-थक गया हूँ; येन् पोऽपु मेन्मैयुम्-मेरा सहत्व और गौरव; पुहळ् ओटुम् पोन्तु-कीर्ति के साथ चले गये; इत्ति-अब; यान्-मैं; उतक्कु-तुम्हें; इन्नु अऽडन् उरैक्केन्-आज की स्थिति कैसे कहूँ; येन्ना-कहकर; वान्तवरुक्कुम्-देवों से भी; नाण-शरमाएँ; अटुक्कुम् वचै-ऐसा (जो) अपयश आया है; (मन्-ओ) । ७२६

रावण ने कहा कि मुझ पर सभी तरह के संकट आ चुके हैं । प्राण तो नहीं गये पर अत्यन्त शिथिल हूँ । मेरी महिमा, गौरव और कीर्ति सब चले गये । तुमसे मैं क्या कहूँ ? देवों से भी हम शर्मियें, ऐसी निन्दा आ लगी है । ७२६

वन्मै	तरित्तोर्	मानिडर्	मरुड्ड	गवर्वाळाल्
निन्मरु	हिक्कु	नाशि	यिळक्कु	निलैनेर्न्दाल्
अन्मर	बुक्कु	निन्मर	बुक्कु	मिदन्मेलोर्
पुन्मै	तैरिप्पिन्	वेरिनि	युण्डो	पुहळ्वेलोय् 727

पुहळ्वेलोय्—सर्वप्रशंसित भालाधारी; मानुटर्—मानव; वन्मै तरित्तोर्—बलशाली हो गये हैं; मरुड्ड—और; अड्कु—वहाँ (दण्डक वन में); अवर्—उन मानवों के द्वारा; वाळाल्—कटार से; निन् मरुक्किक्कु—तुम्हारी भांजी की; नाचि इळक्कुम्—नासिका खोने की; निलै नेर्न्ताल्—दशा हुई तो; अन् मरपुक्कुम्—मेरे कुल का; निन् मरपुक्कुम्—और तुम्हारे कुल का; इतन् मेल् ओर् पुन्मै तैरिप्पिन्—इससे बढ़कर हेयता की बात; इति वेरु उण्टो—दूसरी है क्या । ७२७

शंसित भालाधारी मारीच ! अल्प मनुष्य आज बलशाली हो गये हैं । और स्थिति ऐसी हो गयी कि दण्डकवन में एक मनुष्य ने तुम्हारी भांजी शूर्पणखा की नाक काट ली । फिर तुम्हारे और मेरे कुल का क्या मान रहा ? इससे बढ़कर हेयता हो सकती है क्या ? । ७२७

तिरुहु	शित्तत्तान्	मुदिर	मलैन्दोर्	शिरियोर्नाळ्
परुहित	नैन्डाल्	वैन्डि	नलत्तिड्	पळियन्डो
इरुहै	शुमन्दा	यिनिदि	तिरुन्दा	यिहल्वेलुन्
मरुह	रुलन्दा	रौरुवन्	मलैन्दान्	वरिविल्लाल् 728

तिरुहु चित्तत्ताल्—ऐंठे कोप के साथ; मुदिर मलैन्तोर्—प्रचण्ड रूप से जिन्होंने युद्ध किया; चिरियोर् नाळ् परुहितन्—उन मेरे छोटीं के प्राण पी लिये; अन्डाल्—तो; वैन्डि नलत्तिन्—विजय के गौरव पर; पळि अन्डो—बट्टा नहीं है क्या; इकल् वेल् उन् मरुक्—युद्धोपयोगी भालाधारी तुम्हारे भांजे; उलन्तार्—मरे; औरुवन्—अकेले एक मनुष्य ने; वरि विल्लाल्—बन्धनयुक्त धनुष ले; मलैन्तान्—युद्ध करके मिटा दिया; इरु कै च्चुमन्ताय्—तुम (हाथ जोड़े) दोनों हाथों को सिर पर धारण किए हो; इतितु इरन्ताय्—सुखपूर्वक रहते हो । ७२८

ऐंठे (अपार) क्रोध के साथ मेरे छोटे भाइयों ने प्रचण्डता के साथ उससे युद्ध किया पर उसने उनके प्राण पी (हर) लिये । तो हमारी विजयशीलता पर बट्टा नहीं लगा क्या ? युद्धोपयोगी भाले रखनेवाले तुम्हारे भांजे मरे; एक मनुष्य ने अपने धनुष के बल से उनसे युद्ध करके उनको मिटा दिया; और तुम इधर सिर पर जुड़े हाथ रखकर तपस्या कर रहे हो सुखपूर्वक ! । ७२८

वैप्पळि	यादैन्	नैन्जु	मुलन्देन्	विळिहिन्ड्रेन्
औप्पिल	रैन्ड	पोर्शैय	वौल्ले	नुडन्वाळुम्
तुप्पळि	शैव्वाय्	वज्जियै	वव्वत्	तुणैहोण्डिड्
टिप्पळि	निन्निड्	रीरिय	वन्दे	निवर्णैन्डान् 729

वैष्णु अलियातु-मन का ताप नहीं मिटता; नैञ्चुम् उलन्तेन्-मन व्यग्र है; विळिकिन्नेन्-मर रहा हूँ; ओप्पु इलर्-समान नहीं; अँन्ने-इसीलिए; पोर् चैय ओल्लेन्-लड़ने में सहमत नहीं हूँ; उटन् वालुम्-उनके साथ रहनेवाली; तुप्पु अळि-प्रवाल को हरानेवाले; चैम् वाय-अरुणाधरा; वञ्चियै-लता (-समाना स्त्री) को; वव्व-हर लाने के लिए; तुणै कौण्डु इट्टु-तुम्हें अपना सहायक बनाकर; इ पळि-यह अपमान; निन्तिल् तीरिय-तुम्हारे द्वारा दूर करने के लिए; इवण्-यहाँ; वन्तेन्-आया; अँन्नान्-कहा । ७२६

इससे मेरा मन जलता है । जलन नहीं मिटती । मैं मन मारे मरणोन्मुख दशा में हूँ । वे मेरे समान नहीं हैं; इसलिए उनके साथ लड़ने को मेरा मन नहीं मानता । पर बदला तो लेना ही है । उनके साथ एक स्त्री है । उसके अधर प्रवाल को भी सुन्दरता में मात देनेवाले हैं । वह लता के समान है । उसको तुम्हारी सहायता से हर लाना चाहता हूँ, ताकि मेरा यह अपयश छूटे ! इसीलिए इधर आया हूँ । —रावण ने अपना अभिप्राय कहा । ७२९

इच्चौ	लत्तैत्तुञ्ज	जौल्लि	यरक्क	नैरिहिन्ऱ
किच्चि	नुरुक्किट्	टुयत्तन	तैन्नक्	किळ्ऱवान्मुन्
शिच्चि	यैन्नत्तन्	मैय् चैवि	पौत्तित्	तैरुमन्ऱान्
अच्च	महर्ऱिच्	चैर्ऱ	मत्तत्तौ	डैर्हिन्ऱान् 730

अरक्कन्-रावण ने; अँरिक्किन्ऱ किच्चिन्-जलती आग में; उरक्कु इट्टु-इस्पात गलाकर; उय्न्नत्तन् अँन्न-गरम द्रव को कानों में डाला हो, ऐसा; इ चौल् अनैत्तुम्-यह सारा वचन; चौल्लि-कहकर; किळ्ऱवान् मुन्-उकसानेवाले के सामने; चो चो अँन्न-छिः छिः कहकर; तन् मैय् चैवि पौत्ति-अपने कानों पर हाथ रखकर; तैरुमन्ऱान्-गड़वड़ाकर; अच्चम् अक्ऱि-फिर भय त्यागा; चैर्ऱ मत्तत्तौ-क्रुद्ध मन के साथ; अँक्किन्ऱान्-बोला । ७३०

ये शब्द मारीच के कानों में पिघलते इस्पात के समान पड़े । रावण ने ये वचन कहकर उसको उकसाया । तब मारीच ने अपने दोनों हाथ दोनों कानों में धर लिये । कहा— छिः छिः ! वह पहले गड़वड़ाया । फिर भय त्यागकर कोप के साथ वह यों बोला । ७३०

मन्ना	नीयुन्	वाळ्वै	मुडित्ताय्	मदियर्ऱाय्
उन्ना	लन्ऱो	दूळ्वित्तै	यैन्ऱे	युणर्हिन्ऱेन्
इन्ना	वेनुम्	यानिडु	रैप्पे	त्तिदमैन्ऱाच्
चैन्ऱा	तन्ऱे	यन्नव	नुक्कुत्	तुणिवैल्लाम् 731

मन्ना-राजा; नी उन् वाळ्वै मुडित्ताय्-तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली; मति अर्ऱाय्-बुद्धि-हीन हो गये; ईतु उन्नाल् अनु-यह तुम्हारा कृत्य नहीं; ऊळ्वित्तै अँन्ने-प्रारब्ध ही; उणर्किन्ऱेन्-समझता हूँ; इन्ना एनुम्-बुरा लगे तो भी;

यान्-में; इतम् इतु-हित यह; उरैप्पेन्-वताऊंगा; अँन्ना-कहकर; अन्तवत्तुक्कु-उसे; तुणिवु अँल्लाम्-सारा हितकर उपदेश के वचन; चोन्तान्-कहे; (अन्नु-ए) । ७३१

हे राजा ! वस ! तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली । बुद्धि खो चुके । मैं समझता हूँ कि यह तुम्हारा काम नहीं; वरन् प्रारब्ध का तकाजा है । मेरा कहना तुमको बुरा लगेगा; तो भी तुमको हित की बात कहूँगा । —ऐसा कहकर मारीच ने रावण को अच्छी बातों का सब उपदेश किया । ७३१

अड्ड	करत्तो	डुन्डलं	नीये	यत्तन्मुन्निल्
पड्डिनै	युयत्ताय्	पड्डल	कालम्	पशिहूर
उड्डुयि	रुळ्ळ	तेय	वुलन्दाय्	पिनैयन्डो
पैड्डनै	शैल्वम्	पिन्ति	दिळन्दार्	पैड्डलामो 732

अड्ड-खण्डित; करत्तोडु उन्तलै-अपने हाथ के साथ सिर को; अत्तु मुन्निल्—(होम की) अग्नि में; नीये पड्डिनै उयत्ताय-स्वयं पकड़कर तुमने होम किये; पल पल कालम्-बहुत समय तक; पचि कूर उड्डु-बहुत भूख से पीड़ित रहकर; उळ्ळ उयिर् तेय-अन्दर प्राणों के क्षीण होते; उलन्ताय्-कण्ट उठाया (तप किया); पित्तै अन्डो-बाद तो; चैल्वम् पैड्डनै—(त्रिलोकाधिपत्य की) सम्पत्ति पायी; इळन्ताल्-खो जाओ तो; पिन् इतु पैड्डल् आमो-फिर पाना हो सकता है क्या । ७३२

तुमने अपने ही खण्डित हाथ और सिरों को अपने ही हाथ से होमाग्नि में होम किया । कितने ही लम्बे काल तक भूखा-प्यासा रहकर, प्राणों को क्षीण होने देते हुए कठोर कण्ट सहे । तभी जाकर यह सारी विभवश्री तुम्हारी हुई ! (त्रिलोकाधिपत्य भी मिला ।) तुम अब इसको खो जाओ तो पुनः प्राप्त हो सकता है क्या ? । ७३२

तिडुत्तिड	नाले	शैय्दव	मुड्डित्	तिरुवुड्डाय्
मडुत्तिड	नाले	शौल्लुदि	शौल्लाय्	मडुवल्लोय्
अडुत्तिड	नाले	यैय्दिनै	यन्डो	वडुनीयुम्
पुडुत्तिड	नाले	पिन्नु	मिळक्कप्	पुहुवायो 733

चौल् आय् मडै-निरुक्तांगी वेद में; वल्लोय-निपुण; तिडुम् तिडुन् आले-समर्थ सामर्थ्य से; चैय् तवम् मुड्डि-करणीय सभी तप पूरा करके; तिरु उड्डाय्-यह सारा वैभव पाया; मडु तिडुन् आले-धर्म-विरुद्ध बल से; चौल्लुति-यह बात कहते हो; अडु तिडुत्ताले-धर्म-सम्मत बल से; अँय्तिनै अन्डो-(यह विभूता) पायी न; अतु-वह; पुडु तिडुत्ताले-धर्म-विरुद्ध बल से; पिन्नुम् इळक्क-उसको फिर से खोने के लिए; पुहुवायो-इस काम में प्रविष्ट होओगे क्या । ७३३

निरुक्त-सहित वेद के विशारद ! समर्थ सामर्थ्य के साथ, करणीय तप आदि करके तुमने यह सम्पत्ति पायी है । अब अधार्मिक बल हो गया है, उससे तुम यह बात कह रहे हो । यह सारा वैभव तुमने धर्म-मार्ग

पर चलकर ही प्राप्त किया था । अब इसे अधार्मिक कार्य करके खोना चाहोगे क्या ? । ७३३

नारड्	गौण्डार्	नाडु	कवरन्तार्	नडैयिल्ला
वारड्	गौण्डार्	मड्डोर्	वड्काय्	मनैवाळुम्
तारड्	गौण्डा	रन्त्रिवर्	तम्मैत्	तरुमन्तान्
ईरुड्	गण्डाय्	कण्डह	रुयन्दा	रैवरैया 734

ऐया-प्रभु; नारम् कौण्डार्-जल हरनेवाले; नाडु कवरन्तार्-राज्य छीनने वाले; नटै इल्ला-प्रथा के विरुद्ध; वारम् कौण्डार्-प्रजा से कर लेनेवाले; मड्डु औरवड्डु आय्-दूसरे की गृहिणी बनकर; मनै वाळुम्-उसके घर में रहनेवाली; तारम् कौण्डार्-उसकी पत्नी को हर लानेवाले; अन्त्रु इवर् तम्मै-ऐसे इन लोगों को; तरुमम् तान्-धर्मदेवता स्वयं; ईरुम्-काट कर मार देता है; कण्टकर् उयन्तार्-पापी बचे; अैवर्-कौन; कण्टाय्-देखा । ७३४

प्रभु ! तुम सोचो । पराया जल हरनेवाला, राज्य छीननेवाला, अक्रम कर उगाहनेवाला, परदारा ग्रसनेवाला —इनको धर्मदेवता स्वयं आकर मिटा देगा । पापी कौन नाश से बचा है अब तक, सोचो । ७३४

अन्दर	मुड्डा	तहलिहै	पौड्पा	लळिवुड्डान्
इन्दिर	नौप्पा	रैत्तनै	योर्दा	मियलड्डार्
शैन्दिर	वौप्पा	रैत्तनै	योर्निन्	रिरुवुण्वार्
मन्दिर	मड्डा	रुड्ड	दुरैत्ताय्	मदियड्डाय् 735

अन्तरम् उड्डान्-सुरलोकाधिपति; अकलिक पौड्पाल्-अहल्या के सौन्दर्य से; अळिवु उड्डान्-विगड़ा; इन्तिरन् औप्पार्-इन्द्र-सम; अैत्तनैयोर् ताम्-कितनों ही ने; इयल् अड्डार्-गौरव खोया; चैम् तिरु औप्पार्-सुन्दर लक्ष्मी-सम स्त्रियाँ; अैत्तनैयोर्-कितनी ही; निन् तिरु उण्पार्-तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं; मन्तिरम् अड्डार्-विचार-शक्ति से हीन लोगों की; उड्डतु-(सी) बात; उरैत्ताय्-कहते हो; मति अड्डाय्-बुद्धिहीन हो । ७३५

सुरलोकाधिपति इन्द्र अहल्या के सौन्दर्य से (आकृष्ट होकर) संकट में पड़ा । इन्द्र के समान कितने ही लोग अपना गौरव खो चुके हैं ! (तुम्हारे पास स्त्रियों की कमी है क्या ?) लक्ष्मी-सम कितनी ही सुन्दरियाँ तुम्हारे पास रहकर तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं ! फिर विवेक-हीन मनुष्य की अच्छी मन्त्रणा जिसे मिली नहीं हो उसकी बात कहते हो ! साफ़ है कि तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है । ७३५

शैय्दा	येतुन्	दीविनै	योडुम्	वळियल्ला
दैय्दा	दैय्दा	दैय्दि	निराम	तुलहीन्डान्

वेदा	लन्	वाळिहळ	कौण्डुन्	वळिथोडुम्
कौयदा	नन्ने	कौरु	मुडित्तुन्	कुळुवैल्लाम् 736

वैय्याय एनुम्-यह करोगे तो भी; तीवित्तै ओट्टुम्-पाप के साथ; पळि अल्लातु-अपयश से हीन; वैय्यातु-जो है, वह मिले बिना; वैय्यातु-नहीं रहेगा; वैय्यित्तु- (तुम्हारा संकल्प) पूरा होगा तो भी; उलकु ईन्डान् इरामन्-लोक-जनक श्रीराम ने; वेताल अन्त- (मुनि-) शापों के समान; वाळिकळ कौण्डु-शरों से; उन् वळि ओट्टुम्-तुम्हारी संतति के साथ; कौरुम् मुडित्तु-शक्ति मिटाकर; उन् कुळु अल्लाम्-तुम्हारा दल और बल; कौय्यान् अन्ने-मिट्टा दिया न, समझो । ७३६

अगर तुम यह काम करोगे तो यह निश्चित है कि पाप और अपयश के सिवा कुछ नहीं मिलेगा; नहीं ही मिलेगा । तुम्हारा मनोरथ पूरा हो गया तो भी यह निश्चय समझ लो कि लोकपिता श्रीराम ने अपने मुनि-शाप-सम अमोघ वाणों से तुम्हारी संतति के साथ तुम्हारा सारा दल-बल मिटा दिया ! । ७३६

अन्डा	नैन्ने	यैण्णलै	योनी	करनैन्वान्
निन्डा	नैक्कु	मेलुळ	नैन्नु	निलैयम्मा
तन्डा	नैत्तन्	रेरौडु	माळत्	तनुवौन्डाल्
कौन्डान्	मुड्डुड्	गौल्ल	मन्तत्तिड्	कुडिहीण्डान् 737

करन् अन्पान्-खर जो या; निन् तानैक्कुम् मेल-तुम्हारी सेवा का नायक; अन्नुम् निलै उळन्-उस पद में रहा न; तन् तात्तै-अपनी सेना; तन् तेर् ओट्टुम्-अपने रथ के साथ; माळ-मर मिटे, ऐसा; तन् ओन्डाल्-एक ही धनु से; कौन्डान्-श्रीराम ने मारा; मुड्डुम्-सारा वंश; कौल्ल-मिटाने का; मन्तत्तिड् कुडि कौण्डान्-मन में संकल्प रखता है; अन्ते-क्या ही आश्चर्य है; अन् तान् नी अण्णलैयो-क्यों ही तुमने यह बात नहीं सोची; अम्मा-री माँ । ७३७

खर क्या मामूली राक्षस था ? वह तुम्हारी सेना में नायक का पद वहन करता था । श्रीराम ने एक ही धनु की सहायता से उसका उसकी सेना और रथ सहित काम तमाम किया । और उसका यही संकल्प है कि राक्षसकुल को ही मिटा दूँ । यह क्या आश्चर्य है ! तुमने यह सब क्यों नहीं सोचा ? माँ ! कैसी बुद्धिहीनता है ! । ७३७

वैय्योर्	यारे	वीर	विरादन्	रुणैवैय्योर्
ऐयो	पोना	नम्बौडु	मुम्बर्क्	कवर्त्तैन्डाल्
उय्वार्	यारे	नम्मि	लैन्क्कौण्	डुणर्दोरुम्
नैया	निन्ने	नीयि	दुरैत्तु	नलिवायो 738

वैय्योर्-कठोर वीरों में; वीर विरादन् तुणै-वीर विराध जितना; वैय्योर् यारे-भयंकर कौन है; अवन्-वह भी; ऐयो-हाय; अम्पौट्टुम्-राम के वाण के साथ; उम्पड्क्कु पोनान्-आकाश को चला गया; अन्डाल्-तो; नम्मिल् उय्वार्

यारे-हममें वचेगा कौन; अंत कौण्टु-यह सोचकर; उणर् तोरुम्-ज्यों-ज्यों विचार करता हूँ, त्यों-त्यों; नैया नित्तेन्-विगलित होता हूँ; नी इतु उरैत्तु-तुम यह कहके; नलिवायो-और भी सताते हो क्या । ७३८

बड़े भयंकर और क्रूर वीरों में वीर विराध के समान अति बलिष्ठ वीर कौन होगा ? हाय ! वह विराध भी श्रीराम के एक ही शर से, उस शर के साथ ही स्वर्ग पहुँच गया न ! तो हममें कौन ठहर सकता है ? यही सोच-सोचकर मैं व्यग्र हो रहा हूँ । शिथिल हो रहा हूँ । तुम यह बात कहकर और भी निर्बल कर रहे हो मुझे । ७३८

माण्डार्	माण्डार्	नीयित्ति	माळ्वार्	तौळिल्शैय्य
वेण्डा	वेण्डा	शैय्दिडि	नुय्वान्	विदियुण्डो
आण्डा	राण्डा	रैत्तत्तै	यैन्गे	नत्तनाळार्
ईण्डा	रीण्डार्	निन्ऱव	रैल्ला	मिलरन्ऱो 739

माण्डार् माण्डार्-जो मरे, वे मर गये; नी इत्ति-तुम अब भी; माळ्वार् तौळिल्-मरणासक्त का काम; चैय्य वेण्डा वेण्डा-मत करो, मत करो; चैय्तिटिन्-करोगे तो; उय्वान् वित्ति-बचने का रास्ता; उण्टो-है क्या; आण्डार् आण्डार्-शासक (के बाद) शासक; अैत्तत्तै-कितने (मरे); अैन्केन्-कहूँ; अऱन् आळार्-धर्म का जिन्होंने पालन नहीं किया; ईण्डार् ईण्डार्-चिरकाल नहीं रहेंगे, नहीं रहेंगे; निन्ऱवर् अैल्लाम्-जो रहे वे भी; इलर् अन्ऱो-अब नहीं रहे न । ७३९

जो चल बसे वे तो चले गये । तुम यह काम करके मरण का वरण मत करो । करोगे तो जीवित बचने का कोई मार्ग नहीं होगा । राजा के बाद राजा, कितने ही राजा मरे हैं, उनकी संख्या क्या कहूँ ? जो धर्म का पालन नहीं करते वे बहुत काल नहीं जीते, नहीं जीते । जो रहे वे सारे यम के मेहमान हो गये । अब नहीं रहे न ? । ७३९

अैम्बिक्	कुम्मे	त्तन्तै	तनक्कु	मिरुतिक्कोर्
अन्बुय्क्	कुम्बोर्	विल्लि	तत्तक्कु	मयनिऱ्कुम्
तम्बिक्	कुम्मेन्	त्ताण्मै	तविर्न्दे	तळर्बुऱ्ऱेन्
कम्बिक्	कुम्मेन्	नैज्जव	नैन्ऱे	कवल्हिन्ऱेन् 740

अैम्पिक्कुम्-मेरे कनिष्ठ को; अैन् अत्तै तत्तक्कुम्-मेरी माता को; इरुतिक्कु-अन्त करने के लिए; ओर् अम्पु उय्क्कुम्-जिसने एक वाण चलाया; पोर् विल्लि तत्तक्कुम्-उस युद्धकुशल धनुर्धर श्रीराम; अयल् निऱ्कुम्-और उसका पार्षद; तम्पिक्कुम्-कनिष्ठ भ्राता के सामने; अैन् आण्मै तविर्न्दे-अपना पौरुष हारकर; तळर्बु उऱ्ऱेन्-शिथिल हो गया; अैन् नैज्जु-मेरा मन; कम्पिक्कुम्-कांपता है; अचन् अैन्ऱे-वही राम (तुम्हारा शत्रु हो गया, यह समझकर); कवल्किन्ऱेन्-व्याकुल हूँ । ७४०

श्रीराम बड़ा ही युद्धनिपुण धनुर्धर है । उसने मेरे छोटे भाई और

माता (ताड़का) को मौत के घाट उतारने के लिए एक-एक ही बाण चलाया था। ऐसे उसके और उसके पार्षद लक्ष्मण के सामने अपना बल हारकर मैं निर्वल हुआ। अब भी उनकी बात सोचता हूँ तो मेरा मन कम्पित हो जाता है। अब मेरी चिन्ता यही है कि वही तुम्हारा शत्रु बन गया है ! । ७४०

निन्ऱुञ्	जैन्ऱुम्	वाळ्वन	यावु	निलैयावाल्
पौन्ऱु	मैन्नु	मैयुम्मै	युणर्न्दीय्	पुलैयाड्ड्
कौन्ऱु	मुन्ना	यैन्नुरै	कौळ्ळा	युयर्शैल्वत्
तैन्ऱु	मैन्ऱु	वैहुदि	यैया	विन्नियेन्ऱान् 741

ऐया—तात; निन्ऱुम् चैन्ऱुम्—अचल और चल; वाळ्वत यावुम्—जीव समी; निलैया—मर्त्य हैं; पौन्ऱुम्—मर जायेंगे; अैन्ऱुम् मैयुम्मै—यह सत्य; उणर्न्तोय्—जानतें हो; पुलै आट्ऱुक्—यह नीच काम करना; औन्ऱुम् उन्नाय्—कुछ मत सोचो; अैन्ऱु उरै कौळ्ळाय्—मेरा वचन मानो; इति—आगे भी; उयर् चैल्वत्तु—ऊँचे वैभव के साथ; अैन्ऱुम् वैकुति—सदा रहो; अैन्ऱान्—कहा (मारीच ने) । ७४१

हे तात ! इस संसार में चल या अचल कोई भी जीव या जन्तु स्थायी रूप से रहनेवाला नहीं है। यह तथ्य तुम जानते ही हो। ऐसे तुम यह पाप का खेल क्यों करना चाहते हो ? किञ्चित भी यह बात मत सोचो। मेरी बात मान लो। अपार वैभवयुक्त पद में हो आगे भी सदा उसी में रहो। मारीच ने ये सारी बातें कही। ७४१

कङ्गेशडै	वैत्तव	नौडुङ्गयिलै	वैऱ्पोर्
अङ्गेयि	नैडुत्तवैन	दाडैलिन्	मणित्तोळ्
इङ्गोर्म्मनि	दक्कैलिय	वैन्ऱुत्तै	यैत्तत्तन्
वैङ्गणैरि	यप्पुरुव	मोडुऱ	विडैत्तान् 742

कङ्कै चटै वैत्तवन् ओटुम्—जटा में गंगाधारक के साथ; कयिलै वैऱ्पु—उनके कैलासपर्वत को; ओर् अम् कैयिल्—एक हथेली पर; अैडुत्त—जिन्होंने उठाया; अैत्तु—मेरे; आटु—युद्धोत्साही; अैळिल् मणि तोळ्—सुन्दर श्रेष्ठ भुजाएँ; इङ्कु ओर् मत्तित्तुक्कु—यहाँ एक मनुष्य के लिए; अैळिय अैन्ऱुत्तै—सुगम है, कहा; अैत्त—कहकर; वैम् कण् अैरिय—भयंकर आँखों से आग निकालते हुए; पुरुवम् मौतु उऱ्—भौंहों को ऊपर उठाते हुए; विडैत्तान्—डाँट बतायी। ७४२

रावण को ये बातें कैसे पसन्द आती ? उसने डाँट बतायी। अपनी जटा में गंगाधारक शिवजी के कैलास को उनके साथ मैंने अपनी हथेली में उठाया था। तुम कहते हो ऐसी मेरी प्रबल, सुन्दर और युद्धोत्साही भुजाएँ इस अल्प मनुष्य के सामने तुच्छ हैं ! यह कहते वक्त उसकी आँखों से अंगार छूटे और भौंहें तनकर भाल पर चढ़ गयीं। ७४२

निहल्लन्ददं	निनैक्किलैयैन्	नैज्जिनिलै	यज्जा
दिहल्लन्दतै	यैन्क्किलैय	नड्गमुह	मैङ्गुम्
अहल्लन्दवरै	यौप्पुउ	वमैत्तवरै	यैया
पुहल्लन्दतै	तत्तिप्पिल्लै	पौरुत्तनैन्ति	दैन्ऱान् 743

ऐया-प्रभु; निकल्लन्ततै-जो घटा; निनैक्किलै-वह नहीं सोचते; अज्जातु-विना डर के; अन् नैज्जिन् निलै-मेरे हृदय की स्थिति की; इक्कल्लन्ततै-निन्दा की; अत्तक्कु इल्लैय नड्क-मेरी छोटी बहिन के; मुक्कम् अङ्कुम्-मुख-भर में; अक्कल्लन्तवरै-खुदे हुए पर्वत के; औप्पु उउ-समान हो, ऐसा; अमैत्तवरै-जिन्होंने बनाया, उनकी; पुक्कल्लन्ततै-प्रशंसा की; इतु तत्ति पिल्लै-यह बहुत बड़ा अपराध है; पौरुत्तनैन्-क्षमा की मैने; अन्ऱान्-कहा । ७४३

हे तात ! तुमने जो हुआ उसका विचार नहीं किया । विना भय के मेरी चित्त-स्थिति को हेय बताया । मेरी छोटी बहिन का चेहरा खुदे हुए गढ़े-सहित पर्वत के समान हो गया । वैसा जिसने बनाया उस मनुष्य की मुझसे प्रशंसा करते हो । यह बड़ा भारी अतुलनीय अपराध है । तो भी तुम्हें क्षमा करता हूँ । ७४३

तत्तैमुत्ति	वुऱ्ऱदरु	कट्टहवि	लोनैप्
पित्तैमुत्ति	वुऱ्ऱिडुमै	तत्तविरुदल्	पेणान्
उन्नैमुत्ति	वुऱ्ऱुन्नुगु	लत्तैमुत्ति	वुऱ्ऱाय्
अन्नैमुत्ति	वुऱ्ऱिलैयि	दैन्ऱैन्	विशैत्तान् 744

तत्तै मुत्तिवु उऱ्ऱ-अपने पर कोप करनेवाले; तत्तकण्-निडर; तकवु इल्लोतै-अयोग्य को; पित्तै मुत्तिवु उऱ्ऱिडुम्-फिर भी कोप करेगा; अन्नै-यह सोचकर; तविरुदल् पेणान्-छोड़ना न चाहते हुए; अन्नै मुत्तिवु उऱ्ऱिलै-मुझ पर गुस्सा नहीं किया पर; उन्नै मुत्तिवु उऱ्ऱ-अपने से ही आक्रोश करते; उन्न कुलत्तै मुत्तिवुऱ्ऱाय्-अपने वंश पर क्रोध करते हो; इतु अन्नै-यह क्या है; इचैत्तान्-कहा । ७४४

मारीच ने सोचा । रावण मुझ पर क्रोध करता है । वह निडर अयोग्य राक्षस और भी गुस्सा करेगा । तो भी भय के कारण उसने उपदेश देने से विरत होना नहीं चाहा । उसने कहा कि रावण ! अब तुम मुझ पर क्रोध जो करते हो उसका अर्थ है तुम अपने पर गुस्सा करते हो और अपने कुल पर गुस्सा करते हो ! यह कार्य तुम क्यों करते हो भाई ! । ७४४

अडुत्तमलै	येनिनैयि	नीशनिहल्	विल्ला
वडित्तमलै	नोयिडुव	लित्तिरैन्	वारिप्
पिडित्तमलै	नाणिडैप्	पिणित्तीरुवन्	मेनाळ्
औडित्तमलै	यण्डमुह	डुऱ्ऱमलै	यन्ऱो 745

अँटूत मलैये-तुमने पर्वत उठाया, उसी पर्वत को; नितैयिन्-याद करते रहो तो; इतु ईचन् इकल् विल्लाय्-यह ईश्वर के युद्ध के लिए धनु; वटित्त मलै-बनाया गया पर्वत है; नी इतु वलित्ति-तुम इसे झुकाओ; अँत-कहने पर; मेल् नाळ्-पहले; औरवन्-एक मानव से; वारि-उठाकर; पिटित्त मलै-हाथ में जो पकड़ा गया वह पर्वत; नाण् इटै पिणित्तु-प्रत्यंचा से बद्ध खींचने के मध्य; ओटित्त मलै-तोड़ा गया पर्वत; अण्टम् मुकट्टु उर्ऱ-आकाश की चोटी तक गया; मलै अन्ऱो-मेरुपर्वत नहीं है क्या । ७४५

तुमने जो उठाया उसी कैलासपर्वत की याद में भूले हुए हो । ईश्वर शिव ने मेरुपर्वत का ही धनु बनाया था । उसको झुकाने की आज्ञा दी विश्वामित्र ने । तो राम ने उस पर्वत को प्रत्यंचा चढ़ाकर झुकाते वक्त तोड़ दिया था । वह पर्वत कौन सा था । जानते हो ! (तुमने तो हिमालय के एक छोटे से शिखर को उठाया था !) राम ने जो उठाकर तोड़ा वह आकाश-स्पर्शी और श्रेष्ठ पर्वत था ! । ७४५

यादुमरि यायुरैर्हो लायिहलि रामन्, कोवैवुनै यामुनयिर् कौळ्ळैवडु मनऱे
पेदेमदि यालिदुवोर् पण्णुख मेन्ऱाय्, शोदैयुरु वोनिरुदर तीविनैय दन्ऱो 746

यातुम् अरियाय्-कुछ नहीं जानते; उरै कौळाय्-उपदेश ग्रहण न करोगे; इकल् इरामन्-युद्धसमर्थ श्रीराम; कोतै पुतैयामुन्-युद्ध के लिए हाथ में दस्ताना पहनने के पूर्व ही; उयिर् कौळ्ळै पटुम् अन्ऱे-हमारे प्राण छूट जायेंगे न; पेतै मतियाल्-जड़ मति के कारण; इतु और पण् उरुवम् अन्ऱाय्-यह स्त्री-रूप है, कहा; अतु चीतै उरुवो-वह सीता का रूप है क्या; निरुत् ती वितैयतु-राक्षसों के पाप का रूप है; अन्ऱो-न । ७४६

तुम न खुद कुछ जानते हो, न मेरा उपदेश मानते हो ! यह जान लो कि श्रीराम के, जो युद्ध-प्रवीण है, हस्तबाण (या माला) पहनने के पूर्व ही हमारे प्राण हर लिये जायेंगे । तुम अपनी मन्दमति के कारण उसको स्त्री का रूप मानते हो ! वह क्या सीता का रूप है ? नहीं हमारे पापों का मूर्त-रूप है । ७४६

उञ्जुबिल्लै यायुऱवि नोडुमैन् वुन्ना, नैञ्जुवऱै पोदुमदु नीनिनैय हिल्लाय्
अञ्जुमैन् दारुयि रऱिन्दरुहु निन्ऱार्, नञ्जुनुहर् वारैयिदु नन्ऱैत्तलु नन्ऱे 747

उऱविन्नोटम् उञ्चु-परिवारों, बन्धु-बान्धवों के साथ वचकर; पिल्लैयाय्-जीवित नहीं रहोगे; अँत-यह; उन्ना-सोचकर; नैञ्चु पऱै पोतुम्-मेरा मन ढोल की खाल के समान थर्राता है; नी अतु नितैय किल्लाय्-तुम वह सोच नहीं पाते; अँततु आर् उयिर्-मेरे बहुमूल्य प्राण; अञ्चुम्-डरते हैं; नञ्चु नुकरवारै-विष-खादक को; अरिन्तु-(विष खाता) जानकर; अरुक् निन्ऱार्-पार्श्व में स्थित लोगों का; इतु नन्ऱ-यह (तुम्हारा विष खाना) अच्छा है; अँन्तलुम्-कहना भी; नन्ऱे-अधिक अच्छा होगा । ७४७

जब मैं विचार करता हूँ कि तुम अपने परिवारों और बन्धुजनों के

साथ नष्ट हो जाओगे और नहीं बचोगे तो मेरा चित्त थर-थर काँपता है; जैसे पिटा ढोल । तुम वह सोचने में असमर्थ हो । मेरे प्यारे प्राण भी काँपते हैं । तुमको प्रोत्साहन दूँ तो उस काम से विषखादक को पास रहने वालों के, 'यह बड़ा अच्छा है' कहकर प्रोत्साहित करना भी अधिक भला होगा । ७४७

ईशान्मुद	लाहविरै	योरुलहु	मइरैत्
तेशमुदत्	मुइरुमो	रिमैप्पित्तुयिर्	तिन्नक्
कोशिल्	नळित्तहड	वुट्पडै	कौदिप्पो
डाशिल	कणिप्पिल	विरामन्नरु	णिइप् 748

ईचन् मुतलाक-ईशानदेव आदि; इरैयोर् उलकुम्-देवों के लोकों को; मइरै-और अन्य; तेचम् मुतल्-देश आदि; मुइरुम्-सारा; ओर् इमैप्पिल्-एक बार पलक मारती देर में; उयिर् तिन्न-प्राण खाने (मिटाने) के लिए; कोचिकन् अळित्त कटवुळ् पटै-कौशिक से दत्त दिव्य अस्त्र; आचु इल-वृद्धिहीन; कणिप्पु इल-गणना-हीन; कौतिप्पोटु-उग्रता के साथ; इरामन् अरुळ्-श्रीराम की सेवा में; निइप्-खड़े हैं । ७४८

श्रीराम के पास कौशिक-दत्त अमोघ, वृद्धिहीन और अगणित अस्त्र हैं, जो ईशान के लोक से लेकर सारे देवताओं के लोक और अन्य लोकों को पल भर में समाप्त कर दे सकते हैं । वे श्रीराम की सेवा में उसकी आज्ञा के मुहताज खड़े हैं । ७४८

आयिरम	डरुक्कैयुडे	यानैमळु	वाळाल्
एयैनुमु	रैक्कुळुयिर्	शैरुर्वेदि	रिल्लोन्
मेयत्तिरुन्	मुइरुम्वरि	वैञ्जिलैयि	तोडुम्
तायवन्व	लित्तहैमै	यामुरुत	हैत्तो 749

आयिरम्-सहस्र; अटल् कै-बलिष्ठ हाथों से; उटैयात्तै-युक्त कार्तवीर्य की; मळु वाळाल्-परशु के अस्त्र से; एय् अँनुम् उरैक्कुळ्-'रे' के उच्चारण करते समय के अन्दर; उयिर् चैरु-जिसने प्राणहीन कर दिया; अँतिर् इल्लोन्-उस अप्रतिद्वन्द्वी परशुराम का; मेय-प्राप्त; तिइल् मुइरुम्-सारा बल; वरि वैम् चिल्लैयिन् ओटुम्-बन्धनयुक्त धनुष के साथ; तायवन्-परास्त जो किया उसका; वलि तक्कै-बल-पराक्रम; याम् उरु तक्कैत्तु ओ-हमारे कहने योग्य होगा क्या । ७४९

राम ने परशुराम के सारे बल को, उसके धनुष के साथ परास्त किया था । वह परशुराम क्या मामूली मनुष्य थे । सहस्र महाबली हस्तों से युक्त कार्तवीर्य को परशुराम ने 'रे' शब्द के उच्चारण समय के अन्दर अपने परशु के प्रहार से समाप्त किया था । ऐसे श्रीराम के बल का अनुमान या कथन हम करने योग्य हैं क्या ? । ७४९

वेदतैशैय्	कामविड	मेविडमै	लिन्दाय्
तीदुरैशैय्	दायितैय	शैय् हैशिदै	वन्ऱो
मातुलन्	माय्मरविन्	मुन्दैयुऱ	वन्दैन्
ईदुरैशैय्	देत्तिदने	यैन्दैतविर्	हैन्ऱान् 750

वेततै चैय्-पीड़क; काम विटन् मेविट-काम रूपी विष चढ़ा और; मैलिन्ताय्-क्षीण हो गये हो; तीतु उरै चैय्ताय्-अनर्थ की बात करते हो; इतैय चैय्कै-तुम्हारा यह काम; चित्तैवु अन्ऱो-नाश का है न; मातुलनुम् आय्-मामा बना हूँ और; उऱ मुन्तै वन्दैन्-बहुत पूर्व ही पैदा हुआ हूँ; ईतु उरै चैय्तेन्-यह हितोपदेश किया; अन्तै-मेरे तात; इततै-(सीतापहरण का) यह (विचार); तविर्क-छोड़ दो; अन्ऱान्-कहा । ७५०

वेदनादायी काम-विष तुम पर चढ़ा है । इसलिए तुम तन से और (बुद्धि में भी) क्षीण हो गये हो । इसलिए अनुचित बातें कह रहे हो । सीतापहरण का काम हमारे नाश का काम नहीं हो जायगा ? मैं तुम्हारा मातुल हूँ; बहुत पहले पैदा हुआ, अतः तुमसे बड़ा हूँ । यह जो कहा, वह तुम्हारे हित का ही वचन है । मेरे तात ! इस बुरे विचार को त्याग दो । मारीच ने उसे समझाया । ७५०

अन्तवुरै	यित्तनैयु	मैत्तनैयु	मैण्णिच्
चौन्तवनै	येशिन्	नरक्कर्पदि	चौन्तान्
अन्तैयुयिर्	शैऱवन्नै	यज्जियुऱै	हिन्ऱाय्
उन्तैयोरु	वऱ्कौरुव	तैन्ऱुणर्है	नन्ऱो 751

अन्तै-(मारीच के ऐसा) कहने पर; उरै इत्ततैयुम्-सभी उपदेशों पर; अत्ततैयुम् अण्णि-सभी तरह से विचार करके; चौन्तवनै-वक्ता की; एचित्तन्-निन्दा की; अन्तै उयिर् चैऱवन्नै-माता के प्राणघातक से; अज्जि उऱैकिन्ऱाय्-डरकर (छिपे) रहते हो; उन्तै-तुमको; ओरुवऱ्कु ओरुवन् अन्ऱु-वीर के मुकाबले में वीर; उणर्कै-समझना; नन्ऱो-ठीक होगा क्या; अरक्कर् पति-राक्षसपति ने; चौन्तान्-कहा । ७५१

मारीच ने जो बातें कहीं, उन पर रावण ने खूब और सब तरह से विचार किया । पर उसे उनमें कोई सार नहीं लगा और क्रोध ही आया । राक्षसपति ने उपदेशक की निन्दा की । कहा—तुम डरपोक हो ! माता के मारक से डरकर तपस्या का बहाना करते हुए यहाँ छिपे रहते हो ! तुम्हें वीर के समान वीर कहना मान्य कैसे हो सकता है ? । ७५१

तिक्कय	मौळिप्पनिलै	तेवर्हैड	वानम्
पुक्कव	रिरुक्कैबुहै	वित्तुलहम्	यावुम्
शक्कर	नडत्तुमै	योतयर	दन्ऱन्
मक्कणलि	हिऱ्परिदु	नन्ऱुमदि	यन्ऱो 752

तिक्कयम् ओळिप्प-दिग्गजों को छिपने को विवश करते हुए; तेवर् निलै कैंट-
देवों को अस्त-व्यस्त करते हुए; वानम् पुक्कु-देवलोक में जाकर; अवर इरक्कै-
पुक्कवित्तु-उनके स्थान को जलाकर धुएँ से भरकर; उलकम् यावुम्-सारे लोकों पर;
चक्करम् नटत्तुम्-आज्ञाचक्र चलानेवाले; अन्नैयो-मुझे क्या; तयिरतन् तन् मक्कळ्-
दशरथ के ढोटे; नलिकिर्प्प-कण्ट देंगे; इतु नन्ऱु मति अन्ऱो-यह बड़ी अच्छी
समझ है न । ७५२

मुझे दशरथ के ढोटे कण्ट देंगे ? मुझे, जिसने दिग्गजों को भयभीत
करके छिपने को विवश किया; जिसने स्वर्गलोक में घुसकर देवों को अस्त-
व्यस्त कर उनके लोक में आग और धुआँ फैला दिया और जो सारे लोकों
पर आज्ञाचक्र चला रहा हूँ, ऐसे मुझे वे त्रास देंगे ? यह तुम्हारी सूझ भी
बड़ी भली रही न ! । ७५२

मूवुलहि	तुक्कुमौर	नायह	मुडित्तेत्
मेवलर्	किटैक्किन्दिन्	मेलित्तिय	डुण्डो
एवल्शैय	हिर्रियैन्	दाणैवळि	यैण्णिक
कावल्शै	यमैचर्कड	नीकडव	दनऱे 753

मू उलकितुक्कुम्-तीनों लोकों का; और नायकम् मुडित्तेत्-निर्वृन्द नायकत्व
अपनाया; मेवलर् किटैक्किन्-ऐसे शत्रु मिलेंगे तो; इतन् मेल् इत्तियत्तु-इससे बढ़कर
सुखद; उण्डो-कोई दूसरा है क्या; कावल् चैय्-राज्यरक्षणकारी; अमैचर् कटन्-
अमात्यों का कर्तव्य; नी कटवत्तु अन्ऱे-तुम उल्लंघन नहीं कर सकते; अत्तु आणै
वळि-मेरी आज्ञा के अनुसार; अण्णि-सोचकर; एवल् चैय्किर्प्प-सेवा करो । ७५३

मैंने तीन लोकों का निर्वृन्द आधिपत्य कर लिया । ऐसे मेरे शत्रु हो
जायँ तो उससे बढ़कर सुखदायी बात क्या हो सकती है ? राज्यरक्षणरत
अमात्यों का कर्तव्य राजा का अभिप्राय जानकर तदनुकूल कार्य करना है ।
तुम्हारा काम उसका अतिक्रमण करना नहीं है । मेरी आज्ञा सुनो, उसी
के अनुकूल सोचकर सेवा करो । ७५३

मरुत्तन्	यैत्तप्पैरिन्	निन्ऱैवडि	वाळाल्
ओरुत्तुमन	मुर्ऱुडु	मुडिप्पैत्तौळि	हिल्लेन्
वैरुत्तन्	किळत्तल्लु	मित्तौळिलै	विट्टेन्
कुरिप्पिन्वळि	निर्ऱियुयिर्	कौण्डुळलि	नैन्ऱान् 754

मरुत्तन् अत्तै प्पैरिन्-इनकार भी करोगे तो; निन्ऱै-तुम्हें; वडि वाळाल्-
तीक्ष्ण तलवार से; ओरुत्तु-मारकर; मन्ऱम् मुर्ऱु-अपना मनमाना; मुडिप्पै-
कर लूंगा; ओळिक्किल्लेन्-त्यागंगा नहीं; उयिर् कौण्डु उळलिन्-प्राणसहित रहना
चाहो तो; वैरुत्तन्-मेरी खीझ के; किळत्तल्लु उरुम्-वचन कहने का; इ तौळिलै
विट्टु-यह काम छोड़ो; अत्तै कुरिप्पिन् वळि निर्ऱि-मेरी राय का मार्ग चलो;
नैन्ऱान्-कहा । ७५४

तुम इनकार भी करोगे तो क्या होगा ? मैं अपनी तीक्ष्ण तलवार से तुम्हारा काम तमाम कर दूँगा और अपना मनमाना कर लूँगा । यह कार्य बिना किये नहीं छोड़ूँगा । इसलिए तुम जीवित फिरना चाहो तो मुझे खिझानेवाले उपदेश देना छोड़ो और मेरी इच्छा के अनुकूल सेवा करो । रावण ने निश्चित रूप से कह दिया । ७५४

अरक्कन्ः(ह)	दुरैत्तलोडु	मडिन्दन	नडङ्गु	नैञ्जन्
तरक्किन्ऱ	कैडुव	रैन्ऱ	इत्तुव	निलैयिऱ्
शैरक्किनिऱ्	शैरु	मैन्बार्	तम्मिलार्	शैरक्क
उरक्किय	शैम्बो	नुऱ्ऱ	नोर्मैया	नुरैक्क
				लुऱ्ऱान् 755

अरक्कन्-राक्षस के; अ.तु उरैत्तल् ओटुम्-वह बात कहने पर; अडिन्दनन्- (रावण का मन) जाना; अटङ्कु नैञ्चन्-संयत-मन होकर; तरक्किन्ऱ कैडुवर्-घमण्डी नष्ट होंगे; अन्ऱल्-यह कथन; तत्तुव निलैयिऱ् अन्ऱो-सत्य बनता है न; शैरक्कितिल्-गर्व से; तोरुम् अन्ऱुपार् तम्मिन्-नाश को प्राप्त होंगे, ऐसा जिन्होंने निश्चय किया है उनसे बढ़कर; शैरक्कर्-गर्वोले शत्रु; आर्-कौन है, अन्ऱा-सोचकर; उरक्किय चैम्पौन्-पिघले हुए स्वर्ण; उऱ्ऱ नोर्मैयान्-की स्थिति में जो रहा, वह; उरैक्कल् उऱ्ऱान्-कहने लगा । ७५५

जब राक्षसराज रावण ने यह कहा तो मारीच ने रावण का स्वभाव सोचा और उसका निश्चय जान लिया । इसलिए उसने अपने मन की संयत कर लिया । सोचा—अभिमान की लोग अवश्य नष्ट होंगे । यह कथन सत्य बन गया है ! जो गर्व के कारण अपने को नष्ट कर लेने में तुले है, उनका उनसे बढ़कर कोई शत्रु नहीं होता । वह स्वयं अपना नाश कर लेगा । मारीच अब पिघला-स्वर्ण-समान स्वच्छमन हो गया था । वह यों बोला । ७५५

उन्वयि	नुऱुदि	नोक्कि	युण्मैयि	नुणर्त्तुति	तेन्मऱ्
रैन्वयि	निऱुदि	नोक्कि	यच्चत्ता	लिशैत्ते	तल्लेन्
नन्मैयुन्	दीमै	यन्ऱे	नाशम्बन्	दुऱ्ऱ	नाळिल्
पुन्मैयि	निन्ऱ	नोराय्	शैय्वडु	पुहरि	यैन्ऱान् 756

उन् वयिन् उऱुति नोक्कि-तुम्हारा हित सोचकर; उण्मैयिन् उणर्त्तुति-सच्चे दिल से समझाया; मऱ्ऱु-अलावा; अन् वयिन् इऱुति-मेरा अन्त; नोक्कि-समझकर; अच्चत्ताल्-डर से; इच्चैत्तेन् अल्लेन्-कहा नहीं; नाचम् वन्तु उऱ्ऱ नाळिल्-जब नाश आता है; नन्मैयुम् तोमै अन्ऱे-भला भी बुरा हो जाता है न; पुन्मैयिन् निन्ऱ नोराय्-नीचकर्मतत्पर रावण; चैय्वडु पुक्कल्ति-मेरा कार्य कहो; अन्ऱान्-पूछा । ७५६

रावण ! मैंने तुमसे जो कहा वह तुम्हारे भले के लिए ही साफ़ मन के साथ कहा था । अपनी मृत्यु के डर से नहीं कहा था । जब नाश का

दिन आता है तब भला भी बुरा लगता है । हे नीचकार्यतत्पर रावण !
तुम कहो— मैं क्या करूँ ? । ७५६

अँतुलु	मँळुन्दु	पुल्लि	येरिय	वँहुळि	नीङ्गिक्
कुन्ऱैन्क्	कुविन्द	तोळाय्	मारवेळ्	कौदिक्कु	मम्बाल्
पौन्ऱलि	लिराम	नम्बाऱ्	पौन्ऱले	पुहळण्	डन्ऱो
तँन्ऱलैप्	पहैयाच्	चैय्द	शीदैयैत्	तरुदि	यँन्ऱान् 757

अँतुलुम्—कहते ही; एरिय वँकुळि नीङ्गिक्—उठे क्रोध को दूर करके; अँळुन्तु
पुल्लि—उठकर आलिंगन करके; कुन्ऱु अँतु कुविन्त तोळाय्—पर्वतोन्नत कन्धों वाले;
मार वेळ्—मारदेव के; कौदिक्कुम् अम्पाल्—सन्तापक अस्त्रों से; पौन्ऱलिन्—मरने
से; इरामन् अम्पाल्—राम-शर से; पौन्ऱले—मरना; पुहळ् उण्डु अन्ऱो—प्रशंसा-
योग्य है न; तँन्ऱलै पकैयाच् चैय्द—मलयपवन को जिसने मेरा शत्रु बना दिया; चीतैयै-
उस सीता को; तरुदि—लाओ; अँन्ऱान्—कहा । ७५७

मारीच के ऐसा कहते ही रावण का उमँगा हुआ क्रोध थम गया ।
उसने उठकर मारीच का आलिंगन करके कहा— हे पर्वतोन्नत भुजाओं के
मारीच ! मैं सोचता हूँ कि कामदेव के संतापक शरों से मरने से राम-शर
से मरना अधिक कीर्तिदायक होगा । इसलिए उस सीता को हर लाओ,
जिसने मलयपवन को मेरा शत्रु बना दिया है, और उसे मेरे पास दे
दो । ७५७

आण्डव	तनैय	कूऱ्	वरक्करो	रिरुव	रोडुम्
पूण्डवैन्	मानन्	दीरत्	तण्डहम्	पुक्क	कालैत्
तूण्डिय	शरङ्गळ्	पायत्	तुणैवर्पट्	टुरुळ	वज्जि
मीण्डयान्	शैन्ऱु	शैय्युम्	विनैयैन्गौल्	विळम्बु	हँन्ऱान् 758

आण्डु—तब; अवन् अतैय कूऱ्—उसके वह कहने पर; पूण्ड अँन् मानम् तीर-
(पहले) प्राप्त अपना अपमान पोंछने के लिए; अरक्कर् ओर् इरुवर् ओटुम्—दो राक्षसों
के साथ; तण्डकम् पुकुन्त कालै—जब दण्डक पहुँचा, तब; तूण्डिय चरङ्कळ् पाय-
उससे प्रेरित वाणों के लगने पर; तुणैवर् पट्टु उरुळ—मेरे साथी अग्रहत हो लोटे और;
अज्जि मीण्ड—डरकर लौट आया; यान्—मैं; चैन्ऱु चैय्युम्—जाकर करूँ ऐसा;
विनै अँन् कौल्—कार्य क्या (रखा) है; विळम्पुक्—कहो; अँन्ऱान्—कहा । ७५८

यह सुनकर मारीच ने कहा कि पहले मैं राम से अपमानित हुआ ।
उस अपमान को पोंछने के हेतु मैं दो-एक राक्षसों को साथ लेकर वहाँ गया
था । राम के शर के लगने से वे दोनों लुढ़क गये । भय से मैं लौट
गया । ऐसे मेरे लिए अब करने को क्या काम रहेगा ? यह तो
वताओ । ७५८

आयव	ननैय	कूऱ	वरक्कर्हो	तैय	नौय्दुत्
तायैया	रुयिरुण्	डानैक्	कौल्लयान्	शमैन्दु	निन्ऱेन्
पोयैया	पुणर्प्प	दैन्तै	यैन्बद्	पौरुन्दिऱ्	ऱौन्ऱो
मायैयाल्	वञ्जित्	तन्ऱो	वव्वुद	लवळै	यैन्ऱान् 759

आयवन् अतैय कूऱ-उसके ऐसा कहने पर; अरक्कर् कोन्-राक्षसराज; ऐय-श्रेष्ठ पुरुष; नौयु-हेय रीति से; उन् ताये-तुम्हारी माता के; आर् उयिर् उण्ऱान्-प्यारे प्राणों के घातक को; कौल्ल-मारने के लिए; यान् चमैन्तु निन्ऱेन्-मैं कृत-संकल्प हूँ; पोय् ऐया पुणर्प्पतु अँन्तै-जाकर तात क्या करूँ; अँन्पतु-कहना; पौरुन्तिऱ् ओन्ऱो-उचित है क्या; अवळै-उसको; मायैयाल् वञ्चित्तु-वंचना से धोखा देकर; वव्वुतल् अन्ऱो-हर लाना ही है न; अँन्ऱान्-कहा। ७५६

मारीच के ऐसा कहने पर राक्षसपति रावण ने कहा कि मामा ! मैंने दृढ़ संकल्प कर रखा है कि मैं तुम्हारी माता के, हेयरीति से घातक राम को मार दूँ। तब वहाँ जाकर क्या करूँ —यह पूछना तुम्हारे लिए उचित नहीं लगता। उस सीता को वंचना से हर लाओ —यही करना उचित है न ? ७५९

पुऱत्तित्ति	युरैप्प	दैन्ते	पुरवलन्	ऱेवि	तन्तैत्
तिऱत्तुळि	यन्ऱि	वञ्जित्	तैय्दुदल्	शिरुमैत्	तामाल्
अऱत्तुळ	दौक्कु	मन्ऱे	यमर्त्तलै	वैन्ऱ	कौण्डुन्
मऱत्तुऱै	वळर्त्ति	मन्त	वैन्तमा	रीशन्	शौन्तान् 760

मन्त-राजा; इति पुऱत्तु उरैप्पतु अँन्ते-अब और कहना क्या है; पुरवलन् तैवि तन्तै-(लोक-) रक्षक राम की देवी को; तिऱत्तु उळि अन्ऱि-अपने बल से नहीं; वञ्चित्तु अँयत्-कपट से प्राप्त करना; चिरुमैत्तु आम् आल्-नीचता का होगा, इसलिए; अऱत्तुळु ओक्कुम् अन्ऱे-धर्म-सम्मत नहीं होगा न; अमर् तलै वैन्ऱ कौण्डु-युद्ध में (राम को) जीतकर (सीता को) लेकर; उन् मऱ तुऱै-अपनी वीरता का गौरव; वळर्त्ति-बढ़ा लो; अँन्त-ऐसा; मारीचन् चौन्तान्-मारीच ने कहा। ७६०

मारीच को यह हेय लगा। उसने नीति बतायी। राजा ! ऐसा कहोगे तो फिर क्या कहा जाय ? राजाराम की देवी सीता को अपनी वीरता से उठा लाना छोड़कर वंचना से हर लाना चाहते हो ! यह तुम्हारे गौरव को हल्का कर देगा। इसलिए वह धर्मसम्मत नहीं होगा। युद्ध करो, राम को हराओ, सीता को लाओ। अपनी वीरता को बढ़ाओ। ७६०

आनव	तुरैक्क	नक्क	वरक्कर्हो	नवरै	वैल्लत्
तानैदान्	वेण्डु	मोर्वैन्	ऱडक्कैवा	डक्क	वन्ऱो
एनैय	ऱिऱक्किऱ्	ऱानुन्	दमियळा	यिऱक्कु	मन्ऱे
मानव	ळाद	लाले	मायैयिन्	वलित्तु	मैन्ऱान् 761

आतवन्-ऐसे उसके; उरैक-कहने पर; नक्क-हँसते हुए; अरक्कर् फोत्-
 राक्षसाधिपति; अवरै वल्ल-उसको हराने के लिए; तातै तात् वेण्टुमो-सेना भी चाहिए
 क्या; अँन् तट कै वाळ्-मेरे विशाल हाथ का (चन्द्रहास) खड्ग; तक्कु अन्त्रो-
 योग्य नहीं है क्या; मातवळ्-वह मनुष्य स्त्री; एतैयर् इक्किन्-(उन दोनों) दूसरों
 के मरने पर; तातुम् तमियळाय्-स्वयं अकेली बनकर; इक्कुम् अन्त्रे-प्राण त्याग
 देगी न; आतलाले-उसी कारण; मायैयिन् वलित्तुम् अँन्त्रान्-माया से ले आयेगे;
 अँन्त्रान्-कहा । ७६१

अपने रास्ते पर आये मारीच का कथन सुनकर राक्षसपति रावण
 उसकी नासमझी पर हँसते हुए बोला । राम और लक्ष्मण को हराने के
 लिए सेना की भी आवश्यकता पड़ेगी क्या ? मेरे विशाल हाथ में जो
 चन्द्रहास, तलवार है वह पर्याप्त नहीं होगी क्या ? पर तुमने यह नहीं
 सोचा । वे दोनों मर जायेंगे तो वह मानवी स्त्री अपने को अकेला समझ
 कर प्राण त्याग देगी न ? इसी हेतु कहता हूँ कि उसे माया से हर
 लायेंगे । ७६१

तेवियैत्	तीण्डा	मुन्न	मिवन्त्रलै	शरत्तिर्	चिन्दिप्
पोवहै	पुणर्प्प	तैन्ऱु	पुन्दियार्	पुहल्हिन्	रेड्कुम्
आवहै	यायिर्	इल्लै	यार्विदि	विळैवै	योर्वार्
एविय	शैय्द	लल्ला	लिल्लैवे	रौन्ऱैन्	रैण्णा 762

तेवियै तीण्डा मुन्नम्-देवी को स्पर्श करने से पहले ही; इवन् तलै-इसके सिर;
 चरत्तिल् चिन्ति पो वकै-शर से गिराने का उपाय; पुणर्प्पन्-राम कर लेगा;
 अँन्ऱु-ऐसा; पुन्तियाल् पुक्किन्ऱेड्कुम्-बुद्धि से जानकर कहता हूँ, ऐसा मेरा भी;
 आ वकै-मला होने का उपाय; आर् इळ् इल्लै-होता नहीं है; विति विळैवै-
 विधि का फल; आर् ओर्वार्-कौन जान सकता; एविय चैयत् अल्लाल्-
 आज्ञा मानने के सिवाय; वेळ् ओन्ऱु इल्लै-कोई दूसरा रास्ता नहीं; अँन्ऱु अँण्णा-
 ऐसा सोचकर । ७६२

मारीच बहुत दुःखी हुआ । यह मूर्ख नहीं जानता कि देवी सीता का
 स्पर्श करने के पूर्व ही श्रीराम ऐसा कार्य साध लेंगे कि इसके सिर उनके
 शरो से कटकर गिर जायेंगे । यह मैं अपने अनुभव और तर्क के आधार
 पर कहता हूँ । तो भी मेरा भी भला अब नहीं होता दिखता । विधि
 का विधान कौन जाने ? अब मेरे सामने रावण के आज्ञा में कहे अनुसार
 करने के सिवा कोई मार्ग नहीं है । ऐसा सोचकर— । ७६२

अँन्त्रमा	मायम्	यान्निड्	गियर्ऱुव	दियम्बु	हँन्त्रान्
पौन्तिन्मा	नाहिप्	पुक्कप्	पौन्तैमाल्	पुणर्त्तु	हँन्त्र
अन्त्रदु	शैय्वै	तैन्ना	मारीश	नमैन्दु	पोन्नात्
मिन्नुवे	लरक्कर्	कोन्नुम्	वेरौरु	नैरियिर्	पोन्नात् 763

इङ्कु यान् अँन्त मा मायम् इयर्ऋवतु-यहाँ मैं क्या बड़ी माया कहूँ; इयम्पुक-
कहो; अँन्तान्-कहा; पौन्तित्न् मान् आकि पुक्कु-स्वर्ण-हिरण बनकर वहाँ पहुँचकर;
अ पौन्तै-उस स्वर्ण-सुन्दरी को; माल् पुणर्त्तुक-मोहित कर दो; अँन्त-कहा, तब;
अन्ततु चैय्वैन् अँन्ता-वह कहूँगा, कहकर; मारीचन् अमैन्तु पोत्तान्-मारीच सम्मत
होकर गया; मिन्तुम् वेल्-चमकदार भाला के; अरक्कर् कोनुम्-राक्षसराज भी;
वेरु ओरु नैरियिल् पोत्तान्-दूसरे मार्ग से गया । ७६३

मारीच ने रावण से पूछा कि अब मैं क्या बड़ा माया-कार्य कहूँ ?
तुम्हीं बताओ । तो रावण ने कहा— तुम स्वर्णमृग बनकर वहाँ जाओ ।
और उस स्वर्णसुन्दरी सीता को मोह में डाल दो । मारीच ने सम्मत
होकर कहा कि हाँ ! वैसा ही कहूँगा । चमकदार भालाधारी रावण भी
दूसरे मार्ग से निकल गया । ७६३

ॐ मेनाळवर् विल्वलि कण्डमैयाल्, तानाह निनैन्दु शमैन्दिलनाल्
मात्ताहुदि यैन्ऋवन् वाळ्वलियाल्, पोत्तान्मन मुर्जैय लुम्बुहल्वान् 764

मेल् नाळ्-पहले; अवर् विल् वलि-उनके धनु की शक्ति; कण्डमैयाल्-देखी
थी, इसलिए; तान् आक-स्वयं; निनैन्तु चमैन्तिलन्-यह उपाय सोचकर तैयार
नहीं हुआ; मान् आकुति-मृग बनो; अँन्ऋवन्-यह जिसने कहा, उस रावण की;
वाळ्वलियाल्-तलवार की शक्ति से (डरकर); पोत्तान् जो गया उसका; मत्तमुम्-
मन और; चैयलुम्-कार्य; पुक्कल्वाम्-धखानेंगे । ७६४

अब मारीच को राम-धनुष का बल खूब स्मरण रहा । उसने पहले
उसका अनुभव किया था । इसलिए वह कदापि स्वयं मृग का रूप लेकर
वहाँ जाने को सम्मत नहीं होता । पर रावण की तलवार का वार पड़ने
का डर था । उसने कहा कि मृग बनो । इसीलिए वह सहमत हुआ ।
ऐसे उसका मन कैसा व्याकुल था और कार्य कैसे थे —उसका हम अब
वर्णन करेंगे । ७६४

ॐ वैञ्जुर्ऋ निनैत्तुहुम् वीररैवे, इञ्जुर्ऋ मरुक्कुर् माळ्हुळिनीर्
नञ्जुर्ऋळि मीत्तिनडुक् कुरुवान्, नैञ्जुर्ऋदोर् पेर्रि निनैप्परिदाल् 765

वैम् चुरुम् नितैत्तु-प्यारे बन्धु-बान्धवों की हालत सोचकर; उकुम्-विगलित
हुआ; वेरु-और भी; वीररै अञ्चु उर्ऋ-वीर (श्रीराम और लक्ष्मण से) डरकर;
मरुक्कु उरुम्-घबड़ा जाता; आळ् कुळि-गहरे गढ़े का; नीर् नञ्चु उर्ऋळि-जल
जब विषावत हो जाता है; मीत्तिन्-तब उसमें रही मछली-जैसा; नटुक्कु उञ्जवान्-
छटपटाया; नैञ्चु उर्ऋतु ओर् पेर्रि-उसके मन का जो हुआ; नितैप्पु अरितु-वह
सोचना भी कठिन है । ७६५

उसका मन अपने भाई-बन्धुओं का भावी नाश सोचकर बहुत व्यग्र
हुआ । और भी उन वीरों की वीरता का विचार कर गिड़गिड़ाया ।
उसकी स्थिति उन मछलियों की-सी थी जो गहरे गढ़े में है और उस गढ़े

का जल विषाक्त हो गया है। वह थर-थर काँपा। उसके मन की व्याकुलता की स्थिति का ज्ञान हमारी मनोशक्ति के अन्दर आनेवाला नहीं है ! । ७६५

अक्कालमुम् वेळ्वियिन्नन् रुतौडर्न्, दैक्कालु नलिनदुमौ रीरुबैरान्
मुक्कालिन् मुडिन्दिडु वान्मुयल्वान्, पुक्कान विराहवन् वैहुपुनम् 766

अवतोट्टु—उन श्रीराम के साथ; अ वेळ्वियिल् कालम्—उस भाग के समय के; अन्रु तौटर्न्तु—उस दिन से लेकर; अ कालुम् नलिनत्तुम्—किसी भी तरह के क्लेश से; ओर् ईरु पेरान्—जो मरकर अन्त नहीं पा सका; मु कालिन्—(वह मारीच) तीसरी बार; मुटिन्तिट्टुवान् मुयल्वान्—मरने को उद्यत होकर; अ इराकवन्—वे राघव; वैकु पुत्तम्—जहाँ रहते थे, उस वन में; पुक्कान्—आ पहुँचा। ७६६

(श्रीराम के साथ इसके पहले दो बार सामना हो गया था। एक बार विश्वामित्र के यज्ञ के अवसर पर हुआ। दूसरी बार वह दो मित्रों के साथ मृग का वेश धारण करके श्रीरामचन्द्र के सामने गया था। श्रीराम के शरों ने उसके दोनों मित्रों का नाश किया। मारीच बचके आ गया। उसका संकेत पद्य-संख्या ७५८ में है; फिर ७६४ में भी है, फिर इस पद्य में भी आता है। आगे ७९३वें पद में भी पाया जायगा।) जिस दिन पहले पहल उसे श्रीराम के साथ संपर्क हुआ था, उस दिन से लेकर वह बहुत क्लेश उठा रहा है। तो भी वह मरा नहीं था। अब उसने निश्चय कर लिया कि मैं तीसरी बार जाऊँगा और मर जाऊँगा। मरने की तैयारी के साथ वह, श्रीराम जहाँ रहे उस वन में आ पहुँचा। ७६६

❀ तन्मानमि लाद तयङ्गौळिशाल्, मिन्मानमु मण्णुम् विळङ्गुवदोर्
पौन्मानुरु वङ्गौडु पोयिनत्ताल्, नन्मात्तनै याडनै नाडुरुवान् 767

नल् मान् अतैयाळ् तत्तै—उत्तम मृगनिभ उस (देवी) को; नाट्टु उरुवान्—खोजते हुए; तन् मानम् इलात—अनुपम; तयङ्कु ओळि चाल्—चमकदार कान्ति के साथ; मिन् मानमुम्—विद्युतसहित आकाश में; मण्णुम्—भू पर; विळङ्कुवतु ओर्—द्युतिमान एक; पौन् मान् उरुवम् कौटु—स्वर्ण-मृग का रूप लेकर; पोयित्तन्—वहाँ गया। ७६७

उत्तम हरिणी-तुल्य सीतादेवी को ढूँढ़ते हुए मारीच एक स्वर्णमृग का रूप धरकर आया। वह अनुपम मृग था। विद्युत सहित आकाश में या भू पर उससे तुल्य कोई मृग नहीं था। ७६७

कलैमान्मुद लायिन कण्डवैलाम्, अलैमानुरु माशैयिल् वन्दनवाल्
निलैयामन वज्जत्तै नेयमिला, विलैमादरहण् यारुम् विळुन्तैन्वे 768

निलैया मत्तम्—चंचल-मना; वज्जत्तै—वंचक; नेयम् इला—स्नेहहीन; विलै मात्तर् कण्—वेश्या पर; यारुम्—सभी कामुक; विळुन्तैन्वे—मोह में गिर (पड़) जाते हैं जैसे; कण्ट—उसको जिन्होंने देखा, वे; कलै मान् मुतल् आयित्त—बारहसींगा,

हरिण, मृग आदि; अलं मान् उरुम् आचयिन्-तरंगों के समान उठनेवाली इच्छा के साथ; वन्तत्त-उसकी ओर आये । ७६८

उसको देखकर उस वन में रहे सभी वारहसींगे, हरिण, मृग आदि उसकी ओर ऐसे आकृष्ट होकर भागे, जैसे चंचलमना, कपटी और स्नेह-हीन वेश्या के मोह में पड़कर कामुक सभी दौड़ पड़ते हैं । ७६८

ॐ पौय्यामैन् वोडु पुरञ्जीलिनाल्, नैयाविडै नोव नडन्दत्तळाल्
वैदेविदन् वाल्वळै मँत्तगैयैनुम्, कौय्यामल रान्मलर् कौय्हुस्वान् 769

वैतेवि-वैदेही; तन्-अपने; वाल् वळै-उज्ज्वल कंकणधारी; मैल् कं अँत्तुम्-कोमलहाथ रूपी; कौय्या मलराल्-जिनको तोड़ा नहीं गया, उन कमलसुमन द्वारा; मलर् कौय्कुस्वान्-पुष्प-चयन करने हेतु; पुरम्-अन्य दर्शक; पौय् आम् अँत्त ओतुम्-जिसका अभाव कहते हैं; चौलिताल्-उस कथन के अनुसार; नैया इटै-दुःखी कमर के; नोव-संकट उठाते; नडन्दत्तळ-चलकर गयी । ७६९

तब वैदेही पुष्प-चयन के लिए निकल आयीं । उसके हाथ उज्ज्वल वलय-भूषित और उन कमल-सम सुन्दर थे जो तोड़े नहीं गये थे । उसकी कमर के सम्बन्ध में दूसरे सन्देह करते थे और कहते थे कि इसके कमर नहीं है । वह ऐसी क्षीण कमर को दुःख देती हुई वैसे सुन्दर हाथों से पुष्प-चयन करने के लिए निकल पड़ी । ७६९

उण्डाहिय केटुटै यार्तुयिल्वाय्, अँण्डानु मियैन्दियै यावुरुवम्
कण्डारैन् लाम्वहै कण्डत्तळाल्, पण्डारु मुडाविडर्प् पाडुरुवाळ् 770

पण्डु आरुम् उडा-इसके पूर्व किसी से अननुभूत; इटर्प्पाटु-संकट; उडुवाळ-जिन पर आने को था, उन देवी ने; उण्डाकिय केटु उटैयार्-संकटग्रस्त लोगों ने; तुयिल्वाय्-निद्रा में; अँण् तात्तुम् इयैन्तु इयैया-असंभाव्य; उरुवम् कण्डार्-रूप देख लिया हो; अँत्तल् आम् वकै-ऐसा; कण्डत्तळ-(मायामृग को) देखा । ७७०

सीताजी पर संकट आनेवाला था । वह भी ऐसा जैसा किसी पर पहले कभी नहीं आया था । उनकी दृष्टि में वह स्वर्णमृग पड़ा । उन्होंने उसे ऐसे संकटग्रस्त स्वप्नद्रष्टा के समान देखा, जिसे निद्रा में बिल्कुल असंभाव्य कोई अनोखा रूप दिखाई दिया हो । ७७०

काणाविदु कैतव मँन्ऱुणराळ्, पेणाद नलङ्गोडु पेणित्तळाल्
वाणाळै यिरावणन् माळुदलाल्, वीणाळि लरम्बुवि मेवुदलाल् 771

अ इरावणन्-उस रावण की; वाळ् नाळ्-आयु के दिन; माळुतल् आल्-समाप्त होने को थे; वीळ् नाळ् इल्-जिसका मरण-दिन नहीं होता; अरम्-उस धर्म का; पुवि मेवुतलाल्-भूमि पर उत्थान होने को था, इसलिए; काणा-(देवी ने उसको) देखकर; इतु कैतवम्-यह कैतव है; अँन्ऱु उणराळ्-यह न जानकर; पेणात्त नलम् कोटु-अमृतपूर्व आनन्द मानकर; पेणित्तळ-उसको चाहा । ७७१

रावण की आयु को खतम होनी थी। अनश्वर धर्म के भू पर उत्थान का काल आ गया था। इसलिए देवी सीता ने उसको देख लिया। पर उन्हें मालूम नहीं था कि यह कैतव है। अब तक ऐसा आनन्द प्राप्त नहीं था। यह समझकर उन्होंने उसकी चाह की। ७७१

ॐ नैर्ऋतिपिण्डं याणमुत्त नित्तिडलुम्, मुर्ऋतिपौलि कावलित् मुन्दुरुवाळ्
पर्ऋतितरु हँर्ब नैतपपदैया, वैर्ऋतिचिलै वीरतै मेवित्तळाल् 772

नैर्ऋति पिण्याळ् मुत्तम्—(चन्द्र-) कला-सम भाल से भूषित देवी के सामने; नित्तिडलुम्—हिरण खड़ा हुआ तो; मुर्ऋति पौलि—भरकर बढ़नेवाले; कावलित् मुन्दुरुवाळ्—इच्छा से जाती हुई वह; पर्ऋति तरु—पकड़कर दीजिए; अँनूपैन्—कहूँगी; अँत—सोचकर; पतैया—उतावली से; वैर्ऋति चिलै वीरतै—विजय कोदण्डपाणी वीर; मेवित्तळाल्—के पास पहुँची। ७७२

वह हरिण चन्द्रललाट सीता के सामने जाकर खड़ा हुआ। तब उनके मन में उसके प्रति अपार राग उत्पन्न हुआ और उमड़ आया। 'मैं जाऊँगी और उनसे कहूँगी कि इसे पकड़कर दीजिए'—ऐसा सोचते हुए वह सवेग विजय-कोदण्ड-पाणी श्रीराम के पास जा पहुँची। ७७२

आणिपपौति ताहिय दाय्हदिराल्, शेणिर्ऋतुडर् हिन्ऋतु तिण्शैविकाल्
माणिक्क मयत्तोरु मानुळदाल्, काणत्तहु मैन्ऋतळ् कैतौळुवाळ् 773

कै तौळुवाळ्—हाथ जोड़े नमस्कार करती हुई; आणि पौतिल् आकियतु—उत्तम स्वर्ण-निर्मित; आय् कतिराल्—शरीर की श्रेष्ठ कान्ति के कारण; शेणिल् चुटर्किन्ऋतु—बहुत दूर तक ज्योतिर्मय दिखनेवाला; तिण् शैवि काल्—बलवान कान और पैर; माणिक्क मयत्तु—माणिक्यमय; औरु मान् उळतु—एक हिरण आया है; आल्—जो; काणत्तकुम्—वह देखने योग्य है; मैन्ऋतळ्—कहा (सीताजी ने)। ७७३

जाकर उन्होंने श्रीराम से हाथ जोड़कर विनय की। खरे स्वर्ण का बना, अपनी देह की कान्ति के कारण बहुत दूर तक द्युतिमान दिखता हुआ, माणिक्य के पैरों और कानों के साथ एक हिरण आया हुआ है। वह आपसे देखने योग्य है। ७७३

इम्मानि निलत्तित्ति लिल्लैयैना, अँम्मानि दैतच्चिर्ऋि दैण्णल्शैयान्
शैम्मानवळ् शौर्ऋकौड् तेमलरोन्, अम्मानु मरुत्तिय तायित्तत्ताल् 774

इ मान्—यह मृग; इ निलत्तित् इल्लै—इस भूमि पर (प्राप्य) नहीं; अँता—यह बात; अँ मान् इतु—यह कैसा हरिण; अँत—यह बात; चिर्ऋतु अँणल् चैयान्—कुछ भी नहीं सोचकर; ते मलरोन्—शहद-भरे कमल पर आसीन; अम्मानुम्—(ब्रह्मा के) पिता (के अवतार) श्रीराम भी; चैम् मातवळ्—सुन्दर (लाल) रंग की सीताजी का; चौल् कौटु—वचन मानकर; मरुत्तियन् आयित्तन्—इच्छुक हुए। ७७४

श्रीराम ने यह सुना। (आश्चर्य है कि) उन्हें यह नहीं सूझा कि

ऐसा मृग अनहोनी बात है। यह भी विचार नहीं आया कि यह कैसा मृग है ? विना किसी सोच-विचार के श्रीराम, जो शहदयुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा के भी विधाता विष्णु के अवतार थे, देवी की बात पर विश्वास करके उसको पकड़ने को इच्छुक हो गये। ७७४

आण्डङ्गिळै योनुरै याडिनत्ताल्, वेण्डुमर्मेत्त लाम्बिळै वन्त्रिदेनाप्
पूण्डुजुपौ लङ्गोडि पोयदुनाम्, काण्डुमर्मेनुम् वळ्ळल् करुत्तुणर्वात् 775

पूण तुञ्चु-आभरण-युक्त; पौलन् कोटि-स्वर्ण-लता (सी देवी); पोय् अतु ताम् काण्डुम्-जाकर हम उसे देखें; अँतुम्-कहनेवाले का; वळ्ळल् करुत्तु-उदार प्रभु का मन; उणर्वात्-साँपकर; इळ्योत्-लघुराज; आण्डु-तब; वेण्डुम् अँतल् आम्-चाहनीय; विळ्वु अन्नु इतु-चाह के योग्य नहीं है यह; अँता-ऐसा सोचकर; अङ्कु-वहाँ; उरै आदित्तन्-वचन कहने लगे। ७७५

‘हे आभरणालंकृता देवी ! हम जाकर देखेंगे’ यह प्रभु ने कहा। पास जो रहे उन लघु भ्राता लक्ष्मण ने श्रीराम का विचार ताड़ लिया। तब उन्होंने सोचा कि यह चाहनीय इच्छा का विषय नहीं। इसलिए वह श्रीराम से निवेदन करने लगे। ७७५

कायङ्गन हम्मणि काल्शैविवाल्, पायुम्मुर् वोडिदु पण्वलवाल्
मायमर्मेत्त लन्त्रि मत्तक्कोळवे, एयुमर्मिर् येयुड वेंन्तत्तनाल् 776

कायम् कतकम्-शरीर स्वर्णमय; काल् शैवि वाल्-पैर, कान और दुम; मणि-माणिक्यमय; पायुम् उरुवोटु इतु-चौकड़ी भरनेवाला यह; पण्णु अल आल्-स्वाभाविक नहीं है, इसलिए; मायम् अँतल्-माया कहना चाहिए; अन्त्रि-दूसरा; इर्-प्रभु; मत्तम् कोळवे-मानना; ऐयुडु एयुम्-संशययुक्त होगा; अँन्तत्तन्-कहा। ७७६

प्रभु ! सोचिए। शरीर स्वर्ण का, पैर, कान और दुम माणिक्य के; ऐसा मृग चौकड़ी भरता है ! यह विल्कुल अप्राकृतिक है ! इसलिए कोई माया ही माननी है ! उसके विपरीत इसको सच्चा मानना संशय-युक्त है। ७७६

निल्लावुल हिन्निलै नेर्मैयित्ताल्, वल्लारु मुणर्न्दिल् मन्नुयिर्दाम्
पल्लायिर कोडि परन्दुळवाल्, इल्लादन विल्लै यिळङ्गुमरा 777

इळम् कुमरा-वाल कुमार; नेर्मैयित्ताल् वल्लारुम्-सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी; निल्ला उलकिन् निलै-इस नश्वर जगत का स्वभाव; उणर्न्तिल्-पूर्ण रूप से नहीं जानते; मन्नुयिर् ताम्-अक्षय जीव-जन्तु; पल् आयिरम् कोटि-अनेक सहस्र कोटि; परन्तु उळ आल्-रूप में विस्तृत है; इल्लातत्त इल्लै-असम्भव कुछ नहीं है। ७७७

तब श्रीराम ने गम्भीर विचार व्यक्त किये। वालकुमार ! सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी इस चलनशील ससार का सारा रहस्य नहीं जान पाते।

अक्षय जीव अनेक सहस्र कोटि रूपों में विपुल रीति से पाये जाते हैं ।
इसलिए असंभाव्य कुछ नहीं है । ७७७

अन्तर्नृ नितैन्द दिष्टैत्तुलदाम्, कन्तङ्गलिल् वेरुळ काण्डुमाल्
पौन्तिन्कुळिर् मेत्ति पौरुन्दितवेळ्, अन्तङ्गळ् पिन्तुन्द अरिन्दिलैयो 778

अन् अन्तर् नितैन्तु—क्या समझकर; अतु इष्टैत्तु उल्लु आम्—तुमने ऐसी बात कही थी; कन्तङ्गळिन्—अपने कानों से; वेरु उळ काण्डुम्—कितने ही अपरिचित अन्य पदार्थ देखते हैं (सुनकर जान लेते हैं); पौन्तिन्—स्वर्णमय; कुळिर् मेत्ति पौरुन्तिन्—मनोरम रूपधर; एळ् अन्तङ्गळ् पिन्तुन्तु—सात हंस पहले जनित थे; अरिन्दिलैयो—नहीं जानते क्या । ७७८

पर पता नहीं कि तुम क्या सोचकर किसके आधार पर यह कह रहे हो । कितने ही पदार्थ हैं, जिनके बारे में हम सुनते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं । (भरद्वाज मुनि के) सात स्वर्णशरीरी हंस (पुत्रों के रूप में) पैदा हुए थे—क्या तुम यह वृत्तान्त नहीं जानते ? । ७७८

मुर्ग्युमुडि वुम्मिलै मौय्युयिरैन्, रिर्ग्वन्तिळै योनीडि यम्बिनत्ताल्
परैयुन्दुणै यन्तुत्तु पन्तैरिपोय्, मर्ग्युम्मेत वेळै वरुन्दिनळाल् 779

इर्ग्वन्—(श्रीराम) प्रभु के; मौय् उयिर्—(इस संसार को) भरनेवाले जीवों की; मुर्ग्युम् मुट्टिन् इलै—उत्पत्ति का प्रकार और नाश, हम नहीं जानते; अन्तर्—ऐसा; इळैयात्तौट्टु—भाई से; इयम्पितन्—कहा; एळै—अबला ने; परैयुम् तुणै—वार्तालाप के अन्दर; अन्तुत्तु—वह; पल् नैरि पोय्—बहुत दूर जाकर; मर्ग्युम्—छिप जायगा; अन्न—ऐसा; वरुन्दिनळाल्—दुःख के साथ बोली । ७७९

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता को समझाया कि यह संसार अक्षय जीव-जन्तुओं से भरे हैं । उन सभी के जन्म-मरण के प्रकार हम नहीं जान सकते । तब देवी ने चिन्ता व्यक्त की कि आप जब तक वार्तालाप में लगे रहेंगे तब तक यह हरिण बहुत दूर चला जायगा और आँखों से ओझल हो जायगा । ७७९

अन्तैयवळ्	करुत्तै	युन्ता	वञ्जत्तक्	कुन्ऱ	मन्तान्
पुनैयिळै	काट्ट	दैन्ऱ	पोयितान्	पौराद	शिन्दैक्
कन्तैहळर्	रम्बि	पिन्ऱु	शैन्ऱत्तन्	कडक्क	वौण्णा
विनैयैन्	वन्दु	निन्ऱ	मानैदिर्	विळित्त	दन्ऱे 780

अन्तैयवळ् करुत्तै—उनका विचार; उन्ता—सोचकर; वञ्जत्त कुन्ऱम् अन्तान्—अंजन-गिरि-तुल्य श्रीराम; पुनै इळै—आभरणभूषिता; अतु काट्टु—उसे दिखाओ; अन्तर्—कहकर; पोयितान्—(देखने) गये; पौरात् चिन्तै—अधीर-मन; कन्तै कळल् तम्पि—मुखरित पायलधारी भ्राता लक्ष्मण; पिन् चैन्ऱत्तन्—उनके पीछे गया; कडक्क औण्णा—अलंघ्य; विनै अन्न—प्रारब्ध के समान; वन्तु निन्ऱ—जो आकर खड़ा रहा; मान्—उस हरिण ने; अत्तिर् विळित्तत्तु—सामने आकर उन्हें देखा । ७८०

श्रीराम ने देवी का दुःख पहचाना । अंजनगिरि-तुल्य प्रभु श्रीराम ने उनको आभरणभूषित प्यारी देवी, सम्बोधित कर कहा कि दिखाओ । सीता चलीं और श्रीराम भी चले । इसको देखकर मुखरित पायलधारी लक्ष्मण चुप नहीं रह सके । अधीरमन हो वह भी उनके पीछे-पीछे गये । अलंघ्य प्रारब्ध के समान उस मायामृग ने उनके सामने आकर उनको ताका । ७८०

नोक्किय	मानै	नोक्कि	नुदियिळै	मदियि	नौन्नूम्
तूक्किल	नन्नुरि	दैन्ना	नदन्नूर्ळ	शौल्ल	लाहुम्
शक्कैयि	नरवि	नौङ्गिप्	पिरन्ददु	तेवर्	शैय्द
पाक्किय	मुडैमै	यन्नो	वन्नन्दु	पळुदु	पोमो 781

नोक्किय मातै—जो ताक रहा था, उस हरिण को; नोक्कि—देखकर; नुति इळै मतियिन्—अपनी सूक्ष्म बुद्धि से; नौन्नूम् तूक्किलन्—श्रीराम ने कुछ तर्क नहीं किया; इतु नन्नू—यह बड़ा अच्छा है; दैन्ना—कहा; अतन् पौर्ळ चोल्लल् आकुम्—उसका (गूढ़) अर्थ हम कहेंगे; अरवु चेक्कैयिन्—शेष-शय्या से; नोक्कि—अलग आकर; पिरन्ततु—भू पर अवतार लेना; तेवर् चैय्द—देवों के कृत; पाक्कियम् उडैमै अन्नो—पुण्य से प्राप्त फल है न; अन्नतु—वह; पळुदु पोमो—व्यर्थ जायगा क्या । ७८१

श्रीराम ने उस हरिण को देखा जो उनको ताक रहा था । उन्होंने कोई तर्क-वितर्क नहीं किया । कहा कि शाबाश ! यह बहुत अच्छा है ! इसका गूढ़ अर्थ क्या है ? —हम कहें ? वे शेषशय्या त्यागकर भूमि पर अवतरित हुए —यह देवों के पुण्य का फल था । वह वृथा जायगा क्या ? 'अच्छा' का संकेत उनके पुण्य की ओर है । ७८१

अँन्नीक्कु	मैन्न	लाहु	मिळैयव	विदन्नै	नोक्काय्
तन्नीक्कु	मैन्व	दल्लार्	रन्नैयौक्कु	मुवमै	युण्डो
पन्नक्क	तरळ	मौक्कुम्	पशुम्बुत्तमेर्	पडरु	मैन्ना
मिन्नीक्कुञ्	जैम्बौन्	मेनि	वैळ्ळियिन्	विळङ्गुम्	बुळ्ळि 782

इळैयव—अनुज भैया; इतन्नै नोक्काय्—इस पर दृष्टि डालो; अँन् ओक्कुम्—किसके समान है; अँन्तल् आकुम्—कहा जा सकता है; तन् ओक्कुम्—स्वोपम है; अँन्पतु अल्लाल्—इसके सिवा; तन्नै ओक्कुम्—उससे तुल्य; उवमै उण्टो—उपमा होगी क्या; पल्—दाँत; नक्क तरळम् ओक्कुम्—उज्ज्वल मोती के समान हैं; पन्नम् पुल्ल मेल् पट्रम्—(जो) हरी घास पर लगती है, वह; मैल् ना—मृदु जीभ; मिन् ओक्कुम्—विद्युत के समान है; मेनि चैम् पौन्—शरीर लाल (खरा) सोना है; पुळ्ळि—विदियाँ; वैळ्ळियिन् विळङ्गुम्—चाँदी के समान प्रकाशमान हैं । ७८२

श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा । अनुज ! इसको खूब देखो । इसकी तुलना में क्या कहा जा सकता है ? यह स्वोपम है । यही कहना पड़ेगा ।

तान्तीडर् कुलतूतै यैल्लान् दौलैक्कुमा शमैन्दु निन्ऱाळ्
 अँरुवन् दैदिरन्द वीर निवनिह लिराम तैन्ऱे 427

तोन्ऱिय-ऐसे प्रकट हुए; तोन्ऱल् तन्तै-प्रभु श्रीराम को; वान् तोँटर् मूङ्किल्
 तन्त-आकाश तक उन्नत वाँसों (के रगड़ने) से उत्पन्न; वयङ्कु वैम् ती अतु अँन्त-
 जलनेवाली भयंकर आंग ही सम; तान् तोँटर् कुलतूतै अँल्लाम्-अपने रिश्ते के सारे
 कुल को; तौलैक्कुम् आ चमैन्तु निन्ऱाळ्-मिटाने के काम में जो प्रवृत्त रही;
 च्चट्टित्तळ् काट्टि-संकेत करके; एन्ऱ वन्तु-युद्धसन्नद्ध हो जो आया है; अँतिरन्त
 वीरन्-और सामने प्रकट हुआ है वीर; इवन्-यह; इकल् इरामन्-शत्रु राम है;
 अँन्ऱ चोन्ऱाळ्-ऐसा कहा । ४२७

आकाश तक उन्नत वाँसों का नाश वही अग्नि कर देती है जो उन्हीं
 से (उनके आपस में हवा के कारण टकराने से) उत्पन्न होती है, वैसे ही यह
 शूर्पणखा भी अपने कुल की नाशक शक्ति निकली । वह मानो उस कार्य
 में दत्तचित्त और तत्पर रही । ऐसी उसने उनके सामने प्रकट हुए श्रीराम
 को अपने हाथ के इशारे से दिखाया और कहा कि देखो ! जो युद्धसन्नद्ध
 होकर सामने आ रहा है वही वीर राम है, जिसने हमारे साथ वैर ठाना
 है ! । ४२७

कण्डत्तन् कतहत् तेर्मेऱ् कदिरवन् कलङ्गि नीङ्ग
 विण्डन निन्ऱ वँन्ऱिक् करत्तैनुम् विलङ्गऱ् रोळान्
 मण्डमर् यान्ते शैय्दिम् मानिडन् वलियै नौक्किक्
 कौण्डनैन् वाहै यैन्ऱ पडैजरैक् कुऱित्तुच् चोन्ऱान् 428

कतक तेर् मेलु-स्वर्ण-रथ पर; कदिरवन्-सूर्य; कलङ्कि-व्यग्र होकर;
 नौङ्क-हट्टे; विण्डत्तन् निन्ऱ-वैर के साथ स्थित; वँन्ऱि-विजयशील; करन्
 अँन्तुम्-खर नाम के; विलङ्कल् तोळान्-पर्वत-सम कन्धों वाले ने; कण्डत्तन्-
 श्रीराम को देखा (देखकर); पडैजरै कुऱित्तु-सेनावीरों को उद्दिश्य करके; यान्ते-मैं
 स्वयं; मण्डु अमर् चैय्तु-यह बड़ा युद्ध करके; इ मानिडन् वलियै नौक्कि-इस
 मनुष्य का बल मिटाकर; वाकै कौण्डत्तैन्-विजय पा लूंगा; अँन्ऱ-ऐसा; चोन्ऱान्-
 कहा । ४२८

खर भी कम वैर नहीं रखता था । उसके वैर के सामने कनकरथ
 सूर्य भी डरकर हट गया । पर्वत-सम कन्धे वाले विजयशील खर ने श्रीराम
 को देखकर अपनी सेना के वीरो से कहा कि मैं ही बड़ा युद्ध करके इस
 मनुजपुत्र का बल मिटा दूँगा और विजय पाऊँगा । ४२८

मानिड नौरुवन् वन्द वलिहँळु शैलैक् कम्मा
 कानिड मिल्लै यैन्नुङ् गट्टुरै कलन्द कालै
 यानुडै वँन्ऱि यैन्नाम् यावरुङ् गण्डु निऱ्ऱिर्
 ऊनुडै यिवनै याने युण्गुवै नुयिरै यैन्ऱान् 429

मात्तिटन् ओरुवन्-एक मनुज; वन्त-(उससे लड़ने) आई; वलि कँळु चेतैक्कु-सशक्त सेना के लिए; कान् इटम् इल्लै-जंगल में स्थान नहीं है; अँत्तुम्-ऐसी; कट्टुरै-बात; कलन्त कालै-जब फैल जायगी; यान् उटै वेन्त्रि-मेरी विजय का (महत्त्व); अँत्ताम्-क्या होगा; यावरुम् कण्डु निरुर्-सब देखते रहो; यात्ते-मैं अकेला ही; ऊन् उटै इवत्तै-(हमारे खाने योग्य) मांसधारी इसको; उयिरै उण्कुर्वन्-प्राण अशन कर लूँगा; अँत्तान्-कहा । ४२६

लोग यह जानने लगे और यह बात फैल जाय कि एक अकेला मनुष्य आया था और उसके विरुद्ध इतनी बड़ी सेना ने युद्ध किया जिसके लिए वन में खड़े होने को भी स्थान नहीं मिला, तो मेरी जीत का क्या महत्त्व होगा ? इसलिए सब चुप देखते खड़े रहो । अकेला मैं ही इस मांसपिंड का प्राण पी लूँगा । खर ने ऐसा कहा । ४२९

अव्वुरै	केट्टु	वन्दा	नहम्बल्लन्	इमैन्द	कल्विच्
चैव्विया	नीरुव	तैय	शैप्पुवैन्	शैरुविर्	चाल
वैव्विय	राद	तन्ऱे	वीररि	लाण्मै	वीर
इव्वयि	तुळदान्	दीय	निमित्तम्	रियम्ब	लुऱ्ऱान् 430

अकम्पन् अँत्तु-अकम्पन नाम के; अमैन्त कल्वि चैव्वियान्-युक्त विद्या-विदग्ध; ओरुवन्-एक राक्षस ने; अ उरै केट्टु-वह वचन सुनकर; वन्तान्-पास आकर; ऐय-प्रभु; वीरळ् आण्मै वीर-वीरों में सर्वश्रेष्ठ वीर; चैप्पुवैन्-विनय करता है; चैरुविल् चाल वैव्वियर् आतल्-युद्ध में बड़ा उत्साही रहना; तन्ऱे-अच्छा ही है; इ वयिन्-इस संदर्भ में; तीय निमित्तम् उळ आम्-बुरे शकुन होते हैं; अँत्तु-कहकर; इयम्पल् उऱ्ऱान्-विस्तार किया । ४३०

यह खर का वचन सुनकर अकंपन नाम का राक्षस सामने आया । वह विद्वान था । उसने कहा—स्वामी ! एक विनयवचन है—सुनाऊँगा । युद्ध में उत्साह दिखाना अच्छा ही है । पर शकुन बुरे दिखते हैं । उसने आगे उस बात का विस्तार किया । ४३०

कुरुदि	मामळै	शौरिन्दन	मेहङ्गळ्	कुमुडिप्
परुदि	वात्तव	तूरुवळैप्	पुण्डु	पाराय्
करुडु	वीरनिन्	गौडिमिशैक्	काक्कैयिन्	कणङ्गळ्
पौरुडु	वौळ्वन	पुलम्बुव	निलम्बडप्	पुरळ्व 431

करुतु वीर-प्रतिष्ठित वीर; मेकङ्कळ् कुमुडि-मेघ गर्जन करते हुए; कुरुति मा मळै चौरिन्त-बड़ी रक्त-वर्षा बरसायी; परिति वात्तवन्-सूर्यदेव; ऊर् वळैप्पुण्डु-परिवेश से घिरे हुए हो गये; काक्कैयिन् कणङ्कळ्-कौओं के समूह; निन् कौडि मिच्चै-तुम्हारी ध्वजा पर; पौरुतु वौळ्वन-आपस में लड़ते हुए गिरते और; पुलम्बुव-चीखते-चिल्लाते हैं; निलम्पट पुरळ्व-भूमि पर गिरकर लोटते हैं; पाराय्-तुम देखो । ४३१

प्रतिष्ठित वीर ! मेघ गरजते हुए रक्तवर्षा कर रहे हैं । सूर्य के परिवेश बना है । काकवृन्द आपस में लड़ते हुए ध्वजा पर गिरते हैं, फिर चिल्लाते हुए नीचे गिरते हैं और भूमि पर गिरकर लोटते हैं । देखो । ४३१

वाळि	वाय्हळ	यीवळैक्	किन्ऱुत्त	वयवर्
तोळु	नाट्टमु	मिडन्ऱुडिक्	किन्ऱुत्त	तूङ्गि
मीळि	मीयम्बुडै	यिवुळिहळ्	विळुवन्	विऱलोय्
जाळि	योडुनिन्	रुळैप्पन्	नरिक्कुलम्	बलवाल् 432

विऱलोय्-विजयी वीर; वाळि वाय्कळै-वाणों के मुखों पर; ई वळैक्किन्ऱुत्त-मक्खियाँ मँडराती हैं; वयवर्-वीरों की; तोळुम् नाट्टमुम्-भुजाएँ और आँखें; इट्टम् तुट्टिक्किन्ऱुत्त-वाई ओर (की) फड़कती हैं; मीळि मीयम्बु उदै-अपार शक्ति वाले; इवुळिहळ्-अश्व; तूङ्गि विळुवन्-सोते हुए गिरते हैं; नरि कुलम्-सियारों के झुण्ड; पल-अनेक; जाळियोडु निन्ऱु-कुत्तों के साथ खड़े होकर; उळैप्पन्-रवन-स्वर में झूंकते हैं; पाराय्-देखो । ४३२

वीर ! वाणों के फलों पर मक्खियाँ मँडरा रही हैं । वीरों के वाम नेत्र और हाथ फड़क रहे हैं । ताकतवर अश्व सोते और गिर पड़ते हैं । सियारों के झुण्ड आकर कुत्तों से मिल गये हैं और दोनों रुदन कर रहे हैं । तुम देखो । ४३२

पिडियै	लामदम्	वैय्दिडप्	पैरुङ्गवुळ्	वेळम्
ओडियुम्	मान्मरुप्	पुलहमुड्	गम्बिक्कु	मुयर्वाळ्
इडियुम्	वीळ्न्दिडु	मैरिन्दिडुम्	वैरुन्दिशै	यैवर्क्कुम्
मुडियिन्	मालैहळ्	पुलालौडु	मुळुमुडै	नारुम् 433

पिडि अलाम्-हथिनियाँ, सभी; मतम् पय्तिटि-मद बहाते हुए; पैरुम् कवुळ् वेळम्-बड़े-बड़े गण्डस्थल वाले गजों के; माल् मरुप्पु ओडियुम्-बड़े दाँत टूट जाते हैं; उलक्कुम् कम्पिक्कुम्-पृथ्वी में कम्पन होता है; उयर् वान् इडियुम्-ऊँचे आकाश से गाज; वीळ्न्दिडुम्-गिरती है; पैरुम् तिचै-लम्बी दिशाएँ; मैरिन्दिडुम्-जलती हैं; यैवर्क्कुम्-सभी की; मुडियिन् मालैहळ्-सिर की मालाएँ; पुलाल् ओडु-मांसगन्ध के साथ; मुदै नारुम्-दुर्गन्ध निःसृत करती हैं । ४३३

हथिनियाँ मद बहा रही है और बड़े गाल वाले हाथियों के दाँत टूट जाते हैं । झूकम्प होता है । आकाश से गाज गिरती है । दिशाएँ जलती हैं । सबके सिर की मालाओं से सड़े मांस की-सी गन्ध और दुर्गन्ध निकलती है । ४३३

इत्तैय	वाहलिन्	मान्निड	नौरुवन्तै	ऱिवन्तै
निन्तैय	लावदिङ्	गेळैमै	नीयमर्क्	कियन्ऱु

विनैयै लाज्जैय्दु वेल्ललान् दन्मैय तल्लन्
पुनैयुम् वाहैयाय् पौरुत्तियैन् नुरैयैत्तप् पुहन्नान् 434

पुनैयुम् वाकैयाय्-‘वाहै’ (विजय-सूचक) मालाधारी; इतैय आकलिन्-ऐसे हैं (शकुन) इसलिये; इवतै-इसको; मानिटिन् ओरुवन्-केवल एक मनुष्य है; अन्ड-ऐसा; इङ्कु नितैयल् आवतु-यहाँ सोचना; एळ्ळै-अज्ञता होगा; नी अमरक्कु इयन्-तुम युद्ध-योग्य; विनै अलाम् चैय्-सभी कार्य करके; वेल्लल् आम्-उस पर विजय पाओ; तन्मैयन् अल्लन्-ऐसा मनुष्य नहीं; अन् उरै पौडुत्ति-मेरी बात के लिए क्षमा करो; अन् पुक्कन्नान्-ऐसा कहा (अकम्पन ने) । ४३४

ये सब बुरे शकुन हैं । ये हो रहे हैं । इसलिए इसको मामूली अल्प मानव समझना अज्ञता होगा । तुम्हारे युद्ध-तन्त्र और सामर्थ्य द्वारा वह जीता जानेवाला नहीं लगता । मैं यह कह रहा हूँ, उसके लिए क्षमा कर दो । अकम्पन ने विनय के साथ यों बताया । ४३४

उरैत्त वाशहड् गेट्टुलु मुलहैला मुलैयच्
चिरित्तु नन्ऱिदैन् शेवहन् देवरैन् तेय
अरैत्त वम्मिया मलङ्गैळिर् इळमर् वेण्डि
इरैत्तु वीङ्गुव मानिडर् कैळियवो वैन्नान् 435

उरैत्त वाचकम् केट्टुलुम्-(उसका) कहा वचन सुनकर; उलकु अलाम्-सारे लोकों को; उलैय-कंपाते हुए; चिरित्तु-ठठाकर (हँसकर); तेवरै तेय अरैत्त-देवों को पिचकाते हुए पीसनेवाले; अम्मि आम्-सिल है, ऐसा; अलङ्कु अळिल् तोळ्-हिलनेवाले सुन्दर मेरे ये कन्धे; अमर् वेण्डि-युद्ध मांगते हुए; इरैत्तु वीङ्गुव-फूले और उभरे हैं; मानिडर्कु कैळियवो-मनुष्य के लिए अल्प (जैय) हो गये क्या; नम् चैवकम् नन्ऱित्तु-हमारी वीरता भी बड़ी भली; अन्नान्-कहा । ४३५

यह सुनते ही खर ऐसा ठाया कि सारे लोक काँप गये । उसने कहा—अकम्पन ! इन मेरे अनुपम कन्धों को देखो जो मेरे हँसते समय हिलते हैं । और सिल के समान इनसे देव पिसे और पिचक गये थे । ये फूले हुए पुष्ट कन्धे उस अल्प मानव के लिए क्षुद्र हो गये क्या ? हमारी वीरता भी भली रही ! । ४३५

अन्नु मात्तिरत् तैरिपडै पिडियैन् विडिया
मन्न्ऱ मन्न्वन् मदलैयै वळैन्दन वळैन्दु
मिन्नुम् वालुळ मडङ्गलै मुनिन्दत् वेळम्
तुन्नि तालैत्तच् चुडुशिनत् तरक्कर्दन् दौहुदि 436

अन्नुम् मात्तिरत्तु-(खर के) यह कहते ही; मिन्नुम् वाल् उळै मटङ्कलै-प्रकाशमय लम्बे अयाल वाले सिंह को; मुत्तिन्त-वैर करके; वेळम् वळैन्नु तुन्निनाल् अन्-गजों ने घेर लिया हो, ऐसा; चुडु चित्तु-तापक क्रोधशील; अरक्कर् तम् तौकुति-राक्षसों के दल; अन्ऱि पटै-आपस में टकरानेवाले हथियारों के; इटि अन् इटिया-

वज्र के समान नाद करते; मन्तर् मन्तवन् मतलैयै—राजाधिराज के पुत्र श्रीराम को; वळैन्तत—घेर गये । ४३६

खर के यह कहते ही अग्नि के समान क्रोधी राक्षसों की सेना ने आकर चक्रवर्तीसुत श्रीराम को घेर लिया, मानो उज्ज्वल अयाल वाले सिंह से बैर करके गजों ने आकर घेर लिया हो । तब उनके हथियार आपस में टकराये और वज्र के समान नाद पैदा हुआ । ४३६

वळैन्द	कालैयिल्	वळैन्ददव्	विरामन्गै	वरिविल्
विळैन्द	पोरैयु	मावदुम्	विळम्बुदुम्	विशैयाल्
पुळैन्द	पाय्बरि	पुरण्डत्त	पुहर्मुहप्	पूट्कै
उळैन्द	माल्वरै	युरुमिडि	पडवौडिन्	देन्त 437

वळैन्त कालैयिल्—जब घिर गये तब; इरामन् कै वरि विल्—श्रीराम के हाथ का बन्धनयुक्त धनुष भी; वळैन्ततु—झुका; विळैन्त पोरैयुम्—तब जो युद्ध हुआ, उसको; आवतुम्—उसके फल को; विळम्बुदुम्—कहेंगे; विचैयाल् पुळैन्त—अपनी तीव्र गति से जो विद्ध हुए वे; पाय् परि—तीव्रगामी अश्व; पुरण्डत्त—नीचे गिरकर लोटे; माल्वरै—बड़े-बड़े पर्वत; उरुम् इटि पट—घोर वज्र के गिरने से; ओटिन्तैन्त—टूट जाते हों जैसे; पुक् मुक् पूट्कै—बिन्दियों सहित मुख वाले गज; उळैन्त—बुखी हो गिरे । ४३७

जब वे घेर आये तब श्रीराम ने अपने प्रतापी चाप को झुकाया और युद्ध छिड़ गया । उसके फलस्वरूप क्या-क्या आश्चर्य हुए ? हम उनका वर्णन करेंगे । एक दम विद्ध होकर दुलकी चलनेवाले अश्व गिरे और भूमि पर लोटे । गज, जिनके माथाओं पर बिन्दियाँ थीं, ऐसे पर्वतों के समान टूटकर गिरे जिन पर वज्र-पात हुआ हो । ४३७

शूल	मर्त्त	वर्त्त	शुडर्मळुत्	तीहैवाळ्
मूल	मर्त्त	वर्त्त	मुरट्टण्डु	पिण्डि
पाल	मर्त्त	वर्त्त	पहळिवैम्	बहुवाय्
वेलु	मर्त्त	वर्त्त	विल्लोडु	पल्लम् 438

चूलम् अर्त्त—शूल कटे; चुटर् मळु तौकै—उज्ज्वल परशु-वृन्द; अर्त्त—वेकार हुए; वाळ् मूलम्—तलवारों के मूल; अर्त्त—छिन्न हुए; मुरण् तण्डु अर्त्त—सुदृढ़ दण्डायुध नष्ट हुए; पिण्डिपालम् अर्त्त—भिण्डिपाल मिटे; वैम् पकुवाय्—चौरकर जानेवाले फल के; वेलुम्—भाले भी; अर्त्त—नष्ट हुए; विल् ओटु पल्लम्—धनुष के साथ बल्लम व्यर्थ हुए । ४३८

और भी राक्षसों के शूल और कान्तियुक्त परशुसमूह नष्ट हुआ । तलवारों के मूल (या रूप) छिन्न हुए । सुदृढ़ दण्डायुध टूटे । भिण्डिपाल, भेदनेवाले शूल, चाप और बल्लम सभी तहस-नहस हुए । ४३८

तौडितु	णिन्दन	तोळौडुन्	दोमरन्	डुणिन्द
अडितु	णिन्दन	कडहळि	इच्चौडु	नैडुन्देर्क्
कौडितु	णिन्दन	कुरहदन्	डुणिन्दन	कुलमा
मुडितु	णिन्दन	तुणिन्दन	मुळैयौडु	मुशालम् 439

तौटि तुणिन्तत-वीरकंकण दूटे; तोळौडु तोमरम् तुणिन्तत-कन्धों के साथ तोमर खण्ड-खण्ड हुए; कट कळिळ अटि-मत्तगजों के पैर; तुणिन्तत-कटे; नैटुम् तेर्-वड़े रथ; अच्चौडु कौटि-धुरों के साथ ध्वजाएँ; तुणिन्तत-कटी; कुरकतम् तुणिन्तत-घोड़े कटे; कुल मा मुटि-बड़ी संख्या में एक साथ बड़े किरौट; तुणिन्तत-खण्डित हुए; मुळैयौडु-मुद्गरों के साथ; मुचलम् तुणिन्तत-मूसल दूटे । ४३६

और भी अंगवलय आदि वलय कटकर गिरे और भुजाओं के साथ तोमर आदि कटे । मत्तगजों के पैर, ऊँचे रथों की धुरियाँ और ध्वजाएँ आदि छिन्न हो गयीं । घोड़े टुकड़े-टुकड़े हुए । दण्ड और मुद्गर छिन्न-भिन्न हुए । ४३९

करुवि	मावौडु	कार्मदक्	कैम्मलैक्	कणत्तो
डुरुवि	मादिरत्	तोडित्त	शुडुशर	मुदिरम्
अरुवि	मालैयिर्	पिडुङ्गिय	दवत्तियि	लरक्कर्
तिरुविन्	मार्वहन्	दिउन्दन	तुउन्दन	शिरङ्गळ् 440

चुटु चरम्-श्रीराम के भयंकर शर; करुवि मा औडु-जीन वाले घोड़ों के साथ; कार्-काले; मत कै मलै-मत्तगजों के; कणत्तौडु-दलों को; उरुवि-आर-पार होकर; मातिरत्तु ओटित्त-(बाहर निकल) दिशाओं में चले; उतिरम् अरुवि-रक्त नदियों; मालैयिल् पिडुङ्गित्त-के रूप में बहा; अवत्तियिल्-भूमि में; अरक्कर्-राक्षसों के; तिरु इल् मारुपु अकम्-श्रीहीन वक्षस्थलों को; तिउन्तत-खोलकर (रक्त) बाहर आया; चिरङ्गळ् तुउन्तत-सिर (धड़ों से) अलग हुए । ४४०

श्रीराम के सन्तापी शर जीन वाले अश्वों और काले रंग के मत्तगजों को निफरकर आगे सभी दिशाओं में गए । रक्त की सरिताएँ बह चलीं । शरों ने राक्षसों के श्रीहीन वक्षों को विदीर्ण कर दिया और उनके सिरों को काटकर धड़ों से अलग कर दिया । ४४०

औन्ऱु	पत्तुन्	आयिरिङ्	गोडियैन्	ऊणरात्
तुन्ऱु	पत्तिय	विराहवन्	शुडुशरन्	डुरक्कच्
चैन्ऱु	पत्तिरत्	तलैयिन्	मलैदिरण्	डैन्तक्
कौन्ऱु	पत्तियिर्	कुविन्दन	पिणप्पेरुडु	गुन्ऱुम् 441

औन्ऱु पत्तु नूऱु-एक, दस, सौ; आयिरम् कोटि-सहस्र, करोड़; अन्ऱु उणरा-ऐसा अगण्य; तुन्ऱु पत्तिय-बहुत मिली हुई पंक्तियों में; चुटु चरम्-जला डालनेवाले शरों को; इराक्कवन् तुरक्क-श्रीराघव ने चलाया तब; चैन्ऱु-जाकर; कौन्ऱु-मारकर; पत्तिर तलैयिन्-शरसहित सिरों की; मलै तिरण्ड अन्त-पर्वत

एकत्र हुए हों, जैसे; पिण्ड-पुष्प-कुत्तुम्-लाशों के बड़े पर्वतों को; पत्तियिल् कुवित्तत्त-श्रेणियों में लगा दिया (शरों ने) । ४४१

श्रीराघव ने कितने शर लगातार छोड़े ? एक, दस, सौ, हजार, करोड़...? कोई गणना नहीं थी ! उनके भयंकर अस्त्र धनुष से छूटे और गये । राक्षस मरे और उनके सिरों पर वे अस्त्र गड़े रहे । उन अस्त्रों के साथ उन राक्षसों की लाशों के ढेर के ढेर पंक्तियों में बन गये । ४४१

काडु	कौण्डहा	रुलवैहळ्	कार्येरि	कटुवच्
चूडु	कौण्डत	वैतत्तौडर्	कुरुदिमीत्	तोत्तु
आडु	हिन्नुत्त	वशुहुरै	ययिलम्बु	विण्मेल्
औडु	हिन्नुत्त	वुयिरैयुन्	दौडर्वन	वौत्त 442

काटु कौण्ड-वन में भरे; कार् उलवैकळ्-काले ठूठ; कार् अरि कटुव-जलती आग के लगने से; चूड कौण्डत अत्त-गरम हो गए जैसे; अरु कुरै-सिर-कटे राक्षसों के कबन्ध; तौटर् कुरुति मी तोत्तु-रक्त की धार के ऊपर उछलते रहने से; आडुकिन्नुत्त-और नाचते हैं, तब; अयिल् अम्पु-श्रीराम के तीक्ष्ण शर; विण् मेल् ओटुकिन्नुत्त उयिरैयुम्-आकाश में जानेवाले उनके प्राणों को भी; तौटर्वन औत्त- (पकड़ने के लिए) पीछे जाते थे, ऐसे लगा । ४४२

राक्षसों के सिर-रहित कबन्ध नाचे । उनके शरीरों पर से लाल रक्त उछल रहा था । उनको देखकर ऐसा लगता था, मानो वन के ठूठ आग से जल रहे हों । उछलते रक्त के फौवारे श्रीराम के बाणों के समान दिखे, जो स्वर्गगामी राक्षसों के प्राणों का पीछा कर रहे हों । ४४२

कैहळ्	वाळौडु	कळप्पड	कळुत्तुत्तुक्	कवश
मैय्हळ्	पोळ्बडत्	ताळ्विळ	मिहनेडु	निरुदर
शैय्य	मात्तलै	शिन्नुडिडत्	तिशैयुत्तु	चैन्नु
तैय	लार्नेडु	विळियेन्क्	कौडियत्त	शरड्गळ् 443

तैयलार् नैटु विळि अत्त-दयिताओं के आयत नेत्रों के समान; कौडियत्त-घातक; चरङ्कळ्-श्रीराम के शर; मिक नैटु निरुदर-बहुत ऊँचे कद के राक्षसों के; कैकळ् वाळौडु कळम् पट-हाथों को तलवारों के साथ युद्धभूमि पर गिराते हुए; कळुत्तु अर-गलाओं को काटते हुए; कवच मैय्कळ्-कवचसहित शरीरों को; पोळ् पट-चीरते हुए; ताळ् विळ-पैरों को काटते; चैय्य मा तलै चिन्तिट-लाल सिरों को छितराते हुए; तिचै उर चैन्नु-दिशाओं में लगे हुए उड़ चले । ४४३

श्रीराम के बाण दयिताओं के आयत नेत्रों के समान थे । वे अत्यन्त भयंकर थे । वे चारों दिशाओं में बड़ा उत्पात मचाते हुए उड़े । ऊँचे कद के राक्षसों के हाथ तलवारों के साथ कटकर गिरे । उन शरों से गर्दनें कटीं । कवच विदीर्ण हुए । बड़े और लाल सिर अलग हुए । ४४३

मारि	याक्किय	वडिक्कणै	वरैपुरै	निरुदरु
पेरि	याक्कैयिन्	पैरुङ्गरै	वयिन्तुडुम्	विडुङ्ग
एरि	याक्कित्त	वारुह	ळाक्कित्त	विरैक्कुम्
शोरि	याक्कित्त	पोक्कित्त	वत्तम्बेनुन्	दौन्मै 444

मारि आक्किय-वर्षा हो रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करनेवाले; वडि कणै—(श्रीराम के) तीक्ष्ण बाणों ने; वरै पुरै निरुदरु—पर्वत-सम राक्षसों के; पेरु याक्कैयिन्—बड़े शरीरों के (रूपी); पैरुम् करै—बड़े तटों के; वयिन् तौडुम् पिडुङ्क—स्थान-स्थान पर दृश्यमान होते; एरि आक्कित्त—झीलें बनाई; आडुक्क आक्कित्त—नदियों की सृष्टि की; इरैक्कुम् चोरि आक्कित्त—उनको खून से भरा बना दिया; वत्तम् अँतुम् तौन्मै पोक्कित्त—वन का प्राचीन प्रकार मिटा दिया। ४४४

श्रीराम के तीक्ष्ण बाणों की वर्षा ने बड़ी-बड़ी नदियाँ और झीलें बनायीं, जिनके तट पर्वत-सम राक्षसों के बड़े शरीरों के बनाये और उनमें रक्त भर दिया। अब वन का प्राचीन रूप बदल गया। ४४४

अलैमि	दन्दत्त	कुरुदियिन्	बैरुङ्गड	लरक्कर्
तलैमि	दन्दन	नैडुन्दडि	मिदन्दन	तडक्कै
मलैमि	दन्दत्त	वाम्बरि	मिदन्दत्त	वयप्पोर्च्
चिलैमि	दन्दत्त	मिदन्दन	कौडियौडु	तेरुहळ् 445

अलै मितन्तत्त—लहरें जिसमें उठती थीं, उस; कुरुदियिन् पैरुम् कटल्—रक्त के बड़े सागर पर; अरक्कर् तलै मितन्तत्त—राक्षसों के सिर तैरे; नैडुम् तटि मितन्तत्त—लम्बे मांसखण्ड तैरे; तट कै मलै—विशाल हाथों (सूँड़ों) के गज बहे; वाम् परि मितन्तत्त—फांदकर चलनेवाले अश्व बहे; वय पोर् चिलै मितन्तत्त—सारयुक्त युद्ध-धनु बहे; कौटि औटु तेरुक्ळ् मितन्तत्त—ध्वजाओं-सहित रथ बहे। ४४५

रक्त का सागर-सा बन गया और उस पर तरंगें भी उठीं। उस रक्त पर राक्षसों के सिर, उनके बड़े-बड़े मांसखण्ड, अनेक करी, अश्व, बलवान चाप और ध्वजाओं के साथ रथ उतराये। ४४५

आय	कालैयि	लत्तल्विळित्	तार्त्तिरैत्	तरक्कर्
तीय	वार्हणै	मुदलिय	तैरुशिनप्	पडेहळ्
मेय	माल्वरै	यौन्त्रित्तै	वळैत्तिन्	मेहम्
तूय	तारैहळ्	शौरिवन्	वामेत्तच्	चौरिन्दार् 446

आय कालैयिल्—तब; अरक्कर्—राक्षसों ने (जो बचे रहे); मेय माल् वरै—स्थायी, बड़े एक पर्वत; औन्त्रित्तै—एक को; इत्त मेक्कम् वळैत्तु—श्रेणीबद्ध मेघ घेरकर; तूय तारैक्ळ् चौरिवन् आम्—शुद्ध धारें गिरा रहे हों; अँत—ऐसा; तीय वार् कणै—भयंकर लम्बे अस्त्र; मुत्तलिय—आदि; चित्त तैरु पटैक्ळ्—क्रोध के साथ फेंके, घातक हथियार; चौरिन्दार्—बरसाये। ४४६

तब राक्षसों ने श्रीराम को घेर लिया और भयंकर अस्त्र आदि-

चलाये । वह दृश्य ऐसा था, मानो मेघों के समूहों ने एक पर्वत को घेर लिया हो और वे उस पर शुद्ध जलधारे वरसा रहे हों । राक्षसों ने क्रोध के साथ अस्त्र चलाये और वे अस्त्र भयंकर और घातक थे । ४४६

शौरिन्द	पल्पडै	तुणिबडत्	तुणिबडच	चरत्ताल्
अरिन्दु	वैन्दत्	शिन्दिडत्	तिशैतिशै	यहड्डि
नैरिन्दु	पारमह	णैल्लिवुड	वत्तमुड्ड	निडैय
विरिन्द	शैम्मयिर्क्	करुन्दलै	मलैयैत्	वीळत्तान् 447

चरत्ताल्-शरों द्वारा (श्रीराम ने); चौरिन्द पल् पटै-(राक्षसों के) बरसाये अनेक हथियारों को; तुणि पट तुणि पट-आते-आते खण्डित करके; अरिन्दु-काटकर; वैन्दत् चिन्दिट-जलाकर छितराया; तिचै तिचै अकड्डि-दिशा-दिशा में फिकवा दिया; पार मकळ-भूदेवी को; नैरिन्दु नैल्लिवु उड्ड-कुचलकर झुकने देते हुए; वत्तम् मुड्डम् निडैय-सारे वन को भरते हुए; विरिन्द चैम्मयिर्-बिखरे लाल केशों के; करुम् तलै-काले सिरों को; वीळत्तान्-गिराया । ४४७

श्रीराम ने अपने शरों से उन हथियारों को, जो राक्षसों द्वारा अत्यधिक परिमाण में उन पर चलाये गये, आते-आते काट दिया । उनको जलाकर छितराया । उनको सभी दिशाओं में दूर-दूर तक फेंक दिया । उन्होंने राक्षसों के लाल वालों से भरे काले सिरों को काट गिराया । उन सिरों की इतनी भारी संख्या थी कि उनके भार से भूदेवी कुचल गयीं और वह लचक गयीं । वन में सर्वत्र सिर ही सिर दिखाई दिये । ४४७

कवन्द	पन्दङ्गळ	कळित्तत्	कुळित्तकैम्	मलैहळ
शिवन्दु	पायन्दवैड	गुरुदियिड	डिरुहित	शित्तत्ताल्
निवन्द	वैन्दौळि	निरुदरुदम्	नैडुनिणन्	दैविट्टि
उवन्द	वन्गळ	दुयिर्शुमन्	दुळ्ळुकिय	दुम्बर् 448

कवन्त पन्तङ्कळ-कवन्धराशियाँ; कळित्तत्-मुदित हुए; कै मलैकळ-'सूँड़ वाले पर्वत' (करी); चिवन्दु पायन्त वैम् कुरुतियिल्-लाल और बहते रक्त-प्रवाह में; कुळित्त-नहाये; तिरुक्ति चित्तत्ताल्-भयंकर क्रोध के कारण; निवन्त-उमरे; वैम् तौळिल्-भयंकर काम करनेवाले; निरुदरु तम्-राक्षसों के; नैडु निणम्-अधिक मांसों को खाकर; तिवट्टि-अघाकर; वन् कळुत्तु-बलवान प्रेत; उवन्त-हर्षित हुए; उम्पर-देवलोक; उयिर् चुमन्तु-(राक्षसों के) प्राणों को ढोते हुए; उळ्ळुकियत्तु-लचक उठा । ४४८

भयंकर युद्ध में कवन्धराशियाँ मुदित हुईं । करी रक्त-प्रवाह में नहाये । बलवान प्रेतों ने क्रुद्ध राक्षसों के मांस खाकर अघाकर आनन्द मनाया । देवलोक में इतने राक्षसों के प्राण आ भर गये कि लोक ही झुक गया । ४४८

मरुड	रुङ्गळि	वञ्जने	वळैयैयिर्	उरक्कर्
गरुड	नञ्जुळ	कण्मणि	काहमुड्	गवर्न्द
इरुड	रुम्बुउत्	तिळुवैयर्	पळुदुउर्	कैळिवे
अरुड	रुन्दिरुत्	तउनन्नि	वलियवुण्	डामो 449

मरुड् तरुम्-मोह में डालनेवाले (मायावी); कळि-मत्त; वञ्चने-कपटी; वळै अयिर्-वक्रवांत वाले; अरक्कर्-राक्षसों की; कट्टन् अञ्चुळ-गरुड को भी भयभीत करनेवाली; कण्मणि-आँखों की पुतलियों की; काकमुम् कवर्न्द-कौओं ने छीन लिया; इरुड् तरुम् पुउत्तु-अन्धकार-सम काले शरीरों के; इळुतैयर्-नीच लोग; पळुत्तु उउर्कु अळिते-नष्ट होंगे, यह सुलभ ही है; अरुड् तरुम् तिउत्तु-कृपा देनेवाले; अउन् अन्नि-धर्म के सिवा; वलियवु-वलवान; उण्टामो-कोई दूसरा होगा क्या । ४४६

उन मायावी, मत्त, कपटी और वक्रदांत वाले राक्षसों की आँखों की पुतलियों को अब कौए नोचकर खाने लगे । पहले उन आँखों को देखकर स्वयं गरुड भी डरता था । अब उनकी स्थिति ऐसी हो गयी ! क्यों ? उन नीचों की अवनति सुगमता से हो जाती है, जो अन्धकार के समान काले होते हैं ! धर्म कृपा का जनक है । उससे बढ़कर वलवान और क्या है ? । ४४९

पल्लायिर	मिरुळ्	कीरिय	पहलोत्तेन	वैळिरुम्
विल्लाळने	मुनियार्वैयि	लयिलामैत्त	विळियाक्	
कल्लारुमळै	कणमामुहिल्	कडैनाळ्विळ्	वतवोल्	
अल्लामोरु	तौडैयवुड	नय्दार्वित्तै	शैय्दार्	450

पल् आयिरम् इरुळ्-अनेक सहस्र अन्धकार पुंजों की; कीरिय-चीरनेवाले; पकलोन् अत्त औळिरुम्-सूर्य के समान प्रभावान; विल्लाळने-कोदण्डपाणी श्रीराम को; अल्लारुम् और् तौडैया-सभी (बचे हुए) राक्षसों ने एक साथ मिलकर; मुनियार्वैयि-कोप करके; वैयिल् अयिल् आम् अत्त-चमकदार भाले के समान; विळिया-तरेरकर; कण मा मुकिल्-समूहों में मिले बड़े-बड़े मेघ; कटै नाळ्-युगान्त में; कल् आर् मळै-पत्थर की वर्षा; विटुवत्त पोल्-गिराते हों, जैसे; अल्लाम् उटन् अय्यार्-सभी अस्त्र एक साथ चलाते हुए; वित्तै चैय्यार्-(युद्ध-) कार्य किया । ४५०

श्रीराम अन्धकार के समूहों को चीरकर हटानेवाले सूर्य के समान प्रभावान थे । उन कोदण्डपाणी पर सभी (बचे हुए) राक्षसों ने एक साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया । उनकी तरेरती आँखों ने भयंकर भालों के समान दृष्टि चलायी । युगान्त में पत्थर बरसानेवाले मेघों के समान वे सभी अस्त्रों को एक साथ चलाने लगे । ४५०

अयिन्दारैत्त	वैय्यारैत्त	वयियानिनैन्	दत्तवुम्
अयिन्दारैत्त	वयियावहै	ययिल्वाळियि	नरुत्तात्

शैरिन्दारैयुम् बिरिन्दारैयुज् जैरुत्तारैयुन् दिरुत्ताल्
मरिन्दारैयुम् वलित्तारैयु मडित्तान्शिले पिडित्तान् 451

चिले पिडित्तान्—कोदण्डपाणी श्रीराम ने; जैरुत्तारैयुम्—दलों में आनेवालों को; विरिन्दारैयुम्—अलग-अलग आनेवालों को; जैरुत्तारैयुम्—द्वेष करके आनेवालों को; चित्तत्ताल् मरिन्दारैयुम्—(जो भागे थे पर) क्रोध के कारण मुड़ आये उनको; वलित्तारैयुम्—अन्याय करनेवालों को; मडित्तान्—मिटायी; अरिन्दारै अत—ये शस्त्र फेंकनेवाले; अयुत्तार् अत—ये अस्त्र चलानेवाले; अरिया निनैन्ततवुम्—चलाने योग्य हथियारों को; अरिन्दारै अत—परखकर लेनेवाले थे; अरिया वकै—ऐसा पहचाना न जा सके, ऐसा; अयिल् वाळियिन् अरुत्तान्—तीक्ष्ण अपने शरों से छिन्न-भिन्न कर दिया । ४५१

कोदण्डपाणी श्रीराम ने सब राक्षसों को मार दिया । उनमें दल बाँधकर आनेवाले, पृथक-पृथक आनेवाले, क्रुद्ध राक्षस, भाग जाकर वैर-प्रेषित हो लौट आनेवाले और अन्यायी सभी थे । इस तेजी से वे हत हुए कि यह जानना भी कठिन हो गया कि कौन क्या कर रहा था । अस्त्र चलानेवाले, शस्त्र चलानेवाले, चलाने के लिए चुनाव में लगे रहनेवाले सभी थे । वे भी कुछ करने से पहले ही हत हो गये । ४५१

वातत्तत्त कडलिन्बुड वलयत्तन मदिशुल्
मीनत्तत्त मिळिर्होण्डलिन् मिशैयत्तन मिडल्वैम्
कातत्तत्त मलैयत्तन तिशैमुड्रिय करियिन्
तातत्तत्त काहुत्तत्त शरमुन्दिय शिरमे 452

काकुत्तत्त—काकुत्स्थ के; चरम् उन्तिय—शरों द्वारा उकसाये गये; चिरमे—राक्षसों के सिर; वातत्तत्त—आकाश में गये; कडलिन् बुड वलयत्तन—समुद्र के पार के चक्रवाल में गये; मति चूळ्—चन्द्रवलयित; मीनत्तत्त—नक्षत्र-मण्डल में गये; मिळिर् होण्डलिन्—दृश्यमान मेघमण्डलों के; मिशैयत्तन—ऊपर वाले हो गये; मिडल्वैम् कातत्तत्त—घने भयंकर वनों में गये रहे; मलैयत्तन—पर्वतों पर के हुए; तिशै मुड्रिय—दिशाओं के छोर में रहनेवाले; करियिन्—करियों के; तातत्तत्त—स्थानों पर गये । ४५२

काकुत्स्थ के शरों से कटे हुए राक्षसों के सिर कहाँ-कहाँ दिखे ! आकाश, समुद्र पार चक्रवाल पर्वत, चन्द्र को मध्य में लिये रहे मीनमण्डल, सुदृश्य मेघमण्डल, घने भयंकर वन, पर्वत, दिशाओं के अन्त में रहनेवाले दिग्गजों के स्थान —सभी स्थानों पर गये रहे । ४५२

मण्मेलन मलैमेलन मल्लैमेलन मदितोय्
विण्मेलन नैडुवैलैयि निडमेलन मिडलोर्
पुण्मेलन कुरुदिप्पोरु तिरैयारुहळ् पौङ्गत
तिण्मेरुवै नहुमार्बिनै युरुवुन्दैरि शरमे 453

तिण् मेरुवै नकु-मुदूढ मेरु का परिहास करनेवाली; मारुपित्तै-(राक्षसों की) छातियों की; उरुवुम् तैरि चरम्-वेध जानेवाले (श्रीराम के) चुने हुए शर; पौरि तिरै कुरुति आडकळ्-आपस में टकरानेवाली तरंगों से युक्त रक्त-नदियाँ; पौड्क-उमंगकर बड़े, ऐसा; मण् मेलत्त-पृथ्वी में गये; मलै मेलत्त-पर्वतों पर गये; मळ्ळै मेलत्त-मेघों पर गये; मति तोय् विण् मेलत्त-चन्द्राश्रयी आकाश पर के हो रहे; नैट्टु वेलैयिन् इटम् मेलत्त-विस्तृत समुद्रतलो के हो रहे; मिटलोर् पुण् मेलत्त-वली (राक्षसों) के व्रणों पर रहनेवाले बने । ४५३

जो मेरु-समान कठिन छाती वाले राक्षसों को भेद चले, वे श्रीराम के चुने हुए शर कहाँ-कहाँ पाये गये ! राक्षसों के रक्त की नदियों की उमंगकर वहने देते हुए वे शर पृथ्वी पर, पर्वतों पर, मेघमण्डल पर, चन्द्राश्रयी आकाश पर, समुद्र पर और वली राक्षसों के व्रणों पर रहनेवाले बने । ४५३

पौलन्दारिन	रत्तलिन्शिहै	पौळिहण्णित्त	रैवरुम्
वलन्दाङ्गिय	वडिवैम्बडे	विडुवार्शर	मळैयाल्
उलन्दाळल्	कडलोडु	वृलवारुड	तुड्डार्
अलन्दार्निशि	शररामेन	विमैयोरोडु	मार्त्तार् 454

पौलम् तारितर्-मनोरम मालाधारी; अत्तलित् चिकं पौळि कण्णित्तर्-अग्नि की ज्वालाएँ-सी निकालनेवाली आँखों के; वटि वैम् पटै विटुवार्-तीक्ष्ण भयंकर हथियार चलानेवाले; अैवरुम्-सभी राक्षस; चर मळैयाल्-शर-वर्षा से; उटल् कटल् ओट्टु उड्ड-शरीर जाकर समुद्र में मिल गये, इस रीति से; उलन्तार्-मरे; उलवा उटल् उड्डार्-अमर शरीर पाकर; इमैयोर् ओट्टुम्-देवों के साथ मिलकर; निचिचर् अलन्तार् आम् अैत्त-निशिचर मरे, यह कहकर; आर्त्तार्-सन्तोषरव उत्पन्न किया । ४५४

मनोरम मालाधारी सभी राक्षस, जिनकी आँखों से अग्निज्वालाएँ निकलती थीं और जो भयंकर तीक्ष्ण हथियार चलाते थे, श्रीराम की शरवर्षा के सामने मर गये । उनकी लाशें समुद्र में जाकर मिल गयीं । अब उन्हें अमर शरीर मिल गया । वे देवों में मिल गये । अब वे नीचे देखते हैं और मरते हुए राक्षसों को देखकर हर्षरव निकालते हैं कि वाह ! राक्षस मर गये । ४५४

ईरुच्चैरि	कमलत्तन	विरदक्कुडै	पुळित्तम्
वीरक्करि	मुदलैक्कुल	विडुपाय्परि	कुरम्बाप्
पारक्कुडर्	मिडैपाशडे	पडर्हिन्नुत्त	पलवा
मूरित्तिरै	युदिरक्कुळ	मुळुहक्कुळ	दंळुमे 455

ईरल्-यकृत् (रूपी); चैरि कमलत्तन-दलसंकुल कमल वाले; इरत्त कुडै-टूटे रथ; पुळित्तम्-पुलिन; वीर करि-साहसी गज; मुत्तलै कुलम्-नक्रसमूह; पाय् परि-अश्व; विटु-बैधे; कुरम्पा-बांध; पार कुटर्-भारी आँतें; मिडै-लसे

रहनेवाले; पत् पाचट आ-अनेक ताजे पत्ते, इनसे युक्त; मूरि तिरै-बड़ी-बड़ी तरंगों वाले; उतिर कुलम्-रक्त के तालाबों में; कळुत्तु-भूत; मुळुकि अँलुव-नहा उठते हैं । ४५५

युद्धभूमि में एक अनोखा तालाब बन गया । उसमें रक्त भरा था । यकृत् कमल बने, टूटे रथ पुलिन । साहस के साथ मरे गज नक्र बने और अश्व की लाशें बाँध बनीं । भारी आँतों ने विविध पत्तों का स्थान लिया ! ऐसे तालाब में, जिसमें बड़ी-बड़ी तरंगें उठ रही थीं, प्रेत नहा उठते थे । ४५५

अळैत्तार्शिल	रार्त्तार्शिल	रळिन्दार्शिलर्	कळिन्दार्
उळैत्तार्शिल	रुयिर्त्तार्शिल	रुण्डार्शिलर्	पुरण्डार्
कुळैत्ताळ्दिरैक्	कुरुदिककडर्	कुळित्तार्शिलर्	कीलैवाय्
मळैत्तार्हळ्	पडप्पारिडै	मडिन्दार्शिल	रडैन्दार् 456

कीलै वाय्-मारक; मळै तारैकळ् पट-शरवर्षा के लगने से; चिलर्-कुछ राक्षसों ने; अळैत्तार्-पुकार मचायी; चिलर् आर्त्तार्-कुछ ने (भीषण) गर्जन किया; चिलर् अळिन्तार्-कुछ मिटे; चिलर् कळिन्तार्-कुछ भागे; चिलर् उळैत्तार्-कुछ तड़पे; चिलर् उयिर्त्तार्-कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी; चिलर् उरुण्डार्-कुछ लोटे; चिलर् पुरण्डार्-कुछ लुढ़के; कुळै ताळ्-गहरे पंक के साथ; तिरै कुरुति कटल-लहरों से युक्त रक्त-सागर में; चिलर् कुळित्तार्-कुछ डूबे; चिलर् पार् इटै मडिन्तार्-कुछ भूमि पर गिरकर मरे; उडैन्तार्-हारे । ४५६

श्रीराम के संहारक वर्षा-धारों के समान शरों के आकर लगने से कुछ राक्षस त्राहि ! त्राहि ! पुकारने लगे । कुछ राक्षसों ने घोर शब्द किया । कुछ राक्षस वहीं ढेर हो गये । कुछ जान लेकर भागे । कुछ तड़पकर रह गये । कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी । कुछ लुढ़कते हुए गये । कुछ करवट बदलते बेचैन रहे । कुछ लोग कीच से भरे रक्त-सागर में डूबकर संकटग्रस्त हो रहे । कुछ लोग भूमि पर ही गिरकर मरे । कुछ लोग हारकर हटे । ४५६

उडैत्तार्हळै	नहैशैयदन	रुडेरिन	रुडनाय्
अडैन्दार्पडैत्	तलैवीरर्हळ्	पदिताल्वरु	मयिल्वाळ्
मिडैन्दार्नेडुङ्	गडुत्तात्तैयर्	मिडल्विल्लिनर्	विरिनीर्
कडैन्दार्वैरु	वुडुमीदळु	कडुवामैत्तक्	कीडियार् 457

विरि नीर्-विस्तृत (क्षीर-) सागर को; कडैन्तार्-जिन्होंने मथा उन (देवों और अमुरों) को; वैरुवु उर-भयभीत करते हुए; मीतु अँलु-ऊपर उठ आये; कटु आम-अँत-विष के समान; कीडियार्-निर्मम; पटै तलै वीरर्कळ् पतिताल्वरुम्-सेनापति चौबहों ने; उडताय्-एक साथ; उडैन्तार्कळै-हारकर भागनेवालों को; नक् चैयत्तर्-हँसी उड़ाई; उरुळ् तेरितर्-पहियों वाले रथ पर सवार हो; अयिल् वाळ् मिडैन्तु आर्-भालों और तलवारों को लिये हुए मिल आनेवालों; नैदुम् कटल्

तात्तैयार्-विशाल समुद्र-सम सेना के साथ; मिटल् विल्लितर्-सबल धनु वाले हो; उटताय्-एक साथ; अटैन्तार्-(वे) आये । ४५७

चौदहों सेनापतियों ने यह देखा तो उनका परिहास किया । देवों और असुरों को भयभीत करते हुए जो विष क्षीरसागर से उठ आया था, उस विष के समान बड़े ही भयंकर और खूनी वे सेनापति एक साथ निकलकर रथों पर युद्धभूमि में आये । उनके साथ बड़ी सेना आयी, जिसके वीर भालों और तलवारों से युक्त थे । सेना विपुल सागर के समान थी और वीरों से खूब भरी थी । ४५७

नाहत्तति	यौरुविल्लियै	नळिमुप्पुर	मुन्ताळ
माहत्तिडै	वळैयुड्डन	वैन्नवळलै	मदियार्
आहत्तैळ	कनल्हण्वळि	युहवैड्डि	रळन्डार्
मेहत्तति	नैडुविल्लियै	वळैत्तार्शैरु	विळैत्तार् 458

मुन्ताळ-प्राचीनकाल में; नाकम् तति और विल्लियै-(मेरु) पर्वत को श्रेष्ठ धनु बनाकर जिन्होंने लिया था, उन (मेरुधन्वा) को; नळि मुप्पुरम्-बड़े त्रिपुरों ने; माकत्तु इटै-आकाश में; वळैयुड्डन अँत-घेर लिया हो ऐसा; मेक तति नैडु विल्लियै-मेघश्याम, उत्तम दीर्घ धनु के स्वामी कोदण्डपाणी; वळलै-प्रभु श्रीराम को; मतियार्-कुछ न माननेवाले; आकत्तु अँळु कत्तल्-शरीर के अन्दर उठनेवाली आग को; कण् वळि उक उड्डु-आँखों द्वारा निकलने देते हुए; अँतिर् अळन्डार्-सामने द्वेष करते हुए; वळैत्तार्-घेरकर; वैरु विळैत्तार्-युद्ध किया । ४५८

वे श्रीराम का महत्त्व जान नहीं पाये । उनके मन में उनके प्रति आदर ही नहीं था । मेघसम दीर्घ धनु के साथ दृश्यमान उन उदार प्रभु श्रीराम को उन्होंने आकर ऐसा घेरा, जैसा मेरुधन्वा शिवजी को त्रिपुरों ने आकाश में घेर लिया था । उनकी आँखों से मानो उनके अन्दर की कोपाग्नि निकल रही थी । बड़े वैर के साथ वे घेर गये । ४५८

अँय्दार्पल	रैडिन्दार्पल	रैळुवोच्चिनर्	मळुवाल्
पौय्दार्पलर्	पडैत्तार्पलर्	किडैत्तार्पलर्	पौरुप्पाल्
पैय्दार्मळै	पिदिर्त्तार्रैरि	पिडैवाळैयिड्	इरक्कर्
वैदार्पलर्	तैळित्तार्पलर्	मलैयामेन	वळैत्तार् 459

पिडै वाळ् अँयिड्डु-अपूर्ण चन्द्र-सम वक्रदांत वाले; अरक्कर्-राक्षसों में; पलर्-अनेकों ने; अँय्तार्-शर चलाये; पलर्-अनेकों ने; अँळु-दण्ड; ओच्चितर्-फेंके; पलर् मळुवाल् पौय्तार्-अनेकों ने परशुओं से वार किया; पलर् पुडैत्तार्-अनेकों ने मारा; पलर् किडैत्तार्-अनेक पास आये; पलर् पौरुप्पाल् मळु पैय्तार्-अनेकों ने पर्वतों को वर्षा के समान लगातार फेंके; अँरि पितिर्त्तार्-(अनेकों ने) आग बरसायी; पलर् वैतार्-अनेकों ने गाली दी; पलर् तैळित्तार्-अनेक डाँटे; मलै आम् अँत वळैत्तार्-पर्वत के समान घेर लिया । ४५९

उनके साथ कितने ही राक्षस-वीर आये थे । चन्द्रकला के समान श्वेत और वक्रदाँत वाले उनमें अनेकों ने श्रीराम पर बाण चलाये । कितनों ने दण्ड फेंके । परशु और अन्य हथियार चलानेवाले भी अनेक, अनेक थे । अनेक उन पर झपटने आये । अनेक राक्षसों ने पर्वतों को उठाकर वर्षा के समान निरन्तर फेंका । अनेकों ने आग बरसायी । अनेकों ने गालियाँ दीं और अनेक डाँटे । अनेक पर्वतों के समान श्रीराम के चारों ओर आकर उनको घेर गये । ४५९

तेरपूण्डत्त	विलङ्गियावैयुज्	जिलैपूण्डेळु	कणैयाल्
पारपूण्डत्त	मदमाकरि	पलिपूण्डत्त	परिमात्
तारपूण्डत्त	बुडल्पूण्डिल	तलैवैङ्गदिर्	तळिवन्
दूरपूण्डत्त	पिरिन्दालेत्त	विरिन्दाहयि	हलन्दार् 460

चिलै पूण्डु अँळु—(श्रीराम के) कार्मुक से छूटे हुए; कणैयाल्—शरों से; तेर पूण्डत्त—रथों में जुते हुए; विलङ्कु यावैयुम्—जानवर सब; पार पूण्डत्त—भूमि पर गिरकर मरे; मत मा करि—मत्त, बड़े-बड़े गज; पलि पूण्डत्त—बलि चढ़े; तार पूण्डत्त परि मा—हारों से युक्त अश्व; उडल् तलै पूण्डिल—शरीरों से सिर-जुड़े नहीं रहे; चैव विळैत्तार्—युद्ध करने जो आये थे, वे; वैम् कतिर् तळि वन्तु—गरम सूर्य को घेर जो आया; ऊर् पूण्डत्त—उस परिवेश के; पिरिन्ताल् अँत्त—हटने के समान; उयिर् उलन्तार्—प्राण खोकर; विरिन्तार्—सब जगह अलग-अलग पड़े रहे । ४६०

श्रीराम ने तब शर चलाये । उनके कोदण्ड से निकले बाणों के लगने से राक्षसों के रथों में जुते हुए जानवर भूमि पर गिरकर मर गये । मत्तगज बलि चढ़े । हारों से भूषित अश्व सिर से विहीन हो गये । उनको घेर आये हुए राक्षस सूर्य के परिवेश के समान, जो जल्दी दूर हो जाता है, मर गये । उनकी लाशें सर्वत्र फैली पड़ी रहीं । ४६०

माल्पोत्तिय	मरुवोरुडन्	मलैयोत्तुड	तळिशैम्
पाल्पोत्तित्त	नदियिर्किळर्	पडियोत्तुडु	पत्तिवान्
मेल्पोत्तिय	कुळुविण्णवर्	विळिपोत्तित्तर्	विरैवैम्
काल्पोत्तित्तर्	नमन्तुदुवर्	कडिदुर्हयिर्	कवर्वार् 461

माल् पोत्तिय—मूर्च्छा में पड़े रहे; मरुवोर् उडल्—वीरों के शरीर; मलै ओत्तु—पर्वतों से तुले; उडल् अळि—उन शरीरों से निकलनेवाले; चैम् पाल् पोत्तित्त—रक्त से भरी; नत्तियिल्—नदियों के कारण; किळर् पटि ओत्तु—दृश्यमान भूमि के समान लगे; पत्ति वान् मेल्—शीतल आकाश पर; पोत्तिय कुळु विण्णवर्—एकत्रित हुए देवों ने; विळि पोत्तित्तर्—अपनी आँखें मूँद ली; नमन् त्तुवर्—यमदूतों ने; कटितु उर्डु—जल्दी आकर; उयिर् कवर्वार्—(राक्षसों के) प्राण हरकर; मिटल् वैम्—सशक्त और भयंकर; काल् पोत्तित्तर्—अपने पैरों से (युद्धभूमि को) आच्छादित कर दिया । ४६१

मूर्च्छित वीरों के शरीर पर्वतों के समान लगे । उनके शरीरों से निकलनेवाले रक्त की भरी नदियों के कारण भूमि शोभित लगी । आकाश में देवों ने भीड़ लगायी थी । उन्होंने यह दृश्य देखकर अपनी आँखें मूँद लीं । उस युद्धभूमि को यम के दूतों के पैरों ने ढँक दिया । वे जल्दी-जल्दी राक्षसों के प्राण लेने आ-जा रहे थे । ४६१

पेयेरिन्	शंखेदुळु	पित्तेरिन्	पिलवाय्
तीयेरिह	लरियेरिन्	करियेरिन्	शेरिवाय्
नायेरिन्	तलैमेनडु	नरियेरिन्	वरिहाल्
वायेरिय	वडिवाळियिन्	वानेरिन्	वन्दार् 462

पिल वाय्-बिल के समान मुख वाले; ती एड इकल्-बड़ी आग के समान लड़नेवाले; अरि एरिन्-सिंहों पर सवार; करि एरिन्-गजों पर सवार; चें वेदु अँळु-युद्ध चाहते हुए आये; पेय् एरिन्-भूतग्रस्त; पित्तु एरिन्-उन्मत्त (राक्षसों के); तलै मेल्-सिरों पर; चेरिवाय्-भीड़ लगाकर; नाय् एरिन्-कुत्ते चढ़े; नैडु नरि एरिन्-लम्बी कतार में सियार चढ़े; अँरि काल्-आग उगलनेवाले; वाय् एरिय-मुखों से युक्त; वडि वाळिन्-तीक्ष्ण वाणों से; वान् एरिन्-(हत होकर) आकाश में चढ़े; वन्दार्-आये । ४६२

राक्षस, जिनके मुख बिल के समान थे, भयंकर सिंहों पर और गजों पर सवार होकर चाव के साथ भूतग्रस्त या उन्मत्त के समान युद्ध करने आये थे । पर वे मर गये । उनकी लाशों पर अब कुत्ते, सियार आदि चढ़ रहे थे । वे राक्षस श्रीराम के अग्निमुख और तीक्ष्ण वाणों से हत हुए थे । इसलिए उनकी आत्माएँ स्वर्ग पहुँच गयीं । ४६२

तलैशिन्दिन्	विळिशिन्दिन्	तळल्शिन्दिन्	तरैमेल्
मलैशिन्दिन्	पडिशिन्दिन्	वरुशिन्दुर	मळंबोल्
शिलैशिन्दिन्	कणैशिन्दिन्	तेरिशिन्दिन्	तिशय्
डुलैशिन्दिन्	पोरिशिन्दिन्	वुयिर्शिन्दिन्	वुडलम् 463

मळ पोल्-मेघ (वर्षा) के समान; चिलै चिन्तित्त-धनु से निकले; कणै चिन्तित्त-शर फँसे; तलै चिन्तिन्-सिर गिरे; विळि चिन्तित्त-आँखें बिखरीं; तळल् चिन्तित्त-आग फँसी; वरु चिन्तुरम्-आगत गज; तरै मेल्-भूमि पर; मलै चिन्तित्त-पट्टि पोल्-पर्वत बिखरे पड़े हों, इस प्रकार; चिन्तित्त-बिखरे पड़े थे; तेर चिन्तित्त-रथ टूटकर छितराये; तिचै ऊदु-दिशाओं में सर्वत्र; उलै चिन्तित्त-भट्ठी से निकली; पोरि चिन्तित्त-आग के कणों के समान अंगार बिखरे; उडलम्-शरीरों ने; उयिर् चिन्तित्त-प्राण छोड़ दिये । ४६३

श्रीराम के कोदण्ड ने वर्षा की धारों के समान शर बरसाये । इसलिए राक्षसों के सिर छितरे; आँखें बिखरीं और उन आँखों से अंगार छितरे । उन शरों से आहत होकर गज पर्वत के समान यत्न-तत्न पड़े रहे और रथ

टूटकर गिरे । दिशाओं में अंगारे उड़े और राक्षसों के शरीरों ने प्राण त्याग दिये । ४६३

पडैत्तलै	वरुमवर्	पडैत्त	तेरुहळुम्
उडैत्तडम्	बडैहळु	मौळिय	वुडुर्दिर
विडैत्तडर्न्	दैदिरुन्दवर्	वीरन्	वाळियाल्
मुडैत्तवैड्	गुरुदियिन्	कडलिन्	मूळ्हितार् 464

पटै तलैवरुम्-सेनापति; अवर् पटैत्त तेरुहळुम्-उनके अपने रथ; उडै तडम् पडैकळुम्-उनके अपने बड़े-बड़े युद्ध-हथियार; मौळिय-इनको छोड़कर; उडुर्दिर (युद्धभूमि में) आकर; दैदिरु- (श्रीराम के) सम्मुख; विडैत्तु-तनकर; अटर्त्तु-युद्ध करके; दैदिरुन्दवर्-सामना जिन्होंने किया, वे सब; वीरन् वाळियाल्-वीर (श्रीराम) के शरीरों द्वारा; मुडैत्त-दुर्गन्धपूर्ण; कुरुदियिन्-रक्त के; कडलिन्-समुद्र में; मूळ्हितार्-डूब (मिट) गये । ४६४

सब मर-मिट गये । केवल वे चौदह सेनापति, उनके रथ और उनके पास रहे हथियार —ये ही बचे । अन्य सभी, जो दम्भ के साथ श्रीराम के सामने लड़ने आये थे, श्रीराम के बाणों से आहत हुए और दुर्गन्धपूर्ण रक्त-सागर में डूबकर मर गये । ४६४

शुडुडु नोक्किन्नर् तौडर्न्द शेनैयिल्, अड्रिल तलैयैन्नु माक्कै कण्डिलर्
तैड्रित रैयिरुह डिरुहि नार्शिन, मुड्रित रिरामनै मुडुहु तेरितार् 465

शुडुडु नोक्किन्नर्-सिर घुमाकर देखा; तौडर्न्द शेनैयिल्-अनुगामिनी सेना में; तलै अड्रिल अँतुम्-सिर न कटे ऐसा कहने योग्य; माक्कै कण्डिलर्-शरीर नहीं देखे; चित्तम् तिरुक्कितार्-क्रोध से एँठे; अयिरुहळु तैड्रितर्-दाँत चबाये; मुडुहु तेरितार्-तेजी से चलाये जानेवाले रथों के होकर; इरामनै मुड्रितर्-श्रीराम को घेर लिया (चौदहों सेनापतियों ने) । ४६५

सेनापतियों ने सिर घुमाकर चारों ओर देखा । अपनी सेना के किसी वीर को नहीं देख सके, जिसके शरीर का सिर कटा नहीं हो ! उनके कोप का पारा चढ़ गया । दाँत पीसे । और रथ को सवेग चलाते हुए उन्होंने श्रीराम को चारों ओर से घेर लिया । ४६५

एळिरु तेरुम्वन् दिमैप्पिन् मुन्बिडैच्, चूळ्वत्त कणैहळिड् रुणिय नूड्रितान्
आळियु माणियुम् माळु मडुवै, ऊळिवैड् गालैरि योड्ग लौत्तवे 466

वन्तु इटै चूळ्वत्त-पास आकर घेरनेवाले; एळु इरु तेरुम्-(सात के दो) चौदहों रथों को; दिमैप्पिन् मुन्-पलक मारने के अन्दर; कणैकळिल्-अपने बाणों से; रुणिय नूड्रितान्-(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न क दिया; आळियुम् आणियुम् आळुम्-चक्रों, घुर और सारथी से; अडु-होन होकर; अवै-वे; ऊळि वैम् काल् अँड्रि-भयंकर युगान्तकालीन झंझा द्वारा प्रताड़ित; ओडुक्ल् औत्त-पर्वत-समान नष्ट हुए । ४६६

पल भर में श्रीराम ने उनके चौदहों रथों को अपने बाणों से तोड़कर चूर-चूर कर दिया। पहिये और धुर ही नहीं, सारथी भी नहीं बचे। युगान्त के झंझे से जर्जर हुए पर्वतों के समान वे रथ (नष्ट) हो गये। ४६६

अळिन्दन	तेरव	रवनि	कीण्डुह
इळिन्दनर्	वरिशिल	येडुत्त	कयितर्
ओळिन्दिलर्	शरङ्गळ	युक्कि	नेरुत्तप्
पोळिन्दनर्	पोळिहनल्	पोडिक्कुड्	गण्णिनार् 467

तेर् अळिन्तत्त अवर्-रथ-नष्ट हुए थे; अवति कीण्डु उक-भूमि में दरार बनाते हुए (उतनी उग्रता से); इळिन्तत्तर्-उतरे; वरि चिले अंडुत्त कयितर्-बन्धनपुस्त धनु हाथ में लेकर; मिडु कत्तल् पोडिक्कुम् कण्णिनार्-अधिक अंगार निकालनेवाली आंखों के साथ; शरङ्गळ-शरों को; ओळिन्तिलर् पोळिन्तत्तर्-निरन्तर चलाये। ४६७

रथों को नष्ट-भ्रष्ट पाकर वे सेनापति जल्दी-जल्दी रथों पर से ऐसे कूदे कि भूमि पर दरार पड़ गयी! धनुर्धर उन्होंने आंखों से अंगार उगलते हुए श्रीराम पर निरन्तर बाणवर्षा की। ४६७

नूडिय	शरमैला	नुडुङ्ग	वाळियाल्
ईरुशैय्	दवर्शिल	येळी	ऐळैयुम्
आडिनी	डारुमो	रिरण्डु	मम्बिनाल्
कूडुशैय्	दमर्त्तुळिड्	कौदिप्प	नोक्किनात् 468

चरम् अँताम्-सभी बाण; नूडिय नुडुङ्क-मिटकर चूर हुए; वाळियाल् ईडु चैय्तु-ऐसा अपने बाणों द्वारा मिटाकर; अवर् चिले ऐळोट्टु ऐळैयुम्-उनके चौदहों बाणों को; आडिन् ओट्टु आडुम् ओर् इरण्डुम्-उ: छ: और वो (= चौदह); अम्बिनाल्-बाणों से; कूडु चैय्तु-छण्ड-छण्ड करके; अमर् तौळिल् कौतिप्प-उनके युद्ध-कर्म की भयंकरता को; नोक्किनात्-दूर किया (श्रीराम ने)। ४६८

श्रीराम ने न केवल उन बाणों को नहीं मिटाया बल्कि उनके चौदहों बाणों के भी चौदह बाण चलाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उन वीरों के युद्धोत्साह को और युद्ध की भयंकरता को दूर कर दिया। ४६८

विल्लिळन्	दत्तेवरुम्	वैकुळि	मोक्कोळक्
कल्लुयर्	नेडुवरे	कडिदि	नेन्वितार्
ओल्लैयि	नुरुत्तुयर्	विशुम्बि	तोडुगिनिन्
रैल्लैयिल्	पोडियुह	वैरिन्द	मेयितार् 469

अत्तेवरुम्-वे सब; विल् इळुन्तु-चाप छोकर; वैकुळि मो कोळ-क्रोध के उमड़ने से; कल् उयर् नेडु वरे-पत्थर के बड़े पर्वतों को; कडिटिन् एन्तितार्-वेग के साथ उठाकर; ओल्लैयिन्-जल्दी; उरुत्तु-क्रोध करके; उयर् विशुम्बिन् ओडुक्कि निन्नु-आकाश में ऊपर स्थित होकर; रैल्लैयिल् पोडि उक-अगणित अंगार छितराते हुए; अँडितल् मेयितार्-फँकने लगे। ४६९

उन सेनापतियों को धनुष-विहीन होने से अपार क्रोध हुआ । वे पत्थर के बड़े पर्वतों को उठा-उठाकर ऊपर आकाश में खड़े होकर श्रीराम पर फेंकने लगे । उनकी गति इतनी तीव्र थी कि उनसे अंगार निकले और फैले । ४६९

कलैहळिन्	परुङ्गडल्	कडन्द	विल्लित्तान्
इलैहौळ्वेम्	बहळिये	ळिरण्डु	वाङ्कित्तान्
कौलैहौळ्वेम्	जिलैयोडु	पुरुवड्	गोट्टित्तान्
मलैहळुन्	दलैहळुम्	विळुन्द	मण्णिले 470

कलैहळिन् पेरुम् कटल्-(६४) कलाओं के बड़े सागरों को; कटनुत्-जिन्होंने पार किया था (निपुण); विल्लित्तान्-उन कोदण्डपाणी ने; इलै कौळ्-पत्र-सम फल वाले; वेम् पकळि-भयंकर अस्त्र; एळ् इरण्डु-सात के दो; वाङ्कित्तान्-लेकर; कौलै कौळ् वेम् चिलै ओटु-मारक धनुष और; पुरुवम्-भौहों को; कोट्टित्तान्-झुकाया (कुंचित किया); मलैकळुम् तलैकळुम्-पर्वत और सिर; मण्णिले विळुनुत्-भूमि पर गिर गये । ४७०

श्रीराम चौसठ कलाओं के पारंगत धनुर्धर थे । उन्होंने चौदह पत्राकार सिर वाले बाण लिये । उन भयंकर बाणों को मारक धनु पर रखा । धनु को झुकाया जब उनकी भौहें भी झुकीं ! उसके फलस्वरूप पर्वत और सेनापतियों के सिर एक साथ भूमि पर गिर गये । ४७०

पडैत्तलै	वीरर्हळ्	पडलुम्	बल्पडै
पुडैत्तडर्त्	तार्त्तैरि	पुहैयुड्	गण्णित्तार्
किडैत्तन्न	ररक्कर्हळ्	कीळु	मेलुमोयत्
तडैत्तत्तर्	तिशैहळै	यमर	रञ्जित्तार् 471

पडै तलै वीरर्कळ्-सेनापति वीरों के; पडलुम्-हत हो जाने पर; अरक्कर्कळ्-(बचे रहे) राक्षस; पल् पडै पुडैत्तु-अनेक हथियारों से प्रहार करके; आर्त्तु-नारे लगाकर; अरि पुक्कैयुम् कण्णित्तार्-आग और धुएँ सहित आँखों के साथ; किडैत्तत्तर्-(श्रीराम के) समीप आकर; तिचैकळै-चारों दिशाओं में; कीळुम् मेलुम् मोयत्तु-नीचे और ऊपर भीड़ लगाकर; अटैत्तत्तर्-भर गए; अमरर् अञ्चित्तार्-देव डरे । ४७१

सेनापति वीर हत हो गये तो अन्य बचे हुए राक्षस क्रोध करके श्रीराम के समीप पिल पड़े और सभी दिशाओं में सर्वत्र भर गये । उनकी आँखों से आग और धुआँ-सा निकल रहा था । वे विविध प्रकार के अनेक हथियार चलाने लगे । उनकी संख्या, उनका क्रोध और युद्ध देखकर देव भी डर गये । ४७१

मुळङ्गिन्	पेरुम्बणै	मूरि	माल्हरि
मुळङ्गिन्	वरिशिलै	मुडुहु	नाणौलि

मुळङ्गित
मुळङ्गित

शङ्गोलि
वरक्कर्दम्

पुरवि
मुहिलि

मोय्तुत्तु
नारप्परो 472

पेरम् पणै—वड़े-वड़े मारु ढोल; मूरि माल् करि—वड़े और बलवान करी; मुळङ्कित—नाद कर उठे; वरि चिलै—बन्धनयुक्त धनुओं की; मुट्टु नाण् ओलि—कठोर प्रत्यंचा को टंकार; मुळङ्कित—उठी; चङ्कु ओलि—शंखनाद मुळङ्कित—हुए; पुरवि मोय्तुत्तु उर—अश्व ठस मिलकर आये; अरक्कर् तम् मुकिलिन् आरप्पु—राक्षसों का मेघगर्जन; मुळङ्कित—उच्च स्वर में उठा । ४७२

वड़े ढोलों का नाद, गजों की चिंघाड़, भयंकर बलवान चापों की टंकार, शंखध्वनि आदि तुमुल नाद उठा । अश्व ठस जुट आये और राक्षसों का मेघ-सा गर्जन उच्च रहा । ४७२

वैम्बडै निरुदर वीश विण्णिडै मिडैन्द वीरन्
अम्बिडै यरुक्कच् चिन्दि यरुत्त विळुमैन् इज्जि
उम्बरु मिरियल् पोत्ता रुलहेला मुलैन्दु शाय्न्द
कम्बमि इशैयि निन्ऱु कळिक्कण् णिमैत्त वन्ऱे 473

निरुदर—राक्षसों के; वीच—फेंकने से; वैम् पटै—(वे) भयंकर हथियार; विण् इटै मिटैन्त—जो आकाश में घने रूप से भरे; वीरन्—वीर श्रीराम के; अम्पु इटै अङ्क—शरों के मध्य घुसकर काटने से; चिन्ति अरुत्त—छितरकर बेकार हुए; विळुम्—वे गिरेंगे; ऐन्ऱु अज्चि—ऐसा डरकर; उम्पुवम्—देव; इरियल्—अलग; पोत्तार्—हट गये; उलकु अलाम्—सारे लोक; उलैन्तु—अस्त-व्यस्त होकर; चाय्न्त—अस्थिर हुए; कम्पम् इल्—अचल; तिवैयिल् निन्ऱु—दिशाओं में खड़े रहे; कळिक्कण्—गजों ने भी; कण् इमैत्त—आँखें मूंद लीं । ४७३

राक्षसों ने जो भयंकर हथियार फेंके, वे आकाश में घने रूप से भरे आये । पर वीर श्रीराम ने उनको बीच में ही खण्डित कर बेकार करा दिया । 'वे बेकार खण्ड हम पर गिरेंगे' —इस डर से देव भी हटकर भाग गये । सारे लोकों के वासी भी अस्तव्यस्त होकर शिथिल पड़ गये । अचल रहनेवाले दिग्गजों ने भी डर से अपनी आँखें मूंद लीं । ४७३

❀ अत्तलैत्त तानैयन् नळवि लाड्डलन्
मुत्तलैक् कुरिशिल्बोन् मुडियन् मुक्कणान्
कैत्तलैच् चूलमे यत्तैय काट्चियान्
वैत्तलैप् पहळियान् मळैशैय विल्लितान् 474

अ तलै—तब; अळविल् तानैयन्—अपार सेना वाले; आड्डलन्—शक्तिमान; पोन् मुडियन्—स्वर्णकिरीटधारी; मुत्तलै कुरिचिल्—तीन सिरों का राजा त्रिशिरा; मुक्कणान्—त्रिनेत्र (शिवजी) के; कै तलै—हाथ में रहनेवाले; चूलमे अत्तैय—त्रिशूल की ही तरह; काट्चियान्—दृश्यमान; वै तलै पकळियान्—तीक्ष्ण सिर (फल) वाले बाणों का रखनेवाला; मळै चैय्—(शर-) वर्षक; विल्लितान्—धनुर्धर । ४७४

तव त्रिशिरा अपनी सेना के साथ बढ़ आया। कैसा था वह ? अपार सेना का स्वामी, अगाध शक्ति का नाथ; स्वर्णकिरीट-धारी और तीन सिरों वाला था वह। वह त्रिनेत्र शिवजी के हाथ के त्रिशूल के समान दृश्यमान था। उसके पास तीक्ष्णमुखी भयंकर शर थे। उसका शरासन भयंकर रूप से शरवर्षक था। ४७४

अन्तव	नटुवु	वळि	याळियो
दन्तवन्	दङ्गणु	मिरैतत	नेनैयुळ्
तन्तिहर्	वीरनुन्	दमियन्	विल्लितन्
तुन्तिर	ळिडैयदोर्	विळक्किर्	रोन्शितान् 475

अन्तवन्-वह; नटुवु उर-मध्य में रहा; ऊळि आळि-युगान्त समुद्र; ईतु अन्त-यह है, ऐसा; वन्तु-आकर; अङ्कणुम् इरैतत-सब जगह गोर के साथ आ गई; चेतै उळ्-उस सेना के अन्दर; तन् निकर् वीरनुम्-स्वोपम वीर भी; तमियन् विल्लितन्-अकेले, धनु के साथ; तुन् इरुळ् इटै-घने अंधकार के मध्य; ओर् विळक्किर्-एक दीप के समान; तोन्शितान्-शोभित रहे। ४७५

उसको मध्य में रखते हुए उसकी अपार सेना युगान्तकालीन समुद्र के समान उमड़ी आयी। सब स्थानों पर उसका विस्तार था। उस सेना के मध्य श्रीराम, जिनकी तुलना का वीर और कोई नहीं था, हाथ में धनुष लिये अकेले स्थित थे। वे घने अंधकार के मध्य रहनेवाले दीप के समान शोभे। ४७५

ओङ्गिय	वाळिन	नुरुमि	नारप्पितन्
वोङ्गिय	वेहतन्	वैय्य	कण्णितन्
आङ्गव	नेणिक्केदि	रणिह	ळाहनेर्
ताङ्गिन	निरामनुज्	जरत्तिन्	शानैयाल् 476

ओङ्किय वाळितन्-उठाई हुई तलवार वाले; उरुमिन् आरप्पितन्-वज्रनिनादी; वोङ्किय वेहतन्-बहुत वेगवान; वैय्य कण्णितन्-भयंकर आँखों वाला; आङ्कु अवन्-वहाँ (जो आया) उस (त्रिशिरा) को; अणिककु-सेना भागों के; नेर्-सामने; अणिकळ आक-सेनाओं के रूप में; चरत्तिन् शानैयाल्-शरों की सेनाओं (पंक्तियों) से; नेर् ताङ्कितन्-श्रीराम ने सामना किया। ४७६

त्रिशिरा तलवार उठाये हुए तुमुल नाद के साथ नारे लगाते हुए आया। वह बड़ा वेगवान था। उसकी आँखें क्रूर और भयंकर थी। उसकी सेना के सामने श्रीराम खड़े रहे। श्रीराम ने उसकी सेना के भागों के सामने अपने शरों की पंक्तियों को ही पलटनों के रूप में स्थापित किया और युद्ध किया। ४७६

ताळिडै यरुन तलैयु मरुन, तोळिडै यरुन तीडैह लरुन
वाळिडै यरुन मळुवु मरुन, कोळिडै यरुन कुडैह लरुन 477

ताळ् इटै अरुन—(राक्षसों के) पैर बीच से कटे; तलैयुम् अरुन—सिर अलग हुए; तोळ् इटै अरुन—भुजाएँ बीच से कटीं; तीडैकळ् अरुन—ऊर कटे; वाळ् इटै अरुन—तलवारें नष्ट हुईं; मळुवुम् अरुन—परशु भी मिटे; कोळ् इटै अरुन—उनका बल भी मध्य में बेकार हुआ; कुटैयुम् अरुन—छत्र भी छिन हुए । ४७७

राक्षसों का क्या हाल हुआ ? पैर कटे, सिर लुढ़के, हाथ कटे और ऊर खण्डित हुए । तलवारें कटीं, परशु मिटे और छत्र नष्ट हुए । राक्षसों का बल भी बेकार हुआ । ४७७

कौडियौडु	कौडिञ्जिडु	पुरविक्	कूट्टडु
पडियौडु	पडिन्दन	परुदित्	तेरुपणै
नैडियवैडु	गडहरि	पुरण्ड	नैरुिवोळ्
इडियौडु	मिडिन्दुवोळ्	शिहर	मैन्नवे 478

परुति तेरु पणै—चक्रव्यूह में रहे रथों के समूह; कौटि ओट्टु—ध्वजाओं के साथ; कौटिञ्च—‘कौडिञ्जु’ (रथी के स्थान के सामने रहनेवाला कमल के आकार का वह अवलम्ब, जिस पर हाथ रखकर आराम लिया जाता है); इडु—टूटे, इसलिए; पुरवि कूट्टु अरु—अश्व अलग हुए और मिटे, इसलिए; पडि ओट्टु पडिन्दन—भूमि पर गिरकर नष्ट हुए; नैरुि वोळ्—अपने ऊपर गिरे; इटि ओट्टु—वज्र के साथ; इटिन्दु वोळ्—टूटकर गिरनेवाले; चिकरम् अन्नतवे—पर्वत-शिखरों के समान; नैटिय वैम् कट करि—बड़े, भयंकर और मत्त गज; पुरण्ड—लोट गये । ४७८

चक्रव्यूह में रथ थे । उनकी ध्वजाएँ कटीं । उनके अन्दर रहने वाले कमलाकार अवलम्ब (जिनका रथी अपनी थकन मिटाने के लिए सहारा लिया करते हैं) खण्ड हुए । अश्व भी मरकर अलग हो गये । फलस्वरूप रथ ही भूमि पर सिर के बल गिरे और टूट गये । बड़े-बड़े भयंकर मत्तगज भी वज्राहत पर्वत-शिखरों के समान, जो वज्र के साथ ही नीचे गिरते हैं, नीचे गिरकर लुढ़क गये । ४७८

अरुन	शिरमैत	वरिद	रेरुलर्
कौरुवैळ्	जिलैचरडु	गोत्तु	वाङ्गुवार्
इरुल्ल	ताळैन	वैळुन्दु	विण्णितैप्
परुनर्	मळैयैतप्	पडैव	ळङ्गुवार् 479

चिरम् अरुन अँत—सिर कट गये, यह बात; अरितल् तेरुलर्—(जो) समझ न सके, वे; कौरु वैम् चिलै—बलवान भयंकर धनुषों में; चरम् कोत्तु वाङ्कुवार्—शर-संधान करते थे; ताळ् इरुल्ल—पैरों को न कटा; अँत—समझकर; वैळुन्दु विण्णितै परुनर्—उठकर आकाश में खड़े होकर; मळै अँत—वर्षा के समान; पडै वळङ्कुवार्—हथियार फेंके (कुछ राक्षसों ने) । ४७९

राक्षसों की विचित्र शक्ति और श्रीराम के शरों की तीव्रगति की विशेषता देखिए । सिर कटकर गिर गये तो भी राक्षस धनुष पर शर-संधान कर रहे हैं, मानो उनको विदित ही नहीं हुआ हो कि उनके सिर कट गये । कुछ राक्षसों के पैर कट गए; पर वे बिना उसकी सुध लिये ही आकाश में उछल उठे और वहाँ से वर्षा के समान हथियार बरसा रहे हैं ! । ४७९

केडहत् तडक्कैय किरियिन् रोड्डत्त, आडहक् कवशत्त कवन्द माडुव
पाडहत् तरम्बैयर् मरुळप् पल्विद, नाडहत् तौळिलत्त नान्द हत्तत्त 480

कवन्तम् आटुव-कबन्ध (सिर कटे रुण्ड) जो नाच रहे थे; केटक तट कैय-ढाल सहित विशाल हाथों वाले थे; किरियिन् तोड्डत्त-पर्वत-सम आकार के थे; आटक कवचत्त-हाटक-कवच वाले थे; नान्तकत्तत्त-तलवारधारी थे; पाटकत्तु अरम्पैयर्-पाटक (पंजनी ?) पहनी हुई अप्सराओं को; मरुळ-विस्मित करते हुए; पल् वित्त-विविध अनेक; नाटक तौळिलत्त-नृत्य-कर्म में लीन थे । ४८०

युद्धभूमि में कबन्ध ऐसे नाच रहे हैं कि पंजनीविभूषित अप्सराएँ भी उनके विविध नाच देखकर विस्मय से हार मान लेती हैं ! गिरि के समान उन कबन्धों के एक हाथ में ढाल और दूसरे हाथ में तलवार है । वे हाटक-कवच-धारी हैं । ४८०

कवरिवेण् कुडैयैनु नुरैय कैम्मलैच्, चुवरिन कवन्दमाळ् शुळिय तण्डुर्प
पवरित्त् पडुमणि कुविक्कुम् बण्णैय, उवरियैप् पुदुक्कित्त वुदिर वाडरो 481

उतिर आड-रक्त-नदियाँ; कवरि वेण् कुट्टे अंतुम्-चैवर और छत्र रूपी; नुरैय-झागों वाली थीं; कैम्मलै चुवरित्त-गज रूपी तटों की; कवन्तम् आळ् चुळिय-कबन्ध जिनमें डूब जायें, ऐसे आवर्त वाली; तण् तुडै-शीतल घाटों की; पवर् इत्त-विविध प्रकार के समूहों के; पडु मणि-दिखनेवाले रत्न; कुविक्कुम्-जिनमें आकर ढेरों में पाये जाते हैं, उन; पण्णैय-समीपवर्ती खेतों वाली; उवरियै पुदुक्कित्त-समुद्र को नया रंग-रूप देनेवाली हैं । ४८१

राक्षसों के मृत-शरीरों से जो रक्त बहा, वह नदियाँ बन गया । उन नदियों में चामर और श्वेत छत्र झाग के स्थान में थे । गज तट बने । आवर्त ऐसे थे जिनमें कबन्ध डूब जाते थे । शीतल घाट थे । उस नदी द्वारा अनेक रत्न बहते आये, जो पास के खेतों में जा पड़े रहे । उन नदियों ने समुद्र को नया रंग-रूप दिला दिया । ४८१

चण्डवैड्	गडुङ्गणै	तडियत्	ताञ्जिल
तिण्डिडल्	वळैयैयिड्	उरक्कर्	तेवराय्
वण्डुळल्	पुरिहुळल्	मडन्दै	मारीडुम्
कण्डत्तर्	तम्मुडैक्	कवन्द	नाडहम् 482

चण्ट वेंम् कटुम् कणै-प्रचण्ड और अति कठोर (श्रीराम के) वाणों ने; ताम् तट्टिय-प्रहार कर हत किया, इसलिए; चिल-कुछ; तिण् तिरुल्-अति बली; वळै अयिरु अरक्कर-वक्रदांत वाले राक्षस; तेवराय्-देव बनकर; वण्टु उळल्-भ्रमरावृत; पुरि कुळल्-वेणी वाले केशों को; मटनुतैमार् ओटुम्-(देव-) स्त्रियों के साथ; तम् उटै कवन्त-अपने ही कवन्धों के; नाटकम्-नृत्य; कण्टतर्-देखकर आनन्दित हो रहे थे । ४८२

श्रीराम के शरों का यह गुण था कि उनसे आहत शत्रु वीर-स्वर्ग पहुँच जाया करते थे । यहाँ भी उनके प्रचण्ड वाणों से आहत वक्रदांतों वाले राक्षस स्वर्ग के देव बन गये । वे वहाँ उन अप्सराओं के साथ, जिनकी वेणी वाले केश पर भ्रमर मँड़रा रहे थे, युद्धभूमि देखने लगे । अपने ही कवन्धों को नाचते देखकर उन्हें मजा आया । ४८२

आय्वळै महळिरो डमर रीट्टत्तर्, तूयवैङ् गडुङ्गणै तुणित्त तङ्गडोळ् पेयोरु तलैहोळप् पिणङ्गि वाय्विडा, नायोरु तलैहोळ नहैयुर् शारशिलर् 483

आय् वळै मकळिरोटु-चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराओं के साथ; अमरर् ईट्टत्तार्-देवगण बने (जो थे, वे) राक्षस; तूय वेंम् कटुम् कणै-पवित्र और भयंकर (श्रीराम के) अस्त्रों से; तुणित्त-कटे; तङ्कळ् तोळ्-अपने कन्धों को; ओरु तलै पेय् कौळ-एक ओर प्रेत के खींचते; पिणङ्कि-उससे झगड़कर; वाय् विटा-अपने मुख से न जाने देते हुए; नाय्-कुत्ते को; ओरु तलै कौळ-दूसरी ओर छीनते; नहैयुर्-देखकर हँस रहे थे । ४८३

चुने हुए कंकण-धारिणी अप्सराओं के साथ वे यह भी देख रहे थे कि श्रीराम के पवित्र और प्रचण्ड वाणों से कटे उनके हाथों को कुत्तों ने अपने मुख में ग्रस लिया है; और एक ओर प्रेत उनको छीनने का प्रयास करते हैं और उस ओर कुत्ते अपने मुख से छीनने न देते हुए खींच लेने के प्रयास में लगे हैं । यह देखकर उन्हें मनोरंजन हुआ । ४८३

तेरिहणै	मूळ्हलिर्	शिरन्द	मार्विन्नर्
इरुवित्तै	कडन्दुपो	युम्ब	रैय्दिन्नार्
निरुदरुदम्	बैरुम्बडै	नैडिडु	निन्ऱवन्
औरुवन्नै	रुळ्ळत्ति	नुलैवुर्	शारशिलर् 484

तेरि कणै-चुने हुए (श्रेष्ठ) शरों के; मूळ्कलिल्-घुस जाने से; तिरुन्त मार्पित्तर् चिलर्-विदीर्ण छाती वाले कुछ राक्षस; इरु वित्तै कटन्तु-दोनों कर्मों का निराकरण करके; पोय् उम्पर अय्यित्तार्-स्वर्ग जो जा पहुँचे थे; निरुतर् तम् पैरुम् पटै-राक्षसों की सेना; नैडितु-अतिविशाल है; निन्ऱवन्-(सामना करके) स्थित रहनेवाले; औरुवन्-एकाकी है; अन्ड-सोचकर; उळ्ळत्तिन् उलैवु उर्ऱार्-मन में चिंतित हुए । ४८४

श्रीराम के उत्तम वाणों के राक्षसों के शरीर के आर-पार होने से उनकी छातियाँ विदीर्ण हो गयीं। वे पाप-पुण्य दोनों कर्मों का निराकरण हो जाने से स्वर्ग पहुँच गये। वहीं से वे देखते हैं कि युद्धभूमि की स्थिति बड़ी विषम है। राक्षसों की सेना अत्यधिक विशाल है और उनके सम्मुख श्रीराम अकेले खड़े हैं। वे श्रीराम से सहानुभूति करके दुखी हुए। ४८४

कैक्कळि	उत्तैयवन्	पहळि	कण्डहर
मैक्कुलम्	वेरौडुन्	दुडैत्तु	वीळत्तित्त
मैक्कर	मन्तत्तोर	वञ्जन्	माण्बिलन्
पौक्करि	कूडिय	कौडुञ्जौड	पोलवे 485

मै कर मन्तत्तु—अंजन-सम काले मन के; और वञ्चन्—एक वंचक; माण्पु इलन्—गुण-हीन मनुष्य को; पौक् करि—झूठी गवाही (देते हुए); कूडिय कौडुम् चोल्—जो कहा, उस घातक वचन; पौलवे—के समान; कै कळिउ अतैयवन्—सूँड़ वाला जानवर (गज) सम श्रीराम के; पकळि—शरों ने; कण्टकर्—लोककंटक; मैक्कुलम्—राक्षसों के शरीरों की राशि को; वेर् ओडुम्—समूल; तुडैत्तु वीळत्तित्त—मार-मिटाय। ४८५

सूँड़ वाले जानवर करी के समान दर्शनीय श्रीराम के वाणों ने लोक-कंटक राक्षसों के शरीरों को समूल मिटा दिया। उनका क्षय होना ऐसा था जैसे अंजन के समान काले मन वाले, कपटी और नीच प्रकृति के आदमी के झूठी गवाही के वचन कहने पर उसका नाश हो जाता है। ४८५

अञ्जुदड	कुरुपहै	यञ्जुत्त	नीदियर्
तञ्जन्त	तन्मय	माक्कुन्	दन्मैपोल्
वञ्जहत्	तरक्करै	वळैत्तु	वळ्ळडान्
शैञ्जरत्	तूय्मैयाड	देव	राक्किन्नान् 486

वळ्ळल्—उदार प्रभु श्रीराम ने; अञ्जुत्तड्कु उरु—भयावह; पकै अञ्जुत्त—अंतःशत्रु के नाशक; नीतियर्—नीतिमान ज्ञानियों से; तञ्चु अंत—शरण कहने पर; तन्मयम् आक्कुम् तन्मै पोल्—(ज्ञानी) अपने ही समान (शरणागतों को) बना लेते हैं, उसी प्रकार; वञ्चकत्तु अरक्करै—कपटी राक्षसों को; वळैत्तु—लपेट में लेकर; चैम् चर तूय्मैयाल्—श्रेष्ठ शरों की पवित्रता द्वारा; तेवर् आक्किन्नान्—देव बना दिया। ४८६

सबको भयातुर करनेवाले कामादि दुर्गुण रूपी शत्रुओं को मिटाकर रहनेवाले ज्ञानियों के पास कोई जाकर यह कहे कि मैं आपकी शरण में आया हूँ, तो वे उसे अपने समान बना लेते हैं। वैसे ही श्रीराम ने उन कपटी राक्षसों को अपने शरों के दायरे के अन्दर बलात् लाकर उन्हें मारा और उन्हें देव बना दिया। ४८६

वलङ्गोळपोर्	मान्तिडन्	वलिनन्दु	कौन्ऱुमै
अलङ्गल्वे	लिरावणङ्	कडिविप्	पामेन्तच्
चलङ्गोळपो	ररक्कर्द	मुरुक्क	डाङ्गित्त
इलङ्गैयि	लुयत्तदक्	कुरुदि	याऱो 487

वलम् कौळ्-बलशाली; पोर् मान्तिडन्-योद्धा, एक मनुष्य का; वलिनन्दु कौन्ऱुमै- (अनेक राक्षसों को) बलात मारना; अलङ्कल्-मालाधारी; वेल्-माला वाले; इरावणङ्कु-रावण को; अडिविप्पाम् अँत-जाकर सुनायेंगे, सोचकर; कुरुति आङ्-रवतनदी ने; चलम् कौळ्-आवेग के साथ; पोर्-लड़नेवाले; अरक्कर् तम् उरक्कळ्-राक्षसों के शरीरों को; ताङ्कित्त-वहा ले जाकर; इलङ्कैयिन्-लका में; उयत्ततु-पहुँचाया । ४८७

प्राण या जीव देव बन गये । पर राक्षसों के मृत शरीरों का क्या हुआ ? रक्त की नदी उन्हें वहा ले गयी और वे लाशें लंका पहुँच गयीं । वे, मानो माला से भूषित और मालाधारी रावण को यह सन्देशा देने चलीं कि एक बलवान मनुष्य ने ही इन राक्षसों को बलात मारा था ! । ४८७

शूळ्न्दुयर्	नैडुम्बडै	पहळि	शुङ्गुडप्
पोळ्न्दुयिर्	कुडित्तलिङ्	पुरळप्	पौङ्गित्तान्
ताळ्न्दिलन्	मुत्तलैत्	तलैवन्	शोरियिन्
आळ्न्दते	रम्बरत्	तोट्टि	यार्क्किन्ऱान् 488

शूळ्न्दु उयर्-अपने को घेरकर बढ़ी; नैडुम् पटं-विशाल सेना (के वीरों) के; पकळि-श्रीराम के बाणों ने; चुङ्गु उऱ-चारों ओर से; पोळ्न्दु-चौरकर; उयिर् कुडित्तलिल्-प्राण हर लिये; पुरळ-वे लोट गये, इसलिए; मुत्तलै तलैवन्-त्रिशिरा नामक सेनापति; पौङ्कित्तान्-उबल पड़ा; ताळ्न्दिलन्-विलम्ब नहीं किया; चोरियिन् आळ्न्द तेर्-रक्त में मग्न अपने रथ को; अम्परत्तु ओट्टि-अन्तरिक्ष में चलाते हुए; यार्क्किन्ऱान्-गरज उठा । ४८८

श्रीराम के बाणों ने उनको घेरे आये सभी राक्षसों को लपेटकर उनको मार दिया । वे सब लोट गये । त्रिशिरा नामक तीन सिर वाले राक्षस ने यह देखा और वह बौखला गया । विना विलम्ब के उसने रक्त में मग्न रहे अपने रथ को ऊपर आकाश में चलाया । उसने भीषण गर्जन किया । ४८८

ऊन्ऱिय	तेरिन्	नुरुमिन्	वैङ्गणै
वान्ऱोडर्	मळैयैन्	वाय्मै	यावर्क्कुम्
शान्ऱन	निन्ऱवत्	तरुम्	मन्ऱवन्
तोन्ऱऱन्	ऱिरुवु	मऱैयत्	तूवित्तान् 489

ऊन्ऱिय तेरितन्-सुस्थापित रथ वाले ने; उरुमिन्-वज्र के समान; वैम् कणै-भयंकर अस्त्र; वान् तोट्टर् मळै अँत-मेघ-वर्षित निरन्तर धारों के समान; वाय्मै

यावर्क्कुम्-सभी सत्यप्रिय लोगों के लिए; चान्द्र अंत निन्द्-दृष्टान्त के समान विद्यमान; तरुमम् अन्तवन्-धर्म-मूर्ति; तोन्द्ल् तन्-(वशरथ के) पुत्र श्रीराम के; तिरु उरु-श्रीशरीर को; मरैय-आवृत करते हुए; तूविनान्-वरसाये । ४८६

अपने रथ को अन्तरिक्ष में स्थिर रूप से खड़ा करके उसने वज्र के समान शरों को मेघ-वर्षा की धारों के समान निरन्तर चलाया । उन शरों में सत्यवादियों के दृष्टान्तस्वरूप और धर्मावतार दशरथ के पुत्र श्रीराम का दिव्य शरीर छिप गया । ४८९

❀ तूविय	शरमैलान्	दुणिय	वड्गणै
एवित्त	निरामन्नु	मेवि	येळिरु
पूवियल्	वाळियाड्	पौलङ्गो	डेरळित्
ताविर्वैम्	बाहन्	यळित्तु	माड्डिनान् 490

तूविय चरम् अलाम्-वर्षित सभी अस्त्र; दुणिय-खण्डित करते हुए; इरामन्नुम्-श्रीराम ने भी; वैम् कणै एवित्तन्-भयंकर शर चलाये; एवि-चलाकर; एळ इरु-(और) चौदह; पू इयल् वाळियाल्-तीक्ष्ण शरों से; पौलन् कौळ् तेर्-स्वर्ण-निर्मित रथ को; अळित्तु-नष्ट करके; वैम् पाकन्नै-पराक्रमी सारथी को; आवि अळित्तु-जान से मारकर; माड्डिनान्-युद्ध की स्थिति में परिवर्तन पैदा कर लिया । ४९०

तब श्रीराम ने बाण चलाकर उन सभी तीरों को काट दिया । फिर उन्होंने चौदह अतितीक्ष्ण तीर चलाये और उसके रथ को ध्वस्त कर दिया और सारथी को भी मार दिया । तब युद्ध का रवैया ही बदल गया । ४९०

❀ अन्डियु	मक्कणत्	तमर	रार्त्तैळप्
पौन्डैरि	वडिम्बुडैप्	पौरुविल्	वाळियाल्
वन्डौळिड्	डोयवन्	महुड	मात्तलै
औन्डौळित्	तिरण्डैयु	मुट्टिटि	नानरो 491

अन्डियुम्-उसके अलावा; अ कणत्तु-उसी क्षण में; अमर् आर्त्तु अँळ-देवों को हर्षरव करने देते हुए; पौन् तैरि-मुनहले; वडिम्पु उटै-किनारों वाले; पौरु इल् वाळियाल्-अनुपम अस्त्रों से; वन् तौळिल् तोयवन्-नृशंसकारी क्रूर के; मकुटम् मा तलै-किरीटधारी (तीन) बड़े सिरों में; औन्ड औळित्तु-एक को छोड़कर; इरण्डैयुम्-अन्य दोनों को; उट्टिटितान्-लुढ़काया । ४९१

श्रीराम वही तक नहीं रुके । उसी क्षण उन्होंने अपने रुमपंख अस्त्र चलाकर उस नृशंस पापी के किरीटधारी बड़े सिरों में एक को छोड़कर बाकी दोनों को काट दिया । वे सिर भूमि पर गिरकर लोटने लगे । इसको देखकर देवगण सन्तोष का नाद कर उठे । ४९१

❖ तेरळिन्	दव्वळित्	तिरिशि	रावैनुम्
पेरळिन्	दंन्निनु	मउम्बि	ळैत्तिलन्
नारिळिन्	डुमिळ्शिले	वान्न	नाट्टळिक्
कारिळिन्	दालेनक्	कणहळ्	शिन्दितान् 492

अ वळि-उस स्थान में; तेर् अळिन्नु-रथ खो गया; तिरिचिरा-त्रिशिरा; अँनुम् पेर्-का नाम; अळिन्तैत्तित्तुम्-मिट (निरयंक हो) गया तो भी; मउम् पिळैत्तिलन्-वीरता से वंचित न होकर; चिले-धनु से; नार् इळिन्नु उमिळ्-प्रत्यंचा द्वारा प्रेषित; कणहळ्-शरीर को; वान्न नाट्ट उळि-आकाशलोक से; कार् इळिन्ताल् अँत-मेघ (पानी) गिरता हो जैसे; चिन्दितान्-चलाया । ४६२

अव त्रिशिरा त्रिशिरा नहीं रहा । दो सिर खोकर उसने अपना नाम ही खो दिया । उसका रथ भी वेकार हो गया । तो भी उसने अपनी वीरता और साहस नहीं छोड़ा, पर अपने धनुष के डोरे खींचकर, व्योमनगर से मेघ-वर्षा गिरती ही, ऐसा अस्त्र निरन्तर छोड़े । ४९२

❖ एरुडिय	नुदलिन	तिरुण्ड	कार्मळ्
तोडुडिय	विल्लोडुन्	दौडर	मोमिशक्
काडुडि	यळित्तैनक्	कार्मु	हत्तैयुम्
माडुडुम्	वहळिया	लरुत्तु	माडुडितान् 493

एरुडिय नुतलित्तु-चढ़ी हुई सौंहों के भाल वाले (श्रीराम) ने; इरुण्ड कार्-काले मेघ ने; मळै तोडुडिय-वर्षा कराई जैसे; विल् ओडुम्-अपने धनु से; तोडर-शर चलाकर युद्ध किया; मो मिचे-आकाश में; काडु इटै अळित्तु अँत-वायु ने प्रवेश कर मिटा दिया जैसे; कार्मुकत्तैयुम्-त्रिशिरा के धनु को भी; माडु अरुम् पकळियाल्-अलंघ्य वाणों से; अरुत्तु माडुडितान्-काटकर ध्वस्त कर दिया । ४६३

श्रीराम की भी त्योरियाँ चढ़ीं । उन्होंने भी काले मेघ के समान जो वर्षा कराता है, अपने धनुष के साथ युद्ध किया और अपने अमोघ और अवार्य अस्त्रों से त्रिशिरा के धनुष को काट दिया । धनु बिल्कुल नष्ट हो गया । ४९३

❖ विल्लि	ळन्दन	नैन्निनुम्	विळङ्गुवाण्	मुहत्तित्
अँल्लि	ळन्दिल	तिळन्दिलन्	वैङ्गद	मिडिक्कुम्
शौल्लि	ळन्दिलन्	रोळ्वलि	यिळन्दिलन्	शौरियुम्
कल्लि	ळन्दिल	तिळन्दिलन्	कडङ्गैन्त	तिरिदल् 494

विल् इळन्तनन् अँन्निनुम्-धनु गँवा दिया तो भी; विळङ्कु वाळ् मुकत्तित्-शोभनेवाले उज्ज्वल चेहरे का; अँल् इळन्तिलन्-प्राकृतिक सौंदर्य न खोया; वैम् कतम् इळन्तिलन्-भयंकर क्रोध भी न गँवाया; इटिक्कुम् चौल्-वज्र-सम बोली; इळन्तिलन्-न गँवायी; तोळ् वलि-भुजवल; इळन्तिलन्-न खोया; चौरियुम्

कल्-पत्थर बरसाना; इळन्तिलन्-न छोड़ा; कइङ्कु अँत-वातचक्र के समान;
तिरितल्-धूमना; इळन्तिलन्-न छोड़ा । ४६४

त्रिशिरा ने अब धनुष भी गँवा दिया । तो भी उसके उज्ज्वल मुख की प्रभा नहीं गयी । उसका क्रोध दूर नहीं हुआ और उसके वचन की वज्र की-सी कड़क और उग्रता भी नहीं गयी । उसका भुजबल भी नहीं गया और उसने पत्थर बरसाना नहीं छोड़ा । (पतंग या) वातचक्र के समान वह धूमता हुआ लड़ा । ४९४

❀ आळि	रण्डुन्	रुळवैन्	वन्दरत्	तौखवन्
सूळि	रुम्बैरु	मायैयिन्	शेरुमुयल्	वानैत्
ताळि	रण्डैयु	मिरण्डुवैङ्	गणहळाङ्	इडिन्दु
तोळि	रण्डैयु	मिरण्डुवैञ्	जरङ्गळाङ्	रुणित्तान् 495

अन्तरत्तु-अन्तरिक्ष में; औखवन्-एकाकी; सूळ् इरुम्-छानेवाली बड़ी;
पैरु मायैयिन्-विस्तृत माया से; आळ् इरण्डु नूळ् उळ-योद्धा दो सौ हैं; अँत-ऐसा;
चैरु मुयल्वानै-युद्ध करनेवाले उसके; ताळ् इरण्डैयुम्-दोनों पैरों को; इरण्डु वैम्
कर्णकळाल् तटिन्तु-दो घातक बाणों से काटकर; तोळ् इरण्डैयुम्-दोनों भुजाओं को;
इरण्डु वैम् चरङ्कळाल् दो भयंकर बाणों द्वारा; तुणित्तान्-काट लिया । ४६५

अन्तरिक्ष में एकाकी रहकर त्रिशिरा ऐसी माया के साथ लड़ा कि यह भ्रम हो जाता था कि दो सौ राक्षस एक साथ युद्ध कर रहे थे । अदम्य उत्साह के साथ वह युद्ध कर रहा था । श्रीराम ने दो-दो अस्त्र चलाकर उसके दोनों हाथों और दोनों पैरों को काटकर अलग कर दिया । ४९५

❀ अङ्गु	ताळीडु	तोळित्त	नयिलैयि	इलङ्गप्
पौङ्गु	मामुळैप्	पुलालुडै	वायित्तिङ्	पुहुन्दु
पङ्गु	वादरिप्	पान्ङुनै	नोक्कित्तन्	परियान्
कौङ्गु	वारशरत्	तौळिन्ददोर्	शिरत्तैयुङ्	गुङ्गैत्तान् 496

अङ्गु ताळ् औडु तोळित्तन्-पैरों और हाथों से हीन; अयिल् अयिळ् इलङ्क-तेज दाँतों को प्रकट करते हुए; पौङ्गु मा मुळै-पर्वत की बड़ी कन्दरा के समान; पुलाल् उडै वायितिल्-मांस की गन्ध निकालनेवाले मुख में; पुकुन्तु पङ्गल्-जाकर ग्रसने का; आतरिप्पात् तत्तै-प्रयत्न करनेवाले उसको; नोक्कित्तन्-(श्रीराम ने) देखकर; परियान्-कृपा न करके; कौङ्गु वार् चरत्तु-दड़ एक लम्बे बाण से; औळिन्तु ओर् चिरत्तैयुम्-बचे रहे एक सिर को भी; कुङ्गैत्तान्-काटकर अलग किया । ४६६

हाथ और पैर खोकर राक्षस ने अपने तीक्ष्ण दाँतों को निकालते हुए श्रीराम को अपने मांस-गन्ध-पूर्ण, विलसदृश मुख से ग्रसने का उपक्रम किया । श्रीराम ने उसको देखा, दया नहीं की और एक लम्बा और बलवान अस्त्र चलाकर उसका बचा हुआ सिर भी धड़ से अलग कर दिया । ४९६

✽ तिरिशि	रावैनुञ्	जिहरमण्	चेरुदलुञ्	जिदरि
निरुद	रोडिनर्	तूडणन्	विलक्कवु	निल्लार्
परुदि	वाळिनर्	केडहत्	तडक्कैयर्	परन्द
कुरुदि	नोरिडै	वारुहुळल्	कौळुङ्गुडर्	तौडक्क 497

तिरिचिरा अँनम् चिकरम्-त्रिशिरा रूपी शिखर; मण् चेरुतलुम्-धराशायी हुआ तो; परुति वाळितर्-सूर्यप्रभ तलवारधारी; केडक तट कैयर्-ढाल लिये बड़े हाथ वाले; निन्नु निरुतर्-विद्यमान राक्षस; चितरि-अस्तव्यस्त होकर; तूडणन् विलक्कवुम्-दूषण के रोकने पर भी; निल्लार्-न रुके; परन्त-फँले रहे; कुरुति नोर् इटै-रक्त-प्रवाह के मध्य; कौळुम् कुटर्-मोटी आँतों के; वार् कळल्-लम्बे पैरों से; तौडक्क-उलझकर रोकते; ओटिनर्-(उनको भी खींचते हुए) भागे। ४६७

त्रिशिरा रूपी शिखर (शिखर-सम नेता) मरकर भूमि पर गिर गया, तो अर्क-सम प्रकाशमान तलवारें और ढाल रखनेवाले विशाल हाथों के राक्षस भय से अस्तव्यस्त होकर भागे। दूषण ने रोकना चाहा तो भी वे नहीं रुके। सारी युद्धभूमि रक्त और कीच से भरी थी। वे उसी में घुसकर भागे। आँतों ने उनके पैरों से उलझकर बाधा डाली। तो भी लस्टम-पस्टम वे भागे ही। ४९७

कणत्तिन्	मेनिन्नु	वानवर्	कैवुडैत्	तार्प्पप्
पणत्तिन्	मेनिलङ्	गुलैवुडक्	काल्हौडु	पडप्पार्
निणत्तिन्	मेल्विळुन्	दळुन्दिनर्	शिलर्शिलर्	निवन्द
पिणत्तिन्	मेल्विळुन्	दुरुण्डन	रुयिर्हौडु	पिळैप्पार् 498

मेल्-अन्तरिक्ष में; कणत्तिन् निन्नु-दलबद्ध स्थित; वातवर्-देवों ने; कै पुटैत्तु आर्प्प-तालियाँ पीटकर आनन्दरव किया; पणत्तिन् मेल् निलम्-शेषनाग पर भूमि; कुलैवु उड-थर्रा उठी, तब; काल् कौडु पडप्पार्-पैरों के सहारे उड़नेवाले; चिलर्-(राक्षसों में) कुछ; निणत्तिन् मेल् विळुन्नु-मांस-पंक में गिरकर; अळुन्तित्तु-मग्न हुए; चिलर्-कुछ; निवन्त पिणत्तिन् मेल् विळुन्नु-ढेर बनी रही लाशों पर गिरकर; उरुण्टनर्-लुढ़के; उयिर् कौडु पिळैप्पार्-किसी विध जान से बचे। ४६८

वे राक्षस ऐसे दौड़े, मानो उनके पैर ही पंख हों। उनको देखकर आकाश में देवगण तालियाँ पीटकर हँसे। शेषनाग पर धूत यह भूमि राक्षसों के पदाघातों से डोल उठी। उनमें कुछ रक्त-कीच में मग्न होकर डूब गये। कुछ ढेर बनी पड़ी रही लाशों पर टकराकर गिरे और किसी तरह बचकर भागे। ४९८

वेय्न्द	वाळौडु	वेलिडै	मिडैन्दन	वैट्ट
ओय्न्दु	ळार्शिल	रुलन्दन	रुदिरनीर्	याड्डिल्
पाय्न्दु	काल्पदिन्	दळुन्दिनर्	शिलर्शिलर्	पयत्ताल्
नीन्दि	नारनैडुङ्	गुरुदिघड्	गडल्पुक्कु	निलैयार् 499

चिलर्-कुठ; इटै-बीच में; वेयन्त-पड़ी रही; वाळ् ओटु वेल्-तलवारों और भालों के; मिटैन्तन-जो सटे हुए थे; वेट्ट-काटने से; ओयन्तुळार्-(दौड़ नहीं सके) शिथिल हुए; उलन्तनर्-मरे; चिलर्-और कुछ; उतिर नीर् आर्इल् पायन्तु-रक्त-नदी में गिरकर; काल् पतिन्तु-पैरों के गड़ जाने से; अळुन्तित्तर्-डूब मरे; चिलर् पयत्ताल्-कुठ, डरते हुए; नीन्तिनार्-तैरे; कुरुति अम् कटल् पुक्कु-रक्त-सागर में पहुँचकर; निलैयार्-चंचल रहे । ४६६

राक्षसों के मार्ग में तलवारें, भाले आदि कसरत से पड़े थे । कुछ राक्षसों के पैर उनसे कट गये और वे राक्षस निर्बल होकर गिरे और मरे । कुछ रक्त-प्रवाह में घुसे और कीच में पैरों के गड़ जाने से मरे । कुछ भयातुर होकर उस रक्त-नदी में उतरे और बहते जाकर रक्त-सागर में पहुँचे । वहाँ वे डूब-उतराये । ४९९

❖ मण्डि	योडित्तर्	शिलर्नेडुड्	गडहरि	वयिर्इल्
पुण्डि	रन्दमा	मुळैयिडै	वाळीडुम्	बुहुवार्
तौण्डै	नीङ्गिय	कवन्दत्तैत्	तुणैवनी	यैम्पैक्
कण्डि	लेत्तैत्	पुहलैत्	कैदलैक्	कौळ्वार् 500

मण्डि ओटित्तर् चिलर्-तेज जो भागे, वे कुछ; नेटुम् कट करि वयिर्इल्-मत्तगजों के पेट में; पुण् तिरन्त-व्रण जो खुले थे; मा मुळै इटै-उन बिलों में; वाळ् ओटुम् पुकुवार्-तलवारों के साथ घुसे; तौण्डै नीङ्गिय-गले से (कटकर) हीन; कवन्दत्तै-कवन्ध को; तुणैव-मित्र; नी अम्पै कण्टिलेन्-तुम 'मुझे नहीं देखा'; अत्त-यह; पुक्कु अत्त-(श्रीराम के वाणों से) कहो, ऐसा; कै तलै कौळ्वार्-सिर पर हाथ (जोड़कर) रख लेते । ५००

कुछ राक्षस दौड़े । वचने का कोई स्थान नहीं मिला । वहाँ हाथी मरे पड़े थे, जिनके पेट बिलों के समान खुले थे । राक्षस अपनी तलवारों के साथ उन्हीं में घुस गये । कुछ राक्षस भागते जा रहे थे । उनको डर था कि श्रीराम के शर पीछा करके आ रहे हैं । उन्होंने कवन्धों को देखा और अंजलिबद्ध हाथ अपने सिरो पर रखते हुए उनसे प्रार्थना की कि तुम श्रीराम के वाणों से मत कहो कि तुमने हमें देखा था । ५००

❖ कच्चुम्	वाळुन्दड्	गाउँडुन्	दोर्प्पत्त	काणार्
अच्च	मैन्वदीन्	शुरुवुहोण्	डालैन्	वळिवार्
उच्च	वीरन्गच्च	चुडुशर	निरुदरन्	जुरुवित्
तच्चु	निन्नुन	कण्डन	रव्वळित्	तविर्न्दार् 501

उच्च वीरन्-सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के; कै-हाथ के; चुटु चरम्-मारक वाण; निरुदर नैञ्चु उरुवि-राक्षसों की छाती में घुसकर; तच्चु निन्नुन-गड़े रहे; कण्टनर्-उनको देखकर; अ वळि तविर्न्दार्-उस मार्ग को बचाकर; कच्चुम् वाळुम्-कमरबन्द और तलवार; तम् काल् तौटर्न्तु ईर्प्पत्त-उनके पैरों को काटती

रहती है; काणार्-उसकी भी सुध न लेते हुए; अच्चम् अँत्पतु ओर् उरुवु कौण्टात् अँत-मानो भय नामक वस्तु ने रूप लिया हो, ऐसा; अळिवार्-वहीं रहकर मरते। ५०१

कुछ वीरों ने देखा कि मार्ग में सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के हाथ के प्रेरित भयानक शर राक्षसों के वक्षों में घुसकर वही गड़े रहे। वे उस मार्ग से नहीं गये। वे इतने भयभीत हो गये कि उनके कमरबन्द और उनकी तलवारें उन्हें निरन्तर काट रही थी—इसकी भी उन्होंने सुध नहीं ली। वे बिल्कुल भय के मूर्त आकार थे। वे जहाँ-तहाँ रहकर मरने लगे। ५०१

अनैय	राहिय	वरक्करे	याण्डीळिर्	कमैन्द
विनैय	नीङ्गिय	मन्तित्तरे	वैरुवन्मि	नैन्ता
निनैयु	यानौत्तु	निरप्पुव	दुण्डेन	निन्नान्
तुनैयुम्	वाम्बरित्	तेरिनत्	रूडणन्	शौन्नान् 502

तूटणन्-दूषण; तुनैयुम्-तीव्रगामी; वाम् परि-अश्व-जुते; तेरित्तन्-रथ पर सवार; अतैयर् आकिय अरक्करे-वैसे भागते हुए राक्षसों को; आण् तीळिर्कु अमैन्त-पुरुष के कार्य योग्य; विनैयम् नीङ्गकिय-काम जिनके पास नहीं, उन; मन्तित्तरे-मानवों से; वैरुवल्मिन्-मत डरो; अँन्ता-कहकर; यात् निनैयुम् अँन्ड-में सोचता हूँ एक बात; निरप्पुवतु उण्डु-जो कहती है; अँत-ऐसा; निन्नान्-खड़ा होकर; शौन्तान्-बोला। ५०२

तब दूषण नामक सेनापति ने, जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार था, भागनेवाले राक्षसों को रोकते हुए कहा कि हे वीरो! मत डरो, मत भागो। आखिर तुम्हारा शत्रु मनुष्य है। वह साहसपूर्ण वीरता युक्त (राक्षस) पुरुष का काम करने की शक्ति नहीं रखता। उससे मत डरो। फिर उसने वहीं खड़ा रहकर कहा कि मुझे तुमसे एक बात कहनी है। सुनो। ५०२

वच्चै	यामैन्नुम्	वयमन्त	तुण्डेन	वाळुम्
कौच्चै	मान्दरैक्	कोल्वळे	महळिरुङ्	गूशार्
निच्च	यमैन्नुङ्	गवशत्ता	निलैनिर्कु	मन्नेल्
अच्च	मैन्नुमी	दारुयिर्क्	करुन्दुण	यामो 503

वच्चै आम् अँत्तुम् पयम्-अपमान योग्य यह भय; मत्तत्तु उण्डु अँत वाळुम्-मन में रखते हुए जो जीते हैं; कौच्चै मान्दरै-उन क्षुद्र मनुष्यों से; कोल् वळे मकळिर्म्-सुन्दर चूड़ियाँ जो पहनती है, वे स्त्रियाँ भी; कूचार्-नहीं शरमाती हैं (आदर नहीं करती); निच्चयम् अँत्तुम्-धैर्य रूपी; कवचत्ताल्-कवच धारण करने से ही; निलै निर्कुम्-प्राण स्थायी रहेगा; मन्नेल्-नहीं तो; अच्चम् अँत्तुम् अतु-भय का यह गुण; आर् उयिरुक्कु-धियारे प्राणों के लिए; अरुम् तुणै आमो-श्रेष्ठ सहायक होगा क्या। ५०३

भय अपयश है। उसके साथ रहनेवाले हैं मानव लोग। उनको

देखकर सुन्दर कंकणधारिणी स्त्रियाँ भी नहीं डरतीं, उनसे नहीं शरमातीं । और भी एक बात है । वीरता के कवच के अन्दर ही प्राण सुरक्षित रह सकते हैं । अब जो भीरुता तुम दिखा रहे हो, क्या वह तुम्हारे प्राणों का रक्षण कर सकेगी ? । ५०३

ॐ पूव	रावुवेड्	पुरन्दरन्	इन्नीडु	पौन्डा
मूव	रोडुदान्	मुन्तिन्ऋ	मुट्टिय	मुनैयिल्
एव	रोडिना	रिराक्कदर्	नुमक्किडैन्	दोडुम्
देव	रोडुहर्	इडिन्दुळि	रोमत्तन्	दिहैत्तीर् 504

पू अरावु वेल्-तीक्ष्ण किये हुए भाले वाले; पुरन्तरन् तन्नीडु-पुरन्दर के साथ और; पौन्डा-अमर; मूवरोटु-त्रिदेवों के साथ; मुन् निन्ऋ मुट्टिय-सामने स्थित जो की; मुनैयिल्-उस युद्धभूमि में; इराक्कतर् एवर् ओटितार्-राक्षस कौन भागे; मत्तम् तिकैत्तीर्-यहाँ चित्त-ध्रमिit हुए; नुमक्कु इटैन्तु-तुमसे (हारकर) त्रस्त होकर; ओटुम्-जो भागते हैं; तेवरोटु-उन देवों से; कड्ड अडिन्तु उळिर् ओ-सीख ले गये हो क्या । ५०४

तीक्ष्ण भालाधारी पुरन्दर से और अमर रहनेवाले त्रिदेव से भी युद्ध हुआ था न ? उनके सामने डटकर जिन राक्षसों ने युद्ध किया, उनमें कौन थे जो मैदान छोड़कर भागे ? कोई नहीं ! अब क्यों विकलमन हुए हो ? क्या यह गुण तुमने उन देवों से सीख लिया है जो तुमको देखकर भयभीत होकर भाग जाते हैं ? । ५०४

इङ्गोर्	मान्तिडर्	कित्तनै	वीरर्ह	ळिडैन्दीर्
उङ्गै	वाळीडु	पुहळ्विळ	वूर्पुह	वुवन्दीर्
कौङ्गै	मार्बिडैक्	कुळिप्पुडक्	कळिप्पुड	कौळुङ्गण्
नङ्गै	मार्हळैप्	पुल्लुदि	रोनल	नुहर्वीर् 505

इङ्कु ओर् मान्तिडर्कु-यहाँ एक मनुज के सामने; इत्तनै वीरर्कळ्-इतने वीर; इटैन्तीर्-हार मान गये; उम् कं वाळ् ओटु-अपने हाथ की तलवार के साथ; पुक्कळ् विळ-यश को नीचे डालते हुए; ऊर् पुक्क उवन्तीर्-गाँव जाना पसन्द किया; नलम् नुक्कर्वीर्-सुख-भोग चाहते हो; कळिप्पु उडु-मदमत्त; कौळुम् कण्-बड़ी आँखों की; नङ्कैमार्कळै-अपनी स्त्रियों को; कौङ्कै-उनके स्तन; मार्पु इटै कुळिप्पु उडु-तुम्हारे वक्षों में दबें, ऐसा; पुल्लुतिरो-गले से लगाओगे क्या । ५०५

अकेले एक मनुज के सामने इतने राक्षस हार मानकर भागते हो ! युद्धस्थल में तलवारों के साथ अपने यश को गिराकर अपने स्थान में जा प्रविष्ट होना चाहते हो ! क्या सुख-भोग की इच्छा हो गयी और तुम जाकर उन मत्त और विशाल आँखों की अपनी स्त्रियों को इतना कसकर गले लगाना चाहते हो कि उनके पुष्ट स्तन तुम्हारे वक्षों में दब जायँ ? । ५०५

ॐ शैम्बु	काट्टिय	कण्णिण	पालेनन्	तंजिन्दीर्
वैम्बु	काट्टिन्	नुळ्ळीरुम्	वैरिन्नुम्	पागुन्द
कौम्बु	काट्टुदि	रोतड	मारविडक्	कुळित्त
अम्बु	काट्टुदि	रोतल	मङ्गुयडक्	कम्मा 506

चैत्तु काट्टिय-ताय (क्रोध से ताना) यमी; कण्णुल्ले-प्रोयों के जोड़े; पाल-दूध के समान; तंजिन्दीर्-रक्त हो गये, पैयो प्रोयों के हो गये; कुल्ले मङ्गुयडक्-तुम्हारे कुल्ले की स्थिति हो; चैत्तु काट्टु इट्टे-दिकट जंगल में; नुळ्ळे तंजिन्-घुसकर बोझ से समथ; वैरिन्-पीठ में; उर पायुन्द-बनी रही; कौम्बु काट्टुतिरो-अलिया रिमाजोमे; तड मारु इट्टे कुळित्त-(मा) विमात वर में घुसे; अम्बु काट्टुतिरो-बाणों को वि-माजोमे । ५०६

तुम्हारी आंखों से तान होना चाहिए ! पर अब वे रेत दिवानी हैं—उर से, क्रोध छोड़ देने में ! अब तुम अपने-अपने आगम पर जाओगे तो अपनी पत्नियों की क्या दिमाजोमे अपनी बीरता के चिह्नों के रूप में ? उन टहलियों और जायाओ को दिमाजोमे जो पने वन के मध्य से भागते समय तुम्हारी पीठ में चुन जायेंगे ? या अपने वनमध्य घुस सर को ? । ५०६

एक्क	मिर्जामत्	मेनुपुण	डोविहन्	मनिवड
काक्कुन्	वैज्जमत	ताण्मेयव	ममररक्कु	मरिदाल
ताक्क	रुगुयत्	नुळ्ळुत्	तल्लेगहन्	इङ्ग
मूक्को	उत्तिन्नु	मुळ्ळुडुम्	वैम्बुळि	मुयन्नीर् 507

इक्क मतिवड्कु माक्कुम्—जड़-मनुष्य से जो किया जाता है; पैम् वमतु-उत्त भीषण युद्ध में; आण्मे-(तुम्हारे) पीरुय; ममररक्कुम्—उन अमरों के लिए भी; अरिन्-दुर्लभ है; इङ्ग एकम् इलन् मैन् उगटो-यहाँ तुम्हारा कत्ताप इससे घटकर हो सकता है क्या; ताक्कु अदम्-जिल पर प्रहार करना कठिन है, ऐसी; पुयत्तु-भुजाओं के रक्षाभी; उन् कुल तल्लेगहन्-तुम्हारे कुल के उच्च नायक; तङ्क- (रावण को) छोटी बहिन की; मूक्कु जोट्ट अत्ति-नाक के साथ हो नहीं बलिक; नुम् मुवुक्कु ओट्टुम्-तुम्हारी पीठ के तान भी; नोन् पत्ति-नगनेवाला अपयश; मुयन्नीर्-हो, इसका उपक्रम किया है तुमने । ५०७

आखिर अब मनुज के साथ जो हो रहा, इस युद्ध में तुम ऐसा पीरुय (पीरुय-हीनता) दिखा रहे हो ! यह देवों के लिए भी दुर्लभ है ! हन्त ! इससे अधिक दुखदायिनी बात क्या होगी ? तुम कैसा कार्य कर रहे हो, उसका अर्थ क्या होगा ? —मानुष है ? तुम्हारे कुलनायक, जो अलक्ष्य भुजावल रखते हैं, उन रावण की बहिन की नाक ही नहीं कटती, बलिक तुम्हारी पीठ पर अपयश लगेगा ! यही प्रयत्न तुम कर रहे हो । ५०७

ॐ आर	वाळ्ळुक्कयित्त	वणिहरा	यमैदिरो	वयिल्वेल्
वीर	वाट्कोळु	वैतमडुत्	तुळ्ळुविरो	वैट्टिप्पोरुत्

तीर वाळ्ककैयिर् रेवरैच् चैरुविडैप् पश्चित्त
वीर वाट्कैयी रैड्डन्तम् वाळ्दितो विळम्बीर् 508

वैरि पोर्-उन्मत्तकारी युद्ध में; तीर वाळ्ककैयिल्-साहसपूर्ण जीवन के कारण;
तेवरै चैरु इटै पश्चित्त-देवों से युद्ध में छीनी हुई; वीर वाळ्-वीरता की तलवारें;
कैयीर्-जिनमें हैं, ऐसे हाथों के राक्षसों; वाळ्ककैयिन् वणिकराय्-जीवन में व्यापारी;
आर-वनकर; अमैतिरो-रहोगे क्या; अयिल् वेल्-तीक्ष्ण भाले; वीर वाळ्-वीरता
की सहायक तलवारें; कौळ् अंत मटुत्तु-हल की फाल बनाकर भूमि में खोदकर;
उळ्ळुतिरो-जोतनेवाले हो; अँड्डन्तम् वाळ्तिरो-कैसे जीवन बिताओगे; विळम्पीर्-
कहो । ५०८

उन्मत्तकारी युद्ध में अपूर्व धैर्य दिखाते हुए तुमने देवों के हाथों से
उनकी तलवारें छीन ली थीं । ऐसी तलवारों के धारक ! अब जीवन
वणिकों का बिताने का विचार किया है ? या तीक्ष्ण भालों और प्रतापी
तलवारों को हल का फाल बनाकर भूमि की खेती करोगे और कृषक
बनोगे ? बताओ तो सही । ५०८

ॐ अँन्ऱु तानुन्द नैरिहड्ड चैनैयु मिऱैनीर्
निन्ऱु काण्डिरैन् नैडुञ्जिलै वलियैन् नेराच्
चैन्ऱु ताक्किनन् रेवरु मरुळ्हीण्डु तिहैत्तार्
नन्ऱु कात्तिर्यन् इरामनु मेदिर् शैल नडन्दान् 509

अँन्ड-ऐसा कहकर; नीर्-तुम लोग; इऱै-कुछ देर; निन्ऱु-खड़े होकर;
अँन् नैडुम् चिलै-मेरे लम्बे धनुष का; वलि-पराक्रम; काण्डिर्-देखो; अँत-
समझाकर; तानुम्-स्वयं और; तन् अँरि कटल् चैन्नैयुम्-उसकी तरंगाकुल समुद्र-संभ
सेना ने; नेरा चैन्ऱु ताक्किन्नन्-श्रीराम के सामने जाकर उन पर आक्रमण किया;
तेवरु मरुळ् कौण्डु-देव भी चकराकर; तिकैत्तार्-भ्रमित हुए; इरामनुम्-श्रीराम
ने भी; नन्ऱु कात्ति अँन्ड-अच्छा सावधान, बचा लो कहकर; अँतिर् चैल-उसके
सामने; नडन्तान्-चलते आये । ५०९

दूषण ने यह वचन कहा । आगे यह बोला कि तुम मत भागो ।
जरा देर खड़े रहो और मेरे धनुष का अतुल प्रताप देखो । फिर वह आगे
गया और उसकी सेना भी साथ गयी । उन्होंने जाकर श्रीराम पर
आक्रमण किया । देवों को भी भय हो गया कि यह राक्षस वीर अनर्थ
कर देगा । तब श्रीराम भी यह कहते हुए सामने आये कि ठहरो, अपनी
रक्षा के लिए तैयार हो जाओ । सावधानी से अपनी रक्षा कर लो । ५०९

ऊड रूप्पुण्ड मीयबडैक् कैयीडु मुयर्न्द
कोड रूप्पुण्ड कुञ्जरड् गौडिञ्जौडु कौडियिन्
काड रूप्पुण्ड कालिय रेरुहदिर्च् चालि
शूड रूप्पुण्ड वैनक्कळुत् तरुप्पुण्ड तुरहम् 510

मोय् पटै-सवल हथियार; ऊटु अरुप्पुण्ट-बीच में कटे; कुञ्चरम्-हाथी; कै ओटुम्-सूँड़ों सहित; उयर्न्त-उभर आये; कोटु-दाँतों के; अरुप्पुण्ट-कटे हो गये; काल् इयल् तेर्-हवा के समान चलनेवाले रथ; कौटिञ्चु ओटु-पीठ के सामने के 'कौडिञ्जु' नाम के हस्तावलम्ब के साथ; कौटियिन् काटु-ध्वजाओं के वन के साथ; अरुप्पुण्ट-कटे हो गये; तुरकम्-अश्व; कतिर् चालि चूटु-शालि-पौधों की वालें; अरुप्पुण्ट अँत-कट गई हों, ऐसे; कळुत्तु अरुप्पुण्ट-गर्वन-कटे हो गये । ५१०

उस युद्ध में बलवान हथियार कटे । हाथी की सूँड़ें और दाँत कटे और वे गिर गये । रथ ध्वस्त हुए । ध्वजाएँ और पीठ के सामने के भाग आदि कटे । अश्वों के सिर धान की बालियों के समान गले से काट दिये गये । ५१०

तुरवि	योडिन	वुयिर्निलै	शुडुशरन्	दुरन्द
करवि	योडुवन्	कच्चैयुड्	गवशमुड्	गळल
अरवि	योडिन	वैन्विळि	कुरुदिया	इलैप्प
उरवि	योडित्त	केडहत्	तट्टौडु	मुडलम् 511

चुटु चरम् तुरन्त-तापक शर (जो श्रीराम ने) छोड़े; उयिर् निलै-राक्षसों का मर्म स्थान; तुरवि-ढूँढ़ते हुए; ओटित्त-चले; करवि ओटु-हथियारों के साथ; वन् कच्चैयुम्-दूढ़ वन्दो और; कवचमुम् कळल-कवचों को उतारते हुए; अरवि ओटित्त अँत-नदियाँ बहती हों जैसे; इळि कुरुति आडु-(राक्षसों के शरीरों से) निकलनेवाले रक्त की नदियाँ; अलैप्प-उनको इधर-उधर हिलातीं ऐसा; केटक तट्टु ओटुम्-ढालों के थालों के साथ; उटलम्-शरीरों को भी; उरवि ओटित्त-निकरकर चले । ५११

श्रीराम से प्रेरित सन्तापक वाण राक्षसों के मर्मस्थल की खोज में चले । उनके लगते ही राक्षसों के हथियार कमरबन्द और कवच आदि कटकर गिर गये । वे अस्त्र ढालों को भेदकर और राक्षसों के शरीरों के आर-पार हो गये । उनके शरीर से निकलकर रक्त वहा और उसकी नदियाँ बहीं । उन नदियों में कवच, कमरबन्द आदि उतराये और इधर-उधर चालित हुए । ५११

आय्न्द	कङ्गपत्	तिरङ्गळ्पुक्	करक्कर्दम्	मावि
तोय्न्द	तोय्विल	पिडैमुहच्	चरञ्जिरन्	दुमित्त
काय्न्द	वैञ्जरम्	निरुदरुत्तड्	गवशमार	बुरुवप्
पाय्न्द	वञ्जह	रिदयङ्गळ्	पिळन्दत्त	पल्लम् 512

आय्न्त-चुनकर प्रेरित; कङ्क पत्तिरङ्कळ्-कंक-पत्र (चील के पंख से युक्त शर) वाण; पुक्कु-(राक्षसों के शरीरों के अन्दर) प्रविष्ट होकर; अरक्कर् तम् मावि तोय्न्त-राक्षसों के प्राणों में लगे; तोय्वु इल-ऐसा जो प्रविष्ट नहीं हुए वे; पिडै मुक् चरम्-अर्द्धचन्द्र बाणों ने; चिरम् तुमित्त-सिर खण्डित कर दिये; काय्न्त

वैम् चरम्-उग्र और प्रचण्ड शर; निरुत्तर तम्-राक्षसों के; कवच मारु-कवच-सज्जित वक्षों के; उरुव पायन्त-आर-पार गये; पल्लम्-अन्य शरों ने; वञ्चकर्-वंचकों के; इत्यङ्कळ् पिळन्तत्त-हृदय को फोड़ दिया । ५१२

श्रीराम के कंकपत्त नाम के चील के पंख से युक्त तीक्ष्ण शर राक्षसों के मर्म पर जा लगे । ऐसे जो जाकर नहीं लगे, उन अर्द्धचन्द्र बाणों ने राक्षसों के सिरों को काट दिया । कुछ उग्र वाण जो तेजी से गये कवच सहित शरीरों को निफरकर बाहर आ गये । अन्य अस्त्रों ने उनके हृदय (वक्षस्थल) को विदीर्ण कर दिया । ५१२

तूड	गन्विडु	शरमवै	यावैयुन्	तुणिया
माडु	निन्ऱवर्	वळङ्गिय	पडैहळु	माऱ्ऱा
आडल्	कौण्डत्त	नळप्परम्	वैरुवलि	यरक्कर्
कूडि	निन्ऱवक्	कुरैहडल्	वऱळ्वडक्	कुऱैत्तान् 513

तूटणन्-दूषण ने; विटु-जो चलाया; चरम् अवै यावैयुन्-उन सभी वाणों को; तुणिया-(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न करके; माडु निन्ऱवर्-पास जो खड़े रहे; वळङ्किय पटकळुम्-उनके चलाये हुए शरों को भी; माऱ्ऱा-लौटवा देकर; अळप्पु अरुम्-अगणित; पैरु वलि अरक्कर्-बड़े बलवान राक्षस; कूटि निन्ऱ-जिसमें मिले रहे; कुरै कटल्-उस गर्जनशील सागर-सम सेना को; वऱळ पट-सुखाते हुए; कुऱैत्तान्-मिटकर; आटल्-विजय; कौण्टत्तन्-प्राप्त की । ५१३

श्रीराम ने दूषण-प्रेरित सभी शरों के खण्ड-खण्ड कर दिये । पास जो रहे, उन राक्षसों के प्रेरित शरों को बेकार करके फिरा दिया । इस तरह गर्जनशील सागर के समान जो सेना राक्षसों से भरी थी उसको श्रीराम ने सुखा दिया । वे विजयी हो गये । ५१३

आर्त्त	ळुन्दत्तर्	वात्तव	ररुवरै	मरत्तो
डीर्त्त	ळुन्दत्त	कुरुदियिन्	पैरुनदि	यिरामन्
तूर्त्त	शैञ्जरन्	दिशैर्त्तौन्	दिशैर्त्तौन्	दौडर्न्डु
पोर्त्त	वैञ्जित्त	तरक्करैप्	पुरट्टिन	पुवियिल् 514

वात्तवर्-देव; आर्त्तु अळुन्तत्तर्-हल्ला मचा उठे; कुरुदियिन् पैरु नति-रक्त की बड़ी नदियाँ; अरु वरै-बड़े पर्वतों को; मरत्तौडु-पेड़ों के साथ; ईर्त्तु अळुन्तत्त-बहाते हुए वहीं; इरामन्-प्रभु श्रीराम ने; तूर्त्त-जो ठूँसे; वैम् चरम्-उन उत्तम वाणों ने; तिचै तौळम् तिचै तौळम्-दिशा-दिशा में सर्वत्र; तौडर्न्तु-(राक्षसों का) पीछा करके जाकर; पोर्त्त-उन दिशाओं को आच्छादित करते हुए जो रहे, उन; वैम् चित्तत्तु अरक्करै-भयंकर, क्रुद्ध राक्षसों को; पुवियिल्-भूमि पर; पुरट्टित्त-लुढ़का दिया । ५१४

देवगण इससे हर्षित हो गये और उन्होंने हल्ला मचाया । रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बड़े-बड़े पर्वतों को तराओं सहित बहाते हुए वही ।

श्रीराम लगातार शर चला रहे थे। वे हर दिशा में राक्षसों का पीछा करते गये और वहाँ भरे रहे क्रुद्ध राक्षसों के सिर कटकर भूमि पर लुढ़क गये। ५१४

तोन्ऱु	माल्वरैत्	तौहैयैन्त	तुवन्ऱिय	निणच्चे
डान्ऱ	पाळवयिऱ्	उलहैयैप्	पुहळ्ववै	नमर्वेट्
टून्ऱि	तारैला	मुलन्दन	रौल्लैयिन्	मडिन्दार्
कान्ऱ	वव्वुयिर्क्	कालनुम्	वलित्तुमैय्	कवन्ऱान् 515

तोन्ऱु माल् वरै-दृश्यमान बड़े पर्वतों के; तौकै अंत-समूहों के समान; तुवन्ऱिय-घने रूप से रहे; निण चेऱु-मांस-पंक; आन्ऱ-खूब खाकर जो रहे; पाळ् वयिऱ्ऱु अलकैयै-उन रिक्त-पेट वाले प्रेतों की; पुहळ्ववु अन्-प्रशंसा क्या हो; अमर् वेट्टु-युद्ध चाहकर; ऊन्ऱित्तार् अलाम्-जो रहे वे सभी (राक्षस); औल्लैयिन्-जल्दी; उलन्तत्तर्-मरे; कान्ऱ- (प्रेतों से पेट भर जाने के कारण जो) थूके गये; अ उयिर्-उन प्राणों को; कालनुम्-यम भी; वलित्तु-छीन ले जाते-जाते; मैय् कवन्ऱान्-श्रान्त-शरीर हो गया। ५१५

चर्बी के पर्वतों के समान ढेर बने रहे। उसको खाकर प्रेत बड़े ही मजे में रहे। अब तक रिक्तपेट रहे उनको मनमाने ढंग से खाने को मिल गया। उनकी प्रशंसा क्या की जाय? उससे बढ़कर यम की स्थिति कहना अधिक युक्त होगा, क्योंकि उसी से युद्धभूमि की स्थिति का सच्चा रूप मिलेगा। युद्ध में मन लगाकर जो राक्षस आये वे सब मरे। उनको प्रेतों ने खाया और जो पेट के भर जाने से उनके द्वारा त्यक्त थे, उन जीवों को उठाते-उठाते यम का शरीर थक गया। ५१५

कळिऱु	तेर्परि	कडुत्तवर्	मुडित्तलै	कवन्दम्
ओळिऱु	पल्पडैन्	तड्गुलत्	तरक्कर्द	मुडलम्
वळिऱु	शैर्निणम्	विऱुङ्गिय	वडुक्कलिन्	मीदिल्
कुळिऱु	तेर्हडि	दोट्टिनन्	ऊडणन्	कोदित्तान् 516

तूटणन्-दूषण; कळिऱु-हाथी; तेर्-रथ; परि-अश्व; कडुत्तवर्-(साथ लेकर) क्रोध के साथ जो लड़े; तन् कुलत्तु अरक्कर् तम्-अपने कुल के राक्षसों के; मुटि तलै-किरीटधारी सिरों; कवन्तम्-कबन्धों; ओळिऱु पल् पडै-शोभायमान अनेक हथियारों; वैळिऱु चेर् निणम्-श्वेत चर्बी; पिऱुङ्किय-के बने; अटुक्कलिन् मीते-पर्वतों पर ही; कुळिऱु तेर्-शब्दायमान रथ को; कटितु ओट्टित्तन्-सवेग चलाता गया; कोदित्तान्-क्रुद्ध रहा। ५१६

दूषण ने अब अपने रथ को आगे बढ़ाया। सामने हाथी, अश्व, राक्षसों के किरीटधारी सिर, उनके कबन्ध, अनेक उज्ज्वल हथियार श्वेत चर्बी आदि के पर्वतों के समान ढेर बने पड़े थे। क्रोध से उन्मत्त दूषण का रथ इन्हीं के ऊपर से चला और गरगराहट करता गया। ५१६

अरुङ्गौळ्	ळादव	राक्कैह	ळडुकुक्किय	वडुकुक्कल्
पिरुङ्ग	नीण्टत्त	कणिप्पिल	पेरुङ्गडु	विशैयाल्
करुङ्गु	पोन्ऱुळ	दायिनुम्	विणप्पेरुङ्	गडत्तिल्
इरुङ्गु	मेरुमत्	तेरपट्ट	दियादेत्त	विशैप्पाम् 517

अरुम् कौळ्ळातवर्-अधर्मी (राक्षसों) के; आक्कैकळ्-शरीर; अटुकुक्किय अटुकुक्कल्-जिनमें परतों के रूप में चुने गये थे, वे पर्वत; पिरुङ्ग नीण्टत्त-सब जगह दिखाई देते हुए विस्तृत रूप से पड़े रहे; कणिप्पिल-हिंसाव में नहीं आये (अगणित रहे); पिणम् पेरुम् कटत्तिल्-लाशों के उस बड़े वन में; पेरुम् कटुम् विचैयाल्-अधिक वेग के साथ; करुङ्कु पोन्ऱु-लट्टू के समान; उळ्ळु आयिनुम्-घूमता रहा तो भी; इरुङ्कुम् एरुम्-उतरता-चढ़ता गया; अ तेर् पट्टत्तु-उस रथ का हाल; यातु अत्त-क्या (था यह); इचैप्पाम्-कहें । ५१७

अधर्मी राक्षसों की असंख्य लाशें परतों में पहाड़ों के समान पड़ी रहीं । दूषण का रथ जब उन लाशों के वन-समान युद्धभूमि में लट्टू के समान वेग से घूमता हुआ चला तो भी चढ़ावों और उतारों के कारण उसे बहुत संकट उठाना पड़ा । उसकी क्या गति हुई, उसका क्या कहा जाय ? । ५१७

अरिदि	तैय्दित्त	तैयैन्दु	कौय्युळैप्	परियाल्
उरुळु	माळिय	दीरुदन्ति	तेरिन्	मेहत्
तिरुळि	नीङ्गिय	विन्दुविर्	पौलिहिन्ऱु	विरामन्
तैरुळुम्	वार्हणैक्	कूऱैवि	राविशैन्	इन्न् 518

ऐ ऐन्तु-(पाँच के पाँच =) पचीस; कौय् उळै परियाल्-सुन्दर रूप से कटे अयालों से भूषित अश्वों द्वारा; उरुळुम्-(खींचकर चलने से) चलनेवाले; आळियतु और तत्ति तेरिन्-चक्रों के अनुपम रथ पर आरुढ़ दूषण; मेकत्तु इरुळिन् नीङ्गिय-मेघों के कारण बने अन्धकार से छूटकर जो आया है; इन्तुविल्-उस इन्दु के समान; पौलिहिन्ऱु-शोभायमान; इरामन्-श्रीराम के; तैरुळुम्-साफ़; वार्-दीर्घ; कणै कूऱु अत्तिर्-बाण रूपी यम के सामने; आवि चैन्ऱु अत्त-जीव पहुँचा हो, ऐसा; अरितिन् अयत्तित्तन्-सायास पहुँचा । ५१८

उसके रथ में पचीस सुन्दर रूप से कटे (सजे) अयालों से भूषित अश्व जुते थे । उस पर आरुढ़ दूषण सायास श्रीराम के सामने, यम के सामने जानेवाले जीव के समान (अपने प्राण सौंपने के लिए) जा पहुँचा । श्रीराम मेघान्धकारनिवृत्त इन्दु के समान शोभायमान थे । ५१८

✽ शैन्ऱु	तेरैयुन्	जिलैयुडै	मलैयैन्त	तेरमेल्
निन्ऱु	तूडणन्	इन्ऱैयु	नेडियव	तोकुक्कि
नन्ऱु	नन्ऱुनिन्	तिलैयैन्	वरुळुरै	नयन्दान्
अैन्ऱु	कालत्तव्	वैय्यवन्	पहळिमून्	इय्दान् 519

नैट्यवन्-विक्रमी श्रीराम ने; चैन्ऱ तेरैयुम्-आगत रथ को; चिले उटे मल्ले
 अँत-धनुर्धर पर्वत के समान; तेर् मेल् निन्ऱ-रथ पर स्थित; तूटणन् तन्तैयुम्-दूषण
 को; नोक्कि-देखकर; निन् निले नन्ऱ नन्ऱ-तुम्हारा धैर्य अच्छा है, अच्छा है;
 अँत-ऐसा; अरुळ् उरै नयन्तान्-कृपा-वचन कहे; अँन्ऱ कालत्तु-जब उन्होंने यह
 कहा, तब; अ वैयावन्-उस दुराचारी ने; पकळि मुन्ऱ-शर तीन; अँयत्तान्-
 चलाये । ५१६

विक्रमी श्रीराम ने सामने आये रथ को और उस पर आरुढ़, धनुर्धर
 भूधर के समान दूषण को भी देखा । उन्होंने वाहवाही की— “तुम्हारा
 धैर्य धन्य है, धन्य है ।” जब वे कृपा के साथ यह वचन कह रहे थे, तभी
 उस दुराचारी दूषण ने तीन भयंकर शर लेकर उन पर चला दिये । ५१९

तूर	वट्टवैण्	डिशैहळैत्	तत्तित्तनि	शुमक्कुम्
पार	वैट्टिन्नो	डिरण्डिनि	लौन्नूपार्	पुरक्कल्
पेर	विट्टवन्	करिनुद	लोडैयिर्	पिड्डुगुम्
वीर	पट्टत्तिर्	पट्टन	विण्णवर्	वैरव 520

तूर वट्ट-दूर, मण्डलाकार; अँण् तिचैकळे-आठों दिशाओं को; तत्ति तत्ति
 चुमक्कुम्-अलग-अलग धारण करनेवाले; पार अँट्टिन् ओट्टु-बली अष्ट (दिगगजों)
 के साथ; इरण्डितिल् ओन्ऱ-और (शेष व कूर्म में) एक (शेष) अपनी पादुकाओं
 को; पार् पुरक्क-लोकभरणार्थ; पेर विट्टवन्-जिन्होंने अलग भेजा था, उन
 (श्रीराम) के; करि नुतल् ओटैयिल्-गज के भाल पर शोभनेवाले पट्ट के समान;
 पिड्डुक्कुम्-मनोरम रूप से विद्यमान; वीर पट्टत्तिल्-वीरोचित पट्टी पर; विण्णवर्
 वैरव-देवों को सिहरने देते हुए; पट्टन-(वे तीनों शर) लगे । ५२०

वे जाकर श्रीराम के भाल की वीरपट्टी पर लगे, जिसे देखकर
 देवगण सहम उठे । वह पट्टी गज के भाल पर सज्जित मुखपट्ट के समान
 शोभायमान थी । श्रीराम कौन थे ? वे स्वयं विष्णु भगवान थे, जिन्होंने
 अष्टदिगगजों के भूभार-वहन के कार्य में सहायता देने के लिए अपनी पादुकाओं
 को अपने से अलग करके भेजा था । वे पादुकाएँ शेषनाग के अवतार थीं,
 जो भूमि के भारवाही दो (शेष और कूर्म) में एक (माना जाता) है । ५२०

ॐ अँय्द	कालमुम्	वलियुनन्	इँननिनैन्	दिरामन्
शैय्द	शैयौळि	मुखवलन्	कडुङ्गणै	तैरिन्दान्
नौय्दि	नङ्गव	नौरिल्परित्	तेरुवड	नूडिक्
कैयिल्	वैञ्जिलै	यरुत्तौळिर्	कवशमुड्	गडिन्दान् 521

इरामन्-श्रीराम ने; अँय्त कालमुम्-(दूषण के) शर चलाने का काल; वलियुम्-
 और उसका वल; नन्ऱ अँत-श्लाघ्य, यह; नितैन्तु-समझकर; चैय्त चैय् ओळि-
 लाल (सुन्दर) उज्ज्वल; मुखवलन्-हँसी के साथ; कडुम् कणै तैरिन्तान्-कठोर एक
 अस्त्र चुनकर चलाया; नौयत्तिन्-मुगम रीति से (या जल्दी); अङ्कु-वहाँ; अवन्-
 उसके; नौरिल् परि-तीव्रगति अश्व के; तेर्-रथ को; पट्ट नूडि-तहस-तहस

करके; कैयिन् वेंम् चिले अरुत्तु—(उसके) हाथ में रहे धनुष को भी काटकर; ओळिर् कवचमुम्—चमकदार कवच को भी; कटिन्तान्—तोड़ दिया । ५२१

तीनों शर श्रीराम के सिर की पट्टी पर लगे । श्रीराम मुस्कराये । उन्होंने मन में सोचा कि वाह ! उसका शरप्रेषणकाल यानी उसके वाण की गति और उसका बल प्रशंसनीय है ! फिर श्रीराम ने एक भयावह वाण चुन लिया और उससे उसके रथ को और उसमें जुते तीव्रगामी अश्वों को ध्वस्त किया; उसके हाथ में रहे भयंकर धनु को तोड़ा और उसके कवच को भी नष्ट कर दिया । ५२१

ॐ तेव	रार्त्तुळ	मुनिवर्ह	डिशैर्तोळ्	जिलम्बुम्
ओविल्	वाळ्त्तुलि	कार्क्कडन्	मुळक्कैन्	वोङ्गक्
काव	डाविदु	वल्लैये	नीयैत्तक्	कणैयीन्
रेवि	तान्नव	नैयिरुडै	नैडुन्दलै	यिळुन्दान् 522

तेवर् आर्त्तु अँळ—देवों ने उठकर कोलाहल मचाया; मुनिवर्कळ्—मुनियों का; तिचै तौळम्—दिशा-दिशा में; चिलम्पुम्—कहा हुआ; ओवु इल्—निरन्तर; वाळ्त्तु ओलि—आशीर्वाद का स्वर; कार् कटल् मुळक्कु अँन—काले समुद्र के गर्जन के समान; ओङ्गक्—भर उठा; वल्लैयेल्—समर्थ हो तो; इतु का अटा नी—इसको बचा रे तू; अँत्त—कहकर; कणै औन्नु—एक वाण; एवितान्—चलाया; अवन्—उसने भी; अँयिरुडै नैडुम् तलै—(भयंकर वक्र) दाँतों से युक्त अपना बड़ा सिर; इळुन्तान्—गँवाया । ५२२

श्रीराम ने फिर एक अस्त्र छोड़ा । छोड़ते-छोड़ते उन्होंने ललकारा कि रे दुष्ट ! हो सके तो तू बचा ले इसे । दूषण बेचारा क्या करता ? उसने अपना सिर गँवाया । तब देव हर्षरव मचा उठे । चारों ओर ऋषियों ने साधुवाद और आशीर्वाद किया, जिसका स्वर काले समुद्र के गर्जन के समान सब ओर भर उठा । ५२२

ॐ तम्बितलै	यर्त्तुपडि	युन्दय	रदन्शेय्
अम्बुपडै	यैत्तुणि	पडुत्तडु	मरिन्दान्
वेंम्बुपडै	विर्क्कैविश	यक्करन्	वैहुण्डान्
कौम्बुतलै	कट्टिय	कौलैक्करि	कडुप्पान् 523

कौम्पु तलै कट्टिय—जिसके दाँत, सिर जितना ऊँचा उगे हुए थे; कौलै करि—उस भयंकर गज की; कडुप्पान्—समता करनेवाला; वेंम्पु पटै—भयंकर हथियार; विल्—धनुष को; कै—रखनेवाले हाथ का; विचय करन्—विजयी खर; तम्पि तलै अर्त्तु पटियुम्—भाई (दूषण) के सिर के कटने का प्रकार; तयरतन् चैय्—दशरथ के पुत्र के; अम्पु—वाणों का; पटैयै तुणि पटुत्तुतुम्—उसकी सेना का नाश करना; अर्त्तिन्तान्—जानकर; वैकुण्डान्—नाराज हुआ । ५२३

विजयी खर को यह समाचार मिला । खर ऐसे खूनी गज के समान

भयंकर आकार का था, जिसके दाँतों के छोर सिर तक ऊँचे उगे थे । वह अपने हाथों में बड़े ही घातक हथियार और धनुष रखता था । उसके भाई दूषण का सिर कैसे कटा ? दशरथसुत, दाशरथी श्रीराम के बाणों ने राक्षस-सेना को कैसे हत कर मिटाया ? —यह उसने सुना । उसे अपार क्रोध हुआ । ५२३

ॐ अन्दहनु	मुट्किट	वरक्करहड	लोडुम्
शिन्दुरम्	वयप्पुरवि	तेर्दिशै	परप्पि
इन्दुवै	वळैक्कुमैळि	लिक्कुल	मैन्तत्तान्
वन्दुवरि	विर्कैमद	यानैयै	वळैत्तान् 524

अन्तकत्तुम् उट्किट-यम को भी भयभीत करते हुए; अरक्कर् कटल् ओट्टुम्-राक्षसों की सेना के सागर के साथ; चिन्तुरम्-गजों; वय पुरवि-बलवान अश्वों; तेर्-रथों को; तिच्चै परप्पि-चारों दिशाओं में वितरित करके; इन्दुवै वळैक्कुम्-इन्दु को घेरनेवाले; अळिलि कुलम् अँत-मेघ-समूह के समान; वरि विल्कै-बन्धन-युक्त धनुर्धर-हस्त; मत यातैयै-मत्तगज-सम (श्रीराम) को; तान् वन्दु-स्वयं आकर; वळैत्तान्-घेर लिया (खर ने) । ५२४

वह तुरन्त उठकर अपनी सेना के साथ श्रीराम के पास आया और उसने अपनी सेना के साथ उन्हें घेर लिया । उस सेना में पदाति वीरों का दल सागर के समान था । उसमें गज, बलवान अश्व, रथ आदि की सेनाएँ भी थीं । वह सेना चन्द्र को घेर आनेवाले मेघमण्डलों के समान चारों ओर फैली रही । खर ने अपने दल-बल सहित धनुर्धर, मत्तगज-सम श्रीराम को घेरा । ५२४

ॐ अडङ्गलिन्	कौडुन्दौळि	लरक्करव्	वत्तन्दन्
पडङ्गिळि	वुरप्पडि	पडप्पल	विदप्पोर्
कडङ्गलुळ्	तडङ्गळिरु	तेर्परि	कडाविन्
तौडङ्गितर्	नैडुन्दहैयुम्	वैङ्गणै	तुरन्दान् 525

अटङ्कल् इल्-अदम्य; कौटुम् तौळिल्-दुराचारी; अरक्कर्-राक्षसों ने; अ अत्तन्तन्-उस अनन्तनाग के; पटम् किळिवु उर्-फनों को फाड़ते हुए; पटि पट-भूमि को मेटते हुए; पल वित-विविध; कटम् कलुळ्-मद बहानेवाले; तटम् कळिड-बड़े हाथियों; तेर्-रथों और; परि-अश्वों को; कटावि-चलाते हुए; पोर् तौटङ्कितर्-युद्ध आरम्भ किया; नैटुम् तक्कैयुम्-विक्रमी प्रभु ने भी; वैम् कणै-भयंकर अस्त्र; तुरन्तान्-चलाये । ५२५

वे अदम्य दुराचारी राक्षस घोर युद्ध करने लगे । भूमि का धारण करनेवाले आदिशेषनाग का फन ही फट गया; भूमि भी ध्वस्त हो गयी ! वे राक्षस विविध बड़े-बड़े गज हाँकते आये । वे गज अपने गालों पर

मदनीर वहा रहे थे । वीर अश्वों के साथ रथ चलाते आये । विक्रमी श्रीराम ने बलवान अस्त्र छोड़े । ५२५

तुडित्तन	कडक्करि	तुडित्तन	परित्तेर्
तुडित्तन	मुडित्तलै	तुडित्तन	तौडित्तोळ्
तुडित्तन	मणिककुडर्	तुडित्तन	तशैत्तोल्
तुडित्तन	कळ्ळुरुणै	तुडित्तन	विडित्तोळ् 526

कटम् करि तुडित्तन—(उनके लगने से) मत्तगज तड़पे; परि तेर्—अश्व-जुते रथ; तुडित्तन—उछले; मुटि तलै—किरीटधारी सिर; तुडित्तन—छटपटाये; तौडि तोळ्—बलवन्धुषित कन्धे; तुडित्तन—कटकर छटपटाये; मणि कुडर्—उनकी छोटी आँतें; तुडित्तन—फड़कीं; तचै तोल् तुडित्तन—मांससहित खालें फड़कीं; कळल् तुणै—पैरों के जोड़े; तुडित्तन—फड़के; इटम् तोळ्—वायें हाथ । ५२६

मत्तगज तड़पकर गिरे । रथ उछलकर गिरे और टूटे । अश्व छटपटाते हुए गिरे । किरीटधारी राक्षसों के सिर तड़पे । बलवधारी कन्धे लुढ़के । राक्षसों की छोटी आँतें फड़कीं । दोनों पैर फड़फड़ाये । वायें हाथ फड़के । (तुडित्तन = शरीर के अंग जब शरीर से कटकर अलग होते हैं, तब कुछ देर तक उछलते-गिरते, तड़पते हैं और छटपटाते हैं । या जीवित शरीर के अंगों का फड़कना भी कहते हैं ।) । ५२६

ॐ वाळिन्वत्तम्	वेलिन्वत्तम्	वार्शिलै	वत्तन्दिण्
तोळिन्वत्त	मैन्निवै	तुवन्नुनिर्	दप्पेर्
आळिन्वत्त	निन्नुदन्	यम्बिन्वत्त	मैन्नुम्
कोळिन्	मळैवन्गुळ्	वित्तिङ्कुडै	पडुत्तान् 527

वाळिन् वत्तम्—तलवारों का कानन (समूह); वेलिन् वत्तम्—बाँछियों का जंगल; वार् चिलै वत्तम्—दीर्घ धनुषों का वन; तिण् तोळिन् वत्तम्—सुदृढ़ कन्धों का समूह; अन्नवै तुवन्नु—वे सब खूब मिले रहे (जिसमें), उस; निरुत्त पेर् आळिन् वत्तम्—राक्षसों के वीरों का जंगल (अनीक); निन्नुदन्—जो सामने खड़ा था, उसे; अम्पिन् वत्तम् मैन्नुम्—शरों का वन रूपी; कोळिन्—बलवान; मळैयिन्—वर्षा द्वारा; कुळुवित्तिल् कुडैपटुत्तान्—दल के दल श्रीराम ने काट गिराये । ५२७

युद्ध के मैदान में तलवारों की बहुलता थी । भालों का जंगल था । लम्बे धनुषों की भरमार थी । सबल कन्धों की विपुल भीड़ थी । इनसे भरी राक्षसों के पैदल वीरों की विशाल सेना थी । उसको श्रीराम ने शरों की वर्षा से ध्वस्त कर दिया । (तमिळ में वनम् = वन, कानन या जंगल किसी चीज़ की भीड़ या बड़े वृन्द को द्योतित करता है ।) । ५२७

तानुरुवु कौण्डदरु मन्दैरि शरन्दान्, मीनुरुवु मेरुवै विरैन्दुरुवु मेलाम्
वानुरुवु मण्णुरुवुम् वाळुरुवि वन्दार्, ऊनुरुवु मैन्नुमि दुणरुत्तवु मुरित्तो 528

तान् उरुवु कौण्ट तरुमम्-धर्मरूप श्रीराम के; तैरि चरम् तान्-चुने हुए शर; मीन् उरुवुम्-नक्षत्रमण्डल को भेदकर जायेंगे; मेरुवै विरेन्तु उरुवुम्-मेरु को तुरन्त भेद जायेंगे; मेरु आन् वान् उरुवुम्-ऊपर के आकाश के आर-पार जायेंगे; मण् उरुवुम्-भूमि को भी विद्ध कर जायेंगे; वाळ् उरुवि वन्तुत्त-तलवार लेकर आनेवाले; ऊन् उरुवुम्-राक्षसों के शरीरों को निफर जायेंगे; अन्तुम् इतु-यह बात; उणर्त्तवुम् उरित्तो-कहने अर्ह है क्या । ५२८

धर्मावतार श्रीराम के चुनकर प्रेषित शर तारामण्डलों को, मेरु को, आकाश को और भूमि को भी अनायास भेद चल सकते हैं । फिर तलवार-धारी राक्षसों के शरीरों को निफर सकते हैं —यह कहना क्या उनकी प्रशंसा करना होगा क्या ? । ५२८

अन्डिडर्	विळैत्तवर्	कुलङ्गळी	डडङ्गच्
चैन्नलै	वुरुम्बडि	तैरिन्दुहणै	शिनदा
मन्डिडै	नलिन्दुवलि	योर्हळिळि	योरेक्
कौन्डन्नर्	कवर्न्दपोरु	ळिड्कडिडु	कौन्डान् 529

अन्ड-तव; इटर् विळैत्तवर्-कण्ट देनेवाले राक्षसों को; कुलङ्कळ् ओट्टु अटङ्क-कुल के साथ एक दम; चैन्ड उलैवु उरुम्पटि-जाकर मिटाते हुए; तैरिन्दु कणै चिन्ता-श्रीराम ने चुनकर अस्त्र छोड़े तो; मन्ड इटै-न्यायालय में; वलियोर्-शक्तिमन्त; ओळियोरे-दोनों को; नलिन्दु-त्रास देकर; कौन्डवर्-मारकर; कवर्न्द पोर्हळिल्-जो धन ग्रस लेते है, उसकी (मिटने की) से भी; कटितु-अधिक तीव्र गति से; कौन्डान्-मारा । ५२९

श्रीराम ने अस्त्र चुनकर उन राक्षसों पर चलाया जो इनको कण्ट देने आये थे और इस सकल्प के साथ चलाया कि राक्षसों का उनके कुलों के साथ नाश हो । समझिए कि कोई सबल आदमी गरीब आदमी को सताता है । न्यायालय में भी उसके विरुद्ध झूठा मामला चलाता है । अन्त में उसको मारकर उससे धन ग्रस लेता है । तो वह धन नहीं टिकता । वह बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है । उससे भी अधिक तेजी से राक्षसों की सेना को श्रीराम के वाणों ने मिटा दिया । ५२९

❀ कडुङ्गर	नैन्पैयर्	पडैत्त	कळल्वीरन्
अडङ्गलु	मरक्करळि	वुड्डिड	वळन्डान्
ओडुङ्गलि	निणक्कुरुदि	योदमदि	नुळ्ळान्
नैडुङ्गडलित्	मन्दर	मैन्त्तमिय	निन्डान् 530

ओडुङ्कल् इल्-अक्षय; निण कुरुति ओतम् अतिल-मांस और रक्त के सागर में; उळ्ळान्-जो रहा; नैडुम् कटलित्-वड़े (क्षीर-) सागर में; मन्तरम्-मन्दरपर्वत; अँत्त-के समान; तमियन् निन्डान्-एकाकी जो खड़ा रहा; कटुम् करन् अँत्त प्यैर् पटैत्त-प्रखर खर नामक विद्यात; कळल् वीरन्-पायलधारी वीर; अरक्कर

अटङ्कलुम्-सारे राक्षसों के; अळिवु उड्डित-मर-मिटने पर; अळन्नान्-कुद्ध हुआ । ५३०

सेना-विहीन खर अक्षय मांस और रक्त के सागर के बीच में क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरु के समान खड़ा रहा । प्रखर और खर के नाम से विख्यात उस पायलधारी वीर ने देखा कि सारी सेना मिट गयी है । उसे अपार क्रोध हुआ । ५३०

✽ शङ्गणैरि	शिन्दवरि	विष्पहळि	शिन्दप्
पौङ्गुहुरु	दिप्पुणरि	युट्पहैयु	नैज्जन्
कङ्गमौडु	काहमिडै	यक्कडलि	त्तोडुम्
वङ्गमैन	लायदौर	तेरिन्मिशै	वन्दान् 531

चैम् कण्-लाल आँखों से; और चिन्त-अंगारे से उगलते हुए; विल् पकळि चिन्त-धनुष से बाण छोड़ते हुए; पौङ्कु कुरुति पुणरि-उमड़नेवाले रक्त को सागर और; उळ् पुकैयुम् नैज्जन्-धुआँ जिसमें था, ऐसे मन के साथ; कङ्कम् ओटु काकम् मिटैय-कंक के साथ कौए भी मिल आये; कटलिन् ओटुम् वङ्कम् अँतल् आयतु-समुद्र में चलनेवाले पोतोपम; और तेरिन् मिचै-एक रथ पर; वन्तान्-आया । ५३१

उसकी लाल-लाल आँखों से अंगारे छूटे । धनुष ने शर छोड़े । रक्त सागर-सा उसके मन में उमग रहा था । उसके मध्य धुआँ उठ रहा था । खर समुद्र में चलनेवाले पोत के समान एक बड़े रथ पर सवार हो आया । उसके रथ के साथ कंक और काग उड़ते आ रहे थे । ५३१

✽ शङ्गुत्तिरुदि	यिष्पुवनि	तीयवैळु	तीयिन्
मडत्तिन्वयि	रत्तौरवन्	वन्दणुहु	मुन्दैक्
कङ्गुत्तमणि	कण्डर्हड	वुट्चिलै	करत्ताल्
इङ्गुत्तवन्नुम्	वैङ्गणै	तेरिन्दत्त	तेरिन्दान् 532

इङ्गुत्तियिल्-युगान्त में; पुवन्ति तीय-भुवनों को जलाते हुए; चैङ्गुत्तु अँळु-प्रचण्डता के साथ उठनेवाली; तीयिन्-आग के समान; मडत्तिन् वयिरत्तु औरवन्-वीरता और शत्रुता में अद्वितीय (खर); वन्नु अणुक्कुम् मुन्तै-आकर नियराये, इसके पहले ही; कङ्गुत्त मणि कण्टर्-नीलकण्ठ श्रीशिवजी के; कटवुळ् चिलै-दिव्य (व्यवक नामक) धनु के; इङ्गुत्तवन्नुम्-भञ्जक ने भी; वैम् कणै तेरिन्तत्तन्-तापक अस्त्र लेकर; अँतिरिन्तान्-सामना किया । ५३२

खर भुवनों का अन्त करनेवाली युगान्त अग्नि के समान क्रूरता और वैर में अद्वितीय था । उसके अपने पास पहुँचने के पूर्व ही नीलकण्ठ शिवजी के धनु के भञ्जक श्रीराम ने बाण चुन लिये । फिर वे युद्धसन्नद्ध हो उसके सामने आये । ५३२

तीयुरुव	काल्विशैय	शैव्वियन्	वैव्वाय्
आयिरम्	वडिक्कणै	यरक्कर्पदि	यैय्दान्
तीयुरुव	काल्विशैय	शैव्वियन्	वैव्वाय्
आयिरम्	वडिक्कणै	यिरामन्	मरुत्तान् 533

ती उरुव-अग्नि के आकार के; काल विचैय-वायु की-सी गति के; चैव्वि अन्न-श्रेष्ठ; वैम् वाय्-भयंकर रूप से तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै-सहस्र तीक्ष्ण शर; अरक्कर् पति-राक्षसपति ने; अय्त्तान्-चलाये; इरामन्-श्रीराम ने भी; ती उरुव-अग्नि रूपी; काल विचैय-पवनगति; चैव्वियन्-श्रेष्ठ; वैम् वाय्-तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै-सहस्र तीक्ष्ण बाण; अरुत्तान्-चलाकर उनको काट दिया । ५३३

खर ने एक सहस्र शर चलाये । वे शर ज्वलन्त अग्नि के आकार के थे । पवनसम तेज चलनेवाले और तीक्ष्णमुखी थे । श्रीराम ने वैसे ही अग्नि रूपी, पवनगति, श्रेष्ठ और तीक्ष्णमुखी, एक सहस्र शर छोड़े और खर के अस्त्रों को काटकर मिटा दिया । ५३३

ऊळियैरि	यिर्कोडिय	पाय्पहळि	यौन्वान्
एळुलहि	नुक्कुमौरु	नायहन्	मैय्दान्
शूळ्शुडर्	वडिक्कणै	यवर्इर्दिर्	तौडुत्ते
आळिवरि	विर्करन्	मन्नवै	यरुत्तान् 534

ऊळि अँरियिल् कौटिय-युगान्त की अग्नि से भी अधिक क्रूर; पाय् पकळि औत्तान्-तेज चलनेवाले नौ अस्त्र; एळ् उलकितुक्कुम् और नायकत्तुन्-सातों लोकों के श्रेष्ठ नायक श्रीराम ने; अय्त्तान्-खर पर चलाये; आळि-मण्डलाकार; वरि विल्-बन्धनयुक्त धनु के; करत्तुम्-खर ने भी; अवर्इ अँतिर्-उनके आगे; चुटर् चळ्-ज्वलन्त; वटि कणै-तीक्ष्ण बाण; तौडुत्ते-चलाकर; अन्नवै-उनको; अरुत्तान्-काट दिया । ५३४

फिर सर्वलोकनायक श्रीराम ने प्रलयकालीन अग्नि के समान तापक और तेज चलनेवाले सात बाण खर पर चलाये । खूब मण्डलाकार झुके धनुष के धारक खर ने भी उनके विरुद्ध ज्वलन्त और तीक्ष्ण अस्त्र भेजकर उन्हें काट दिया । ५३४

ऊळ्विनै	मायमवर्	कल्वियिन्	विळैत्तान्
वळ्ळलुरु	वैप्पहळि	मारियिन्	मरैत्तान्
उळ्ळमुलै	वुर्उमर	रोडिन्	रौळित्तार्
वैळ्ळयि	इरिळ्पिर्इळ	वीरन्नुम्	वैहुण्डान् 535

कल्वियिन्-अपनी विद्या में; ऊळ्विनै-वंचनापूर्ण; माय अमर्-मायायुद्ध; विळैत्तान्-करके; वळ्ळल् उरुवै-उदार प्रभु श्रीराम के शरीर को; पकळि मारियिन्-शर-वर्षा से; मरैत्तान्-छिपा दिया (खर ने); अमरर्-देव; उळ्ळम् उळ्ळु उर्इ-

मन में व्याकुल होकर; ओदित्-भागे और; ओलित्-छिप गये; वीरत्तुम्-वीर श्रीराम ने; वैष्ण्व-श्वेत दाँतों से; इतल्ल-अधर को दबाते हुए; वैकुण्ठान्-कोप किया । ५३५

खर माया-विद्या में निपुण था । उसने कपटपूर्ण मायायुद्ध करके श्रीराम के श्रीशरीर को शर-वर्षा से छिपा दिया । देव इसको देखकर व्याकुल हुए और दूर भागकर छिप गये । वीर श्रीराम ने भी दाँत पीसते हुए क्रोध का अवलम्बन किया । ५३५

❖ मुटिप्पे निन्ऱोर् मोंय्हणै यालैन्नत्, तौडुत्तु निन्ऱुयर् तोळुर् वाङ्गित्तान्
पिटित्त तिण्शिलै पेरहल् वानिडै, इडिप्पि न्नोशै पडक्कडि दिऱ्ऱुदे 536

इन्ऱ-अभी; ओर् मोंय् कणैयाल्-एक सारयुक्त वाण से; मुटिप्पेन् अन्त-समाप्त कर दूंगा, यह कहते हुए; तौडुत्तु निन्ऱ-संधान करके; उयर् तोळ् उऱ्-उन्नत कन्धे तक; वाङ्गित्तान्-डोर खींचा; पिटित्त तिण् चिलै-उनसे प्रस्त बलवान धनुष; पेर् अकल् वान् इटै-अति विस्तृत आकाश में; इडिप्पिन् ओचै-वज्र का-सानाद; पट-उठाते हुए; कटितु इऱ्ऱु-शीघ्र टूट गया । ५३६

श्रीराम ने कहा कि अब एक ही सारयुक्त वाण चलाकर खर का काम तमाम कर दूंगा । उन्होंने शर संधान कर डोर को ऐसा खींचा कि धनुष का छोर उनके कन्धे को स्पर्श करे । बस, वह बलवान धनुष आकाश के वज्र के समान उच्च स्वर निकालते हुए उसी दम भग्न हो गया । ५३६

वैऱ्ऱि कूऱिय वान्नवर् वीरन्विल्, इऱ्ऱ पोदु तुणुक्कमुऱ् रेङ्गित्तार्
मऱ्ऱु वैञ्जिलै यिन्मै मन्नक्कोळा, अऱ्ऱ दालैम् वलियेन्न वञ्जित्तार् 537

वैऱ्ऱि कूऱिय वान्नवर्-(श्रीराम की) विजय के प्रशंसक देव; वीरन् विल् इऱ्ऱ पोदु-वीर श्रीराम के धनुष के टूटने पर; तुणुक्कम् उऱ्ऱु-डरकर; एङ्गित्तार्-दुखी हुए; मऱ्ऱुम् वैम् चिलै इन्मै-अन्य किसी धनुष का अभाव; मन्नम् कोळा-मन में सोचकर; अम् वलि अऱ्ऱु-हमारा बल मिटा; अन्त-ऐसा; अञ्जित्तार्-भयभीत हुए । ५३७

देव श्रीराम की विजय की प्रशंसा करते रहे । अब उन्होंने देखा कि श्रीवीरराघव का धनुष टूट गया है । कोई दूसरा धनुष नहीं है । वे निस्सहाय खड़े हैं । उन्हें संशय और डर हो गया कि अब हमारा बल गया ! । ५३७

❖ अन्तु मात्तिरत् तेन्दिय कार्मुहम्, चिन्त मँन्ऱन् दन्निमैयुज् जिन्दियान्
मन्नर् मन्नवन् शैम्मन् मरविनाल्, पिन्नु उत्तत्त पेरुङ्गर नोट्टिनान् 538

अन्तुम् मात्तिरत्तु-उनके ऐसा कहते समय; मन्नर् मन्नवन्-राजाधिराज के; चैम्मन्-पुत्र श्रीराम ने; एन्तिय कार्मुकम्-अपना गृहीत कार्मुक; चिन्तम् अन्ऱम्-टूट गया, इसकी और; तन्निमैयुम्-अपनी (एकाकी) निस्सहाय स्थिति की;

चिन्तियान्-चिन्ता न करके; मरपिनाल्-पूर्व संकेत के अनुसार; तन् पेरम् करम्-अपना बड़ा हाथ; पिन् उड-पीछे की तरफ़; नोट्टितान्-बढ़ाया । ५३८

देव इस प्रकार कह ही रहे थे कि उधर श्रीराम ने एक अद्भुत कार्य किया । दाशरथी ने किंचित भी चिन्ता नहीं की कि मेरा कोदण्ड टूट गया है और मैं विना हथियार के एकाकी खड़ा हूँ । उन्होंने अपना दीर्घ हाथ पीछे की ओर बढ़ाया । उसका पूर्वसंकेत का कोई अर्थ था । ५३८

❀ कण्डु निन्ऱु कस्तुणर्न् दानेन, अण्डर् नादन् उडक्कैयि तत्तुण्
पण्डु पोर्म्मळु वाळियैप् पण्विनाल्, कौण्ड विल्लै वरुणन् कौडुत्ततन् 539

कण्डु निन्ऱु-उस स्थिति को देखते हुए खड़ा; कस्तु उणर्न्तान् अन्न-उनका अभिप्राय समझ गया हो ऐसा; पण्डु-पहले; पोर् मळु आळिये-युद्ध में परशु का प्रयोग करनेवाले परशुराम से; पण्विनाल्-अपने सामर्थ्य से; कौण्ड-गृहीत; विल्लै-धनु को; अत्तुणै-तब; वरुणन् तटक्कैयि कौडुत्ततन्-वरुण ने श्रीराम के विशाल हाथ में दिया । ५३९

वरुण यह सब देखते हुए पीछे खड़े थे । पहले जब श्रीराम ने युद्धोपयोगी परशु के धारक परशुराम को हराया था और अपने सामर्थ्य से उनका धनुष ले लिया था, तब उन्होंने वह कार्मुक वरुण के पास दे रखा था । वरुण ने श्रीराम का मन जान लिया और वह धनु श्रीराम के हाथ में धर दिया । ५३९

❀ कौडुत्त विल्लैयक् कौण्ड निऱुत्तितान्
अडुत्तु वाङ्गि वलङ्गौण् डिडक्कैयिर्
पिटित्त पोदु नैऱिपिळैत् तार्क्कैलाम्
तुडित्त वालिडक् कण्णोडुन् दोळ्हळे 540

कौडुत्त विल्लै-वरुण-दत्त धनु को; अ कौण्डल् निऱुत्तितान्-उन मेघश्याम ने; अडुत्तु-लेकर; वलम् कौण्डु वाङ्कि-जोर से झुकाकर; इट कयिल् पिटित्त पोतु-जब अपने बायें हाथ में धरा, तब; नैऱि पिळैत्तार्क्कु अल्लाम्-दुराचारी सभी राक्षसों के; इटम् कण् ओटु तोळ्कळ्-बाई आँखें और उनके साथ बाईं भुजाएँ; तुडित्त-फड़क उठीं । ५४०

मेघवर्ण श्रीराम ने वरुण-दत्त धनु को हाथ में लिया । उसको झुकाकर अपने बायें हाथ में धरा तो दुराचारी सभी राक्षसों की बायीं आँखें बायीं भुजाओं के साथ फड़क उठीं । ५४०

❀ एऱ्ऱि नाणिमै यामुन् नैडुत्तदु, कूऱ्ऱि नारुङ् गुनिक्कक् कुनित्तैदिर्
आऱ्ऱि नानव नाळियन् देऱ्शरम्, नूऱ्ऱि नानुण् पौडिपड नूऱिनान् 541

अनु अडुत्तु-उस चाप को लेकर; इमैया मुन्-पलक मारती देर से पहले; नाण् एऱ्ऱि-प्रत्यंचा चढ़ाकर, कूऱ्ऱित्ताक् कुनित्क्क-यमदेव को भी नाचने देते हुए;

कुनित्तु-उसको झुकाकर; अँतिर् आरुत्तान् अवन्-सामने लड़ने आगत उस (खर) के; आळि अम् तेर्-चक्रसहित सुन्दर रथ को; चरम् नूरुत्तान्-सौ शरों से; नुण् पीटि पट-बारीक चूर्ण करते हुए; नूरुत्तान्-मिट्टा दिया । ५४१

श्रीराम ने पलक मारने के समय के अन्दर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायी । शर संधान करके धनु को झुकाया । यम को आनन्द-नृत्य-मग्न करते हुए सौ अस्त्र चलाये । उनके सामने आये खर का सुन्दर पहियेदार रथ चूर-चूर हो गया । रथ ध्वस्त हो गया । ५४१

❀ अँन्दि रत्तडन् देरिळन् दानिळिन्, दन्द् रत्तिडै यार्त्तैळुन् दम्बैलाम्
सुन्द रत्तति विल्लिदन् रोळैनुम्, मन्द रत्तिन् मळैयिन् वळङ्गितान् 542

अँन्तिर तटम् तेर्-यन्त्रचालित विशाल रथ; इळन्तान्-खोकर; इळिन्तु- (खर) उतरकर; आरुत्तु-नारे लगाते हुए; अन्तरत्तु इटै-अन्तरिक्ष में; अँळुन्तु-उठ-जाकर; अम्पु अँलाम्-अपने सारे बाण; चुन्तर् तनि विल्लि तन्-सुन्दर कोदण्डपाणी के; तोळ् अँनुम्-भुजाओं रूपी; मन्तरत्तिल्-मन्दरपर्वत पर; मळैयिन्-वर्षा के समान; वळङ्गितान्-बरसाया । ५४२

खर का रथ यन्त्र-चालित था । वह नष्ट हो गया । खर उतरा और अन्तरिक्ष में खड़ा हो गया । भयंकर गर्जन करते हुए उसने अपने पास रहे सभी अस्त्रों को अद्वितीय सुन्दर कोदण्डपाणी पर वर्षा के समान बरसा दिया । ५४२

❀ ताङ्गि निन्ऱ तयरद रामनुन्, तूङ्गु तूणि यिडैच्चुडु शैज्जरम्
वाङ्गु हिन्ऱ वलक्कैयै वाळियाल्, वोङ्गु तोळैडुम् पारिडै वीळ्त्तितान् 543

ताङ्कि निन्ऱ-उन अस्त्रों का सामना करते हुए जो खड़े रहे, उन; तयरतरामनुन्-दशरथ के पुत्र, श्रीराम ने भी; तूङ्कु तूणियिटै-लटकनेवाले तूणीर में से; चुटु चैम् चरम्-तापक और श्रेष्ठ बाण; वाङ्कुकिन्ऱ-लेनेवाले; वल क्यै-दक्षिण हस्त को; तोळ् ओटु-कन्धे के साथ; पार् इटै-भूमि पर; वीळ्त्तितान्-काटकर गिरा दिया । ५४३

श्रीराम ने उनको धैर्य के साथ धारण किया । फिर उन्होंने खर के उस हाथ को भुजमूल से काटकर गिराया जो पीठ पर बँधे तूणीर से अस्त्र ले रहा था । ५४३

❀ वलक्कै	वीळ्दलु	मरुक्कै	याल्वैरि
उलक्कै	वान्त	तुरुम्न	वोच्चिनाल्
इलक्कु	वर्कुमुन्	वन्द	विरामनुम्
विलक्कि	नानौर	वैङ्गदिर	वाळियाल् 544

वलम् कै-दक्षिण हस्त के; वीळ्दलुम्-अलग हो गिरने पर; मरुक्कै-दक्षिण-हस्त से; वैरि उलक्कै-विजयदायक मूसल को; वान्तु उरुम् अँत-आकाश

में वज्र के समान; ओच्चिनात्—(खर ने श्रीराम पर) फेंका; इलक्कुवड्कु मुन् वन्त इरामत्तुम्—लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने भी; और वैम् कतिर् वाळियाल्—एक भयकर ज्वलन्त वाण से; विलक्किन्नान्—उसको रोका । ५४४

खर का दक्षिण हस्त कटकर गिर गया । तो उसने वायें हाथ से एक विजयदायक मूसल उठाकर आकाश के वज्र के समान श्रीराम पर फेंका । लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने जाज्वल्यमान और संतापक एक अस्त्र से उसको बीच में रोक दिया । ५४४

❖ विराव रङ्गडु वैळ्ळैयि रिड्डपिन्, अराव लुन्नु तनैयव त्ताड्लान् मराम रङ्गैयिन् वाङ्गि वन्दैय्दिनान्, इराम नङ्गोर् तनिक्कणै येविनान् 545

अरा—एक सर्प; कट्टु विरा वरु—विप से पूरित रहनेवाले; वैळ्ळैयि—श्वेत दाँतों के; इड्ड पिन्—नष्ट हो जाने के बाद; अळुन्नु अन्नैयवन्—जैसे क्रुद्ध होता है, वैसा क्रुद्ध; ओड्डलान्—शक्तिशाली (खर); मरामरम्—सालवृक्ष; कैयिल् वाङ्कि वन्तु—अपने हाथ में ले आकर; अय्यित्तान्—पहुँचा; इरामन्—श्रीराम ने; अङ्कु—वहाँ; ओर् तति—एक अद्वितीय; कणै—वाण; एविनान्—चलाया । ५४५

खर उस सर्प के समान विफर उठा, जिसका विपैला श्वेत दाँत उखाड़ लिया गया हो । उस पराक्रमी खर ने एक सालवृक्ष ले लिया । उसके साथ जब वह लड़ने आया तो श्रीराम ने अप्रमेय एक शर छोड़ा । ५४५

❖ वरम् रक्कन् पटैत्तलिन् मायैयिन्, उरमुडैत् तन्मै यालुल हेळ्ळैयुम् परमु इत्तिय पावत्ति ताल्वलक्, करम् तक्करन् कण्डमुड्डानरो 546

अरक्कन्—(रावण) राक्षस की; वरम् पटैत्तलिन्—वर-प्राप्ति से; मायैयिन्—बचाना से; उरम् उटै तन्मैयाल्—वलवान होने से; उलकु एळ्ळैयुम्—सातों लोकों की; परम् उड्डैत्तिय—बहुत द्रस्त करनेवाले; पावत्तिताल्—पापकृत्यों से; वलम् करम् अँत—दाहिने हाथ के समान; करन्—खर; कण्डम् उड्डान्—खण्डित हुआ । ५४६

खर रावण का दाहिना हाथ था । अब वह मर गया । यह उसी रावण के किए पाप का फल था । रावण को वर प्राप्त थे और वह मायावी राक्षस था । वर के वल पर उसने अपने कपटी स्वभाव के कारण सातों लोकों पर सितम ढाया । उसका ही फल खर की मौत था । ५४६

❖ आर्त्तु लुन्दन राडिन्नर् पाडिन्नर्, तूर्त्तु मैन्दन्नर् वात्तवर् तूय्मलर् तीर्त्तु त्तुम्बोर्लिन् दान्गदि रोन्डिशै, पोर्त्तु मैन्बनि पोक्किय पोलवे 547

वात्तवर्—सुरलोग; आर्त्तु अँलुन्नतन्नर्—हर्षरव कर उठे; आटितर् पाटितर्—नाचे-गाये; तूय् मलर्—पवित्र फूल; तूर्त्तु अमैन्नतन्नर्—वरसाये और विश्रब्ध खड़े रहे; तीर्त्तुत्तुम्—तीर्थ श्रीराम भी; कतिरोन्—सूर्य; तिचै पोर्त्तु—दिशाओं को ढँके रहे; मैन् पनि पोक्कियतु—नरम कुहरे को दूर कर शोभित रहे; अँन्न—जैसे; पौल्लिन्नान्—प्रभावान बने रहे । ५४७

खर की मृत्यु पर देव आनन्द का कोलाहल कर उठे। वे नाचे और गाये। पवित्र कल्पसुमन बरसाकर वे प्रसन्नचित्त खड़े रहे। तीर्थ श्रीराम भी दिशाओं में भरे कुहरे को दूर कर शोभनेवाले सूर्यदेव के समान प्रभावान दिखे रहे। ५४७

❖ मुनिवर् वन्दु मुडैमुडै मीयप्पुड, इत्तिय शिन्दै यिरामनु मेहितान्
अत्तिह वैम्बजमत् तारुयिर् पोहत्तान्, तत्तिय रुन्द वुडलन् तैयल्बाल् 548

मुनिवर् मुडै मुडै वन्दु-मुनिगण बारी-बारी से आये और; मीयप्पु उड-घरे खड़े रहे; इत्तिय चिन्तै-प्रसन्नचित्त; इरामतुम्-श्रीराम भी; अत्तिक वैम् चमतु-राक्षस-सेना के साथ कठोर युद्ध में; तन् आर् उयिर् पोक-अपने प्यारे प्राणों को भेजकर; तत्ति इरुन्त-अलग रहे; उटल् तान् अन्त-शरीर ही के समान जो रहीं; तैयल् पाल्-उन देवी सीताजी के पास; एकितान्-पधारे। ५४८

ऋषियों ने दलों में आकर श्रीराम को घेर लिया। तब श्रीराम वहाँ से चले और देवी सीता के पास पधारे। देवी सीता निष्प्राण शरीर के समान थीं, क्योंकि उनके प्यारे प्राण राक्षसों के साथ कठोर युद्ध में चले गये थे। ५४८

❖ विण्णि नीड्गिय वैय्यवर् मेत्तियिल्, पुण्णि नीरुम् पौडिहळुम् बौयुह
अण्णल् वीरनैत् तम्बियु मन्तमुम्, कण्णि नीरिनिड् पादड् गळुवित्तार् 549

विण्णिन् नीड्किय-(वीरों के प्राप्य) स्वर्ग में जो गये; वैय्यवर्-उन आततायी राक्षसों के; मेत्तियिल्-शरीर पर; पुण्णिन् नीरुम्-व्रणों से निकला रक्त-जल और; पौडिहळुम्-धूलि; पोय् उक्-पोंछते हुए; अण्णल् वीरनै-महिमावान वीर श्रीराम को; तम्बियुम् अन्तमुम्-उनके लघु भाई लक्ष्मण ने और हंसिनी (-सी सीताजी) ने; कण्णिन् नीरित्तल्-आँखों के जल से; पातम् कळुवित्तार्-पाद-प्रक्षालन कराया। ५४९

राक्षस वीर मरकर स्वर्ग चले गये। उनके शरीरों पर लगे व्रणों से जो रक्त-जल बहा उससे श्रीराम का शरीर लिप्त हो गया। उनके शरीर पर धूलि भी जमी हुई थी। उनके लघु भ्राता ने और उनकी देवी हंसिनी-सी सीता ने श्रीराम को देखकर भावातिरेक से अश्रुजल बहाया, जिससे श्रीराम के श्रीचरण धुल गये। ५४९

❖ मूत्त मीन्त्रिन् मुडिन्दवर् मीय्पुणीर्, नीत्त मोडि नैडुन्दिशै नेरुडक्
कोत्त वेलैक् कुरलैन् वानवर्, एत्त वीर तित्तिदिरुन् दानरो 550

मूत्तम् ओन्त्रिन्-एक मुहूर्त में; मुडिन्दवर्-जो मरे; मीय्-(उनका) एकत्रित; पुण्णीर् नीत्तम्-व्रण-जल रक्त का प्रवाह; कोत्त वेलै-मिश्रित समुद्रों के; कुरल अन्त-घोष के समान; ओटि-बहकर; नैडुम् तिचै-लम्बी दिशाओं के अन्तों से; नेर् उड-टकराकर मुड़ आया; वानवर् एत्त-देवों ने स्तुति की, इस प्रकार; वीरन्-रघुवीर श्रीराम; इत्तिरु इरुन्तान्-ससन्तोष रहे। ५५०

एक ही मुहूर्त में सारे राक्षस मर गये थे । उनके शरीरों से इतना रक्त बहा कि सागर-सा बन गया और उससे सम्मिलित सागरों के गर्जन के समान गर्जन निकला । उसका प्रवाह सभी दिगन्त तक गया और टकराकर मुड़ आया । श्रीराम की विजय पर देव इठलाये । उन्होंने श्रीराम की स्तुति की । श्रीराम विश्रब्धमन और सुख के साथ रहे । ५५०

❁ इङ्गु निन्नुर दुरैत्तु मिरावणन्, तङ्गै तनगै वयिरु तहरत्तनळ्
कङ्गु लन्न करत्तैत्त लीइनेडुम्, पौङ्गु वैङ्गुरु विप्पुरण् डाळरो 551

इङ्कु निन्नुर-यहाँ जो स्थिति है; उरैत्तुम्-कहें; इरावणन् तङ्कै-रावण की बहिन ने; तन् कै-अपने हाथों से; वयिरु तकरत्तनळ्-अपना पेट पीट लिया; कङ्कुल अन्न-रात के समान काले; करत्तै-खर को; तळीइ-आलिंगन करके; पौङ्कु नैडुम्-उमड़नेवाले अधिक; वैम् कुरुति-गरम रक्त में; पुरण्डाळ्-लोटी । ५५१

अब हम (कवि) यहाँ जो हुआ वह कहें । रावण की बहिन ने अपने हाथों से अपना पेट पीट लिया । रात के समान काले खर का आलिंगन किया । उसके शरीर पर, वह निकलनेवाले अधिक रक्त के प्रवाह में लोटी । ५५१

❁ आक्कि तेन्मतत् ताशैयिव् वाशैयेन्, मूक्कि तोडु मुडिय मुडिन्दिलेन्
वाक्कि नालुङ्गळ् वाळ्वैयु नाळ्युम्, पोक्कि तेन्कीडि येन्नेन् पोयिनाळ् 552

मतत्तु-अपने मन में; आचै आक्कितेन्-(श्रीराम के प्रति) प्रेम किया; अ आचै-वह इच्छा; अन् मूक्कितोडु-मेरी नाक के साथ; मुडिय-चली जाय; मुडिन्नु इलेन्-ऐसा मरी नहीं; वाक्किनाल्-अपने वचनों से; उङ्कळ् वाळ्वैयुम्-तुम लोगों का जीवन और; नाळ्युम्-आयु को; पोक्कितेन्-समाप्त कर दिया; कीटियेन्-निर्मम हूँ; अन्नेन्-कहती हुई; पोयिनाळ्-वहाँ से चली । ५५२

वह उठी । अपने को धिक्कारने लगी । मैंने श्रीराम से प्रेम किया । वह इच्छा मेरी नाक के साथ चली जाती तो कोई बात नहीं । वहीं तक बात समाप्त करते हुए मैं मरी नहीं । अपने वचनों से मैंने तुम्हें युद्ध में प्रेरित किया और तुम्हारा जीवन और आयु खतम हो गयी । बड़ी निर्मम निकली मैं । ऐसा विलाप करती हुई वह वहाँ से चली गयी । ५५२

❁ अलङ्गल्

वेरुक्कै

यरक्करै

याशङ्क

कुलङ्गळ्

वेरुप्

पान्गुडित्

ताळ्हडल्

कलङ्गु

इत्तैळ्

कालेन्क्

कालिनाल्

इलङ्गै

मानहर्

नीय्दिर्चेन्

इय्दिनाळ् 553

अलङ्कल् वेल् कै अरक्करै-माला से अलङ्कृत भाले हाथ में लिये रहनेवाले राक्षसों को; आचु अर-निर्मूल करते हुए; कुलङ्कळ् वेर् अङ्गपान्-राक्षसकुलों की जड़ काटने का; कुडित्तु-संकल्प लेकर; आळ् कटल् कलम्-गहरे सागर में पोत को;

कुरैतु अँलु—अस्त-व्यस्त कर उठनेवाले; काल् अँत-अँसे के समान; कालिताल्-
पैदल चलकर; नौयत्तिन्-आयास के साथ; इलङ्कं मा नकर् चैन्नु-लंकानगर जा;
अँयत्तिन्नाळ्-पहुँची । ५५३

वहाँ कहाँ रुकी ? उसका आशय माला से अलंकृत भाले लिये
रहनेवाले राक्षसों को निर्मूल करने का, उनके कुलों की जड़ ही खोद लेने
का था ! इसलिए वह आयास के साथ पैदल चली और लंका जा पहुँची ।
वह इस कार्य में गहरे समुद्र में फँसे पोत को हिला देनेवाली आँधी के
समान लगी । ५५३

7. शूर्पपणहै शूळ्चिप् पडलम् (शूर्पणखा-योजना पटल)

इरैत्तनैडुम् बडैयरक्क रिइन्ददत्तै मइन्दनळ्वो रिरामन् रुङ्ग
वरैप्पुयत्ति तिडैक्किडन्द पेराशै मत्तङ्गवड्ड वाड्डा लाहित्
तिरैप्परवैप्पे पेहळित् तिरुनहरिर् कडिदोडिच् चीदै तन्मै
उरैप्पेन्नैन् चूर्पपणहै वरविरुन्दा तिरुन्दपरि शुरैत्तु मन्न्तो 554

इरैत्त नैडुम् पटै-शोर मचाते हुए जो चली उस सेना के; अरक्कर्-(खर
मिलाकर) समी वीर; इइन्ततत्तै-मरे, वह बात; मइन्दनळ्व-भूल गई; पोर्
इरामन्-युद्ध-चतुर श्रीराम के; तुङ्क-उन्नत; वरै पुयत्तिन् इटै-पर्वत-सम कन्धों
में; किटन्त-बंधे रहे; पेर् आचै-गम्भीर प्रेम के; मत्तम् कवड्ड-मन को व्यथित
करने से; आड्डाळ् आकि-असहनशील बनकर; तिरै परवै-तरंग-भरा समुद्र;
पेर् अकळि-बड़ी खाई के रूप में जिसे प्राप्त था; तिरु नकरिल् कटितु ओटि-उस
श्रीनगर में सवेग दौड़कर; चीदै तन्मै उरैप्पेन्-सीता का लक्षण बताऊँगी; अँत-
सोचकर; चूर्पपणकै वर-शूर्पणखा के आते समय; इरुन्तान्-वहाँ विद्यमान;
इरुन्त परिच्-श्रीरावण के रहने का प्रकार; उरैत्तुम्-कहेंगे । ५५४

शूर्पणखा अब यह बात भूल गयी कि खर और बड़ी धूम मचानेवाली
उसकी सेना विनष्ट हो गयी । उसका मन युद्ध-कला-प्रवीण श्रीराम के
उन्नत, पर्वतसम मनोरम कन्धों से आकृष्ट हो गया । श्रीराम पर उसका
प्रेम उसे व्यग्र करने लगा । वह संयम नहीं रख सकी, काम-ताप सह नहीं
सकी । उसने यह सोचा कि मैं लंका में, जिसके चारों ओर तरंगकुल समुद्र
ही खाई के रूप में पड़ा है और जो श्रीसमृद्ध है, शीघ्र जाऊँगी और रावण के
पास सीता की स्थिति, उसके लक्षण आदि कहूँगी । जब वह उधर आयी तब
लंकेश रावण किस ठाट के साथ शोभायमान था, उसका वर्णन करेंगे । ५५४

निलैयिला वुलहितिडै निन्ऱुत्तवुन् दिरिन्दनवु नैरियि नीन्द
मलरिन्मे नान्मुहऱ्कुम् बहुप्परिय नुत्तिप्पदौर वरम्बि लाद
उलैविला वहैयिळैत्त दरुममैन् निनैन्दवैला मुदवुन् दच्चन्
पुलत्तैलान् दैरिप्पदौर पुत्तैमणिमण् डबमदन्निर् पीलिय मन्न्तो 555

उलकिन् इटै-इस भूमि में; निलै इला-नश्वर; नित्तुत्तवुम्-स्थावर; तिरिन्तत्तवुम्-और जंगम; नैरियिन् ईन्त-यथाक्रम सृष्टि करनेवाले; मलरिन् मेल-कमल पर आसीन; नात् मुक्कुम्-चतुर्मुख को; वकुप्परिय-जिसकी सृष्टि नहीं हो सकती; नुत्तिप्पतु और वरम्पु इलात-सूक्ष्म रूप से जिसकी सीमा माप करना कठिन है; तरुमम् अंत-उस धर्म के समान; नित्तैन्त अलाम् उतवुम्-इच्छित सभी पदार्थ देनेवाले; तच्चन्-देवशिल्पी विश्वकर्मा के; पुलन् अलाम् तैरिप्पतु-सारे सामर्थ्य का प्रदर्शक; पुत्तै-सुन्दर; उलैवु इला वक्-अमिट रूप से; इळैत्त-रचित; और मणि मण्डपम् अतत्तिल्-एक मणिमण्डप में; पौलिय-शोभायमान रहते (रावण के) । ५५५

रावण एक मणिमण्डप में विराजमान था । वह मणिमण्डप देवशिल्पी विश्वकर्मा से बनाया गया था । वह विश्वकर्मा की सारी शक्ति का, शिल्पशास्त्र के गम्भीर और सूक्ष्म ज्ञान का पूर्ण परिचायक था । नश्वर विश्व और उसमें रहनेवाले स्थावर और जंगम —सभी जीवों के सृष्टिकर्ता, कमलवासी ब्रह्मा के लिए भी वह मण्डप अभाव्य था । वह धर्म के समान सभी मनोरथ पूरा करने की शक्ति रखता था । वह बड़ा ही सुन्दर था और अक्षय रूप से शोभायमान रहनेवाला था । ५५५

पुलियिन्द लुडैयानुम् पौन्नाडै पुत्तैन्दानुम् पूवि तानुम्
नलियुमन्तत् तारल्लर् देवरिलिड् गियावरिनि नाट्ट वल्लार्
मैलियुमिडै तडिक्कुमुलै वेयिळन्दोड् चेरिक्कण् वैन्त्रि मादर्
वलियनैडुम् बुलवियिनुम् वणङ्गाद महुडनिरै वयङ्ग मन्तो 556

पुलियिन् अतळ् उटैयातुम्-बाघम्बरधारी; पौन् आटै पुत्तैन्तानुम्-पीताम्बरधारी; पूवित्तानुम्-और कमलवासी; नलियुम् मन्तुत्तार्-(रावण के पराक्रम, वैभव आदि देख) आतंकित थे; अल्लर् तेवरिल्-वे ही नहीं तो अन्य देव; इङ्कु-यहाँ; यावर्-कौन; इति नाट्टवल्लार्-अब इसकी समता कर सकते हैं; मैलियुम् इटै-क्षीण-कटि; तटित्तु मुलै-पीन स्तन; वेय् इळम् तोळ्-बाँस के समान और बाल कन्धे; चेरिक्कण्-लाल डोरों से युक्त आँखें, इनसे शोभित; वैन्त्रि मादर्-मनोहारिणी स्त्रियों के; वलिय नैडुम् पुलवियिनुम्-शान्त करने में कठिन और लम्बी रूठन के अवसर में भी; वणङ्कात-जो नहीं झुकती; मकुटम् निरै-मुकुटपंक्ति; वयङ्क-(के) शोभते । ५५६

(५५५वें पद से ५७६वें पद तक रावण की सभा में स्थिति का वर्णन है । पूर्णक्रिया पद आखिरी पद में आता है ।) स्वयं बाघम्बर शिव, पीताम्बर विष्णु और कमलवासी ब्रह्मा उसके ठाट-बाट से उद्विग्न थे यानी उनका स्थान भी इसके सामने घटा हुआ लगता था । फिर कौन देव हैं जो इसकी समानता कर सकें ? वह बड़ा अभिमानी था । क्षीण-कटि, पीन-स्तना, छोटे बाँस-सी भुजाओं और लाल डोरों के साथ मनोरम आँखों से भूषित और विजयशीला स्त्रियों की लम्बी और दुर्बल रूठन के अवसर पर भी उसके किरीट (सिर) नहीं झुकते थे । ऐसे (सिरों के) किरीटों की पंक्ति दृश्यमान करते हुए रावण विराजमान था । ५५६

वण्डलङ्गु नुदर्रिशैय वयक्कळिरिन् मरुप्पोडिय वडर्त्तत पौर्रोळ्
विण्डलङ्ग लुउवीङ्गि योङ्गुदय माल्वरैयिन् विळङ्ग मीदिल्
कुण्डलङ्गळ् कुलवरैयै वलम्बरुवा निरविहीळुङ् गदिरुशूळ् कड्रै
मण्डलङ्गळ् पन्निरण्डु नालैन्दायप् पौलिनन्देत्त वयङ्ग मन्तो 557

वण्डु अलङ्कु नुतल्-भ्रमरावृत भालों के; तिचैय-दिशाओं में स्थित; वय-
विजयशील; कळिरिन्-हाथियों के; मरुप्पु औडिय-दांतों को तोड़ते हुए; अडर्त्त-
(उन गजों से) जिन्होंने टकराया; पौन् तोळ्-वे मनोरम कन्धे; विण् तलङ्कळ् उर-
आकाश के लोकों में जा लगे, ऐसा; वीङ्कि-फूलकर, बढ़कर; ओङ्कु-उन्नत; उतय
माल् वरैयिन्-उदयगिरि के समान; विळङ्क-दृश्यमान रहे और; मीतिल्-उन पर;
कुण्डलङ्कळ्-कुण्डल; कुल वरैयै-मेरुपर्वत की; वलम्बरुवान्-परिक्रमा करनेवाले;
इरवि-सूर्य के; कौळुम्-पुष्कल; कतिर् चूळ्-किरणसंकुल; कड्रै-पुंज;
मण्डलङ्कळ्-मण्डल; पन्निरण्डुम्-बारह; नालु ऐन्ताय्-(चार के पाँच) बीस
बनकर; पौलिनत्तु अत्त-प्रकाशमय विद्यमान रहते हों जैसे; वयङ्क-दृश्यमान
रहे। ५५७

उसके कन्धों ने दिग्गजों के साथ युद्ध करते हुए उनके दाँतों को तोड़ा
था। दिग्गज इतने मदमत्त थे कि हमेशा भ्रमर उनके भालों पर मँडराते
थे। ऐसे बलवान् कन्धे बहुत ही दर्शनीय और फूलकर उन्नत उदयगिरि
के समान शोभ रहे थे। कानों के कुण्डल, जो उनके कन्धों को स्पर्श करते
हुए हिल रहे थे, किरण-पुंज बारह आदित्यों के समान प्रकाशमान थे
जो बीस बन गये हों। ५५७

वाळुला मुळुमणियिन् वयङ्गीळियिन् रीहैवळङ्ग वधिरक् कुन्ऱत्
तोळैलाम् बडिशुमन्द् विडवरविन् बडनिरैयिर् रोन्ऱ वान्ऱ
नाळैलाम् पडैदयङ्ग नामनी रिलङ्गैयिर्ऱ नलङ्ग विट्ट
कोळैलाङ् गिडन्दनेङ्गु जिरैयन्त निरैयारङ् गुलव मन्तो 558

वाळ् उलाम्-उज्ज्वल; मुळु मणियिन्-बड़े-बड़े रत्नों की; वयङ्कु औळियिन्-
छिटकनेवाली कान्ति की; तौकै-राशि; वळङ्क-दृश्यमान रही; वधिर कुन्ऱ तोळ्
अलाम्-वज्र गिरि-सम सब कन्धे; पटि चुमन्त-भू-भार-वाही; विट अरविन्-विषले
नाग के; पट निरैयिन्-फनों की पंक्ति के समान; तोन्ऱ-दिखाई दिये; नाम नीर्
इलङ्कैयिल्-भयोत्पादक समुद्रजल सहित लंका में; तान् नलङ्क विट्ट-उससे
आक्रान्त; कोळ् अलाम्-सब (नव) ग्रह; आन्ऱ-श्रेष्ठ; नाळ् अलाम्-सभी
नक्षत्र; पुटै तयङ्क-पास-पास रहें, ऐसा; क्कटन्त-(बद्ध) पड़े रहे; नेटुम् चिरै
अन्त-बड़ी कारा के समान; निरै आरम्-रत्नमय हार; कुलव-शोभ रहा था। ५५८

रावण अनेक आभरण पहने हुए था। उनमें जड़ित रत्न बड़े-बड़े थे
और बड़े ही जाज्वल्यमान थे। उनकी ज्योतियों की राशि शोभित थी।
उसके वज्रगिरिसम कन्धे भूभारवाही शेषनाग के फनों के समान दर्शनीय
थे (वे रत्न उन फनों के ऊपर रहनेवाली मणियों के समान थे।)

उसने एक रत्नहार पहन रखा था, जो उस कारा के समान था जिसमें उसने ग्रहों और नक्षत्रों को हराकर डाल रखा था। यानी वह हार श्रेष्ठ और ज्वलन्त रत्नों का बना था। ५५८

ॐ आय्वरुम्	वैरुवलि	यरक्क	रादियोर्
नायहर्	नळिमणि	महुड	नण्णलाल्
तेय्वुडत्	तेय्वुडप्	पैयर्नुडु	शैम्बुडर्
आय्मणिप्	पौलन्गळ	लडिनिन्	डार्प्पवे 559

आय्वु अरु-अकूत; पैरु वलि-बहुत बल से युक्त; अरक्कर् आतिमोर्-राक्षस आदि राजा लोगों के; नळि मणि मकुटम्-बहुमूल्य रत्न-जड़ित किरीट; नण्णलाल्-मिले आते हैं, इसलिये; तेय्वु उड तेय्वु उड-घिसते-घिसते; पैयर्नुडु-फिर से; चैम् चूटर्-लाल प्रकाश की; मणि पौलन् कळल्-मणिमण्डित पायल; अटि निन्नुडु आर्प्प-उसके पैरों में रहकर क्वणित हो रही थी। ५५६

राक्षस वीर आकर उसके पैरों पर सिर झुकाते थे। उन राक्षसों के बल का अनुमान भी नहीं हो सकता था। उनके मुकुटों के लगने से उसकी पायल घिसी हुई थी और उस पर जड़ित रत्न अधिक निखरे हुए हो गये थे। वह पायल उसके पैरों में क्वणित हो रही थी। ५५९

ॐ मूवहै युलहिनु मुदल्वर् मुन्दैयोर्, ओविल रुदविय परिशि नोङ्गल्बोल तेवरु मवुणरु मुदलि नोर्दुशै, तूविय नरुमलर्क् कुप्पै तुन्तवे 560

मूवकै उलकितुम्-तीन प्रकार (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों के; मुतल्वर्-नायकों ने; मुन्तैयोर्-में पहले, मैं पहले करते हुए; ओविलर्-निरन्तर; उतविय-लाकर जो दिये; परिचिन्-उन उपहारों के; ओङ्कल् पौल्-पर्वत के समान; तेवरुम् अवुणरुम् मुतलितोर्-देव, अमुर और अन्यो के; तिचै-चारों दिशाओं से; तूविय-बरसाये; नरुमलर्-सुगन्धित फूलों की; कुप्पै-राशियाँ; तुन्त-ठस भरकर पड़ी रहीं। ५६०

तीनों लोकों के नायक लोग पहले आने की स्पर्द्धा करते हुए आकर निरन्तर उपहार देते रहे। उन उपहारों के पर्वत-से ढेर हो गये थे। देवों और राक्षसों द्वारा चारों ओर से बरसाये सुवासित फूलों के ढेर सर्वत्र पाये जाते थे। ५६०

ॐ इन्तवो दिव्वळि नोक्कु मैन्बदै, उन्तलर् करदलञ् जुमन्द वुच्चियर् मिन्तविर् मणिमुडि विञ्जै वेन्दर्हळ्, तुन्तितर् मुडैमुडै तुडैयिर् चुरडवे 561

मिन् अविर्-विजली के समान चमकनेवाले; मणि मुडि-रत्नकिरीट-धारी; विञ्चै वेन्तर्कळ्-विद्याधर राजा लोग; इन्त पोटु-कव; इ वळि नोक्कुम् अन्तर्-इस तरफ़ देखेगा, यह; उन्तलर्-नहीं जानते; करदलम् चुमन्त उच्चियर्-हाथ सिर पर रखे; तुन्तितर्-समीपस्थ होकर; मुडै मुडै-यथाक्रम; तुडैयिल्-अपनी-अपनी निर्दिष्ट सेवा में लगे; चुरड-घेरे रहे, ऐसा। ५६१

विद्याधर राजा लोग थे । उनके रत्नकिरीट विजली के समान चमकते थे । वे अपने हाथों को जोड़े अपने सिरों पर रखे हुए थे । वे हमेशा सतर्क रहते थे, क्योंकि उन्हें मालूम नहीं हो सका कि रावण किस समय किस ओर दृष्टि फेंकेगा । वे अपने-अपने स्थान पर निर्दिष्ट सेवा में लगे हुए, रावण की दृष्टि की भी प्रतीक्षा करते हुए चारों ओर पाये गये । ५६१

❖ मङ्गैयर् तित्तुत्तोरु माड्डु गूडिनुम्, तङ्कळै यामैन्तत् ताळुम् जैन्तियर्
अङ्गैयु मुळमुड् गुविन्द वाक्कैयर्, शिङ्गवे ईन्तत्तिड्डु चित्तर शैरवे 562

चिङ्क एक अँत-पुरुषकेसरी के समान बलिष्ठ; चित्तर-सिद्ध लोग; मङ्कैयर् तित्तु-अपनी दासियों के प्रति; और माड्डुम् कूडिनुम्-(रावण) एक बात कहता तो भी; तङ्कळै अम् अँत-अपने से कहता है, समझ; ताळुम् जैन्तियर्-सिर झुकाते हैं (झुके सिर वाले होकर); अम् कँयुम्-हथेलियों; उळ्ळमुम्-और मन को जोड़कर; गुविन्द आक्कैयर्-शरीर झुकाकर (विनय की मुद्रा में); चैरवे-(रावण के चारों ओर) समीप खड़े रहे, ऐसा । ५६२

कभी सिंहसदृश रावण अपने पास स्थित किसी स्त्री से कोई बात कहता तो वहाँ रहे सिद्ध जाती के लोग सोचते कि वह हमारे प्रति ही कुछ कह रहा है ! वे हाथ जोड़े । मन को एकाग्र किये और सिर झुकाये बहुत ही विनय के साथ स्थित रहे । 'सिंह-सदृश' सिद्धों पर भी लग सकता है । ५६२

अन्नव	तमैच्चरै	नोक्कि	याण्डोरु
नन्मोळि	पहरिनु	नडुङ्गुम्	जिन्दैयर्
अँन्तैहोल्	पणियेन्	विडैञ्जु	हिन्तुत्तर
किन्तुत्तर	पैरुम्बयड्	गिडन्द	नैञ्जिनार् 563

किन्तुत्तर-किन्नर जाति के लोग; अन्नवन्-वह (रावण); अमैच्चरै नोक्कि-मन्त्रियों को देखकर; आण्डु और नल् मोळि-वह एक शिष्ट-वचन; पकरितुम्-कहता तो भी; नडुङ्गुम् चिन्तैयर्-कम्पित-मन होकर; पैरुम्पयड् किटन्त-बहुत भयाक्रान्त; नैञ्जिनार्-मन के साथ; अँन्तै कोल् पणि-क्या सेवा है; अँत-ऐसा; इडैञ्चकिन्तुत्तर-विनय करते । ५६३

किन्नर लोग पाये गये । अगर रावण अपने अमात्यों से कोई मधुर वचन भी कहता तो वे समझ लेते कि वह हमसे कुछ कह रहा है । वस, सिहर उठते । पास आकर पूछते कि कौन सी सेवा है जो बजा लानी है ? यह अत्यन्त विनय के साथ पूछते । ५६३

पिरहर	नैडुन्दिशैप्	पैरुन्दण्	डेन्दिय
करदलत्	तण्णलैक्	कण्णि	नोक्किय

नरहिन

रामेन

नडुङ्गु

नाविनर्

उरहरन्

दम्मन्

मुलेन्दु

शूळवे 564

उरकरुम्-नागलोकवासी; पिरकर नैटुम् तिचै-(जीवों को) दण्ड जहाँ दिया जाता है, उस (दक्षिणी) दिगा के देव; पैरुम् तण्टु एन्तिय-बड़ा कालदण्ड-धारी; करतलत्तु-हाथ के; अण्णलै-राजा (धर्मदेवता) को; कण्णिन् नोक्किय-अपनी आँखों के सामने जिन्होंने देखा हो, ऐसे; नरकर् आम् अन्न-नरकवास योग्य पापियों के समान; नडुङ्कुम् नावितर्-स्वलित-वचन (लड़खड़ाती-वाणी वाले) होकर; तम् मतम् उळैन्तु-मन में व्यथित होकर; चूळ-घेरे खड़े रहे । ५६४

नागलोकवासी रावण के सामने इतना डरे हुए खड़े रहे जितना कि नरक-योग्य जीव उस यमलोक के देव दण्डधर यम को देखकर डरते हैं, जहाँ जीवों को दण्ड का विधान हो, दण्ड दिया जाता है । उनकी जिह्वाएँ लड़खड़ातीं; मन व्यग्र रहता । वे भी रावण को घेरे खड़े रहे । ५६४

* तिशैयुरु

करिहळैच्

चैरुत्

तेवनुम्

वशैयुक्

कयिलैयै

मडित्तु

वानैलाम्

अशैयुक्

पुरन्दरु

कडन्द

तोळ्हळिन्

इशैयिनैत्

तुम्बुरु

विशैयि

तेत्तवे 565

तिचै उरु करिकळै-दिग्गजों को; चैरु-हराकर; तेवनुम् वचै उर-परमेश्वर को भी अपयश दिलाते हुए; कयिलैयै मडित्तु-कैलास को उखाड़कर; वान् अलाम् अचैवु उर-सारा आकाश कँपाते हुए; पुरन्दरन् कटन्त-पुरन्दर को जिन्होंने प्रताड़ित किया; तोळ्हळिन् इचैयिनै-उन कंधों की प्रशंसा; तुम्बुरु-तुम्बुरु; इचैयिन् एत्त-गीत गाते (रहे, ऐसा रावण सभा में विराजमान था) । ५६५

रावण ने दिग्गजों का बल दमन किया था । कैलास पर्वत को उखाड़कर परमेश्वर शिव को भी अपयश दिलाया था । पुरन्दर को हराकर आकाश भर को उद्विग्न कराया था । ऐसे रावण के पराक्रम की प्रशंसा तुम्बुरु गा रहे थे । ५६५

* शेणुयर्

नैरिमुर्

तिरुम्ब

लिन्ऱिये

पाणिहळ्

पणिशैयप्

पळुदिल्

पण्णिर्

वीणैयि

नरम्बिडै

विळैन्द

तेमर्

वाणियि

नारदन्

शैवियिन्

वाक्कवे 566

शेण् उयर्-अत्युन्नत; नैरि मुर् तिरुम्बल् इन्ऱिये-गति-विधि का उल्लंघन किये बिना; पाणिहळ् पणि चैय-ताल काल-निर्णय का काम करते हैं, ऐसा; पळुत्तु इल्-दृढिहीन; पण् निर्-राग-युक्त; वीणैयिन् नरम्पु इटै-वीणा की तन्त्रियों से; विळैन्त-उत्पन्न; ते नर्-मधुर वेद-रूप संगीत; वाणियिन्-मुख-स्वर के साथ; नारतन्-नारद ऋषि; चैवियिन् वाक्क-उसके बीसों कानों में भर रहे थे । ५६६

नारद अपनी वीणा से संगीतमय स्वर निकालते हुए ताल-मेल के साथ श्रुति-शुद्ध, लय-शुद्ध रीति से वेदसमान गन्धर्वगान कर रहे थे। रावण के बीसों कान उसे श्रवण कर रहे थे। ५६६

मेहमेन्	रुहत्ति	वीक्कि	विण्णवर्	तरुवुम्	विज्जै
नाहमुज्	जुरन्द	तीन्दे	नरुपुन	लोड	ळावित्
तोहैयर्	तुहिलिड्	रोय्क्कु	मेन्बदोर्	तुणुक्कत्	तोडुज्
जीहर	महर	वैलैक्	कावलन्	शिन्द	मन्तो 567

मकर, वैलै कावलन्-मकरालय के देवता वरुण; विण्णवर् तरुवुम्-देवों का कल्पतरु; विज्जै नाकमुम्-विद्याधर लोक का सुरपुत्राग; चुरन्त-(अपने फूलों से जो) ढलकते थे; तीम् तेन्-वह मधुर शहद; नरु पुनलोड-सुवासित जल के साथ; अळावि-मिश्रित करके; मेक्कम् अन् तुहत्ति वीक्कि-मेघ की मशक में भरकर; तोकैयर् तुकिलिन्-(रावण के पास रहनेवाली) स्त्रियों के वस्त्र; तोय्क्कुम्-गीला ही जायगा; अन्पतोर् तुणुक्कत्तोडुम्-इस डर से (अत्यन्त सावधानी के साथ); चीकरम्-जल-सीकर; चिन्त-छिड़का रहे थे। ५६७

मकरालय के अधिदेवता वरुण मण्डप में जल छिड़कने का कार्य कर रहे थे। कैसा जल था ? उत्तम जल में आकाश के कल्पतरु से झरनेवाला शहद और नागलोक के सुरपुत्राग तरुओं से मिलनेवाला शहद मिला हुआ था। मेघ की मशक में उसे भरकर सीकरो में छिड़कता था। यह भय लगा हुआ था कि कहीं रावण की नारियों के वस्त्र पर पड़ जायगा तो रावण का कोप अनर्थ कर देगा। इसलिए बहुत सावधानी से वे जल की चौखार कर रहे थे। ५६७

नरैमलर्त्	ताडुन्	देनु	नळिन्नेडु	महुड	कोडि
मुट्टैमुट्टै	यट्टैयच्	चिन्दि	मुरिन्दुहु	मणियु	मुत्तुम्
तरैयिडै	युहाद	मुत्तन्	दाङ्गिनन्	उळुवि	वाङ्गित्
तुट्टैदोर्न्	दोडर्न्दु	निन्ऱु	समीरणन्	रुडैप्प	मन्तो 568

चमीरणन्-वायुदेव; नरै मलर् तातुम्-सुगन्धपूर्ण पुष्पों का पराग; तेत्तुम्-और शहद; नळि-बड़े; नेट्टु-लम्बे; मकुट कोटि-किरीट-कोटि के; मुट्टै मुट्टै अट्टैय-बार-बार टकराने से; चिन्ति मुरिन्तु उकु-टूटकर जो गिरे, वे; मणियुम् मुत्तुम्-रत्न और मोती; तरैयिटै-भूमि पर; उकात मुत्तम्-गिरे, इसके पहले ही; ताङ्किन्तन्-पकड़कर; तळुवि वाङ्कि-समेट लेकर; तुट्टै तोरुम् तोटर्न्तु निन्ऱु-हर स्थान में निरन्तर खड़े होकर; तुट्टैप्प-झाड़कर शुद्ध कर रहे थे। ५६८

वायुदेव का क्या काम था ? सुवासित पुष्पों से मकरन्द चूते थे। उनसे शहद भी गिरता था। रावण से भेंट करने जो आये उनके किरीटों के आपस में टकराने से रत्न और मोती अलग होकर गिरते थे। समीरण

का काम था कि उनको भूमि पर गिरने से पहले ही ग्रहण कर ले। वे सर्वत्र रहकर बुहारने का काम करते रहे। ५६८

मिन्नुडै वेत्तिरक् कैयर् मैय्वुहत्, तुन्निडु कञ्जुहत् तुहिलर् शोर्विलाप्
पौन्नीडु वैळ्ळियप् पुरन्द रादियर्क्, किन्नियन् मुऱैमुऱै यिरुक्कै यीयवे 569

पौन् औदु-वृहस्पति के साथ; वैळ्ळि-असुर-गुरु शुक; मिन् उटै-चमकीले;
वेत्तिर कैयर्-वेत्तपाणी होकर; मैय् पुक्-शरीर जिसमें प्रविष्ट हो, ऐसा; तुन्निडु-
सिये हुए; कञ्जुक तुकिलर्-कंचुक की पोशाक से अलंकृत; चोर्वु इलर्-बिना
आलस्य के; पुरन्तरातियर्क्कु-पुरन्दरादि देवता लोगों की; इन् इयल्-मधुर व्यवहार
के साथ; मुऱै मुऱै-उचित प्रकार से; इरुक्कै ईय-आसन की व्यवस्था कर रहे थे,
ऐसा। ५६९

स्वर्णदेव वृहस्पति, शुक्लदेव शुक्राचार्य दोनों कंचुकी पहने हुए वेत्त
हाथ में लेकर आलस्य त्यागकर पुरन्दर आदि को उनका योग्य स्थान दिखा
रहे थे। आगतों का स्वागत करना और उनके आसन की व्यवस्था करना
उनका काम था। ५६९

शूलमे मुदलिय तुऱन्नु शुऱ्ऱिय, शैलैयाऱ् चैय्यवाय् पुदैत्त शैङ्गेयन्
तोलुडै नैडुम्बणै तुवैक्कुन् दोरैलाम्, कालत्तिन् शिशैक्कुनाट् कडिहै कूऱवे 570

कालन्-कालदेव (यम); शूलमे मुतलिय तुऱन्नु-शूल आदि त्यागकर; शुऱ्ऱिय
शैलैयाल्-अपने शरीर पर लपेटे वस्त्र के छोर से; चैय्य वाय्-लाल मुख की; पुदैत्त-
जो ढक रहे थे; चैम् कैयन्-उन अरुण हाथों के साथ; तोल् उटै नैडुम् पणै-चमड़ा-
मढ़े बड़े ढोलो के; तुवैक्कुम् तोऱु अलाम्-पिटते हर समय; इचैक्कुम् नाळ् कटिकै-
निर्दिष्ट दिन की घड़ी; वन्तु कूऱ-सभा में आकर वता रहे थे। ५७०

यम का क्या हाल था? ढोल बजाकर घड़ी बतायी जाती। यम
का काम था कि वे अन्दर आते और अपने वस्त्र से मुख ढाँपे विनय के साथ
घड़ी बतावें। समय-सूचक का काम उनका था। वे अपना शूल आदि
त्याग चुके थे। ५७०

नयङ्गिळर्	नरुविरै	नान	नैय्यळाय्
वियन्गरुप्	पूरमैन्	पञ्जिन्	मीक्कोळीड
कयङ्गळिन्	मरैमलर्क्	काडु	पूतत्तै
वयङ्गैरिक्	कडवुळुम्	विळक्क	माट्टवे 571

वयङ्कु-प्रकाशमान; अरि कटवुळुम्-अग्निदेव ने भी; नयम् किळर्-श्रेष्ठतायुक्त;
नरु विरै-सुवासपूर्ण; नात्तम्-कस्तूरी की; नैय् अळाय्-घृत से मिलाकर; वियन्
करुप्पूरम्-उत्तम कर्पूर की; मैन् पञ्चिल् मी-नरम रुई पर रख के; कोळीई-
(उस वाती की) जलाकर; कयङ्कळिल्-तालावों में; मरै मलर् काटु-कमलपुष्प-
कानन; पूतत्तै-फूले, जैसे; विळक्कम् माट्ट-दिये जलाये। ५७१

प्रकाशमान अग्निदेव पर दीया जलाने का जिम्मा था । उन्होंने अनेक दीये जलाये, जिनका तेल श्रेष्ठ और सुगन्धित कस्तूरी और उत्तम घृत का मिश्रण था और कर्पूर को रुई में रखकर उसकी बातियाँ जलायी गयीं । उन्होंने उन्हें जलाशयों पर विकसित कमलों के समान सजाए । ५७१

अदिशय मळिप्पदस् करुळ रिन्दुनल्, पुदिदलर् कड्पहत् तरुवुम् बाय्यिलाक्
कदिर्नेडु मणिहळ्डु गडवै यान्गळुम्, निदिहळु मुडैमुडै निन्ऱु नोदटवे 572

नल् पुतितु अलर्-अच्छे और ताजा फूले हुए; कड्पक तरुवुम्-कल्पतरु और; बाय्य इला-अभंग; नेडु कतिर्-लम्बी ज्योति से युक्त; मणिकळुम्-(चिन्तामणि आदि) रत्न; कडवै आन्कळुम्-दुधारू गायें (कामधेनु); नितिकळुम्-(शंख आदि नव-) निधियाँ; अतिचयम् अळिप्पतर्कु-रावण को विस्मयगर्भित मनोरंजन करने के लिए; अरुळ अरिन्दु-उसकी कृपा की ताक में रहकर; मुडै मुडै-अपने-अपने क्रम से; निन्ऱु-बड़ा होकर; नोदट-अपना उपहार बढ़ातीं, ऐसे संभ्रम के साथ । ५७२

नवविकसित फूलों के साथ कल्प, संतान, मन्दार, पारिजात, हरिचन्दन के तरु, अमन्द और लम्बी ज्योतियुक्त चिन्तामणि, दुधारू कामधेनु आदि गायें, शंख, (पद्म, महापद्म, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, हीरे आदि) निधियाँ—ये सब रावण को प्रसन्न करने के लिए बारी-बारी से अपना-अपना उपहार बढ़ा रही थीं । तब । ५७२

कुण्डल मुदलिय कुलङ्गौळ् पेरणि, मण्डिय पेरोळि वयङ्गि वीशलाल्
उण्डुहो लिरविति युलह मेळितुम्, अण्डिशै मरुङ्गितु मिरुळित् ईन्नत्वे 573

कुण्डलम् मुतलिय-कुण्डल आदि; कुलम् कौळ् पेर् अणि-उत्तम और बहुमूल्य आभरणाँ की; मण्डिय-परिपूर्ण; पेर् ओळि-बड़ी कान्ति; वयङ्कि वीशलाल्-भरपूर फैलती है, इसलिए; उलकम् एळितुम्-सातों लोकों में; इति-अब; इरवु उण्डु कौल्-रात भी है क्या; अण् तिचै मरुङ्कितुम्-आठों दिशाओं में सर्वत्र; इरुळ इन्ऱु-अन्धकार नहीं है; ईन्नत्त-कहा जाय, ऐसा । ५७३

रावण के कर्ण-कुण्डल और अन्य श्रेष्ठ आभरण घनी कान्ति बिखेर रहे थे । वह प्रकाश सर्वत्र फैला हुआ था । इस वजह से ऊपर के और नीचे के सातों लोकों में क्या कभी रात हो सकेगी ? आठों दिशाओं में कही अन्धकार का नाम तक नहीं था । ५७३

कड्गैये मुदलिय कडवुट् कन्ऱियर्, कौङ्गैहळ् शुमन्दिडै कौडियि तौल्हिडच्
चैङ्गैयि तरिशियुम् मलरुञ्ज जिन्दित्तर, मङ्गल मुडैमौळि कूडि वाळ्त्तत्वे 574

कड्कैये मुतलिय-गंगाजी आदि; कडवुळ् कन्ऱियर्-(नदी की) देव-कन्याएँ; कौङ्कैकळ् चुमन्तु-स्तनों को ढोने से; इडै-कमर को; कौडियित् औल्किट-लता के समान झुकने देते हुए; चैम् कैयित्-लाल (नरम और सुन्दर) हाथों से; अरिचियुम् मलरुम्-अक्षत और फूल; चिन्तित्तर-(रावण पर) चढ़ाकर; मङ्कल मुडै मौळि कूडि-मंगलाशासन के वाक्य कहकर; वाळ्त्त-‘जय जीव’ कहतीं, ऐसा । ५७४

गंगाजी आदि दिव्य जल-कन्याएँ, जिनकी कमरें भारी स्तनों के बोझ के कारण लचक-लचक जाती थीं, अपने लाल (मनोरम और कोमल) हाथों से चावल और फूल रावण पर चढ़ाकर मंगलाशासन करके स्तुति के गीत गा रही थीं । ५७४

ऊरुविर् उरुत्त्रिय वुरुप्प शिर्पैयर्क्, कारिहै यार्मुदर् कलाप मञ्जैवोल्
वार्विशिक् करुवियोर् बहुत्त पाणियिन्, नारिय ररुनड नडिप्प नोक्किये 575

ऊरुविल् तोत्त्रिय-श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न; उरुप्पचि पॅयर्-उर्वशी नाम की; कारिकैयार् मुतल्-सुरवाला आदि; नारियर्-नारियाँ; कलाप मञ्जै पोल्-कलापी मोरों के समान; वार् विचि-फीते से कसे; करुवियोर्-मृदंग आदि के वादको के; वकुत्त पाणियिन्-वादन से निर्दिष्ट ताल-लय में; अरु नटम् नटिप्प-श्रेष्ठ नाच नाचतों, तब । ५७५

वहाँ मृदंग आदि बाजे वज रहे थे । उन्हीं के ताल-मेल में श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न उर्वशी आदि अप्सराएँ नाच रही थीं । उसका रसास्वादन करते हुए— (नर और नारायण बदरिकाश्रम में तपस्या कर रहे थे । देवेन्द्र ने उनके तप को भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजा । श्रीमन्नारायण ने अपने ऊरु से उर्वशी को पैदा किया । उसका सौन्दर्य देखकर अप्सराएँ लज्जित होकर चली गयीं ।) । ५७५

इरुन्दन	तुलहङ्ग	ळिरण्डु	मीन्नुन्दन्
अरुन्दव	मुडैमैयि	नळवि	लाड्डिल्लि
पौरुन्दिय	विरावणन्	पुरुवक्	कार्मुहक्
करुन्दडङ्	गण्णियर्	कण्णिन्	वैळ्ळत्ते 576

उलकङ्कळ् इरण्डुम् औन्नुम्-दो और एक (तीनों) लोकों में; तन् अरुम् तवम् उडैमैयिन्-अपने अपूर्व तपस्या के होने से; अळवु इल् आड्डिल्-(प्राप्त) अपार पराक्रम का स्वामी; इरावणन्-रावण; पुरुव कार्मुक्-मोह रूपी धनुओं के साथ; करुम् तटम् कण्णितर्-काली और विशाल आँखों की; कण्णिन् वैळ्ळत्ते-दृष्टि रूपी प्रवाह में; इरुन्दतन्-तैरता रहा । ५७६

रावण सभा में विराजमान था । उसने ऐसा कठोर तप किया था, जैसा तीनों लोकों का और कोई नहीं कर सकता था । अतः उसे अपार बल प्राप्त था । उस पर नारियाँ बड़े प्रेम के साथ दृष्टि दिये रहती थीं । कवि कहते हैं कि रावण उनकी काली और दीर्घ आँखों की दृष्टि के प्रवाह में तैरता रहा । ५७६

❀ तङ्गैयु	मव्वळि	तलैयिर्	राङ्गिय
शैङ्गैयळ्	शोरियिन्	रारै	शैरुन्दिळि

कौङ्कयळ् मङ्गुलि मूक्किलळ् तौलिपडत् कुळैयिन् तिरुन्द कादिलळ् वायिन्नाळ् 577

अ वळि-तव; तङ्कैयुम्-(रावण की) वहिन; तलैयिल् ताङ्किय-सिर पर रखे; चैम् कैयळ्-हाथों के साथ; चोरियिन् तारै-रक्त की धारा; चेन्नु इळि-जिन पर बहती रही; कौङ्कयळ्-उन स्तनों के साथ; कुळैयिन् कातु इलळ्-कुण्डल सहित कानों से रहित; मङ्कुलिन् ओलि पट-मेघ-गर्जन करते हुए; तिरुन्त वायिन्नाळ्-खुले मुख के साथ । ५७७

जब रावण इस ठाट-वाट के साथ राजदरवार में विराजमान रहा, तब (उसकी वहिन शूर्पणखा) हाथ सिर पर रखते हुए, स्तनों पर रक्त को बहने देते हुए नासिकाहीन मुख खोलकर मेघगर्जन-से उच्च स्वर में— । ५७७

ॐ मुडैमिडै वायितिन् मुडैयिट् टार्हलि
कडैयुहत् तैळुमौलि काट्टक् कान्दुवाळ्
कुडदिशैच् चैक्करिड् चेन्द कून्दलाळ्
वडदिशै वायिलिन् वन्दु तोन्डिन्नाळ् 578

मुटै मिटै-मांस-गन्ध-युक्त; वायितिन्-मुख से; मुडैयिट्टु-शिकायत करते हुए; आर् कलि-सघोष समुद्र से; कटै युक्तु-युगान्त में; अळुम् ओलि-जो उठती है, उस ध्वनि को; काट्ट-प्रकट करते हुए; कान्तुवाळ्-जो मुरझायी रही; कुट तिचै चैक्करिल्-पश्चिमी दिशा के गगन की लालिमा से; चेन्त कून्तलाळ्-अधिक लाल केश वाली; वट तिचै वायिलिन्-उत्तर के द्वार पर; वन्दु तोन्डिन्नाळ्-आकर प्रकट हुई (शूर्पणखा) । ५७८

मांसगन्धयुक्त अपने मुख से प्रलाप करती हुई उत्तरी द्वार पर आ प्रकट हुई । उसने जो शोर मचाया वह युगान्त के नाद के समान भयंकर था । अग्नितप्त-सी, लाल सन्ध्या-राग से भी अधिक लाल केश के साथ वह आयी । ५७८

तोन्डुलुन् दौन्नुह ररक्कर् तोहैयर्
एन्डैदिर् वयिडलैत् तिरङ्गि येङ्गिन्नार्
मून्ऱुल हुडैयवन् इङ्गै मूक्किलळ्
तान्ऱलि यवळ्वरत् तरिक्क वल्लरो 579

तोन्डुलुम्-प्रकट होते ही; तौल् नकर्-प्राचीन नगर की; अरक्कर्-तोकैयर्-राक्षस-स्त्रियाँ; अतिर् एन्ऱु-सामने स्थित हो; वयिड अलैत्तु-पेट पीटते हुए; इरङ्कि एङ्किन्नार्-अनुताप करके रोई; मून्ऱु उलकु उडैयवन्-तीनों लोकों के पति की; तङ्कै-वहिन; मूक्कु इलळ्-नासिका से हीन; तति अवळ् तान् वर-अकेली स्वयं आए; तरिक्क वल्लरो-सह सकंनो क्या । ५७९

उसके उस रूप में प्रकट होने पर उस प्राचीन नगर की राक्षस-नारियाँ सामने आकर (अपनी छाती) अपना पेट पीटते हुए अनुताप के साथ रोयीं ।

तीनों लोकों के स्वामी की सगी बहिन थी वह । उसकी यह स्थिति ! उसकी नाक कटी हुई है ! अकेली आ रही है । यह देखकर कोई सब कर सकता है क्या ? । ५७९

❀ पौरुक्कन	नोक्किनर्	पुहल्व	दोर्हिलर्
अरक्करु	मिरैत्तन	रशनि	येरैत्तक्
करत्तौडु	करङ्गळैप्	पुडैत्तुक्	कण्गळिन्
नैरुप्पैळ	विळित्तुवाय्	मडित्तु	निङ्किन्ऱार् 580

अरक्करुम्-राक्षसों ने भी; पौरक्कु अन्न नोक्किनर्-सहमकर देखा; पुक्लवतु ओर्किलर्-क्या कहना, नहीं जानते; अचत्ति एरु अन्न-अशनिराज के समान; करत्तु ओट्टु करङ्गळै-हाथों से हाथों को पीटकर; कण्कळिन् नैरुप्पु अँळ-आँखों से अंगार निकालते हुए; विळित्तु-आँख फाड़े देखकर; वाय् मडित्तु-दाँत पीसकर; निङ्किन्ऱार्-खड़े रहे । ५८०

राक्षसों ने भी सहमकर देखा । क्या कहना —यह भी न सूझा । अशनि का-सा नाद पैदा करते हुए हाथों से हाथ मारे । उनकी आँखों से आग उगलने लगी । दाँत पीसते हुए आँखें फाड़े देखते हुए खड़े के खड़े रह गये । ५८०

❀ इन्दिरन् पालदो वुलह् मीन्ऱुपेर्, अन्दणन् पालदो वाळि यान्तो
शन्दिर मवुलिपाड् रङ्गु मेहौलो, अन्दर मिडुवैल वळल्हिन् ऱार्शिलर् 581

चिलर्-(उनमें) कुछ; इन्तिरन् पालतु ओ-क्या इन्द्र की तरफ़ से हुआ है; उलकम् ईन्ऱ-लोकों के सर्जक; पेर् अन्तणन् पालतो-बड़े ब्राह्मण (ब्रह्मवित) ब्रह्मा की तरफ़ से क्या; आळियान् अतो-चक्रधारी (क्षीर-) सागर-निवासी का है; चन्तिर मवुलि पाल्-चन्द्रमौलि पर; तङ्कुमे कौलो-इसका जन्मा रहता है; अन्तरम् इतु-सितम है यह; अँन्न अळल्किन्ऱार्-समझकर कोप से तपते हैं । ५८१

उनमें कुछ राक्षसों ने बड़े क्रोध के साथ प्रश्न किया कि क्या यह घोर अपराध इन्द्र की तरफ़ से हुआ है ? या विश्व के सृष्टि-कर्ता ब्राह्मण (ब्रह्मवित) द्वारा हो गया ? या क्षीरसागरशायी, चक्रधर श्रीविष्णु के हाथों हो गया है ? (आळि का अर्थ चक्र भी है, सागर भी ।) या चन्द्र-मौलीश्वर पर ही यह लगेगा ? जो हो यह बड़ी आफ़त है ! वे क्रोध से उबले । ५८१

पोरिलान् पुरन्दर नेवल् पूण्डत्तन्, आरुला नेमिया त्ताड्ऱु डोड्ऱुप्पोय्
नीरित्ता नैरुप्पनान् पौरुप्पि तान्निनि, यार्हौलो मीदैत्त वरैहिन् ऱार्शिलर् 582

चिलर्-(और) कुछ; पुरन्तरन्-पुरन्दर; पोर् इलान्-युद्ध छोड़कर; एवल् पूण्डत्तन्-सेवक बन गया; आर् उलाम् नेमियान्-तीक्ष्ण चक्रधारी; आड्ऱुल् तोड्ऱु पोय्-बल में हारकर; नीरित्तान्-(क्षीरसागर का) जलवासी हो गया है; नैरुप्पु

अतान्—अग्नि-समान शिव; पीरूपिणान्—पर्वतवासी हो गया; इति—अब; यार्
कौल् आम् ईतु—यह कौन हो सकता है; अत-ऐसा; अत्रकिन्ऱार्—पूछते । ५८२

और कुछ राक्षसों ने यों कहा— पुरन्दर तो युद्ध से एक दम विरत
होकर रावण का नौकर बन गया है । तीक्ष्ण चक्र के रखनेवाले विष्णु भी
रावण से हारकर (क्षीर-सागर-) जलवासी हो गये । अग्नि-सम शिवजी
(डर से) पर्वत पर चढ़ बैठे हैं । फिर किसने यह काम किया
होगा ? । ५८२

ॐ शैपुदत्	कुरियवर्	तैव्व	रारुळर्
मुपुत्तु	तुलहमु	मडङ्ग	मूडिय
इपुत्तु	तण्डत्तोरक्	कियैव	दन्ऱिदु
अपुत्तु	तण्डत्ता	रारैन्	ऱार्शिलर् 583

चिलर्—(और) कुछ; तैव्वर्—शत्रु; शैपुत्तु उरियवर्—कहाने योग्य;
यार् उळर्—कौन हैं; मु पुत्तु उलकमुम्—तीनों लोकों को; अटङ्क मूटिय—पूर्ण रूप
से जिसने अपने में समा लिया है; इ पुत्तु अण्डत्तोरक्कु—इस तरफ के अण्ड के
वासियों का; इतु इयैवतु अन्ऱु—यह हो सकने का काम नहीं; अ पुत्तु—उस तरफ
के; अण्डत्तोर आम्—अण्ड केवासियों का ही हो सकता है; आर्—कौन हैं (वे);
अन्ऱार्—पूछते । ५८३

और कुछ राक्षसों ने तर्क किया । हमारे रावण का शत्रु कहाने
योग्य है कौन ? आकाश, पाताल और भूलोक को अन्तर्निहित रखनेवाले इस
अण्डगोल का कोई भी यह नहीं कर सकता ? अपराण्ड (बहिरण्ड) में भी
कौन है ? । ५८३

अन्तैये यिरावणन् उङ्गै यैन्ऱपिन्, अन्तैये यैन्ऱडि वणङ्ग लन्ऱिये
उन्तवे यौण्णुमो वीरुव रालिवळ्, तन्तैये यरिन्दत्त डानैन् ऱार्शिलर् 584

चिलर्—कुछ; अन्तैये—यह क्या (आश्चर्य); इरावणन् तङ्कै—रावण की
बहिन; अन्ऱ पिन्—यह जानने के बाद भी; अन्तैये अन्ऱु—माताजी कहकर; अटि
वणङ्कल् इन्ऱि—चरण में विनत हुए बिना; वीरुवराल्—किसी से; उन्तवे यौण्णुमे—
(ऐसी बात) सोची भी जा सकेगी क्या; इवळ्—इसने; तन्तैये तान् अरिन्तत्तळ्—
खुद अपने अंगों को काट लिया है; अन्ऱुत्तर्—बोले । ५८४

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान लगाया । यह क्या आश्चर्य हो गया !
रावण की छोटी बहिन जानने पर कोई भी 'माताजी' कहकर उसके पैरों
पर झुक जायगा । इसको छोड़कर वह ऐसा काम मन में भी नहीं ला
सकेगा । इसलिए अवश्य इसने स्वयं अपने अंग काट लिये हैं । ५८४

शौऱ्पिउन्	दार्क्किदु	तुणिय	वौण्णुमो
इऱ्पिउन्	दार्तमक्	कियैव	शौय्दिलळ्

कऱ्पिऱन्	दाळैन्क्	करन्गी	लामिवळ्
पौऱ्पऱै	याक्किन्न्	पोलैन्	ऱारशिलर् 585

चिलर्-कुछ; चौल् पिऱन्तार्क्कु-कीर्तिमानों को; इतु तुणिय औण्णुमो- (स्त्री के अंग काटने का) यह काम करने योग्य है क्या; इल् पिऱन्तार्क्कु इयैव- कुलीन स्त्री के लिए उचित काम; चैय्तिलळ्-इसने नहीं किया; कऱ्पु इऱन्ताळ्- शील को मारा है; अत्त- (कुछ ऐसा) देखकर; इवळ् पौऱ्पु-इसके रूप को; अर् अक्किन्न्-विकृत कर दिया; करन् कौल् आम्-खर ने ही शायद; अत्तऱार्- बोले। ५८५

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान किया— गौरवपूर्ण कुल में उत्पन्न किसी के लिए भी ऐसा करना सूझ सकता है क्या? (इसलिए मेरा मत है—) इसने कुलीन स्त्रियों के लिए उचित कार्य नहीं किया होगा। अपना शील त्याग दिया होगा। इसलिए खर ने ही इसका अंग-भंग करके रूप को विकृत करा दिया है। ५८५

तत्तुऱ	शिन्दैयर्	तळरुन्	देवरिप्
पित्तुऱ	वल्लरे	पिळैप्पिल्	चूळ्चिचियार्
मुत्तिऱत्	तुलहैयु	मुडिक्क	वण्णुवार्
इत्तिऱम्	वुणर्त्तन	रैन्गिन्	ऱारशिलर् 586

तत्तु उऱ चिन्तैयार्-मन डगमगाकर; तळरुम्-निर्बल रहनेवाले; तेवर-देव; इ पित्तु उऱ वल्लरे-यह पागलपन कर सकनेवाले है क्या; पिळैप्पु इल् चूळ्चिचियार्- अचूक तन्त्रशाली; मु तिरत्तु उलकैयुम्-तीनों तरह (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों को; मुडिक्क औण्णुवार्-मिटाना चाहनेवाले कोई; इ तिऱम् पुणर्त्तन-यह काम कर चुके होंगे; अत्तऱार्-कहा; चिलर्-कुछ ने। ५८६

देव यह पागलपन नहीं कर सकते, क्योंकि उनका मन रावण के डर से हड़बड़ाता रहता है। वे निर्बल बने हुए हैं। अचूक तन्त्रशाली, तीनों लोकों के नाश को चाहनेवाले किसी ने यह काम किया है। —ऐसा कुछ राक्षसों ने कहा। ५८६

इत्तियौर	कऱ्पमुण्	उैन्ति	नन्ऱिये
वनेहळल्	वयङ्गुवाळ्	वीरर्	वल्लरो
पत्तिवरु	कानिडैप्	पळिप्पि	नोन्बुडै
मुत्तिवरर्	वैहळियिन्	मुडिवैन्	ऱारशिलर् 587

चिलर्-(और) कुछ (राक्षसों) ने; इत्ति और कऱ्पम् उण्डु-अब किसी दूसरे कल्प में होगा; अत्तिल् अन्ऱिये-यह बात छोड़कर; वत्तै कळल्-पायल पहने हुए; वयङ्गु वाळ्-प्रकाशमान तलवार धारण किये रहनेवाले; वीरर्-(इस कल्प के) वीर; वल्लरो-समर्थ हैं क्या; पत्ति वरु कान् इटै-शीतल कानन में; पळिप्पु इल् नोन्पु उटै-अनिन्द्य व्रतधारी; मुत्तिवरर्-मुनिवरों के; वैहळियिन् मुटिव-कोप का फल है; अत्तऱार्-कहा। ५८७

ऐसा काम किसी दूसरे कल्प में हो सकता है तो हो सकता है। इस कल्प का कौन पायलधारी असिहस्त होगा जो यह कर सकेगा ? इसलिए यह अवश्य उन मुनिवरों के कोप का फल है, जो ठण्डे जंगल में अनिन्द्य तपोव्रत में लगे हैं। ५८७

करैयुरु	तिरुनहरक्	करुङ्ग	णङ्गैमार्
निरैवळैत्	तळिर्क्कर	नैरित्तु	नोक्किनर्
पिरैयुरु	पालैन्	निलैयिर्	पिन्ऱिय
उरैयित्त	रौरुवर्मु	नौरुवर्	मुन्दिनार् 588

करै अरु तिरुनकर-असीम सम्पत्तिशाली इस श्रीनगर लंका की; करम् कण् नङ्कैमार्-नीलाक्षी स्त्रियों ने; निरै वळै-पंक्तिवद्ध कंकणों से भूषित; तळिर् करम्-पल्लव-सम-हाथों को; नैरित्तु-मलते हुए; नोक्किन्-देखा; पिरै उरु पाल् अत-जामन-लगे दूध की तरह; निलैयिल् पिन्ऱिय-स्थलित (अव्यवस्थित); उरैयित्त-बोली बोलते हुए; औरुवर् मुन् औरुवर्-एक के आगे एक; मुन्तित्तार्-पहले आई। ५८८

राक्षस पुरुषों की यह बात थी। स्त्रियों ने क्या किया ? इसका वर्णन आगे मिलता है। असीम सम्पत्तिशाली उस नगर की वासिनी, काली आँखों की सुन्दर राक्षसियों ने पंक्ति में कंकणों से भूषित अपने हाथ मलते हुए देखा। जामन-लगे दूध के समान उनकी बोली अव्यवस्थित रही। वे एक के पहले एक दौड़ती आयीं। ५८८

मुळवित्तिल्	वीणैयित्त	मुरनल्	याळित्तिल्
तळुविय	कुळलित्तिल्	चङ्गिर्	तारैयिल्
अळुहुर	लन्ऱिये	यैन्ऱु	मिल्लदोर्
अळुहुरल्	पिन्ऱन्दव्	विलङ्गैक्	कत्ऱुरी 589

मुळवित्तिल्-‘मत्तळम्’ (मृदंग-सम बाजे) से; वीणैयिल्-वीणा से; मुरल् याळित्तिल्-सुरीले श्रेष्ठ ‘याळ’ तामक बाद्य से; तळुविय कुळलित्तिल्-संगीतमय बाँसुरी से; चङ्गिल्-शंख बाद्य से; तारैयिल्-लगातार; अळु कुरल्-उठनेवाला नाद; अन्ऱिये-नहीं आया पर; अन्ऱु-उस दिन; अ इलङ्क्कु-उस लंका के लिए; अन्ऱम् इल्लतु ओर्-अभूतपूर्व एक; अळुक्कुरल् पिन्ऱन्तु-रुदन-स्वर उठा। ५८९

साधारण रूप से लंका में ‘मद्दल’ (मृदंग-सा बाजा) सुरीला याळ, संगीतमयी बाँसुरी, शंख —इन बाद्यों का निरन्तर गान सुनाई देता था। पर आज इसके विपरीत, अभूतपूर्व रीति से रुदन का स्वर उठा। ५८९

कळुडे	वळुमुड्	गळित्तु	वैम्बिय
उळुमु	मौरुवळिक्	किडक्क	वोडित्तार्
वैळुमु	नाणुऱ	विरिन्द	कण्णिनर्
तळुऱु	मरुङ्गिन्ऱ	तळीङ्क्कोण्	डेहितार् 590

वैळमुम् नाण् उड-वाढ़ को भी शरमानेवाले; विरिन्त कण्णितर्-अश्रुप्रवाह से भरी आँखों से युक्त स्त्रियाँ; कळ् उटै वळ्ळमुम्-सुरा-भरे प्यालों और; कळित्तु वैम्पिय उळ्ळमुम्-सुरापान से गरम हुए मनों को; और वळि किटक्क-एक ओर रहने देकर; ओटितार्-दौड़ी; तळ्ळु-बल खानेवाली; मरुक्कितर्-कमरों के साथ; तळ्ळोइ कौण्डु-आपस में पकड़ लेते हुए; एकितार्-शूर्पणखा के पास गई। ५६०

स्त्रियाँ सुरापान में लगी रहीं। उन्होंने सुरा का प्याला और पीने से उत्तप्त मन दोनों को एक ओर रख दिया। उनकी आँखें वाढ़ को भी शरमाती हुई अश्रुजल से भर गयीं। वे दौड़ीं। उनकी कमरें लचकीं। एक दूसरे को पकड़ती हुई, सहारा लेती हुई शूर्पणखा के पास गयीं। ५९०

❀ नान्दह	वुळ्वर्मे	नाडुन्	दण्डत्तार्
कान्दिन	मत्तत्तितर्	पुलवि	कैम्मिहच्
चेन्दह	णदिहमुज्	जिवन्दु	नीरुह
वेन्दनुक्	किळैयव	डाळिन्	वीळ्न्दत्तर् 591

नान्तक उळ्वर् मेल-तलवार-कृषक (अपने पतियों) को; नाडुम् तण्डत्तार्-दण्ड देने को आतुर स्त्रियाँ; कान्तिन् मत्तत्तितर्-कोपसंतप्त मन के साथ; पुलवि कै मिक्क-मान के बढ़ने से; चेन्त कण् अतिकमुम् चिवन्तु-लाल आँखों को और अधिक लाल करते हुए; नीर् उक्क-आँसू निकालकर; वेन्तनुक्कु इळैयवळ्-(राक्षस-) राजा की छोटी बहिन के; ताळिल् वीळ्न्दत्तर्-पैरों पर गिरों। ५६१

कुछ स्त्रियाँ अपने तलवार के धनी पतियों से खीझ गयी थीं। वे उनको दण्ड देने की खोज में थीं। उनका मन गरम था और आँखें लाल थीं। अब डर के कारण उनकी आँखें अधिक तीव्र लाल हो गयीं। वे आकर अपने राजा की बहिन शूर्पणखा के पैरों पर गिरों। ५९१

पौडुलै मरहदप् पूह नोवुडच्, चुड्डिय मणिवडन् दूड्गु मूशलिन्
मुड्डिय पाडलै मुत्तिवुड् इड्गितार्, शिड्डिडै यलमरत् तैरुवु चेरहिन्डार् 592

पौन् तलै-सिरों पर स्वर्ण-सदृश फलों से भरे; मरकत पुक्कम्-मरकतवर्ण पुगतरुओं को; नोवु उड-कण्ट देते हुए; चुड्डिय-लपेटकर बँधे हुए; मणि वटम् तूड्कुम्-मणिमय जंजीरों से लटकनेवाले; ऊचलिन्-झूलों में रहकर; मुड्डिय आटलै-उच्चतम वेग से झूलना; मुत्तिवु उड्ड-कोप से छोड़कर; एड्कितार्-दुखित जो हुई; वे; चिड्ड इट्टै अलमर-पतली कमरों को दुखाने देते हुए; तैरुवु चेरकिन्डार्-बीथी में आ गई। ५६२

कुछ स्त्रियाँ पुगतरुओं से बँधे झूलों में बैठकर झूल रही थीं। वे पुगतरु मरकततरु के समान हरे और मनोहारी थे और उनके सिरों पर स्वर्ण-सम फल लगे थे। उन तरुओं को संकट देते हुए स्त्रियों का झूलना उच्चतम दशा पर था। जब उन्होंने शूर्पणखा को देखा तो उन्होंने गुस्से के

साथ झूलना छोड़ा । पतली कमर को कण्ट देती हुई वे वीथी में आ गयीं । ५९२

ॐ अँलुवैत	मलैयैत	वैलुन्द	तोळ्हळैत
तळुविय	वळैततळिर्	नैहिलत्	तामरै
मुळमुहत्	तिरुहयन्	मुत्ति	नालिहळ
पौळिदरच्	चिलरळम्	पौरुमि	विम्मुवार् 593

चिलर्—(और) कुछ (राक्षसी स्त्रियाँ); अँलु अँत—स्तम्भ-सम; मलै अँत—पर्वत-से; अँलुन्त—उन्नत; तोळ्कळै—(अपने पतियों के) कन्धों से; तळुविय—लिपटे रहे; वळै तळिर्—वलय-भूषित पल्लवों (हस्तों) को; नैहिल—अलग करके; तामरै—मुळ मुकत्तु—वदन रूपी पुष्ट कमल पर की; इव कयल्—दो कयलों (आँखों) में; मुत्तिन् आलिकळ—मोती-से अश्रुकण; पौळि तर—भरते हुए; उळम् पौरुमि—मन को दुख से भरकर; विम्मुवार्—सिसकौं । ५९३

अन्य कुछ राक्षस-नारियाँ अपने पतियों के स्तम्भ और पर्वत-सम कन्धों से लिपटी रहीं । जब उन्हें समाचार मिला तो उनके वलय-भूषित पल्लव-सम हाथ ढीले पड़ गए । पुष्ट कमल-सम मुखों में रही कयल मछली-सी आँखों में मोतियों के समान अश्रुकण ढलक आये । उनका मन दुखी हुआ और वे सिसकियाँ भरने लगीं । ५९३

नैय्न्तिलैय	वेलरश	नेरुनरै	यिल्लान्
इन्तिलैयु	णरन्दबोळु	दैन्तिलैय	तैन्ता
मैन्तिलैने	डुङ्गण्मळै	वानिलैय	वाहप्
पौय्न्तिलैम	रुङ्गितर्	पुलम्बितर्	पुरण्डार् 594

नेरुनरै इल्लान्—टक्कर लेनेवाला जिसकी कोई नहीं रहा; नैय् निलैय—घृत-लगे; वेल् अरचन्—भाले का धारण करनेवाला राजा (रावण); इ निलै उणरन्त पौळुतु—(शूर्पणखा की) यह स्थिति जब जानेगा; अँ निलैयन् अँन्ता—किस स्थिति का होगा, यह सोचकर; मै निलै—अजनयुक्त; नैटुम् कण्—आयत आँखों के; मळै वान् निलैयतु आक—जल-वर्षक मेघ की-सी स्थिति में आते; पौय् निलै मरुङ्कितर्—मिथ्या-कटि स्त्रियाँ; पुरण्डार् पुलम्बितर्—लोटीं और विलपीं । ५९४

कुछ स्त्रियों के मन में यह प्रश्न उठा कि अजातशत्रु धृतरंजित भाले के स्वामी, रावण को जब शूर्पणखा की स्थिति मालूम होगी तो उसकी स्थिति क्या होगी ? तो उनकी काजल-लगी दीर्घ आँखें जलवर्षक मेघों के समान हो गयीं । नाम-मात्र की कटि से युक्त वे भूमि पर लोटती हुई विलाप करने लगीं । ५९४

मनन्दलै	वरुङ्गन्तलि	निन्शुवै	मरन्दार्
कन्तन्दलै	वरुङ्गुळल्	शरिन्दुहलै	शोर

नतन्दलेय	कौङ्गैह	डदुम्बिड	नडन्दार्
अनन्दलिळ	मङ्गैय	रळुङ्गिययर्	हिन्डार् 595

अतन्तल् इळ मङ्कैयर्-सोती रहीं (जो) वे कुछ तरणी रमणियाँ; मतम् तलै-मन में इच्छा करने से; वरु-होनेवाले; कतवु इन्नु चुवै-सपनों का मधुर रस; मङ्गन्तार्-भूलकर; कतम् तलै वरुम्-घन-सदृश विशिष्ट; कुळल् चरिन्तु-केश को खुलकर बिखरने देते हुए; कलै चोर-वस्त्र को खिसकने देते हुए; नतम् तलैय-पृथुल; कौङ्कैकळ्-स्तनों को; ततुम्पिट-उछलने देते हुए; नटन्तार्-पैदल आई; अळुङ्कि-दुखी होकर; अयर्किन्डार्-श्रांत हुई। ५६५

कुछ स्त्रियाँ निद्रा कर रही थीं। उनका मन आनन्द के साथ स्वप्न देखने लगा था। जब उन्हें यह समाचार मिला तो स्वप्न का रस भूलकर उठीं। मेघ-सम केश खुलकर बिखर गये। वस्त्र भी ढीले हो खिसकने लग गये। जब वे पैदल चलने लगीं तो उनके बड़े-बड़े स्तन उछलने लगे। वे बहुत दुखी हुई। ५९५

अङ्गैयि	नरन्गयिलै	कौण्डदिऱ	लैयन्
तङ्गैनिलै	चिङ्गिदुहो	लैन्ऱुतळर्	हिन्डार्
कौङ्गैयिणै	शङ्गैयिन्	मलैन्दुकुलै	कोवै
मङ्गैयर्ह	णङ्गैयडि	वन्डुविळ्	हिन्डार् 596

कुलै कोतै मङ्कैयर्कळ्-स्त्रियाँ, जिनके केश छूटे और बिखरे थे; अम् कैयिल्-अपनी हथेलियों में; अरन्तु कयिलै कौण्ट-हर के कैलास को जिसने उखाड़ा था, उस; तिरल् ऐयन्-पराक्रमी राजा की; तङ्कै निलै-बहिन की दशा; इङ्कु इतु कौल्-यहाँ यह हुई तो; अन्ऱु तळर्किन्डार्-यह सोचकर बलान्त हुई; कौङ्कै इणै-स्तन-द्वय पर; चैम् कैयिल् मलैन्तु-अपने लाल हाथों से पीटती हुई; नङ्कै अदि वन्तु-उस नायिका के चरणों पर आकर; विळुकिन्डार्-गिरती है। ५६६

कुछ स्त्रियाँ, जिनके केश खुले हुए बिखरे थे; अपनी छाती पीटते हुए रोने लगी। उन्हें दुख इस बात का था कि अपनी हथेली में जिसने हर के कैलास पर्वत को उठाया था, उस पराक्रमी स्वामी की बहिन की भी यह हालत हो गयी। रोती हुई आकर वे नायिका के पैरों पर गिरीं। ५९६

इलङ्गैयिल्	विलङ्गुमिवै	यैय्दलिल	वैन्ऱुम्
वलङ्गैयि	लिलङ्गुमयिन्	मन्ऱुनुळ	नैन्ऱा
नलङ्गैयि	लहन्ऱुदुहो	नम्मितेन	नैन्दार्
कलङ्गलिल्	करुङ्गणिणै	वारिहलुळ	हिन्डार् 597

वलम् कैयिल् इलङ्कुम् अयिल्-दाहिने हाथ में प्रकाशमान भाला रखनेवाला; मन्ऱुन्तु उळन्-राजा है; अन्ऱा-यह सोचकर (उर से); अन्ऱुम्-सदा; इलङ्कैयिल्-लंका के; विलङ्कुम्-जानवर भी; इवै अयैतल् इल-ऐसी आकृत के भागी नहीं होते थे; नम्मित्-हमसे; नलम् कैयिल् अकन्ऱुतु कौल्-भलाई छोड़कर अलग हो गई

शायद; अँत-यह सोचकर; नैन्तार्-दुख से क्षीण होती हुई; कलङ्कलिल्-व्यथा के कारण; करुम् कण् इणै-काली दोनों आँखों से; वारि-जल को; कलुङ्किन्तुआर-गिराती हैं। ५६७

अपने दाहिने हाथ में भाला लिये हुए राजा रावण विद्यमान था। उसके कारण लंका में किसी जानवर पर भी ऐसा संकट नहीं आया था। 'अब क्या हमारी सुरक्षितता चली गयी?' यह सोचकर वे व्यथित हुई। व्याकुलता के कारण उनकी काली आँखों के जोड़ों में अश्रु भर आया। ५९७

✽ अँन्त्रितैय	वन्रुय	रिलङ्गैनह	रैय्द
निन्त्रव	रिरुन्दवरी	डोडुनैरि	तेडक्
कुन्त्रिन्डि	वन्रुपडि	कौण्डर्लन	मन्तन्
पौन्त्रिणि	पौलन्गळल्	विळुन्तत्तळ्	पुरण्डाळ् 598

अँन्त्र इतैय-ऐसा, ऐसा; इलङ्कै नकर-लंका नगर; वन् तुयर् अँय्त-कठोर दुख को प्राप्त हुआ, तब; निन्त्रवर् इरुन्तवर् ओटु-सभा में जो खड़े रहे वे, जो बैठे रहे उनके साथ; ओटु नैरि तेट-भागने का मार्ग देखने लगे; कुन्त्रिन् अटि वन्तु पटि-पर्वत के तल में आकर जमनेवाले; कौण्डल् अँत-घन के समान; मन्तन्-(राक्षस) राजा रावण के; पौन् त्रिणि-स्वर्णमय; पौलन् कळल्-सुन्दर पायल से अलंकृत पैरों पर; विळुन्तत्तळ्-गिरी; पुरण्डाळ्-लोटी (शूर्पणखा)। ५६८

इस तरह लंका का नगर ही व्याकुलता से भर गया। तब रावण की सभा में शूर्पणखा आयी और रावण के स्वर्णमय पायलधारी चरणों पर गिरी। जब वह वहाँ आयी तो सभा में जो खड़े रहे और जो बैठे रहे, सभी भागने का मार्ग ढूँढ़ने लगे। जब वह रावण के पैरों पर गिरी, तब पर्वत के तल में मेघ आकर पड़ा ही, ऐसा लगा। वह गिरकर लोटने लगी। ५९८

मूडिय	तिरुट्पडल	मूवुलहु	मुड्दुच्
चेडनुम्	वैरुक्कोडु	शिरत्तीहै	नैळित्तान्
आडिन	कुलक्किरि	यरक्कनु	मयिरत्तान्
ओडिन	तिशैक्करिह	ळुम्बरु	मौळित्तार् 599

मू उलकुम् मुड्दु-तीनों लोकों में सर्वत्र; इरुळ् पटलम् मूटियतु-अँधेरा-पटल ढँक गया; चेडनुम्-शेषनाग ने भी; वैरु कोटु-डरकर; चिरम् तौकै-सिरों की राशि को; नैळित्तान्-लचकाया; कुल किरि आटित्त-कुलपर्वत हिल उठे; अरुक्कतुम् अयिरत्तान्-सूर्यदेव भी ठिठके; तिचै करिकळ्-दिग्गज; ओटित्त-भागे; उम्परुम्-देव भी; मौळित्तार्-छिप गये। ५६९

तब तीनों लोकों को अन्धकार ढाँप गया। शेषनाग ने डरकर अपने सिरों के समूह को लचका दिया। (कैलास, हिमालय, मन्दर, विन्ध्य,

निपट; हेमकूट, नील, गन्धमादन नाम की) सातों कुलगिरियाँ हिल गयीं । सूर्य भी भयभीत और संशयसहित हो गया । दिग्गज भाग गये और देव भी छिप गये । ५९९

विरिन्दवल	यङ्गणमिडै	तोळ्वडर	मोदिट्
टैरिन्दत्तय	नङ्गळैयिर्	रिन्बुड	मिमैप्प
नैरिन्दपुरु	वङ्गण्डु	नैर्ऱियिने	मुर्ऱुत्त-
तिरिन्दपुव	नङ्गळ्विने	तेवरु	मयिर्त्तार् 600

विरिन्त वलयङ्कळ् मिटै-विशाल वलयों से लते; तोळ पटर-कन्धे फूल उठे, तव; मोतु इट्टु-ऊपर उठती; अैरिन्त नयत्तङ्कळ्-ज्वाला के साथ जलनेवाली लाल आँखें; अैयिर्ऱिन् पुर्ऱम्-वक्रदाँतों के वाजू में; इमैप्प-प्रकाश फैलाती तो; नैरिन्त पुरुवङ्कळ्-ढेढ़ी हुई भौंहें; नैट्टु नैर्ऱियिने-लम्बे भालों को; मुर्ऱु-ढँक गई, तो; पुवत्तङ्कळ्-सारे भुवन; तिरिन्त-गति बदलकर घूम उठे; विने-विपरीत कार्य देख; तेवरुम् अयिर्त्तार्-देवता लोग भी भय करने लगे । ६००

रावण के कन्धे, जिन पर वलय लगे थे, फूल उठे । उसकी आँखों से जो ज्वाला-सी उठी उसका प्रकाश वक्रदन्तों के वाजुओं में फैला । घनी भौंहें तनीं और भाल पर फैल गयीं । सारे भुवन डगमगा गये । यह विपरीत स्थिति देखकर देव सिहर उठे । ६००

तैर्ऱिशै	नमन्ऱुनौडु	तेवरुहुल	मैल्लाम्
इन्ऱिदि	वन्दतु	नमक्कैत	विरुन्द
निन्ऱुयिर्	नडुङ्गवुडल्	विम्मनिलै	यिल्ला
दौन्ऱुमुर्	याडलिल	रुम्बरित्तौ	डिम्बर् 601

तैन् तिवै नमन् तन् ओट्टु-दक्षिणी दिशा के (अधिदेवता) यम के साथ; तेवरु कुलम् अैल्लाम्-देवों के कुल सब; नमक्कु-हमारा; इन्ऱु-आज; इऱुति वन्ततु-अन्त आ गया; अैत-सोचकर; इरुन्त-रहे; उम्पर् ओट्टु-देवों के साथ; इम्पर्-इस लोक के वासी भी; उयिर् नटुङ्क-काँपते प्राणों के साथ; निन्ऱु-खड़े होकर; उटल् विम्म-शरीर-स्पन्दन के साथ; निलै निल्लालु-कहीं स्थिर न रह सके; औन्ऱुम् उरै आटल् इलर्-एक शब्द भी नहीं बोल सके । ६०१

दक्षिण दिशा के यम से लेकर सारे देवता भयभीत हो गये कि आज हमारा अन्त आ गया । वे खड़े रह गये । आकाशवासी के साथ इहलोक-वासी भी काँपने लगे । उनके प्राण सूख गये, शरीर काँपने लगे और वे अस्थिर और मौन हो रहे । ६०१

ॐ मडित्तपिल	वायुहडौरुम्	वन्दुबुहै	मुन्दत्
तुडित्ततौडर्	मोशैहळ्	शुरूक्कोळ	वुयिर्प्पक्
कडित्तहदिर्	वाळैयिर्	मिन्कञ्जल	मेहत्
तिडित्तवुरु	मौत्तुरि	यावर्शय	लैन्ऱान् 602

मदित्त पिल वायकळ् तौरुम्—(कोप से रावण ने जिनके) अधरों को मोड़कर दाँतों से दबा रखा था, उन मुखों में; पुकै वन्तु मुन्त-धुआँ निकल रहा था; तुदित्त-फड़कती; तौटर् मोचैकळ्-मूँछों की शृंखला को; चुड्कफौळ-झुलसाते (काला बनाते) हुए; उयिर्प्प-साँसें छोड़ रहा था; कटित्त-जिनको पीसता था; कतिर् वाळ् अयिड्-प्रकाशमय तलवार-सम वक्र (या खड्ग) दाँतों के; मिन् कजल-विद्युत-से चमकते; मेकत्तु इदित्त उरुम् औत्तु-मेघ में उठनेवाले वज्र-नाद के समान; उरडि-स्वर में बोलते हुए; यावर् चैयल्-किसका काम है; अँन्रान्-पूछा । ६०२

रावण ओंठ चबा रहा था । उन बिल-समान मुखों से धुआँ उठ रहा था । उसकी मूँछें पंक्ति में हिल रही थीं । और उनको झुलसाते हुए वह गरम साँसें छोड़ रहा था । उसके वक्र दाँत, जो ओंठों को दबा रहे थे, बिजली के समान चमक रहे थे । मेघ में उठनेवाले वज्र के से स्वर में उसने शूर्पणखा से पूछा कि यह किसका काम है ? । ६०२

❖ कानिडै	यडैन्दुबुवि	कावल्लुबुरि	हिन्त्रार्
मीनुडै	नैडुङ्गोडियि	नोननैयर्	मेल्हीळ्
ऊनुडै	युडम्बुडैमै	योरुवमै	यिल्ला
मानिडर्	तडिन्दनर्हळ्	वाळुरुवि	यँन्रान् 603

पुवि कावल् पुरिकिन्त्रार्-भूपालक; मीन् उटै नैटुम् कौटियितोन्-मकरांकित लम्बी ध्वजा वाले के; अतैयर्-समान रूप रखनेवाले; मेल् कीळ्-ऊपर और नीचे के लोकों में; ऊन् उटै-मांस सहित; उटम्पु उटैमैयोर्-शरीरधारी; ओर् उवमै इल्ला-अनुपम; मानिडर्-मनुष्य; कान् इटै अटैन्तु-कानन में आकर; वाळ् उरुवि-तलवार चोचकर; तडिन्दनर्कळ्-काट लिया; अँन्रान्-कहा । ६०३

शूर्पणखा ने उत्तर दिया कि वे भूमि के पालक राजकुमार हैं । मकरकेतु के समान रूपवान हैं । ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों लोकों में वे मांसधारी मनुष्य अनुपम हैं । वे वन में आये हैं और उन्होंने कटार निकालकर मेरा अंग-भंग कर दिया । ६०३

❖ शैय्दन्तर्हण्	मानिड	रँनत्तिशै	यनैत्तुम्
अँय्दनहै	वन्ददैरि	शिन्दिनह	णैल्लाम्
नोय्दवर्	वलित्तौळि	नुवन्त्रुमौळि	योन्त्रा
पौय्तविर्	पयत्तैयौळि	पुक्कपह	लँन्रान् 604

मानिडर् चैय्तनर्कळ् अँन्र-मानवों ने किया, यह कहने पर; तिचै अत्तैत्तुम् अँय्त-विशाओं भर में गुँजे, ऐसा; नकै-हास; वन्तु-आया; कण् अँल्लाम्-सभी आँखों ने; अँरि-आग; चिन्तित्त-वरसायी; नोय्तवर्-अल्प (मानव); वलि तौळिल्-बलवान का कार्य; नुवन्त्रु मौळि-तुम्हारा कहा वचन; ओन्त्रा-मेल नहीं खाता; पौय्तविर्-मूठ छोड़ा; पयत्तै अँळि-भय त्यागो; पुक्क-जो हुआ; पुक्ल्-बताओ (सच); अँन्रान्-कहा (रावण ने) । ६०४

मनुष्यों ने यह काम किया—यह सुनकर रावण को हँसी आ गयी। उसकी गूँज आठों दिशाओं में भर उठी। आँखों ने आग उगली। उसने शूर्पणखा को डाँटा कि क्या बकती हो? वे दुर्बल मानव हैं और यह काम बड़े वीरों का काम है। दोनों में मेल नहीं है। असत्य कहना छोड़ो। भय के कारण ऐसा कहती हो तो भय त्याग दो। जो हुआ वह सच-सच बताओ। ६०४

मन्मदतै	यीप्परमणि	मेत्तिवड	मेरुत्
तन्मद	नळिप्परदिर	डोळिन्वलि	तन्नाल्
अँन्नदने	यिप्पोळु	दिशैप्पदुल	हेळिन्
नन्मदम	ळिप्परोरि	मैप्पित्ति	विल्लाल् 605

मणि मेत्ति—सुन्दर रूप में; मन्मदतै औप्पर—मन्मथ की समानता करते हैं; तिरळ तोळिन् वलि तन्नाल्—पुष्ट भुज-बल के पराक्रम में; वट मेरु तन्—उत्तर के मेरु का; मतन् अळिप्पर—घमण्ड चूर कर देंगे; विल्लाल्—धनुर्युद्ध में; ओर् इमैप्पिल्—एक पल में; उलकु एळिन्—सातों लोकों का; नल् मतन्—बड़ा बल; नत्ति ओळिप्पर—खुब नष्ट कर सकेंगे; अतनै—उसको; इप्पोळुतु—अब; इचैप्पतु अँन्—कहना कैसा। ६०५

शूर्पणखा फिर उनके सौन्दर्य का वर्णन करने लगी। वे रूप में मन्मथ हैं। पुष्ट कन्धों के बल में मेरु का गर्व चूर करनेवाले हैं। एक ही धनु के बल से एक ही पल में वे सातों लोकों का बल मिटा सकनेवाले हैं। हा! हा! उसका अब कैसा वर्णन किया जायगा? ६०५

वन्दनैमु	नित्तलैवर्	पालुडैयर्	वात्तत्
तिन्दुविन्मु	हत्तरैरि	नीरिल्लु	नाळक्
कन्दमल	रैप्पोरुवु	कण्णर्हळल्	कैयर्
अन्दमिड	वत्तौळिल	रारवरे	यीप्पार् 606

मुत्ति तलैवर् पाल्—मुनिवरों के प्रति; वन्ततै उडैयर्—पूजा का भाव जो रखते हैं; वात्ततु इन्नुविन् मुक्तुत्तर्—आकाश के चन्द्र के समान मुख वाले; अँरि—तरंगकुल; नीरिल्—जलाशय में; अँळु—उत्पन्न; नाळ—नालसहित; कन्त मलरै—सुवासपूर्ण (कमल-) पुष्प की; पोर्रुवु—समानता करनेवाली; कण्णर्—आँखों वाले; कळल्—चरण वाले; कैयर्—हाथों वाले; अन्तम् इल्—असीम; तव तौळिलर्—तपस्या-कार्य में लीन; आर् अवरै औप्पार्—कौन उनकी समानता करेगा। ६०६

शूर्पणखा ने आगे कहा कि वे मुनिवरों के प्रति श्रद्धाभाव रखनेवाले हैं। आकाश के चन्द्र के समान उनके मुख प्रकाशमान और मनोरम हैं। उनकी आँखें तरंग-भरे जलाशयों में विकसित नालयुक्त सुगंधित-कमल के समान हैं। हा! हा! वे कमल-हस्त हैं और कमल-चरण हैं। अपार

तप के कर्म में लगे हुए हैं। उनकी उपमा कहाँ ढूँढ़ी जाय ? कौन उनकी तुलना कर सकेंगे ? । ६०६

वङ्कलैयर्	वारहळलर्	मारबिलणि	नूलर्
विङ्कलैयर्	वेदमुउं	नावर्तनि	मैय्यर्
उङ्कलैय	रुन्तैयौर्दु	हट्टुणैयु	मुन्तार्
शौङ्कलैयै	तत्तौलैवि	रुणिहळ	शुमन्दार् 607

वङ्कलैयर्—वल्कल-वसन; वारहळलर्—लम्बी पायलधारी; मारबिल् अणि—वक्ष में धृत; नूलर्—यज्ञोपवीत वाले; विल् कलैयर्—धनुर्विद्या-विशारद; वेतम् उउं नावर्—वेदाश्रय-जिह्वा; तति मैय्यर्—अनुपम सत्यसंध; उत् कलैयर्—कला-श्रेष्ठ; चौल् कलै अंत-शब्द-विद्या के समान; तौलैवु इल्—अक्षय; तूणिकळ चुमन्तार्—तूणीर रखनेवाले; उन्तै और तुकळ तुणैयुम्—तुमको एक धूलि के समान भी; उन्तार्—नहीं समझते । ६०७

वे वल्कलवसन हैं। पायलधारी हैं। उनके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभायमान हैं। युद्धविद्याविशारद हैं। उनकी जीभ वेदों का आश्रय हैं। अनुपम सत्यसंध हैं। कलाओं में उत्कृष्ट निपुण हैं। शब्द-शास्त्र के समान उनके तूणीर अक्षय हैं। वे तुमको धूलि के समान भी नहीं मानेंगे । ६०७

✽ माररुळ	रेयिरुव	रोरुयिरिन्	वाळ्वार्
वीररुळ	रेयवरिन्	विल्लिन्वलि	वल्लार्
आरौरुव	रन्तवरै	यौप्पवरह	ळैया
ओरौरुव	रेमुदल्वर्	मूवरैयु	मौप्पार् 608

ऐया—महिमावान; इरुवर् मारर् उळरे—दो मार देव है क्या; ओर् उयिरिन् वाळ्वार्—एकप्राण हो रहते हैं; विल् अमरिल्—धनुर्विद्या में; वल्लार्—कुशल; अवरिन् वीरर्—उनसे बढ़कर वीर; उळरे—है क्या; अन्तवरै औप्पवरकळ्—उनकी समानता करनेवाले; ओरुवर् आर्—कोई एक कौन हैं; ओर् ओरुवरे—उनमें एक-एक; मुतल्वर् मूवरैयुम्—प्रधान त्रिदेवों की; औप्पार्—समानता करेंगे । ६०८

हे मेरे तात, प्रभु ! कहीं मन्मथ दो है क्या ? वे एक प्राण हो रहते हैं। धनुर्विद्या में वे बड़े ही समर्थ हैं। उनसे बढ़कर कोई वीर भी है क्या ? उनकी तुलना करनेवाले कोई कहाँ हैं ? उनमें एक-एक त्रिदेवों की समानता कर सकेंगे । ६०८

✽ आरुमन्	मञ्जिन	मरक्करै	यैन्चैन्
रेरुनैरि	यन्दण	रियम्बवुल	हैल्लाम्
वेरुमैनु	नुङ्गळहुलम्	वेरौडु	मडङ्गक्
कौरुमैन्	मुन्दैयौरु	शूळुडु	कौण्डार् 609

एऊ नैरि अन्तणर्-उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते जानेवाले ब्राह्मणों (ऋषियों) ने; चैन्ऱु-उनके पास जाकर; अरक्करे-राक्षसों को; आऊम् मन्तम्-शान्तमन वाले हम; अञ्चित्तम्-डरते हैं; अँत इयम्प-यह कहा, तो; उलकु अँलाम्-सारे लोक; वेऊम् अँतुम्-हराकर मिटा देंगे, कहनेवाले; उङ्कळ् कुलम्-तुम्हारे कुल का; अटङ्क-सारा; वेर् ओटुम् कोऊम् अँत-समूल नाश करेंगे, ऐसा; मुन्त-पहले; ओरू चूळ्-एक शपथ; उरुवू कौण्टार्-कर ली है। ६०६

उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते चलनेवाले मुनिवरों ने उन मानवों के पास जाकर बताया कि हम शान्त-प्रकृति हैं और हमें इन राक्षसों से भय है। तब उन्होंने शपथ खायी कि 'संसार का नाश कर देंगे'—यह कहनेवाले राक्षसों के कुल को ही हम समूल नाश कर देंगे। पहले की हुई उस शपथ से वे बद्ध हैं। ६०९

❀ तरावलय	नेमियुळ	वन्ऱयर्	दप्पेर्प्
परावरु	नलत्तोरुवन्	मैन्दर्पळि	यिल्लार्
विरावरुम्	वन्तत्तवन्	विळम्बवुऱै	हिन्ऱार्
इरामनु	मिलक्कुवन्	मैन्वर्पेय	रैन्ऱाळ् 610

तरा वलयम्-भूमण्डल का; नेमि उळवन्-चक्रवर्ती राजा; तयर्त पेर्-दशरथ नाम का; परावरु नलत्तु ओरुवन्-प्रशंसनीय गुण वाला एक; मैन्दर्-उसके पुत्र; पळि इल्लार्-अनिन्द्य; अवन् विळम्प-उसके कहने पर; विरावु अरु वत्तु-वास के लिए अयोग्य कानन में; उरैक्किन्ऱार्-रहते हैं; पेंयर्-नाम; इरामनुम् इलक्कुवन्-श्रीराम और लक्ष्मण; अँन्पर्-कहते हैं; अँन्ऱाळ्-कहा (शूर्पणखा ने)। ६१०

इस भूमण्डल का राजा, चक्रवर्ती दशरथ नाम का प्रशंसनीय गुणी था। ये उस श्रेष्ठ राजा के पुत्र हैं। ये अनिन्द्य हैं। दशरथ की आज्ञा से वे इस वन में आकर ठहरते हैं, जहाँ स्वच्छन्द होकर वास करना कठिन है। उनके नाम राम और लक्ष्मण हैं।—शूर्पणखा ने अपनी बात समाप्त की। ६१०

मरुन्दनैय	तङ्गैमणि	नाशिवडि	वाळाल्
अरिन्दवरु	मानिड	रिन्नुमुयिर्	वाळ्वार्
विरुन्दनैय	वाळौडुम्	विळित्तिरैयुम्	वैळ्हा
दिरुन्दन	तिरावणन्	मिन्नुयिर्ही	डिन्नुम् 611

मरुन्नु अतैय तङ्कै-अमृत-सम छोटी बहिन को; मणि नाचि-सुन्दर नासिका को; वटि वाळाल्-तीक्ष्ण तलवार से; अरिन्तवरु मानिड-काटनेवाले भी मानव हैं; अरिन्नुम्-यह विदित होने पर भी; उयिर् वाळ्वार्-जीवित हैं; इरावणनुम्-रावण भी; विरुन्नु अतैय वाळ् ओटुम्-नई तलवार के साथ; विळित्तु-ताकते हुए; इरैयुम् वैळ्कातु-किंचित भी लाज का अनुभव किये बिना; इन् उयिर् कौटु-अपने प्यारे प्राणी के साथ; इरुन्तत्तन्-चुप रह गया। ६११

रावण को यह सब सुनकर बड़ा बुरा लगा । वह कहने लगा— मेरी अमृत-सी प्यारी वहिन की सुन्दर नासिका को तीक्ष्ण असि से काटनेवाले हैं मनुष्य ! यह विदित होने पर भी वे जीवित हैं ! क्या अपमान है ! रावण भी अपनी नवीन तलवार के साथ, वीसों आँखों से देखता हुआ, विना शरम खाये प्यारे प्राण लेकर रहता है ! । ६११

❀ कौडूमदु	मुड्डिवलि	यालरशु	कौण्डेन्
उड्डपयन्	मड्डिदुहौ	लामुरै	यिडन्देन्
मुड्डवुल	हत्तुमुदल्	वीरर्	मुडियैल्लाम्
अड्डपीळु	दिड्डिदुपी	रुन्दुमेन्	लामो 612

कौडूम् अतु मुड्डि-विजय का पक्का बनाकर; वलियाल्-अपनी शक्ति से; अरच्चु कौण्डेन्-त्रिलोकाधिपत्य अपनाया (मैंने); उड्ड पयन्-उसका प्राप्त फल; इतु कौल् आम-यही है क्या; उरै इडन्तेन्-(गौरव-) गाथा खोई; मुड्ड उलकत्तु-सारे विश्व में; मुत्तल् वीरर्-पहले सिरे के वीरों के; मुटि अल्लाम्-सिरों को; अड्डपीळु-जब काटा गया तब; इड्ड इतु-जो गया यह यश; पीरुन्तुम् अत्तल् आमो-फिर मिलेगा, यह माना जा सकेगा । ६१२

मैंने अपनी विजय-यात्रा पूरी करके अपने पराक्रम के बल पर तीनों लोकों का राज पाया ! उसका यही फल रहा क्या ? हाय ! यश मेरा नष्ट हो गया ! सभी लोकों के सारे प्रथम श्रेणी के वीरों के सिर काट भी लूँ तो यह नष्ट हुआ यश फिर मिल सकेगा क्या ? । ६१२

❀ मूळमुळ	दायपळि	यैन्वयिन्	मुडित्तोर्
आळमुळ	वामवर्द	मारुयिर्	मुण्डाम्
वाळमुळ	दोदविड	मुण्डवन्	वळङ्गु
नाळमुळ	तोळमुळ	नानुमुळै	तन्डो 613

अैन् वयिन्-मेरे प्रति; उळतु आय-स्थायी; मूळम् पळि-और व्यापी अपयश का काम; मुडित्तोर्-करनेवाले; आळम् उळ-मनुष्य अब भी है; अवर् तम् आर् उयिर् उण्टाम्-उनके प्यारे प्राण अब भी है; वाळम् उळतु-(चन्द्रहास-) तलवार भी है; ओतम् विटम् उण्टवन्-समुद्र का विष के भोक्ता शिव के द्वारा; वळङ्कु-दत्त; नाळम् उळ-आयु के दिन भी हैं; तोळम् उळ-भुजाएँ हैं; नानुम् उळैन् अन्डो-मैं भी रहता हूँ । ६१३

वे मनुष्य भी हैं जो मेरे प्रति इतना बड़ा अपराध, मेरे इतने बड़े अपयश का काम कर चुके । और उनके प्राण अब भी बचे हैं ! मेरे हाथ मे चन्द्रहास भी है । समुद्र से निकला विष जिन्होंने खाया, उन शिवजी से वर के रूप में दत्त आयु भी है । मेरे कन्धे भी हैं । मैं भी जीवित हूँ न ! । ६१३

✽ पौतुउ	वुडुपळि	पुहुन्ददेंत	नाणित्
तत्तुख	देंन्तैमन	नेतळर	लम्मा
अंतुय	रुनक्कुळ	दिनिप्पळि	शुमक्कप्
पत्तुळ	तलैप्पहुदि	तोळ्हळ्	पलवन्ऱो 614

मतते-रे मन; उटल् पौतु उउ-मेरे शरीर को विद्ध करते हुए; पळि पुकुन्तु-अपयश लग गया; अंत-यह सोचकर; नाणि-शरमाकर; तत्तुउवतु-हड़बड़ाने से; अंतै-क्यों; इति तळरल्-अव मत मुरझा; अंतुय-कौन सा दुःख; उतक्कु उळतु-तुम्हें है; इति-आगे; पळि चुमक्क-कलंक ढोने के लिए; तलै पकुति-मेरे सिर के अंश; पत्तु उळतु-दस हैं; तोळ्कळ् पल अन्ऱो-कन्धे भी अनेक (बीस) हैं न। ६१४

रे मन ! यह अपयश ऐसा आकर लगा है कि मेरा शरीर ही विद्ध हो गया। यह सोचकर तुम क्यों शरमाकर हड़बड़ाते हो ? तुम दुख से निर्वल मत हो जाओ। तुम्हारा क्या दुख है ? अपयश ढोने के लिए मेरे दस सिर हैं। कन्धे तो अनेक हैं न ! । ६१४

✽ अन्ऱै	शैयानहै	शैयावैरि	विळिप्पान्
वन्ऱणैयि	लाविरुवर्	मानिडरै	वाळाल्
कौन्ऱिलरुह	ळानैडिय	कुन्ऱुडैय	कात्तिल्
निन्ऱकर	त्तेमुदलि	नोर्निरुद	रैन्ऱान् 615

अन्ऱ उरै चैया-यह (स्वनिवा में) कहकर; नर्क चैया-हंसकर; अरि विळिप्पान्-आग के समान दृष्टि चलाते हुए; नैटिय कुन्ऱ-उच्च पर्वत; उटैय कात्तिल्-जहाँ रहते हैं, उस वन में; निन्ऱ-रहनेवाले; करते मुतलितोर् निरुतर्-खर आवि राक्षसों ने; वन्ऱुणै इला-कठोर बल से रहित; इरुवर् मात्तिडरै-दो मनुष्यों को; वाळाल्-अपनी तलवार से; कौन्ऱिलरुक्का-नहीं मारा था क्या; अन्ऱान्-यह पूछा। ६१५

इस तरह (अपनी निन्दा का वचन) कहता हुआ रावण हँस उठा। आग-सी दृष्टि करते हुए रावण ने शूर्पणखा से पूछा कि उस कानन में, जिसमें उन्नत पर्वत हैं, खर आदि राक्षस थे न ? क्या उन्होंने इन निर्वल और असहाय मानवों का अपनी तलवार से वध नहीं किया ? । ६१५

अऱुव	नुरैत्त	लोडु	मळुदिलि	यरुविक्	कण्णाळ्
अऱुडिय	वयिऱुळ्	पारि	तिडैविळुन्	देङ्गु	हिन्ऱाळ्
शुऱुमुन्	दौलैन्द	वैय	नौय्दैनच्	चुमन्द	कैयाळ्
उऱुडु	तैरियुम्	वण्ण	मौरुवहै	युरैक्क	लुऱुऱाळ् 616

अऱु अवन्ऱ उरैत्तलोडुम्-वैसा उसके कहने पर; अळुतु इळि-रोने से बहनेवाले; अरुवि कण्णाळ्-सरिता-सम अश्रु-भरी आँखों के साथ; अऱुडिय वयिऱुळ्-पेट पीटती (हुई); पारिन् इटै-भूमि पर; वौळुन्तु-गिरकर; एङ्कुकिन्ऱाळ्-रोती

(हुई शूर्पणखा); ऐय-प्रभु; चुर्रमुम्-हमारे बन्धु-बान्धव सभी; नीयुतु तीलैन्तु-अनायास मिट गये; अँत-कहकर; चुमन्त कयाळ-सिर पर हाथ धरकर; उर्रुतु तैरियुम् वण्णम्-वृत्तान्त समझाते हुए; ओरु वकै-एक प्रकार से; उरैक्कल् उर्राळ्-बताने लगी । ६१६

जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब शूर्पणखा ने आँखों से सरिता के समान अश्रु की धार बहायी । पेट को पीटते हुए भूमि पर गिरी । खूब रोती हुई उसने कहा कि सारा परिवार ही अनायास मिट गया । यह कहकर उसने अपने हाथ सिर पर रख लिये । सारा वृत्तान्त समझाते हुए वह एक प्रकार से कहने लगी । ६१६

शील्लैन्नु वायिर् केट्टार् तौडर्न्दळ् शेनै योडुम्
कल्लैन्नु वौलिथिर् चैन्नु करन्मुदर् काळै वीरर्
अल्लौन्नु कमलच् चैङ्ग णिरामनैन् इयैन्द वेन्दल्
विल्लौन्नु कडिहै मून्नु लेरुत्तिन् विण्णि लैन्नाळ् 617

चौल्-बात; अँत तन् वायिल् केट्टार्-मेरे मुख से सुनकर; तौडर्नु अँळु-साथ उठी; चैन् ओट्टुम्-सेना के साथ; कल् अँन्नु ओलियिल्-‘घल्’ शब्द के साथ; चैन्नु-जो गये; करन् मुतल् काळै वीरर्-खर आदि ऋषभ-सम वीर; अँल् ओन्नु-किरणस्पृष्ट; कमलम्-कमल-सम; चैम् कण्-लाल आँखों के; इरामन् अँन्नु इयैन्तु-श्रीराम के नाम से युक्त; एन्तल्-महिमावान ने; विल् ओन्नु-एक धनु से; कट्टिकै मून्नु-तीन घड़ियों में; विण्णिल्-स्वर्ग पर; एरुत्तिन्-चढ़ा दिया; अँन्नाळ्-शूर्पणखा ने कहा । ६१७

भाई ! मैंने उनसे यह अपना हाल कहा तो वे अपनी सेना के साथ शोर करते हुए राम से लड़ने गये । किरण-प्रफुल्लित कमल-सम आँखों के राम नाम के वीर के धनु द्वारा तीन ही घड़ियों में स्वर्ग चढ़ गये । —शूर्पणखा ने कहा । ६१७

तारुडै तानैयोडुन् दम्बियर् तमियन् शैय्द
पोरिडै मडिन्दा रैन्नु वुरैशैवि पुहाद मुत्तन्
कारिडै युरुमिन् मारि कनलौडु पिउक्कु माबोल्
नीरौडु नैरुप्पुक् कान्नु निरैन्डुङ् गण्गळैल्लाम् 618

तमियन् चैय्त् पोर इटै-एकाकी श्रीराम ने जो किया, उस युद्ध में; तम्पियर्-छोटे भाई; तार् उटै तानै ओट्टुम्-हारयुक्त वीरों की सेना के साथ; मडिन्तार्-मेरे; अँन्नु उरै-यह कथन; चैवि पुकात मुत्तन्-कान में घुसा इसके पूर्व ही; कार् इटै उरुमिन्-मेघमध्य वज्र के; कत्तल् ओट्टु-अनल के साथ; मारि-वर्षा; पिउक्कुमा पोल्-होती हो जैसे; निरै नैट्टुम् कण्कळ् अँल्लाम्-पंक्ति में रही सभी आँखों ने; नीरौडु नैरुप्पु-जल के साथ अग्नि की; कान्नु-उगला । ६१८

एकाकी राम से लड़कर मेरे छोटे भाई, हारों से भूषित वीरों की

बड़ी सेना के साथ मर गये —यह बात ज्योंही रावण के कानों में पड़ी, त्योंही उसकी पंक्ति की आँखों में मेघमध्य वज्र के साथ अनल और जल जैसे भर जाता है वैसे आग और जल भर गया । ६१८

आयिडै	यैळुन्द	शीरुत्त	तळुन्दिय	तुन्व	माशित्
तोयिडै	युहुत्त	नैयिर्	चोर्त्तत्तिर्	कूर्त्तम्	जैय्य
नोयिडै	यिळैत्त	कुर्त्त	मैन्तवर्	निन्तै	यिन्ते
वायिडै	यिदळु	मूक्कुम्	वलिनन्दनर्	कौय्य	वैन्डात् 619

अ इटै-तव; अळुन्त-उभरे; चोर्त्तु-कोप में; अळुन्तिय-मग्न; तुन्पम् माशित्-दुःख बदलकर; तो इटै-अग्नि में; उकुत्त नैयिल्-छोड़े गये घी के समान; चोर्त्तुक्कु-कोप को; ऊर्त्तम् चैय्य-बल दिलाने पर; अवर्-उन्होंने; निन्तै-तुम्हारे; इन्ते-इस प्रकार; वाय् इटै इतळुम्-मुख पर के अधरों को; मूक्कुम्-और नाक को; वलिनन्दनर् कौय्य-बलात् काटा, इसके निमित्त-रूप में; नी-तुमने; इटै इळैत्त कुर्त्तम्-उनके प्रति किया (जो) अपराध; यातु-वह कौनसा; वैन्डात्-पूछा । ६१९

रावण को एक साथ क्रोध आया और दुख भी । उसने कुछ देर बाद दुख छोड़ा । आग में घी छोड़ने पर भड़क उठनेवाली आग के समान क्रोध उभर आया । उसने पूछा कि इस तरह वे तुम्हारे अधर और नाक को बलात् काट दें, इसके लिए तुमने उनके प्रति क्या अपराध किया ? । ६१९

ॐ अन्वयि	तुर्त्त	कुर्त्तम्	यावर्क्कु	मैळुद	वौण्णात्
तन्मैय	निराम	तोडुन्	दामरै	तविरप्	पोन्दाळ
मिन्वयिन्	मरुङ्गुल्	कौण्डाळ	वेय्वयिन्	मैन्डोळ	कौण्डाळ
पोन्वयिन्	मेनि	कौण्डाळ	पौरुट्टिनार्	पुहुन्व	वैन्डाळ 620

अन् वयिन् उर्त्त कुर्त्तम्-मुझसे हुआ अपराध; यावर्क्कुम् अळुत्त औण्णात्-किसी से भी चित्र बनाना (जिसका) असम्भव है; तन्मैयन्-ऐसे रूप वाले; इरामतोडुम्-राम के साथ; तामरै तविर-(अपना वासस्थान) कमल छोड़कर; पोन्दाळ-जो आयी है; मिन् वयिन् मरुङ्गुल् कौण्डाळ-विजली से अपनी कमर पानेवाली; वेय्वयिन् मैन् तोळ कौण्डाळ-बाँस से जिसने अपने कन्धे पाये हैं; पोन् वयिन् मेनि कौण्डाळ-स्वर्ण से जिसने अपनी शोभा पाई है; पौरुट्टिताल्-ऐसी एक स्त्री के कारण; पुकुन्तु-हो गया; वैन्डाळ-कहा । ६२०

शूर्पणखा ने उत्तर दिया— इस अपराध के हो जाने का एक निमित्त भी है । जिसका चित्र खींचना असम्भव है, उस रूप से युक्त राम के साथ एक स्त्री आयी है ! वह ऐसी लगती है कि मानो कमल पर अपना वास छोड़कर इधर आयी है । उसने विजली से कमर पायी है, बाँस से कन्धे, और स्वर्ण से रूप-रंग । उसी स्त्री के कारण यह हुआ । ६२०

आरव	ळैतु	लोडु	मरक्कियु	मैय	वाळि
तेरव	ळलहुल्	कीङ्गै	शैम्बीन्जैय्	कुलिहच्	चैपु
पारवळ्	पादन्	दीण्डप्	पाक्कियम्	बडैत	दम्मा
पेरवळ्	शीद	यैत्तु	वडिवैलाम्	बेशलुड्डाळ्	621

अवळ् आर्-वह कौन; अँतुतल् ओटुम्-पूछने पर; अरक्कियुम्-राक्षसी भी; ऐया-महिमावान; वाळि-जिओ; अवळ् अल्कुल् तेर्-उसका कटि-प्रदेश रथ ही है; कीङ्कै-स्तन; चैम् पोन् चैय्-लाल स्वर्ण की बनी; कुलिक चैपु-इंगुरौटियाँ हैं; पार्-भूमि ने; अवळ् पातम् तीण्ड-उसके चरण-स्पर्श का; पाक्कियम् पटैततु-बड़ा भाग्य पाया है; अम्मा-मैया; अवळ् पेर चीतै-उसका नाम सीता है; अँतु-कहकर; वडिवु अँलाम्-सारा रूप; पेचल् उड्डाळ्-वर्णन करने लगी। ६२१

रावण ने पूछा कि वह कौन स्त्री है? तुरन्त शूर्पणखा ने कहा। महिमावान! जिओ! क्या कहूँ? उसका कटिप्रदेश रथ है! स्तन स्वर्ण-निर्मित इंगुरौटियाँ हैं। भूमि ने बड़ा पुण्य किया है, तभी वह उसके चरणों को स्पर्श कर सकी है। मैया! उसका नाम सीता है। वह उत्साह के साथ उनके रूप का वर्णन करने लगी। ६२१

कामरम्	बळुत्त	पाडर्	कळळैन्क्	कत्तिन्द	शैज्जीर्
तेमलर्	शैरिन्द	कून्दर्	रेवर्क्कु	मणङ्गा	मैन्तत्
तामरै	यिरुन्द	नङ्गै	शैडियान्	दरमु	मल्लळ्
यामुरै	वळङ्ग	लैन्ब	देळैमैप्	पाल	दन्ने 622

पळुत्त कामरम् पाटल्-पूर्णसिद्ध 'कामर' राग के; कळ् अँत कत्तिन्त-मधु के समान मधुर; चैम् चोल्-सुन्दर बोली वाली; ते मलर्-शहद-भरे पुष्पों से; चैरिन्त कून्तल्-घने केश-भूषित; तेवर्क्कु अणङ्काम्-देववाला-सी उसकी; तामरै इरुन्त नङ्कै-कमलनिवासिनी लक्ष्मी; चैटि आम् तरमुम् अल्लळ्-चेरी भी बनने योग्य नहीं; याम् उरै वळङ्कल्-हम (प्रशंसा का) वचन कहें; अँत्पतु-यह; एळैमै पालतु-अज्ञता होगा। ६२२

(कामर एक राग है।) पूर्ण-सिद्ध कामर राग के समान मधुरबयनी है वह। केश पर शहदसहित फूल शोभित हैं। देवांगना-सी उस (सुन्दरी) की, कमला श्रीदेवी दासी बनने भी योग्य नहीं है। उसका वर्णन करने का प्रयास करना बुद्धिहीनता ही होगा। ६२२

मज्जीक्कु	मळह	वोदि	मळैयोक्कुम्	वडिन्द	कून्दल्
पज्जीक्कु	मडिहळ्	शैय्य	पवळत्तिन्	विरल्ह	ळैय
अज्जीक्क	ळमुदि	तळळिक्	कोण्डवळ्	वदन	मैदोर्
कज्जत्तिर्	कीण्ड	देनुड्	गडलिनुम्	बैरिय	कण्गळ् 623

ऐय-महिमायुक्त; अम् चोर्कळ्-सुन्दर बोली को; अमुतिल् अळळि कोण्टवळ्-अमृत से उठा ली है, उसका; अळक ओति-भाल पर का छल्लेदार केश; मज्च

ओंकुम्-मेघ की समानता करता है; वटिन्त कून्तल्-लटकता केश; मळ् ओंकुम्-जल-भरे घन की तुलना करता है; अटिकळ्-उसके चरण; पञ्च ओंकुम्-रई की भांति हैं; विरल्कळ् चैय्य पवळत्तित्-लाल प्रवाल की (-सी) हैं; वतत्-आनन; मै तीर्-निष्कलंक; कञ्चत्तित् कौण्टतेनुम्-कमल से प्राप्त है तो भी; कण्कळ्-उसकी आँखें; कटलित्तुम् पैरिय-समुद्र से भी विशाल हैं । ६२३

महिमायुक्त भाई ! उसने अपनी बोली अमृत से उठा ली है । सामने का केश मेघ-सा और लटकनेवाली वेणी वर्षक घन-सी है । उसके चरण रई के समान (कोमल) है । पैर की उँगलियाँ लाल प्रवाल की बनी-सी हैं । आनन रूपी निष्कलंक कमल पर जो आँखें हैं, वे कमल से ली गयी हैं; तो भी समुद्र से भी बड़ी हैं । ६२३

ईशतार्	कण्णिन्	वैन्दा	नैन्नुमि	दिळ्ळुवैच्	चौल्लिव्
वाशना	डोदि	याळैक्	कण्डत्तन्	वव्व	लाड्डान्
पेशलान्	वहैमैत्	तल्लाप्	पैरुम्विणि	पिणिप्प	नीण्ड
आशैया	लळिन्दु	वैन्दा	तनड्गन्तव्	वुव्व	मम्मा 624

अनङ्कन्-अनंग; ईशतार् कण्णिन् वैन्तान्-ईश्वर (शिव) की (भाल की) आँख से जला; अन्तुम् इतु-कही जानेवाली यह बात; इळ्ळुते चौल्-अल्पज्ञ कथन है; इ वाचम् नाड् ओतियाळे-इस सुवासित केश वाली को; कण्डत्तन्-देखकर; वव्वल् आड्डान्-प्रसने की शक्ति से हीन होने के कारण; पेचल् आम् तक्तत्तु अल्ला-अवर्ण्य; पैरुम् पिणि पिणिप्प-बड़े (काम-) रोग से पीड़ित होकर; नीण्ड आचैयाल्-लम्बी बड़ी उस इच्छा से; अ उरुवम्-वह रूप; अळिन्तु-गला; तेय्न्तान्-वह मिटा; अम्मा-मैया री । ६२४

मन्मथ परमेश्वर से भाल-नेत्र की आग से जल गया —यह कथन असत्य है । असल में हुआ दूसरा है । उसने इस सुवासित केशिनी को देखा । उसके मन में अपार राग पैदा हुआ । वह उसे ले जा नहीं सका । अकथ्य काम-रोग ने उसे सताया । धीरे-धीरे छीजकर उसका रूप मिट गया । माँ, उतनी सुन्दर है वह ! । ६२४

तैव्वुल	हत्तुड्	गाण्डि	शिरत्तित्तिर्	पणत्ति	नोर्हळ्
अव्वुल	हत्तुड्	गाण्डि	यलैहड	लुलहिर्	काण्डि
वैव्वुलै	युड्ड	वेलै	वाळित्तै	वैन्ड	कण्णाळ्
अव्वुल	हत्ता	ळड्गम्	यावर्क्कु	मैळ्ळुवौ	णादाळ् 625

वैम् उलै उड्ड-गरम भट्ठी में ताप कर बनाये गये; वेलै वाळित्तै-भाले और असि को; वैन्ड-जो जीत चुकी है; कण्णाळ्-ऐसी आँखों से शोभित है; तैव्वुलकत्तुम्-देवों के लोकों में भी; काण्डि-खोजो; चिरत्तित्तिल् पणत्तित्तोर्कळ्-सिर पर (जिनके) फन हैं, उन; अ उलकत्तुम्-(नागों के) उस (नाग-)लोक में भी; काण्डि-खोजो; अलै कटल् उलकिल् काण्डि-तरंग-भरे समुद्र से वलयित भूतल में

खोजो; अङ्कम् यावर्क्कुम् अङ्कृत औणाताळ्-ऐसे अंगों से युक्त है, जिनका कोई चित्रण नहीं कर सकता; अव्वुलकत्ताळ्-किस लोक की है । ६२५

उसकी आँखों ने उस भाले और असि को अपनी कान्ति और तीक्ष्णता में हराया है, जो भट्ठी की आग में तपाकर बनाया गया था । तुम चाहे सुरलोक में ढूँढो; चाहे फणी नागों के लोक में । तरंगायमान समुद्र से वलयित भूलोक में ही क्यों न ढूँढो । उसके समान स्त्री नहीं मिलेगी । उसके अंगों का चित्रण ही किसी के लिए असम्भव है ! फिर वह किस लोक की होगी ? नहीं जानते । ६२५

ॐ तोळ्ये	शौल्लु	हेतो	शुडर्मुहत्	तुलवु	हिन्ऱ
वाळ्ये	शौल्लु	हेतो	वल्लव	वळुत्तु	हेतो
मीळवुन्	दिहैप्प	दल्लार्	इनित्तनि	विळम्ब	लाऱ्ऱेन्
नाळ्ये	काण्डि	यन्ऱे	नानुनक्	कुरैप्प	देन्तो 626

तोळ्ये चौल्लुकेतो-भुजाएँ ही कहूँ; चुडर् मुकत्तु-प्रकाशमय मुख में; उलवुकिन्ऱ-चलित रहनेवाली; वाळ्ये चौल्लुकेतो-तलवारें (आँखें) ही बखानूँ; वल् अवै-गोटियाँ (स्तन) उनको; वळुत्तुकेतो-बताऊँ; मीळवुम् तिकैप्पतु अल्लाल्-फिर-फिर चक्कर खाने के सिवाय; तनि तनि-अलग-अलग; विळम्बल् आऱ्ऱेन्-कह नहीं सकूंगी; नाळ्ये काण्डि अन्ऱे-कल तुम ही देख लो न; नान् उसक्कु उरैप्पतु अन्तो-मैं तुमको बताऊँ क्या । ६२६

हा ! क्या मैं उसकी भुजाओं को कहूँ ? या उज्ज्वल मुख में जो चंचल आँखें हैं, उन तलवारों का वर्णन करूँ ? गोटी के समान उन स्तनों को कहूँ ? (वल्+अवै का यह अर्थ होगा; अल+अवै शब्द लिये जायँ तो 'अन्य अंगों को कहूँ ?' होगा ।) किस अंग का वर्णन कर सकूंगी । कोई भी अंग लूँ तो फिर-फिर चक्रित होकर रुक जाना पड़ेगा । अलग-अलग किसी का उचित वर्णन नहीं कर पाऊँगी । तुम तो कल ही उसे देख लोगे न ? फिर मैं क्या कहूँ तुमसे ? । ६२६

ॐ विल्लौक्कु	नुदलैन्	ऱालुम्	वेलौक्कुम्	विळियैन्	ऱालुम्
पल्लौक्कु	मुत्तैन्	ऱालुम्	ववळत्तै	यिदळैन्	ऱालुम्
शौल्लौक्कुम्	बीरुळौव्	वादाऱ्	चौल्लला	मुवमै	युण्डो
नैल्लौक्कुम्	बुल्लैन्	ऱालुम्	नेरुरैत्	ताह	वऱ्ऱो 627

नुतल् विल् औक्कुम्-उसका भाल धनु की समता करेगा; अन्ऱालुम्-कहें तो भी; विळि-आँखें; वेल् औक्कुम्-भाले की समता करेंगी; अन्ऱालुम्-कहें तो भी; पल् मुत्तु औक्कुम् अन्ऱालुम्-बाँत मोती के समान हैं, कहने पर भी; पवळत्तै इतळ् अन्ऱालुम्-प्रवाल को अधर कहें तो भी; चौल् औक्कुम्-कहने भर के लिए ही समानता होगी; पीरुळ् औव्वातु आल्-पदार्थ देखने पर समानता नहीं पाई जायगी; आल्-इसलिए; चौल्लल् आम् उवमै उण्डो-कहने के लिए कोई उपमा है क्या;

नेल् ओक्कुम् पुल्-धान घास-सा है; अन्नालुम्-कहें तो भी; नेर् उरैतु आक वड्डो-सही बात कही गई क्या । ६२७

भाल धनु के समान है; आँखें भालों के समान, मोती दाँत के समान । ऐसा कहा जा सकता है । प्रवाल को उसका अधर कह सकते हैं । तो भी वह क्या सही रूप में उपमा कहना बन सकेगा ? केवल शाब्दिक उपमा होगी । तत्त्वतः उपमा ठीक नहीं उतरेगी । उसके अंगों से उपमेय वस्तुएँ हैं कहाँ ? कहने को तो कह सकते हैं कि धान घास है ! पर क्या वह सही अर्थ में सार्थक हो सकता है ? । ६२७

इन्दिरन्	शशियैप्	पैड्डा	निरुमून्	वदनत्	तोन्डुन्
तन्दैयु	मुमैयैप्	पैड्डान्	डामरैच्	चैड्गण	मालुम्
शैन्दिर	महळैप्	पैड्डान्	शोदैयै	नीयुम्	पैड्डाय्
अन्दरम्	वारक्कि	नन्मै	यवर्क्किल्लै	युत्तक्के	यैया 628

ऐया-महिमावान्; इन्दिरन् चचियै पैड्डान्-इन्द्र ने शची को पाया; इर मून् वतत्तत्तोन् तन्-(दो के तीन = छः) षण्मुख के; तन्दैयुम्-पिता (शिवजी) को; उमैयै पैड्डान्-उमादेवी प्राप्त हुई; तामरै चैम् कणान्नुम्-कमलाक्ष ने भी; चैम् तिर मकळै-गोरी श्रीदेवी को; पैड्डान्-प्राप्त किया; नीयुम्-तुमने भी; चीतैयै पैड्डाय्-सीता को प्राप्त किया; अन्तरम् पारक्किन्-अन्तर देखा जाय तो; अवर्क्कु नन्मै इल्लै-सौभाग्य उनका नहीं है; उत्तक्के-तुम्हारा ही । ६२८

(सूर्पणखा रावण के मन में सीता-प्रेम जाग्रत् करती है ।) इन्द्र को शचीदेवी प्राप्त हुई । षण्मुख के पिता ने उमा को प्राप्त किया । कमलाक्ष विष्णु को कमला मिली । तुम्हें सीता मिल गयी । पर अन्तर देखने पर उन सबका भाग्य उतना खरा नहीं । तुम्हारा ही सर्वश्रेष्ठ होगा । तुम्हारा भाग्य ही श्लाघनीय है । ६२८

ॐ पाहत्ति	लौखन्	वैत्तान्	पड्गयत्	तिरुन्द	पौन्ने
आहत्ति	लौखन्	वैत्ता	नन्दण	नाविन्	वैत्तान्
मेहत्तिन्	मिन्ने	मुन्ने	वैन्डुन्	णिडैयि	नाळै
माहत्तोळ्	वीर	पैड्डा	लैड्डनम्	वैत्तु	वाळ्ळि 629

पाकत्तिल् औखन् वैत्तान्-एक ने अपने बायें भाग में रख लिया (शिव की पार्वती अर्धांगिनी बनी); पड्गयत्तु इरुन्त पौन्ने-कमला श्री को; औखन्-(त्रिदेवों में) एक (विष्णु) ने; आकत्तिल् वैत्तान्-वक्ष में रख लिया; अन्तणन्-ब्राह्मण (ब्रह्मा) ने; नाविन् वैत्तान्-जीभ में रख लिया; माक तोळ् वीर-आकाश तक उन्नत कन्धे वाले वीर; मेकत्तिन् मिन्ने-मेघ की बिजली को; मुन्ने वैन्डु-जिसने पहले ही हरा दिया; नुण् इडैयिताळै-उस क्षीण कटि-सूषित सीता को; पैड्डाल्-पाओगे तो; अड्डनम्-कहाँ; वैत्तु वाळ्ळि-रखकर जीवन चलाओगे । ६२९

हाँ ! आकाश तक उन्नत कन्धों वाले वीर भाई ! त्रिदेवों में एक, शिव

ने उमा को अपने शरीर के वाम भाग में स्थान दिया । दूसरे (विष्णु) ने कमला श्रीदेवी को अपने वक्ष में रख लिया । तीसरे, ब्राह्मणोत्तम (ब्रह्मा) ने सरस्वती को अपनी जीभ में स्थान दे दिया । सीता बड़ी सुन्दरी है । उसकी कमर ने मेघ की विजली को हरा दिया है । उस सीता को प्राप्त करके तुम कहाँ स्थान देकर उसके साथ जीवन बिताओगे ? । ६२९

❖ पिळ्ळैपोर् पेशुवाळैप् पेरुपिन् पिळ्ळैक्क लाड्डाय्
 कौळ्ळैमा निदियमैल्ला मवळुक्के कौडुत्ति यैय
 वळ्ळले युत्तक्कु नल्लेन् मरुन्निन् मत्तैयिन् वाळुम्
 किळ्ळैबोन् मौळियार्क् केल्लाड् गेडुशूळ् हिन्ऱे नन्ऱे 630

ऐया-महिमावान्; वळ्ळले-दानी; पिळ्ळैक्कल् आड्डाय्-अचूक परिश्रमी;
 पिळ्ळै पोल् पेच्चिताळै-सारिका की-सी बोली वाली को; पेरुपिन्-पाने के बाद;
 कौळ्ळै पोकिन्ऱ चैल्वम्-लूटी जानेवाली अपनी सम्पत्ति को; अवळुक्के कौडुत्ति-
 उसी को दे दो; उत्तक्कु नल्लेन्-तुम्हारी हित हैं; उन् मत्तैयिल् वाळुम्-तुम्हारे
 महल में रहनेवाली; किळ्ळै पोल्-शुक-सम; मौळियार्क्कु अल्लाम्-बोलनेवाली
 सभी (स्त्रियों) को; केटु चूळ्किन्ऱेन् अन्ऱे-अहित करती हैं न । ६३०

महिमावान् ! यह सर्वविदित है कि तुम्हारे प्रयत्न कभी असफल नहीं होते । सीता तुम्हारी हो जायगी । सारिका-वाणी को लाने के बाद तुम अपनी सारी सौभाग्यश्री को, जिसे अब तुम्हारी अन्य प्रियाएँ लूट रही हैं, उसे दे दो । देखो मैं तुम्हारा हित कर रही हूँ । पर तुम्हारे महल में तुम्हारी कृपा का पात्र बनी जो स्त्रियाँ रहती हैं, उनको कष्ट दिला रही हूँ न ? । ६३०

❖ तेर्तन्द् वल्हुर् चीदै तेवर्द मुलहि लिम्बर्
 वार्तन्द् मुलैयि नारुदम् वयिरुत्तन् दाळु मल्लळ्
 तार्तन्द् कमलत् ताळैत् तरुक्किन्ऱ कडैयच् चङ्ग
 नीर्तन्द् ददत्तै वैल्वा निलन्दन्दु निमिर्न्द दन्ऱे 431

तेर् तन्त् अल्लकुल्-रथ-समान जघन वाली; चीतै-सीता; तेवर् तम् उलकिल्-
 देवों के लोक में; इम्पर्-इहलोक में; वार् तन्त् कौङ्कयार् तम्-अँगिया-बद्ध
 उरोजों से शोभित स्त्रियों की; वयिरु तन्ताळुम् अल्लळ्-कोख से आई हुई नहीं है;
 चङ्क नीर्-शंखकीटी से युक्त क्षीरसागर को; तरुक्किन्ऱ कडैय-गर्विल (देवामुरों)
 के मथने पर; तार् तन्त् कमलत्ताळै-कमलपुष्पमाला-धारिणी को; तन्त्तु-(उसने)
 पैदा किया; अत्तै वैल्वान्-उसको हराने के लिए; निलम् तन्त्तु-भूमि इसे पैदा
 करके; निमिर्न्तु-उत्कृष्ट हुई । ६३१

रथ के समान नितम्बयुक्त सीता स्वर्ग या भूलोक की किसी अँगिया-
 बद्ध उरोजों के साथ शोभनेवाली स्त्री के पेट से पैदा हुई नहीं है । शंखों
 से भरे क्षीरसागर ने, बलवान देवामुरों से मथने पर कमलमालाधारिणी

श्रीलक्ष्मीदेवी को उत्पन्न किया। उस क्षीरसागर को नीचा दिखाने के लिए भूमि इसको उत्पन्न करके तर्जोह (श्रेष्ठता) पा गयी। ६३१

❀ मीन्गोण्ड कीडि यित्ताङ्कु विळ्ळावयर्न् दुलह मेत्तत्
तेन्गोण्ड नैरिमेन् कून्दर् चिर्त्तिर्च्च चोदैयैन्नुम्
मान्गोण्डुण्ड डाडु नीयुन् वाळ्वलि युलहड् गाण
यान्गोण्डू डाडुम् वण्ण मिरामनैत् तरुवि यैन्बाल् 632

मीन् कीण्ड कीटियितार्क्कु-मत्स्य की ध्वजा वाले (मन्मथ) का; उलकम् विळ्ळा अयर्न्नु एत्त-लोक उत्सव मनाकर उसको स्तुति करे; उन् वाळ्वलि उलकम् काण-तुम्हारी तलवार की शक्ति भुवन देखे; तेन् कीण्ड-मधु-भरा; नैरि-घुंघुराला; मेन् कून्तल्-कोमल केश; चिर् इट्टे-पतली कमर; चोत्तै अन्नुम्-(इनसे युक्त) सीता नाम की; मान्-हरिणी (-सी सीता) की; नी कीण्ड-तुम लाकर; उण्डाट्ट-उसके साथ केलि करो; यान् कीण्ड ऊटाट्टुम् वण्णम्-मैं लेकर खेलूँ; अन्पाल् इरामनै तरुति-मेरे पास राम की विला दो। ६३२

तुम मकरकेतन का उत्सव और स्तुति लोक द्वारा कराते हुए और अपनी असि का पराक्रम दिखाते हुए उस सीता को हर ले आओ। उसका केश मधुमिश्रित घुंघुराला और कोमल है। कमर पतली है और वह हरिणी-सी है। उसको लाकर तुम उसके साथ केलि करो और मुझे लेकर खेलने के लिए उस राम को मुझे दिला दो। ६३२

❀ तरुवदु विदिये यैन्डाळ् इवम्बैरि दुडैय रेनुम्
वरुवदु वरुना ळन्ऱि वन्दुकै कूड वऱ्ऱो
ओरुवदु मुहमु मार्वु मुरुवमुड् गण्णुन् दोळ्हळ्
इरुवदुम् वडैत्त शैल्व मैय्दुव दित्तिनी यैन्डाळ् 633

तरुवदु वित्तिये-(भलाई) देनेवाली विधि ही है; अन्डाळ्-कहा जाय तो; तवम् पैरितु उटैयरेनुम्-बड़ा तपस्वी हो तो भी; वरुवदु-होनी; वरुम् नाळ् अन्ऱि-होने का काल छोड़कर; वन्दु कं कूट वऱ्ऱो-आ मिल सकनेवाली है क्या; ओरु पतु मुकमुम्-दस मुख; मार्वुम्-वक्ष; कण्णुम् तोळ्कळ् इरुपतुम्-और बीस-बीस आँखें और कन्धे; उरुवमुम्-इनसे युक्त शरीर; पटैत्त चैल्वम्-(और तुम्हारा) प्राप्त घन; नी अय्वतु-तुम सच्चे अर्थ में पाओगे (उसका भोग करोगे); इत्ति-(सीता-प्राप्ति पर) आगे ही; अन्डाळ्-कहा। ६३३

विधि ही भला देनेवाली है। तो भी बड़े तपस्वी को भी तभी कुछ प्राप्त होता है, जब उचित काल आकर मिलता है। तुम्हारे दस सिर हैं, दस वक्ष और बीस नेत्र और कन्धे। तुम्हारे पास असीम सम्पत्ति है। तो भी उनके भोग का अब तक समय नहीं आया है। सीता की प्राप्ति के बाद ही वह काल आयगा। — यह सब कहकर शूर्पणखा ने रावण के मन में सीता के प्रति काम को पैदा करके उभारा। ६३३

ॐ अन्तव डन्तं युत्वा लुयप्पदेन् इणुह लुइइ
 अन्तैयव विरामन् इम्बि यिडैबुहुन् दिलङ्गु वाळाल्
 मुत्तैमूक् करिन्दु विट्टान् मुडिन्ददेन् वाळ्वु मुत्तन्निन्
 शौन्तपि नुयिरै नोप्पान् इणिन्देन् नैन्तच् चीन्ताळ् 634

अन्तवळ् तन्तं—ऐसी सीता को; उन् पाल् उयप्पतु अन्तु—तुम्हारे पास पहुँचाने का विचार करके; अणुकल् उइइ—समीप (जो) गई; अन्तै—मुझे; अ इरामन् तम्पि—उस राम के छोटे भाई ने; इट्टै पुकुन्तु—बीच में घुसकर; इलङ्कु वाळाल्—(अपने पास रहे) कटार से; मुत्तै—(सीता को पकड़ने से) पहले ही; मूक्कु अरिन्दु विट्टान्—मेरी नाक काट दी; अन् वाळ्वुम् मुटिन्ततु—मेरा जीवन भी (व्यर्थ) गया; उन्तिल् चीन्त पित्—तुमसे कहने के बाद; उयिरै नोप्पान्—प्राण छोड़ने का; तुणिन्ततैन्—निश्चय किया; अन्त चीन्ताळ्—ऐसा कहा। ६३४

आगे कहा कि भाई ! ऐसी सीता को तुम्हारे पास ले आने का निश्चय करके मैं उसके समीप जाने लगी। तभी उस राम के छोटे भाई ने बीच में घुसकर अपने पास रहे खड्ग से मेरी नासिका काट दी। मेरा जीवन उसके साथ गया, समझ लिया। पर तुम्हारे पास आकर यह कहने के बाद प्राण त्याग दूंगी—यही विचार ले इधर आयी हूँ। ६३४

कोबमु मउत्तु मातक् कौदिप्पुमैन् इत्तैय वल्लाम्
 पाबनिन् इडित्ति तिल्लाप् पेंड्रिबोइ पड्ड विट्ट
 तोबमौन् ओन्त्रै युइअ लैन्तलाज् जैयलिइ पुक्क
 ताबमु नाण् मौन्त्रा युयिरौडुन् दळीइय वन्त्रे 635

कोपमुम्—क्रोध; मउत्तुम्—और वीरता; मात कौतिप्पुम्—अपमानजनित ताप; अन्तु—आदि; इत्तैय अल्लाम्—ऐसे सभी भाव; पापम् निन्ट्रिटत्तु—पाप के स्थान पर; तिल्ला पेंड्रि पोल्—जो रह नहीं सकता, उस पुण्य-भाग के समान; पड्ड विट्ट—रावण का साथ छोड़ गये; तोपम् ओन्त्रै ओन्तु उइअल्—एक दीये से दूसरा दिया लगा तो; अन्तुल् आम् जैयलि—जो होगा ऐसी रीति से; तापमुम्—ताप; काम नोयुम्—और कामरोग; उयिरौट्टु तळीय—रावण के प्राणों से मिले और बढ़े। ६३५

यह सुनने पर रावण की विचित्र दशा हो गयी। पुरुषोचित क्रोध, वीरोचित साहस, अपमानजनित सन्ताप—सभी भाव ऐसे भाग गये जैसे पाप जहाँ है वहाँ से पुण्य का सुखसौभाग्य भाग जाता है। एक से एक दीप मिल जाने पर जैसा फल होगा, उसके समान उसके प्राणों में राग का ज्वर और कामरोग मिल गये। ६३५

ॐ करतैयु मउन्दान् उइंगै मूक्कितैक् कडिन्दु निन्त्रार्
 उरतैयु मउन्दा नुइइ पळियैयु मउन्दान् वेंड्रि
 अरतैयुड् गोण्ड काम तम्बित्तान् मुत्तु पेंड्र
 वरतैयु मउन्दान् केट्ट मङ्गैयै मउन्दि लादान् 636

अरतयुम् वैरि कीण्ट-हर को हरानेवाले; कामन् अम्पिताल्-काम-वाण से;
केट्ट मङ्कयै-सुनी हुई (सीता) देवी को; मरन्तिलातान्-जो नहीं भूला; करनेयुम्
मरन्तान्-(वह) खर को भूला; तङ्कै-अनुजा को; मूक्कितै-नाक को; कटिन्तु-
काटकर; निन्तार-जो बचे रहते हैं, उनका; उरतयुम् मरन्तान्-बल भूला; उर्र
पळियैयुम्-प्राप्त अपयश; मरन्तान्-भूला; मुन्तै पैर-पहले (ब्रह्मा, शिव आदि से)
प्राप्त; वरतयुम् मरन्तान्-वरों को भूल गया । ६३६

रावण हरविजयी था। पर काम का वाण वली था। उससे आहत वह देवी सीता को, जिसके सम्बन्ध में शूर्पणखा से सुना भर था, भूल नहीं सका। पर खर मरा—यह भूल गया; छोटी वहिन की नाक कटी है—यह भी भूल गया। राम का वल भी स्मरण नहीं रहा। अपने पर लगा अपयश, ब्रह्मा, शिव आदि द्वारा दत्त वर—सभी भूल गया, रावण। ६३६

शिर्इडिच्च	चोदै	येत्तु	नाममुग्	जिन्दै	तानुम्
उर्इरिण्	डौन्डाय्	निन्डा	लौन्डीळित्	तौन्डै	युन्न
मर्इरु	मत्तमु	मुण्डो	मरक्कलाम्	वळिमर्	रियादो
कर्इरि	जान	मिन्डैर्	कामत्तैक्	कडक्क	लामो 637

चिह्न इदं चीत्—क्षीण-कटि सीता; अन्तुम् नाममुम्—का नाम और; चिन्तं तातुम्—उसका मन; इरण्टुम्—दोनों; औन्त्राय् उरु नित्त्राल्—एक साथ मिले रहे तो; औन्त्र औल्लिन्तु—एक को छोड़कर; औन्त्रं—उन्त—(दूसरे) एक को सोचने के लिए; मरु औह मतमुम् उण्टो—(दूसरा) एक मन है क्या; मरुक्कल् आम् वल्लि-भूलने का मार्ग; मरुम्—और कोई; यातो—कौन सा है; करु अरि जातम् इन्नेल्—सोचकर प्राप्त ज्ञान नहीं हो तो; कामत्तं कट्क्कल् आमो—काम की जीतना हो सकता है क्या । ६३७

रावण का मन और पतली कमर की सीता का नाम दोनों बहुत ही प्रबल रूप से जुड़ गये। फिर एक से रहित दूसरे का अस्तित्व असम्भव हो गया। फिर दूसरा अलग एक मन भी नहीं था, जो उनमें एक को छोड़ दूसरा स्मरण करे। भूलने का कोई दूसरा मार्ग भी नहीं रहा। शास्त्र पढ़कर उसके उपदेशों के कार्यान्वित अभ्यास द्वारा प्राप्त (अमली) ज्ञान जिसमें नहीं है, वह काम पर विजय पा कैसे सकेगा ? । ६३७

मयिलुडेंच्	चाय	लाळें	वज्जिया	मुन्न	नीण्ड
अयिलुडें	यिलङ्गै	वेन्द	निदयमाज्	जिरेयि	लिट्टान्
आयिलुडें	यरक्क	नुळ्ळ	मव्वळि	मैल्ल	मैल्ल
वैयिलुडें	नाळि	लुरुर	वैण्णैयवोल	वैदुम्बिर	रुन्ने 638

नीण्ड अँयिल् उटै-लम्बे प्राचीरों से आवृत; इलङ्क वेन्तन्-लंका के राजा ने;
मयिल् उटै चायलळै-मयूरनिभ सीता की; वज्रविद्या मुन्नम्-प्रवंचना से लाने से पहले

ही; इतयम् आम् चिरेयिल्-हृदय रूपी कारा में; इट्टान्-बन्द कर दिया; अयिल् उट्टे-भालाधारी; अरक्कन् उळ्ळम्-राक्षस का मन; अ वळि-तब; वैयिल् उट्टे नाळिल्-धूप-तप्त दिन में; उरु-धूप में रखे; वैण्णैय् पोल्-मक्खन के समान; मैल्ल मैल्ल-धीरे-धीरे; वैतुम्पिरु-गरम होकर पिघला। ६३८

प्राचीरों से आवृत लंका के राजा रावण ने मयूराभा सीताजी को वंचना द्वारा हर लाने के पूर्व ही अपने हृदय की कारा में कैद कर रख लिया ! भालाधारी राक्षस का हृदय तब गरम दिन में आतपदग्ध मक्खन के समान धीरे-धीरे पसीजने लगा। ६३८

विदियदु	वलियि	नालु	मेलुळ	विळैवि	तालुम्
पदियुरु	केडु	वनुदु	कुरुहिय	वयत्ति	तालुम्
कदियुरु	पोरियिन्	वैय्य	कामनोय्	कल्वि	नोक्का
मदियिलि	मरैयच्	चैय्द	तीमैबोल्	वळरन्द	दन्ऱे 639

वितियतु वलियितालुम्-विधि के बल से और; मेलु उळ-आगे की; विळैवितालुम्-होनी के निमित्त; पति उरु केडु-और लंका नगर पर जो आना था, वह कष्ट; कुरुकिय पयत्तितालुम्-निकट आ गया, उस भावी के फल के कारण; कति उरु पोरियिल्-गतियुक्त यन्त्र के समान; वैय्य काम नोय्-पीड़क कामरोग; कल्वि नोक्का-विद्याविहीन; मति इलि-बुद्धि-रहित किसी का; मरैय चैय्-छिपाकर किया; तीमै पोल्-बुरा काम-सा; वळरन्दतु-बड़ा; (अन्ऱ-ए)। ६३९

विधि प्रबल थी। होनी होनेवाली थी। लंका पर विनाश लाने का समय निकट आ गया था। इसलिए गतियुक्त यन्त्र के समान भयंकर कामरोग राक्षस के शरीर भर में, विद्यावंचित बुद्धिहीन आदमी से किये गये अनर्थ के समान, व्याप्त हो गया। ६३९

पोन्मय	मात्त	नङ्गै	मनम्बुहप्	पुन्मै	पूण्ड
तन्मैयो	वरक्कन्	उन्नै	ययर्त्तदोर्	तहैमै	यालो
मन्मदन्	वाळि	तूवि	नलिवदोर्	वलत्त	तात्तान्
वन्मैयै	माऱु	माऱुल्	कामत्ते	वदिन्द	दन्ऱे 640

पोन् मयम् आत्त-स्वर्णमय (आभा से) शोभायमान; नङ्कै-नायिका के; मतम् पुक्क-मन में प्रवेश के कारण; पुन्मै पूण्ड तन्मैयो-(रावण) बलहीनता पा गया था, या; तन्तै अयर्त्ततु ओर्-अपने को भूले रहने की; तक्कैमैयालो-एक स्थिति रही, इस वजह से; अरक्कन् तन्तै-राक्षस की; मन्मतन्-मनोज; वाळि तूवि-पुष्प-शर बरसाकर; नलिवतु-व्रत कर देनेवाला; ओर वलत्तन् आत्तान्-एक बली बन गया; वन्मैयै माऱुम् माऱुल्-बल को वृथा करने की शक्ति; कामत्ते-काम में; वतिन्ततु अन्ऱे-रही न। ६४०

स्वर्णमय देवी के रावण के मन में प्रविष्ट होने से रावण दुर्बल हो

गया ? या वह अपने को भूले रहा ? अब राक्षस को मन्मथ अपने पुष्प-शरों से आहत करने में समर्थ हो गया ! हाँ ! बल को बेकार करने की शक्ति कामेच्छा में निहित रहती है न ? । ६४०

इल्लिन्दन	निरुक्कै	निन्ऱाण्	डेल्लु	हत्तु	ळोरुम्
मौल्लिन्दन	राशि	योशै	मुळङ्गित	शङ्ग	मैङ्गुम्
पौल्लिन्दनर्	पूविन्	मारि	पोयितर्	पुऱ्तुतो	रैल्लाम्
अल्लिन्दयर्	शिनवै	योडु	माडहक्	कोयिल्	पुक्कान् 641

इरुक्कै निन्ऱ-आसन से; इल्लिन्ततन्-उतरा; आण्टु-तब वहाँ; एल्लु उलकतूतोरुम्-सातों लोकवासी; आचि मौल्लिन्ततन्-आशीर्वचन बोले; चङ्कम् अङ्कुम्-शंख सर्वत्र; ओचै मुळङ्कित-नाव कर उठे; पुऱ्तुतोर् अल्लाम्-पास रहे सभी; पूविन् मारि-पुष्पवर्षा; पौल्लिन्ततन्-करके; पोयितर्-हटे; अल्लिन्तु अयर्-शिथिल होकर मुरझानेवाले; चिन्तयोटुम्-मन के साथ; आट्क कोयिल्-स्वर्णमय भवन में; पुक्कान्-प्रविष्ट हुआ । ६४१

रावण आसन से उतरा । तब जो सातों लोकों के लोग वहाँ थे, उन्होंने आशीर्वचन कहे । सब स्थानों पर शंख बज उठे । पास जो रहे उन्होंने पुष्पवर्षा की । वे हट गये । रावण खिन्न और श्रांतमन होकर स्वर्णनिर्मित अपने महल में प्रविष्ट हुआ । ६४१

पूविनाल्	वेय्न्दु	शैय्द	पौङ्गुपे	रमळिप्	पौऱ्पिन्
वैविमार्	वैळ्ळ	नीङ्गिच्	चेरन्दतन्	शेरुद	लोडुम्
नाविना	ओदि	नव्वि	नयत्तमुन्	नलन्	नण्णिप्
पावियाक्	कौडुत्त	वैम्मै	पयप्पयप्	परन्द	दन्ऱे 642

वैविमार् वैळ्ळम् नीङ्कि-स्त्रियों की भीड़ त्यागकर; पूविनाल् वेय्न्दु चैय्त्-पुष्प छाकर निमित्त; पौऱ्पिन्-सुन्दरता में; पौक्कु पेर् अमळि-अधिक उत्कृष्ट शय्या में; चेरन्ततन्-गया; चेरत्तलोडुम्-उसमें जाते ही; नावि नाळ ओत्ति-कस्तूरी की गन्ध से युक्त केशिनी की; नव्वि नयत्तमुम्-मृग की-सी आँखों; नलन्-और अन्य अंग-सौष्ठव ने; नण्णि-आकर; पाविया-भावना करने से; कौडुत्त-जो विया; वैम्मै-वह ताप; पय पय-धीरे-धीरे; परन्तु-(उसके शरीर भर में) व्याप्त हो गया । ६४२

पत्नियों की भीड़ का निवारण करके वह एक पुष्पशय्या पर लेटा । उस सुन्दर शय्या के ऊपर का वितान भी फूलों से सज्जित था । उस पर लेटते ही उसके मन ने कस्तूरी की सुगन्ध से भरे केश से युक्त सीतादेवी के मृग के-से नयन और अन्य अंगसौष्ठव की भावना की । उस भावना के कारण बड़ा ताप पैदा हुआ और वह धीरे-धीरे शरीर में व्यापकर पीड़ा देने लगा । ६४२

नूक्क	लाह	लाद	काद	नूरु	नूरु	कोडियाय्प्
पूक्क	वाश	वाडै	वीशु	शीद	नीर्बी	दिन्दमैन्
शेक्कै	वीक	रिन्दु	तिक्क	यङ्ग	ळैट्टुम्	वैन्ऱुतोळ्
आक्कै	तीय	वुळ्ळ	नैय	वावि	वेव	दायितान् 643

नूक्कल् आकलात-अनिवार्य; कातल्-कामेच्छा; नूरु नूरु कोटियाय्-शत-शत करोड़ गुना; पूक्क-विकसित हुई; वाटै वीचु-उदीची से आनेवाली; चीत नीर्-शीत जल से; पौतिन्त-भरी; मैन् चेक्कै-कोमल शय्या के; वाच वी-सुगन्धयुक्त पुष्प; करिन्तु-झुलस गये और; तिक्कु कयड्कळ् अट्टुम्-आठों दिग्गजों को; वैन्ऱु-जिन्होंने हराया था, वे; तोळ् आक्कै-कंधे और शरीर; तीय-जल उठे; आवि वेवतु-प्राण मुरझाये; आयितान्-ऐसी स्थिति का हो गया। ६४३

सीता पर उसकी कामेच्छा निवार्य नहीं लगी। वह शत-शत कोटि-कोटि गुना विकसित हुई। तब उसकी शय्या के सुवासित फूल सूखने लग गये, यद्यपि उसमें उदीची हवा द्वारा लायी गयी शीतल सीकरें खूब भरी थीं। और भी उसका शरीर और उसके कंधे भी, जिन्होंने आठों दिग्गजों को हराया था, जलने लगे। प्राण भी जलते-से लगे। ऐसी विकट स्थिति में पड़ गया रावण। ६४३

तादु	कौण्डु	शीद	मुञ्जु	मन्दु	तण्णै	तन्दमैन्
पोदु	कौण्ड	डुत्त	पोदु	पौङ्गु	तीम	रुन्दिताल्
वेदु	कौण्ड	देन्त	मेत्ति	वैन्दु	शिन्द	विम्मुदी
ऊदु	वन्ऱु	रुत्ति	पोलु	यिरत्तु	यिरत्तु	यङ्गितान् 644

तादु कौण्डु-मकरन्द लेकर; चीतमुम् चुमन्तु-शीतलता ढोते हुए; तण् अन्-शीतल; अन्त-उन; पोतु कौण्डु-पुष्प लेकर; अट्टुत्त पोतु-(जब वह उदीची हवा) आई तब; पौङ्कु ती मरुन्तिताल्-भभकती आग रूपी दवा से; वेतु कौण्डतु अन्त-सँका गया, ऐसा; मेत्ति वैन्तु-शरीर गरम होकर; चिन्त-छितर जाय, ऐसा; विम्मु ती-बढ़नेवाली आग को; ऊदु-फूंकनेवाली; वन् तुरुत्ति पोल-बलवान भाथी के समान; उयिरत्तु उयिरत्तु-लम्बी साँसें छोड़ते-छोड़ते; उयङ्कितान्-श्लथ हुआ। ६४४

उदीची हवा-मकरन्द, शीतल जल और कुसुमों को लेकर, स्वयं ठण्डी रहकर आयी। पर उससे भभकनेवाली ज्वाला से सँका गया हो, ऐसा वह गरम साँसें छोड़ने लगा। वे साँसें धौंकनी की हवा के समान उसके शरीर को अंगारे छितरानेवाली आग के समान पीड़ा देने लगीं और वह छटपटाने लगा। ६४४

तावि	यादु	तीयै	नादु	तैयलाळे	मैय्युऱ्प्
पावि	याद	पोदि	लाद	पावि	माळै
कावि	यान्त	कण्णि	मेत्ति	काण	मूळु
आवि	शाल	नौन्दु	नौन्द	ळङ्गु	वानु
					मायितान् 645

तावियातु-स्थिर न करके; ती अँतातु-(परवारा-प्रेम) अग्नि है, यह न सोचकर;
तँयलाळ-देवी की; मँय उड-सचमुच; पावियात-नहीं स्मरण किया हो, ऐसा;
पोतु इलात-जिसका समय नहीं रहा; पावि-वह पापी (रावण); माळ-आम;
पातल्-कुवलय; वेल्-भाला; कावि-नीलोत्पल; आन्न-ऐसे; कण्णि-नेत्रों की;
मेत्ति काण-(देवी का) रूप देखने के लिए; मूळम्-बढ़नेवाली; आचँयाल्-लालसा
से; आवि चाल नौन्तु नौन्तु-प्राणों के खूब पीड़ित होते-होते; अळ्ळुक्कुवानुम्
आयित्तान्-बहुत कष्ट उठाता रहा । ६४५

वह अपने मन को वश में न रख सका; न सीता को आग समझकर
उनकी इच्छा करने से विरत हो सका । उस पापी के पास समय ही नहीं
रहा, जब उसने सीताजी की भावना नहीं की ! उसके मन में आम की
फाँकें, कुवलय, भाला और नीलोत्पल —इनके समान जिनके नेत्र थे, उनका
पूरा रूप देखने की दुर्दम लालसा उठी । वह बढ़ने लगी । उस कारण
उसके प्राण बहुत कष्ट उठाने लगे । वह भी बहुत कष्ट में पड़ा । ६४५

परङ्गि	उन्द	मादि	रञ्जु	मन्द	पाळि	यान्नैयिन्
करङ्गि	डन्द	कौम्बो	डिन्द	डङ्ग	वैन्ड	कावलान्
मरङ्गु	डैन्द	तुम्वि	पोल	तङ्ग	वाणम्	वन्दुवन्
दुरङ्गु	डैन्दु	नौन्दु	नौन्दु	ळैन्दु	ळैन्दो	डुङ्गिनात् 646

परम् फिटन्त मातिरम्-भारयुक्त दिशाओं के; चुमन्त-वाहक; पाळि यान्नैयिन्-
मोटे (दिग्-) गजों की; करम् फिटन्त-सँडों के वाजू में रहे; कौम्बु ओटिन्तु-दाँत
टूटकर; अटङ्क-(उसके) वक्ष में समा गये; वैन्ड कावलान्-ऐसा विजयी राजा;
अत्तङ्कपाणस्-अतंग-वाणों के; वन्तु वन्तु-आ-आकर; मरम् कुटैन्त-काठ को
छेदनेवाले; तुम्पि पोल-कीड़े (भ्रमर ?) के समान; उरम् कुटैन्तु-वक्ष को छेदने
से; नौन्तु नौन्तु-वेदना सहते-सहते; उळैन्तु उळैन्तु-बहुत बर्द पाते-पाते;
ओट्टङ्किनात्-शिथिल हो गया । ६४६

रावण बली वीर था । बोझीली दिशाओं के वाही दिग्गजों से जब
उसने युद्ध किया था, तब उनके दाँत उसके कठोर वक्ष से टकराकर टूट गये
और उसके वक्ष में ही रह गये । ऐसे राजा के वक्ष में अब मन्मथ के
पृष्पशर घुसकर छेद बनाने लगे । काठ में जैसे कीड़ा छेद बना देता है,
वैसा उन शरों ने उसके वक्ष को भेद डाला । रावण वेदना के मारे थक
गया । ६४६

कौन्डै	तुन्ड	कोदै	योडोर्	कौम्बु	वन्दे	तैञ्जिडे
निन्ड	दुण्डु	कण्ड	वैन्ड	ळन्द	ळुङ्गु	नीरमैयान्
मन्ड	इङ्ग	लङ्गन्	मारन्	वाळि	पोल	मल्लिहैत्
तैन्डल्	वन्दे	दिन्ड	पोडु	शीरु	वानु	मायित्तान् 647

कौन्डै तुन्ड-अमलतास के फलों के समान; कोतै ओट्टु-केश के साथ; ओर्

कौमुपु वन्तु-एक पुष्पशाखा आकर; अन् नैञ्च इटै-मेरे मन में; निन्ऱतु-रह गई;
कण्टतु उण्टु-मैंने देखा; अन्ऱ-यह कहते हुए; उल्लन्तु अल्लङ्कु नीर्मेयान्-दुखी
होकर संकट उठानेवाला; मन्ऱल् तङ्कु-सुवास-निलय; अलङ्कल् मारन्-मालाधारी
मन्मथ के; वाळि पोल-(पुष्प-) शरों के समान; मल्लिकं तेन्ऱल् वन्तु-मल्लिका
के बास के साथ मलयपवन आकर; अतिरन्त पोतु-जब उस पर लगा, तब; चीङ्वातुम्
आयितान्-कोप करनेवाला भी बना । ६४७

उसे ऐसा भान रहा कि अमलतास के फलों के समान काले केश के
साथ एक पुष्पलता के समान सुन्दरी उसके दिल में आकर ठहर गयी ।
तब वह दुखी होकर क्लान्त रहा । पर जब मलयपवन मल्लिका के फूलों
का बास ढोता हुआ मन्मथ के शरों के समान उस पर लगा तो उसने कोप
दिखाया । ६४७

अन्त काले यङ्गु निन्ऱं लुन्द लुङ्गु शिन्दैयान्
इन्त वाङ् शैय्वे नैन्ऱौ रैण्णि लानि रङ्गुवान्
पन्तु कोडि दीव मालै पालै याळप्प लित्तशौऱ्
पौन्त तारै डुक्क वङ्गोर् शोलै यूडु पोयितान् 648

अन्त कालै-तब; अल्लङ्कु चिन्तैयान्-क्लान्तमन; अङ्कु निन्ऱ- (रावण)
वहाँ से; अल्लन्तु-उठकर; इन्त आङ् चैय्वेन्-ऐसा कहें; अन्ऱ-यह; ओर्
अैन्-किसी एक विचार; इलान्-के बिना; इरङ्कुवान्-दुखी रहा; पालै याळ-
'पालै' नाम की 'याळ' (वीणा) के स्वर को; पलित्त चोलै-परिहसित करनेवाली
बोली वाली; पौन् अतार्-स्वर्ण-सम सुन्दरियों के; पन्तु-प्रशंसित; कोटि तीप
मालै अँटुक्क-बहुसंख्यक दीप-माला लेते आते; अङ्कु-वहाँ; ओर् चोलै ऊटु-एक
उद्यान में; पोयितान्-गया । ६४८

तब रावण वहाँ से उठा । उसका मन बड़ा क्लेशपूर्ण था । उसे
नहीं सूझ रहा था कि क्या किया जाय । उससे वह और भी उद्विग्न
हुआ । तब वह पास के एक उद्यान में चला । उसके साथ 'पालै याळ'
नाम की वीणा के स्वर से भी मधुर बोली वाली सुन्दरियाँ बहुत बड़ी संख्या
में दीप की मालाएँ लेते हुए चलीं । ६४८

माणिक्कम् पनशम् वाळै मरहदम् वयिरन् देमा
आणिप्पौन् वेङ्गै कोङ्ग मरविन्द रागम् वूगम्
शेणुऱ् नीलम् जालङ् गुरुविन्दन् वैङ्गु वैळ्ळि
पाणित्तैण् पळिङ्गु नाहम् पाटलम् पवळ मन्तो 649

पतचम्-पनस (कटहल); माणिक्कम्-माणिक्यमय हैं; वाळै-कदली; मरकतम्-
मरकतमय; तेमा वयिरम्-मधुर आम हीरे से; वेङ्गै-वैंगै वृक्ष; आणिप् पौन्-
चोखे स्वर्णमय; कोङ्कु-'कोंगु' तरु; अरविन्द राकम्-पद्मराग; चेण् उऱ् पूकम्-
गगनस्पर्शी प्लुतारु; नीलम्-इन्द्रनील; चालम्-सालवृक्ष; कुरुविन्दम्-रत्नमय;

तमिळ (नागरी लिपि)

७८८

तैङ्कु वैळ्ळि-नारियल चांदी के; नाकम्-सुरपुन्नाग; पाणि तैळ पळिङ्कु-जल-सम
स्वच्छ स्फटिक; पाटलम्-पाटल; पवळम्-प्रवाल। ६४६

उस उद्यान के पेड़ विविध थे। पनस माणिक्यमय थे। केले
मरकत के, आम के पेड़ हीरे के, 'वैंगे' तरु चोखे स्वर्ण के, 'कोगु' पदाराग के,
गगनस्पर्शी पूगत रु इन्द्रनीलमय, सालवृक्ष एक तरह के रत्न के, नारियल
के पेड़ चांदी के और सुरपुन्नाग जल-स्वच्छ स्फटिक के थे। पाटल के पेड़
प्रवालमय थे। ६४९

वानुड	निवन्द	शेङ्गेळ	मणिमरन्	दुवन्डि	वान
मीनीडु	मलरह	डम्मिल्	वेरुमै	तैरिद	इरुडात
तेनुहु	शोलै	नाप्पण्	शैम्बोन्मण्	डबत्तु	ळाण्डोर
पानिड	वमळि	शेरुन्दान्	पैयुळुड	रुयङ्गि	नैवान 650

पैयुळु उरु-पीड़ित होकर; उयङ्कि नैवान्-दुःख-मग्न हो विगलित होनेवाला;
वान् उड निवन्त-गगन को स्पर्श करते हुए उन्नत; चैम् केळ-उत्तम रंग वाले; मणि
मरम् तुवन्डि-रत्नमय तरुओं से भरे रहकर; मलरकळ-उनके फूल; वान मीन् ओट्ट-
आकाश के नक्षत्रों के साथ; तम्मिल्-उनसे; वेरुमै तैरितल् तेरुडा-भेद जानना
कठिन हो ऐसा, रहकर; तेन् उकु-जहाँ शहद चूते थे; चोलै नाप्पण्-उस उद्यान के
मध्य; चैम् पोन् मण्टपत्तुळ-लाल स्वर्ण-मण्डप में; आण्टु-वहाँ; पाल निड-
क्षीरवर्ण; ओर् अमळि-एक शय्या में; चेरुन्ताल्-गया। ६५०

कामवेदना से व्यग्र रावण उस उद्यान के बीच में रहे स्वर्ण-मण्डप के
अन्दर दुग्ध-सम श्वेत एक शय्या पर गया। उस उद्यान में गगन को छूते
हुए बड़े और रत्नमय तरु खूब भरे थे। उनके फूलों और आकाश के
नक्षत्रों में भेद जानना कठिन था। वे फूल शहद चू रहे थे। ६५०

कनिहळिन्	मलरिन्	वन्द	कळळुण्ड	कळिह	ळत्तन
वनिदैयर्	मळलै	यिन्शौड	किळळैयुड	कुयिलुम्	वण्डुम्
इतियन्	मिळरु	हिन्ड	यावैयु	मिलङ्ग	वेन्दन्
मुनियुमैन्	इविन्द	वाय	मूङ्गेयर्	पोन्ड	वन्डे 651

कनिहळिन्-फूलों से और; मलरिन्-फूलों से; वन्त-निकला; कळ उण्ट-
मधु पीकर; कळिकळ अन्त-पियक्कड़ों के समान; वनिदैयर्-स्त्रियों के से; मळलै
इन् चोल-तुतलाते मधुर वचन बोलनेवाले; किळळैयुम्-शुक; कुयिलुम्-पिक;
वण्डुम्-भ्रमर; इतियन् मिळरुकिन्ड यावैयुम्-मधुर बोलनेवाले सभी; इलङ्क
वेन्तन्-लंकाधिपति; मुनियुम् अन्ड-कोप करेगा, यह सोचकर; अविन्त वाय-
मुख बन्द कर; मूङ्केयर् पोन्ड-गूँगे के समान हो रहे। ६५१

उस उद्यान में शुक, पिक, भ्रमर आदि थे। वे उस उद्यान के तरुओं
के फूलों और फूलों से निकलनेवाले मधु और रस पीकर पियक्कड़ों के
समान मत हो स्त्रियों की-सी तुतलाती मधुर बोली में बोलते थे। पर

अब वे, इस डर से कि लंकेश रावण गुस्सा करेगा, मुख बन्द करके गूंगे के समान हो रहे । ६५१

परुवत्ताल् वाडै तन्द पशुम्बन्ति यत्तङ्ग बाणम्
उरुविप्पुक् कौळित्त पुण्णिर् कुळित्तलु मुळैन्दु विम्मि
इरुदुत्तान् याद डावैन् इयम्बिन्ता नियम्ब लोडुम्
वैरुविप्पोय् चिशर नीङ्गि वेनिल्वन् दिरुत्त दन्ऱे 652

परुवत्ताल्-ऋतु के धर्म के अनुसार; वाडै तन्त-उदीची हवा द्वारा लाई गई; पशुम् पत्ति-शीतल हिम; अत्तङ्कपाणम् उरुवि-अनंग-बाण छेदकर; पुक्कु ओळित्त-प्रवेश कर (छिपे) जहाँ रहे; पुण्णिल्-उन व्रणों में; कुळित्तलुम्-जब पैठे तभी; उळैन्दु विम्मि-पीड़ा से व्यग्र होकर; इरुतु तान् यातटा-ऋतु कौन है, रे; अँन्ड-ऐसा; इयम्पितान्-रावण ने प्रश्न किया; इयम्पलोडुम्-कहते ही; चिचिरम्-शिशिर; वैरुवि पोय् नीङ्कि-डरकर चला, हटा और; वेनिल् वन्तु इरुत्ततु-वसन्त आ गया । ६५२

ऋतु शिशिर की थी । इसलिए उदीची हवा द्वारा शीतल हिम आकर लग रहा था । वह काम-शर-विद्ध रावण के शरीर के व्रणों में जब पैठा, तब वह छटपटाने लगा । वेदना से हड़बड़ाकर उसने डाँटा कि क्या ऋतु है यह ? यह पूछना था कि शिशिरऋतु डरकर भाग गयी । उसके स्थान पर वसन्तऋतु आ रही । ६५२

वन्वण मरमुन् दीयुम् मलैहळुङ् गुळिर वाळुम्
मैत्तवन्ति यैरिन्द दैन्ऱाल् वेनिलै विळम्ब लामो
अत्तुवैनुम् विडमुण् डारै याऱ्ऱला मरुन्दु मुण्डो
इन्वमुन् दुन्वमुन् दानु मुळत्तो डियैन्द वन्ऱे 653

वन् पणै मरमुम्-कठोर बड़े तरु भी; दीयुम्-अग्नि; मलैहळुम्-पहाड़; गुळिर-शीतल बने; वाळुम्-प्राणपूर्ण; मैल् पत्ति-कोमल हिम ने; अँरिन्तु-जलाया; अँन्ऱाल्-तो; वेनिलै विळम्पलामो-धूप का कहना क्या; अत्तु अत्तुम् विटम् उण्टारै-काम नाम का विष जिसने खाया है, उसका; आऱ्ऱल् आम् मरुन्दु-शमन करनेवाली दवा भी; उण्टो-है क्या; इन्पमुम् तुन्पन् तात्तुम्-सुख और दुःख; उळत्तो-मन के साथ; डियैन्त अन्ऱे-लगे हुए (अनुभव) हैं न । ६५३

वसन्त के कारण बड़े-बड़े कठोर पेड़ भी मनोरम हो गये । पर्वत भी आँखों को ठण्डक (आराम) पहुँचानेवाले हो गये । पर धूप तो थी । जिसको हिम भी ताप दे रहा था उसको धूप क्या देगी, यह कहने की आवश्यकता है क्या ? काम का विष जिसने पिया है, उसके ताप को शान्त करनेवाली दवा इस लोक में कहाँ प्राप्य है ? सुख व दुःख अपने-अपने मन की अनुभूत दशाएँ हैं न ? फिर बाहर का उपचार क्या कर सकता है ? । ६५३

मादिरत् तिरुदि कारुन् दन्मनत् तैलुन्द मैयल्
वेदत्तै वैप्पम् जैय्य वेतिलुम् वैदुप्पुड् गाले
यादिदिड् गिदत्तिन् मुत्तैच् चिशिरत्तन् त्रिदत्तै नौक्किक्
कूदिराम् बरुवन् दन्तैक् कौणरुदिर् विरैवि नैन्ऱान् 654

तन् मत्तत्तु अल्लुन्त-अपने मन में उठी; मैयल् वेतत्तै-प्रेम की वेदना ने;
मातिरत्तु इरुति कारुम्-दिगन्त तक; वैप्पम् जैय्य-गरमो दिला दी, तब; वेतिलुम्
वैदुप्पुम् काले-धूप ने भी ताप दिया, तो; यातु इड्कु-कौन (सी ऋतु) यहाँ;
मुत्तै चिचिरम् इतत्तिन् नन्ऱ-पहले का शिशिर इससे बेहतर रहा; इतत्तै नौक्कि-
इसको दूर करके; कूतिर् आम् परुवम् तन्तै-शरद ऋतु को; विरैविल् कौणरुतिर्-
तुरन्त लाओ; अन्ऱान्-कहा। ६५४

रावण के मन का ताप दिगन्त तक फैलकर तपाने लगा। उस पर
वसन्त की धूप भी मिल गयी। वह और भी गरम हो गया। पूछा कि
अब कौन सी ऋतु आयी है यह? पहले जो शिशिरकाल था वह इससे
बेहतर था, ऐसा लगता है। उसने आज्ञा दी— हटाओ इसे। शरदऋतु
को लाओ शीघ्र। ६५४

कूदिर्वन् दडैन्द कालै कौदित्तत्त कुववुत् तिण्डोळ्
शीदमुम् जुडुमो मुत्तैच् चिशिरमे काणि नैन्ऱान्
आदिया यज्जु मन्ऱे यरुळल दियर्ऱ लैन्त
यादुमिड् गिरुडु माहा यावैयु महर्ऱु नैन्ऱान् 655

कूतिर् वन्तु अटैन्त कालै-शरद जब आया; कुववु तिण् तोळ्-पुष्ट और सुबूढ़
कंधे; कौदित्तत्त-गरम हो गये; शीदमुम् जुडुमो-शीत भी जलायगा क्या; मुत्तै
चिचिरमै इतु-पहले का शिशिर ही यह; काण्-देखो; अन्ऱान्-बोला; आतियाय्-
नाय; अरुळ् अलतु-आज्ञा के सिवाय; इयर्ऱल्-करना; अज्जुम्-डरते हैं; अन्त-
कहा, तो; इड्कु-यहाँ; इरुतु यातुम्-कोई भी ऋतु; आकातु-(भली) नहीं हो
सकती; यावैयुम् अकर्ऱम्-सबको हटाओ; अन्ऱान्-कहा; (अन्ऱ-ए)। ६५५

शरद आया। (पर क्या फल होता?) उसके पुष्ट और सबल कंधे
जल उठे। “ऐ! शीत भी जला सकेगा क्या? वही शिशिर यह है!
देखो!” जब रावण ने यह कहा तब उसके दासों ने विनय की कि महाराज!
हम आपकी आज्ञा के सिवा कुछ अन्य करने से डरेंगे। (आप विश्वास
मानें कि यह शरद है।) तब रावण ने आज्ञा दी कि सो बात है तो कोई
भी ऋतु कुछ नहीं करेगी। यहाँ कोई ऋतु न हो। हटाओ सबको। ६५५

अन्तलु मिरुडु वैल्ला मेहलुम् यावुन् दन्दम्
पन्नरुम् बरुवज् जैय्या योहिपोल् पर्ऱु नौत्त
पिन्नरु मुलह मैल्लाम् पिणिमुदर् पाशम् वीशित्
वुन्नरुन् दवत्तो रैय्दुन् डुरक्कम्बोर् रोन्ऱिर् इन्ऱे 656

अँतुतलुम्-कहते ही; इरुतु अँल्लाम्-सभी ऋतुएँ; एकलुम्-चली गई, तब; पावुम्-सभी (पदार्थ); पन् अरुम्-अवर्ण्य; परुवम् चँय्या-मौसम के अनुसार व्यापार छोड़कर; योकि पोल्-यतियों की तरह; पड्क् नीतुत-निर्लिप्त रह गये; पित्तुतुम्-और फिर; उलकम् अँल्लाम्-सारे लोक; पिणि मुतल् पाचम् वीचि-रोग आदि कर्म-पाश हटाकर; तवत्तोर् अँयुतुम्-तपस्वी द्वारा प्राप्य; तुन् अरुम् तुडक्कम् पोल्-दुर्गम स्वर्ग के समान; तोन्नुडिड्क्-दिखाई दिया । ६५६

उसके ऐसा कहने पर सारी ऋतुएँ चली गयीं । उनके साथ कालोचित व्यापार भी रुक गये । इसलिए उस उद्यान में रहे चल और अचल सभी पदार्थ और जीव योगी के समान अचल और निर्लिप्त रह गये । वे ही क्या सारे लोकों के सारे जीव रोग आदि कर्मबन्धन काटकर स्थिर रहे । इसलिए लोक तपस्वी द्वारा प्राप्य और साधारण रीति से दुर्गम स्वर्ग के समान दिखे । ६५६

कलत्ता रुलह मँल्लाड् गौदिप्पोडु कुळिर्प्पु नीड्ग
नीलत्ता ररक्कन् मेनि नैय्यिन्नुडि यैरिन्द दन्नुडे
कालत्ताल् वरुव दौन्नुओ कामत्ताल् कनलुम् वँन्दीच्
चीलत्ता लविप्प दन्नुडिच् चँय्यत्ता नाव दुण्डो 657

कलत्तु आर्-सीमा-वद्ध; उलकम् अँल्लाम्-सारे लोक; कौतिप्पु और कुळिर्प्पु नीड्क-गरमी व ठण्डी से रहित हुए, तब; नीलत्तु आर् अरक्कन् मेनि-नीलवर्ण राक्षस का शरीर; नैय् इन्नुडि-घी के बिना ही; अँरिन्तु-जला; कालत्ताल् वरुवतु औन्नुओ-ऋतु के कारण आया वह क्या; कामत्ताल्-काम के कारण; कनलुम् वँम् ती-जलनेवाली गरम आग की; चीलत्ताल्-शीलगुण द्वारा; अविप्पतु अन्नुडि-बुझाना छोड़कर; चँय्य तान् आवतु उण्टो-करने के लिए कोई दूसरा है क्या । ६५७

संसार सीमावद्ध है । उसकी गति-विधि आदि के नियम हैं । अब वे नियम नहीं रहे । अतः न शीत था, न ताप । तब भी नीलवर्ण रावण का शरीर ताप का अनुभव करने लगा । वह बिना घी के ही जलने लगा ! उसका ताप काल के व्यापार के फलस्वरूप आनेवाला नहीं था ! परं उसके मन की काम रूपी जलती आग से होनेवाला ताप था । उसकी शान्ति शीलगुण से ही हो सकती थी । दूसरा कोई परिहार क्या होगा ? । ६५७

नारमुण् डँळुन्द मेहन् दामरै वळैय नान्त्
चारमुण् डिरुन्द शीदच् चन्दत्तन् दळिर्मेन् शदो
डारमुण् डैरिन्दु शिन्दै ययर्हिन्नुडा तयत्तिन् शारै
ईरमुण् डैन्ब रोडि यिन्दुवैक् कौणरु मँन्नुडान् 658

नारम् उण्टु अँळुन्त-जल पीकर जो उठे; मेकम्-वे मेघ; तामरै वळैयम्-कमलनालों के वलय; नान् चारम् उण्टु इरुन्त-कस्तूरी और गन्ध-द्रव्य-मिला; चीत चन्ततम्-शीतल चन्दन; तळिर्-पल्लव; मँल तातोडु-कोमल पराग के साथ;

आरम्-मोती; उण्डु-उसके शरीर पर रखे गये; अरिन्तु-(पर) जलन से; चिन्त
अयर्किन्नान्-मन में तप्त हो थकता है; अयल् निन्नारै-पार्श्व में स्थित लोगों को;
ईरम् उण्डु अन्तर्-शीतलता है, कहते; ओटि-भागो; इन्तुवै-इन्दु को; कौण्डम्
अन्नान्-लाओ, कहा । ६५८

रावण के शरीर पर शीत देनेवाले पदार्थ रखे गये । जल-भरे मेघ;
कमलनालों के बने वलय; कस्तूरी-मिला शीतल चन्दन; पल्लव; कोमल
मकरन्द; मोती आदि उसका ताप हर नहीं रहे थे बल्कि ताप को बढ़ाने
लगे । तब उसने अपने पार्श्वस्थों से कहा कि लोग कहते हैं कि चन्द्र में
शीत (देने की शक्ति) है । जाकर इन्दु को पकड़ लाओ । ६५८

वैज्जिनत्	तरक्क	नाण्ड	वियन्नहर्	मीडु	मेव
नैज्जयिर्त्	तौडुङ्गु	हिन्ऱ	निऱैमदि	योत्तै	नेडि
अज्जलै	वरुदि	निन्नै	यळैत्तन्न	तरश	नैन्तच्च
चज्जलन्	डुऱन्ऱु	तानच्	चन्दिर	नुदिक्क	लुऱ्ऱान् 659

वैम् चित्तत्तु-भयंकर क्रोधी; अरक्कन् आण्ड-राक्षस से पालित; वियन् नकर
मीतु-बड़े उस नगर के ऊपर; मेव-जाने से; नैज्चु अयिर्त्तु-मन में डरकर;
औडुक्कुकिन्ऱ-परे चलता जो रहा, उस; निऱै मत्तियोत्तै-पूर्णचन्द्र को; नेटि-ढूँढ़कर;
अज्जलै-मत डरो; निन्नै-तुमको; अरचन्-राजा ने; अळैत्तन्न-बुलाया है;
अन्त-कहने पर; अ चन्तिरन्-वह चन्द्र भी; चज्जलम् तुऱन्तु-घबड़ाहट छोड़कर;
उत्तिकल् उऱ्ऱान्-उदित हुआ । ६५९

चन्द्र तो भयंकर क्रोधी राक्षसराज से पालित बड़े नगर—लंका—के
ऊपर जाने से बिल्कुल डरता था । इसलिए वह उसे बचाकर कहीं घूमता
रहा । राक्षसों ने उसे ढूँढ़कर पकड़ा । उससे कहा—मत डरो । राजा
ने तुम्हें बुलाया है । वह चन्द्र भी कुछ अर्धर्य छोड़कर धीरता का अवलंबन
करके उदित हुआ । ६५९

अयिऱुक्	कलन्द	तीम्बा	लाळिनिन्	आळि	यिन्ऱु
शैयिऱुऱ्	करश	नाण्डोर्	तेयवुवन्	डुऱ्ऱ	पोळ्दिन्
वयिऱमुऱ्	रुडैन्द	माऱ्ऱान्	वलियऱच्	चैन्ऱ	वन्ऱन्
उयिर्त्तैऱ	वुवन्ऱु	वन्दा	नौत्तन्न	नुदयज्	जैय्दान् 660

चैयिर् उऱ्ऱुक् अरचन्-अपने शत्रु राजा के; ओर् तेयवु उऱ्ऱ पोळ्दितल्-निर्बल
रहते समय; आण्डु-तब; वयिऱम् उऱ्ऱ-वैर साधकर; उदैन्त माऱ्ऱान्-बलहीन
शत्रु के; वलि अऱ-बल को ध्वस्त करने; चैन्ऱ-चढ़ जाकर; अवन् तन् उयिर्
तैऱ-उसके प्राणों का अन्त करने की; उवन्तु वन्तान्-चाह लेकर आया हो; औत्तन्न-
उसकी तरह; अयिर् उऱ कलन्त-शर्करा (या सूक्ष्म सिकता) से युक्त; तीम् पाल्
आळि निन्ऱ-मधुर क्षीरसागर से; आळि इन्तु-गोल चाँद; उतयम् चैय्त्तान्-उदित
हुआ । ६६०

कोई राजा है। उसका शत्रु निर्बल हो गया है। उस समय यह राजा अपना वैर साधने के इरादे से विकट स्थिति में रहनेवाले उस शत्रु पर आक्रमण करके उसके प्राण हरने के लिए आता हो ऐसा, शर्करा-भरे क्षीर-सागर-मध्य से गोल पूर्णचन्द्र उगकर आया। ६६०

परावरुड्	गदिरुह	ळैङ्गुम्	परपिमीप्	पडरुन्दु	वानिल्
तरादलत्	तैवरुम्	वेणत्	तण्मदि	युदित्त	तोड्डम्
अरावणत्	तुयिलु	मण्णल्	कालमोर्न्	दड्ड	नोक्कि
इरावण	तुयिर्मे	लुयत्त	तिहिरियु	मैन्त	लान्त 661

पराव अरुम्—जिसकी पूरी प्रशंसा करना कठिन है; तण् मति—वह शीतल चन्द्र; कतिरुक्ळ अँङ्कुम् परपि—सर्वत्र किरणें फैलाते हुए; वानिल् मी पडरुन्तु—ऊपर आकाश में चलकर; तरातलत्तु अँवरुम् पेण—धरातल के सबका स्वागत पाकर; उतित्त तोड्डम्—उदित जो हुआ वह दृश्य; अरा अणं तुयिलुम् अण्णल्—शेष-शय्या पर निद्रा करनेवाले प्रभु द्वारा; कालम् ओरुन्तु—समय विचारकर; अड्डम् नोक्कि—सन्दर्भ निश्चित कर; इरावणत्—रावण के; उयिर्मेल् उयत्त—प्राणों पर चलाया गया; तिकिरियुम् अँन्तल्—(सुदर्शन) चक्र-सम; आन्त—हुआ। ६६१

अवर्णनीय यशस्वी शीतल चन्द्र आकाश में ऊपर उदित हुआ। तब उसकी किरणें सब जगह फैलीं। भूमि के सभी लोग उसका चाव के साथ स्वागत करने लगे। तब वह दृश्य शेषशायी श्रीमन्नारायण के चक्र के समान था, जिसे उन्होंने उचित समय विचारकर और ठीक सन्दर्भ देखकर रावण पर चलाया हो। ६६१

अरुहु	पालिन्	वैलै	यमुदैला	मळैन्दु	वारिप्
परुहित	परन्तु	पाय्न्द	निलाच्चुडर्	पतिमैन्	कड्डै
नैरिवु	पुरुवच्	चैङ्ग	णर्क्कड्डु	नैरुपि	नाप्पण्
उरुहिय	वैळ्ळि	यळ्ळि	वीशिना	लौत्त	दन्तु 662

अरुहु उड्ड—पास रहे; पालिन् वैलै—क्षीरसागर के; अमुतु अँलाम्—सारे अमृत की; अळैन्तु वारि परुहित—(चन्द्र ने) टटोल, उठाकर खा लिया; परन्तु पाय्न्त—(वही अमृत) सर्वत्र फैलकर व्यापा; निला चुटर्—(उस अमृत की) चाँदनी की किरणों की; पति मैल् कड्डै—शीतल कोमल राशि; नैरिवु उड्ड पुरुव—तनी हुई भौंहों के; चैम् कण् अरुक्कड्डु—अरुणाक्ष राक्षस रावण के लिए; नैरुपिन् नाप्पण्—अग्नि-मध्य; उरुहिय—पिघली हुई; वैळ्ळि—चाँदी; अळ्ळि वीचिताल्—उठाकर जो फेंकी गई; औत्ततु—उसके समान रही। ६६२

चन्द्र की चाँदनी की शीतल किरणों की राशि क्या थी! उसने अपने पास के क्षीरसागर से टटोल लेकर जो अमृत खाया था, वह मानो सब जगह फैल रहा था। लेकिन वह तनी हुई भौंहों और लाल आँखों के साथ जो रहा, उस रावण के लिए अग्निमध्य चाँदी को पिघलाकर प्राप्त द्रव के समान था जिसे उस पर उड़ेल दिया हो। ६६२

मिन्नलन् दिहळ्ळुज् जोदि विळुनिला मिदिले शूळ्न्द
 शैन्नैलङ् गळुनि नाडन् तिरुमहळ् शैव्वि केळा
 नन्तलन् दौलेन्दु शोरु मरक्कन् नाळुन् दोलात्
 तुन्नल तौरवन् बैरु पुहळैन्च् चुट्ट दन्ने 663

मिन् नलम् तिकळुम् चोति-विद्युत के गुण के साथ विद्यमान ज्योति की; विळु निला-श्रेष्ठ चाँदनी ने; चूळ्न्त-चारों ओर घेरे रहनेवाले; चैम् नैल्-लाल धान के; अम् कळत्ति-मनोहर खेतों से युक्त; मितिले नाटन्-मियिलेश की; तिरुमहळ् शैव्वि-विष्य मुता सीता का रूपसौंदर्य; केळा-श्रवण कर; नल् नलम् तौलेन्तु चोरम्- (उसके फलस्वरूप) अपना बल सब छोकर लटनेवाले; अरक्कन्-राक्षस, रावण की; नाळुम् तोला-कभी न हारनेवाले; तुन्नलन् औरवन् बैरु पुक्कळ् अंत-शत्रु से प्राप्त यश के समान; चुट्ट-तपाया । ६६३

उस चाँदनी में विद्युत की-सी ज्योति भरी थी । रावण उस विदेह देश के राजा की सुपुत्री जानकीदेवी का रूपसौंदर्य सुनकर अपने सभी तरह के बल को क्षीण होने देते हुए छटपटा रहा था; जिस देश के चारों ओर लाल धान के पौधों से भरे खेत पाये जाते थे । वह चाँदनी उस रावण को इस तरह तपाने लगी, जिस तरह अजेय शत्रु का यश किसी वीर को तपाता है । ६६३

करुङ्गळ्ळु काल तन्नजुङ् गावलन् करुत्तु नोक्कित्
 तरुङ्गदिर्च् चीद याक्कैच् चन्दिरु इरुदि रैन्न
 मुरुङ्गिय कत्तलिन् मूरि विटत्तितै यौळ्क्कुम् जीरुत्तु
 तरुङ्गदि रक्कन् इन्नै यारळैत् तौरह ळैन्नात् 664

करुम् कळल् कालन्-बड़ी पायलों से भूषित यम भी; अन्नम्-जिससे डरता है; कावलन्-राक्षसराज; करुत्तु नोक्कि- (भृत्यों को) गुस्ते के साथ देखकर; चीत्तम् तरुम् कतिर् याक्कै-शीत देनेवाली किरणों के शरीर के; चन्तिरन् तरुतिर् अन्न-चन्द्र को लाओ, कहा; मुरुङ्किय कत्तलिन्-खूब जलती हुई आग के साथ; मूरि विटत्तितै-भयंकर विष की; यौळ्क्कुम्-बरसानेवाले; जीरुत्तु-क्रुद्ध; अरुम् कतिर् अरक्कन् तन्नै-संतापी किरणमाली सूर्य की; यार् अळैत्तीर्कळ्-तुम लोगों में किसने बुलाया; ळैन्नात्-पूछा । ६६४

बड़ी पायलधारी यम के भी भयदायी रावण ने अपने भृत्यों को देखकर पूछा कि शीतल-किरण-शरीरी चन्द्र को लाओ —यही मैंने कहा था । लेकिन यह सर्वदाहक अग्नि के साथ भयंकर विष को बरसानेवाले और विवृद्ध कठोर किरणमाली को लाया गया है । तुम लोगों में किसने उसको बुलाया ? । ६६४

अव्वळिच् चिलद रज्जि यादिया यरुळिल् लारै
 इव्वळित् तरुदु मँत्ब दियम्बला मियल्बिड् उन्नाल्

शैव्वळिक् कदिरो तैन्नन् देरिन्मे लन्ऱि वारान्
 अैव्वळित् तैन्निनुन् दिङ्गळ् विमानत्तित्तिन् मेल दैन्ऱार् 665

अ वळि-तव; चिलत्-भृत्यों ने; अञ्चि-डरकर; आतियाय्-नायक;
 अळ् इल्लार्-आपने जिसको लाने की आज्ञा देने की कृपा नहीं की; इ वळि-(उसको)
 इधर; तत्तुम् अत्तपत्तु-लायेंगे, ऐसा करना; इयम्पल् आम् इयल्पिर्ऱु अत्तु-कहने
 योग्य बात नहीं है; चैम् वळि कतिरोन्-अपने मार्ग पर सीधे चलनेवाला सूर्य; अत्तुम्-
 सदा; तेर् मेल अन्ऱि-रथ पर आना छोड़कर; वारान्-नहीं आयगा; तिङ्कळ्-
 चन्द्र; अै वळित्तु अैत्तिनुम्-किसी भी मार्ग पर क्यों न हो; विमानत्तित्तिन् मेलत्तु-
 यान पर ही चलेगा; अैन्ऱार्-(उत्तर में) कहा । ६६५

तब भृत्यों ने भयभीत होकर विनय की । हे नाथ ! आपने जिसको
 लाने की आज्ञा कृपापूर्वक नहीं की, उसको हम लायेंगे, यह बात कथनीय
 नहीं है । सीधे मार्ग पर जानेवाला सूर्य कभी भी रथ पर आना छोड़कर
 किसी दूसरी तरह से नहीं आयगा । और चन्द्र, जहाँ भी जाये, यान पर
 ही जायगा । ६६५

पणन्दा लल्लुड् पनिमौळियार्क् कन्बु पट्टार् पडुङ्गामक्
 कुणन्दात् मुन्त मरियादात् कौदिया निन्ऱान् मदियाले
 तणन्दा मरैयिन् इत्तिप्पहैज तैन्निनुन् दन्मै यौरुदाने
 उणर्न्दा नुणर्वुड् उवन्मेलिट् टुयत्त तुन्बम् मुरैशैय्वान् 666

पणम् ताल्ल अल्कुल्-सर्पफन को उपमा में नीचे दिखानेवाला वरांग; पत्ति
 मौळियार्क्कु-शीतल बोली, इनसे युक्त स्त्रियों के प्रति; अन्पु पट्टार्-काम के वश
 में जो हुए; पटुम्-उसको सतानेवाला; काम कुणन्तान्-कामरोग की स्थिति को;
 मुन्तम् अरियातान्-जो पहले नहीं जानता था, वह रावण; मतियाल्-उस चन्द्र से;
 कौतिया निन्ऱान्-तप्त रहा; तण् अम् तामरैयिन्-शीतल सुन्दर कमल का; तत्ति
 पक्कन्-विशेष शत्रु वह; अैन्नुम् तन्मै-यह रीति; और ताते उणर्न्तान्-एक तरह
 से स्वयं जानकर; उणर्वु उर्ऱु-होश में आकर; उयिर् तन्तु उय्क्क-प्राण
 (स्वस्थता) पाकर बचने के लिए; अवन् मेलिट्-उस चन्द्र के प्रति; उरै चैय्वान्-
 बोलने लगा । ६६६

रावण को कभी सर्प-फन के समान वरांग और शीतल, मधुर वाणी
 की स्त्रियों के प्रेम में फँसे हुए लोगों के काम-ताप की वेदना का प्रकार नहीं
 मालूम था । अब वह इस चन्द्र के कारण वेदना से तड़पने लगा । तब
 उसे स्मरण आया कि यह शीतल, सुन्दर कमल का अनोखा शत्रु है । तब
 उसे सुध आयी कि मैं इससे प्राण पाकर बचने के लिए कुछ कहूँ —यह
 सोचकर वह चन्द्र के प्रति कहने लगा । ६६६

तेया निन्ऱाय् मैय्वैळुत्ता युळ्ळड् गरुत्ताय् निलै तिरिन्दु
 काया निन्ऱा यौरुनियुड् कण्डार् शौल्क केट्टायो

पाया निन्ऱु मलर्वाळि पडिया निन्ऱा रिल्लैयाल्
ओया निन्ऱे नुयिरहात्तुऱ् कुरिया रारे युडुवदिये 667

उडुपतिये—उडुपति; तेया निन्ऱाय्—क्षीण होता जाता है; मैय् वैळुत्ताय्—शरीर पाण्डुर है; उळ्ळम् कऱुत्ताय्—दिल काला है; निले तिरिन्तु काया निन्ऱाय्—गुण बदलकर सूख गया; ओरु नीयुम्—अनोखी स्थिति में रहनेवाला तू भी; कण्टार् चोल्ल—किसी के एक स्त्री को देखकर तेरे पास बताने से; केट्टायो—तूने सुन (कर प्रेम करने लग) गया क्या; पाया निन्ऱु—सवेग आनेवाले; मलर् वाळि—सुमन-शर; पडिया निन्ऱार्—निकालनेवाले; इल्लैयाल्—नहीं हैं, इसलिए; ओया निन्ऱेन्—थका हैं; उयिर् कात्तुऱ्कु—मेरे प्राण वचाने का; उरियार् यारे—जिम्मा तेनेवाले कौम है। ६६७

रावण ने कहा— उडुपति ! तू दिन व दिन क्षीण होता जाता है। तेरा शरीर पाण्डुर है। दिल काला है। तेरी स्थिति बदल गयी है और तू झुलस गया है। इस विचित्र दशा में रहनेवाले तूने भी क्या किसी के द्वारा उसकी देखी हुई स्त्री के सम्बन्ध में सुनकर प्रेम किया है? वेग से आकर मेरे ऊपर लगकर जो मन्मथ-शर मुझे सता रहे हैं उनको निकालकर मुझे बचानेवाला कोई नहीं रहा। इसलिए मैं निर्वल होकर थका हुआ हूँ। मेरी जान वचानेवाले कौन हैं ?। ६६७

आऱ्ऱा राहिऱ् इम्मैक्कोण् डडङ्गा रोवैन् तारुयिर्कुक्कु
कूऱ्ऱाय् निन्ऱु कुलच्चनहि कुवळे मलर्न्द तामरैक्कुत्
तोऱ्ऱा यदन्ना लहङ्गरिन्दाय् मैलिन्दाय् वैदुम्बत् तौडङ्गिन्नाय्
माऱ्ऱार् शैल्वड् गण्डळिन्दाल् वैऱ्ऱि याह वऱ्ऱामो 668

अँन् आर् उयिर्कुक्कु—मेरे प्रिय प्राणों का; कूऱ्ऱाय् निन्ऱु—यम जो बनी खड़ी है; कुल चतकि—उच्चकुल-जात जानकी के; कुवळे मलर्न्द—विकसित नीलोत्पलों (आँखों) सहित; तामरैक्कु—कमल (मुख) के सामने; तोऱ्ऱाय्—तू हार गया; अतत्ताल्—उस कारण; अकम् करिन्ताय्—दिल का (क्रोध से) काला हो गया; मैलिन्ताय्—पतला हो गया; वैदुम्प तौडङ्किताय्—झुलसने लगा; माऱ्ऱार् चैल्वम् कण्टु अळिन्ताल्—अन्य मनुष्य का धन देखकर जलेगा तो; वैऱ्ऱि आक—विजयी बनने का; वऱ्ऱु आमो—बल मिलेगा क्या। ६६८

हे चाँद ! तू उस कुलीन जानकी के कमल-सम मुख के सामने हार गया, जो मेरे प्यारे प्राणों का यम बनी है। उस जानकी के कमल-सम मुख में दो नीलोत्पल-सम आँखें हैं। हार जाने की वजह से तेरा दिल झुलस गया है। तू क्षीण होकर जल रहा है। प्रतिद्वन्द्वी का धन देखकर ईर्ष्या के कारण छीजने से विजय पाने की शक्ति मिल जायगी क्या ?। ६६८

अँन्तप् पन्ति थिडरुळ्वा विरवो डिवनेक् कोण्डहऱ्ऱि
मुन्नैप् पहलुम् पहलानुम् वरुह वैन्ऱान् मौळियामुन्

उन्नत्करिय वुडुबदियु मिरवु मौळित्त वीरुनीडियिल्
पन्नत् करिय पहलवनुम् पहलुम् वन्नु परन्दवाल् 669

अन्नत् पन्ति-ऐसा विलाप करके; इटर् उल्ला-दुःख से पीड़ित होकर; इरवोट्टु इवत्त-रात के साथ इसको; कौण्टु अकड्डि-पकड़कर दूर करो; मुन्नत् पकलुम्-पहले रहा दिन और; पकलौनुम्-दिनकर को; वरुक्-आने दो; अन्नत्तान्-कहा; मौळियामुन्-उसके कहने के पूर्व ही; उन्नत्तु अरिय-अचिन्त्य यशस्वी; उट्टुपतियुम्-उट्टुपति और; इरवुम्-रात्रि; ओरु नौटियिल्-एक चुटकी भर में; औळित्त-छिप गये; पन्नत्तु अरिय-अवर्ण्य यशस्वी; पकलवनुम्-दिनकर और; पकलुम्-दिन; वन्नु परन्त-आकर व्याप गया। ६६६

इस तरह विविध प्रकार से रावण विलापते हुए दुखता रहा। फिर उसने कहा— रात के साथ चाँद को भी हटा देकर पहले की तरह दिन और दिनकर को आने दो। उसके कहते ही अचिन्त्य यशस्वी उट्टुपति रात के साथ चुटकियों में छिप गया। अवर्णनीय यशस्वी दिन और दिनकर आ गये। ६६९

इरुक्किन् मौळिया लैरिमुहत्ति नीन्द नैय्यि नैरिशम्बोन्
उरुक्कि यनैय कदिर्बाय वन्नल्बोल् विरिन्द वुयर्हमलम्
अरुक्क नैय्द वमैन्दडङ्गि वाळा दडाद पौरुळ्यदिच्
चैरुक्कि पिडैये तिरुविल्लन्द शिरियोर् पोन्न् चेदाम्बल् 670

अरुक्कन्-सूर्य; अैरि मुरवत्तिन्-अग्नि में; इरुक्किन् मौळियाल्-वेदमन्त्रों के साथ; ईन्नत्-डाले गये; नैय्यिन्-घी के समान; अयत्त-आ गया तब; कतिर्-उसकी किरणें; अैरि-भट्ठी में; चैम्पोन् उरुक्कि अतैय-लाल स्वर्ण के गले हुए द्रव के समान; पाय-भूमि पर आ फैलीं; उयर् कमलम्-उत्कृष्ट कमल; अत्तल् पोल् विरिन्त-अग्निज्वालाओं के समान खिले; चेताम्पल्-लाल कुमुद; चिरियोर्-नीच लोग; अटात् पौरुळ् अयत्ति-अनुचित रीति से धन प्राप्त करके; अमैन्नु अट्टुक्कि वाळातु-शम-दम के साथ जीवन न बिताकर; चैरुक्कि-गर्व करते हुए (जब रहते हैं) तब; इट्टै-बीच में ही; इल्लन्त-खो गये हों, ऐसा; तिरु-विकास; इल्लन्त-खो गये (बन्द हो गये)। ६७०

सूर्य क्या आया? होमाग्नि में वेदमन्त्र के साथ पड़नेवाले घी के समान रहा वह। उसकी किरणें भट्ठी में पिघलाये हुए चोखे स्वर्ण के द्रव के समान भूमि पर फैलीं। तब श्रेष्ठ कमल अग्निज्वाला के समान विकसित हुए। लाल कुमुद उन छुद्र मनुष्यों के समान श्रीहीन हुए, जो अधार्मिक रास्तों से धन प्राप्त कर शम और दम के साथ नहीं रहते, पर गर्वीले रहते हैं और जिनकी सम्पत्ति बीच में ही लुप्त हो जाती है। ६७०

नाणि निन्न् वौळिमळुङ्गि नडुङ्गा निन्न् वुडम्बित्ताय्च्
चेणि निन्न् वुज्ज्जाय्न्दु कङ्गुर् रारम् बिन्शैल्लप्

पूणिन् वैय्यो नौरुदिशैये पुहुदप् पोवान् पुहळ्वेन्दर्
आणै शैल्ल निलैयिळ्ळन्द वरशन् बोन्डा नल्लाण्डान् 671

पूणिन् वैय्योन्-संसार का आभरण-स्वरूप सूर्य; और तिचैये पुकुत-उत्तम एक (पूर्व) दिशा में उदय हुआ; अल् आण्डान्-रात का नायक; नाणि-लजाकर; निन्ड ओळि-अपने पास रही ज्योति के; मळ्ळुक्कि-मन्द पड़ते; नट्टुका निन्ड उटम्पित्तन् आय्-काँपते शरीर का बनकर; चेणिन् निन्ड-आकाशमध्य से; पुडम् चाय्न्तु-एक ओर उतरकर; कङ्कुल् तारम् पिन् चैल्ल-रात रूपी पत्नी के पीछा करते; पोवान्-जो गया वह; पुकळ् वेन्तर्-विख्यात राजा के; आणै चैल्ल-शासन में; निलै इळ्ळन्त-अपनी स्थिति से च्युत; अरचन् पोन्डान्-छोटे राजा के समान लगा । ६७१

संसार का आभरणरूप सूर्य उत्तम पूर्व दिशा में उदय हुआ तो रात का शासक चाँद उसको देखकर शरमाया, मन्दप्रभ हुआ और आकाश-मध्य से काँपते हुए उतरकर हट गया । उसके पीछे रात रूपी उसकी पत्नी भी चली । बड़े राजा के शासन में छोटे राजा की स्थिति जैसे विगड़ जाती है, वैसे चन्द्र का शासन भी विगड़ गया । ६७१

मणन्दपे रत्नवरं मलरिन् शेक्कैयुळ्
पुणर्न्दिल रिडैयोरु वैहुळि पौङ्गलाल्
कणङ्गुळ् महळिर्हळ् कङ्गुल् वीय्न्दवेन्
रणर्न्दिलर् कनविन् मूड शीर्न्दिलार् 672

कत्तम् कुळै मकळिर्कळ्-भारी कुण्डलधारिणी स्त्रियों ने; मलरिन् चेक्कै उळ्-पुष्पशय्या पर; मणन्त पेर् अन्पर-मिले रहे पतियों के साथ; इटै और वैकुळि पौङ्गल् आल्-बीच में रोष के होने से; पुणर्न्तिलर्-सम्भोग नहीं किया था; कङ्कुल् वीय्न्तु-रात चली गई; अन्ड उणर्न्तिलर्-यह नहीं समझी; कत्तविलुम्-तब के स्वप्न में भी; ऊटल् तीर्न्तिलार्-रुठन नहीं छोड़ी । ६७२

(अकाल में अकस्मात् अर्क के आगमन से क्या-क्या हुआ, उसका रसीला वर्णन है ।) कुछ राक्षस-स्त्रियाँ, जिनके कर्णों को भारी कुण्डल अलंकृत कर रहे थे, अपने पतियों के साथ पुष्पशय्या पर लेटी हुई थी । अकस्मात् उनके मन में रुठन हो गयी और रोष उभर आया था । अतः क्रीड़ा रुक गयी थी । अब उन्हें ज्ञात नहीं था कि सवेरा हो आया है । इसलिए वे स्वप्न में भी मान कर रही थीं । रुठन नहीं छोड़ी । ६७२

अणैमलर्च् चेक्कैयु ठाड शीर्न्दत्तर्
पणैहळैत् तळुविय पवळ वल्लिबोल्
इणैमलर्क् कैहळि निरुह विन्नुयिर्त्
तुणैवरैत् तळुविन् त्रुयिल्हिन् शार्शिलर् 673

चिलर्-कुछ स्त्रियाँ; अणै मलर् चेक्कै उळ्-गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में;

आटल् तीरन्तत्-रतिक्रीड़ा समाप्त करके; पणैकळै तळुविय-मोटी डालों से लिपटी; पबळ वल्लि पोल्-प्रवालवल्ली के समान; इणै मलर् कैकळिन्-जोड़े के सुमन-हस्तों से; इन् उयिर् तुणैवरै-प्राणप्यारे पतियों का; तळुवितर्-आलिंगन करती हुई; तुयिल्किन्डार्-सोती हैं । ६७३

और कुछ राक्षस-स्त्रियों ने रतिक्रीड़ाएँ पूरा कर ली थीं । गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में वे अपने प्यारे पति का आलिंगन करती हुई, स्थूल वृक्ष से लिपटी प्रवालवल्ली के समान सो रही थीं । ६७३

तळळुरु	मुयिरिन्	तळैवर्	नीङ्गलाल्
नळळिर	विडैयुरु	नडुक्क	नीङ्गलर्
कौळळैयि	त्तलर्दरुड्	गुवळै	नाण्मलर्क्
कळळुहु	वत्तवैतक्	कलुळुड्	गण्णिनार् 674

तलैवर् नीङ्गलाल्-पतियों के चले जाने से; तळ् उळ्म् उयिरितर्-चलित-प्राण होकर; नळ् इरवु इटै-अर्धरात्रि के समय; उळ्-जो हुआ; नडुक्कम् नीङ्गलर्-उस भय के कम्पन से मुक्त न होकर; अलर् तरु-विकसित; कुवळै नाण् मलर्-कुवलय के नवीन पुष्पों से; कळ् कौळळैयिन् उकुवत्त-मधु अधिक परिमाण में ढलकता है; अत्त-जैसे; कलुळुम् कण्णिनार्-जल बहानेवाली आँखों की बनीं । ६७४

कुछ स्त्रियों के प्रेमी पति उनको छोड़कर गये हुए थे । रात आधी बीत गयी । उनके प्राण डगमगाये । (उनका मन डोलायमान था ।) उनके शरीर काँप रहे थे । उनकी आँखों से, नवीन कुवलयफूलों से शहद झरता हो, ऐसा अश्रु बहने लगे । ६७४

अळियितन्	दडन्दीरु	मार्प्प	वाय्हदिर
ओळिवड	वुणर्हिल	वुडङ्गु	हिन्ऱत्त
तैळिविल	विन्ऱुयिल्	विळैक्कुज्	जेक्कैयुळ्
कळिहळै	निहर्त्तन	कळिहीळ्	ळत्तमे 675

आय् कतिर् ओळि पट-श्रेष्ठ सूर्यकिरण के लगते ही; अळि इतम्-भ्रमरकुल; तटम् तौरुम् आर्प्प-सब स्थानों में गुंजारने लगे; कळि कौळ् अत्तम्-मुदित हंस; कळिकळै निकर्त्तत्त-पियक्कड़ों के समान; इन् तुयिल् विळैक्कुम्-मधुर निद्रादायक; चेक्कै उळ्-(कमल की) शय्या में; तैळिवु इल उणर्किल-विना सुध-बुध के; उडङ्कुकिन्ऱत्त-सोते हैं । ६७५

रावण की आज्ञा से अप्रत्याशित रीति से सूर्य का उदय हो गया । अलिकुल-यत्त-तत्त गुंजार कर रहे थे । मुदित हंसवृन्द पियक्कड़ों के समान मधुर निद्रादायी कमल-शय्याओं पर सुध-बुध के विना सो रहे थे । ६७५

विरिन्दुरै	तुडैतौरुम्	विळक्कम्	यावैयुम्
अैरिन्दिल्लु	दः(ह)कल	वौळियि	ळन्दवाल

अरुन्दुरै निरम्पिय वयिरि नन्बरेप्
पिरिन्दुरै तरुङ्गुलप् पेदै मारित्ते 676

अरुम् तुरै निरम्पिय-मनोरम शृंगार-प्रकार जाननेवाले; उयिरित् अन्परे-प्राण-प्यारे पतियों से; पिरिन्तु उरैतरुम्-अलग होकर रहनेवाली; कुल पेत्ते मारित्ते-कुलीन स्त्रियों की तरह; विरिन्तु उरै-विशाल नगर के; तुरै तौळुम्-प्रासादों में; विळक्कम् यावैयुम्-सभी दीपक; इळुतु अरिन्तु-धी जलकर; अ. (ह) कल-कम नहीं हुआ तो भी; ओळि इळुन्त-मन्दप्रभ हुए । ६७६

कुछ स्त्रियों के रतिकलाविदग्ध प्रेमी पति उनको छोड़कर दूर चले गये थे और ये वियोगिनी नायिकाएँ घर पर रहीं । उन्हीं के समान बड़े-बड़े सौधों में रहे दीप भी मन्दप्रभ हो गये, यद्यपि उनमें वी अभी बाकी था (जलकर समाप्त न हुआ था) । ६७६

पुनैन्दिद लुरिञ्जुळुम् वौळुदु पुल्लियुम्
वनैन्दिल वैहुरै मलरु मामलर्
ननन्दलै यमळियिर् रुयिलु नङ्गुमार
अतन्दलि नैडुङ्गणो डौत्त वामरो 677

इतळ पुनैन्तु उरिञ्जुळुम्-दलों की सुन्दर रीति से विकसित करनेवाला; पौळुदु पुल्लियुम्-समय (सूर्योदय का) आया, तो भी (अप्रत्याशित रीति से हो जाने के कारण); वकुरै मलरुम् मा मलर्-सवेरे फूलनेवाले उत्तम फूल; वनैन्दिल-मनोरम (विकसित) नहीं हुए; ननम् तलै-विशाल; अमळियिल् तुयिलुम्-शय्या पर सोनेवाली; नङ्गुमार-स्त्रियों की; अनन्तलिन्-निद्रा में रहनेवाली; नैडुम् कणोटु औत्त आम्-दीर्घ आँखों के समान (मुकुलित रहे) । ६७७

दलों का स्पर्श कर उन्हें विकसित करनेवाली उदय-वेला आ गयी । तो भी सवेरे जिन श्रेष्ठ फूलों को विकसना था, वे मनोरम प्रकार से नहीं विकसे । - विशाल शय्या में सोनेवाली स्त्रियों की निद्रामग्न आँखों के समान बन्द ही रहे । ६७७

इच्चैयिर् रुयिल्बवर् यावर् कण्गळुम्
निच्चयम् पहलुन्द मिमैह णोङ्गिल
पिच्चैयु मिडुडुमैन् रुणर्दल् पेणला
वच्चैयर् नैडुमत्तै वायिन् मानवे 678

पिच्चैयुम् इडुतुम् अन्नु-भिक्षा देंगे, यह; उणर्तल् पेणला-भाव न रखनेवाले; वच्चैयर्-रूपणों के; नैडु मन् वायिल् मात्त-बड़े घर के द्वार के समान; इच्चैयिल्-अपनी इच्छा भर; तुयिल्बवर् यावर् कण्गळुम्-सोनेवाले सभी की आँखें; पळुम्-दिन होने पर भी; तम् इमैकळ्-अपनी पलकें; निच्चयम् नोङ्किला-निश्चय खोलकर नहीं जागें । ६७८

सुप्त लोगों की आँखें नहीं खुलीं । उदय होने के बाद भी निश्चित

रूप से नहीं खुलीं। उनकी पलकें उन लोभी कृपण लोगों के घरों के द्वारों के समान बन्द रहे, जो कभी याचकों को कुछ नहीं देते। ६७८

नञ्जुः	पिरिवित	नळळि	तीळमोर्नु
दञ्जुः	नडुवणो	रयर्बु	ताङ्गिय
वैञ्जिः	नीङ्गिय	वितैयि	तोर्न
नैञ्जुः	कळित्तत	नेमिप्	पुळ्ळैलाम् 679

नेमि पुळ् अलाम्-चक्रवाक पक्षी सब; नळळित्-रात में; नञ्चु उरु पिरिवित-विष-सम वियोग में रहे; नीळम् ओर्नु-रात की लम्बाई का विचार करके; अञ्चु-प्रय के साथ; ओर् अयर्बु ताङ्गिय-क्लेशयुक्त रहे; नडुवण्-उस दुःख के समय के बीच; वैम् चिः नीङ्गिय-कठोर कारा से विमुक्त; वितैयितोर् अन्त-सुकृतों के समान; नैञ्चु उरु कळित्तत-मन से मुदित हुए। ६७९

चक्रवाक पक्षियों को जब मालूम हुआ कि उदय-समय आ गया, तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। वे रात की लम्बाई का विचार करके भय के साथ निद्रा में लगी थीं। अब उसके बीच में ही उदय हो गया। कारामुक्त सुकृत्य वाले लोगों के समान वे बहुत आनन्दित हुए। ६७९

नाण्मदिक्	कल्लदु	नडुव	णैय्दिय
आणैयिः	डिःकला	वलरिः	पाय्वन
माण्वितैप्	पयनः	वच्चै	वायिल्शेर्
पाणरिः	उळर्न्दन	पाडः	रुम्बिये 680

पाटल् तुम्पि-सुरीले गानेवाले भ्रमर; नाळ् मतिककु अललतु-नवोदित चन्द्र के सिवा; आणैयिल्-रावण की आज्ञा से; नडुवण् अयैयि- (अकाल में) बीच में आये बिन में; तिरुक्कला अलरिल्-जो नहीं विकसते, उन (कुवलय आदि) पुष्पों में; पाय्वन-सवेग आते हैं; माण् वितै पयन् अरु-महान सुकृत्यों से वंचित; वच्चै-कृपणों के; वायिल् चेर्-द्वार पर आये; पाणरिल्-याचकों के समान; उळर्न्दन-हतोत्साह हुए। ६८०

सुरीला गान गानेवाले भ्रमर बहुत शीघ्र उड़ते हुए कुवलय आदि पुष्पों के पास आये। वे तो नवोदित चन्द्र के सामने ही खिलने के आदी थे। अब तो रावणाज्ञा से सूर्य आ गया है। इसलिए वे बन्द रहे। भ्रमरों की स्थिति उन गवैये याचकों के समान हो गयी, जो कृपणों के द्वार पर जाते हैं और उसको बन्द पाते हैं। ६८०

अरुमणिच्	चाळर	मदति	नडुबुक्
कैरिहदि	रिन्ऱुयि	लैळुप्प	वैयैदवुम्
मरुळीडु	तैरुळु	निलैयर्	मङ्गैयर्
तैरुळुः	मैय्पौरु	डैरिन्दि	लारिते 681

अह मणि चाळरम् अतनिन् ऊदु-श्रेष्ठ रत्नमय गवाक्षों द्वारा; पुक्कु-प्रवेश करके; अँरि कतिर्-सूर्य की किरणें; इन् तुयिल् अँळुप्प-मधुर नींद से जगाने के लिए; अँय्तवुम्-आ गई, आने पर; मङ्कयर्-राक्षस-स्त्रियों; तैरळ् उड् मैय् पोरळ् तैळिन्तिलारिन्-पूर्णरूप से साक़ ज्ञान न रखनेवाले के समान; मरळ् ओटु तैरळ् उडु-भ्रम और बोध (तन्द्रा और जागरण) की मिश्रित; निलैयर्-दशा में रहें। ६८१

सूर्य की किरणें उत्तम और बहुमूल्य रत्नजड़ित गवाक्षों द्वारा अन्दर घुसकर स्त्रियों को मधुर निद्रा से जगाने लगीं। तब वे न तो पूर्णरूपेण जाग पायीं, न निद्रा में ही रहें। उनकी निद्रा-स्थिति उन लोगों के ज्ञान की स्थिति के समान थी, जो अपूर्ण रूप से विवृद्ध है। यानी संदिग्ध अवस्था में रही। ६८१

एवलिन्	वन्मैयै	यैण्ण	तेइइलर्
नावलर्	नविइयि	नाळि	नामनूल्
कावलि	नुत्तित्तुणर्	कणिद	माक्कळुम्
कूवुरु	कोळियुन्	दुयिल्वु	कोण्डवे 682

एवलिन् वन्मैयै-आज्ञा के प्रताप को (रात में दिन होने की स्थिति को); अँण्णत् तेइइलर्-ज्ञान नहीं सके; नावलर् नविइयि-विद्वानों के रचित; नाळि नाम नूल्-समय के श्रेष्ठ शास्त्र के अनुसार; कावलिन् नुत्तित्तु उणर्-रात में सचेत रहकर काल की गणना करनेवाले; कणित माक्कळुम्-ज्योतिषी लोग और; कूवु उडु कोळियुम्-बाँग देनेवाले मुर्गे; तुयिल्वु कोण्ट-निद्रामग्न हो रहे। ६८२

विद्वान ज्योतिषियों से रचे शास्त्र के निष्णात काल-गणितज्ञ, जो रात के काल की गणना करते रहे, सो गये। पहरों को बताने के लिए टेर लगानेवाले मुर्गे भी सोये रहे, क्योंकि उन्हें रावण की आज्ञा और उसके प्रताप से हुआ नतीजा मालूम नहीं था। यानी सूर्योदय हो गया सो बात उन्हें विदित नहीं थी। ६८२

इत्तैयन	वुलहिनि	निहळु	मैल्वैयिल्
कत्तैहळु	लरक्कत्तुडु	गण्णि	नोक्किन्नात्
नित्तैवुरु	मत्तत्तैयु	नैरुप्पिडु	डोय्क्कुमाल्
अत्तैयवत्	तिङ्गळु	याहुसा	लैन्डान् 683

इत्तैयन्-ऐसी बातें; उलकिन् निकळुम् अँल्वैयिन्-जब संसार में हो रही थीं, तब; कत्तै कळल् अरक्कत्तुम्-क्वणनशील पायलधारी राक्षस (रावण) ने भी; कण्णिन् नोक्किन्नात्-आँखों से (सूर्य को) देखकर; नित्तैवु उडु मत्तत्तैयुम्-स्मरणशील मन को भी; नैरुप्पिल् तीय्क्कुम् आल्-आग से जला देगा; (आतलिन्-इसलिए); अत्तैय अ तिङ्गळु आकुम्-वही चन्द्र यह है; अँन्डान्-(अपनी धारणा कही। ६८३

जब ये बातें हो रही थी, तो क्वणनशील पायल-चरण रावण ने सूर्य

को अपनी आँखों से देखा । कहा कि इसके बारे में सोचनेवाले मन को भी यह जला डालेगा । इसलिए यह वही चन्द्र है (जिसको हटाने की आज्ञा मैंने दी थी) । ६८३

तिङ्गळो	वन्त्रिडु	शैल्वच्	चैङ्गदिर
पौङ्गुळेप्	पच्चैमाप्	पुरवित्	तेरदाल्
वैङ्गदिर	शुडुवदे	यन्त्रि	मैय्युडत्
तङ्गुदण्	कदिरशुडत्	तहादेन्	शार्शिलर् 684

चिलर्-कुछ (भृत्यों) ने; इतु तिङ्कळो अन्त्र-यह चन्द्र ही नहीं है; चैल्व चैम् कतिर्-श्रेष्ठ लाल किरणमाली; पौङ्कु उळै-उभरे, बड़े अयाल वाले; पच्चै मा पुरवि-हरे बड़े अश्वों का; तेरतु आल्-रथ का है, इसलिए; वैम् कतिर्-तापक किरणों का; मैय्-शरीरी; उड् चुटुवते अन्त्रि-खूब जलायगा, उसके सिवा; तण् तङ्कु कतिर्-शीत-भरी किरणों का चन्द्र; चुट तकातु-जला नहीं सकेगा; अन्त्रार्-कहा । ६८४

वहाँ जो रहे, उन किकरों ने उत्तर में निवेदन किया कि नहीं ! यह चन्द्र ही नहीं है । विश्वास मानिए । यह उत्तम और लाल किरणमाली है । उसके रथ में बड़े और हरे अश्व जुते हैं । इसी की किरणें गरम होती हैं और वे ही ताप देती हैं । चन्द्र शीतल-किरण है और वह नहीं जलाता । ६८४

नीलच्	चिहरक्	किरियन्नव	निन्त्र	वैय्योन्
आलत्	तिनुम्बैय्य	तहर्त्रि	यरर्त्र	हिन्त्र
वेलैक्	कुरलैत्	तविर्हेन्त्र	विलक्कि	मेलै
मालैप्	पिर्पिळ्ळैयैक्	कूवुदिर	वल्लै	यैन्त्रान् 685

चिकर नील किरि अन्त्रवन्-शिखरों-सहित नीले पर्वत के समान रावण; निन्त्र वैय्योन्-सामने स्थित यह सूर्य; आलत्तिनुम् वैय्यन्-हलाहल से भी तापक है; अक्त्रि-इसे दूर करके; अरर्त्रकिन्त्र-रोनेवाले; वेलै कुरलै-समुद्र के गले को; तविर्क अन्त्र-चुप रहो, कहकर; विलक्कि-रोककर; मेलै-पश्चिम दिशा में उदित; मालै पिर्पिळ्ळैयै-शाम के बालचन्द्र को; वल्लै-शीघ्र; कूवुतिर्-पुकारो; अन्त्रान्-आज्ञा दिलाई । ६८५

तब शिखरों सहित पर्वत-सम रावण ने आज्ञा सुनायी कि सामने जो है, वह सूर्य हलाहल से भी संतापी लगता है । उसको हटाओ । साथ-साथ उस समुद्र को भी चुप कराओ जो विलाप रहा है ! फिर पश्चिम दिशा में जो उदित होता है, उस बाल-कला-चन्द्र को पुकारो । ६८५

शौन्ना	तिरुदरक्किर्	यम्मोळि	शौल्ल	लोडुम्
अन्नाळि	तिरम्बिय	वम्मदि	याण्डीर्	वेलै

मुन्नाळि	निळम्बिरे	याहि	मुळैत्त	वैन्नाल्
अन्नाळु	मरुन्दव	मन्त्रि	यियर्त्त	लामो 686

निरुत्तरक्कु इरै-राक्षसों के राजा ने; चीन्तान्-वैसा कहा; अ मौळि चोलल्ल ओटुम्-वह वचन कहते ही; अ नाळिन् निरम्पिय-वह (पन्द्रह) दिनों का; अ मति-पूर्णचन्द्र; आण्डु-तव; ओर् वेल्-उसी समय; मु नाळ् इळम् पिरे आकि-तीन दिनों का कलाचन्द्र बनकर; मुळैत्ततु-उदय हुआ; वैन्नाल्-तो; अरम् तवम् अन्त्रि-विना कठिन तपस्या के; अ नाळुम्-किसी भी दिन; इयर्त्तल् आमो-ऐसा किया जा सकता है क्या । ६८६

राक्षसाधिपति ने यह आज्ञा सुनायी । सुनाते ही वह पूर्णचन्द्र तिरोहित हो गया । वहाँ तीन दिन का बालचन्द्र उदित हुआ । तो (कवि तपस्या की शक्ति की महिमा में कहते हैं कि) तपस्या की महिमा कितनी बड़ी है ? उसके सिवा कौन सी चीज़ है जो ऐसा कर सकती है ? (यह अर्थ भी लग सकता है कि तपस्या को छोड़ कौन कार्य है जो करने योग्य है ?) । ६८६

कुडपालिन्	मुळैत्तदु	कण्ड	कुणङ्ग	डीयोन्
वडवावत्त	लन्त्रैन्नि	मण्विडर्	वैत्त	पाम्बिन्
विडवा	ळैयिर्त्तैन्नि	लैन्त्रै	वैङ्गण्ड	माले
अडवा	ळुवक्कौडु	तोन्त्रिय	वाहु	मन्त्रे 687

कुडपालिन्-पश्चिमी दिशा में; मुळैत्ततु-उदय हुआ; कण्ड-देख; कुणङ्ग-तीयोन्-दुर्गुणी; वडवा अत्तल्-वड़वाग्नि है; अन्त्र अत्तिल्-नहीं तो; मण्विडर् वैत्त-भूमि को गले पर ढोनेवाले; पाम्बिन्-शेषनाग का; विट वाळ् अयिडि-विषला प्रकाशमय दाँत है; अन्त्र अत्तिल्-वह भी नहीं तो; अन्त्रै वैङ्गण्ड-मेरे विशद गुस्सा करके; माले-संध्याकाल में; अट-मारने के लिए; वाळ् उरुवि कौट-तलवार खींच लेकर; तोन्त्रियतु आकुम्-प्रकट हुआ होगा । ६८७

दुर्गुणी रावण ने पश्चिमी दिशा में उदित कला-चन्द्र को देखा । उसने कहा कि रे, यह तो वड़वाग्नि है ! अगर नहीं तो भूभारवाही शेषनाग का उज्ज्वल विषैला दाँत होगा ! वह भी नहीं है तो संध्याकाल मुझे बैर करके मुझे मारने के लिए तलवार लिये हुए प्रकट हो आया होगा ! । ६८७

तादुण्	शडिलत्तले	वैत्तदु	तण्ड	रङ्गम्
मोदुङ्	गडलिर्	किडैमुन्दु	पिन्न्द	पोवै
ओदुङ्	गडुवैत्तन्	मिडर्त्ति	लौळित्त	तक्कोन्
ईदुङ्	गडुवामेन	वैण्णिय	वैण्ण	मन्त्रो 688

ओतुम्-सबसे चर्चित; कटुवै-विष को; तन् मिडर्त्तिल् लौळित्त-कण्ठ में जिन्होंने दबा रखा है; तक्कोन्-श्रेष्ठ शिवजी ने; तण् तरङ्गम् मोतुम्-शीतल तरंग-ताड़ित; कटलिर्त्तु इटै-(क्षीर-) सागर से; मुन्नु पिन्न्त पोते-पहले जब प्रकट

हुआ तभी; तातु उण्—मकरन्द-भरी; चटिल तलै—जटा से अलंकृत सिर पर; वतुततु—रख लिया तो; ईतुम्—यह (चाँद) भी; कटु आम्—विष है; अँत अँण्णिम्—ऐसा सोचा हुआ; अँण्णम् अन्तु—विचार था न । ६८८

हाँ ! यह भयंकर विष ही होगा । क्योंकि विषकंठ शिवजी ने शीतल तरंगाकुल क्षीरसागर पर उस विष के पहले इस चाँद को लेकर अपनी परागयुक्त जटा से अलंकृत सिर पर धारण क्यों किया ? यही समझकर न कि यह भयंकर विष है ? । ६८८

उरुमौत्त	वलतुतुयिर्	नुङ्गिय	तिङ्ग	ळोडित्
तिरुमिच्	चिरुमेन्	पिरुदीमै	कुरैन्द	दिल्लै
करुमैक्	करैयैज्जलि	नञ्जु	कलन्द	पाम्बिन्
पैरुमै	शिरुमैक्कौर	पैरु	कुरैन्द	मुण्डो 689

अञ्चल् इल् नञ्चु—अक्षय विष; कलन्त पाम्पिन्—(से) युक्त सर्पों में; पैरुमै चिरुमैक्कु—बड़ा क्या, छोटा क्या; और पैरु—(विष के) रखने में; कुरैन्ततु उण्टो—कमी है क्या; उरुम् औत्त वलतुतु—वज्र-सम बल के साथ; उयिर् नुङ्किय—प्राण खानेवाला; तिङ्कळ्—पूर्णचन्द्र; ओटि—भागकर; तिरुमि—बदलकर; इ चिरु मैल् पिरु—यह छोटा कोमल बालचन्द्र (जो आया); तीमै कुरैन्ततु इल्लै—बुराई में कम नहीं है । ६८९

अक्षय विष-भरे साँपों में छोटा क्या बड़ा क्या ? विष के सम्बन्ध को लेकर सोचा जाय तो कोई किसी से कम नहीं ! वज्र-सम बल के साथ मेरी जान का ग्राहक जो रहा वह पूर्णचन्द्र चला, फिर इस कोमल बालचन्द्र के रूप में आया । यह उससे कम दुखदायी नहीं लगता । ६८९

कन्तक्	कत्तियुमिरु	डन्तैयुड्	गाण्डु	मन्त्रे
मुत्तैक्	कदिर्नन्त्रि	दहर्दुदिरु	मोय्म्बु	शान्त्र
अँन्तैच्	चुडुमेलिन्	यैळुल	हत्तिल्	वाळ्वोर्
पिन्तैच्	चिलरुय्वरैन्	उङ्गौर	पेच्चु	मुण्डो 690

मुत्तै कतिर् नन्त्रु—पहले आया सूर्य ही अच्छा; कन्त कत्तियुम्—पूर्णरूप से घना; इरळ् तन्तैयुम्—अन्धकार भी; काण्डुम्—देख लूँगा; इतु अकर्दुतिर्—इसको हटा दो; मोय्म्बु चान्त्रु—बलवान; अँन्तै चुडुमैल्—मुझे जलायगा (यह चाँद) तो; इति—आगे; एळ् उलकत्तिल् वाळ्वोर्—सातों लोकों में रहनेवाले; पिन्तै चिलर्—फिर कुछ लोग; उय्वर् अँन्त्रु—इससे बच पायेंगे, ऐसा; अङ्कु और पेच्चुम् उण्टो—वहाँ वचन होगा क्या । ६९०

पहले जो सूर्य रहा वही अच्छा लगता है ! पूर्णरूप से घना बना अन्धकार कैसा होगा ? —यह भी देख लूँ । हटाओ इसको । बलशाली मुझे भी यह इस प्रकार जला सकता है, तो सातों लोकों के वासियों में किसी के जान से बचने की बात ही उठेगी ! । ६९०

आण्डप्	पिरेनीङ्गलु	मैय्दिय	वन्द	कारम्
तीण्डप्	करिदायप्पल	तेय्प्पितुन्	देय्क्क	लाहा
वेण्डिप्	करवत्तिरप्	पत्तियि	नीरन्नु	वीळत्तुक्
काण्डप्	करिदायप्पल	कन्नु	तिरट्ट	लाहुम् 691

आण्डु-तब; अ पिरे नीड्कलुम्-वह बालचन्द्र हटा तो; अय्यितिय अन्तकारम्-आया अन्धकार; तीण्डप्कु अरिताय्-अस्पृश्य; पल तेय्प्पितुन्-खूब बार-बार रगड़ने पर भी; तेय्क्कल् आका-रगड़कर मिटाना कठिन था; वेण्डिल्-चाहने पर; करवत्तिर पत्तियिल्-आरे से; ईरन्नु-काटकर; वीळत्तु-गिराकर; काण्डप्कु अरिताय्-अवशनीय; पल कन्नु-अनेक खम्भों के रूप में; तिरट्टल् आकुम्-सँवारा जा सकता है। ६६१

तब बालचन्द्र हट गया। अन्धकार आ गया। वह ऐसा था कि कोई उसे स्पर्श नहीं कर सकता, न उसे रगड़कर उसका अभाव किया जा सकता था। चाहने पर शायद उसे आरे से काटकर उसके अनेक गोल खम्भे बनाये जा सकते थे। ६९१

मुरुडीरन्	डुरुट्टप्	कैळिदेन्वदेन्	मुर्त्तु	मुर्त्तिप्
पौरुडीरन्	जानच्	चुडरवुकु	वळङ्ग	लिन्त्तिक्
कुरुडीङ्गि	देन्नक्	कुर्त्तिकोण्डहण्	णोट्टड्	गुन्त्ति
अरुडीरन्	नैञ्जिप्	करिदेन्वदव्	वन्द	कारम् 692

मुरुट्टु ईरन्नु-गाँठें आदि काट फेंककर; उरुट्टप्कु-गोल (खम्भों के रूप में) बनाना; अय्यितु अय्यितु अय्य-आसान है, यह कहना क्या (विशेषता रखता) है; मुर्त्तु मुर्त्ति-सम्पूर्ण रूप से पक्व; पौरुट्टु तीरन्त-असंदिग्ध तत्त्वज्ञ; जानम् चुडर पुक्कु-ज्ञान की ज्योति प्रवेश करके; वळङ्गल् इन्त्ति-प्रकाशमान नहीं है (जिसमें); ईङ्कु-इतु कुवदु-यहाँ यह अन्धा है; अय्यितु कुर्त्ति कोण्ड-ऐसा कहा जानेवाला; कण्णोट्टम् कुन्त्ति-दाक्षिण्य से हीन; अरुट्टु तीरन्त-दया से रहित; नैञ्जिल्-(जो है उस) मन के समान; अ अन्तकारम्-वह अन्धकार; करितु अय्यितु-काला कहा जा सकता था। ६६२

हाँ—गाँठें आदि हटाकर उसके खम्भे बनाये जा सकते हैं—यह कहना कौन सी विशेषता रखता है? वह अन्धकार उस अज्ञ-जन के मन से बढ़कर काला था, जिसमें तत्त्वदर्शी पक्व ज्ञान प्रवेश नहीं कर पाया था, जो 'यह अन्धा है', इस कथन का पात्र हो गया था और जिसमें न दाक्षिण्यभाव था, न दयाभाव। ६९२

विळ्ळाडु	शैरिन्दिडै	मेलुड	वीङ्गि	यैङ्गुम्
नळ्ळा	विरुळ्वन्दहन्	जालम्	विळ्ळुङ्ग	लोडुम्
अळ्ळा	वुलहियावैयुम्	यावरुम्	वीव	देन्ब
डुळ्ळा	दुमिळ्न्दान्	विडमुण्ड	वीरुत्त	तेन्नान् 693

विळ्ळातु-अखण्डित; इटं चैरिन्तु-ठस; मेल् उर वीङ्कि-ऊपर बढ़कर; अँङ्कुम् नळ्ळा-कहीं भी न लगनेवाला; इरळ् वन्तु-अन्धकार आया; अकल् मालम् विळ्ळक्कल् ओटुम्-और उसके विशाल संसार को निगलते ही; विटम् उण्ट ओरुत्तन्-विषखादक शिव ने; अँळ्ळा उलकु यावैयुम्-अनिष्ट सभी लोक; यावरुम्-और उनके वासी; वीयुम् अँत्तपु उळ्ळातु-मिट जायँगे, यह नहीं सोचकर; उमिळ्न्तान्-उगल लिया है; अँन्शान्-कहा । ६६३

अविच्छिन्न, घना और सर्वत्र व्याप्त विपुल अन्धकार, जो कहीं चिपका नहीं रहता, आकर विशाल विश्व को निगल गया । रावण ने टीका की कि शिवजी ने जो पहले विष को निगल लिया था अब उसे उगल दिया है, बिना यह सोचे-विचारे कि इसके फैलने से सारे लोक और उन-लोकों के वासी मिट जायँगे । ६९३

वेलैत्	तलैवन्	दौरुवन्वलि	याल्वि	ळुङ्गुन्
आलत्ति	तडङ्गुव	दन्त्रि	दरिन्दु	णर्न्वेन्
आलत्तौडु	विण्मुदल्	यावैयु	नावि	नक्कुम्
कालक्	कन्तल्हार	विडमुण्डु	करुत्त	दन्त्रे 694

औरुवन्-अद्वितीय शिव ने; वेलै तलै वन्तु-समुद्र पर आकर; वलियाल्-अपने बल से; विळ्ळक्कुम्-(जिसको) निगला; आलत्तिन्-उस हलाहल में; इतु अटङ्कुवतु अन्त्र-यह समाविष्ट होनेवाला नहीं; अरिन्तु उणर्न्तेन्-जान-समझ लिया है; आलत्तु ओटु-भू के साथ; विण् मुतल् यावैयुम्-आकाश आदि सभी (भूतों) को; नाविन् नक्कुम्-अपनी जीभ से चाट लेनेवाला; काल कन्तल्-युगान्तकाल की आग; कार् विटम् उण्ट-काला विष खाकर; करुत्ततु-जो काली बनी, वह । ६६४

(फिर उसे लगा कि) यह विष उस हलाहल के समान खाया नहीं जा सकता, जिसको अद्वितीय परमेश्वर ने क्षीरसागर-तट पर आकर उस दिन ले निगल लिया । मैंने जान-बूझ लिया है । यह युगांत अग्नि है, जो भूलोकों के साथ आकाशलोकों को भी चाट ले सकती है और जो विष खाकर काली बन आयी है । ६९४

अम्बु	मनलु	नुळैयाक्कन्	वन्द	कारत्
तुम्बु	मळैहीण्डय	लौप्परि	दाय	तुप्पिन्
कौम्बर्	कुरुम्बैक्	कुलङ्गौण्डु	तिङ्ग	डाङ्गि
वैम्बुन्	दमियेन्मुत्	विळक्कैन्त	तोन्त्रु	मन्त्रे 695

अयल् औप्पु-कोई दूसरी उपमा; अरितु आय-जिसके लिए कहना कठिन है; तुप्पिन् कौम्पर् अतु-एक प्रवालवल्ली; अम्पुम् अत्तलुम् नुळैया-बाण या अन्त-प्रविष्ट न हो सके; कन्-उतना घना; अन्तकार तुम्पु मळै कौण्टु-अन्धकारमय मेघ ढोकर; कुरुम्पै कुलम् कौण्टु-दो नारियल के कच्चे फलों से युक्त; तिङ्कळ् ताङ्कि-

चन्द्र को धरकर; वैमपुम् तमियेन् मुन्-तप्त मेरे सामने; विळक्कु अन्न-दीप के समान; तोन्डुम्-दिखाई देता है; (अन्ड-ए) । ६६५

(रावण के सामने देवी का मिथ्या रूप प्रकट होता है ।) यह क्या ? एक अनुपम प्रवाललता दिखाई देती है ! उसके सिर पर वाणों और अग्नि से भी अभेद्य और घना मेघ है और उसकी देह पर दो नारियल के कच्चे फल हैं । इनके साथ वह चन्द्र को भी धारण किये हुए अकेले दुःख-पीड़ित मेरे सामने दीप के समान प्रकट हुई है । ६९५

मरुळुडु	वन्द	मयक्कोमदि	मरुळ	मुण्डो
तेरुळेमि	देन्तो	दिणिमैयिळत्	तालु	मोव्वा
इरुळडिरु	कुण्डलड्	गौण्डु	मिरुण्ड	नीलच्
चुरळोडुम्	वन्दोर्	शुडर्मावदि	तोन्डु	मन्ड्रे 696

मरुळ् ऊटु वन्त मयक्को-चित्त-भ्रम से आया मोह; मति मरुळम् उण्टो-दूसरा (अनोखा) चन्द्र भी है क्या; इतु अन्तो-यह क्या ही है; तेरुळम्-मेरी समझ में नहीं आता; तिणि मे इळत्तालुम्-अंजन को ठस भरने पर भी; ओव्वा-वह इसकी तुलना नहीं कर सकता, ऐसा; इरुळ् ऊटु-अन्धकार-मध्य; इरु कुण्डलम् कौण्ट-दो (कर्ण-) कुण्डलों से भूषित होकर; इरुण्ट नील चुरळ् ओटुम्-अन्धकार-सम काले घुंघराले केश के साथ और; चुटर् मा मति तोन्डुम्-उज्ज्वल श्रेष्ठ चन्द्र दिखाई देता है । ६६६

क्या यह मेरा भ्रमजन्य मोह है ? या सचमुच ऐसा अनोखा चांद भी तत्त्वतः है ? मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पाता । अंजन को ठस भरकर ऐसा बनाने की कोशिश करें तो भी नहीं बन सके, ऐसे अन्धकार के मध्य वह दिखाई देता है । उसके दो कर्णकुण्डल हैं और अन्धकार-सम काला घुंघराला केश है । इस सजधज के साथ एक पूर्णचन्द्र आकर दिखाई देता है । ६९६

पुडेहोण्डेळु	कौङ्गैयु	मल्लुलुम्	बुल्हि	निङ्कुम्
इडेहण्डिल	मल्लदेल्ल	लावुरु	वुन्दे	रिन्दाम्
विडनुङ्गिय	कण्णुडे	यारिवर्	मैल्ल	मैल्ल
मडमङ्गैय	रायैन्	मनत्तव	रायि	तारे 697

पुटे कौण्टु अळु-वक्ष के दोनों पार्श्वों में उठे हुए; कौङ्कैयुम्-स्तनों और; अल्लुलुम्-कटिप्रदेश से; पुल्लि निङ्कुम्-लगी रहनेवाली; इटे कण्टिलम्-कमर नहीं देखी; अल्लतु-उसके बिना; अल्ला उरुवुम्-सारा रूप; तैरिन्दाम्-(मैंने) देख लिया; विटम् नुङ्किय-विषभक्षक; कण् उटैयार्-आँखों की स्वामिनी; इवर्-यह; मैल्ल मैल्ल-धीरे-धीरे; मट मङ्कैयर् आय्-बाला स्त्री बनकर; अन् मतत्तवर् आयितार्-मेरे मन की (वासिनी) हो गई । ६६७

छाती के दोनों पार्श्वों में उठे रहनेवाले उरोजों को देखता हूँ । नीचे

नितंब देखता हूँ । पर इन दोनों के बीच दोनों से लगी रहनेवाली कमर नहीं देख पाता । धीरे-धीरे उस कटिहीना सुन्दरी का सारा रूप प्रकट हो गया है । विषभक्षक आँखों से भूषित यह बाला स्त्री हैं ! वह मेरे मन में आकर बस गयी हैं । ६९७

पण्डे	युलहेल्लिनु	मुळळ	पडेक्क	णारेक्
कण्डे	निदुबोलीरु	पेण्णुरुक्	कण्डि	लेनाल्
उण्डे	यैत्तिल्वेत्ति	यैङ्गो	युणर्त्तु	निन्ऱ
वण्डेरु	कोदै	मडवारिव	राहु	मन्ऱे 698

पण्डु ए-पहले ही; उलकु एल्लितुम् उळळ-सातों लोकों को; पटे कण्णारे- (भाला, तलवार आदि) हथियार-सी आँखों वालियों को; कण्डेन्-देखा है; इवर् पोल्वतु-इनके समान; ओर् पेण् उरु-एक स्त्रीरूप; कण्टिलेन्-नहीं देखा है; वेळु इति उण्टे अत्तिल्-दूसरी अब एक (देखी जाती) है तो; अँङ्कै उणर्त्तु निन्ऱ-मेरी छोटी बहिन ने जिसका वर्णन किया; वण्डु एळु कोतै मडवार-वह भ्रमरवाही केश वाली स्त्री; इवर् आकुम्-यही होगी । ६९८

पहले ही मैंने सातों लोकों की वासिनी, भाला, तलवार आदि हथियारों से तुल्य आँखों से शोभित स्त्रियों को देखा है । पर इनकी-सी सुन्दरता को प्राप्त स्त्री को नहीं देखा है । अब जो ऐसी एक दिखाई देती है, तो यह अवश्य वही स्त्री होगी जिस भ्रमरवाही केश से भूषित सुन्दरी का वर्णन मेरी छोटी बहिन शूर्पणखा ने किया था । ६९८

पूण्डिप्	पिणिया	नुरुहिनऱुडु	तान्बो	रादाळ्
तेण्डिक्	कौडुवन्दत्तळ्	शैय्वदीर्	मारु	मुण्डो
काण्डऱ्	किन्नियाळुरुक्	कण्डवर्	केट्कु	माऱ्ऱाल्
ईण्डिप्	पौळुदैविरैन्	दैङ्गैयैक्	कूवु	हैन्ऱान् 699

इ पिणि पूण्डु-यह रोग पाकर; यान् उळुकिन्ऱु-जो कष्ट उठा रहा हूँ, उसे; तान् पौऱाताळ्-खुद न सह सककर; तेण्टि कौटु वन्तत्तळ्-ढूँढ़ लाई है; शैय्वतु ओर् मारुम् उण्टो-प्रत्युपकार क्या होगा; काण्डऱ्कु इत्तियाळ्-देखने में मधुर; उरु-इनका रूप; अवळ् कण्डु-वह (शूर्पणखा) देखे; केट्कुम् आळु आल्-मैं भी पूछकर जान लूँ (कि क्या यह वही है); ईण्डु-यहीं; इ पौळुते-अभी; विरैन्तु-शीघ्र जाकर; अँङ्कैयै-मेरी अनुजा को; कूवुक-बुलाओ; हैन्ऱान्-कहा । ६९९

(मेरी बहिन भी कितनी अच्छी है !) मेरी बहिन ने मेरी व्यथा देखी और वह सह नहीं सकी । इसलिए वह उसे ढूँढ़ लायी है । उसका क्या प्रत्युपकार करूँ ? जो सामने है, इस सुन्दर रूपवती को वह भी देखे और मैं प्रश्न कर ठीक-ठीक जान लूँ । उसने आज्ञा दी कि अभी यहीं मेरी बहिन को शीघ्र बुलाओ । ६९९

अँन्ना नैन्नलुङ् गडिदेहितर् कूवु मैल्लै
 वन्ना णिरुदक्कुलम् वेरु माय्त्तल् शैय्वाळ्
 ओन्नाद कामक् कनलुट्टैर लोडु नाशि
 पोन्नाळ्हुळै कौङ्गैहळ् पोक्किन्तळ् पोय्प्पु हुन्दाळ् 700

अँन्नान्-(रावण ने) कहा; अँन्नलुम्-कहते ही; कटितु एकितर्-शीघ्र गये;
 कूवुम् अँल्लै-पुकारने पर; वन् ताळ्-वलो, उद्यमी; निरुत कुलम्-राक्षसकुल को;
 वेरु अरु-जड़ से काटकर; माय्त्तल् शैय्वाळ्-मिटाने में तत्पर; ओन्नात-अनुचित;
 काम कत्तल्-कामाग्नि के; उळ् तैरल् ओट्टुम्-अन्दर वाहने से; नाचि-नासिका;
 पोन् ताळ् कुळै-स्वर्णकुण्डल-धारी कानों और; कौङ्कैकळ्-स्तनों को; पोक्किन्तळ्-
 (जिसने) गोवाया; पोय् पुकुन्ताळ्-(वह शूर्पणखा) जा पहुँची । ७००

रावण का यह कहना था कि किकरों ने जाकर शूर्पणखा को बुलाया ।
 वह तो पराक्रमी और उद्यमी राक्षसकुल को ही जड़ से काटकर मिटाने के
 कार्य में तत्पर रहो ! उसने अपने लिए विल्कुल अनुचित प्रेम किया और
 उस कामाग्नि के अन्दर जलाते उसने जाकर अपनी नाक को, स्वर्णकुण्डलभूषित
 कानों को और स्तनों को कटवा लिया था । ऐसी शूर्पणखा रावण के पास
 जा पहुँची । ७००

पोय्न्निन्नु नैन्जिर्कोडि याळ्बुहुन् दाळै नोक्कि
 नैय्न्निन्नु कूरवाळव नेरु नोक्कि नङ्गै
 मैन्निन्नु वाट्कण् मयित्तिन्नु वन्देन् मुत्तर्
 इन्निन्नुवळ् लाङ्गो लियम्बिय शोदै यँन्नान् 701

नैय् निन्नु कूर वाळ्-घूत-लगी तीक्ष्ण तलवार-धारी; अवन्-उस (रावण) ने;
 पोय् निन्नु नैन्जिल्-असत्य जिसमें स्थायी रहा, उस मन की; कौटियाळ्-कूरी;
 पुकुन्ताळै-जो पहुँची, उसको; नेरु उरु नोक्कि-सामने आया देख; नङ्कै-बाले;
 इयम्पिय-तुमने (जिसके बारे में) कहा; चीतै-वह सीता; मै निन्नु वाळ् कण्-
 अंजनयुक्त तलवार-सी आँखों को हो; मयिल् निन्नुतु अँत-मोर आकर खड़ा हो, ऐसा;
 अँत मुत्तर् वन्तु-मेरे सामने आकर; इ निन्नुवळ् आम् कौल्-जो यह खड़ी है, यही
 है क्या; अँन्नान्-पूछा । ७०१

घी-लगी तलवारधारी रावण ने कपटनिलय मन वाली शूर्पणखा को
 वहाँ आया देखकर पूछा कि वाले ! तुमने किसी सीता के बारे में कहा न ?
 इधर मेरे सामने अंजनभूषित तलवार-सम आँखें लिये, मोर-सी एक स्त्री
 खड़ी है । देखो और कहो कि क्या यही वह सीता है ? । ७०१

शैन्दामरैक् कण्णौडुन् जैङ्गनि वायि नोडुम्
 शन्दादडन् दोळौडुन् दाळ्दडक् कैह् लोडुम्
 अन्दारह लत्तौडु मञ्जन्तक् कुन्ऱुमैन्
 वन्दानिव नाहुम्ब वल्वि लिराम् नैन्नाळ् 702

चैम् तामरे कण् ओटुम्-लाल कमल-सम आँखों के साथ; चैम् कति वायित् ओटुम्-लाल (विब-) फल-सम अधरों के साथ; चन्तु आर्-सुन्दरता-भरे; तटम् तोळ् ओटुम्-विशाल कंधों के साथ और; ताळ् तट केकळ् ओटुम्-दीर्घ और विशाल हाथों के साथ; अम् तार् अकलत्तु ओटुम्-सुन्दर हार-शोभित वक्ष के साथ; अञ्चत्त कुन्ऱम् अन्त-अंजन-पर्वत के समान; वन्तान् इवन्-जो यह आया है; अ वल् विल्-वह कठोर धनुर्धर; इरामन् आकुम्-राम ही है; अँन्ऱाळ्-वोली । ७०२

(शूर्पणखा तो हमेशा श्रीराम के ध्यान में रहती रही । उसे श्रीराम का रूप ही दिखाई दिया ।) उसने कहा कि जो रूप यह दिखाई दे रहा है, वह अंजनगिरि के समान धनु हाथ में लिये आया हुआ राम है । उसके लाल कमल के समान आँखें हैं, लाल बिम्बफल के समान अधर हैं । मनोरम विशाल कंधों और दीर्घ विशाल हस्तों के साथ वह दिखता है, देखो । ७०२

पेण्वालुरु	नात्तिदु	कण्डदु	पेदै	नीयीण्
डैण्वालु	मिलाददो	राणुरु	वैन्ऱ	दैन्ने
कण्वालुरु	मायै	कवऱ्ऱुदल्	कऱ्ऱ	नम्मै
मण्वालव	रेहौल्	विळैप्पवर्	मायै	यैन्ऱान् 703

पेतै-मूढ़ स्त्री; नान् कण्टतु इतु-जो मैं देख रहा हूँ, यह; पेण् पाल् उरु-स्त्री जाती का रूप है; नी-तुम; ईण्डु-यहाँ; अँण् पालुम् इलाततु-कहीं भी असम्भाव्य; ओर् आण् उरु-एक पुरुष का रूप; अँन्ऱतु-कहती हो, सो; अँन्ने-क्या है; कण् पाल्-आँखों के सामने ही; उरु मायै-बड़ी माया द्वारा; कवऱ्ऱुदल् कऱ्ऱ-(दूसरों को) धोखा देना जो जानते हैं; नम्मै-उन हमको; मण्पालवरे-मर्त्य-मानव; मायै विळैप्पवर् कौल्-वंचित करनेवाले हैं क्या; अँन्ऱान्-(आश्चर्य से) पूछा । ७०३

रावण को अचम्भा हुआ । उसने कहा कि हे अवोध नारी ! मेरे सामने जो दिखता है, वह तो स्त्री का रूप है । तुम तो असंभाव्य किसी पुरुष की बात कह रही हो ! यह क्या बात है ? हम मायाकार्य में प्रवीण हैं । हमें भी धोखा दे रहे हैं क्या ये मर्त्यलोक के मानव ? । ७०३

ऊन्ऱुमुणर्	वप्पुऱ	मौन्ऱिन्नु	मोड	लिन्ऱि
आन्ऱुमुळ	दाय्नेडि	दाशै	कन्ऱऱ	निन्ऱाय्क्
केन्ऱुन्नेदि	रेविळि	नोक्कु	मिडङ्ग	डोरुम्
तोन्ऱुमनै	याळिदु	तौन्नेऱि	याहु	मैन्ऱाळ् 704

ऊन्ऱुम् उणर्वु-सुस्थिर भावना; अ पुऱम् ओन्ऱित्तुम्-दूसरी तरफ कहीं; ओटल् इन्ऱि-नहीं जाती; आन्ऱुम्-बहुत; उळ्ळतु आम्-बनी है; नैटितु आचै कन्ऱऱ-गम्भीर काम-राग जलता है, उस स्थिति में; निन्ऱाय्क्कु-जो स्थित हो उस तुम्हें; उन् अँतिरे-तुम्हारे सामने; एन्ऱु विळि नोक्कुम्-तुम्हारी दृष्टि जहाँ गौर करती हैं, वहाँ; इटङ्कळ् तोरुम्-उन सभी स्थानों में; अन्ऱयाळ् तोन्ऱुम्-वही दिखाई देगी; इतु-यह; तौल् नैऱित्तु आकुम्-प्राचीन (मनो-) धर्म ही है; अँन्ऱाळ्-(शूर्पणखा ने) कहा । ७०४

शूर्पणखा ने समझाया कि भाई तुम्हारी सीता की भावना स्थिर और दृढ़ है। इसलिए तुम्हारी कल्पना दूसरी ओर नहीं जाती। तुम्हारा सीता के प्रति राग तुम्हें जला रहा है और तुम तप्त स्थिति में हो। इस स्थिति में तुम सर्वत्र सीता को ही देखो—यह कोई नई या विचित्र बात नहीं। यह तो प्राचीन और परिचित मनोधर्म ही है। ७०४

अन्ताळदु	कूड	वरक्कनु	मन्न	दाह
निन्नालव	विरामनैक्	काण्गुरु	नीरै	नैन्डान्
अन्ताळव	नैन्नैयित्	तीरवुरु	मिन्नल्	शैय्दान्
अन्ताण्मुदल्	यानु	मयर्त्तिल	नाहु	मैन्डाळ् 705

अन्ताळ्-उसके; अतु कूड-ऐसा कहने पर; अरक्कनुम्-राक्षस रावण ने; अन्ततु आक-वही हो; निन्ताल्-तुमसे; अ इरामनै काण्कुडम्-उस राम को देखे जाने का; नीरै-गुण; अन् अन्डान्-कैसा, पूछा; अ नाळ-जिस दिन; अन्तै-मुझे; इ तीरवु अड-यह प्रत्यवायहीन; इन्नल् चैय्दान्-कष्ट दिया; अ नाळ मुतल्-उस दिन से; यातुम्-मैं भी; अयर्त्तिलन् आकुम्-भूली नहीं हूँ; अन्डाळ्-कहा। ७०५

यह सफ़ाई सुनकर रावण ने सकारा कि हाँ! वही ठीक हो सकता है। फिर पूछा कि तुम राम को ही देख रही हो, इसका रहस्य क्या है? शूर्पणखा ने यह सुनकर चातुर्य से उत्तर दिया। भाई यह क्या पूछते हो? जिस दिन राम ने यह प्रत्यवायहीन कष्ट दिया उस दिन से मैं उसे कहाँ भूल सकी हूँ? नहीं भूल पायी हूँ। ७०५

आमाम	दडुक्कुम्	ताक्कैयो	डावि	नैय
वेमाल्वित्तै	येड्किन्ति	येन्विडि	वाहु	मैन्नक्
कोमानुल	हुक्कोरु	नीकुडै	हिन्ड	दैन्ने
पूमाण्गुळ	लाडनै	वव्वुदि	पोदि	येन्डाळ् 706

आम् आम्-हाँ, हाँ; अतु अडुक्कुम्-वह सम्भव ही है; अन् आक्क ओट्ट-मेरे शरीर के साथ; आवि नैय-प्राण छीजते हैं; वेम् आल्-जलते हैं; आल्-इसलिए; वित्तैयेड्कु-कामकार्य-तप्त मुझे; इति विटिवु अन्त आकुम्-अब निस्सरण क्या है; अन्त-पूछने पर; नी उलकुक्कु और कोमान्-तुम भुवनपति हो; कुडैकिन्डतु अन्ते-अपने को हीन क्यों मानते हो; पू माण् कुळलाळै-पुष्पालंकृत सुकेशिनी को; वव्वुति-हर लाओ; पोति-जाओ; अन्डाळ्-कहा। ७०६

रावण ने उत्तर में कहा कि ओफ़ ओह! हाँ, हाँ वह सम्भव बात ही है। पर देखो। मेरा शरीर दुर्बल हो रहा है; मेरे प्राण विगलित हो रहे हैं। शरीर और प्राण जल रहे हैं। कामेच्छा अपना निर्मम कार्य कर रही है। उसके वश होकर मैं बहुत कष्ट उठा रहा हूँ! अब उससे छूटना कैसे हो? शूर्पणखा ने उसे धीरज दिया। भाई! तुम भुवनपति हो।

फिर क्यों ऐसी हीनता का अनुभव करते हो ! जाकर पुष्पालंकृत सुकेशिनी सीता को हर लाओ । अभी जाओ ! उसने भाई को उकसाया । ७०६

अँत्रा	ळहन्त्राळ	वरक्कनु	मीड	ळिन्दान्
ओन्त्रानु	मुणर्न्दिल	नावि	युलैन्दु	शोर्न्दान्
निन्त्रारु	नडुङ्गितर्	निन्त्रळ	नाळि	ताले
पोन्त्राडुळ	तायित्त	तत्तत्तै	पोलु	मन्त्रे 707

अँत्राळ्-कहकर; अकन्त्राळ्-शूर्पणखा चली; अ अरक्कतुम्-वह राक्षस भी; ईट्टु अळिन्तान्-अधीर हुआ; ओन्त्रानुम् उणर्न्तिलन्-कोई सुध नहीं रही; आवि उलैन्तु-प्राणविह्वल होकर; चोर्न्तान्-थक गया; निन्त्रारुम् नडुङ्कितर्-(वहाँ जो) खड़े (थे) वे भी (भय से) कांपे; निन्त्र उळ नाळिताल् ए-आयु शेष रही इसलिए; पोन्त्रातु-विना मरे; उळन् आयित्तन्-जीवंत रहा; अ तुणै पोलुम्-वही कारण था; (अत्त-ए) । ७०७

यह कहकर शूर्पणखा चली गयी । राक्षस संकट सह नहीं सका । अधीर हो गया । सुध-बुध खोयी और उसके प्राण सूखने लगे । पास जो थे वे भी उसकी स्थिति देखकर डर गये । रावण की आयु शेष थी । इसलिए वह मरा नहीं; जीवित रहा । वही कारण था ! नहीं तो आसार आशादायी नहीं लगते थे । ७०७

इन्त्रार्	पिन्त्रार्	विन्नुयिर्	पैर्	मन्तन्
मन्त्रा	नुणर्न्दानवण्	माडुनिन्	शार्	नोक्किक्
कन्त्रा	लैन्नोर्दरु	शन्दिर	कान्तत्	तालोर्
शिन्त्रार्	मणिमण्डवज्	जैय्हेत्तच्	चैप्पु	हेन्त्रान् 708

इन्त्रार् पिन्त्रार् अँत-मृतक फिर जीवित हो आया जैसे; इन् उयिर् पैर् मन्तन्-प्यारे प्राणों को फिर से पाकर राक्षसराज; मन्त्रान् उणर्न्तान्-सुध-बुध जो खोई थी, उसे फिर पाकर; अवण् माट्टु निन्त्रार् नोक्कि-वहाँ पास जो खड़े रहे उनको देखकर; कन्त्राल् अँन्-दुहने पर जैसे; नोर् तरु-जल बहानेवाला; चन्तिर कान्तत्ताल्-चन्द्रकान्त मणि से; ओर्-एक; चिन्नु आर्-श्रेष्ठ बने; मणि मण्डपम्-सुन्दर मण्डप को; चैय्क् अँत-निमित्त करो, ऐसी; चैप्पुक अन्त्रान्-(आज्ञा) सुनाओ, कहा । ७०८

कुछ देर के बाद रावण होश में आया । तब यही लगा कि मृतक ही जी उठा हो । राक्षसराज अब तक भूला-सा रहा । फिर से स्मरण आ गया । उसने अपने पास जो रहे उनसे कहा कि चन्द्रकान्त-शिलाओं का एक रत्नमण्डप बना लेने को कहो । उन शिलाओं से ऐसा शीतल जल निकलता रहे— मानो कोई उन्हें दुह रहा हो । ७०८

वन्दा	तैडुवानुडै	तच्चन्	मन्तत्तु	णर्न्दान्
शिन्दा	विनैयन्त्रियुड्	गैवित्तै	यालुज्	जैय्दान्

अन्दाम	नैडुन्दरि	यायिरत्	ताल	मैन्द
शन्दार्	मणिमण्डबन्	दामरै	योनु	नाण 709

नैटु वान् उरै-विस्तृत आकाशलोक का वासी; तच्चन-(विश्वकर्मा नाम का) शिल्पी; वन्तान्-वहाँ आया; मन्तु उणर्न्तान्-मन में समझा; अम् तामम्-सुन्दर और; नैटुम् त्रि आयिरत्ताल्-ऊँचे हज़ार खम्भों के साथ; अमैन्त-निमित्त; चन्तु आर् मणि मण्डपम्-सौन्दर्य-भरा रत्नमय मण्डप; तामरैयोतुम् नाण-कमलासन को भी शरम से भरते हुए; चिन्ता वित्तै अन्त्रियुम्-परिकल्पना के साथ; कै वित्तैयालुम्-हस्त-कौशल द्वारा भी; चैय्तान्-रचा । ७०६

विस्तृत आकाशलोक का शिल्पी विश्वकर्मा आया । उसने रावण की इच्छा ध्यान से जान ली । एक सहस्र खम्भों के साथ उसने एक बड़ा मनोरम मण्डप निर्मित किया । ऐसा मण्डप बनाया कि सृष्टि-कर्म में अद्वितीय ब्रह्मा भी देखकर अपनी हीनता पर शरम खाये ! उसमें उसकी भावना, कल्पना आदि का भी विशेष सामर्थ्य प्रकट होता था, बल्कि उसके हस्तकौशल की भी झाँकी मिलती थी । ७०९

कान्दम्	ममुदिन्ऱुळि	काल्वन्	काल	मीनिन्
वेन्दन्	नीळियन्ऱियु	मेलौडु	कीळ्वि	रित्तान्
पून्ऱैन्ऱुल्	पुहुन्दुरै	शाळर	मुम्बु	तैन्दान्
एन्दुम्	मणिक्कप्पहच्	चीदळक्	कावि	ळैत्तान् 710

काल मीनिन् वेन्तन्-कालदर्शी नक्षत्रों के राजा; ओळि अन्त्रियुम्-(चन्द्र की) ज्योति के विना भी; अमुतिन् तुळि काल्वन्-अमृत की बूँदें निकालनेवाले; कान्तम्-चन्द्रकान्त पत्थरों की; मेल ओटु कीळ्वि विरित्तान्-ऊपर-नीचे सर्वत्र बिछाया; पूम् तैन्ऱुल्-मधुर (पुष्पगन्ध-युक्त) मलयपवन; पुकुन्तु उरै-प्रवेश कर रहे, इस निमित्त; चाळरमुम् पुतैन्तान्-गवाक्ष भी बनाये; मणि एन्तुम्-(फूल-फलों के रूप में) रत्नधारी; कप्पक् चीतळ का-कल्पक तरुओ का शीतल उद्यान; अमैत्तान्-निमित्त किया । ७१०

उसने उस मण्डप में ऊपर और नीचे सर्वत्र ऐसे चन्द्रकान्त के पत्थर जड़े जिनसे कालदर्शी, नक्षत्रों के राजा चन्द्र के स्पर्श के विना भी जल स्रव सकता था । फिर मण्डप में गवाक्ष निर्मित किये, जिनसे मधुर पुष्पगन्धवाही मलयपवन अन्दर आकर ठहर सके । फिर उसके चारों ओर एक कल्प-तरुओं का शीतल उद्यान बनाया जिनके फल, फूल आदि रत्नमय थे । ७१०

आणिक्कमै	पौऱ्ऱट्टिन्	मणिच्चुड	रार्वि	ळक्कम्
शेणुऱ्	ऱिरुळ्शोप्पन्	दैय्व	मडन्दै	मारहळ्
पूणिऱ्	पौलिवार्वुडै	येन्दिडैप्	पौङ्गु	तोळान्
माणिक्क	मानत्तिडै	मण्डबड्	गाण	वन्दान् 711

आणिक्कु अमै-प्रामाणिक सोने (की कील) से समता रखनेवाले; पौन् तट्टिन्-

स्वर्ण की बनी थालियों में; मणि चुटर् आर् विळक्कम्—सुन्दर रत्नप्रकाशमय दीप; जेण् उड्ड इळ् चोप्पत्त—जो दूर तक जाकर अन्धकार मिटानेवाले थे; पूणिल् पौलिवार्—आभरणों से शोभित; तैय्व मटन्तै मार्कळ्—सुरस्त्रियाँ; पुटै एन्तिट—पार्श्व में ले आयीं; पौड्कु तोळान्—उन्नत भुजा वाला; माणिक्क विमानत्तु इटै—माणिक्य-वाहन पर; मण्टपम् काण वन्तान्—मण्डप देखने आया । ७११

रावण उस मण्डप को देखने आया । वह माणिक्यजड़ित एक यान पर आया । पुष्ट और उन्नत कन्धों से युक्त उसके साथ अनेक सहस्र कोटि देवांगनाएँ हाथ में स्वर्णथालियों में दीप लिये आयीं । थालियों का स्वर्ण बहुत ही उच्च कोटि का था । उसका खरापन उसके लिए नियत प्रामाणिक सोने की कील से परखा जाता तो शुद्ध निकलता । दीपों की ज्वालाएँ रत्न ही थीं । उनमें से जो प्रकाश निकलता था वह दूर-दूर तक जाकर अन्धकार को मिटाता था । वे देवांगनाएँ बहुत मनोरम भूषणों से भूषित थीं । ७११

अल्लायिर	कोडि	यडुक्किय	दीत्त	देनुम्
नल्लार्	मुहमाम्	नळिर्वानिल्	विन्ड्रि	नामप्
पल्लायिर	कोडि	पत्तिच्चुड	रीन्ड्र	तिङ्गळ्
अल्ला	मुडत्ता	विरुळोडि	यिरिन्द	दन्ड्रे 712

नळिर् वान् निलवु इन्ड्रि—शीतल आकाश में चाँद नहीं रहा, तो भी; अल् आयिर कोटि—रातें हज़ारों की संख्या में; अडुक्कियतु औत्ततेनुम्—एक के ऊपर एक रखी गयी हों, जैसे रहने पर भी; नल्लार् मुक्कम् आम्—उन सुन्दरियों के मुख रूपी; नाम—श्लाघनीय; पल् आयिर कोटि—अनेक सहस्र कोटि; पत्ति चुटर् ईन्ड्रि—शीतल प्रकाशमय; तिङ्गळ् अल्लाम्—चन्द्र सभ्य; उटत्ता—साथ आने से; इळ्—अन्धकार; ओटि—भागकर; इरिन्तु—हट गया । ७१२

उनके मुख चन्द्र-सम उज्ज्वल थे । अनेक रातों का सम्मिलित अन्धकार हो तो भी बहुत मानार्ह अनेक सहस्र शीतल प्रकाशदायी मुख रूपी चन्द्र साथ आये, इसलिए चाँद के विना भी वह अन्धकार दूर हो गया था । ७१२

पौड्पुड्त्त	मामणि	योत्तबदुम्	बूवि	निन्ड्र
कड्पत्तरु	विन्गदिर्	नाणिळ्	कड्डै	नाड
अड्पड्डिल्	यप्पह	लाक्किय	दाल	रुक्कन्
निड्पत्तैरिक्	किन्ड्रु	नीळ्शुडर्	नीरुमै	यन्ड्रो 713

पौड्पु उड्त्त—मनोहारिता से युक्त; मा मणि औत्तपुत्तुम्—श्रेष्ठ नवरत्न; पूविन्—फूल बने; निन्ड्र—ऐसे स्थित; कड्प तरुविन्—कल्पतरुओं की; कतिर्—कान्ति-किरणें; नाळ् निळल् कड्डै—दिन के-से प्रकाश की रेखाओं के समान; नाड—निकल

रही थीं; अल् पड्ड अळिय-रात का सम्बन्ध मिट गया; पकल् आक्कियताल्-दिन-सा बनाने से; अरुक्कन् निड्प-सूर्य के (दूर) रहने पर भी; नीळ् चुटर् तैरिक्किन्नु-लम्बी प्रकाश-रेखाएँ निकालना; नीर्मे अन्नी- (कल्पतरुओं का) गुण है न । ७१३

उस उद्यान के कल्पतरु भी आसाधारण थे । उनके फल बहुत ही छटापूर्ण नवरत्न थे । उनसे जो प्रकाश छूटता था उससे दिन-सा प्रकाश होता था । विना सूर्य के ही उजाला देना कल्पतरु का गुण था न ? । ७१३

ऊन्नीशै	मुदरुपौडि	यावैयु	मौन्नि	नीन्नु
तेरानिलै	युडुदोर्	शिन्दैयन्	शैय्हे	योरान्
वेराय	पिडुपिडै	वेट्कै	विशित्त	दीरुप्प
माडोरुडल्	पुक्कैन्	मण्डवम्	वन्नु	पुक्कान् 714

ऊड-स्पर्शेन्द्रिय; ओचे-श्रवणेन्द्रिय; मुतला-आवि; पौडि यावैयुम्-इन्द्रिय सब; औन्निन् औन्नु-एक सा एक; तेरा-सतर्क नहीं रही; निलै-ऐसी स्थिति में; उडु-पड़ा; ओर् चिन्तैयन्-मन वाला; चैय्कै ओरा-क्या करना, यह न जानकर; वेट्कै विचित्तु-राग ने उसको बाँधकर; अतुईरुप्प-छाँचा; माडु ओर् उटल् पुक्कतु अन्त-दूसरे एक शरीर में प्रविष्ट हुआ हो ऐसा; मण्डवम् वन्नु पुक्कान्-मण्डप में आ पहुँचा । ७१४

रावण की दशा दयनीय थी । उसकी स्पर्श, शब्द आदि परखनेवाली कोई भी इन्द्रिय सतर्क नहीं थी । एक से एक बढ़कर सब इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गयी थीं । मन भी जड़वत हो गया । क्या करना है, यह भी निश्चय कर नहीं पाया । उधर सीता के प्रति राग उसे बलात् खींच रहा था । उससे वह मानो दूसरे शरीर में प्रवेश कर रहा हो, इस विचित्र भावना के साथ मण्डप में आ पहुँचा । ७१४

तण्डलिल्	तवज्जैय्	वोर्हळ्	वेण्डिन्	दायिन्	नल्हुम्
मण्डल	महर	वैलै	यमुदोडुम्	वन्द	दैन्तप्
पण्डरुज्	जुरुम्बु	शेरुम्	पशुमर	मुयिरुत्त	पैम्बोन्
तण्डळिर्	मलरिर्	चैय्द	शोदळच्	चेक्कै	शार्नुदान् 715

तण्डल् इल-निर्बाध रूप से; तवम् चैय्वोर्कळ-तपस्या करते रहनेवाले; वेण्डित्त-जो मांगते हैं उन्हें; तायिन् नल्कुम्-माता के समान देगा; मकर मण्डल वैलै-मण्डलाकार मकरालय (क्षीरसागर); अमुतु ओटुम्-अमृत के साथ; वन्ततु अन्त-आया हो जैसे; पण् तरु-संगीत-सम गुंजारशील; चरुम्पु चेरुम्-श्रमरों से आवृत; पचु मरम्-हरे पेड़ों से; उयिरुत्त-निकले; पैम् पौन् तण् तळिर्-ताजे स्वर्णवर्ण शीतल पल्लव; मलरिल्-और फूलों से; चैय्त-बनी; चीतळ चेक्कै-शीतल शय्या पर; चार्नुतान्-पहुँचा । ७१५

उसमें एक पुष्पशय्या थी जो क्षीरसागर अमृत के साथ आया हो ऐसा लगती थी । क्षीरसागर तपस्वियों को उनकी याचित वस्तुओं को माता के

समान दे सकता था । यह शय्या भी वैसी थी क्योंकि कल्पतरु के ताजे स्वर्णवर्ण फूलव और मनोरम फूल उस पर बिछे हुए थे । उस पर सुरम्य संगीत-सा गुंजार करते हुए भ्रमर मँड़रा रहे थे । रावण उस शीतल शय्या पर आया । ७१५

नेरिळ्	महळिर्	कून्द्	निर्ऌेनर्	वाश	नीन्दि
वेरियञ्	जरळच्	चोल्	वेत्तिलान्	विरुन्दु	शैय्य
आर्हलि	यळ्वन्	दन्द्	वमिळ्देन्	वीरुव	रावि
तीरिन्तु	मुदवर्	कौत्त	तेन्ऌल्वन्	दिळ्त्त	दन्ऌे 716

औरवर् आवि तीरित्तुम्—एक के प्राणों के जाने की स्थिति में रहे, तो भी; उतवर्कु औत्त—प्राण रोकने में सहायता जो दे सकता था उस; आर्कलि अळ्वम् तन्त—(क्षीर-) सागर की गहराई से प्राप्त; अमिळ्त्तु अन्न—अमृत के समान; तेन्ऌल्—दक्षिणी (मलय-) पवन; इळ् मकळिर् कून्तल्—आभरणालङ्कृता स्त्रियों के केश पर की; निर्ऌे नर् वाचम्—भरी शहद-युक्त सुगन्ध; नीन्ति—तैरकर; वेरि अम् चरळम् चोल्—शहदयुक्त, सुन्दर देवदार तरुओं के उपवन में; वेत्तिलान्—वसन्तकाल का राजा, मन्मथ के; विरुन्तु चैय्य—स्वागत करते; वन्तु इळ्त्ततु—आ पहुँचा । ७१६

क्षीरसागर की गहराई से प्राप्त अमृत मरणोन्मुख मनुष्य को जिला कर उसकी सहायता कर सकता है । मलयपवन उसी अमृत के समान वहाँ संचार कर रहा था । वह आभूषणभूषिता सुन्दरियों के केशों के शहद-भरे फूलों की सुगन्धि में घुसकर बाहर आया हुआ था । शीतल देवदार तरुओं से भरे उस उद्यान में वसन्त का राजा मन्मथ उसका स्वागत कर रहा था । इस रीति से वह मलयपवन वहाँ आया । ७१६

शाळरत्	तूडु	वन्दु	तवळ्दलुन्	दरित्त	रेऌ्ऌान्
नीळरत्	तङ्गळ	शिन्द	नैरुप्पुह	नोक्कु	नीरान्
वाळ्मनैप्	पुहुन्द	दाण्डोर्	माशुणम्	वरक्कण्	उन्न
कोळुउक्	कौदित्तु	विम्मि	युळैयरैक्	कूविच्	चौन्नान् 717

चाळरत्तु ऊटु वन्तु—खिड़कियों से होकर आया; तवळ्दलुम्—और मन्द-मन्द बहा; तरित्तल् तेऌ्ऌान्—तब असहनीय वेदना के साथ; नीळ् अरत्तङ्कळ् चिन्त—लम्बी रक्त-धाराएँ बहते हुए; नैरुप्पु उक् नोक्कुम्—आग निकालते हुए देखने का; नीरान्—स्वप्नाव वाला; वाळ् मनै पुकुन्ततु—वास के घर में घुसा; ओर् माशुणम्—एक सर्प; आण्टु वर—वहाँ आया; कण्टु अन्न—देखा-सा; कोळ उऌ कौत्तित्तु—संकट पाकर उबला; विम्मि—सिसकते हुए; उळैयरै—समीपस्थ लोगों को; कूवि—पुकार कर; चौन्नान्—बोला । ७१७

वह मलयपवन खिड़कियों के रास्ते से अन्दर आया । पर रावण उसे सह नहीं सका । उसकी आँखों से रक्त की बूँदें ढलक आयीं । अगार भी प्रकट हुए । वह कोप, दुःख दोनों से प्रभावित था । उसने उस मलयपवन

को वासस्थान के घर में घुस आये सर्प के रूप में देखा । उससे कष्ट हुआ और उस पर गुस्सा भी । वह उबल पड़ा । सिसकने भी लगा । समीपस्थ भृत्यों को पास बुलाकर उसने (निम्न बातें) कहीं । ७१७

कूवलि	नुयिर्त्त	शिन्नी	रुलहिनैक्	कुप्पुर्	ऐन्नन्
तेवरि	नीरुव	नैनै	यिन्नलुम्	जैयत्तक्	कान्नो
एवलि	नन्दि	वन्दिड्	गिद्वळ	लैय्दिर्	ऐन्नाक्
कावलि	नुळैयर्	तम्मैक्	कौणरुदिर्	कडिदि	नैन्नान् 718

कूवलिन् उयिर्त्त- (छोटे से) कुएँ में से छनकर निकला; चिल् नीर्-थोड़ा जल; उलकिने-संसार भर को; कुप्पुर् ऐन्नन्-डुबो रहा हो जंसा; तेवरिन् ओरुवन्-देवों में एक; ऐन्नै-मुझे; इन्नलुम् जैय तक्कान्नो-संकट दे सका क्या; इ अळल्-यह आग; एवल् इन्दि-बिना अनुमति के; इड्कु वन्तु ऐय्तिर्-यहाँ आ पहुँची है; ऐन्ड-कहकर; कावलिन् उळैयर् तम्मै-पहरेदारों को; कटितिन् कौणरुदिर्-जल्दी लाओ; ऐन्नान्-कहा । ७१८

कूप का रिसता जल क्या संसार भर को डुबो सकेगा ? वैसा देवों में एक यह मुझे इतना कष्ट दे सकता है क्या ? यह अग्निदेव मेरी आज्ञा के बिना आया कैसे ? बुलाओ पहरेदारों को । ७१८

अव्वळि	युळैय	रोडि	याण्डवरक्	कौणरुद	लोडुम्
वैव्वळि	यमैन्द	शैङ्गण्	वैरुवु	नोक्कि	वैय्योन्
शैव्वळि	दैन्ड	लाड्कुत्	तिरुत्तिनीर्	नीर्हो	लैन्न
इव्वळि	यिरुन्द	वालैत्	तडैयवर्	किल्लै	यैन्नार् 719

अ वळि-तब; उळैयर्-पास जो रहे, वे; ओटि-दौड़े; आण्डु-वही; अवर् कौणरुत् ओडुम्-उनको (बुला) लाये, तब; वैय्योन्-आततायी राक्षस ने; वैम् वळि अमैन्त-क्रूर बनी; चैम् कण्-लाल आँखों से; वैरुवु उड-भयभीत करते हुए; नोक्कि-देखकर; नीर् कौल्-तुम्हीं ने तो; तैन्डलाड्कु-मलयपवन को; चैल् वळि तिरुत्तिनीर्-जाने का मार्ग दिखाया; ऐन्न-पूछा, तो; इ वळि इरुन्त कालै-यह (खिड़कियों का) मार्ग जब रहता तब; अवर्कु तडै इल्लै-उनको रोक नहीं; ऐन्नार्-कहा । ७१९

समीप जो रहे वे भृत्य दौड़े । उन्होंने पहरेदारों को बुलाया और वे आये । निर्मम रावण क्रूर आँखों से उनको भयभीत करते हुए तरेरा और पूछा कि मलयपवन को अन्दर आने का सीधा मार्ग तुम्हीं ने बना दिया न ? तब उन्होंने उत्तर दिया कि जब खिड़कियाँ है, तब उसको आने से कौन रोक सकता है ? कोई बाधा नहीं होगी । ७१९

वेण्डिय	डुणरन्डु	शैय्वान्	विण्णवर्	वरुव	रैन्नाल्
माण्डु	पोलुड्	गौळ्है	यानुडै	वन्मै	वल्लै

तेण्डित्तीर् तिशैह डोरुज् जेणुर् विशैयिर् चैल्हुर्
रीण्डिवन् रन्नेप् पर्त्ति थिरुज्जिरै यिडुदि रैन्डान् 720

वेण्टियतु उणरन्तु चैय्वान्-में जो चाहें वही करने के लिए; विण्णवर् वरुवर्
अैन्डाल्-सुरलोकवासी आते हैं, तो; यानुट्टै कीळकै वन्मै-मेरे (शासन-) सिद्धान्त का
बल; माण्टतु पोलुम्-मिट गया शायद; वल्लै-सीध्र; नीर् तिचैकळ् तोळ्म्-
तुम दिशा-दिशा में; तेण्टि-खोजकर; चेण् उड-बहुत दूर; विचैयिल् चैल्कुड-
तेज जाकर; इवन् तन्ने-इसको; पर्त्ति-पकड़कर; ईण्टु-यहाँ; इरुम् चिरे-
बड़े कारागृह में; इटुतिर्-डाल दो; अैन्डान्-यह हुक्म दिया । ७२०

रावण को आश्चर्य हुआ । देवता हैं तो मेरी इच्छा के अनुसार सेवा
करने के लिए । आज बात विपरीत चली है । क्या मेरा शासन अपना
अधिकार-बल खो गया है ? दौड़ो । दिशा-दिशा में भागो और इस
पवनदेव को पकड़ो और भयंकर कारागृह में डाल दो । ७२०

काश्चिनोन् रन्ने वाळा मुनिदलिर् कण्ड दिल्लै
कूळुम्बन् दैन्ने यिन्ने कुरुहुमार् कुडित्त वाड्डाल्
वेड्डुर्हड् गरुड्गट् चीदै मैय्यरुळ् पुनैये नैन्डाल्
आड्डाला लडुत्त दैण्णु ममैच्चरेक् कौणर्दि रैन्डान् 721

काश्चिनोन् तन्ने-पवन पर; वाळा मुनित्तिल्लि-अकारण कोप करने से; कण्टतु
इल्लै-कोई लाभ नहीं देखते; कुडित्त आड्डाल्-अपनी इच्छा के अनुसार; वेल् तरुम्-
भाला-तुल्य; करुन् कण्-असितेक्षणा; चीतै-सीता की; मैय् अरुळ्-सच्ची कृपा
का; पुनैयेन् अैन्डाल्-धारक नहीं बन् तो; कूळुम् वन्तु-यम भी आकर; अैन्ने-
मुझे; इन्ने कुरुकुम्-अभी पा लेगा; आल्-इसलिए; अटुत्ततु-आगे जो करना है;
आड्डाला अैण्णुम्-बुद्धि-बल से सोचनेवाले; ममैच्चरै-मन्त्रियों को; कौणर्तिर्-
लाओ; अैन्डाल्-कहा । ७२१

रावण ने फिर भी सोचा कि वायुदेव पर बेकार क्रोध दिखाने से क्या
लाभ ? कुछ नहीं देखता । अगर अपनी इच्छा के अनुसार सीताजी की
कृपा पा नहीं सकूंगा तो यम भी मुझे मारने के लिए आ पहुँचेगा । इसलिए
जो आगे की करनी के बारे में, अपनी बुद्धि के बल पर सोचकर मार्ग बता
सकते हैं वे हमारे मन्त्री ही हैं । इसलिए चलकर उनको बुला लाओ ।
उसने भृत्यों को आज्ञा दी । ७२१

एवित्त शिलत रोडि यैयैनु मळवि लैङ्गुम्
कूविनर् कूव लोडुड् गुरुहिनर् कौडित्तिण् डेरुमेल्
मावित्तिर् चिविहै तम्मेन् मळैमदक् कळिड्डिन् मोदिल्
तेवरुम् वानन् दन्तिर् शिशैदीरुज् जिन्दे शिन्द 722

एवित्त विलतर् ओटि-आज्ञापित श्रुत्य दौड़े और; एय् अैन्तुम् अळविल्-'रे' कहने

के समय के अन्दर; अँडकुम् कवित्-सर्वत्र पुकारा; कूवलोडुम्-पुकारने पर; तेवरुम्-देव भी; वातम् तन्निल्-आकाश में; तिचै तौरुम्-दिशा-दिशा में; चिन्तै चिन्त-चिन्ताग्रस्त हो रहे और; कौटि तिण् तेर् मेल्-ध्वजासहित सुबुद्ध रथों पर; मावितिल्-अश्वों पर; चिविकै तम्मेल्-शिविकाओं पर; मळै मत कळिर्त्तिन् मीतिल्-मेघवर्ण मत्तगजों पर; कुक्कितर्-(वे मन्त्री) रावण के पास आये । ७२२

तुरन्त कुछ भृत्य दौड़े । 'रे' कहने की जितनी देर में सब जगह दौड़कर उन्होंने ढेर लगायी । तो मन्त्री लोग आये । कुछ एक मन्त्री ध्वजामण्डित रथों पर आये । कुछ घोड़ों पर और कुछ पालकियों में आये । कुछ मेघसदृश मत्तगजों पर सवार हो आये । तब देव सब आकाश में एकत्र हो गये और वे बहुत ही चिंतित दिखाई दिये । ७२२

वन्दमन्	दिरिह	ळौडु	माशऱ	मत्तत्ति	नैण्णिच्
शिनदैयि	नितैन्द	शैय्युज्	जैय्हैयन्	रैळिवि	नैजन्
अन्दरज्	जैल्व	दाण्डोर्	विमानत्ति	तारु	मिन्ऱि
इन्दिय	मडक्कि	निन्ऱ	मारीश	तिरुक्कै	शेर्न्दान् 723

वन्त मन्तिरिक्कोडु-आगत मन्त्रियों-सह; माचु अऱ मत्तत्तिन् अँण्णि-दोष-रहित रीति से मन में सोचकर; चिन्तैयिल् नितैन्त-चित्त में सोचा हुआ; चैय्युम् चैय्कैयन्-करने में समर्थ; तैळिवि नैजन्-सुलझा हुआ विचारक; आण्डु-तब; अन्तरम् चैल्वु-आकाशचारी; ओर् विमानत्तिन्-एक (पुष्पक-) यान पर; आरुम् इन्ऱि-बिना किसी की साथ लिये (अकेले); इन्तियम् अटक्कि निन्ऱ-इन्द्रिय-दमन जो किये रहा; मारीचन् इरुक्कै चेर्न्तान्-मारीच के यहाँ जा पहुँचा । ७२३

मन्त्री आये । मंत्रणा हुई । कोई त्रुटि न रहे, ऐसा उपाय सोचा गया । रावण दृढसंकल्प था, कार्यचतुर था । वह आकाशचारी एक यान पर चढ़ा और मारीच के पास आया, जो इन्द्रियों का दमन करके तपस्या करता था । ७२३

8. मारीशन् वदैप् पडलम् (मारीच-वध पटल)

इरुन्दमा	रीश	नन्द	विरावण	नैय्द	लोडुम्
पौरुन्दिय	पयत्तिन्	शिनदै	पौरुमुऱ्ऱु	वैरुवु	हिन्ऱान्
करुन्दड	मलैयनानै	यैदिरुहौण्डु	कडन्गळ्	यावुम्	
तिरुन्दिय	शैय्दु	शैव्वित्	तिरुमुहम्	नोक्किच्	चैय्युम् 724

इरुन्त मारीचन्-(तपोरत जो) रहा, वह मारीच; अन्त इरावणन् अँयत्तल् ओडुम्-उस रावण के आते ही; पौरुन्तिय-उत्पन्न; पयत्तिन्-भय के कारण; चिन्तै पौरुमुऱ्ऱु-व्यग्र-मन होकर; वैरुवुकिन्ऱान्-डरते-डरते; करुम् तटम् मलै अन्तानै-काले बड़े पर्वत के समान उसको; अँतिर् कौण्डु-स्वागत करके; कटन्कळ् यावुम्-कर्तव्य सब; तिरुन्तिय चैय्यु-उचित रूप से करके; चैव्वि तिरुमुक्कम् नोक्कि-दर्शनीय उसका मुख देखकर; चैय्युम्-(यों) बोला । ७२४

तपोरत मारीच ने रावण को देखा । जब रावण आया तो उसे बड़ा भय हो गया । भय के कारण चित्त व्याकुल हो गया । उसने बड़े काले पर्वत-सम रावण की अगवानी की । फिर अतिथि-सत्कार उचित रीति से किये । बाद उसके दर्शनीय मुख को देखकर वह बोला । ७२४

शन्द	मलर्त्तण्	कङ्पह	नीळर्	इलेवर्क्कुम्
अन्दह	तुक्कु	मग्ज	वडुक्कु	मरशाळ्वाय्
इन्द	वत्तर्त्तेन्	तिन्न्	लिरक्कै	यैळियोरिन्
वन्द	करुत्तेन्	शौल्लुदि	यैन्त्रान्	मरुळ्हिन्त्रान् 725

मरुळकिन्त्रान्-भ्रमित; चन्तम् मलर्-सुन्दर फूलदार; तण् कङ्पक नीळल्-शीतल कल्पतरु की छाया में रहकर शासन करनेवाले; तलैवर्क्कुम्-देवेन्द्र को; अन्तकनुक्कुम्-यम को भी; अग्ज अटुक्कुम्-भयभीत होने देते हुए शासन करते हुए; अरच्च आळ्वाय्-राज्यपालन करनेवाले; इन्त-इस; वत्तर्त्तु-वन में; अँत् इन्तल् इरक्कै-मेरे संकट-दायक वासस्थान में; अँळियारिन्-दीन के समान; वन्त करुत्तु-आने का अर्थ; अँत्-क्या है; चौल्लुति-कहो; अँन्त्रान्-कहा । ७२५

मारीच के मन में संशयजनित भ्रम था । देवेन्द्र मनोरम शीतल कल्पतरु की छाया में सुख से रहकर आकाशलोक का शासन करता है । यम है । उनको भी भयभीत करते हुए शासन करनेवाले राजा ! तुम इस वन में मेरे तुच्छ और कष्टदायी वासस्थान में दीन मनुष्य के समान आये हो ! इसका क्या अर्थ है ? बताओ । —मारीच ने जानना चाहा । ७२५

आन्	दनैत्तु	मावि	तरित्ते	नयर्हिन्त्रेन्
पोत्तु	पौर्प्पु	मेन्मैयु	मर्त्तेन्	पुहळोडुम्
यान्	दुनक्किन्	उँड्ड	नुरैक्के	तिन्नियैन्ता
वान्	वरुक्कु	नाण	वडुक्कुम्	वशैमन्तो 726

आन्तु अन्तैत्तुम्-आने के (सभी) कष्ट आ गये; आवि तरित्तेन्-(किसी तरह) प्राण धारण कर रहा हूँ; अयर्किन्त्रेन्-थक गया हूँ; अँत् पौर्प्पुम् मेन्मैयुम्-मेरा महत्त्व और गौरव; पुक्ळ ओटुम् पोत्तु-कीर्ति के साथ चले गये; इत्ति-अब; यान्-मैं; उत्तक्कु-तुम्हें; इन्ऱु अँड्डन् उरैक्केन्-आज की स्थिति कैसे कहूँ; अँन्ता-कहकर; वान्तरुक्कुम्-देवों से भी; नाण-शरमाएँ; अटुक्कुम् वचै-ऐसा (जो) अपयश आया है; (मन्-ओ) । ७२६

रावण ने कहा कि मुझ पर सभी तरह के संकट आ चुके हैं । प्राण तो नहीं गये पर अत्यन्त शिथिल हूँ । मेरी महिमा, गौरव और कीर्ति सब चले गये । तुमसे मैं क्या कहूँ ? देवों से भी हम शर्मियों, ऐसी निन्दा आ लगी है । ७२६

वन्मै	तरित्तोर्	मानिडर्	मड्डुड्	गवर्वाळाल्
निन्मरु	हिक्कु	नाशि	यिळक्कु	निलेनेरुन्दाल्
अन्मर	बुक्कु	निन्मर	बुक्कु	मिदन्मेलोर्
पुन्मै	तैरिप्पिन्	वेडिनि	युण्डो	पुहळ्वेलोय् 727

पुक्ळु वेलोय्-सर्वप्रशंसित भालाधारी; मानुटर्-मानव; वन्मै तरित्तोर्-बलशाली हो गये हैं; मड्डु-और; अड्कु-वहाँ (वण्डक वन में); अवर्-उन मानवों के द्वारा; वाळाल्-कटार से; निन् मरुक्किक्कु-तुम्हारी भांजी की; नाचि इळक्कुम्-नासिका खोने की; निले नेरुन्ताल-वशा हुई तो; अन् मरपुक्कुम्-मेरे कुल का; निन् मरपुक्कुम्-और तुम्हारे कुल का; इतन् मेल् ओर् पुन्मै तैरिप्पिन्-इससे बढ़कर हेयता की बात; इति वेळ उण्डो-दूसरी है क्या । ७२७

शंसित भालाधारी मारीच ! अल्प मनुष्य आज बलशाली हो गये हैं । और स्थिति ऐसी हो गयी कि वण्डकवन में एक मनुष्य ने तुम्हारी भांजी शूर्पणखा की नाक काट ली । फिर तुम्हारे और मेरे कुल का क्या मान रहा ? इससे बढ़कर हेयता हो सकती है क्या ? । ७२७

तिरुहु	शिनत्तान्	मुदिर	मलैन्दोर्	शिडियोर्नाळ्
परुहिन	नैन्डाल्	वैन्डि	नलत्तिड्	पळियन्डो
इरुहै	शुमन्दा	यिनिदि	तिरुन्दा	यिहल्वेलुन्
मरुह	रुलन्दा	रौरवन्	मलैन्दान्	वरिविल्लाल् 728

तिरुक्कु चित्तुत्ताल्-एँठे कोप के साथ; मुतिर मलैन्तोर्-प्रचण्ड रूप से जिन्होंने युद्ध किया; चिडियोर् नाळ् परुक्कित्तन्-उन मेरे छोटी के प्राण पी लिये; अन्डाल्-तो; वैन्डि नलत्तिन्-विजय के गौरव पर; पळि अन्डो-बढ़ा नहीं है क्या; इकल् वेल् उन् मरुक्-युद्धोपयोगी भालाधारी तुम्हारे भांजे; उलन्तार्-मरे; औरवन्-अकेले एक मनुष्य ने; वरि विल्लाल्-बन्धनयुक्त धनुष ले; मलैन्तान्-युद्ध करके मिटा दिया; इरु कै च्चुमन्ताय्-तुम (हाथ जोड़े) दोनों हाथों को सिर पर धारण किए हो; इत्ति उरुन्ताय्-सुखपूर्वक रहते हो । ७२८

एँठे (अपार) क्रोध के साथ मेरे छोटे भाइयों ने प्रचण्डता के साथ उससे युद्ध किया पर उसने उनके प्राण पी (हर) लिये । तो हमारी विजयशीलता पर बढ़ा नहीं लगा क्या ? युद्धोपयोगी भाले रखनेवाले तुम्हारे भांजे मरे; एक मनुष्य ने अपने धनुष के बल से उनसे युद्ध करके उनको मिटा दिया; और तुम इधर सिर पर जुड़े हाथ रखकर तपस्या कर रहे हो सुखपूर्वक ! । ७२८

वैप्पळि	यादैन्	तैञ्जु	मुलन्देन्	विळिहिन्डैन्
औप्पिल	रैन्डै	पोर्शैय	वौल्ले	नुडन्वाळुम्
तुप्पळि	शैव्वाय्	वञ्जियै	वव्वत्	तुणैहीण्डिट्
टिप्पळि	निन्निड्	रीरिय	वन्दे	निवणैन्डान् 729

वैष्णु अळियातु-मन का ताप नहीं मिटता; नैञ्चुम् उलन्तेन्-मन व्यग्र है; विळिकिन्नेन्-मर रहा हूँ; ओप्पु इलर्-समान नहीं; अँन्ने-इसीलिए; पोर् चैय ओल्लेन्-लड़ने में सहमत नहीं हूँ; उटन् वाळुम्-उनके साथ रहनेवाली; तुप्पु अळि-प्रवाल को हरानेवाले; चैम् वाय्-अरुणाधरा; वञ्चियै-लता (-समाना स्त्री) को; वव्व-हर लाने के लिए; तुणै कौण्टु इट्टु-तुम्हें अपना सहायक बनाकर; इ पळि-यह अपमान; निन्निल् तोरिय-तुम्हारे द्वारा दूर करने के लिए; इवण्-यहाँ; वन्तेन्-आया; अँन्नान्-कहा । ७२६

इससे मेरा मन जलता है । जलन नहीं मिटती । मैं मन मारे मरणोन्मुख दशा में हूँ । वे मेरे समान नहीं हैं; इसलिए उनके साथ लड़ने को मेरा मन नहीं मानता । पर वदला तो लेना ही है । उनके साथ एक स्त्री है । उसके अधर प्रवाल को भी सुन्दरता में मात देनेवाले हैं । वह लता के समान है । उसको तुम्हारी सहायता से हर लाना चाहता हूँ, ताकि मेरा यह अपयश छूटे ! इसीलिए इधर आया हूँ । —रावण ने अपना अभिप्राय कहा । ७२९

इच्चो	लन्तेत्तुञ्ज	जौल्लि	यरक्क	नैरिहिन्ऱ
किच्चि	तुरुक्किट्	टुय्ततन	नैन्नक्	किळर्वान्मुत्
शिच्चि	यैत्तत्तन्	मैय्च्चैवि	पौत्तित्	तैरुमन्दान्
अच्च	महर्ऱिच्	चैऱ्ऱ	मत्तत्तो	डैहिन्ऱान् 730

अरक्कन्-रावण ने; अँरिक्किन्ऱ किच्चित्-जलती आग में; उरक्कु इट्टु-इस्पात गलाकर; उय्न्तत्तन् अँन्त-गरम द्रव को कानों में डाला हो, ऐसा; इ चोल् अतैत्तुम्-यह सारा वचन; चोल्-कहकर; किळर्वान् मुत्-उकसानेवाले के सामने; चो चो अँन्-छि: छि: कहकर; तन् मैय् चैवि पौत्तित्-अपने कानों पर हाथ रखकर; तैरुमन्तान्-गड़बड़ाकर; अच्चम् अकर्ऱि-फिर भय त्यागा; चैऱ्ऱ मत्तत्तोडु-क्रुद्ध मन के साथ; अँरिक्किन्ऱान्-बोला । ७३०

ये शब्द मारीच के कानों में पिघलते इस्पात के समान पड़े । रावण ने ये वचन कहकर उसको उकसाया । तब मारीच ने अपने दोनों हाथ दोनों कानों में धर लिये । कहा— छि: छि: ! वह पहले गड़बड़ाया । फिर भय त्यागकर कोप के साथ वह यों बोला । ७३०

मन्ना	नीयुन्	वाळ्वे	मुडित्ताय्	मदियर्ऱाय्
उन्ता	लन्ऱो	दुळ्विते	यैन्ऱे	युणर्हिन्ऱेन्
इन्ना	वेनुम्	यानिदु	रैप्पे	निदमैन्नाच्
चौन्ता	नन्ऱे	यन्तव	नुक्कुत्	तुणिवैल्लाम् 731

मन्ता-राजा; नी उन् वाळ्वे मुडित्ताय्-तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली; मति अर्ऱाय्-बुद्धि-हीन हो गये; ईनु उन्ताल् अन्ऱ-यह तुम्हारा कृत्य नहीं; उळ्विते अँन्ऱे-प्रारब्ध ही; उणर्किन्ऱेन्-समझता है; इन्ता एनुम्-बुरा लगे तो नी;

यान्-मैं; इतम् इतु-हित यह; उरैप्पैन्-वताऊंगा; अन्नाना-कहकर; अन्तवत्तुकु-उसे; तुणिवु अल्लाम्-सारा हितकर उपदेश के वचन; चोन्नान्-कहे; (अन्नु-ए) । ७३१

हे राजा ! बस ! तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली । बुद्धि खो चुके । मैं समझता हूँ कि यह तुम्हारा काम नहीं; वरन् प्रारब्ध का तकाजा है । मेरा कहना तुमको बुरा लगेगा; तो भी तुमको हित की बात कहूँगा । —ऐसा कहकर मारीच ने रावण को अच्छी बातों का सब उपदेश किया । ७३१

अङ्गु	करत्तो	डुन्ऱलै	नीये	यनन्मुन्निल्
पङ्गित्तै	युयत्ताय्	पङ्पल	कालम्	पशिहूर
उङ्गुयि	रुळ्ळै	तेय	वुलन्दाय्	पित्तैयन्ऱो
पैङ्गुनै	शैल्वम्	पिन्नि	दिळन्दाय्	पैङ्गलामो 732

अङ्गु-खण्डित; करत्तोडु उन् तलै-अपने हाथ के साथ सिर को; अत्तल् मुन्निल्—(होम की) अग्नि में; नीये पङ्गित्तै उयत्ताय्-स्वयं पकड़कर तुमने होम किये; पल् पल कालम्-बहुत समय तक; पचि कूर उङ्गु-बहुत भूख से पीड़ित रहकर; उळ्ळै उयिर् तेय-अन्दर प्राणों के क्षीण होते; उलन्ताय्-कष्ट उठाया (तप किया); पित्तै अन्ऱो-बाद तो; चैल्वम् पैङ्गुनै—(त्रिलोकाधिपत्य की) सम्पत्ति पायी; इळन्ताल्-खो जाओ तो; पिन्नु इतु पैङ्गल् आमो-फिर पाना हो सकता है क्या । ७३२

तुमने अपने ही खण्डित हाथ और सिरों को अपने ही हाथ से होमाग्नि में होम किया । कितने ही लम्बे काल तक भूखा-प्यासा रहकर, प्राणों को क्षीण होने देते हुए कठोर कष्ट सहें । तभी जाकर यह सारी विभवश्री तुम्हारी हुई ! (त्रिलोकाधिपत्य भी मिला ।) तुम अब इसको खो जाओ तो पुनः प्राप्त हो सकता है क्या ? । ७३२

तिङ्गुत्तिङ्गु	नाले	शैय्दव	मुङ्गित्तु	तिरुवुङ्गाय्
मङ्गुत्तिङ्गु	नाले	शैल्लुदि	शैल्लाय्	मङ्गैवल्लोय्
अङ्गुत्तिङ्गु	नाले	यैय्दिनै	यन्ऱो	वदुनीयुम्
पुङ्गुत्तिङ्गु	नाले	पिन्नु	मिळक्कप्	पुहुवायो 733

चौल् आय् मङ्गै-निष्कृतांगी वेद में; वल्लोय-निपुण; तिङ्गु तिङ्गु आले-समर्थ सामर्थ्य से; चैय् तवम् मुङ्गित्तु-करणीय सभी तप पूरा करके; तिरु उङ्गाय्-यह सारा वैभव पाया; मङ्गु तिङ्गु आले-धर्म-विरुद्ध बल से; चौल्लुति-यह बात कहते हो; अङ्गु तिङ्गु आले-धर्म-सम्मत बल से; अय्यित्तै अन्ऱो—(यह विभूता) पायी न; अतु-वह; पुङ्गु तिङ्गु आले-धर्म-विरुद्ध बल से; पिन्नुम् इळक्क-उसको फिर से खोने के लिए; पुहुवायो-इस काम में प्रविष्ट होओगे क्या । ७३३

निष्कृत-सहित वेद के विशारद ! समर्थ सामर्थ्य के साथ, करणीय तप आदि करके तुमने यह सम्पत्ति पायी है । अब अधार्मिक बल हो गया है, उससे तुम यह बात कह रहे हो । यह सारा वैभव तुमने धर्म-मार्ग

पर चलकर ही प्राप्त किया था । अब इसे अधार्मिक कार्य करके खोना चाहोगे क्या ? । ७३३

नारडः	गौण्डार्	नाडु	कवर्न्दार्	नडैयिल्ला
वारडः	गौण्डार्	मड्डोर्	वड्काय्	मनैवाळुम्
तारडः	गौण्डा	रैन्डिवर्	तम्मैत्	तरुमन्दान्
ईरुडः	गण्डाय्	कण्डह	रुय्न्दा	रैवरैया 734

ऐया-प्रभु; नारम् कौण्डार्-जल हरनेवाले; नाडु कवर्न्तार्-राज्य छीनने वाले; नटै इल्ला-प्रथा के विरुद्ध; वारम् कौण्डार्-प्रजा से कर लेनेवाले; मड्डु ओरुवड्डु आय्-दूसरे की गृहिणी बनकर; मनै वाळुम्-उसके घर में रहनेवाली; तारम् कौण्डार्-उसकी पत्नी को हर लानेवाले; ऐन्डु इवर् तम्मै-ऐसे इन लोगों को; तरुम् तान्-धर्मदेवता स्वयं; ईरुम्-काट कर मार देता है; कण्डकर् उय्न्तार्-पापी बचे; अवर-कौन; कण्डाय्-देखा । ७३४

प्रभु ! तुम सोचो । पराया जल हरनेवाला, राज्य छीननेवाला, अक्रम कर उगाहनेवाला, परदारा ग्रसनेवाला —इनको धर्मदेवता स्वयं आकर मिटा देगा । पापी कौन नाश से बचा है अब तक, सोचो । ७३४

अन्दर	मुड्डा	नहलिहै	पौड्पा	लळिवुड्डान्
इन्दिर	नौप्पा	रैत्तनै	योर्दा	मियलड्डार्
शैन्दिरु	वौप्पा	रैत्तनै	योर्निन्	डिरुवुण्वार्
मन्दिर	मड्डा	रुड्ड	दुरैत्ताय्	मदियड्डाय् 735

अन्तरम् उड्डान्-सुरलोकाधिपति; अकलिकै पौड्पाल्-अहल्या के सौन्दर्य से; अळिवु उड्डान्-विगड़ा; इन्तिरन् ओप्पार्-इन्द्र-सम; अैत्तनैयोर् ताम्-कितनों ही ने; इयल् अड्डार्-गौरव खोया; चैम् तिरु ओप्पार्-सुन्दर लक्ष्मी-सम स्त्रियाँ; अैत्तनैयोर्-कितनी ही; निन् तिरु उण्वार्-तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं; मन्तिरम् अड्डार्-विचार-शक्ति से हीन लोगों की; उड्डतु-(सी) बात; उरैत्ताय्-कहते ही; मति अड्डाय्-बुद्धिहीन हो । ७३५

सुरलोकाधिपति इन्द्र अहल्या के सौन्दर्य से (आकृष्ट होकर) संकट में पड़ा । इन्द्र के समान कितने ही लोग अपना गौरव खो चुके हैं ! (तुम्हारे पास स्त्रियों की कमी है क्या ?) लक्ष्मी-सम कितनी ही सुन्दरियाँ तुम्हारे पास रहकर तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं ! फिर विवेक-हीन मनुष्य की अच्छी मन्त्रणा जिसे मिली नहीं हो उसकी बात कहते हो ! साफ़ है कि तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है । ७३५

शैय्दा	येतुन्	दीविनै	योडुम्	वळिपल्ला
दैय्दा	दैय्दा	दैय्दि	निराम	नुलहीन्डान्

वैदा लन्न वाळिहळ् कौण्डुन् वळिथोडुम्
कौय्दा तन्त्रे कौरु मुडित्तुन् कुळुवैल्लाम् 736

वैय्ताय् एत्तुम्-यह करोगे तो भी; तीवित्तै ओटुम्-पाप के साथ; पळि अल्लातु-अपयश से हीन; वैय्तातु-जो है, वह मिले बिना; वैय्तातु-नहीं रहेगा; वैय्तिन्-(तुम्हारा संकल्प) पूरा होगा तो भी; उलकु ईन्डान् इरामन्-लोक-जनक श्रीराम ने; वैताल् अन्न- (मुनि-) शापों के समान; वाळिकळ् कौण्डु-शरों से; उन् वळि ओटुम्-तुम्हारी संतति के साथ; कौरुम् मुडित्तु-शक्ति मिटाकर; उन् कुळु अल्लाम्-तुम्हारा दल और बल; कौय्तान् अन्त्रे-मिट्टा दिया न, समझो । ७३६

अगर तुम यह काम करोगे तो यह निश्चित है कि पाप और अपयश के सिवा कुछ नहीं मिलेगा; नहीं ही मिलेगा । तुम्हारा मनोरथ पूरा हो गया तो भी यह निश्चय समझ लो कि लोकपिता श्रीराम ने अपने मुनि-शाप-सम अमोघ वाणों से तुम्हारी संतति के साथ तुम्हारा सारा दल-बल मिटा दिया ! । ७३६

अन्डान् नैन्ने यैण्णलै योनी करनैन्वान्
निन्डान् नैक्कु मेलुळ नैन्नु निलैयम्मा
तन्डान् नैत्तन् इरौडु माळत् तन्वौन्डाल्
कौन्डान् मुर्कुड् गौल्ल मनत्तिड् कुडिहौण्डान् 737

करन् अन्पान्-खर जो था; निन् तात्तैक्कुम् मेल-तुम्हारी सेवा का नायक; अन्नुम् निलै उळन्-उस पद में रहा न; तन् तात्तै-अपनी सेना; तन् तेर् ओटुम्-अपने रथ के साथ; माळ-मर मिटे, ऐसा; तन् ओन्डाल्-एक ही धनु से; कौन्डान्-श्रीराम ने मारा; मुर्कुड्-सारा वंश; गौल्ल-मिटाने का; मनत्तिल् कुडि कौण्डान्-मन में संकल्प रखता है; अन्तै-क्या ही आश्चर्य है; अन् तान् नी अण्णलैयो-क्यों ही तुमने यह बात नहीं सोची; अम्मा-री माँ । ७३७

खर क्या मामूली राक्षस था ? वह तुम्हारी सेना में नायक का पद वहन करता था । श्रीराम ने एक ही धनु की सहायता से उसका उसकी सेना और रथ सहित काम तमाम किया । और उसका यही संकल्प है कि राक्षसकुल को ही मिटा दूँ । यह क्या आश्चर्य है ! तुमने यह सब क्यों नहीं सोचा ? माँ ! कैसी बुद्धिहीनता है ! । ७३७

वैय्योर् यारे वीर विरादन् रुणैवैय्योर्
ऐयो पोना तम्बौडु मुम्बर्क् कवनैन्डाल्
उय्वार् यारे नम्मि लैन्कौण् डुणर्दोरुम्
नैया निन्त्रे नीयि दुरैत्तु नलिवायो 738

वैय्योर्-कठोर वीरों में; वीर विरातन् तुणै-वीर विराध जितना; वैय्योर् यारे-मयंकर कौन है; अवन्-वह भी; ऐयो-हाय; अम्पौटुम्-राम के वाण के साथ; उम्पड्क्कु पोनान्-आकाश को चला गया; अन्डाल्-तो; नम्मिल् उय्वार्

यारे-हममें वचेगा कौन; अँत कौण्टु-यह सोचकर; उणर् तोळ्म्-ज्यों-ज्यों विचार करता हूँ, त्यों-त्यों; नैया निन्त्रेन्-विगलित होता हूँ; नी इतु उरैत्तु-तुम यह कहके; नलिवायो-और भी सताते हो क्या । ७३८

बड़े भयंकर और क्रूर वीरों में वीर विराध के समान अति वलिष्ठ वीर कौन होगा ? हाय ! वह विराध भी श्रीराम के एक ही शर से, उस शर के साथ ही स्वर्ग पहुँच गया न ! तो हममें कौन ठहर सकता है ? यही सोच-सोचकर मैं व्यग्र हो रहा हूँ । शिथिल हो रहा हूँ । तुम यह बात कहकर और भी निर्बल कर रहे हो मुझे । ७३८

माण्डार्	माण्डार्	नोयिनि	माळ्वार्	तौळिल्शैय्य
वेण्डा	वेण्डा	शैय्दिडि	नुय्वान्	विदियुण्डो
आण्डा	राण्डा	रैत्तत्तै	यैन्गे	त्तउत्ताळार्
ईण्डा	रीण्डार्	निन्त्रव	रैल्ला	मिलरन्त्रो 739

माण्डार् माण्डार्-जो मरे, वे मर गये; नी इति-तुम अब भी; माळ्वार् तौळिल्-मरणासक्त का काम; चैय्य वेण्डा वेण्डा-मत करो, मत करो; चैय्तिटिन्-करोगे तो; उय्वान् विति-वचने का रास्ता; उण्टो-है क्या; आण्डार् आण्डार्-तासक (के बाद) शासक; अँत्तत्तै-कितने (मरे); अँत्केन्-कहूँ; अउन् आळार्-धर्म का जिन्होंने पालन नहीं किया; ईण्डार् ईण्डार्-चिरकाल नहीं रहेंगे, नहीं रहेंगे; निन्त्रव अँल्लाम्-जो रहे वे भी; इलर् अन्त्रो-अब नहीं रहे न । ७३९

जो चल वसे वे तो चले गये । तुम यह काम करके मरण का वरण मत करो । करोगे तो जीवित वचने का कोई मार्ग नहीं होगा । राजा के बाद राजा, कितने ही राजा मरे हैं, उनकी संख्या क्या कहूँ ? जो धर्म का पालन नहीं करते वे बहुत काल नहीं जीते, नहीं जीते । जो रहे वे सारे यम के मेहमान हो गये । अब नहीं रहे न ? । ७३९

अँम्बिक्	कुम्मे	तन्त्रै	तनक्कु	मिरुतिक्कोर्
अन्बुय्क्	कुम्बोर्	विल्लि	तत्तक्कु	मयनित्र्कुम्
तम्बिक्	कुम्मेन्	ताण्मै	तविर्न्दे	तळर्बुउरेन्
कम्बिक्	कुम्मेन्	नैज्जव	नैन्त्रे	कवल्हिन्त्रेन् 740

अँम्पिक्कुम्-मेरे कनिष्ठ को; अँन् अन्तै तनक्कुम्-मेरी माता को; इरुतिक्कु-अन्त करने के लिए; ओर् अम्पु उय्क्कुन्-जिसने एक वाण चलाया; पोर् विल्लि तनक्कुम्-उस युद्धकुशल धनुर्धर श्रीराम; अयल् नित्र्कुम्-और उसका पार्षद; तम्पिक्कुम्-कनिष्ठ भ्राता के सामने; अँन् आण्मै तविर्न्दे-अपना पौरुष हारकर; तळर्बु उउरेन्-शिथिल हो गया; अँन् नैज्चु-मेरा मन; कम्पिक्कुम्-काँपता है; अवन् अँन्त्रे-वही राम (तुम्हारा शत्रु हो गया, यह समझकर); कवल्हिन्त्रेन्-आकुल हूँ । ७४०

श्रीराम बड़ा ही युद्धनिपुण धनुर्धर है । उसने मेरे छोटे भाई और

माता (ताड़का) को मौत के घाट उतारने के लिए एक-एक ही वाण चलाया था। ऐसे उसके और उसके पार्षद लक्ष्मण के सामने अपना बल हारकर मैं निर्वल हुआ। अब भी उनकी बात सोचता हूँ तो मेरा मन कम्पित हो जाता है। अब मेरी चिन्ता यही है कि वही तुम्हारा शत्रु बन गया है ! । ७४०

निन्ऱुम्	जैन्ऱुम्	वाळ्वन	यावु	निलैयावाल्
पोन्ऱु	मैन्नु	मैय्मै	युणर्न्दोय्	पुलैयाड्डु
कोन्ऱु	मुन्ता	यैन्नु	कोळ्ळा	युयर्शैल्वत्
तैन्ऱु	मैन्ऱु	वैहुदि	यैया	विनियैन्ऱान् 741

ऐया—तात; निन्ऱुम् जैन्ऱुम्—अचल और चल; वाळ्वन यावुम्—जीव सभी; निलैया—मर्त्य हैं; पोन्ऱुम्—मर जायेंगे; जैन्नुम् मैय्मै—यह सत्य; उणर्न्दोय्—जानते हो; पुलैयाड्डु—यह नीच काम करना; ओन्ऱुम् उन्ताय्—कुछ मत सोचो; अन् उरै कोळ्ळाय्—मेरा वचन मानो; इति—आगे भी; उयर् चैल्वत्तु—ऊँचे बंभव के साथ; अन्ऱुम् वैकुति—सदा रहो; अन्ऱान्—कहा (मारीच ने) । ७४१

हे तात ! इस संसार में चल या अचल कोई भी जीव या जन्तु स्थायी रूप से रहनेवाला नहीं है। यह तथ्य तुम जानते ही हो। ऐसे तुम यह पाप का खेल क्यों करना चाहते हो ? किञ्चित् भी यह बात मत सोचो। मेरी बात मान लो। अपार वैभवयुक्त पद में हो आगे भी सदा उसी में रहो। मारीच ने ये सारी बातें कही । ७४१

कङ्गेशडे	वैत्तव	नौडुङ्गयिल्	वैऱ्पोर्
अङ्गेयि	नैडुत्तवै	दाडैळिन्	मणित्तोळ्
इङ्गोर्मनि	दङ्कळिय	वैन्ऱुनै	यैत्तत्तन्
वैङ्गणैरि	यप्पुव	मीडुऱ	विडैत्तान् 742

कङ्कै चटै वैत्तवन् ओटुम्—जटा में गंगाधारक के साथ; कयिल् वैऱ्पु—उनके कैलासपर्वत को; ओर् अम् कैयिल्—एक हथेली पर; अँडुत्त—जिन्होंने उठाया; अँत्तु—मेरे; आटु—युद्धोत्साही; अँळिन् मणि तोळ्—सुन्दर श्रेष्ठ भुजाएँ; इङ्कु ओर् मत्तित्तुक्कु—यहाँ एक मनुष्य के लिए; अँळिय अँन्ऱुनै—सुगम हैं, कहा; अँत—कहकर; वैम् कण् अँरिय—भयंकर आँखों से आग निकालते हुए; पुरवम् मीतु उऱ्—भौंहों को ऊपर उठाते हुए; विडैत्तान्—डॉट बताया। ७४२

रावण को ये बातें कैसे पसन्द आती ? उसने डॉट बताया। अपनी जटा में गंगाधारक शिवजी के कैलास को उनके साथ मैंने अपनी हथेली में उठाया था। तुम कहते हो ऐसी मेरी प्रबल, सुन्दर और युद्धोत्साही भुजाएँ इस अल्प मनुष्य के सामने तुच्छ है ! यह कहते वक्त उसकी आँखों से अंगार छूटे और भौंहें तनकर भाल पर चढ़ गयीं । ७४२

निहल्लन्ददै	निनैक्किलैयैन्	नैञ्जिनिलै	यञ्जा
दिहल्लन्दनै	यैन्क्किलैय	नङ्गैमुह	मैङ्गुम्
अहल्लन्दवरै	यौप्पुऱ	वमैत्तवरै	यैया
पुहल्लन्दनै	तत्तिप्पिल्लै	पौरुत्तनैन्नि	दैन्ऱान् 743

ऐया-प्रभु; निकल्लन्ततै-जो घटा; निनैक्किलै-वह नहीं सोचते; अञ्चातु-विना डर के; अँन् नैञ्चिन् निलै-मेरे हृदय की स्थिति की; इकल्लन्ततै-निन्दा की; अँत्तक्कु इळैय नङ्कै-मेरी छोटी बहिन के; मुक्कम् अँङ्कुम्-मुख-भर में; अकल्लन्तवरै-खुदे हुए पर्वत के; औप्पु उऱ-समान हो, ऐसा; अमैत्तवरै-जिन्होंने बनाया, उनकी; पुक्कल्लन्ततै-प्रशंसा की; इतु तत्ति पिल्लै-यह बहुत बड़ा अपराध है; पौरुत्तनैन्-क्षमा की मैने; अँन्ऱान्-कहा। ७४३

हे तात ! तुमने जो हुआ उसका विचार नहीं किया। विना भय के मेरी चित्त-स्थिति को हेय बताया। मेरी छोटी बहिन का चेहरा खुदे हुए गढ़े-सहित पर्वत के समान हो गया। वैसा जिसने बनाया उस मनुष्य की मुझसे प्रशंसा करते हो। यह बड़ा भारी अनुलनीय अपराध है। तो भी तुम्हें क्षमा करता हूँ। ७४३

तत्तैमुत्ति	वुऱ्ऱदरु	कट्टहवि	लोनैप्
पित्तैमुत्ति	वुऱ्ऱिडुमै	तत्तविरदल्	पेणान्
उन्नैमुत्ति	वुऱ्ऱुन्नु	लत्तैमुत्ति	वुऱ्ऱाय्
अँन्नैमुत्ति	वुऱ्ऱिलैयि	दैन्नैन्	विशैत्तान् 744

तत्तै मुत्तिवु उऱ्ऱ-अपने पर कोप करनेवाले; तऱुक्क-निडर; तक्कु इल्लोत्तै-अयोग्य की; पित्तै मुत्तिवु उऱ्ऱिडुम्-फिर भी कोप करेगा; अँन्नै-यह सोचकर; तविरदल् पेणान्-छोड़ना न चाहते हुए; अँन्नै मुत्तिवु उऱ्ऱिलै-मुझ पर गुस्सा नहीं किया पर; उन्नै मुत्तिवु उऱ्ऱ-अपने से ही आक्रोश करते; उन् कुलत्तै मुत्तिवुऱ्ऱाय्-अपने वंश पर क्रोध करते हो; इतु अँन् अँत्त-यह क्या है; इच्चैत्तान्-कहा। ७४४

मारीच ने सोचा। रावण मुझ पर क्रोध करता है। वह निडर अयोग्य राक्षस और भी गुस्सा करेगा। तो भी भय के कारण उसने उपदेश देने से विरत होना नहीं चाहा। उसने कहा कि रावण ! अब तुम मुझ पर क्रोध जो करते हो उसका अर्थ है तुम अपने पर गुस्सा करते हो और अपने कुल पर गुस्सा करते हो ! यह कार्य तुम क्यों करते हो भाई ! । ७४४

अँडुत्तमलै	येनिनैयि	नीशन्निहल्	विल्ला
वडित्तमलै	नोयिडुव	लित्तियैन्	वारिप्
पिडित्तमलै	नाणिडैप्	पिणित्तौरुवन्	मेनाळ्
औडित्तमलै	यण्डमुह	डुऱ्ऱमलै	यन्ऱो 745

अँटुत्त मलैये-तुमने पर्वत उठाया, उसी पर्वत को; नितैयिन्-याद करते रहो तो; इतु ईचन् इकल् विल्लाय्-यह ईश्वर के युद्ध के लिए धनु; वटित्त मलै-बनाया गया पर्वत है; नी इतु वलित्ति-तुम इसे झुकाओ; अँत-कहने पर; मेल् नाळ्-पहले; औरवन्-एक मानव से; वारि-उठाकर; पिटित्त मलै-हाथ में जो पकड़ा गया वह पर्वत; नाण् इटै पिणित्तु-प्रत्यंचा से बद्ध खींचने के मध्य; ओटित्त मलै-तोड़ा गया पर्वत; अण्टम् मुकट्टु उर्ऱ-आकाश की चोटी तक गया; मलै अन्ऱो-मेरुपर्वत नहीं है क्या । ७४५

तुमने जो उठाया उसी कैलासपर्वत की याद में भूले हुए हो । ईश्वर शिव ने मेरुपर्वत का ही धनु बनाया था । उसको झुकाने की आज्ञा दी विश्वामित्र ने । तो राम ने उस पर्वत को प्रत्यंचा चढ़ाकर झुकाते वक्त तोड़ दिया था । वह पर्वत कौन सा था । जानते हो ! (तुमने तो हिमालय के एक छोटे से शिखर को उठाया था !) राम ने जो उठाकर तोड़ा वह आकाश-स्पर्शी और श्रेष्ठ पर्वत था ! । ७४५

यादुमरि यायुरैर्हो लायिहलि रामन्, कोवैवुनै यामुनयिर् कौळ्ळैवडु मन्ऱे
पेदेमदि यालिदुवोर् पेंण्णुव मँन्ऱाय्, शोदैयुरु वोनिरुदर तीविनैय दन्ऱो 746

यातुम् अरियाय्-कुछ नहीं जानते; उरै कौळाय्-उपदेश ग्रहण न करोगे; इकल् इरामन्-युद्धसमर्थ श्रीराम; कोतै पुतैयामुन्-युद्ध के लिए हाथ में दस्ताना पहनने के पूर्व ही; उयिर् कौळ्ळै पटुम् अन्ऱे-हमारे प्राण छूट जायेंगे न; पेतै मतियाल्-जड़ मति के कारण; इतु और पेंण् उरवम् अँन्ऱाय्-यह स्त्री-रूप है, कहा; अतु चीतै उरवो-वह सीता का रूप है क्या; निरुत् ती वितैयतु-राक्षसों के पाप का रूप है; अन्ऱो-न । ७४६

तुम न खुद कुछ जानते हो, न मेरा उपदेश मानते हो ! यह जान लो कि श्रीराम के, जो युद्ध-प्रवीण है, हस्तलाण (या माला) पहनने के पूर्व ही हमारे प्राण हर लिये जायेंगे । तुम अपनी मन्दमति के कारण उसको स्त्री का रूप मानते हो ! वह क्या सीता का रूप है ? नहीं हमारे पापों का मूर्त-रूप है । ७४६

उञ्जुबिळै यायुऱवि नोडुमैन् वुन्ना, नैञ्जुवऱै पोदुमदु नीनिनैय हिल्लाय्
अञ्जुमैन् दारुयि ररिन्दरुहु निन्ऱार्, नञ्जुनुहर् वारैयिदु नन्ऱैत्तलु नन्ऱे 747

उऱविन्नोटम् उञ्चु-परिवारों, बन्धु-बान्धवों के साथ वचकर; पिळैयाय्-जीवित नहीं रहोगे; अँत-यह; उन्ना-सोचकर; नैञ्चु पऱै पोतुम्-मेरा मन ढोल की खाल के समान थरता है; नी अतु नितैय किल्लाय्-तुम वह सोच नहीं पाते; अँत्तु आर् उयिर्-मेरे बहुमूल्य प्राण; अञ्चुम्-डरते हैं; नञ्चु नुकरवारै-विष-खादक को; अरिन्नु-(विष खाता) जानकर; अरुक्ु निन्ऱार्-पार्श्व में स्थित लोगों का; इतु नन्ऱ-यह (तुम्हारा विष खाना) अच्छा है; अँन्तलुम्-कहना भी; नन्ऱे-अधिक अच्छा होगा । ७४७

जब मैं विचार करता हूँ कि तुम अपने परिवारों और बन्धुजनों के

साथ नष्ट हो जाओगे और नहीं बचोगे तो मेरा चित्त थर-थर काँपता है; जैसे पिटा ढोल । तुम वह सोचने में असमर्थ हो । मेरे प्यारे प्राण भी काँपते हैं । तुमको प्रोत्साहन दूँ तो उस काम से विषखादक को पास रहने वालों के, 'यह बड़ा अच्छा है' कहकर प्रोत्साहित करना भी अधिक भला होगा । ७४७

ईशन्मुद	लाहविरै	योरुलहु	मर्इत्
तेशमुदन्	मुर्छुमो	रिमैप्पिनुयिर्	तिन्नत्
कोशिह	त्तळित्तहड	वुट्पडै	कीदिप्पो
डाशिल	कणिप्पिल	विरामन्नरु	णिर्प्प 748

ईचन् मुतलाक-ईशानदेव आदि; इरैयोर् उलकुम्-देवों के लोकों को; मर्इ-और अन्य; तेचम् मुतल्-देश आदि; मुर्छम्-सारा; ओर् इमैप्पिल्-एक बार पलक मारती देर में; उयिर् तिन्न-प्राण खाने (मिटाने) के लिए; कोचिकन् अळित्त कटवुळ् पटै-कौशिक से दत्त दिव्य अस्त्र; आचु इल-द्वुटिहीन; कणिप्पु इल-गणना-हीन; कीदिप्पोटु-उग्रता के साथ; इरामन् अरुळ्-श्रीराम की सेवा में; निर्प्प-खड़े हैं । ७४८

श्रीराम के पास कौशिक-दत्त अमोघ, द्वुटिहीन और अगणित अस्त्र हैं, जो ईशान के लोक से लेकर सारे देवताओं के लोक और अन्य लोकों को पल भर में समाप्त कर दे सकते हैं । वे श्रीराम की सेवा में उसकी आज्ञा के मुहताज खड़े हैं । ७४८

आयिरम	डर्कैयुडै	यानैमळु	वाळाल्
एयैनुमु	रैक्कुळुयिर्	शैर्इर्वेदि	रिल्लोन्
मेयत्तिरन्	मुर्छुम्वरि	वैञ्जिलैयि	तोडुम्
तायवन्नव	लित्तहैमै	यामुळुत	हैत्तो 749

आयिरम्-सहल; अटल् कै-बलिष्ठ हाथों से; उटैयात्तै-युक्त कार्तवीर्य को; मळु वाळाल्-परशु के अस्त्र से; एय् अँनुम् उरैक्कुळ्-'रे' के उच्चारण करते समय के अन्दर; उयिर् चैर्इ-जिसने प्राणहीन कर दिया; अँतिर् इल्लोन्-उस अप्रतिद्वन्द्वी परशुराम का; मेय-प्राप्त; तिर्इल् मुर्छम्-सारा बल; वरि वैम् चिलैयिन् ओटुम्-बन्धनयुक्त धनुष के साथ; तायवन्-परास्त जो किया उसका; वलि तकैमै-बल-पराक्रम; याम् उळु तकैत्तु ओ-हमारे कहने योग्य होगा क्या । ७४९

राम ने परशुराम के सारे बल को, उसके धनुष के साथ परास्त किया था । वह परशुराम क्या मामूली मनुष्य थे । सहस्र महाबली हस्तों से युक्त कार्तवीर्य को परशुराम ने 'रे' शब्द के उच्चारण समय के अन्दर अपने परशु के प्रहार से समाप्त किया था । ऐसे श्रीराम के बल का अनुमान या कथन हम करने योग्य है क्या ? । ७४९

वेदनेशैय्	कामविड	मेविडमै	लिन्दाय्
तीदुरैशैय्	दायिनैय्	शैय् हैशिवै	वन्डो
मातुलनु	माय्मरविन्	मुन्दैयुड	वन्देन्
ईदुरैशैय्	देत्तिदने	यैन्दैतविर्	हैन्डान् 750

वेतसै चैय्-पीड़क; काम विटन् मेविट-काम रूपी विष चढ़ा और; मैलिन्दाय्-क्षीण हो गये हो; तीतु उरै चैय्ताय्-अनर्थ की बात करते हो; इतैय चैय्कै-तुम्हारा यह काम; चित्तैव् अनुडो-नाश का है न; मातुलनुम् आय्-मामा बना हूँ और; उड् मुन्तै वन्देन्-बहुत पूर्व ही पैदा हुआ हूँ; ईतु उरै चैय्तेन्-यह हितोपदेश किया; अन्तै-मेरे तात; इतन्-(सीतापहरण का) यह (विचार); तविर्क-छोड़ दो; हैन्डान्-कहा । ७५०

वेदनादायी काम-विष तुम पर चढ़ा है । इसलिए तुम तन से और (बुद्धि में भी) क्षीण हो गये हो । इसलिए अनुचित बातें कह रहे हो । सीतापहरण का काम हमारे नाश का काम नहीं हो जायगा ? मैं तुम्हारा मातुल हूँ; बहुत पहले पैदा हुआ, अतः तुमसे बड़ा हूँ । यह जो कहा, वह तुम्हारे हित का ही वचन है । मेरे तात ! इस बुरे विचार को त्याग दो । मारीच ने उसे समझाया । ७५०

अैन्तवुरै	यित्तनैयु	मैत्तनैयु	मैण्णिच्
चौन्तवतै	येशित्त	नरक्कर्पदि	चौन्तान्
अन्तैयुयिर्	शैड्डवतै	यज्जियुडै	हिन्डाय्
उन्तैयोरु	वड्कौरुव	नैन्डुण्णरुहै	नन्डो 751

अैन्त-(मारीच के ऐसा) कहने पर; उरै इत्तनैयुम्-सभी उपदेशों पर; अैत्तनैयुम् अैण्णि-सभी तरह से विचार करके; चौन्तवतै-वक्ता की; एचित्तन्-निन्दा की; अन्तै उयिर् चैड्डवतै-माता के प्राणघातक से; अज्जि उडैकिन्डाय्-डरकर (छिपे) रहते हो; उन्तै-तुमको; ओरुवड्कु ओरुवन् अैन्डु-वीर के मुकाबले में वीर; उणर्कै-समझना; नन्डो-ठीक होगा क्या; अरक्कर् पति-राक्षसपति ने; चौन्तान्-कहा । ७५१

मारीच ने जो बातें कहीं, उन पर रावण ने खूब और सब तरह से विचार किया । पर उसे उनमें कोई सार नहीं लगा और क्रोध ही आया । राक्षसपति ने उपदेशक की निन्दा की । कहा— तुम डरपोक हो ! माता के मारक से डरकर तपस्या का वहाना करते हुए यहाँ छिपे रहते हो ! तुम्हें वीर के समान वीर कहना मान्य कैसे हो सकता है ? । ७५१

तिक्कय	मौळिप्पनिलै	तेवर्हैड	वानम्
पुक्कव	रिरुक्कैबुहै	वित्तुलहम्	यावुम्
शक्कर	नडत्तुमै	योतयर्	दन्डन्
मक्कणलि	हिड्परिडु	नन्डुमदि	यन्डो 752

तिक्कयम् ओळिप्प-दिग्गजों को छिपने को विवश करते हुए; तेवर् निलै कैंट-
देवों को अस्त-व्यस्त करते हुए; वात्तम् पुक्कु-देवलोक में जाकर; अवर् इरुक्क-
पुक्कवित्तु-उनके स्थान को जलाकर धुएँ से भरकर; उलकम् यावुम्-सारे लोकों पर;
चक्करम् नटत्तुम्-आज्ञाचक्र चलानेवाले; अन्नैयो-मुझे क्या; तय्यरत्तन् तन् मक्कळ्-
दशरथ के ढोटे; नलकिर्प्पर-कष्ट देंगे; इतु नन्ऱु मति अन्ऱो-यह बड़ी अच्छी
समझ है न । ७५२

मुझे दशरथ के ढोटे कष्ट देंगे ? मुझे, जिसने दिग्गजों को भयभीत
करके छिपने को विवश किया; जिसने स्वर्गलोक में घुसकर देवों को अस्त-
व्यस्त कर उनके लोक में आग और धुआँ फैला दिया और जो सारे लोकों
पर आज्ञाचक्र चला रहा हूँ, ऐसे मुझे वे त्रास देंगे ? यह तुम्हारी सूझ भी
बड़ी भली रही न ! । ७५२

मूवुलहि	तुक्कुमौरु	नायह	मुडित्तेन्
मेवलर्	किडैक्किन्दिन्	मेलिनिय	दुण्डो
एवल्शैय	हिर्रियैन्	दाणैवळि	यैण्णिक
कावलर्शै	यमैच्चर्कड	नीकडव	दन्ऱे 753

मू उलकिन्तुक्कुम्-तीनों लोकों का; और नायकम् मुडित्तेन्-निर्द्वन्द्व नायकत्व
अपनाया; मेवलर् किडैक्किन्-ऐसे शत्रु मिलेंगे तो; इतन् मेल् इन्नियतु-इससे बढ़कर
सुखद; उण्डो-कोई दूसरा है क्या; कावलर् चैय्-राज्यरक्षणकारी; अमैच्चर् कटन्-
अमात्यों का कर्तव्य; नी कटवतु अन्ऱे-तुम उल्लंघन नहीं कर सकते; अत्ततु आणै
वळि-मेरी आज्ञा के अनुसार; अण्णि-सोचकर; एवल् चैय्किर्ऱि-सेवा करो । ७५३

मैंने तीन लोकों का निर्द्वन्द्व आधिपत्य कर लिया । ऐसे मेरे शत्रु हो
जायँ तो उससे बढ़कर सुखदायी बात क्या हो सकती है ? राज्यरक्षणरत्न
अमात्यों का कर्तव्य राजा का अभिप्राय जानकर तदनुकूल कार्य करना है ।
तुम्हारा काम उसका अतिक्रमण करना नहीं है । मेरी आज्ञा सुनो, उसी
के अनुकूल सोचकर सेवा करो । ७५३

मरुत्तन्नै	यैन्पैरिन्नु	निन्ऱैवडि	वाळाल्
ओरुत्तुमन्न	मुर्ऱुडु	मुडिप्पैत्तीळि	हिल्लेन्
वैरुत्तन्न	किळत्तल्लु	मित्तीळिलै	विट्टेन्
कुरिप्पिन्वळि	निर्ऱियुयिर्	कौण्डुळलि	तैन्ऱान् 754

मरुत्तन्नै अत्त पैरिन्नुम्-इनकार भी करोगे तो; निन्ऱै-तुम्हें; वटि वाळाल्-
तीक्ष्ण तलवार से; ओरुत्तु-मारकर; मन्नम् मुर्ऱुडु-अपना मनमाना; मुडिप्पैत्-
कर लूंगा; ओळिकिल्लेन्-त्यागूंगा नहीं; उयिर् कौण्डु उळलिन्-प्राणसहित रहना
चाहो तो; वैरुत्तन्न-मेरी खीझ के; किळत्तल्लु उळम्-वचन कहने का; इ तीळिलै
विट्टु-यह काम छोड़ो; अन्ऱ कुरिप्पिन् वळि निर्ऱि-मेरी राय का मार्ग चलो;
तैन्ऱान्-कहा । ७५४

तुम इनकार भी करोगे तो क्या होगा ? मैं अपनी तीक्ष्ण तलवार से तुम्हारा काम तमाम कर दूँगा और अपना मनमाना कर लूँगा । यह कार्य विना किये नहीं छोड़ूँगा । इसलिए तुम जीवित फिरना चाहो तो मुझे खिझानेवाले उपदेश देना छोड़ो और मेरी इच्छा के अनुकूल सेवा करो । रावण ने निश्चित रूप से कह दिया । ७५४

अरक्कनः(ह)	दुरैत्तलोडु	मडिन्दन	नडङ्गु	नैञ्जन्
तरक्किनर्	कैडुव	रैन्ऱ	इत्तुव	निलैयिऱ्
शैरक्किनिऱ्	रीरु	मैन्बार्	तम्मिलार्	शैरक्क
उरक्किय	शैम्बो	नुऱ्ऱ	नोर्मैया	नुरैक्क
				लुऱ्ऱान् 755

अरक्कन्-राक्षस के; अ. तु उरैत्तल् ओटुम्-वह बात कहने पर; अडिन्तनन्- (रावण का मन) जाना; अटङ्कु नैञ्जन्-संयत-मन होकर; तरक्किनर् कैडुवर्-घमण्डी नष्ट होंगे; अैन्ऱल्-यह कथन; तत्तुव निलैयिऱ् अन्ऱो-सत्य बनता है न; चैरक्कितिल्-गर्व से; तीरुम् अैन्पार् तम्मिन्-नाश को प्राप्त होंगे, ऐसा जिन्होंने निश्चय किया है उनसे बढ़कर; चैरक्क-गर्वीले शत्रु; आर्-कौन है; अैन्ता-सोचकर; उरक्किय चैम्पोन्-पिघले हुए स्वर्ण; उऱ्ऱ नोर्मैयान्-की स्थिति में जो रहा, वह; उरैक्कल् उऱ्ऱान्-कहने लगा । ७५५

जब राक्षसराज रावण ने यह कहा तो मारीच ने रावण का स्वभाव सोचा और उसका निश्चय जान लिया । इसलिए उसने अपने मन को संयत कर लिया । सोचा—अभिमानि लोग अवश्य नष्ट होंगे । यह कथन सत्य बन गया है ! जो गर्व के कारण अपने को नष्ट कर लेने में तुले हैं, उनका उनसे बढ़कर कोई शत्रु नहीं होता । वह स्वयं अपना नाश कर लेगा । मारीच अब पिघला-स्वर्ण-समान स्वच्छमन हो गया था । वह यों बोला । ७५५

उन्वयि	नुरुदि	नोक्कि	युण्मैयि	नुणर्त्ति	नेन्मऱ्
रैन्वयि	निरुदि	नोक्कि	यच्चत्ता	लिशैत्ते	नल्लेन्
नन्मैयुन्	दीमै	यन्ऱे	नाशम्बन्	दुऱ्ऱ	नाळिल्
पुन्मैयि	निन्ऱ	नोराय्	शैय्वदु	पुहरि	यैन्ऱान् 756

उन् वयिन् उऱ्ऱति नोक्कि-तुम्हारा हित सोचकर; उण्मैयिन् उणर्त्तितेन्-सच्चे दिल से समझाया; मऱ्ऱु-अलावा; अैन् वयिन् इऱ्ऱति-मेरा अन्त; नोक्कि-समझकर; अच्चत्ताल्-डर से; इच्चैत्तेन् अल्लेन्-कहा नहीं; नाचम् वन्तु उऱ्ऱ नाळिल्-जब नाश आता है; नन्मैयुम् तीमै अन्ऱे-भला भी बुरा हो जाता है न; पुन्मैयिन् निन्ऱ नोराय्-नोचकर्मतत्पर रावण; चैय्वतु पुक्कल्ति-मेरा कार्य कहो; अैन्ऱान्-पूछा । ७५६

रावण ! मैंने तुमसे जो कहा वह तुम्हारे भले के लिए ही साफ़ मन के साथ कहा था । अपनी मृत्यु के डर से नहीं कहा था । जब नाश का

दिन आता है तब भला भी बुरा लगता है । हे नीचकार्यतत्पर रावण !
तुम कहो— मैं क्या करूँ ? । ७५६

अँत्रुलु	सँछुन्दु	पुल्लि	येरिय	वैहुळि	नीङ्गिक्
कुन्ऱैन्क्	कुविन्द	तोळाय्	मारवेळ्	कौदिक्कु	मम्बाल्
पौन्ऱलि	लिराम	नम्बाय्	पौन्ऱले	पुहळण्	डन्ऱो
तैन्ऱलैप्	पहैयाच्	चैय्द	शीदैयैत्	तरुदि	यैन्ऱान् 757

अँत्रुलुम्—कहते ही; एरिय वैकुळि नीङ्कि—उठे क्रोध को दूर करके; अँछुन्तु
पुल्लि—उठकर आलिंगन करके; कुन्ऱु अँत कुविन्त तोळाय्—पर्वतोन्नत कन्धों वाले;
मार वेळ्—मारदेव के; कौतिक्कुम् अम्पाल्—सन्तापक अस्त्रों से; पौन्ऱलिन्—मरने
से; इरामन् अम्पाल्—राम-शर से; पौन्ऱले—मरना; पुहळ् उण्टु अन्ऱो—प्रशंसा-
योग्य है न; तैन्ऱलै पकैयाय् चैय्द—मलयपवन को जिसने मेरा शत्रु बना दिया; चीतैयै—
उस सीता को; तरुति—लाओ; अँन्ऱान्—कहा । ७५७

मारीच के ऐसा कहते ही रावण का उमँगा हुआ क्रोध थम गया ।
उसने उठकर मारीच का आलिंगन करके कहा— हे पर्वतोन्नत भुजाओं के
मारीच ! मैं सोचता हूँ कि कामदेव के संतापक शरों से मरने से राम-शर
से मरना अधिक कीर्तिदायक होगा । इसलिए उस सीता को हर लाओ,
जिसने मलयपवन को मेरा शत्रु बना दिया है, और उसे मेरे पास दे
दो । ७५७

राण्डव	तत्तैय	कूऱ	वरक्करो	रिरुव	रोडुम्
ण्डवैन्	मानन्	दीरत्	तण्डहम्	पुक्क	कालैत्
ण्डिय	शरङ्गळ्	पायत्	तुणैवर्पट्	दुरुळ	वज्जि
रीण्डयान्	शैन्ऱु	शैय्युम्	वित्तैयैन्गौल्	विळम्बु	हैन्ऱान् 758

आण्टु—तब; अवन् अत्तैय कूऱ—उसके वह कहने पर; पूण्ट अँन् मात्तम् तीर—
(पहले) प्राप्त अपना अपमान पोंछने के लिए; अरक्कर् ओर् इरुवर् ओटुम्—दो राक्षसों
के साथ; तण्टकम् पुकुन्त कालै—जब दण्डक पहुँचा, तब; तूण्टिय चरङ्कळ् पाय—
उससे प्रेरित वाणों के लगने पर; तुणैवर् पट्टु उरुळ—मेरे साथी अग्रहत हो लोटे और;
वज्जि मीण्ट—डरकर लौट आया; यान्—मैं; चैन्ऱु चैय्युम्—जाकर करूँ ऐसा;
विनै अँन् कौल्—कार्य क्या (रखा) है; विळम्पुक्—कहो; अँन्ऱान्—कहा । ७५८

यह सुनकर मारीच ने कहा कि पहले मैं राम से अपमानित हुआ ।
उस अपमान को पोंछने के हेतु मैं दो-एक राक्षसों को साथ लेकर वहाँ गया
था । राम के शर के लगने से वे दोनों लुढ़क गये । भय से मैं लौट
गया । ऐसे मेरे लिए अब करने को क्या काम रहेगा ? यह तो
बताओ । ७५८

आयव	ननैय	कूऱ	वरक्कर्हो	तैय	नीय्दुन्
तायैया	रयिरुण्	डानैक्	कौल्लयान्	शमैन्दु	निन्ऱेन्
पोयैया	पुणर्प्प	दैन्तै	यैन्बद्दु	पौरुन्दिर्	ऱौन्ऱो
मायैयाल्	वज्जित्	तन्ऱो	वव्वुद	लवळे	यैन्ऱान् 759

आयवन् अतैय कूऱ-उसके ऐसा कहने पर; अरक्कर् कोन्-राक्षसराज; ऐय-श्रेष्ठ पुरुष; नीय्दु-हेय रीति से; उन् तायै-तुम्हारी माता के; आर् उयिर् उण्णटानै-प्यारे प्राणों के घातक को; कौल्ल-मारने के लिए; यान् चमैन्दु निन्ऱेन्-में कृत-संकल्प हैं; पोय् ऐया पुणर्प्पतु अँन्तै-जाकर तात क्या करूँ; अँन्पतु-कहना; पौरुन्तिर्ऱु औन्ऱो-उचित है क्या; अवळे-उसको; मायैयाल् वज्जित्तु-वंचना से धोखा देकर; वव्वुतल् अन्ऱो-हर लाना ही है न; अँन्ऱान्-कहा । ७५६

मारीच के ऐसा कहने पर राक्षसपति रावण ने कहा कि मामा ! मैंने दूढ़ संकल्प कर रखा है कि मैं तुम्हारी माता के, हेयरीति से घातक राम को मार दूँ। तब वहाँ जाकर क्या करूँ —यह पूछना तुम्हारे लिए उचित नहीं लगता। उस सीता को वंचना से हर लाओ —यही करना उचित है न ? ७५९

पुऱत्तित्ति	युरैप्प	दैन्तै	पुरवलन्	ऱेवि	तन्तैत्
तिऱत्तुळि	यन्ऱि	वज्जित्	तैय्दुदल्	शिऱुमैत्	तामाल्
अऱत्तुळ	दौक्कु	मन्ऱे	यमर्त्तलै	वैन्ऱु	कौण्डुन्
मऱत्तुऱै	वळर्त्तित्ति	मन्ऱ	वैन्ऱमा	रीशन्	शौन्ऱान् 760

मन्ऱ-राजा; इति पुऱत्तु उरैप्पतु अँन्तै-अव और कहना क्या है; पुरवलन् तैय तन्तै-(लोक-) रक्षक राम की देवी को; तिऱत्तु उळि अन्ऱि-अपने बल से नहीं; वज्जित्तु अँय्तल्-कपट से प्राप्त करना; चिऱुमैत्तु आम् आल्-नीचता का होगा, इसलिए; अऱत्तुळतु औक्कुम् अन्ऱे-धर्म-सम्मत नहीं होगा न; अमर् तलै वैन्ऱु कौण्डु-युद्ध में (राम को) जीतकर (सीता को) लेकर; उन् मऱ तुरै-अपनी वीरता का गौरव; वळर्त्तित्ति-बड़ा लो; अँन्त-ऐसा; मारीचन् चौन्ऱान्-मारीच ने कहा । ७६०

मारीच को यह हेय लगा। उसने नीति बतायी। राजा ! ऐसा कहोगे तो फिर क्या कहा जाय ? राजाराम की देवी सीता को अपनी वीरता से उठा लाना छोड़कर वंचना से हर लाना चाहते हो ! यह तुम्हारे गौरव को हल्का कर देगा। इसलिए वह धर्मसम्मत नहीं होगा। युद्ध करो, राम को हराओ, सीता को लाओ। अपनी वीरता को बढ़ाओ। ७६०

आनव	तुरैक्क	नक्क	वरक्कर्हो	तवरै	वैल्लत्
तानैदान्	वेण्डु	मोवैन्	ऱडक्कैवा	डक्क	वन्ऱो
एनैय	रिऱक्किर्	ऱानुन्	दमियळा	यिऱक्कु	मन्ऱे
मानव	ळाद	लाले	मायैयिन्	वलित्तु	मैन्ऱान् 761

आतवन्-ऐसे उसके; उरक्क-कहने पर; नक्क-हँसते हुए; अरक्कर् कोन्-
राक्षसाधिपति; अवरै वेल्ल-उसको हराने के लिए; तातै तात् वेण्डुमो-सेना भी चाहिए
क्या; अँन् तट कै वाळ्-मेरे विशाल हाथ का (चन्द्रहास) खड्ग; तक्कु अन्ऱो-
योग्य नहीं है क्या; मातवळ्-वह मनुष्य स्त्री; एतैयर् इक्किन्-(उन दोनों) दूसरों
के मरने पर; तात्तुम् तमियळाय्-स्वयं अकेली बनकर; इक्कुम् अन्ऱे-प्राण त्याग
देगी न; आतलाले-उसी कारण; मायैयिन् वलित्तुम् अँन्ऱान्-माया से ले आयेगे;
अँन्ऱान्-कहा । ७६१

अपने रास्ते पर आये मारीच का कथन सुनकर राक्षसपति रावण
उसकी नासमझी पर हँसते हुए बोला । राम और लक्ष्मण को हराने के
लिए सेना की भी आवश्यकता पड़ेगी क्या ? मेरे विशाल हाथ में जो
चन्द्रहास, तलवार है वह पर्याप्त नहीं होगी क्या ? पर तुमने यह नहीं
सोचा । वे दोनों मर जायँगे तो वह मानवी स्त्री अपने को अकेला समझ
कर प्राण त्याग देगी न ? इसी हेतु कहता हूँ कि उसे माया से हर
लायँगे । ७६१

तेवियैत्	तीण्डा	मुन्त	मिवन्ऱलै	शरत्तिर्	चिन्दिप्
पोवहै	पुणर्प्प	तैन्ऱु	पुन्ऱियाऱ्	पुहल्हिन्	ऱेऱ्कुम्
आवहै	यायिऱ्	ऱिल्लै	यार्विदि	विळैवै	योर्वार
एविय	शैय्द	लल्ला	लिल्लैवे	ऱौन्ऱैन्	ऱैण्णा 762

तेवियै तीण्डा मुन्तम्-देवी को स्पर्श करने से पहले ही; इवन् तलै-इसके सिर;
चरत्तिल् चिन्ति पो वकै-शर से गिराने का उपाय; पुणर्प्पन्-राम कर लेगा;
अँन्ऱ-ऐसा; पुन्ऱियाल् पुक्किन्ऱेऱ्कुम्-बुद्धि से जानकर कहता हूँ, ऐसा मेरा भी;
आ वकै-भला होने का उपाय; आर् इळ् इल्लै-होता नहीं है; विति विळैवै-
विधि का फल; आर् ओर्वार-कौन जान सकता; एविय चैयत् अल्लाल्-
आज्ञा मानने के सिवाय; वेऱ् ओन्ऱ इल्लै-कोई दूसरा रास्ता नहीं; अँन्ऱ अँण्णा-
ऐसा सोचकर । ७६२

मारीच बहुत दुःखी हुआ । यह मूर्ख नहीं जानता कि देवी सीता का
स्पर्श करने के पूर्व ही श्रीराम ऐसा कार्य साध लेंगे कि इसके सिर उनके
शरो से कटकर गिर जायँगे । यह मैं अपने अनुभव और तर्क के आधार
पर कहता हूँ । तो भी मेरा भी भला अब नहीं होता दिखता । विधि
का विधान कौन जाने ? अब मेरे सामने रावण के आज्ञा में कहे अनुसार
करने के सिवा कोई मार्ग नहीं है । ऐसा सोचकर— । ७६२

अँन्ऱमा	मायम्	यानिऱ्	गियऱ्ऱुव	दियम्बु	हँन्ऱान्
पौन्निन्मा	ताहिप्	पुक्कप्	पौन्नेमाल्	पुणर्त्तु	हँन्त
अन्ऱदु	शैय्वै	तैन्ता	मारीश	नमैन्दु	पोन्नान्
मिन्नुवे	लरक्कर्	कोन्तुम्	वेऱौरु	नैऱियिऱ्	पोन्नान् 763

इङ्कु यात् अन्त मा मायम् इयर्त्तुवतु-यहाँ मैं क्या बड़ी माया कहूँ; इयम्पुक्-कहो; अन्तान्-कहा; पौन्तिन् मान् आकि पुक्कु-स्वर्ण-हिरण वनकर वहाँ पहुँचकर; अ पौन्तै-उस स्वर्ण-सुन्दरी को; माल् पुणर्त्तुक्-मोहित कर दो; अन्त-कहा, तब; अन्ततु चैय्वैन् अन्ता-वह कहूँगा, कहकर; मारीचन् अमैन्तु पोत्तान्-मारीच सम्मत होकर गया; मिन्तुम् वेल्-चमकदार भाला के; अरक्कर् कोनुम्-राक्षसराज भी; वेळ् ओरु नैरियिल् पोत्तान्-दूसरे मार्ग से गया । ७६३

मारीच ने रावण से पूछा कि अब मैं क्या बड़ा माया-कार्य कहूँ ? तुम्हीं बताओ । तो रावण ने कहा— तुम स्वर्णमृग वनकर वहाँ जाओ । और उस स्वर्णसुन्दरी सीता को मोह में डाल दो । मारीच ने सम्मत होकर कहा कि हाँ ! वैसा ही कहूँगा । चमकदार भालाधारी रावण भी दूसरे मार्ग से निकल गया । ७६३

ॐ मेनाळवर् विल्वलि कण्डमैयाल्, तानाह निनैन्दु शमैन्दिलनाल्
मानाहुदि यैन्ऱवन् वाळ्वलियाल्, पोत्तान्मन मुगर्ज्य तुम्बुहल्वान् 764

मेल् नाळ्-पहले; अवर विल् वलि-इनके धनु की शक्ति; कण्डमैयाल्-देखी थी, इसलिए; तान् आक-स्वयं; निनैन्तु चमैन्तिलन्-यह उपाय सोचकर तैयार नहीं हुआ; मान् आकुति-मृग बनो; यैन्ऱवन्-यह जिसने कहा, उस रावण की; वाळ्वलियाल्-तलवार की शक्ति से (डरकर); पोत्तान् जो गया उसका; मत्तमुम्-मन और; चैयलुम्-कार्य; पुक्कल्वाम्-बैधानेंगे । ७६४

अब मारीच को राम-धनुष का बल खूब स्मरण रहा । उसने पहले उसका अनुभव किया था । इसलिए वह कदापि स्वयं मृग का रूप लेकर वहाँ जाने को सम्मत नहीं होता । पर रावण की तलवार का वार पड़ने का डर था । उसने कहा कि मृग बनो । इसीलिए वह सहमत हुआ । ऐसे उसका मन कैसा व्याकुल था और कार्य कैसे थे—उसका हम अब वर्णन करेंगे । ७६४

ॐ वैञ्जुर्ऱु निनैत्तुहुम् वीररैवे, उञ्जुर्ऱु मरुक्कुर् माळ्हुळिनीर्
नञ्जुर्ऱुळि मीनिनडुक् कुरुवान्, नैञ्जुर्ऱुदोर् पेर्रि निनैप्परिदाल् 765

वैम् चुर्ऱुम् निनैत्तु-प्यारे बन्धु-बान्धवों की हालत सोचकर; उकुम्-विगलित हुआ; वेळ्-और भी; वीररै अञ्चु उर्ऱु-वीर (श्रीराम और लक्ष्मण से) डरकर; मरुक्कु उरुम्-घबड़ा जाता; आळ् कुळि-गहरे गढ़े का; नीर् नञ्चु उर्ऱुळि-जल जब विषाक्त हो जाता है; मीत्तिन्-तब उसमें रही मछली-जैसा; नटुक्कु उञ्जवान्-छटपटाया; नैञ्चु उर्ऱु ओर् पेर्रि-उसके मन का जो हुआ; निनैप्पु अरितु-वह सोचना भी कठिन है । ७६५

उसका मन अपने भाई-बन्धुओं का भावी नाश सोचकर बहुत व्यग्र हुआ । और भी उन वीरों की वीरता का विचार कर गिड़गिड़ाया । उसकी स्थिति उन मछलियों की-सी थी जो गहरे गढ़े में है और उस गढ़े

का जल विषाक्त हो गया है। वह थर-थर काँपा। उसके मन की व्याकुलता की स्थिति का ज्ञान हमारी मनोशक्ति के अन्दर आनेवाला नहीं है ! । ७६५

अक्कालमुम् वेळ्वियित्तन् इत्तौडर्न्, दैक्कालु नलिन्दुमौ रीरुबैरान्
मुक्कालिन् मुडिन्दिडु वान्मुयल्वान्, पुक्कान विराहवन् वैहुपुनम् 766

अवत्तोडु—उन श्रीराम के साथ; अ वेळ्वियिल् कालम्—उस भाग के समय के; अन्नु तौटर्न्तु—उस दिन से लेकर; अ कालुम् नलिन्दुम्—किसी भी तरह के क्लेश से; ओर् ईडु पेरान्—जो मरकर अन्त नहीं पा सका; मु कालिन्—(वह मारीच) तीसरी बार; मुटिन्तिट्टुवान् मुयल्वान्—मरने को उद्यत होकर; अ इराकवन्—वे राघव; वैकु पुत्तम्—जहाँ रहते थे, उस वन में; पुक्कान्—आ पहुँचा । ७६६

(श्रीराम के साथ इसके पहले दो बार सामना हो गया था। एक बार विश्वामित्र के यज्ञ के अवसर पर हुआ। दूसरी बार वह दो मित्रों के साथ मृग का वेश धारण करके श्रीरामचन्द्र के सामने गया था। श्रीराम के शरों ने उसके दोनों मित्रों का नाश किया। मारीच बचके आ गया। उसका संकेत पद्म-संख्या ७५८ में है; फिर ७६४ में भी है, फिर इस पद्य में भी आता है। आगे ७९३वें पद में भी पाया जायगा।) जिस दिन पहले पहल उसे श्रीराम के साथ संपर्क हुआ था, उस दिन से लेकर वह बहुत क्लेश उठा रहा है। तो भी वह मरा नहीं था। अब उसने निश्चय कर लिया कि मैं तीसरी बार जाऊँगा और मर जाऊँगा। मरने की तैयारी के साथ वह, श्रीराम जहाँ रहे उस वन में आ पहुँचा । ७६६

तन्मानमि लाद तयङ्गौळिशाल्, मिन्मानमु मण्णुम् विळङ्गुवदोर्
पोन्मानुरु वडङ्गौडु पोयिनत्ताल्, नन्माननै याडनै नाडुव्वान् 767

नल् मान् अतैयाळ् तत्तै—उत्तम मृगनिभ उस (देवी) को; नाटु उरुवान्—खोजते हुए; तन् मानम् इलात—अनुपम; तयङ्कु ओळि चाल्—चमकदार कान्ति के साथ; मिन् मातमुम्—विद्युत्सहित आकाश में; मण्णुम्—भू पर; विळङ्कुवतु ओर्—द्युतिमान एक; पोन् मान् उरुवम् कौटु—स्वर्ण-मृग का रूप लेकर; पोयित्तन्—वहाँ गया । ७६७

उत्तम हरिणी-तुल्य सीतादेवी को ढूँढ़ते हुए मारीच एक स्वर्णमृग का रूप धरकर आया। वह अनुपम मृग था। विद्युत् सहित आकाश में या भू पर उससे तुल्य कोई मृग नहीं था । ७६७

कलैमान्मुद लायिन कण्डवैलाम्, अलैमानुरु माशैयिल् वन्दत्तवाल
निलैयामन वञ्जन्ने नेयमिला, विलैमादरुहण् यारुम् विळुन्दत्तवे 768

निलैया मत्तम्—बंचल-मना; वञ्जन्ने—बंचक; नेयम् इला—स्नेहहीन; विलै मातर् कण्—वेश्या पर; यारुम्—सभी कामुक; विळुन्तु अत्तवे—मोह में गिर (पड़) जाते हैं जैसे; कण्ट—उसको जिन्होंने देखा, वे; कलै मान् मुतल् आयित्त—बारहसींगा,

हरिण, मृग आदि; अलं मान् उरुम् आचैयिन्-तरंगों के समान उठनेवाली इच्छा के साथ; वन्तत-उसकी ओर आये । ७६८

उसको देखकर उस वन में रहे सभी वारहसींगे, हरिण, मृग आदि उसकी ओर ऐसे आकृष्ट होकर भागे, जैसे चंचलमना, कपटी और स्नेह-हीन वेश्या के मोह में पड़कर कामुक सभी दौड़ पड़ते हैं । ७६८

ॐ पौय्यामैन वोडु पुरज्जौलनाल्, नैयाविडै नोव नडन्तळाल्
वैदेविदन् वाल्वळै मैनगैयैनुम्, कौय्यामल रान्मलर् कौय्हुव्वान् 769

वैतेवि-वैदेही; तन्-अपने; वाल्वळै-उज्ज्वल कंकणधारी; मैल् कं अँतुम्-कोमल हाथ लपी; कौय्या मलराल्-जिनको तोड़ा नहीं गया, उन कमलसुमन द्वारा; मलर् कौय्कुव्वान्-पुष्प-चयन करने हेतु; पुरम्-अन्य दर्शक; पौय् आम् अँत ओतुम्-जिसका अभाव कहते हैं; चौलित्ताल्-उस कथन के अनुसार; नैया इटै-दुःखी कमर के; नोव-संकट उठाते; नडन्तळ-चलकर गयी । ७६९

तब वैदेही पुष्प-चयन के लिए निकल आयीं । उसके हाथ उज्ज्वल वलय-भूषित और उन कमल-सम सुन्दर थे जो तोड़े नहीं गये थे । उसकी कमर के सम्बन्ध में दूसरे सन्देह करते थे और कहते थे कि इसके कमर नहीं है । वह ऐसी क्षीण कमर को दुःख देती हुई वैसे सुन्दर हाथों से पुष्प-चयन करने के लिए निकल पड़ी । ७६९

उण्डाहिय केट्टै यार्तुयिल्वाय्, अँण्डानु मियैन्दियै यावुरुवम्
कण्डारैन् लाम्वहै कण्डनळाल्, पण्डारु मुडाविडर्प् पाडुरुवाळ् 770

पण्डु आरुम् उडा-इसके पूर्व किसी से अनुभूत; इटर्प्पाटु-संकट; उडवाळ-जिन पर आने को था, उन देवी ने; उण्डाकिय केट्टु उटैयार्-संकटग्रस्त लोगों ने; तुयिल्वाय्-निद्रा में; अँण् तानुम् इयैन्तु इयैया-असंभाव्य; उरुवम् कण्डार्-रूप देख लिया हो; अँतल् आम् वक-ऐसा; कण्टतळ-(मायाभृग को) देखा । ७७०

सीताजी पर संकट आनेवाला था । वह भी ऐसा जैसा किसी पर पहले कभी नहीं आया था । उनकी दृष्टि में वह स्वर्णमृग पड़ा । उन्होंने उसे ऐसे संकटग्रस्त स्वप्नद्रष्टा के समान देखा, जिसे निद्रा में बिल्कुल असंभाव्य कोई अनोखा रूप दिखाई दिया हो । ७७०

काणाविडु कैतव मँरुणराळ्, पेणाद नलङ्गौडु पेणिनळाल्
वाणाळै यिरावणन् माळुदलाल्, वीणाळि लउम्बुवि मेवूदलाल् 771

अ इरावणन्-उस रावण की; वाळ् नाळ्-आयु के दिन; माळुतल् आल्-समाप्त होने को थे; वीळ् नाळ् इल्-जिसका मरण-दिन नहीं होता; अउम्-उस धर्म का; पुवि मेवुतलाल्-भूमि पर उत्थान होने को था, इसलिए; काणा-(देवी ने उसको) देखकर; इतु कैतवम्-यह कैतव है; अँरु उणराळ्-यह न जानकर; पेणात नलम् कोटु-अभूतपूर्व आनन्द मानकर; पेणिनळ-उसको चाहा । ७७१

रावण की आयु को खतम होनी थी। अनश्वर धर्म के भू पर उत्थान का काल आ गया था। इसलिए देवी सीता ने उसको देख लिया। पर उन्हें मालूम नहीं था कि यह कैतव है। अब तक ऐसा आनन्द प्राप्त नहीं था। यह समझकर उन्होंने उसकी चाह की। ७७१

❖ नैर्ऋिप्पिर्ऋं याण्मुत्त नित्ऋिडलुम्, मुर्ऋिप्पीळि कावलित् मुन्दुरुवाळ्
पर्ऋित्तरु हँर्बु नैत्तप्पदैया, वैर्ऋिच्चिलै वीरत्तै मेवित्तळाल् 772

नैर्ऋि पिर्ऋयाळ् मुत्तम्—(चन्द्र-) कला-सम भाल से भूषित देवी के सामने; नित्ऋिटलुम्—हिरण खड़ा हुआ तो; मुर्ऋि पीळि—भरकर बढ़नेवाले; कातलित् मुन्दुरुवाळ्—इच्छा से जाती हुई वह; पर्ऋि तरुक्—पकड़कर दीजिए; अँर्पेत्त—कहूँगी; अँत—सोचकर; पत्तैया—उतावली से; वैर्ऋि चिलै वीरत्तै—विजय कोदण्डपाणी वीर; मेवित्ताळ्—के पास पहुँची। ७७२

वह हरिण चन्द्रललाट सीता के सामने जाकर खड़ा हुआ। तब उनके मन में उसके प्रति अपार राग उत्पन्न हुआ और उमड़ आया। 'मैं जाऊँगी और उनसे कहूँगी कि इसे पकड़कर दीजिए'—ऐसा सोचते हुए वह सवेग विजय-कोदण्ड-पाणी श्रीराम के पास जा पहुँची। ७७२

आणिप्पीत्ति ताहिय दाय्हदिराल्, शेणिर्ऋुडर् हिन्ऋुडु तिण्ऋैविकाल्
माणिक्क मयत्तोरु मानुळदाल्, काणत्तह्मु मैन्ऋत्तळ् कैत्तौळुवाळ् 773

कै तौळुवाळ्—हाथ जोड़े नमस्कार करती हुई; आणि पीत्तिल् आकियतु—उत्तम स्वर्ण-निर्मित; आय् कतिराल्—शरीर की श्रेष्ठ कान्ति के कारण; चेणिल् चुटर्किन्ऋुडु—बहुत दूर तक ज्योतिर्मय दिखनेवाला; तिण् चैवि काल्—बलवान कान और पैर; माणिक्क मयत्तु—माणिक्यमय; और मान् उळुतु—एक हिरण आया है; आल्—जो; काणत्तकुम्—वह देखने योग्य है; अँन्ऋत्तळ्—कहा (सीताजी ने)। ७७३

जाकर उन्होंने श्रीराम से हाथ जोड़कर विनय की। खरे स्वर्ण का बना, अपनी देह की कान्ति के कारण बहुत दूर तक द्युतिमान दिखता हुआ, माणिक्य के पैरों और कानों के साथ एक हिरण आया हुआ है। वह आपसे देखने योग्य है। ७७३

इम्मानि निलत्तित्ति लिल्लैयैना, अँम्मानि दैत्तच्चिर्ऋि दैण्णल्शैयान्
शैम्मानवळ् शौर्ऋौडु तेमलरोन्, अम्मानु मरुत्तिय तायित्तत्ताल् 774

इ मान्—यह मृग; इ निलत्तित् इल्लै—इस भूमि पर (प्राप्य) नहीं; अँता—यह बात; अँ मान् इतु—यह कैसा हरिण; अँत—यह बात; चिर्ऋितु अँणल् चैयान्—कुछ भी नहीं सोचकर; ते मलरोन्—शहद-भरे कमल पर आसीन; अम्मात्तुम्—(ब्रह्मा के) पिता (के अवतार) श्रीराम भी; चैम् मात्तवळ्—सुन्दर (लाल) रंग की सीताजी का; चौल् कौटु—वचन मानकर; अरुत्तियन् आयित्तन्—इच्छुक हुए। ७७४

श्रीराम ने यह सुना। (आश्चर्य है कि) उन्हें यह नहीं सूझा कि

ऐसा मृग अनहोनी वात है । यह भी विचार नहीं आया किं यह कैसा मृग है ? विना किसी सोच-विचार के श्रीराम, जो शहदयुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा के भी विधाता विष्णु के अवतार थे, देवी की वात पर विश्वास करके उसको पकड़ने को इच्छुक हो गये । ७७४

आण्डङ्गिळै योनुरै याडित्तत्ताल्, वेण्डुम्मैत्त लाम्बिळै वत्त्रिदैनाप्
पूण्डुज्जुपी लङ्गोडि पोयदुनाम्, काण्डुम्मैनुम् वळ्ळल् कर्त्तुणर्वान् 775

पूण् तुञ्चु-आभरण-युक्त; पौलन् कौटि-स्वर्ण-लता (सी देवी); पोय् अतु नाम् काण्डुम्-जाकर हम उसे देखें; अतुम्-कहनेवाले का; वळ्ळल् कर्त्तु-उदार प्रभु का मन; उणर्वान्-भाँपकर; इळैयोन्-लघुराज; आण्डु-तब; वेण्डुम् अतल् आम्-चाहनीय; विळैवु अन्नु इतु-चाह के योग्य नहीं है यह; अता-ऐसा सोचकर; अङ्कु-वहाँ; उरै आटित्तन्-वचन कहने लगे । ७७५

‘हे आभरणालंकृता देवी ! हम जाकर देखेंगे’ यह प्रभु ने कहा । पास जो रहे उन लघु भ्राता लक्ष्मण ने श्रीराम का विचार ताड़ लिया । तब उन्होंने सोचा कि यह चाहनीय इच्छा का विषय नहीं । इसलिए वह श्रीराम से निवेदन करने लगे । ७७५

कायङ्गन हम्मणि काल्शैविवाल्, पायुम्मुर् वोडिट्टु पण्वलवाल्
मायम्मैत्त लन्त्रि मत्तक्कोळवे, एयुम्मिडै येयुड वैन्ऱत्तत्ताल् 776

कायम् कतकम्-शरीर स्वर्णमय; काल् चैवि वाल्-पैर, कान और दुम; मणि-माणिक्यमय; पायुम् उरुवोट्टु इतु-चौकड़ी भरनेवाला यह; पण्पु अल आल्-स्वाभाविक नहीं है, इसलिए; मायम् अतल्-माया कहना चाहिए; अन्त्रि-दूसरा; इडै-प्रभु; मत्तम् कौळवे-मानना; ऐयुडवु एयुम्-संशययुक्त होगा; अन्ऱत्तन्-कहा । ७७६

प्रभु ! सोचिए । शरीर स्वर्ण का, पैर, कान और दुम माणिक्य के; ऐसा मृग चौकड़ी भरता है ! यह विल्कुल अप्राकृतिक है ! इसलिए कोई माया ही माननी है ! उसके विपरीत इसको सच्चा मानना संशय-युक्त है । ७७६

निल्लावुल हित्तिलै नेरमैयित्ताल्, वल्लारु मुणर्न्दिलर् मन्नुयिर्दाम्
पल्लायिर कोडि परन्नुळवाल्, इल्लादन विल्लै यिळङ्गुमरा 777

इळम् कुमरा-वाल कुमार; नेरमैयित्ताल् वल्लारुम्-सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी; निल्ला उलकिन् निलै-इस नश्वर जगत का स्वभाव; उणर्न्तिलर्-पूर्ण रूप से नहीं जानते; मन् उयिर् ताम्-अक्षय जीव-जन्तु; पल् आयिरम् कोटि-अनेक सहस्र कोटि; परन्तु उळ आल्-रूप में विस्तृत है; इल्लातत्त इल्लै-असम्भव कुछ नहीं है । ७७७

तब श्रीराम ने गम्भीर विचार व्यक्त किये । वालकुमार ! सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी इस चलनशील ससार का सारा रहस्य नहीं जान पाते ।

अक्षय जीव अनेक सहस्र कोटि रूपों में विपुल रीति से पाये जाते हैं ।
इसलिए असंभाव्य कुछ नहीं है । ७७७

अन्तैर्नृ नितैन्द दिळैत्तुळदाम्, कन्तङ्गळिल् वेरुळ काणुदुमाल्
पोत्तित्तुळिर् मेत्ति पोरुन्दित्तवेळ्, अन्नङ्गळ् पिउन्द द्रिन्दिलैयो 778

अन् अन्तैर्नृ नितैन्दु—क्या समझकर; अतु इळैत्तु उळतु आम्—तुमने ऐसी बात कही थी; कन्तङ्गळिल्—अपने कानों से; वेरु उळ काणुतुम्—कितने ही अपरिचित अन्य पदार्थ देखते हैं (सुनकर जान लेते हैं); पोत्तित्तु—स्वर्णमय; कुळिर् मेत्ति पोरुन्दित्त—मनोरम रूपधर; एळ् अन्तङ्गळ् पिउन्दतु—सात हंस पहले जनित थे; अद्रिन्दिलैयो—नहीं जानते क्या । ७७८

पर पता नहीं कि तुम क्या सोचकर किसके आधार पर यह कह रहे हो । कितने ही पदार्थ हैं, जिनके बारे में हम सुनते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं । (भरद्वाज मुनि के) सात स्वर्णशरीरी हंस (पुत्रों के रूप में) पैदा हुए थे—क्या तुम यह वृत्तान्त नहीं जानते ? । ७७८

मुरैयुमुडि वुम्मिलै मौय्युयिरैन्, रिऱैवन्तिळै योनीडि यम्बिनत्ताल्
परैयुन्दुणै यन्तदु पत्तैरिपोय्, मरैयुम्मेत वेळै वरुन्दित्तळाल् 779

इऱैवन्—(श्रीराम) प्रभु के; मौय्य उयिरै—(इस संसार को) भरनेवाले जीवों की; मुरैयुम् मुटिवुम् इलै—उत्पत्ति का प्रकार और नाश, हम नहीं जानते; अन्तु—ऐसा; इळैयात्तोडु—भाई से; इयम्पित्तु—कहा; एळै—अबला ने; परैयुम् तुणै—वार्तालाप के अन्दर; अन्तुतु—वह; पल् नैऱि पोय्—बहुत दूर जाकर; मरैयुम्—छिप जायगा; अँत—ऐसा; वरुन्दित्तळ—दुःख के साथ बोली । ७७९

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता को समझाया कि यह संसार अक्षय जीव-जन्तुओं से भरे हैं । उन सभी के जन्म-मरण के प्रकार हम नहीं जान सकते । तब देवी ने चिन्ता व्यक्त की कि आप जब तक वार्तालाप में लगे रहेंगे तब तक यह हरिण बहुत दूर चला जायगा और आँखों से ओझल हो जायगा । ७७९

अत्तैयवळ्	करुत्तै	युत्ता	वज्जत्तक्	कुन्ऱ	मन्तान्
पुत्तैयिळै	काट्ट	दैन्ऱु	पोयित्तान्	पोऱाद	शिनदैक्
कत्तैहळर्	रम्बि	पिन्बु	शैन्ऱनन्	कडक्क	वौण्णा
विनैयैत्त	वन्दु	निन्ऱ	मान्दैर्	विळित्त	दन्ऱे 780

अत्तैयवळ् करुत्तै—उनका विचार; उत्ता—सोचकर; अज्जत्त कुन्ऱम् अन्तान्—अंजन-गिरि-तुल्य श्रीराम; पुत्तै इळै—आभरणभूषिता; अतु काट्टु—उसे दिखाओ; अन्तु—कहकर; पोयित्तान्—(देखने) गये; पोऱात्त चिन्तै—अधीर-मन; कत्तै कळल् तम्पि—मुखरित पायलधारी भ्राता लक्ष्मण; पिन् चैन्ऱत्तन्—उनके पीछे गया; कडक्क औण्णा—अलंघ्य; विनै अँत—प्रारब्ध के समान; वन्तु निन्ऱ—जो आकर खड़ा रहा; मान्—उस हरिण ने; अँतिर् विळित्ततु—सामने आकर उन्हें देखा । ७८०

श्रीराम ने देवी का दुःख पहचाना । अंजनगिरि-तुल्य प्रभु श्रीराम ने उनको आभरणभूषित प्यारी देवी, सम्बोधित कर कहा कि दिखाओ । सीता चलीं और श्रीराम भी चले । इसको देखकर मुखरित पायलधारी लक्ष्मण चुप नहीं रह सके । अधीरमन हो वह भी उनके पीछे-पीछे गये । अलंघ्य प्रारब्ध के समान उस मायामृग ने उनके सामने आकर उनको ताका । ७८०

नोक्किय	माने	नोक्कि	नुदियिळ्	मदियि	तीन्ऱुम्
तूक्किल	नन्ऱि	देन्ऱा	नदनवोऱुळ्	शौल्ल	लाहुम्
शेक्कैयि	नरवि	नीङ्गिप्	पिऱन्ददु	तेवर्	शैय्द
पाक्किय	मुडैमै	यन्ऱो	वन्तदु	पळुदु	पोमो 781

नोक्किय माने—जो ताक रहा था, उस हरिण को; नोक्कि—देखकर; नुति इळै मतियिन्—अपनी सूक्ष्म बुद्धि से; औन्ऱुम् तूक्किलन्—श्रीराम ने कुछ तर्क नहीं किया; इतु नन्ऱु—यह बड़ा अच्छा है; अन्ऱान्—कहा; अतन् पोऱुळ् चोऱुल्ल आकुम्—उसका (गूढ़) अर्थ हम कहेंगे; अरवु चेक्कैयिन्—शेष-शय्या से; नीङ्कि—अलग आकर; पिऱन्ततु—भू पर अवतार लेना; तेवर् चैय्त—देवों के कृत; पाक्कियम् उडैमै अन्ऱो—पुण्य से प्राप्त फल है न; अन्ततु—वह; पळुतु पोमो—व्यर्थ जायगा क्या । ७८१

श्रीराम ने उस हरिण को देखा जो उनको ताक रहा था । उन्होंने कोई तर्क-वितर्क नहीं किया । कहा कि शाबाश ! यह बहुत अच्छा है ! इसका गूढ़ अर्थ क्या है ? —हम कहें ? वे शेषशय्या त्यागकर भूमि पर अवतरित हुए —यह देवों के पुण्य का फल था । वह वृथा जायगा क्या ? 'अच्छा' का संकेत उनके पुण्य की ओर है । ७८१

अँन्तीक्कु	मँन्	लाहु	मिळैयव	विदन्	नोक्काय्
तन्तीक्कु	मँन्ब	दल्लाऱ्	रन्नेयोक्कु	मुवमै	युण्डो
पन्तक्क	तरळ	मोक्कुम्	पशुम्बुन्मेऱ्	पडरु	मँन्ना
मिन्तीक्कुज्	जैम्बोन्	मेनि	वैळ्ळियिन्	विळङ्गुम्	बुळ्ळि 782

इळैयव—अनुज भैया; इतन् नोक्काय्—इस पर दृष्टि डालो; अँन् ओक्कुम्—किसके समान है; अँन्तल् आकुम्—कहा जा सकता है; तन् ओक्कुम्—स्वोपम है; अँन्पतु अल्लाल्—इसके सिवा; तन् ओक्कुम्—उससे तुल्य; उवमै उण्टो—उपमा होगी क्या; पल्—दाँत; नक्क तरळम् ओक्कुम्—उज्ज्वल मोती के समान हैं; पचुम् पुल् मेल् पटर्म्—(जो) हरी घास पर लगती है, वह; मँल् ना—मृदु जीभ; मिन् ओक्कुम्—विद्युत के समान है; मेनि चैम् पोन्—शरीर लाल (खरा) सोना है; पुळ्ळि—विदियों; वैळ्ळियिन् विळङ्गुम्—चाँदी के समान प्रकाशमान हैं । ७८२

श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा । अनुज ! इसको खूब देखो । इसकी तुलना में क्या कहा जा सकता है ? यह स्वोपम है । यही कहना पड़ेगा ।

इसके सिवाय कोई उपमा ढूँढ़े नहीं मिलेगी । इसके दाँत उज्ज्वल मोती के समान हैं । जब इसकी जीभ हरी घास पर लगती है, तब वह बिजली के समान चमकती है ! इसका शरीर लाल (खरा) स्वर्ण है और बिंदियाँ चाँदी-सी हैं । ७८२

वरिशिलै	मरैव	लोत्ते	मान्निदन्	वडिवै	युरुर
अरिवैयर्	मैन्दर्	यारे	यादरङ्	गूरह	लादार्
उरुहिय	मत्तत	वाहि	यूरवत्त	परप्प	यावुम्
विरिशुडर्	विळक्कड्	गण्ड	विट्टिलिन्	वोळ्व	काणाय् 783

वरि चिलै मरैवलोत्ते-सबन्ध-धनु-विद्या-विशारद; मान् इतन्-इस मृग का; वडिवै उरुर-रूप जिसने देखा; अरिवैयर्-वह स्त्री; मैन्तर्-या पुरुष; यारे आतरम् कूरकलातार्-कौन इस पर आसक्त नहीं होगा; ऊर्व-रेंगनेवाले; परप्प-उड़नेवाले; यावुम्-सभी जन्तु; उरुकिय मत्तत आकि-द्रवितमन होकर; विरि चूटर् विळक्कम् कण्ट-विस्तारशील प्रकाशमय दीप को देखकर; विट्टिलिन्-पतंग जैसे; वोळ्वत्त-टूट पड़ते हैं; काणाय्-देखो । ७८३

सबन्ध धनु के प्रयोग में निष्णात लक्ष्मण ! इस हरिन को जो देखेगा, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, कौन ऐसा होगा जो इसके प्रति आसक्त नहीं होगा ? रेंगनेवाले, उड़नेवाले सभी जीव-जन्तु इसके आकर्षण से द्रवीभूतमन होकर प्रकाशमय दीप पर गिरनेवाले पतंग के समान इसकी तरफ़ टूट पड़ते हैं । देखो । ७८३

आरिय	तनैय	कूर	वन्नदु	तन्नै	नोक्किच्
चौरिय	दन्निर	दन्नू	शिन्दैयिर्	रैळिन्द	तम्बि
कारिय	मैन्नै	यीण्डुक्	कण्डदु	कत्तह	मानैल्
वेरियन्	दैरियल्	वीर	मीळ्वते	मेन्मै	यैन्त्रान् 784

आरियन् अनैय कूर-आर्य श्रीराम के वह कहने पर; अन्नत्तु तन्नै-उस हिरण को; नोक्कि-खूब देखकर; चिन्नैयिल्-मन में; तैळिन्त तम्पि-स्पष्ट जानकर रामानुज ने; वेरि अम् तैरियल् वीर-सुगन्ध और सुन्दरता से भरी मालाधारी वीर; ईण्डु कण्टु कत्तक मान् एल्-यहाँ दुष्ट स्वर्ण-मृग ही हो तो; कारियम् अन्नै-उससे हमारा कार्य क्या है; मीळ्वते मेन्मै-लौट जाना ही श्रेय है; यैन्त्रान्-कहा । ७८४

जब आर्य श्रीराम ने यह कहा, तब लक्ष्मण, जिनके मन में स्पष्ट निश्चय था, बोले । सुगन्धित और आकर्षक मालाधारी वीर ! मान लें कि यह कनकमृग है । तो हमारा उससे क्या काम है ? चलिए लौट जाना ही श्रेयस्कर होगा । ७८४

अरुरवन्	पहरा	मुत्त	मळहतै	यळहि	याळम्
कौरवन्	मैन्द	मरुरैक्	कुळैवुडै	युळैयै	वल्लै

पर्रित्तै तरुदि यायिर् पदियिडै यवदि यैय्दप्
 पैरुळि यिनिदुण् डाडप् पैरुकरुन् दहैत्त दैन्ऱाळ् 785

अरु अवन् पकरा मुत्तम्-वैसा उनके कहने के पूर्व ही; अळकनै-सुन्दरराज श्रीराम को; अळकियाळुम्-अनिन्द्य सुन्दरी देवी सीता ने भी; कोरुवन् मैन्त-चक्रवर्तीतनय; कुळैवु उटै-थकनयुक्त (या लचीले); इ उळैयै-इस मृग को; वज्रलै-शीघ्र; पर्रित्तै तरुदि आयिल्-पकड़कर देगे तो; अवति अय्त्त पैरुळ-वनवास की अवधि पूरा करके; पति इटै-अपने नगर में; इनिनु उण्ऱाट-सुख से खेलने के लिए; पैरुर्कु अरुम्-अलभ्य; तकैत्ततु-श्रेष्ठतायुक्त है; अैन्ऱाळ्-कहा । ७८५

जब लक्ष्मण यह बात कह रहे थे, तब सुन्दरी सीतादेवी ने सुन्दर श्रीराम से विनय सुनायी । चक्रवर्तीकुमार ! यह थकित है (या लचीला है) । अभी इस हरिण को पकड़कर दीजिए । तो वनवास की अवधि पूरा करके अयोध्या में ले जाऊँगी और उसके साथ खेलूँगी । यह दुर्लभ श्रेष्ठ वस्तु होगी । ७८५

ऐयनुण् मरुङ्गु नङ्गै यः(ह्)दुरै शैय्य वैयन्
 शैय्वेन् र्ऱमैय नोक्कत् तैळिवुडैत् तम्वि शैप्पुम्
 वैय्यवल् लरक्कर् वज्रजम् विरुम्बितार् वित्तैयिर् चैय्द
 कैदव मानैन् रण्णल् काणुदि कडैयि नैन्ऱान् 786

ऐय नुण्-बहुत ही पतली; मरुङ्कुल् नङ्कै-कमर की नायिका के; अःतु उरै चैय्य-वह कहने पर; चैय्वन् अैन्ऱ-कलंगा, ऐसा कहकर; ऐयन्-प्रभु के; अमैय नोक्क- (उस मृग को) खूब देखने पर; तैळिवु उटै-स्पष्टचित्र; तम्पि चैप्पुम्-अनुज ने कहा; अण्णत्-महिमावान; वज्रवम् विरुम्पितार्-बंवना करने के इच्छुक; वैय्य वल् अरक्कर्-कठोर वली राक्षसों के; वित्तैयिल् चैय्त्त-कार्य से आया; कैतवम् मान्-मायामृग है; अैन्ऱ-ऐसा; कडैयिन् काणुति-अन्त में देखेंगे; अैन्ऱान्-कहा । ७८६

जब अति क्षीण-कटि नायिका ने यह इच्छा सुनायी, तब श्रीराम ने उत्तर दिया कि ठीक, वही कहूँगा । वे मृग को देखने लगे । तब लक्ष्मण, जिनके मन में कोई संशय नहीं था, बोले । महात्मा ! यह मायावी, कठोर और बलवान राक्षसों के मायाकार्य से आया हुआ मायामृग है । यह आप आखिर देख लेंगे । ७८६

मायमेन् मडियु मैन्ऱन् वाळियिन् मडिन्द पोदु
 काय्शिनत् तवरैक् कोन्ऱु कडन्गळित् तोमु मादुम्
 तूयदेर् पर्रिक् कोडुन् जौल्लिय विरण्डि नौन्ऱु
 एयदे पुरिदु मैन्ऱा तिमैयव रिडुक्कण् डीरप्पान् 787

इमैयवर् इटुक्कण तीरप्पान्-देवों के संकटहारी ने; मायमेल्-माया हो तो; अैन् तन् वाळियिन्-मेरे अस्त्र से; मडियुम्-यह मरेगा; मडिन्त पोतु-जब मरेगा,

तब; काय चित्तत्तु अवरै-सन्तापक कोप से युक्त उन (राक्षसों) को; कौन्-मारकर; कटन् कळित्तोमुम्-कृतकृत्य भी; आतुम्-होगे; तूयतेल्-(वह मृग) सच्चा रहा तो; पड्डि कोटुम्-पकड़कर लायेंगे; चौल्लिय इरण्टिन् औन्-उक्त दो में एक; एयतु ए-उचित जो है वही; पुरितुम्-करेंगे; अँन्-बोले । ७८७

देवसंकटहरणार्थ अवतरित श्रीराम ने आश्वासन दिया । अगर यह मायामृग सावित हुआ तो यह मेरे शर से मरेगा । जब वह मरेगा तो सन्तापी व क्रोधी राक्षसों को मारने का हमारा प्रण भी पूरा होगा । अगर इसके विपरीत वह सच्चा मृग है तो पकड़कर लायेंगे । उक्त इन दो में एक, जो उचित होगा वह काम करेंगे । ७८७

पिन्निन्ना	रँनैय	रँन्	मुणर्हिल्लम्	बिडित्त	मायम्
अँन्नेन्	देरिद	रेर्राम्	यावदी	देन्	मोराम्
मुन्निन्	मुरेयि	निन्ना	मुनिन्दुळ	वेट्ट	मुर्ल
पौन्निन्	वयिरत्	तोळाय्	पुहळुडैत्	तामन्	रँन्ना 788

पौन् निन्ना वयिरम् तोळाय्-सौन्दर्य-निलय वज्रस्कन्ध; पिन् निन्ना-इसके पीछे हैं; अँनैय-कौन; अँन् उणर्किल्लम्-यह भी नहीं जानते; पिडित्त मायम् अँन्-संकल्पित मायाकार्य क्या है; अँन्-यह भी; तळित्त तेर्राम्-स्पष्ट नहीं जानते; ईतु यावतु-यह (मृग) क्या है; अँन् ओराम्-यह भी नहीं समझ पाते; मुन् निन्ना-प्राचीन; मुरेयिन् निन्ना-नीतिमार्ग पर स्थित बड़े लोग; मुनिन्दु उळ-जिसको धिक्कारते हैं; वेट्टम् मुर्ल-वह मृगया-कर्म; पुकळ् उटैत्तु आम् अँन्-श्लाघनीय कार्य नहीं है; अँन्ना-कहा । ७८८

तब लक्ष्मण ने तर्क किया । सौन्दर्य-(विजय श्री-) निलय वज्रस्कन्ध ! हम यह नहीं जानते कि इसके पीछे कैसे, कितने शत्रु हैं ? उनके मन में क्या वंचना है ? —यह भी नहीं जानते । यह मृग भी सचमुच क्या है —यह भी विदित नहीं । हमारे लिए मृगया भी श्रेयस्कर नहीं है, क्योंकि प्राचीन धर्मावलम्बी बड़ों ने उसे धिक्कारा है । ७८८

पहैयुडै	यरक्क	रँन्	पलरँन्	बयिलु	मायम्
मिहैयुडैत्	तँन्	पूण्ड	विरदत्तै	विडुडु	मँन्नाल्
नहैयुडैत्	ताहु	मन्ने	यादलि	नलने	यन्तत्
तहैयुडैत्	तम्बिक्	कन्नाट्	चदुमुहन्	रादै	शौन्नान् 789

पकै उटै अरक्कर् अँन्-शत्रु राक्षस, यह बात; पलर् अँन्-वे अनेक हैं, यह बात; पयिलुम् मायम्-उनका मायाकार्य; मिकै उटैत्तु-अत्यधिक है; अँन्-यह बात कहना; पूण्ड विरदत्तै-संकल्पित व्रत को; विडुम् अँन्-छोड़ देंगे, यह कहना होगा; नकै उटैत्तु आकुम् अँन्-वह परिहास का विषय होगा न; आतलित्त-इसलिए; नलने-(मेरा निश्चय) अच्छा ही है; अँन्-ऐसा; अ नाळ्-तब; चतुमुक्त् तातै-चतुर्मुख के धाता ने; चौन्ना-कहा । ७८९

तव चतुर्मुख ब्रह्मा के धाता श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि ये शत्रु राक्षस हैं, वे अनेक हैं, अत्यन्त मायावी हैं—यह सब कहने का अर्थ यही होगा कि हम अपनाये गये व्रत से अलग हटते हैं। वह परिहसनीय बात होगी न ? इसलिए यही, यानी मायामृग हो तो मारना, सच्चा मृग हो तो पकड़ लाना, अच्छा होगा। ७८९

ॐ अडुत्तवु मॅण्णिच् चैय्द लण्णले यमैदि यन्त्रो
विडुत्तिदत् पित्तित् रारहळ् पलळ् रॅन्निनुम् विल्लाल्
तौडुत्तुवैम् बहळि तूवित् तौडर्न्दनैन् विरैन्दु शेन्नु
पडुक्कुवै तदुवन् राहिर् पड्रिनन् कौणर्वै नैन्नान् 790

अण्णले—महात्मा; अडुत्तवुम् अॅण्णि चैय्तल्—आगत कार्य भी विचारकर करना; अमैति अन्त्रो—उचित है न; विडुत्तु—(इसको) भेजकर; इतन् पित्तिन् रारक्ळ्—इसके पीछे जो हैं; पलर् उळर् अॅत्तिनुम्—अनेक होंगे तो भी; वैम् पळि—भयंकर शरों को; विल्लाल् तौडुत्तु—धनु में संधान करके; तूवि—चलाकर; तौडर्न्दनैन्—अनुगमन करता हुआ; विरैन्दु चैन्नु—त्वरित गति में जाकर; पडुक्कुवैन्—मार दूंगा; अन्नु अन्नु आकिल्—वह (मायामृग) नहीं हो तो; पड्रित्तन् कौणर्वैन्—पकड़कर लाऊंगा; अैन्नान्—कहा। ७९०

लक्ष्मण ने तब दूसरी बात कही। महात्मन् ! निश्चित कार्य भी सोच-विचारकर करना उचित होगा न ? इसको आगे भेजकर आड़ में जो खड़े हैं, उनकी संख्या बहुत बड़ी हो तो भी मैं अपने धनुष से शर चलाकर उन्हें मार दूंगा। अगर ऐसी बात नहीं है और यह सच्चा मृग है तो मैं पकड़ लाऊंगा। मुझे जाने दीजिए। ७९०

ॐ आयिडै यन्त्र मन्ना लमुदुहुत् तनैय शैय्य
वायिडै मळलै यिन्शौर् किळियिन्नुड् गुळरि माळ्हि
नायह नीये पड्रि नल्हलै पोलु मॅन्नाच्
चेयरिक् कुवळै मुत्तम् जिन्नुबु शौरिप् पोन्नाळ् 791

अ इटै—उस समय; अन्तम् अन्नाळ्—हंसिनी-सी सीतादेवी; माळ्कि—व्याकुल होकर; अमुत्तु उकुत्तु अतैय—अमृत रिसती हो जैसा; चैय्य वाय् इटै—लाल मुख से; मळलै इन् चोल्—अस्पष्ट मधुर बोली में; किळियित्तिल् कुळरि—शुक के समान तुतलाती हुई; नायक—नाथ; नीये पड्रि—आप ही पकड़कर; नल्हलै पोलुम्—नहीं देंगे क्या; अैन्ना—कहकर; चैय् अरि—लाल रेखाओं से युक्त; कुवळै—कुवलय-पुष्पों (आँखों) से; मुत्तम् चिन्नुपु—मोती (अश्रु) गिराते हुए; चीः पोन्नाळ्—रोष के साथ चलीं। ७९१

तभी हंसिनी-सी सीताजी ने दुःखाक्रान्त होकर अपना लाल मुख खोल कर अमृत रिसती-सी तुतलाती बोली में पूछा कि नाथ ! क्या आप उसे

पकड़कर नहीं देंगे ? फिर लाल डोरों से युक्त कुवलय-सम आँखों से अश्रुकण गिराती हुई वह रोष के साथ वहाँ से चलीं । ७९१

❖ पोतवळ् पुलवि नोक्किप् पुरवलन् पौलत्तर्गौ डाराय्
मान्तिडु नात्ते पड्डि वल्लैयिन् वरुवै नीयिक्
कानियन् मयिलन् नाळैक् कात्तत्तै यिरुत्ति यैत्तन्ना
वेत्तहु शरमुम् विल्लुम् वाङ्गिनन् विरैय लुट्टान् 792

पोतवळ्-गमनशील उनका; पुलवि नोक्कि-रोष देखकर; पुरवलन्-लोक-
रक्षक श्रीराम ने; पौलत्तर्गौ ताराय्-सुन्दर मालाधारी; मान् इतु-यह हरिण;
नात्ते पड्डि-मैं ही जाकर पकड़कर; वल्लैयिल्-शीघ्र; वरुवेत्त-आऊँगा; नी-
तुम; इ कात्त इयल् मयिल् अत्ताळै-इस वनमयूरनिभ देवी को; कात्तत्तै इरुत्ति-
रक्षा करते रहो; यैत्तन्ना-कहकर; वेल् नकु चरमुम्-शक्ति-सम शर और;
विल्लुम्-धनु को; वाङ्गित्तन्-ग्रहण करके; विरैयल् उट्टान्-शीघ्र जाने लगे । ७९२

लोकरक्षक श्रीराम ने गमनशील सीताजी का रोष देखा । उन्होंने
झट लक्ष्मण से कहा— सुन्दर मालाधारी ! इस मृग को मैं ही जाकर पकड़
लाऊँगा । तब तक वन-मयूरनिभ सीता की रक्षा करते रहो । फिर वे
शक्तिसदृश शर और धनुष लेकर सवेग जाने लगे । ७९२

❖ मुत्तमु मात्ताय् वन्द मूवरि लौरवन् पोत्तान्
अत्तन्मा रीश तैत्तरे ययिरुत्तत्तै निदत्तै यैया
इत्तन्मुड् गाण्डि वाळि येहैत्त विरुहै कूपपिप्
पौत्तत्ताळ् पुक्क शालै कात्तत्तन् पुरत्तु नित्तान् 793

ऐया-प्रभु; वाळि-चिरजीव रहिए; मुत्तमुम् मात्ताय् वन्त-पहले भी हरिणों
के रूप में आये हुए; मूवरिल्-तीन में; लौरवन् पोत्तान्-एक बचकर चला गया;
अत्तन् मारीचन् अत्तरे-वही मारीच, ऐसा; इत्तै अयिरुत्तत्तै-इस पर संदेह करता हूँ;
इत्तन्मुम् काण्टि-आप भी जान लेंगे; एकु अत्त-चलिए, ऐसा कहकर; इरु के
कूपपि-अपने दोनों हाथ जोड़कर; पौत्त अत्ताळ् पुक्क चालै-स्वर्ण-सी सुन्दरी सीता-
देवी जिसमें प्रविष्ट हुई, उस पर्णशाला के; पुरत्तु-बाहर; कात्तत्तन्-रक्षण करते
हुए; नित्तान्-खड़े रहे । ७९३

उस समय भी लक्ष्मण ने सचेत किया । प्रभु ! जय हो आपकी !
चिरजीव रहें । पहले तीन हरिण आये थे । उनमें दो मरे; एक बचकर
भाग गया । यह वही (बचा) मारीच है —ऐसा सन्देह करता हूँ । आप
भी यह सत्य जान लेंगे; जाइए । फिर वे दोनों हाथ जोड़कर स्वर्ण-सम
सुन्दरी सीता जिस पर्णशाला में प्रविष्ट हुई थी, उसके बाहर जाकर द्वार
पर पहरेदार के रूप में खड़े रह गये । ७९३

❖ मन्दिरत् तिळैयोन् शौन्न वाय्मौळि मन्तत्तुट् कौळ्ळान्
 शन्दिरर् कुवमै शान्न् वदन्तत्ताळ् शलत्तै नोक्किच्
 चिन्दुरप् पवळच् चैव्वाय् मुरुवलन् शिहरच् चैव्विच्
 चुन्दरत् तोळि नानम् मानिनैत् तौडर् लुङ्गान् 794

चिकर चैव्वि-शिखर-सम श्रेष्ठ; चुन्तर तोळितान्-और सुन्दर मुजाओं से युक्त श्रीराम ने; मन्तिरित्तु इळैयोन्-मंत्रणा में छोटे भाई के कहे; वाय् मौळि-सत्य वचन को; मन्तत्तु उळ् कौळ्ळान्-मन में नहीं लिया; चन्तिरर्कु उवमै चान्न्-चन्द्र से उपमेय; वतन्तत्ताळ्-आनन की सीतादेवी के; चलत्तै नोक्कि-रोष का स्मरण कर; चिन्दुरम्-लाल; पवळ-प्रवाल से; चैम् वाय्-लाल अधर पर; मुरुवलन्-मुस्कुराहट दिखाते हुए; अ मानितै-उस हरिण का; तौडर् उङ्गान्-पीछा करने लगे । ७६४

पर्वतशिखरों के समान कन्धों से युक्त श्रीराम ने अच्छे सलाहकार अपने छोटे भाई का वचन स्मरण नहीं किया । पर उन्हें चन्द्रानना सीताजी का कोप ही स्मरण आया । सिन्दूर-सम लाल अधर पर हँसी प्रकट करते हुए वे मृग का पीछा करने लगे । ७९४

❖ मिदित्तुदु मैल्ल मैल्ल वैरित्तुदु वैरुवि मीदिल्
 कुदित्तुदु शैवियै नोदटिक् कुरवद मुरत्तैक् कूट्टि
 उदित्तैळ् मूदै युळ्ळ मन्त्रिवै युरुवच् चैल्लुम्
 गदिक्कौरु कल्वि वेरे काट्टुव दौत्त दत्तरे 795

मैल्ल मैल्ल मितित्तु-उस मृग ने पहले धीरे-धीरे डग भरे; वैरित्तु-दुकर-दुकर ताका; वैरुवि-भयातुर-सा; मीदिल् कुदित्तु-ऊपर उछला; शैवियै नोदटि-कानों को तानकर; कुरवद-खुरों को; उरत्तै कूट्टि-छाती से लगाकर; उदित्तु अँळुम् ऊतै-उठकर ऊपर बहनेवाली हवा और; उळ्ळम् अँत्तु-इवै-मन आदि इनको; उरुव चैल्लुम्-जो भेदकर चलते हैं; कतिक्कु-गति में; और कल्वि वेरे-एक नया पाठ; काट्टियु-सिखाता हो; औत्तु-ऐसा (भागा) । ७६५

उस हरिण ने पहले धीरे-धीरे डग भरे । कुछ देर खड़ा होकर ताका । फिर वह डरा हुआ-सा आकाश में उछला । कान खड़े करके खुरसहित पैरों को छाती से लगाकर वह इतनी तीव्रगति से दौड़ा कि बहती हवा और उड़ता मन भी उससे उस विषय में शिक्षा ग्रहण कर ले ! । ७९५

नोदटिन्ना नुलह मून्ऱु निन्ऱैडुत् तळन्द् पादम्
 मीदट्टन्दा नोदटर् कम्मा वैरुमो रण्ड मुण्डो
 ओदटिन्ना रौडर्न्द् दैन्तै यौळिवर निरैन्द् तन्मै
 काट्टिन्ना नन्ऱु शौन्ऱु कडुमैयर् कणिक्कर् पालार् 796

निन्ऱु अँटु- (त्रिविक्रमावतार के संदर्भ में) स्थित होकर फिर उठाकर; मून्ऱु उलकम्-तीनों लोकों को; अळन्त पातम्-जिनसे नापा, उन चरणों को;

नीट्टितान्—(श्रीराम ने) बढ़ाया; मीट्टुम् नीट्टुक्—फिर से पैर बढ़ाने (नापने) के लिए; वेरुम् ओर् अण्टम् उण्टो—अन्य अण्ड भी है क्या; तौट्टन्तु ओट्टितान् अन्तै—फिर पीछे लगे दौड़े क्यों; ओळिवु अरु—अखण्ड; निरैन्त तन्मै—सर्वव्यापी भाव को; काट्टितान्—दरसाया; अत्तु चैत्तु कट्टुमैयै—उस दिन को उनकी गति की तीव्रता को; आर् कणिक्कड् पालार्—कौन नापने में समर्थ है । ७६६

श्रीराम अपने पैरों को बढ़ाकर उसके पीछे सर्वत्र दौड़े । उन्हीं चरणों ने त्रिविक्रमावतार के सन्दर्भ में तीनों लोकों को नापा था । कवि पूछते हैं कि अब नापने के लिए कौन सा अण्ड है कि वे चरण इस तरह बढ़ते हैं ? उत्तर वे ही देते हैं कि सो बात नहीं । बल्कि वे अपने सर्वव्यापिता को दरसाने के लिए इस तरह सर्वत्र चलते हैं । उनकी तीव्र गति ऐसी थी कि यही मालूम होता था कि वे सर्वत्र हैं । तो उनकी गति का माप कौन कर सकेगा ? । ७९६

कुत्त्रिडै	यिवरु	मेहक्	कुळुविडैक्	कुदिक्कुड्	गूडच्
चैत्त्रिडि	लहलुन्	दाळिर्	रीण्डलान्	दन्मैत्	ताहुम्
निन्त्रदे	पोल	नीड्गु	निदिवळि	नेय	नीट्टु
मन्त्रलड्	गोदै	मादर्	मन्नमैन्त	तहैयत्	तम्मान् 797

अ मान्—वह मृग; कुत्तु इट्टे इवरुम्—पर्वत पर चढ़ता; मेक् कुळु इट्टे कुतिक्कुम्—मेघसमूह के मध्य कूदता; कूट चैत्त्रिडिल्—पास गये तो; अकलुम्—दूर हट जाता; ताळिल्—देर करें तो; तीण्डल् आम् तन्मैत्तु आकुम्—स्पर्श किया जा सके, ऐसी स्थिति में रहता; निन्त्रदे पोल—जैसे खड़ा था वैसे ही; नीड्कुम्—हट जाता; निति वळि—धन के मार्ग में; नेयम् नीट्टुम्—प्रेम बढ़ानेवाली; मन्त्रल् अम् कोतै—सुगन्धित सुन्दर मालाधारिणी; मातर् मन्नम् अन्त—(वार-)नारियों के मन ही; तक्कैयत्तु—के समान रहा । ७६७

वह हरिण पर्वतों पर चढ़ता; मेघसमूहमध्य कूदता । पास जाओ तो दूर भाग जाता । ठहर जाओ तो इतना पास आकर खड़ा रहता कि हाथ में आ जाय ! पर वैसे ही वह हट जाता । वह उन वेश्याओं के मन के समान रहा, जो धन की दिशा में अपना मन बढ़ाती हैं ! । ७९७

कायम्वे	राहिच्	चैय्युड्	गरुमम्वे	रायिर्	रन्त्रे
एयुमे	यैन्तिन्	मुत्तन्	मैण्णमे	यिळवर्	कुण्डे
आयुर्मेय्	यरन्तिलाद	वरक्करा	तवर्हळ्	शैय्द	
मायमे	याय	देयान्	वरुन्दिय	दैन्त्रान्	वळळल् 798

कायम् वेरु आकि—रूप ही अस्वाभाविक रहा; गरुमम् वेरु आयिर्—कार्य विपरीत दूसरा रहा; अन्त्रो—न; अन्तिन्—तो; एयुमे—उचित है क्या; मुत्तम्—पहले ही; अण्णमे—यही विचार; इळवर्कु उण्टे—अनुज का रहा; यान् वरुन्तियत्तु—मैंने जो कष्ट उठाया; आयुम् मेय् अन्तु इलात्—विवेकशील सत्य और धर्म से

रहित; अरक्कर् आतवर् चैयत्-राक्षसों के किये हुए; मायमे आयते-कपट ही बना; अन्नान्-कहा; वळ्ळल्-प्रभु ने । ७६८

अब श्रीराम पछताने लगे । इसका शरीर कुछ है और काम उससे भिन्न ! यह रूप और कार्य में कोई सम्बन्ध नहीं दिखता । यह अनुज लक्ष्मण पहले ही जानता था । मुझे इतना कष्ट उठाना पड़ रहा है, इसलिए कि विवेकशील सत्य और धर्म से रहित राक्षसों की माया मैंने नहीं जानी ! —प्रभु आप से आप बोले । ७९८

ॐ पङ्क् वात्तिनि यल्लन् पहळियाल्, शैङ्क् वानिर् चैलुत्तलुर् रानेन
मङ्क् माय वरक्कन् मत्तक्कोळा, उङ्क् वेहत्ति नुम्वरि त्तोङ्गिनान् 799

अ माय अरक्कन्-वह मायावी राक्षस; इति पङ्क्वान् अल्लन्-अब मुझे नहीं पकड़ेगा; पळियाल् चैङ्क्-अस्त्र से मारकर; वात्ति चैलुत्तल् उङ्क्-स्वर्ग पहुँचा देगा; अँत-ऐसा; मत्तम् कोळा-मन में सोचकर; उङ्क् वेहत्तिन्-शक्ति-भर वेग के साथ; उम्परिन् आङ्कितान्-आकाश में उछल उठा । ७६६

मारीच ने श्रीराम के मन की गति जान ली । उसने धारणा कर ली कि अब श्रीराम मुझे नहीं पकड़ेगा । शर से मुझे स्वर्ग पहुँचा देगा । यह सोचकर अपनी सारी शक्ति लगाकर वह आकाश में उछल पड़ा । ७९९

ॐ अक्क णत्तिनि लैयनुम् वैयादन्, शक्क रत्तिर् इहैवरि दायदोर्
चैक्कर् मेनिप् पहळि शैलुत्तितान्, पुक्क दैयम्बुक् किन्नुयिर् पोक्केना 800

अ णत्तिनि-उसी क्षण में; ऐयनुम्-प्रभु ने भी; तन् चक्करत्तिनि-अपने ही (सुदर्शन-)चक्र के समान; तक्कु अरितु आयतु-अकाद्य; ओर्-एक; वैया-भयंकर; चैक्कर् मेनि-लाल रंग के; पळि-शर को; पुक्क तेयम् पुक्कु-यह जहाँ जाता है, वहाँ जाकर; इन् उयिर् पोक्कु-इसके प्यारे प्राण हर लो; अँता-कहकर; चैलुत्तितान्-चलाया । ८००

तभी महात्मा श्रीराम ने अपने सुदर्शन चक्र के समान अप्रतिहत और भयंकर अरुणवर्ण अस्त्र संधान कर यह कहते हुए छोड़ा कि वह जहाँ भी जाए, पीछे जाकर उसको हत कर दो । ८००

ॐ नैट्टि लैच्चरम् वञ्जनै नैञ्जुर्प्, पट्ट दप्पीळु दैपहु वायिताल्
अट्ट तिक्किन्नु मप्पुर् मुम्बुह, विट्ट लैत्तीर् कुन्नेत वीळ्न्दनन् 801

नैट्टु इलै चरम्-वह लम्बा पत्राकारफलयुक्त शर; वञ्जन्-वंचक; नैञ्चु उर्-हृदय पर लगा; पट्ट-अन्दर घुसा; अ पौळुते-तभी; पकु वायिताल्-खुले मुख से; अट्ट तिक्कुम्-आठों दिशाओं में; अ पुर्मुम्-और बाहर में भी; पुक्-जाकर व्याप्त हो ऐसा; अळैत्तु-पुकारते हुए; ओर् कुन्ने अँत-एक पर्वत के समान; वीळ्न्दनन्-गिरा । ८०१

श्रीराम का लम्बा और पत्राकार फल का शर वंचक के वक्ष में

जा लगा और गड़ गया । तभी वह अपने खुले मुख से उन सीता और लक्ष्मण को उच्च स्वर में पुकारते हुए मरा और पर्वत के समान गिर गया । वह स्वर आठों दिशाओं और उनके बाहर भी जाकर व्यापा । ८०१

❖ वय्य वन्तु नुरुवित्तिल् वीळ्दलुम्, शय्य दन्तुत्तच् चैप्पिय तम्बियै
ऐयन् वल्लनैन् तारुयिर् वल्लनान्, उय्य वन्दवन् वल्लनैन् रुत्तितान् 802

वय्यवन्तु-क्रूर (मारीच) के; तन्तु उरु ओटु-अपने निजी रूप के साथ; वीळ्दलुम्-गिरने पर; चय्ययतु अन्तु-यह सीधा नहीं; अन्त चैप्पिय-ऐसा जिसने कहा, उस; तम्बियै-अनुज को; ऐयन् वल्लन्तु-मेरा तात बड़ा समर्थ है; अन्तु आर् उयिर्-मेरा प्राण-सम भाई; वल्लन्तु-समर्थ है; नान् उय्य वन्तवन्-मुझे उबारने आया वह; वल्लन्तु-समर्थ है; अन्तु-ऐसा; रुत्तितान्-(श्रीराम ने साधुवाद के साथ) स्मरण किया । ८०२

क्रूर मारीच अपने निजी रूप में गिरा । उसको देखते ही श्रीराम के मन में भाई लक्ष्मण और उनकी दूरदर्शिता का स्मरण आया । वे बोल उठे कि हा ! यह मृग सीधा नहीं है । यह मेरे भाई ने कहा था । मेरा तात सामर्थ्यवान है; मेरा प्राण-सम भाई सामर्थ्यवान है ! मुझे उबारने के लिए जनित अनुज लक्ष्मण सामर्थ्यवान है ! उन्होंने भाई के प्रति गौरव-बुद्धि के साथ उनका स्मरण किया । ८०२

❖ आशै नीळत् तरुत्तितन् वीळ्न्दवन्, नीशन् मेत्तियै नित्तरु नोक्किनान्
माशित् मादवन् वेळ्वियिन् वन्दमा, रीशनेयिव नैन्बदु तेरितान् 803

आशै नीळत्तु-दिशा जितने लम्बे; अरुत्तित-रुदन-स्वर निकालकर; वीळ्न्द-जो गिरा; अ नीचन् मेत्तियै-उस नीच के शरीर को; नित्तरु-खड़ा होकर; उरु-खूब; नोक्किनान्-(श्रीराम ने) देखा; माचु इल्-अकलंक; मातवन् वेळ्वियिन्-महातपस्वी (विश्वामित्र के) यज्ञ में; वन्तु मारीचत्ते-जो आया था, वही मारीच; इवन्-यह है; अन्तुपतु-यह; तेरितान्-पहचान लिया । ८०३

श्रीराम ने नीच मारीच के मृतक शरीर को खूब ध्यान देकर देखा । उसका क्रन्दन स्वर दिशाओं का जितना लम्बा था ! अकलंक महा तपस्वी विश्वामित्र के यज्ञ में यही आया था । उन्होंने उस मारीच को पहचान लिया । ८०३

❖ पुळैत्त वाळि युरम्बुहप् पुल्लियोन्, इळैत्त मायैयि नैन्गुर लालैडुत्
तळैत्त दुण्डु केट्टयर् वय्यदुमाल्, मळैक्कण् णेळैयैन् रुळ्ळम् वरुन्दितान् 804

पुळैत्त वाळि-भेदकर जो चला, उस शर के; उरम् पुक्-छाती में घुसने पर; पुल्लियोन्-उस नीच ने; इळैत्त मायैयिन्-माया करके; अन्तु कुरलाल्-मेरे-से स्वर में; अटुत्तु-ऊँचा; अळैत्तु उण्डु-(सीता और लक्ष्मण को) बुलाया, यह तो है; अतु केट्टु-वह सुनकर; मळै कण् एळै-मेघ-सी (अश्रुभरी) आँखों की सीता; अयर्

अँयुतुम् आल्-व्यथित हो जायगी अवश्य; अँनुङ्ग उळ्ळम् वरुन्तितात्-यह सोचकर श्रीराम खिन्नमन हुए । ८०४

मेरे शर के उसके वक्ष में भेदकर चलने पर इस नीच ने मेरे-से स्वर में ढेर लगायी है ! यह सुनकर सीता अवश्य रोती होंगी । दुःखाक्रान्त हो जायँगी । यह सोचकर श्रीराम दुःखी हुए । ८०४

ॐ माऱ्ऱ मिन्नुदु मायमा रीशनेत्, रेऱ्ऱ मुत्तुणुणर्न् दानिरुन् दानैन्
दाऱ्ऱ रेऱ्ऱ मरिवित नादलात्, तेऱ्ऱ मालिळै योन्नैन् तेरिनात् 805

इन्तु-ऐसे; माऱ्ऱम्-(मारीच के कहे, हा सीते, हा लक्ष्मण के) शब्दों को; मुन्-पहले ही; माय मारीचन् अँनुङ्ग-माया का मारीच, यह; एऱ्ऱम् उणर्न्तात्-जिन्होंने निश्चित रूप से जाना था; इळैयोन् इरुन्तात्-वह मेरा कनिष्ठ उधर है; अँतु आऱ्ऱल् तेऱ्ऱम्-मेरी शक्ति को जानने में समर्थ; अरिवितु-बुद्धिशाली; आतलाल्-इसलिए; तेऱ्ऱम्-वह सीता को धीरज दिलायगा; अँत-ऐसा सोचकर; तेरिनात्-श्रीराम आश्वस्त रहे । ८०५

उन्होंने आगे तर्क किया । इसको लक्ष्मण ने सुना होगा । उसी ने पहले इसे मारीच जान लिया था । वह मेरी शक्ति का भी परिचय रखता है । इसलिए वह सीता को धीरज वैधायगा । श्रीराम को इस विचार से कुछ आश्वासन हुआ । ८०५

ॐ माळ्व देतौळि लाहवन् दानलन्, मूळ्व दोर्पोरु लुण्डिवन् शौल्लिनाल्
मूळ्व देद मदुमुडि यामुनम्, मीळ्व देतल नैन्ऱवन् मीण्डनैन् 806

माळ्वते तौळिलाक-मरना ही कार्य समझकर; वन्तात् अलत्-आया नहीं है; इवन् चौल्लित्ताल्-इसके शब्दों से; मूळ्वतु ओर् पोर्ळु उण्डु-संभवनीय उपद्रव है; मूळ्वतु एतम् अतु-संभवनीय वह हानि; मुट्टिया मुत्तम्-पूरी हो, उसके पूर्व ही; मीळ्वते नलन्-लौट जाना ही श्लाघ्य है; अँनुङ्ग-सोचकर; अवन् मीण्डनैन्-वे लौट आये । ८०६

श्रीराम ने आगे सोचा । यह मारीच केवल मरने का विचार लेकर नहीं आया है । इसके शब्दों से अवश्य एक उपद्रव होगा । कुछ उपद्रव हो जाय, इसके पूर्व ही पर्णशाला में लौट जाना ही भला होगा । यह सोचकर वे लौट आने लगे । ८०६

9. शडायु उयिर्नीत्त पडलम् (जटायु प्राण-त्याग पटल)

शङ्ग डुत्त तनिक्कडन् मेनियार्, कङ्ग डुत्त निलैमै यरैन्दनैम्
कौङ्ग डुत्त मलर्क्कुळ्ळर् कौम्बनाट्, किङ्ग डुत्त तहैमै यियम्बुवाम् 807

चङ्कु अटुत्त-शंखों से भरे; तत्ति कटल्-उत्तम समुद्र के; मेत्तियार्कु-वर्ण के शरीरी की; अङ्कु अटुत्त-वहाँ जो रही; निलैमै अरैन्तैम्-वह स्थिति बतायी;

कौङ्कु अटुत्त मलर्-सुवासित पुष्प की; कौम्पु अत्ताट्कु-शाखा-सरीखी देवी का;
इङ्कु अटुत्त तर्कमै-यहाँ जो गति रही; इयम्पुवाम्-वह कहेंगे । ८०७

शंखों से भरे नीले समुद्र के समान जिनका सुन्दर रंग है, उन श्रीराम की जो स्थिति रही वह हमने बतायी । अब पर्णशाला में सुवासित पुष्पशाखा-सरीखी सीतादेवी का क्या हाल रहा —वह बतायेंगे । ८०७

❖ अयिर लैत्तदु मुळैदिरन् देङ्गिय, शैयिर्द लैक्कौण्ड शौर्च्चैवि शैर्दलुम्
कुयिर लत्तिडै युर्रदौर् कौळ्हायाळ्, वयिर लैत्तु विळुन्नु मयङ्गिताळ् 808

अयिर अलैत्ततु-दाँतों को पीसकर; मुळै तिरन्नु-गुफा के समान मुख खोलकर;
एङ्किय-घोषित; चैयिर् तलै कौण्ड-कपट-भरा; चौल्-शब्द; चैवि चैर्तलुम्-
ज्योंही कान में पड़ा त्योंही; कुयिल् तलत्तु इटै उड्दुत्तु-कोयल नीचे गिरी हो, ऐसी;
ओर् कौळ्कैयाळ्-एक स्थिति में पड़कर; वयिर अलैत्तु-पेट पीटते हुए; विळुन्नु-
गिरकर; मयङ्गिताळ्-मूर्च्छित हुई । ८०८

दाँत पीसते हुए मारीच ने अपना कन्दरा-सा मुख खोलकर बड़े ही वंचक शब्द उच्चारें थे । जब वे देवी के कान में पड़े तो वे पेट पीटती हुई भूमि पर गिरकर मूर्च्छित हो गयीं । वे उस कोयल की-सी स्थिति में दिखाई दीं, जो तरु की उच्च शाखा से भूमि पर गिर गयी हो । ८०८

❖ पिडित्तु नल्हिव् वुळैयैन् पेटैयेन्, मुडित्त नैन्मुदल् वाळ्वैन् मौय्यळल्
कौडिप्प डिन्द दैन्नेडुङ् गोळरा, इडिक्कि डैन्द दैन्पपुरण् डेङ्गिताळ् 809

इ उळै पिडित्तु नल्कु-यह मृग पकड़ दीजिए; अँत-कहकर; पेटैयेन्-जड़मति
मैने; मुतल् वाळ्वु-जीवनाधार को; मुडित्तनैन्-मरवा दिया; अँत-कहकर;
मौय् अळल्-बड़ी आग; कौडि पडित्तु अँन-लता पर लग गयी जैसे; नैदुम् कोळ्
अरा-लम्बा, बली सर्प; इडिक्कु इटैन्तु अँत-वज्राहत हुआ जैसे; पुरण्ड
एङ्गिताळ्-लोटती हुई रोयीं । ८०९

जब वे होश में आयीं तो विलाप करने लगीं कि हाय ! मैंने क्या कर दिया ? 'इस मृग को पकड़कर मेरे पास दीजिए' कहकर मैंने अपने जीवनाधार को ही गँवा दिया । अग्निदग्ध पुष्पलता के समान और वज्राहत दीर्घ बली सर्प के समान वह भूमि पर लोटती हुई रोयीं । ८०९

❖ कुर्रम् वीय्न्द गुणत्तिन्नैङ् गोमहन्, मर्रै वाळरक् कन्बुरि मायैयाल्
इर्रु वीळ्न्दन्न नैन्तवु मेन्तयल्, निर्रियो विळैयो यौरुनी यैन्त्राळ् 810

कुर्रम् वीय्न्त कुणत्तिन्-कलंक-रहित कल्याणगुणपूर्ण; अँन् कोमकन्-मेरे
नाथ; मर्रै-पराये; वाळ् अरक्कन् पुरि मायैयाल्-क्रूर राक्षस के किये हुए कपट
से; इर्रु वीळ्न्तन्न-मरकर गिर गये; अँन्तवुम्-जानने के बाद भी; इळैयोय्
और नो-एक अनुज, तुम भी; अँन् अयल्-मेरे पास में ही; निर्रियो-खड़े रहते हो
क्या; यैन्त्राळ्-पूछा (लक्ष्मण से) । ८१०

सीताजी ने देखा कि लक्ष्मण खड़े हैं। उनको कोप आया। उन्होंने कहा— मेरे अकलंक कल्याणगुणपूर्ण नाथ शत्रु राक्षस के कपट से आहत हो गिर गये। यह जानने के बाद भी तुम, उनके अनुज, इधर ही मेरे पास में खड़े रहोगे क्या ? । ८१०

ॐम्मैया रुलहिति लिरामर् केरुमोर्, तिण्मैया रुळरैन्तर् चैप्पल् पालदो
पेण्मैया लुरैशैयप् पेरुदि रालेन्, उण्मैया ननैयवट् कुणरक् कूडित्तान् 811

ॐम्मै आर् उलकिल्-लघुतायुक्त लोक में; इरामर्कु एरुम्-श्रीराम से बढ़कर; ओर् तिण्मैयार्-एक बलवान; उळर् अंतल्-होगा कहना; चैप्पल् पालतो-अभिव्यक्ति के अर्थ है क्या; पेण्मैयाल्-स्त्री-बुद्धि के कारण; उरै चैय् पेरुतिर्-यह कहने चलीं; अँन-ऐसा; उण्मैयान्-सत्यज्ञ ने; अन्नैयवट्कु-उन्हें; उणर कूडित्तान्-समझाकर कहा। ८११

यह संसार लघुतापूर्ण है। इसमें श्रीराम से बढ़कर कोई बली है, यह कथन उच्चारण योग्य है क्या ? स्त्री-बुद्धि के कारण आप ऐसी बात करती हैं। लक्ष्मण अपनी सूझ-बूझ से सच्ची बात जान सके थे। उन्होंने सीताजी को समझाया। ८११

एळुमे कडलुल हेळु मेळुमे, शूळुमेळ् मलैयवै तौडरुन्द शूळल्वाय्
वाळुमे लैयर्शिळु वलिकुक् वाळमर्त्, ताळुमे यिराहवन् तत्तिमै तैयलीर् 812

तैयलीर्-देवी; कटल् एळुम्-सातों समुद्र; उलकु एळुम्-(दो के) सातों लोक; चूळुम् एळ् मलै-घेरे हुए स्थित सात पर्वत; तौडरुन्द चूळल् वाय्-इनसे लगे स्थल; वाळुम्-(यहाँ के) वासी; एळैयर् चिळु वलिकुक्-दुर्बल लोगों के बल के सामने; इराकवन् तत्तिमै-श्रीराघव का एकाकी बल; वाळ् अमर् ताळुमे-कठोर युद्ध में नीचा हो जायगा क्या। ८१२

देवी ! सात समुद्र, सात (दो) लोक, उनको घेरे रहनेवाले सात पर्वत और उनसे संयुक्त स्थानों में जो वास करते हैं, उन निर्बलों के अल्प बल के सामने एकाकी राघव की शक्ति भयंकर युद्ध में कम हो रहेगी क्या ? । ८१२

पारैन्तक्	कनलैन्प	पुत्तलैन्तप्	पवत्तवान्
पेरैन्तैत्	तवैयवन्	मुनियिर्	पेरुमाल्
कारैन्तक्	करियवक्	कमलक्	कण्णनै
आरैन्तक्	करुदियिव्	विडरि	ताळ्हिन्ऱोर् 813

पार् अँत-भूमि; कलन् अँत-आग; पुत्तल् अँन-जल; पवत्तम् वान् पेर अँतैत्तु तल् अवै-पवन, आकाश नाम का कोई भी; अवन् मुत्तियिल्-वे कोप करेंगे तो; पेरुम् आल्-अस्त-व्यस्त होगा; कार् अँत करिय-मेघसम श्यामल; कमल कण्णत्तै-कमलाक्ष

को; आर् अंत कहति—कौन है, समझकर; इ इटरिल् आळ्किन्नीर्—इस कदर दुःख में मग्न रहती हैं । ८१३

पृथ्वी, अग्नि, जल, पवन, आकाश नाम के इनमें कोई भी (भूत) उनके कोप के सामने ठहर न सकेगा और टूटकर बिखर जायगा । उन मेघश्याम कमलाक्ष को आप कौन समझकर इतना घबड़ाती हैं ? इतने दुःखमग्न हैं ? । ८१३

✽ इडैन्दुपोय्	निशिशरर्	किराम	तैव्वम्बन्
दडैन्दपो	दळैक्कुमे	वळैक्कु	मार्मेत्तिन्
मिडैन्दपे	रण्डङ्गण्	मेल	कीळन्
उडैन्दुपो	ययन्मुद	लुयिरुम्	वीयुमाल् 814

इरामन्—श्रीराम; निचिचरर्कु—एक राक्षस से; इडैन्तु पोय्—हारकर पीछे हटकर; तैव्वम्बन्तु अडैन्त पोतु—संकटग्रस्त होने पर; अळैक्कुमे—पुकार मचायेंगे क्या; अळैक्कुम् आम् अतिल्—बुलाने का मौका आ जायगा तो; मेल कीळन्—ऊपर और नीचे; मिडैन्त—लगे रहे; पेर् अण्डङ्कळ्—बड़े-बड़े अण्डगोल; उडैन्तु पोय्—टूट जायेंगे; ययन् मुतल् उयिरुम्—अजादि जीव; तीयुम्—जल जायेंगे । ८१४

श्रीराम निशिचर के सामने साहस खोकर पीछे हटेंगे और सहायता के लिए पुकार मचायेंगे भी ? यह क्या कहती हैं आप ? यदि ऐसी नौबत आ गयी तो समझिए कि नीचे और ऊपर के सभी अण्डगोल फट जायेंगे, और अज से लेकर सारी जीवराशियाँ जल-भुन जायँगी । ८१४

माड्डम्	पहर्वदु	मण्णुम्	वात्तमुम्
पोड्डवन्	रिरिपुर	मैरित्त	पुङ्गवन्
एड्डिनिन्	रैय्दविल्	लिड्ड	दैम्बिरान्
आड्डलि	तमैवदो	राड्ड	लित्तमैयाल् 815

मण्णुम् वात्तमुम् पोड्ड—भूलोकवासियों और आकाशवासियों से प्रशंसित होकर; वन् तिरिपुरम् अरित्त—सशक्त त्रिपुरों को जिन्होंने जलाया; पुङ्गवन्—उन देव (शिव) के; एड्डि निन्नु—प्रत्यंचा चढ़ाकर; अय्त्त विल्—शर जिससे छोड़े गये, उस धनु का; दैम्बिरान् आड्डलित्त—मेरे नाथ की शक्ति जितनी; अमैवतु ओर् आड्डल्—उतने से युक्त बल; इत्तमैयाल्—नहीं रहा, इसलिए; इड्डतु—टूट गया (वह धनु); माड्डम् अन् पकरवतु—किन शब्दों में (श्रीराम की शक्ति) कही जाय । ८१५

श्रीशिवजी ने बलवान त्रिपुरों को अपने एक धनुष की सहायता से जलाया था । उनकी बड़ी वाहवाही हुई । देवों ने और भूलोकवासियों ने उनकी बड़ी प्रशंसा की ! उस धनु में हमारे प्रभु के बल को सहने की शक्ति नहीं रही । वह टूट गया । श्रीराम की शक्ति का परिचय फिर किस बात को लेकर कहा जाय ? । ८१५

कावल	तीण्डुनीर्	करुदिर्	रैय्दुमेल
सूवहै	युलहमु	मुडियु	मुन्डुळ
तेवरु	मुनिवरु	मुदल	शैव्वियोर्
एवरुम्	वीवर्म्	इरमु	मैञ्जुमाल् 816

कावलन्-लोकरक्षक; ईण्डु-अव; नीर् करुतिर्-आप जो सोचती हैं, वैसे; अैय्त्तुम् एल्-(नाश को) प्राप्त होंगे तो; सूवकै उलकमुम् मुट्टियुम्-तीनों लोक मिट जायेंगे; मुन्तु उळ-आदि रहनेवाले; तेवरुम्-देव; मुनिवरुम्-और मुनि; मुतल-आदि; शैव्वियोर् एवरुम्-श्रेष्ठ सभी; वीवर्-मर जायेंगे; मर्-और भी; अरमुम् अैञ्जुम्-धर्म भी मिट जायगा । ८१६

जैसे आप समझती हैं, वैसी हालत लोकरक्षक पर आयी होती तो तीनों लोक मिट जाते ! आदिदेव, ब्रह्मादि, मुनि और अन्य सभी श्रेष्ठ लोग मर जाते ! और भी धर्म नहीं टिकता । ८१६

परक्कवैन्	पहर्वदु	पहळि	पण्णवन्
तुरक्कवड्	गदुपडत्	तौलैन्दु	शोर्हिन्ऱ
अरक्कन्	वुरैयैडुत्	तरऱि	तानदर्
किरक्कमुर्	रिरङ्गलि	रिरुत्ति	रीण्डैन्ऱान् 817

परक्क अैन् पक्कवत्तु-विस्तार के साथ क्या कहना; पण्णवन्-हमारे नाथ ने; अरक्क पक्क तुरक्क-वहाँ अस्त्र चलाया और; अतु पट-वह लगा; तौलैन्तु चोर् किन्ऱ अरक्कन्-बल खोकर मिटते हुए उस राक्षस ने; अ उरै अैदुत्तु-वे शब्द कहकर; अरऱिन्ऱान्-प्रलाप किया; अतऱ्कु-उससे; इरक्कम् उरऱ्-दुःख मानकर; इरङ्कलोर्-मत रोइए; ईण्डु इरुत्तिर्-यहाँ रहिए; अैन्ऱान्-कहा । ८१७

विस्तार क्या करना ? हुआ यही होगा कि श्रीराम ने बाण छोड़ा; बाण मारीच पर लगा और मारीच जान खोकर मरा । मरने से पहले उसने ऐसा स्वर करके प्रलाप किया । आप कुछ और समझकर उस दुहाई के पीछे दुःखी मत होइए और मत रोइए । निश्चित यही रहिए । —लक्ष्मण ने ढाढस दिया । ८१७

अैन्ऱव	नियम्बलु	मैळुन्द	शोर्ऱत्तळ
कौन्ऱन	विन्तलळ	कौदिकु	मुळत्तळ
निन्ऱनिन्	निलैयिदु	नैरियिर्	ऱन्ऱैन्
वन्ऱ	कण्णिनाळ	वलिनन्दु	कूऱिनाळ 818

अैन्ऱ-ऐसा; अवन् इयम्पलुम्-उनके कहने पर; अैळुन्त-उत्तेजित; चीऱत्तळ-क्रोधिता; कौन्ऱ अन्-मारी जायेंगी, ऐसा; इन्तलळ-संकटग्रस्त; कौतिककुम् उळत्तळ-बौलते चित्त की; वल् तऱ्कण्णिनाळ-सुदृढ़ निडरता के साथ (सीताजी ने); निन्ऱ निन् निलै इतु-अपनायी हुई तुम्हारी यह स्थिति; नैरियिर्

अनुश्र-नीतिसम्मत नहीं; अंत-ऐसा; वलिन्तु-कठोर स्वर में; कूखवाळ-कहने लगीं । ८१८

लक्ष्मण का वचन सुनकर सीताजी का क्रोध और उमड़ पड़ा । स्वयं उनको कोई मार रहा हो, उतना दुःख हुआ । उबल पड़ी और अनोखे क्रूर निडरता के साथ उन्होंने कठोर शब्दों में कहा कि यह तुम्हारी स्थिति नीति-सम्मत नहीं है । ८१८

✽ औरपहल्	पळहिता	रुयिरै	यीवराळ्
पैरुमह	तुलैवुर्	पैरि	केट्टुनी
वैरुवलै	निन्नुरत्तै	वैरैन्	यान्तिनि
अँरियिडैक्	कडिदुवीळ्न्	दिरप्पे	तीण्डैन्ता 819

और पकल पळकितार्-एक दिन के परिचित भी; उयिरै ईवर्-प्राण दे देंगे; पैरुमकन्-हमारे नाथ; तुलैवु उर् उर् पैरि-मर गये, यह गति; नी केट्टुम्-तुमने कान से सुनी, तो भी; वैरुवलै-भीत नहीं हो; निन्नुरत्तै-खड़े हो; वैरु अँन्-दूसरा मार्ग अब मेरे लिए क्या रहा; यान्-मै; इत्ति-अब; अँरि इटै-आग में; कटितु वीळन्तु-जल्दी प्रवेश करके; ईण्डु-यहाँ; उयिर् इरप्पैन्-प्राण त्यागकर मर जाऊँगी; अँता-कहकर । ८१९

आगे मर्मघातक शब्द में कहा कि एक ही दिन के परिचित हों, तो भी वे अपने मित्र को बचाने के लिए अपने प्राण दे देंगे । हमारे नायक पर क्या बीता, यह तुम जानते हो । जानकर भी विना किसी भय के या संशय के मेरे ही पास खड़े हो ! अब मेरे पास कोई दूसरा चारा नहीं है । अब मैं शीघ्र जलती आग में कूद पड़ूँगी और मर जाऊँगी । ८१९

✽ तामरै	वन्तत्तिडैत्	तावु	मन्तम्बोल्
तूमवैड्	गाट्टैरिन्	तौडर्हिन्	राडनैच्
चेमविर्	कुमरन्तुम्	विलक्किच्	चीरडिप्
पूमुह	नैडुनिलम्	पुल्लिच्	चौल्लुवान् 820

तामरै वन्तत्तिडै-कमल-कानन में; तौवुम् अन्तम् पोल्-लपकते हंस के समान; तूम वैम् काट्टु अँरि-धुएँ-सहित भयंकर दावाग्नि की ओर; तौडर्किन् राड तत्तै-जो चलने लगीं, उनको; चेम विल् कुमरन्तुम्-संरक्षक धनुर्धर कुमार भी; विलक्कि-रोक कर; चिर् अटि पू मुक्कम्-छोटे चरण-पंकजों के सामने; नैडु निलम् पुल्लि-लम्बी भूमि पर गिरकर (दण्डवत करके) चौल्लुवान्-बोलने लगे । ८२०

यह कहकर सीताजी कमलकानन में लपकनेवाले कलकण्ठ (हंस) के समान धुआँ उगलती हुई जलनेवाली दावाग्नि की ओर दौड़ने लगीं । संरक्षक धनुर्धर लक्ष्मण ने उनको रोका, उनके चरण-पंकजों के सामने गिरकर दण्डवत की ओर कहा । ८२०

❖ तुञ्जुव	दैनैनीर्	शीन्	शील्लैयान्
अञ्जुवैन्	मरुक्किले	नवलन्	दीर्न्दिति
दिञ्जिरु	मडियने	नेहु	हिन्ऱत्तेन्
वैजिन्न	विदियिने	वैल्ल	वल्लमो 821

तुञ्जुवतु अन्ते-आप मरें क्यों; नीर् चोन्तु चोल्लै-आपकी कही हुई बात से; यान् अञ्चुवैन्-मैं डरता हूँ; मरुक्किलेन्-आपकी बात मानने से इनकार नहीं करूँगा; इति-अव; अवलम् तोरन्तु-चिन्ता त्यागकर; इञ्चु इरुम्-यहीं रहिए; अटियेन् एकुकिन्ऱत्तेन्-मैं जाता हूँ; वैम् चित्त वितियिते-भयंकर क्रोधी विधि को; वैल्ल वल्लमो-हरा सकेंगे क्या । ८२१

भगवती ! आप क्यों मरें ? आपकी बात मुझे भयभीत कर रही है । मैं आपकी आज्ञा का भंग नहीं करूँगा । अब आप दुःख छोड़कर निश्चित यहीं रहिएगा । दास मैं जा रहा हूँ । विधि क्रूर है और क्रुद्ध है । उसको हम कैसे जीत सकेंगे ? । ८२१

❖ पोहिन्ऱे	नडियत्तेन्	पुहुन्दु	वन्दुके
डाहिन्ऱ	दैयन्ऱ	ताणै	नीरुमरुत्
तेहैन्ऱि	रिरुक्किन्ऱिर्	तमिय	रैन्ऱुपिन्
वेहिन्ऱ	शिन्देयेन्	विडैहोण्	डैन्ऱैता 822

अटियत्तेन् पोकिन्ऱेन्-दास मैं जाता हूँ; केट्टु-वड़ा संकट; पुकुन्तु वन्तु आकिन्ऱुत्तु-घुसकर आया हुआ है; ऐयन् तन् आणै-प्रभु श्रीराम की आज्ञा; नीर् मरुत्तु-आप काटती है और; एकु अन्ऱीर्-जाओ कहती हैं; तमियर् इरुक्किन्ऱिर्-अकेली रहती है; अन्ऱु-कहकर; पिन्-फिर; वेकिन्ऱु चिन्ऱैयेन्-तत्तचित्त होकर; विटै कौण्टेन्-विदा लेता हूँ; अन्ऱै-कहकर । ८२२

मैं जा रहा हूँ । बहुत बड़ी विपदा आ रही है । प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करके आप मुझे भेज रही है । अब एकाकिनी रहेंगी । लक्ष्मण ने यह कहा । फिर उन्होंने जारी किया । मेरा मन संतप्त है ! उसी स्थिति में मैं आपसे आज्ञा ले रहा हूँ । ८२२

❖ इरुप्पन्ने	लैरियिडै	यिरप्प	रालिवर्
पौरुप्पन्ने	यान्निडैप्	पोवै	तेयैन्ऱिल्
अरुप्पमिल्	केडुवन्	दडैयु	मारुयिर्
इरुप्पन्नेर्	कैन्ऱुशैय	लैन्ऱु	विम्मितान् 823

इरुप्पन्नेल्-यहाँ रहता हूँ तो; इवर्-ये; एरि इटै इरुप्पर्-आग में (कूदकर) मर जायेंगी; पौरुप्पु अत्तैयान् इटै-पर्वत-सम श्रीराम के स्थान पर; पोवन् ए अन्ऱिल्-जाऊँगा तो; अरुप्पमिल्-अनल्प; केट्टु वन्तु अटैयुम्-विपदा आ जायगी; आर् उयिर् इरुप्पत्तेरु-साथ लगे प्राण के साथ जो रहता हूँ मुझे; अन् चैयल्-क्या करना है; अन्ऱु-ऐसा; विम्मितान्-(सोच में पड़कर) दुखी हुए । ८२३

लक्ष्मण को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने सोचा कि अगर मैं रह जाऊँगा, तो ये आग में कूदकर मर जायँगी। अगर मैं पर्वत-सम श्रीराम के पास चला जाऊँ तो अनल्प, बहुत बड़ी कोई विपदा आयगी, अवश्य। हाय ! दुर्भाग्य ! मैं जीवित हूँ। प्यारे प्राणों के साथ हूँ। क्या करूँ मैं ? । ८२३

अरुन्दन्ना	लल्लिविल	दाह	लाक्कलाम्
इरुन्दुपा	डिवर्क्कु	मिरुक्कि	निव्वळि
तुइरुन्दुपो	मिदत्तये	तुणिवैन्	रील्विनैप्
पिरुन्दुपोन्	दिदुपडुम्	पेदै	येत्तैत्ता 824

इ वळि इरुक्किन्-यहीं रहूँगा तो; इवर्क्कु-इन्हें; इरुन्दुपाटु उरुम्-मरना पड़ जायगा; तौल् विन्नै पिरुन्दु-पूर्व-कर्म के फलस्वरूप जन्म लेकर; पोन्तु-इधर आकर; इतु पटुम्-इस संकट में जो पड़ा हूँ; पेट्टयेन्-अबोध मैं; तुइरुन्दु पोम् इतत्तये-इधर से जाने का यही; तुणिवैन्-निश्चय करूँगा; अरुम् तन्ताल्-धर्मद्वारा; अळिवु इलतु आकल्-न मरने का काम; आक्कलाम्-सिद्ध हो सकता है; अत्ता-सोचकर। ८२४

फिर भी सोचा—यहीं रह जाऊँ क्या ? नहीं। यहीं रहूँ तो इनकी मर जाने की हालत आ जायगी। मैं अभागा, प्राचीन कर्म-वश जनित होकर यह संकट उठा रहा हूँ। क्षुद्र आत्मा मैं यही करूँगा—जाने का निश्चय ही ठीक लगता है। शायद धर्म सबको बचा ले और नाश होने से रुक जाय। ८२४

❖ पोवदु	पुरिवत्तान्	पुहुन्द	दुण्डैत्तिल्
कावल्शैय्	यैरुवैयिन्	उलैवन्	कण्णुरुम्
आवदु	काक्कुम्	उरिवुर्	उव्वळित्
तेवर्शैय्	दवत्तिताऱ्	चैम्म	लेहितान् 825

नान् पोवतु पुरिवल्-मैं गमन करूँगा; पुकुन्ततु उण्डु अँत्तिल्-(संकट कुछ) आयगा तो; कावल् चैय् अँरुवैयिन् तलैवन्-हमारे संरक्षण में लगे हुए गृध्रराज; कण् उरुम्-देखेंगे; आवतु काक्कुम्-भरसक रक्षा करेंगे; अँत्तु अरिवु उरु-यह जानकर; तेवर् चैय् तवत्तिताल्-देवों के तप के कारण; अ वळि-वहाँ से; चैम्मल्-उत्तम लक्ष्मण; नीड्कितान्-चले। ८२५

फिर लक्ष्मण ने सीताजी से कहा कि मैं गमन करता हूँ। 'गृध्रराज जटायु हमारे रक्षक हैं। वे ध्यान रखेंगे और भरसक सहायता करेंगे।' यह सोचकर वे चल पड़े। हाँ ! देवताओं के तप को फलीभूत होना था। इसलिए वे उत्तम लक्ष्मण वहाँ से चले। ८२५

❖ इळैयव	तेहलु	मिरुवु	पार्क्किन्ऱु
वळैयैयिर्	रिरावणन्	वज्ज	मुऱ्ऱवान्

मुळैवरित् तण्डीरु मून्ऱु मुप्पहैत्
तळैयारि तवत्तवर् वडिवुन् दाङ्गितान् 826

इळैयवन् एकलुम्-लघुराज लक्ष्मण के जाने पर; इरुवु पार्क्किन्ऱु-उनके हटने की टोह में जो रहा; वळै अयिऱु रावणन्-वह वक्रदाँतों का रावण; वज्रचम् मुर्ऱुवान्-कपटकार्य साधने के लिए; वरि-सवन्ध; मुळै तण्डु ओह मून्ऱुम्-बाँसों का त्रिदण्ड और; मु पकै तळै अरि-(काम, क्रोध, लोभ के) तीन शत्रुबन्धन को जो फाट चुका; तवत्तु अवर् वडिवुम्-ऐसे तपस्वी का वह रूप; ताङ्कितान्-ले लिया । ८२६

लघुराज लक्ष्मण के जाते ही, उसकी टोह में जो रहा, वह वक्रदन्तोरारवण अपना कपट-कार्य साधने के हेतु संन्यासी का वेश धरकर आया । हाथ में त्रिदण्ड, और काम, क्रोध और लोभ तीनों अन्तःशत्रुओं के जयी एक तपोधन का वेश लेकर वह प्रकट हुआ । ८२६

❖ ऊणिल तामेन वुलर्न्द मेनियन्, शेणैरि वन्ददोर् वस्तुत्तच् चैयहैयन्
पाणियि नळन्दिशै पडिक्किन्ऱु उर्नेन, वीणैयि तिशैपड वेदम् बाडुवान् 827

ऊण् इलन् आम अँत-निराहार रहा हो जैसे; उलर्न्द मेनियन्-कृश-शरीरी; चेण् नैरि वन्ततु-लम्बा मार्ग आया जैसे; ओर् वस्तुत्त चैयकैयन्-कष्ट-प्रकाशक, चेष्टा-प्रदर्शक; पाणियिन् अळन्तु-ताल-मेल के साथ; इच्चै पडिक्किन्ऱु उर्नेन-संगीत सुनाता हो जैसे; वीणैयिन् इच्चैपट-वीणा-वादन के मेल में; वेतम् पाडुवान्-सामवेद-गायक । ८२७

उसका शरीर निराहार रहे मनुष्य के समान शुष्क था । उसकी चेष्टाएँ यह प्रदर्शित कर रही थीं, मानो वह बहुत दूर चलकर आया हो । ताल के मेल के साथ संगीत सुनाता जैसा वह वीणा के स्वर के मेल में सामवेदगान करता आया । ८२७

❖ पूप्पीदि यविळ्न्दन नडैयन् पूदलम्
तीप्पीदिन् दामेन मिदिक्कुञ्ज जैयहैयान्
काप्पुरु नडुक्कुरुङ्ग गालन् कैयिनन्
मूप्पैनुम् पुरुवमु मुत्तिय मुर्ऱित्तान् 828

पू पीति अविळ्न्दु अन्न-पुष्पदल विकसित होते हैं जैसे; नडैयन्-मृदुचाल; पू तलम् ती पीतिन्तु आम-भूमि पर आग भरी हो; अँत-ऐसे; मितिक्कुम् चैयकैयान्-पाँव फूँक-फूँककर रखनेवाला; काप्पु अरु-अनियन्त्रित रूप से; नडुक्कु उरुम्-काँपते हुए; कालन् कैयिनन्-पैरों और हाथों का; मूप्पु अँतुम् पुरुवमुम्-वाद्धैव्य दशा में; मुत्तिय-घृणित रूप से; मुर्ऱित्तान्-बढ़ा रहा । ८२८

वह बहुत धीरे-धीरे पग धर रहा था, जैसे पुष्प का दल विकसता है । पैर फूँक-फूँककर रखता आया, मानो भूमि पर अंगार बिछे हों और वह

वचकर आता हो । उसके हाथ और पैर काँपते थे और रोके नहीं सकते थे । वार्द्धक्य ने पूर्णरूप से आकर घेरा था —ऐसा जर्जर था । ८२८

❖ एमुरु	निलैयित्त	त्तिडुहु	कण्णिनन्
आमैयि	तिरुक्कैयि	तमैन्द	वाक्कैयन्
नामनून्	मार्वित्त	त्तणुहि	तानरो
तूमन्त	तरुन्ददि	यिरुन्द	शूळल्वाय् 829

एम् उरु निलैयित्तन्-आकुलित-मन; इटुकु कण्णित्तन्-सँकरी आँखों का; आमैयिन् इरुक्कैयिन्-कछुए की पीठ के समान; अमैन्त-कुबड़ा बना; आक्कैयन्-शरीरी; नाम नूल् मार्वित्तन्-श्रेष्ठ (उपवीत-)सूत्रधारी वक्ष का; तूमन्तत्तु अरुन्तति-पवित्र-मना, अरुन्धती (सी सीता) के; इरुन्त शूळल् वाय्-रहने के स्थान में; नणुकितान्-आ पहुँचा । ८२९

उसका मन घबड़ाया हुआ था । आँखें सँकरी थीं । कछुए के कूबड़ के समान उसका शरीर वर्तुल था । वक्ष पर यज्ञोपवीत था । ऐसा वह कपटी पवित्रमना, अरुन्धती-सी सीतादेवी के रहने के स्थान में आ पहुँचा । ८२९

❖ तोमरु	शालैयिन्	वायि	रुन्तिनान्
नामुदल्	कुळ्ळिड	नडुङ्गुज्	जौल्लित्तान्
यावरिर्व	विरुक्कैयु	ळिरुन्दु	ळोरैन्नान्
तेवरु	मरुडरत्	तिरिन्द	मेत्तियान् 830

तेवरुम् मरुळ् तर-देवों को भी भ्रमित करे, ऐसा; तिरिन्त मेत्तियान्-परिवर्तित (संन्यासी का) वेषधर; तोम् अरु-अनिन्द्य; शालैयिन् वायिल्-पर्णशाला के द्वार पर; तुन्तितान्-पहुँचकर; ना मुतल् कुळ्ळिट-जीभ की नोक के लड़खड़ाते; नडुङ्कुम् जौल्लित्तान्-खण्डित बोली के साथ; यावर्-कौन; इ इरुक्कै उळ्-इस कुटीर के अन्दर; इरुन्तु उळीर्-रहते हो; अँन्नान्-पूछा । ८३०

उसका परिवर्तित वेश देखकर देव भी भ्रमित हो गये थे । वह कलंकहीन पर्णशाला के द्वार पर आ पहुँचा । लड़खड़ाती जिह्वा से अस्पष्ट बोली में उसने प्रश्न किया कि इस कुटीर के अन्दर तुम कौन रहते हो ? । ८३०

❖ तोहैयु	मिव्विळित्	तोमिल्	शिन्दनेच्
चेरु	नोन्बित्त	रैन्नुज्	जिन्देयाल्
पाहियल्	किळिवियोर्	पवळक्	कौम्बर्पोल्
एहुमि	त्तीण्डैन्	वैदिरवन्	दैय्दिताळ् 831

तोक्कैयुम्-देवी भी; इ वळि-इस वन के; तोम् इल् चिन्ततै-अकलंकमन; चेकु अरु नोन्पित्तर्-अनिन्द्य तपोव्रती; अँन्नुम् चिन्तैयाल्-यह विचार करके; पाकु इयल् किळिवि-चासनी-सम बोली के साथ; ओर् पवळ कोम्पर् पोल्-एक प्रवालवल्लरी

के समान; ईण्टु एकुमिन्-यहाँ पधारिए; अँत-कहते हुए; अँतिर् वन्तु अँयत्तिताळ्-सामने आयीं । ८३१

सीताजी का विचार था कि वह पवित्र तपोधन है, जो इस वन में रहता है । इसलिए प्रवाललता-सदृश देवी ने चासनी-सम मधुर बोली में स्वागत किया कि यहाँ पधारिए । यह कहते हुए वे उस कपट तपस्वी के सामने आयीं । ८३१

❀ वेंडुपिडै	मदमैन	वेर्क्कु	मेनियन्
अर्पितिर्	तिरैपुर	ळाशै	वेलैयन्
पौर्पिनुक्	कणियिनैप्	पुहळिन्	शेक्कैयैक्
कर्पिनुक्	करशियैक्	कण्णि	नोक्कितान् 832

वेंडुपु इटै-पर्वत पर; मतम् अँत-शिला-रस के समान (या गजमद के समान); वेर्क्कुम् मेतियन्-स्वेद-भरा शरीर; अर्पितिल्-प्रेम की; तिरै पुरळ्-तरंगों से पूर्ण; आचै वेलैयन्-आशा-सागर में मग्न वह; पौर्पितुक्कु अणियिनै-सुन्दरता के अलंकार को; पुहळिन् चेक्कैयै-कीर्ति-निलया को; कर्पितुक्कु अरचियै-पातिव्रत्य की रानी को; कण्णिन् नोक्कितान्-अपनी आँखों से (खूब) देखा । ८३२

रावण ने देवी को देखा । उसके शरीर से पर्वत से स्रवित शिलाजीत के समान स्वेद निकल रहा था । वह प्रेम की तरंगों से आकुलित आशा-सागर में मग्न था । उसने सुन्दरता की सुन्दरता, यश का आलय और पातिव्रत्य की रानी को अपनी आँखें फाड़कर देखा । ८३२

❀ तूङ्गलिन्	कुयिल्हैळु	शील्लि	नुम्बरिन्
ओङ्गिय	वळहिन्ना	ळुववड्	गाण्डलुम्
एङ्गिनन्	मननिलै	यादैन	रुन्नुवाम्
वीङ्गिन	मैलिनन्दन	वीरत्	तोळ्हळे 833

तूङ्कलिन्-थकी अवस्था में भी; कुयिल् कैळु-कोयल की पक्व; शील्लिन् उम्परिल्-बोली की श्रेष्ठता में; ओङ्गिय अळकिताळ्-बड़ी सुन्दरता से युक्त (देवी के); उरुवम् काण्डलुम्-रूप को देखते ही; वीर तोळ्कळ्-रावण के वीरता में बढ़े हुए कंधे; वीङ्किन्-और भी फूल उठे; मैलिनन्दन-(पर मिलेगी कैसे, सोचने पर) डुबले हुए; एङ्किन्-उत्कंठित उसके; मन्न निलै-मन की स्थिति; यातु अँन्ऱु-क्या थी; इयम्पुवाम्-कैसे कहें । ८३३

भगवती सीता वनवास के कारण क्रुश थीं । उस दुःख के कारण थकी थीं । तो भी बोली में सुन्दरता की उच्च श्रेणी में थीं । उनका रूप देखते ही रावण के कंधे फूल उठे । फिर तरस के कारण क्रुश हो गये । ऐसा उत्कंठा से व्यग्र उसके मन की दशा क्या कहें ? । ८३३

पुनमयिड्	चायड्	तेल्लित्तिड्	पुनरेच्
चुनैमडुत्	तुण्डिशै	मुरलुन्	दुम्बियिन्
इतमैत्तक्	कळित्तुळु	वैन्व	तैन्तवन्
मतमैत्तक्	कळित्तुडु	कण्णिन्	मालैये 834

कण्णिन् मालैये-अक्ष-माला; पुन मयिल् चायल् तन्-वन्यमयूरनिभ देवी की; अल्लिल्लि-रम्यता से; पुनरे चूतै मटुत्तु उण्टु-फूलों के शहद-भरे गढ़े में पड़कर उसकी पीकर; इच्चै मुरलुम्-सुस्वर में गुंजायमान; तुम्पियिन् इतम् अँत-भ्रमरों के समान; कळित्तुळु अँत्तपु अँत्-मत्त थी, यह कहने में क्या (अर्थ) है; अवन् मतम् अँत-उसी के मन के समान; कळित्तु-मुग्ध हुई। ८३४

उसकी आँखों की माला का कैसा वर्णन हो ? वनमयूरनिभ देवी का रूप देखकर वह फूलों का शहद गढ़े में भरकर उसे पीकर उन्मत्त भ्रमरों की पंक्ति थी —यह कहें ? पर उसका क्या अर्थ निकलेगा ? कहना यही पड़ेगा कि वे भ्रमर उसके ही मन के समान मुग्ध रहे। ८३४

शैयिवळुत्	तामरैच्	चेक्कै	तीरुन्दिवण्
मेयितळ्	मणिनिड्	मेत्ति	काणुदड्
केयुमे	यिरुपदिड्	गिमैप्पि	नाट्टङ्गळ्
आयिर	मिल्लैयैन्	उवल	मैयित्तान् 835

चे इतळु-लाल दलों के; तामरै चेक्कै-कमल का वास; तीरुन्तु-छोड़कर; इवण् मेयितळ्-यहाँ जो पधारी हैं, उनकी; मणि निड्-सुन्दर प्रकाशमय; मेत्ति-देह-कान्ति; काणुतड्कु-देखने के लिए; इङ्कु इसपु नाट्टङ्गळ् एयुमे-यहाँ मेरी बीस आँखें पर्याप्त हैं क्या; इमैप्पु इल् नाट्टङ्गळ्-अपलक आँखें; आयिरम् इल्लै अँत्तु-सहस्र नहीं हैं, यह सोचकर; अवलम् अँयित्तान्-बुखी हुआ। ८३५

उसे बड़ा पछतावा हुआ। लाल दलों से लसित कमल का वास-स्थान छोड़कर जो इधर आयी थी, उन (लक्ष्मीदेवी) की कान्तिमय देह को देखने के लिए क्या बीस आँखें पर्याप्त होंगी ? वह इस अभाव को लेकर चिन्तित हुआ कि मेरे अपलक सहस्र आँखें नहीं हैं !। ८३५

अरैकडै	यिट्टमुक्	कोडि	यायुवुम्
परैतबु	तवत्तिनान्	पडैत्त	पोडुमे
निरैवळै	मुत्तगैयिन्	निन्ऱु	नङ्गैदन्
करैयड्	नन्तलक्	कडुक्कैन्	रुत्तिनान् 836

निरै वळै मुत्त कं-पंक्तियों में कंकण-भूषित हाथों के साथ; इ निन्ऱु नङ्गै तन्-यहाँ जो खड़ी है, इस नायिका के; करै अडु-तट्हीन; नल् नलम् कडुक्कु-उत्तम सौन्दर्य-सागर में क्रीड़ा करने के लिए; पुरै तपु तवत्तिन्-दोषरहित तपस्या द्वारा; नान् पडैत्त-मैंने जो पायी; अरै कडैयिट्ट-आधी जिसके पीछे लगी हुई है; अँत्त मु

कोटि-मेरी तीन करोड़ (यानी कुल साढ़े तीन करोड़) साल की; आयुवृम्-आयु के दिन भी; पोतुमे-पर्याप्त होंगे क्या । ८३६

अपने हाथों में पंक्तियों में कंकण पहने हुए ये मेरे सामने खड़ी हैं । मैंने अपराधहीन तपस्या की और साढ़े तीन करोड़ साल की आयु पायी । पर इनके सौन्दर्य रूपी सागर में क्रीड़ा करने के लिए, उतनी आयु पर्याप्त होगी क्या ? । ८३६

❀ तेवरु मवुणरुन् देवि मारुडन्, कूवल्शैय् तौळिलितर् कुडिनै शैय्दिड
मूवुल हमुमिवर् मुऱैयि ताळयान्, एवल्शैय् दुय्हुवै नित्तियेन् रैण्णितान् 837

तेवरु-देव; अवुणरुन्-अमुर; तेविमार् उटन्-अपनी-अपनी पत्नियों के साथ; कूवल् चैय् तौळिलितर्-बुलाने पर सेवा करने के काम में लगे हुए; कुटिमै चैय्तिट- (दासता का काम) परम्परा से करते आते हैं; मू उलकमुम्-(मेरे अधिकाराधीन) तीनों लोकों पर; इवर् मुऱैयित् आळ-ये यथाक्रम शासन करें; इत्ति-आगे; यान् एवल् चैय्तु-मैं कैकर्य करके; उय्कुवैन्-तर जाऊंगा; अन्ऱु-ऐसा; उन्तितान्-(रावण ने) विचार किया । ८३७

अब मैं त्रिलोकाधिपति हूँ । देव और दानव अपनी पत्नियों के साथ मेरी दासता परम्परा से करते आ रहे हैं । अब वह आधिपत्य इनके सिपुर्द कर दूंगा और मैं भी उनकी सेवा करके तर जाऊंगा । ८३७

❀ उळैवुऱु तुयर्मुहत् तौळियि दामैत्तिन्
मुळैयैयि इलङ्गिडु मुऱुव लैन्बडुम्
तळैयविळ् कुळलिवट् कण्डु तन्दवैन्
इळैयवट् कळिप्पत्तैन् तरशैन् रैण्णितान् 838

उळैवु उऱु-उद्विग्न; तुयर् मुकतु-दुःख-प्रदर्शक आनन की; औळि इतु आम औत्तिल्-आभा यह है तो; मुळै अयिरु इलङ्किटुम्-अंकुर-सम दांतों से शोभित; मुऱुवल् अन्पटुम्-मुस्कुराहट (का वदन) कैसा (अनुपम) होगा; तळै अविळ् कुळल्-खुले केश की; इवल् कण्टु-इनको देखकर; तन्त-मुझे जिसने (समाचार) दिया; अन् इळैयवट्कु-अपनी छोटी वहिन को; अन् अरचु-अपना राज्य; अळिप्पैन् अन्ऱु-दे दूंगा, ऐसा; रैण्णितान्-रावण ने सोचा । ८३८

अब वह शूर्पणखा का स्मरण कृतज्ञता के साथ करने लगा । ये अब उद्विग्न है और इनका मुख-भाव दुःख का परिचायक है । इस स्थिति में भी इनकी शोभा इतनी मनोरम है । अगर इनके मुख पर अंकुर के समान हास दिखाई दे यानी ये सुखी हो जायँ, तो कितनी सुन्दर लगेंगी । इनको ढूँढ़ लेकर शूर्पणखा ने मुझे इनका समाचार दिया । खुले केश की इनको मुझे दिलाने के प्रत्युपकार में अपनी छोटी वहिन को मैं अपना राज्य ही दे दूंगा । रावण ने भावातिरेक में ऐसा सोचा । ८३८

ॐ आण्टैया	तत्तैयन्	वुन्ति	याशैमेल
मूण्डळु	शिन्दै	मुडैयि	लोन्डैक्
काण्डलुड	गण्णिनीर्	तुडैत्त	कड्पिताळ
ईण्डळुन्	दरुळुमैन्	इन्निय	कूडिनाळ 839

आण्टैयान्—वहाँ रहकर; तत्तैयन् उन्ति—वह सब सोचकर; आचै मेल मूण्डु
 अँळु—प्रबल रूप से उभरी इच्छा-सहित; चिन्ततै—मन का; मुडै इलोन् तत्तै—अत्याचारी
 को; कण्णिन् नीर् तुडैत्त—आँखों के आँसू पोंछकर; कड्पिताळ—पतिव्रता ने; ईण्डु
 अँळुन्तरुळुम्—यहाँ पधारिए; अँन्ड—यह; इन्निय कूडिनाळ—मधुर (स्वागत-वचन)
 कहा । ८३९

वह वहाँ रहकर ऐसा सोचता रहा । उसका मन प्रबल रूप से
 उमँगनेवाले राग से भर गया । उधर पतिव्रता देवी सीता ने अपनी आँखों
 से अश्रु पोंछ लिये । उस अधर्मी अत्याचारी से मधुर स्वर में 'इधर पधारिए'
 कहा । ८३९

ॐ एत्तिन्	ळैयदलु	मिरुत्ति	रोण्डैन्
वैत्तिरत्तु	ताशनम्	विदियि	नल्हिताळ
मात्तिरि	तण्डयल्	वैत्त	वञ्जनुम्
पूतौडर्	शालैयि	तिरुन्द	पोळ्दिने 840

एत्तिन्—स्वागत करके; अँय्तलुम्—(रावण के) अन्दर आते ही; इरुत्तिर्
 ईण्डु अँत—यहाँ विराजिए, कहकर; वैत्तिरत्तु आचत्तम्—वेत्तासन; विदियिन्—यथा-
 विधि; नल्हिताळ—दिया; मा तिरि तण्डु—गौरवपूर्ण त्रिदण्ड; अयल् वैत्त—पास
 रखकर; वञ्जन्तम्—बंचक भी; पू तौडर् चालैयिन्—पुष्पपूर्ण पर्णशाला में; इरुन्त
 पोळ्दिने—जब रहा, तब । ८४०

उन्होंने स्तुति के साथ स्वागत किया, तो वह दुराचारी पर्णशाला में
 आ गया । सीताजी ने 'इधर विराजिए' कहकर एक वेत्त का बुना आसन
 डसवाकर विठाया । वह कपटी रावण अपने आदरणीय त्रिदण्ड को पास
 रखकर पर्णशाला के अन्दर उस आसन पर आसीन जब हुआ, तब— । ८४०

नडुङ्गिन्	मलैहळु	मरन्नु	नावविन्
दडुङ्गिन्	पडवैयुम्	विलङ्गु	मञ्जिन
पडङ्गुडैन्	दौडुङ्गिन्	पाम्बुम्	बादहक्
कडुन्दीळि	लरक्कत्तैक्	काणुड	गण्णिने 841

पातक कटुम् तौळिल् अरक्कत्तै—पातक, कठोर अत्याचारी-राक्षस को; काणुम्
 कण्णिन्—वहाँ देखकर; मलैकळुम्—पर्वत और; मरन्नु—वृक्ष; नडुङ्किन्—कापे;
 पडवैयुम्—खग भी; ना अविन्नु—अवाक्; अटङ्किन्—चुप रहे; विलङ्कुम् अञ्चित-
 जानवर भी मयातुर हुए; पाम्बुम्—सर्प भी; पटम् कुरैन्नु—कन फैलाना छोड़कर;
 ओटुङ्किन्—ठिठुरे रहे । ८४१

पातक और कठोर दुराचारी को वहाँ देखकर पर्वत और तरु काँप उठे । खगगण अवाक हो दब गये । जानवर भयभीत हुए । सर्प भी फन समेटकर दबे पड़े रहे । ८४१

❖ इरुन्दवन् यावदिव् विरुक्कै योङ्गुडै, अरुन्दवन् यावन्नोर् यारै यैन्नुलुम्
विरुन्दित् रिक्कळि विरहि लारैत्तप्, पेरुन्दडङ् गण्णवळ् पेशन् मेयित्ताळ् 842

इरुन्तवन्-आसनस्थ हो रावण ने; इ इरुक्कै यावतु-यह वासस्थान कौन है; ईङ्कु उरै-यहाँ का वासी; अरुम् तवन् यावन्-श्रेष्ठ तपस्वी कौन; नोर यारै-आप कौन हैं; यैन्नुलुम्-पूछा, तब; इ वळि-(ये) यहाँ आगत; विरुन्तितर्-अतिथि हैं; विरकु इलार्-कपटहीन (साधु) हैं; अँत्त-सोचकर; पेरुम् तटम् कण् अवळ्-विशाल आयताक्षी सीताजी; पेचल् मेयित्ताळ्-बोलने लगीं । ८४२

वहाँ आसनस्थ रावण ने कुतूहलप्रदर्शक प्रश्न किये । यह वास कौन सा है ? यहाँ के वासी श्रेष्ठ तपस्वी कौन हैं ? आप कौन हैं ? तब देवी ने सोचा कि ये निष्कपट अतिथि हैं । विशाल आयताक्षी सीताजी बोलीं । ८४२

❖ तयर्दन्	उँल्लुलत्	तनयत्	उम्बियो
डुयर्हुलत्	तन्नेशौ	लुच्चि	येन्दित्तान्
अयर्वल	त्तिववळि	युडैयु	सन्तवन्
पैयिरितैत्	तैरिहुदिर्	पेरुमै	योरैन्नाळ् 843

पेरुमैयोर्-आदरणीय; तौल् कुलम्-प्राचीन कुल के; तयर्दन् तनयत्-दशरथ के पुत्र; तम्पियोडु-अपने अनुज के साथ; उयर् कुलत्तु अन्तै-श्रेष्ठकुल-जाता अपनी माता की; चौल् उच्चि एन्तित्तान्-आज्ञा सिर पर धारण करके; अयर्व इलन्-विना संताप के; इ वळि उडैयुम्-यहाँ वास करते हैं; सन्तवन्-उनका; पैयिरितै-नाम को; तैरिहुदिर्-आप जानते ही होंगे; यैन्नाळ्-कहा (देवी ने) । ८४३

आदरणीय अतिथि ! प्राचीन और प्रसिद्ध इक्ष्वाकुकुल के दशरथ के पुत्र अपने भाई के साथ इधर रहते हैं । वे अपनी उच्चकुलजाता माता की आज्ञा शिरोधारण करके विना किसी सन्ताप के इधर आये हैं और रहते हैं । उनका नाम आप जानते ही होंगे । ८४३

❖ केट्टत्तैन्	कण्डिलैन्	कैळुवु	गङ्गैनीर्
नाट्टिडै	योरुमुडै	नण्णि	नेन्मलर्
वाट्टडङ्	गण्णिनीर्	यावर्	मामहळ्
काट्टिडै	यरुम्बहर्	कळिक्किन्	योरैन्नान् 844

केट्टत्तैन्-हाँ सुना है; कण्डिलैन्-देखा नहीं है; कैळुवु कङ्कै नीर्-अत्यधिक गंगा-जलसमृद्ध; नाट्टिडै-(उस कोसल) देश में; ओरु मुडै नण्णितैन्-एक बार गया

या; मलर्-कमलपुष्प और; वाळ्-तलवार के समान; तटम्-विशाल; कण्णिन् नीर्-आँखों से शोभायमान आप; यावर् मा मकळ्-किनकी श्रेष्ठ दुहिता हैं; काट्टु इट्टे-वन के मध्य; अरुम् पकळ् कळिक्किन्नीर्-मूल्यवान दिनों को (व्यर्थ) काट रही हैं); अँन्नान्-पूछा । ८४४

रावण ने उत्तर में कहा कि हाँ ! हमने सुना है । पर समक्ष नहीं देखा है । कोसल देश में भी, जो गंगा-जल से अत्यधिक समृद्ध बना है, एक बार गया हुआ था । पर वह बात छोड़ो । कमल और तलवार के सदृश आँखों से शोभायमान आप किसकी सुपुत्री हैं ? वन में आकर अपने अच्छे दिन व्यर्थ कर रही हैं । ८४४

❀ अत्तहमा	नैरिपड	रडिह	णुम्मलाल्
नितैवदोर्	दैय्वम्वे	रिलाद	नैञ्जितान्
शत्तहन्मा	मडमहळ्	शत्तहि	काहुत्तन्
मत्तैविया	नैन्ऱत्तळ्	मरुविल्	कऱ्पित्ताळ् 845

मऱ् इल् कऱ्पित्ताळ्-अकलंक पतिव्रता सीतादेवी ने; अत्तकम् मा नैरि पटर्-अनघ उत्तम मार्ग-गामी; अट्टिकळ्-साधु महात्मा; नुम् अलाल्-आप जैसे के सिवा; नितैवतु-स्मरण करते; ओर् तैय्वम् वेऱ् इलात्-किसी और देव का (जो) नहीं; नैञ्चितान्-वैसे मन वाले; मा चत्तकन्-उन महान जनक की; मड मकळ्-बाला पुत्री हैं; चत्तकि-जानकी नाम की; यान्-मैं हूँ; काकुत्तन् मत्तैवि-काकुत्स्थ की पत्नी; अँन्ऱत्तळ्-कहा । ८४५

अनिन्द्य पातिव्रत्यशीला देवी ने सहज ही उत्तर दिया कि अनघ मार्ग-गामी साधु महात्मा ! मैं उन उत्तम जनक की दुहिता हूँ, जिनके स्मरण में आप जैसे महात्माओं के अलावा कोई अन्य देव ही नहीं रहता । मैं काकुत्स्थ की पत्नी हूँ । ८४५

❀ अव्वळि	यत्तैयत्त	वुरैत्त	वायिळ्
वैव्वळि	वरुन्दितीर्	विळैन्द	मूप्पित्तीर्
इव्वळि	यिरुविनै	कडक्क	वैण्णितीर्
अँव्वळि	निन्ऱुमिन्	इय्दि	तीरैन्नाळ् 846

अत्तैयत्त उरैत्त-यह जिन्होंने कहा; आय् इळै-उन आभरणभूषिता ने; अ वळि-तब; विळैन्त मूप्पित्तीर्-बहुत वृद्ध; इ वळि-इस तपस्या के जीवन में; इरु वित्तै कटक्क-(पाप-पुण्य) दोनों कर्मों का संतरण करने के; अँण्णितीर्-इच्छुक; वैम् वळि वरुन्तितीर्-कठोर मार्ग पर सायास आये हैं; अँ वळि निन्ऱुम्-कहाँ से; इन्ऱु अँय्तितीर्-आज पधारे; अँन्नाळ्-(सहानुभूति में) पूछा । ८४६

यह वृत्तान्त कहने के बाद देवी ने रावण से प्रश्न किया । हे अति वृद्ध संन्यासी ! पापपुण्य-सन्तरणार्थ व्रत में लगे रहे तपस्वी ! आप बहुत

दूर का कठिन मार्ग तय करके आये लगते हैं। आप कहाँ से पधारे हैं? । ८४६

❖ इन्दिरत् किन्दिर नैळुद लाहलाच्, चुन्दर नान्मुहन् मरविर् इोन्तिनान्
अन्दरत् तोडुम्व् वुलहु माळ्हिन्नान्, मन्दिरत् तहमर् वैहु नाविनान् 847

इन्तिरत्कु इन्तिरत्-देवेन्द्र का भी इन्द्र; अँळुतल् आकला-जिसका, चित्रांकन कठिन है; चुन्तरत्-वैसा सुन्दर पुरुष; नान्मुकन् मरपिल् तोन्तिनान्-चतुर्मुख के वंश में जनित; अन्तरत्तोडुम्-आकाशलोक के साथ; अँ उलकुम्-सभी लोकों पर; आळ्किन्नान्-शासन करता है; मन्तिरत्तु अह मर्-मंत्रकोष वेदों का; वँकुम्-निलय; नाविनान्-जिसकी जीभ है, वह । ८४७

तब कपटसंन्यासी ने रावण की महिमा सुनायी। देवेन्द्र का इन्द्र; चित्र खींचने में कठिन हो, ऐसा रूपवान; चतुर्मुख का वंशजात; आकाशलोक के साथ सभी लोकों का राजा और मन्त्रों से पूर्ण दिव्य वेदों से अभ्यस्त जीभ का स्वामी । ८४७

❖ ईशनाण्	डिरुन्दपे	रिलङ्गु	माल्वरै
ऊशिवे	रौडुन्बडित्	तुरुट्टु	मूडुत्तान्
आशैहळ्	शुमन्दपे	रमरि	यानैहळ्
पूशल्शैय्	मरुपित्तैप्	पौडिशैय्	मारबित्तान् 848

ईचन्-शिवजी; आण्टु इरुन्त-जहाँ वास करते थे; इलङ्कुमाल् वरै-उस शानदार पर्वत को; ऊचि वेर् ओडुम्-सूची से पतली-पतली जड़ों के जालों के साथ; पडित्तु उरुट्टुम्-उखाड़कर लुढ़काने का; ऊडुत्तान्-बलशाली; आचैकळ् चुमन्त-दिशावाही; पेर् अमर् यानैकळ्-बड़े योद्धा गजों के; पूचल् चैय्-युद्धोपयुक्त; मरुपित्तै-दाँतों का; पौटि चैय् मारुपित्तान्-चूर्णकारी वक्ष-युक्त । ८४८

शिवजी के वास के कैलासपर्वत को आमूल उखाड़कर लुढ़काने में समर्थ; दिशावाही योद्धा गजों के युद्धप्रयुक्त दाँतों का चूर्णकारी वक्षयुक्त; । ८४८

❖ निरुपवर् कडैत्तलै निरैन्द तेवरे, शौरुपहु मरुवन् पेरुमै शौल्लुङ्गाल्
करुपह मुदलिय निदियङ् गैयन, पौरुपदि मानन्दे रिलङ्गे पौन्नहर् 849

कटै तलै निरैन्तु निरुपवर्-उसके द्वार पर भीड़ में जो खड़े हैं, वे; तेवरे-देव ही हैं; करुपकम् मुतलिय नितियम्-कल्पतरु आदि देवलोक की निधियाँ; कैयन्त-उसके हाथ में हैं; पौन् पति-निधिपति का; मानम्-(पुष्पक नाम का) यान; तेर्-उसका रथ है; पौन्नकर- (उसकी) स्वर्णपुरी; इलङ्कै-लंका है; मरु-और; अवन् पेरुमै-उसकी महिमा; शौल्लुङ्गाल्-कहते समय; चौल् पकुम्-शब्द अपर्याप्त रह जायेंगे । ८४९

उसके द्वारों पर उसकी कृपा की प्रतीक्षा में जो भीड़ लगाकर खड़े रहते हैं, वे देव हैं। कल्पतरु आदि देव-निधियाँ उसके अधीन हैं।

निधिपति कुबेर का पुष्पकयान उसका रथ है। उसकी राजधानी सोने की लंका है। उसकी महिमा कहने लगे, तो शब्द दुर्बल पाये जायँगे। ८४९

[अतिरिक्त दो पद का सार : तिलोत्तमा आदि अप्सराएँ उसके वैभव से आकृष्ट होकर लंका में आयी हैं और उसका पानदान और पादरक्षक उठाना और पैर सहलाना आदि सेवाएँ वजाती हैं। १

चन्द्र और सूर्य उसके मन के अनुसार चलते हैं। इन्द्र आदि देव उसके प्रासाद की रखवाली करते हैं। २]

पौत्तह	रत्तिनुम्	पौलन्गौ	णाहर्दम्
तौत्तह	रत्तिनुम्	तौडर्न्द	मानिलत्
तन्तह	रत्तिनु	मितिय	वीण्डवन्
नन्तह	रत्तन	नवैयि	लादन् 850

पौत् नकरत्तिनुम्—स्वर्णपुरी, देवेन्द्र की राजधानी, अमरावती में; पौलन् कौळ नाकर् तम्—सुन्दर नागों के; तौल् नकरत्तिलुम्—प्राचीन (पाताल की) भोगवती नाम के नगर में और; मा निलत्तु तौडर्न्त—इस विशाल भूलोक में पास-पास रहनेवाले; अ नकरत्तिनुम्—नगरों में किसी में भी; इत्तिय—सुखद; नवै इलातन्—दोषहीन पदार्थ; ईण्डु—मिलकर; अवन् नल् नकरत्तत—उसके श्रेष्ठ नगर में प्राप्त होते हैं। ८५०

देवेन्द्र-नगर अमरावती में, सुन्दर नागों के भोगवती नामक नगर में और भूलोक के पास-पास लगातार रहनेवाले सभी नगरों में किसी भी नगर में प्राप्य सभी सुखदायी और निर्दोष विलासिता के पदार्थ सब मिलकर उसके नगर में आ गये हैं। ८५०

ॐ ताळुडे	मलरुळोन्	तन्द	वन्दमिल्
नाळुडे	वाळ्क्कैय	नारि	बाहत्तन्
वाळुडे	तडक्कैयन्	वारि	वैत्तवैड्
गोळुडे	शिरैयितन्	गुणङ्गण्	मेयिनान् 851

ताळ उटे मलर् अळोन्—नालसहित कमल पर आसीन; तन्त—से दत्त; अन्तम् इल् नाळ उटे वाळ्क्कैयन्—अन्तहीन आयु-प्राप्त; नारि पाकत्तन्—अर्धनारीस्वर शिव की; वाळ् उटे—(दत्त) तलवार से युक्त; तट् कैयन्—विशाल-हस्त; वारि वैत्त—समेटकर एक स्थान पर रखे हुए; वैम् कोळ उटे—बलिष्ठ ग्रह जिसमें है, उस; चिरैयितन्—काराग्रह के पति; कुणङ्कळ् मेयिनान्—उत्तम गुणी। ८५१

कमलासनदत्त अनन्त आयु प्राप्त उसके हाथ में अर्धनारीश्वर-प्रदत्त चन्द्रहास तलवार है। उसके काराग्रह में सभी ग्रह एक साथ बन्द कर रखे गये हैं, वह गुणगणपूर्ण है। ८५१

वैम्मैदी	रौळुक्किनन्	विरिन्द	केळवियन्
शैम्मैयोन्	मन्मदन्	तिहैक्कुञ्ज	जैव्वियान्
अैम्मैयो	रन्नेवरु	मिऱैव	रेयैनुम्
मुम्मैयोर्	पैरुमैयु	मुऱुम्	पैऱियान् 852

वैम्मै तीर् ओळुक्कित्तन्-कठोरता-रहित आचरण का; विरिन्त केळवियन्-विस्तृत श्रवण-ज्ञानी; चैम्मैयोन्-सदाचारी; मन्मदन् तिकैक्कुम् चैव्वियान्-मन्मथ भी ठिठक से भर जाए, ऐसा रूपवान; अैम्मैयोर् अन्नेवरुम्-कहीं के कोई भी; इऱैवरे अैनुम्-जिनको आदिदेव मानते हैं; मुम्मैयोर् पैरुमैयुम्-उन त्रिदेवों की महिमाएँ; मुऱुम् पैऱियान्-सम्पूर्ण रूप से इसने पायी है। ८५२

उसका आचरण क्रूरता-रहित है। विस्तृत रूप से उसने वेद-शास्त्र पढ़े-सुने हैं। नेकचलन है। मन्मथ को भी उसका रूप-सौन्दर्य देखकर तरस होता है। जिन त्रिदेवों को सभी लोकवासी अपने आदिदेव मानते हैं, उन सभी की सम्मिलित महिमाएँ इसके पास हैं। ८५२

अत्तैत्तुल	हिनुमळ	हमैन्द	नङ्गैयर्
अैन्नैपल	रवन्ऱुत्त	दरुळि	त्तिच्चैयोर्
नित्तैत्तत्त	रुहवु	मुदव	नेरुहलन्
मनक्कित्ति	याळौरु	मादै	नाडुवान् 853

अत्तैत्तु उलक्किन्नु-सभी लोकों में; अळुक्कु अमैन्त नङ्गैयर्-जो सौंदर्य-भरी वनिताएँ हैं; अवन् तत्तु अरुळिन्-उसकी कृपा की; इच्चैयार्-इच्छुक हैं; अत्तै पलर्-कितने ही अनेक; नित्तैत्तत्तर् उरुक्कुम्-उसका स्मरण कर पिघल रही हैं; उतव नेरुक्कलन्-उन पर कृपा कर सहायता देने की सम्मत नहीं होकर; मतक्कु इत्तियाळ्-अपने मनोनुकूल; और मादै नाडुवान्-एक रमणी की खोज में है। ८५३

सभी लोकों की सभी आकर्षण नारियाँ उसकी कृपा के लिए लालायित हैं। उनमें कितनी ही उसके स्मरण में उसकी कृपा प्राप्त न होने से रो रही हैं। वह उन पर कृपा नहीं करता; पर अपने मनोनुकूल एक रमणी की खोज में है। ८५३

❀ आण्डैया	नरशुवीऱ्	ऱिरुन्द	वन्नहर्
वेण्डियान्	शिल्बह	लुऱैदन्	मेयितेन्
ईण्डिया	निरुन्दवऱ्	पिरियु	नैज्जिलेन्
मीण्डने	तवनुडै	वित्तैय	मुऱुवान् 854

आण्डैयान्-वह; अरशु वीऱ्ऱिरुन्त-जहाँ से राज करता है; अ नकर्-उस नगर में; यान् वेण्टि-में चाहकर; चिल पकल् उऱैत्तल् मेयितेन्-कुछ दिन रहा; यान् ईण्टु इरुन्तु-मैं उसके संग रहकर; अवन् पिरियुम् नैज्जु इलेन्-उससे अलग होना न चाहकर; अवनुडै वित्तैयम् मुऱुवान्-उसका एक कार्य साधने हेतु; मीण्डनेन्-लौटा। ८५४

उसकी राजधानी में मैं कुछ दिन अपनी इच्छा से रहा । उसको छोड़कर आने को मेरा मन नहीं हुआ । तो भी उसका एक कार्य साधने के ही हेतु वहाँ से लौट आया हूँ । ८५४

❖ वेदमुम् वेदिय ररुळुम् वैः(ह्)कलाच्, चेदन् मन्नुयिर् तित्तुन् दीविनैप्
पादह वरक्कर्दम् पदियिन् वैहुदइ, केदुवन् नुडलमु मिहैयन् रण्णुवीर् 855

उटलमुम् मिकै अँन्नू अँणुवीर्-शरीर को भी अनावश्यक माननेवाले; वेतमुम्-(आप) वेदों और; वेतियर् अरुळुम्-वेदज्ञ ब्राह्मणों की कृपा को; वै 'कला-न चाहकर; चेतन्-चेतन; मन् उयिर्-अक्षय जीवों (मनुष्यों) के; तित्तुन्-खादक; ती वित्त-पापी; पातक-पातक; अरक्कर् तम् पतियिन्-राक्षसों के नगर में; वैकुतड्कु-ठहरे, इसका; एतु अँन्न-कारण क्या है । ८५५

देवी को यह बात अच्छी नहीं लगी । उन्होंने पूछा । आप तपस्वी है । मोक्षसाधन में शरीर को भी अनावश्यक मानते हैं । आप वेदों और वेदों के ज्ञाता ऋषियों का अनुग्रह न चाहकर चेतन और अक्षय जीवधारी मनुष्यों के खादक, कुकर्म पातक राक्षसों की नगरी में जाकर रहे —इसका कारण क्या है ? । ८५५

❖ वनत्तिडै मादवर् मरुङ्गु वैहलीर्, पुत्तइरि नाट्टिडैप् पुत्तिद रुरपुह
नित्तैक्किली ररुन्नैरि नित्तैक्कि लादवर्, इत्तत्तिडै वैहिती रँन्शैय् दीरँन्डाळ् 856

वनत्तु इटै-वन में; मा तवर् मरुङ्कु-महान तपस्वियों के पास; वैकलीर्-नहीं ठहरे; पुत्तु तिर नाट्टु इटै-जलसमृद्ध उर्वर प्रदेशों में; पुत्तिद-पवित्राचरण; ऊर् पुक्-(लोगों के) ग्रामों में जाकर रहना; नित्तैक्किलीर्-नहीं सोचा; अरु नैरि नित्तैक्किलातवर्-धर्म-मार्ग-विमुख; इत्तत्तु इटै-जातियों के बीच; वैकितीर्-रहे; अँन् चैय्तीर्-क्या ही (अनुचित कार्य) किया; अँन्डाळ्-देवी ने पूछा । ८५६

वन में महान तपस्वी लोग वास करते हैं । उनके सत्संग में नहीं रहे । जलसमृद्ध प्रदेशों के पवित्र गृहस्थ लोग रहते हैं । न आपने उन ग्रामों में जाना पसन्द किया । धर्ममार्गविमुख राक्षसों की जाती के लोगों में जाकर रहे ! यह क्या ही अनुचित काम आपने किया है ! देवी ने अपना भाव व्यक्त किया । ८५६

मङ्गैयः(ह्) दुणर्त्तल् केट्ट वरम्बिलान् मरुविर् शीरन्दाळ्
वैङ्गण्वाळ्ळरक्क रँन्न वैरुवाळ् मैय्मै नोक्कि
तिङ्गळ्वाण् मुहत्ति नाळे तेवरिर् शीय रन्ने
वैङ्गळ्पो लियर्क्कु नल्लार् निरुदरे पोलु मैन्डान् 857

मङ्कै-देवी को; अ. तु उणर्त्तल् केट्ट-वह समझाना सुनकर; वरम्पु इलान्-अत्याचारी; मरुविल् तोरन्दाळ्-निर्दोष; वैम् कण् वाळ् अरक्कर्-कूर राक्षस का; अँन्त-नाम लेते ही; वैरुवाळ्-भयभीत हो जो हो जाती है, उनकी; मैय्मै नोक्कि-

सच्ची स्थिति जानकर; तिङ्कळ् वाळ् मुक्ततिताळे-चन्द्रोज्ज्वलमुखी; तेवरिल् तीयर् अन्ने-देवों से अधिक बुरे नहीं तो; अँङ्कळ् पोलियर्क्कु-हम जैसों के लिए; निरुतरे-राक्षस ही; नल्लार् पोलुम्-अच्छे हैं; अँन्नान्-कहा (रावण ने) । ८५७

अत्याचारी रावण ने देवी का यह समझाना सुना । समझ गया कि ये राक्षस का नाम लेते ही भड़क उठेंगी । उनकी सच्ची स्थिति देखकर उसने कहा कि उज्ज्वल चन्द्रमुखी ! राक्षस देवों से अधिक (या के समान) बुरे नहीं होते । खासकर हमारे लिए राक्षस ही अच्छे हैं । ८५७

वैयिळै यन्न शौल्लत् तीयवर्च् चेरदल् शैय्दाल्
तूयव रल्लर् शौल्लिर् रीन्नेर् तौडर्न्दो रँन्नाळ्
मायैवल् लरक्कर् वल्लर् वेण्डुरु वरिक्क वेन्ब
तायव ळिड् इरुत्ता ळादलि लयलीन् ईण्णाळ् 858

अन्न चौल्ल-वह कहने पर; चैय् इळै आयवळ्-श्रेष्ठ आभरणों से अलंकृत सीताजी; मायै वल् अरक्कर्-मायावी बलिष्ठ राक्षस; वेण्डु उर-मनमाना रूप; वरिक्क वल्लर्-लेने में समर्थ हैं; अँत्पु-यह बात; अरितल् तेरुत्ता-नहीं जान पायीं; आतलित्-इसलिए; अयल् ओन्नु-और कोई बात; अँण्णाळ्-न सोचती; चौल्लिल्-कहना ही तो; तौल् नैर् तौडर्न्दो-प्राचीनों के सम्मार्ग पर जो चलते हैं, वे; तीयवर् चेरत् चैय्ताल्-बुरों से मिलते हैं तो; तूयवर् अल्लर्-पवित्र नहीं रहेंगे; अँन्नाळ्-कहा । ८५८

रावण की वह बात सुनी । उत्तम आभरणों से अलंकृत सीताजी को मालूम नहीं था कि बलिष्ठ मायावी राक्षस मनमाना रूप लेने में समर्थ हैं । इसलिए उन्होंने कुछ अन्यथा नहीं सोचा । उन्होंने अपना मन्तव्य यों सुनाया कि प्राचीन परम्परागत सम्मार्गगामी श्रेष्ठ लोग बुरे लोगों की संगति करेंगे तो वे भी पवित्र नहीं रहेंगे । ८५८

अयिर्त्तत्त ळाहु मैन्नेर् रैयुर् वहत्तुक् कौण्डान्
पैयर्त्तदु तुडैक्क वैण्णिप् पिडिडुर् पेश लुत्तान्
मयक्कु मुलह मून्ऱिल् वाळ्ववर्क्क कनैय वल्लोर्
इयर्कैयि निरुप् दल्ला लियर्ऱला नैरिये दँन्नान् 859

अयिर्त्तत्त आकुन्-शंकित हो गयीं; अँन्नु-सोचकर; ओर् ऐयुडु-एक संशय; अकत्तु कौण्डान्-मन में करके; अतु-उसे; पैयर्त्तु तुडैक्क वैण्णि-हटाकर मिटाना चाहते हुए; पिडितु उर-दूसरे प्रकार से; पेचल् उरुत्ता-बोलने लगा; मयक्कु अडम्-निर्धम; उलकम् मून्ऱिल् वाळ्ववर्क्कु-तीनों लोकों के वासियों के लिए; अनैय-उन; वल्लोर्-बलवान राक्षसों के; इयर्कैयिन्-स्वभावानुसार; निरुपु अल्लाल्-वर्तन के सिवा; इयर्ऱल् आम् नैर्-अनुसरण योग्य मार्ग; एतु-कहाँ; अँन्नान्-कहा । ८५९

भगवती शंकितमन हो गयी हैं —ऐसा एक संशय रावण के मन में

हो गया । उसने उस शंका को निर्मूल करना चाहा । अतः कुछ दूसरे प्रकार से बात चलायी । कहा— तीनों लोकों के वासी निर्भ्रम रहना चाहें, तो उन्हें उन वलिष्ठ राक्षसों के स्वभाव के अनुरूप वर्तन के सिवा कोई चारा नहीं रहता । ८५९

तिरुन्दैरि	वज्ज	तच्चोर्	चैप्पलुज्	जैप्प	मिक्काळ्
अरुन्दरु	वळ्ळ	लोण्डिङ्	गरुन्दव	मुयलु	नाळुळ्
मरुन्दलै	तिरिन्द	वाळ्क्कै	यरक्कर्दम्	वरुक्कत्	तोडुम्
इरुन्दनर्	मुडिवर्	पिन्तै	यिडरिलै	युलहि	लैन्ऱाळ् 860

तिरुम् तैरि वज्जन्-इंगितज्ञ वंचक के; अ चोल् चैप्पलुम्-वह कथन करते ही; चैप्पम् मिक्काळ्-अति नेक देवी; अरुम् तरु वळ्ळल्-धर्म-संस्थापक हमारे प्रभु; ईण्डु-अव; इड्कु-यहाँ; अरुम् तवम् मुयलुम् नाळ उळ्-उत्तम तपस्या जितने समय करते हैं, उसके अन्दर; मरुम् तलै तिरिन्त-पापाचारी; वाळ्क्कै अरक्कर्-जीवन-यापनकारी राक्षस; तम् वरुक्कत्तोडुम् इरुन्ततर् मुडिवर्-अपने वर्गों के साथ मर मिटेंगे; पिन्तै-दाद; उलकिल् इटर् इलै-कोई दुःख नहीं रहेगा; अैन्ऱाळ्-कहा । ८६०

रावण वंचक था और इंगितज्ञ था । उसकी यह बात सुनकर निष्कपट देवी ने कहा कि हमारे धर्मसंस्थापक प्रभु यहाँ तपस्या करते हैं । उनके तपस्या के दिनों के पूरे होने के अन्दर ही पापाचारी राक्षस अपने वर्गों के साथ मर मिटेंगे । फिर इस संसार में कोई कष्ट नहीं रहेगा । ८६०

मानव	उरैत्त	लोडु	मानिड	ररक्कर्	तम्मै
मीत्तै	मिळिरुड्	गण्णाय्	वेरऱ	वैल्व	रैन्तिल्
यात्तैयि	तिन्तत्त	यैल्ला	मिळमुयल्	कौल्लु	मिन्नुम्
कूनुहिर	मडङ्ग	लेऱ्ऱिन्	कुळुवैमान्	कौल्लु	मैन्ऱान् 861

मानवल्-सम्मान्य देवी के; उरैत्तलोडुम्-कहने पर; मीत् अत मिळिरुम् कण्णाय्-मछली-सदृश चंचलाक्षी; मान्निटर् अरक्कर् तन्मै-मानव राक्षसों को; वेर् अर् वैल्वर्-जड़ से काटकर विजयी होंगे; अैन्तिल्-तो; यात्तैयिन् इत्तत्तै अैल्लाम्-सारे गजसमूहों को; इळ मुयल् कौल्लुम्-एक वाल शशक मार देगा; मिन्नुम्-चमकदार; कूर् उकिर्-तेज नाखूनों से युक्त; मडङ्क्ल् एऱ्ऱिन् कुळुवै-पुरुषसिंहों के वृन्द को; मान् कौल्लुम्-हरिण मार देगा; अैन्ऱान्-(व्यंग्य में) कहा । ८६१

सम्मान्य सीताजी का यह कथन सुनकर रावण ने व्यंग्य के साथ कहा कि मछली-सी चंचल आँखों से शोभित देवी ! मानव राक्षसों को मिटाकर विजयी हो जायँगे, तो एक वाल शशक गजसमूहों का नाश करा देगा । एक हरिण चमकदार तेज नाखूनों से युक्त पुरुषसिंहों को मिटा देगा । ८६१

मिन्त्रिरण् डन्नैय पङ्गि विरादनुम् वैहुळि पौङ्गिक्
 कन्त्रिय मतत्तु वेंत्रिक् करन्मुदर् कणक्कि लोरुम्
 पौन्त्रिय पूश लौन्ऱुड् केट्टिलीर् पोळु मॅन्ऱाळ्
 अन्ऱवर् कडुत्त दुन्नि मळैक्कणी रहवि शोर्वाळ् 862

मिन् तिरण्डु अत्तैय-विजली के पुंज के समान; पङ्कि-वालों से युक्त; विरातनुम्-
 विराध और; वैकुळि पौङ्कि-बढ़ते क्रोध से; कन्त्रिय-उत्तप्त; मतत्तु-मन का;
 वेंत्रि-विजयी; करन् मुतल् कणक्कु इलोरुम्-खर आदि असंख्यक; पौन्त्रिय-जब
 मरे, तब जो उठा; पूचल् औन्ऱुम्-वह शब्द कुछ; केट्टिलिर् पोळुम्-सुना नहीं था
 (आपने) शायद; अन्ऱाळ्-कहकर; अन्ऱु-उस दिन; अट्टत्तु उन्नि-जो हुआ
 (श्रीराम का व्रण पाना आदि) ध्यान कर; मळै कण् नीर्-मनोरम आँखों से आँसू;
 अरुवि चोर्वाळ्-धारा बहायी । ८६२

सीताजी ने उत्तर देते हुए कहा । विद्युत-पुंज के समान केशी विराध
 मरा । क्रोधोन्मत्त विजयशील खर आदि असंख्यक राक्षस उनसे लड़कर
 मरे । उनके मरने का शोर आपने सुना नहीं शायद ! यह कहते-कहते
 उन्हें श्रीराम का युद्ध के अवसर पर हुआ कष्ट स्मरण आ गया । तो
 उनकी (मनोरम) शीतल आँखों से अश्रु की धारा वह चली । ८६२

वाळरि वळ्ळ रन्नाल् मान्गण निरुद रन्नार्
 केळौडु मडियु मारुम् वात्तवर् किळरु मारुम्
 नाळैये काण्डि रन्ऱे नवैयिली रुणर्हि लीरो
 मीळरुन् दरुमन् दन्नै वेल्लुमो पाव मॅन्ऱाळ् 863

नवै इलीर्-निर्दोष साधु; वाळ् अरि वळ्ळल् तन्नाल्-प्रबल सिंह-सदृश प्रभु
 द्वारा; मान् कणम् निरुत् अन्नार्-मृग-वृन्द राक्षस; केळ् औडु मडियुम्-अपने बन्धु-
 बान्धवों के साथ मरेंगे; मारुम्-वह प्रकार और; वात्तवर् किळरुम्-देवों का उत्थान
 होगा; मारुम्-वह प्रकार; नाळैये काण्डिर्-अन्ऱे-कल ही देखिए न; मीळ्
 अरुम्-अनुपेक्षणीय; दरुमन् तन्ने-धर्म को; पावम् वेल्लुमो-पाप हरा देगा क्या;
 उणर्किलीरो-यह नहीं समझते क्या; अन्ऱाळ्-पूछा । ८६३

उन्होंने उसी भावावेश में कहा कि निर्दोष साधू ! भयंकर सिंह-
 सदृश प्रभु (श्रीराम) द्वारा राक्षस रूपी मृगवृन्द बन्धु-बान्धवों के साथ मृतक
 वनेंगे और देवों का उत्थान होगा । इनका होने का प्रकार आप कल ही
 देखेंगे । अनुपेक्षणीय धर्म को पाप हरा सकेगा क्या ? क्या आप यह
 नहीं जानते (कि धर्म विजयी रहेगा) ? । ८६३

तेनुड त्तमुद लाय वन्तमैन् शिलशीन् मालै
 तानुडैच् चैविह लूडु तवळ्वुर्त्तु तळिर्त्तु वीङ्गुम्
 ऊन्ऱुडै युडम्बि नानुम् मुरुहैळु मान् मून्ऱ
 मानिडर् वलिय रैन्ऱ मारुत्ताऱ् चोर्ऱम् वैत्तान् 864

तेन् उटन् अमुतु अळाय अन्न-शहद के साथ अमृत मिश्रित हो, ऐसा; मेन् चिल चोल-कोमल कुछ शब्दों की; मालै-माला (पंक्ति); तान् उटै चैविकळ् ऊटु-अपने कानों में; तवळ्वु उर-घुसने पर; तळिरत्तु वीङ्कुम्-आनन्द से प्रफुल्लित; ऊन् उटै उटम्पित्तानुम्-मांसल शरीरी रावण भी; मात्तिट् वलियर्-मनुष्य बलवान है; अन्त्र माइत्तल्-इस कथन से; उरु कैळु मात्तम् ऊन्त्र-स्वाभिमान के सजग होकर चुभते; वीइरम् बैत्तान्-नाराज हुआ । ८६४

सीताजी की बोली शहदमिश्रित अमृत के समान कोमल और मधुर थी । उन शब्दों की पंक्ति सुनकर आनन्द से रावण के कन्धे फूल उठे । और मांसल शरीर पुलकित हुआ । पर सीता के कहने का तात्पर्य था कि मानव वलिष्ठ हैं । उससे उसका स्वाभिमान जाग उठा और उसे चुभने लगा । तो उसे कोप हुआ । ८६४

शीरित्त	नुरैशैय्	वानच्	चिरुवलिप्	पुल्लि	योर्हट्
कीरैरु	मत्तिदन्	शैय्दा	नेन्ऱैडुत्	तियम्बि	तायैल्
तेरुदि	नाळै	येयव्	विरुवदु	तिण्डोळ्	वाडै
वीरिय	पौळुदु	पूळै	वीर्येन	वीव	तन्ऱे

865

चीरित्तन्-कुपित रावण; उरै चैय्वान्-बोला; अ चिरु वलि-उन क्षुद्रबली; पुल्लियोरुक्कु-अल्पों को; और मत्तिदन्-एक मानव ने; ईरु चैय्त्तान्-अन्त दिला दिया; अन्त्र अँटुत्तु इयम्पित्ताय् एल्-यह बात लेकर बोलेंगी तो; नाळैये तेरुति-(फल) कल ही जान लेंगी; अ इरुपतु तिण् तोळ् वाटै-(रावण की) उन बीस बलवान भुजाओं की हवा; वीचिय पौळुतु-जब बहेगी, तब; पूळै वी अँत-‘पूळै’ (नाम के) फूल के समान; वीवन्-वह मानव मिट जायगा । ८६५

क्रुद्ध रावण ने यों कहा— विराध आदि क्षुद्र बली अल्प राक्षस हैं । उनका एक मानव ने अन्त करा दिया, इस बात को लेकर तुम बोल रही हो । तो कल ही देखोगी कि इसका फल क्या होगा । रावण के बीस वलिष्ठ भुजाओं के पराक्रम की हवा जब बहने लगेगी, तब उसके सामने यह मनुष्य ‘पूळै’ फूल के समान (जो बहुत ही मृदु है) कहीं का नहीं रहेगा । ८६५

मेरुवैप्	परिक्क	वेण्डिल्	विण्णिनै	यिडिक्क	वेण्डिल्
नीरित्तैक्	कलक्क	वेण्डि	नेरुप्पिनै	यविक्क	वेण्डिल्
पारित्तै	यँडुक्क	वेण्डिर्	पानिहर्	शैम्जौ	लेळाय्
यारैत्तक्	करुदिच्	चीन्ना	यिरावणर्	करिदै	दैन्ऱान्

866

पाल् निकर् चैम् चोल् एळाय्-दूध-सम मधुरभाषिणी वाले; मेरुवै परिक्क वेण्डिल्-मेरु को उखाड़ना चाहो; विण्णिनै इटिक्क वेण्डिल्-आकाश को गिराना चाहो; नीरित्तै कलक्क वेण्डिल्-समुद्र को विलोडित करना चाहो; नेरुप्पिनै अविक्क वेण्डिल्-अग्नि को शांत करना चाहो; पारित्तै अँडुक्क वेण्डिल्-भूमि को खोद लेना चाहो; इरावणर्कु-रावण के लिए; अरितु एतु-कठिन क्या है; यार् अँत करुति-(उसको) कौन समझकर; चीन्ताय्-ऐसा बोलती हो; अँन्ऱान्-कहा । ८६६

पेण्णैन्प पिळैत्ता यल्लै युन्नैयान् पिशैन्दु तित्त
 अण्णुवै नैण्णिप् पिन्नै यैन्नुयि रिळप्प नैन्ता 871

विण्णवर् एवल् चैय्य-देव मेरी सेवा-टहल करते हैं; वैन्नु-मैंने उन पर विजय पायी; अन् वीरम् पाराय्-ऐसे मेरा पराक्रम नहीं देखा; मण् इटै-भूमि पर; पुळुवित् वाळुम्-कीड़ों के समान जीवित; मात्तिटर् वलियर् अन्नाय्-नर बलिष्ठ हैं, कहती हो; पेण् अन् पिळैत्ताय्-स्त्री हो, जीवित बच गयी हो; अल्लै-नहीं तो; उन्नै-तुम्हें; यान्-मैं; पिचैन्नु तित्त-पीसकर खाने को; अण्णुवैन्-सोचता; अण्णि-सोचकर (वैसा); पिन्नै-(करने के) बाद; अन् उयिर् इळप्पैन्-अपनी जान त्याग दूंगा; अन्ता-कहकर । ८७१

तब रावण ने कहा कि नारी ! तुमने क्या कहा ? मैंने देवों पर विजय पायी और वे मेरी सेवा-टहल कर रहे हैं । ऐसा मेरा पराक्रम तुम्हारे ध्यान में नहीं आया, और कहती हो कि भूमि पर कीड़ों का जीवन जो जी रहे है, वे मानव बली हैं ! तुम स्त्री हो, उसी कारण तुम यह कहने के बाद जीवित रह सकी हो ! नहीं तो मैं तुमको पीसकर खा जाने का विचार करूँगा; विचार क्या करूँगा, खा जाऊँगा । हाँ ! खाने के बाद मैं भी आत्महत्या कर लूँगा । ८७१

कुलैवुड लन्न मुन्नम् यारैयुड गुम्बि डावैन्
 तलैमिशै महुड मैन्नत् तनित्तति यित्तु ताङ्गि
 अलहिल्पु णरम्बै माद रडिमुट्टे येवल् शैय्य
 उलहमे छेळु माळुञ्ज जैल्वत्तु छुट्टैदि यैन्नान् 872

अन्नम्-हंस (की-सी चाल वाली); कुलैवु उरल्-मत घबड़ाओ; मुन्नम्-इसके पहले; यारैयुम् कुम्पिट्टा-किसी के सामने विनत नहीं; अन् तलै मिच्चै-(वैसे) अपने सिरों पर के; मुकुटम् अन्न-मुकुटों के समान; तत्ति तत्ति-अलग-अलग; इत्ति तु ताङ्कि-धारण करूँगा; अलकु इल् पूण्-अगणित आभरणधारिणी; अरम्पै मातर्-अप्सराएँ; अट्टि मुट्टे एवल् चैय्य-तुम्हारे चरणों की यथाज्ञा सेवा करेंगी; उलकम् एळु एळुम् आळुम्-चौदहों लोकों के शासन के; जैल्वत्तु-वैभवपूर्ण जीवन में; उट्टै-सुखी रहो; अन्नान्-कहा । ८७२

हंसिनी ! तुम व्याकुल मत बनो । मेरे सिर किसी के सामने कभी नहीं झुके हैं । उन पर जो मुकुट हैं, उनके समान मैं तुमको अपने सिरों पर बारी-बारी से धारण कर लूँगा । अगणित आभरणों से भूषित अप्सराएँ तुम्हारी चरण-सेवा करेंगी और तुम्हारी आज्ञाएँ बजा लायेंगी । चौदहों लोकों पर शासन करने का जो मेरा वैभव है, उसको तुम अपनाओ और सुखी रहो । ८७२

शैविहळैत् तळिर्क्कै याले शिक्कुडच् चेमज् जैय्दाळ
 कवियैयुड् गडक्कुम् वैन्ऱिक् काहुत्तन् कर्पित्तैप्

पुविपुडे यौळ्क्क नोक्काय् पौङ्गेरिप् पुनिद रीयुम्
अवियैनाय् वेट्ट दैन्न वैन्नात्ता यरक्क वैन्ना 873

चैविकळै-दोनों कानों पर; तळिर् कैयाले-करपल्लवों को; चिक्कु उड-खूब दवाकर; चेम् चैय्ताळ्-(इन शब्दों को सुनने से) रक्षित किया; अरक्क-राक्षस; पुवि इटै औळ्क्कम् नोक्काय्-लोकधर्म नहीं पालते; कवियैयुम् कटक्कुम् वैन्त्रि-कवियों के भी कल्पनातीत; वैन्त्रि-विजयशील; काकुत्तन् कर्पिनेत्तै-काकुत्स्थ की पत्नी को; पुत्तितर्-पवित्र ब्राह्मणों द्वारा; पौङ्कु ऐरि-प्रज्वलित अग्नि में; ईयुम्-देवापित; अवियै-हवि को; नाय् वेट्टु अन्त-कुत्ता जैसा चाहकर; ऐन् चोन्नाय्-क्या कहा; ऐन्ना-कहकर । ८७३

यह सुनते ही देवी ने अपने करपल्लवों को कानों पर रखकर उन शब्दों के प्रहार से अपने कानों को बचा लिया। उन्होंने रावण को डाँटा। नीच निशाचर ! लोक-धर्म-विमुख ! कवियों के कल्पनातीत विजयशील काकुत्स्थ की पत्नी हूँ, मैं। मुझे तुम उस कुत्ते के समान चाहते हो, जो पवित्र ब्राह्मणों के द्वारा प्रचलित अग्नि में देय हवि को चाहता हो ! चाहकर तुमने क्या कहा ? । ८७३

पुत्तुनै नीरि नौय्दाय्प् पौदले पुरिन्दु निन्ऱ
इन्नुयि रिळ्त्त लज्जि यिरिप्पि पळित्त लुण्डो
मिन्नुयिर्त्त तुरुमिर् चोऱुम् वैज्जरम् विरवा मुन्नम्
उन्नुयिर्क् कुऱुदि नोक्कि यौळित्तिया लोडि यैन्ऱाळ् 874

पुत्तु नै नीरिन्-घास की नोक की जल-बूँद के समान; नौय्दाय्-अल्प वन; पौदले पुरिन्दु निन्ऱ-मिटना ही जिसका गुण है; इन् उयिर्-उस प्यारे प्राण को; इळ्त्तल् अज्जि-छोड़ने से डरकर; इल् पिर्प्पु-कुलीनता को (पातिव्रत्य को); अळित्तल् उण्डो-मिटारुंगी क्या; मिन् उयिर्त्तु-प्रकाश फैलाता हुआ; उरुमिल् चोऱुम्-वज्र के समान फुफकारते हुए चलायमान; वैम् चरम्-भयंकर शर; विरवा मुन्नम्-आकर लगे, इसके पहले ही; उन् उयिर्क्कु उळ्ति नोक्कि-अपने प्राणों का हित समझकर; ओटि औळित्ति-भागकर छिप जाओ; यैन्ऱाळ्-देवी ने कहा । ८७४

यह जीवन घास की नोक पर की जल-बिन्दु के समान है। उसका गुण ही चलने का है। ऐसे प्राणों को जाने से रोकना चाहकर क्या मैं अपनी कुलीनता का निशान, पातिव्रत्य को त्याग दूंगी ? राम का शर विद्युत-सम प्रकाश के साथ वज्र के समान फुफकारते हुए आयगा ! उसके आने से पहले अपने प्राण बचा लो। अपने हित में भागो, कहीं और छिप जाओ । ८७४

ऐन्ऱव लुरैक्क निन्ऱ विरक्कमि लरक्क सैय्द
उन्ऱुणैक् कणव तम्बव् वुयर्दिशै शुभन्द वोङ्गल्

वन्त्रिउन् मरुप्पि नाडुन् मडित्तवैन् मार्विन् वन्दाल्
कुन्त्रिडैत् तौडुत्तु विट्ट पृङ्गणै कौल्ल दैन्त्रान् 875

अन्त्र अवल् उरैप्प—ऐसा उनके कहने पर; निन्त्र इरक्कम् इल्—स्थिर दया-
रहित; अरक्कन्—राक्षस; उन् तुणै कणवन्—तुम्हारे जीवन-संगी का; अय्त अम्पु-
प्रेषित शर; उयर् तिचै चुमन्त-उन्नत दिशा-वाहक; ओङ्कल्—पर्वत-सम गजों के;
वन् त्रिउल् मरुप्पिन्—कठिन सारयुक्त दाँतो का; आडुल् मडित्त-बल-भञ्जक; अन्
मार्पिन् वन्ताल-मेरी छाती पर आयगा तो; अतु-वह; कुन्त्रु इट्टे—पर्वत पर;
तौडुत्तु विट्ट-संधानकर प्रेषित; पून् कणै अन्त्रान्—पुष्पशर (सम) होगा; अन्त्रान्-
कहा । ८७५

देवी ने यह चेतावनी दी, तो रावण, जिसका चित्त कभी स्निग्ध न
रहा और सदा क्रूर, बोला— तुम्हारे जीवन-संगी का प्रेषित शर मेरा क्या
कर सकेगा ? मेरा वक्ष उन्नत दिशा-भार-वाही पर्वत-सम दिग्गजों के
कठोर सारयुक्त दाँतों का भञ्जक है ! उस पर वह शर पर्वत पर लगे
पुष्प के समान हो जायगा । ८७५

अण्डगिनुक् कण्डग् नाळे याशेनो यहत्तुट्ट पौङ्ग
उण्डगिय वुडम्बि नेनुक् कुयिरिन्ने युदवि युम्बर्क्
कण्डगुळै महळिर्क् किल्लाप् पेरुम्बदड् गैक्की लैन्ना
वण्डगित्त नुलहन् दाङ्गु मलैयिनुम् वलिय तोळान् 876

उलकम् ताडकुम्—भूधर; मलैयितुम्—पर्वतों से भी बढ़कर; वलिय तोळान्—
कठोर कन्धों के रावण ने; अण्डगिनुक्कु—श्री की; अण्डकु अत्ताळे—श्रीदेवी-सी बेची;
आचै नोय्—राग-रोग; अकत्तु उळ् पौङ्क-मन में प्रवृत्त है; उण्डगिय-निर्बल पड़े;
उटम्पिन्नेरुक्—शरीरी मुझे; उयिरिन्ने उतवि—प्राण-दान करके; उम्पर्—स्वर्गवासिनी;
कणम् कुळै—भारी कुण्डलधारिणी; मकळिर्क्कु इल्ला—देवांगनाओं के लिए भी अप्राप्य;
पेरुम् पतम्—श्रेष्ठ पद को; कै कौळ् अन्ना—अपनाओ, कहकर; वण्डगित्तन्—प्रणाम
किया । ८७६

रावण की भूधर पर्वतों से भी अधिक बलवान भुजाएँ थीं । ऐसे
भुजबली रावण ने एक बात की— श्रीदेवी की भी श्री ! राग-रोग मेरे
अन्दर सितम ढा रहा है ! मेरा शरीर शिथिल हो रहा है । कृपा करो ।
मुझे प्राणदान करो । और स्वर्गवासिनी, भारी कुण्डलधारिणी देवांगनाओं
को भी अप्राप्य बहुमूल्य पद अपनाओ । यह कहकर उसने देवी के चरणों
पर झुककर प्रणाम किया । ८७६

तरैवायवन् वन्दडि ताळुदलुम्, करैवाळ्वड वावि कलङ्गिन्तळ्वोल्
इरैवाविळै योयैन् वेङ्गिन्तळाल्, पौरैतानुरु वायदोर् पौडुडैयाळ् 877

अवन्—उसके; वन्तु—आकर; अटि तरैवाय्—चरणों के सामने, भूमि पर गिरकर;
ताळुतलुम्—दण्डवत् करने पर; पौरै तान् उरु आयतु—क्षमा ही मूर्ति बन गयी, ऐसी;

ओर् पोंडु उटैयाळ्-शोभाशालिनी; कर्तै वाळ् पट्-(रक्त-)-रंजित तलवार के लगने पर; आवि कलङ्कितळ् पोल्-प्राणाकुल हुई-सी; इरैवा-मेरे नाथ; इळैयोय्-देवर जी; अँत-पुकारते हुए; एङ्कितळ्-दुखी हुई । ८७७

जब रावण ने सीताजी के पास आकर उनके चरणों पर दण्डवत् की, तब क्षमा का अवतार सीताजी रक्तरंजित तलवार से प्रहरित के समान तड़पी । 'हे मेरे नाथ ! हे मेरे देवर !' की दुहाई देते हुए वे बहुत खिन्न हुई । ८७७

ॐ आण्डायिडै तीयव नायिळैयैत्, तीण्डानयन् मुन्नुरै शिन्दैशैयात्
तूण्डानैन् लामुयर् तोळ्वलियाल्, कीण्डानिल सोशत्तै कीळ्पुडैये 878

आण्डु-तब; तीयवन्-खल ने; आय् इळैये-उत्तम आभरणों से अलंकृत देवी को; अयन् मुन् उरै-ब्रह्मा के पूर्वकथित शाप का; चिन्तै चैया-मन में स्मरण करके; तीण्डान्-स्पर्श नहीं किया; तूण् तान् अँतल् आम-खम्भे ही मान्य; उयर् तोळ्वलियाल्-अपनी भुजाओं के बल से; आयिडै-उस स्थल में; निलम् कीळ् पुडै-भूमि को नीचे और पार्श्वों में; ओर् ओचत्तै-एक योजन; कीण्डान्-खोदकर उठा लिया । ८७८

तब खल रावण ने सोचा कि क्या किया जाय । उसे ब्रह्मा-दत्त शाप का स्मरण आया, जिसके अनुसार वह परनारी का स्पर्श नहीं कर सकता था । इसलिए उसने वहाँ की भूमि को अपने स्तम्भ-सम हाथों से खोद लिया, जहाँ सीताजी थीं । नीचे और पार्श्वों में एक योजन गहरी और एक योजन विस्तार की भूमि खोदकर उठा ली । ८७८

कीण्डानुयर् तेर्मिशै कोल्वळैयाळ्, कण्डाडन दारुयिर् कण्डिलळाल्
मण्डानुरु मीत्तिन् मयङ्गितळाल्, विण्डान्वळि यार्थळु वान्विरैवान् 879

उयर् तेर् मिचै कीण्डान्-ऊँचे रथ पर उन्हें रख लिया; कोल् वळैयाळ्-सुन्दर कंकणशोभिता ने; कण्डाळ्-देखा; तन्तु आर् उयिर् कण्डिलळ्-अपनी जान न देखतीं; मण् तान् उरु-धरती पर गिरीं; मीत्तिन् मयङ्कितळ्-मछली-सी मूर्च्छित हुई; विण् तान् वळि आ-(रावण) आकाश-मार्ग में; अँळुवान्-उठा; विरैवान्-तेज चला । ८७९

रावण ने सीताजी को भूमिखण्ड-सहित उठाकर अपने रथ में रख लिया । सुन्दर कंकणभूषित देवी ने इसको देखा तो मानो उनके प्राण खिसक गये । धरती पर पड़ी मछली के समान छटपटायीं । बेहोश हुई । रावण आकाश-मार्ग में आगे बढ़ रहा था । ८७९

ॐ विडुतेरैन् वैङ्गानल् वैन्दळियुम्, कौडिपोल्पुरळ् वाळ्हुलै वाळयर्वाळ्
तुडियावैळु वाडुय रालळुवाळ् कडियायर् नेयिडु कार्वैनुमाल् 880

विडु तेर् अँल्-चलाओ रथ, कहने पर; कन्तल् वैन्तु अळियुम्-आग में झुलसकर प्रियमाण; कौटि पोल्-लता के समान; पुरळ्वाळ्-छटपटातीं; कुलैवाळ्-अधीर

होतीं; अयर्वाळ्-शिथिल होतीं; तुटिया अँळुवाळ्-तड़पकर उठतीं; तुयराल् अळुवाळ्-दुःख के साथ रोतीं; कटिया अरने-(हमसे) अनुपेक्षित धर्मदेवता; इतु का-इससे तारो; अँत्तुम्-कहतीं । ८८०

रावण ने सारथी को आज्ञा दी कि रथ को तेज चलाओ । तब अग्नितप्त लता के समान सीताजी लोटी; अधीर हुई; शिथिल पड़ीं; फिर तड़पकर उठी । दुःख से रोयी । धर्मदेवता को पुकारा । हे अनुपेक्षित धर्मदेवता ! मुझे इस विपदा से बचा लीजिए । ८८०

ॐ मलैयेमर नेमयि लेकुयिले, कलैयेपिणै येहळि रेपिडिये
निलैयावुयि रेनिलै तेरिनिर्पोय्, उलैयावलि यारुळै नीरुरैयीर् 881

मलैये-हे पर्वतो; मरने-तरुओ; मयिले-मोरो; कुयिले-कोफिले; कलैये-हिरणो; पिणैये-हरिनियो; कळिरे-पुरुषगजो; पिडिये-हथिनियो; निलैया उयिरेन्-अस्थिरजीव; निलै तेरिनिर् नीर्-मेरी स्थिति जानते हो तुम लोग; उलैया वलियार्-अक्षय बलशाली; उळै पोय्-(श्रीराम) के पास जाकर; उरैयीर्-कहो । ८८१

सीताजी ने सामने दिखे सब पदार्थों को बुलाकर वचाव की याचना की । हे पर्वतो, तरुओ, मोरो, कोयलो, मृगो, हरिनियो, गजो, हथिनियो ! मैं कितनी अधीर हूँ । यह तुम जानते हो । तुम जाकर उन अक्षय पराक्रमी श्रीराम को समाचार दो । ८८१

शैज्जेवह नार्निलै नीरुत्तैरिवीर्, मज्जेपोळि लेवन देवदेहाळ्
अज्जेलैन नल्हुदि रेलडियेन्, उज्जेनदु तानिळ वोवुरैयीर् 882

मज्जे-मेघो; पोळिले-उद्यानो, वत्तवैवतैकाळ्-वनदेवताओ; चैम् चैवक्तार् निलै-उत्तम पराक्रमी श्रीराम का जो (दुःख) होगा; नीर्-तुम लोग; तैरिवीर्-जानते हो; अज्जेलै अँन्-मुझे अभय देकर; नल्हुदिरेल्-यह समाचार उन्हें दें तो; अडियेन् उज्जेन्-दासी मैं बच जाऊँगी; अनुतान्-वह भी; इळवो-नुम्हारे लिए कटकर है क्या; उरैयीर्-जाकर कहो । ८८२

हे मेघो, उद्यानो, वनदेवताओ ! महा पराक्रमी श्रीराम मुझे खोकर कैसे दुखी होंगे — यह तुम लोग जानते हो । इसलिए मुझे अभयदान देकर उनके पास जाकर कहोगे तो बच सकूँगी । इसमें आपका कोई नुकसान होगा क्या ? जाओ, कहो उनसे । ८८२

ॐ निरुदादियर् वेरउ नीणमुहिल्बोल्, शरतारैहळ् वीशिनर् शारहिला
वरदाविळै योय्मरु वेदुमिलाप्, परदाविळै योय्पळि पूणुतिरो 883

निरुदादियर्-राक्षस आदि; वेर् अउ-निर्मूल करने; नीळ् मुकिल् पोल्-बड़े काले मेघ के समान; चर तारैकळ् वीचितर्-शर-धाराएँ बरसाते हुए; चारकिला-जो यहाँ नहीं आये; वरता-वे वरद; इळैयोय्-उनके लघु भ्राता; मरु एतुम् इला-निर्दोष; परता-भरत; इळैयोय्-उनके अनुज; पळि पूणुतिरो-(मुझे न बचाकर) अपयश के भागी हो जायेंगे क्या । ८८३

हे वरद श्रीराम ! आप राक्षसादि को निर्मल करने के लिए बड़े काले मेघ के समान शर-वर्षा कराते हुए आये नहीं ! हे देवर ! निर्दोष भरत ! उनके कनिष्ठ भाई ! मेरे कारण आप सब अपयश के भागी होंगे क्या ? । ८८३

कोदावरि येहुळिर् वाय्हुळैवाय्, मादावनै याय्मन नैतैळिवाय्
ओदादुणर् वाळ्ळै योडिनैपोय्, नीदान्विनै येतिलै शौल्ललैयो 884

कोतावरिये-गोदावरी; कुळिर्वाय्-शीतल; कुळैवाय्-स्नेहार्द्र; माता अत्रैयाय्-माता-समाना; मत्तनै तैळिवाय्-स्वच्छ-चित्त; नी तान्-तुम ही; ओतातु उणर्वाय् उळ्ळै-विना अध्ययन किये ही विद्वान बने श्रीराम के पास; ओडितै पोय्-दौड़ जाकर; यित्तैयेन् निलै-प्रारब्धवशा मेरी स्थिति; शौल्ललैयो-नहीं कहोगी क्या । ८८४

हे गोदावरी नदी ! तुम शीतल हो, स्नेहार्द्र हो ! सबकी माता-समान हो । स्वच्छ-मना हो । तुम ही तो दौड़के जाओ और विना अध्ययन किये ही सर्वज्ञ बने मेरे पति के पास प्रारब्धवशा मेरी स्थिति नहीं कहोगी क्या ? । ८८४

मुन्दुब्जुनै काण्मुळै वाळ्ळरिहाळ्, इन्दन्निळ नोडु मंडुत्तकैनाल्
ऐन्दुन्दलै पत्तु मलैन्दुलैयच्, चिन्दुम्बडि कण्डु शिरिक्किलिरो 885

मुत्तुम्-सामने दृश्य; चूतैकाळ्-निर्झरो; मुळै वाळ्-गुफावासी; अरिकाळ्-सिंहो; इन्त निलत्तोदुम्-इस भूमि के साथ; अँदुत्त-जिन्होंने गुफे उठाया; कै नाल् ऐन्दुम्-वे बीसों हाथ और; तलै पत्तुम्-दसों सिर; अलैन्तु उलैय-हरहराकर गिरें और भिटे और; चिन्दुम् पटि कण्डु-उनके गिरने की बात देखकर; चिरिक्किलिरो-नहीं हँसोगे क्या । ८८५

मेरे सामने दृश्यमान निर्झरो ! गुफावासी सिंहो ! मुझे भूखण्ड के साथ उठाकर रावण लिये जा रहा है ! क्या उसके बीसों हाथ और दसों सिर हिलकर नहीं गिरेंगे ? और उनको नष्ट होते देखकर तुम नहीं हँसोगे ? । ८८५

अँन्डिन् पलवुम् पन्नि यिरियलुड् इरुड् वाळैप्
पौन्डुन्नुम् पुणर्मेन् कौङ्गैप् पौलड्मुळै पोरि लैन्नेक्
कौन्डुन्ने मोट्कुड् गौल्लन् मानिडर् कौळ्ह वैन्ता
वन्डिण्गै यैडिन्दु नक्कान् वाळ्क्कैनाळ् वरितु वीळ्प्पान् 886

अँन्डु-ऐसा; इन्त पलवुम्-और इस तरह की अनेक बातें; पन्नि-कहकर; इरियल् उरुड्-व्यथित होकर; अरुड्वाळै-जो रो रही थीं, उनको; वाळ्क्कै नाळ्-जीवन के दिनों को; वरितु वीळ्प्पान्-व्यर्थ करने में लगा रहा रावण; पौन् तुन्नुम्-स्वर्णमय (आभरणावृत); पुणर् मेल् कौङ्कै-सटे हुए स्तनों से भूषित; पौलन् कुळै-

(और) मनोरम कुण्डलधारिणी; अ मात्तिट्टर-वे नर; पोरिल् अन्तै कौन्डु-युद्ध में मुझे मारकर; उन्नै भीट्प् कौल्-तुम्हें मुक्त करेंगे क्या; कौळ्क-करें; अन्ता-कहकर; वन् तिण् के अन्निन्तु-कटोर बलवान हाथ पीटकर; नक्कान्-ठठाया । ८८६

सीताजी ऐसी और इस तरह की अन्य बातें कहकर अत्यधिक व्यथा के साथ विलाप रही थी । तब व्यर्थजीवक रावण ने उनको चिढ़ाते हुए कहा कि स्वर्णमय आभरणभूषित उरोजों की, भारी कुण्डलधारिणी वाले ! अब क्या वे नर मुझे युद्ध में मारकर तुमको रिहा कर देंगे ? करें । यह कहकर तानी बजाते हुए ठठाया । ८८६

वाक्किना	लन्नान्	शौल्	मायैयाल्	वञ्ज	मानौन्
शक्किना	याक्कि	युन्नै	यारुयि	रुण्णुड्	गूड्डेप्
पोक्किनाय्	पुहुन्दु	कौण्डु	पोहिन्नाय्	पौरुदु	निन्नैक्
काक्कुमा	काण्डि	यायिड्	कडवलुन्	तेरै	यैन्नाळ् 887

अन्तान्-उस (रावण) के; वाक्किनाल् चौल्-अपने मुख से वह शब्द कहने पर; मायैयाल्-माया से; वञ्ज मान् ओन्डु-एक मायामृग; आक्किनाय्-सृष्ट किया; आक्कि-बनाकर; उन्नै आर् उयिर् उण्णुम् कूड्डे-तुम्हारे प्यारे प्राण-भक्षक यम (श्रीराम) को; पोक्किनाय्-उसके पीछे भिजवाया; पुहुन्दु- (उनके अभाव में) घुसकर; कौण्डु पोहिन्नाय्-मुझे हर ले जा रहे हो; पौरुदु-युद्ध करके; निन्नै काक्कुम् आ-अपने को बचा लेने का सामर्थ्य; काण्डि आयिल्-बिखा सकी तो; उन् तेरै-अपने रथ को; कडवलु-आगे मत चलाओ; अन्ना-कहा । ८८७

रावण के यह (परिहास-) वचन कहने पर सीताजी ने कहा कि तुमने एक मायामृग बनाया और उसके पीछे उनको भिजवा दिया । जब वे नहीं रहे, तब चोरी से आश्रम में घुसे और मुझे उठाये ले जा रहे हो ! अगर युद्ध में अपने को बचा लेने का सामर्थ्य सचमुच रखते हो, तो रथ को रोको । आगे मत बढ़ाओ । ८८७

भीट्टुमौन्	रुरैशैय्	वाणो	वीरत्ते	विरैविन्	मड्डन्
कूट्टमा	मरक्कर्	तम्मैक्	कौन्डुङ्गो	मुलैयु	मूक्कुम्
वाट्टिनार्	वनत्ति	लुळ्ळार्	मानिड	रैन्ऱ	वार्त्तै
केट्टुमिम्	मायज्	जैय्द	दच्चत्तिन्	किळर्च्चि	यन्ऱो 888

नी वीरत्ते-तुम वीर हो क्या; उन् कूट्टम् आम् अरक्कर् तम्मै-तुम्हारे दलों को, राक्षसों को; विरैविल् कौन्डु-शीघ्रता से मारकर; उड्कै मुलैयुम् मूक्कुम्-तुम्हारी बहिन को छाती और नाक को; वाट्टिनार्-(जिन्होंने) काटकर डुखाया; मात्तिट्टर-वे नर; वनत्तिल् उळ्ळार् अन्ऱ वार्त्तै-वन में हैं, यह समाचार; केट्टुम्-सुनने के बाद भी; इ मायम् चैयत्तु-यह कपट करना; अच्चत्तिन् किळर्च्चि अन्ऱो-भय का विकास नहीं है क्या; भीट्टुम् ओन्डु उरै चैय्वाळ्-और एक बात कहने लगी । ८८८

सीताजी ने और एक बात कही । तुम सच्चे वीर हो ? तुममें भय नहीं है क्या ? खर-दूषणादि तुम्हारे दल के राक्षसों को प्रभु ने शीघ्रता से निहत कर दिया । तुम्हारी वहिन की छाती और नाक कटी । ऐसे पराक्रमी वन में हैं, यह सुनने के बाद तुमने यह प्रवंचना की । क्या इसका अर्थ तुम्हारे भय का विकास और प्रदर्शन नहीं है ? । ८८८

मौलिदरु	मळवि	नङ्ग	केळिदु	मुरणिल्	याक्कै
इळिदरु	मनिद	रोडे	यान्शेरु	वैदिरप्पे	नैन्नाल्
विळिदरु	नैर्ऱि	यान्ऱन्	वैळ्ळिवैर्	पंडुत्त	तोदकुप्
पळिदरु	मदनिर्	चालप्	पयन्ऱरुम्	वज्ज	मैन्ऱान् 889

मौलि तरुम् अळविल्-इतना कहने पर; नङ्गै-नायिका; इतु केळ-यह सुनो; मुरण् इल् याक्कै-दुर्बल-शरीरी; इळि तरु मनित्रोटे-क्षुद्र नरों के साथ; यान् चैरु वैदिरप्पेन् नैन्नाल्-मैं युद्ध में लगूंगा तो; विळि तरु नैर्ऱियान् तन्-भालनेत्र शिवजी के; वैळ्ळि वैर्पु अँदुत्त तोदकु-चाँदी के पर्वत के धारक, मेरे कन्धों का; पळि तरुम्-अपमान होगा; अतन्निल्-उससे; वज्जम्-प्रवंचना; चाल-अच्छा; पयन् तरुम्-फल देगी; मैन्ऱान्-कहा (रावण ने) । ८८९

रावण ने इसके उत्तर में कहा कि नायिका ! मेरी यह बात सुनो । वे अल्प और दुर्बल शरीरी नर हैं । उनसे प्रत्यक्ष युद्ध करूँ तो वह मेरे भालनेत्र शिवजी सहित चाँदी के कैलाम पर्वत के धारक कन्धों का अपमान होगा । उससे यह प्रवंचना निश्चय अधिक अच्छा फल दिलायेगी ! । ८९०

पावैयु	मदत्तैक्	केळात्	तङ्गुलप्	पहैजर्	तम्बाल्
पोवदु	कुर्ऱम्	वाळिर्	पौरुवदु	नाणम्	वोलाम्
आवदु	कर्ऱि	नारै	वज्जिक्कु	माऱ्ऱ	लेयाम्
एवमैन्	पळिदा	नैन्ऱे	यिरक्कमि	लरक्कर्क्	कैन्ऱाळ् 890

पावैयुम्-प्रतिमा-सी देवी; अतत्तै केळा-वह सुनकर; तन् कुल पकैजर् तम्बाल्-अपने कुल के शत्रु के साथ; पोवतु-युद्ध करने के लिए जाना; कुर्ऱम्-अपराध है और; वाळिल्-तलवार से; पौरुवतु-युद्ध करना; नाणम् पोलाम्-शरम की बात है क्या; कर्ऱितारै-परपुरुष की पत्नी को; वज्जिक्कुम् आऱ्ऱल्ल-धोखा देने का सामर्थ्य; आवतु आम्-ठीक होगा शायद; इरक्कम् इल् अरक्कर्क्कु-निर्वय निशाचरों के लिए; एवम् अँन्-अपराध क्या है; पळि तान् अँन्ऱे-निन्दनीय क्या है; कैन्ऱाळ्-कहा । ८९०

चित्रप्रतिमा-सी देवी ने व्यंग्य के साथ कहा । अपने कुल-शत्रु के साथ युद्ध करना अपराध है, तलवार की वार करना शरम की बात है ! परपुरुष की पतिव्रता पत्नी को वंचना से हर ले जाना श्रेयस्कर और करने योग्य काम है । वाह ! निर्दय राक्षसों के विचार में फिर अपराध क्या है ? अपमान क्या है ? विचित्र बातें हैं । ८९०

अँत्तुम् वेलै यित्तग णैङ्गडा पोव दैन्ऱे
 निन्निलैन् रिडित्त शौल्लन् नैरुप्पिडैप् परप्पुड् गण्णन्
 मिन्नेन विळङ्गुम् वीरत् तुण्डत्तन् मेरु वैन्तुम्
 पोन्नीडुड् गुन्ऱम् वानिल् वरुवदे पोळु मैय्यान् 891

अँत्तुम् अ वेलैयिन् कण्-जव वे ऐसा बोली, तव; अँङ्कु अटा पोवतु-रे, तुम
 कहाँ जाते हो; निन् निन् अँत्त-खड़ा रह, खड़ा रह, ऐसा; इडित्त चौल्लन्-वज्रस्वर;
 नैरुप्पु इटै परप्पुन्-आगे को सर्वत्र फैलानेवाली; कण्गन्-आँखों के; मिन् अँत्त
 विळङ्कुम्-विद्युत के समान विद्यमान; वीर तुण्डत्तन्-प्रतापी चोंच के; पोन् नैटुम्
 कुन्ऱम्-उच्च स्वर्ण-पर्वत मेरु; वानिल् वरुवते पोळुम्-आकाश में आता हो, ऐसे;
 मैय्यान्-शरीरी । ८६१

वे यह कह ही रही थी कि 'रे कहाँ जा रहे हो ! खड़ा रह, खड़ा
 रह' का शब्द सुनाई दिया । जटायु ने यह शब्द कहा । (उनका वर्णन
 आगे है) उनका स्वर वज्र-सम था । आँखों से आग सब जगह बरस रही
 थी । उनका तुण्ड वज्र-सम कठोर था और विद्युत के समान प्रकाशमान ।
 स्वर्ण-मेरु आकाश में उड़ता आता हो, ऐसा भ्रम पैदा करनेवाले भीमकाय
 थे । ८९१

पाळिवन् किरिह लैल्लाम् पडिन्दैन्तु दौन्ऱो डौन्ऱ
 पूळियि नुदिर विण्णिङ् पुडैत्तुडक् किळरन्तु पौङ्गि
 आळियु मुलहु मौन्ऱा यळिदर मुळुडुम् वीशुम्
 अळिवेड् गाड्ऱिदैन्तु विरुज्जिडै यूदै पौङ्ग 892

पाळि वत् किरिकळ् अँल्लाम्-बड़े और कठोर सभी पर्वतों को; पडिन्तु अँल्लन्तु-
 उखाड़कर ऊपर उठाकर; औन्ऱ औन्तु औन्तु-एक दूसरे के साथ; पूळियिन् उतिर-
 चूर होकर गिराते हुए; विण्णिङ् पुडैत्तु-आकाश में टकराकर; उड किळरन्तु
 पौङ्कि-बड़े शोर के साथ ऊपर उठकर; आळियुन् उलकुम्-समुद्र और धरती को;
 औन्ऱाय् अळि तर-एक साथ विनष्ट करते हुए; मुळुतुम् वीचुम्-सर्वत्र प्रवहमान;
 अळि वैन् काड्ऱ इतु-युगांत का प्रभंजन हे यह; अँत्त-ऐसा विचार पैदा करते हुए;
 इह चिरै-अपने दोनों पंखों द्वारा; ऊतै पौङ्क-पवन बनाते हुए । ८६२

उनके अपने पक्षों को हिलाने से पवन इतनी तेजी से और इतने बल
 के साथ विस्थापित हुआ कि पर्वत उखाड़कर ऊपर उठे और आपस में
 टकराकर चूर हो गिर पड़े; और भूमि और आकाश को एक साथ विनष्ट
 करते हुए युगांतकालीन प्रभंजन प्रवृत्त हो बह रहा हो, ऐसा लगा । ८९२

साहैवन् उलैयौडु मरनुन् दाळ्गेल, मेहमुड् गिरिहळुन् विण्णिन् मीच्चैल
 साहवैड् गलुळ्ने वरुहिन्ऱ्ऱन्नैन्, नाहमुम् पडमौळित् तौडुङ्गि नैयवे 893

मरमुम्-तब भी; चाकै वन् तलैयौडु-शाखा रूपी सिरों के साथ; ताळ-गिर
 पड़े; मेल् मेकमुम्-ऊपर के मेघ और; किरिकळुम्-गिरियाँ; विण्णिन् मी चैल-

आकाश पर चलीं; माक वँम् कलुळते—(ऐसा) बड़े और भयंकर गरुड़ ही; वरुकिन्नात् अंत-आता हो, सोचकर; नाकमुम्-सर्प भी; पटम् ओळित्तु-फन समेट लेकर; ओंतुक्कि नयवे-छिपकर किलन्न हैं, ऐसी स्थिति पैदा करते हुए । ८६३

तर्ह शाखा के सिरों के साथ नीचे गिरे । ऊपर के मेघ और गिरियाँ आकाश में चलीं । बड़े और भयंकर गरुड़ ही आ रहे हैं —समझकर सर्प फनों को समेटते हुए जा छिपे और किलन्न रहे । ८९३

यात्तैयु माळियु मुदल यावैयुम्, कानैडु मरत्तौडु तूळ कल्लिवै
मेनिमिर्न् दिरुशिऱै विशैयि तेऱलाल्, वातमुड् गातमु माऱु कौण्डवे 894

यात्तैयुम् आळियुम् मुतल-गज, शरभ आदि; यावैयुम्-सभी प्राणी; कान् नैडु मरत्तौडु-वन्य, ऊँचे पेड़ों के साथ; तूळ कल् इवै-झाड़, कंकड़ आदि; इरु चिरैकळ् विचैयिल्-दोनों पंखों के हिलने से उत्पन्न हवा के वेग से; मेल् निमिर्न्नु एऱलाल्-ऊपर उठकर चले, इसलिए; वातमुम् कातमुम् माऱु कौण्ड-आकाश और कानन स्थानांतरित हो गये । ८६४

गज, शरभ आदि सभी प्राणी, वन के बड़े-बड़े पेड़, झाड़, कंकड़ आदि उनके पक्षों के प्रबल पवन के कारण ऊपर उठे और उड़े । इसलिए कानन आकाश बन गया और आकाश कानन । ८९४

उत्तमन्	इविये	युलहौ	डोङ्गुदेर्
वैत्तनै	येहुव	वैङ्गु	वात्तिनो
डित्तनै	दिशैयैयुम्	मऱैप्पैन्	यात्तैत्ताप्
पत्तिरच्	चिऱैहळै	विरिक्कुम्	पण्बित्तान् 895

उलकोटु उत्तमन् तेवियै-भूमि के अंश के साथ पुरुषोत्तम श्रीराम की पत्नी को; ओङ्कु तेर् वैत्तनै-उन्नत रथ पर रखकर; ओङ्कु एकुवतु-कहाँ जाते हो; वात्तिन् ओटु इत्तनै तिचैयैयुम्-आकाश में ही नहीं, सभी दिशाओं के मार्ग को; यात् मऱैप्पैन्-मैं रोक लूँगा; अत्ता-कहकर; पत्तिर चिऱैहळै-पन्न-सम पक्षों को; विरिक्कुम् पण्बित्तान्-फैलाने का कार्य करके । ८६५

जटायु ने पूछा— रे भूमि के अंश के साथ पुरुषोत्तम श्रीराम की पत्नी को ऊँचे रथ में रखकर कहाँ जाओगे ? तुम आकाश में ही नहीं, किसी भी दिशा में जा नहीं पाओगे । मैं सभी मार्ग रोक लूँगा । यह कहते हुए वे पत्ताकार अपने पक्षों को फैलाकर (रोकते हुए) । ८९५

वन्दन	नैरुवैयिन्	मन्तन्	माण्बिलान्
अन्दिरत्	तेर्च्चैल	वौळिक्कु	मैण्णिनान्
शिन्दुरक्	काल्शिरज्	जैक्कर्	शूडिय
कन्दरक्	कयिलैयै	निहर्क्कुड्	गाट्चियान् 896

माण्पु इलान्-अश्रेष्ठ रावण के; अन्तिर तेर् चैलवु-यन्त्रसहित रथ का

गमन; ओल्लिक्कुम् अण्णितान्-रोकने का विचार ले; विन्तुरम् काल् चिरम्-लाल पैरों और सिर से युक्त; चैक्कर् चूटिय कन्तरम्-संध्याकाश के मेघ को अपने गले में रखते हुए; कयिलै-कैलास को; निकर्क्कुम् काटचियान्-समानता करनेवाले; अँरुवैयिन् मन्तन्-गोधों के राजा; वन्ततन्-आये । ८६६

अश्रेष्ठ रावण के यन्त्रयुक्त रथ को रोकने के विचार से जटायु आये । उनके पैर और सिर लाल थे । वे कैलास पर्वत के समान लगे, जिसके कण्ठ-प्रदेश पर सन्ध्यामेघ फैले हों । ८९६

ॐ आण्डुर् उरु वण्डुगिनै यज्जलैन्नात्, तीण्डुर् उरिल नैन्ऋणर् शिन्दैयित्तान्
मूण्डुर् उरु वेंडगद मुर्ऋलित्ताय्, मीण्डुर् उरु याडलै मेवित्ताल् 897

आण्डु उरु-वहाँ आकर; अ अण्डुकिन्नै-उन देवी को; अज्जलै अँता-मत डरो, कहकर; तीण्डु उरिलन्-(रावण ने) स्पर्श नहीं किया है; अँन्ऋ उणर् चिन्तैयित्तान्-यह ज्ञान मन में करके; मूण्डु उरु-उत्पन्न होकर; अँळु वम् कतम्-उठनेवाले भयंकर क्रोध को; मुर्ऋलित्त आय्-पूर्ण होने न देकर; मीण्डु उरु-उसको रोककर; उरै आडलै-वार्तालाप करना; मेवित्तन्-आरम्भ किया । ८६७

आकर जटायु ने सीताजी को आश्वासन दिलाया । कहा कि मत डरो । उन्होंने यह जान लिया कि रावण ने देवी का स्पर्श नहीं किया है । इसलिए उन्होंने अपने उठते क्रोध को हृद से अधिक जाने नहीं दिया । उसको रोककर उन्होंने रावण को कुछ उपदेश देना चाहा । ८९७

कैट्टाय्हिलै योडुनिन् वाळ्वैयैलाम्, चुट्टाय्हिडु वेंन्तै तौडुगिन्नैनी
पट्टायैन् वेहौडु पत्तिनियै, विट्टेहुदि येल्विळि हित्तिलैयाल् 898

कैट्टाय्-विनष्ट हुए हो; किल्लैयोडुःउन् वाळ्वै अँलाम्-बन्धुवर्ग-सहित अपने जीवन को; चुट्टाय्-जला डाला; इतु अँन्त तौडुकिन्नै-यह क्या उपक्रम किया है; नी पट्टाय् अँत कौटु-तुम मरे, यह समझकर; पत्तिनियै विट्टु एकुतियेल्-पतिव्रता सीता को छोड़कर चलो तो; विळिक्किन्निलै-नहीं मरोगे । ८६८

रावण ! तुम अपने बन्धुजन सहित मिट गये । यह क्या उपक्रम किया है ? 'अवश्य मर जाऊंगा' यह समझकर पतिव्रता देवी सीता को छोड़ जाओगे तो नहीं मरोगे । वच जाओगे । ८९८

ॐ पेदाय्पिळै शैय्दन्नै पेरुलहिन्, मादावन्नै याळै मत्तक्कौडुनी
यादाहनि नैन्दन्नै यैण्णमिलाय्, आदार नित्तक्किन्ति यारुळरो 899

पेताय्-जड़मति; पिळै चैय्तन्नै-अपराध कर दिया; पेर् उलकिन्-बड़े विश्व की; माता अँतैयाळै-सीता-सम इनको; यातु आक-कौन; मत्तम् कौटु-मन में; नितैन्तन्नै-विचार रखते हो; अँण्णम् इलाय्-विवेकहीन; नित्तक्कु-तुम्हें; इत्ति-अव; आतारम् यार् उळर्-अवलम्ब कौन है । ८६९

जड़मति ! तुमने बहुत बड़ा अपराध कर दिया है ! यह विश्वजननी-

सदृश हैं। इनको क्या समझकर उठा लाये हो ? अविवेकी ! अब (यह काम करने के बाद) तुम्हारा अवलम्ब कौन होगा ? । ८९९

ॐ उय्यामन् मलैन्दुम रारुयिरै, मैय्याह विरामन् विरुन्दिडवे
कैयार मुहन्डुही इन्दहत्तार्, ऐयापुदि दुण्ड दडिन्दिलैयो 900

इरामन्-श्रीराम; उमर्-तुम्हारी जाती के राक्षसों को (खरादि को); उय्यामल्-बचने न देकर; आर् उयिरै-उनके प्यारे प्राणों को; मैय् आक विरुन्तु इटवे-सचमुच दावत के रूप में देने से; अन्तकत्तार्-यमदेव का; कै आर मुकन्तु-हाथ भर उसे लेकर; पुत्तितु उण्टतु-अपूर्व भोजन के रूप में खाना; अडिन्तिलैयो-(तुमने) न जाना क्या । ६००

श्रीराम ने तुम्हारे ही राक्षसों को (खर आदि को) बचने न देकर उनके प्राणों को यम का भोजन बनाया और यम ने अपने दोनों हाथ भर-भर के अभूतपूर्व भोज खाया था। तुमने नहीं जाना क्या ? । ९००

कौडुवैङ्गरि कौल्लिय वन्ददन्मेल, विडुमुण्डै कडाव विरुम्बिनैये
अडुमैन्ब दुणर्न्दिलै यायितुम्बन्, कडुवुण्डुयि रिन्तिलै काणुदियाल् 901

कौटु वैम् करि-भयंकर क्रोधी गज; कौल्लिय वन्ततत् मेल-जो मारने आया उस पर; विडुम् उण्टै-गुलेले; कडाव विरुम्पित्तैये-चलाना चाहा है; अडुम् अन्तपु-नाश कर देगा; अन्तपु उणर्न्दिलै-यह नहीं विचारा; आयितुम्-तो भो; वल् कट्ट उण्टु-प्रबल विष खाकर; उयिरिन्तिलै-प्राण की स्थिति; काणुत्ति-देखना चाहते हो । ६०१

तुम्हें मारने, बड़े क्रोध के साथ भयंकर गज आ रहा है। उस पर तुम गुलेले चला रहे हो ! क्या तुम नहीं जानते कि यह काम तुम्हारा घातक बन जायगा ? तो भी विष खाकर जीवित रहने की इच्छा करोगे ? । ९०१

अल्लावुल हड्गळु मिन्दिरन्नुम्, अल्लादवर् सूवरु मन्दहतुम्
पुल्वाय्पुलि कण्डडु पोल्वरलाल्, विल्लाळरै वैल्लु मिडुक्कित्तरो 902

अल्ला उलकड्कळुम्-सभी लोकों के वासी; इन्तिरन्नुम्-देवेन्द्र और; अल्लातवर्-और अन्य; सूवरुम्-त्रिदेव; अन्तकत्तुम्-यम; पुल् वाय्-हरिण ने; पुलि कण्टतु-व्याप्त देखा हो; पोल्वर्-ऐसा हो जायेंगे; अलाल्-नहीं तो; विल्लाळरै-धन्वियों को; वैल्लुम्-हराने के; मिडुक्कित्तरो-सामर्थ्य रखनेवाले हैं क्या । ६०२

सभी लोकों के वासी, इन्द्र, त्रिदेव और यम भी श्रीराम के सामने, व्याघ्र के सामने हरिण के समान (भयभीत) हो जायेंगे ! नहीं तो प्रबल धन्वी उनको हराने का सामर्थ्य किसके पास है ? । ९०२

ॐ इम्मैक्कुड वोडु मिडुन्दळियुम्, वैम्मैत्तौळि लिङ्गिडु मेवुदियाल्
अम्मैक्करु मानर हन्दरुमाल्, अम्मैक्किद माहवि देण्णित्तैनी 903

इम्मेक्कु-इस जन्म में; उडु ओटुम्-वन्धुजनों के साथ; इरुन्तु अळियुम्-मर मिटने का; वेम्मे तौळिल् इतु-भयावह काम इसे; इडुक्कु-यहाँ; मेयुत्तियाल्-आरम्भ किया है, इसलिए; अम्मेक्कु-पर जीवन में भी; अरु मा नरकम्-भयंकर लम्बा नरकवास; तरुमाल्-विलायता, इसलिए; इतु-यह; अम्मेक्कु इतम्-कब के लिए हितकारी; आक-ऐसा; नी अण्णित्ते-तुमने सोचा । ६०३

इहलोक में यह काम तुमको अपने वन्धुजनों के साथ विनष्ट करानेवाला काम है । यह तुमने आरम्भ किया है । यह आगे भी भयंकर और लम्बा नरकवास दिला देगा । फिर कहाँ, कब हित होगा, तमने सोचा ? । ९०३

मुत्तेवरिन् मूल मुदरुपौरुळाम्, अत्तेवरिम् मात्तिउ रादलित्ताल्
अत्तेवरी अण्णुव अण्णमिलाय्, पित्तेरित्ते याहप् पिळ्ळित्तनैयाल् 904

इ मात्तिटर्-ये नर (-रूप श्रीराम और लक्ष्मण); मु तेवरिन्-तीनों आदिदेवों के; मूल मुतल् पौरुळ् आम्-आदि परमात्मा; अ तेवर्-वे आदिदेव हैं; आतलित्-इसलिए; अ तेवरोटु अण्णुवतु-किन देवों के साथ रखकर सोचोगे; अण्णम् इलाय्-अविवेकी; पित्तु एरित्ते आक-पागलपन बढ़ गया; पिळ्ळित्तनै-यह अपराध किया । ६०४

ये, जो नर-रूप में आये हैं, श्रीराम त्रिदेवों के आदिदेव हैं । परमात्मा हैं । उनको किन देवों के साथ मिलाकर गणना की जायगी ? विवेकहीन ! पागलपन बढ़ गया है ! तभी तुमने यह अपराध किया । ९०४

ॐ पुरम्बुड्रिय पोर्विडै योत्तुळाल्, वरम्बुड्रिवु मडुळ विज्जुहळुम्
उरम्बुड्रिन वावन् वुण्मैयितोन्, शरम्बुड्रिय चावम् विडुन्दत्तये 905

पुरम् पड्रिय-त्रिपुरदाहक; पोर् विट्टेयोत्-योद्धा ऋषभ-वाहन शिवजी की; अळाल्-कृपा से; वरम् पड्रिवुम्-वर-रूप जो प्राप्त किये हैं वे, और; मडुळ विज्जुहळुम्-और अन्य (युद्ध-)विद्याएँ; उण्मैयितोन्-सत्यसंध के; चावम् पड्रिय-धनु पर संधान कर; चरम् विट्टुम् तत्तये-शर छोड़ते तक ही; उरम्पड्रित्त आवन्-बलशाली रहेंगे । ६०५

तुम्हारे, त्रिपुरदाहकदत्त सभी वर और तुम्हारी सारी विद्याएँ सत्यसंध श्रीराम के शरप्रेषण तक ही शक्तिमन्त रह सकेंगी । ९०५

ॐ वात्ताळ्ववन् मैन्दन् वळैत्तविलान्, तानेवरि त्रिन्ऱु तडुप्परिदाल्
नानेयव णुयप्पेनिन् नन्नुदलैप्, पोनीहडि दैन्ऱु पुहन्ऱिडलुम् 906

वान् आळ्ववन्-अथ स्वर्गभोग-रत दशरथ के; मैन्दन्-पुत्र श्रीराम; वळैत्त विलान्-झुका हुआ धनुष लेकर; ताते वरिन्-खुद आयेगे, तो; त्रिन्ऱु तडुप्पु अरितु-खड़ा होकर रोकना कठिन है; इ नल् नुतलै-इन सुन्दर भाल वाली को; नाते अवण् उयप्पेन्-मैं ही ले जाकर वहाँ (पर्णशाला में) छोड़ूंगा; कटितु पोत्ति-जल्दी भाग जाओ; अन्ऱु पुक्कन्ऱिटलुम्-यह कहते ही । ६०६

स्वर्ग-भोग में जो अब रहते हैं, उन दशरथ के पुत्र श्रीराम धनु झुका लेकर स्वयं आयेंगे तो उनके सामने टिका रहकर उनको रोकना दुत्तर है (असम्भव है) । इन सुन्दर भाल वाली सीताजी को मैं पर्णशाला में स्वयं पहुँचा दूँगा । तुम शीघ्र भाग जाओ । ९०६

केट्टातिरु दर्क्किरै केळ्हिळरुदन्, वाट्टारै नैरुप्पुह वाय्मडिया
ओट्टायिति नीयुरै शैय्हुनरैक्, काट्टाय्हडि दैन्ऱु कत्तन्ऱुरैया 907

निरुत्तर्क्कु इरै-राक्षसाधिपति ने; केट्टान्-सुना; केळ्हिळरु-जाज्वल्यमान; तन् वाळ्-उसकी तलवार से; तारै नैरुप्पु उक्क-लगातार अंगार छूटे; वाय् मडिया-अधर काटते हुए; इति नो ओट्टाय्-आगे बात मत चलाओ; उरै चैय् कुन्नरै-तुमसे कथित उनको; कट्टिनु काट्टाय्-शीघ्र दिखाओ; अँन्ऱु-ऐसा; कत्तन्ऱु उरैया-उबलकर कहकर । ९०७

राक्षसाधिपति ने यह सुना, तो उसकी तलवार से ही लगातार अंगारे निकलने लगे । मुझे अधर को दाँतों से दबाकर उसने कहा कि बस बस ! बहुत मत हाँक ! जिनकी चर्चा करता है, उनको दिखा शीघ्र ! यह क्रोध में उबलकर कहा । फिर । ९०७

वरुम्बुण्डर वाळियुन् मार्वुरुविप्, पेरुम्बुण्डिर वावहै पेरुदिनी
इरुम्बुण्डनीर्मीळित्तु मैन्नुळैयित्, करुम्बुण्डशौन् मीळ्हिलळ् काणुदियाल् 908

वरुम् पुण्डर-(बाधा-स्वरूप) आगत गीध; वाळि-मेरा शर; उन् मार्वु उरुवि-तेरी छाती में घुसकर; पेरुम् पुण्-बड़ा घाव; तिरुवा वक्कै-नहीं खोले ऐसा; नी पेरुति-तू चला जा; इरुम्पु उण्ट नीर्-तप्त लोहे का सोखा जल; मीळित्तुम्-फिर पाया जा सके तो भी; अँन् उळैयित्-मेरे पास से; करुम्पु उण्ट चोल्-इक्षु (-रस) सम भाषिणी; मीळ्हिलळ्-लौटेगी नहीं; काणुति-जान लो । ९०८

वाधक रूप में आगत गीध ! तू यहाँ से जल्दी हट जा इसके पहले कि मेरा शर तेरी छाती में बड़ा व्रण करा दे । तप्त लोहे द्वारा सोखा जल भी शायद लौटाया जा सकेगा, पर मेरे वश में आयी यह इक्षुरस-सी मधुरभाषिणी लौट नहीं सकेगी । यह जान लो । ९०८

अँन्नुम्	मळविर्	पयमुत्ति	तिरट्टि	यैय्दि
अन्नम्	मयर्हिन्	इदुनोक्कि	यरक्क	त्ताक्कै
शित्तम्	मुर्मुनिप्	पौळुदेशिलै	येन्दि	नङ्गळ्
मन्तन्	महन्वन्	दिलन्ऱु	वरुन्द	लन्ऱै 909

अँन्नुम् अळविल्-कहते ही; अन्नम्-हंसिनी (-सी सीता) का; पयम् मुत्तिन् इरट्टि-दुगुना भय; अँय्ति-पाकर; अयर्किन्ऱु-क्लिन्न होना; नोक्कि-देखकर; अन्ऱै-माताजी; अरक्कन् याक्कै-राक्षस का शरीर; इ पौळुते-अभी;

नंदु मूक्कु अंतुम्-लम्बो चोंच रूपी; नेमियिन्-चक्र से; चेम विल् काल् कोट्टुम्
अळविल्-रक्षा में धनु को झुकाने से पहले ही; मणि कुण्टलङ्कळ् कौण्टु-सुन्दर कुण्डलों
को छीन लेकर; अळुन्तान्-उठे । ६१४

जटायु फिर भी रावण के पास आये । लम्बे, और क्रूर आँखों से
युक्त अनगिनत सर्पों को त्वस्त करते हुए गरुड़ के समान जटायु ने उसके
सिरों पर चोंच मारी । फिर उसके अपनी रक्षा में धनु लेकर झुकाने के
पूर्व ही वे उसके कुण्डलों को छीन लेकर आकाश में उछले । ९१४

अळुन्दान्	रडमार्बिनि	लेळिनो	डेळु	वाळि
अळुन्दादु	कळन्त्रिड	वैय्दंडुत्	तार्त्त	रक्कन्
पौळिन्दान्	पुहर्वाळिहळ्	मीळवुम्	पोर्च्	चडायु
विळुन्दा	नैन्विण्णव	रञ्जितर्	वैय्दु	यिर्त्तार् 915

अरक्कन्-राक्षस; आर्त्तु-गरजकर; अळुन्तान्-जो ऊपर उठे थे, उनके;
तट मार्पितिल्-विशाल वक्ष पर; एळिन् ओदु एळु वाळि-सात और सात शर;
अळुन्तान् कळन्त्रिड-चुभे वगैर बाहर आ गये, इसलिए; मीळवुम्-फिर भी; पुकर्
वाळिकळ-स्वर्णमय शर; पौळिन्तान्-वरसाये; पोर् चटायु-योद्धा जटायु; विळुन्तान्
अंत-नौचे गिर गए, यह सोचकर; विण्णवर्-वेव; अञ्चितर्-डरे और; वैय्दु
यिर्त्तार्-व्याकुल हुए और लम्बो साँसें छोड़ें । ६१५

राक्षस रावण ने गर्जन किया । ऊपर उठे जटायु के वक्ष पर उसने
चौदह शर चलाए, पर वे गड़े नहीं और अलग होकर गिर गये । खीझकर
उसने अत्यधिक परिमाण में स्वर्णवर्ण शर चलाये, तो योद्धा जटायु भी थक
गये । देवों ने सोचा कि वे भूशायी हो गये हैं । वे डरे और ठण्डी आहें
भरने लगे । ९१५

पुण्णिर्	पुदुनीर्	पौळियप्पौलि	पुळ्ळिन्	वेन्दन्
मण्णिर्	करन्ते	मुदलोर्दि	रत्तिन्	वारि
कण्णिक्	कडलैन्ऱु	कवर्न्दु	कान्ऱु	मीळ
विण्णिर्	पौलिहिन्ऱुदोर्	वैण्गिर्	मेह	मीत्तान् 916

पुण्णिन्-व्रणों से; पुदु नीर् पौळिय-ताज्जा रक्त बहा, तब; पौलि-उसके
साथ दृश्यमान; पुळ्ळिन् वेन्दन्-पक्षियों के राजा; मण्णिल्-भूमि पर; करन्ते
मुतलोर्-खर आवि; उतिरत्तिन् वारि-(राक्षसों के) रक्त के प्रवाह को; कटल्
अन्ऱु कण्णि-समुद्र समझकर; कवर्न्दु-जिसको पहले पी गया था; मीळ कान्ऱु-
फिर उगलकर; विण्णिल् पौलिक्किन्ऱु-आकाश में शोभायमान; ओर् वैण् निऱ
मेक्कम्-एक श्वेत मेघ के; अौत्तान्-समान दिखाई दिये । ६१६

जटायु के शरीर में शरों के लगने से व्रण हो गये । उन व्रणों से
ताज्जा रक्त बहने लगा । तब उनको देखने पर ऐसा लगा, मानो खर-दूषण-
वध के अवसर पर जिस मेघ ने रक्त-सागर पी लिया था, वह श्वेत मेघ अब

अपना पिया रक्त उड़ेल रहा हो । जटायु श्वेतवर्ण थे और उनके शरीर पर स्थान-स्थान से रक्त निकल रहा था । ९१६

औत्ता	नुडने	युयिर्त्ता	नुरुत्ता	नवन्तोळ
पत्तोडु	पत्तिन्	नैडुम्बत्तिथिर्	उत्ति	मूक्काल्
कौत्ता	नहत्तार्	कुडैयाच्	चिर्ऱैयार्	पुडैया
मुत्तार	मार्बिर्	कवशत्तैयु	मूट्ट	रुत्तान् 917

औत्तान्—ऐसा श्वेत मेघ-सम जो रहे; उटते—(वे जटायु) तुरन्त; उयिर्त्तान्—निःश्वास छोड़कर; उरुत्तान्—कुपित होकर; अवन् तोळ पत्तु ओट्ट पत्तिन्—उसके बीसों भुजाओं की; नैडुम् पत्तिथिल्—लम्बी पंक्ति में; तत्ति—उचक बैठकर; मूक्काल् कौत्ता—चोंचों से मारकर और; नकत्ताल् कुटैया—नाखूनों से नोचकर; चिर्ऱैयाल् पुटैया—पक्षों से पीटकर; मुत्तु आर—मुक्ताहार-भूषित; मार्पिल् कवचत्तैयुम्—वक्ष पर के कवच के भी; मूट्ट अरुत्तान्—सन्धि-बन्ध तोड़ दिये । ९१७

ऐसे श्वेत मेघ के समान जो दिखे, उन जटायु ने लम्बा निःश्वास छोड़ा । क्रोध के साथ वे बीसों भुजाओं की पंक्ति में उछलकर कूदे और लगे चोंचों से मारने, नाखूनों से नोचने और अपने पक्षों से पीटने । फिर उन्होंने मुक्ताहार-भूषित उसके वक्ष पर के कवच के भी संधिवन्ध तोड़ दिये । ९१७

अरुत्तानै	यरक्कनु	मैम्बदौ	डैम्ब	दम्बु
शैरित्तान्	उडमार्बिर्	चैरित्तलुन्	देव	रञ्जि
वैरित्तार्	वैरियामु	निरावणन्	विल्लै	मूक्काल्
परित्तान्	परवैक्किर्	विण्णवर्	पण्णै	यार्प्प 918

अरुत्तानै—कवच जिन्होंने काटा उनको; अरक्कनुम्—राक्षस ने भी; ऐम्पतु ओट्ट ऐम्पतु—पचास पर पचास (एक सौ); अम्पु—शर; तट मार्पिल्—विशाल वक्ष पर; चैरित्तान्—चुभाये; चैरित्तलुम्—चुभाने पर; तेवर् अञ्चि वैरित्तार्—देव डरे और चक्रित हुए; वैरियामुन्—उनके चक्रित होने से पहले ही; परवैक्कु इरै—खगराज ने; विण्णवर् पण्णै आर्प्प—देवों के समूहों की वाहवाही प्राप्त करते हुए; इरावणन् विल्लै—रावण के धनुष को; मूक्काल् परित्तान्—चोंच से छीन लिया । ९१८

रावण के कवच को जिन्होंने खोल दिया, उन जटायु के वक्ष में रावण ने एक सौ बाण गड़ा दिये । तब देव भी डरकर उद्विग्न हो गये । तुरन्त उनकी उद्विग्नता को वाहवाही में बदलते हुए जटायु ने रावण के धनुष को अपने तुण्ड से पकड़कर छीन लिया । ९१८

अैल्लिट्ट	वैळ्ळिक्	कयिलैप्पौरुप्	पीश	तोडुम्
मल्लिट्ट	तोळा	लैडुत्तान्शिलै	वायिन्	वाड्गि

विल्लिट् दुयर्न्द नैडुमेह मैन्नप्पी लिन्दान्
 शौल्लिट् टवन्ऱोळ्वलि यारुळर् शौल्ल वल्लार् 919

ईधन् ओटुम्-शिवजी के साथ; अल्ल इट्ट-प्रकाशमान; कयिले पौरप्पु-कैलास पर्वत को; मल्ल इट्ट तोळाल्-बलिष्ठ भुजाओं से; अँटुत्तान्-जिसने उठाया था, उस रावण के; चिल्ले-धनु को; वायिल् वाङ्कि-मुख से छीनकर; विल् इट्ट उयर्न्त-इन्द्रधनुष के साथ उठे; नैडु मेक्कम् अँत-बड़े मेघ के समान; पौलिन्तान्-शोभित रहे; अवन् तोळ् वलि-उनका भुजवल; चौल् इट्ट चौल्ल वल्लार्-शब्दों से माप कर कह सकनेवाले; यार् उळर्-कौन हैं । ६१६

रावण का धनु छीनना साधारण बात नहीं था । रावण ने अपने भुजवल से शिवजी-सह प्रकाशमान कैलास पर्वत को उठाया था । उसके धनु को छीनकर जब जटायु ऊपर उड़े, तब वह इन्द्रधनुष के साथ उठ जानेवाले मेघ के समान शोभे । उनके भुजवल का सच्चा माप कौन अपने शब्दों से प्रकट कर सकेगा ? शब्द से उनका बल वर्णित करने में समर्थ कौन होगा ? । ९१९

मीळा निरुत्ता यिरङ्गणवन् विण्णि तोड
 वाळा लौरुत्तान् शिलेवायिडं निन्ऱु वाङ्गित्
 ताळा लिरुत्तान् इळल्वण्णन् इडक्कै विल्लैत्
 तोळा लिरुत्तान् तुणैत्तावैद नन्विड् रोळन् 920

तळल् वण्णन्-अग्निवर्ण शिव के; तट कै विल्लै-विशाल हस्त के (व्यम्बक नामक) धनु को; तोळाल् इरुत्तान्-अपने भुजवल से जिन्होंने तोड़ा, उन श्रीराम के; तातै तुणै-पिता के साथी; अन्पिल् तोळन्-प्रिय मित्र जटायु; मीळा निरुत्तु-युद्ध से न फिरनेवाले बली; आयिरम् कण्णवन्-सहस्रनेत्र इन्द्र को; विण्णित् ओट-हराकर आकाश में भागने को; वाळाल् लौरुत्तान्-विवश करते हुए जिसने तलवार से सताया, उस रावण के; चिल्ले-धनु को; वाय् इट्टे निन्ऱु वाङ्कि-मुख में से लेकर; ताळाल् इरुत्तान्-पैरों से तोड़कर मिटाया । ६२०

जटायु अग्निवर्ण शिवजी के हाथ के व्यम्बक नामक धनुष के भंजक श्रीराम के पिता दशरथ के साथी थे । अब प्रेम के कारण वे श्रीराम के भी मित्र बने थे । सहस्राक्ष इन्द्र में इतना बल था कि वह कभी लड़ाई में हारकर लौट नहीं जाते । उनको भी रावण ने युद्ध में हराकर उन्हें भागने को विवश कर दिया था । ऐसे रावण के धनुष को जटायु ने अपनी चोंच से लेकर पैरों के नीचे रखकर तोड़ दिया । ९२०

जालम् बटुप्पान्तन दारुलुक् केरु नल्विल्
 मूलम् मीडिप्पुण्डु कण्डु मुत्तिन्द नैञ्जन्
 आलम् मिडर्रान्पुर मट्टदौ रम्बु पोलुम्
 शूलम् मैडुत्तार्त् तैरिन्दान्मडन् दोर्रि लादान् 921

बालम् पटुपान्-लोक-नाशक; मइम् तोइइलातान्-और वीरता जिसने नहीं खोयी थी, उस रावण ने; तततु आइइलुककु एइइ-अपनी शक्ति के योग्य; नल् विल्-उत्तम धनुष को; मूलम् ओटिपुण्टतु कण्टु-मूल में टूटा देखकर; मुत्तिन्त नैञ्चन्-क्रुद्ध-चित्त होकर; आलम् मिटइइन्-विषकण्ठ; पुरम् अट्ट-(शिव के) त्रिपुरदाहक; ओर् अम्पु पोलुम्-अनुपम शर के समान; चूलम् अँटुत्तु-शूल को लेकर; आर्त्तु-गरजते हुए; अँइन्तान्-फेंका । ६२१

रावण विश्वनाशक था । उसकी शक्ति क्षीण नहीं हुई थी । उसने अपने बल के योग्य धनुष को टूटा देखा । बड़ा क्रोध आ गया । उसने अपने त्रिशूल को, जो त्रिपुरान्तक के अस्त्र के समान प्रचण्ड था, जटायु पर फेंका । ९२१

आइइ	तिवर्त्तन्	इणरावँत	दाइइल्	काणँन्
इइइ	तैरुवैक्किइ	मुत्तलै	यैः(ह)कै	मारबिन्
मेइइ	निदुशैयदव	रारँन्	विण्णु	ळोरहळ
तोइइडु	निन्ऱार्दम	तोळ्बुडै	कोट्टि	यार्त्तार् 922

अँरुवैक्कु इइ-गृध्रराज ने; इवन् आइइन् अँतुइ-यह शक्तिहीन ऐसा; उणरा-सोचकर; अँतु आइइल् काण्-मेरी शक्ति देख; अँतुइ-कहते हुए; एइइन्-जो चलाया (रावण ने); मु तलै अँ.कै-उस त्रिशूल को; मारपिन् मेइइन्-जटायु ने वक्ष पर धारण कर लिया; विण् उळोर्कळ्-आकाशवासी देवों ने; इतु तान् चैयपवर् यार् अँत-यह काम करनेवाला कैसा (शक्तिमान) है, कहकर; तोइइतु निन्ऱार्-भ्रमित खड़े रहे; तम् तोळ् पुटै कोट्टि-भुजाओं को ठोकते हुए; आर्त्तार्-हल्ला मचाया । ६२२

उसने सोचा कि इसके सामने ठहरने की शक्ति जटायु में नहीं है । इसलिए उसने यह कहते हुए त्रिशूल को चलाया कि अब मेरा पराक्रम जानोगे । पर जटायु ने उसे अपने कठोर वक्ष पर धारण कर लिया । देवों को बड़ा विस्मय हो गया । हा ! यह काम करनेवाला कैसे साहस का होगा ? वे चकित खड़े रह गये । फिर वे अपने कन्धे ठोककर शाबाशी का हल्ला मचाने लगे । ९२२

पौन्तोक्	कियर्दम्	पुलन्तोक्किय	पुन्ग	णोरुम्
इन्तोक्किय	रिल्वळि	यैय्दिय	नल्वि	रुन्दुम्
तन्तोक्किय	नैञ्जुडै	योहियर्	तम्मैच्	चारन्द
मैन्तोक्कियर्	नोक्कमु	मामँन्	मीण्ड	दव्वेल् 923

पौन् नोक्कियर् तम्-स्वर्ण पर आँख लगाये रहनेवाली वारवनिताओं के; पुलन् नोक्किय-स्थान पर जानेवाले; पुन् कणोरुम्-दरिद्र लोग; इन् नोक्कियर् इल् वळि-सौठी आँखों की गृहिणी से रहित घर में; यैय्तिय नल् विरुन्तुम्-आगत उत्तम अतिथि और; तन् नोक्किय-आत्मलीन; नैञ्चुटै योक्कियर्-मन वाले योगियों के; तम्मै

चारन्त-पास जो गयीं; मैल् तोक्कियर्-उन कोमल दृष्टि वालियों की; नोक्कमुम्
आम् अँत-कामना के समान ही; अ वेल्-वह त्रिशूल; मीण्टु- (बूथा हो) लौट
आया । ६२३

वह शूल बेकार हो लौट आया । (उसके लिए कवि की उपमाएँ
देखिए ।) स्वर्ण पर ही आँख लगाये रहनेवाली वारवनिताओं के घर से
पैसेविहीन दरिद्र जैसा; मधुर दृष्टि और व्यवहार के साथ आतिथ्य जो कर
सकती है, ऐसी गृहिणी से विहीन घर से अतिथि जैसे; और आत्मलीन
मन वाले योगियों के पास प्रेम की कामना ले जानेवाली स्त्रियाँ जैसे विफल
मनोरथ होकर लौट आती हैं, वैसे ही वह शूल बेकार हो लौट आया । ९२३

वेहम्मुडन्	वेलिळन्	दान्पडै	वेर्	डामुन्
माहम्मर्	युम्बडि	नीण्ड	वयङ्गु	मान्ऱैर्
पाहन्ऱलै	यंपपडित्	तुप्पडर्	कड्पि	ताळ्बाल्
मोहम्बडैत्	तानुळ	वैय्द	मुहत्	तैरिन्दान् 924

वेल् इळन्तान्-त्रिशूल को बेकार पाकर; वेकम् उटन्-वेग के साथ; पटै वेङ्ग-
अन्य अस्त्र; अँटा मुन्-लेने से पहले; माकम् मर्ऱ्युम् पटि-बड़े आकाश को ढँकते
हुए; नीण्ड-विशाल और उन्नत; वयङ्कु मान् तेर्-दर्शनीय अश्वों से जुते रथ के;
पाकन् तलैये पडित्तु-सारथी का सिर नोच लेकर; पटर् कड्पिताळ् पाल्-गम्भीर
पातिव्रत्य से युक्त देवी सीता के प्रति; मोकम् पटैत्तान्-काममोहित; उळैवु अँय्त-
(रावण को) व्याकुल करते हुए; मुकत्तु अँरिन्तान्-उसके मुख पर फँका । ६२४

शूल खोने पर रावण ने वेग के साथ और हथियार का प्रयोग करने
का प्रयास किया । पर उसके पहले ही जटायु ने आकाश को छिपाते हुए
विशाल और उन्नत जो रहा और जिससे श्रेष्ठ अश्व जुते थे, उस रथ के
सारथी का सिर नोच लिया और उसे उस रावण के मुख पर फँक दिया,
जो निर्लज्ज गम्भीर पातिव्रत्यशीला सीता के प्रति काममोहित था । उससे
रावण बहुत ही उद्विग्न हुआ । ९२४

अँरिन्दान्	रनैनोक्कि	यिरावण	तैञ्जि	ताऱ्ऱल्
अरिन्दान्	मुत्तिन्दान्डदी	राडहत्	तण्डु	वाङ्गिप्
पौरिन्दाङ्	गैरियिन्	शिहैपीङ्गि	यैळप्	पुडैत्तान्
मरिन्दा	नैरुवैक्किऱै	माल्वरै	पोल	मण्मेल् 925

अँरिन्तान् तत्तै नोक्कि-जिन्होंने फँका, उनको देखकर; इरावणन्-रावण ने;
नैञ्चिन् आऱ्ऱल्-(जटायु के) मन की शक्ति; अरिन्तान्-जाना; मुत्तिन्तु-छोशकर;
आण्डु ओर्-वहाँ एक; आटक् तण्डु वाङ्कि-स्वर्णवण्ड लेकर; पौरिन्तु-अंगार
बरसाते हुए; अँरियिन् चिकै-अग्निज्वाला; पीङ्कि अँळ-भभक उठे, ऐसा; पुडैत्तान्-
जटायु को उससे) पीटा; नैरुवैक्कु इरै-गीधों का राजा; मण् मेल्-भूमि पर; माल्
वरै पोल-बड़े पर्वत के समान; मरिन्तान्-औघा गिरे । ६२५

रावण ने, सारथी का सिर नोचकर उसके मुख पर जो फेंक सकते थे, उन जटायु की दिलेरी जानी। क्रोध के साथ उसने एक स्वर्णदण्ड उठाया, जिसके सिर पर अग्नि की ज्वाला अंगारे बिखेरते हुए जल रही थी। उसने उससे जटायु को पीटा। गीधों के राजा जटायु उससे आहत होकर बड़े पर्वत के समान भूमि पर अधोमुख गिर पड़े। ९२५

मण्मेल्	विळुन्दात्	विळलोडुम्	वयङ्गु	मान्नेर्
कण्मे	लौळियुन्	दौडरावहै	तान्ग	डावि
विण्मे	लैळुन्दा	नैळमैल्लिय	लाळुम्	वैन्दीप्
पुण्मे	नुळैयत्	तुडिक्किन्ऱवळ्	पोऱ्पु	रण्डाळ् 926

मण मेल् विळुन्तात्-भूमि पर जो गिरे उनके; विळल् ओटुम्-गिरते ही; वयङ्कु मान् तेर्-श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ को; कण् मेल् लौळियुम् तौटरा वकै- (जटायु की) दृष्टि का प्रकाश भी न पीछा कर सके, इस प्रकार; तान् कटावि-स्वयं चलाते हुए; विण् मेल् अळुन्तात्-आकाश में उड़ने लगा; अळ-उठने पर; मैल्लियलाळुम्-कोमलप्रकृति सीता भी; पुण् मेल्-घाव में; वैन् ती नुळैय-भयंकर आग के घुसने पर; तुडिक्किन्ऱवळ् पोल्-तड़पती-सी; पुरण्डाळ्-(रथ पर गिरकर) लोटीं। ६२६

उनके गिरते ही रावण अपने रूपवान अश्वों से जुते रथ को इतनी तेजी से चलाते हुए ऊपर उठा कि जटायु की तीक्ष्ण दृष्टि की ज्योति भी मन्द पड़ गयी। जब उसका रथ ऊपर गया, तब कोमल-स्वभाव सीताजी व्रण में आग घुसने पर जैसे तड़प गयीं और गिरकर लोटीं। ९२६

कौळुन्दे	यनेयाळ्	कुळैन्देङ्गिय	कौळहै	कण्डान्
अळुन्दे	लवलत्तिडं	यञ्जलै	यन्त	मैन्ना
अळुन्दा	तुयिर्त्तान्ड	वैङ्गिन्निप्	पोव	दैन्ना
विळुन्दा	नवन्ऱैर्मिशं	विण्णवर्	पण्णै	यार्प्प 927

कौळुन्ते अनेयाळ्-मृदुपल्लव-सदृश देवी का; कुळैन्तु-विलस्य होकर; एङ्किय-तरसने का; कौळ् कण्डान्-भाव देखा; अन्तम्-हंसिनी; अवलत्तु इटै-दुःख में; अळुन्तेल्-मत डूबो; अञ्जलै-मत डरो; अन्ता-(धीरज-वचन) कहकर; उयिर्त्तान् अळुन्तान्-निःश्वास छोड़ते हुए उठे; अट-रे; अङ्कु इनि पोवतु-कहाँ (वचकर) अब जाओगे; अन्ना-कहकर; विण्णवर् पण्णै-देवसमूहों के; यार्प्प-आनन्दरव करते; अवन् तेर् मिच्चै-उसके रथ पर; विळुन्तात्-कूदे। ६२७

मृदु पल्लव-सम देवी का मुरझाना और रोना देखकर जटायु ने उन्हें आश्वस्त किया कि हंसिनी-तुल्य देवी! मत डरो। दुःख में डूब मत जाओ। दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए वे उठे। 'रे! कहाँ जाकर वचोगे?' यह पूछते हुए उसके रथ पर उछलकर कूद पड़े। जटायु का पराक्रम देखकर देवी का समूह आनन्दनाद कर उठे। ९२७

पाय्न्दा न्वन्वन् मणित्तण्डु परित्तै रिन्दान्
 एय्न्दा कदित्तेर्प् परियेट्टिनो डैट्टु मैञ्जित्
 तीय्न्दा शरवोशियत् तिण्डिडिर् रुण्ड वाळाल्
 काय्न्दान् कवर्न्दानुयिर् कालनुड् गैवि दिर्त्तान् 928

पाय्न्तान्-जो कूदे, उन्होंने; अवन्-उसका; पल् मणि तण्डु-अनेक रत्न-जड़ित दण्डायुध को; परित्तु अरिन्तान्-छोनकर फेंक दिया; एय्न्तु आर्-युक्तता के साथ शोभनेवाले; कति तेर्-गतिमान रथ के; परि अेट्टितोडु अेट्टु-सोलहों अश्वों को; मैञ्चि तीय्न्तु-बलहीन होकर, ध्वस्त होकर; आच् अड-निपट नष्ट करते हुए; वीचि-उछालकर; अ तिण् तिरल्-उस कठिन बलवान; तुण्ड वाळाल्-चोंच रूपी तलवार से; काय्न्तान्-मिटायी; उयिर् कवर्न्तान्-जान का गाहक; कालत्तुम्-यम भी; कै वितिर्न्तान्-हाथ मलकर कांपा । ६२८

झपटकर जटायु ने पहले उसका रत्नजड़ित दण्डायुध छोनकर दूर पटक दिया । उसके तीव्रगामी रथ के योग्य और उससे जुते सोलहों अश्वों को अपने कठोर तुण्ड रूपी खड्ग से दुर्बल करके विल्कुल विध्वस्त कर दिया । उनकी जान के गाहक यम भी इसको देखकर हाथ मलते हुए कांप गये । ९२८

तिण्डे रळित्ताङ्गवन् रिण्वुड् जेर्न्द तूणि
 विण्डान् मरैप्पच् चैरिहिन्ऱन विल्लि लामै
 मण्डा रमर्दान् वळङ्गामैयिल् वच्चे माक्कळ्
 पण्डार मौक्किन्ऱन वळ्ळुहि राप्प रिन्तान् 929

तिण् तेर् अळित्तु-कठोर रथ को ध्वस्त करके; विण्तात् मरैप्प-आकाश को ही छिपाते हुए; चैरिक्किन्ऱन-जो भरे रहे; विल् आङ्कु इलामै-धनुष के न होने से; मण्डु आर्-घोर रूप में चलनेवाले; अमर् वळङ्कामैयिन्-युद्ध में उपयोगी न होने के कारण (जो); वच्चे माक्कळ्-कंजूस लोगों के; पण्डारम् ओक्किन्ऱन-भण्डार के समान हैं; अवन् तिण् पुडम् चेर्न्त-उसकी बलवान पीठ पर बँधे; तूणि-तूणीरों को; वळ् उकिराल्-तेज नखों से; परित्तान्-छोनकर फेंक दिया । ६२९

रावण का सबल रथ भी नष्ट हो गया । फिर जटायु ने तूणीरों पर ध्यान दिया । वे तूणीर आकाश को छिपानेवाले शरों से भरे थे । वे शर धनु के न रहने से अब कठोर युद्ध में उपयोगी नहीं रह गये थे । वे इस कारण कृपण के भण्डार के समान रहे । जटायु ने ऐसे शरों के तूणीरों को, जो रावण की बलवान पीठ पर बँधे थे, अपने तीक्ष्ण नखों से नोचकर छीन लिया । ९२९

माच्चिच् चिरल्पाय्न्दन मारुबितुन् दोळहण् मेलुम्
 ओच्चिच् चिरहार् पुडैत्तानुलै याचि लुनुडु

मूचचित् तविरा वणतुम्मुडि शायत्ति रुन्दान्
पोचचित् तनैपोलु निन्नारु लैतपु हन्डान् 930

मा चिच्चिरल्-बड़ा मछरंगी (मछली खानेवाले जल-पक्षी); पायन्तैत-झपटा हो
ऐसा; मारपितुम्-वक्ष पर; तोळ्कळ् मेलुम्-और कंधों पर; ओच्चि-वेग के
साथ; चिड्काल् पुटैत्तात्-पंखों से मारा; उलैया विळुनु-शिथिल होकर नीचे
गिरकर; मूचचित्-मूच्छित हुआ; इरावणतुम्-रावण भी; मुटि चायत्तु-सिर
झुकाये; इरुन्तात्-रहा; पोच्चु-बस, गया; इततनै पोलुन्-इतना ही क्या;
निन् आडुल्-तुम्हारा बल; अँत-ऐसा; पुकन्डान्-कहा । ६३०

जटायु बड़े मछरंगे के समान (जो जल-पक्षी इतनी तेजी से जलाशयों
पर मछलियों पर झपटते हैं कि मछली को जल में डूबने को भी समय नहीं
मिलता) रावण के वक्ष पर और कंधों पर झपटे और पंखों से पीटने लगे ।
रावण उन प्रहारों से थक गया । मूच्छित-सा हुआ और सिर झुकाये रहा ।
तब जटायु ने चिढ़ाया कि बस, गया ! इतना ही था तुम्हारा बल ! । ९३०

अव्वे लैयिने मुत्तिन्दान्मुत्तिन् दारु लन्नव्
वैव्वे लरक्कन् विडलाम्बडै वेरु काणान्
इव्वे लैयिने यिवत्तिन्नयि रुण्व नैन्नाच्
चैव्वे पिळैया नैडुवाळुरै तीरुत्तै रिन्दान् 931

अ वेलैयिन् ए-उसी समय; मुत्तिन्तान्-क्रुद्ध हुआ; मुत्तिन्तु-क्रोध करके;
आडुलन्-शक्तिमान; अ वैम् वेल् अरक्कन्-कठोर भालाधर राक्षस; विटल् आम्
पटै-प्रेषण-योग्य हथियार; वेरु काणान्-दूसरा कुछ नहीं देखा; इ वेलैयिन् ए-अभी;
इवन् इन् उयिर्-इसकी प्यारी जान; उण्पैन्-खाऊंगा; अँत्ता-कहकर; पिळैया
नैट् वाळ्-अमोघ लम्बी तलवार को; उरै तीरुत्तु-म्यान से निकालकर; चैव्वे
अँरिन्तान्-अच्छे प्रकार से चलायी । ६३१

ज्योंही रावण ने वह सुना, त्योंही वह क्रुद्ध हो उठा । शक्तिशाली
कठोर भालाधारी उस राक्षस ने प्रेषणयोग्य कोई अन्य हथियार न देखकर
अपनी चन्द्रहास तलवार म्यान से खींच ली । 'अभी इसका काम तमाम
कर दूंगा' —यह कहते हुए उसने जटायु पर तलवार की वार की । ९३१

वलिपिन् उलैतोर्लिलन् मारुर्रुन् दैय्व वाळाल्
नलियुन् दलैयैन्नुडु वन्नियुम् वाळ्क्कै नाळुम्
मैलियुड् गडैशैन्नुळ् दाहलिन् विण्णिन् वेन्दन्
कुलिशम् मैरियच्चिरै यडुदोर् कुन्डिन् वीळ्न्दान् 932

वलिपिन् तलै-रावण के बल से; तोर्लिलन्-हार नहीं खायी (जटायु ने);
मारु अरुम्-दुर्घर्ष; तैय्व वाळाल्-देवी तलवार से; नलियुम् तलै अँन्डु-किसी का
भी सिर कटेगा, इससे; अन्नियुम्-और भी; वाळ्क्कै नाळुम्-आयु भी; मैलियुम्
कटै चैन्नु उळु-अन्त होने को आयी थी; आकलिन्-इसलिए; विण्णिन् वेन्तन्-

सुरेन्द्र के; कुलिचम् अँरिय-कुलिश चलाने पर; चिउँ अइरुतु-पंख कटकर; ओरु कुन्निरुन्-(गिरनेवाले) एक पर्वत के समान; वीळ्न्तान्-जटायु नीचे गिर पड़े। ६३२

जटायु रावण के बल से विजित नहीं हुए। पर तलवार देवी थी और उसको वरदान प्राप्त था कि वह किसी का भी सिर काट सकती थी। अलावा इसके, जटायु की आयु भी अन्त होने को आ गयी थी। इसलिए देवेन्द्र के वज्र से पंखकटा होकर जैसे पर्वत गिरा, वैसे अपने पक्षों के कटने पर जटायु नीचे गिर गये। ९३२

विरिन्दार्	शिरैहीळुड	वीळ्न्दनन्	मण्णिन्	विण्णोर्
इरिन्दा	रिळ्न्दा	डुण्येन्न	मुनिक्क	णङ्गळ्
परिन्दार्	पडर्विण्डुवि	नाट्टवर्	पेम्बोन्	मारि
शौरिन्दा	रडुनोक्किय	शीदं	तुळक्क	मुड्राळ् 933

विरिन्तु आर् चिरै-विवृद्ध और मनोरम पंखों के; कोळ् उड-नीचे गिरने से; मण्णिन् वीळ्न्तन्- (जटायु भी) भूमि पर गिर गये; विण्णोर् इरिन्तार्-व्योमवासी अस्त-व्यस्त भागे; मुत्ति कणङ्कळ्-मुनिवृन्द; तुण् इळ्न्ताळ् अँन्त-सहायक खो गयीं (देवी) यह कहकर; पटर् परिन्तार्-दुःख से आक्रांत हुए; विण्डुविन् नाट्टवर्-श्रीविष्णुलोकवासी नित्यसूरिवृन्द ने; पेम्पोन् मारि-स्वर्णवर्षा; चौरिन्तार्-करायी; अतु नोक्किय चीतै-उसको देख सीताजी; तुळक्कम् उड्राळ्-सिहर उठीं। ६३३

फँसे रहे मनोरम पक्ष कटकर गिरे और वे भी भूमि पर गिर गये। यह देखकर देवगण अस्त-व्यस्त होकर भाग चले। मुनिवृन्द यह कहते हुए दुःखी हुए कि सहायतार्थ आया जटायु भी हत हो गया। श्रीविष्णु के वैकुण्ठलोकवासी नित्यसूरीवृन्द ने जटायु पर स्वर्णवर्षा करायी। (वैकुण्ठ में भगवान विष्णु के अलावा गरुड़, सुदर्शन आदि नित्यसूरी और मुक्त जीव, जो भूमि का वास पूरा करके मोक्ष को प्राप्त हुए हैं, हैं। विशिष्टाद्वैत मत के अनुसार ये नित्यसूरि विष्णु-भक्तों की मृत्यु होने पर स्वयं आकर उनको बड़े आदर के साथ लिवा ले जाते हैं।) यह देखकर सीताजी बहुत व्यथित हुईं। ९३३

वैळ्हुम्	मरक्कन्	नैडुविण्बुह	वारत्तु	मिक्कान्
तौळ्हिन्	उलैय्यदिय	मानैन्च्	चोरन्डु	नैवाळ्
उळ्हुम्	मुयिर्क्कु	मुयङ्गुम्मोरु	शार्वु	काणाळ्
कौळ्हीम्	वौडियक्	कौडिवीळ्न्दडु	पोड्	कुलैन्दाळ् 934

वैळ्कुम् अरक्कन्-(जटायु के पराक्रम के सामने) जो शरम खाता था, वह राक्षस; नैडु विण् पुक्-(अब) आकाश में बहुत दूर गूँज उठे, ऐसा; आरत्तु-शोर मचाकर; मिक्कान्-स्वाभिमान में बड़ गया; तौळ्हिन् तलै अँय्ति-जाल में फँसी हुई; मान् अँत-हरिणी के समान; चोरन्तु नैवाळ्-थकी और क्लिन्न; उळ्कुम्-(सीताजी ने) सोचा (कि क्या किया जाय); उयिर्क्कुम्-ठण्डी आहें भरों; उयङ्कुम्-मुरझातीं;

और चारपु काणाळ्-कोई उपाय नहीं देखतीं; कौळ् कौम्पु ओटिय-अवलम्ब-तरु के टूटने पर; कौटि वीळ्न्ततु पोल्-लता गिरी जैसे; कुलैन्ताळ्-जर्जर हुई । ६३४

रावण जटायु का साहस देखकर पहले शरम से पीड़ित था । अब वह स्वाभिमान में बढ़ गया । उसने आकाश में बहुत दूर तक गुंजाते हुए गर्जन किया । सीताजी जाल में फँसी हरिणी के समान शिथिल पड़ गयीं । उद्विग्न हो गयीं । 'अब क्या करूँगी ?' यह सोचने लगीं । ठण्डी आहें भरीं । कोई सहायक नहीं रहा । अवलम्बित शाखा के टूटने पर गिरकर तड़पनेवाली लता के समान वे अस्त-व्यस्त होकर छटपटायीं । ९३४

❀ वन्रुणै युळ्नेत्त वन्द मन्तनुम्, पौन्ऱित्त नेत्तक्किन्नि पुहलैन् नेन्गिन्ऱाळ्
इन्ऱुणैप् पिरिन्दिरुन् दिन्ऱन् लैय्दिय, अन्ऱिलम् बैडैयैन् वरऱ्ऱि त्ताळरो 935

इन् तुणै पिरिन्ऱु इरुन्ऱु-प्यारे संगी से विछुड़कर; इन्तल् अय्यित्तिय-कण्ठ-प्राप्त; अन्ऱिल् अम् पैंडै अत्त-मनोरम क्राँची के समान; अरऱ्ऱिताळ्-सीताजी विलपीं; वल्ऱु तुणै उळ्ऱु-शक्तिमान सहायक हैं; अत्त-ऐसा; वन्त मन्तनुम्-जो आये, वे (गृध्र-) राज भी; पौन्ऱित्तन्-मर गये; अत्तक्कु इत्ति पुक्कल् अन्-अब मेरे लिए शरण कहाँ; अन्किन्ऱाळ्-कहतीं । ६३५

वे प्यारे जीवन-संगी से वियुक्त और दुःखी हुई मनोरम क्राँची के समान विलाप करने लगीं । सबल सहायक आ गया —यह सोचकर मैं निश्चिन्त थी । ऐसे सहायक, गीधों के राजा भी मर गये । अब मेरे लिए शरण कहाँ होगी ? यह कहते हुए वे रोयीं । ९३५

❀ पित्तव नुरैयितै मरुत्तुप् पेदैयेन्, अन्तवन् इत्तैक्कडि दहऱ्ऱि नेन्बौर
मन्तवन् शिऱैयऱ मयङ्गि नेन्विदि, इन्तमु मेव्विनै यियऱ्ऱु मोर्वैत्ता 936

पेतैयेन्-जड़मति; पित्तवन् उरैयितै-देवर का कहना; मरुत्तु-काटकर; अन्तवन् तत्तै-उनको; कटितु अक्ऱित्तेन्-शीघ्र हटा दिया; पौरु मन्तवन् चिऱै अऱु- (मेरी सहायता के लिए) युद्धरत गृध्रराज का पंख कटवाया; मयङ्गितेन्-अब भ्रमित हूँ; विति-कर्मगति; इन्तमुम्-और भी; अँ वित्तै-कौन सा कार्य; यियऱ्ऱुमो-करायगी; अत्ता-सोचती हुई । ६३६

मैं जड़मति हूँ । देवर ने बहुत समझाया । उनकी बात काटकर उनको जल्दी जाने को विवश किया । अब युद्ध करने जो आये, उनके पंख कट गये और वे गिर गये । अब मैं भ्रमित हूँ । विधि और भी क्या-क्या करेगी ? नहीं जानती । —यह कहकर वे दुःखी हुई । ९३६

❀ अल्ललुऱ्	रेनैवन्	दब्ज	लैन्ऱविन्
नल्लवन्	रोऱ्पदे	नरहन्	वैल्वदै
वैल्वदुम्	बावमो	वेदम्	पौय्क्कुमो
इल्लैयो	वरमैन्	विरङ्गि	येङ्गिनाळ् 937

अल्लल् उर्रेतै—दुःखग्रस्त मुझे; वन्तु अन्वल्—आकर मत डरो; अँतु—जिन्होंने कहा; इ नल्लवल्—ये उत्तम जीव; तोरुपते—हार जायें क्या; नरकन् वल्लवते—नारकी (रावण) जीत जाये; वल्लवतुम् पावमो—पाप ही जीत पा जाय; वेतम् पौय्क्कुमो—क्या वेद झूठे बनेगे; अरुम् इल्लैयो—धर्म नहीं रहा क्या; अँत—ऐसा; इरङ्कि—दुःखी होकर; एङ्किताळ्—रोयीं । ६३७

दुःखपीडित मुझे इन उत्तम ने अभयदान किया । कहा कि मत डरो । ये भले मानुस हारें, यह क्या न्याय है ? नारकी रावण जीत जाता है —यह क्या ? पाप ही विजयी होगा क्या ? वेद झूठे हो गये हैं क्या ? ('सत्यमेव जयते' कहते हैं वेद ।) क्या धर्म नहीं रहा ? —ऐसा-ऐसा कहकर वे मुरझायीं, रोयीं । ९३७

ॐ नाणिले	नुरैहोडु	नडन्द	नम्विमीर्
नीणिले	यरुनैरि	निन्ऱु	ळोर्क्कैलाम्
आणियै	युन्दैयर्क्	कमैन्द	वन्वन्नैक्
काणिय	वर्मन्नैक्	कलङ्गि	विम्मिताळ् 938

नाण् इलेन्—निर्लज्ज मेरा; उरै कौटु—वचन मानकर; नडन्त नम्विमीर्—जो चले, वे गुणपूर्ण; नीळ् निले—चिर स्थिर; अरुम् नैरि—धर्ममार्ग पर; निन्ऱु उळोर्क्कु अल्लाम्—जो स्थित हैं, उन सबके; आणियै—धुरंधर और; उन्तैयर्क्कु—आपके पिता के; अमैन्त नृण्पतै—युवत मित्र को; काणिय—देखने के लिए; वम्—आइए; अँत—कहकर; कलङ्कि विम्मिताळ्—रोयीं, सिसकी । ६३८

मैं निर्लज्ज हूँ । मेरी बात पर जो चले, वे पूर्णपुरुष ! चिरकाल से स्थिर धर्ममार्गगामियों के लिए जटायु धुरन्धर थे । वे आपके पिता के योग्य मित्र थे । उनको देखने के लिए आइए —कहती हुई वे उद्विग्न होकर सिसकीं । ९३८

अँल्लियल्	विशुम्बिडे	यिरुन्द	नेमियाय्
शौल्लिय	वरुनैरि	तौडर्न्द	तोळ्ळैमै
नल्लिय	लरुङ्गडन्	कळित्त	नम्बियैप्
पुल्लुदि	योवैन्नप्	पौरुमि	येङ्गिताळ् 939

अँल् इयल्—प्रकाशमय; विचुम्पु इटै—आकाश में; इरुन्त नेमियाय्—विद्यमान चक्रवर्ती (दशरथ); शौल् इयल्—प्रशंसनीय; अरु नैरि तौडर्न्त—धर्ममार्गगामी; तोळ्ळैमै—मित्रता के लिए योग्य; नल् इयल् अरुम् कटन्—अच्छे शास्त्रों में कथित श्रेष्ठ कर्तव्य; कळित्त—जो कर चुके; नम्बियै—पूर्णजीव जटायु को; पुल्लुतियो—वहाँ आलिंगन कर लेंगे क्या; अँत—कहकर; पौरुमि—आहें भरकर; एङ्किताळ्—रोयीं । ६३९

प्रकाशमय आकाश (स्वर्ग) में विद्यमान चक्रवर्ती ! प्रशंसनीय धर्मसम्मत मित्रता के शास्त्रविहित कर्तव्य जो पूरा कर चुके हैं, वे जटायु

उधर आ रहे हैं। उनका आलिंगन कर लेंगे न ? —सीताजी सिसकियाँ भरती हुई रोयीं। ९३९

कर्पुपल्लि	यामैयैन्	कडमै	यायितुम्
पौरुपल्लि	यावलम्	बौरुन्दुम्	बोरवलान्
विर्पल्लि	युण्डदु	विनैयितेन्	वन्द
इर्पल्लि	युण्डदैन्	इरिङ्गि	येङ्गिनाळ् 940

कर्पु अल्लियामै-पातिव्रत्य की रक्षा; अैन् कटमै-मेरा कर्तव्य है; आयितुम्-तो भी; पौरुपु अल्लिया-तेजोमय; बलम् पौरुन्दुम्-बल से युक्त; पोर वलान्-युद्धवीर, श्रीराम का; विर् पल्लि उण्टतु-कोदण्ड अपयश का भाजन हुआ; विनैयितेन् वन्त-पापी मेरे जन्म का; इल् पल्लि उण्टतु-कुल भी निन्द्य हो गया; अैन्-कहकर; इरिङ्गि एङ्किनाळ्-आर्द्र होकर रोयीं। ९४०

अपने पातिव्रत्य का पालन करना मेरा कर्तव्य है, सही। तो भी अब इस कार्य से तेजोमय बलसंयुक्त युद्धवीर श्रीराम के कोदण्ड पर बट्टा लग गया है। पापिनी मैंने जिस कुल में जन्म लिया, उस जनककुल पर अपयश का धब्बा लग गया। हाय ! कहती हुई सीताजी व्यग्र होकर रोयीं। ९४०

✽ एङ्गुवा	उतिमैयु	मिरिहि	ळन्दवन्
आङ्गुरु	निलैमैयु	मरक्क	नोक्किनात्
वाङ्गिनत्	इेरिडै	वैत्त	मण्णोडुम्
वीङ्गुवोण्	मीक्कोडु	विण्णि	नेहिनात् 941

एङ्गुवाळ् ततिमैयुम्-रोनेवाली सीताजी की निस्सहायता; इरुक्कु इळन्तवन्-पंखहीन हुए जटायु की; आङ्कु उडु-वहाँ की (मरणासन्न); निलैमैयुम्-स्थिति की; अरक्कन् नोक्किनात्-राक्षस ने देखा; तेर् इटै वैत्त-रथ में रखी हुई; मण् ओडुम्-भूमि के अंश के साथ; वाङ्किनत्-उठा लेकर; वीङ्कु तोळ् मी कौडु-पुष्ट और उन्नत कन्धों पर रखकर; विण्णिन् एकिनात्-आकाश में गया। ९४१

राक्षस ने देखा कि अब देवी निस्सहाय हो गयी हैं। उधर जटायु भी मरणोन्मुख अवस्था में थे। सन्दर्भ का लाभ उठाकर उसने सीताजी को भूमि के अंश के साथ रथ से उठाया। अपने उन्नत और स्थूल कन्धों पर धारण किये वह आकाश में चला। ९४१

✽ विण्णिडै	वैय्यव	नेहुम्	वैहत्ताल्
कण्णोडु	मनमवै	शुळन्ऱ	कर्पिनाळ्
उण्णिडै	वुणर्वळिन्	दीन्ऱु	मोर्न्विलळ्
मण्णिडैत्	तन्तैयु	मडन्डु	शाम्बिनाळ् 942

विण् इटै-आकाश में; वैय्यवन्-कूर के; एकुम् वेक्त्ताल्-जाने की तीव्र गति के कारण; कण् ओटु मत्तम् अवै-आँखों के साथ मन भी; चुळन्ऱ-चक्रित हुआ;

कर्पिताळ्-वैसी पतिव्रता सीताजी; उळ् निरु उणर्वु अळिन्तु-मन की प्रज्ञा खोकर;
 ओन्नुम् ओरन्तिलळ्-कुछ नहीं जानतीं; तन्नुयुम् मरन्तु-अपनी सुध भी खोकर;
 मण् इटै-भूमि (के अंश) पर; चाम्पिताळ्-मूर्च्छित पड़ी रहीं। ६४२

रावण आकाश-मार्ग से अति तीव्र गति में जा रहा था। उसके कारण देवी सीता की आँखें चकरा गयीं। मन भी चक्कर खाने लगा। पतिव्रता देवी की प्रज्ञा ही निष्क्रिय हो गयी। कुछ समझ नहीं पायी। आखिर मूर्च्छित होकर वह भूमि के अंश पर गिरीं और मुरझायीं। ९४२

ॐ एहिन्	तरक्कन्नु	मैरुवै	वेन्दन्नुम्
मोहर्वेन्	दुयर्शिरि	दाऱि	मुन्निये
माहमे	नोक्किन्नान्	वज्जन्	वल्लैयिल्
पोहुदल्	कण्डहम्	बुलर्न्नु	शौल्लुवान् 943

अरक्कन्नुम्-निशाचर भी; एकितन्-गया; मैरुवै वेन्दन्नुम्-गीधों के राजा भी;
 मोक् वैम् तुयर्-मूर्च्छा के कठोर दुःख से; चिऱितु आऱि-कुछ शान्त होकर; मुन्निये-
 स्मरण करते हुए; माहम् मेल् नोक्किन्नान्-आकाश में ऊपर देखा; वज्जन् वल्लैयिल्
 पोकुतल् कण्डु-बंचक का शीघ्र जाना देखकर; अकम् पुलर्न्तु-मन में तप्त होकर;
 शौल्लुवान्-कुछ कहने लगे। ६४३

रावण आगे बढ़ता जा रहा था। जटायु मूर्च्छा के कठोर दुःख से बाहर आये। उनको धीरे-धीरे घटित बातें स्मरण आने लगीं। उन्होंने ऊपर देखा। रावण सीताजी को लिये जा रहा था। जटायु का मन सूख गया। वे कुछ कहने लगे। ९४३

ॐ वन्दिलर्	मैन्दर्दाम्	मरुहिल्	कैय्दिय
वैन्दुयर्	तुडैत्तन्	रैन्नु	मैय्पुहळ्
तन्दिलर्	विदियिन्	वरुम	वैलियेच्
चिन्दितर्	मेलिनिच्	चैयलै	ताड्गौलो 944

मैन्तर् ताम्-मेरे पुत्र; वन्दिलर्-नहीं आये; मरुहिल्-वधू पर; कैय्दिय-
 आया; वैम् तुयर्-कठोर दुःख; तुडैत्तन् अन्तुम्-दूर कर दिया, यह; मैय् पुहळ्-
 सच्चा यश; तन्दिलर्-नहीं पाया (नहीं दिलाया उन्होंने); विदियिन् आर्-विधियों
 से विशिष्ट (या वित्तियितार्-विधि ने); तरुम वैलिये-धर्म के बाड़े को; चिन्दितर्-
 खोल दिया; मेल्-आगे; चैयल्-करने योग्य काम; अन् आम् कौल्-क्या होगा। ६४४

ओफ़ ! पुत्र नहीं आये। उन्होंने वधू का कठोर दुःख दूर करके यश नहीं लिया (न मुझे ही दिलाया)। विधिविशिष्ट धर्म के बाड़े को तोड़ दिया। आगे का कार्य क्या होगा ?। ९४४

ॐ वैऱ्दिय	रुळ्ऱैन्नि	मिन्नि	नुण्णिडैप्
पौऱ्ऱौडिक्	किन्निलै	पुहुदऱ्	पालदो

उड्डुदै यिन्तदेन् रुणर हिड्डिलेन्
शिड्डुवै वज्जन्तै मुडियच् चैय्ददो 945

वैड्डियर्-विजयशील राम और लक्ष्मण; उड्डर् अँतिल्-वहाँ रहे होते तो; मिन्तित्त् नुण् इटै-विजली-सी क्षीण-कटि; पोन् तौटिकु-स्वर्ण-कंकणालंकृता (सीता) पर; इ निलै-यह दशा; पुकुतल् पालतो-आ सकती थी क्या; उड्डुतै-वहाँ जो हुआ, उसे; उणरकिड्डिलेन्-समझ नहीं पाता; चिड्डुवै वज्जन्तै-छोटी माता की वंचना; मुडिय चैय्ततो-सफल हो रही है क्या । ६४५

राम और लक्ष्मण पराक्रमी और विजयी हैं । वे अगर वहाँ रहते होते तो विद्युत-सी क्षीण-कटि और स्वर्ण-कंकणालंकृता देवी पर यह दशा आ सकती ? उधर क्या हुआ, यह मैं जान नहीं पाता । सौतेली माता की वंचना सफलीभूत हो रही है क्या ? । ९४५

ॐ पञ्जणै पाम्बणै याहप् पळ्ळिचेर्
अञ्जन्त वण्णन्ते यिराम नादलाल्
वैञ्जित्त वरक्कनाल् वैल्लड् पालनो
वज्जन्तै यिळ्ळैत्तन्तन् कळ्ळ मायैयाल् 946

पाम्पु-शेषनाग पर; पञ्चु अणै आक-रुई की शय्या पर जैसे; पळ्ळि चेर्-शयन जो करते हैं; अञ्जन्त वण्णन्ते-वे अंजनवर्ण विष्णुदेव ही; इरामन् आतलाल्-श्रीराम हैं, इसलिए; वैम् चित्तम् अरक्कनाल्-निर्मम क्रोधी राक्षस द्वारा; वैल्लड् पालन् ओ-जेय है क्या; कळ्ळ मायैयाल्-चोरी की माया से; वज्जन्तै इळ्ळैत्तन्तन्-कपट किया है राक्षस ने । ६४६

वे श्रीराम शेषनाग पर रुई की शय्या पर जैसे शयनकर्ता श्रीमन्नारायण ही हैं । क्या वे निर्मम क्रोधी रावण द्वारा जेय हैं ? नहीं । इसलिए उनकी कुछ हानि नहीं हुई होगी । रावण ने अवश्य माया द्वारा ही यह वंचना की है ! । ९४६

वेरड् वरक्करै वैन्नु वैम्बळि
तीरुर्मन् शिरुवनुन् दीण्ड वज्जुमाल्
आरियन् रेवियै यरक्क तन्मलर्प्
पेरुल हळित्तवन् पिळ्ळैप्पिल् शावत्ताल् 947

अँन् चिड्डवत्तम्-मेरा बालक भी; अरक्करै वेर् अड् वैन्नु-राक्षसों को जीतकर निर्मूल करके; वैम् पळि तीरुम्-इस क्रूर काम का बदला ले लेगा; अम् मलर्-सुन्दर कमलासन; पेर् उलकु अळित्तवन्-विश्वसर्जक के; पिळ्ळैप्पु इल् चापत्ताल्-अनिवार्य शाप के कारण; आरियन् तेवियै-पुरुषोत्तम की पत्नी को; तीण्ड अञ्चुम्-स्पर्श करने से डरेगा । ६४७

मेरा बालक, श्रीराम, राक्षसों को अवश्य जीतकर उनका मूल से नाश कर देगा और बदला ले लेगा । विश्वसृष्टा कमलासन का शाप है, वह

वृथा नही होगा, इसलिए रावण पुरुषोत्तम की पत्नी सीता का स्पर्श नहीं करेगा। डर के कारण वह उसका अपमान नहीं करेगा। ९४७

परुञ्जिऱै	यिन्नुत्त	पन्नि	युत्तुवान्
अरुञ्जिऱै	युऱुत्त	ळामै	नामनम्
पौरुञ्जिऱै	यिऱुत्त	पूर्वै	कर्प्पेनुम्
इरुञ्जिऱै	यऱुत्त	विडरि	नीङ्गिनान् 948

परुञ्चु इऱै-गीधों के राजा; अरुम् चिऱै उऱुत्तळ् आम्-कठोर कारा में पहुँच गयी; अँता-ऐसा; मतम् उत्तुवान्-मन में अनुमान करते; इन्नुत्त पन्नि-ऐसी बातें कहते हुए; पौरुम् चिऱै-युद्धोपयोगी पंख; इऱुत्ते-कट गये तो भी; पूर्वै-सारिका-सी सीता का; कर्प्पेनुम् इरुम् चिऱै-पातिव्रत्य रूपी रक्षण; अऱातु अँत-व्यर्थ नहीं होगा, यह सोचकर; इटरिन् नीड्कितान्-दुःखनिवृत्त हुए। ६४८

गृध्रराज जटायु अपने मन में अनुमान लगाते कि सीता कारा में रखी गयी है। यह सब कहकर वे आगे सोचते कि जिनको लेकर मैं युद्ध कर सकता था, वे पंख कट गये और मैं सीता की रक्षा नहीं कर सका। पर सारिका-सी सीतादेवी का पातिव्रत्य है—वह पंख नहीं कटेगा और उसका खूब संरक्षण करेगा। यह सोचकर वे दुःखनिवृत्त हुए। ९४८

अञ्जिऱैक्	कुरुदिया	इळिन्दु	शोरवुम्
वञ्जियै	मीट्टिल्लै	नैन्नु	मात्तमुम्
शैञ्जैवे	मक्कण्मेऱ्	चैन्ऱ	कादलुम्
नैञ्जुऱत्	तुयिन्ऱत्त	नुणर्वु	नीङ्गलान् 949

अम् चिऱै कुरुति आज्ञ-श्रेष्ठ पंखों से निकली रक्त-नदी; अळिन्दु-सूखी; चोरवुम्-बहुत दुर्बल हुए, तो भी; वञ्चियै-लता (-सी सीता) को; मीट्टिल्लै-नहीं लौटाया; नैन्नु मात्तमुम्-इससे उत्पन्न अपमान; मक्कळ् मेल्-और अपने बालकों पर; चैञ्चैवे चैन्ऱ-सीधा लगाया; कातलुम्-प्रेम; नैञ्चु उऱ-मन में घर किये रहे; उणर्वु नीड्कलान्-प्रज्ञा नहीं छोकर; तुयिन्ऱत्त-निद्रित अवस्था में रहे। ६४९

जटायु के पंखों से नदी के समान रक्त जो वह रहा था, वह यथासमय सूख गया। रक्त-विहीन होकर उनका शरीर कृश हो गया और वे शिथिल पड़ गये। तब भी उनके मन में सीताजी को न लौटा सकने से उत्पन्न अपमान की ग्लानि और अपने (मित्र के) बालकों पर रखा गम्भीर प्रेम सजग था। वे प्रज्ञा को सजग रखते हुए निद्रावस्था में पड़े रहे। ९४९

अञ्जियै	यरक्कनुम्	वल्लै	कौण्डुपोय्च्
चैञ्जैवे	तिरुवुऱुत्	तीण्ड	वञ्जुवान्
नञ्जिय	लरक्कियर्	नडुव	णायिडैच्
चिञ्जुव	मरुत्तिडैच्	चिऱैवैत्	तानरो 950

अरक्कन्तुम्-राक्षस ने; वञ्चियै-लता-सी सीता को; तिर उरु तीण्ड-शरीर-स्पर्श करने से; अञ्चुवान्-डरकर; आय् इटै-उस (लंका) में; चिञ्चुव मरतु इटै-शिशुपा (अशोक) तरु के तले; नञ्चु इयल्-विष-तुल्य स्वभाव वाली; अरक्कियर् नटुवण्-राक्षसियों के मध्य; चैञ्चैवे-अच्छी तरह से; चिरै वैत्तान्-बन्दी बनाकर रखा । ६५०

राक्षस रावण ने सीताजी के श्रीशरीर को स्पर्श नहीं किया । उसे भय था । उन्हें लंका में ले गया । वहाँ अशोक वन में शिशुपा वृक्ष के तले उन्हें रखा; और विष का-सा स्वभाव रखनेवाली राक्षसियों का पहरा बैठाया । ९५०

❁ इन्निलै	यित्तैयवर्	शैयलि	यम्बिन्नाम्
पौन्निलै	मानिन्विन्	रौडर्न्दु	पोहिय
मन्निलै	यडिहैन्	मङ्गै	येविय
पित्तनवन्	इन्निलै	पेशु	वामरो 951

इ निलै-ऐसा; इतैयवर् चैयल्-इनका काम; इयम्पित्तम्-(हमने) कहा; पौन् निलै मानिन् पित्-स्वर्णवर्ण मृग के पीछे; तौडर्न्दु पोक्किय-लगे हुए जो गये; मन् निलै अडिक्-उन नाथ की हालत जानो; अँत-कहकर; मङ्गै एविय-जिनको देवी ने भेजा, उन; पित्तनवन् तन् निलै-अनुज की स्थिति; पेशुवान्-कहेंगे । ६५१

अब तक हम (कवि रावण, जटायु, सीताजी आदि) इनकी करनी कहते रहे । अब हम अनुज लक्ष्मण की बात करेंगे, जो सीताजी से स्वर्णमृगानुगामी प्रभु की स्थिति जानने के हेतु प्रेषित थे । ९५१

औरुमह	डन्तिमैयै	युन्ति	युळ्ळुरुम्
परवरल्	मीदिडप्	पदैक्कु	नैञ्चित्तान्
पेरुमहन्	इनैत्तन्निप्	पिरिन्दु	पेदुरुम्
तिरुनहर्त्	तीरुमप्	परदन्	शैय्हायान् 952

औरु मकळ्-अकेली देवी की; तन्तिमैयै उन्ति-तनहाई की चिन्ता करके; उळ् उरुम् परवरल्-अन्दर का दुःख; मीतु इट-अधिक हुआ और; पदैक्कुम् नैञ्चित्तान्-धड़कता दिल लेकर; पेरु मकन् तत्तै-पुरुषोत्तम श्रीराम को; तन्ति पिरिन्दु-अकेले छोड़कर; पेदुरुम्-दुःखी रहनेवाले; तिरु नकर् तीरुम्-अयोध्या के श्रीनगर को छोड़ जानेवाले; अ परतन् चैय्कैयान्-उन भरत की-सी स्थिति में रहे । ६५२

लक्ष्मण के मन में अकेली उत्तम देवी सीता के एकाकीपन की चिन्ता थी और तज्जनित दुःख उमड़ आ रहा था । इसलिए वे बहुत उद्विग्न हुए थे । तब उनके मन की दशा भरत की-सी थी, जो श्रीराम से विदा होकर अयोध्या नगरी को लौट रहे थे । ९५२

ॐ तैण्डिरैक्	कलमैन	विरैविऱ्	चैल्हिनऱान्
पुण्डरी	हत्तड्ड	गाडु	पूतूरी
कोण्डल्वन्	दिळिन्दन्	कोलत्	तान्ऱनैक्
कण्डनन्	मन्मैनक्	कळिक्कुड्	गण्णितान् 953

तैळ तिरै-स्वच्छ लहरों के समुद्र में; कलम् अँत-पोत के समान; विरैविल् चैल्किन्ऱान्-वेग के साथ (जो) चलते हैं; और कोण्डल्-एक मेघ; पुण्डरकिम् तटम् काटु पूतु-कमलपुष्प कानन के समान खूब पुष्पित हैं (जिसमें); वन्तु इळिन्त अँन्त-(भूमि पर) उतरा हो जैसे; कोलत्तान् तनै-सौन्दर्यवान श्रीराम को; मन्म अँत कळिक्कुम् कण्णितान्-मन ही की अरह आँखों में भी आनन्द के साथ; कण्टतन्-देखा (उन लक्ष्मण ने) । ६५३

लक्ष्मण साफ़ लहरों से युक्त समुद्र में पोत के समान सवेग गये । उन्होंने, पुष्पित कमलों के साथ आनेवाले मेघ के समान जो आ रहे थे, उन श्रीराम के दर्शन किये । तब उनका मन ही क्या उनकी आँखें भी आनन्द से भर गयीं । ९५३

ॐ तुण्णैन्नुम्	मव्वुरै	तौडरत्	तोहैयुम्
पैण्णैन्नुम्	वेदैमै	मयक्कप्	पेदिताल्
उण्णिऱै	शोरुमैन्	रूश	लाडुमक्
कण्णन्	निळवलैक्	कण्णि	नोक्कितान् 954

तुण् अँन्नुम्-भय से कँपा देनेवाले; अ उरै-उस (मारीच के) शब्द को; तौडर-अपने पास आने पर सुनकर; नोक्कुयुम्-कलापी (सी सुन्दर सीता) देवी भी; पैण् अँन्नुम् पेटैमै-स्त्री-सुलभ अवोधता के; मयक्क-भ्रमित करने से; पेदिताल्-भ्रम से; उळ् निऱै चोरुम्-मन का धैर्य खो जायगी; अँन्नु-यह सोचकर; ऊचल् आटुम्-चंचल बने; अ कण्णन्नुम्-उन सुन्दराक्ष ने भी; इळवलै-अपने कनिष्ठ को; कण्णिन् नोक्कितान्-आँखों से देखा । ६५४

उधर श्रीराम ने भी अपने अनुज को देखा । जब उन्होंने मारीच का डरानेवाला दुहाई का शब्द सुना था, तभी उन्हें लग गया कि कलापी-सी सुन्दरी सीता ने उसे सुना अवश्य होगा । स्त्री-सुलभ मोह के कारण वे भ्रमित होंगी और अधीर हो जायँगी । इसलिए सुन्दराक्ष श्रीराम का मन डाँवाँडोल था । उन्होंने लक्ष्मण को देखा । ९५४

पुन्ऱौऱ्	कडन्द	पहुवा	यरक्क	नुरैपौय्	यैनाडु	पुलर्वाळ्
वन्ऱौऱ्	कडन्दु	मडमड्गै	येव	निलैदैर	वन्द	मरुळो
तन्ऱौऱ्	कडन्दु	तळर्हिन्ऱ्	नैञ्ज	मुडैयेन्	मरुड्गु	तत्तिये
अँन्ऱौऱ्	कडन्दु	मन्मुन्	दळर्न्द	विळवीरन्	वन्द	वियल्बे 955

पुल् चोऱ्कळ् तन्त-(अर्थहीन) अल्प शब्दवाची; पकु वाय् अरक्कन्-खुले मुख के राक्षस के; उरै पौय् अँन्नातु-शब्द को असत्य न मानकर; पुलर्वाळ्-शोकतप्त

होकर; वन् चोड़कल् तन्तु-कठोर शब्द कहकर; मट मङ्कै एव-हठी वाला के भेजने से; तन् चोल् कटन्तु-अपना वादा तोड़कर; तळर्किन्तु-शिथिल; नैञ्चम् उटैयेन् मरुङ्कु-मन के मेरे पास; अँन् चोल् कटन्तु-मेरी आज्ञा का भी उल्लंघन करके; इळ वीरन्-छोटे वीर का; ततिये वन्त इयल्पु-अकेले आने का कार्य; निलै तेर वन्त-मेरी स्थिति जानने के लिए आने का; मरुळो-मोह का काम है क्या । ६५५

उन्हें अनुमान हुआ कि अनर्थकारी शब्दवाची, खुले मुख के मारीच के शब्दों को सत्य मानकर हठीली सीतादेवी ने कठोर शब्द कहकर लक्ष्मण को जाने को मजबूर किया होगा ! फलस्वरूप लक्ष्मण अपनी स्थिर राय को भी ताक पर रखकर संकटग्रस्त मेरे समीप, मेरी भी आज्ञा का उल्लंघन करके मेरी हालत जानने के लिए आया है ! उसका आगमन क्या इसी भ्रम का फल है ? । ९५५

अँन्तुन्ति यँन्तै विदियार् मुडित्त वँन्नवैण्णि निन्तु विरैयैप्
पोन्तुन्तु विरुक्कै यिळवीरन् वन्दु पुनैता ठिरैञ्जु पोळुदिन्
मिन्तुन्तु नूलिन् मणिमार् वळुन्द विरैवोडु पुल्लि गुरुहा
निन्तुन्ति वन्द निलैयैन्गी लैन्तु नैडियोन् विळम्ब नौडिवान् 956

अँन्तु उन्ति-ऐसा सोचकर; विदियार् मुडित्तु अँन्तै-विधिदेव ने क्या किया; अँन् अँण्णि-ऐसा विचार कर; निन्तु इरैयै-स्तब्ध खड़े रहे (श्रीराम) प्रभु के; पोन् तुन्तु-सौन्दर्य भरे; विल् कै-धनुर्हस्त; इळ वीरन् वन्तु-कनिष्ठ भ्राता ने आकर; पुनै ताळ इरैञ्चु पोळुतिल्-सुन्दर चरणों पर नत (जब) हुए, तब; मिन् तुन्तु-विजली जुड़ी हो, ऐसा; नूलिन् मणि मार्पु-उपवीत-सहित सुन्दर वक्ष को; अळुन्त-खूब दबाकर; विरैवु ओटु पुल्लि-सवेग आलिंगन करके; उरुका निन्तु-द्रवीभूत हो, खड़े रहकर; उन्ति वन्त निलै-सोचकर आने का हेतु; अँन् कौल्-कौन सा है; अँन्तु-ऐसा; नैडियोन् विळम्ब-त्रिविक्रम ने पूछा तो; नौडिवान्-(लक्ष्मण ने) कहा । ६५६

श्रीराम ऐसा सोचते हुए स्तब्ध खड़े के खड़े रह गये । विधिदेव के इस विधान का फल क्या होगा ? —इसकी उन्हें चिन्ता हुई । तब सुन्दर धनुर्धर लक्ष्मण ने पास आकर उनके चरणों पर नमस्कार किया । श्रीराम ने अपने विद्युत-सम उपवीत से अलंकृत अपने वक्ष के साथ उन्हें कसकर आलिंगन कर लिया । फिर अधीर होकर पूछा कि क्या सोचकर तुम इधर आये ? तब लक्ष्मण ने उत्तर दिया । ९५६

इल्ला निलत्ति त्रियैयाद वैञ्जौ लैळवञ्जि यैव्व मुडयान्
वल्वा यरक्क तुरैयाहु मेन्न मदियाण् मरुक्क मुरुवाळ्
निल्लाडु मरुडि दडिपोदि यैन् नैडियोय् पुयत्तिन् वलियैन्
शौल्लान् मन्तत्ति नडैयाळ् शिन्तत्तिन् मुनिवोडु निन्तु तुवळ्वाळ् 957
निलत्तिल् इल्ला-अलौकिक; इयैयात-असम्बद्ध; वैम् चोल् अँळ-(दुहाई के)

उन भयंकर शब्दों के उठने पर; वञ्चि अँव्वम् उर-लता-सी देवी ने दुःख पाया; यात्-मैने; वल वाय् अरक्कन् उर आकुम्-कठोर मुख के राक्षस का शब्द है; अँन्त-कहा, तब; मतियाळ्-न मानीं; मरुक्कम् उरुवाळ्-घबड़ाती हुई; नैटियोय् पुयत्तिन् वलि-श्रेष्ठ आपके भुजवल पर; अँन् चोललाल्-मेरे कहने पर भी; मत्तत्तिन् अँयाळ्-विश्वास न करके; चित्तत्तिन् मुत्तिव ओट्टु-क्रोध और खीझ के साथ; इतु अरि-यह जान आओ; निल्लालु पोति-खड़े मत रहो, जाओ; अँन्त-कहकर; निन्ऱु तुवळ्वाळ्-खड़ी होकर मुरझायीं । ६५७

भाई ! जब वह अलौकिक और असम्बद्ध दिल दहलानेवाला शब्द उठा, तब देवी ने उसे सुना और गहरे दुःख से अभिभूत हुई । मैंने कहा कि यह कठोर-मुख मारीच का शब्द है । पर वे नहीं मानीं । घबड़ा गयीं । मैंने त्रिविक्रम, आपके भुजवल की महिमा कही । तो भी वे आश्वस्त नहीं हुई और उनका मन में धैर्य नहीं हुआ । कोप और खीझ के साथ उन्होंने कहा कि जाकर पता लगा लो । खड़े मत रहो । चलो जल्दी । यह कहकर वे खड़ी रहकर मुरझायीं । ९५७

एहातु निऱ्ऱि यँन्तिन्या नैरुप्पि निडैवीळ्वै नैन्ऱु मुडुहा
माहान हत्ति निडैयोड लोडु मननञ्जि वञ्जि विनैयेन्
पोहाडु निऱ्कि लिऱ्वा दिरुक्कै पुणरा लैन्क्को डुणरा
आहादि रुक्कै यरनन् रैनक्को डिवण्वन्द दैन्ऱु वमलन् 958

एकातु निऱ्ऱि अँनिल्-विना गये खड़े रहोगे तो; यात्-मैं; नैरुप्पित् इटै-वीळ्वैन्-आग में कूब पड़ूंगी; अँन्ऱु-कहकर; मुटुका-सत्वर; मा कातकत्तिन् इटै-वड़े जंगल में; ओट्टु ओट्टुम्-दौड़ीं तो; मत्तन् अञ्चि-मन में डरकर; विनैयेन्-पापी मैं; पोकातु निऱ्किल्-(आपकी खोज में) गये विना खड़ा रहा तो; वञ्चि-लता (सी देवी); इरवातु इरुक्कै-विना मरे जीवित रहना; पुणराळ्-न धरेगी; अँन् कोट्टु उणरा-ऐसा सोच-जानकर; इरुक्कै आकातु-यहाँ ठहरना उचित नहीं होगा; अरन् अन्ऱु-धर्म भी नहीं होगा; अँन् कोट्टु-ऐसा मानकर; इवण् वन्तु अँन्त-यहाँ आया, कहा तो; अमलन्-निर्मल प्रभु । ६५८

फिर उन्होंने कहा कि विना गये खड़े रहोगे, तो मैं दावाग्नि में कूदकर मर जाऊँगी । यह कहकर वे सत्वर वन की अग्नि की तरफ दौड़ने लगीं । मेरे मन में भय समा गया । पापी मैं खड़ा रहता तो निश्चित था कि देवी मरे विना नहीं रहतीं । यह निश्चय जानकर और यह विचार कर कि वहाँ रहना उचित नहीं है, न वह धर्म ही, यहाँ आ गया । तब निर्मल श्रीराम (ने सोचा) । ९५८

शावा दिरुत्त लिलळान दुऱ्ऱ ददेयो तडुक्क मुडिया
दावा वलक्क णुऱ्वा लुरैत्त पौरुळो वहत्ति नडैयाळ्
कावा तिलत्तिन् वरुमेद मऱ्ऱ दौळियाडु कैक्को उहलप्
पोवार् पिरिक्क मुयल्वार् पुणर्त्त पौरुळा मिदैन्ऱु तैरुळा 959

चावातु इस्तत्तल् इलळ्-जीवित न रहेगी; आततु उरुत्तु-ऐसी स्थिति हो गयी; अतयो तटुक्क मुटियातु-उसको तो रोक नहीं सकते; आ आ-हाय, हाय; अलक्कण् उरुवाळ्-बहुत दुःख पा गयीं; उरैत्त पोळ्ळो-लक्ष्मण के कहने का तात्पर्य; अकत्तिन् अटैयाळ्-अपने मन में न धरा; कावान् निलत्तिन्-संरक्षणहीन उस स्थान पर; एतम् वहम्-संकट होगा; अतु ओळियातु-वह निवार्य नहीं; पिरिक्क मुयल्वार्-अलग करने के प्रयत्न में लगे हुए लोग; कै कौटु-हथियाकर; अकल पोवार्-बहुत दूर चले जायेंगे; पुणर्न्त पोळ्ळ-वंचकों का षड्यन्त्र; आम् इतु-होगा यही; अन्नु तैल्ला-ऐसा बूझकर । ६५६

हाँ ! सीता जीवित नहीं रहेगी, यह स्थिति आ गयी थी । उसको रोकना असम्भव था । हाय, हाय ! वह बहुत दुःखी रहेगी । इसने जो कहा, उसका सत्य उसके मन में घर कर नहीं सका । अब वहाँ उसका संरक्षण कुछ नहीं है । इसलिए वहाँ कोई विपदा आये बिना नहीं रहेगी । हमको अलग करना चाहते थे लोग । उनकी वंचना का कार्य है यह ! यह उन्हें सूझ गया । ९५९

वन्दाय् तिउत्ति नुळदन्नु कुरु मडवाण् मरुक्क मुशुवाळ्
चिन्दा कुलत्तो डुरैशैय्द शैय् है यदुतीदु मन्नु तैळियाय्
मुन्दे तडुक्क वौळिया दैडुत्त वितैयेन् मुडित्त मुडिवाल्
अन्दो कंडुत्त दैतवुन्ति वुन्नि यळियाद वुळ्ळ मळिया 960

वन्ताय् तिउत्तिन्-आगत तुम्हारे पक्ष में; कुरुम् उळ्ळतु अन्नु-अपराध नहीं है; मरुक्कम् उरुवाळ् मडवाळ्-(मृग-ग्रहण पर) आतुर रही उस हठीली का; चिन्ता-कुलत्तु ओटु-आतुरता के साथ; उरै चैय्त्त चैय्कै इतु-वह (पकड़ देने का) वचन कहने का काम; तीतुम् अन्नु-बुरा भी नहीं था; तैळियाय्-असंदिग्ध रूप से; मुन्दे तडुक्क-तुमने मुझे रोका, तो भी; ओळियातु-बिना माने; अँदुत्त वितैयेन्-उस कार्य पर प्रवृत्त पापी मेरे; मुडित्त मुडिवाल्-कृत कार्य से; अन्तो कँडुत्ततु-हाय ! उस काम ने मुझे नष्ट कर दिया; अँत-ऐसा; उन्ति उन्ति-सोच-सोचकर; अळियात उळ्ळम्-अचंचल मन के; अळिया-अधीर होते । ६६०

तब उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि तुम आ गये । इसमें तुम्हारा कोई अपराध नहीं है । हरिण के प्रति इच्छा से आकुल होकर हठीली उसने जो मुझसे कहा था, वह भी बुरी बात नहीं थी । तुमने तो पहले ही निश्चित रूप से जाना था कि वह मायामृग है ! तुमने मुझे रोका भी । पर पापी मैंने उसको अनसुनी करके यह काम किया । उस मेरे कृत्य ने अब सारा काम नष्ट कर दिया है । श्रीराम ये बातें बार-बार सोचने लगे । उनका अचंचल मन भी अधीर हो गया । तब श्रीराम चिन्ताकुल होकर; । ९६०

पाणित्तु निन्नु पयनाव दैन्तै पयिलपूवै यत्त कुयिलैक्
काणिङ् कलन्द तुयर्दीर मन्नि ययलिल्लै यैन्नु कडुहिच

चेणुर् उहन्त्र नैरियूडु शैन्त्र शिलैवाळि यन्न विशैपोय्
आणिप् पञ्चुम्बो नत्तैया ळिरुन्द वविरुशोलै वल्लै यणुहा 961

पाणित्तु निन्ऱु-विलम्ब करके खड़े रहने से; पयन् आवतु अँन्तै-फल क्या होगा; पूर्व अन्त पयिल्-सारिका-सी मधुरभाषिणी; कुयिलै-कोकिला (सीता) को; काणिल्-वहाँ देखेंगे तो; कलन्त तुयर् तोरुम्-हमें हुआ यह दुःख दूर होगा; अन्नरि-नहीं तो; अयल् इल्लै-कोई दूसरा (उपाय) नहीं है; अँन्ऱु-कहकर; कटुकि-जल्दी; चेण् उरु अकन्ऱ-लम्बी दूर तक बढ़ते चलनेवाले; नैरि ऊटु-मार्ग में; चैन्ऱ चिलै वाळि अन्त-भेजे हुए अपने शर के समान; विचै पोय्-वेग के साथ जाकर; आणि पचुम् पौन्-खरे स्वर्ण; अत्तैयाळ्-सदृश देवी; इरुन्त-जहाँ रहों, उस; अविरु चोलै-विद्यमान आश्रम को; वल्लै अणुका-शीघ्र पहुँचकर । ६६१

‘इधर विलम्ब करने से क्या लाभ होगा ? हम वहाँ जाकर सारिका-सम मधुरभाषिणी कोकिला-सी सीताजी को देख लेंगे तो हम पर आयी यह विपदा टलेगी । उसके सिवा कोई दूसरा मार्ग नहीं है ।’ —यह कहकर श्रीराम वेग के साथ आगे बढ़े । मार्ग लम्बा था, बढ़ता हुआ जाता था । वे सत्वर अपने ही प्रेरित शर के समान अतिवेग से गये और आश्रम में आये, जहाँ चोखे स्वर्णवर्ण-सम सीताजी रही थीं । ९६१

❀ ओडि	वन्दनन्	शालैयिन्	शोलैयि	नुदवुम्
तोडि	वरन्दपूम्	जुरिहुळ	लाडनैक्	काणान्
कूडु	तन्नुडै	यदुपिरिन्	दारुयिर्	कुरिया
नेडि	वन्ददु	कण्डिल	दामैन्	निन्ऱान् 962

ओडि वन्तनन्-जो भागते आये, वे; चालैयिन्-पर्णशाला में; चोलैयिन्-आश्रम के उद्यान से; उतवुम्-दत्त; तोडु इवर्न्त-दल-संकुल; पूम्-पुष्पालंकृत; चुरि कुळलाळ् तत्तै-घुँघराले केश की सीता को; काणान्-न देखकर; तन्नुटैयतु कूटु पिरिन्तु-अपना शरीर छोड़ जाकर; कुरिया-लौट आने पर; आर् उयिर्-श्रेष्ठ जीव; अतु कण्टिलतु आम् अँन्-उसको नहीं देखता हो जैसे; निन्ऱान्-ठिठके खड़े रहे । ६६२

वे सीताजी को देखने की आशा से ही आये । उनकी कल्पना थी कि उस आश्रम के बाग के फूलों से अपने घुँघराले केश को सजाकर सीताजी उनको मिल जायँगी । पर सुकेशिनी वहाँ नहीं दिखी । कोई जीव अपने शरीर को छोड़कर जाय और फिर लौट जाकर उसको वहाँ न पाए तो उसकी स्थिति कैसी होगी ? (श्रीराम प्राण से और सीताजी शरीर से उपमित हैं ।) श्रीराम उसी स्थिति में ठिठके खड़े रहे, क्योंकि सीताजी पतिप्राणा थी । ९६२

कैत्त	शिन्दैयन्	कनङ्गुळै	यणङ्गितैक्	काणान्
उयत्तु	वाळ्दरुक्कु	वेरौर	पौरुळिल	नुदव

वेत्त मानिवि मण्णोडु मरैत्तत्त वाङ्गिप्
 पोयत्तु लोरहोळत् तिहैत्तु निन्शत्तैयुम् पोन्शान् 963

कत्तङ्कुळै-भारी कुण्डलधारिणी; अण्डकित्तै-देवी भगवती को; काणान्-न देखकर; कैत्त चिन्तैयन्-खोज-भरे मन के होकर; उतव-सहायतार्थ; मण्णोडु मरैत्तत्त वेत्त-धरती में छिपाकर रखा हुआ; मा निति-बड़ा (गुप्त) धन; पोयत्तु उलोर् वाङ्कि-बंचक चोरों ने उठाकर; कौळ-ले लिये हों और; तिकैत्तु-भ्रमित होकर; निन्शत्तैयुम्-जो खड़ा रहा; पोन्शान्-उसके समान हो गये । ६६३

जब श्रीराम ने सीताजी को वहाँ नहीं देखा, तो वे बहुत खिन्न हो गये । मौके पर काम आयगा, इस विचार से किसी ने धरती के अन्दर धन गाड़ रखा था । पर उस धन को बंचक चोर उठा ले गये, तो उस मनुष्य की दशा क्या होगी ? श्रीराम उसके समान तरसते रह गये । ९६३

मण्शु लुन्शु माल्वरै शुळन्शु मदियोर्
 अण्शु लुन्शु शुळन्शु वैरिहड लेळुम्
 विण्शु लुन्शु वेदमुञ् जुळन्शु विरिज्जन्
 कण्शु लुन्शु शुळन्शु कदिरोडु मदियुम् 964

मण् चुळन्शु-धरती घूमी; माल् वरै चुळन्शु-बड़े पर्वत घूमे; मतियोर् अण् चुळन्शु-ज्ञानियों का विचार चक्रित हुआ; अ अँरि कटल् एळुम्-तरंगाकुल सातों समुद्र; चुळन्शु-घूमे; विण् चुळन्शु-आकाश घूमा; वेतमुम् चुळन्शु-वेद भी चलित हुए; विरिज्चन्-विरंचि की; कण्-आठों आँखें; चुळन्शु-चक्रित हुई; कतिर् ओटु मतियुम्-सूर्य के साथ चन्द्र भी; चुळन्शु-घूमे । ६६४

जब विश्वात्मा का मन खिन्न हो गया, तो विश्व का क्या हाल हो ? सब के सब विचलित हो गये । धरती घूमी; बड़े पर्वत घूम गये । ज्ञानियों के विचार चलित हो गये । सातों तरंगाकुल समुद्र घूमे (आलोडित हुए) । आकाश, वेद —सब विचलित हो गये । विरंचि की आठों आँखें घूमने लगीं । सूर्य और चन्द्र भी चक्रित हुए । ९६४

अरत्तैच् चीरुङ्गो लरुळैयै चीरुङ्गो लमरर्
 तिरत्तैच् चीरुङ्गोन् मुनिवरैच् चीरुङ्गो रीयोर्
 मरत्तैच् चीरुङ्गो लैन्गोलो मुडिवैन्शु मरैयिन्
 निरत्तैच् चीरुङ्गो नैडुन्दहै योत्तै नडुङ्ग 965

नैटुम् तकैयोन्-अत्युन्नत श्रेष्ठ प्रभु; अरत्तै चीरुम् कौल्-धर्म पर कोप करेंगे; अरुळैयै चीरुम् कौल्-कृष्णा पर ही खीझ उठेंगे; अमरर् तिरत्तै-देवों के पराक्रम पर; चीरुम् कौल्-उबल पड़ेंगे; मुनिवरै चीरुम् कौल्-मुनिगण से गुस्सा करेंगे; तीयोर् मरत्तैये-खलों की वीरता को; चीरुम् कौल्-ललकारेंगे; मरैयिन् निरत्तैयो-वेदों के प्रकारों से; चीरुम् कौल्-क्रोध करेंगे; अँत्त-सोचकर; अँन् कौल् ओ मुटिवु-क्या ही होगा फल; अँन्डु-सोचकर डरते हुए; नडुङ्क-डरते । ६६५

यह स्थिति देखकर सबके मन में अपार भय हो गया । ये सर्वोन्नत श्रेष्ठ श्रीराम अब किस पर अपना कोप उतारेंगे ? धर्म पर, दया ही पर, या देवों के पराक्रम पर ? तपस्वी मुनियों पर उबल पड़ेंगे या खलों की वीरता को ललकारेंगे ? या वेदों के प्रकारों से ही अपनी खीझ दिखाने वाले हैं ? इनके क्रोध का नतीजा क्या होगा ? इस तरह डरकर, । ९६५

नील	मेत्तियन्	नैडियवन्	मत्तनिलै	तिरिय
मूल	कारणत्	तवन्नीडु	मुलहैला	मुर्ऱुम्
काल	मामेनक्	कडैयिडु	कणिक्करम्	वीरुळ्हळ्
मेल	कीळुऱ	कीळन्न	मेलुर्ऱुम्	वेलै 966

नील मेत्ति-नीले रंग के; अ नैडियवन्-उन पुरुषोत्तम का; मत्त निलै तिरिय-मन की स्थिति बदल गयी, तब; मूल कारणत्तु अवन् ओटु-(सृष्टि के) मूल कारण ब्रह्माजी के साथ; उलकैलाम्-सभी विश्वों के; मुर्ऱुम् कालम् आम् अंत-समाप्त हो जाने का काल आ गया-सा; कटै इटु कणिक्क अरुम्-इतना है ऐसा जिनकी गणना नहीं हो सकती; वीरुळ्हळ्-वे सभी पदार्थ; मेल कीळु उऱ-ऊपर के नीचे हुए; कीळन्न मेल उर्ऱुम्-नीचे के ऊपर हुए; वेलै-उस समय । ६६६

नीले वर्ण के पुरुषोत्तम श्रीराम का मन क्रोध से विकार पा गया था । तब ब्रह्माजी से लेकर सारे विश्व के नाश हो जाने का प्रलयकाल आ गया हो, ऐसा विश्व के असंख्य पदार्थ अस्त-व्यस्त हो गये । ऊपर के पदार्थ नीचे आ गये और नीचे के ऊपर चले गये । तब । ९६६

तेरि	नाळियुन्	दैरिन्दत्तन्	दीण्डुद	लञ्जिप्
पारि	नोडुङ्गोण्	डहन्ऱुडुम्	वार्त्तत्तम्	बयत्तिन्
शोरुन्	दन्मैयी	दैन्नेन्व	दुरत्तिला	दवर्पोल्
दूरम्	वोवदन्मुन्	रीडर्दुमैन्	रिळैयवन्	शीन्तान् 967

इळैयवन्-अनुज ने; तेरिन् नाळियुम्-रथ का चक्र (-चिह्न) तैरिन्तत्तम्-देखते हैं; तीण्डुत्तल् अञ्चि-(देवी का शरीर) स्पर्श करने से डरकर; पारिन् ओटु-भूमि (के अंश) के साथ; कौण्डु अकन्ऱुत्तुम्-ले जाना भी; पार्त्तुम्-समझा; उरन् इलातवर् पोल्-निर्बलों के समान; पयन् इन्ऱु-विना किसी लाभ के; ओरुम् तन्मै ईत्तु-सोचता रहना, यह; अन् अन्पु-मया कहा जाय; तूरम् पोवत्तन् मुन्-बहुत दूर जाने से पहले; तौटर्त्तुम्-अनुगमन करेंगे; अन्ऱु-ऐसा; चीन्तान्-बोला । ६६७

अनुज लक्ष्मण ने श्रीराम को समझाया कि भाई ! इधर रथ के पहियों के चिह्न देखते हैं । यह भी देखते हैं कि शत्रु, देवी के शरीर का स्पर्श करने से डरकर भूमि के अंश के साथ लेके गया है । फिर हम निर्बलों के समान यहाँ खड़े रहकर सोचते रहें, यह क्या है ? उसके बहुत दूर जाने के पहले ही हम उसका अनुगमन करते हुए चलें । ९६७

आम	देयिनि	यावर्देन्	रमलनु	ममैयत्
ताम	वार्हणैप्	पुट्टिलु	मुदलिय	ताङ्गि
वाम	माल्वरै	मरन्निवै	मडिदर	वयवर्
वूमि	मेलवन्	रेर्शेन्	नैडुनैरिप्	पोनार् 968

अमलत्तुम्-पवित्र प्रभु; आम्-हाँ; अते इति आवतु-वही अब करना है; अँन्ड-ऐसा सोचकर; अमैय-उसके अनुसार; वयवर् ताम्-विजयशील (दोनों); वार् कणै पुट्टिलुम्-शरों के तूणीर; मुतलिय ताङ्कि-आदि धारण कर; वाम माल्वरै-मनोरम और बड़े-बड़े पर्वतों और; मरन् इवै-पेड़ों आदि को; मटि तर-तोड़ते हुए; पूमि मेल-भूमि पर; अवन् तेर् चैन्ड-उसका रथ जहाँ गया था; नैडु नैरि पोन्नार्-लम्बे मार्ग में गये । ६६८

निरंजन भगवान ने स्वीकारा कि हाँ ! वही अब करना है । फिर विजयशील दोनों उसी सुझाव के अनुसार तूणीर आदि लिये हुए उस लम्बे मार्ग पर चले, जिसमें रथ उन्नत पर्वतों और तरुओं को तोड़ गिराता हुआ चला था । ९६८

मण्णिन्	मेलवन्	तेर्शेन्	शुवडैला	माय्नुडु
विण्णि	नोङ्गिय	दौरुनिलै	मैय्युडु	वैन्द
पुण्णि	नूडुरु	वैलन्	मन्मिहप्	पुळुङ्गि
अँण्णि	नामिलिच्	चैय्वर्देन्	निळवले	यैन्डान् 969

अवन् तेर्-उसका रथ; मण्णिन् मेल चैन्ड-धरती पर जो गया था; चुवटु अँलाम् माय्नु-वह चित्त सब लुप्त हो गया; विण्णिन् ओङ्कियतु-अन्तरिक्ष में उठने का; और निलै-एक भान; मैय् उड-सत्य लगा तो; वैन्त पुण्णिन् ऊटु-आग से हुए व्रण में; उड वैल् अँत-भाला घुसा हो, ऐसा; मन्म मिक् पुळुङ्कि-मन में अत्यधिक क्लेश लेकर; इळवले-लघु भाई; नाम् इति अँण्णि चैय्वतु-हम सोचकर करें; अँन्-क्या; अँन्डान्-पूछा । ६६९

जाते-जाते उन्होंने देखा कि रथचक्र के चित्त नहीं रह गये हैं । और ऐसा लग रहा था कि रथ ऊपर अन्तरिक्ष में उठा था । तब श्रीराम का मन ऐसा दुःख पाने लगा, मानो अग्निजनित व्रण में भाला घुस गया हो । बहुत क्लेश पाकर उन्होंने अपने भाई से पूछा कि अनुज ! अब सोचकर हम क्या काम करें ? । ९६९

तैर्कु	नोक्किय	दैन्मुवैरु	डैरिन्दत्	तिण्डेर्
मर्कु	नोक्किय	तिरळपुयत्	तण्णले	वानुम्
विर्कु	नोक्किय	पहळियि	नैडिदन्	विम्मि
निर्कु	नोक्किलैन्	पयनैन्	विळैयव	तेर्न्दान् 970

इळैयवन्-अनुज ने; मर्कु नोक्किय-मल्लामिलाषी; तिरळ पुयत्तु-पुष्ट कन्धों के; अण्णले-प्रभु; अ तिण् तेर्-वह बलवान रथ; तैर्कु नोक्कियतु-दक्षिण की

तरफ़ गया है; अँतुम् पौरुळ-यह विषय; तैरिन्तु-जानने में आया है; वातुम्-अन्तरिक्ष भी; विरुक्कु नोक्किय-आपके धनुष से प्रेरित; पकळियिन् नैदितु अन्ऱु-शर के जाने की दूरी से अधिक नहीं है; विम्मि निरुक्कु नोक्किल्-तरस के साथ खड़े रहकर देखते रहने से; अँत् पयन्-क्या लाभ है; अँत्-ऐसा; नेरन्तान्-उत्तर दिया । ६७०

लक्ष्मण ने उत्तर में कहा कि मल्लाभिलाषी कन्धों से युक्त महानुभाव ! हमने यह जान लिया कि वह भारी रथ दक्षिण की ओर गया है । आकाश में ही गया हो तो क्या ? आपका शर न पहुँचे, उतनी दूर का तो नहीं है आकाश ! तरसते हुए निष्क्रिय रह जाने से क्या लाभ होगा ? । ९७०

आहु	मन्नदे	करुमैन्	रत्तिशे	नोक्कि
एहि	योशतै	यिरण्डुशैन्	रारिडै	यैदिरन्दार्
माह	माल्वरै	काल्पौर	मरिन्ददु	मानप्
पाह	वीणैयिन्	कौडियोन्ऱु	किडन्ददु	पार्मेल् 971

अन्तते करुमम् आकुम्-वही करना होगा; अँन्ऱु-यह सोचकर; अ तिचै नोक्कि एकि-उस दक्षिण दिशा में जाकर; योचतै इरण्डु चैन्ऱार्-दो योजन चले; इटै-मार्ग में; माक माल् वरै-गगनोन्नत बड़ा पर्वत; काल् पौर-प्रभञ्जन से प्रताड़ित हो; मरिन्तु मात्त-नीचे गिर गया हो जैसे; पाक वीणैयिन्-टूटी वीणा की; कौडि औन्ऱु-एक ध्वजा; पार् मेल् किडन्तु-भूमि पर पड़ी रही; अँतिरन्तार्-सामने देखा । ६७१

श्रीराम ने लक्ष्मण का आशय समझा । कहा कि चलो वही करना है । वे दोनों दक्षिण में दो योजन दूर चले । मार्ग में उन्हें वीणांकित एक ध्वजा का अंश भूमि पर पड़ा दिखाई दिया । वह ऐसा लगा, मानो एक पर्वत ही आँधी के सामने टूटकर गिरा हो । ९७१

कण्डु	कण्डह	रोडुमक्	कारिहै	पौरुटाल्
अण्ड	रादियर्	कारमर्	विळैत्तदेन्	रयिर्त्तान्
तुण्ड	वाळित्तिर्	चुडर्क्कौडि	तुणिन्द	देन्ऱुणराप्
पुण्ड	रिहक्कण्	णमलनुक्	किळैयवन्	पुहन्ऱान् 972

कण्टु-देखकर; अ कारिकै पौरुटाल्-उन देवी (को बचाने) के हेतु; कण्टकरोडु-उन खलों के साथ; अण्टर् आतियर्क्कु-देवों आदि लोगों को; आर् अमर् विळैन्तु-कठोर युद्ध करना पड़ गया है; अँन्ऱु-ऐसा; अयिर्त्तान्-(श्रीराम ने) संशय किया; इळैयवन्-अनुज ने; तुण्ड वाळित्तिर्-(जटायु की) चौंच रूपी तलवार से; चुटर् कौडि-उज्ज्वल ध्वजा; तुणिन्तु-कटी; अँन्ऱु उणरा-ऐसा ताड़कर; पुण्टरिक कण् अमलनुक्कु-पुण्डरीकाक्ष निर्मल प्रभु को; पुक्कन्ऱान्-समझाया । ६७२

वह देखकर श्रीराम को संशय हुआ कि देवों ने सीताजी को बचाने के लिए बड़ा युद्ध किया होगा । पर लक्ष्मण को सूझा कि जटायु की

चोंच से ही शत्रु की ध्वजा खण्डित हुई है। तब वे पुण्डरीकाक्ष निरंजन श्रीराम से बोले। ९७२

नोक्कि	नालेय	नीय्दिव	णैय्दिय	नुन्दै
मूक्कि	नालिदु	मुस्त्रिन्दमै	मुडिन्दात्	मोय्म्बिन्
ताक्कि	नात्तदु	वडुत्तदु	तेरिहिलन्	दमियन्
याक्कै	तेम्बिडु	मेण्णरुम्	बरुवङ्ग	ळिरन्दात् 973

ऐय-महिमावान्; नोक्किताल्-(विचार कर) देखें तो; इवण् नीय्तु अय्यित्य-यहाँ शीघ्र जो आये, वे; नुन्तै-आपके पिता (तुल्य जटायु); मूक्किताल्-(की) चोंच से; इतु मुस्त्रिन्दमै-इसका टूटना; मुडिन्ततु-निश्चित है; मोय्म्पिन्-पूरा बल लगाकर; ताक्कितान्-(जटायु) भिड़े हैं; नटु अटुत्ततु-मध्य में क्या हुआ, यह; तेरिहिलम्-नहीं जानते; अण् अरुम्-असंख्यक; परुवङ्कळ्-वर्षों का काल; इरन्तात्-जिनका बीता है, उन; तमियन्-एकाकी का; याक्कै-शरीर; तेम्पिटुम्-थका पड़ा होगा। ६७३

महानुभाव ! खूब ध्यान लगाकर सोचें तो मालूम होगा कि यहाँ जटायु तुरत आ गये थे और आपके पिता (तुल्य) उनकी चोंच से यह ध्वजा टूटी थी। यह निश्चित है। जटायु अपने पूरे बल के साथ उससे भिड़े होंगे। बीच में क्या हुआ, हम यह जान नहीं पाते। हाँ ! जटायु वयोवृद्ध है। एकाकी लड़े थे। इसलिए उनका शरीर थक गया होगा। ९७३

नन्ऱु	शालवु	नडुक्करु	मिडुक्किन्	मुत्तन्ऱु
शैन्ऱु	कूडलाम्	बौळुदेलान्	दडुप्पदु	तिडन्नाल्
वैन्ऱु	मीट्किनु	मीट्कुमाल्	वेरुऱ	वैण्णि
निन्ऱु	ताळत्तौऱु	पयन्निलै	यैन्ऱुलु	नैडियोन् 974

चालवुम् नन्ऱु-बहुत अच्छा; नाम् नडुक्करुम् मिडुक्किन्-हम अप्रतिहत वेग के साथ; मुत्तन्ऱु चैन्ऱु-आगे जाकर; कूडलाम्-उनसे मिलेंगे; पौळुत्तु अलाम्-आज सारा दिन; तडुप्पतु-जटायु का शत्रु को रोके रखना; तिडन्-निश्चय है; वैन्ऱु-जीतकर; मीट्किन्तुम् मीट्कुम्-लौटायें भी, यह सम्भव है; वेरु उरु अण्णि-अन्य बातें सोचते हुए; निन्ऱु ताळत्तु-रहकर विलम्ब करने से; और पयन् इलै-कोई लाभ नहीं है; यैन्ऱुलुम्-(लक्ष्मण के) कहने पर; नैडियोन्-पुरुषोत्तम। ६७४

वह भी बहुत अच्छा हुआ। हम अप्रतिहत वेग के साथ आगे बढ़ें। हम जटायु को मिल सकेंगे। यह सम्भव है कि जटायु आज दिन भर शत्रु को रोक रखेंगे। शायद वे शत्रु को जीतकर देवी को बचा भी सकते हैं। अन्य बातें सोचते हुए यहाँ विलम्ब करने से कोई लाभ न होने का। —लक्ष्मण ने कहा। तब पुरुषोत्तम—। ९७४

तौडर्व	देनल्	मामेनप्	पडिमिशैच्	चुर्रिप्
पडरुड्	गालेनक्	करडुगैनच्	चैल्बवर्	पारिन्
मिडल्हौळ्	वैञ्जिलै	विण्णिडु	विन्मुडिन्	देन्नक्
कडलिन्	माडुयर्	तिरैयैन्क्	किडन्दु	कण्डार् 975

तौडर्वतु ए-पीछा करते जाना ही; नलम् आम् अँत-भला है, कहने पर; पडि मिचै-भूमि पर; चुर्रि पडरुड् काल्-धूमती हुई जानेवाली हवा; अँत-के समान; करडुक् अँत-वातचक्र के समान; चैल्बवर्-जो गये; विण् इट्टु विल्-आकाश का इन्द्रधनुष; मुडिन्तु अन्न-दूटा पड़ा हो जैसा; कटल् माटु-समुद्र में; उयर् तिरै-उठनेवाली लहर; , अँत-के समान; तरैयिल्-पृथ्वी पर; मिटल् कौळ् वैम् चिलै-बड़ा भारी भयंकर धनु; किटन्ततु-पड़ा रहा; कण्डार्-देखा । ६७५

बोले— हाँ ! आगे अनुगमन में जाना ही भला है । दोनों वायुवेग और (पतंग ?) वातचक्र के वेग के साथ आगे गये । तब उन्होंने एक भारी भयंकर धनुष को पड़ा देखा, जो टूटे इन्द्रधनुष के समान या समुद्र में उठती ऊँची लहर के समान था । ९७५

शिलैहि	डन्ददा	लिलक्कुव	तेवर्नीर्	कडैन्द
मलैहि	डन्दत्तन	वलियट्टु	वडिवित्तान्	मदियैण्
कलैहि	डन्दन	काट्चिय	दिदुक्कडित्	तौडित्तान्
निलैहि	डन्दवा	नोक्कैन्	नोक्किन	निन्ऱान् 976

इलक्कुव-लक्ष्मण; किटन्ततु चिलै-जो पड़ा रहता है, यह धनुष; तेवर् नीर् कडैन्त मलै-देवों ने जिससे समुद्र-मन्थन किया, उस पर्वत; अँत-के समान; वलियट्टु-कठोर है; वडिवित्तान्-आकार में; मति अँण् कलै-चन्द्र की आठवें दिन की कला; किटन्तु अन्न-पड़ी रहती जैसी; काट्चियतु-दृश्यमान है; इतु कटितु ओडित्तान्-इसको जिसने शीघ्र तोड़ा है; निलै किटन्तवा-उसकी शक्ति का प्रकार; नोक्कु अँत-अनुमान करो, कहकर; नोक्कितन्-धनु को देखते हुए; निन्ऱान्-(श्रीराम) खड़े रहे । ६७६

उसको देखकर श्रीराम ने कहा कि यह देखो । कितना भारी और सुदृढ़ है ! देवों ने समुद्र-मन्थन के लिए जिस पर्वत का उपयोग किया था, उसी के समान यह बलवान है । इसका आकार आठवें दिन के चन्द्र के समान है । इसको जिसने तोड़ा होगा, उसका शौर्य कितना होगा ? अनुमान कर लो । यह कहकर श्रीराम उसको विस्मय के साथ देखते खड़े रहे । ९७६

निन्ऱ	पित्तरु	नैडुनैरि	कडन्दुर्	निमिरच्
चैल्	नोक्किनर्	तिरिशिहैक्	कौडुनैडुज्	जूलम्
औन्ऱम्	पल्हणै	मळैयुरै	पुट्टिलो	रिरण्डुम्
कुन्ऱ	पोलवण्	किडन्दहण्	डदिशयड्	गौण्डार् 977

निन्त्रु-वहाँ स्थित होकर; पित्तर्षु-(चले) फिर भी; नैटु नैरि कटन्तु-लम्बा मार्ग तय करके; उर निमिर चैन्त्रु-बिल्कुल सीधे जाकर; तिरि चिकै कौटु-तीन सिरों का; नैटुम् चूलम् औन्त्रु-एक लम्बा शूल और; पल् कणै मल्लै उरै-अनेक शरों के समूह जिनमें थे; पुट्टिल् ओर् इरण्टुम्-दो तूणीरों को; कुन्त्रु पोल्-पर्वतों के समान; अवण् किटन्तु-वहाँ पड़ा हुआ; नोक्किन्तर्-देखा; कण्टु-देखकर; अतिचयम् कौण्टार्-विस्मित हुए । ६७७

फिर वहाँ से वे चले । सीधे मार्ग में बहुत दूर चले । वहाँ एक लम्बा और भयंकर त्रिशूल और दो बहुत् अस्त्रों से भरे तूणीर पड़े मिले । पर्वतों के समान उनको देखकर उन्हें अधिक विस्मय हुआ । ९७७

मरित्तुम्	जैन्त्रुत्तर्	वान्निडै	वयङ्गुर्	वळङ्गि
अरिक्कुम्	जोविहळ्	यावैयुन्	दौक्कन्न	वैन्तलाय्
नैरिक्कौळ्	कात्तह	मरैदर	निरुदरहो	नैन्जिल्
परित्तु	वीशिय	कवचमुड्	गिडन्दु	पार्त्तार् 978

मरित्तुम् चैन्त्रुत्तर्-आगे और भी गये; वान् इटै-आकाश में; वयङ्कु उर-शोभा प्रकट करते हुए; वळङ्कि-देकर; अरिक्कुम्-उससे प्रकाश छिटकाते हुए; चोतिकळ् यावैयुम्-सभी ज्योतिपुंजों का; दौक्कन्न अत्तल् आय्-समूह बना हो, ऐसा; निरुत्तर् कोन् नैन्जिल्-राक्षसाधिप के वक्ष से; परित्तु वीशिय-छीनकर जो फेंका गया था; कवचमुम्-उस कवच को; नैरि कौळ् कात्तकम्-मार्ग के जंगल को; मरैतर-छिपाते हुए; किटन्तु-पड़ा हुआ; पार्त्तार्-देखा । ६७८

फिर वे आगे चले । वहाँ रावण का कवच पड़ा मिला, जिसको जटायु ने राक्षसाधिपति रावण के वक्ष से छीनकर फेंका था । वह चन्द्र-सूर्य आदि सभी ज्योतिपुंजों के समूह के समान पड़ा था, जो आकाश को भी उज्ज्वलता प्रदान कर स्वयं प्रकाशमान रहते हैं । वह मार्ग के सामने के वन को छिपाये हुए पड़ा था । ९७८

कान्गि	डन्दु	मरैदरक्	काल्वयक्	कलिमात्
तान्गि	डन्दुळिच्	चारदि	किडन्दुळिच्	चारन्तार्
ऊन्गि	डन्दौळि	रुदिरमुड्	गिडन्दुळ	दुलहिन्
वान्गि	डन्दु	पोल्वडु	किडन्दुळि	वन्तार् 979

काल् वय कलि मा-पैरों में बल और तेजी रखनेवाले अश्व; कान् मरै तर-जंगल को छिपाते हुए; किटन्तु-(मरे) पड़े रहे; किटन्तुळि-जहाँ पड़े रहे, उस स्थान को; चारति किटन्तुळि-और सारथी जहाँ (मरा) पड़ा रहा, वह स्थान; चारन्तार्-गये; उलकिन्-इस पृथ्वी पर; वान् किटन्तु पोल्-ध्योम पड़ा रहा हो, ऐसा; ऊन् किटन्तु-मांसखण्ड बिखरे रहे; औळिर् उतिरमुम् किटन्तुळ-चमकीला रक्त भी छितरा रहा; किटन्तुळि-जहाँ वह पड़ा रहा, वहाँ; वन्तार्-वे आये । ६७९

वे फिर उस स्थान पर आये, जहाँ रावण के अश्वों की लाशें पड़ी

थीं । रावण के अश्व ऐसे थे, जिनके पैरों में अपार बल था और अति तीव्र गति भी । आगे सारथी जहाँ मरा पड़ा था, वहाँ आये । फिर उस स्थान पर आये जहाँ रक्त और मासखण्ड छितरे पड़े थे, जिसके कारण अरण्य भी आकाश-सा दिख रहा था । ९७९

कण्ड	लङ्गुदङ्	गैत्तलम्	विदिर्त्तत्तर्	कविन्नार्
विण्ड	लन्दुडन्	दिदुदियिन्	विरिहदिर्प्	परुदि
मण्ड	लम्बल	मण्मिशैक्	किडन्दैत्त	मणियिन्
कुण्ड	लम्बल	कुलमणिप्	पूण्गळिन्	कुप्पै 980

इडुतियिन्-कल्पान्त में; विरि कतिर् पल-व्यापक किरणों के अनेक; परुति मण्डलम्-सूर्यमण्डल; कविन् आर्-सौंदर्य भरे; विण् तलम् तुडन्तु-व्योम को छोड़कर; मण् इटै किडन्तु अँत-भूमि पर गिरे पड़े हों, ऐसा; कुण्डलम् पल-अनेक कुण्डलों और; कुल मणि पूण्कळिन् कुप्पै-श्रेष्ठ रत्नाभरणों के समूहों को; कण्ड-देखकर; अलङ्कु तम् कै तलम्-(उन्होंने) अपने आकर्षक हाथों को; विदिर्त्तत्तर्-आश्चर्य से झटकाया । ६८०

एक स्थान पर अनेक कुण्डल पड़े मिले । वे कल्पान्तकाल के सूर्यमण्डलों के समान लगे, जो आकाश छोड़कर भूमि पर गिरे पड़े हों । अनेक श्रेष्ठ रत्नाभरणों के ढेर भी दिखाई दिये । इन सबको देखकर उन दोनों ने अपने मनोहर हाथों को झटकारा (आश्चर्य के प्रदर्शन में) । ९८०

तोळ	णिक्कुलम्	बलवुळ	कुण्डलत्	तौहुदि
वाळि	मैप्पन	पलवुळ	मणिमुडि	पलवाल्
नाळ	नैत्तैयुड्	गडन्दनन्	रुमियत्तन्	दादें
आळि	यौप्पवर्	पलरुळर्	पौरुदत्त	रिळैयोय् 981

इळैयोय्-लघु भाई; तोळ अणि कुलम् पल उळ-कन्धों के आभरण-समूह अनेक हैं; वाळ् इमैप्पत्त-प्रकाशमय; कुण्डल तौकुति-कुण्डलवृन्द; पल उळ-अनेक हैं; मणि मुटि पल आल्-रत्नकिरीट अनेक हैं, इसलिए; नाळ अत्तैयुम् कटन्तत्तन्-अनेक आयु के दिन जिनके बीते हैं, वे; नम् तात्तै तमियन्-हमारे पिता एक रहे; पौरुदत्त-और उनसे लड़नेवाले; आळि मय्यम्पितर्-शरभ-बली; पलर् उळर्-अनेक रहे हैं । ६८१

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता से कहा कि भाई ! भुजाओं के आभरणों के अनेक समूह दिखाई देते हैं । उज्ज्वल अनेक कुण्डलवृन्द देखते हैं । रत्नकिरीट भी अनेक मिलते हैं । इसलिए ऐसा लगता है कि वयोवृद्ध हमारे पिता एकाकी थे और उनसे जो लड़े, वे शरभ-सदृश बलशाली अनेक रहे होंगे । ९८१

तिरुवि	नायह	नुरैशैयच्	चुमित्तिरैच्	चिङ्गम्
तरुवि	नीळिय	तोळपल	तलैपल	वैन्नाल्

पौरुडु	तादैयै	यित्तनै	नैरिक्कौडु	पोत्तान्
औरव	नेयव	निरावण	नामैन्	वुरैत्तान् 982

तिरुविन् नायकन्-लक्ष्मीपति के; उरै चैय-वह कहने पर; चुमित्तिरै चिङ्कम्-सुमित्रा के पुत्र सिंह (सदृश लक्ष्मण); तरुविन् नीळिय-तरु के समान लम्बे; तोळ् पल-भुजाएँ अनेक हैं; तलै पल-सिर अनेक हैं; अन्नू-तो; तातैयै इत्ततै पौरुडु-पिता के साथ इतना टकराकर; नैरि कौडु पोत्तान्-अपने मार्ग पर जो गया; औरवते-वह वही एक है; अवन् इरावणन् आम्-वह रावण ही होगा; अन्नै-ऐसा; उरैत्तान्-कहा । ६८२

जब लक्ष्मीपति ने यह कहा, तब सुमित्रा-सुत सिंह-सदृश लक्ष्मण ने कहा कि प्रभु ! पेड़ के समान लम्बी भुजाएँ अनेक दिखती हैं । सिर भी अनेक दिखाई देते हैं । तो हमारे पिता से जो लड़कर अपने मार्ग पर गया है, वह एक ही हो सकता है । वह रावण ही होगा । ९८२

* मडलु	णाट्टिय	तारिळ्	योन्शौलै	मदिया
मिडलु	णाट्टिङ्ग	डीयुह	नोक्कित्तन्	विरैवान्
उडलु	णाट्टिय	कुरुदियम्	वरवैयि	नुम्बर्क्
कडलु	णाट्टिय	मलैयन्	तादैयैक्	कण्डान् 983

मटल् उळ् नाट्टिय-पुष्पदलों को अन्दर रखकर गुंथी हुई; तार्-मालाधारी; इळैयोन्-अनुज लक्ष्मण के; चौलै-शब्द को; मतिया-मानकर; मिटल् उळ्-सुदृढ़ मन; नाट्टिङ्कळ्-और आँखों से; ती उक्-आग उगलते हुए; नोक्कित्तन् विरैवान्-अन्वेषण करते हुए गये; उटल् उळ् नाट्टिय-शरीर को अन्दर रखते हुए; कुरुति परवैयिन्-रक्त के सागर में; कटल् उळ् नाट्टिय वरै अन्नै-समुद्र में गाड़े पर्वत के समान; तातैयै-पिता को; कण्डान्-देखा । ६८३

पुष्पदलबद्ध मालाधारी लक्ष्मण का कथन श्रीराम को मान्य लगा । तब उनको अपार क्रोध हुआ । उनके मन में मानो आग भर गयी और आँखों ने आग उगली । वे अन्वेषण करते हुए आगे चले और एक स्थान पर रक्त-सागर-मध्य, क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरुपर्वत के समान जटायु के शरीर को उन्होंने देखा । ९८३

* तुळ्ळि	योङ्गुशौन्	दामरै	नयन्नङ्गळ्	शौरियत्
तळ्ळि	योङ्गिय	वमलन्ऱुन्	इनियुयिर्त्	तादै
वळ्ळि	योन्ऱिक्	मेन्नियिन्	ऱुळ्निऱ	वण्णन्
वैळ्ळि	योङ्गलि	लञ्जन	मलैयैन्	वीळ्न्दान् 984

ओङ्कु चैम् तामरै नयन्नङ्कळ्-उत्कृष्ट लाल कमल-सम नयनों से; तुळ्ळि चौरिय तळ्ळि-आँसू की बूँदें ढलकाते हुए; ओङ्किय अमलन्-दुःख में बढ़े हुए निरञ्जन भगवान श्रीराम; तन् तत्ति उयिर् तातै-अपने प्राण-सम पिता; वळ्ळियोन्-और उदार जटायु के; तिरु मेन्नियिन्-श्रीशरीर पर; तळल् निऱ वण्णन्-अग्निवर्ण (शिवजी) के;

बैळ्ळि ओङ्कलिल्-चांदी के- कैलास पर्वत पर; अब्बत्त मल्लै अंत-अंजनगिरि के समान; वौळ्न्तान्-जा गिरे । ६८४

उनको देखकर श्रीराम की श्रेष्ठ-कमल-सम आँखों से अश्रु के कण ढलक आये । दुःख से अभिभूत होकर अकलुष श्रीराम अपने प्राणप्रिय और उदारमन जटायु के श्रीशरीर पर ऐसे गिरे, जैसे अग्निवर्ण शिवजी के चांदी के कैलास पर्वत पर कोई अंजन-पर्वत गिरा हो । ९८४

ॐ उयिर्त्तु लन्नीरु नाळिहै युणर्विलन् कौल्लैन्
इयिर्त्तु तम्बिपुक् कङ्गेयि नैडुत्तन् नरुविप्
पुयर्क्क लन्दनीर् तैळित्तलुम् पुण्डरी हक्कण्
पैयर्त्तुप् पयप्पय वयर्वुतीर्न् दित्तैयन् पैयुम् 985

और नाळिकै उयिर्त्तिलन्-एक घड़ी (उन्होंने) साँस नहीं छोड़ी; उणर्वु इलन् कौल्-क्या मूर्च्छित हैं; अन्डु अयिर्त्तु तम्पि-ऐसा सन्देह करके लघु भ्राता ने; पुक्कु अम् कैयिन् अदुत्तत्तन्-पास जाकर अपने हाथों में उठा लिया; पुयल् अरुवि कलन्त-मेघ और सरिता के मिश्रित; नीर् तैळित्तलुम्-जल को छिड़कने पर; पुण्डरीक कण् पैयर्त्तु-कमल-सम आँखों को खोलकर; पय पय-धीरे-धीरे; अयर्वु तीर्न्तु-स्वस्थ होकर; दित्तैयन् पैयुम्-यों बोले (श्रीराम) । ६८५

एक घड़ी उन्होंने साँसें नहीं छोड़ीं । लक्ष्मण को शंका हो गयी कि क्या भाई मूर्च्छित हो गये हैं ? उन्होंने पास जाकर श्रीराम को अपने सुन्दर हाथों में लेकर उठाया । वर्षाजल और सरिता का जल दोनों का मिश्रित जल लाकर उनके मुख पर छिड़का । तब श्रीराम ने पुण्डरीक-सम नेत्र को खोलकर धीरे से (निम्नोक्त) बातें कहीं । ९८५

ॐ तन्दादैयरैत् तन्नयर् कौलै नेर्न्दार्
मुन्दारे युळ्ळार् मुडिन्दान् मुत्तैयोरुवन्
अन्दाये वेंडुकाह नीयु मिर्न्दनैयो
अन्दो विनैये नरुङ्गूर् सानेने 986

तम् तातैयरै-अपने पिताओं की; कौलै नेर्न्दार्-मृत्यु के कारण (जो) बने (वे); तन्नयर्-पुत्र; मुन्तु आरे उळ्ळार्-पहले कौन रहे हैं; मुत्तै मुदिन्तान् ओरुवन्-पहले ही एक (दशरथ) चल बसे; अन्ताय् ए-हे मेरे पिता; अर्क्कु आक-मेरे कारण; नीयुम् इरन्तत्तैयो-आप भी मर गये क्या; अन्तो-हाय; दित्तैयन्-पापी मैं; अरुम् कूडूर्-कठोर यम; आत्तै-हो ही गया । ६८६

हाय ! क्या अपने ही पिताओं के घातक पुत्र पहले कभी कहीं हुए हैं ? पहले ही एक, चक्रवर्ती दशरथ, मृत्यु को प्राप्त हो गये । हे मेरे तात, जटायु जी ! मेरे निमित्त आप भी चल बसे ! हाय ! पापी मैं, आपका मारक यम बन गया ! । ९८६

पिन्नुरुव	दोरादे	पेदुरुवेन्	पेण्बालाळ्
तन्नुरुव	डोरप्पान्	इत्तिपुखव	दोरादे
उन्नुरुवु	नीतीरुत्ता	योरुवु	मिल्लादेन्
अन्नुरुवान्	वेण्डि	यिडरुवे	नैन्दाये 987

अन्ताये-मेरे तात; तत्ति उखवतु ओराते-एकाकी होने की चिन्ता न करके; पेण् पालाळ् तन्-स्त्री जाति का; उखवल् तीरप्पान्-कष्ट दूर करने के लिए; उन् उखु नी तीरुत्ताय्-अपना रिश्ते का कर्तव्य अदा किया; पिन् उखवतु ओराते-आगे क्या होगा, यह न जानते हुए; पेतु उखवेन्-संकटग्रस्त और; ओर् उखुम् इल्लातेन्-अब मेरा कोई नातेदार नहीं रहा, ऐसा मैं; अन् उखवान् वेण्डि-किस प्रयोजन की चाह करके; इटर् उखवेन्-कष्ट सहूँ । ६८७

मेरे तात ! आप अकेले रहे । उसका विचार न करके स्त्री जाति की एक को कष्ट में देखकर उसको बचाने के लिए आपने अपने रिश्ते का कर्तव्य अपनी जान से अदा किया है ! आगे क्या होगा ? —यह न जानते हुए मैं चिन्ताग्रस्त हूँ । अब मेरा कोई नातेदार नहीं रहे हैं ! फिर किस प्रयोजन को चाहकर मैं कष्ट सहूँगा ? । ९८७

माण्डेने	यन्डो	मडैयोर्	कुडैमुडिप्पान्
पूण्डेन्	विरद	मदना	नुयिर्पोरुप्पेन्
नीण्डेन्	मरम्बोल	निन्डोळिन्द	पुन्डोळिलेन्
वेण्डेनिम्	मामायप्	पुन्बिडवि	वेण्डेने 988

मडैयोर्-वेदज्ञ ऋषियों का; कुडै मुडिप्पान्-चिन्ता दूर करने का; विरतम् पूण्डेन्-व्रत धारण किया है; अतत्ताल् उयिर् पोर्प्पेन्-उसी कारण प्राण रख लूँगा; मरम् पोल नीण्डेन्-वृक्ष के समान ऊँचा बढ़कर; निन्डु ओळिन्त-बृथा रहनेवाला; पुन् तौळिलेन्-क्षुद्रकर्मों ने; माण्डेने अन्डो-मृतक ही (सम) हूँ न; इ माय पुन् पिडवि-यह माया का क्षुद्र जन्म; वेण्डेन् वेण्डेने-नहीं चाहता, नहीं ही चाहता । ६८८

मैंने प्रतिज्ञा की है कि वेदज्ञ ऋषियों का कष्ट दूर करूँगा और उनकी चिन्ता मिटाऊँगा । उसी कारण मैं प्राणधारण करूँगा । पेड़ के समान लम्बा बना हूँ । पर निरर्थक क्षुद्रकर्मों हो गया हूँ । मृतक (-सा) हूँ न ? यह मायाजन्य क्षुद्र जन्म नहीं चाहता । नहीं ही चाहता । ९८८

ॐ अन्डारम्	वड्डण्ण	वेन्डोयैच्	चान्डोयैक्
कौन्डानु	निन्डान्	कौलैयुण्डु	नीहिडन्दाय्
वन्डाट्	चिलैयेन्दि	वाळिक्	कडलशुमन्दु
निन्ड्रेनु	निन्ड्रे	नैडुमरम्बो	निन्ड्रेने 989

अन् तारम् पड्डु उण्ण-मेरी दारा दूसरे के कैद में ग्रस्त है; एन्डोयै-(उसको बचाने का भार) लेनेवाले आपको; चान्डोयै-गुणपूर्ण को; कौन्डानुम्-जिसने मारा,

वह भी; निन्ऱुशान्-जीवित रहता है; नी कौलै उण्टु किटन्ताय्-आप मौत खाकर पड़े हैं; वल् ताळ् चिलै-सारयुक्त बाजुओ के धनुष का; एन्ति-धारण करके; वाळि कटल् चुमन्नु-शरों का सागर (अंवार) ढोते हुए; निन्ऱेन्नुम्-जो रहता, वह मैं भी; निन्ऱेन्नु-निरर्थक रहता हूँ; नैट्टु मरम् पोल् निन्ऱेन्नु-लम्बे पेड़ के समान (बेकार) खड़ा हूँ । ६८६

मेरी गृहिणी किसी दूसरे की कैद में है । उसको मुक्त करने का भार आपने अपने ऊपर लिया । ऐसे श्रेष्ठ गुणपूर्ण आपको जिसने हत किया, वह अब भी जीवित रहता है ! आप उसके द्वारा हत होकर पड़े हैं । मैं भी हूँ अपने सुदृढ़ और कठोर धनुष का और शरों के सागर-सम अंवार का धारण करके ! हाय ! लम्बे पेड़ के समान खड़ा हूँ ! । ९८९

शौल्लुडैया	रैन्बो	लिनियुळरो	तौल्वित्तैयेन्
इल्लुडैयाळ्	काण	विरहुडैया	यैण्णिलाप्
पल्लुडैया	युन्नैप्	पडैयुडैयान्	कौन्ऱेह
विल्लुडैये	निन्ऱेन्नु	विऱलुडैये	तल्लेतो 990

इल् उडैयाळ् काण-मेरी गृहिणी के देखते; विरकु उडैयाय्-बलशाली; अण् इला पल् उडैयाय्-असंख्य दाँत वाले; पटै उडैयान्-अनेक हथियारों का स्वामी; उन्नै कौन्ऱु एक-आपको मारकर गया और; तौल् वित्तैयेन्-पूर्वकर्म का भागी मैं; विल् उडैयेन्-धनु लेते हुए; निन्ऱेन्नु-खड़ा हूँ; विऱल् उडैयेन् अल्लेतो-बड़ा बलवान हूँ न; इत्ति-आगे; अँन् पोल्-मेरे समान; चौल् उडैयार्-प्रशंसा के पात्र; उळरो-होंगे क्या । ६८७

मेरी गृहिणी देखती रही और बलशाली और अनेक दाँतों से युक्त तात ! अनेक हथियारों का स्वामी, शत्रु आपको मारकर चला गया । और पूर्वकर्मफल का भागी मैं धनु धारण करते हुए इधर बेकार रहता हूँ ! मैं भी बलशाली हूँ न ! आह ! आगे मेरे समान प्रशंसा का पात्र कौन होगा ? । ९९०

❀ अन्न	पलपलवुम्	पन्नति	यळुमयङ्गुम्
तन्नहि	रिलादानुन्	दम्बियुमत्	तन्मैयत्ताय्
उन्नु	मुणर्बुशिरि	दुण्मुळैप्पप्	पुळ्ळरशन्
इन्नयिर्प्पा	नन्बा	लिखुरैयु	नोक्किन्नान् 991

तन् निकर् इलातानुम्-अनुपमित; अन्न पल पलवुम् पन्नति-वैसी अनेक बातें कहकर; अळुम् मयङ्कुम्-रोते-कलपते चक्रित रहे; तम्पियुम्-कनिष्ठ भी; अ तन्मैयत्ताय्-उन्हीं की तरह; उन्नुम्-सोचते रहे; पुळ् अरचन्-पक्षियों के, राजा ने भी; उणर्बु चिरितु-प्रज्ञा थोड़ा; उळ् मुळैप्प-जाग उठी, तब; इन् उयिर्प्पान्-सुखद श्वास निकालकर; इखुरैयुम्-दोनों को; अन्पाल् नोक्किन्नान्-प्रेम से देखा । ६८९

अन्य उपमारहित श्रीराम ऐसी विविध बातें कहते हुए विलापे । उनके कनिष्ठ भ्राता भी दुःखी हुए । तब जटायु धीरे-धीरे होश में आये । सुख की साँस लेते हुए उन्होंने उन दोनों भाइयों पर प्रेम की दृष्टि फेरी । ९९१

❀ उरु उणरा दुयिरुलैय वैयुदुयिर्प्पान्
 कौरुवरैक् कण्डान् उन् नळ्ळड् गुळिर्प्पुड्डान्
 इरु विरुशिरुहु मिन्नुयिरु मेळुलहुम्
 पेरुत्तने यौत्तेन् पेरुत्तेन् पळियेन्डान् 992

उरु उणरातु-क्या हुआ, यह नहीं समझकर; उयिर् उलैय-विकल-प्राण हो; वैयुदुयिर्प्पान्-आह भरी; कौरुवरै कण्डान्-राजकुमारों को देखा; तन् उळ्ळम् गुळिर्प्पु उड्डान्-उनका मन सन्तापरहित और शान्त हुआ; इरु इरु चिरकुम्-कटे हुए दोनों पंख; इन् उयिरुम्-मधुर प्राण; एळ् उलकुम्-सातों लोक; पेरुत्तने यौत्तेन्-मुझे प्राप्त हो गये, ऐसा महसूस करता हूँ; पळि पेरुत्तेन्-निन्दा से भी छूट जाऊँगा; अन्डान्-कहा । ६६२

जटायु को पता नहीं था सीताजी का क्या हुआ । उन्होंने ठण्डी आहें भरीं । कराहने लगे । जब उन्होंने इन राजा भाइयों को देखा तो उनका मन थोड़ा सन्तापरहित हुआ । उन्हें ऐसा लगा कि उनके कटे पंख, प्रिय प्राण और सातों लोक उन्हें प्राप्त हो गये हों । उन्होंने सोचा कि मेरी निन्दा भी (कि मैंने न सीता को वचाया, न उनका समाचार इनको दिया) अब मिट जायगी । ९९२

❀ पाक्कियत्ता लिन्नुरेन् पयनिल् पळियाक्कै
 पोक्कुहिन्नुरेन् कण्णुड्डेन् पुण्णियरे वस्मिन्नेन्नु
 ताक्कि यरक्कन् महुडत् तलैतहरत्त
 मूक्किन्ना लुच्चि मुडैमुडैये मोक्किन्डान् 993

पुण्णियरे-हे पुण्यात्माओ; इन्नु-आज; अन्-अपना; पयन् इल्-निरर्थक; पळि-निन्द्य; याक्कै-शरीर को; पोक्कुकिन्नुरेन्-त्याग रहा हूँ; पाक्कियत्ताल् कण् उड्डेन्-भाग्यवश तुमको देख पाया; वस्मिन्-आओ; अन्नु-कहकर; अरक्कन् मकुट तलै-राक्षस के किरोटशोभित सिरों को; ताक्कि तकरुत्त-आक्रमण करके छिन्न-भिन्न जिससे किया; मूक्किन्नाल्-उस नाक से; उच्चि-उनके सिर को; मुडै मुडैये-बारी-बारी से अनेक बार; मोक्किन्डान्-सूँघने लगे । ६६३

उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण का अभिनन्दन किया । पुण्यात्माओ ! आज मैं अपना निरर्थक और निन्द्य शरीर त्याग रहा हूँ । भाग्यवश तुम्हारे दर्शन हुए । आओ, आओ, स्वागत है । यह कहते हुए उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण के सिर उस नाक (चोंच) से बार-बार सूँघा, जिससे

उन्होंने रावण के किरीटधर सिरों को नोचकर छिन्न-भिन्न कर दिया था । ९९३

❖ वञ्जतैयाल्	वन्द	वरवैन्व	दैन्नुडैय
नैञ्जहमे	मुत्ते	नितैवित्त	दात्तालुम्
अञ्जौन्	मयिलै	यरुन्ददियै	नीङ्गिनिरो
अञ्जलिला	वाड्ड	लिरुवीरु	मैन्नुऱैत्तान् 994

वन्त वरवु—आगत कार्य; वञ्जतैयाल् अँनपु—(रावण के) कपट से हुआ, यह; अँननुडैय नैञ्चकमे—मेरे मन ने; मुत्ते नितैवित्तु—पहले ही स्मरण (भान) कराया; आत्तालुम्—तो भी; अम् चोल् मयिलै—सुन्दर बोली वाली कलापी—सी (सीता को); अरुन्ततियै—अरुन्धती—सी सीता को; अँञ्चल् इला—अक्षय; आड्डल् इरुवीरुम्—बलशाली तुम दोनों; नीङ्कि तरो—अकेले छोड़कर अलग हुए थे क्या; अँनुऱ उरैत्तान्—ऐसा प्रश्न किया । ६६४

आगे कहा—यह जो हुआ वह रावण का वंचना द्वारा साधित कार्य है—यह मेरा मन पहले ही कह रहा था । पर एक बात पूछता हूँ । मधुरवाणी, कलापी—सी सुन्दर और अरुन्धती—सी देवी सीता को अक्षय-बलशाली तुम दोनों अकेले छोड़कर अलग हुए थे क्या ? । ९९४

❖ अँनुऱव	नियम्बलु	मिळैय	कोमहत्
अँनुऱमाण्	डुरुपौरु	ळौळिवु	डावहै
वन्ऱिऱुन्	मायमान्	वन्द	दादिया
निन्ऱुदु	निहळ्न्ददु	निरप्पि	नान्तरो 995

अँनुऱ—ऐसा; अवन् इयम्पलुम्—उनके कहने पर; इळैय कोमकन्—छोटे राजकुमार ने; आण्डु—वहाँ; उडु पौरुळ्—घटी हुई बातें; अँनुऱम् अँळिवु उडा वकै—विना कोई अंश छोड़े; वल् तिऱल् मायम् मान्—बहुत कुशल माया के हरिण के; वन्तु आति आ—आने से लेकर; निन्ऱुत्तु निकळ्न्तु—जो होकर बीतीं; निरप्पित्तान्—वर्णन कीं । ६६५

जब उन्होंने यह प्रश्न किया, तब लघुराजकुमार लक्ष्मण ने अति कुशल मायामृग के आने से लेकर सारी घटनाएँ क्रमवार, विना कोई अंश छोड़े बता दीं । ९९५

❖ आड्डला	नव्वुरै	यरैय	वाणैयाल्
एड्डणर्न्	दैण्णियव्	वैरुवै	वेन्दनुम्
माड्डरुन्	दुयारिवर्	मनक्को	ळावहै
तेड्डुद	नन्ऱैन्	वित्तैय	शैप्पुवान् 996

आणैयाल्—श्रीराम की आज्ञा लेकर; आड्डलान्—समर्थ लक्ष्मण के; अ उरै अरैय—वह वचन कहने पर; अ वैरुवै वेन्तनुम्—वे गृध्रराज भी; एड्ड उणर्न्तु—हृदयंगम

करके; अण्णि-सोचकर; मारु अरुम्-अनाश्वासनीय; तुयर्-दुःख को; इवर् मतम् कौळा वकै-ये मन में न रखें, इस तरह; तेरुतल्-ढाढस देना; नन्ऱु अत्त-अच्छा होगा, सोचकर; इतैय चैप्पुवान्-यों बोले । ६६६

लक्ष्मण ने वे बातें श्रीराम की आज्ञा लेकर ही कहीं । उनकी बातें सुनकर गृधराज ने उन्हें हृदयंगम किया । देखा कि वे अत्यधिक दुःखी हैं । कष्ट अनिवार्य हो गया था । पर यह दुःख उनके मन को न सताए, इसकी व्यवस्था करनी थी । ढाढस दिलाना था । यह सोचकर जटायु बोले । ९९६

❀ अदिशय	मौरवरा	लमैक्क	लाहुमो
तुदियरु	पिरिवियि	निन्ब	तुन्बन्दान्
विदिवय	मेन्बदै	मेरुक्कौ	ळाविडिन्
मदिवलि	याल्विदि	वैल्ल	बल्लमो 997

औरवाराल्-किसी से; अतिचयम्-अतिशय (अस्वाभाविक); अमैक्कल् आकुमो-रचा जा सकता है क्या; तुति अरु-प्रशंसा के लिए अयोग्य; पिरिवियिन्-जन्म में; इत्तुप तुन्पम् तान्-सुख और दुःख; विति वयम् अत्तपत्तै-विधिवश होते हैं, यह बात; मेल् कौळ्ळा विटिल्-हम मानकर नहीं चलेंगे; मति वलियाल्-तो अपनी बुद्धि के बल से; विति-विधि को; वैल्ल बल्लमो-जीत सकते हैं क्या । ६६७

कोई भी असाधारण अतिशयपूर्ण काम नहीं कर सकता । (विधि के विपरीत जाना असाधारण काम है ।) यह जन्म प्रशंसा के योग्य नहीं है । इसमें जो भी दुःख-सुख आते हैं, वे सब विधि के विधान के अनुसार आते हैं । इसको मानकर चलना ही ठीक है । नहीं तो अपने बुद्धिबल से विधि को जीतने का बल हममें है क्या ? । ९९७

तैरिवुरु	तुन्बम्बन्	इन्ऱुच्	चिन्दैयै
इरिवुशैय्	दौळियुमो	दिळुदै	नोरदाल्
पिरिवुशैय्	दुलहैलाम्	पेरुविप्	पान्ऱलै
अरिवुशैय्	विदियितार्क्	करिदुण्	डाहुमो 998

उलकु अलाम्-लोकों के सभी जीवों को; पिरिवु चैय्तु-विविध श्रेणियों में बाँटकर; पेरुविप्पान्-रचनेवाले ब्रह्माजी के; तलै-पाँच शिरों में एक को; अरिवु चैय्-जिसने काटा उस; वितियितार्क्कु-विधिदेवता के लिए; अरितु उण्ढाकुमो-कठिन कुछ हो सकता है क्या; तैरिवु उरु-साफ़ प्रकट रहनेवाला; तुन्पम् वन्तु ऊन्ऱु-दुःख आकर जम गया तब; चिन्तैयै इरिवु चैय्तु-मन को जर्जर करके; औळियुम् ईतु-कर्तव्य से विरत रह जाना, यह; इळुत्तै नौरतु-अज्ञता का काम है । ६६८

ब्रह्माजी स्वयं लोक-सृजक हैं । अनेक तरह की जीवराशियों की सृष्टि का काम उन्हीं के हाथ होता है । पर उनके सिरों में से एक को शिवजी ने काट लिया था । यह काम जिस विधि ने किया था, उस विधि के लिए

कीन सा काम कठिन या असाध्य होगा ? इसलिए जो दुःख सामने आता है, उसके सामने मन हारना और माग्ना और कर्म-विरत हो रहना अज्ञता होगा । ९९८

अलक्कण	मित्तवगु	मणुहु	नाळवं
विलक्कुव	मैन्वदु	मैय्यिड	डाहुमो
इलक्कुमुप्	पुरङ्गळ	यैय्द	वित्तुलियार्
तलक्कलत्	तिरन्वु	तयत्तिन्	पालदो 999

मु पुरङ्गळ-विपुर्लो को; इलक्कु अय्य-नय्य वनात्तर मिट्टोने शर वनाया; वित्तुलियार्-उन धनुर्धर शिवजी का; तलक्कलत् इरन्वु-प्रद-कपाल में भिन्ना मांगना; तयत्तिन् पालतो-उनको तपस्या के लिए योग्य भा गया; अलक्कुम् इत्तुपुम्-दुःख और मुच; अण्कुम् नाळ-जब जाने है, तब; जब विलक्कुवम् अय्य-उनको निवार अगे, समझना; मैय्यिड आकुमो-सबमुच हो सकता है क्या । ९९९

शिवजी बड़े ही प्रसिद्ध धनुर्धर थे । उन्होंने विपुर् लो वनानेवाला अस्त्र छोड़ा था । पर उन्ही को प्रद-कपाल हाथ में लेकर ब्रह्महत्या दोष के पाप के कारण भिन्ना मांगते फिरना पड़ा था । पतिव्रत शिवजी की तपस्या और यह संकट —दोनों में कोई भेज दे गया ? इसलिए जब दुःख या मुच आते हैं हम उनकी रीति देंगे, यह कहना मनमुच साध्य हो सकेगा क्या ? । ९९९

ॐ पौङ्गुवेंड	गोळरा	विशुम्बु	पूतत्त
वेंडुगदिरच्	चैल्वन	विळ्ळुगि	नीङ्गुमाल
अङ्गण्मा	जालत्त	विळ्ळक्कु	माय्हुदिरत्
तिङ्गळ	मोक्कुमु	वळ्ळम्	तेयुमाल् 1000

पौङ्गु वैम् फोळ अरा-उबलनेवाले भयंकर (राहु-केतु के) सर्प-ग्रह; विशुम्बु पूतत्त अत-आकाश में फूल के समान; चैन् कतिर् चैल्वन-उष्णकिरण सूर्यदेव को; विळ्ळुगि नोङ्कुम्-निगल जाते हैं; अम् कण ना ज्ञानत्त-मुचर और विशाल पृथ्वी को; विळ्ळक्कुम्-प्रकाश देनेवाला; आय् कतिर् तिङ्गळम्-बेष्ट किरणों का चक्र भी; ओक् मुट्टे वळ्ळम् तेयुम्-एक बार बढ़ता है, एक बार घटता है । १०००

उबलनेवाले सर्प-रूप के ग्रह, राहु और केतु आकाश में विकसित पुष्प के समान विद्यमान, उष्णकिरण सूर्यदेव को निगल लेते हैं । इस विशाल व सुन्दर पृथ्वी को प्रकाश प्रदान करता है चन्द्रमा । बेष्ट किरणों के उसका क्या हाल है ? पन्द्रह दिन उसे घटना और पन्द्रह दिन बढ़ना पड़ता है । १०००

अन्दरम्	वरुदु	मनेय	तोर्दुलुम्
शुन्वरत्	तोळिनिर्	तौत्तमे	नोरयाल्

मन्दिर	विमैयवर्	गुरुविन्	वाय्मौलि
इन्दिर	नुरुरन	वैष्ण	वैष्णुमो 1001

मन्तिर-मंत्रणा में चतुर; इमैयवर् कुरुविन्-देवगुरु (बृहस्पति) का; वाय्मौलि-उपदेश; इन्तिरन् उरुरन-(सुनकर तदनुसार चलनेवाले) इन्द्र को जो कष्ट प्राप्त हुए; वैष्ण वैष्णुमो-उनको गिना जा सकता है क्या; चतुर तोळित्-सुन्दर-बाहु वीर; अन्तरम् वस्तुतुम्-कष्टों का आना; अनैय तीरतुम्-और उनका हट जाना; तौन्मै नीर-सनातन प्रकृति के हैं। १००१

सलाहें देने में समर्थ देवगुरु के उपदेशों के अनुसार चलता है देवेन्द्र। पर उसको भी (नारद, दुर्वासा, गौतम आदि द्वारा शप्त होकर) कितने कष्ट सहने पड़े—क्या उनकी गणना हो सकती है? इसलिए, सुन्दर-बाहु वीर! दिन के फेर आते-जाते हैं। यह सनातन है। १००१

तडैक्करम्	वैरुवलिच्	चम्ब	रप्पैयर्क्
कडैत्तौलि	लवुणनाइ	कुलिशक्	कैयितान्
पडैत्तनन्	पळियदु	पहळि	विल्वलाय्त्
तुडैत्तन	नुन्दैतन्	कुववुत्	तोळिनाल् 1002

पकळि विल् वलाय्-शर-धनुर्विद्या-विशारद; तडैक्कु अरुम्-अवार्य; वैरु वलि-बड़ा वलशाली; चम्पर पॅयर्-शंवर नाम के; कडै तौळिल्-नीच कर्मी; अवुणनाल्-राक्षस द्वारा; कुलिश कैयितान्-कुलिशपाणी (इन्द्र) ने; पळि पडैत्तनन्-अपमान पाया; अनु-उस (अपमान) के; उन्नतै-तुम्हारे पिता ने; तन् कुववु तोळितान्-अपनी बलवान भुजाओं के (पराक्रम के) द्वारा; तुडैत्तनन्-पोंछ दिया। १००२

शर चलाने की धनुर्विद्या में विशारद राम! अप्रतिहत अपार बली था शंवर। नीचकर्मी उसके हाथ कुलिशपाणी इन्द्र अपमानित हुआ। तुम्हारे पिता ने अपनी उन्नत भुजाओं के बल से उस अपमान को पोंछ दिया। १००२

पिळ्ळैच्चाइ	किळिय	ताळैप्	पिरिवुड	युड्ड	पैड्डि
तळ्ळुड्ड	वडमुन्	देवर्	तुयर्मुन्	दन्द	देयाल्
कळ्ळप्पो	ररक्क	रैन्नुड्ड	गळैहळैक्	कळैन्दु	वाळ्दि
पुळ्ळुक्कुम्	पुलम्बु	पेयक्कुन्	तायन्न	पुलवु	वेलोय् 1003

पुळ्ळुक्कुम्-पक्षियों को; पुलम्बु पेयक्कुम्-(भूख से) प्रलाप करनेवाले भूतों को; ताय् अन्न-माता के समान; पुलवु वेलोय्-मांस-दायी भाला के धारक; चाँल् किळि अताळै-तुतलाती और चुकी-सी सीता से; पिरिवु उड्ड पैड्डि-बिछड़ चुके हो, यह उपलब्धि; तळ्ळुड्ड अड्डुम्-ग्लानिगत धर्म; तेवर् तुयर्मुम्-और देवों के दुःख का; तन्तते आल्-दिया हुआ है; कळ्ळ पोर् अरक्कर अन्नम्-मायायुद्ध-चतुर राक्षस रूपी; कळैयितै-(नौद) व्यर्थ पौधों को; कळैन्नु-निरा देकर; वाळ्ति-चिरजीव रही। १००३

ऐसे भाले के धारक, राम ! जो माता के-से प्रेम के साथ पक्षियों और प्रलाप करनेवाले पिशाचों को भूख मिटाते हुए मांस खिलाता है । धर्म क्षीण हो गया है और देव दुःखी हैं । उन्हीं दो बातों से तोतली बोली वाली शुकी-सी सीता से वियुक्त होकर कष्ट उठाने का यह कार्य हो गया है । तुम चोर के स्वभाव वाले मायावी राक्षसों को खेत के निराने योग्य (नींद) घास-पौधों के समान काट मिटाओ और चिरजीव रहो । १००३

वडुककण्वार्	कून्द	लाळ	यिरावणन्	मण्णि	नोडुम्
अडुत्तत्त	तेहु	वात्तै	यैदिरन्देन	दाडुल्	कौण्डु
तडुत्तत्तै	ताव	देल्लान्	दवत्तान्	तन्द	वाळाल्
पडुत्तत्त	निड्गु	वीळ्न्दे	निडुविन्ऱु	पट्ट	देन्ऱान् 1004

वडु कण्-आम के टिकोरे के समान आँखें; वार् कून्तलाळ-और लम्बा केश; इनके साथ शोभनेवाली सीता को; इरावणन्-रावण जो; मण्णिन् ओडुम्-भूमि के अंश के साथ; अडुत्तु एकुवात्तै-उठाये दौड़ा जा रहा था, उसका; अतनु आडुल् कौण्डु अतिरन्तु-अपने बल से सामना करके; आवतु अल्लाम्-भरसक; तडुत्तत्तै-रोका (मैने); तवत्तु-तपस्या से; अरन् तन्त-हर को दी हुई; वाळाल्-तलवार से; पडुत्तत्तन्-मुझे निहत कर दिया (रावण ने); इड्कु वीळ्न्तेन्-यहाँ गिर गया; इतु इन्ऱु पट्टु-आज मेरा यह हाल हुआ; देन्ऱान्-(जटायु ने) बताया । १००४

आम के टिकोरे के समान आँखों से भूषित और सुन्दर केशिनी सीता को रावण भूमि के अंश के साथ उठाये ले जा रहा था । मैंने उसका अपने बल के साथ सामना किया । उसको रोका । पर उसके हाथ में चन्द्रहास तलवार थी, जो उसे उसके तप के फलस्वरूप शिवजी द्वारा दी गयी थी । उसने उसका प्रयोग करके (अपने निजी बल से नहीं) मुझे आहत कर दिया । मेरे पंख कट गये और मैं गिर गया हूँ । यही यहाँ जो हुआ वह वृत्तान्त है । १००४

कूडित्त	माडुन्	जैन्ऱु	शैवित्तलड्	गुरुहा	मुत्तन्
ऊडित्त	वुदिरन्	जैङ्ग	णुयिर्त्तत्त	वुयिर्प्पुच्	चैन्दी
एडित्त	पुर्व	मैन्मे	लिरिन्दत्त	शुडर्ह	ळैङ्गुम्
कोडित्त	दण्ड	कोळड्	गिळिन्दत्त	गिरिह	ळैल्लाम् 1005

कूडित्त माडुन्-(उनका) कहा वचन; चैवि तलम् चैन्ऱु-कर्ण तक जाकर; कुडुका मुत्तन्-लग जाय, इसके पूर्व ही; चैम् कण्-उनकी लाल आँखों में; उतिरम् ऊडित्त-रक्त निकल आया; उयिर्प्पु-साँसें; चैम् ती उयिर्त्तत्त-गरम आग से मिश्रित आयीं; पुर्वम्-मोहें; मैन् मेल्-ऊपर, ऊपर; एडित्त-चढ़ीं; अङ्कुम्-सर्वत्र; चुटर्कळ् इरिन्तत्त-अंगार छितरे; अण्ड कोळम् कोडित्त-अण्डगोल फट पड़ा; किरिकळ् अल्लाम्-सारे पर्वत; किळिन्तत्त-चिर गये । १००५

जब जटायु ने यह बात कही, तब श्रीराम कोपोद्विग्न हुए । लाल

आँखों में खून भर आया । साँसें आग से मिश्रित-सी निकलीं । भौंहेँ तन गयीं । कोप के अंगार सर्वत्र छितरे । सारे अण्डगोल फटे और सभी पर्वत चिरे । १००५

मण्णहन्	दिरिय	निन्नु	माल्वरै	तिरिय	मड्डैक्
कण्णहन्	पुत्तलुड्	गालुड्	गदिरौडु	तिरियक्	कावल्
विण्णहन्	दिरिय	मेलै	विरिञ्जनुन्	दिरिय	वीरन्
अण्णरुम्	पौरुळ्ह	ळैल्ला	मैन्वडु	तैरिन्द	दन्ने 1006

मण् अकम् तिरिय-पृथ्वी विपर्यस्त हुई; माल् वरै तिरिय-बड़े-बड़े पर्वत घूमे; मड्डै-और; कण् अकन् पुत्तलुम्-विस्तृत जलाशय और; कालुम्-पवन; कतिर् ओट्टुम्-सूर्य व चन्द्र के साथ; तिरिय-घूम गये; कावल् विण् अकम्-सबकी स्थिरता की रक्षा करनेवाला आकाश; तिरिय-घूमा; मेलै विरिञ्चनुम्-इन सबके ऊपर के ब्रह्मा भी; तिरिय-अव्यवस्थित हुए; वीरन्-(इसलिए) वीर श्रीराम; अण् अरुम् पौरुळ्ळ् अल्लाम्-अगणित सभी पदार्थों के अन्दर हैं; अण्पु-यह तथ्य; तैरिन्दतु-विदित हुआ । १००६

धरती घूम उठी । बड़े पर्वत अस्त-व्यस्त हुए । और विस्तृत जल, अनिल, सूर्य और चन्द्र चकरा गये । सबको स्थिरता देनेवाला अन्तरिक्ष विपर्यस्त हो गया । पुरातन सर्वोपरि ब्रह्मा भी अस्थिर हो गये । इस विपर्यय से यह तथ्य सावित हुआ कि श्रीराम अगणित सभी पदार्थों के अन्तर्यामी हैं । १००६

कुडित्तवैड्	गोवम्	यार्मेड्	कोळुळुड्	गौल्लैन्	इञ्जि
वैडित्तुनिन्	रुलह	मैल्लाम्	विम्मुळु	हिन्नु	वेलै
पौरिप्पिदिर्	पडरच्	चैन्दोप्	पुहैयोडुम्	बौडिप्पप्	पौम्मेन्
इरिप्पदोर्	मुखव	डोन्नु	विरामन्नु	मियम्ब	लुड्डान् 1007

कुडित्त वैम् कोवम्-श्रीराम के मन में उदित कोप; यार् मेल् कोळुळुम् कौल्-किस पर जा लगेगा; अण्णु-ऐसा सोचकर; उलकम् अल्लाम्-सारे लोक; अञ्चि-उरकर; वैडित्तु निन्नु-तनकर खड़े हो गये; विम् उळुकिन्नु वेलै-जब अभिभूत हुए, तब; इरामन्नुम्-श्रीराम भी; पौरि पितिर् पटर-अग्निकणों के छितरते; चैम् ती-लाल अग्नि के; पुकै ओट्टुम् पौटिप्प-धुएँ के साथ उठते; अरिप्पतु ओर् मुखवल्-दिल दहलानेवाले हास के; पौम् अण्णु तोन्नु-‘भम्’ शब्द के साथ (फूटकर) प्रकट होते; इयम्बल् उड्डान्-बोले । १००७

अब सारे लोकवासी यह सोचते हुए भयभीत हुए कि श्रीराम का क्रोध किस पर उतरेगा ? भय से अभिभूत हो वे तनकर दुःख करते हुए खड़े रह गये । श्रीराम ने ‘भम्’ शब्द के साथ अट्टहास किया । तब अंगारे छितरे । लाल रंग की आग धुएँ के साथ जल उठी । वे बोले । १००७

✽ पेंण्डत्ति यौरुत्ति तन्नैप् पेदैवा ळरक्कन् प्पुत्तिक्
 कौण्डत्त तेह नीयिक् कोळुक्कु कुलुङ्गल् शैल्ला
 अण्डिशै यिरुदि यान चुलहङ्ग ळिवरुत्तै यिन्ने
 कण्डवा तवरह ळोडुम् कळैयुमा रिन्ऱु काण्डि 1008

तत्ति पेंण् ओरुत्ति तन्नै-अकेली रही एक स्त्री को; पेटे वाळ् अरक्कन्-मति-
 हीन क्रूर राक्षस; प्पुत्ति कौण्डत्तन् एक-पकड़ लेकर गया और; नी इ कोळ् उर-
 आप पर यह संकट आया और; कुलुङ्कल् चैल्ला-कम्पित नहीं होता हुआ; अण्
 तिचै इशति आत्त-आठों दिगन्त; उलकङ्कळ् इवरुत्तै-इन सारे लोकों को; कण्ड
 वात्तवरुक्कोडुम्-इसके दर्शक देवों के साथ; इन्ने कळैयुम् आरु-अभी कैसे ध्वस्त करता
 हूँ, वह प्रकार; रिन्ऱु काण्डि-आज देखिए । १००८

हाय ! एकाकिनी एक स्त्री को मतिहीन क्रूर राक्षस पकड़कर ले
 गया ! आप पर यह विपदा आयी है ! इनको देखकर आठों दिशाओं
 के अन्दर रहनेवाले लोकों के वासी कम्पित नहीं हुए । देव भी यह देखते
 रह गये । अब मैं इन सभी लोकों और देवों को कैसे विध्वस्त कर देता
 हूँ, देखिए । १००८

तारहै युदिरु मारुन् दत्तिक्कदिर् पिदिरु मारुम्
 पेरहल् वात्त मँडुगुम् पिडुङ्गैरि पिक्कुक्कु मारुम्
 नीरौडु निलन्ऱु मरुन् निन्ऱुवुन् दिरिन्द यावुम्
 वेरौडु पयियु मारुम् विण्णवर् विळियु मारुम् 1009

तारकै उतिरुम् आरुन्-तारे कैसे चूते हैं, वह प्रकार और; तत्ति कतिर् पितिरुम्
 आरुन्-अद्वितीय सूर्य कैसे चूर-चूर होकर गिरता है, वह और; पेर अक्ल् वात्तन् अँङ्कुम्-
 अति विशाल गगन में; पिडुङ्कु अँरि-उज्ज्वल अग्नि; पिक्कुक्कुन् आरुन्-कैसे जल उठती,
 वह और; नीर् ओडु निलन्ऱु-जल और पृथ्वी; मरुन्-और अन्य; निन्ऱुवुम्
 तिरिन्ऱु यावुम्-अचल और चल सभी पदार्थ; वेर् ओडु पयियुम् आरुन्-जड़ के साथ
 कैसे नष्ट होते हैं, वह प्रकार; विण्णवर् विळियुम् आरुन्-देव कैसे मिट जाते हैं, वह
 प्रकार । १००९

तारे चू पड़ेंगे । अद्वितीय सूर्य चूर-चूर होकर गिरेगा । विशाल
 गगन में सर्वत्र बड़े प्रकाश के साथ आग जल उठेगी । पृथ्वी और समुद्र
 और उनमें रहनेवाले अचल और चल सभी जीव निर्मूल हो जायँगे ।
 यह सब कैसे होते हैं और देव कैसे विनष्ट होते हैं (यह प्रकार
 देखिए) । १००९

इक्कण मौन्ऱि निन्ऱु वेळिन्ऱो डेळु मेलुहीळ्
 मिक्कन् पोन्ऱु तोन्ऱु मुलहङ्गळ् वीयु मारुम्
 तिक्कुडै यण्ड कोळप् पुत्तत्तवुन् दीयन्ऱु नीरिन्
 मौक्कुळि नुडैयु मारुड् गार्नेन् मुनिद लोडुम् 1010

मेल् कीळ् मिक्कत पोत्तु तोत्तुम्—ऊपर और नीचे व्याप्त रहनेवाले; निन्ऱ—
स्थायी; एळिन् ओटु एळ् उलकड्कळ्—सात और सात चौदहों भुवन; वीयुम् आरुम्—
कैसे ध्वस्त होते हैं, वह प्रकार; तिककु उट्टे—आठों दिशाओं के अन्दर; अण्ट कोळम्—
रहनेवाले अण्डगोल; पुत्तुत्तुवुम्—अन्य बाह्याण्ड; तीयन्तु—जलकर; नीरिन्
मोक्कुळिन्—जल के बुलबुले के समान; उट्टैयुम् आरुम्—कैसे अदृश्य होते हैं, वह; इ
कणम् ओत्तुळिल्—इसी एक क्षण में; काण् अँत—देखिए, कहकर; मुत्तितल् ओटुम्—जब
श्रीराम कुपित हुए, तब । १०१०

ऊपर और नीचे व्याप्त होकर जो शानदार लगते हैं, वे चौदहों भुवन
अब तहस-नहस हो जायँगे । आठों दिशाओं के अन्तर्गत रहनेवाले सारे
अण्डगोल और बाह्याण्ड भी जलकर जल के बुलबुले के समान अदृश्य हो
जायँगे । वे सब कैसे होते हैं वह रीति अभी, इसी एक क्षण में देख
लीजिए । यह कहते हुए जब श्रीराम कोप दिखा रहे थे तब— । १०१०

वैञ्जुडर्क् कडवुण् मीण्डु मेरुविन् मरैय लुऱ्शान्
अँजलि रिशैयि निन्ऱ यात्तैयु मिरियल् पोत्त
तुञ्जिन वुलह मँल्ला मँत्तबदेन् तुणिन्द नैञ्जन्
अञ्जिन तिळैय कोवु मयलुळोर्क् कवदि युण्डो 1011

वैम् चुटर्—गरम किरणों के; कडवुळ्—(सूर्य) देव; मीण्डु—फिर; मेरुविल्
मरैयल् उऱ्शान्—मेरु के पीछे छिपने लगे; अँजल् इल्—अप्रमत्त; तिचैयिन् निन्ऱ
यात्तैयुम्—दिशाओं में स्थित गज भी; इरियल् पोत्त—अस्त-व्यस्त हो भागे; उलकम्
अँल्लाम् तुञ्चित्त—सारे लोक के जीव स्तब्ध बने; अँत्तपत्तु अँत्त—ऐसा कहना क्या;
तुणिन्त नैञ्जत्त—सुदृढ़-मन; इळैय कोवुम्—लघुराज भी; अञ्चित्तन्—भयभीत हुए;
अयल् उळोर्क्कु—अन्य लोगों (के भय) को; अवति उण्टो—सीमा है क्या । १०११

गरम किरणमाली भी मेरु के पीछे जा छिपे । अचल दिग्गज भी
इधर-उधर भागे । सारा विश्व निष्क्रिय हो गया—यह कहना क्या अर्थ
रखता है ? अदम्य साहसी लघुराज भी डर गये तो अन्यो के भय की
सीमा भी हो सकती थी क्या ? । १०११

इव्वळि निहळुम् वेलै यैरुवैहट् करशन् याडुम्
शैव्वियोय् मुनियल् वाळि तेवरु मुत्तिवर् तामुम्
वैव्वलि वीर निन्ऱाल् वेरुमैन् रेमाक् किन्ऱार्
अँव्वलि कौण्डु वैल्वा रिरावणन् शैयलै यैन्ता 1012

इ वळि निकळुम् वेलै—जब ऐसी बात हुई; यैरुवैहट्कु अरचन्—गोधों के राजा;
शैव्वियोय्—पुरुषोत्तम; यातुम् मुत्तियल्—कुछ भी क्रोध मत करो; वाळि—सौभाग्यवान
जिओ; वैल्वा वलि वीर—परंतप बली वीर; तेवरुम् मुत्तिवर् तामुम्—देव और मुनि;
इरावणन् चैयलै—रावण के कृत्य को; निन्ऱाल् वेरुम्—तुम्हारे द्वारा जीतने (रुकवाने)
का; अँत्तु एमाक्किन्ऱार्—विचार करके मुदित हैं; अँ वलि कौण्डु—वे किस पराक्रम
से; वैल्वार्—जीतेंगे; अँन्ता—कहकर । १०१२

जब यह सब हो रहा था, तब गृध्रराज ने श्रीराम को समझाया । नेक श्रीराम ! तुम कुछ गुस्सा मत करो । सौभाग्यमय जीवन जिओगे । विजयी पराक्रमी वीर ! देव और मुनि तो यह सोचते हुए आनन्द का अनुभव कर रहे हैं कि तुम्हारे द्वारा रावण के अत्याचार निरस्त होंगे । वे कौन सा बल लेकर रावण को जीत सकेंगे ? । १०१२

नाट्चैय्द कमलत् तण्ण नल्हिन नवैयि लाड्डुल्
तोड्चैय्द वीर मॅन्तिड् कण्डनै शौल् वुण्डो
ताट्चैय्य नळिनत् तोने मुदलिनर् तलैपत् तुळ्ळाड्
काट्चैय्हिन् डार्ह ळन्डि यड्ज्जैय् हिन्डार्हळ् यारे 1013

नाट् चैयत्-आयु निर्धारित करनेवाले; कमलत्तु अण्णल्-कमलासन देव के द्वारा; नल्कित्त-दिये गये; नवैयिल् आड्डुल्-अमोघ शक्ति की; तोड् चैयत् वीरम्-भुजाओं के बल-पराक्रम को; अॅन्तिल् कण्डनै-मेरे विषय में देखा; शौल् उण्डो-फिर कहना है क्या; ताड् चैय्य नळित्तत्तोते मुतलिनर्-नालसहित कमल पर आसीन ब्रह्मा से लेकर सभी; तलै पत्तु उळ्ळार्क्कु-दशग्रीव का; आड् चैय्किन्डार्कळ्-कंकर्ण करते हैं; अन्डि-सिवाय इसके; अड् चैय्किन्डार्कळ् यारे-धर्म-कर्म करनेवाले कौन हैं । १०१३

सब जीवों के आयु-विधायक ब्रह्मा ने रावण को कितना भुजबल वर के रूप में दिया है, वह कितना निर्दोष है, यह तुमने मेरी गति से जान लिया है न ? फिर उसके सम्बन्ध में बताने को क्या है ? नाल-सहित कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा आदि सभी देवता दशग्रीव की सेवा टहल करते हैं । उसके सिवा अपने धर्म-कर्म करते कौन हैं ? । १०१३

तैण्डिरै युलहन् दन्निर् चैरुनर्माट् टेवल् शैय्तु
पैण्डिरिन् वाळव रन्ड्रे यिदुवन्ड्रो देवर् पैड्डि
पण्डुल हळन्दो नल्हप् पाड्कड लमुद मन्ताळ्
उण्डिल राहि लिन्ना ळन्तवर्क् कुय्द लुण्डो 1014

तैळ् तिरै उलकम् तन्तिल्-स्पष्ट समुद्र से घिरी पृथ्वी में; चैरुत्तर् माट्-अपने शत्रु रावणादि राक्षसों के यहाँ; एवल् चैय्तु-सेवा-टहल करके; पैण्डिरिन् वाळवर्-स्त्रियों का-सा जीवन बिता रहे है; तेवर् पैड्डि-देवों का भाग्य; इतु अन्ड्रो-यही है न; पण्डु उलकु अळन्तोन्-पहले (त्रिविक्रम बनकर) जिन्होंने लोको को नापा; पाल् कटल् अमुतम् नल्क-उन्होंने क्षीरसागर के अमृत को देवों को दिया; अ नाळ् उण्डु इलर् आकिल्-उस दिन वे नहीं खाते तो; इ नाळ्-आजकल; अन्तवर्क्कु-उन लोगों का; उयत्तल् उण्डो-जीवित रहना होता क्या । १०१४

स्वच्छ समुद्र-वलयित भूतल में, वे देव अपने शत्रु रावण की सेवा-टहल करते हुए स्त्रियों के समान जीवन बिता रहे है । यही उनकी स्थिति है ! इन देवों को अगर क्षीरमथन से क्षीरसागर से प्राप्त अमृत त्रिविक्रम

द्वारा न मिलता होता, आज रावण के शासन काल में ये जीवित रह सकते क्या ? । १०१४

❖ वम्बिळै कौङ्गै वज्जि वनत्तुडैत् तमियळ् वैहक्
 कौम्बिळै मानिन् पिन्वोय्क् कुलप्पळि कूट्टिक् कौण्डीर्
 अम्बिळै वरिविर् चैङ्गै येयन्मी रायुङ् गालै
 उम्बिळै येन्व दल्ला लुलहज्जैय् पिळैयु मुण्डो 1015

अम्पु इळै-शरासन; वीर विल् चैङ्कै-सबन्ध धनु अपने लाल हाथ में रखनेवाले;
 ऐयन्मीर्-मेरे तात; वम्पु इळै-अँगिया से बद्ध; कौङ्कै वज्जि-स्तनों से भूषित
 लता(-सी सीता); वनत्तु इटै तमियळ् वैक-वन में अकेली रही, तब; कौम्पु इळै-
 सींगों-सहित; मानिन् पिन् पोय्-मृग के पीछे जाकर; कुल पळि-कुल का अपमान;
 कूट्टि कौण्डीर्-सम्पादित कर लिया; आयुम् कालै-विचार करने पर; उम् पिळै
 अन्नपु अल्लाल्-तुम्हारा कसूर है, इसके सिवा; उलकम् चैय् पिळैयुम् उण्डो-संसार
 (के वासियों) का कोई अपराध है क्या । १०१५

सबन्ध शरासनधारी लाल हाथ के हे वीरो ! मेरे पुत्रो ! अँगियाबद्ध
 स्तनों वाली लता-सदृश सीता जब जंगल में एकाकिनी रही, तब तुम उसे
 छोड़कर शृंगसहित हरिण को पकड़ने गये और अपने कुल का अपयश ग्रहण
 कर आये । सोचकर देखो तो गल्ती तुम्हारी ही है । संसार का किया
 कोई अपराध है क्या ? । १०१५

आदलाल् मुनिवा यल्लै यरुन्ददि यनैय कर्पिन्
 कादला डुयर नीक्कित् तेवर्तड् गरुत्तु मुर्त्ति
 वेदनून् मुर्त्तिन् यावुम् विदियुळि निरुवि वेरु
 तीडुळ् तुडैत्ति येन्डान् शेवडिक् कमलज् जेर्वान् 1016

चे अटि कमलम् चेर्वान्-(श्रीमन्नारायण के) लाल (श्रेष्ठ) चरण-कमल पहुँचने को
 जो थे (मरणोन्मुख); आतलाल्-इसलिए; मुनिवाय् अल्लै-कोप मत करो; अरुन्तति
 अतैय कर्पिन्-अरुन्धती-सी पतिव्रता देवी; कातलाळ्-तुम्हारी प्रिया का; तुयरम्
 नीक्कि-दुःख दूर कर; तेवर् तम् करुत्तु मुर्त्ति-देवों की प्रार्थना पूरी करके; चेत
 नूल् मुर्त्तिन्-वेद-शास्त्र में उक्त विधि के अनुसार; यावुम् विति उळि निरुवि-सब धर्म
 विधिवत संस्थापित करके; वेरु तीतु उळ-अन्य जितनी भी बुराइयाँ हैं; तुडैत्ति-
 उनको दूर करो; येन्डान्-(जटायु ने) कहा । १०१६

जटायु अव श्रीविष्णु भगवान के लाल कमलचरण को पहुँचने की स्थिति
 में थे । उन्होंने श्रीराम को आशीष दिया । श्रीराम ! तुम किसी पर
 क्रोध मत करो । अरुन्धती-समान पतिव्रत्यशीला, अपनी प्रिया सीता का
 दुःख हरण करो । देवों की प्रार्थना पूरी करो । वेद-शास्त्र-विहित सभी
 धर्मों को संस्थापित करो । और अन्य कष्ट, जो भी पृथ्वी पर हों, उनका
 निरसन कर दो । १०१६

पुयत्तिऱ वण्ण ताण्डप् पुण्णियन् पुहन्ऱ शौल्लैत्
 तयरदन् पण्णियी दैन्तच् चिन्दैयिऱ उळ्ळिवि निन्ऱान्
 अयल्लिनि मुत्तिव दैन्तै यरक्करै वरक्कम् तोरक्कुम्
 शौयल्लित्तिच् चैयल्लैन् ऐण्णिक् कण्णिय शोऱ्ऱन् दोरन्दान् 1017

पुयल् तिऱ वण्णन्-मेघवर्ण ने; अ पुण्णियन् पुकन्ऱ चौल्लै-उन पुण्यात्मा के
 कहे वचनों को; आण्डु-तव; तयरदन् पणि ईतु-दशरथ की आज्ञा है यह; अन्त-
 ऐसा; चिन्तैयिल् तळ्ळिवि निन्ऱान्-अपने मन में धारण कर लिया; इति अयल् मुत्तिव
 अन्तै-अब दूसरों पर क्रोध करना क्या है; अरक्करै वरक्कम् तोरक्कुम्-राक्षसों के
 वर्गों का नाश करने का; चैयल् इति चैयल्-काम ही कर्तव्य है; अन्ऱ ऐण्णि-ऐसा
 सोचकर; कण्णिय चोऱ्ऱम् तोरन्तान्-अपनाया क्रोध दूर कर दिया । १०१७

मेघवर्ण श्रीराम ने उनकी आज्ञा को दशरथ की आज्ञा के समान
 हृदयंगम कर लिया । 'अब अन्यो से रुष्ट होना क्या अर्थ रखता है ?
 आगे मेरा कार्य राक्षसों के वर्गों को विध्वस्त करना ही है !' —यह सोचकर
 श्रीराम ने अपने मन में सृष्ट क्रोध को शान्त कर लिया । १०१७

ॐ आयपिन् नमलन् तानु मैयनी यमैदि यैन्त
 वायिडै मौळिन्द दन्ऱि मऱ्ऱौरु शौयलु मुण्डो
 पोयदव् वरक्क नैङ्गे पुहल्लैन् पुळ्ळिन् वेन्दन्
 ओय्विन नुणर्वु तेय वुरैत्तिल नुयिरुन् दोरन्दान् 1018

आय पिन्-(शान्त) होने के बाद; अमलन् तानुम्-अकलुप (पवित्र) श्रीराम
 भी; ऐय-तात; नी-आप; अमैति-शान्त हों; वाय् इटै-मुख से; अन्त
 मौळिन्तु-आपने जो कहा; अन्ऱि-उसके सिवा; मऱ्ऱौरु चैयलुम् उण्डो-दूसरा
 कोई काम (मुझसे) होगा क्या; अ अरक्कन्-वह राक्षस; पोयतु अङ्के-गया कहाँ;
 पुक्ल् अन्त-कहिए, कहने पर; पुळ्ळिन् वेन्तन्-खगराज ने; ओय्वितन्-रख्य होकर;
 उणर्वु तेय-प्रज्ञा खोकर; उरैत्तिलन्-नहीं कहा; उयिरुन् तोरन्तान्-प्राण छोड़
 गये । १०१८

अपना क्रोध शान्त करने के बाद अकलुप श्रीराम ने जटायु से मधुर
 ढंग से कहा कि तात ! आप शान्त हों । आपने जो अपने मुख से
 आज्ञा कही है, उसके सिवा कोई और कार्य मुझसे होगा क्या ? नहीं होगा ।
 आप यह बताये कि वह राक्षस गया कहाँ ? इसका उत्तर खगराज दें इसके
 पहले ही वे श्लथ होकर प्रज्ञा खोकर प्राणहीन हो गये । उत्तर दे नहीं
 पाये । १०१८

शौदङ्गोण् मलरु लोन्नु देवरु मैन्व दैन्ते
 वेदङ्गळ् काण्णि लामै वैळिन्निऱे मऱैयुम् वीरन्
 पादङ्गळ् कण्णिऱ् पार्त्तान् पडिवङ्गो नैडिय पञ्ज
 वूदङ्गळ् विळियु नाळुम् पोक्किला वुलहम् वुक्कान् 1019

चीतम् कौळ् मलर् उळोत्तुम्—शीतलतायुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा; तेवल्—
देव; अन्नपु अन्ते—उनकी बात क्या; वेतङ्कळ् काण्किलामै—वेदों ने भी नहीं देखा,
ऐसे; वैळि निन्ने—ज्ञानातीत हो रहनेवाले; मरैयुन् वीरन्—और अगोचर वीर श्रीराम
के; पातङ्कळ् कण्णिल् पार्त्तान्—चरणों के दर्शन करते हुए; पटिवम् कौळ्—विविध
रूपों में परिवर्तित होनेवाले; पञ्च पूतङ्कळ्—पाँच भूत; विळियुम् नाळुम्—जिस दिन
में विनष्ट हो जाते हैं, उस युगान्त में भी; पोक्कु इला—अविनष्ट रहनेवाले; उलकम्—
परमपद में; पुक्कान्—प्रविष्ट हुए । १०१६

शीतल कमलपुष्प पर आसीन ब्रह्मा और अन्य देव क्यों ? स्वयं
वेदों के लिए भी श्रीराम अगोचर थे । ऐसे परमेश्वर के चरण की अन्तिम
स्मृति करते हुए जटायु ने प्राण-त्याग किया था । इसलिए वे उस परमपद
श्रीवैकुण्ठ में पहुँच गये, जो सारे भूतों को विनष्ट करनेवाले युगान्त में भी
अक्षय रहता है । १०१९

वीडव	नैय्दुम्	वेलै	विरिज्जने	मुदल	मेलोर्
आडवर्क्	करश	नोडुन्	दम्बियु	मळुदु	शोरक्
काडमर्	मरमुम्	मावुङ्	गङ्कळुङ्	गरैन्दु	शायन्द
शेडरुम्	वारु	ळोरुङ्	गरज्जिरज्	जेरत्ता	रन्ने 1020

अवन् वीटु अय्तुम् वेलै—उनके मोक्षप्राप्ति के समय; आटवर्क्कु अरचन् ओटुम्—
पुरुषोत्तम के साथ; विरिज्जने मुतल मेलोर्—विरंचि आदि स्वर्गवासी देव; तम्पियुम्—
और कनिष्ठ भ्राता; अळुत्तु चोर—रोते-मुरझाते थे, तब; काटु अमर्—जंगल में
रहनेवाले; मरमुम् मावुम्—वृक्ष और जानवर; कङ्कळुम्—पर्वत भी; करैन्दु चायन्त—
द्रवीभूत होकर नीचे गिर गये; चेटल् पार् उळोरुम्—नागलोकवासी और पृथ्वीवासी
लोगों ने; करम्—अपने हाथ; चिरम् चेरत्तार्—सिर पर रख लिये । १०२०

जब जटायु को मोक्षप्राप्ति हुई, तब पुरुषोत्तम श्रीराम के साथ
ब्रह्मादि देवता, श्रीराम के कनिष्ठ भ्राता सब मुख खोलकर रोये । कानन
में विद्यमान तरु और जानवर और पर्वत पिघलकर धराशायी हुए ।
नागलोकवासियों और भूलोकवासियों ने अपने सिर पर हाथ रख लिये और
मौन श्रद्धांजलि अर्पित की । १०२०

अउन्दलै	निन्डि	लाद	वरक्कति	नाण्मै	तीरन्देन्
तुउन्दर्त्तैन्	इवज्जैय्	वैन्नो	तुउप्पेनो	वुयिरैच्	चील्लाय्
पिउन्दर्त्तैन्	पैरु	निन्ड	पैरुडियाऱ्	पैरु	तादै
इउन्दत	तिरुन्दु	ळैन्था	नैन्शैय्हे	त्तिळव	लैन्डान् 1021

इळवल्—छोटे भैया; अउम् तलै निन्डु इलात—धर्म पर स्थित न रहनेवाले;
अरक्कत्ताल्—राक्षस के हाथों; आण्मै तीरन्देन्—मेरा पौरुष परास्त हो गया;
पिउन्दर्त्तैन्—(दशरथ का) पुत्र पैदा हुआ; पैरुडि निन्डु पैरुडियाल्—मित्र-पुत्र को अपना

पुत्र मानने के जटायु के भाव के कारण; पैरु तातै-पिता के स्थान-प्राप्त पिता; इरुन्ततन्-मर गये; इरुन्तु उळैन् यान्-रह गया मैं; तुरुन्ततैन्-सभी त्यागकर; इति तवम् चैय्वेतो-आगे तपस्या कहेगा; उयिरै तुरुप्पैतो-(या) प्राण त्याग दूँ; अन् चैय्केन्-क्या कहे; अन्नान्-कहा (श्रीराम ने) । १०२१

तव श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि छोटे भैया ! उस अधर्मी रावण के हाथों मेरे पौरुष को हीनता आ गयी । दशरथ के पुत्र के रूप में पैदा हुआ । वे चल बसे । वाद जटायु ने मुझे अपना पुत्र माना । वे पिता भी चल बसे । मैं अब रह गया । सबको त्यागकर संन्यासी बनूँ और तपस्या करूँ ? या अपने प्राण ही त्याग दूँ ? क्या कहे ? । १०२१

अन्नुलु मिळैय कोवु मिर्वनै यिर्ञ्जि याण्डुम्
वैन्ऱियाय् विदियिन् इन्मै पळुदिल विळैन्द दन्ऱो
निन्ऱिनि निनैव दैन्ने नैरुक्कियव् वरक्कर् तम्मेक्
कौन्ऱपि नन्ऱो वैय्य कौडुन्दुयर्क् कुळिप्प दैन्ऱान् 1022

अन्नुलुम्-कहने पर; इळैय कोवुम्-लघुराज ने; इर्वनै इर्ञ्जि-भगवान से विनय के साथ; वैन्ऱियाय्-विजयी; याण्डुम्-सदा; वितियिन् तन्मै-विधि का विधान; पळुतु इल-अचूक; विळैन्तु अन्ऱो-सफल होता है न; इति निन्ऱु-अब खड़ा होकर; निनैव अन्ने-सोचने को क्या है; अ अरक्कर् तम्मे-उन निशाचरों को; नैरुक्कि-आक्रमण करके; कौन्ऱ पिन् अन्ऱो-मारने के बाद तो; वैय्य कौडु तुयर्-सन्तापी कठोर दुःख में; कुळिप्पतु-मग्न रहना है; अन्नान्-कहा । १०२२

जब श्रीराम ऐसा कहते हुए क्लान्त हुए, तब लघुराज लक्ष्मण ने प्रभु को नमस्कार करके निवेदन किया । विजयी वीर ! विधि का विधान अचूक है ! सदा सफल होता है न ? फिर चुप रहकर सोचने से क्या होगा ? उन राक्षसों को हमला करके नाश करने के बाद ही न दुःख में मग्न रहने की बारी आयेगी ! । १०२२

अन्दैयी दियम्बिर् इन्ने यैळिमैयै याहि येळैच्
चन्दवार् कुळलि नाळैत् तुरुन्दनै तणिदि येनुम्
उन्दैये युयिरुण् डोने युयिरुण्णु मूरु मिल्लाच्
चिन्दैये याहि निन्ऱु शैय्ववैन् शैय् है यैन्ऱान् 1023

अन्तै-मेरे पितृसम; ईतु इयम्बिर् अन्तै-यह कहा क्यों; यैळिमैयै आकि-वीन की तरह; एळै चन्त वार् कुळलितालै-कोमल और सुकेशिनी से; तुरुन्ततै-बिछुड़ गये; तणिति अन्तुम्-(उससे उत्पन्न क्रोध को) थाम लेंगे तो भी; उन्तैयै-आपके पिता (-समान जटायु) के; उयिर् उण्टोतै-प्राण हरनेवाले को; उयिर् उण्णुम् ऊरुम् इलला-मारने के साहस से हीन; चिन्तैयै आकि निन्ऱु-मन के होकर; चैय्वतु अन् चैय्कै-जो करेंगे, वह क्या काम है; अन्नान्-कहा । १०२३

उन्होंने आगे यह भी कहा । मेरे पिता (-से भाई) ! आप ऐसा

हीन वचन क्यों करते हैं ? हीन-दीन बनकर आपने अबला सुकेशिनी सीताजी से वियोग पाया है ! उसका दुःख शायद आप सह भी लें तो भी अपने पिता (सम) जटायु के घातक रावण को मारने के प्रयास से विरत मन को लेकर आप क्या करेंगे ? । १०२३

ॐ अव्वळि यिळवल् कूड वरिवनु मयर्वु नीड्णि
इव्वळि यिनैय वेंण्णि नेळैमैप् पाल देन्ता
वैव्वळि पौळियुड् गण्णीर् विलक्किनन् विळिन्द तादै
शैव्वळि युरिमै यावुन् दिरुत्तुवम् जिळ्व वेंन्डान् 1024

इळवल्-कनिष्ठ के; अ वळि कूड-वैसा कहने पर; अरिवनुम्-सर्वज्ञ भी; इ वळि-अब; इनैय वेंण्णि-इस तरह सोचता रहूँ तो; एळैमै पालतु-(बुद्धि-) हीनता होगी; अन्ता-विचारकर; अयर्वु नीड्कि-थकावट त्यागकर; वम् वळि-क्लेश के कारण; पौळियुम् कण्णीर्-बहनेवाले आँसू को; विलक्किन्-रोक लिया; जिळ्व-छोटे भैया; विळिन्त तातै-मृत पिता का; उरिमै यावुम्-कर्तव्य सब दाह-कर्म; चैम् वळि-उचित रीति से; तिरुत्तुवम्-पूर्ण रूप से करेंगे; अन्डान्-कहा । १०२४

जब छोटे भाई ने यह बात कही, तो सर्वज्ञ श्रीराम ने यह सोचा । हाँ ! अब इस भाँति सोचता रहना बुद्धिहीनता होगा । इसलिए वे सँभले । दुःखदायी घटनाओं के कारण जो आँसू आ रहे थे, उनको भी उन्होंने रोक लिया । फिर भाई से कहा कि छोटे भैया ! पिता का दाह-कर्म यथाविधि सुसम्पन्न करें । १०२४

इन्दन् माह वेण्डुड् गारहि लीट्टत् तोडुम्
शन्दनड् गुवित्तु वेण्डु तरुपैयुन् दिरुत्तिप् पूवुम्
शिन्दन् नरणि तन्नाड् तीक्कडैन् दियर्इत् तैण्णीर्
तन्दन् इदै तन्नैत् तडक्कैयि तैडुत्तुच् चार्वान् 1025

इन्दन् आक वेण्डुम्-ईधन बनने योग्य; कार् अकिल् ईट्टत्तु ओटुम्-काले अगर्ह के काष्ठों की राशि के साथ; चन्दनम् कुवित्तु-चन्दन-काष्ठ सजाकर; वेण्डु तरुपैयुम्-आवश्यक कुश; तिरुत्ति-बना लेकर; पूवुम् चिन्तितन्-फूल भी बिछाकर; अरणि तन्नाल्-अरणी से; ती कटैन्तु इयर्इ-मथकर अग्नि उत्पन्न करके; तैळ् नीर् तन्दन्-स्वच्छ जल से स्नान कराके; तातै तन्नै-पिता के शरीर को; तड कैयाल् अटुत्तु-विशाल हाथों से उठा लेकर; चार्वान्-(चिता के पास) आये । १०२५

ईधन के रूप में काली अगर्ह की लकड़ियाँ और चन्दन की लकड़ियाँ रखकर चिता बनायी गयी । दर्भ बिछाये गये । फूल भी छिड़काये गये । अरणि मथकर आग जलायी गयी । फिर स्वच्छ जल से जटायु के शरीर को नहलाया गया । श्रीराम जटायु को अपने हाथों से उठा ले गये । १०२५

एन्दिन निरुहै तन्ता लेइरिन नीमन् दन्मेल्
 शान्दौडु मलरु नीरुज् जौरिन्दन्नन् इलैयिर् चारक्
 कान्देरि कजल मूट्टिक् कडन्मुर् कडवा वण्णम्
 नेरन्दन निरम्बु नन्नुन् मन्दिर नैरियिन् वल्लान् 1026

निरम्बु नल् नूल्-समस्त श्रेष्ठ शास्त्रों में; मन्दिर नैरियिल्-कथित मन्त्रों के प्रयोग में; वल्लान्-समर्थ श्रीराम ने; इरु कं तन्ताल्-अपने दोनों हाथों में; एन्तिन्-धारण करके; ईमम् तन् मेल् एरिन्-चिता पर चढ़ाया; चान्तु ओट्टु मलरु नीरुम्-चन्दन के साथ फूल और जल; जौरिन्दन्नन्-छिड़के; तलैयिल् चार-सिरहाने पर; कान्तु अरि-जलती आग को; कजल मूट्टि-खूब जले, ऐसा लगाकर; कडन् मुर्-कर्म-क्रम; कडवा वण्णम्-न छूटे, इस प्रकार; नेरन्दन-संस्कार किये । १०२६

श्रीराम स्वयं समस्त शास्त्रज्ञ थे । उन्होंने अपने दोनों हाथों में जटायु को धारणकर चिता पर रखा । चन्दन, फूल और जल छिड़के । सिरहाने में आग लगायी । उन्होंने सारा पितृसंस्कार यथाविधि सम्पन्न किया । १०२६

तळित्तन्न दनैय मेनि तामरै कळुमु शैन्देन्
 तुळित्तन्न वनैय वैनत्तु तुळिशोर् वैळक् कण्णन्
 कुळित्तन्नन् कान याइरिर् कुळित्तपिन् कौण्ड नत्तीर्
 अळित्तन्न नरक्कड् चैर् शोइत्ता नवलन् दीर्प्पान् 1027

तळित्तन्न अतैय मेनि-मेघ-सम शरीर; तामरै कळुमु-कमल पर शोभित; चैम् तेन्-लाल शहद; तुळित्तन्न अतैय अन्न-की बूंदें पड़ी हों, ऐसा; तुळि चैर्-अश्रुकों से युक्त; वैळ कण्णन्-प्रवाहमय आँखों के श्रीराम; कान याइरि-जंगली नदी में; कुळित्तन्न-नहाये; कुळित्त पिन्-नहाने के वाद; अरक्कन् चैर् चोइत्तान्-राक्षस द्वारा हारने से उत्पन्न क्रोध से आक्रान्त जटायु का; अवलम् तीर्प्पान्-दुःख दूर करने के लिए; कौण्ड-(जल) ले आकर; नल् नोर्-श्रेष्ठ उदक-दान; अळित्तन्न-किया । १०२७

मेघवर्ण श्रीराम की कमल-सी आँखों से शहद की बूंदों के समान अश्रुजल प्रवहित हो रहा था । वे जाकर जंगली नदी में नहाये । जटायु के मन में रावण के हाथों हारने पर क्रोध रहा था । उसको शान्त करने के हेतु श्रीराम ने पवित्र जल ले आकर उदकक्रिया की । १०२७

मोट्टिनि युरैप्प दैन्ने विरिज्जने मुदल मेल्होळ्
 काट्टिय वुयिर्ह लैल्ला मरुन्दित्त कळित्त पोलाम्
 पूट्टिय कैह लालप् पुळित्तुक् करशैक् कौळ्हेन्
 ऊट्टिय नन्नी रैय नुण्डनी रौत्त दन्ने 1028

पूट्टिय कंकळाल्-(अंजलि मुद्रा में) बने हाथों से; अ पुळित्तुक् अरचै-उस खगराज को; कौळ्कैन्-ग्रहण कीजिए, कहकर; ऊट्टिय नल् नोर्-जो उदक दान

किया गया, वह पवित्र जल; ऐयन् उण्ट नीर् औत्ततु-भगवान श्रीराम के पीत जल के समान हो गया; विरिञ्चते मुतल-ब्रह्मा आदि; मेल् कीळ् काट्टिय-ऊपर और नीचे के भुवनों में रहनेवाले; उयिर्कळ् अल्लाम्-सभी जीवों ने; अरुन्तित्त-पीकर; कळित्त-आनन्दानुभव किया; मोट्टु-फिर; इति उरैप्पतु अन्ते-कहना क्या है । १०२८

जब उन्होंने अपने अंजलि-सम्पुट से जटायु को जलदान किया, तब मानो वह उनके ही उदर में पहुँच गया । उसके फलस्वरूप ब्रह्मा से लेकर ऊपर और नीचे के सभी लोकों के जीवों ने जल का अशन कर आनन्दानुभव किया ! फिर कहने को क्या है ? । १०२८

पल्वहैत्	तुडैयिल्	वेदप्	पलिककडन्	पलवु	मुड्डि
विल्वहैक्	कुमर	निन्ऱ	वेलैयिन्	वेलै	शार्न्दान्
तौल्वहैक्	कुलत्तिन्	वन्दान्	रुन्बत्ताऱ्	पुनलुन्	दोय्न्दु
शौल्वहैक्	कुरिय	वैल्लाऱ्	जैय्हुवा	नैन्	वैय्योन् 1029

पल् वकैयिल्-(शास्त्र-विहित) विविध प्रकार से; वेत-वेदोक्त विधि के अनुसार; पलि कटन् पलवुम्-बलि आदि अनेक दान; मुड्डि-पूरा करके; विल् वकै कुमरन्-धनुर्धर कुमार; निन्ऱ वेलैयिन्-जब रहे, तब; वैय्योन्-सूर्य; तौल् वकै कुलत्तिन् वन्तान्-प्राचीन (काश्यप-)कुल में आये; तुन्पत्ताल्-(जटायु की मृत्यु से) उत्पन्न दुःख से; पुत्तलुम् तोयन्तु-जल में स्नान करके; चैल् वकैक्कु उरिय-गम्य श्रेष्ठ गति में पहुँचाने योग्य; अल्लाम्-सभी (तर्पण) संस्कार; चैय्कुवान् अन्त-मानो स्वयं करेंगे, ऐसा; वेलै चार्न्तान्-(पश्चिमी) सागर में मग्न हुए । १०२९

धनुर्धर श्रीराम अनेक रूप से शास्त्रों में विहित वेदसम्मत बलिदान आदि संस्कार पूरा किया । जब वे उनसे निवृत्त हुए, तब सूर्य भी पश्चिमी सागर में डूब गये । शायद वे भी प्राचीन काश्यपकुल में आये जटायु को उद्गति में पहुँचाने के लिए पितृकर्म करने के हेतु गये । सूर्य जटायु के ज्ञाति थे । १०२९

10. अयोमुहिप् पडलम् (अयोमुखी पटल)

अन्दिवन्	दणुहुम्	वेलै	यव्वळि	यवरु	नीङ्गिच्
चिन्दुरच्	चैन्तिन्	ताण्डोर्	मैवरैच्	चेक्कै	कौण्डार्
इन्दिरऱ्	कडङ्गल्	शैल्ला	विराक्कद	रैळुन्द	दैन्त
वैन्दुयर्क्	कूऱ्ऱ	मान	विरियिरुळ्	वोङ्गिऱ्	इन्ऱे 1030

अन्ति वन्तु अणुकुम् वेलै-जब सन्ध्यावेला आयी, तब; अवरुम्-वे भी; अ वळि नीङ्कि-वहाँ से चलकर; आण्डु-उस वन में; चिन्दुर चैन्तित्तु-लाल शिखरों से युक्त; ओर् मै वरै-एक काले पर्वत पर; चेक्कै कौण्डार्-ठहरे; इन्दिरऱ्कु अटङ्कल् चैल्ला-इन्द्र के वश में न आनेवाले; इराक्कत् अळुन्ततु अन्त-राक्षस

उठे हों, ऐसा; वैम् तुयस्ककु-असह्य (विरह-)वेदना का; ऊरुम् आत्त-वलदायक; विरि इरुळ्-विस्तृत अन्धकार; वीड्किरुङ्-घना हो आया । १०३०

शाम आ गयी । श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ से चलकर एक अरुण-शिखर काले पर्वत पर जाकर ठहरे । तब अन्धकार, देवेन्द्र का वश तोड़कर चले आनेवाले राक्षसों के समूह के समान घना फैला । १०३०

तेतुह	वरुवि	शिनदित्	तैरुमर	लुरुव	पोलक्
कात्तमु	मलैयु	मैल्लाड्	गण्णिनी	रुहुक्कुड्	गड्गुल्
मानमुञ्	जिनमुन्	दादै	मरणमु	ममैन्द	शिनदै
जातमुन्	दुयर्न्	दम्मुण्	मलैन्देन	नलिन्द	दन्ऱे 1031

कात्तमुम् मलैयुम् अल्लाम्-वन, पर्वत, सभी; तैरुमरल् उडुव पोल-दुःखी होते हों जैसे; उकु तेन्-जो चूते उस शहद (कणों)को; अरुवि-(और) सरिताओं को; चिन्ति-बहाकर; कण्णिन् नीर् उकुक्कुम्-अश्रुजल बहानेवाला; कड्कुल-अन्धकार; मात्तमुम्-स्वाभिमान; चित्तमुम्-और क्रोध; तातै मरणमुम्-पिता (-सम जटायु का) मरण-दुःख; अमैन्त विन्तै-इनसे भरे (श्रीराम और लक्ष्मण के) मन में; जातमुम् तुयस्-ज्ञान और दुःख; तम्मुळ् मलैन्तु अत्त-आपस में टकराते हों, जैसे; नलिन्ततु- (अन्धकार ने) बढ़ती पायी । १०३१

श्रीराम और लक्ष्मण की व्यथा देखकर मानो वन और पर्वत दुःखी हुए । वन शहद रूपी आँसू वरसा रहे थे और पर्वत सरिताओं के रूप में अश्रु की धारा बहा रहे थे । अन्धकार ऐसा आक्रान्त करता हुआ बढ़ा, जैसा स्वाभिमान, क्रोध और पितृ-मरण-दुःख से भरे श्रीराम और लक्ष्मण के मन में ज्ञान और दुःख दोनों में परस्पर टकराहट हुई थी और दुःख प्रबल हो आया था । १०३१

मैय्युड	वुणर्वु	शैल्ला	वरिविने	वितैयि	नक्कुम्
पौय्युरु	पिरुवि	पोलप्	पोक्करुम्	वीङ्गु	कड्गुल्
नैय्युरु	नैरुप्पित्	वीङ्गि	निमिर्तर	वुयिर्प्पु	नीळक्
कैयुड	वुरुहिन्	राराड्	काणलाड्	गरैयिड्	उन्ऱे 1032

मैय् उणर्वु उडु चैल्ला-सुदृढ़ आत्मज्ञान-रहित; अरिवितै-बुद्धि को; वितैयित् ऊक्कुम्-कर्मफलानुसार चलानेवाले; पौय् उडु पिरुवि पोल-अनित्य जन्म की तरह; पोक्कु अरुम्-अनिवार्य; पौङ्कु कड्कुल-वर्धनशील अन्धकार; नैय् उडु नैरुप्पित् वीड्कि-घृत-लगी अग्नि के समान बढ़कर; निमिर् तर-फैला तब; उयिर्प्पु नीळ-लम्बी साँस छोड़कर; कैयुडवु-निष्क्रिय; उरुकिन्नराल्-बने रहे तब; काणलाम् करैयिड्-अदृश्य किनारा वाला हो गया । १०३२

सुदृढ़ आत्मज्ञान-रहित बुद्धि को जैसे अनित्य जन्म कर्मफल के रास्ते में हठात् चलाता है, वैसे वह दुर्दम वर्धनशील निशा घृतपीत अग्नि के

समान बढ़ती चली और निःश्वास छोड़ते हुए जो दुःखी हो रहे थे उन दोनों के लिए उसका तट (अन्त) अदृश्य हो रहा । १०३२

यामदु	तैरिद	रेरुडा	मिन्नुयिर्च्	चनहि	यैन्नुम्
कामरु	तिरुवै	नीत्तो	मुहमदि	काण्गि	लादो
तेमरु	तैरियल्	वीरन्	कण्णनत्	तैरिन्द	शैय्य
तामरै	कड्गुर्	पोदुड्	गुविन्दिल	तन्मै	यैन्तो 1033

ते मरु-दिव्य गन्ध वाली; तैरियल् वीरन्-मालाधारी वीर; कण् अन्त तैरिन्त-के नेत्र के समान विद्यमान; शैय्य तामरै-लाल कमलपुष्प; कड्कुल् पोतुम्-रात में भी; कुविन्दिल-वन्द नहीं हुए; इन् उयिर्-मधुर प्राण-सम; चत्तकि अन्तुम्-जानकी नाम की; कामरु तिरुवै-अपनी सुन्दर श्री को; नीत्तो-त्यागकर; मुक मति-मुख-चन्द्र; काण्किलातो-न देखकर; अन्तो-और किस कारण; याम् अतु-हम वह; तैरितल् तेरुडाम्-जान नहीं सकते । १०३३

दिव्यगन्धपूर्ण मालाधारी श्रीराम के नेत्रों के समान जो लाल कमल-पुष्प रहे, वे उन्मीलित नहीं हुए । रात का समय था तब भी वे बन्द नहीं हुए । क्या कारण था ? उनकी श्री उनसे अलग हो गयी, इसलिए ? या उनका मुख चन्द्र नहीं दिखाई दिया, इसलिए ? या कोई अन्य कारण था ? हमें विदित नहीं होता ! । १०३३

पैण्णियर्	रीब	मन्न	पेरैळि	लाट्टि	माट्टु
नण्णिय	पिरिवु	शैय्द	नवैयिना	रवर्हळ्	शिन्दै
अण्णिय	दडिद	रेरुडा	मिमैप्पिल	विराम	तैन्नुम्
पुण्णियन्	कण्णुम्	वन्नुडोट्	टम्बिहण्	पोन्ऱु	वन्ऱे 1034

पैण् इयल्-स्त्री जाती की; तीपम् अन्त-दीप के समान; पेरै अल्लिलाट्टि माट्टु-अत्यन्त सुन्दरी सीता के प्रति; नण्णिय-किया गया; पिरिवु-वियोग; शैय्-जिन्होंने करवाया; नवैयिन्नार् अवर्कळ्-उन पापियों ने; चिन्तै अण्णियतु-मन में (क्या) सोचा, वह; अडितल् तेरुडाम्-जान नहीं पाते हम; इरामन्-श्रीराम; अन्तुम् पुण्णियन् कण्णुम्-पुण्यपुरुष की आँखें; वन् तोळ्-बली भुजाओं के; तम्पि कण् पोन्ऱुतु-छोटे भाई की आँखों की-सी (हालत में) रहें । १०३४

पापी राक्षसों ने स्त्री-स्वरूप दीप-सी अत्यन्त सुन्दरी सीता के प्रति श्रीराम-वियोग का बहुत बड़ा अपराध किया था । वे लोग क्या सोचते रहे ? यह जानने का सामर्थ्य हममें नहीं है । पर पुण्यपुरुष श्रीराम की आँखें और वीरबाहु लक्ष्मण की आँखें —ये निर्निमेष रहीं । १०३४

वण्डुळर्	कोदैच्	चोदै	वाण्मुहम्	बीलिय	वानिल्
कण्डर्	तैन्ऱु	वीरर्	काण्डीह	कादल्	काट्टत्

तण्डमिळ्त् तैन्ऱु लैन्नुङ् गोळरात् तवळुञ् जारल्
विण्डलम् विळङ्गुञ् जैव्वि वैण्मदि विरिन्द दन्ऱे 1035

वण्टु उळर्-भ्रमर जिसको कुरेदते हैं; कोतै चीतै-वैसी केश वाली सीता का; वाळ् मुकम्-प्रकाशमय मुख; वात्तिल् पौलिय-आकाश में शोभा; कण्ट्तैन् अँन्ऱु-मैंने देखा, ऐसा; वीरङ्कु-श्रीरघुवीर को; आण्टु-तव; ओरु कातल् काट्ट-एक (मोहक भ्रम) पैदा करते हुए; तण् तमिळ् तैन्ऱुल् अँन्नुम्-शीतल मधुर मलयपवन रूपी; कोळ् अरा-भयंकर सर्प; तवळुम् चारल्-जहाँ मन्द-मन्द चलता था, उस पर्वत तल में; विण् तलम् विळङ्कुम्-आकाश में शोभायमान; चैव्वि-आकर्षक; वैण् मति-श्वेत चन्द्रमा; विरिन्ततु-चाँदनी फैलाता हुआ निकला । १०३५

तव चन्द्र उदित हो आया, मानो वह वीर रघुवर श्रीराम के मन में यह मोहक प्यारा भ्रम पैदा करना चाहता था कि मैंने आकाश में सुकेशिनी सीता का मुख देखा था, जिसके केश पर भ्रमर बैठे कुरेदते हैं । जिस पर्वत के ऊपर यह चन्द्र दिखाई दिया, उस पर्वत-तल में शीतल मधुर (तमिळ का अर्थ मधुर है) मलयपवन भी मन्द-मन्द वहा । पर वह श्रीराम के लिए भयंकर सर्प के समान रेंगता लगा ! । १०३५

कळियुडै यनङ्गक् कळ्वन् करन्नुऱै कङ्गुऱ् कालम्
वैळिपडुत् तुलह मैल्लाम् विळक्किय निलविन् वैळ्ळम्
नळियिरुट् पिळ्म्वैन् ऱीण्डु नञ्जोडु कलन्द नाहत्
तुळैयैयिऱ् ऊऱ्ऱु लुऱ्ऱु कनलैन्ऱच् चुट्ट दन्ऱे 1036

कळि उटै-मत्त; अतङ्ग कळ्वन्-चोर अनंग; करन्तु उरै-जब छिपा रहता है; कङ्कुल् कालम्-उस रात के समय में; उलक्कम् अँल्लाम्-सारे लोक को; वैळिपडुत्तु विळक्किय-श्वेत प्रकट करनेवाला; निलविन् वैळ्ळम्-चाँदनी का प्रवाह; ईण्टु-अन्न; नत्ति इवळ् पिळ्म्वु अँन्ऱु-अधिक अन्धकार के पुंज के समान मान्य; नञ्चु ओट्टु कलन्त-विष से मिला; नाक-सर्प के; तुळै यैयिऱु-छिद्रसहित दाँत से; ऊऱ्ऱुल् उऱ्ऱु-रिसनेवाले; कतल् अँन्- (विप को) आग के समान; चुट्टु-जलाने लगा । १०३६

उस रात को, जिसमें मत्त चोर अनंग छिपा फिरता था, चन्द्र सारे जग को उज्ज्वल करता हुआ उदित हुआ । पर वह उस विषाग्नि के समान जलाने लगा, जो अन्धकारपुंज के समान काला और विपैले नाग के दाँत के छिद्र से बाहर निकला था । १०३६

इडम्बडु मानन् दुत्त्व मिरण्डुम् वन्दुऱ्ऱु पोळ्दिल्
विडम्बरन् दनैय दाय वैण्णिला वैदुप्प वीरन्
पडम्बरन् दनैय वल्लुऱ् पाल्परन् दनैय तीञ्जोल्
तडम्बड् कण्णि नाडन् उनिमैय नित्तैय लुऱ्ऱान् 1037

इटम् पटु-विशाल; मातम्-अपमान; तुत्पम्-दुःख; इरण्टम्-दोनों; वन्तु उर्ऌ पोळ्तिन्-जब प्राप्त हुए, तब; विटम् परन्तु अतैय-विष फैला जैसे; वैळ निला वैतुप्प-श्वेत चन्द्रमा ने तप्त किया तो; वीरन्-श्रीरघुवीर; पटम् परन्तु अतैय-(सर्प-) फन खुला (जो है) वैसा; अलकुल-वरांग; पाल् परन्तु अतैय-दूध-भरा हो वैसी; तीम् चील्-मधुर बोली; तटम् पटु कण्णिन्नाळ्-विशाल आँखें, इनसे युक्त सीताजी का; तत्तिमैयै-एकाकीपन को; निनैयल् उर्ऌान्-सोचने लगे । १०३७

श्रीराम को अपमान और दुःख का अनुभव सताने लगा । इसलिए श्वेत चन्द्रमा, शरीर में विष व्याप्त हो ऐसा उन्हें तपाने लगा । तब वे श्रीरघुवीर सर्पफन के समान विशाल वरांग, दुग्धसम मधुर बोली और विशाल आँखें —इनसे शोभित सीताजी के एकाकीपन के बारे में सोचने लगे । १०३७

मडित्त	वायन्	वयङ्गु	मुयिर्प्पित्तन्
तुडित्तु	वीङ्गि	यीडुङ्गुरु	तोळित्तन्
पौडित्त	तण्डळिर्प्	पूवौडु	माल्करि
ओडित्त	कौम्बनै	याडिर्त्त	तुन्नुवान् 1038

मडित्त वायन्-ओंठ चबाते हुए; वयङ्कुम् उयिर्प्पित्तन्-ठण्डी आह भरते हुए; तुडित्तु वीङ्कि-तड़पकर, फूलकर; ओडुङ्कुम् तोळित्तन्-फिर शिथिल पड़नेवाले कन्धों से युक्त श्रीराम; पौडित्त तण् तळिर्-तभी प्रकट हुए शीतल पल्लवों; पूवौडुम्-और फूलों के साथ; माल् करि-बड़े हाथी द्वारा; ओडित्त-तोड़ी गयी; कौम्पु अतैयाळ्-पुष्पशाखा-तुल्य; तिर्त्तु- (सीताजी) के सम्बन्ध में; उन्नुवान्-सोचने लगे । १०३८

वे ओंठ चबाते हुए दीर्घ निःश्वास छोड़ने लगे । उनके कन्धे फूल उठते फिर पतले हो जाते । वे उन सीताजी के सम्बन्ध में सोचने लगे, जो सद्यप्रकटित कोमल पल्लवों और फूलों के साथ किसी गज द्वारा तोड़ी गयी पुष्पशाखा के समान थीं । १०३८

वाङ्गु	विल्लन्	वरुम्बरु	मैन्ऱिर्
पाङ्गु	नीर्नेरि	पार्त्तन्	ळोवैनुम्
वीङ्गु	वेलै	विरितिरै	यामैन्
ओङ्गि	योङ्गि	यीडुङ्गु	मुयिर्प्पित्तान् 1039

वीङ्कु वेलै-उमगते हुए समुद्र की; विरि तिरै आम् अँन-बढ़ती हुई तरंगों के समान; ओङ्कि ओङ्कि ओडुङ्कुम् उयिर्प्पित्तान्-फूलकर थमनेवाली साँसों के साथ; वाङ्कु विल्लन्-झुके धनुष के साथ; वरुम् वरुम्-आयेंगे, आयेंगे; अँनुङ्-सोचकर; इरु पाङ्कुम्-दोनों ओर; नीळ नैरि पार्त्तन्ळो-लम्बी बाट जोहती रही क्या; अँनुम्-श्रीराम यह कहते । १०३९

श्रीराम की साँसें उमगते सागर की उठती लहरों के समान उठतीं

और गिरती । वे सोचते कि शायद सीता यह सोचकर कि झुके धनुष के साथ श्रीराम आ जायँगे, अवश्य आ जायँगे दोनों ओर लम्बा वाट जोह रही हों । १०३९

अँन्ति	नैन्दन	ळैन्वदु	शालुमो
मिन्ति	नैन्द	विलङ्गु	मँयिङ्गितान्
निन्ति	लैन्तु	नैरुकिय	पोदवळ्
अँन्ति	नैन्दन	ळोवैन्	वैण्णुमाल् 1040

मिन् नितैन्तु-विद्युत का स्मरण दिलानेवाले; विलङ्कुम् अँयिङ्गितान्-शोभायमान दाँत वाले; निल् निल् अँत्तु-खड़ा रह, खड़ा रह कहते हुए; नैरुङ्किय पोतु-(रावण) जब नियराया तब; अवळ्-(सीता) उसने; अँन् नितैन्तुतळो-क्या सोचा होगा; अँन्पतु चालुमो-यह समझना साध्य है क्या; अँन् नितैन्तुतळ् ओ-क्या सोचकर चिन्तित हुई; अँन् अँण्णुम्-ऐसा विचार करते (श्रीराम) । १०४०

विद्युत का स्मरण दिलानेवाले दाँतों से युक्त रावण, 'ठहर जा, खड़ी रह' कहता हुआ जब सीता के पास आया, तब सीताजी ने क्या सोचा होगा ? श्रीराम यह समझने का प्रयास करते । नहीं । यह अनुमान करना साध्य नहीं है ! बेचारी ! क्या ही सोचा होगा ? यह प्रश्न करते हुए श्रीराम दुःख का अनुभव करते । १०४०

नञ्जु	कालु	नहैन्डु	नाहत्तिन्
वञ्ज	वायिन्	मदियैन्	मट्कुवाळ्
वैञ्जि	नञ्जै	यरक्कर्त्तम्	वैम्मैयै
अञ्जि	नान्गोलैन्	उँयुङ्	मालैन्वान् 1041

नञ्जु कालुम्-विष-स्त्रावक; नकै नैटु नाहत्तिन्-दाँतों वाले (राहु नाम के) लम्बे सर्प के; वञ्ज वायिन्-भयंकर मुख में (ग्रस्त); मति अँन्-चन्द्र के समान; मट्कुवाळ्-क्षीण होनेवाली सीता; वैम् चित्तम् चैय्-भयंकर क्रोधकारी; अरक्कर्त्तम् वैम्मैयै-राक्षसों के क्रोध से; अञ्चितान् कौल्-श्रीराम डर गये शायद; अँन्तु ऐयुङ्म् आल्-ऐसा संशय करती होगी; अँन्पान्-ऐसा (श्रीराम) सोचते । १०४१

फिर सोचते— विष-स्त्रावक दाँतों के (राहु) सर्प के मुख में ग्रस्त चन्द्र के समान सीता क्षीण होती होगी । वह शायद ऐसा संशय करती है कि भयंकर क्रोधी राक्षसों की क्रूरता से श्रीराम भयभीत हो गये हैं । १०४१

पूण्ड	मानमुम्	बोक्करुङ्	गादलुम्
तूण्ड	निन्डिडै	तोमुरु	मारुयिर्
मीण्डु	मीण्डु	वैदुप्प	वैदुम्बिनान्
वेण्डु	मोवैन्क्	किन्नमुम्	विल्लैन्वान् 1042

पूण्ड मानमुम्-प्राप्त अपमान; पोक्कु अरुम् कातलुम्-और अचल (सीता-)

प्रेम (से); तूण्ट निन्ड-प्रेरित होकर; इटै-मध्य में; तोम् उरुम्-कष्ट उठानेवाले;
आर् उयिर्-अपने प्रिय प्राणों को; मीण्टुम् मीण्टुम्-पुनःपुनः; वैतुप्प-तापने से;
वैतुम्पित्तान्-संतप्त श्रीराम; इन्तमुम्-अब भी; अंतक्कु-मुझे; विल् वेण्टुमो-धनु
चाहिए क्या; अन्पान्-कहते । १०४२

उनके प्राण टिके रहे तो उसका कारण अपमान का भाव और अचल
(सीता-) प्रेम की प्रेरणा था । तो भी वे प्राण पुनःपुनः तप्त हो रहे
थे । इसलिए वे खिन्नमन होकर यह अपने से पूछते कि क्या मुझे अब
भी एक धनु रखना है ? । १०४२

विल्लै	नोक्कि	नहुमिह	वीङ्गुतोळ्
कल्लै	नोक्कि	नहुङ्गडैक्	काल्वरुम्
शौल्लै	नोक्कित्	तुण्क्कुशन्	दौन्मरै
अल्लै	नोक्किनर्	यावरु	नोक्कुवान् 1043

तौल् मरै अल्लै-नोक्कितर्-प्राचीन वेदों के पारंगत; यावरुम्-सभी (ज्ञानियों)
द्वारा; नोक्कुवान्-बन्ध; विल्लै नोक्कि नकुम्-धनु को देखकर हँसते; मिक वीङ्कुम्-
अति पुष्ट; तौळ कल्लै नोक्कि-कन्धों के पर्वतों को देखकर; नकुम्-हँसते; कटै
काल् वरुम्-अन्त में मिलनेवाला; शौल्लै नोक्कि-निन्दा का कथन सोचकर; तुण्क्कु
अन्तुम्-सिहर उठते । १०४३

श्रीराम सनातन वेदों के पारंगत ज्ञानियों से भी अन्वेषित परमपुरुष
थे । वे अपने धनु को देख (उसकी व्यर्थता पर) हँसते । अपने उन्नत
पर्वत-सम कन्धों को देखकर हँसते । आखिर जो अपमान होगा, उसकी
कल्पना करके सिहर उठते । १०४३

कूटिर् वाडैवैङ् गूड्डित्तै नोक्कित्तान्, वेद वेळ्वि विदिमुडै मेविय
शौदै यैन्वयिर् उीरुन्दन लोवैनुम्, पोद हम्मेत्तप् पौम्मे नुयिर्प्पित्तान् 1044

कूतिर् वाडै वैम् कूड्डित्तै-शरद की उदीची हवा रूपी निर्मम यम को; नोक्कित्तान्-
देखकर; पोतकम् अंत-गज के समान; पौम् अन् उयिर्प्पित्तान्-'बम्ह' शब्द के
साथ निःश्वास छोड़ते हुए; वेत वेळ्वि विति मुडै-वेदोक्त होम आदि करके; मेविय-
विवाहित; चीतै-सीता; अन् वयिन्-मुझसे; तीरुन्तत्तलो-(सदा के लिए) छूट
गई क्या; अन्तुम्-कहते । १०४४

शरदकालीन ठण्डी उदीची के समान बहनेवाली वायु रूपी यम को
देखकर गज के समान श्रीराम ने 'बम्ह' शब्द के साथ निःश्वास छोड़ा ।
फिर सोचा कि क्या वेदविहित होम आदि करके जिस सीता को मैंने ब्याहा
था, वह मुझे छोड़कर सदा के लिए चली (मर) गयी ? । १०४४

निन्ड पल्लुयिर् कात्तड्कु नेरुन्दयान्, अन्डुणैक्कुल मङ्गैया रेन्दिल्लै
तन्डु यर्क्कड उीर्क्कुज् जदिरिलेन्, नन्डु नन्डैन् वलियैन् नाणुमाल् 1045

निनू-राजा रहकर; पल् उयिर् कातुत्तु-नाना जीवों की रक्षा करने हेतु; नेरुत्त यात्-नियत मै; अत्तु तुण्-अपनी संगिनी; कुल मडक्-उच्च कुलीन; ओर एन्तिळ् तत्-एक रमणी को; तुयर् कटल् तीर्क्कुम्-दुःख-सागर से तारने की; चतिर् इलेत्-शक्ति नहीं रखता; अत्तु वलि ननू-मेरा वल बड़ा अच्छा है; ननू अत्त-अच्छा है, कहकर; नाणुम्-शरमाते । १०४५

मैं राजा बनने को हूँ और राजा का काम है अनेक जीवों की रक्षा करना । किन्तु मैं अपनी ही संगिनी को, उच्च कुलोद्भवा सुन्दरी स्त्री को दुःख-सागर से तारने में असमर्थ साबित हो गया । हाँ ! मेरी शक्ति का भी क्या कहना ? मेरा वल बड़ा अच्छा, अच्छा है ! यह कहते हुए श्रीराम लज्जा प्रकट करते । १०४५

शायुन् दम्बि तिरुत्तिय तण्डळिर्, तीयु मड्गवै तीय्दलुज् जैव्विरुन्
दायु मावि पुळुङ्ग वळुङ्गुमाल्, वायुम् नैज्जुम् बुलर मयङ्गुवान् 1046

वायुम् नैज्जुम्-मुख और गला; पुलर-सूख जाते; मयङ्कुवान्-वे बेहोश हो जाते; तम्पि तिरुत्तिय-अनुज के द्वारा अच्छी तरह सजाए गये; तण् तळिर्-शीतल पल्लवों पर; वायुम्-लेटते; अङ्कु अवै तीयुम्-वे तब झुलस जाते; तीय्दलुम्-झुलसते ही; चैम् इरुन्तु-सीधे बैठे; आयुम्-मन में तर्क करते; आवि पुळुङ्क-प्राणतप्त होकर; अळुङ्कुम्-जर्जर हो जाते । १०४६

श्रीराम का मुख सूख गया । गला सूख गया । लक्ष्मण ने शीतल पल्लवों को बिछाकर अच्छी शय्या बना दी थी । श्रीराम बेहोश-से होकर उस पर लेटते । पर पल्लवों के झुलस जाने से वे उठ बैठते । बैठे हुए मन में तर्क करते । प्राणों के सूखने से शिथिल पड़ जाते । १०४६

पिरिन्द	वेदुहौल्	पेरवि	मानङ्गौल्
तैरिन्द	दिल्लै	तिरुमलर्क्	कण्णिमै
पौरुन्द	वायिरड्	गड्पङ्गळ्	पोक्कुवान्
इरुन्दुड्	गण्डिलन्	कड्गुलि	त्तोऱो 1047

तिरु मलर् कण् इमै-सुन्दर कमल-सम आँख के पलकों के; पौरुन्त-लगने की उतनी देर में; आयिरम् कड्पङ्कळ् पोक्कुवान्-सहल कल्प जो मिटा सकते हैं; इरुन्तु-(वे) बैठे रहकर; कड्कुलिन् ईङ्-रात का अन्त; कण्डिलन्-देख नहीं पाये; पिरिन्त एतु कौल्-वियोग उसका कारण था क्या; पेर् अपिमात्तम् कौल्-गम्भीर प्रेम क्या; तैरिन्तु इल्लै-विदित नहीं हुआ । १०४७

वे श्रीराम स्वयं परमात्मा थे, जिनके पलकों के लगने की उतनी देर में अनेक कल्प बीत सकते थे । पर अब वे श्रीराम काले अँधेरे की रात का अन्त न होता समझ कष्ट उठा रहे हैं ! इसका क्या कारण है ? सीता-वियोग है या सीता का प्रेम ? विदित नहीं होता । १०४७

वैन्त्रि	विर्कै	यिळैयव	मेलैलाम्
औन्त्रु	पोल	बुलपपिल	नाट्कडाम्
निन्त्रु	काण्डियन्	रेनैडुड्	गड्गुडान्
इन्त्रु	नीळ्वदर	केदुवैन्	नैन्नुमाल् 1048

(लक्ष्मण से) वैन्त्रि विल् कं-विजयी धनुर्हस्त; इळैयव-छोटे भैया; मेलैलाम्-पहले सदा; औन्त्रु पोल-एक ही सम; उलपु इल नाट्कळ्-लम्बे दिनों में; निन्त्रु काण्टि अनूरे-(अनिद्र) रहकर देखते रहे न; इन्त्रु नैट्टुम् कड्कुल्-आज की यह लम्बी रात; नीळ्वदरु-इस तरह बढ़ती है, इसका; एतु अन्-हेतु क्या है; अन्नुम्-(श्रीराम) पूछते । १०४८

श्रीराम अपने दुःखोद्वेग में लक्ष्मण से पूछते कि छोटे भैया ! पहले समान रूप से सभी दिनों में तुम अनिद्र हो जागते रहे हो ! आज यह रात इतनी लम्बी बन रही है । इसका कारण क्या है ? । १०४८

नीण्ड	मालै	मदियिन्नै	नित्तलुम्
मीण्डु	मीण्डु	मैलिनन्दै	वैळ्हुवाय्
पूण्ड	पूणवळ्	वाण्मुहम्	बोदर
ईण्डु	शाल	विळङ्गिनै	यैन्नुमाल् 1049

मालै नीण्ट मत्तियिन्नै-सन्ध्या में ही पूर्ण बने चन्द्र को; नित्तलुम्-दिने-दिने; मीण्डुम् मीण्डुम्-पुनःपुनः; मैलिनन्दै वैळ्कुवाय्-(अपनी हीनता पर) घटते लजते थे; पूण्ड पूणवळ्-आभरणभूषिता सीता के; वाळ् मुक्कम्-उज्ज्वल मुख के; पोतर-कहीं चले जाने से; ईण्डु चाल विळङ्कितै-यहाँ अपना ठाठ दिखाते हो; अन्नुमाल्-कहते । १०४९

सन्ध्या में ही श्रीराम ने पूर्णचन्द्र को देखा । तो पूछ बैठे कि चाँद ! तुम दिनोंदिन सीताजी के मुख से तुलने की शक्ति न रखने के कारण लज्जित और क्षीण हुए जाते रहे ! अब आभरणभूषित सीताजी का उज्ज्वल मुख यहाँ नहीं रहता, क्या इसी कारण अपना ठाठ दिखा रहे हो ? । १०४९

नीणि लावि निशैनिडै तन्गुलत्, ताणि यन्त पळिवर वन्तदु
नाणि नाडु कडन्दत्त नाङ्गौलो, शेणु लान्दत्तित् तेरव नैन्नुमाल् 1050

चेण् उलाम्-उच्च आकाश में संचार करनेवाले; तत्ति तेर् अवन्-अनुपम (एक-चक्र) रथ के रथी सूर्य; नीळ् निलाविन्-विस्तृत चाँदनी-सम; इच्चै निरै-प्रशंसा से भरे; तन् कुलत्तु-अपने कुल पर; आणि अन्त पळिवर-कील के समान (गम्भीर गड़ा) अपयश आया, इसलिए; अन्ततु नाणि-उससे शरम खाकर; नाटु कटन्तत्तन् आम् कौलो-देश छोड़कर चला गया क्या; अन्नुम्-कहते । १०५०

यह सूर्य कहाँ गये ? आकाश में अप्रमेय एकचक्र-रथ में संचार करनेवाले सूर्य क्या यह सोचकर लज्जा के कारण इस देश से बाहर हो गये

कि हमारे कुल की विस्तृत चाँदनी-सम कीर्ति मिट गयी और उस पर कलंक लग गया है ? श्रीराम यह प्रश्न करते । १०५०

घुट्ट	कङ्गु	नैडिदैनच्	चोर्हिन्त्रान्
मुट्टि	ळन्द	नैडुमुडक्	कोनौडुम्
कट्टि	वाळरक्	कन्गदि	रोन्नेयुम्
इट्ट	तन्गौ	लिरुञ्जिर्	यैन्नुमाल् 1051

घुट्ट कङ्कुल- (श्रीराम को) जिसने जलाया, वह रात; नैडितु अँन-लम्बी है, सोचकर; चोर्हिन्त्रान्-मुरझाते है; वाळ् अरक्कन्-कठोर राक्षस ने; मुट्ट इळन्त-घुटनों से रहित; नैडु मुट कोन् ओटुम्-बड़े लँगड़े साथी अरुण के साथ; कतिरोत्तैयुम्-सूर्य को भी; कट्टि-बाँधकर; इरुम् चिर्-बड़ी कारा में; इट्टतन् कोल्-बन्द कर दिया क्या; अँन्नुम्-कहते । १०५१

यह रात लम्बी है और मुझे जलाती है ! ऐसा अनुभव करके श्रीराम बहुत वेदना से छटपटाते । वे अनुमान लगाते कि क्रूर राक्षस ने घुटनों से रहित लँगड़े अरुणदेव (सूर्य-सारथी) के साथ सूर्य को भी बाँधकर बड़ी और विकट कारा में बन्द रख दिया है ! । १०५१

तुडियि	नेरिडै	तोन्त्रल	ळामैनिल्
कडिय	कारिरुट्	कङ्गुलिन्	कङ्पम्बोय्
मुडियु	माहिन्	मुडियुमिम्	मूरिनीर्
नैडिय	नानिल्	मैन्त	निन्नैक्कुमाल् 1052

तुडियिन् नेर्-डमरू-समान; इट्टे-कमर वाली; तोन्त्रलळ् आम् अँतिल्-मुझसे न देखी जायगी; कडिय-घृणित; कार् इरुळ्-काले अन्धकार की; कङ्कुलिन्-रात रूपी; कङ्पम् पोय् मुट्टियुम् आकिल्-कल्प अन्त हो जायगा तो; इ मूरि नीर्-इस बलवान सागर से; नैडिय नाल् निलम्-(घिरी) विस्तृत चतुर्विधा भूमि भी; मुट्टियुम्-मिट जायगी; अँन्त निन्नैक्कुम्-यह विचार करते । १०५२

श्रीराम यह सोचते कि डमरू-सी कटि वाली मेरी सीता मेरे सामने प्रकट नहीं होगी और उसी स्थिति में काले अन्धकार की यह रात रूपी कल्प अन्त हो जायगा तो यह बलवान सागर से वलयित पृथ्वी भी मिट जायगी । १०५२

तिडत्ति त्तादन्न शैय्दवत् तोरु, ओरुत्तु जालत् तुयिर्तमे युण्डुळल्
मडत्ति तार्हळ् बलिन्दनर् वाळ्वरेल्, अडत्ति नालिन्ति यावदै तैन्नुमाल् 1053

तिडत्तु-शक्ति से; चैय् तवत्तोरु-कर्तव्य तप के तपस्वी; इत्तातन्न उरु-कष्ट पायें; ओरुत्तु-ऐसा उनको पीड़ित करके; जालत्तु उयिर् तमै उण्डु-लोकों के वासी जीवों को खाकर; उळल्-धूमते हैं (जो); मडत्तितार्कळ्-वे बली राक्षस;

बलिन्तत्तर् वाळ्वरेल्—(बंसे ही) अत्याचार करते जीते रहेंगे तो; इति अस्तुतिताल्
आवतु—अब धर्म से होनेवाला; अँन्—क्या; अँन्तुम्—कहते । १०५३

ये राक्षस अपने मनोबल के साथ कर्तव्य तपस्या में लीन रहनेवाले
तपस्वियों को कष्ट देते हैं और त्रस्त करते हैं । वे विश्व के सारे जीवों
को खाते फिरते हैं । वे इसी प्रकार आततायी बने जीवित रहेंगे तो धर्म
से क्या होनेवाला है ? —श्रीराम दुःख के साथ सोचते । १०५३

तेत्तिन् ईयवत् तिरुत्तैडु नाण्शिलैप्, पूनिन् ईय्युम् पौरुहणै वीरनुम्
मेत्तिन् ईय्य विमलत्तै नोक्कितान्, तानिन् ईय्य किलान्तडु मारुवान् 1054

तेत्तिन्—भ्रमरों की बनी; तैय्व तिरु नैट्टु नाण्—दिव्य सुन्दर लम्बी ज्या को;
चिलै—(इक्षु-) धनु में बाँधकर; पौरु कणै पू—संग्रामकारी पुष्प-शर; निन्ऱु ईय्युम्—
लगातार चलानेवाले; वीरनुम्—वीर मन्मथ ने भी; मेल् निन्ऱु—आकाश में स्थित
होकर; ईय्य—शर चलाते; विमलत्तै नोक्कितान्—विमलमूर्ति श्रीराम को निशान
बनाकर देखा; तान् निन्ऱु ईय्यकिलान्—खुद चला नहीं पाया; तट्टुमाडित्तान्—
डगमगाया । १०५४

मन्मथ भ्रमरों की ज्यासहित इक्षु-धनु में पुष्प-शर संधानकर काम-
समर करनेवाला है । उसने आकाश में स्थित होकर विमलमूर्ति श्रीराम
पर शर चलाने के विचार से निशाना लगाया । पर उसमें हिम्मत नहीं
रही । वह डगमगा गया । १०५४

उळ्ळन्द	योहत्	तौरुमुदल्	कोवत्ताल्
इळ्ळन्द	मेत्तियु	मैण्णि	यिरङ्गुवान्
कैळ्ळन्दु	णैक्कौरु	वन्मै	किडैक्कुमो
पळ्ळन्दु	यर्क्कुप्	परिवुरुम्	पान्मैयाल् 1055

उळ्ळन्त योक्तुतु—गम्भीर योगावस्था में (जो) रहे; औरु मुतल्—अद्वितीय आदि-
देव शिव के; कोपत्ताल्—क्रोध से; इळ्ळन्त मेत्तियुम्—अँण्णि—अपना गँवाया शरीर
स्मरण कर; इरङ्कुवान्—पछतानेवाले; पळ्ळम् तुयर्क्कु—पुराने कष्ट के लिए; परिवु
उळ्ळम् पान्मैयाल्—दुःख करते रहते समय; तुणैक्कु—सहायक बनने को; औरु कैळ्ळम्
वन्मै—(नया) एक प्रबल साहस; किडैक्कुमो—प्राप्त हो सकता है क्या । १०५५

गम्भीर योगरत आदिदेव शिवजी पर उसने एक बार शर चलाया
था । फलस्वरूप शिवजी के क्रोध से उसका शरीर जल गया । वह
उसका स्मरण करके दिनोंदिन दुःखी हो रहा था । ऐसे पुराने दुःख में
मग्न रहनेवाले उसको सहायक के रूप में साहस दिलानेवाली हिम्मत हो
सकती है क्या ? । १०५५

नील	मान	निउत्त	नित्तेन्दवै
शूल	माहत्	तौळैवरुम्	वेलैयिन्

मूल	मामलर्	मुन्नवन्	मुर्ळुम्
काल	मामैतक्	कङ्गुल्	कळिन्ददे 1056

नीलम् आत निरुत्तन्-नील; नितैन्तु-ऐसा सोचकर; अवै-उन विचारों के; चूलम् आक-शूल की तरह; तौळैवु उळ्म्-सालते; वेलैयिन्-समय; मूलम्-सृष्टिमूल; मा मलर् मुन्नवन्-उत्कृष्ट (नाभी-)कमल में जो प्रकट हुए थे, वे (ब्रह्मा); मुर्ळु उळ्म्-जब अन्त हो जाते हैं; कालम् आम् अँत-वह काल आ गया हो, ऐसा; कङ्कुल् कळिन्तु-रात बीती । १०५६

नील श्रीराम ऐसा सोच रहे थे और वे विचार उनको शूल के समान साल रहे थे । तब रात बीती और ऐसा लगा कि रात कल्पकाल तक रही हो और सृष्टि के मूल, श्रीविष्णु के नाभि-कमल-वासी ब्रह्मा का कल्प अभी पूरा हुआ हो । १०५६

वैळ्ळु जिलम्बुम् पाङ्कडलिन् विरुम्बुन् दुयिलै वैरुत्तळियुम्
कळ्ळु जिलम्बुम् बूङ्गोदै कर्पिन् कडलिर् पडिवार्कुप्
पुळ्ळु जिलम्बुम् बौळिल्शिलम्बुम् पुत्तलु जिलम्बुम् पुत्तैहोल
उळ्ळु जिलम्बुम् जिलम्बावे लुयिरुण्डाहुम् व्हैयुण्डो 1057

वैळ्ळुम् चिलम्पुम् पाल् कडलिन्-अधिक गर्जनशील क्षीरसागर में; विरुम्पुम् तुयिलै-घ्यारी निद्रा को; वैरुत्तु-त्यागकर; अळियुम् कळ्ळुम्-भ्रमरों और मधु से; चिलम्पुम्-शब्दायमान; पुम् कोतै-सुन्दर माला से अलंकृत; कर्पिन् कडलिन्-पतिव्रता सीता के प्रेम के सागर में; पडिवार्कु-मग्न रहनेवाले को (समझाते हुए); पुळ्ळुम् चिलम्पुम्-पक्षी बोले; बौळिल् चिलम्पुम्-उद्यानों ने शोर किया; पुत्तलुम् चिलम्पुम्-(जलाशय का) जल शब्दित हुआ; पुत्तै कोल-(उनसे नया उत्साह तथा) नई रीतक पाकर; उळ्ळुम् चिलम्पुम्-(श्रीराम का) मन भी बोल उठा; चिलम्पा वेल्-(ये सब) शब्द नहीं करते तो; उयिर् उण्टाकुम् वकै उण्टो-(मूर्च्छा में रही) जान के लौट आने का मार्ग हो सकता है क्या । १०५७

सवेरा हो गया । शब्दायमान क्षीरसागर में शयन छोड़कर भ्रमर और शहद से शब्दित केश वाली सीताजी के पातिव्रत्य रूपी शील-सागर में जो मग्न रहते थे, उन श्रीराम को पक्षीगण, उपवन, जल आदि शब्द करके सवेरा होने का समाचार सुनाने लगे । तब श्रीराम के मन में एक उत्साह भर गया, मानो मन भी बोलने लगा । अगर ये सब शब्द नहीं होते तो श्रीराम के प्राणों के पुनः लौट आने का मार्ग कैसे होता ? । १०५७

मयिलुम् पेंडैयु मुडन्त्रिरिय मानुङ्गु गलैयु मरुविवरप्
पयिलुम् बिडियुङ्गु गडहळिरुम् वरुव तिरिव पार्क्किन्डान्
कुयिलुङ्गु गरुम्बुज् जैळुन्दैनुम् कुळलुम् याळुम् कौळुम्बाहुम्
अयिरु ममुडुज् जुवैतीरुत्त मौळियैप् पिरिन्दा लळियानो 1058

मयिलुम् पेंडैयुम्-मोर और मोरनी; उटन् तिरिय-साथ-साथ घूमते हैं; मानुम्

कलैयुम्-हरिण और हरिणी; मरुवि वर-पास-पास आते हैं; पयिलुम् पिटियुम्-मिले रहनेवाले हथिनियाँ और; कटकरियुम्-मत्तगज; वरुव तिरिव-आते, घूमते हैं; पार्क्किन्ऱान्-(उनको) देखते हैं; कुयिलुम्-कोयल; करुम्पुम्-ईख; चैल्लुम् तेनुम्-गाढ़ा शहद; कुल्लुम्-और वंशी; याळुम्-वीणा; कोळुम् पाकुम्-गाढ़ी चाशनी; अयिरुम्-खाण्ड; अमुतुम्-अमृत; चुवै तीरुत्त-इनकी मधुरता को मात देनेवाली; मीळियै-बोली वाली (सीता) से; पिरिन्ताल्-बिछुड़े रहें, तब; अळियातो-घुलेंगे नहीं क्या । १०५८

श्रीराम अपने सामने देखते हैं कि मोर और मोरनी, हरिण और हरिणी और हाथी और हथिनी — इनके जोड़े साथ-साथ घूमते फिरते हैं । वे तो सीताजी से बिछुड़े रहते हैं । सीताजी इतनी मधुरभाषिणी थीं कि उनकी वचन-मधुरता के सामने कोयल की कूक, ईख का रस, वाँसुरी का नाद, गाढ़े शहद का स्वाद, वीणा का स्वर, खांड की रुचि सब फीका पड़ गया था । तो फिर उनका मन नहीं घुलेगा क्या ? । १०५८

मुडिनाट् टियकोट् टुदयत्तिन् मुड्ड वुड्डान् मुतुकङ्गुल्
विडिनाट् कण्डुङ् गिल्लिमिळ्ऱु मैनूँ शौँ केळा वीरङ्काण्
डडिनाट् चैन्दा मरैयौडुङ्गु मन्न मिलळाल् यान्ऱैत्त
कडिनाट् कमलत् तैतवविळ्त्तुक् काट्टु वान्बोऱ् कदिरवैय्योन् 1059

मुटि नाट्टिय-किरीटभूषित-सी दिखती; कोट्टु उतयत्तिन्-शिखर-सहित उदयगिरि पर; कतिर् वैय्योन्-गरम किरणमाली; मुतु कङ्कुल्-लम्बी रात का; विटि नाळ् कण्डुम्-अन्त और दिन का उदय देखकर भी; किल्लि मिळ्ऱुम्-शुक की सी बोली वाली सीता की; मैनूँ चैल् केळा-मृदु-मधुर बोली न सुनने से (दुःखी); वीरङ्कु-वीर श्रीराम की; आण्डु-तब; अटि नाळ्-पहले; चैम् तामरै औतुङ्कुम् अन्तम्-लाल कमल पर रहनेवाली हंसिनी (सीता); यान् अटैत्त-(जिसको कल) मैंने बन्द कराया; कटि नाळ् कमलत्तु-सुगन्धित इस नवीन कमल में; इलळ् अँत-नहीं हैं, कहते हुए; अविळ्त्तु काट्टुवान् पोल्-मानो खोलकर दिखा रहे हों, ऐसा; मुड्ड उड्डान्-पूर्ण प्रकाशमय प्रकट हुए । १०५९

शिखर-किरीटी उदयगिरि पर सूर्य पूर्णरूप से प्रकट हुए । उनकी रश्मि से कमल खिले । वे कमल पिछली रात बन्द हुए थे । लम्बी रात बीत गयी और सवेरा हो गया । तो भी श्रीराम को शुक-सम मधुरभाषिणी सीताजी की मीठी वाणी सुनने को नहीं मिली थी । वे दुःखी थे । (इन सब बातों को मिलाकर कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि) सूर्य ने कमलों को पिछली रात बन्द कराया था और अब उनको खोलकर श्रीराम को दिखाया कि उन सुगन्धित व नवविकसित कमलों में कमलनिवासिनी, हंसिनी-सम सीताजी नहीं हैं । १०५९

पीळिलै नोक्कुम् पीळिलुडैयुम् पुळ्ळै नोक्कुम् वूड्गोम्बिन्
अँळिलै नोक्कु मिळ्मयिलि तियलै नोक्कु मियल्बानाळ्

कुळलै नोक्किक् कौङ्गयिणैक् कुवट्टै नोक्कि यक्कुवट्टिन्
तौळिलै नोक्किक् तन्नुडैय तोळै नोक्कि नाट्कळिप्पात् 1060

पूम् कोम्पिन् अँळिलै नोक्कुम्-पुष्पलता-सदृश सुन्दर; इळ मयिलिन् इयलै नोक्कुम्-बालमयूर की छटा-सदृश; इयलपु आताळ्-आभायुक्त; कुळलै नोक्कि- (सीताजी के) केश का स्मरण करके; पौळिलै नोक्कुम्-(श्रीराम) उद्यान को देखते; इणै कौङ्गै कुवट्टै-स्तनद्वय के पर्वतशिखरों का; नोक्कि-स्मरण करके; पौळिल् उरैयुम्-उद्यान में रहनेवाले; पुळ्ळै नोक्कुम्-(चक्रवाक-) पक्षियों को देखते; अ कुवट्टिन् तौळिलै नोक्कि-उन पर (आलिंगन) का अपना व्यवहार स्मरण करके; तन्नुडैय तोळै नोक्कि-अपने कन्धों की (भाग्यहीनता) सोचकर; नाट् कळिप्पात्-दिन बिताते । १०६०

(विरही का मन प्रिया के रूप का स्मरण करने से बहुत दुःखी होता है । कुछ वस्तुएँ उस स्मरण को उद्दीप्त करती हैं ।) श्रीराम पुष्पलता-सी सुन्दर और बालमयूर-सी आभा वाली सीताजी का केश स्मरण करते और उपवन को देखते । दोनों पर्वतशिखर-सम स्तनों की याद करते और उपवन में रहनेवाले चक्रवाक पक्षी को देखते । उन स्तनों से आलिंगन करने के अपने प्रणय-व्यापार का स्मरण करते और अपने कन्धों की भाग्य-हीनता पर विचार करते । वे ऐसे ही दिन को बिताने लगे । १०६०

अन्त कालै यिळवीर नडियिन् वणङ्गि नैडियोयप्
पोन्ने नाडा दीण्डिरुत्तल् पोरुळो वेंन्तप् पुहळोनुम्
शौन्त वरक्क निरुक्कुमिडन् दुरुवियरिडुन् दौडर्न् वेंन्त
मिन्नुञ्ज जिलैयार् मलैतौडर्न्द वैयिल्वैङ् गानम् वोयिनराल् 1061

अन्त कालै-उस समय; इळैय वीरन्-कनिष्ठ वीर लक्ष्मण के; अडियिन् वणङ्गि-पैरों पर नमस्कार करके; नैडियोय्-महान; अ पोन्ने नाटातु-उन स्वर्ण- (सम सीता) का अन्वेषण न करके; इण्टु इरुत्तल्-यहाँ (व्यर्थ) रहना; पोरुळो-अर्थ-भरा (काम) है क्या; अँन्त-कहने पर; पुकळोतुम्-प्रशंसित श्रीराम ने भी; चौन्त अरक्कन् (जटायु)-कथित राक्षस; इरुक्कुम्-इष्टम्-का वासस्थान; तौडर्न्तु-निरन्तर; तुरुवि अरितुम्-खोज देखेंगे; अँन्त-(कहा) कहने पर; मिन्नुम्-चमकते; चिलैयार्-धनुओं के धारक; मलै तौडर्न्त-पर्वत से लगे; वैयिल् वैम् कात्तम्-धूप में कठोर वन में; पोयितर्-चले । १०६१

तब लघु भाई वीर लक्ष्मण ने उनको नमस्कार किया और विनय सुनायी । महान ! स्वर्ण-समाना सीताजी का अन्वेषण किये बिना यहाँ बैठे रहना कोई अर्थ रखता है क्या ? तब प्रशंसा योग्य श्रीराम ने भी हामी भरी । हाँ ! जटायु द्वारा कथित उस राक्षस (रावण) के स्थान का अन्वेषण करें । सर्वत्र ढूँढ़कर देखें । फिर दोनों चमकदार धनुर्धर धूप में जंगल में ढूँढ़ते हुए गये । १०६१

आशे शुमन्द् नैडुङ्गरि यन्तार्, पाशिलै तुन्ऱु वनम्बल पित्नाक्
काशरु कुन्ऱिनी डारु कडन्तार्, ओशनै योन्बदी डोन्बदु शेन्ऱार् 1062

आचै चुमन्त-दिशावाही; नैटुम् करि अन्तार्-बड़े गजों से तुल्य वे; पचुमै
इलै तुन्ऱु-हरे पत्तों से पूर्ण; वनम् पल-अनेक वनों को; पित्ना-पीछे छोड़कर;
काचु अरु-निर्दोष; कुन्ऱिन् ओटु-पर्वतों के साथ; आरु-नदियों को; कटन्तार्
पार करके; ओन्पतु ओटु ओन्पतु योचतै-नौ और नौ (अठारह) योजन दूर; शेन्ऱार्-
गये । १०६२

दिशावाही बड़े गजों से तुल्य वे वीर हरे पत्तों से पूर्ण अनेक वनों को
पीछे छोड़ते हुए, निर्दोष पर्वतों और गहरी नदियों को पार कर अठारह
योजन दूर चले । १०६२

मट्पडि शैय्द तवत्तित्तिन् वन्द, कट्पडि कोदैयै नाडिनर् काणार्
उट्पडि कोब मुयिर्प्पोडु पीङ्गप्, पुट्पडि युङ्गुळिर् वार्पोळिल् पुक्कार् 1063

मण् पटि चैय्त-अणुओं से निर्मित इस भूमि के किये; तवत्तित्तिन् वन्त-तप के
फलस्वरूप अवतरित; कळ् पटि कोतैयै-शहद-जमे केश वाली को; नाटित्तर्-ढूँढ़कर;
काणार्-न देख पाये; उळ् पटि कोपम्-अन्दर जमा रहा कोप; उयिर्प्पु ओटु
पीङ्क-निःश्वास के साथ निकल आया; पुळ् पटियुम्-जिसमें खग रहते थे; कुळिर्
वार् पोळिल्-उस शीतल विशाल उद्यान में; पुक्कार्-प्रविष्ट हुए । १०६३

पर सीताजी, जो अणुओं की बनी इस पृथ्वी की तपस्या के फलस्वरूप
अवतरित हुई थीं, कहीं भी दिखाई नहीं दीं । उनको न पाकर उन
वीरों का कोप निःश्वास के रूप में प्रकट हुआ । तब वे एक ऐसे
उपवन में पहुँचे जो शीतल, विशाल और पक्षियों से पूर्ण था । १०६३

आरियर् शिन्दै यलक्क णरिन्दान्, नारिये यैङ्गणु नाडित्त नाडिप्
पेरुल हेंडु-मुळन्ऱिरुळ् पित्ना, मेरुविन् वैङ्गदिर् मीळ मरैन्दान् 1064

आरियर्-श्रेष्ठ (श्रीराम और लक्ष्मण) के; चिन्तै अलक्कण् अरिन्तान्-मन के
दुःख के ज्ञाता; वैम् कतिर्-गरम किरणों के सूर्य; पेर् उलकु अँङ्कुम्-विस्तृत लोक भर
में; उळन्ऱु-सायास धूमकर; नारिये-स्त्री-रत्न को; अँङ्कणुम्-सर्वत्र; नाटित्तन्-
खोजकर; इरुळ् पित्ना-अँधेरे को पीछा करते आने देते हुए; मेरुविन् मीळ मरैन्दान्-
मेरु के पीछे छिप गये । १०६४

तब सूर्य भी अस्त हो गये । आर्य वीर, श्रीराम और लक्ष्मण का
दुःख उन्हें मालूम था । वे भी शायद सायास सब स्थानों में नारीरत्न
सीताजी का अन्वेषण करके थक गये । इसलिए वे मेरु के पीछे छिप गये
और अन्धकार उनके पीछे लगा हुआ आ गया । १०६४

अरण्डरु

हुज्जैरि

यज्जन

पुज्जम्.

उरण्डन

पोलिरु

ळैङ्गणु

मुन्दत्

तैरुण्डिऱि	विल्ववर्	शिन्दैयिन्	मुन्दि
इरुण्डिन	मादिर	मैट्टु	मिरण्डुम् 1065

चैरि अञ्चत पुञ्चम्-घने अंजनपुंज; उरण्टत्त पोल्-मानो टकराते हों; इरुळ्-अन्धकार; अरण्टु-सहमकर; अरुक्कुम् अङ्कणुम् उन्त-पार्श्व में सब ओर ढकेलने से; तैरुण्डु-भ्रमित हो; अरिवु इल्लवर् चिन्तैयिन्-ज्ञान से होन बने मनुष्य के मन के समान; मुन्ति-(समय से) पहले ही; मातिरम् अट्टुम् इरण्डुम्-आठों और दोनों (ऊपर और नीचे) दिशाएँ; इरुण्टन्-अन्धकारमय हो गयीं । १०६५

वह अँधेरा घना था । ऐसा लगता था कि अंजनपुंज आपस में टकराकर, ढकेला जाकर और डर के कारण सब स्थानों में प्रेषित किये गये हों । दसों दिशाओं (ऊपर और नीचे की ओर मिलाकर) में वह इस प्रकार व्याप्त रहा, जिस प्रकार भ्रमित बुद्धि वाले के मन में अज्ञान व्याप्त रहता है । १०६५

इळिक्कुरै	यिञ्जौ	लियेन्दन	पूर्व
किळिक्कुरै	युम्बौळिऱ्	किञ्जुह	वेलि
ओळिक्कुरै	मण्डिल	मौत्तुळ	दङ्गोर्
पळिक्कुरै	कण्डदिल्	वैहल्	पयिन्ऱार् 1066

इळिक्कु-‘इळि’ स्वर से; अरै-तुल्य; इन् चोल् इयैन्त-मधुर स्वर में बोलनेवाले; पूर्वै-‘नाहणवाय्’ नामक पक्षी; किळिक्कु अरैयुम्-शुकों को जहाँ बोली सिखा रहे थे; पौळिल्-एक उपवन में; किञ्जुक वेलि-किशुक वृक्षों के घेरे में; अङ्कु-वहाँ; ओळि-प्रकाश में; कुरै मण्डिल् ओत्तु उळ्ळु-कलंक-सहित चन्द्र-मण्डल के समान; ओर् पळिक्कु अरै-एक स्फटिक-शिला; कण्टु-देखकर; अतिल्-उसमें; वैक्ल् पयिन्ऱार्-ठहरे रहे । १०६६

श्रीराम और लक्ष्मण एक स्फटिक-शिला पर ठहरे । वह शिला एक उपवन के मध्य में थी और कलंकसहित चन्द्रमण्डल के समान प्रकाशमान थी । उस उपवन के चारों ओर किशुक वृक्षों का घेरा था और उसमें ‘नाहणवाय्’ नामक पक्षी शुकों को बोलना सिखा रहे थे । उन पक्षियों की बोली ‘इळि’ स्वर के समान मीठी थी (तमिऴ की संगीत-विद्या में सात स्वर हैं, जिनके नाम इळि, कुरल्, तुत्तम्, कैक्किळै, उळ्ळै, विळरि और तारम् हैं ।) । १०६६

अव्विडै	यैय्दिय	वण्ण	लिरामन्
वैव्विडै	पोलिळ	वीरत्तै	वीर
इव्विडै	नाडिनै	नीर्कोणर्	हैन्ऱान्
तैव्विडै	विल्लव	नुन्दति	शैन्ऱान् 1067

अ इटै यैय्ति-वहाँ जो आये; अण्णल् इरामन्-महिमायुक्त श्रीराम ने; वैम् विटै पोल्-क्रुद्ध ऋषभ-तुल्य; इळ वीरनै-छोटे वीर को; वीर-वीर; इ इटै-अब;

नीर् नादित्तै-जल खोजकर; कौणर्क-लाओ; अँन्रान्-कहा; तँव इटै-शत्रु को भगानेवाले; विल्लवन्तुम्-धनुर्धर भी; तत्ति चँन्रान्-एकाकी चले । १०६७

वहाँ पहुँचने के बाद महिमायुक्त श्रीराम ने क्रुद्ध ऋषभ-सम छोटे वीर से कहा कि वीर ! अब जाकर कहीं से (पेय) जल ढूँढ़कर लाओ । शत्रु को भगाने की शक्ति रखनेवाले धनुर्धर लक्ष्मण भी उस रात में अकेले जल के अन्वेषण में चल पड़े । १०६७

अँङ्गणु	नाडित्तन्	नीरिडै	काणान्
शिङ्ग	मँन्रततमि	यन्त्रि	वान्
अङ्ग	वन्तनु	ळयोमुहि	यँन्रन्
वँङ्ग	णरक्कि	विरुम्बितळ	कण्डाळ 1068

अँङ्कणुम् नाडित्तन्-सब कहीं ढूँढ़ा; नीर् इटै काणान्-जल का स्थान नहीं देखा; चिङ्कम् अँन्र-सिंह के समान; तमियन्-अकेले; तिरिवान्-घूमनेवाले उनको; अङ्कु अ वत्तनुळ-वहाँ उस वन में; अयोमुकि अँन्रन्-अयोमुखी नाम की; वँम् कण् अरक्कि-क्रूर राक्षसी ने; विरुम्पितळ-प्यार करके; कण्डाळ-देखा । १०६८

लक्ष्मण बहुत देर घूमे । पर जल कहीं दिखाई नहीं दिया । तब एक क्रूर राक्षसी ने उनको देख लिया । उसका नाम अयोमुखी था । उसने सिंह-समान घूमनेवाले उनको प्यार की दृष्टि से देखा । १०६८

नन्मदि	योरुपुहल्	मनदिर	नामच्
चौन्मदि	यावर	विरुत्तौडर्	हिउपाळ
तन्मद	नोडुदन्	वम्मै	तणित्ताळ
मन्मद	नामिव	नँन्रन्	मन्तत्ताळ 1069

नल् मत्तियोर पुकल्-श्रेष्ठ बुद्धिमानों द्वारा उच्चरित; मन्त्रिर नामम्-मन्त्र-नामों के; चौल्-शब्दों को; मत्तिया-मानकर जो स्तम्भित होता; अरविल्-(नीच) सर्प के समान; तौडर्किउपाळ-अनुगमन करती हुई; तन् मन्तन् ओटु-अपने काममद के साथ; तन् वम्मै-अपनी गरमी को; तणित्तु आळ-शान्त करके वश में रखनेवाले; मन्मत्ताम् इवन्-मन्मथ ये है; अँन्रन् मन्तत्ताळ-ऐसा विचार करती हुई (वह) । १०६९

वह नीच सर्प के समान थी, जो निपुण ओझा के मन्त्रों से भी बद्ध और कीलित नहीं होता है । उस अयोमुखी ने उनको पीछा करते हुए यह धारणा कर ली कि ये मन्मथ हैं और ये ही मेरा काममद और काम-ताप शान्त करके मेरे ऊपर शासन कर सकते हैं । १०६९

अळुन्दिय	शिनदैय	ळाहि	यरक्कि
अळुन्दुयर्	काद	लुळुन्त्रि	निन्त्राळ

पुळुङ्गुमेन्
विळुङ्गु

तोय्हेडप्
वैतोवैन्

पुल्लुवै
विम्म

तन्त्रि
लुळन्डाळ् 1070

अरक्कि-वह राक्षसी; अळुन्तिय चिन्तैयळ् आकि-लक्ष्मण में मरन मन वाली होकर; अळुन्तु उयर्-उठकर उमड़नेवाले; कातलिन् उळुन्त्र-प्रेम से अभिभूत होकर; अँतिर् निन्डाळ्-सामने खड़ी रही; पुळुङ्कुम्-तापनेवाला; अँन् नोय् कँट-अपना रोग दूर करते हुए; पुल्लुवैन्-आलिंगन कर लूंगी; अन्त्रि-नहीं तो; विळुङ्कुवैतो-या इसको निगल ही जाऊँ; अँत-सोचकर; विम्मन् उळुन्डाळ्-आर्तता से भर गयी। १०७०

उसका मन लक्ष्मण पर अटक गया। प्रेम का ज्वर उठा और बढ़ने लगा। असाध्य पीड़ा सहते हुए वह उनके सामने आयी और आप ही आप कहने लगी कि मैं इसका ऐसा आलिंगन करूँगी कि मुझे वेदना देने वाला यह कामरोग शान्त हो जाय। या शायद अपनी इच्छा की प्रवलता के कारण उठाकर निगल जाऊँगी क्या? ऐसा सोचती हुई वह आर्तता से भर गयी। १०७०

इरन्देन्

तैय्दिय

पोदिये

यादु

करन्दन

नैन्निर्

कौण्डुह

उन्देन्

मुरञ्जितिन्

मेवि

मुयङ्गुवै

नैन्ना

विरैन्देद्विर्

वन्दन

डोयिन्नुम्

वैय्याळ् 1071

तीयिन्नुम् वैय्याळ्-आग से भी क्रूर; इरन्तैन्-याचना करती हुई; अँय्तियपोतु-जाऊँ तब; इयैयातु-सम्मत न होकर; करन्तत्तु अँन्तित्-(दया से) वंचित करा देगा तो; नत्ति कौण्डु-(इसको) बलात् लेकर; कटन्नु-यहाँ पार कर; अँन् मुरञ्चितिन् मेवि-अपनी गुफा में जाकर; मुयङ्कुवैन्-मिल लूंगी; अँन्ता-निश्चय कर; विरैन्तु अँतिर् वन्तत्तळ्-सवेग सामने आयी। १०७१

अग्नि से भी अधिक क्रूर उस राक्षसी ने आगे विचार किया कि जब मैं इसके पास जाकर प्रेम की याचना करूँगी तब अगर वह इनकार करके अपनी दया से मुझे वंचित करेगा, तो बलात् उसे उठा लूँगी, अपनी गुफा में ले जाकर मनमाने रूप से उससे मिल लूँगी। इस निश्चय के साथ वह उनके सामने सवेग आयी। १०७१

उयिर्प्पि

नैरुप्पुमिळ्

हिन्त्रन्

वौन्त्र

अँयिर्त्रिन्

मलैक्कुल

मैण्णिल

वुण्णुम्

वयिर्त्रिळ्

वयक्कौडु

माशुणम्

वीशुम्

कयिर्त्रि

नशैत्त

मुलैक्कुळि

कण्णाळ् 1072

उयिर्प्पिन्-साँसों के साथ; नैरुप्पु उमिळ्किन्त्र-आग उगलनेवाले; अँयिर्त्रिन् मलै कुलम्-दाँतों वाले गजसमूहों को; औन्त्र-एक साथ; अँण् इल उण्णुम्-अगणित

खानेवाले; वयिर्इल्-पेट की; वय कौटु माचुणम्-बली भयंकर अजगर की; वीचुम् कयिर्इन्-लपेटी रस्सी से; अचैत्त-बँधे; मुलै-स्तनों और; कुळि कण्णाळ्-खूब धँसी हुई आँखों वाली थी । १०७२

(उसका वर्णन सात पद्यों में पाया जाता है ।) उसका पेट था, जो कि साँस के साथ आग निकालनेवाले पर्वत-सम गजों के अनगिनत समूहों को समा सकता था । उसके स्तन बलवान भयंकर अजगर लपेटकर बाँधे गये थे । आँखें गढ़ों के समान धँसी हुई थीं । १०७२

पर्इयि	कोळरि	याळि	पणिक्कण्
तैर्इयि	पादच्	चिलम्बु	तरित्ताळ्
इर्ल	हियावैयु	मीळ्	मन्नाळ्
मुर्इयि	जायिर्	पोलु	मुहत्ताळ् 1073

पर्इयि-गृहीत; कोळरि-सिंहों; याळि-और शरभों को; पणि कण् तैर्इयि-फणी सर्प से गूँथकर; चिलम्बु तरित्ताळ्-उसके नूपुर पहने हुए थी; यावैयुम्-सभी लोक; इर्ल ईर्ल उळ्म्-(जिस दिन) पूर्णरूप से नष्ट होंगे; अ नाळ्-उस दिन के; मुर्इयि-पूर्णरूप से विवर्धित; जायिर् पोलुम्-सूर्य की तरह; मुहत्ताळ्-(दाहक) मुख की । १०७३

उसके पैरों के नूपुर साँपों से गुँथे हुए सिंह थे, जिनको उसने स्वयं पकड़ा था । उसका मुख उस युगान्तकालीन गर्मी में पूर्णरूप से बड़े हुए सूर्य के समान सन्तापक था, जिस (युगान्त) में सारे लोक विनष्ट हो जाते हैं और सबका अन्त हो जाता है । १०७३

आळि	वर्क्क	मुहक्क	वमैन्द
मूळै	यैन्पौलि	मौय्बिल	वायाळ्
कूळै	पुर्त्तु	विरिन्ददोर्	कौट्पाल्
अळि	नैरुप्पि	नुरुत्तनै	यौप्पाळ् 1074

आळि वर्क्क-समुद्र को सुखाते हुए; मुहक्क-उठा लेने के लिए; अमैन्द-बने; मूळै अँत-कलछे के समान; पौलि-दृश्यमान; मौय् पिल वायाळ्-मजबूत, बड़ी गुफा-सदृश मुख वाली; पुर्त्तु कूळै विरिन्दतु-पार्श्व में केश लटकते रहे; ओर् कौट्पाल्-उसके दृश्य से; अळि नैरुप्पिन् उरु तनै-युगान्त की अग्नि के रूप की; यौप्पाळ्-समानता करनेवाली । १०७४

उसका गुफा-सा बड़ा मुख एक कलछे के समान था, जो कि समुद्र को एक दम शुष्क करते हुए सारा जल उठा सकता था । उसके सिर के पार्श्वों में कम लम्बे (लाल) केश लटकते थे, जिसके कारण वह युगान्तकालीन अग्नि के समान दिखाई दी । १०७४

तडितड	वप्पल	तलैतळु	वित्ताळ
नैडिदडै	यक्कुडर्	कैळुवु	निणत्ताळ
अडितड	वप्पड	वरव	मशैक्कुम्
कडिदड	वत्तिन्न	ळुरुमु	कडिप्पाळ 1075

तडि तटव-मांस की खोज में; पल तलै तळुवि-अनेक स्थानों में ढूँढ़ते हुए जाकर; ताळ-उसके पैर; नैडितु अटय-बहुत दूर गये, इसलिए; कुडर् कैळुवु निणत्ताळ-मांस-भरे पेट वाली; पट अरवम् अडि तटव-फनसहित सर्प उसके पैरों को छूते रहे, ऐसा; अचैक्कुम्-(उन सर्पों की) लपेटी; कडि तटवत्तिन्न-कडि वाली; उरुमु कडिप्पाळ-वज्रघोष के समान दाँत किटकिटानेवाली । १०७५

मांस की खोज में उसके पैर दूर-दूर तक गये थे और उसका पेट मांस से भरपूर था । उसकी कमर में सर्प बँधे थे, जिनके फन उसके पैरों को छूते थे । जब वह दाँत किटकिटाती तब वज्र का-सा नाद निकलता । १०७५

इवैयिऱै	यौप्पन्न	वैत्तन्न	विळिप्पाळ
अवैकुळि	रक्कडि	तळुलु	मैयिऱाळ
कुवैकुलै	यक्कडल्	कुमुऱ	वुरैप्पाळ
नवैयिल्	पुवित्तिरु	नाल	नटप्पाळ 1076

इवै इऱै औप्पन्न-ये युगान्त की अग्नि के समान हैं; वैत्तन्न-ऐसा; विळिप्पाळ-तरेरनेवाली; अवै कुळिर-उनको ठण्डे बनाते हुए; कडितु-कठोर रीति से; अळुलुम् मैयिऱाळ-प्रज्वलित दाँत वाली; कुवै-पर्वत आदि; कुलैय-अस्त-व्यस्त करते हुए; कटल् कुमुऱ-सागर को उथल-पुथल करते हुए; उरैप्पाळ-बोलनेवाली; नवै इल् पुवि तिरु-निर्मल भूदेवी को; नाल-धँसाते हुए; नटप्पाळ-पग धरकर चलनेवाली । १०७६

जब वह तरेरती तब उसकी आँखें युगान्त की अग्नि के समान लगतीं । पर ज्वलन्त दाँतों के सामने उनकी उग्रता कम हो गयी लगती । जब वह बात करती, तब पर्वत जैसे ऊँचे टीले जर्जर हो जाते और सागर में उथल-पुथल मच जाता । जब वह पग रखकर चलती, तब निर्मल भूदेवी में गड्ढे पड़ जाते । १०७६

नीळर	वच्चरि	ताळुहै	निरैत्ताळ
आळर	वप्पुलि	यार	मणैत्ताळ
याळियि	नैप्पल	तालि	यिशैत्ताळ
कीळरि	यैक्कोडु	ताळकुळै	यिट्टाळ 1077

नीळ अरव चरि-लम्बे सर्प रूपी ककणों को; ताळ कै निरैत्ताळ-लटकनेवाले हाथों में पहने रहती; अरवम्-गरजनेवाले; आळ पुलि-बलवान बाघों का; आरम्-हार; अणैत्ताळ-धारण करनेवाली; पल आळियितै-अनेक शरभों को; तालि

इचेत्ताळ्-मंगल-सूत्र से बांधे रखनेवाली; कोळरिये कौटु-तांकतवर सिंहों को लेकर; ताळ् कुळ् इट्ताळ्-लटकनेवाले कुण्डल बनाकर पहनी हुई । १०७७

उसने कंकणों के रूप में लम्बे सर्पों की पवित्र पहन रखी थी। गरजनेवाले व्याघ्रों को गूँथकर उसने हार के रूप में पहना था। उसके मंगल-सूत्र से अनेक शरभ बाँधे थे। उसके कर्ण-कुण्डल बली सिंह थे। १०७७

निन्त्रुत्त	ळांशेयि	नीरुहलु	ळुङ्गण
कुन्त्रि	निहर्प्प	कुळिर्प्प	विळिप्पाळ्
मिन्त्रिरि	हिन्त्र	वैयिर्त्रिन्	विळक्काल्
कन्त्रिरु	ळिर्त्रिरि	कोळरि	कण्डान् 1078

नीर कलुळम् कण्-जल बहानेवाली उसकी आँखें; कुन्त्रि निकर्प्प-घुँघची के समान रहती; कुळिर्प्प-प्रेमाद्रता के साथ; विळिप्पाळ्-लक्ष्मण पर दृष्टि चलाती हुई वह; आंचियिन् निन्त्रुत्तळ्-लगावट के साथ खड़ी रही; मिन् तिरिकिन्त्रु-बिजली के समान चमकनेवाली; वैयिर्त्रिन्-दन्तपवित्तियों के; विळक्काल्-दीप से; कन्त्रु इरुळिल् तिरि-घने अँधेरे में घूमनेवाले; कोळरि-सिंह (लक्ष्मण) ने; कण्डान्-उसको देखा। १०७८

उसकी आँखें घुँघचियों के समान थीं और उनसे जल बह रहा था। वह लक्ष्मण पर प्रेमाद्र दृष्टि डालती हुई खड़ी रही। उसके दाँतों से बिजली की चमक निकल रही थी। सिंह-सदृश लक्ष्मण ने उस घने जंगल में घूमनेवाली उसको उसके दाँतों के प्रकाश में देखा। १०७८

पण्डैयि	नाशि	यिळुनुदु	पदैक्कुम्
तिण्डिरु	लाळोडु	ताडहैच्	चीराळ्
कण्डह	राय	वरक्कर्	कणत्तोर्
ओण्डोडि	यामिंव	ळैन्व	दुणर्न्दान् 1079

पण्डैयिन्-पहले; नाचि इळुनुतु-नाक आदि कटक; पदैक्कुम्-जो छटपटाती; तिण् तिरुळाळ् ओटु-उस अत्यधिक बलयुक्त राक्षसी के साथ; ताँटक् चीराळ्-ताड़का से तुल्य; कण्टकर् आय अरक्कर्-लोककंटक राक्षसों के; कणत्तु-दल से सम्बद्ध; ओण्टोडि आम् इवळ्-स्त्री होगी यह; अँनपतु उणर्न्तान्-यह विषय लक्ष्मण ने ताड़ लिया। १०७९

उन्होंने ताड़ लिया कि यह नाक खोकर जो छटपटाती रही; उस शूर्पणखा के साथ ताड़का आदि के राक्षस-कुल से सम्बद्ध स्त्री ही होगी। १०७९

पाविय	रामिवर्	पण्बिलर्	नम्बाल्
मेविय	कारणम्	वैरिलै	यैन्वान्
मावियल्	कानिन्	वयङ्गिरुळ्	वन्दाय्
यावळ	डोयुरै	शैय्हडि	दन्शान् 1080

पण्णु इलर्-गुणहीन; पावियर् आम्-पापी; इवर्-ऐसी स्त्रियाँ; नम् पाल् मेविय कारणम्-हमारे पास आती हैं, उसका कारण; वेरु इलै-(कामेच्छा के सिवा) दूसरा नहीं है; अन्नपान्-ऐसा सोचकर; मा इयल् कानिल्-भयंकर जानवरों से भरे जंगल में; वयक्कु इरुळ् वन्ताय्-घने अन्धकार में आयी हो; यावळ् अटी-तू कौन है, री; कटितु उरै चैय्-जल्दी उत्तर दो; अन्नशान्-पूछा । १०८०

गुणहीन, पापिनी ये राक्षसनारियाँ हमारे पास एक ही कुविचार लेकर आती हैं । उनके पास उसके सिवा कोई दूसरा हेतु नहीं रहता ! उन्होंने उसे डाँटकर पूछा कि री ! भयंकर जानवरों से भरे इस जंगल में तू आयी है । तू कौन है ? । १०८०

पेशित	नुक्कैदिर्	पेशुऱ	नाणाळ्
ऊशलु	ळन्दयर्	शिनदैय	ळुन्दान्
नेशमिल्	वन्बिन	त्ताहिय	निन्बाल्
आशैयिन्	वन्द	वयोमुहि	यैन्शाल् 1081

ऊचल् उळन्तु-दुविधा के झूले में झूलते हुए; अयर् चिन्तैयळुम्-शिथिल-मन उसने; पेचित्तुक्कु-प्रश्नकर्ता से; तान् अँतिर् पेचुऱ-सामने बोलने से; नाणाळ्-न लजाकर; नेचम् इल् वन्पितन् आकिय-मैत्री बनाने में चतुर; निन् पाल्-तुम्हारे प्रति; आचैयिन्-राग से; वन्त-आगत; अयोमुकि अँन्शाल्-अयोमुखी हैं, कहा । १०८१

अयोमुखी का मन दुविधा में पड़ा और वह आर्त हुई । उससे प्रश्न करनेवाले लक्ष्मण के सामने बोलते हुए उसे कोई लज्जा का अनुभव न हुआ । उसने कहा कि तुम मित्रता बनाने में चतुर हो । मैं तुम्हारे प्रति प्यार करके आयी हूँ । मेरा नाम अयोमुखी है । १०८१

पिन्नु मुरैप्पवळ् पेरैळिल् वीरा, मुन्न मौरुत्तर् तौडामुलै योडुन्
पौन्तिन् मणित्तड मारुबु पुणर्न्देन्, इन्नुयि रैक्कडि दीहुदि यैन्शाल् 1082

पिन्नुम् उरैप्पवळ्-और भी बोलती; पेरैळिल् वीर-बड़े ही सुन्दर वीर; मुन्नम् मौरुत्तर् तौडामुलै-पहले किसी के द्वारा अस्पृष्ट स्तनों के साथ; उन्-तुम्हारे; पौन्तिन्-स्वर्णवर्ण; मणि तड मारु-सुन्दर विशाल वक्ष से; पुणर्न्तु-लगा लेकर; अँन् इन् उयिरै-अपने प्यारे प्राणों को; कटितु ईकुति-जल्दी दिला दो; अँन्शाल्-कहा । १०८२

उसने और भी कहा कि अति सुन्दर वीर ! मेरे स्तन पहले किसी के द्वारा अभोग हैं । उनको अपने स्वर्णवर्ण सुन्दर और विशाल वक्ष से लगा लो और मुझे शीघ्र प्राणदान करो । उसने प्रार्थना की । १०८२

आरिय	शिनदैय	ळः(ह)दुरै	शैय्यच्
चौरिय	कोळरि	कण्गळ्	शिवन्दान्

माडिल	वारहणै	यिव्वुरै	वायिल्
कूडिडि	निन्नुडल्	कूडिडु	मैन्नान् 1083

आश्रिय चिन्तैयळ्-विश्वास के कारण आश्वस्तमना उसके; अ. तु उरै चैय्य-वह कहने पर; चीडिय कोळरि-कुपित सिंह (लक्ष्मण) ने; इ उरै-यह वचन; वायिल् कूडिडिन्-अपने मुख से फिर कहोगी; माळ इल-तो अबाध; वार् कणै-लम्बे शर; निन्नु उटल्-तेरे शरीर के; कूडिडुम् अँन्नान्-टुकड़े-टुकड़े कर देंगे; अँन्नान्-कहा । १०८३

अयोमुखी के मन में आशा का उदय हुआ था, इस कारण उसका मन आश्वस्त और शान्त था । उसका वचन सुनकर पुरुषसिंह लक्ष्मण को क्रोध आ गया । उसने डाँट बतायी— तू इस बात को दुहरायेगी तो मेरे अबाध लम्बे शर तेरे शरीर के टुकड़े कर देंगे । १०८३

मड्डव	नव्वुरै	शैप्प	मन्तत्ताल्
शैड्डिलळ्	कैत्तुणै	शैन्तियिन्	वैत्ताळ्
कौड्डव	नीयैने	वन्दुयिर्	कौळळप्
पैड्डिडि	तिन्नू	पिड्डन्तै	नैन्नाळ् 1084

मड्ड-और; अवन् अ उरै चैप्प-उनके वह वचन कहने पर; मन्तत्ताल् चैड्डिलळ्-मन में कुपित नहीं हुई; कै तुणै-हाथों के जोड़े को; शैन्तियिल् वैत्ताळ्-सिर पर रखा; कौड्डव-नायक; नी वन्दु-तुम आओ; उयिर् कौळळ-और मेरे प्राण हरो; पैड्डिडिन्-यह भाग्य मिलेगा तो; इन्नू पिड्डन्तैन्-आज ही मेरा जन्म (सफल) हुआ; अँन्नाळ्-कहा । १०८४

लक्ष्मण का वचन सुनकर अयोमुखी के मन में कोप नहीं हुआ । उसने अपने दोनों हाथ जोड़कर सिर पर रखे और चिरौरी में कहा कि हे मेरे राजा ! तुम आकर मेरे प्राण हरो, वह भाग्य मिला तो समझूंगी कि मैंने आज ही जन्म लिया ! । १०८४

वैङ्गद	मिल्लवळ्	पिन्तरुम्	मेलोय्
इङ्गु	नरुम्बुत्त	नाडुदि	यैन्तित्
अङ्ग	यित्तलैने	यज्जलै	यैन्नाल्
गङ्गयि	नीरहोणर्	वैन्गडि	वैन्नाळ् 1085

वैम् कतम् इल्लवळ्-भयंकर क्रोध न करती हुई उसने; पिन्तरुम्-फिर भी; मेलोय्-श्रेष्ठ गुण वाले; इङ्कु-यहाँ; नरुम् पुत्तल्-मधुर जल; नाडुति अँन्तिल्-बँढ़ते फिरते हो तो; अम् कैयित्तल्-अपने सुन्दर हाथ से; अँतै अज्जलै-मुझे मत डरो; अँन्नाल्-कहोगे (अभयदान करोगे) तो; कङ्कैयिन् नीर्-गंगा का जल ही; कटितु कौणर्वैन्-बहुत जल्दी ला दूंगी; अँन्नाळ्-कहा । १०८५

अयोमुखी ने, विना कठोर शत्रुता के भाव के ही आगे कहा कि

श्रेष्ठ गुण वाले ! तुम मधुर जल की खोज में ही न फिरते हो ? तुम मुझे अपने सुन्दर हाथ से अभयमुद्रा दिखाते हुए कहो कि मत डरो, तो मैं गंगा का जल ही बहुत वेग के साथ लाकर दूंगी । १०८५

सुमित्तिरैच्	चेयवळ्	चौरुत्त	शौल्लैक्
कमित्तिलन्	निन्निरु	कादौडु	नाशि
तुमिप्पदन्	मुन्नह	लैन्बदु	शौल्ल
इमैत्तिलळ्	निन्नुरन्	ळिन्न	निनैन्दाळ् 1086

सुमित्तिरै चैय-सौमित्र के; चौरुत्त चौल्लै-उसके कहे हुए वचनों को; कमित्तिलन्-क्षम्य नहीं समझकर; निन्न इरु कातौडु-तेरे दो कानों के साथ; नाचि-नाक को भी; तुमिप्पदन् मुन्-काट दूँ, इसके पहले ही; अकल् अन्नपु-हट जाओ, ऐसा; चौल्ल-कहने पर; इमैत्तिलळ्-निनिमेष; निन्नुरत्तळ्-खड़ी रही; इन्नन् निनैन्ताळ्-यों सोचा । १०८६

सौमित्र ने उसकी बात को क्षम्य नहीं माना । उन्होंने कहा कि मैं तेरे दोनों कानों के साथ तेरी नाक को काट दूँ, इसके पहले ही भाग जा ! यह सुनकर वह कुछ देर ताकती खड़ी रही । वह यों सोचने लगी । १०८६

अँडुत्तन्नै	नेहिनै	नैन्मुळै	तन्ननुळ
अँडुत्तिवन्	वैम्मै	यडक्किय	पिन्नै
उडरुपडु	मालुड	नैयुरु	तन्नमै
तिडत्तिदु	वेन्नल	नैन्नैरि	शैन्नाळ् 1087

अँडुत्तन्नै एकितैन्-इसको ले जाकर; अँन् मुळै तन्ननुळ्-अपनी गुफा में; अँटु-बन्द करके; इवन् वैम्मै-इसका क्रोध; अटक्किय पिन्नै-शान्त करने के बाद; उटन् पटम् आल्-वह सम्मत हो जायगा, तब; तन्नमै उटते, उडुम्-मेरा भाग्य तुरत जाग जायगा; इतुवै-यही; तिडत्तु नलम्-पक्का भला है; अँन्-सोचकर; अँतिर चैन्नाळ्-सामने (पास) गयी । १०८७

मैं इसको बलात् उठाकर ले जाऊँगी और अपनी गुफा में रखकर उसे शान्त कर लूँगी । तब वह मेरी इच्छा पूरी करने को सम्मत हो जायगा । उसी क्षण मेरा भाग्य जाग जायगा । यही उपाय हितकारी है । यह विचारकर वह उनके सामने गयी । १०८७

मोहने	यैन्बदु	मुन्दि	मुयन्नाळ्
माहने	डुङ्गिरि	पोलिये	वव्वा
एहित	ळुम्बरि	निन्दुवौ	डेहुम्
मेहमे	नुम्बडि	नौय्दिन्न	वैय्याळ् 1088

वैय्याळ्-क्रूरा ने; मुनूति-सवेग सामने जाकर; मोकनै अँतुपतु मुयनूडाळ्-मोहिनी डालने का प्रयास किया; माक नैटुम् किरि-गगनव्यापी एक बड़े पर्वत; पोलियै-समान (लक्ष्मण) को; वव्वा-पकड़ लेकर; नौयतितिल्-जल्दी; उम्परित्-आकाश में; इन्तु ओट्टु एकुम् मेकम्-इन्डु के साथ दौड़नेवाले मेघ; अँतुम्पटि-जैसा; एकितळ्-जाने लगी । १०८८

उस क्रूरा ने उन पर मोहिनी डालने का कार्य करके गगनव्यापी पर्वत-सम उनको पकड़कर उठाया और सवेग आसमान में चन्द्रसहित मेघ के समान जाने लगी । १०८८

मन्दरम् वेलैयित् वन्ददुम् वान्तत्, तिनदिर नूर्मुहि लैन्तलु मानाळ्
वैन्दिशल् वेलहीडु शूरडुम् वीरच्, चुन्दर नूर्दर तोहैयु मौत्ताळ् 1089

मन्तरम् वेलैयित् वन्ततुम्-मन्दरपर्वत-सहित सागर-सम; वान्तत्तु इन्तिरित् ऊर्-आकाश में इन्द्र-वाही; मुकिल् अँतुलुम्-मेघ के समान; आताळ्-लगी; वैम् तिशल् वेल् कौटु-कठोर और मजबूत शक्ति लेकर; अटुम्-शूरपद्म को जिन्होंने मारा, उन; वीर-वीर; चुन्तरत्-सुन्दर देव पण्मुख के; ऊर् तहम्-वाहन; तोकैयुम् औत्ताळ्-मोर के समान भी बनी । १०८९

तब लक्ष्मण के साथ राक्षसी कैसे लगी ? मन्दरपर्वत-सहित सागर के समान और इन्द्र को लेकर चलनेवाले मेघ के समान लगी । और भी कठोर और सारयुक्त शक्ति से जिन्होंने शूरपद्म को मारा था, उन वीर और सुन्दर पण्मुख को ले जानेवाले मयूर के समान भी लगी (मोर पण्मुख का वाहन माना जाता है । शूरपद्म ही मोर बना था ।) । १०८९

आङ्गवण्	मार्वीडु	कैयि	तडङ्गिप्
पूङ्गळल्	वार्शिलै	मीळि	पौलिन्तान्
वीङ्गिय	वैञ्जित्त	वीळ्मद	वैम्वोर्
ओङ्ग	लुरिक्कु	मुत्तितिर	नौत्तान् 1090

आङ्कु-तब; पूम् कळल्-सुन्दर पायल; वार् चिलै-लम्बा धनुष (इनसे युक्त); मीळि-वीर लक्ष्मण; अवळ् मार्पु ओट्टु-उसके वक्ष और; कैयित् अटङ्कि-हाथों के अन्दर समाकर; पौलिन्तान्-शोभे, तब; वीङ्किय-बढ़ा हुआ; वैम् चित्तम्-कठोर क्रोध और; वीळ् मतम्-बहुता मदजल; वैम् पोर्-(इनके साथ) जिसने युद्ध किया; ओङ्कल्-उस गज को; उरिक्कुम्-उधेड़नेवाले; उत्तितिरत् औत्तान्-रुद्र-सम लगे । १०९०

लक्ष्मण कैसे दिखे ? सुन्दर पायलधारी धनुर्धर वीर लक्ष्मण, जो उसके वक्ष पर हाथों के क्रोड के अन्दर समा गये थे, रुद्र के समान शोभे जो अति क्रुद्ध मदन्नावी योद्धा गज को उधेड़ रहे हों । १०९०

इप्पडि	यन्नव	ळेहिन	ळिप्पाल
अप्पिडे	तेडि	नडन्द	वैन्नावित्

तुप्पुडै माल्वरै तोन्ऱिल नैन्ता
वैप्पुडै मैय्यौडु वीरन् मैलिनदान् 1091

अन्तवळ् इ पटि एकितळ्-वह इस तरह गयी; इ पाल्-इस ओर; वैप्पु उटै-पिपासा से; मैय् उटै वीरन्-(तपित) श्रीशरीर के वीर श्रीराम; अप्पु इटै तेटि-जल-थल खोजते हुए; नटन्त-जो चला; अैन् आवि-मेरा प्राण-सम; तुप्पु उटै-मज्जवूत; माल् वरै-बड़े पर्वत के समान; तोन्ऱिलन्-(लक्ष्मण) नहीं (आता) दिखता; अैन्ता-सोचकर; मैलिनतान्-कातर हुए । १०६१

एक ओर वह लक्ष्मण को पकड़ लेकर उधर जा रही थी, तो दूसरी ओर यहाँ प्यास से तप्त शरीर के श्रीराम इस बात को लेकर दुःखी हुए कि जल-थल के अन्वेषण में जो गया, वह मेरा प्राण-सम प्यारा भाई और मज्जवूत और बड़े पर्वत के समान लक्ष्मण अब भी नहीं दिखाई देता है । १०९१

वैय्दाहिय कानिडै मेवरुनीर्, ऐदादलि तोषय लौन्ऱुळ्ळो
नौय्दाय्वर वेहमु नौय्दिलनाल्, अैय्दादौळि यान्तिडु वैनैहौलाम् 1092

वैय्तु आकिय कान् इटै-कठोर इस जंगल में; मेवु अरु नीर्-मिलनेवाला शुद्ध जल; ऐतु आतलिन्-अपूर्व है, इसलिए; अयल् ओन्ऱु उळ्ळतो-और कोई (संकट) आ गया; नौय्ताय् वर-शीघ्र आने में; वेकमुम् नौय्तु इलन् आल्-मन्द-गति नहीं है; अैय्तातु ओळियान्-विना आये नहीं रहेगा; इतु अैन्तै कोल् आम्-यह किस कारण है । १०६२

वे सोचने लगे कि क्या कारण है ? इस वीहड़ भयंकर वन में शुद्ध जल का मिलना अपूर्व है ? या कोई अन्य संकट आ पड़ा ? वह तो वेग में मन्दता न करनेवाला है । उसका स्वभाव ही ऐसा है कि जल्दी आयेगा । विलम्ब नहीं करेगा । इतनी देर तक उसे आना चाहिए था । फिर ऐसा क्यों हुआ ? । १०९२

नीर्कोण्डनै यिव्वळि नेडिनैपोय्, शार्हैन्ऱुन्नै नित्तुणैच् चार्हिलनाल्
वार्कोण्डणि कौड्णैयै वव्विनर्पाल्, पोर्कोण्डन तौपोरुळ्णुडिर्देना 1093

इ वळि नेटित्तै पोय्-इस मार्ग में ढूँढ़ते चलकर; नीर् कोण्डनै-जल लेकर; चार्क अैन्ऱुन्नन्-आ जाओ, मैंने कहा था; इ तुणै-अब तक; चार्किलन् आल्-नहीं आया है, इसलिए; वार् कोण्डु अणि-अँगिया से अलंकृत; कौड्कैयै-स्तनों (की सीता) को; वव्विनर् पाल्-पकड़कर जो ले गये, उनसे; पोर् कोण्डनतौ-युद्ध करने लग गया क्या; इतु पोर्ळ् उण्डु-ऐसा एक कार्य हुआ होगा; अैन्ता-सोचकर । १०६३

मैंने ही उसे जल ढूँढ़ लाने के लिए भेजा । 'जल्दी आ जाओ' यह कहकर ही उसे भेजा था । वह तो अब तक नहीं आया । तब क्या उसे अँगियाबद्ध स्तनों की देवी को जो हर ले गये थे, उन राक्षसों के साथ

लड़ाई हो गयी ? ऐसा कुछ हुआ होगा, अवश्य ! —राम ने यह सोचा । १०९३

अञ्जोर्किळि यन्न वणङ्गिनेमुन्, वञ्जित्त विरावणन् वव्विनतो
नञ्जिर्कोडि यान्नड लेत्तोल्लिलाल्, तुञ्जुत्त नोविदि यिन्नणिवाल् 1094

किळि अन्न-शुक्र के समान; अम् चोल् अणङ्कित्तै-मधुर-वाणी देवी को; मुन् वञ्चित्त-पहले हर ले जो गया, वह; इरावणन्-रावण; वव्वित्ततो-पकड़ ले गया क्या; वित्तिन् तुणिवाल्-मेरी विधि की प्रबलता से; नञ्चिल् कोटियान्-विष से भी हिंस्र; नटले तोल्लिलाल्-(उस राक्षस की) वंचना के कार्य से; तुञ्जुत्ततो-मर गया क्या । १०६४

क्या वही रावण इसको भी पकड़ ले गया, जिसने शुकी-सी मधुर-भाषिणी सीता को धोखे से हर लिया था ? या मेरी विधि की प्रबलता से, विष से भी हिंस्र उस रावण के कपट-कार्य से वह मर गया ? । १०९४

वरिविर्कै येंतारुयिर् वन्दिलनाल्, तरुशोर्करु देनोरु तैयलैयान्
पिरिवित्तर्त्तै नैन्बदोर् पोळैपैरुत्त, तैरिवित्तिड वावि यिळ्न्दननो 1095

वरि विल् कै-सबन्ध धनुर्हस्त; अँन् आरुयिर्-मेरा प्राणप्यारा भाई; वन्तु इलन् आल्-आया नहीं है; यान्-मैंने; तरु चोल् करतेन्-उसके समयानुकूल कहे वचन को न मानकर; ओरु तैयलै-अप्रमेय स्त्री को; पिरिवित्तर्त्तै-अपने से बिछुड़वा लिया; अँन्पु-इस; ओर् पोळै-एक दुःख के; पैरुत्तु अँरिवित्तिड-बहुत जलाने पर; आवि-प्राणों को; इळ्न्दननो-छोड़ दिया क्या । १०६५

सबन्ध धनुर्हस्त, मेरा प्राण-प्यारा लक्ष्मण आया नहीं है । मैंने उसकी बात न मानकर अपनी अनुपम स्त्री को अलग करा दिया । यह दुःख शायद उसे बहुत सन्ताप दे रहा था । तब क्या उस दुःख के कारण उसने अपने प्राण छोड़ दिये ? । १०९५

उण्डाहिय कारिरु लूडोरुवेन्, कण्डानवन् वेरोरु कण्णिलत्ताल्
पुण्डानुरु नैञ्जु पुळ्ळुगुरुवेन्, अँण्डानिल नैड्डन् नाडुर्हनो 1096

उण्डु आकिय-वन (जो) आया है; कार् इरुळ् ऊडु-इस घने अन्धकार में; ओरुवेन्-एकाकी मेरी; कण् तान् अवन्-आँख वही है; वेरु ओरु कण्-और कोई आँख; इलैन् आल्-मेरी नहीं है, इसलिए; पुण् तान् उरु-पहले ही जो विक्षत है; नैञ्चु-उस मन में; पुळ्ळुक्कु उरुवेत्त-अधिक तप्त में; अँण् तान् इलन्-विचार-विमूढ़ हो गया हूँ; अँड्डत्तम्-किस प्रकार; नाडुर्कतो-खोजूँगा । १०६६

जो घना अन्धकार फैल आया है, उसमें मैं अकेला हूँ । वही मेरी आँख है ! उसको छोड़ कोई दूसरी आँख मेरी नहीं है । पहले से ही मेरा मन विद्ध और व्रणी है । अब मैं और भी उत्तप्त हुआ हूँ । मन

सोचता भी नहीं, विमूढ़ हो गया है । इस स्थिति में मैं क्योंकर उसको ढूँढ़ने चलूँ ? । १०९६

तळ्ळाविनै येन्ऱनि यायिराय्, उळ्ळायीरु नीयु मीळित्तनैयो
पिळ्ळाय्पेरि याय्पिळ्ळै शैय्दनैयाल्, कीळ्ळादुल हुन्नैयि दोहीडिदे 1097

तळ्ळा विनैयेन्-अप्रतिबद्ध विधिवद्ध मेरे; तति आर् उयिराय् उळ्ळाय्-अद्वितीय प्राण-सम रहनेवाले; और नीयुम् मीळित्तनैयो-वैसे तुम भी अदृश्य हो गये क्या; पिळ्ळाय्-बेटे; पैरियोय्-बड़े; पिळ्ळै चैय्त्तनै आल्-अपराध किया है तुमने, तदर्थ; उलकु उन्नै कीळ्ळातु-लोक तुमको सही नहीं मान लेगा; इतु ओ कीळितु-यह अवश्य कठोर है । १०९७

अबाध विधि से बद्ध मेरे प्यारे प्राण (-सम) हे लक्ष्मण ! तुम भी मुझे छोड़ कहीं जा छिप गये क्या ? उम्र में छोटे ! बुद्धि में बड़े ! तुमने यह काम करके एक कठोर अपराध कर दिया ! लोक इसको सही नहीं मानेगा । यह तुम्हारा कार्य अवश्य बड़ा कठोर है ! । १०९७

पेराविडर् वन्दन पेर्क्कवलाय्, तीराविडर् तन्दनै तैव्वर्त्तौळुम्
वीरावैनै यैङ्ङन् वैरुत्तनैयो, वाराय्पुऱ मित्तुणै वैहुदियो 1098

वन्दन-जो हम पर आये; पेरा इटर्-उन अवार्थ संकटों को; पेर्क्क-दूर करने में; वलाय्-समर्थ; तीरा इटर्-अमिट दुःख; तन्दनै-(मुझे) दिला दिया; तैव्वर्त्तौळुम् वीरा-शत्रु द्वारा भी पूज्य वीर; अँतै अँङ्ङन् वैरुत्तनैयो-मुझसे क्योंकर घृणा की; इ तुणै-इतनी देर; पुऱम्-बाहर; वैकुतियो-रह सके क्या; वाराय्-आ जाओ । १०९८

हमारे ऊपर आये अवार्थ संकटों को दूर करने में समर्थ हे भाई ! तुमने मुझे अप्रतिबद्ध संकट दे दिया । शत्रु-शंसित वीर ! तुमने कैसे मुझसे घृणा की ? इतनी देर कहीं बाहर ठहर जाओगे क्या ? आओ, मेरे पास आ जाओ । १०९८

अँन्नैत्तरु मँन्दैयै येन्नैयरैप्, पौन्नैप्पौरु हिनऱ पौलन्नुळैयाळ्
तन्नैप्पिरि वेनुळ नावदुतान्, उन्नैप्पिरि याद वुयिर्प्पलवो 1099

अँन्नै तरुम् अँन्नैयै-अपने जनक अपने पिता को; अँन्नैयरै-अपनी माताओं को; पौन्नै पौरुवुकिन्ऱ-कांचना (श्रीलक्ष्मी) से तुल्य; पौलन्नुळैयाळ् तन्नै-स्वर्णकुण्डल-धारिणी सीता को; पिरिवेन्-छोड़कर अलग जो रहता हूँ; आवतु तान्-जीवित रहता हूँ, वह भी; उयिर्प्पु उन्नै-अपना जीवन, तुमसे; पिरियात्त अलवो-विलग नहीं हुआ, उसी कारण न । १०९९

मैं अपने पिता से, अपनी माताओं से और स्वर्णकुण्डलधारिणी 'कांचना' (लक्ष्मी) सी सीता से बिछुड़कर भी जीवन धारण करता हूँ, तो वह प्राण-सम कभी विलग न होकर तुम साथ रहे —इसी कारण ! । १०९९

पौत्रोडिवर् हित्त्र पौलङ्गुलैयाळ, तर्त्रेडि यिरुन्दु तयङ्गिडुवेन्
निर्त्रेडि वरुन्द निरप्पित्तैयो, अर्त्रेडित्तै वन्द विळङ्गळिरे 1100

अन् तेटित्तै वन्त-मुझे ही ढूँढते हुए (प्राप्य समझकर) मेरे पीछे आये हुए; इळम् कळिरे-कलभ; पौन् तोटु इवर्किन्त्र-स्वर्ण के दलों से युक्त; पौलन् कुळैयाळ तन्-सुन्दर कुण्डलधारिणी को; तेटि-खोजते हुए; इरुन्तु तयङ्किटुवेन्-यहाँ जो हिचकता रहता है; निन् तेटि वरुन्त-तुमको खोजकर कष्ट उठाऊँ; निरप्पित्तैयो-ऐसी लाचारी बना दी क्या । ११००

केवल मेरी सेवा का अर्जन करने के लिए मेरे साथ आये हुए कलभ-सम लक्ष्मण ! दलोंसहित कमल-समान स्वर्ण के बने कर्णाभरणों से भूषित सीता की खोज में मैं यहाँ ठहरा हुआ दुःख उठा रहा हूँ । अब क्या तुमने तुम्हें खोजने की लाचारी भी पैदा कर दी है ? । ११००

इन्त्रेयिड वादीळि येत्तैमरो, पौन्त्रादीळि यारुपुहल् वारुळराल्
औन्त्रायित्ति वुन्गिळै योरैयैलाम्, कौन्त्राय्कौडि यायिडु वुङ्गुणमो 1101

इन्त्रे-आज ही; इरवातु औळियेन्-विना मरे नहीं रहूँगा; पुकल्वार उळराल्-(यह समाचार) सुनानेवाले होंगे, इसलिए; अम् ओ पौन्त्रातु औळियार्-हमारे जन विना मरे नहीं रहेंगे; उन् किळैयोरै अलाम्-अपने सारे बन्धुजनों को; इत्ति औन्त्राय् कौन्त्राय्-तुमने अब एक साथ मरवा दिया; कौटियाय्-निर्मम हो; इतुवुम् कुणमो-यह भी (अच्छा) गुण है क्या । ११०१

(अब इसका फल क्या होगा—जानते हो ?) मैं मरे विना नहीं रहूँगा । यह समाचार ले जानेवाले कोई अवश्य हो जायेंगे । वह सुनकर हमारे बन्धुजन भी मर जायेंगे, अवश्य । तो अपने सारे बन्धु-लोगों को तुम ही एक साथ मरवानेवाले बन जाओगे । इसलिए तुम बड़े ही निर्मम बन गये । यह भी कोई श्लाघ्य गुण है क्या ? । ११०१

मान्दामुदन् मन्नवर् तम्बळियिल्, वेन्दाहै तुरुन्दपिन् मैयुउवोर्
तान्दामीळि यत्तमि येनुडन्ने, पोन्दायैत्तै विट्टत्तै पोयित्तैयो 1102

मान्ता मुतल्-मान्धाता से लेकर; मन्तवर् तम् वळियिल्-राजाओं से अपनाये गये मार्ग में; वेन्तु आकै-राजा बनना; तुरुन्त पिन्-त्यागने के बाद; मैयु उरुवोर्-सच्चे बन्धुजन; ताम् ताम् औळिय-सब दूर रह गये; तमित्तेन् उट्ते-अकेले मेरे साथ; पोन्ताय्-आये; अत्तै-मुझे; विट्टत्तै-छोड़कर; पोयित्तैयो-चले गये क्या । ११०२

मान्धाता के काल से लेकर जो प्रथा चली आ रही थी, मैंने उसका उल्लंघन किया और राजा बनना छोड़ा । तब मेरे सभी रिश्तेदार छूट गये, पर तुम एक ही अकेले रह गये और मेरे साथ आये । ऐसे तुम अब मुझे छोड़कर चले गये क्या ? । ११०२

अँन्तावुरं यावैळुम् वीळुमिरुन्, दुन्नावुणर् वोय्वुरु मीन्ऱुलवाल्
मिन्तादिडि यादिरुळ् वाय्विळैवी, दँन्नामैन्नु मैन्ऱुति नायहन्ते 1103

अँन् तति नायकन्-मेरे (कवि के) अद्वितीय ईश्वर; अँन्ता उरैया-यों कहते हुए; अँळुम्-उठकर खड़े होते; वीळुम्-गिर जाते; इरुन्तु-उठ बैठकर; उन्ता- (अपने कण्ठों का) विचार कर; उणर्वु ओय्वु उरुम्-सुध-बुध खो जाते; मिन्तातु इटियातु-(विजली के) चमके बिना वज्र नहीं गिरता; इरुळ् वाय्-अन्धकार में; विळैवु-हुआ; ईतु अँन्ताम्-यह क्या है; अँतुम्-कहते; ओन्ऱु अल-एक नहीं, (अनेक तरह से) दुःख का अनुभव किया । ११०३

(कवि कहते हैं—) इस तरह मेरे अद्वितीय परमनायक कहते हुए उठते; फिर शिथिल होकर गिर जाते । फिर उठ बैठते और अपने कण्ठों का स्मरण करके सुध-बुध खो जाते । सोचते कि बिना विजली की चमक के वज्र नहीं गिरता । अँधेरे में यह जो हुआ, उसका कारण क्या है ? (क्या और भी विपदाएँ मिलकर आनेवाली हैं ?) एक नहीं, अनेक प्रकार से वे चिन्ता करते दुःखी हो रहे थे । ११०३

नाडुम्बल शूळल्ह डोरुनडन्, दोडुम्बैयर् शौल्लि युळैन्ऱुयिर्पोय्
वाडुम्बहै शोरु मयङ्गुमाल्, आडुङ्गळि मामद यान्नैयनान् 1104

आटुम्-हिलने-डोलने के स्वभाव वाले; कळि मा मत-अति मदमत्त; यातँ अत्तान्-गज-सम श्रीराम; पल चूळल्कळ् तोळुम्-अनेक स्थानों में; नटन्तु नाटुम्-जाकर ढूँढ़ते; पँयर् चौल्लि ओटुम्-नाम लेते हुए दौड़ते; उळैन्तु-आकुल होकर; उयिर् पोय् वाटुम् वकै-प्राण जाकर मुरझा जायँ, ऐसा; चोरुम्-जर्जर बनते; मयङ्कुळुम्-मूच्छित हो जाते । ११०४

हिलता रहने के स्वभाव के अभिमानी और मत्तगज के समान श्रीराम अनेक स्थानों में जाकर ढूँढ़ने लगे । लक्ष्मण का नाम लेते हुए दौड़े । अधिक दुःख के कारण प्राण सूखने-से लगे । थककर मूच्छित हुए । ११०४

कमैयाळौडु मैन्नुयिर् कावलितिन्, रिमैयादव नित्तुणै ताळ्वुरुमो
शुमैयायुल हूडुळ् रौल्विन्नैयेर्, कमैयादुहौल् वाळ्वरि येत्तैनुमाल् 1105

कमैयाळ् ओटुम्-क्षमाशालिनी सीता के साथ; अँन् उयिर्-मेरे भी प्राणों की; कावलित् नित्तु-रक्षा में रहकर; इमैयातवन्-अनिद्र (जो रहा) वह; इ तुणै ताळ्वुरुमो-इतना विलम्ब करेगा; उलकु ऊटु-संसार में; चुमैयाय् उळल्-भार बनकर घूमनेवाले; तौल् वित्तैयेर्कु-प्राचीन विधिवत्त मुझे; वाळ्वु अमैयातु कौल्-(सन्तोषमय) जीवन प्राप्त नहीं होगा क्या; अरियेन्-कुछ नहीं जान पाता; अँतुम्-कहते (पछताते) । ११०५

लक्ष्मण क्षमाशालिनी सीता के साथ मेरे प्राणों की रक्षा में दत्तचित्त अनिद्र रहा । क्या वह अपने वश से इतना विलम्ब करेगा ? संसार का भार बनकर घूमनेवाले, प्राचीन विधिविताडित मुझे सन्तोष का जीवन नहीं

मिलेगा क्या ? कुछ भी जान नहीं पाता । —श्रीराम ऐसा सोचते हुए बहुत शोकसंतप्त हुए । ११०५

अरुपपालुळ दैलवन् मुन्तवनाय्प्, पिउपपानुडिल् वन्दु पिउक्कवैता
मरुपपाल्वडि वाळ्हाँडु मन्नुयिरैत्, तुउपपानुरु हिन्ऱु तौडर्च्चियिन्वाय् 1106

अरु पाल् उल्लतु एल्-धर्म-पक्ष कोई है तो; अवन्-वह लक्ष्मण; मुन्तवताय्-मेरा अग्रज बनकर; पिउपपान् उरिल्-जन्म ले पाये तो; वन्दु पिउक्क अंता-आकर जन्म ले, कहकर; मरु पाल्-दृढ़ता के साथ; वडि वाळ् कौटु-तीक्ष्ण करवाल लेकर; मन्-नाथ श्रीराम; उयिरै तुउपपान् उरुकिन्ऱु-प्राण-त्याग करने को; तौडर्च्चियिन्वाय्-जब उद्यत हुए, उसके आरम्भ में । ११०६

श्रीराम ने आत्महत्या कर लेने का निश्चय कर लिया । 'अगर धर्म का पक्ष स्थिर रहा तो मेरे छोटे भाई लक्ष्मण का मेरे अग्रज के रूप में जन्म लेना साध्य हो तो हो ।' यह कहते हुए उन्होंने तलवार ली । राजाराम अपने प्राण त्यागने के लिए प्रस्तुत हुए । तब आत्महत्या के कार्य के प्रारम्भ में ही— । ११०६

पेरुन्दान्नेडु मायैयि त्रिउपिरिया, ईरुन्दान्नव णाशि पिडित्तिळैयोन्
शोरुन्दाळिडु पूशल् शैवित्तौळैयिल्, शेरुन्दार्दलु मेतिरु मारुंरुळा 1107

इळैयोन्-छोटे भाई; नैटु मायैयितिल्-लम्बे माया-मोह से; पिरिया-छूटकर; पेरुन्तान्-उससे अलग होकर; अवळ नाचि पिडित्तु-उसकी नाक पकड़कर; ईरुन्तान्-काट दी; चोरुन्ताळ्-उससे वह दुर्बल हुई; इटु पूचल्-उसने जो (रुदन-)स्वर निकाला वह; चैवि तौळैयिल् चेरन्तु आरुत्तुल्-ज्योंही कर्ण-विवर में भरा, त्योंही; तिरुमाल्-श्रीविष्णु (के अवतार श्रीराम); तैरुळा-सजग होकर । ११०७

उधर छोटे भाई लक्ष्मण राक्षसी की माया से मिली मोहावस्था से छूटे । उन्होंने राक्षसी के बन्धन से अलग होकर उसकी नासिका पकड़कर (करवाल से) काट दी । उससे वह राक्षसी पीड़ित हुई और बल खोकर रुदन-स्वर निकालने लगी । वह स्वर श्रीविष्णु के कर्णविवर में आकर भर गया । तभी श्रीराम अपनी भ्रमित अवस्था से सचेत हुए । ११०७

परुंरुंहु	कान्हत्	तरक्कर्	पल्हळल्
मुरुंरुंरु	वैजमर्	मुयल्हिन्	शरैदिरु
उरुंरुयि	वोशैयन्	रुत्ति	यूरुपट्
टरुंरुयि	कुरलव	ळरक्कि	यामैन्ता 1108

परल् तौकु कानकत्तु-कंकड़-भरे जंगल में; अरक्कर्-राक्षस; पल् कळल् मुरुंरु-अनेक पायलों को बजने देते हुए; और वैम् चमर्-एक भयंकर युद्ध; मुयल्किन्ऱु-जो करते हैं उन; अतिरु-के सामने; उरुंरुयि-उच्च स्वर में निकाला गया; ओचै अन्ऱु इतु-शब्द है नहीं, यह; ओरुत्ति-एक स्त्री का; ऊरु पट्टु-

संकटग्रस्त होकर; अरर्रिय कुरल्-रुदन का स्वर है; अवळ्-वह; अरक्कि आम् अँता-राक्षसी ही है, यह सोचकर । ११०८

श्रीराम ने सोचा कि यह स्वर राक्षसों का स्वर नहीं है, जो कंकड़ीले जंगल में अपनी पायलों को वजने देते हुए युद्ध कर रहे हों और अपने शत्रुओं के सामने उच्च स्वर में नाद उठा रहे हों । किन्तु यह एक स्त्री का कण्ठ में पड़कर निकाला हुआ रुदन-स्वर है । वह स्त्री कोई राक्षसी ही होगी । —यह सोचकर— । ११०८

अङ्गियि	नैडुम्बडै	वाङ्गि	याङ्गदु
शैङ्गैयिर्	करियवन्	त्रिरिक्कुम्	वेलैयिल्
पौङ्गिरु	ळप्पुत्तु	तुलहम्	बुक्कदु
कङ्गुलुम्	बहल्लेनप्	पौलिन्दु	काट्टिर्त्ते 1109

करियवन्-नीलवर्ण; नैडुम् पटै-लम्बा शर; चैम् कैयिन् वाङ्कि-लाल (सुन्दर) हाथ में लेकर; आङ्कु-तव; अतु-उसको; अङ्कियिल्-आग्नेयास्त्र के रूप में; त्रिरिक्कुम् वेलैयिल्-प्रयोग करते समय; पौङ्कु इरुळ्-बड़ा हुआ अन्धकार; अ पुत्तुत्तु उलकम्-उस तरफ़ के लोक में; पुक्कतु-जा पहुँचा; कङ्कुलुम्-रात भी; पक्ल् अँत-दिन के समान; पौलिन्दु-प्रकाशमय बनकर; काट्टिर्त्तु-दिखाई दिया । ११०९

नीलवर्ण श्रीराम ने एक लम्बा शर लिया, उसे आग्नेयास्त्र के रूप में अभिमन्त्रित करके प्रेषित किया । तो अन्धकार अण्ड के उस पार के लोक में चला गया । इसलिए रात भी दिन के समान प्रकाशमय बन गयी । ११०९

नैडुवरै	पौडिपड	निवन्द	मामरम्
औडिपड	निलमह	ळुळैय	वूङ्गैलाम्
शडशड	वैनुमौलि	तळैप्पच्	चालवुम्
मुडुहिनन्	कालिन्वैड्	गालिन्मुम्	मैयान् 1110

वैम् कालिन् मुम्मैयान्-प्रतापी पवन के तिगुने वेग से; नैडु वरै पौटि पट-बड़े पर्वतों को चूर करते हुए; निवन्त मा मरम् औटि पट-ऊँचे बड़े वृक्षों को तोड़ते हुए; निल मकळ् उळैय-भूमिदेवी को दुःख देते हुए; ऊङ्कु अँलाम्-सभी ओर; चट चट अँतुम् औलि-‘तड़’, ‘तड़’ शब्द; तळैप्प-अधिक होने देते हुए; कालिन्-पैदल; चालवुम् मुटुकिन्नन्-जल्दी-जल्दी गये । १११०

श्रीराम सवेग जाने लगे । उनकी गति प्रतापी पवन की गति की त्रिगुणी थी । उस वेग में बड़े-बड़े पर्वत चूर हुए । ऊँचे और बड़े तरु गिरे । भूदेवी भी दुःखी । सब ओर ‘तड़-तड़’ शब्द भर उठा । वे इस रीति से पैदल चले । १११०

औरङ्गुयर्न्	दुलहिन्मे	लूळिप्	पेरच्चियुळ्
करङ्गडल्	वरुवदे	यनैय	काट्चियान्
पेरुन्दुणैत्	तम्मुत्तै	नोक्किप्	पित्तवन्
वरुन्दलै	वरुन्दलै	वळ्ळि	योयैता 1111

ऊळि पेरच्चिः उळ्-युगान्तर में; उलकिन् मेल्-पृथ्वी पर; करम् कटल्-नीला सागर; औरङ्कु उयर्न्तु-एक साथ उमंगकर; वरुवतु अतैय-आता हो जैसे; काट्चियान्-दृश्यमान; पेरुम् तुणै-परमपालक; तम् मुत्तै-अपने ज्येष्ठ आता को; पित्तवन्-अनुज लक्ष्मण; वळ्ळियोय्-उदार प्रभु; वरुन्तलै वरुन्तलै अँता-कातर नहीं हों, कातर मत होइए, कहते हुए । ११११

श्रीराम युगांतर के काल में उठकर भूमि पर बढ़ते चलनेवाले समुद्र के समान प्रचण्ड वेग से जा रहे थे । परमरक्षक अपने ज्येष्ठ को उस तरह आते देखकर लक्ष्मण ने कहा कि उदार प्रभु ! दुःखी मत हों ! दुःखी मत हों ! (ऐसा कहकर—) । ११११

वन्दनै	नडियत्तेन्	वरुन्दल्	वाळिनिन्
अन्दमि	लुळ्ळमैन्	उरियक्	कूव्वान्
शन्दमैन्	मलर्पुरै	शरणञ्	चारुन्दत्तन्
शिनदिन्	नयनम्बन्	दनैय	शैय्यैयान् 1112

चिन्तिन् नयतम्-खोया हुआ नेत्र; वन्तु अतैय चैय्कंयान्-फिर मिला हो, ऐसा कार्य करते हुए लक्ष्मण; वन्तत्तेन् अटियत्तेन्-आ गया, दास मैं; वरुन्तल्-दुःखी मत हों; निन् अन्तम् इल् उळ्ळम्-आपका अनन्त प्रेम-भरा मन; वाळि-जिए; अँतु-ऐसा; अरिय कूव्वान्-समझाते हुए जो बोले; चन्तम् मैन् मलर् पुरै-सुन्दर, कोमल कमल-सम; चरणम्-(श्रीराम के) चरणों पर; चारुन्दत्तन्-नमै । १११२

लक्ष्मण की पुनःप्राप्ति श्रीराम के लिए खोये नयन की पुनःप्राप्ति के समान अतिशय सुखदायक थी । वे, यह कहते हुए कि दास मैं आ गया । आपका अनन्त प्रेम-भरा मन जिए, जिससे श्रीराम को अपना आना विदित हो जाय, आये और सुन्दर और कोमल कमल-सम श्रीराम-चरणों पर विनत हुए । १११२

ऊरुर्	कण्णिनी	रौळुह	निन्ऱवन्
इरुळिळ्	गन्ऱिनैप्	पिरिवुर्	रेङ्गिनिन्
आरुला	दरुव	दरिदि	नैय्दिडप्
पारुर्	पनिमुलै	याविन्	पान्मैयान् 1113

ऊरु उरु-लोट के समान (बहनेवाले); कण्णिन् नीर् औळुक-आँखों के आँसू बहाते हुए; निन्ऱवन्-स्थित होकर श्रीराम; ईरु इळम् कन्ऱिनै-अपने व्याये छोटे बछड़े से; पिरिवु उरु-अलग होकर; एङ्किं निन्ऱु-तरसते हुए रहकर; आरुलानु-सहन सकने से; अरुवन्तु-रँभाती रही; अरितिन् अँय्तिटि-फिर वह बछड़ा अकस्मात

मिल गया; पाल् तुङ्ग-तब दूध से भरकर; पति मुलै आविन्-काँपनेवाले थन की गाय की-सी; पान्मैयान्-स्थिति में आकर । १११३

श्रीराम की आँखों से आँसू स्रोत से बहनेवाले जल के समान निकल आये । वे उस गाय की स्थिति में आये, जो अपने अभी ब्याये बछड़े को खो चुकी और वियोग की असह्य वेदना से रँभाती रही हो और जिसके पास अकस्मात् बछड़ा आ गया हो, जिससे उसका थन दूध से भरकर काँपने लगा हो ! । १११३

तळुवित्तन्	पन्मुडै	तारैक्	कण्णिनीर्क्
कळुवित्त	नाण्डवन्	कनह	मेत्तियै
वळुवित्तै	यामैत	मत्तक्का	डेङ्गितेन्
अळुवैन्	मलैयैन्	वियैन्द	तोळिनाय् 1114

आण्डु-तब; अवन् कत्तक मेत्तियै-उनके स्वर्ण-सम सुन्दर शरीर को; पन् मुडै तळुवित्तन्-अनेक बार गले से लगाकर; कण्णिन् नीर् कळुवित्तन्-अश्रुजल से नहला दिया; अळु अँत मलै अँत-खम्भे के समान और पर्वत के समान; इयैन्त-बने; तोळिताय्-कन्धों वाले; वळुवित्तै आम्-खो गये; अँत-ऐसा; मत्तम् कौण्डु-मन में धारणा करके; एङ्कितेन्-आर्त रहा । १११४

श्रीराम ने लक्ष्मण के कनकवर्ण शरीर को अनेक बार अपने आलिंगन में भर लिया । अपने आँसू से उन्हें नहलाया । खम्भे-सम और पर्वत-सम कन्धों वाले ! तुम खो ही गए, ऐसा मन में निश्चय करके मैं बहुत आर्त रहा । १११४

अँत्तनैयङ्	गैय्दिय	दियम्बु	वार्यैन्
अत्तनव	नः(ह)वैला	मरियक्	कूडलुम्
इत्तनलु	मुवहैयु	मिरण्डु	मैय्दित्तान्
तत्तनल	दौरुपौरु	डत्तक्कु	मेलिलान् 1115

तन् अलतु-खुद को छोड़; और पौरुळ्-कोई वस्तु; तत्तक्कु मेल् इलान्-जिनके ऊपर न रही, उन श्रीराम ने; अङ्कु अँय्तियतु अँत्तै-वहाँ क्या हुआ; इयम्पुवाय्-बतलाओ; अँत-ऐसा (पूछा,) पूछने पर; अत्तवन्-लक्ष्मण के; अ.तु अलाम् अरिय कूडलुम्-समझाकर कहने पर; इत्तलुम्-दुःख; उवकैयुम्-और सन्तोष; इरण्डुम् अँय्तितान्-दोनों का अनुभव किया । १११५-

श्रीराम ने, जिनके ऊपर उनको छोड़कर कोई नहीं रहा, लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वहाँ क्या हुआ ? 'बतलाओ' कहने पर लक्ष्मण ने वहाँ की घटी सारी बातें समझाकर कही । तब श्रीराम को एक साथ दुःख और सन्तोष दोनों का अनुभव हुआ । १११५

आय्वुरु	पैरुङ्गड	लहतु	ळायितार्
पाय्दिरै	वरुन्दोरुम्	बरियर्	पालरो
तीय्वितैप्	पिउविर्वेन्	जिउयिर्	पट्टयाम्
ओय्वुरु	तुयर्वर	वुट्क	नोन्मैयो 1116

आय्वु उरु-विचारणीय; पैरुम् कटल अकत्तुळ् आयितार्-विशाल समुद्र में जो फँस गया; पाय् तिरै-(वह) लहराती आती लहर; वरुम् तौरुम्-जब-जब आती है, तब; परियल् पालरो-क्षुब्ध हो सकता है क्या; ती वितै-बुरे कर्म के कारण; पिउवि वैम् चिरैयिल्-जन्म रूपी (बन्धन में) कारा में; पट्ट नाम्-पड़े हमें; ओय्वु उरु-निरन्तर; तुयर् वर-कष्ट के आने पर; उट्कल्-कातर होना; नोन्मैयो-साहस का हेतु होगा क्या । १११६

लक्ष्मण ने श्रीराम को समझाया । जब कोई समुद्र-मध्य फँस गया, तो यह विचारणीय बात है कि हर लहर के आते समय उसे दुःख करना क्या कोई अर्थ रखता है ? कर्मगति के अनुसार जन्म की कारा में बन्द हमें निरन्तर संकट आते रहेंगे । तब कातर होना क्या साहस का लक्षण होगा ? । १११६

मूवहै	यमररु	मुलह	मुम्मैयुम्
मेवरुम्	पहैयैत्तक्	काह	मेल्वरिन्
एवरे	कडप्पव	रैम्बि	नोयुळै
आवदै	वलियिन्ति	यरणुम्	वेण्डुमो 1117

अम्पि नो उळै-भैया, तुम हो; इत्ति वलि आवते-अब शक्ति मिल गयी; अरणुम् वेण्डुमो-और कोई रक्षण चाहिए क्या; मू वकै अमररुम्-त्रिदेव; उलकम् मुम्मैयुम्-त्रिलोक; मेवु अरुम् पकै-दुस्तर शत्रु; अँत्तक्कु आक-मेरे, बनकर; मेल् वरिन्-चढ़ आये तो भी; एवरे कडप्पवर्-कौन मुझे पार पा सकेगा । १११७

श्रीराम ने उत्साह के साथ उत्तर दिया । भैया ! तुम मेरे कनिष्ठ सहोदर साथ ही ! मेरा साहस बढ़ गया । अब मुझे और किसी रक्षण की आवश्यकता पड़ेगी क्या ? (नहीं ।) त्रिदेव क्या त्रिलोक भी मिलकर मेरे साथ शत्रुता करके चढ़ आये तो क्या कोई मुझे हरा सकेगा ? । १११७

पिरिबवर्	यावरुम्	बिरिह	पेरिडर्
वरुवत्त	यावैयुम्	वरुह	वारुहळल्
शौरुवलि	वीरनिर्	शोरु	मल्लदु
परुवर	लैन्वयिर्	पयिलर्	पालदो 1118

पिरिपवर् यावरुम्-छोड़नेवाले सभी; पिरिक-छोड़ जायें; वरुवत्त-आनेवाले; पेरु इटर्-बड़े कष्ट; यावुम् वरुह-सब आ जायें; चौर वलि-युद्धसाहसी; वार् कळल् वीर-लम्बी पायल से शोभित वीर; परुवरल्-(मेरे सारे) दुःख; निन् तीरुम्-

तुम्हारे द्वारा दूर हो जायेंगे; अल्लतु-नहीं तो; अँन् वयिन्-मेरे पास; पयिल्ल पालतो-आ सकेंगे क्या । १११८

मुझे छोड़ जानेवाले भले छोड़ जायें ! आनेवाले सारे संकट आ जायें । युद्ध में साहस दिखानेवाले पायलधारी वीर ! आनेवाले संकट तुम्हारे द्वारा निवारित हो जायेंगे । नहीं तो वे मेरे पास आ सकेंगे क्या ? । १११८

वन्नीळिल्	वीरपोर्	वलिय	रक्कियै
वैन्नूपिन्	मीण्डेन्	नैन्वि	ळम्बिनाय्
पुन्नीळिल्	लत्तैयवळ्	पुरिन्द	शीड्डत्ताल्
कौन्ऱिलै	पोलुमाऱ्	कूड्वा	यैन्ऱान् 1119

वल् तौळिल्-वीर-कठोर (युद्ध-)कार्य में दक्ष; पोर् वलि अरक्कियै-युद्ध में बल दिखानेवाली राक्षसी को; वैन्नू-जीतकर; पिन्-फिर; मीण्डेन्-लौट आया; अँन् विळम्पिनाय्-ऐसा कहा; लत्तैयवळ्-उसके; पुन् तौळिल् पुरिन्द-नीच कार्य करने से उत्पन्न; शीड्डत्ताल्-कोप से; कौन्ऱिलै पोलुम्-मारा नहीं क्या; कूड्वाय्-कहो; यैन्ऱान्-कहा । १११९

कठोर युद्धकार्य में दक्ष वीर ! तुमने कहा था कि युद्ध में बल दिखानेवाली राक्षसी को जीतकर लौट आया । उसने बुरा और नीच काम किया था । उससे क्रुद्ध होकर तुमने उसे मारा नहीं क्या ? बताओ—श्रीराम ने जानना चाहा । १११९

तौळैपट्टु	मूक्कोडु	शैवितु	मित्तुह
वळैयैयि	ऱिदळौडु	मरिन्दु	माऱ्ऱिय
अळवैयिऱ्	पूशलिट्	टरऱ्ऱि	त्ताळैन्
इळैयवन्	विळम्बिनिन्	ऱिरुहै	कूपिनान् 1120

तौळै पट्टु-छेद बने, ऐसा; मूक्कु ओट्टु-नाक के साथ; शैवि-(उसके)-कान; इतळ् ओट्टुम्-अधरों के साथ; वळै अयिऱुम्-वक्र दांतों को; तूमित्तु उक्-टुकड़े कर गिराते हुए; अरिन्दु तलवार से काटकर; माऱ्ऱिय-अळवैयिल्-उसको विकृत बनाया, तब; पूचल् इट्टु-शोर मचाते हुए; अरऱ्ऱिताळ्-विलापी; अँन्-ऐसा; इळैयवन् विळम्पि-छोटे भाई ने कहकर; निन्नू-खड़े होकर; इरु कै कूपिनान्-दोनों हाथ जोड़े । ११२०

लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि नहीं । मैंने उसकी नाक को, छेद बन जाय ऐसा; अधरों और वक्र दांतों को खण्ड होकर गिर जायें, ऐसा तलवार से काटा । उसको इस तरह विकृत कर दिया । तभी वह ऊँचे स्वर में चिल्लाई । यह कहकर लक्ष्मण ने श्रीराम के सामने हाथ जोड़कर नमस्कार किया । फिर वह स्थिर खड़े-रहे । ११२०

तौल्लिरु	डत्तिरुकोलत्	तौडङ्गि	ताळैयुम्
कोल्ललै	नाशियैक्	कोय्दु	नीक्किताय्
वल्लैनी	मनुमुदन्	मरबि	नोयैत्तप्
पुल्लित्त	नुवहैयिर्	पौरुमि	विम्मुवान् 1121

तौल् इरुल् ततिल्—बहुत घने अन्धकार में; कोल—तुम्हें मारने का; तौडङ्कि-ताळैयुम्—जिसने उपक्रम किया, उसे भी; कोल्ललै—तुमने नहीं मारा; नाशियै कोय्तु नीक्किताय्—नाक को काटकर अलग किया; मनु मुतल् मरपित्तोय—मनु-प्रभृति के कुलोत्पन्न; नी वल्लै—तुम (उस कुल की रीति के पालन में) समर्थ निकले; अत्त—कहकर; उवकैयिल् पौरुमि—सन्तोष से भरकर; विम्मुवान्—फूल उठे; पुल्लित्तन्—आलिंगन कर लिया। ११२१

श्रीराम ने वह सुनकर साधुवाद दिया। इस घने अन्धकार के समय में उसने तुम्हें मारने का उपक्रम किया था। तो भी तुमने उसे केवल नाक काटकर जीवित छोड़ दिया। मनुप्रभृति कुल में उत्पन्न कुमार! तुम उस कुल की रीति के पालन में समर्थ निकले। श्रीराम अत्यधिक आनन्द से भर उठे। उन्होंने लक्ष्मण का आलिंगन कर लिया। ११२१

पेररुन्	दुयिरिर्	पैयर्त्तु	ळारैन्
वीरनुन्	दम्बियुम्	विडिय	नोक्कुवार्
वारुणम्	नित्तैन्दन्	वान	नोरुण्डु
तारणित्	ताङ्गौरु	गिरियिर्	रुङ्गित्तार् 1122

पेर् अरुम् तुयर्—दूर करने में कठिन दुःख से; इरै पैयर्त्तु उळार् अत्त—थोड़ा निवृत्त हुए जैसे; वीरनुम् तम्पियुम्—श्रीरघुवीर और उनके छोटे भाई; विडियल् नोक्कुवार्—प्रभात की प्रतीक्षा में; वारुणम् नित्तैन्दन्—वरुण-मन्त्र-जाप कर; वान् नोर् उण्डु—आकाशगंगा का जल पीकर; तारणित्तु—आराम करके; अङ्कु—वहाँ; ओरु किरियिल्—एक गिरि पर; तङ्कित्तार्—ठहरे। ११२२

दोनों भाइयों का कठोर और अनिवार्य दुःख थोड़ा शान्त हुआ। प्रभात की प्रतीक्षा करनी थी। उन्होंने वरुणमन्त्र का जाप किया, तो आकाशगंगा का जल प्राप्त हुआ। उसको पीकर उन्होंने अपनी प्यास बुझा ली। फिर वे वहाँ एक गिरि के थल पर ठहरे। ११२२

कल्लहल्	वैळ्ळिडैक्	कान्नि	नुण्मणल्
पल्लव	मलर्होडु	पडुत्त	पायलिल्
अल्लैयि	रुयिरित्तो	डिरुन्दु	शायन्दन्
मैल्लडि	यिळैयवन्	वरुड	वीरने 1123

वीरन्—श्रीरघुवीर; कानिल्—जंगल में; अकल् कल् वैळ्ळिटै—विशाल पर्वत

के खुले थल में; तुण् मणल्-बारीक वालू पर; पल्लवम् मलर् कौटु-पल्लवों और फूलों को; पटुत्त पायलित्—(लक्ष्मण द्वारा) बिछाकर बनी शय्या में; मैल् अटि—कोमल चरणों को; इळैयवन् वरुट-कनिष्ठ के सहलाते; अल्ले इल् तुयरिन् ओट्ट इरुत्तु—अपार दुःख के साथ रहकर; चायन्तत्त-लेटे । ११२३

गिरि के ऊपर खुले थल में लक्ष्मण ने बारीक वालू बिछाया । उसके ऊपर पल्लवों और फूलों को डसाकर शय्या बनायी । श्रीराम अपार दुःख का अनुभव करते हुए उस शय्या पर लेटे । लक्ष्मण उनके कोमल चरण दाबते-सहलाते रहे । ११२३

मयिलियल्	पिरिन्दपिन्	मान	नोयित्ताल्
अयिल्विल	नौरुपौरु	ळवल	मैय्दलाल्
तुयिल्विल	नैन्बदु	शौल्लड्	पालदो
उयिर्नैडि	दुयिर्प्पिडै	यूश	लाडुवान् 1124

मयिल् इयल् पिरिन्त पित्-मयूर की-सी आभा वाली सीता के वियोग के बाद; मात्त नोयित्ताल्—अपमान के रोग से; और पौरुळ् अयिल्वु इलन्—कोई भी पदार्थ न खाकर; अवलम् अयत्तलाल्—श्रीराम शोकातुर रहे, इसलिए; नैदितु उयिर्प्पु इटै-लम्बी साँसों के मध्य; उयिर् नैदितु ऊचल् आदुवान्—जिनके प्राण झूलते रहे वे; तुयिल्वु इलन्—अनिद्र रहे; अन्पु—यह भी; चौल्लड्पालतो—कहना चाहिए क्या । ११२४

मयूर की-सी छटा वाली सीताजी से वियुक्त होने के बाद श्रीराम को अपमान का रोग खाये जाता था । इसलिए वे कुछ खाते नहीं थे । दुःख सहते रहने से ठण्डी आहें भरते थे और प्राण मानो उनके कारण झूले में पड़कर डोल रहे थे । वे अनिद्र ही रहे—यह भी कहने की आवश्यकता है क्या ? । ११२४

मानवळ्	मैय्यिर्	मडक्क	लामैयिन्
आन्तदो	वन्नेनि	लरक्कर्	मायमो
कानह	मुळुवदुड्	गण्णि	नोक्कुड्गाल्
शानहि	युरुवैत्त	तोन्ऱुन्	दन्मैये 1125

कातकम् मुळुवतुम्—जंगल भर में; कण्णित् नोक्कुम् काल्—अपनी आँखों से देखता हूँ, तब; चात्तकि उरु अँत—जानकी का रूप ही; तोन्ऱुम् तन्मै—दिखाई देता है, वह प्रकार; मात्तवळ्—मानवती (या मानवी); मैय्—(सीताजी) के रूप को; इडै मडक्कलामैयिन्—किंचित भी नहीं झूलता, इसलिए; आन्ततो—ऐसा होता है क्या; अन्ऱु अँतिल्—नहीं तो; अरक्कर् मायमो—राक्षसों की माया है । ११२५

श्रीराम को सर्वत्र सीता को ही देखने का भ्रम हो रहा था । उन्होंने आप ही आप पूछा कि अपनी आँखों से जहाँ भी देखता हूँ, वहाँ जंगल भर में जानकी का रूप ही दिखाई देता है । ऐसी बात क्यों ? उस

माननीया का रूप मैं सदा स्मरण कर रहा हूँ, इसलिए ? या यह राक्षसों की माया से होती है ? । ११२५

करङ्गुल्लर्	चेयरिक्	कण्णि	कड्पितोर्क्
करङ्गल	मरुङ्गुवन्	दिरुप्प	वाशंयाल्
ओरुङ्गुल्लर्	तळुवुवै	नूरु	काण्गिलेन्
मरुङ्गुल्लपो	लान्तदो	वडिवु	मैल्लवे 1126

करम् कुल्ल-काले केश से; चेय् अरि कण्णि-और लाल लकीरों से युक्त आँखों से भूषित; कड्पितोर्क्कु-पतिव्रता स्त्रियों का; अरम् कलम्-श्रेष्ठ आभरण-सम सीताजी; मरुङ्कु वन्तु इरुप्प-मेरे पार्श्व में आकर रहती; आचंयाल्-प्रेम से; ओरुङ्कु उड-खूब कसकर; तळुवुवैन्-आलिंगन करता; ऊरु काण्गिलेन्-स्पर्श का अनुभव नहीं मिलता; वडिवुम्-उसका शरीर भी; मैल्ल-धीरे-धीरे; मरुङ्कुल् पोल् आन्तो-उसकी कटि के समान (अविद्यमान) हो गया क्या । ११२६

(उन्हें अनोखा अनुभव होता है । वे कहते हैं—) काला केश, लाल ढोरों से युक्त आँखें —इनसे भूषित और पतिव्रता स्त्रियों के लिए आभरण-सम जो हैं, वह सीता मेरे पास आकर रही । तब अनुराग के कारण मैंने उसे कसकर आलिंगन किया । पर वह मेरे आलिंगन में नहीं आयी । स्पर्श का अनुभव ही नहीं हुआ । तब क्या उसका शरीर भी उसकी कमर के समान अविद्यमान हो गया ? । ११२६

पुण्ड	रिहप्पुदु	मलरिड्	रेन्बोदि
तौण्डैयज्	जेयीळित्	तुवर्त्त	वायमु
दुण्डनै	तीण्डव	ळुळैय	ळल्लळाल्
कण्डुयि	लन्त्रियुड्	गनवुण्	डाहुमो 1127

पुतु पुण्डरिक् मलरिल्-नये कमल-पुष्प में; तेन् पोति-शहद से भरे; तौण्डे-बिम्ब-फल के समान; अम्-सुन्दर; चेय् ओळि-लाल प्रकाश से युक्त; तुवर्त्त-प्रवाल-सम; वाय् अमुतु उण्डत्तैन्-अधरामृत का पान किया; ईण्डु-अब; अवळ्-वह; उळ्ळैयळ् अल्लळ् आल्-पार्श्वस्था नहीं है, इसलिए; कण् तुयिल् इन्त्रियुम्-आँखें जब नहीं सोतीं, तब भी; कत्तवु उण्डाकुमो-स्वप्न होगा क्या । ११२७

(और एक भ्रम देखिए ।) नवविकसित कमल के समान उसके मुख में शहद-भरे अधर हैं, जो बिम्बफल-समान है, और प्रवाल के समान भी । मैंने उन अधरों का अमृत-पान किया । पर असल में वह मेरे पास नहीं पायी गयी । फिर क्या वह स्वप्न था ? मैं तो निद्रारहित समय बिताता हूँ । अनिद्र अवस्था में भी स्वप्न होगा क्या ? । ११२७

मण्णिन्नुम्	वान्निनु	मड्डै	मून्त्रिन्नुम्
अण्णिन्नुम्	बैरियदो	रिड्डवन्	दैय्दिनाल्

तण्णरुड्	गरुड्गुळ्	चनहन्	मामहल्
कण्णिनु	नैडियेयो	कौडिय	कड्गुले 1128

मण्णिनुम् वात्तिनुम्—पृथ्वी में और आकाश से; मड्डे मून्डित्तुम्—अन्य तीनों भूतों से; अण्णिनुम्—भावना से; पेरियतु ओर्—बड़ी एक; इटर् वन्नु अय्तिताल्—विपदा आयगी तो; कौडिय कड्कुले—क्रूर रात; तण् नरुम्—शीतल सुगन्धित; करुम् कुळल्—काली केशिनी; चत्तकन् मा मकळ्—जनक की श्रेष्ठ पुत्री की; कण्णिनुम्—आँखों से; नैडियेयो—अधिक बड़ी होगी क्या । ११२८

(श्रीराम रात्रि से पूछते हैं कि) पृथ्वी, आकाश और अन्य तीन जल, अनिल और अनल आदि भूतों से भी, मन के विचारों से बड़ी कोई व्यथा मुझे होगी तो, हे क्रूर रात ! तुम सीता की आँखों से भी बड़ी हो जाओगी क्या— जिस सीता के शीतल सुगन्धित काले केश हैं और जो जनक की महान पुत्री है ? । ११२८

अप्पुडे	यलङ्गुमी	नमरु	मार्हलि
उप्पुडे	यिन्दुवैन्	रुदित्त	वृद्धित्ती
वैप्पुडे	विरिहदिर्	वैदुप्प	मैय्यैलाम्
कौप्पुळम्	वौडित्तदो	कौदिक्कुम्	वानमे 1129

अलङ्कु मीन्—संचरणशील मछलियाँ; अमरुम्—जिसमें वास करती हैं, उस; अप्पु उटै—जल-भरे; आर् कलि—शब्दायमान समुद्र; उ पुटै—के मध्य; इन्नु अन्नू—चन्द्र नाम के साथ; उतित्त—उदित; ऊळि ती—युगान्त की अग्नि की; वैप्पु उटै—गरम; विरि कतिर्—विस्तृत किरणें; वैदुप्प—जलाती हैं, तो; कौदिक्कुम् वातम्—तपते आकाश के; मैय् अल्लाम्—शरीर पर; कौप्पुळम् पौडित्ततो—फफोले बने हैं क्या । ११२९

आकाश में नक्षत्र देखकर श्रीराम सोचते हैं कि क्या ये आकाश के शरीर में निकले फफोले हैं, जो संचरणशील मछलियों से भरे समुद्र-मध्य-उत्पन्न इन्दु नाम की युगान्त की अग्नि की गरम किरणों के तपाने से निकल आये हैं ? । ११२९

इन्नन्	विन्नन्	पन्नन्	योडळिन्दु
मन्नवर्	मन्नन्	मदलै	मयङ्गित्तान्
अन्नन्	कण्डन	नल्हित	तैन्नत्
तुन्निय	शौङ्गदिर्च्	चैल्वन्	तोन्निरान् 1130

इन्नन् इन्नन्—ऐसी-ऐसी बातें; पन्नन्—कहते हुए विलाप कर; ईदु अळिन्नु—बल खोकर; मन्नवर् मन्नन्—राजाधिराज के; मदलै—पुत्र; मयङ्गित्तान्—सुधिहीन हो गये; अन्नन् कण्डत्तन्—उन (के फण्टों) की देखकर; अल्किनन् अन्नन्—(स्वयं) दुःखी हैं, समझकर; तुन्निय—घनी; चैल् कतिर् चैल्वन्—लाल किरणों के सूर्य; तोन्निरान्—(धीरज बंधाने के लिए) प्रकट हुए । ११३०

श्रीराम ऐसी-ऐसी बातें कहकर बहुत प्रलाप कर रहे थे। राजाधिराज दशरथ के पुत्र श्रीराम, सत्त्व खोकर सुधहीन हो गये। ये सारी बातें सूर्य ने देखीं। श्रीराम बहुत संकट उठा रहे हैं—यह विचार कर (उनको मानो धीरज दिलाने के लिए) लाल किरणों से घने रूप से युक्त किरणमाली प्रकट हो आये। ११३०

11. कवन्दन् वदैप् पडलम् (कबन्ध-वध पटल)

निलम्बोर्इ	यिलदैत	निमिरन्द	कड्पिनाळ
नलम्बोर्इ	कूर्दरु	मयिलै	नाडिये
अलम्बुरु	पडवैयु	मळुव	वार्मैत्तप्
पुलम्बुरु	विडियलिऽ	कडिडु	पोयितार् 1131

निलम् पोर्इ इलतु-भूमिदेवी क्षमाशील नहीं (इनके सामने); अँत-ऐसा; निमिरन्त-बढ़ी हुई (क्षमाशीला); कड्पिनाळ-पतिव्रता; नलम् पोर्इ-सौंदर्य-भार को; कूर्तरु-अधिक वहन करनेवाली; मयिलै-मयूराभा (सीता) को; नाडिये-खोजते हुए; अलम्पु उरु पडवैयुम्-उड़ते रहनेवाले पक्षी भी; अळुव आम्-रोते हैं, ऐसा कहा जाय; अँत-इस रीति से; पुलम्पु उरु-पक्षियों के बोल से भरे; विडियलि-प्रभात समय में; कटितु पोयितार्-सवेग गये (दोनों भाई)। ११३१

प्रभातकाल हुआ तो पक्षी शब्द करते हुए उड़ जाने लगे। तब ऐसा लगता था, मानो वे भी रो रहे थे। दोनों वेग के साथ भूमि की क्षमाशीलता को नहीं के बराबर कर देनेवाली क्षमा-भार से युक्त, अत्यन्त सुन्दरी, पतिव्रता व मयूराभा सीताजी को खोजते हुए चले। ११३१

ऐयैन् दडुत्त योशन्नैयि निरट्टि यडवि पुडैयुडुत्त
वैयन् दिरिन्दार् कदिरवन्तुम् वानि नाप्पण् वन्दुडुऽऽन्
अय्युज् जिलैक्कै यिरुवरुज्जैन् त्रिरुन्दे नोट्टि यैव्वुयिरुम्
कैयिन् वळैत्तु वयिऽऽडक्कुड् गवन्दन् वनत्तिन् कण्णुऽऽर् 1132

ऐ ऐन्तु अटुत्त योचत्तैयिन्-पाँच के पाँच (पचीस) योजन की; इरट्टि-डुगुनी (पचास योजन) दूर; अटवि पुट्टे उटुत्त वैयम्-जंगल में फैली भूमि में; तिरिन्दार्-खोजते फिरे; कदिरवन्तुम्-सूर्य भी; वानि नाप्पण्-आकाश-मध्य; वन्तु उऽऽर्-आ पहुँचे; अय्युम् चिलै कै-शरप्रेषक धनुर्हस्त; इरुवरुम्-दोनों; चैन्ऽ-चलकर; इरुन्ते नोट्टि-(एक ही स्थान पर) रहकर ही हाथ बढ़ाकर; अँ उयिरुम्-किसी भी जीव को; कैयिल् वळैत्तु-अपने हाथों से समेटकर; वयिऽऽ अटक्कुम्-अपने पेट में समा लेनेवाले; कवन्तन्-कबन्ध के; वनत्तिन् कण्-वन में; उऽऽर्-आ पहुँचे। ११३२

वे उस जंगली मार्ग में पचास योजन चले। तब सूर्य भी आकाश-मध्य आ गये। धनुर्हस्त दोनों कबन्ध के वन में पहुँच गये। कबन्ध

एक ही स्थान पर रहकर अपने दोनों हाथों का घेरा बनाता और उनके क्रीड में आनेवाले सभी प्राणियों को समेट लेकर अपने पेट में डाल लेता । ११३२

अरुप्पिन्ड	गड्युड	याने	येमुदल्
उरुप्पुडै	युयिरैला	मुलेन्दु	शाय्न्दत्त
वैरिप्पुरु	नोक्किन्	वैरुवु	हिन्डन्
परिप्पुरु	वलैयिडैप्	पट्ट	पान्मैय 1133

यातये मुतल्-गज से लेकर; अरुम्पु इतम् कटै उड-चींटियों के कुल तक; उरुप्पु उटै-अंगों-सहित; उयिर् अलाम्-प्राणी सब; उलेन्दु-संकट में पड़कर; चाय्न्दत्त-मर जाते थे; वैरिप्पु उड-ताकनेवाली; नोक्किन्-आँखों के (सिंह, बाघ आदि); वैरुवुकिन्डन्-भयभीत होते थे; परिप्पु अड-अलग करने अयोग्य; वलै इटै पट्ट-जाल में फँसे हुए जैसे; पान्मैय-हो जाते थे । ११३३

गजसमूह से लेकर चींटीसमूह तक के सारे प्राणी इस तरह उसके वश में आ जाते और कष्ट उठाकर मर जाते । भयानक आँखों वाले जानवर (जैसे सिंह, बाघ आदि) भी डर जाते । अकाट्य जाल में फँस गये हों, ऐसी स्थिति में सभी जानवर रह जाते । ११३३

मरबुळि	निडुत्तिलन्	पुरक्कु	माण्विलन्
उरनिल	नौरवन्नाट्	टुयिर्हळ्	पोल्वत्त
वैरुवुव	शिन्दुव	कुविव	विम्मलो
डिरिवन	मयङ्गुव	वियल्वु	नोक्किनार् 1134

मरपु उळि निडुत्तिलन्-(प्रजाजनों को) उन उनके सम्प्रदाय पर नहीं स्थित रखता; पुरक्कुम् माण्पु इलन्-पालन का श्रेय नहीं रखता; उरन् इलन्-बल नहीं रखता; नौरवन्-ऐसे एक राजा के; नाट्टु उयिर्कळ् पोल्वत्त-राज्य के जनो के समान (रहनेवाले); वैरुवुव-डरनेवाले; चिन्तुव-अस्त-व्यस्त भागनेवाले; कुविव-एक जगह पर एकत्रित होनेवाले; विम्मल् ओटु इरिवत्त-तड़पते हुए दौड़नेवाले; मयङ्गुव-मूर्च्छित पड़े हुए; इयल्पु-ऐसे रहनेवालों (प्राणियों) की स्थिति; नोक्किनार्-देखी । ११३४

वहाँ प्राणियों की हालत ऐसे राजा के राज्य के प्रजाजनों की-सी हो गयी, जो प्रजाजनों को उनके अपने-अपने योग्य मार्ग में स्थिर रख नहीं सकता, उनका पालन करने का श्रेय नहीं रखता और जो बली नहीं रहता । वे प्राणी भयभीत हो जाते; बिखर जाते; एक जगह पर एकत्रित होते; तड़पते हुए भागते या मूर्च्छित हो जाते । श्रीराम ने उनकी यह स्थिति देखी । ११३४

माल्वरै	युरुण्डन्	वरुव	मामरम्
काल्वरिन्	दिरुवन्	कान्	यारुहळ्

मेलुळ
शूनमुदिर

तिशैयौडुम्
मेहङ्गळ

वैळिह
शुरुण्डु

ळावन
वीळ्वत्त 1135

माल् वरै-बड़े पर्वत; उरुण्टत्त वरुव-जो लुढ़कते आते हैं; मा मरम्-बड़े वृक्ष; काल् पश्चिन्तु-जड़ों के कटने से; इश्वत्त-टूटकर (जो) गिरते हैं; कात् याङ्कळ-जंगली नदियाँ; मेल् उळ तिचै औडुम्-अपने सामने की दिशाओं के साथ; वैळिकळ आवत्त-खुला मैदान जो बनी हैं; चूल् मुतिर्-जलगर्भित; मेकङ्कळ-मेघ; चुरुण्टु वीळ्वत्त-(जो) घूमकर गिर जाते हैं । ११३५

उन्होंने यह भी देखा कि प्रकृति कैसे विकृत हो रही थी । बड़े-बड़े पर्वत लुढ़क आ रहे थे । बड़े वृक्ष जड़ से उखड़कर गिर रहे थे । जंगली नदियाँ तटों के प्रदेश के साथ ऊसर मैदान बन गयी थीं । जल-भरे मेघ घूम-मुड़कर गिर रहे थे । ११३५

नाड्रिशैप्
काड्रिशैत्
एड्रिशैत्
पोड्रिशैच्

परवैयु
तैळवैळुन्
तुयर्नुवन्
चुड्रिय

मिरुदि
दुलह
दिडुङ्गु
करत्तुट्

नाळुडक्
मैङ्गणुम्
हिन्ऱत्त
पुक्कुळार् 1136

नाल् तिचै परवैयुम्-चारों दिशाओं के समुद्र; इश्रुति नाळ उड्र-युगान्त के आने से; काड्रु इचैत्तु अँळ-आँधी के शोर के साथ बहने के कारण; उलकम् अँङ्कणुम् एड्रु-सारे लोकों को अपने अन्दर समा लेकर; इचैत्तु-बहुत ही उच्च घोष निकालते हुए; उयर्नुवन्तु-उमंगकर; इडुङ्कुकिन्ऱत्त पोल्-मिल आते हों जैसे; तिचै चुड्रिय-चारों दिशाओं में लपेटकर आनेवाले; करत्तु उळ्-(कबन्ध के) करों के घेरे में; पुक्कु उळार्-प्रविष्ट हुए हो गये । ११३६

वे कबन्ध के हाथों के घेरे के अन्दर पहुँच गये । वे हाथ युगान्त में शोर के साथ पवनोद्वेलित होकर सारे विश्व को लीलते हुए उठ आ रहे हों, ऐसा बढ़ते हुए आकर घेरा बना रहे थे । ११३६

तेमौळि

तिड्रत्तिना

लरक्कन्

शेनैवन्

देमुड

वळैन्दर्दन्

श्रवहै

यैयत्तिनार्

नेमिमाल्

वरैयडु

नैरुक्कु

हिन्ऱदे

आमैन्

लायहै

मदिट्कु

ळायित्तार् 1137

नेमि माल् वरै अतु-चक्रवाल पर्वत ही; नैरुक्कुकिन्ऱत्ते आम्-कसकर लपेटते हों; अँतल् आय-जैसे आये; कै मदिट्कु उळ्-कर रूपी चहारदीवारी के अन्दर; आयित्तार्-जो फँस गए; ते मौळि तिड्रत्तिनाळ्-शहद-सी बोली वाली सीता के निमित्त; अरक्कन् चैन् वन्तु-राक्षस-सेना ने आकर; एम् उड्र वळैत्तु-उत्साह के साथ हमें घेर लिया है; अँन्ऱु-यह विचार कर; उवकै अँयत्तिनार्-(दोनों) खुश हुए । ११३७

हाथों की चहारदीवारियाँ बन गयीं । वे चक्रवालपर्वत के समान थे । तब दोनों ने अनुमान किया कि मधु-मधुर-भाषिणी सीता के निमित्त

राक्षसप्रभु रावण की सेना उत्साह के साथ आ घेर गयी है। उन्हें इस बात से हर्ष हुआ। ११३७

इळवले	नोक्किन्	तिराम	तेळैयै
उळैवुशै	यिरावण	तुरैयु	मूरुमिव्
वळवैय	दाहुद	लडिदि	यैयनम्
किळर्पेरुन्	दुयरमुड्	गीण्ड	दामैन्त्रान् 1138

इरामतुम्-श्रीराम ने भी; इळवले-लघुराज को; नोक्किन्-देखकर; ऐय-तात; एळैयै-अवला सीता को; उळैवु चैय् इरावणन्-वास देता हुआ रावण; तुरैयुम् ऊरुम्-जहाँ रहता है, वह नगर भी; इ अळवैयतु आकुतल्-इसी सीमा के अन्दर है; अरिति-जान लो; नम् किळर्-हमारा उत्थानशील; पैरुम् तुयरमुम्-बड़ा दुःख भी; कीण्टतु आम्-मिटा, हो जायगा। ११३८

श्रीराम ने अपने छोटे भाई से कहा कि तात ! सीता को वास देने वाले रावण का वासस्थान इसी सीमा के अन्दर है। यह जान लो। तब हमारा बढ़ती पर रहनेवाला दुःख भी मिट गया समझो। ११३८

मुर्ड्रिय	वरक्कर्द	मुळङ्गु	तात्तैयैल्
एर्ड्रिय	मुरशौलि	येङ्गुज्	जङ्गौलि
पैर्ड्रिल	दामैन्तिर्	पिडिदीन्	रामैन्त्
चौर्ड्रन्	तिळैयवन्	रीळुदु	मुन्तिन्त्रान् 1139

इळैयवन्-अनुज; मुर्ड्रिय-हमको जो घेर आयी हैं; अरक्कर् तम्-राक्षसों को; मुळङ्कु तात्तै-शब्दायमान सेनाएं हैं; अैल्-तो; अैर्ड्रिय मुरचु औलि-प्रहरित भेरियों का नाद; एङ्कुम् चङ्कु औलि-ध्वनित शंखों का नाद; पैर्ड्रु इलतु आतलिन्-नहीं पाया जाता, इसलिए; पिडितु औन्ड्रु आम् अैन्-दूसरी कोई वस्तु है, यह; चौर्ड्रन्-कहकर; तीळुतु मुन् निन्त्रान्-नमस्कार करते हुए सामने स्थित रहे। ११३९

तब कनिष्ठ भ्राता ने तर्क पेश किया। भैया ! हमको शब्दायमान राक्षस-सेना घेरती आ रही हो तो भेरियाँ पिटेंगी और शंख वजेंगे और भेरियों का नाद और शंखों की ध्वनि सुनाई देगी। यह इन नादों से युक्त नहीं है। इसलिए यह कोई दूसरी वस्तु है। लक्ष्मण यह विनय के साथ कहकर श्रीराम के सामने अंजलिबद्ध हो खड़े हुए। ११३९

तैळळिय	वमुदैळत्	तेवर्	वाङ्गिय
वैळळैयिर्	उरवन्दान्	वेरौर्	नाहन्दान्
तळळरुम्	वालीडु	तलैयि	नाल्वळैत्
तुळळुर्क्	कवर्वदे	यौक्कु	मूळियाय् 1140

अळियाय्-युगपुरुष; तैळळिय-स्वच्छ; अमुतु अैळ्-अमृत निकल आए; तेवर् वाङ्किय-ऐसा, देवों ने जिसको लेकर मन्थन किया; वैळ् अैयिर् उरवम्-तात्-

श्वेत दाँतों का नाग (वासुकी) ही; वेरू और नाकम् तान्—या कोई दूसरा नाग ही; तळ अरु वाल् ओटु—दुर्वार पूँछ के साथ; तलैयिताल् वळैत्तु—सिर को घुमाकर, मण्डल बनाकर; उळ् उडु—उस मण्डल के अन्दर; कवरवते ओक्कुम्—पकड़ लेता हो, ऐसा है । ११४०

लक्ष्मण आगे बोले—युगान्त में भी अमर रहनेवाले परमपुरुष ! यह श्वेत दाँतों से युक्त वासुकी नाग हो सकता है, जिसका उपयोग कर देवों ने सागर-मन्थन किया था । या कोई दूसरा नाग होगा, जो अपनी पूँछ और अपने सिर को मोड़कर मण्डल बना रहा है और उसके अन्दर सबको ले रहा है । ११४०

अँत्तुइवै	विळम्बिय	विळवल्	वाशहम्
नत्तुत्त	नितैन्दत्त	तडन्द	नायहन्
ओत्तुइरण्	डियोशत्तै	युळ्पुक्	कोडुगडान्
निन्तुत्त	विरुन्दवक्	कवन्द	नेर्शैन्तुडार् 1141

अँत्तु इवै—इस तरह ये; विळम्बिय—जिन्होंने कहे; इळवल् वाचकम्—उन कनिष्ठ भ्राता का वचन; नटन्त नायकन्—आगे जो जाते रहे, उन नायक श्रीराम ने; नत्तु अँत्त नितैन्दत्तन्—अच्छा (ठीक) समझा; ओत्तु इरण् टु योचत्तै—एक-दो योजन; उळ् पुक्कु—(उस घेरे के) अन्दर और जाकर; ओड्कल् तान् निन्तु—पर्वत ही खड़ा है; अँत्त—ऐसा; इरुन्त—जो रहा; अ कवन्तन् नेर् चैन्तुडार्—उस कबन्ध के सामने पहुँचे । ११४१

लक्ष्मण के इन वचनों को श्रीराम ने सुना और कहा कि अच्छा कहा । दोनों आगे चले और उन्नत पर्वत के समान दृश्यमान उस कबन्ध के सामने आये । ११४१

वैयिञ्चुड	रिरण्डितै	मेरु	माल्वरैक्
कुयिञ्जिय	वार्मेत्तक्	कौटिक्कुड्	गण्णितान्
अयिञ्जिडैक्	किडैयिरु	काद	मीण्डिय
वयिञ्जिडै	वार्यैन्तु	महर	वेलैयान् 1142

वैयिञ् चुटर् इरण्डितै—धूप देनेवाले दो सूर्यों को; मेरु माल् वरै—मेरु के बड़े पर्वत में; कुयिञ्जिय आम्—जटित किया गया हो; अँत्त—जैसे; कौटिक्कुम् कण्णितान्—प्रज्वलित आँखों का; अयिञ् इटैक्कु इटै—दाँत और दाँत के मध्य; इरु कातम् ईण्डिय—दो मील-दशकों की दूरी के साथ; वयिञ् इटै—पेट में; वाय् अँत्तुम्—मुख रूपी; मकर वेलैयान्—मकरालय वाला । ११४२

(भयंकर कबन्ध का वर्णन किया जाता है यों ।) महामेरु पर दो गरम किरणमालियों को जटित किया गया हो, ऐसा उसकी दोनों आँखें ज्वलन्त रहीं । उसका मुख पेट के अन्दर धँसा हुआ था; उसके दाँत

और दाँत के मध्य दो योजनों का अन्तर रहा । वह मुख क्या था मकरालय (-सा) था । ११४२

ईण्डिय	पुलवरो	डवुण	रिन्दुवैत्
तीण्डिय	नैडुवरेत्	तैय्व	मत्तिनैप्
पूण्डुयर्	वडमिरु	पुडैयिन्	वाङ्गलिन्
नीण्डत्त	किडन्दत्त	निमिरन्द	कैयित्तान् 1143

ईण्डिय पुलवर् ओट्टु-एकत्रित देवों के साथ; अवुणर्-असुर; इन्दुवै-चन्द्र को; तीण्डिय-स्थिर-स्तम्भ बनाकर; नैडु वरै-वड़े (मेरु) पर्वत की; तैय्व मत्तिनै-दिव्य मथानी को; पूण्डु-रखकर; उयर् वटम्-वासुकी की रस्सी से; इरु पुटैयिन् वाङ्गलिन्-दोनों पार्श्वों में बारी-बारी से खींचने से; नीण्डु अँत-लम्बा बना पड़ा रहा जैसे; निमिरन्त कैयित्तान्-ऊपर उठे हाथों वाला । ११४३

देवों और असुरों ने एकत्रित होकर चन्द्र को स्थिर-स्तम्भ के रूप में गाड़ा । बड़े मन्दर को दिव्य मथानी बनाया । बड़े वासुकी नामक सर्प को उस पर लपेटकर दोनों ओर खड़े होकर बारी-बारी से खींचा । उस दिन लम्बा बनकर वासुकी जैसा दिखता था, वैसा ही कबन्ध के हाथ लम्बे और मोटे बन पड़े थे । ११४३

तौहैक्कत्तर्	करुमहन्	रुरुत्ति	तूम्वैत्तप्
पुहैक्कोडिक्	कत्तलीडु	पौडिक्कु	मूक्कितान्
पहैत्तहै	नैडुङ्गडल्	परुहुम्	पावहन्
शिहैक्कोळुन्	वैत्तवैदिर्	तिरुहुम्	नावित्तान् 1144

करुमहन्-लुहार की; तौहै कत्तल्-अधिक आग की भाथी में; तुरुत्ति तूमपु अँत-लगी रहनेवाली धौकनी की नाक (नली) के समान; कत्तल् ओट्टु कौटि पुक्कै-आग के साथ लताओं के आकार में फैलनेवाला धूम; पौडिक्कुम्-निकालनेवाली; मूक्कितान्-नाक का; परुक्कै-शत्रुता के साथ; नैडुम् कटल् परुहुम्-विशाल सागर की पी लेनेवाली; पावहन्-बड़वाग्नि की; चिकै कौळुन्तु अँत-ज्वालाशिखा के समान; तिरुहुम्-धूमती रहनेवाली; नावित्तान्-जीभ वाला । ११४४

उसकी नाक से लुहार की अधिक अग्निसहित भाथी से लगी हुई धौकनी की नाक के समान आग और लता के आकार में धुआँ निकल रहा था । (सागर का) शत्रु बनकर विशाल सागर को जो बड़वाग्नि पी (सोख) रही थी, उस बड़वाग्नि की ज्वालाशिखा के समान धूमती रहती हुई जीभ वाला था वह कबन्ध । ११४४

पुरण्डर	विडैवर	वैरुविप्	पुक्कुट्टै
अरण्डनै	नाडियो	ररुवि	माल्वरै

मुरण्डहु	मुळैनुळै	मुळुवैण्	डिङ्गळै
इरण्डुकू	रिट्टैत	विलङ्गै	यिङ्गित्तान् 1145

अरवु पुरण्डु इटै वर-(राहु) सर्प को लोटते हुए अपने पास आते देखकर; वैरुवि-भय खाकर; पुक्कु उरै-घुसकर वास करने योग्य; अरण् ततै नाटि-सुरक्षित स्थान ढूँढ़कर; ओर् अरुवि माल् वरै-सरिताओं-सहित एक पर्वत पर; मुरण् तकु-प्रबल; मुळै नुळै-गुफा में प्रविष्ट; मुळु वैण् तिङ्कळै-पूर्ण-श्वेत चन्द्र को; इरण्डु कू इट्टु अँत-दो अंशों में काट लिया गया हो, ऐसा; इलङ्कु-दृश्यमान; अयिङ्गित्तान्-वक्रदाँतों का । ११४५

उसके वक्रदाँत उस पूर्णचन्द्र के दो टुकड़ों के समान थे, जो राहु-केतु के सर्पों को पास आते देखकर डर से भाग गया, और सरिताओं-सहित बड़े एक पर्वत की शक्तियुत गुफा में घुसा हो और वहाँ जिसके दो टुकड़े हो गये हों । ११४५

ओदनीर्	मण्णिवै	मुदल	वोदिय
पूदमो	रैन्दित्तिर्	पौरुन्दिर्	इत्तुडिये
वेदनूल्	वरन्मुर्	विदिक्कु	मैम्बैरु
पादहन्	दिरण्डुयिर्	पडैत्त	पण्बित्तान् 1146

ओतम् नीर्-शीतल जल; मण्-पृथ्वी; इवै मुतल-इनको आदि में रखकर; ओतिय-गणित; पूतम् ओर् ऐन्तितिल्-पाँच एक भूतों का; पौरुन्दिर् इत्तुडिये-न बनकर; वेत नूल्-वेद-शास्त्रों में; वरन् मुर्-यथाक्रम; विदिक्कुम्-विहित; ऐम् पौरुम् पातकम्-पाँच महापातक; तिरण्डु उयिर् पडैत्त-मिलकर प्राणवन्त हो गये; पण्बित्तान्-ऐसे प्रकार वाला । ११४६

उसका शरीर शीतल जल, पृथ्वी आदि कथित पाँचों भूतों का बना नहीं लगता था । पर वेदों और शास्त्रों में वर्जित पाँचों महापातकों (हत्या, चोरी, असत्यवाचन, सुरापान, गुरुनिन्दा या परस्त्री-प्रेम, जुआ, सुरापान, असत्यवाचन, दान देते समय रोकना — ये पंच महापातक माने जाते हैं ।) का मिलकर बना और प्राणवन्त हुआ-सा था । ११४६

वैय्यवैङ्	गदिर्हळै	विळुङ्गुम्	वैव्वरा
शैय्तौळि	लिलतुयिल्	शैवियिन्	रौळ्ळैयान्
पौय्हिळर्	वन्मैयिर्	पुरियुम्	पुन्मैयोर्
वैहुरु	नरहैयुम्	नहुम्ब	यिङ्गित्तान् 1147

वैय्य वैम् कतिर्कळै-गरम और प्रिय (शीतल) किरणों वाले सूर्य और चन्द्र के; विळुङ्गुम्-खादक; वैम् अरा-भयंकर (राहु-केतु) सर्प; वैय् तौळिल् इल-निष्क्रिय होकर; तुयिल्-आकर जहाँ सोते हैं; शैवियिन् तौळ्ळैयान्-कर्ण-विवर वाला; किळर् वन्मैयिन्-बढ़ती कठोरता से; पौय् पुरियुम्-असत्य-वादन (आदि दुष्कर्म) करनेवाले;

पुनर्मैयोर्-नीच लोग; वैकुण्ठम्-जहाँ वास करते हैं; नरकैयुम्-उस नरक का भी; नकुम्-परिहास करनेवाले; वयिर्इत्तान्-पेट का । ११४७

सूर्य गरम किरणों के हैं और चन्द्र प्रिय शीतल किरणों के । इन दोनों को राहु और केतु नाम के सर्प पकड़कर निगल लेते हैं । ये दोनों अपना काम छोड़कर कबन्ध के कर्ण-विवरों में जाकर सोते रहते हों, ऐसे कानों वाला था वह । असत्य-कथन आदि नीच काम करनेवालों को जहाँ जाकर रहना पड़ता है, उस नरक को भी लजानेवाला था, उसका पेट । ११४७

मुर्इयि	वुयिरैला	मुरुङ्ग	वारित्तान्
पर्इय	करत्तित्तन्	पणैत्त	पण्णैयिल्
तुर्इय	पुहुतरु	तोर्इत्त	तानमन्
कौर्इवाय्	तर्चैयल्	कुर्इत्त	वायित्तान् 1148

मुर्इयि-जिनको घेर लिया; उयिर् अलाम्-उन सभी प्राणियों को; मुरुङ्क-मिट्टाकर; तान् वारि पर्इय-जिनसे पकड़ता है; करत्तित्तन्-ऐसे हाथों का; पणैत्त पण्णैयिल्-मोटे झुण्डों में; तुर्इय-ठूँसे हुए (प्राणी); पुहु तरुम्-घुसते हैं; तोर्इत्ताल्-उस दृश्य से; नमन् कौर्इ वाय् तन्-यम के राजद्वार का; चैयल्-कार्य; कुर्इत्त-जिसकी ओर संकेत करता है (समान); वायित्तान्-ऐसा मुख वाला । ११४८

उसके हाथ अपने क्रोड के घेरे में आये हुए सभी प्राणियों को मिटाने के काम में लीन थे । बड़े-बड़े झुण्डों में अनेक प्राणी उसके मुख में ठूँसे जा रहे थे । उस दृश्य को देखकर यम का सुरक्षित राजद्वार स्मरण आता था । ११४८

ओलमार्	कडलैन्	मुळङ्गु	मोदैयान्
आलमे	यैन्विण्	डळ्ळुन्	वाक्कैयान्
नीलमाल्	नेमियिर्	उलैयै	नीक्किय
कालन्	मियैप्पौरुङ्	गवन्दक्	काट्चियान् 1149

ओलम् आर्-गर्जनशील; कडल् अँत-सागर-सम; मुळङ्कुम् ओतैयान्-कोलाहलमय शब्द वाला; आलमे अँत-हलाहल के ही समान; इरुण्डु-काले; अळ्ळुन्-उष्ण; आक्कैयान्-शरीर का; नील माल् नेमियिल्-नील श्रीविष्णु के चक्रायुध से; तलैयै नीक्किय-सिर-कटे; काल नेमियिल्-कालनेमि के समान; पेरुम् कवन्त-बड़े कबन्ध के; काट्चियान्-दृश्य वाला । ११४९

उसका बोल गर्जनशील सागर के शोर के समान था । उसका शरीर हलाहल के समान काला और गरम था । नीले वर्ण के श्रीविष्णु के आयुध के द्वारा सिर-कटे कालनेमि नामक राक्षस के कबन्ध के समान

उसका आकार दिखता था। (कालनेमि के सौ सिरों और हाथों को श्रीविष्णु ने अपने चक्रायुध चलाकर काटा था। वही कालनेमि पीछे कंस बना था। यह पुराणांतर में कहा गया है। इसका उल्लेख अयोध्याकाण्ड में भी आया है।) । ११४९

ताक्किय	तणप्पिल्का	लैरियत्	तत्तुड
मेक्कुयर्	कौडुमुडि	यिळुन्द	मेरुनेर्
आक्कैयि	तिरुन्दवन्	इत्तै	यव्वळि
नोक्किन	रिरुवरु	नुणङ्गु	केळ्वियार् 1150

तणप्पु इल् काल-अप्रतिहत पवन के; ताक्किय अैरिय-वेग से बहकर झटका देने से; तत् उटै-अपने; मेक्कु उयर्-ऊपर उठे हुए; कौडु मुटि-उन्नत शृंगों को; इळुन्त-जिसने खोया है; मेरु नेर्-ऐसे मेरु के समान; इरुन्तवन्-जो रहा; तत्तै-उस कबन्ध को; नुणङ्कु केळ्वियार्-सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान के; इरुवरुम्-(श्रीराम और लक्ष्मण) दोनों ने; अ वळि-वहाँ; नोक्किन्-देखा। ११५०

उसका शरीर उस मेरु के समान था, जिसके उन्नत शृंग दुर्धर्ष वेग से बहनेवाले पवन के झटके से टूटकर गिरे हों। सूक्ष्म श्रवणज्ञान के स्वामी दोनों, श्रीराम और लक्ष्मण ने वहाँ ऐसे कबन्ध को देखा। ११५०

नीरपुहु	नैडुङ्गड	लडङ्गु	नेमिशूळ
पारपुहु	नैडुम्बहु	वायैप्	पार्त्तत्तर्
शूरपुहु	वरियदो	ररक्कर्	तौत्तमदिल्
ऊर्पुहु	वायिलो	विदुवैन्	इत्तित्तार् 1151

नीर् पुकु-जल जिसमें प्रवेश करता है; नैटुम् कटल् अटङ्कु-वे विशाल समुद्र जिसमें समाविष्ट हैं; नेमि चूळ-और (जो) चक्रवालगिरि से घिरी हुई है; पार् पुकु-वह भूमि जिसमें प्रविष्ट हो सकती है; नैटुम् पकु वायै-उस बड़े और खुले मुख को; पार्त्तत्तर्-(उन्होंने) देखा; शूर पुकुल् अरियतु-सूर्य जिसमें प्रवेश नहीं कर सकता, ऐसा; ओर्-एक; अरक्कर्-राक्षसों का; तौल् मतिल् ऊर्-प्राचीन प्राचीनों से आवृत नगर में; पुकु-प्रवेश करानेवाला; वायिलो इतु-द्वार क्या यह; अैत्तु-ऐसा; इत्तित्तार्-सोचा। ११५१

श्रीराम और लक्ष्मण ने देखा कि उसके मुख के अन्दर सारी नदियों के जल को समा लेनेवाले सारे सागरों को अपने अन्दर लिये हुए चक्रवालगिरि से आवृत पृथ्वी जा सकती है! उन्होंने सन्देह किया कि क्या यह सूर्य के लिए भी अगम प्राचीन प्राचीनों से आवृत लंका नगर का द्वार है? । ११५१

अव्वळि	यिळैयव	नमैन्दु	नोक्किये
वैव्विय	वीरुपैरुम्	वूदम्	विल्वलाय

वव्विय	तन्गैयिन्	वळैत्तु	वाय्पपैयुम्
शैयवदै	निवर्णैतच्	चैम्मल	शैप्पुवान् 1152

अ वळि-तव; इळैयवन्-कनिष्ठ भ्राता (के); अमैन्तु नोक्किये-खूब देखकर; विल् वलाय्-धनुर्विद्याविदग्ध; वैव्वियतु और पैरुम् पूतम्-भयंकर एक भूत; वव्विय-अपने द्वारा पकड़े गये प्राणियों को; तन् कैयिल् वळैत्तु-अपने हाथों से समेट लेकर; वाय् पपैयुम्-अपने मुख में डालनेवाला है; इवण् चैय्वतु अन्-यहाँ करना क्या; अन्-कहने पर; चैम्मल-प्रभु श्रीराम; चैप्पुवान्-बोले । ११५२

तब लक्ष्मण ने कबन्ध को खूब ध्यान से देखा । फिर श्रीराम से कहा कि धनुर्विद्या-निपुण ! यह भयंकर भूत है, जो अपने क्रोध में आने वाले सभी प्राणियों को हाथ से लेकर अपने मुख में डाल लेता है ! अब हम क्या करें ? —लक्ष्मण ने यह प्रश्न किया । ११५२

तोहैयुम्	बिरिन्दन्	ळैन्दै	तुम्जिन्नात्
वैहवैम्	वळिशुमन्	दुळल	वेण्डिलेन्
आहलिन्	यानिति	यिदनुक्	कामिडम्
एहुदि	यीण्डुनिन्	रिळव	लाण्डैन्नात् 1153

इळवल्-छोटे भैया; तोहैयुम् पिरिन्तत्तळ्-मयूराभा (जानकी) बिछुड़ गयी; अन्तै तुम्जिन्नात्-मेरे पिता (जटायु) चिरनिद्रा में लग गये; वैक् वैम् पळि-अकस्मात् आया यह कठोर अपयश; चुमन्तु-ढोता हुआ; उळल वेण्डलेन्-संकट में फिरना नहीं चाहता; आहलिन्-इसलिए; यान्-में; इति इतनुक्कु-अब इसका; आमिडम्-(आमिश =) खाद्य मांस (या मेरा स्थान); ईण्डु निन्ना-यहाँ से; एकुति-चलो; अन्नात्-कहा । ११५३

तब श्रीराम ने नैराश्य से यों कहा—छोटे भैया ! मयूर की-सी छटा वाली सीता बिछुड़ गयी । मेरे पिता (-सम) जटायु चिर निद्रा में लीन हो गये; अकस्मात् आयी यह निंदा ढोता फिरना मैं नहीं चाहता । इसलिए अब मेरा स्थान उसका भोजन बनना है । (आमिडम्—आमिश का भी तमिळ रूप है; आम् इटम्—करके बतनेवाला स्थान अर्थ भी किया जा सकता है ।) तुम मुझे छोड़कर यहाँ से चले जाओ । ११५३

ईन्डव	रिडरप्पड	वैम्बि	तुन्पुड्
चान्डवर्	तुयरुड्	पळिक्कुच्	चान्डमाय्त्
तोन्डलि	नैन्नुयिर्	तुडन्द	पोदलाल्
ऊन्डिय	पैरुम्बडर्	तुडैक्क	वीण्णुमो 1154

ईन्डवर्-मेरे जनक-जननी; इटर् पट-कण्ठ भोगते हैं; वैम्बि-मेरा कनिष्ठ भरत; तुन्पुड्-डुःखी है; चान्डवर् तुयर् उड्-उत्तम (वसिष्ठ आदि) लोग संकट में पड़े हैं; पळिक्कु-अपयश के लिए; चान्डम् आय्-एक दृष्टान्त बना; तोन्डलि-पैदा हुआ हूँ, इसलिए; अन् उयिर् तुडन्त पोतु अलाल्-विना प्राण त्यागे; ऊन्डिय-

स्थिर रूप से हुए; पैरुम् पटर्-इन बड़े दुःखों को; तुटैक्क ओण्णुमो-मिट सकेंगे क्या। ११५४

मेरे कारण मेरे माँ-बाप दुःखी हुए। मेरा कनिष्ठ भरत संकट में है। बड़े और आदरणीय वसिष्ठ आदि दुःख में हैं। और भी मैं अपकीर्ति का दृष्टान्त बना पैदा हुआ हूँ! इसलिए मेरे बिना इस बड़े और गहरे दुःख का मिटना सम्भव है क्या? । ११५४

इल्लियल्	बुडैयनी	रळित्त	विन्शौलाळ्
वल्लिवल्	लरक्कूर्दम्	मनैयु	ळाळैतच्
चौल्लिनन्	मलैयंतच्	चुमन्द	तूणियन्
विल्लित्तन्	शैल्वन्नो	मिदिलै	वेन्दन्बाल् 1155

इल् इयल्पु उडैय नीर्-गृहस्थ धर्म का; अळित्त-पालनकारिणी; इन् चौलाळ्-मधुरभाषिणी; वल्लि-लता (-समाना); अरक्कूर् तम् मतै उळाळ्-राक्षसों के घर में है; अँत-ऐसा; मिदिलै वेन्दन् पाल्-मिथिलापति के पास; चौल्लि-कहता हुआ; नल् मलै-श्रेष्ठ पर्वत; अँत चुमन्त-के समान ढोये जानेवाले; तूणियन् विल्लित्तन्-तूणीरों व धनु के साथ; शैल्वन्नो-जाऊँगा क्या। ११५५

गृहस्थ धर्म की अच्छी पालिका, मधुरभाषिणी और लता-समाना सीता राक्षसों के घर में है! श्रेष्ठ पर्वत के समान यह तूणीर और धनु ढोते हुए मैं क्या मिथिलेश के पास यह समाचार देने जाऊँ? । ११५५

तळैयविल्	कोदैयैत्	ताङ्ग	लाङ्गलन्
इळैपुरन्	दळित्तन्मे	लिवर्न्द	कादलन्
उळन्नै	वुरैत्तलि	नुम्ब	रानैन्
विळैदन्	रादलिन्	विळिद	नन्ऱैन्ऱान् 1156

तळै अविळ् कोदैयै-प्रकुल्ल पुष्पों की मालाधारिणी सीता को; ताङ्गल् आङ्गलन्-संरक्षित करने की शक्ति से हीन; इळै पुरन्तु अळित्तल् मेल्-(पर) (इला) भूमि के पालन-शासन पर; इवर्न्त कातलन्-उमंगते प्रेम का; उळन्-है; अँत-ऐसा; उरैत्तलिन्-कहे जाने से; उम्परान् अँत विळैतल्-स्वर्गवासी कहे जाने का यह कार्य; नन्ऱु आतलिन्-अच्छा है, इसलिए; विळितल्-मरना; नन्ऱु अँन्ऱान्-अच्छा होगा, कहा। ११५६

लोग यों कहकर मेरी निंदा करेंगे कि श्रीराम में विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीता का पालन करने की शक्ति नहीं रही। पर भूमि का पालन और शासन करने की इच्छा तो खूब रही! इस अपवाद से 'वह स्वर्गवासी हो गया' यह कहा जाना अच्छा है। इसलिए मेरा मर जाना ही श्रेयस्कर है! श्रीराम ने अपार खेद के साथ अपनी भर्त्सना के ये वचन कहे। ११५६

आण्डा	तिन्त	पन्तिड	वैयर्	किळवीरन्
ईण्डा	युत्विन्	नेयिन्	शैय्दे	यिडर्वन्डु
मूण्डान्	मुन्ने	यारुयि	रोडु	मुडियादे
मीण्डे	पोदर्	कामेति	नन्ऱैन्	विन्नेय्न्ऱान् 1157

आण्डान्-जगद्रक्षक; इतत-इस भांति; पन्तिड-बोले, तब; ऐयर्कु-प्रभु से; इळ वीरन्-छोटे वीर; उत् पिन्-आपके पीछे; ईण्डु आय्-यहाँ आकर; एयित्त चैय्ते-आज्ञा-पालन करके; इटर् वन्तु मूण्डाल्-आफत आ गयी तो; मुन्ने-आपके पहले ही; मुडियाते-बिना मरे ही; आर् उयिर् ओटु-प्रिय प्राणों के साथ; मीण्डे पोतर्कु आम्-लौट जाने ही योग्य रहा; ऐतिल्-तो; नन्ऱु ऐन् विन्ने-बड़ी अच्छी होगी न मेरी सेवा; ऐन्ऱान्-कहा । ११५७

जगन्नायक ने यह सब गहरे शोक के साथ कहा । तब छोटे वीर लक्ष्मण ने अपने ज्येष्ठ भ्राता से कहा कि भाई ! यह भी खूब रहा । आपके साथ वन में आया आपकी अज्ञाओं का पालन करने का, आप पर संकट आया तो आपके पहले अपनी जान दे देने का संकल्प करके । अब प्रिय प्राण लेकर लौट जाने के ही लिए योग्य समझा जाऊँ, तो मेरी सेवा बड़ी श्लाघनीय होगी न ? ११५७

ऐन्ऱा	तन्तान्	पिन्नु	मिशैप्पा	निडर्वन्ने
वैन्ऱा	रन्ऱो	वीरर्ह	ळावार्	मेलाय
तन्ऱाय्	तन्दे	तम्मु	तैन्नुदन्	मैयर्मुन्ने
पौन्ऱा	निन्ऱा	नोङ्गुव	दन्ऱो	पुहळम्मा 1158

ऐन्ऱान् अन्तान्-ऐसा कहकर लक्ष्मण; पिन्नुम् इचैप्पान्-और भी बोले; इटर् तन्ने-दुःख को; वैन्ऱार् अन्ऱो-जीतनेवाले ही तो; वीरर्कळ् आवार्-वीर होते हैं; तन् ताय्-अपनी माता; तन्ने-पिता; तन् मुन्-अपना अग्रज; ऐन्नुम् तन्मैयर्-ऐसे पद में रहनेवालों को; मुन्ने पौन्ऱा-अपने पहले मरने देते हुए; निन्ऱाल्-कोई जीवित रहा तो; पुकळ् नोङ्कुवतन्ऱो-उसकी कीर्ति चली नहीं जायगी क्या; अम्मा-माँ । ११५८

लक्ष्मण ने और भी कहा । संकट आए तो उस पर विजय पानेवाले ही वीर कहे जायेंगे न ? अपनी माँ, अपने पिता और अग्रज आदि बड़ों को मरने देकर कोई जीवित रहेगा तो क्या उसकी कीर्ति मिट नहीं जायगी ? । ११५८

माने	यन्ता	डन्तौडु	तम्मुन्	वरैयारुम्
काने	वैहक्	कण्डुयिल्	कौळ्ळान्	उन्निहात्तर्
काना	तैन्ने	यैन्ऱवर्	मुन्ने	यवरन्ऱित्
ताने	वन्दा	तैन्ऱपिन्	वैऱोर्	तवरुण्डो 1159

माने अन्ताळ्-हरिणी ही सम; तन् ओटु-सीताजी के साथ; तम् मुन्-अपने

बड़े भाई के; वरें आरुम्-बाँसों से पूर्ण; काते वैक-जंगल में ही रहते समय; कण्
तुयिल् कोळ्ळान्-अनिद्र रहा; तत्ति कात्तत्तु आत्तान्-अनुपम रक्षक रहा; अँन्ते-
क्या ही (खूब); अँन्त्तवर्-जिन्होंने ऐसा कहा, वे; अवरे इन्त्ति-उनके बिना ही;
मुन्ते-उनके पहले ही; ताते वन्तान्-खुद आ गया; अँन्त्त पित्-कहेंगे, फिर; वेड्ड
ओर् तवड्ड-उससे बढ़कर कोई और दोष; उण्टो-हो सकता है क्या । ११५६

लोगों ने यह देखकर आश्चर्य के साथ मेरी सराहना की कि हरिणी-
सी सीताजी के साथ जो गये, उन अपने ज्येष्ठ भ्राता के साथ लक्ष्मण
जंगल गया और रक्षणकर्ता बना । अब उनको ही यह कहने का मौका
मिल जाय कि लक्ष्मण उनको छोड़कर उनके आने से पहले ही लौट आ
गया तो (कितना बड़ा दोष हो जायगा ?) इससे बढ़कर कोई दोष हो
सकता है ? । ११५९

अँन्त्ता	युत्तमुत्त	तेयित्त	यावुम्	मिशैयित्तुत्तल्
पित्तुत्ता	दय्दिप्	पेरिशै	याळ्ड	कळिवुण्डेल्
पौत्तुत्ता	मुत्तन्म	बौत्तुत्तुदि	यँत्तुत्ता	ळुरैपीय्या
निन्त्ता	लन्त्तो	निन्त्तुड्ड	वाय्मै	निलैयम्मा 1160

अँन् ताय्-मेरी माता ने; उत्त मुत्त-तुम्हारा ज्येष्ठ भाई; एयित्त यावुम्-जो
आज्ञाएँ देगा, वह सब; इच्चै-पूरा करो; इन्त्तल्-विपदाएँ आयें तो; पित्तुत्ता-
पीछे मत रहो और; अँयित्त-आगे जाकर अपने ऊपर धारण कर लो; पेर इच्चै
आळ्डकु-प्रकीर्तित उनके; अळिवु उण्टेल्-मरने की नौबत आयगी तो; पौत्तुत्ता
मुत्तन्म-उनके मरने के पहले; पौत्तुत्तुत्ति-तुम मर जाओ; अँन्त्ताळ्-यह कहा है; उरै-
उनका वचन; पीय्या निन्त्ताळ्-अन्तु-असत्य नहीं होगा, तभी तो; वाय्मै निलै
निन्त्तु-सत्य स्थिर होगा; अम्मा-माँ । ११६०

मेरी माता ने मुझे आदेश दिया था कि तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम
जो भी आज्ञाएँ देंगे, वे सब पूरा करो । विपदा आयेगी तो पीछे मत रहो,
पर आगे बढ़कर तुम उसे अपने ऊपर ले लो । शायद मरने की स्थिति
आने की सम्भावना देखते हो तो उनके मरने के पहले तुम मरण का वरण
कर लो । उस आदेश के अनुसार चलूँ तभी न मेरा सत्यव्रत स्थिर
होगा ? । ११६०

अँर्पैड्ड	डाळुम्	यान्तु	मँनैत्तोर	वहैयालुम्
निर्पैड्ड	डाट्कु	निर्कु	निन्तैप्पुम्	पिळैयामल्
नर्पौड्ड	डोळाय्	नल्लवर्	पेण	नत्तिनिर्कुम्
शीर्पैड्ड	डान्मड्ड	डारुयिर्	पेणित्त	तुड्डवेमाल् 1161

नल् पौन् तोळाय्-श्रेष्ठ और सुन्दर कन्धों वाले; अँन् पँड्डाळुम् यान्तुम्-मेरी जननी
और मैं; निन्तै पँड्डाट्कुम्-आपकी जननी और; निर्कुम्-आपके प्रति; अँनैत्तु
ओर् वकैयालुम्-किसी भी तरह से; निन्तैप्पुम् पिळैयामल्-विना मन बदले; नल्लवर्

पेण-श्रेष्ठ लोगों द्वारा श्लाघ्य रीति से; नति निङ्कुम्-अच्छी तरह अचल रहनेवाली; चौल् पेंड्राल्-(साधु-)वचन प्राप्त करेंगे तो; मर्ङ्ग-उसको छोड़कर; आर् उयिर पेणि-अपने प्राणों के पालन में; तुङ्गवोम्-आपका कौंकर्ण नहीं छोड़ेंगे । ११६१

उत्तम और मनोरम स्वर्ण-सम कन्धों वाले ! मेरी जननी को और मुझे यह ख्याति मिल जाय कि हम आपकी जननी और आपके प्रति उत्तम मनुष्यों से श्लाघ्य होकर स्थिरमन रहे । जब इसकी सम्भावना है, तब उसके विपरीत अपने प्राणों के लोभ से अपने कर्तव्य छोड़ देंगे क्या ? । ११६१

ओदुङ्	गालप्	पल्पोरुण्	मुङ्गुङ्	ओरुवाद
वेदङ्	जौल्लुन्	देवरुम्	वीयुङ्	गडवीयाय्
मादङ्	गन्दिन्	रुय्न्दिव	तत्तित्	उलंवाळुम्
पूदङ्	गौल्लप्	पोन्नुदि	यैन्तित्	पोरुळुण्डो 1162

ओतुम् काल्-सच कहा जाय; पल् पोर्ळ-जग के सारे पदार्थ; मुङ्गु उङ्ग-जब मिट जायेंगे; ओरुवात-अमर; अ वेतम् चौल्लुम्-उन वेदों में कथित; तेवरुम्-देव भी; वीयुम् कटै-मिट जायेंगे, उस युगान्त में; वीयाय्-अमर रहनेवाले आप; मातङ्कम् तिनूङ्-गजों को खाकर; उय्न्तु-जीवित; इ वतत्तित् तलं-इस कानन में; वाळुम्-रहनेवाले; पूतम् कौल्ल-भूत के द्वारा मारे जाकर; पोन्नुदि ऐन्तित्-मर जायेंगे तो; पोर्ळ उण्टो-उसका कोई अर्थ रहता है क्या । ११६२

सच कहा जाय, हे प्रभु ! आप कौन हैं ? जब प्रपंच की सारी सृष्टि मिट जायगी और अमर वेदों से प्रशंसित देवता लोग भी नहीं रह जायेंगे, उस युगान्तकाल में भी आप अमर रहनेवाले हैं । ऐसे आप, हाथी खाते हुए जीवित रहनेवाले इस काननवासी भूत के मारते मर जायेंगे ? इस कथन का कोई अर्थ हो सकता है क्या ? । ११६२

केट्टार्	कौळ्ळार्	कण्डवर्	पेणार्	किळर्पोरिल्
तोट्टार्	कोवैच्	चोर्कुळ	उन्नेत्	तुवळामल्
मीट्टा	नेन्नुम्	बेरिश	कौळ्ळान्	शैरुवैल्
माट्टान्	माण्डा	नेन्नुलित्	मेलुम्	वशैयुण्डो 1163

केट्टार् कौळ्ळार्-सुननेवाले नहीं मानेंगे; कण्डवर् पेणार्-देखनेवाले नहीं चाहेंगे; तोट्ट आर् कोतै-विकसित दलों के पुष्पों की मालाधारिणी; चोर् कुळल् तन्नेत्-बिखरे केश की सीतादेवी को; तुवळामल्-दुःख में न छोड़कर; मीट्टान् ऐन्नुम्-मुक्त कर लाया, यह; पेर् इचै कौळ्ळान्-बड़ा यश प्राप्त नहीं करके; चैरु वैल्ल माट्टान्-युद्ध में जीत न पा सका; माण्डान्-मर गया; ऐन्नु पिन्-यह कथन होने के बाद; मेलुम्-उससे बढ़कर; वचै उण्टो-निंदा होगी क्या । ११६३

जो कोई सुनेगा वही नहीं मानेगा । जो कोई देखेगा वही नहीं चाहेगा । लोग यह कहें कि विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीतादेवी

को दुःख से निवृत्त कर लौटा नहीं लाया, न किसी युद्ध में विजय पायी;
पर श्रीराम मर गया — इससे बढ़कर क्या निंदा होगी ? । ११६३

तणिककुन्	दन्मैत्	तत्तुर्ति	लत्तुर्ति	तहैवाळाल्
कणिककुन्	दन्मैत्	तत्तुर्	विडत्तिर्	कत्तल्वूदम्
पिणिककुड्	गैयुम्	वैयपिल	वायुम्	पिळयामल्
तुणिककुम्	वण्णड्	गाणुदि	तुत्तवन्	दुत्तवैत्तुत्तु 1164

विटत्तित्—विष के समान; कत्तल् पूतम्—जलता यह भूत; कणिककुम् तन्मैत्तु
अत्तु—कुछ गण्य नहीं है; इ तक् वाळाल्—(हमारी) इन उत्तम तलवारों द्वारा;
तणिककुम् तन्मैत्तु अत्तु—नहीं काटा जा सकता है; अत्तित् अत्तु—ऐसा भी नहीं है;
पिणिककुम् कैयुम्—जकड़नेवाले इन हाथों को; वैय पिल वायुम्—गुफा के समान मुख को,
जिसमें वह सारे जीवों को समेटकर डाल लेता है; पिळयामल्—अचूक रीति से;
तुणिककुम् वण्णम्—काट लेता हूँ, वह रीति; काणुति—देखिए; तुत्तम् तुत्तु—शोक
छोड़ दीजिए; अत्तुत्तु—कहा । ११६४

यह विष-समान जलनेवाला भूत कुछ गण्य नहीं है ! इन उत्तम
तलवारों से न मारा जा सकेगा — ऐसा भी नहीं । अब देख लीजिए ।
मैं कैसे सभी जीवों को जकड़ लेनेवाले इसके हाथों को और गुफा के समान
मुख को छिन्न-भिन्न कर देता हूँ । आप दुःख करना छोड़ दें । —लक्ष्मण
ने ऐसा कहा । ११६४

अत्तुत्ता	मुत्तने	शौल्लु	मिळङ्गो	विट्टेयोत्कु
मुत्तने	शौल्ल	मुत्तव	तत्तुत्ता	तिन्मुत्तदत्
तत्तने	रिल्लात्	तम्बि	तटुप्पान्	पिररिल्ले
अत्तुत्तो	कण्ड	वुम्बरुम्	वैयट्टुर्	इळुदारात् 1165

अत्तुत्ता—ऐसा; मुत्तने चौल्लुम्—(करने के) पूर्व ही वादा करके; इळम् को—
लघुराज; विट्टेयोत्कु—भगवान (श्रीराम) के; मुत्तने चैल्ल—आगे गये; मुत्तवन्—
ज्येष्ठ श्रीराम; अत्तुत्तान्तिन्मु—उनके भी; मुत्तने—आगे गये; तत्तने इल्ला—अप्रमेय;
तम्बि—छोटे भाई; तटुप्पान्—रोकने लगे; पिरर् इल्ले—(उनको रोकने) कोई दूसरे
नहीं थे; कण्ट उम्बरुम्—इसको देख देव भी; वैयट्टुर्—शोकाकुल होकर; अळुत्तार्—
रोये; अत्तुत्तो—हाव । ११६५

लक्ष्मण ने कार्य के पहले ही वादा कर दिया । लघुराज यह कहकर
(उसको चरितार्थ करने के विचार से) श्रीराम के आगे कबन्ध के मुख की
तरफ जाने लगे । श्रीराम भी उनको पीछे करके आगे जाने लगे ।
तब अनुपमेय छोटे भाई ने अपने बड़े भाई को रोका । इस तरह दोनों ने
आपस में एक दूसरे को रोका । देवों ने यह देखा और यह भी देखा कि
उन दोनों को रोकनेवाला कोई अन्य नहीं है । तब वे शोक से रोने
लगे । ११६५

इतैय राहिय विरुवर मुहत्तिरु कण्वोल्
 कतैयुम् वारहळल् वीरर्शैन् रणुहलुड् गवन्दन्
 वितैयि नैय्दिय वीरर्नीर् यावर् कौलैन्
 नितैयु नैञ्जिन रिमैत्तिल रुत्ततर् नित्शार् 1166

इतैयर् आकिय-ऐसे; कतैयुम् वार् कळल्-ववणनशील बड़ी पायलधारी; वीरर् इरुवरुम्-दोनों वीर; मुक्त्तु इरु कण् पोल्-मुख की दोनों आँखों के समान; चैन् अणुकलुम्-ज्योंही जाकर नियराये, त्योंही; कवन्दन्-कवन्ध के भी; वितैयिन् अय्यत्तिय-कर्म-प्रेरित हो आये; वीरर् नीर्-वीर तुम; यावर् कौल्-कौन हो; अन्त-पूछने पर; नितैयुम् नैञ्चित्तर्-सोचने हुए मन के साथ; उरुत्ततर्-क्रुद्ध बनकर; इमैत्तिलर्-अपलक; नित्शार्-(तरेरते) खड़े रहे। ११६६

ववणनशील पायलधारी दोनों वीर एक ही मुख की दोनों आँखों के समान जाकर कवन्ध के पास पहुँचे। कवन्ध ने उनसे पूछा कि कर्म-परिपाक से इधर आगत तुम दोनों वीर कौन हो? यह सुनकर दोनों वीर क्रुद्ध हुए और कुछ सोचते हुए उसको तरेरने लगे। उस स्थिति में वे खड़े रहे। ११६६

अळिन्दु ङारल रिहळ्त्तदन् रैन्तैयैन् रळ्त्तशान्
 पौळिन्द कोपत्तन् पौरिक्कत्तल् विळितोरुम् बीडिप्प
 विळ्ळुङ्गु वैत्तैन् वीङ्गलुम् विण्णुर् वीरर्
 अळुन्द तोळ्हळै वाळ्हळा लरिन्दन् रिट्टार् 1167

अळिन्दुळ्ळार् अलर्-(मुझे देखकर भी) ये भय से निस्पंद नहीं हुए; अन्तै इक्ळन्त्ततर्-मेरा अपमान करते हैं; अन्तु अळ्त्तशान्-यह सोचकर खोल उठा; तन् कोप पौरिक्कत्तल्-अपनी अंगार के साथ कोपाग्नि; विळि तोळुम्-दोनों आँखों द्वारा; बीडिप्प-प्रकट करते हुए; विळ्ळुङ्गुवान् अन्त-निगल लूंगा, इस विचार से; वीङ्गलुम्-शरीर को फुलाने पर; वीरर्-दोनों वीरों ने; विण् उर अळुन्त-आकाश से लगते हुए जो उठे, उन कन्धों को; वाळ्कळाल्-तलवारों से; अरिन्त्ततर्-काटकर; इट्टार्-गिराया। ११६७

कवन्ध सोचने लगा कि यह क्या नई बात है? ये मुझे देखकर भयभीत होकर मुच्छित नहीं हो रहे! मेरा अपमान करते हैं। उसकी कोपाग्नि अंगारों के साथ उसकी दोनों आँखों से प्रकट होने लगी। उसने उनको निगलने के विचार से अपना शरीर फुलाया। तब दोनों वीरों ने आकाश तक उठे हुए उसके हाथों को अपनी तलवारों से काटकर गिरा दिया। ११६७

कैह ङरुवैड् गुरुदिया रौळक्किय कवन्दन्
 मैय्यिन् मेरुकीडु किलक्कुडप् पेरुन्दि विरवुम्

शैय मानैडन् दाळतडत् तत्तिवरै तत्तनो
डैय नीड्गिय पेरैळि लुवमैय तानान् 1168

कैकळ अरु-कटे हाथों का होकर; वैम् कुशुति आरु-गरम रक्त की नदी; ओळ्क्किय कवन्तन्-बहाता हुआ कवन्ध; मैय्यिन्-अपने शरीर में; मेरुक्कु ओट्टु किळक्कु-पश्चिम से पूर्व तक; उर-जाती हुई; पेरु नति विरवुम्-बड़ी नदी (कावेरी) से युक्त; शैय मा नैट्टु-सह्य नाम के लम्बे-चौड़े और; ताळ् तट-विस्तृत तराइयों के; तत्ति वरै तत्तनोट्टु-श्रेष्ठ पर्वत के साथ; ऐयम् नीड्क्किय-सन्देह-रहित; पेरु ओळिल्-अतीव सुन्दर; उवमैयन् आतान्-तुल्य बन गया । ११६८

कटे हाथों के साथ शरीर पर रक्त की नदी बहाते हुए जो रहा, उस कवन्ध का शरीर सह्याद्रि से असंदिग्ध और सुन्दर रूप से तुल्य हो गया, जिस पर कावेरी की लम्बी नदी पश्चिम से लेकर पूर्व के छोर को छूती हुई बहती है । ११६८

आळु नायह नङ्गैयिर् डीण्डिय वदत्ताल्
मूळुञ् शावत्तिन् मुन्दिय तीविनै मुडित्तान्
तोळुम् वाङ्गिय तोमुडै याक्कैयैत् तुरवा
नीळ नीड्गिय परवैयिन् विण्णुर निमिरन्दान् 1169

आळुम् नायकन्-लोकपालक जगन्नाथ प्रभु श्रीराम ने; अम् कैयिल्-अपने सुन्दर हस्त से; तीण्डिय अतत्ताल्-स्पर्श किया, उससे; मूळुम् चापत्तिन्-प्रभावपूर्ण शाप के कारण; मुन्दिय-आरब्ध; तीविनै-पाप को; मुडित्तान्-मिटाकर; तोळुम् वाङ्क्किय-कटी भुजाओं के साथ; तोम् उटै याक्कैयै-दोषयुक्त शरीर को; तुरवा-छोड़कर; नीळम् नीड्क्किय-नीड़ को त्यागकर आये; परवैयिन्-पक्षी के समान; विण् उर निमिरन्दान्-आकाश को स्पर्श करते हुए बढ़ा । ११६९

उसके शरीर पर भुवनगोप्ता जगन्नायक श्रीराम के सुन्दर हाथ का स्पर्श हो गया था । इसलिए सारे पाप कट गये, जो प्रबल शाप के कारण उसे लगे थे और फल दे चुके थे । भुजाओं-रहित दोषसहित अपना शरीर छोड़कर वह नीड़युक्त पक्षी के समान आकाश में एक दिव्य रूप में खड़ा हो गया । ११६९

विण्णि तित्त्तवन् विरिञ्जने मुदलितर् यार्क्कुम्
कण्णि तित्त्तव तिवर्त्तन् कर्त्तुत्तुर् वृणर्न्दान्
अण्णि यत्तवन् गुणङ्गळे वाय्दिरन् दिशैत्तान्
पुण्णि यम्बयक् किन्ऱुळि यरियदैप् पीरुळे 1170

विण्णिन् तित्त्तवन्-आकाश में खड़ा होकर; विरिञ्जने मुदलितर्-ब्रह्मादि; यार्क्कुम्-सभी की; कण्णिन् तित्त्तवन्-दृष्टि के सामने स्थित; इवन् अत-भगवान् ये हैं, यह; कर्त्तुत्तु उर उणर्न्दान्-मन में स्थिर रूप से जान लिया; अत्तवन् कुणङ्कळे-उनके कल्याणगुणों को; अण्णि-स्मरण कर; वाय् तिरन्नु-मुख खोलकर; इचैत्तान्-

गान किया; पुण्णियम्-पुण्य; पयक्किन्ऱुळि-जब फलीभूत होता है, तब; अँ पौळ्ळे अरियतु-कौन सी वस्तु दुर्लभ है । ११७०

आकाश में खड़ा होकर उसने अपने मन में यह स्थिर रूप से जान लिया कि ये ही वे परमदेव हैं, जो विरंचि आदि देवताओं की (ध्यान-) दृष्टि के लक्ष्य बने हैं। वह उनके कल्याणगुणों का स्मरण करके गान करने लगा। हाँ! जब पुण्य फलीभूत होने लगता है, तब कौन सी वस्तु दुर्लभ होती है? । ११७०

ईन्ऱवत्तो	वैप्पौळु	मैल्लैतोर्	नल्लरत्तित्तु
शान्ऱवत्तो	तेवर्	तवत्तित्तु	रत्तिप्पयत्तो
मून्ऱु	कवडाय्	मुळैत्तैळुन्ऱु	मूलमो
तोन्ऱि	यरुवित्तैयेन्	शावत्	तुयर्तुडैत्ताय् 1171

तोन्ऱि-मेरे सामने प्रकट होकर; अरु वित्तैयेन्-दुस्तर पापी (मेरे); चाप तुयर्-शाप का दुःख; तुडैत्ताय्-मिटानेवाले; अँ पौळुम् ईन्ऱवत्तो-सभी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता हैं क्या; मैल्लै तोर्-सीमाहीन; नल् अरत्तित्तु-श्रेष्ठ धर्म के; चान्ऱ अवत्तो-प्रमाण जो हैं, वे हैं क्या; तेवर् तवत्तित्तु-देवों के तप के; तत्ति पयत्तो-श्रेष्ठ फलस्वरूप हैं क्या; मून्ऱु कवटु आय्-त्रिशाखा में; मुळैत्तु अँळुन्ऱु-प्रकट होनेवाले; मूलमो-उनके मूल हैं क्या । ११७१

मेरे सामने प्रकट होकर कठोर पापी मेरा शाप-दुःख दूर करनेवाले हे प्रभु! क्या आप ही चराचर के जनक हैं? अनन्त धर्मपथ के पथिकों के लिए प्रमाणस्वरूप आप ही हैं क्या? आप देवों के कठिन तप के फलस्वरूप अवतरित परमपुरुष हैं? या ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूपी त्रिशाखाओं के मूल परब्रह्म हैं? । ११७१

मूलमे	यिल्ला	मुदल्वत्ते	नीमुयलुम्
कोलमो	यार्क्कुन्	दैरिवरिय	कौळ्ऱैयवाल्
आलमो	वालि	तडैयो	वडैक्किडन्ऱु
बालत्तो	वैलैप्	परप्पो	पहराये 1172

मूलमे इल्ला-अनादि; मुतल्वत्ते-मूलपुरुष; नी मुयलुम्-आप जो लेते हैं; कोलमो-वे रूप; यार्क्कुम् तैरिवु अरिय-सबके लिए अज्ञ; कौळ्ऱैय-तथ्यों के आधार पर हैं; आल्-इसलिए; आलमो-(प्रलय के बाद उत्पन्न) वह वृक्ष हैं क्या; आलित्तु अटैयो-उस वट का पत्र है क्या; अटै किटन्ऱु पालत्तो-पत्र पर पड़े रहे शिशु हैं क्या; वैलै परप्पो-(वह वट-वृक्ष जिसमें है) वह सागर-विस्तार है क्या; पकराय्-समझाइए । ११७२

अनादि आदिपुरुष! आप स्वेच्छा से जो रूप लेते हैं, उनके तथ्य किसी के ज्ञानगम्य नहीं होते। आपका मूल रूप क्या है? प्रलय के जलविस्तार के मध्य प्रकट होनेवाला वट-वृक्ष है? या उसका पत्र?

या उस पत्र के शायी शिशु ? या वही जल-विस्तार ? समझाइए कौन सा है ? । ११७२

निन्शैय्है	कण्डु	नितैनुदतवो	नीण्मरैहळ्
उन्शैय्है	यत्तवैताज्	जौत्त	वीळुक्कितवो
अैन्शैय्देत्	मुन्त	मिच्चैय्है	यैय्दिताय्
पिन्शैय्व	दिल्लाप्	पैरुज्जैल्व	नीपैर्राय् 1173

पिन् चैय्वतु इल्ला-और भी जोड़ा जाय ऐसा जो नहीं; पैरु चैल्वम्-ऐसे बड़े (मोक्ष) धन के; पैर्राय् नी-स्वामी हैं आप; नीण् मरैकळ्-अनन्त वेदों ने; निन् चैय्कै कण्डु-आपके कार्य देखकर; नितैनुतवो-स्मरण करके कहे; अत्तवै ताम्-(या) वे; उन् चैय्कै-आपके कृत्यों को; जौत्त वीळुक्कितवो-निर्धारित कर कहनेवाले हैं; इ चैय्कै अय्यित्ताय्-यह (मुझे तारने का) काम करने की कृपा की; मुन्तम् अैन् चैय्तेन्-(इनके योग्य) पहले मैंने क्या पुण्य किया था । ११७३

आप मोक्षनिधि के स्वामी हैं । वह निधि ऐसी है, जिसमें और जोड़ने की आवश्यकता नहीं रहती, न जोड़ना ही सम्भव है । वेदों ने आपके कार्य देखकर वर्णन किये हैं या उनके कहे अनुसार आप कार्य करते हैं ? आपने मेरे प्रति यह जो हित-कार्य किया है, उसके योग्य मैंने क्या पुण्य किया था ? । ११७३

काण्वार्क्कुड्	गाणप्	पडुम्बोरुट्टकुड्	गण्णाहिप्
पूण्वाय्पो	निर्ऱियाल्	यादौन्ऱुम्	पूणादे
माण्वा	लुलहै	वयिर्ऱौळित्तु	वाङ्गुदियाल्
आण्वालो	पैण्वालो	वप्पालो	वैप्पालो 1174

काण्वार्क्कुम्-दर्शकों और; काणप्पटम् पोरुट्टकुम्-दृश्य पदार्थों की; कण्णाकि-दृष्टि बनकर; यातु औन्ऱुम् पूणाते-विना किसी का धारण किये ही; पूण्पाय् पोल्-धारक के समान; निर्ऱि-स्थित हैं; उलकै-सर्वलोकों को; माण्पाल्-दिव्यशक्ति से; वयिर्ऱु औळित्तु-उदर में छिपाये रखकर; वाङ्गुक्ति आल्-(कल्पारम्भ में) फिर से बाहर लाते हैं; आण् पालो-आप पुरुष जाति हैं; पैण्पालो-स्त्री; अप्पालो-दोनों के परे हैं; अै पालो-कौन जाति हैं । ११७४

आप दर्शकों और दृश्यों की आँखें हैं ! आप सचमुच किसी का धारण नहीं करते पर देखने में धारण करते से स्थित हैं ! [यह गीता के (९-५) श्लोक का भाव है । श्लोक यह है— “न च मत्स्यानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् । भूतभृन्न भूतस्यो ममात्मा भूतभावनः ॥” इसको ऐसे ही मनन करके समझना है ।] अपनी (शक्ति) महिमा से प्रपंच को अपने उदर में छिपा लेते हैं और वाद प्रकट करते हैं ! क्या आप पुरुष जाति के हैं या स्त्री जाति के ? या दोनों नहीं है ? या दोनों के परे कोई (नपुंसक) जाति हैं ? कौन सा लिंग है आपका ? । ११७४

आदिप्	पिरमनुनी	यादिप्	परमनुनी
आदियेनुम्	बौरुळुक्	कप्पालुण्	डायिनुनी
शोदिनी	शोदिच्	चुडर्प्पिळम्बुम्	नीयेन्ऱु
वेदमुरै	शैय्दाल्	वैळ्हारो	वैरुळ्ळार् 1175

आति पिरमनुम् नी-सृष्टिमूल ब्रह्मा भी आप हैं; आति परमनुम् नी-उनके भी आदि परब्रह्म भी आप हैं; आति अँनुम् पौरुळुक्कु-आदि कहलानेवाले तत्त्व के भी; अप्पाल् उण्डु आयिनुम्-परे कुछ हो तो; नी-वह भी आप हैं; चोति नी-ज्योतिस्वरूप हैं आप; चोति चुटर् पिळम्पुम्-ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी; नी अँन्ऱु-आप ही हैं, यह; वेतम् उरै चैय्ताल्-वेद कहते हैं तो; वैरु उळ्ळार्-वेदवाह्य सम्प्रदायों के देव; वैळ्कारो-नहीं शरमायेंगे क्या । ११७५

सृष्टि के मूल ब्रह्मा आप ही हैं। उनके भी आदि आप ही हैं। अगर आदि के आदि कुछ हैं तो वह भी आप ही हैं। आप ज्योतिस्वरूप सब हैं। ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी आप ही हैं। यह वेदों का निष्कर्ष है। यह सुनकर अन्य सम्प्रदाय जिनको आदिदेव कहते हैं, वे देव कहाने पर नहीं शरमायेंगे क्या ? । ११७५

अँण्डिशैयुन्	दिण्शुवरा	येळ्ळे	निलैयैडुत्त
अण्डप्	पैरुङ्गोयिर्	कैल्ला	मळ्हाय
मण्डलङ्गळ्	मून्ऱिन्	मेत्तिन्ऱु	मलराद
पुण्डरिह	मौट्टिन्	पौहुट्टो	पुरैयम्मा 1176

अँण् तिचैयुम्-आठों दिगन्त; तिण् चुवराय्-सबल भित्तियाँ बने हैं; एळ् एळ् निलै अँटुत्त-ऐसे चौदह तल्लों में बने; अण्ड पैरुम् कोयिर्कु अँल्लाम्-अण्डों के बने सम्पूर्ण मन्दिर से; अळ्ळु आय-अधिक सुन्दर; मण्डलङ्कळ् मून्ऱिन् मेल् नित्ऱुङ्- (सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र-) त्रिमण्डलों के ऊपर स्थित होकर; मलरात-अविकसित; पुण्डरिकम् मौट्टिन्-कमलकली का; पौकुट्टो-कर्णिका (परमपद); पुरै-आपका वासस्थान है क्या; अम्मा-री मैया । ११७६

चौदह लोकों का एक अण्ड है। उनमें हर एक दिगन्त की भित्तियों से आवृत है। वह अण्ड मन्दिर के समान है। उस सुन्दर मन्दिर के ऊपर सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र —तीन मण्डल हैं। उनके ऊपर अविकसित कमल की कली है। उसकी कर्णिका जो है (परमपद) क्या वही आपका वासस्थान है ? । ११७६

मण्बा	लमरर्	वरम्बारुङ्	गाणाद
अँण्बा	लुयर्न्द	वैरियोङ्गु	नल्वेळ्वि
उण्बाय्नी	यूट्टुवाय्	नीयिरण्डु	मौक्किन्ऱु
पण्बा	ररिवार्	पहर्वाय्	परमेट्टि 1177

परमेष्टि-परमेष्ठी; मण् पाल् अमरर्-भूसुर; आरुम्-कोई भी; वरस्पु
काणात-जिसका ठिकाना नहीं देख पाते; अण्पाल् उयरन्त-संख्या में बढ़े; और
ओङ्कु-जिनमें अग्नि पाली जाती है, उन; नल् वेळ्वि-श्रेष्ठ यज्ञों में; उण्पाय् नी-
(हवि-) भोक्ता भी आप हैं; ऊट्टुवाय् नी-अन्य देवों को भोग करानेवाले भी (या हवि
देनेवाले भी) आप ही हैं; इरण्डुम् ओक्किन्ड- (भोजनदाता, भोजनकर्ता) दोनों के
साथ रहने का; पण्पु-प्रकार; अरिवार् यार्-जाननेवाले कौन हैं । ११७७

परमेष्ठी ! भूसुर असंख्य यज्ञ करते हैं । उनमें अग्निदेव का
आवाहन होता है और उनके पास हवि अर्पित की जाती है । उस हवि
के भोक्ता भी आप हैं और उसका उच्छिष्ट देवताओं को आहार करानेवाले
भी आप ही हैं । (हवि के देनेवाले भी आप हैं ।) भोक्ता तथा
भोजनदाता दोनों आप ही एक साथ रहते हैं । यह महिमा जान सकनेवाले
कौन हैं ? । ११७७

निङ्कु	नैडुनीत्त	नीरिन्	मुळैत्तैळुन्द
मौक्कुळे	पोल	मुहुळित्त	वण्डङ्गळ्
ओक्कवुयर्न्	डुन्नुळे	तोन्नि	यीळिक्किन्ड
पक्क	मरिडर्	कैळिदो	परम्बरते 1178

परम्परते-परात्पर; निङ्कुम् नैडुम् नीत्तम्-विपुल महाप्रलय के; नीरिन्-
जल में; मुहुळित्त-कली के समान उठे; अण्डङ्गळ्-अण्डगोल; ओक्क उयरन्तु-
एक साथ ऊपर आकर; उन् उळे तोन्नि-आपके अन्दर से प्रकट होकर; यीळिक्किन्ड-
फिर कल्पान्त के प्रलय में छिप जाते हैं; पक्कम्-वह पक्ष; अरितङ्कु अळितो-जानने
के लिए सुलभ है क्या । ११७८

परात्पर ब्रह्म ! महाप्रलय के जलविस्तार में से कली के समान अण्ड
निकलकर ऊपर आते हैं । वे आप ही के अन्दर से बाहर प्रकट होते हैं,
फिर यथासमय कल्पान्त के प्रलय में आप ही में समा जाते हैं ! यह
आपका अतिशय पक्ष यथार्थ रूप में समझ लेना सुलभ है क्या ? । ११७८

मायप्	पिरवि	मयत्तीक्कि	माशिल्लाक्
कायत्तै	नल्हित्	तुयरिन्	करैयेरिप्
पेयीत्तेन्	बेदैप्	पिणक्कळुत्त	वैम्बैरुमान्
नार्यौत्ते	नैन्त	नलत्तिळैत्ते	नार्यौत्तान् 1179

माय पिरवि-वंचकमय (राक्षस-)जन्म-सुलभ; मयल् नीक्कि-मोह हटाकर;
माचु इल्ला-निर्दोष; कायत्तै नल्कि-शरीर को देकर; तुयरिन् करै एरि-दुःख
(सागर) के तीर पर चढ़ाकर; पेयै औत्तेन्-भूत के समान; पैतै पिणक्कु-अज्ञता
से गृहीत पातकमय जीवन; अळुत्त-काटनेवाले; वैम्बैरुमान्-मेरे प्रभु; नाय्
औत्तेन् नान्-श्वान-सम मैने; अैन्त नलन् इळैत्तेन्-क्या ही सुकर्म किया था । ११७९

मेरा वंचक राक्षस-जन्म था, उससे अत्यन्त मोह में फँसा हुआ था ।

आपने उस मोह का जाल काट दिया । फिर यह निर्दोष दिव्य शरीर प्रदान किया । दुःख-सागर के तीर पर चढ़ा दिया । भूत के समान मेरे कुजीवन का बन्धन काटकर मुझे उबारनेवाले हे प्रभु ! मैं कुत्ते का जीवन बिता रहा था । मैंने क्या ही सुकार्य किया था ? आपकी निर्हेतुक करुणा भी कितनी बड़ी है ! । ११७९

अँनूराङ्कु	गिनिदियम्वि	यिन्नुरियक्	कूरुवैनेल्
अँनूराडु	तेव	रुडिक्	कँनवुन्नात्
तन्नायैक्	कण्णुर्	कन्नन्नैय	तन्मैयत्ताय्
निन्नुरात्तैक्	कण्डा	नैरिनिन्नार्	नेरनिन्नान् 1180

अँनूराङ्कु-ऐसा; इत्तिडु इयम्पि-सन्तोषक रीति से स्तुति करके; इन्नु-अब; अरिय कूरुवैनेल्-प्रकट कहूँ तो; तेवर् उरुत्तिकु-देवों के हित में; अँनूराडु-उचित नहीं रहेगा; अँनू उन्ना-यह सोचकर; तन्नायै कण् उरु-अपनी माँ को जिसने देखा हो, उस; तन्मैयत्ताय्-(बछड़े की-सी) स्थिति में आकर; निन्नुरात्तै-जो खड़ा रहा, उस कबन्ध को; नैरि निन्नार्-धर्मपथिकों को; नेर् निन्नान्-सामने आकर दर्शन देनेवाले (श्रीराम) ने; कण्डा-देखा । ११८०

स्तुति में इतना कहा कबन्ध ने । वह और भी कहना चाहता था । लेकिन, 'और भी कहूँ तो अवतार-रहस्य खुल जायगा । वह देवों के हित में अच्छा नहीं रहेगा ।' यह सोचकर वह बिछुड़ी माता गाय से पुनः प्राप्त बछड़े की-सी हालत में अत्यन्त आनन्द के साथ चुप खड़ा रह गया । ज्ञानमार्गियों को उनके ध्यान में दर्शन देनेवाले श्रीराम ने उसको उस स्थिति में देखा । ११८०

पारा	यिळैयवत्ते	पट्टविवन्	वेरेयोर्
पेराळन्	रान्ना	यीळियोङ्गु	पैर्रियत्ताय्
नेराहा	यत्तित्	निर्किन्नार्	नीयिवत्तै
आरा	यैन्नववन्तुम्	यार्हौलो	नीयैन्नान् 1181

इळैयवत्ते-अनुज; पाराय्-देखो; पट्ट इवन्-(हमारे हाथों) मरा यह; वेरेयोर्-अन्य एक; पेर् आळन् ताताय्-सम्मान्य (व्यक्ति) बनकर; औळि ओङ्कु-तेज में उन्नति; पैर्रियन् आय्-प्राप्त करके; नेर् निर्किन्नान्-हमारे सामने खड़ा है; नी इवत्तै आराय्-तुम इसको परख लो; अँन्-(श्रीराम के) कहने पर; अवन्तुम्-उन्होंने भी; नी यार् कौलो-तुम कौन हो तो; अँनूरा-पूछा । ११८१

तब श्रीराम ने लक्ष्मण को सुझाया कि छोटे भैया ! देखो । जिसको हमने मारा था, वह बहुत सम्मान के योग्य और तेजोमय रूप में खड़ा है । पता लगा लो कि वह सचमुच कौन है ? तब लक्ष्मण ने उससे पूछा कि तुम कौन हो तो ? । ११८१

शन्दपू णलङ्गल् वीरन् दनुवन्तु नामत् तेतोर्
 कन्दरप्पन् शावत् तालिक् कडैप्पडु पिरवि कण्डेन्
 वन्दुर्रीर् मलर्क्कै तीण्ड मुन्नुडै वडिवु पेर्रेन्
 अन्दैक्कु मेन्दै नीर्या निशैप्पडु केण्मि नैन्ऱान् 1182

चन्तम् पूण्-सुन्दर आभरण; अलङ्कल् वीरन्-और मालाधारी वीर; तनु
 अन्तम् नामत्तेन्-तनु का नामधारी हैं; ओर् कन्तर्प्पन्-एक गन्धर्व हैं; चापत्ताल्-
 शाप के कारण; इ कटै पडु पिरवि-यह नीच जन्म; कण्डेन्-प्राप्त कर चुका था;
 वन्तु उर्रीर्-आप पधारे; मलर् क तीण्ड-(आपके) कमल-सम हाथों के स्पर्श से;
 मुन् उडै वडिवम्-मूल रूप; पेर्रेन्-प्राप्त किया; अन्तैक्कुम् अन्तै नीर्-मेरे पिता
 के पिता आप; इचैप्पतु-मेरा विनय-कथन; केण्मिन्-सुनिए; नैन्ऱान्-कहा। ११८२

तब उसने उत्तर दिया। वह सुन्दर आभरणों से और हारों से भूषित
 था। उसने कहा कि मैं तनु नामधारी गन्धर्व हूँ। किसी शापवश इस
 नीच जन्म को प्राप्त हुआ था। आप कृपा करके आये और आपके
 कमल-हस्तों के स्पर्श से मुझे अपना पूर्वरूप प्राप्त हो गया। मेरे पिता
 के पिता ! मैं कुछ सुनाता हूँ। आप सुनिए। ११८२

कणैयुलाळ् जिलैयि नीरैक् काक्कुत्त रिल्लै येनुम्
 इणैयिला डन्तै नाडर् केयिन् शैय्दर् केर्कुम्
 पुणैयिला दवरक्कु वैलै पोक्करि दन्त देपोल्
 तुणैयिला दवरक्कु मिन्ऱाड् पहैप्पुलत् दौलैत्तु नौक्कल् 1183

कणै उलाम् चिलैयिनीरै-शरासन-हस्त आपको; काक्कुत्तर् इल्लै-रक्षित
 करने में समर्थ कोई नहीं है; एनुम्-तो भी; इणै इलाळ् तन्तै-अप्रमेय (सीताजी
 को); नाडर्कु-खोजने के हेतु; एयिन्-आवश्यक; चैय्दर्कु-(काम) करने को;
 एर्कुम्-(सहायता प्राप्त करना) उचित होगा; पुणै इलातवरक्कु-नाव जिनके पास
 नहीं है, उन्हें; वैलै पोक्कु-समुद्र-तरण; अरितु-कठिन है; अन्तते पोल्-उसी तरह;
 पक्कै पुलम् तौलैत्तु-शत्रु का समर में संहार करके; नौक्कल्-दूर करना; तुणै
 इलातवरक्कुम्-सहायक-हीनों के लिए; इन्ऱ- (सम्भव) नहीं है। ११८३

यह सर्वविदित है कि शरासनधारी आपकी सहायता करने का
 सामर्थ्यशाली कहीं नहीं है। तो भी अनुपम देवी सीता को खोजने हेतु
 आवश्यक और योग्य कार्य करने के लिए कुछ लोगों को सहायक बना लेना
 ही उचित होगा। जिसके पास नाव नहीं, उसे समुद्र पार करना कठिन
 है ! वैसे ही समरांगण में शत्रुओं का नाश करना हो तो निस्सहायों के लिए
 साध्य नहीं है। ११८३

पळिप्परु निलैमै याण्मै पहरवदेन् पदुम पोडत्
 तुळिप्पेरुन् दहैमै शान्ऱ वन्दण नुयिरुत्त वैल्लाम्

अळिप्पदर् कौरव तान वण्णलु मरिदि रन्ने
 ओळिप्परन् दिरल वूद गणत्तौडु मुदैयु मुण्मै 1184

पळिप्पु अरु-अनिद्य; निलमै आण्मै-आपके स्थान और पौरुष का; पक्कवतु
 अँत्-क्या कहना; पतुम पीटतु उळि-पद्मपीठ पर (के); पैरुम् तर्कमै चान्नु-
 उत्कृष्ट और शानदार; अन्तणन् उयिर्त्त-ब्रह्मा द्वारा सृष्ट; अँलाम्-सारे (लोकों
 व जीवों) को; अळिप्पतर्कु-संहार करनेवाले; ओखन् आत् अण्णलुम्-एक
 बने-ईश्वर भी; ओळिप्पु अरुम्-अलग न होनेवाले; तिरल अ-बलशाली; पूत
 कणत्तौडुम्-भूतगणों के साथ; उदैयुम् उण्मै-रहते हैं, सो तथ्य; अरितिर अन्ने-
 आप जानते हैं न । ११८४

आपके अनिद्य गौरव और पौरुष (वीरता) का कहना क्या ?
 पद्मपीठासीन ब्रह्मा से सृष्ट सारे लोकों के संहारक हैं शिवजी । वे भी
 अपने बलशाली भूतगणों को सदा साथ रखते हैं । यह तथ्य आप जानते
 ही हैं न ? । ११८४

आयदु शैयहै यैन्व दत्तुत्तुदै नैरियि नैण्णित्तु
 तीयवर्च् चेरहि लाडु शैव्वियोर्च् चेरुम् शैयहै
 तायिन्नु मुयिर्क्कु नल्हुम् जवरियैत् तलैप्पट्टु दत्तन्नाळ
 एयदोर् नैरियै यैय्दि यिरलैयड् गुन्ऱ मेरि 1185

अत्तु तुरै नैरियित्तु अँण्णि-धर्म-मार्ग का विचार करके; तीयवर् चेर-किलातु-बुरों
 से नहीं मिलकर; चैव्वियोर् चेरुम् चैय्कै-अच्छों के साथ मिलने का काम; चैय्कै
 अँत्तुपतु आयतु-कर्तव्य-कर्म है; उयिर्क्कु-जीवों को; तायिन्नुम्-माता से बढ़कर;
 नल्कुम्-सहायक; जवरियै-शबरी को; तलैप्पट्टु-मिलकर; एयतु-उनसे निदिष्ट;
 नैरियै अँय्ति-मार्ग पर जाकर; इरलै अम् कुन्ऱम् एरि-ऋष्यमूक पर्वत पर
 चढ़कर । ११८५

धर्म-मार्गों का अवलम्बन करके, विना बुरों की संगति किये अच्छों के
 साथ मिलना अब कर्तव्य कर्म है । आप शबरी के पास जाकर उनसे
 मिलिए । वे माता से भी अधिक हित करेंगी । वे मार्ग बतायेंगी ।
 आप उनके बताये मार्ग को पकड़कर जाइए और ऋष्यमूक (ऋष्य—एक
 तरह का हरिण है, उसके नाम से भूषित) पर्वत पर चढ़कर— । ११८५

कदिरवन् शिरुव तान कन्हवा णिरत्तित्तु तानै
 अँदिरैदिर् तळुवि नट्पि नितिदमर्न् दवत्ति तीण्ड
 वैदिर्पोरु तोळि ताळै नाडुदल् विळुमि दैन्ऱान्
 अदिरकळल् वीरर् तामु मन्ऱदै यमैव दानार् 1186

कदिरवन् चिरुवन् आत्-सूर्य का पुत्र; कनक वाळ निरत्तित्तानै-उज्ज्वल कनक-
 वर्ण (सुग्रीव) को; अँतिर् अँतिर् तळुवि-आमने-सामने मिलकर; नट्पिन् इति-
 अमर्न्तु-मित्रता में सुख से रहकर; अवत्तिन्-उसकी सहायता के साथ; ईण्ड-शीघ्र;

वैतिर् पौर-बाँस के समान; तोळिताळै-कंधों की (सीता) को; नाटुतल्-खोजना; विळुमि तु अँनूरात्-श्रेयस्कर होगा, कहा; अतिर् कळल् वीरर् तामुम्-क्वणनशील पायलधारी वीर भी; अन्तते-वही; अमैवतु आतार्-करने में लगे । ११८६

वहाँ सुग्रीव से मिलिए । वह कनकवर्ण वानरनायक सूर्य का पुत्र है । उसके साथ मित्रता कर लीजिए । उसकी सहायता लेकर बाँस के समान कन्धों वाली सीतादेवी को खोजिए । वही श्रेष्ठ होगा । कबन्ध की यह सलाह मानकर क्वणनशील पायलधारी वीर श्रीराम और लक्ष्मण चलने लगे । ११८६

आतपित् रौळुदु वाळ्त्ति यन्दरत् तवतुम् बोनात्
मानवक् कुमरर् तामु मत्तिशै वळिक्कोण् डेहि
कातमु मलैयु नीडुगिक् कङ्गुल्वन् दिरुक्कुड् गालै
आतैयि तिरुक्कै यैन्नु मदङ्गन् दडुक्कल् शेर्न्दार् 1187

आतपित्-उसके बाद; अवतुम्-वह (कबन्ध) भी; तौळुतु वाळ्त्ति-विनय और स्तुति करके; अन्तरत्तु पोतान्-आकाश में गया; मानव कुमरर् तामुम्-मानव-कुमार भी; अ तिचै वळि कौण्डु एकि-उस दिशा में राह बनाकर गये; कातमुम् मलैयुम् नीडुकि-कानन और पर्वत पार करके; कङ्गुल् वन्तु-रात आकर; इरुक्कुम् कालै-जब जम गयी, तब; आतैयिर् इरुक्कै अँन्तुम्-गज का स्थान कहलानेवाले; मतङ्कन् अतु-मातंग ऋषि के; अटुक्कल्-पर्वत पर; चेर्न्दार्-पहुँचे । ११८७

उसके बाद कबन्ध भी उनकी विनय के साथ स्तुति करके स्वर्ग चला गया । मानव (मनुकुल-जात) वीर भी कबन्ध की निर्दिष्ट (दक्षिण) दिशा में गये । अनेक कानन और पर्वत पार करके वे जाते रहे । खूब रात हो गयी, तब वे मातंग ऋषि के पर्वत पर आये । वहाँ मातंग (हाथी) रहते थे । ११८७

12. शवरि पिङ्गु पडलम् (शबरी जन्म-विमोचन पटल)

कण्णिय तरुदर् कौत्त कर्पहत् तरुवु मैत्त
उण्णिय नल्हुज् जैल्व मुरुनरुज् जोलैच् चालै
अँण्णिय विन्व मन्त्रित् तुन्बङ्ग लिल्लै यान्
बुण्णियम् पुरिन्दोर् वैहुन् दुर्क्कमे पोलु मन्त्रे 1188

कण्णिय-इच्छित; तरुदुर्क औत्त-(पदार्थ) देने में समर्थ; कर्पक तरुवुम् अँन्त-कल्पतरु के समान; उण्णिय-खाद्य (फलादि को); नल्कु-देनेवाले; चैल्वम् उडुम्-समृद्ध; चोलै-उपवनों से पूर्ण; चालै-(मातंग का) आश्रम; अँण्णिय इत्पम् अन्त्रि-सबसे गण्य सुख के सिवा; तुन्पङ्कळ् इल्लै आत-दुःख जहाँ नहीं है; पुण्णियम् पुरिन्दोर् वैकुम्-पुण्यपुरुष जहाँ रहते हैं; दुर्क्कमे पोलुम्-स्वर्ग के समान था । ११८८

शबरी का आश्रम इच्छित सभी मनोकामनाओं को पूरा करनेवाले

कल्पतरु कहा जा सकता था। खाद्य फल आदि यथेष्ट दे सके, उतने समृद्ध उपवन उसके चारों ओर थे। उसी आश्रम में मातंग मुनि रहते थे। वह पुण्यकृतों का प्राप्ति-स्थान साक्षात् स्वर्ग ही था, जहाँ चाहे हुए सभी सुख ही सुख मिलते हैं। कोई दुःख नहीं होता। ११८८

अन्तदा मिरुक्कै नण्णि याण्डुनिन् रळविल् कालम्
तन्तैये नितैन्दु नोर्कुब् शवरियैत् तलैप्पट् टन्नाट्
किन्नुरै यरळित् तीदिन् रिन्दत्तै पोलु मँन्नान्
मुन्नवर् किदुवैन् रैण्ण लावदोर् मूल मिल्लान् 1189

अवर्कु मुन्-उनके पूर्व; इतु-ये; अँन्नु अँण्णल् आवतु-ऐसा मानने योग्य; ओर्-कोई; मूलम् इल्लान्-(जिनका) मूल नहीं है; अन्तनु अम्-(वे श्रीराम) ऐसे; इरुक्कै नण्णि-स्थान में पहुँचकर; आण्डु नित्तु-वहाँ रहकर; अळवु इल् कालम्-अगणित काल तक; तन्तैये-अपना (श्रीराम का) नितैन्तु-ध्यान करके; नोर्कुम्-जो तपस्या करती रहीं; चवरियै तलैप्पट्टु-उन शबरी से मिलकर; अन्नाट्कु-उनको; इत्तु उरै अरळि-मधुर उपदेश देकर; तीतु इत्तु-विना कष्ट के; इरुन्तत्तै पोलुम्-रहीं, शायद; अँन्नान्-कहा। ११८९

श्रीराम आदिदेव थे। उनके पूर्व कोई नहीं रहे। वे सृष्टि के मूल थे। वे उस प्रख्यात मातंगाश्रम पर आये। वहाँ शबरी श्रीराम का ही ध्यान करते हुए अकूत काल से तपस्या कर रही थीं। श्रीराम उनसे मिले और उनका कुशल-क्षेम सम्बन्धी प्रश्न किया। आप विना किसी कष्ट के सुखी तो रहती हैं न ? ११८९

आण्डव ळन्बि नेत्ति यळुदिळि यरुविल् कण्णळ्
माण्डवैन् मायप् पाशम् वन्ददु वरम्बिल् कालम्
पूण्डमा दवत्तिन् शैल्वम् बोयदु पिरवि यँन्नाळ्
वेण्डिय कौणर्न्दु तल्हि विरुन्दुशैय् दिरुन्द वेलै 1190

आण्डु-तब; अवळ-शबरी; अरुवि कण्णळ्-सरिता के समान आँसू की धारा वाली आँखों के साथ; अत्तिप्पि एत्ति-भक्ति के साथ स्तुति करके; अँन् माय पाचम्-मेरी माया का पाश; माण्डु-मिट गया (आपके दर्शन से); वरम्पु इल् कालम्-असीम काल से; पूण्ड-मैंने जो धारण कर लिया था, उस; तवत्तिन् चैल्वम्-उस तप का भाग्य; वन्तु-आ मिला; पिरवि पोयतु-जन्म कट गया; अँन्ना-कहकर; वेण्डिय-निवेदनाहं; कौणर्न्दु-(फल आदि) लाकर; तल्कि-देकर; विरुन्दु चैयतु-आतिथ्य करके; इरुन्त वेलै-जब रहे, तब। ११९०

तब शबरी की आँखों से भक्ति के कारण आँसू की धारा सरिता के समान बहने लगी। उन्होंने श्रीराम की स्तुति की। कहा कि स्वामी ! आपके दर्शन से मेरा मायापाश कट गया। निस्सीम काल से मैं तपस्या कर रही हूँ। उसका सुफल आज मुझे मिल गया। मेरा जन्म-मोचन हो

गया है । फिर उन्होंने उनके भोजन के योग्य फल आदि लाकर अतिथि-सत्कार किया । जब श्रीराम और लक्ष्मण विश्रांत रहे, तब— । ११९०

ईशतुङ्	गमलत्	तोतु	मिमैयवर्	यारु	मैन्दै
वाशवन्	रानु	मीण्डु	वन्दतर्	महिळ्नुदु	नोक्कि
आशरु	तवत्तुक्	कैल्लै	यणुहिय	दिरामर्	काय
पूशतै	विरुम्बि	यैम्बास्	पोदुदि	यैन्ऱु	पोत्तार् 1191

अैन्तै-मेरे पिता; ईचतुम्-शिवजी और; कमलतूतोतुम्-कमलासन; इमैयवर् यारुम्-सुर सब; वाचवन् तातुम्-वासव भी; ईण्डु-यहाँ; वन्दतर्-आये; मकिळ्नुतु नोक्कि-सन्तोष के साथ मुझे देखकर; आचु अरु-निर्दोष; तवत्तिर्ऱु अैल्लै-तप का अन्त, सिद्धि का काल; अणुकियतु-निकट आ गया; इरामर्ऱु आय-श्रीराम की; पूशतै विरुम्पि-पूजा प्यार के साथ करके; अैम् पाल् पोतुति-हमारे पास पहुँच जाओ; अैन्ऱु पोत्तार्-कहके गये । ११९१

शबरी बोलीं । मेरे तात ! कमलासन, सभी देव और वासव यहाँ आये थे । उन्होंने मुझे सन्तोष के साथ देखकर कहा कि तुम्हारे निर्दोष तप का सिद्धिकाल आ गया । तुम श्रीराम की पूजा करना चाहती हो । वह पूरा करके हमारे पास आ जाओ । ११९१

इरुन्दत्तै	तैन्दै	नीयीण्	डैय्दुदि	यैन्नुन्	दत्तमै
पौरुन्दडि	विन्ऱु	तार्त्तैन्	पुण्णियम्	बूत्त	दैन्ऱु
अरुन्दवत्	तरशि	तन्तै	यन्नुर्	नोक्कि	यैङ्गळ्
वरुन्दुरु	तुयरन्	दीर्त्ता	यम्मत्तै	वाळि	यैन्ऱान् 1192

अैन्तै-नाथ; नी ईण्डु अैयुति-आप इधर पधारेंगे; अैन्नुम् तन्तमै-यह हालत; पौरुन्तडि-जब हुई; इरुन्दत्तैन्-(प्रतीक्षा में) रही; इन्ऱु तात्-आज ही; अैन् पुण्णियम्-मेरा पुण्य; पूत्ततु-फूला (फलीभूत हुआ); अैन्ऱु-ऐसा जिन्होंने कहा; अरुम् तवत्तु अरचि तन्तै-कठिन तपस्या की, उन रानी को; अन्पु उर-कृपा के साथ; नोक्कि-देखकर; अम्मत्तै-माताजी; अैङ्गळ् वरुन्दुरु-हमें कष्ट देनेवाले; तुयरम्-श्रम-दुःख को; तीर्त्ताय्-दूर किया; वाळि-जिओ; अैन्ऱान्-कहा । ११९२

मेरे नाथ ! आप यहाँ पधारेंगे— जब इसका भान लगा तभी से मैं आपकी प्रतीक्षा में रह रही हूँ । आज ही मेरा पुण्य सफलीभूत हुआ । जब शबरी ने राम से यह आदरवचन कहा, तब श्रीराम ने उन तपस्विनियों में रानी से कहा कि माता ! आपने हमारा श्रम और श्रमजनित दुःख दूर किया । आप चिरजीव रहें । ११९२

अत्तहन्तु	मिळैय	कोवु	मन्ऱव	णुऱैन्द	पिन्ऱै
विन्तैयर्	नोन्बि	ताळु	मैय्मैयि	नोक्कि	वैय्य

तुन्नैपरित् तेरोन् मैन्द निरुन्दवत् तुळक्किल् कुन्नम्
नितैवरि दायर् कौत्त नैरियेला नितैन्दु शौन्ताळ् 1193

अतकत्तुम्-अनघ के; इळैय कोवुम्-और लघुराज के; अत्तु-उस दिन;
अवण्-वहां; उरैन्त पित्तु-ठहरने के बाद; चित्तै अरु-कर्ममुक्त; नोत्पित्ताळ्-
तपस्विनी ने भी; मैय्मैयिन् नोक्कि-यथार्थ रूप से देखकर; वैय्य-गरम; तुन्नै
परि-शीघ्रगामी अश्वों के; तेरोन्-रथ पर जानेवाले (सूर्य) का; मैन्तन्-पुत्र,
सुग्रीव; इरुन्त-जहाँ रहा; अ तुळक्कु इल्-उस अचल; कुन्नम्-पर्वत के; नितैव्
अरितु आयर्कु-मन से जानने में कठिन; औत्त-जो रहा; नैरि अलाम्-मार्ग सभी;
नितैन्दु चोन्ताळ्-स्मरण करके बताया । ११६३

अनघ श्रीराम और उनके छोटे भाई लक्ष्मण उस दिन वहीं ठहरे ।
बाद कर्मभञ्जक तपस्विनी ने सच्चे भाव से श्रीराम और लक्ष्मण से
शीघ्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार दीप्तियुत सूर्य के पुत्र, सुग्रीव के
वासस्थान के पर्वत के मार्ग बताया । वे इतने जटिल थे कि मन में धारण
करना भी कठिन था । पर उन्होंने अपनी स्मृति से उस अचल ऋष्यमूक
पर्वत को जाने के सारे मार्ग ठीक-ठीक बता दिये । ११९३

वोट्टित्तुक् कसैव दान् मैय्न्नेरि वैळियिर् राहक्
काट्टुर् मरिन् रैन्त वन्तवळ् कळरिर् ऐल्लाम्
केट्तन् नैन्व मन्तो केळ्वियार् चैविहण् मुर्ऱुम्
तोट्टव रुणर्वि नुण्णु ममिळ्दत्तिन् शुवैयाय् नित्त्रान् 1194

केळ्वियाल्-उपदेश-श्रवण द्वारा; चेविकळ्-कर्ण (जिनके); मुर्ऱुम्-पूर्ण रूप
से; तोट्टवर्-विद्ध हुए (भरे हुए) हैं; उणर्विन्-(वे ज्ञानी) अपनी अनुभूति द्वारा;
उण्णुम्-(जिसको) भोगते हैं; अमुत्तत्तिन्-उस अमृत (रूपी) ज्ञान को; चुवैयाय्
नित्त्रान्-जो रुचि के रूप में स्थित हैं, उन (श्रीराम ने); वोट्टित्तुक्कु अमैवतु आत्त-
मोक्ष के; मैय् नैरि वैळि-सच्चे मार्ग को; इर्ऱु आक्-यही है, ऐसा; काट्टु-
वरसानेवाले; अरिर् अन्त-ज्ञानियों (गुरुओं) के समान; अन्तवळ्-उन्होंने;
कळरिर्ऱु ऐल्लाम्-जो कहा, वह सब; केट्तन्-ध्यान देकर तुना; अन्प-ऐसा बड़े
लोग कहते हैं । ११६४

श्रीराम कौन थे और उन्होंने किस विधि शवरी का मार्ग-दर्शन
सुना ? श्रेष्ठ उपदेशों से जिनके कर्ण भर गये थे, उनकी अनुभूति के लक्ष्य
हैं वे । व उन ज्ञानियों से भुगते हुए ज्ञान रूपी अमृत के स्वाद थे । वे
विनय के साथ ऐसे सुनते रहे, मानो शवरी कोई ज्ञानी गुरु हों, जो मोक्ष का
मार्ग साफ़-साफ़ बता रहे हों । कवि कहते हैं कि ऐसा बड़े लोगों का कहना
है ! । ११९४

पित्तव वळ्ळन्दु पेरु योहत्तिन् पेरियाले
तन्नुड रुन्नुड तात्त तन्मैयिन् वीडु शार्न्दाळ्

अन्तुडु कण्ड वीर रदिशय मळविन् रैयदिप्
 पीत्तुडिक् कळल्ह ळारप्पप् पुहन्डमा नैरियिर् पोत्तार् 1195

पित्तु-उसके बाद; अवळ-शबरी; उळन्तु पेंड-परिश्रम से प्राप्त; योक्तुत्तिन् पेंडियाले-योग के फलस्वरूप; तन् उटल्-अपना शरीर; तुडन्तु-त्यागकर; अ तत्तिमैयिन्-उस अद्वितीय; वीटु-मुक्तिपद को; चारुन्ताळ-गयीं; अन्तुडु कण्ड-उसको देखकर; वीर- (श्रीराम और लक्ष्मण) वीरों ने; अळवु इन्डु-अपार; अतिचयम् अयति-विस्मय पाकर; पीत्तु अटि-सुन्दर चरणों की; कळल्कळ आरप्प-पायलों को बजने देते हुए; पुक्कुड-शबरी-कथित; मा नैरियिल्-बड़े मार्ग पर; पोत्तार्-गये । ११६५

यह कहने के बाद शबरी ने कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त योगशक्ति के बल से अपना शरीर छोड़ दिया । वे मोक्षपद को प्राप्त हो गयीं । श्रीराम और लक्ष्मण को यह देखकर अपार विस्मय हुआ । फिर वे अपने सुन्दर चरणों की पायलों को बजने देते हुए उस दुरुह और विकट मार्ग पर जाने लगे, जिसका सम्यक् वर्णन शबरी ने किया था । ११९५

तण्णैतुडु गात्तुडु गुन्डु नदिहळुन् दविरप् पोत्तार्
 मण्णिडै वैह रोरुम् वरम्बिला दाडु माक्कळ
 कण्णिय वित्तैह ळैन्तुडु गट्टळल् कळिद लाले
 पुण्णिय मुरुविर् इन्त पम्बैयाम् पीय्है पुक्कार् 1196

तण् अंतुम्-शीतल; कात्तुम् कुन्डुम्-वनों और पर्वतों को और; नत्तिकळुम्-नदियों को; तविर-पार करते हुए; पोत्तार्-जो गये; मण् इटै-(वे) भूमि पर; वरम्पु इलातु-अपार वनकर; वेकल् तोरुम्-दिने-दिने; आटुम् माक्कळ-स्नान करनेवाले लोगों ने; कण्णिय-जान-बूझकर जो किये; वित्तैकळ् अंतुम्-वे कर्म रूपी; कट्टळल्-अग्निपुंज; कळितलाले-दूर हो जाते हैं, इसलिए; पुण्णियम् उरुविर् उन्त-पुण्यस्वरूप आया जैसे; पम्पै आम्-पंपा नाम के; पीय्है-सर पर; पुक्कार्-पहुँचे । ११६६

वे अनेक शीतल वनों, पर्वतों और नदियों को पार कर जाते रहे और पंपासर के तीर पर आ गये । उस पंपासर में दिने-दिने असंख्य लोग आकर स्नान करते और अपने पापों को निवार देते थे । उनके पापों का अग्निपुंज वहाँ मिट जाता था । इसलिए वह सर मूर्तेपुण्य के समान लगा । ११९६

विज्ञप्ति

विश्व-वाङ्मय से निम्नित अगणित भाषाई धारा ।

पहन नागरी-पट सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा ॥

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थः—

- १ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६४ मूल्य ६०.००
- २ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत १५वीं शती) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ० सं० ७५२ मू० ४०.००
- ३ „ —महाभारत-अेळुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू० ६०.००
- ४ बँगला— कृत्तिवास रामायण (आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या और सुन्दर)—१५वीं शती । हिन्दी पद्यानुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण पृ० ६२४ मू० २५.००
- ५ „ कृत्तिवास लंकाकाण्ड— „ गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० १५.००
- ६ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्येग्रामी कृत पृ० ४८९ मू० २०.००
- ७ „ लल्दुद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ० १२० „ १०.००
- ८ राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल-पदम भगत कृत । पृ० ३०० मू० १५.००
- ९ तमिळु— तिरुक्कुळ-तिरुवल्लुवर कृत । २००० वर्ष से अधिक प्राचीन; नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ० ३५२ मू० २०.००
- १० „ कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ० ६५२ मूल्य ४०.००
- ११ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराण-अभिनव पम्प विरचित जैन-सम्प्रदाय रामचरित (११वीं शती) पृ० ६९० मू० ४०.००
- १२ तेलुगु— मौल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ४०० मू० २०.००
- १३ „ रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) अनु. पृ. १३३५ मू० ६०.००
- १४ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू० ६०.००
- १५ खरबी— जादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) प्रामाणिक हदीस प्र० खण्ड पृ० ३३६ मू० १२.००
- १६ फ़ारसी—सिरे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषदों की व्याख्या) हिन्दी में पृ० २८० मू० २०.००
- १७ उर्दू— शरीफ़जादः (मिर्जा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मू० ८.००
- १८ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सैंची पृ० ९६८ मू० ४०.००
- १९ „ „ „ दूसरी सैंची पृ० ९९२ मूल्य ५०.००
- २० „ श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाजः दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ० १६४ मू० ८.००
- २१ „ सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि । मूल्य ४.००
- २२ सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० २०.००

- २३ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०.००
 २४ असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ ,, ६०.००
 २५ ओड़िआ—वैदेहीश-बिळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ० १००० ,, ६०.००
 २६ ,, तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िआ लिपि में मूलपाठ तथा ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद । पृ० सं० १४६४ मू० ६०.००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

- २७ कुर्आन शरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में पृ० ५२० मू० २०.००
 २८ ,, ,, तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ४०.००
 २९ ,, केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मू० २०.००
 ३० ,, कौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मू० १०.००
 ३१ बहुभाषाई—‘वाणी सरोवर’ त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १०.००

यन्त्रस्थ तथा कार्याधीन चल रहे अन्य ग्रन्थ :— अनुमानित पृष्ठ

- १ तमिळु—कम्बरामायण अयोध्या से लंकाकाण्ड ४०००
 २ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब ३,४ सैंची २०००
 ३ गुजराती—प्रेमानन्द रसामृत ६००
 ४ उर्दू—गुजश्तः लखनऊ (शरर) ३५०
 ५ तेलुगु—पोतन्नकृत भागवतमु (१३वीं शती) २०००
 ६ ओड़िआ—जगमोहन रामायण बलरामदास कृत १०००
 ७ फ़ारसी—सिरें अक्बर खण्ड २-३ ६००
 ८ ,, मुल्ला मसीही रामायण (जहाँगीर काल) ५००
 ९ अरबी—बुखारी शरीफ़ (ल.कि.घ.) ३०००
 १० ,, कौरानिक कोश वर्णानुक्रम (ल.कि.घ.) ३००
 ११ ,, कुर्आन शरीफ़ तफ़सीर माजिदी (ल०कि०घ०) ६०००
 १२ मराठी—श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत) १२००
 १३ ,, श्री संत एकनाथ भावार्थ रामायण ३०००
 १४ कोकणी—ख्रीस्त पुराण ५००
 १५ कन्नड—तोरवै रामायण (१६वीं शती) ९००
 १६ बँगला—कृत्तिवास रामायण उत्तरकाण्ड ५००
 १७ हिब्रू—बाइबिल ओल्ड टेस्टामेण्ट २०००
 १८ ग्रीक— ,, निउ टेस्टामेण्ट १०००
 १९ बाइबिल-सार (सालोमन के नीति-वचन) १००
 २० संस्कृत—(तुलसी) रामचरितमानस का मूलपाठ सहित संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद १०००
 २१ परिवर्द्धित नागरी उर्दू-हिन्दी कोश १२००

सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥ '

